





३ लीफोत नं० ३०४०

[आर्यभारदेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र]

Regd. No. P. 121

पंक प्रति का मुख १३ नवे पैसे

वार्षिक मुख ६ रु. २०

पं० २६ अंक १)

१६ पी० २०२२ रविवार—दयानन्दवाग् १४१—२ जनवरी १९६६

(ता० 'प्रादेशिक' जालन्धर

## वेद सूक्तयः

### अरं शक परमेण्ण

हे सर्वशो कमन परमेवर !  
वेदी कृपा करें कि हृष तेरे ही  
परेमण्य—परम रूप में, रस-  
मान करने में, वेदी स्तुति में  
प्राप की ही आराधना, साधना,  
हि ही लगे रहें, मन्म मस्त  
रहें। आपका अर्पण की यस्वी  
का परमरस सदा पान करते रहें!

### विस्वा बदजयः स्पुषः

हे मानव ! तेरे अन्दर  
अपनी भी सामसी प्रवृत्तियां  
हैं, जिनके कारण यह जीवन  
सोमय बनता जाता है, उन  
अपको भीत ले। उन तमोभावों  
को दूर भगाने के लिए उन पर  
तेरे रूप से विजय प्राप्त कर ले।  
ते तमोगुण मुझे अपना दाह न  
तवाने पावे।

### मत्स प्रभु वसो

इस शरीर में निवास करने  
पाते आत्मन् ! बड़ी सामर्थ्य  
रखने वाले आत्मन् ! तु सदा  
ही प्रसन्न रह। कभी भी विवाह  
को प्राप्त न हो। जीवन की  
निष्ठा सदा प्रसन्नता में है, चबरा  
कर सदा रोते रहना या निराशा  
दिन जीवन की साधना नहीं  
है। सदा प्रसन्न रहो।  
सा गे हे हे

## हिंदी ही सारे देश की सम्पर्क भाषा हो सकती है : जाकिर हुसैन

उपराष्ट्रपति डा० जाकिर हुसैन ने आज यहाँ घोषणा की  
कि हिंदी के विकास का अर्थ दूसरी भाषाओं के विकास में  
बाधा उत्पन्न करना नहीं है। उन्होंने कहा कि किसी को यह  
धोति नहीं होनी चाहिए कि हिंदी दूसरी भाषाओं को हनि  
पहुं चाना चाहती है। आज शाम दक्षिण भारत हिंदी प्रचार  
सभा के कार्यालय में ३० वें वार्षिक दीक्षांत समारोह को  
सम्बोधित करते हुए उन्होंने देश के 'एक एक भाषा की आव-  
स्यकता के गांधी जी के आदर्श को श्रद्धावलि भेंट की और  
कहा कि गांधी जी जानते थे कि देश को एकता के लिए जहां  
विभिन्न भाषाओं के पूर्णतया विकसित होने की आवश्यकता है  
वहां लोगों में एकता लाने के लिए प्रभावपूर्ण सम्पर्क के रूप  
में एक साधारण भाषा को भी प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

यह भाषा सरल हिंदी ही हो सकती है जिसे चाहे हिंदी कहे  
या हिन्दोस्तानी उन्होंने कहा कि गांधी जी ने सोच-समझ कर  
सारे देश के लिए संपर्क भाषा के रूप में इसे चुना क्योंकि उस  
युग में हिंदी उत्तर तथा दक्षिण में बहुमत से बोली और  
समझी जाती है।

हिंदी सरल और सुबोध होने के कारण राज्यभाषा की  
अधिकारी है।

## ऋषि दर्शन

### म विष्णुगीश्वरः

यह विष्णु ईश्वर ही है।  
वही परमेश्वर विष्णु कहलाता  
है। सर्वव्यापक होने से भगवान  
विष्णु कहलाता है। उस सर्व-  
व्यापक प्रभु से ही जीवन की  
सारी कामनाएं पूरी होती हैं  
उसी को मानो और उसी से  
मानना सीखो।

### चक्रवर्ती राज्यम्

आप का राज्य चक्रवर्ती है।  
सारे विश्व की जनता आपके  
स्वराज्य तथा सुाज्य की प्रशंसा  
करे रहे। कोई हमें पराधीन  
न बना सके। मानसिक हास भी  
न बने हम चक्रवर्ती राज्य का  
प्रवाद प्राप्त करें।

### अनन्त पराक्रमवान्

यह परमेश्वर अनन्त बल  
पराक्रमों का भण्डार है, सारी  
शक्तियों का बंधु है, उस  
की शक्ति के सामने कौन बल-  
वान ठहर सकता है। अधिमानी  
बनी उन महाबली के सामने  
हार गये, वृद्ध, न पत्नी यह बली  
है।

भा प्य भूमि का से

पता—श्री संतोषराज जी

सम्पादक—त्रिलोक चन्द्र शास्त्री

(गतांक से आगे)  
हर-चण्डा बरलता है। टाचें के "सेक" नए नए खरीदे जायें तो खूब रोशनी करते हैं। जैसे-जैसे मसाला खत्म होता है, रोशनी भी घटती जाती है। हे मानव, इसी तरह रूप को देख कर प्रसन्न न हो, यह भी ग्रन्थाधी है।

तीन प्रकार के गुण हैं—सवो-गुण, रजोगुण, तमोगुण। सवोगुण अर्थात् आप सोचें कि आपके पास बीस हजार रुपये हैं और यह आप अस्पताल बनाने के लिए दे देंगे। रजोगुण अर्थात् आप सोचें कि इस हजार से लड़की का ब्याह करूंगा और बाकी अस्पताल के लिए दे दूंगा और तमोगुण अर्थात् आप सोचें कि क्रमुक अव्यक्त समाई में बाधा है उसे पांच हजार रुपया सुदृढ़ बन्द कराने के लिए दे दूँ। यह भावनाओं का, विचारों का परस्पर विरोध है। यह संस्कार या वातना है। यह सब विचारों का परिणाम है।

रामायण में आता है कि जंगल में स्वरूपनत्वा न माता सीता को देखा और आकर अपने भाई रावण से कहने लगी कि जंगल में एक बहुत ही सुन्दर युवती है। भयदा वह सुन्दारे लिए है। रावण ने कहा कि मैं खर, दूधिया को भेजता हूँ। स्वरूपनत्वा ने कहा कि उन दोनों को तो राम लक्ष्मण ने मार डाला है। उसने अपने भाई को साधुप्रेष में आकर सीता को पाने की सहाह दी और याद कराया कि भाई! तू तो मायावी है। रावण ने बैसा ही किया। मन्दादीरी ने आकर पति को इस रूप में देला और साधुप्रेष पाषण करने का कारण जाना तो कहने लगी—'सुन्दारे मन में यह गन्दा विचार आया है। सारे अमृत परिवार को ले दूँवंगा।' लेकिन शक्य ने एक न सुनी और जो

## राष्ट्र-भक्ति और प्रभु-भक्ति-६

(श्री महात्मा आनन्द त्रामो जो महाराज को अमृतभरी कथा)



परियाम हुआ रावण के साथ कथा थीती, यह तो आप सभी जानते ही हैं। मेरे कहने का आभावयः यह है कि विचार का अच्छा होना अव्य-पिक आवश्यक है क्योंकि जैसे विचार होंगे वैसा ही उसपर बनेगा हमें अपने विचार उत्तम एवं श्रेष्ठ रखने चाहिएं। दिव्यो की एक बात है। मैं करोल बाग में कथा कर रहा था। एक सज्जन मेरे पास आए और कहने लगे—'श्वामी जी। आत्र सायं आप हमारे यहाँ दूध पीजिए।' मैंने कहा—'पी लूंगा।' वह कहने लगे—'हमारे घर चलना होगा। बच्चे भी आप को देख लेंगे और घर भी पवित्र हो जाएगा।' मैंने घर जाना स्वी-कार कर लिया और सायंकाल उन के घर पहुँचा तो कुछ ही चण बाद बिजली फेन्न हो गई। वह सज्जन मरकार को कोसने लगे—'अजो सादर! अजीब फंफट है रोब बिजली फेन्न होती है। क्या सरकार का घटिया प्रबन्ध है।' मैंने कहा—'महाराय। सरकार का बाद में कोस लेना, पहले कहीं से मोमबत्ती तो लाओ।' महाराय जो ने घर में सभी को बारी-बारी आवाज लगाई कि मोमबत्ती लाओ लेकिन मोमबत्ती नहीं मिली। मोमबत्ती को दू-दूते-दू-दूते माँबिस खतम हो गई और इतने में बिजली आ गई। मैंने कहा—भाई! सरकार को तो कोसते हो कि ससक प्रबन्ध ठीक नहीं है तुम अपना प्रबन्ध तो ठीक कर लो।

यह संसार जीवन और मृत्यु का एक चक्कर है। इसकी सर्वो-त्तम शोधय सुविचार है। विचार में बढ़ी शक्ति है। पटम बम गिरने

से हिरोसामा में तो कुछ लाख भयस्तिन मरे लेकिन पाकिस्तान की स्वस्थना के विचार से मरकर तथाही हुई। पाकिस्तान के बारे में सारा साहित्य कैम्ब्रिज से आता था। अग्नेमी ने एक अन्दुल लीफ को डिपार्ट्मे के सिदात का पढ़ा पढ़ा कर भारत भेजा। मुस्लिम लीग के कराचो अधिवेशन में मुहम्मद अली जिन्ना ने डिपार्ट्मे के सिद्धान्त का विरोध किया लेकिन चूकि अग्नेमों की विलचस्पी थी, इस विचार का जोर-शोर से प्रचार जारी रहा और अन्ततः मुस्लिम लीग के लाहौर अधिवेशन में पाकि-स्तान की मांग सम्भवी प्रस्ताव पास हो गया और अन्दुल लीफ की मार्फत अग्नेमों ने जो विचार फैलाया था उसे सफलता मिल गई। पटम बम से तो साढ़े तीन लाख व्यक्ति तथाह हुए लेकिन डिपार्ट्मे के सिदात के विचार का नतीजा है कि भारत के विभाजन के समय लगभग साढ़े दस लाख व्यक्ति मारे गए और एक करोड़ के करीब लोग हजर आए और १० लाख उधर पाकिस्तान गए। अब आप ही बताइए कि विचार की शक्ति क्या है या पटमबम की? विचार हमारे समूचे जाँवत की आभार शिजा है। हम कान्फेन्ट स्कूलों में पढ़ने के लिए अपने बच्चों को भेजते हैं। वहाँ ऐसे ढंग की शिजा दी जाती है जो भारतीय संस्कृतिक के प्रतिकूल है। काबिन्ट स्कूलों केबड़े हुए बच्चे भार-तीय नहीं रहते। याद रखो कुछ वर्ष बाद भारत में ईसाई विरोधी आंदोलन चल्लेगा तो कान्फेन्ट का पढ़ा हुआ हरेक बच्चा उस आंदो-लन के विरोधियों का साथ देगा हमारा नहीं। दम अयफरन हो

जंप और हमारे विरोधी सफल। हमें अपने बच्चों की संगति का ध्यान रखना चाहिए। विनेमा का भी बच्चों की बुद्धि पर बुरा प्रभाव पड़ता है। भगवान बचाए इस विनमा से।

शिल्ले हुए फूलों, पके हुए फूलों और युवा सौंदर्य को देखकर बड़ों-बड़ों का दिल चलायमान हो जाता है लेकिन बाद रलो जिसका पित्त चित्रवान है, माँ पतिवता है वह कभी दुश्चरित्र नहीं होगा। लेकिन हीरा लाल गांधी भी था महात्मा गांधी का लड़का। महात्मा गांधी जी कितने महान और माँ कल्लूरा—एक सच्ची देवी। लेकिन युती संगत ने हीरा लाल गांधी को बिनाइ दिया।

आज हमारे देश में मुसीबत है कि दूध डिब्बे का दिया जाता है और वालीम कान्फेन्ट की बच्चा पैदा हुआ तो उसे माँ का अमृत रूपी दूध नहीं मिलता। उसे तो दूध दिया जाता है हार्लेड का, शंशी अमरीका की होवी है और उसके साथ निपल लगा होता है इंगलैंड का। दो सी बंधे हुए कान्फेन्ट शिजा को शुरू हुए। क्या कोई बता सकता है कि कबो कान्फेन्ट का कोई छात्र किसी परीचा में सफल आया है। हमेशा ही० ए० वी० संस्थाओं के छात्रों ने प्रथम दर्जे पाए हैं। कान्फेन्ट में पढ़ाना धन और बच्चों दोनों की बर्बादी है। विचार विगड़ते हैं। बच्चों को घरों में पढ़ाओ, स्कूलों, कलेजों में भेजो लेकिन उन्हें भगवान राम और श्रीकृष्ण के सन्देश सुनाना मत भूलो। भावा जी का यह फव्व बनता है कि वे अपने बच्चों का अच्छी-अच्छी पाठ बताएँ और बुजुर्गों की बीरता तथा प्रभुभक्त का गायार्थ सुनाएँ। बच्चों का अच्छा या बुरा बनना माता-पिता पर बहुत हद तक निर्भर करता है। सब से पहले बात यह कि अच्छी संगत में आओ। (कमशः)

सम्पादकीय—

# आर्य जगत्

वर्ष २९ | रविवार २०२२, २ जनवरी १९६६ [अंक १]

## हम और वे

राष्ट्रोपेन के आसुरी मार्ग पर चलते हुए अधिनायक वाद का निन्दाभरा विचर पैरा करते हुए पाकिस्तानी शासकों ने कृतमत्ता की चरमसीमा पर पहुँच कर जिस बोले से भारत की भूमि पर मारी टैंकों के साथ जो आक्रमण किया था—तथा पंजाब को हथियाने की योजना बनाई थी। यदि हमारे नेता तथा सैनिक शक्ति युक्त कारवाई न करते तो एक गम्भीर समस्या पैदा हो जाती। भारतीय सेना के वीर जवानों ने जिस वीरता, बलिदान भावना का शानदार परिचय दिया। वह इतिहास का बमर अध्याय बनेगा। भारतीय सेना ने भी युद्ध आचार्य शस्त्रों का प्रयोग किया। ग्रामीण नगरों पर आधिपत्य किया। परन्तु क्या मजाल कि मजाल का गिराया हो या किसी भी प्राणीय या नागरिक बच्चे बूढ़े अथवा किसी युवती का को मारा हो या मैली टॉप से भी देखा हो। भारतीय जवान टाउ से टकरा लेना जानता है। ईंट का उखर तो परवर से देता है, किन्तु आचार्य कृपता की पराकाष्ठा तक पहुँचा हुआ है। बरकी और डोगराई कब्रों को इस ने जीना पर उन को ज्ञान नहीं लगाई। ईं कब्रों गांधी पर भारतीय सेना ने आधिपत्य किया है। उन स्थानों के बाहों नरनारी इन के आधिपत्य में हैं। जम्मु बटुआ के कैम्पों में पाकिस्तानी सैनिकों मुसलमान बाकी रले गये हैं। उन से युद्धी कृषिर्षिर्षा व बच्चे भी

शामिल हैं। परन्तु क्या मजाल कि उनके प्रांत किसी ने भी मैली आँख से देखा हो। भारतीय सेना लड़ना तथा शत्रु का कचूरमर निकालना तो खूब जानती है—साथ ही भारतीय सैनिक आचार्य की ऊँची मर्यादा भी निभाने में प्रसिद्ध हैं। यह हमारा आचार्य का ऊँचा स्तर है। दूसरी ओर पाकिस्तान के राष्ट्रपीपन से भरे हुए कायर सैनिक हैं। जिन के आचार्य विचार को गिरावट की चर्चा करना भी बेकार है। जिन के सामने पिशाचवृत्त को पूरा करने का सिवाय और कुछ हीना नहीं। काश्मीर में लुटेरे आये ता दुकानों को लूट लिया, उनको छाप लया दी। गाँव जला दिये, लोगों को मार दिया तथा नीचपन पर उतर कर जवान लड़कों को इन भेड़ियों से सुरक्षित न रह सके। पिशाचों, राष्ट्रपी के सामने आचार्य की मर्यादा कैसी? आसुरी का सारा इतिहास ही ऐसे भेड़ कानों से भरा पड़ा है। आज भी पाकिस्तानी इन मनुष्य के बंधे में आने वाले राष्ट्रपी के काम सामने हैं। और कूड़ नदी बनता तो ग्रामीणों को आग लगा देते हैं। उनको लूट लेते हैं। जवान लड़कियों से राक्षस पिशाचीपन से भी बाज नहीं आते। धर्म स्थान इन से सुरक्षित नहीं, बीमारों के इस्त्रालों को जलाने में इनका शर्म नहीं आती, छहरटा जंजी नागरिक जनता पर आगिन बम मार कर मारने में बहू निलंबन हैं तथा लूटने मारने ज्ञान लगाते,

## तन-मन-धन वालों से



काश्मीर और पंजाब की भूमि पर राष्ट्रमन की निम्ननीय वृत्त से भरकर पाकिस्तान ने जो अपनी नंगा पिशाचीपन का नाच करने का आवोजन किया था—उसम तो मुह्र की खाई है। किन्तु जिन ग्रामीणों को लूटा, जलाया तथा कल्याचार का निशाना बनाया—वहों की जनता अपने-अपने घरों को छोड़कर तीन कपड़ों में अपने-अपने भरे हुए मकानों को छोड़कर भाग गई है। सरकार भी उनका प्रबन्ध कर रही है जो उसक प्रबन्ध वाले कैम्पों में हैं। साथ ही हजारों की संख्या में जो भाई बहिन छुप, जोड़ियाँ, राभीरी, जम्मु आदि स्थानों से जालन्धर, होशियारपुर, जम्मूतसर आदि नगरों में आये हैं। उनकी इस विषम समय में सेवा करने के लिए आर्यसमाज ने भी अपनी सेवा की पुरानी मर्यादा के अनुसार कैम्पों का प्रबन्ध किया है। आर्य प्रादेशिक समाज पंजाब जालन्धर के माननीय प्रधान भी वरा जा पूर्ण शिक्षा मन्त्री पंजाब सरकार ने तत्काल ही उन्नत कर आने वाले इन भाई बहिनों की सेवा करने के लिए समाज को ओर से तीन सेवा कैम्प सुलभा दिए हैं। एक जम्मूतसर में, एक होशियारपुर में तथा जालन्धर में। आर्य प्रादेशिक समाज का सेवा का इतिहास सोने के अक्षरों में लिखा हुआ है। समाज ने इस बार भी अपनी सेवा परम्परा को कायम रखा है। जालन्धर में सेवा का बतार करने में यह पिशाचों से भी आगे हैं। हमारे तथा इन में यह भेद है। आज भी भारतीय वीरों ने इन्द्र बन कर वज्र की मार से इन राष्ट्रपी को ठीक करवा है।

—विश्वोक्त चन्द्र

जो केन्द्र रेलवे स्टेशन के पास चल रहा था, उसके संचालक प्रबन्धक समाज के मान्य उपग्रहान श्री लाल इन्द्रपेन की मसही किटनगंज है उनको देखकर मैं कितना शानदार सेवाकाय जारी था यह तो आँखों से देखने से ही सम्भव रहता है। लालाल-लिलालना, बहरादि का प्रबन्ध करना तथा अन्य आवश्यक वस्तुओं को जुटाना हा रहा है। लाल इन्द्रपेन जी दिन रात एक करके मीन हाँकर इस काम में लगे हुए हैं। इसी प्रकार होशियारपुर में चौधरी बलबीरसिंह जी प्रधान प्रधानन्द कालेश प्रबन्धक कमेटी होशियारपुर के संचालक व अध्यक्ष हैं भारी सेवाकार्य जारा है। समाज के पूर्ण प्रधान तपसून्त विमिपल रत्नाराम जी एम. ए. तथा अन्य सज्जन भी रात दिन एक करके सेवा में लगे हैं जम्मूतसर में भी समाज द्वारा सारी आर्यसमाज सेवा में लगी हैं। कठिन निभाया जा रहा है। किन्तु इस काम के लिए हम तन मन धन वाले से एक आवश्यक बात कहना चाहते हैं। युद्ध में क्या हो। यह तो देखन वाली आँखें ही देखता हैं। दुःख विष्टे हुए सचउत्त इस मद्रानाश ५ भीषण टयव को देख नहीं सकते। हम उन से कहना चाहते हैं कि इस समय इन उन्नत हुए अपने भाई बहिनों का सर्व प्रकार की सेवा सुलभा के लिए समाज का हर प्रकार का जल्दी से जल्दी सहयोग देवे। इस समय धन की भी आवश्यकता है, कपड़ों की भी तथा आदि भी। इस लिए तो मैं बहुत दुःखकर हूँ वे कपड़ों से सद्दयाग देवें जो धन दे सकते हैं वो अन्नक से आदि धन देवें। इस समय तो यह सेवा महान यज्ञ, अतिमज्जन और स्मरण है। पंजाब आर्य कार्यालय का वाया है इस के लिए आर्य प्रादेशिक समाज जालन्धर के नाम वदत्र व धन निबन्धा कर कर्तव्य को पूरा करें।

उपग्रहक

## संस्कृत का महत्व

श्री. कृष्णकुमार धवन प्रमुख मन्त्री संस्कृत विद्वान परिषद, चंडीगढ़



जो विद्यार्थी संस्कृत पढ़ने से विमुख होते जा रहे हैं संस्कृत को लोक-पियता समाप्त होती जा रही है, उसके निम्नोपचार क्या हमारे कर्त्तव्य और शिक्षा के अधिकारी ही नहीं हैं। लोग तो संस्कृत पढ़ना चाहते हैं परन्तु उन्हें संस्कृत पढ़ने नहीं दी जाती।

पंजाब में, हमारे शिक्षा-शास्त्रियों ने हायर सैकण्डरी सिस्टम चालू किया और साथ ही संस्कृत का गला घोट दिया। हायर सैकण्डरी के छात्र को सार्स के साथ संस्कृत पढ़ने को आज्ञा नहीं, मानों सार्स और संस्कृत का परस्पर विरोध हो। हायर सैकण्डरी के छात्र ग्रुप में से केवल एक **Humanities Group** में संस्कृत को स्थान प्राप्त है। इस ग्रुप में भी कई स्कूलों ने इस प्रकार टार्सम टेबल बना रखे हैं कि विद्यार्थी वा संस्कृत पढ़ ले या गाँव, संस्कृत पढ़ सके। या इतिहास, आदि-आदि। जिन स्कूलों में संस्कृत पढ़ाने की कुछ व्यवस्था है भी वहाँ स-नाह भर में संस्कृत पढ़ाने के लिए केवल तीन-चार घण्टे नियत हैं जब कि अन्य विषयों के लिए छः से आठ तक।

यही अवस्था मद्रास कक्षाओं में है। कोई दिन वे (स्वयन्त्रता से पहले), जब संस्कृत की कक्षाएँ विद्यार्थियों से भरी रहती थी आज पूरे के पूरे विद्यालय में इन्ने-गिने छात्र मिलेंगे।

यू। इयंगर महान् कास तो संस्कृत को बलकुल ले डूबा है। इस से पूर्व, कम से कम इन्टरमीडिएट तक एक ना एक भारतीय भाषा का अध्ययन हो जाता था पर ऐसा कोई नियम नहीं। यदि अब पुनः

यैसा करने के लिए प्रस्ताव किया जाता है तो उसका अर्थ यह कह कर दिया जाता है कि ऐसा मान लेने से हिन्दी-संस्कृत के अध्ययन को रखने पहुँचेंगे। कई कालों में विशेषकर गर्वनमेंट कालों ने विषयों के **Combinations** इस भाँति नियत कर रखे हैं कि विद्यार्थी चाहता हुआ भी संस्कृत को अपने अध्ययन का विषय नहीं चुन सकता। आनर्स की पढ़ाई का प्रबन्ध तो, छात्र-संस्था कम होने के कारण कई स्थानों पर नहीं है।

संस्कृत पाठशाळाओं में इसी नीति का शिकार हैं। संस्कृत का तथा वेदों और शास्त्रों का वास्तविक अध्ययन इन विद्यालयों में होता था कुछ उच्च भी हो रहा है। इन्हें श्रुत्य के मुख में धरेलना संस्कृत की मृत्यु होगी। केन्द्रीय सरकार ने चिरकाल से संस्कृत की परीक्षाओं को अन्य परीक्षाओं के बराबर मान्यता देने के लिए तिरफिर कर रखी है पर पंजाब विद्वान विद्यालय और कई अन्य विद्वान विद्यालय भी इसे बम दबाए ही बैठे हैं। पंजाब विश्वविद्यालय तो योजनापद्धति से, अपने बन्द स्थान से, संस्कृत के निर्वाचन के लिए कटिबद्ध है तथा प.म.० प.० और आचार्य कक्षाओं के सभी पञ्जाब विश्वविद्यालय से दिन प्रति दिन लोप होता जा रहा है। कई तो कच-ए ही प्राज्ञ, विशारद आचार्य बन्द कर दी गई हैं।

पंजाब के बहु संख्यक गर्वनमेंट स्कूलों तथा गवर्न स्कूलों में संस्कृत पढ़ाने का प्रबन्ध बिल्कुल नहीं है। गर्वनमेंट मास्टर स्कूलों

में तो बहुत जान कर संस्कृत की निकाल रखा है ताकि संस्कृत की पढ़ाई कहीं छात्र-छात्राओं को असंभव ना बना दे।

स्कूलों, कालों तथा विद्वान विद्यालयों में संस्कृत के अध्ययन को का स्थान सब से पीछे है। उन्हें मान देना या कोई निम्नोपकारी छौपना संस्थाओं के अधिकारी अपना अपमान समझते हैं। सब पूछिए, आज जिन संस्थाओं में संस्कृत शिक्षा का प्रबन्ध है, वहाँ पञ्चम से केवल मात्र अपना मुँह रखने के लिए, अपने को हेट्टी से बचाने के लिए वा फिर धर्मिय, संस्कृति प्रिय तथा देशानुरागी जनता की सहानुभुति हम से हट ना जाय, हम भय से कर रखा है। दिल से वे भी इन्ने नहीं चाहते। जो संस्थाएँ संस्कृत के विकास और इस के प्रचार को समुल रल कर खोली गई थी वे भी इसे समान पूर्ण स्थान देने इत्ताने से आज हिचकिचाती हैं।

त्रिभाषी फार्मुलोन में तो संस्कृत को सब से पीछे ला पटका है। बंगाल, महाराष्ट्र और गुजरात जैसे प्रदेशों में भी, जहाँ कभी संस्कृत का बोल बाला था, आज बूढ़ों में पर ही संस्कृत के पढ़ने वाले मिलेंगे। यदि प्रादेशिक भाषा महाराष्ट्री वा गुजराती वा बंगला और कन्नड़ी के साथ वे संस्कृत भी पढ़ते हैं तो केवल भाषाओं के विद्यार्थी हो रह जायेंगे और युग की दौड़ में फिर पीछे की पीछे।

प्रांतिन मन्त्री गया और सरकारी प्रवक्ता यूं भी कहते रहते हैं कि संस्कृत सभी प्रादेशिक भाषाओं के विकास का आधार है, फिर प्रायः सभी प्रदेशों की, राज्यो को संस्कृत के प्रति उदासीनता क्यों? पंजाब के भाषा विभाग की ही लिजिय, इस में प्रादेशिक भाषाओं हिन्दी और पंजाबी के लिए प्रबन्ध है, उन्हें के लिए भी हमारा भाषा विभाग प्रबन्ध है।

गत सप्ताह संस्कृत के गुणमान का सप्ताह रहा है। केन्द्रीय संस्कृत बोर्ड से लेकर राष्ट्रपति डा० राजाकुमार तक सभी ने संस्कृत का महत्व प्रदर्शित किया है। अंग्रेजी, हिन्दी, उर्दू प्रेस ने भी समाचार, सम्पादकों तथा अग्र लेख लिखकर संस्कृत की महत्ता एवं भारत तथा विश्व के लिए इसकी आवश्यकता का विस्तार से और मोटे-मोटे अक्षरों में उल्लेख किया है। ये सभी धन्यवाद का पात्र हैं। अभी-अभी पटियाला में झाल इतिहास विद्यालय का निमित्त प्रकट किया जा कि इतिहास के वास्तविक अध्ययन के लिए संस्कृत का ज्ञान-पहलौ सीढ़ी है, परम आवश्यक है। कन्निस ने यह इच्छा भी प्रकट की कि कम से कम पंजाब के तीनों विश्वविद्यालय इसमें आवश्यक रुचि लेंगे। शिक्षा मन्त्री भी छद्मता ने केन्द्रीय संस्कृत बोर्ड की बैठक में जिस योग्यता से संस्कृत के अध्ययन पर बल दिया वह अत्यन्त वांछनीय है। राष्ट्रपति जी ने संस्कृत की उच्चता, तथा संस्कृत की पूर्णता को टिप्ट में रखते हुए उसके विस्तार के लिए, वाग्यासी के सम्मेलन में उचित सांग निर्देश किया है। श्री आनन्द शयनम आचार्य तथा डा० कर्णसिंह आदि अनेक राज्यपाल भी समय-समय पर संस्कृत का पक्ष लेने से नहीं चूकते। देश की अनेक शिक्षा संस्थाओं की प्रबन्धकत्री समारं और उनके मुखिया भी संस्कृत के ह्रास को देखकर चिन्ता प्रकट करते रहते हैं। पर, जब कि उपरको सभी व्यक्त, अधिकारी, मन्त्री राज्यपाल, संस्थान, विद्वान विद्यालयों के कुलपति और उपकुलपति संस्कृत के महत्त्व से सुपरसिध्व है, हर समय इसके लिए चिन्तित हैं तो इसे सर्वनाश से बचाने के लिए कुछ करने की बजाए इसके सर्वनाश के साथन ही क्यों उदाते जा रहे हैं। आज

(गाला से आगे)

सन् १६१९ में अश्वत्थर में हुए कापोस के अधिवेशन में आपने भाषण में कुरुक्षेत्र के बारे में आपने राष्ट्र को चेतावनी देते हुए कहा था :—'लंदन शहर में भारत के लिए उल्लूक रिफार्स स्वीम कमेटी के सामने इसाई मुक्ति फौज के नेता जनरल बृथ ठक्कर ने कहा था कि भारत के साढ़े छः करोड़ आइनों को विशेष अधिकार मिलने चाहिए और इस के लिए उन्होंने यह सुनिश्चित की कि कृि अश्वत्थर में आपने शासन स्तरी जहाज के लंगर हैं इस लिये उन्हें पिये अधिकार मिलने ही चाहिए। इन शब्दों पर आप गम्भीरता से विचार करें और मोक्ष किम पक्षर आप के साढ़े छः करोड़ भाई आप के जिगम्य के टुकड़े जिन्हें आप ने काट कर फरक दिया है, किस प्रकार भारत माता के यह पुत्र एक विदेशी सरकार रूपी जहाज के लंगर बन सकते हैं। मैं आप सब भाईयों और बहनों से एक वाचना कहना कि इस पवित्र जातीय मंदिर में वेद हुए आपने हृदयों को मातृभूमि के जल से शुद्ध कर के प्रित्ति का की आज से यह साढ़े छः करोड़ भारत बानी हमारे लिये अश्वत्थ नहीं बल्कि हमारे बहन भाई हैं। उन के बच्चे हमारी पाठशालाओं में पढ़ेंगे, वह लोग हमारी समाझों में सम्मिलित होंगे, हमारे स्वतंत्रता संघाममें वह हमारे कल्प से कल्पा जोड़ेंगे और हृथ सब एक-दूसरे का हृथ पकड़े हुए अपने जातीय उद्देश्य को पूरा करेंगे।

जापान के औचित्य पर लोग आपी विचार ही कर रहे थे कि मुशी राम जी ने जापान तोड़ कर आपनी पुत्री का विवाह कर दिया। लोग आपी उच्च शिक्षा को मातृ-भाषा में देने का स्वप्न ही न लेने पाये थे कि मुशीराम जी ने विज्ञान

# क्रांतिकारी स्वामी श्रद्धानन्द जी

(श्री जान सिंह जी नई दिल्ली)



अर्थशास्त्र आदि आधुनिक शिक्षा का साधन गुरुकुल में मातृभाषा हिन्दी को कर दिया। राजनीति में धर्म और नैतिकता के समावेश को शाब्द अन्वयावहारिक और अना-धरक समझा जाता था किन्तु १९१६ में अश्वत्थर अभिस के स्वागतोपस्थ के पद से वेद मन्त्रों का उच्चारण करते हुए प्रब्रह्मचर्य आदि का उपदेश देने वाले वही प्रथम नेता थे। आपने यह भाषण हिन्दी में दिया, और अंग्रेजी भाषा दिये भाषणों और स्वीकृत प्रस्तावों को भी संक्षेप से द्यो कापोस में संभवतः यह पहला स्वागतोपस्थ भाषण था जो हिन्दी में दिया गया था।

गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना जिस समय अंग्रेजी शासन में घोषित पाठ्यक्रम भाषा और संस्कृति सरकारी विश्वविद्यालयों में प्रसारित हो रही थी, मुशीराम जी ने आपना सर्वेय स्वागत करके आपने आचार्य महर्षि दयानन्द के आदेशानुसार हरिद्वार से लगभग छः मील दूर गंगा पार चवड़ा पहाड़ के नीचे चने जंगल में कांगड़ी गाँव के पास गुरुकुल विश्व-विद्यालय की स्थापना की। देश के बच्चों को पारंपरिक विचारों से पृथक विद्युद्ध भारतीयता व राष्ट्र-पता के बिचारों को उलपन करके शिक्षा क्षेत्र में एक नूतन पथ का निर्माण किया। गुरुकुल कांगड़ी उनके शिक्षा सम्प्रदायी आदेश का उत्तमवर्ण प्रतीक है।

इस संस्था के राष्ट्रीय स्वरूप को देखकर ही अंग्रेजी सरकार इस पर बड़ी-कड़ी नजर रखती थी ! वह तो इसे बम बनाने का गुप्त कारखाना ही समझती थी।

एक महान भव्य मूर्ति महात्मा मुशीराम की भव्य मूर्ति देखने ही योग्य थी। मजदूर दल के नेता श्री रमजने से छद्मानुहने, जो बाद में ब्रिटिश साम्राज्य के प्रधान मन्त्री बने थे, १६१५ में भारत का दौरा करने के परचात महात्मा जी के बारे में निम्न-लिखित वाक्य लिखें—

'एक महान भव्य और शान-दार मूर्ति जिस को देखते ही उसक प्रति आदर का भाव उत्पन्न होता है, हमारे आगे हम से मिलने के लिये बढ़ती हैं।

सन्ध्यास जाग्रम में प्रवेश लगभग सत्रह साल तक गुरुकुल का आचार्य पद से संचालन करने के पदचानु उसे योग्य हृदयों में सौर्य महात्मा जी ने सन्ध्यास आग्रम में प्रवेश किया और स्वामी श्रद्धानन्द बन कर सां-जनि क कार्यों में भाग लेने लगे। स्वामी जी हिन्दू-मुस्लिम एकता को प्रथम मूर्ति थे। १६६५ मार्च में रौलट एक्ट के विरोध में जब दिल्ली में सात दिन की हड़ताल रही तब इस राजधानी के नेताज बादशाह स्वामी श्रद्धानन्द ही थे। कसाईयों ने उन दिनों वृषह खाने बन्द कर दिये थे। जामा मस्जिद के मैन्सर से वेद मंत्रों के उच्चारण के साथ भाषण देने वाले मुस्लिम इतिहास में आप पहले हिन्दू थे। इस मौके पर हजारों हिन्दू मुसलमान बिना किसी भेद-भाव के बहाँ जमा थे, और स्वामी जी वहाँ निमग्नता से हिन्दू मुस्लिम एकता का संदेश सुना रहे थे। उन दिनों मुसलमान स्वामी जी पर इतने प्यार थे कि सात आठ व्यक्तिय हर उच्चर आप के अकान

पर पहरा देते थे।

रौलट एक्ट के विरुद्ध जलूस निकाला गया इस का नेतृत्व स्वामी श्रद्धानन्द जी कर रहे थे जब वह जलूस घंटाघर के पास पहुँचा तो वहाँ गोरख सिपाहियों को इस जन-समूह को रोकने और गोली चलाने के लिये तैयार देखा गया। स्वामी जी ने निर्भयता से आगे बढ़कर अपने लोगों जानकर गरम कर कहा निर्दोष जनता पर गोली चलाने से पहले मेरी छाती पर संगीन मौँट दो।' वृद्ध शेर की इस गर्जन को सुन गोरख सिपाहियों के होश गुम हो गए। उसने तरकाश गोरख सिपाहियों को बन्दूकें नीचे करने का हुक्म दिया। स्वामी जी को इस वीरता की सारे देश में भूरि-भूरि प्रशंसा की गयी।

२३ दिवस १६६५ ने स्वामी श्रद्धानन्द ने अपनी मृत्यु देकर इस लक्ष्य को पूरा किया। एक मुस्लिम लड़की की शुद्धि के कारण, जो आपने पिता के साथ स्वेच्छा से हिन्दू धर्म में प्रविष्ट हुई थी—नया वातावरण दिल्ली स्थित स्वदेशिक समा प्रथम में रोगी पड़े—स्वामी जी पर अश्वत्थर शहीद ने गोली चला दी जिससे उनका तत्काल जीवन समाप्त हो गया।

महात्मा गांधी ने स्वामी जी की मृत्यु पर कहा था स्वामी जी का जीवन जैसा शानन्द था वैसी ही उनकी मृत्यु भी शानन्द ही हुई थी। पंजाब कैसरी लाला लाजपत राय ने स्वामी जी के बलिदान पर निम्नलिखित शब्द कहे थे :—

स्वामी जी की हृदयों से समुद्र के तट पर एक विशाल वृक्ष उत्पन्न होगा जिसकी जड़ें पाताल में पहुँचेंगी। शहीद के लून से नये शहीद पैदा होंगे।

शहीदों की चिन्ताओं पर लगे ह्र वर्ष मेले। वतन पर भ्रितने वालों का वही आँसूरी निशा होगा। स्वामी जी के बलिदान दिवस पर आज़ उनके गुणों का उपा-शक्ति आपने जीवन में धारण करना ही इस महापुरुष के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

## आर्य समाज व मारवाड़ी समाज—२

वंशीलाल जी गोदानी-कोषाध्यक्ष, अर्यसमाज धोलापुर



आर्यसमाज को साधन चाहिए। मारवाड़ी समाज साधन सम्पन्न है। मारवाड़ी भाई देश के सब भागों में फैले हुए हैं। यदि मारवाड़ी भाई आर्यसमाज को समझने का थोड़ा-सा भी प्रयत्न करें तो इनका हृदय सजीवेगा कि जगत के जीवन का गारंटी एक मात्र आर्यसमाज ही है। मारवाड़ियों का दानशीलता देश भर में प्रसिद्ध है परन्तु मारवाड़ियों द्वारा दान की जो दुर्गत हो रही है उसको समी जानते हैं। जैसे दान की दुर्गत हो रही है ऐसे ही हमारी भी दुर्गत हो रही है। जो भी मांगते आता है, मारवाड़ी वह दान की, पात्र कुवात्र की जांच बिये बिना दान दे देते हैं। यह सर्वथा अनुचितकारण है।

मारवाड़ी समाज को चाहिए कि केवल वेद रक्षा, गोरक्षा, राष्ट्र रक्षा, मनु-न्याय की रक्षा, राष्ट्रीय श्रेयता, राष्ट्र भाषा प्रसार व शुद्ध आदि पुनीत कार्यों के लिये दान दिया करें। किन्तु ही अनाथ बच्चों के भ्रिन्का लालन-पालन करके पूना आदि स्थानों पर ईसाई लोग उनको पादरी बनाकर हमारे लिए तैयार कर रहे हैं। दुःख्य भारत में ऐसी २०-२५ संस्थाओं का निर्माण होना चाहिए जहाँ असहाय बच्चों व ऐसे बच्चों के पोषण व शिक्षा आदि का प्रबन्ध हो। मारवाड़ी लोग सुगमता से यह काम कर सकते हैं। यह एक निर्विवाद सत्य है कि ऐसी संस्थाएँ चलाने का ढग केवल आर्य समाज ही जानता है। आर्य समाज के वातावरण में पाला पोषा गया बालक कभी विधर्मी नहीं हो सकता। क्या किसी ने आज तक किसी आर्यसमाज को ईसाई सुपन्नमान बनते देखा है? कुछ स्थानों लोगों ने तो पेट

पूजा के लिए आज भी यही अग्र रक्षता रखा है कि आर्यसमाजों को नहीं मानते, आर्यसमाजों को नहीं मानते। सम्भवतः यह सम्भवतः है कि १०० बार भूट बोकने से भूट सत्य बन जाता है। आर्य दयानन्द जी महाराज ने तो यहाँ तक लिखा है कि श्री कृष्ण महाराज ने जन्म से लेकर मरण प्यन्त कोई पाप नहीं किया। जो आर्यसमाजों राम पर बिये गये प्रत्येक बार का खुद तोड़ उत्तर देने के लिये २४ घण्टे उत्तर रहते हैं उन के सम्बन्ध में ऐसी लुचर बात कहना जाति का दुर्भाग्य ही कहा जा सकता है। आर्य दयानन्द जी आर्य पूर्वजों के इतने अज्ञान्य भवत थे कि उन्होंने सत्याय प्रकाश उदयपुर में लिखा परन्तु इस ग्रन्थ को भूमि में स्थान का नाम उदयपुर न लिख कर राया जी का उदयपुर लिखा है। इसी प्रकार छत्रपति शिवाजी आदि समस्त राष्ट्रीयों पर वह अक्षीम गौरव चरते थे। ऐसे महान आर्य के सम्बन्ध को न सम्भ कर हम अपने कल्याण के मार्ग में स्वयं बाधक बनकर राष्ट्रीय हितों को हत्या कर रहे हैं।

आज भी मारवाड़ियों में बाल-विवाह की कुप्रथा बड़ी दुलदायी है। राखे व कंतु की कहानियाँ व लू-महल की वास्तविकता न समझना बड़ा विनाशक अज्ञान है। वधों आर्य में विवाह क्यों नहीं करने चाहिए। इस रहस्य को और मोटी बुद्धि की व्यवहारिक बात को न सम्भ कर अमूल्यक गणों पर विश्वास करना अपने पूर्वजों का उपहास करना है। इसी प्रकार विषय के रचियता ईश्वर को छोड़ा हुआ मानना व उसका जगाना वे कैसी मूढ़ कल्पनाएँ हैं। महाराज कृष्ण तो नीता में

## आर्य सदस्य विनय नगर देहली से प्राप्त



माननीय महोदय,

कई वर्षों से विनय नगर में श्री प्रख्याती कृष्ण दत्त जी के प्रबन्धों का जोर रहा है, शुरू-शुरू में उस समय इस विषय को लेकर आर्य जगत में विवाद छड़ा हो गया, हर्ष की बात थी कि सावैदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने विरोध किया जो कि वास्तविक था यह दर् में सभा मंत्रों भी ने एक विज्ञापित निकाल कर आर्य जगत को भ्रष्टाचार की भी कि वे इन प्रबन्धों को जिसमें अनेक बातें सिद्धांत विरुद्ध, दुर्गिहास विरुद्ध एवं भ्रमोत्पादक होती हैं। प्रोत्साहित न करें न करने दें। इस के साथ ही अन्य सभी बड़े-बड़े विद्वानों ने आपनी- आपनी समीक्षाएँ देकर आर्य समाज विनय नगर के तत्कालीन अधिकारियों को विवश कर दिया कि श्री प्रख्याती कृष्णदत्त जी के प्रबन्धों को प्रोत्साहन न दें।

कतः आर्य समाज विनय नगर ने, सावैदेशिक सभा के निर्देशानुसार, दिनांक १४ मई १९६२ को नरदय्य किया कि, आर्य समाज एक अनुशासनात्मक संगठन है, कतः अनुशासन में रहने के लिए सावैदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आदेशानुसार

कहते हैं कि जब लोग सोते हैं तो ज्ञानो प्रभु भक्त जागते हैं। प्रदन यह है कि यदि ईश्वर ही सो जाता है तो उसका के जागने का क्या लाभ। यह वेद विरुद्ध विचार छोड़कर हम सब को कल्याण मार्ग का पथिक बनना चाहिए। इस के लिये हम सब को आर्य-समाज का अङ्ग बनना चाहिये। विषय वेद की विमिर नाशक रश्मियों से झालोकिट होगा। प्रभु करे हम सब इस बन्धन में।

प्रख्याती कृष्णदत्त जी के अनु-संधान एवं प्रबन्धानादि कार्यक्रम की भविष्य में, आर्य समाज विनय नगर द्वारा न चलाया जाए, ऐसा नरदय्य किया जाता है।

उपयुक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रख्याती कृष्णदत्त जी के प्रबन्धों को प्रोत्साहन देकर आर्य-समाजों और आर्य समाजों को ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए जो कि आर्य समाज के सिद्धांतों के प्रतिकूल हो।

किन्तु बड़े दुःख के साथ कहना चाहता है कि यह सभा का आदेश और आर्यसमाज के उन आर्य समाजों ने जिनमें उक्त प्रस्ताव पास किया था, बड़े धक्कले के साथ प्रख्याती कृष्णदत्त जी के प्रबन्धों का आर्योत्थन करते हैं, और अपने चरा पर लूब प्रचार कराते हैं। सारे भारत में वैदिक प्रबन्ध अनुसंधान समिति बनाकर आर्य समाजों तथा आर्य समाजों द्वारा प्रबन्धों का अज्ञानन करते हैं। बड़ी सरुया में सरस्य बना लिया है जो लोगभग भोले-बोले आर्य समाजों हैं, जिनको पथभ्रष्ट किया जा रहा है।

आर्यसमाज विनय नगर में सावैदेशिक सभा का आदेश और प्रख्याती जी के उपदेशों के स्वरूपों को जिन आर्य समाजों ने समझा है, उनकी बड़ा सरुया है, बड़ी २ कठिनाइयाँ उठा रहे हैं। इस पर भी बड़े खेद की बात है कि कुछ सावैदेशिक सभा के स्तर के आर्य नेता, प्रख्याती कृष्णदत्त प्रबन्धन वैदिक अनुसंधान समिति जो कि उसके सर्वप्रथम हैं उन महानुभावों को प्रोत्साहन देते हैं। ऐसे ही आर्य जनों ने जो आर्यसमाज १९६२ के चुनाव में हार गए हैं आर्य समाज से अलग होकर एक आर्य संसंग सरल बनना जिया है, उसकी आर्य में आर्य विद्वानों एवं नेताओं का सहयोग लेकर आर्य जगत की झालों में भूख डाल रहे हैं और आर्यसमाज को हार्ति पहुँचा रहे हैं।

(गर्भक से क्रान्ति)

समाजोपना शीघ्रैक सन्ध के  
अन्तर्गत इन्द्र जी पुस्तक सन्धिपत्रों  
की श्रुतिका की निरुद्ध समीक्षा  
की गई है।

आर्यसमाज के इन्हान के  
मानवसों को यह विदित ही होगा  
कि उत्तर प्रदेश के आद्य सामाजिक  
जगत् में एक बार बलौचवस्था  
सम्बन्धी सिद्धान्त को लेकर आर्य-  
पुरुषों में एक हुलद विवाद छिड़  
गया था। एक पक्ष में ह्युद्धन सास  
स्वामी श्रीर प्राक्लिमानन्द शर्मा  
जैसे व्यक्तिये जो गुण, धर्म के  
अनुसार बलौचवस्था मानने पर  
भी श्रवण शब्द पर और देख  
कभी उ अम्माना वया व्यथथा को  
स्वीकार कर जाते थे। इसके  
विपरीत अन्य लोग बया व्यथथा  
का बल गुण धर्म पर ही अम्माना  
मानते थे। आगे चल कर शही  
निवाह प्रसन्न-अम्माना बया  
मादाय घाटी तथा बावू पाटी के  
दुल्लभ रूप में परिवर्तित हो गया।  
मादाय पाटी के समर्थक गुण्डल

कांगड़ी के विरोधी थे तथा अम्माना-  
पुर महाविद्यालय को अम्माना आदर्श  
मानते थे। महात्मा मुशीराम की  
तेजस्विता, बचरेडी स्वभाव एवं  
जने के उदात्तमान सुये के समान  
प्रताप से भी कई लोग जलते थे।  
वेद प्रकाश की भी वही नीति थी।  
उसी इस बात का यथा मजाल था  
कि महात्मा मुशीराम गुण्डल  
क्रान्ति के आचार्य हैं। इसी  
प्रकार मुशीराम नारायण प्रसाद  
(महात्मा नारायण स्वामी) का  
सुदान गुण्डल का अन्धिच्छा  
बनना भी कनिष्ठ स्वामी को नहीं  
सुच। अतः वे वत्र तत्र वेदवहारा  
के अर्थ में नारायण स्वामी जी  
के विरुद्ध लिखते रहते थे। मुशीराम  
नारायण प्रसाद जी से वेद प्रकाश  
को एक वर्ष भी शिक्षावश है कि  
वे वैदिक धर्म हरिप्रदीप की के  
महासुधाती हैं जो यह मन्ते हैं  
कि वेदों में पुनर्कल्प है वहा वेदों

आर्य समाज के प्राचीन पत्र—

# पं. तुलसीराम स्वामी का वेदप्रकाश

(श्री प्रो० भवानी लाल जी भारतीय एम० ए० (R.E.S.)

राजकीय कालेज, पाली (राजस्थान)



में आनन्द इतिहास है। हमें यह  
बात चिन्त्य प्रतीत होगी है कि  
नारायण स्वामी जी का मत कभी  
स्वामी हरिप्रसाद जी वैदिक युग  
के मत के अनुकूल रहा होगा।  
यह निश्चित है कि वैदिक युग जी  
आर्य समाज के सिद्धान्तों से  
वैदिमन रहते थे। वेद प्रकाश के  
सम्पादक को यह भी शिक्षावश है  
कि वैदिक युग का लिखा हुआ  
वेद भाष्य उत्तर प्रदेश की समाजे  
क्यों लगी है ?

मई १९१६ के अंक में एक  
नवीन लेख छापना आरम्भ हुआ  
है—पुराण परिचय। यह कालुराम  
शास्त्री द्वारा लिखित 'पुराण संक-  
शासमार्जन, का उत्तर है। इसके  
लेखक छुट्टनलाल स्वामी ही हैं।  
जून मास के अंक में लाइ 'किचनर  
की मूल्य का समाचार छापा है।  
इस पर सम्पादक की प्रतिक्रिया  
दर्शनीय है—'और सा लता, शांक  
छा गया, कार्यालय बन्द किया  
गया।' राष्ट्रभक्त छुट्टनलाल जी से  
और आशा भी क्या की जा सकती  
थी। इसी अंक में पं० भीमसेन शर्मा  
और आर्यसमाज सौपेक एक पत्र-  
नीय है जिसमें शर्मा जी की भाषी-  
समाज और शंभरी श्रानन्द के  
कृतप्रता की आलोचना की गई है।  
समाचारों के अन्धिच्छा गुण्डल  
कांगड़ी में हुए महा-महोपाख्याय  
पं० गिरिधर शर्मा तथा इन्द्र जी के  
वीच शास्त्रार्थ का विवरण दिया  
है। यह पवित्र शास्त्रार्थ इन्द्र जी  
से समाजत धर्म के दिग्गज विद्वान्  
से उस समय किया जा जब वे  
कांगड़ी गुण्डल से स्नातक हुए कर  
निच्छे ही थे। वेदप्रकाश को यह

शिक्षावश है कि गिरिधर शर्मा के  
विरुद्ध एक नये अपारिपक्व युद्ध  
मनातक इन्द्र जी क्यों मुशीराम जी  
ने लड़ा किया ? यदि उन्हें शास्त्रार्थ  
करवाना ही था तो वे अन्धिच्छा  
व्युद्ध सम्पादकाचार्य या नन्द-  
किशोर देव शर्मा जैसे किसी पंडित  
को महा-महोपाख्याय जी के सामने  
लगा करते। पं० भीमसेन शर्मा के  
सर्वप्रसाद (२६-५-१६) का समाचार  
भी इसी अंक में छपा है। पं० भीम-  
सेन शर्मा आर्य सुधारित इस्लाम  
धर्म के उन्नतमत समालोक और  
शारीकी विद्वान् थे। उनके विषय  
के वेदप्रकाश सम्पादक का यह  
समस्तव्यक्त्यन्त मामिक है—'मैंने  
कहा पवित्र भी, आप बड़ी कठिन  
समाजोपना इस्लाम की करते  
हैं, तो कुछ नहीं कर शोचिय।  
शत्रुदल सुयो न चला दे। तब उन्नत  
दिवा—सुष बढी खेडों पर हाथ  
साफ करते हो, गीदशों का शिक्षा  
लेते हो, गीराणियों का खेडन  
करते हो, मैं तो बकर का शिक्षा  
करता हूँ जिस में जान जाने का  
अज्ञेता होता ही है।' समाचारों  
के अन्धिच्छा निम्न समाचार सहज  
पूर्व है—'किचनर बाद गुण्डल के  
संचालक पं० सुरारिलाल शर्मा के  
सुसुप्त पं० देवेन्द्र नाथ शारीकी साक्ष्य  
नीय के विवाह—अ समाचार  
को अन्धिच्छा में सम्पन्न हुआ।'  
अन्धिच्छा के राजा राधक ने अन्धिच्छा  
राज कुमारी के बहोपवीत संस्कार  
में वेद्यमान नहीं करवा इस पर  
हृदय व्यथित किया गया है।  
जुलाई मास अंक में स्वामी  
श्रानन्द वृत्त अन्धिच्छा पाथ्य (संश्लष

## आर्यसमाज (सेक्टर -)

### चरडीगढ़

संस्कृत का प्रचार न हुआ तो  
वेद का प्रचार नगर्ह आयेगा।  
हायर संस्कृतरी के प्रूप में  
संस्कृत को स्थान देना चाहिये।  
चरडीगढ़ संविधान दिवस में  
प्रधानसचिवों।

आज दिनांक २६-१२-६२ को  
आर्यसमाज सेक्टर - चरडीगढ़  
में स्वामी अम्मानन्द बलिदान दिवस  
के प्रधान पर मे प्रधानसचिवों अंत  
करते हुए शा. तुलसीराम रिटायर्ड  
डाइरेक्टर, मीडोकल बहक रिस्च  
ने जनता और सर. सर. से अन्धिच्छा  
करते हुए कहा कि अम्मान शहीद  
स्वामी अम्मानन्द के महान जीवन  
सं शिक्षा लेते हमें संस्कृत को  
भीषित जानुन करने का प्यवन  
वरे अन्धिच्छा वद का प्रचार धरये  
रह जायेगा। आपने कहा कि  
सरकार को तीन भाषाई फरमुले  
म नीतरी भाषा संस्कृत होना चाहि  
जिस के निवा भारत और भारतीय  
संस्कृतका कोई महत्त्व नहीं रहता।  
दुसरे हायर संस्कृतरी में सार्वभूमिक  
प्रूप में संस्कृत को स्थान मिलना  
चाहिये। अन्यथा संस्कृत का प्रचार  
कराण नहीं होगा। और सीमित  
होनी जाकर समाज हो जायेगी। न  
कौनों आर्य के युग में कोई  
भी विशारथी विद्वान् से बंधित नहीं  
रहना चाहता, तो फिर संस्कृत इस  
के बदले में नहीं अन्धिच्छा साथ हीनो  
चाहिये वाकि देश के वासक और  
वाकिधर्म दोनों विशारथों में सन्धि  
हो सकें।

### आश्राम आर्य पुरोहित

५, सुसुप्त ६९, सं. २ के अन्धिच्छा के  
२५ मंत्रों का तुलसीराम स्वामी  
अन्धिच्छा भाष्य छापया है। यह स्वामी  
जी को अन्धिच्छा पुरोहित के उत्तर  
में छापया है, ऐसा कहा जा सकता  
है क्योंकि उनको सुसुप्त आश्राम  
शु. अ. सं. १९५२ को हुई थी। इस  
के अन्धिच्छा निम्न अन्धिच्छा के अन्धिच्छा  
अंक में स्थान नहीं प्राप्त कर  
सका है।



# गुरुकुल काण्डी क. एक घटना

च. भक्तमाल जी शर्मा (अमीकवासे) लाठें वेम्सफोर्ड (सब समय के बोम्बेसराज), दोही वेम्स फोर्ड, सर जेम्स मेडन (१० पी० के गधन) और अन्य बहुत से छुट भये और हरिद्वार से सजे सिविलियन हाथियों (राजकी महलों) पर सवार होकर गुरुकुल गूम में पहुँचे। वहाँ सब का हादिक स्वागत किया गया। संस्था के सभी मुख्य-मुख्य भाग उन्होंने देख लिये और देले। अन्य में ऊँचे मुख्य भूमि के, बड़ा विद्यालय भवन के सामने सेमल के पेड़ के चतुरे के नीचे संकृत में अभिनयन पत्र पेश किया गया। ऊपर में आप ने भी गुरुकुल के आदर्शों की ओर महाराज गुरीशराम (श्यामी भट्टानन्द जी) के व्यक्तित्व की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की।

भाजन मंदार के चतुरे के पास पहुँच कर वायसराय और उनकी पत्नी को सूचना दी गयी कि इस से आगे जुग नहीं जा सकता और साथ ही प्रार्थना की गयी कि दरबार देखने की कृपा कीजिये। क्युंकर के रिष ते वे शिक्षा में पढ़ गये कि किन शब्दों में इन्कार करें क्योंकि नंगे पांव तो चलना इनके लिए अशुभ है। इतने में महाराज जी के सेवक ने, जिसका नाम जन्ता (सिंह) था, कपड़े के बहुत से जूते छाकर दर्शन के कमरे में आगे रख दिये और वायसराय से प्रार्थना की गयी कि आप चमड़े के जूते छाकर कर कपड़े के जूते पहनाने की अनुमति दियिये। इस पर वायसराय और उनकी पत्नी ने अनुमति दे दी और कड़ी के सेवकों ने वायसराय और उनकी पत्नी के पैरों में से चमड़े के जूते उतार कर कपड़े के जूते

वायसराय और उनकी पत्नी के जूते कोर कपड़े के जूते का आनन्द लेते रहे।

## भारत पाक युद्ध काल में

केन्द्रीय आर्यसभा, अमृतसर का सेवा-विवरण

(यमपाल योग्य उपपधान केन्द्रीय कार्य सभा अध्यक्ष अमृतसर)

भारत और पाकिस्तान के मध्य हुए युद्ध के दिनों में केन्द्रीय कार्य सभा अमृतसर तथा प्राय स्थानीय कार्यसभाओं की ओर से धार-सोसा का अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य किया गया, जिस से उस समयक संकट-काल में इस सीमा-वर्ती नगर की जनता का साहस तथा मनोबल सुदृढ़ रहा। अपने सैनिक जवानों की सेवा के लिये केन्द्रीय कार्य सभा ने वाय-स्टाल लोत कर मुक्त पाव तथा मिठाई का वितरण किया। जब आधिकारियों द्वारा यह संकेत प्राप्त हुआ कि प्राय-वाय-स्टाल की प्राय-व्यवस्था नहीं रहती, तो इस फंड की शेष राकम (३३५) ४० केन्द्रीय कार्य सभा की ओर से १६०० अमृतसर अमृतसर को राष्ट्र-का कोष के लिये दे दी गई। इस के अतिरिक्त ११०० रुपया की बैंकी राष्ट्र-का कोष के लिये केन्द्रीय गुरुद्वारी की गुजाली हाल की नगर को उनके अमृतसर आगमन के क्षणपर पर

की गई। कायम अमृतसर के कोष के भी रखा कोष के लिये ११०० रुपया की बैंकी प्रभावशाली की लाल बहादुर जी शास्त्री को भेंट दी गई।

इस के अतिरिक्त लेमकरय तथा अन्य स्थानों से विस्थापित होकर अमृतसर में शरणगत हुए देश-वन्धुओं की सेवा और सहायता का दायित्व कार्य भी समा की ओर से किया गया। सररी से ठिकुते ब्रह्महाय लोगों में ४४४ रजाईयें, २४ कम्बल, ३६ ऊनी स्वेटर, १० मन के समयका कपड़े, ३ मन बतन तथा सैकड़ों धानिक मुलक वितरण की गई। इस सेन में सेवा-कार्ये वाली भी पाव है और सभा के अधिकारी ब्रह्महाय लोगों के आवास स्थल पर स्वयं पहुँच कर उनकी आवश्यकतानुसार सेवा और सहायता कर रहे हैं।

## करनाल में श्रद्धालन्द

### बलिदान दिवस

२४-१२-६४ कार्यकाय ५ बजे से ८ बजे तक श्री बीरेन्द्र जी सण्यादक वैदिक प्रताप की प्रभजनता में होली गुरुकुल कार्य समाज में स्वामी भट्टानन्द बलिदान दिवस मनाया गया। इस अवसर पर श्री राम प्रकाश पी० एच० जी तथा श्री योगेन्द्र सिंह वादय ने स्वामी जी के जीवन पर प्रकाश डाला।

यन्त्री कार्य वेन्द्रिय समा करनाल

## दयानन्द-वचनामृत

'अनुभव में अनुसंधान नहीं है कि मुझे व्यवहारों की सर्वथा छोड़कर चला-कपड़े व्यवहारों को व्यवहार करने से क्या उत्पन्न ही की जय होती है। भूत का जन्म में पराभव ही हुआ करता है। अधि-जन सत्य ही पर चमककर सत्य के निजान भगवान को प्राप्त करते हैं। इस कारण सब मनुष्यों को सत्य पर अवश्य मेव आश्रय होना चाहिये। यह निश्चित है कि सत्य से बढ़कर धर्म का अंग दूसरा नहीं है। वे जन धर्म हैं जो अपने व्यवहारों को सत्य के अनुसार ही चलाते हैं।

(सं० स्वामी सत्यानन्द जी)

## आर्यसमाज टिडोली

वार्षिकोत्सव दिनांक २०-१-१०

माचें का है। कार्यकाय में जो विधि २४-२६-२० फावरी ही गई है। हम इन से सहमत नहीं हैं। अतः सभा का कोई व्यक्ति इन विधियों पर जाने का कष्ट न करें। इस अवसर पर वं० मोक्ष्म प्रकाश जी महोपदेशक को अवश्य भेजें।

निवेद्यः—

मन्त्री कार्यसभाकर टिडोली

## पाल हरिद्वय दवानन्द

### साव्वेशन मिशन

### होरियारपुर

"डा० शिवराम गुप्ता, रणधीर सिंह गुप्ता निवासी श्री नियुक्ति काल इन्कवा दवानन्द साव्वेशन मिशन, होरियारपुर ने जम्मू ब काशीर के युद्ध पीडित लोगों में प्रचारार्थ तथा बिना मूल्य की-बिचियों बांटने के लिये १-१०-१६६४ से ३०-११-१६६४ तक दो माह के लिये की भी परन्तु कठिन परिस्थितियों को सम्मुख रखते हुए सब के सेवा कालमें दो माह और अधिक कर दी गई है।"

गुम पिन्क राय दास

## शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज संवदा की वह विरोध सभा दि० १६-१२-६४ को भो०. रामचन्द्र जी तिवारी प्रवान आयसवाज संवदा के असाधारण दुःख-व्यथक-व्यथक शोक संकट-काली है तथा ईश्वर से भाचना करती है कि उनकी विधवा-आत्मा को शान्ति प्रदान करें। साथ ही उनके शोक संकट परिहार को ईश्वर प्रदान करें वह सभा उनके परिवार के साथ संवेदन प्रकट करती है।

—कैलाश चन्द्र पासीवाक

प्रचार मन्त्री आर्यसमाज संवदा



टेलीफोन नं० २०५०

[आर्यभट्टादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र]

Regd. No. P.

प्रति मास का मूल्य १२ रुपये वैसे

वार्षिक मूल्य १ रुपये

वर्ष २६ अंक (२)

२६ पाप २०२२ रविवार—दयानन्दान्व १४१—६ जनवरी १९६६

(तार 'प्रादेशिक' जालन्धर)

## वेद सूक्तयः

**वयं सखाय स्वस्तये**  
हम आपने सुख कल्याण के लिए, हे परमेश्वर ! आपकी अपनी परम सलाह बनाते हैं । उसी भगवान को ही परम सलाह बना लेने पर मानव को हर प्रकार की सुख-शांति मिलती है, जीवन सुखमय बन जाता है । निश्चय भगवान् परममित्र बन जाए उसे क्या चिन्ता ?

## हुवेम वाज सातये

हे पितः ! हम आपकी पुकारते हैं, प्रार्थना करते हैं, इस लिए कि हमें आपकी कृपा से ज्ञान, बल प्राप्त हो । आप आदि भोग्य स्वाध्याय मिलें । इनके आप ही तो भयङ्कर दाता हैं । फिर आपके अंशार के द्वार जोड़कर भला और किसके द्वार पर जाए ?

## न कि इन्द्र त्वदुत्तरम्

हे इन्द्र प्रभो ! आपसे बढ़कर कोई भी उच्च उच्च या ऊँचा नहीं है । आप ही सबसे उत्तम ऊँचे हैं । आपकी शक्ति से ही हमें जीवन में हर प्रकार की सुख सुविधा की सामग्री मिलती है । आप महान् महाशक्ति हो ।

आम वे दे दे

## वे दा मृत

### शत्रुनाशक की पूजा करो

जो राजा चर्षणीनां माता रथेभिरभ्रिगुः ।

विश्वासां तरुता पृतनानां ज्येष्ठयो वृत्रहागृणो ॥

साम० अ० ३ खण्डः । मन्त्र ?

अर्थः—(यः) जो (राजा) स्वामी शासक, सभ का सिंहासनायक है, जो (चर्षणीनाम्) सारे लोभों का, जनता का (यत्) पहुँचने वाला है (रथेभिः) रथादि आपनी शक्ति से सारी प्रजा तक पहुँच कर उसकी रक्षा करता है । और जो (अभ्रिगुः) संवमी तथा ऊँचे आचारवाला है । वह इन (विश्वासां) सारे (पृतनानां) शत्रुओं सेना का (तरुता) पार करने वाला है । वह (यः) जो वह (वृत्रहा) वृत्रों को राक्षसों व शत्रुओं को मारने वाला है—उस वीर नायक को (ज्येष्ठ) महान् वीर (गृणो) में पूजना है । हम सारे उल का मान-सम्मान करते हैं ।

भावः—हमें क्या और किस बात की चिन्ता है ? हो भी क्यों ? जबकि हमारा नेता राजा व सेनापति इतना महान् तथा वीर है । वह सारी प्रजा का सच्चा शासक नेता है । उनके सुख सुख में सदा साथ रहता है । उसका सैनिक बल, नाना प्रकार की रथ शस्त्र अस्त्रादि का शक्ति सारी प्रजा तक पहुँच कर उसको सब विपत्तियों से बचाती रहती है । वह सेना वक सदाचारी है । उसका अपने पर स्वयम् है । सारा जनता उसके लिए सन्तान के समान है । राजा सब का पिता होता है । वह राक्षसों का नाश करने वाला है । शत्रुओं को सारी सेनाओं के मुँह मोड़ देता है । हमारे इस वीर नायक के सामने कोई भी शत्रु टिक नहीं सकता है । सर्व-विजयी है । ऐसे सदाचारी, बलवान् वरुणाधी तथा महान् राष्ट्र के नायक को पाकर हम अत्यन्त हैं । उसकी बार व प्रशंसा करते हैं । उसकी वीरता के गीत गाते हैं । ऐसे वीर नेता पर हम सब को मान है—सं०

## ऋषि दर्शन

### विद्वान्मः क्रान्तदर्शनाः

विद्वान्म वा ज्ञानी वे हैं जो उंचे दर्शन वाले होते हैं । जो किसी तरह के धम्म पहुँच कर उसकी वास्तविकता को जानते हैं । साधारण लोग तो केवल बाहर की दृष्टि से ही देखते हैं—पर विद्वान् लोग धम्म के तत्व तक पहुँच जाते हैं ।

### वयं सर्वदोषाम्हे

हे ऽसु जी ! हम सब सदा आपकी उपासना करने वाले वयं । आपके पास वेदों आपका भजन भक्ति किया करें । आपने स्थान पर हम और किसी और की पूजा भक्ति न किया करें । आपके भक्त बनकर आपकी उपासना किया करें ।

### सर्वानन्द वर्धकम्

वह भगवान् सब प्रकार के सुख आनन्द का वृद्धि करने वाला है । उसी की कृपा एवं आशीर्वाद से जीवन के कष्ट दूर होकर सुख भी प्राप्त होती है । परमेश्वर स्वयं सुख रूप तथा आनन्द-पन है । उसी की उपासना से जीवन में आनन्द के अमृत का पान किया जा सकता है ।

आम वे नू मि का से

(गतक से आगे)

बाकी सब काम करो लेकिन अब कोई काम न हो तो सखसंग में आने की भी कोशिश करनी चाहिए। मेरे एक मित्र ये बहू प्रायः दिन को मेरे पास आते थे लेकिन रात को कथा में नहीं आते थे। मैंने एक दिन उन से कथा में न आने का कारण पूछा तो कहने लगे—'आप अपनी कथा में ईमानदारी और सच बोलने की बातें करते हैं। यदि मैं तुम्हारे उपदेश पर चलूँ तो मेरा कारोबार ही चौपट हो जाए। इसी लिए मैं जान-बूझकर कथा में नहीं आता। इसी लिए मैं कथा करता हूँ' कि जो लोग सखसंग में नहीं आते उनके बारे में जरूर दाल में काला है। गृहमन्त्री भी नन्दा भ्रष्टाचार को खत्म करना चाहते हैं। मेरा तो उनसे मुझसे है कि नन्दा जो! आया स्वयं आर्यसमाज के सखसंग में आया करो और देखा करो कि कौन लोग सखसंग में आते हैं और कौन नहीं। जो आप उन्हें ईमानदार समझते हैं कोई गलती न होगी। जैसी संगत वैसे विचार। बरसात का एक जल बन्दू सीप के मुँह में जाय तो सोती बन जाता है और साँप के मुँह में जाय तो विष। स्वामी दयानन्द ने 'सत्यार्थ प्रकाश' में बार-बार कहा कि भ्रष्ट लोगों की संगत में बैठो, अच्छे ग्रन्थ पढ़ो और सुनो। हमारे पृथ्व स्वाध्याय किया करते थे लेकिन अब बहुत कम लोग स्वाध्याय करते हैं। श्रुतियों ने लिखा है कि प्रतिदिन नियम पूर्वक स्वाध्याय एक बहुत बड़ा पुण्य है। महाराष्ट्र इंटरराज जीने रूपना-समसा जीवन दयानन्द कालज को प्रतिबद्ध था। एक समय आईयों से उनका कुछ मन-मुटाव हो गया। मैंने धन उन्हीं को जो नही था। एक दिन ऐसा आया कि मैंने सिकर्फे छह आने के से थे। उन्होंने लाहौर में शाहमी

# राष्ट्र-भक्ति और प्रभु-भक्ति-७

(श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज की अमृतमयी कथा)



दरवाजे के बाहर से बन सुना लिए और एकाध दिन उन से गजारा किया। उन्होंने दिनों में महात्मा इंटरराज जी की कुछ रोग तीव्र आलोचना भी करने लगे थे। मैंने एक दिन जब उन से इस आलोचना का उल्लेख किया तो कहने लगे—'यहां तो ऐसा ही है। रोजी घर से साम्नी, गासियां बाहिर से और काम करो आया समाज का।' एक दिन महात्मा जी बहुत दुःखी थे, इर्द-गिर्द के वातावरण से अस्वगत परेआन। मुझे कहने लगे—'रात भर मैं बहुत परेशान रहा। नींद भी नहीं आई। अजीब तरह की बेचैनी थी। सोच रहा था कि मैं सुख के लिए समाज में आया था, यह क्या हुआ। इसी परेशानी में मैं अपनी अरमानी की ओर बढ़ा और अपना-कम मेरा हाथ भगवद्गीता की ओर बढ़ गया। मैंने पुस्तक जो खोली तो सामने इलोक आया जिसका अर्थ है—हे मनुष्य! तेरा कर्म करने का अधिकार है, फल की इच्छा का नहीं। फल को तो अगवान पर छोड़ दे। महात्मा जी ने मुझे बताया कि इस इलोक को पढ़ कर मेरा मन शांत हो गया। स्वाध्याय ने मेरा मार्गदर्शन किया।

विचार-शील बड़ी प्रबल होती है, पटम बम और हाईड्रोजन बम से भी प्रबल। दुनिया की बागडोर ही विचार के हाथ में होती है। जैसा विचार व्याप होगा, वही ही दुनिया होगी। आज कल रूपय को ही सब कुछ समझा जाता है। कहा जाता है, रूपय के बिना दुनिया नहीं। दुकानदार, बाब जी, टैकेदार, सभी अपना कमाते हैं। रूपय के लिए ही ब्लैक मार्केट करते हैं। रुपया कमाने की मनाही नहीं। लेकिन धन सब कुछ ही,

यह नहीं। धन केवल एक साधन है, मानव के शौचिक सुख का। लेकिन आज धन को सब कुछ समझा जाता है। यह विचार फैल गया है कि जितना धन, उतना सुख। धन के लिए दौड़ पूरा होती रहती है।

चारों वेदों में कहीं भी धन की निन्दा नहीं। क्यों नहीं निन्दा? धन में सुराई नहीं, बलियों ने इसे बढ़ाना किया। साधु लोग बम्बई जाकर बड़े-बड़े सेठों के पास ठहरते हैं। सेठ बर धममते हैं कि धन ही सब कुछ है। धन को बढ़ाई का कारण समझते हैं। तात्पर्य कि धन के विचार ने सुख बरान कर दो।

सत्य के मैंने छह आचार बताए थे—सत् आचार, सत् विचार, सत् उच्चारण, सत् व्यवहार, सत्य आहार, सत् आचार। सब से पहले सत् आचार है। जिसका बरिज पवित्र नहीं, उसकी दो कीर्ती कीमत नहीं। आचरण की सर्वाधिक महत्ता है। जिसने अपने मन को पवित्र नहीं बनाया, कभी शांति नहीं पा सकता। मन से ही विचार उत्पन्न होते हैं। कितने ही वेद पढ़ें, उपनिषद पढ़ें मन में खोद है, आचार दूषित है तो मन को कभी शांति नहीं मिल सकती। सदाचार के लम्बे चौड़े अर्थ हैं। मैं दुनियासावात करता हूँ तो सदाचार से नीचे गिरता हूँ। मेरे पास अपने हो और मैं मूले को भोजन नहीं खिलाता तो सदाचारी नहीं कहला सकता। मुझमें बल है, और किसी कमजोर की रक्षा नहीं करता तो सदाचार से नीचे गिरता हूँ।

फिर सच उच्चारण आता है। सच आचार कहता है, सत्य बोल, नीचा बोल, भीटा बोल। ऐसा सत्य न बोल जो झूठा हो। ऐसे सत्य कब क्या (जान को

नगर को ही आग लगा दे। इसलिए भीटा सत्य बोल। मानव की जिज्ञा में लक्ष्मी बसती है। भीटा सत्य बोलने वाले की जिज्ञा में ही लक्ष्मी भाग करती है। यह जिज्ञा ही शत्रु बनाती है। राजाना देखने में आता है, भीटा बोलने वाला दुकानदार व्यादा कमाता है। जो दुकानदार कड़वा बोलता है, उस का भद्रा बैठता है। दे मानव, तेरी जिज्ञा इनकी कोमल है, तु कटोर क्यों बोलता है? बरेली में एक विवाहित युवती मेरे पास आई और कहने लगी—साधु नाम की बहुत सेवा करती हूँ, लेकिन फिर भी कद्र नहीं होती। रनका वेदा भी मुझ से बिरफ हो रहा है। कोई जन्म-मंत्र बता दो जिस से सही कर्म में हो जायें। मला आर्य समाज के पास जन्म-मंत्र कहाँ मैंने कहा, वेदों आचरनाज के साधु तो खुले आम मन्त्र देंगे। शाब्द वेचारी बहुत दुखिया है। मैंने पूछा, तुम अपने साधु-नाम्न की कंसी सेवा करती हो? जवाब मिला उनके अच्छे-अच्छे परिवान बनाकर खिलाती हूँ। खोर में चादाम, केसर, विला मित्रा कर खिलाती हूँ। मैंने कहा, फिर वे तम से नाराज क्यों हैं? यह बोलो महाराज कभी कभी क्या बोल देती हूँ? मैंने कहा, फिर हो गया थैसा पार। बरी, तु सेवा तो करती है, खीर से मेरे डाल कर भी खिलाती है, तेरी जुवान की क्यू-बाइट सब पर पानी फेर देती है। कड़वा न बोल, सेवा चाहे मोड़ी कर।

खीरा छिर से काटिए और मखियन नोन खगाय, रहिमन कड़वे सुख को चरियव यही सजाय।

खीरे की कड़वाहट दूर करने के लिए उसका छिर काट देते हैं। अरे मनुष्य! तु भी अपनी जिज्ञा का क्यू-बायन निकाल दे और मनुष्य भावी बन। इस से तुझे भी और दूसरों को भी सुख मिलेगा।

(अन्त)

आर्य भार्गवों को यह जानकर विशेष प्रसन्नता होगी कि आर्य-प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रथिम और सुयोग्य मायक श्री महाशय मेलाराम जी ने ज सखर के सुप-विदित हरिवन्द्य संगीत मेला में जहाँ कि देशभर के प्रसिद्ध संगीताचार्य्य एकत्रित हुए थे २६ दिसम्बर से २६ दिसम्बर तक विशेष कार्यक्रमों में भाग लिया। उन्होंने और श्रीमच्छासी छासावरी अलीया-विलावल आदि रागों को गानकर राग जानने वाले कलापों से सम्मान प्राप्त किया और सभा के बरा को बढ़ाया।

आशा है कि सभा के दूसरे अजनेपदेशक श्री राग विद्या में विशेष ज्ञान प्राप्त करके आर्यसमाज की इस दिशा में ऊर्ध्वत के सहायक होने और श्री मेलाराम जी के इस कार्य से मार्ग प्राप्त करेंगे।

**संकरूप-पत्र**

दो एक वर्ष हुए आर्य समाज के कुल गण-माय्य सचिवों ने स्वयं आयत्ता सभा के कार्यकर्ताओं की प्रेरणा से संकरूप पत्र भेरे थे, अधीन इतना चन्द्रा हम प्रति वर्ष सभा की सहायता को देंगे। सभा के ही कर्मचारियों की तुलना से संकरूप पत्रों के अनुसार धन की बसुती निवर्तन रूपसे न हो सकी। इस वर्ष सभा के कार्यालय ने उन सब महात्मावों की सेवा में जिन्होंने संकरूप-पत्र भेरे थे प्रार्थना की है कि आपनी प्रतिज्ञा की हुई धन-राशि सभा को देने की कृपा करें।

कुल सचिवों ने उत्तर भेजे भी हैं। इस सम्बन्ध में निवेदन यह है कि यदि कोई महात्माव संकरूप पत्र समाप्त करना चाहें तो स्पष्ट कार्याव को लिख दें पर संकरूप पत्र रहते हुए अपनी प्रतिज्ञा की हुई धन-राशि उन्हें सभा को देने की चाहिए। यह धन एक धार्मिक अर्थ है।

वाँद किसी सचिव ने सीधा

**आर्य प्रादेशिक सभा के समाचार**



या सभा को किसी कारणों द्वारा संकरूप पत्र का धन सभा को भेजा हो और उन्हें रसीद प्राप्त न हुई हो तो वे अवश्य सभा के कार्यालय को लिखें।

**फिरोजपुर आर्य अनायालय**

आर्य समाज के जीवन में फिरोजपुर के आर्य अनायालय का विशेष महत्व है। ऋषिद्वय दयानन्द ने अपने धरकमलों से इसकी स्थापना की थी। आर्यसमाज की यह एक महान् संस्था है, इसका विवरण सभा की वार्षिक रिपोर्ट में प्रकाशित होगा।

यहाँ इस अनायालय की चर्चा एक विशेष प्रयोजन से की जा रही है। दीवान जयकृष्ण जी नन्दा, महात्मा हंसराज जी के अनुसरण दयानन्द ऋषिनी सरकारी नौकरी से रिटायर होकर इस अनायालय की अवैतनिक सेवा में लग गए थे। आज से लगभग १२-१३ वर्ष पूर्व जब उन्होंने धर्म मार सम्भाला था उनका हाथ बंटाने के लिए उनकी धर्म-रत्नी महात्मा हंसराज जी की सुपुत्री, स्वनामधय देवी, चन्द्र देवी जी उनके साथ थी। इस अवैतनिक सेवाकाल या ठीक कहा जाय तो तपस्याकाल में पूज्य चन्द्र देवी जी का स्वर्गवास हो गया। पर भी जब कृष्ण जी नन्दा एक साधक के समान अपने काय में लगे रहे। इस वर्ष प्रायः ७४ वर्ष की आयु होने पर माय्य नन्दा की अन्त्यात्म साधना के लिए पूज्य महात्मा दयानन्द स्वामी जी के तपोवन में एक डेढ़ वर्ष के लिए जा रहे हैं।

इस १२-१३ वर्ष के समय में भी नन्दा जी ने इस संस्था को नया रूप कर दिया है। अपने सुयोग्य सहायक श्री प्रतापचन्द्र जी मेहता तथा उनकी धर्म-प्राया धर्म-पत्नी की सहायता से अपनी इस संस्था का जो सुन्दर रूप बना दिया है वह जाकर देखने की वस्तु है, कहने सुनने की नहीं। इस आश्रम के वचने-वाचवर्ता किसी भी रूप में अनाथ नहीं कहे जा सकते। उनका लालन-पालन साधारण गृहस्थों के बच्चों के समान हो रहा है। वे हृष्ट-गुष्ट और सुखी हैं।

सबसे विशेष बात जो भी नन्दा जी की तपस्या और अध्ययनसे ने की है वह है इस आश्रम की एक धन हीन संस्था के रूप से बदलकर एक महान् और समृद्ध संस्था बना देना। आज इस संस्था में रागी कोष की ठाई-गीन लाख के लगभग धन है। इस राशि का एक-एक रुपया नन्दा जी के द्वारा संगृहीत है। इस राशि से भी क्रमशः वह सहयोग है जो भी नन्दा जी ने फिरोजपुर की प्रत्येक आर्यसमाज और आर्य भार्गवों से प्राप्त किया है। उनके स्वभाव की सरलता, वैय्य, परिश्रम-प्रेम, कर्तव्य निष्ठा और सुक-भूषण ने फिरोजपुर अनायालय को एक कादशी संस्था का रूप दिया हुआ है।

सभा को तथा आर्य समाज को पूर्ण आशा है कि भी नन्दा जी अपनी साल डेढ़ साल की अन्त्यात्म-साधना पूरा कर फिर समाज-सेवा के कार्यों को संभालेंगे।

हम इस अक्षम भी नन्दा जी का फोटो भी देना चाहते थे पर उन्होंने हमारी बार-बार प्रार्थना पर भी अपना फोटो देना स्वीकार

न किया। वे ऐसी पब्लिसिटी से बचना चाहते हैं।

**सभा वा हम वर्ष का लेखा-पत्रिका**

सभा का वार्षिक विवरण प्रका-

शित हो कर समाजों के प्रतिनिधियों के हाथ समय पर पहुँच जायगा। पर सभा केवल प्रतिनिधियों की ही नहीं, प्रत्येक उस व्यक्ति की है जो अपने की ऋषि दयानन्द का अनुयायी कहता है। इसलिए आर्य लोगों को भी सभा के कार्य का परिचय ही इस दृष्टि से संघटन लेखा-पत्रिका 'आर्यसंज्ञा' के इन अंकों से दिया जा रहा है।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा बाहर से देखने वालों के लिए तो एक बड़ी शक्तिशाली और समृद्ध संस्था है। इसे कालिज विभाग की आर्यसमाज कहा जाता है और समझा जाता है कि इतने कालिज धन-धान्य सम्पन्न कालिज इसके अधीन है। अतः इसके पास भी स्वयं सम्पत्त होनी चाहिए। कुछ अंश तक यह बात ठीक भी है। सिद्धांत रूप से इतने बड़ी र संस्थाएं इसके अधीन हैं पर प्रबन्ध और आर्थिक दृष्टि से संस्थाओं का प्रबन्ध और दोष कलम है। सभा का दोष अज्ञान है।

सभा का लगभग ४०-६० हजार वर्ष का रूच्य है। वाद समाजों निर्वर्तित रूप से अपना भाग सभा को देती जाए तो धन सम्यह में कठिनाई नहीं होती पर व्यवहार में ऐसा होता नहीं। प्रत्येक समाज को दर्रादा, उत्सव व कथा इत्यादि पर एकत्र धन का कुछ भाग तथा ऋषिवोध तथा ऋषि निर्वाण के उत्सव पर एकत्र धन सभा को भेजना चाहिए। पर वास्तविक स्थिति यह है कि इस वर्ष निम्न संख्या में समाजों ने अपना भाग दिया :-

(शेष पृष्ठ ६ पर)



समाजकीय—

# आर्य जगत्

बर्ष २१] रविवार २०२२, ९ जनवरी १९६६ [अंक २

## जन्मदिन की बधाई

आर्य प्रादेशिक समाज संघ का अग्रगण्य नगर का साप्ताहिक मुखपत्र आर्यजगत् अपने जीवन के पच्चीस वर्ष समाप्त करके २६वें वर्ष में अपनी पग रक्खता हुआ अपने सारे आर्यसमाजकों को प्रेमी परिवारों को दिवस के बधाई देता है। अपने इस जन्मदिवस पर सच्चा हार्दिक सम्मान करता हुआ उनका बचपन के हर प्रकार के सहयोग के लिए आभार प्रकट करता है। अद्यजगत् समाज का अपना घर है। समाज आपकी अपनी विशाल संस्था है। इसका सब प्रकार का ज्ञान इसके शुभचिन्तकों को सदा रहता है। यह देख बिचार कर हमें बड़ा आनन्द होता है। आर्यसमाज के मान्य तपस्वी सत्य महाशयजी, भाईकुं फिल्लस्टर बा० दीवानचन्द जी कानपुर जैसे नेताओं, अपने शिक्षण के विशाल संस्थानों के माननीय प्रिंसिपल एवं प्राध्यापक महोदयों, समाजों के प्रेमी आचार्यों, समाज के विद्वान्सेवकों, बचियों भाईयों व बहिनों, समाज के माननीय सम्जन, अपने साथी आर्यवृत्तों, उपदेशक भवनों की महात्माओं की आर्यजगत् पर सदा ही कृपा रहती है मान्य प्राध्यापक सज्जन तो आर्यजगत् का परिवार ही हैं। अनेकों सारे ही हैं। अनेकों सारे ही विशाल परिवार का जिनका भी अन्तर्बाध किया जाये, भोड़ा ही है। हम तो उनके सेवक हैं। समाज के आर्य गोत्र अधिकांशतः के आदेश पर आर्यसमाज के सारे कार्यकर्मों विधावी बनकर अपने कार्य प्रदान में लगे रहते हैं। जिनका भय है सब

आर्यजगत् के प्रेमी परिवार को है। जिनकी बनीं त्रुटियाँ हैं वे हमारी हैं। आज आर्यसमाज अपनी कानुन के २४ वर्ष समाप्त कर चुका है। जन्मदिन मनाते हुए सारे इसके हितचिन्तकों को बधाई देता हुआ उनके प्रति आभार प्रकट करता है। तब वर्ष की मानि हुई वर्ष भी उनके पुरे-पुरे सहयोग और कृपा की पूर्ण आभार रखता है। आज का पुण्य बड़ा ही विषम है। हर बात में कार्य तथा वस्तु में संकट का सामना करना पड़ता है। समाज अपने वेद प्रकार के पावन पत्र पर चलती हुई प्रचार व प्रसारिताह प्रकाशन के द्वारा अपने कार्य में जटी हुई है। धर्म प्रचार का कार्य ही वा भक्ति प्रकाशन हो। इनकी क्या अवस्था है। यह सब जानते हैं। समाजों के जिनके भी पत्र प्रकाशित होते हैं, उनमें वर्ष बाद फिन्ने हजारों का पाटा होता है। यह उनके वार्षिक बजट से ज़्यादा बन जाता है। पञ्जाब में प्रकाशित होने वाले वार्षिक पत्रों में हजारों का पाटा रहता है। बहुत ही आर्थिक पाटा खाता है। समाजों की स्थिति से उनके पत्रों का क्या जाता है। हमारी अवस्था भी ऐसी है। परन्तु अधिकांश पाठों की नहीं। वार्षिक पत्रों को सरकारी या अन्य ध्यान न मिलने के समान है। सन्तता की वार्षिक पत्रों की ओर ध्यान देनी है यह भी सब के सामने है। कई कठिनशर्त, सम्बन्ध हैं जो कार्य बल्ले की जानते हैं फिर

भी कल्पना का पावन किया जा रहा है। आर्यसमाज का यह भी महान् मिशन है। हम चाहते हैं कि नगर, कला-माम की कोई भी सम्मान देसी न रहे। अपनी कोई भी शिक्षण संस्था ऐसी न रहे— जहाँ समाज का आर्यजगत् न जाता हो। कई समाजों पांच २ दूस २ और बीस २ वर्षों की संस्थाएँ हैं। उनकी बनीं छुपा है। यदि अत्यंत बड़ी समाज इत पकम का सहयोग देवे तो क्या क्या है? हमारी संस्थाएँ बिरोधियों को प्रभाव समाज को पूरा सहयोग देती हैं यदि संस्था के अत्यंत मान्य प्रिंसिपल, मुख्याध्यापक महोदय, समाज के प्रधान महात्माव भी व्यक्तिगत रूप से आर्यजगत् लेकर स्वयं लेवें वा किसी दूसरे के नाम कर दें तो बहुत काम हो सकता है। यदि कोई समाज या मान्य सम्जन प्रचार के नाते अपनी ओर से कुछ राशि देकर, आर्ये २ मूल्य पर विचारधर्म, पुस्तकों या अन्य लोगों तक पहुँचाने की कृपा करें तो प्रगति हो सकती है। आर्य जगत् की उन्नति अपनी समाज की उन्नति है। हम मान्य समाज के अधिकांशों के साथ इस बात आर्यजगत् की प्रगति के बारे में विशेष विचार कर रहे हैं। काम सुपर ही होगा। आर्ये जगत् सच्चे बच्चों में आर्यों का जगत् बन जाये—येते हमारा संकल्प है। विशेष निवेदन बाद में ही करेंगे। इस समय तो आर्यजगत् के नये जन्म दिवस पर इसके सारे परिवार को बधाई देते हैं। सबके आभारी हैं। प्रभु का धन्यवाद करते हुए सब से नम्र धारणा है कि इस वर्ष भी अपना सहयोग, प्रेम तथा शुभचिन्तन आर्य जगत् के साथ रखते रहें। यह समाज का ही धर्म समाज का ही है। इस के सारे परिवार को बधाई है।

## वि० भगवान् दास जी

माननीय प्रिंसिपल भगवान् दास जी सन् २०, प्रिंसिपल दवानन्द कलेज कम्बलाशहर की विदुषी सुप्री सोपाध्यकती शारदा राती का शुभ विवाह समारोह से सम्बन्ध हो गया। इस शुभसमाज पर हम अपनी व आर्ये जगत् के सारे परिवार की ओर से आर्यों प्रिंसिपल महोदय को बहुत-बहुत हार्दिक बधाई देते हुए प्रभु से उस भोगलक्ष्मी जोड़ों के जीवन शुभ-आयाम की हर प्रकार की कुशलता की सदा प्रार्थना करते हैं। इस अवसर पर एक बात सब के आर्ये जगत् से बहना चाहते हैं। माननीय प्रिंसिपल भगवान् दास जी सच्चे आर्यों में एक किशानिक नेता हैं। आर्यसमाज की विद्वत् विभूति व सम्मन हैं। जीवन से जीवन के निर्माता हैं। आर्यसमाज के नूतन-नये व्यवस्था में से एक हैं। अपने अपनी सुप्री की शुभ विवाह के पुनः अवसर पर जो निमन्त्रण पत्र जगत् का मान्य सम्जनों के पास भेजे हैं। वह प्रगति व राष्ट्रीय आशाएँ हैं ही हैं। अंगरेजी में नहीं। कलेज के इतने प्रिंसिपल के उच्चतम पर बैठक भी उनको विदेशी भाषा का ज्ञानोद् नहीं। न उसे गौरव देते हैं। राष्ट्रीय भाषना से मोह-प्रोत होकर हिन्दी में निमन्त्रण पत्र जगत् का सबका नेतृत्व किया है। यह विशेषता प्रिंसिपल भगवान् दास जी में है। दूसरों में कम है। आर्ये समाज की संस्थाओं में आर्य भी सारा काम जनरे को म होता है। वेंडकों की, करिंटियों की कारवाई जनरेजों में बोलों व लिखो जाती है। पर व्यवहार भी जनरेजों में होता है। इंग्लिश का अधिकांश भागोद् है। हम चाहते हैं कि हमारे नेता व सम्बन्ध प्रिंसिपल भगवान् दास जी के इस श्रेष्ठभाषा प्रेम के गौरव से प्रेरणा लेकर प्रत लेवें कि हम भी अपने समारोहों पर राष्ट्र भाषा को सम्मन दें।

—विशोक पत्र

### शिक्षा समिति का गठन

पंजाब सरकार ने इस प्रांत में एक नई समिति बन ई है जिस का काम अन्य शिक्षा की इजाजत वक्तों पर विचार करने के साथ रह भी होगा कि साईस के साथ रूठत वा विषय लेने के बारे में भी विचार करना होगा। उस समिति में अन्य मान्य सदस्यों के साथ मानस्यर (मिलिपल रामााम जी एम. ए. पी. भी) होंगे। इस इस समिति का स्वागत करते हैं। मानस्यर मिलिपल रामााराम जी एम. ए. एक माने हुए शिक्षा विशेषज्ञ हैं। बहुत ऊचा सोचते तथा ज्ञातिमक रूप पर समति देते हैं। हमें इस समिति से बहुत आशाएं हैं। आज संकृत वा पंजाब में तो स्कूलों में गला घोट कर रहा गया। विदेशी राज्य में तो स्कूलों में संकृत को प्रोत्साहन मिलता था। आज अपनी ही संकृत को छोड़कर उत्तम अंक लेते थे।

पर खेद है कि आज अपने राज्य में संकृत को सर्वथा समाप्त कर दिया गया है। स्कूलों में जा कर देखें कि संकृत की दशा कैसे सिसकती है हम समिति से निवेदन करेंगे कि भारतीय संस्कृति से स्रोत संकृत के प्रवाह का जारी रखने का प्रयत्न करेंगे—

### आर्य समाज लॉरेंसरोड

#### अमृतसर

आर्य समाज लॉरेंसरोड अमृतसर में समग्र-समय पर आध्यात्मिक तथा समय के अनुसार समारोहों व यज्ञों का सुन्दर कार्यक्रम होता रहता है। प्रभु ने यहाँ के परिवारों को सम्पन्नता तो दी है बहन इन्हें के विचारों में धर्म निष्ठा तथा प्रभुसे भी भर दिया है। यहाँ निरन्तर वर्षों से प्रातः ६ बजे वा सस्केन प्रवाह रहता रहता है। इस प्रातः १५ दिसम्बर से दिसंबर २६ दिसम्बर तक वृष्ट यज्ञ

## आर्य युवक समाज हिसार (पंजाब) का वार्षिक साहित्य प्रचार (१९६५)



देश विदेशों में साहित्य का वितरण निम्न प्रकार से रहा:—

अमरिका में साहित्य वितरण लगभग ५५ पुस्तकें भेजी गईं। अमरिका में पुस्तकें भेजने का कार्य रुबे भी डा० प्रेमदत्त जी, डा० फकीर शर्मा जी तथा डा० लक्ष्मण दास जी ने विशेष रूप से किया।

- १. Introduction to vedas
- २. Elementary teaching of vedic religion
- ३. Essence of vedic religion
- ४. Dayanand & Aryasamaj
- ५. Vedic Prayer
- ६. Agni hotra

इंग्लैण्ड में साहित्य प्रचार कार्यक्रम भी डा० राजबहास विग द्वारा कुछ चुनी हुई पुस्तकें इंग्लैण्ड में

वा बहा प्रभावशाली कार्यक्रम था। प्रातःकाल सात बजे से सात बजे तक अथर्व वेद चौथे काण्ड के १५ वें सूक्त के मंत्रों तथा पहले मन्त्र से बनी संख्या में नर-नारी पधार कर आहूतियाँ देते थे। बारी-बारी से यहमान बनते रहे। अर्द्धा का मनोरम दृश्य था। खुले दिल से वृत्त और सुगन्धित विशेषसमग्री का प्रयोग होता रहा। पूजाहृति पर तो किंतना भव्य दृश्य था। देख कर सब का चित्त प्रसन्न हो गया। सब को शुभशी मिलता। इस यज्ञ में पं. त्रिलोक चन्द्र रावनी, पं. लक्ष्मीराम जी शर्मा वीद प्र० अचिठ्टा सभा पं. सरपंचाल जी शर्मा पं. रघुबीर सिंह जी, पं. जगत राम जी शर्मा राम जी शामिल थे। सभ में श्री. मोहनलाल जी अरोड़ा प्रधान मन्नाज, वैद्य विद्यासागर जी मन्जी सब को बधाई दी।

भेजी गईं। यहाँ एक गान-कथौ-जिक बहन को भी कुछ साहित्य भेंट किया गया।

एक भारतीय भाई को अथ इंग्लैण्ड निवासी है जब वह भारत आया तब उसे १० पुस्तकें भेंट की की गईं। उस साहित्य में एक पुस्तक भारत पर पाक हमले के सम्बन्ध में भी थी। पुस्तक ऊपर-लिखत है।

देश में साहित्य प्रचार कार्य लाला लाम्बतारा नगरपालिका पुस्तकालय, सर्वोदय भवन (गार्डी अन्वयन भेन्द्र) चैटर्जी स्मारक पुस्तकालय, नगरपालिका पुस्तकालय साइल टाऊन, हिसार में भी कुछ साहित्य भेंट किया गया। जिन्होंने लिखत रूप से आर्य युवक समाज को धन्यवाद दिया।

#### वैदिक मिशनरी श्री कृष्ण विचार को साहित्य भेंट

मैसूर प्रांत में प्रचार हेतु आर्य युवक समाज हिसार की तरफ से भी कृष्ण विचार जी को लगभग अठ्ठे जी का साहित्य भेंट किया गया इस साहित्य के साथ साथ बाईबल (हिन्दी अनुवाद) जिसमें विद्वानों द्वारा उठाए गए झगड़ों पर निशान लगाए हुए थे।

#### श्री जिलाधीश महोदय, हिसार को साहित्य भेंट

जिलाधीश महोदय जब हरि-वाष्पा गीतासा (कम्प्लेट) के वार्षिक उत्सव पर पधारें तब उन्हें कुछ साहित्य भेंट किया गया। इस में यह लेख था।

#### अमरिका-शांति सेना के नवयुवकों में साहित्य भेंट

भारत में आये हुए शांति सेना जो अमरिका से सम्बन्धित

थे, उनको भारतीय संस्कृत से परिचय करवाया गया और उनको यह भी बताया कि किस प्रकार भारतीय साहित्य अपने आप में विज्ञान और आध्यात्मिकता से पूर्ण है। उनको कुछ साहित्य भी भेंट किया गया।

#### पंजाब कृषि विज्ञान विद्यालय के पुस्तकालय में

कुछ साहित्य डा० एच. एल. सहगल अस्सिस्टेंट डायरेक्टर महोदय की सहयोग से रखा गया। श्री एच. एल. सहगल जी को भी कुछ साहित्य भेंट किया गया।

#### पंजाब विश्वविद्यालय में साहित्य वितरण:—

पंजाब विश्वविद्यालय में आये हुए अमरिका-नवोपसर्तों में कुछ साहित्य युवक हृदय पर लट भो० राम प्रकाश जी द्वारा वितरण किया गया।

कुल २०० के लगभग पुस्तकें भेजी गयी हैं।

प्रोफेसर रामप्रकाश जी एम. ए. सी. अनुसन्धान विभाग पंजाब विश्वविद्यालय जिन्होंने सर्वैय इस कार्य के लिए उत्साहित किया और समय-समय पर सहयोग दिया। प्रोफेसर साहित्य ने २० पुस्तकें अपनी लिखित आर्य युवक समाज को भेंट की। इस सहयोग के लिए मैं आर्य युवक समाज की ओर से उनका हार्दिक धन्यवाद करता हूँ।

आर्य युवक समाज हिसार की तरफ से मैं सर्व-प्रथम लाला नूनलाल जी गुप्ता का कति धन्यवाद करता हूँ। जिन्होंने हमें इस कार्य के लिए ५० रुपये का एक कुमर परिषद् की तरफ से प्रचार कार्य के लिए दिये। श्री देवराज जी गुप्ता का वयं द्यानन्द महा-विद्यालय हिसार ने सश्रय पर साहाय्य बढ़ाया का किन्तु सहयोग दिया।

आर्य समाज के प्रविष्ट संस्थाधी और प्रभावशाली धर्मोपदेशक स्वामी सत्यानन्द जी महागज ने गुरुकुल कांगड़ी (हरिद्वार) के प्राथमिक शाला पर अपने व्याख्यान में एक महारामा का उल्लेख किया था जिसने स्वामी जी से पूछा था 'क्या कारण है कि तुम आर्य समाजी दूसरे महापुरुषों की अपेक्षा स्वामी दयानन्द के नाम पर तात्विश अधिक पीठते हो?' स्वामी जी ने उन महारामा जी को उत्तर दिया था 'आर्य समाजियों ने भगवान् दयानन्द के लगाये हुए महापुरुष 'आर्य समाज' के फल खाये हैं इसलिये उनका रोम-रोम स्वामी दयानन्द जी महाराज के प्रति कृतज्ञता का प्रकटन कर रहा है। आर्य समाज आर्य धर्म सेना का एक दैविक है और लोकहित का प्रकटन है जो दयानन्द की जय जय कार कर कृतज्ञता के दोष से मुक्त होना चाहता है।

स्वामी जी ने प्रश्न कर्ता को जो उत्तर दिया था वह प्रत्येक स्वयंके लिए जिसकी ऐसी मान्यता है कि आर्य समाजी दयानन्द की माला जपते हुए हर बात पर क्यों तालियां बजाते रहते हैं, पढ़ते और विचारने योग्य है। मेरी तो दृष्टि धारणा यह है कि केवल आर्यसमाजी ही नहीं विश्व जगत् स्वामी दयानन्द का श्रेणी है और उसे स्वामी जी का कृतज्ञ होना चाहिए कि उन्होंने नये पथ को जन्म देकर वेद प्रतिपादित मानव धर्म के प्रचार के उद्देश्य से 'आर्यसमाज' रूपी आन्दोलन चलाया। स्वामी दयानन्द जैसे महान् उपकारी के उपकारी क क्या कहने जिन्होंने अपने बताये वृक्ष निधियों में एक निधम यह 'संसार का उपकार करना' का मुख्य उद्देश्य है। केवल आर्यसमाजियों का नहीं।

## महर्षि दयानन्द के नाम पर तालियां क्यों ?

(पं भवतराम जी शर्मा (अफ्रीका वाले) जालन्धर)



पाठक सम्प्रदायों में जो कानि देल रहे हैं मैं तो उसे 'महर्षि दयानन्द की जय समझता हूँ। सम्प्रदायी लोग आज जो पतरे बदलते जा रहे हैं क्या वह स्वामी जी की जय नहीं? धर्म गुरु अथ परोपकार का, मेल-मिलाप का, एकता का, लोकहित का, जन सुधार का, दीन-दुःखियों की सेवा का अनाथ रक्षा का और शिक्षाचार का उपदेश दे रहे हैं क्या वह स्वामी दयानन्द और उनके द्वारा फैलाए हुए वैदिक धर्म की जय नहीं? महान् योगी और अविद्वेषी धर्म ने वैदिक संरक्षण में, जिस का सुसादन स्वर्गीय आचार्य राम देव जी करते थे, लिखा था—'महर्षि की स्मृति सच्ची है। स्मृति है। जहाँ सत्य देखो वहाँ समकालिकों कि इस पर दयानन्द की मुहर है। देश, धर्म और जाति के लिए यदि आवश्यक काम करना हो तो विनयास पूर्वक हो जायेगा क्योंकि इस के लिए दयानन्द के अनुयायी मिल जाते हैं।' इन्हीं योगी जी ने आचार्य विद्यानन्द विवेक के शब्दों में अपने संपूर्ण जीवन में यदि किसी के व्यक्तित्व पर कुछ लिखा तो केवल अर्ध दयानन्द पर। कोई ऐसा विषय नहीं जिस पर उन्होंने ने प्रकाश न डाला हो। क्या यह अर्ध दयानन्द की कम महानता है। ऐसे अर्ध थे वह जिन के उपकारों की गिनती नहीं हो सकती। किन्ती ने क्या सूब कहा है—

गिने जायें सुमनिक, है, सहरा के जर्, सुदूर के कवरे फलक के सितारे। स्वामी दया नन्द मगर तेरे उपकार, न गिनती में आये कभी हम से सारे। ऐसे उपकारी महापुरुष के नाम पर तालियां बजा कर जयकारे क्यों न जुलाये जायें जित ने सुरीली राम को महाराम सुरीली राम और फिर स्वामी ब्रह्मानन्द बना दिया, नास्तिक प. गुरुदत्त को आस्तिक बना दिया। लाला (महाराम) हंसराज को स्वामि और तपस्या का पाठ पढ़ाया। स्वामी दर्शनानन्द को वेद का मतवाला बना दिया और पं लेलराम जी को 'आर्य सुसाफिर।' एक आर्य प्रचारक स्वामी जी के प्रति अपनी कृतज्ञता का वर्णन करते हुए बार-बार रोने लग पड़ता था। उसका नाम पूछा गया तो कहने लगा कि मेरा नाम 'आर्यसमाज' है। तुम्हारी माता कीन है? जवाब मिला 'आर्य-समाज' अब पर का पता पूछा गया तो भी 'आर्यसमाज' ही बताया। पूछने पर मालूम हुआ कि कहीं अकाल पढ़ने पर आर्य-समाजियों की गिष्ट मयङ्गी ने भूल के कारण मरी पढ़ी उसकी माता की छाती पर से उसे दूध चूसने की कोशिश करते हुए उड़ाया था। फिर उसे पाला-पोसा और शिक्षा दी। इसलिये बचने अपना सवंत 'आर्य समाज' को ही बताया। सोने का मूल्य जोहरा ही जानता है। स्वामी जी का उपकार

माना था लाला लाजपत राय जी ने जिन्को लिखा था—'स्वामी दयानन्द मेरे गुरु हैं। वह मेरे धर्म के पिता हैं। और आर्य समाज मेरी माता है। मैंने धार्मिक सेवा के सब पाठ आर्य समाज में रहते हुए आर्य समाज से सीखे। यदि मैं आर्यसमाज में प्रविष्ट न होता तो ईश्वर जाने क्या होता? परन्तु यह सत्य है कि मैं आज को कुछ हूँ वह न होता। यदि मैं बाल र भी आर्यसमाज पर श्रेष्ठत्व हो जाये तो भी उन उपहारों से उज्ज्वल नहीं हो सकता।' जिस ने हम को देश प्रेम का सीठा फल लिखाया जाति सेवा और जाति भक्ति का भीज हमारे अन्दर बोया उनका हम उपकार न माने तो हमारे जैसा कृतन कोई न होगा।

आर्यसमाज कान्वालिश स्ट्रीट कलकत्ता के हाल में ६ जनवरी सन् १९६४ की सायं ७ बजे को आयोजित छोट्टे सम्मेलन में एक बर्षी सी एम. पी. ० स्वामी रामानन्द जी अरवली ने महर्षि दयानन्द के गुण गाकर उनको पहिचाना और उपकार माना था। उस अवसर पर भाषण देते हुए उन्होंने कहा था—'स्वामी दयानन्द के उपहार देखना है तो मुझे देखो। मुझ अङ्कल को आर्यसमाज ने वेद पढ़ाये, शास्त्री और आचार्य बनाया और लोक सेवा का सदस्य बना दिया।' गर्व क्यों न हो। भारत की लोकसेवा में ४०० सदस्यों में से वह एक है। भाषण आरम्भ करने पर दो मिनट तक स्वामी जी बोल ही न सके थे। उनकी छाँसे से आंसू टपक रहे थे। हम क्या स्वामी जी की पहिचानें उनका मूल्य आँका था उसीसे कि भी मोहन नायक एम. ए. ने जो सत्यार्थ पढ़ कर और भीड़ में बैठ कर दिल्ली की सब आर्य समाजों के सदस्यों में आर्य नाद सुन कर ४० वर्ष की आयु में आर्य समाजी बन गये—(शेष पृष्ठ ८ पर)



### आरोग्य प्रकाश

वविराज रामसिंह जी वैद्य यमुना नगर एक बड़े अनुभवशी  
 और योग्य वैद्य हैं। उन्होंने अपने जीवन को साधना की गति  
 में से गुजारा है और मानव जीवन कैसे सुखी बन सकता है,  
 और उसक साधन शरीर और मन को कैसे स्वस्थ रखा जा  
 सकता है इसका गम्भीर अध्ययन किया है और अपने अनुभव  
 से ऐसे-ऐसे सारमूल नियम शालो से निकाले हैं जिन से सब  
 लोग लाभ उठा सकते हैं। यमुना नगर में क्रियात्मक रूप से  
 जनता को योगासन-नायायाम और मन के विचारों को ठीक  
 रखने के लिये ध्यान का अभ्यास भी प्रतिदिन कराते हैं।

इसके विषय में उन्होंने एक पुस्तक आरोग्य प्रकाश प्रकाशित  
 की है। जो हर मन-नारी-युवक और बूढ़ को पढ़नी चाहिए।

आनन्द स्वामी सरस्वती

### आर्य समाज खडवा

#### पूर्व निमाड़ (म.प्र.)

दिनांक २५—२२—६४ को  
 साय ६।। बजे से अमर राहड़र,  
 स्वामी अद्धानन्द बलदान दिवस  
 समारोह पूरेक मनाया गया। बृहद  
 यज्ञ धार्मिक भजन के बाद स्वामी  
 जी के जीवन पर अनेक विद्वानों के  
 सारगमित भाष्य हुए। अन्त में  
 श्री० डा० रघुनाथसिंह जी वमा  
 प्रधान बि० आर्य समाज में स्वामी  
 जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए  
 अपनी अद्भुतज्ञान कथित की। शालि  
 पाठ के पश्चात् कार्यक्रम समाप्त  
 हुआ। उपरोक्त कार्यक्रम में श्री  
 नारायण प्रदास निगम द्वारा सगीत  
 मञ्च भजन भी हुए।

कैलाशचन्द्र पालीवाल

श्री श्री आर्य समाज

### आर्य समाज हीरारापुर

#### का वार्षिक चुनाव

तिथि २०-२६ को प्रात १०

कने कार्यसमाज मन्दिर में होगा  
 और वही समय भीमती पाली  
 देवी आर्य महिला हायर सेकन्डरी  
 विद्यालय के लिये मेनिजिग कमेटी

### आपने विश्वेश्वरानन्द

का शिक्षायास भी

किया जिसका सबा तीन साल  
 रर के समय से निमाय किया जा  
 रहा है। आपने अपने सहकारी  
 फण्ड में से २००० रु० का दान  
 पोषित किया।

आपने सस्थान के इस वष  
 प्रकाशित ५४ से ऊपर ग्रन्थों का,  
 जिनकी कुल पृष्ठ संख्या ७,०००  
 के लगभग है, उद्घाटन किया।

संस्थान के सहायक, आचार्य  
 विश्वेश्वरजी ने संस्थान के दो  
 भागों में विभाजन को स्पष्ट किया।

संस्थान के शिक्षक, शोध तथा  
 पुस्तकालय विभाग 'विश्वेश्वरानन्द  
 संस्कृत तथा भारत-भारती संस्था'  
 के नाम से अलग संस्थान' के  
 नाम से अलग संगठित किए गए  
 हैं जो पत्राञ्च विश्वविद्यालय से  
 से सम्बन्ध हा गया है। शोध  
 विभाग पुराने संस्थान के अन्तगत  
 कार्य करते हैं।

कैलाश चन्द्र पालीवाल ने नेताओं  
 को भारतीय और विदेशी विद्वानों  
 के द्वारा प्राप्त हुए।

—कैलाशानन्द उपसहायक

### आर्य जगत में

#### विज्ञापन देकर

#### लाभ उठाएं

### निःसंतीन परिवार ध्यान से पढ़ें

इदि आप विवाह के बाद अर्ध लक निःसंतीन हैं तो इस  
 रोग के सफल चिकित्सा की पं० श्यामसुन्दर जी स्नातक  
 (महोपदेशक पञ्जाब प्रतिनिधि संभा) से मिलें वा पत्र व्यवहार  
 करें। श्री स्नातक जी भारत के अनेक परिवारों की सफलतापूर्वक  
 चिकित्सा कर चुके हैं।

पूर्ण कोर्स ३ मास व्यय २००/-

पता—श्यामसुन्दर स्नातक महोपदेशक पञ्जाब सभा

दीवाने हास देहली

### दयानन्द चचनामृत

जो पावें सब के मानते योग्य  
 हैं, उनको मैं मानता हू, जैसे  
 सत्य बोलना सब के समीप अष्टा  
 है और मिथ्या भाष्य बुरा है।  
 मत्-सत्त्वान्तरो के परस्पर जो  
 फण्डे हैं, उनको मैं अष्टा नहीं  
 मानता। क्योंकि इन्दी मतवावियों  
 ने अपने मतों के प्रचार से अनुभवों  
 को भ्रम जाल में फसा कर एक  
 दूसरे का बैरी बना दिया है। इन  
 बुराईयों को दूर करके सब प्राण  
 सत्यमत का प्रखर करना मेरा  
 अर्थोपदेश है। सच अनुभवों को एक  
 मत में ले आना मेरा लक्ष्य है।  
 राम-इं-ब लुगा, प्रेम-मील-यत्न कर  
 सब को सुखी बनाना मेरा प्रयत्न  
 और आशियार है।

(ब० श्यामी सत्यानन्द जी)

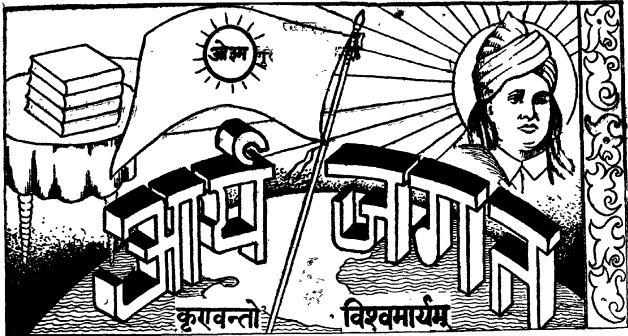
### आर्य समाज रेनावाड़ी (काश्मीर) का चुनाव

प्रधान—श्री जगन्नाथ जी।  
 उपप्रधान—श्री शशीनाथ जी।  
 मंत्री—श्री श्याम सुन्दर जी।  
 उपमन्त्री—श्री ब्रजानन्द लाल।  
 कोषाध्यक्ष—श्री दयाल साह्य जी।  
 सहायक  
 पुस्तकालयक—श्री यदन मोहन जी।  
 सभासद—श्री मीठी लाल जी।  
 मन्त्री  
 श्याम सुन्दर जी  
 मन्त्री समाज

### महर्षि दयानन्द के.....

(इच्छा का शेष)  
 किन्तु श्यामी दयानन्द के समय  
 में देश अधिक बर्बाद हुए और लोग  
 को बर्बाद कर रहे थे। मैंने बहुत  
 को सुख से बर्बाद किया।  
 मेरे विद्या शारे जहाँ मैं फिसे  
 पढ़ने देखा नहीं है। दयानन्द  
 जैसा रहना पढ़ने में अपने बिना  
 संके। वन दयानन्द 'श्याम' के  
 उपकारों को स्मरण करके हृदय में  
 गाँविया और 'बेबेकार' कुँसोना  
 मैंने भी दित से मान करना है।  
 ऐसी व्यक्तिपूजा पर दूने अधिमान  
 है। यह सुचारिक हो।

मुद्रक प्रकाशक श्री अजयचन्द्र जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पञ्जाब जालन्धर द्वारा और विज्ञापन देकर, विज्ञापन रोच कैलाशचन्द्र से सुविधे पंजाब कार्यसमाज काशीय महात्मा इंहराज यदन निजद कश्मीरी जालन्धर राहूर से प्रकाशित मासिक—आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पञ्जाब जालन्धर



टेलीफोन नं० २०४०

[आर्थप्रार्थेशिक प्रतनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र]

Regd. No. P. 12

'बक प्रति का मुख १३ नवे पेठे

वारिक मुख ६ वपने

वर्षे २६ अंक ३)

४ माघ २०२२ रविवार—वयानन्दाब्द १४१—१६ जनवरी १९६६

(तार 'प्रार्थेशिक' जालन्धर

## वेद सूक्तयः

### इन्द्रं गीर्भिर्नामहे

हम सारे परमात्मा के अमृत पुत्र और पुत्रियों अपनी स्तुति से मरी गीर्भिः—वाणियों से, वचनों से उस इन्द्रम्—महान् भगवान् की नवावाहे—स्तुति करते हैं। मन्त्र करते हैं। हम तो सभी भगवान् के ही भक्त हैं।

### ब्रह्माय सन्वद्वयः

जो लोग अपने जीवन में अन्नः—पर्वत हैं। पर्वत के समान स्थिर हैं। विचारों में हिलते डुलते नहीं हैं। वही ब्रह्माय—ब्रह्मके लिए, गुण कामों व परोपकार के लिए अस्तु—होवें। लगे रहें। स्थिर विचार वाले ही परोपकार कर सकते हैं।

### ऋतस्य जिह्वा पवते

जो मनुष्य ऋतः वाः। हे उस ऋतस्य—सत्यवादी की जिह्वा—बाणी, बातें ही सब को पकते—पवित्र कर देती हैं। सत्यवादी मनुष्य अपनी बाणी से दूसरों को पवित्र कर देता है।

### उत श्रुता तनुनाम्

वही भगवान् हमारे तनुनाम्—शरीरों को जीवनो का बर्त, आला—रक्षक होता है प्रभु ही बालक में सारे जीवन का प्राण और रक्षक है। सभी का सर्वत्र रक्षक काम

सारे भारत और विश्व में शोक की घटाएं भारत के वीर देवस्वभाव प्रधान मन्त्री श्री लाल बहादुर शास्त्री जी का ताशकन्द में स्वर्गवास हो गया। इस दुःखद समाचार से सारा देश और विश्व के राष्ट्रों का जनमंडल शोक और आंसुओं के प्रवाह में डूब गया। महाकाल ने हमारा निडर, स्थिरप्रज्ञ और सर्व-प्रिय महान् नेता छीन लिया। भारत-माता का प्यारा देवपुत्र चला गया।

## देवता का सन्देश

भारत के प्रधान मन्त्री वीर, स्थिर विचार, अनन्य देश भक्त श्री. लालबहादुर जी शास्त्री का ताश कन्द में अत्यन्त दुःखद देहावसान ने सारे देश भारत एवं विश्व को शोक सागर में डुबो दिया है। उस देवता का यह सन्देश स्मरण रखने के योग्य है—समस्याएं यद्यपि जटिल हैं तथापि उन की ओर ईमानदारी से शीघ्र ध्यान देने की आवश्यकता है। किसी समझौता के लिए पूरे ईमानदारी और लज्ज की आवश्यकता होगी ताकि 'संघ', आगे अधिक न फलने पाए।

(गर्भक से आगे)  
सन्-व्यवहार में लेन-देन सुद्ध और सव्य हाना चाहिए। पूजा, कृपाय और गायत्री का जाप करने की कथा ज्ञान, जहाँ व्यवहार में संख्या नहीं और लेन-देन में खोटा हो। इसलिये लेन-देन ठीक होना चाहिए।

जीवन का आधार भी सत्य होना चाहिए। दुकान धाड़को है, बहुतेरा कमाई होता है। वेडा २००० कुरया होता है, उस में से खर्च दे देता है। जीवन ता कट जाता है। इस तरह, लेकिन सव्य आधार का बहुत ब्यापक अर्थ है। मनुष्य का एक जंतो, अर्थव्यवस्था नहीं रहता। कुमा सुव, कमा दुख—यह चक चलता रहता है। फलक देता है जिन का पैरा, उन को गम भी हावे हैं, जहाँ बजते हैं नशारे, वहाँ मानव भी होतें है।

अपरे मानव। परमात्मा को मां याद रख। वही जीवन का सन् आधार है। श्रवण का अर्थमो ह्रिमन् से दूर हिनारा होता है। नृणा में टूटा बिस्वा का भागदान रहता होता है।

ओरेम वीन शब्द का संस्कृत शब्द है अउ और म। अ शब्द अचवेद से, उ यजुर्वेद से और म सामवेद से लिया गया। अ का अर्थ है आगे बढ़ने वाला बन, उ से उत्तम बन और म से माननीय बन। मनुष्य को आगे बढ़ना चाहिए, उत्तम बनना चाहिए और दूसरों को टोप में मान-योग बनना चाहिए। नाचकता को भी यही संदेश मिलता था कि उप और त्याग से भी बढ़कर ओरेम का महत्व है। इस ओरेम का उच्चारण कर, ओरेम का रक्षण कर।

मानव को विशालता, उदार और गम्भीर-हृदय वाला बनना चाहिए। राष्ट्र की रक्षा के लिए उदारता जरूरी है। देश सुखान क्यों ? काश्मीर का रोना क्यों ? क्योंकि इस में वृष्ट भावना नहीं। काश्मीर की विदेशियों ने महाराज रणधीर सिंह को पथ तिला कि उन्हें हिंदू बना दिया जाय। लेकिन कश्मीरी पंडितों ने उस का विरोध किया।

# राष्ट्र-भक्ति और प्रभु-भक्ति-८

(श्री महात्मा आनन्द स्वामी जो महाराज को अमृतभरी कण)



उनमें बहुत भावना नहीं थी, हृदय में विशालता नहीं थी। उन्हें डर था कि अगर सभी हिंदू हो गये तो उनकी आभयन और पूजा के हितसे पक्ष जायेंगे। महाराजा बेचारे क्या करें। पंडितों पर जोर दिया तो उन्होंने कहा कि अगर कारा की पंडित अनुमति दें तो उन सुसलमानों को हिन्दू बनाया जा सकता है। महाराजा के आदमी काशी गए। वहाँ एक बड़ा सम्मेलन हुआ और काशी के पंडितों ने, फलवा दे दिया कि हिंदू बनाने में कोई दोष नहीं। अथ काश्मीरी पण्डितों ने मोचा, जायदाद जिन जायगो। नहीं माने। अपने निरुण्य पर उठे रहे। सब की गलती आज सुगन्ते हैं। तब अगर सुसलमान हिंदू हो गए होंते तो समस्या ही न रहती। स्वामी दयानन्द जी भी यही कह गये हैं—संसार का उपकार करना आर्यसमाज का धर्म है। उन्होंने पर का नहीं कहा, सम्प्रदाय का नहीं कहा, नगर का नहीं कहा, सूबे या देश का नहीं कहा, सारे संसार का उपकार करने को कहा। यह उन की विशालता थी। मानव को यही विशालता आवश्यक है। हृदय को विशाल और उदार बना कर घर, परिवार, मोरुल्ला, नगर, राष्ट्र की संकीर्णता को छोड़ खारे विश्व को हृदय में स्थान देना है। सबको अपना लें और जूतझात को दूर भगा दें। जूतझात क्यों आई ? खोटे बड़े की भावना से ही। पंडितों ने अपने आप को भेद मान लिया। फिर ये भी बंध गए—चतुर्वेदी, यजुर्वेदी, त्रिवेदी आदि रूपों में मिलकर गए। फिर बटवारा बदला गया। आशिक

में मनुष्य जति ही बंट गई। स्वामी दयानन्द ने सब कहा है आर्य वंश में विदेशियों के शासन के कारण आ-स की फूट थी। दयानन्द जीवन भर जाटों, सिखा, भरतों को एक करने की कोशिश करते रहे। भारत की आजादी से पहले की बात है। ईसाई भीलों को बहुत तंग करते थे। महात्मा हुंसाज जी का निर्देश पाठ में लाहौर से उस इलाके को चला। दो रात और दो दिन तक सफर करता रहा। जब निजवत नगर में पहुंचा तो एक सजजन ने बड़ा स्वागत किया। उनके घर पहुंचे। भूल से पेट में खुदे दीड़ रहे थे। दूध, दोस्ट या और चीस की ईंजवार करता रहा। नी, दस ग्यारह, बारह बज गए। लेकिन न तो कुछ प्राया, न ही मित्र महीदय दिखाई दिए। मोचा, बाजार चले और वहाँ दूध बगैरह पी लें। इसो खुद खुद में पड़ा था कि सादे बारह बजे भोजन के लिए संदेश आया। रसोई के बरांटा में पहुंचा था कि मित्र महीदय ने कण्डे उतारने को कहा। भूल लगी थी भयवा, इस लिए कण्डे उठार दिए। ठिठुराने वाली सर्दी में केवल पक चिनयान हो गये में रह गई। तभी मित्र जी बोले, पोती भी उतारो। मैं पकित-सा उसकी ओर देल्ला रह गया। खाना खिला रहा था या कण्डे उतरवा रहा था। उसने अपना धर्म पत्नी की पोती मेरे सामने कर दी। खैर, मैंने वह पोती पहन ली। अब चौके में पांव रखा तो मित्र महीदय चीस चढे। मैंने कहा, क्यों भई क्या हुआ। वह बोले,

'गवध कर दिया आप ने। सब किए कटाये पर पानी की दे दिया। मैं समझ नहीं पाया कि मैंने क्या पानी फेर दिया। जब पूछा तो बोले आप ने चौके में एक पांव अन्दर और एक बाहर क्यों रल्ल दिया। आप को खुद कर, दोनों पांव एक साथ अन्दर रखने थे।

इतनी संकीर्णता, मानव का मानव से इतना फर्क। मनुष्य मूल नहीं, सभी सव परमात्मा के बच्चे हैं। सारी सृष्टि उसकी है।

मैंने अथर्ववेद के बाह्य कंड का पंडल्ला सूर्य आरम्भ कर रल्ला है जिस में कहा गया है कि राष्ट्र भक्ति और प्रभु भक्ति दो अलग-अलग चीजें नहीं हैं। दोनों के लिए एक ही मार्ग है। मैंने सव्य विचार, सरस आहार, सव्य आधार, सव्य व्यवहार, सव्य उच्चार, आदि का अन्वेषण किया है। मानव जीव की खुद का सब से बड़ा खेदत बुद्धि है। बुद्धि विन-इ जाने से यह जन्म यो बिराडता है और अज्ञानता भी। अन्वेषे कर्मों का फल है कि मानव-चोला हमें मिल गया है। यदि इस पोले को धारण करके भी हमने नेक काम न किए तो हमारा न जोक सुपरेगा और न परलोक। नेक कर्म करने से धन, वैभव, परा सब कुछ इस लोक में प्राप्त होगा और धन वैभव पवं यरा का सदुपयोग करने तथा बुद्धि को बिराडने न देने से परमात्मा की ओर भी ध्यान जाता है और परलोक भी सुपरेता है। यदि मानव-पोले को पाठ्य भी बुद्धि को सही उड्ड से विकसित नहीं किया तो मानव भी पिल्लेके, बुरी संगति होगी तो बुरे विचार।

(कमरा:)

सम्पादकीय—

# आर्य जगत

वर्ष २६] रविवार २०२२, १६ जनवरी १९६६ [अंक ३

## भारत का देवता प्रधानमन्त्री

आर्य के प्रथम प्रधान मन्त्री स्वर्गीय पवित्र जवाहरलाल नेहरू के स्वर्णवास के बाद राष्ट्र के इस शौर्यमय उंचे आसन पर श्रीयुक्त काल बहादुर शास्त्री जी बैठे। स्वतन्त्रता संग्राम में माननीय शास्त्री जी ने बड़ी वातानाएँ मेलीं। जेल यात्रा की। उस समय राष्ट्र पर चारों ओर से विपत्तियों के बाले बादल उमड़ पड़ागये थे। चीन एक भयानक शत्रु के रूप में भारतीय नेफा, लद्दाख की हिमानी धरती पर छा जाने में लगा था। इधर पाकिस्तान ने भी वर्षों की युद्ध करने की तैयारी पूरी कर ली थी। ऐसी अवस्था में उसने धम-धमों के साथ २ फरवरी में हजारों सशस्त्र युद्धे ठपे भेजकर वहाँ गड़बड़ करवा देने में कोई कसर न रखी। भारतीय वीर सेना के उत्तर देने पर अय्यूप की सैनिक शक्ति ने भारी पैटन टैंकों की सहायता से ब्रह्म पर बड़ा भयकर व भारी आक्रमण कर दिया। इधर पञ्जाब पर भी योजनाबद्ध हमले का प्रणय था। इस भीषण परिस्थिति में पू्व्य प्रधान मन्त्री श्री शास्त्री जी के सामने कितनी विकट समस्या थी। नेता की सब से बड़ी यही पहिचान होती है कि वह सङ्कटकाल में वैयवधान व स्थिरचित्त होकर राष्ट्र का नेतृत्व करे। किसी से बचने वाला न हो। भारत के उस देवता शास्त्री जी ने सारी जनता व विशाल लोक सभा की मानसिक भावना का परिचय पाकर शस्त्रों का चक्र शस्त्रों से देने के लिए अपनी वीर सेना को आदेश दिया। राष्ट्र

के सम्मान और गौरव की पता का की वीरता भरे सन्देशों से जनत रखा। सारे देश में भी पू्व्य शास्त्री जी की जयजयकार होने लगी। भारतीय जवानों की भीरता तथा बलिदानों से सारे देश का मस्तक ऊँचा हो गया। राष्ट्र को नई चेतना मिली। रूस के महान् नेता श्री कोशीकिन के प्रयत्नों से भारत और पाकिस्तान में इस युद्ध स्थिति को शान्ति में बदलने के लिए हमारे सर्वप्रिय प्रधान मन्त्री श्री शास्त्री जी तथा पाकिस्तान के राष्ट्र-पति श्री अय्यूप ताराकन्द में गये। परस्पर बात चीत होती रही। सम्मिलित बक्तव्य पर हस्ताक्षर भी हो गए। पर १० जनवरी रात के डेढ़ बजे हमारे पू्व्य प्रधान मन्त्री श्री शास्त्री जी का ताशकन्द में देहावसान हो गया। मंगलवार प्रातः काल इस दुःखद समाचार को सुनाने का पहुँचा। सारे भारत पर वञ्चपात हो गया। राष्ट्र का यह महापू्व्य नेता, भारत माता का प्यारा वीर पुत्र ताशकन्द में सदा की नींद सो गया। अठारह मास की ऋण्य अर्वाच में उस देवत ने राष्ट्र को कितना ऊँचा कर दिया। सारा भारत शोक सागर में डूबा है। कभी न पूर्ण होने वाली क्षति है। सारा विश्व ही अश्रुपुण्ड्र है। स्वर्गीय देवता श्री शास्त्री जी के सारे परिवार, सारे राष्ट्र, सारे विश्व के महान् शोक में मन आलिंग व शरीर का रोम २ रोजा है।

—त्रिलोक चन्द्र

## बयालीस वर्ष के बाद



उत्तम साहित्य मानव जीवन के लिए संजीवन का काम देता है। यदि वह समाज के ऋतुभवी; तपस्वी, प्रभुनिष्ठ आदर्श देवजनों की ओर से हो तब तो कहना ही क्या? काज हूँ मैं आर्यजगत की जनता को यह शुभ समाचार देते हुए ऋत्यत हर्ष क्रतुभक्व करते हूँ कि आर्य समाज क सुनहले युग के दिव्य महापुरुष सर्वभेधी महाराजा हंसराज जी द्वारा लिखित सन्ध्या के पवित्र मन्त्रों पर लिखित ऋध्यात्मवाद से भरी 'सन्ध्या पर व्याख्यान' नामक पुस्तक पूरे बयालीस वर्षों के बाद प्रकाशित हुई है। कायं प्रादेशिक समा पञ्जाब जालंधर के महात्मा हंसराज साहित्य विभाग के मान्य अधिष्ठाता प्रो० वेदप्रकाश जी एम० ए० को ही इस बात का सारा मय है कि उन्होंने यह सुन्दर पुस्तक ढूँढ कर उसको बड़े ही सुन्दर ढग से ४२ वर्षों के बाद प्रकाशित करके जनता के हाथों तक पहुँचाने का शुभ काम किया है। बयालीस वर्ष आधी शती के लगभग का समय होता है। यह पुस्तक 'सन्ध्या पर व्याख्यान' के नाम से आज ले बयालीस वर्ष पूर्व प्रकाशित हुई थी। पुगने लोगों को पता हो तो ही नये भाई बहिन तो जानते तक भी नहीं थे? जालन्धर की डी०ए०० की कालेज की लाजपतराय लायब्रेरी में इस की एक प्रति सु चिुत थी। उसे देख कर मान्य अधिष्ठाता साहित्य विभाग सभा ने उसे लेकर काफ़ी परिश्रम किया। सभा की ओर से उसे प्रकाशित कर दिया है। हम इस उत्तम काये के लिए हार्दिक बधाई देते हैं। उस देवता महाराजा हंसराज जी द्वारा लिखित सन्ध्या पर व्याख्यान नाम की वह पुस्तक कैसी

है? इस पर तो लिखने की आवश्यकता नहीं? जैसा उल्लेख व आदर्श जीवन उस देवता का था—सचमुच उसी प्रकार की ही यह पुस्तक है। सन्ध्या के सारे मन्त्रों को लेकर बितना सुन्दर अनुभव भरा व्याख्यान है वह—वह ऋतुभक्व-रस तो इस के पढ़ने पीने पीने १४य पी वर ऋतुभक्व बरेगे। जैसी पुस्तक है ऐसे ही उत्तम कागज तथा बहुत ही काफ़ीक मोनोरम छपाई है। यह पुस्तक सन्ध्या पर हो, और जिस के लेखक देवता महाराजा हंसराज हैं और जो बयालीस वर्ष बाद छपी हो—कौन उसे न चाहेगा। कोई छात्र ऐसा न हो जिस के हाथ में परिवार में व संस्था में न जावे। लालों की संस्थाओं में जाने-आये प्रादेशिक समा जालन्धर शहर के महाराजा हंसराज साहित्य विभाग से इसी समय संगवाये—

—त्रिलोक चन्द्र

## 'हाय बाप हाय राम'

शास्त्री जी के अंतिम शब्द श्री शास्त्री जी को आधी रात को जब खामी आई और छागो में वंदे हुआ तो डा० चुग ने उन्हें एक इन्जेक्शन दिया। इस मोर्चा पर प्रधान मन्त्री के अंतिम शब्द थे—'हाय बाप, हाय राम'। कल रात्रि भोक्तन के अन्तर पर प्रसन्न मुद्रा में बातचीत करते हुए श्री कोशीगिन ने श्री शास्त्री से पूछा—'क्या आप रिटायर होना पसन्द करेंगे? श्री शास्त्री ने उत्तर दिया, नहीं।' रात ११ बजे बितर में जाने के पूर्व श्री शास्त्री ने अपने सेबक से कहा—'तबेरे ही यहाँ से बामुन रवाना होना है इस लिए तबूक ही सब सामान आदि टिक कर लेना चाहिए।'

मानवीय परिवर्तन प्रियतम श्री आचार्य गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार आश्रमस्थान में देशों के माने हुए विद्वान हैं। प्रसिद्ध लेखक एवं वक्ता हैं। मीठी और मंजी हुई भाषा में बोलते हैं। आपका दिया गया एक प्रबंधन कार्यक्रमण के प्रथम पाठकों की सेवा में प्रस्तुत है—

वेद मन्त्र में आत्मा है— यो वेदेन दुष्टात् प्रयुः प्रा मुमुक्षुः प्राणिमहोत्रं करता है, आश्रमिका वेदा है। उसके द्वार पर हाथों पोछे बंधे हिन्दुधर्मो रहते हैं। उसका कोने में बसा फलता है, सचे ऐश्वर्य मिलता है। देवी विपरीत्या उसे कष्ट नहीं दे सकती वह सारा फल ब्रह्म करने वाले को मिलता है। हम आदिमहोत्र करते हैं किन्तु हमें तो दूरी कोषों की भाव्य नहीं होती। दुःख और दर्दों विपरीत्या भी आत्मा रहती है। वे क्या वेद गत कहते हैं? नहीं— येही बात नहीं है। वेद तो सदा सच्ची बात ही कहते हैं। समझने की आवश्यकता है।

मन्त्र में बड़ी गई वे सारी बस्तुएँ विसे प्राण होती हैं—इस में एक विशेषण आधा है—स्वधर्मः इस का अर्थ है कि जो उत्तम रीति से ब्रह्म करता है। उसे जान प्राणिमहोत्र करता है, उसे सब कुछ मिलता है। अत्यंत स्वान से लाभ प्राण करने की एक पद्धति होती है। बाँद फलान खेती करने के लिए शारीरिकता ठीक ठग से करे जो आन प्राप्त करता है। पर नाशकम कृषक ठीक व्यवस्था यदि न कर के वेधे ही शीघ्र बरखेर दे जो उसे धान्य कैसे मिलेगा? यही बात स्वधर्मः—ब्रह्म के बारे में कही गई है। वे अन्त में ब्रह्म ही वे ठीक तरीके से किने जवें तभी फल देते हैं। प्रत्येक ब्रह्म एक विशेष प्रयोजन के लिए होता है। ब्रह्म एक नाटक है। इस में कुछ क्रियाएँ

## यज्ञ-बलिदान का प्रतीक

(आचार्य प्रियतम श्री वेदान्तक गुरुकुल कांगड़ी)



होती हैं जिन का समक कर उन से पूरा २ पाठ पढ़ा जा सकता है! जैसे राधाचण्ड नाटक को देख कर नाटिकां दीक्षा के समान और पूरक राम के प्रहसन भी बनना चाहें, वष ठो वज से लाभ है, अन्यथा कष्टे देलने का कोई लाभ नहीं है। वे सब मुच नाटक हैं। भगत नाटन शास्त्र में विचार किया गया है जो कि यज्ञोपदे से लिखा है। यज्ञोपदे कर्मकांड का वेद है। बलिदान ब्रह्महत्या है। यज्ञ के भी पात्र होते हैं। वे दोनों में दोनों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

आदिमहोत्र में प्राणिमहोत्र की समीप्य आलने है। प्राणि के समर्थ्य अपने को अंत करने का सन्देश है। वजमान जिस भी समिधा पर हाथ डालता है वह मनुष्य नहीं करती। वह स्वयं नष्ट हो कर, मिट कर आदिम को सहायता को, प्रकथा को बढ़ा देती है। आदिम का मुख्य पात्र परमात्मा है। उस की प्रतिक वह प्राणिम चूनी जाती है। व्यक्ति परमात्मा की मर्छी पर प्राणने की क्षयित कर दें। उस के नामों के गुणों को अपने में धारण कर लें। प्रभु उत्पत्तरूप है, हमारे अन्दर भी उत्पत्त होना चाहिये। न्यायरूप होने से हम में भी न्याय का जाये। वे जो २ प्रभु की सहायता हैं—न्याय, सत्य, पवित्रता आदि—मानव भी वैसा बनता जाये।

पुराना शब्द इस के लिए रामायण है उसे जाना है। Heavenly Kingdom जानी है। मैं अपने जो रामायण की मर्छी पर छोड़ूँ। वरमं रावण स्थापित करने को बलिदान करना पड़े, भाव्यों की साहाय्य भी देनी पड़े जो दे दूँ। आज नाटिक नहीं आते। ब्रह्म

प्रभु अन्त का जीवन सुगन्धमय बन जाता है। वह नाटिक रूप मान जाते हैं। यदि प्रभु मन्त्र हो कर उसके जीवन में गम्भिर है वह लोग उसके आचरण को देख कर प्रभु पर भी हस्येंगे। प्रभु की निन्द्या जितनी आसक्ति करते हैं उतनी नासक्ति नहीं। समिधा स्वयं स्वाहा हो कर प्राणि के चमका देती है। उठी प्रकार प्रभु का भक्त भी अपने को परमात्मा में स्वाहा कर के गुणों को चमका देता है। आश्रमिका प्राणिः — हमारे संकल्प छोटे-बड़े होते हैं। छोटे-छोटे संकल्पों पर भी अपने को बलिदान कर देना होता है। जिस का संकल्प ठीका वह असफल रहता है। व्यक्ति के समान समाज का भी संकल्प होता है हमारा संकल्प विरल में वेद प्रचार कर के उसे आर्वा बनाने का है। इस के लिए समिधाओं के समान अपने काम को अंत करना होगा। जिस पर भी हाथ रख दिया, बड़ी कुरने को तय्यार रहे, नतु न च न करे। व्यक्ति वह समझे कि कोई और बोले न बोले, अपने आश्रित दे या न दे, किन्तु मैंने जीवन अंत करना ही है। प्राणि ने समाज के लिए शतांश देने का निश्चय रखा है पर फिलने देते हैं—स्वयं विचार लेवें। प्रत्येक चाहता है कि दुर्वा देवे पर मैं न दूँ। येही मनुष्यत्व प्राणिमहोत्र की नहीं होती। दूसरा करने या न पर मैंने अपना काम करना ही है। मैंने समिधा बनना है। ऐसा व्यक्ति व समाज जीवन के हर क्षेत्र में संकल्प होता है प्राणि प्रदान करने ने बड़ी किता और सहायता। ब्रह्म अपने जो

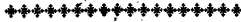
धर्मों के विचार ब्रह्म मा ही नहीं पर महानिष्ठा व करणी मन के चरुणों पर जैती। किस बात की कमी रही। समिधापना कर जीवन बलिदान को क्या कमी रहती है। प्रभु मर्छी को कभी प्रकर की न्युत्पत्ता नहीं रहती। उनके द्वार पर हाथों पोछे हिन्दुधर्मो रहते हैं। वेरा उन्मत्ता है, विपरीत्या हर दो प्रती है। जो समिधा के समान अपने को ब्रह्म की प्राणि में अंत कर देने हैं। महात्मा शारी को क्या कमी की। स्वयं जो मायुणी ब्रह्म धारण करते वे पर काम करने के लिए कोटोड रूप एकत्रित हो जाते हैं। ब्रह्म उसे हम भी पाठ पढ़ें कि हम राष्ट्र की, धर्म की, समाज की समिधा बन जायें। यवमान हम में से जिसपर हाथ रखे बड़ी अपना जीवन अंत करने के। अर तय्यार रहे। आदिम-समर्थ्य की भावना जिस समय प्रत्येक समाज के व राष्ट्र के नर-नारी के जीवन में पैदा होगी—वह अपने प्रत्येक वस्तु को समाज के लिए समिधा समर्पण—वनी करवाया होगा। ब्रह्म के इस स्वापक और महात्मा पाठ हो। पढ़ने में उत्तर रहे। फिर आता समाज दुलता फलता दिखाई देगा। सम्पन्नता के अंधार भर जायेंगे। प्रभु हमारे जीवन को ब्रह्मय चनायें।

## श्री शास्त्री का अंतिम संदेश

पवान मन्त्री भी सातबहुत शास्त्री ने अपने आत्मिक देहात से कुछ धंटे पूर्व अपने देश के लोगों को शांति का एक संदेश दिया था। उन्होंने कहा: हाक ही के भारत-याक संघर्ष से हम नें अपने पूरी शक्ति से सहाई की थी और आज हमें पूरी शक्ति के साथ शांति के लिये कहना है। एक बात कहूँगे परिवर्तन मन्त्री भी बर्ही है। ब्रह्माय को कल राव कोषपत्र पवान मन्त्री भी कोषी-निज द्वारा विषय गैर-पंच शीर्ष को जोड़ने समर्थ्य कही थी।

# युद्धकाल में विद्यार्थियों का दायित्व

(श्री सुन्दरलाल जो बोहरा, जोधपुर)



संस्था तथा व्यक्ति के दायित्व की परत एक जनतन्त्र में ही स्वयं रूप से की जा सकती है। एक जनतन्त्रीय व्यवस्था में व्यक्ति का दायित्व क्या हो? अस्मिता समाज तथा संस्था के प्रति किस प्रकार का कर्तव्य हो, साथ ही उसका वैयक्तिक जीवन-दर्शन किन प्राणों पर निर्भर करे? इन समस्याओं का जवाब देना प्रत्येक जनतन्त्रीय व्यवस्था में हो सकता है। एक जनतन्त्र में प्रायः ऐसा देखा जाता है कि व्यक्ति अपने दायित्व को टालने की चेष्टा में रहता है। भारत में यह कुतर्क अधिक संक्रामक है। इस प्रवृत्ति का मूल कारण है: दायित्व का अनासन्न्यक रूप से विदेहिन्द्रण। परिष्कार स्वयं एक जनतन्त्र में किसी व्यक्ति विशेष को कार्य विशेष के लिये उत्तरदायी ठहराना सहज नहीं है। नौकरशाही तथा संशियों के स्वार्थों में अन्तिरा होड़ लगी रहने के कारण सामंजस तथा सामूहिक (सामाजिक) क्षेत्र में एक अन्वयवस्था-सी दृष्टिगत होती है। स्थिति ऐसी हो जाती है कि व्यक्ति न तो व्यक्तिवारी ब। पावा है न कल्याणकारी प्रवृत्तियों का पूर्णरूपेण पोषक ही। फिर भी व्यवस्था, चाहे सांस्थानिक हो अथवा वैयक्तिक उपादानों से निर्मित, चलती ही रहती है। ऐसी व्यवस्था को समन्वये के लिए बुद्धिजीवी श्रेणी से थिरे हुए प्रतीत होते हैं: वे निश्चित रूप से किसी भी निष्कर्ष पर नहीं पहुँच पाते। फलस्वरूप व्यक्ति तथा संस्था की स्थिति 'पूछे एक एकदमो कहां जाए का करी?' सी हो जाती है।

एक प्रकृत-जोय व्यवस्था में कार्य विशेष के लिए व्यक्ति विशेष की ओर इंगित किया, का सडका है, लेकिन इसके विपरीत एक जन-

तन्त्र में व्यक्ति को नुना वो जा सकता है, संको पस्व नहीं मारी जा सकती। हेकीकत में संशय का जेता बाशावरण एक जनतन्त्र में रहता है वसा अन्व्य व्यवस्थाओं में कम प्रतीत होता है। इस व्यवस्था में इतने मूडमूत दोष होते हर भी व्यक्ति का गुणाव हल और बढ़ना स रहा है। यह कुतर्क उस बचक भडा और संभव मं परिवर्तित हो जाता है जब एक राष्ट्र को संकटकाल अथवा सामाजिक दुर्विधाका सामना करना पड़ता है।

भारत में आज ऐसी ही स्थिति है। आज लोगों में अपने ऊपर कुछ दायित्व ओढ़ने को प्रवृत्ति प्रतीत हो रही है। भूत, जिते दुर्विधानुनो तथा पांग पन्थ का हा पोषक माना जाता रहा है, से अथ परेशा महण की जा रही है। भूत के प्रति विद्यवाचारी बुद्धि-जीवियों को भी आश्चर्य होना पड़ा है। यों भूत को सन्धमें में बिना भविष्य का निर्धारण ही सहज नहीं है। जहा तक नर लुत का प्रदन है, भूत उन्हें काफी शर्तों में प्रेरित कर सकता है। पेरक भूत को प्रसंग में रखने से नवयुवक वर्ग की उदरदायक फलदा में बदल जाते हैं। पिछले महीनों में हुए सीमावर्ती समर के बारे में जिनको रुचि थी क्लरता विद्यार्थी जगन् ने दिखाई है बेसी भडा भारत के स्वातन्त्र्य संग्राम के इतिहास में नवयुवक वर्ग द्वारा शावर ही दिखाई गई हो। इण्डाल तथा नोड फोड की प्रवृत्तियों में शीम ही नूट जाने वाला वर्ग आज राष्ट्र रचा के लिये प्राणपण से जटा हुआ है। पिछले महीनों में हुए सीमावर्ती युद्ध में भारत को जो कमाल पक्व जनयवावी हासिल हुई है वसाक यौरव विद्यार्थी वर्ग

को ही मिलना चाहिये। विपक्षों के हवाई हमलों परमू अड्डों को नष्ट करने वाले गुल्मा हाल ही में कालेज से निकले हुए विद्यार्थी ही थे। अतः भारत का विद्यार्थी चाहे हजतली हो चाहे इंगामी, उसकी राष्ट्र भक्ति में तिलोरी भी संशय नहीं किया जा सकता।

प्रदन है: युद्धकाल में विद्यार्थियों का अथवा यों कहिये विद्यार्थी परम नव-युवकों का क्या कर्तव्य हो? कोरा विद्यार्थ्यास भी व्यवहारिक नहीं होता। कदा भी है— 'बल चिन चुडी बापनी' अर्थात् शक्ति अथवा शस्त्र के संयोग से रहित शास्त्र सुने हैं। गोवा-झान में निष्ठागत होते हुए भी गण्डोप रहित अर्जुन का कोई महत्त्व नहीं था; ठीक उसी प्रकार आज प्रलर बुद्धि वाला समाज प्रज्ञेपरासों से रहित होने पर नगरथ है। 'बसुपुत्र कुटुम्बकम्' के साथ-साथ, परिस्थितियां उग्रयन होते पर, जा राष्ट्र 'युद्धाय क्त निरचय' का यो मूठय एवम महत्त्व जानता है वही 'जीवा बा भोचसे महिम्' का सचचा अर्थ जानता है।

इस प्रकार युद्धकाल में विद्यार्थियों से बहुत अपेक्षाएँ की जा सकती हैं: १. जो विद्यार्थी प्रलर बुद्धि वाले हैं वे अपने प्रेरणादायक रचनाओं से लोगों में राष्ट्र-भक्ति की भावना उभार सकते हैं।

२. जो विद्यार्थी शारीरिक रूप से सशक्त हैं वे पन. सी. सी. तथा गृह-रक्षा पक्ति (Home Guard Service) में स्वयं को समर्पित कर सकते हैं। पन. सी. सी. को एक बन्धन न मान कर साथ पदार्थ की तरह क्षतियाँ मानना चाहिये।

(कथरः)

# श्री बृजलाल जी गुप्ता

## टोहाना

इयैसमाज टोहाना के प्रधान चन्द्रगुप्त औपचारिक के मानिक भी बृजलाल जो गुप्ता कार्यसमाज के माने हुए स्तम्भ हैं। टोहाना समाज का सारा काम क्रांतिप्री प्रस्था का फल है। समाज ब सभी कालों में हजाराई है चुके होते। आज हम 'एड काँसस' में उनकी आदर्शपदित के क्रियात्मक रूप की एक बात जिलकर सब की अर्लें लोकना चाहते हैं। यो गुप्ता जी अथवाल जाति से सम्बन्धित हैं। अथवालों में आज भी लड़कों की सगाई, मिलनी ब विवाह पर हजाराई नदी लालों रुपये लड़की वालों से ले लेते हैं। लड़कियाँ एक विपत्ता का विषय बनती जा रही हैं। किन्तु वघाई हो भी गुप्ता जो को। आपने आज के युग में कमाक करके दिला दिया। आप अपने सारी पुत्रियों के विवाहों से निश्चित हो चुके हैं। उनके विवाहों पर क्या कुडन न दिया होगा। पर जब अपने पिय पुत्र श्री राजेन्द्र जी की प० की सगाई आगरा में भी चन्द्रमानु जी को सुगुप्ता से होने लगी तो परंपरा के अनुनार लड़का वालों ने हजाराई रुपये सगाई में देने चाहे पर श्री गुप्ता जो ने केवल एक करावा और एक नारियल के विषय और लेने से सर्वेवा इनकार कर दिया। अगुटी तक भी नहीं ली। विस्तार से तो फिर कभी लेल के रूप में लिखेंगे। आज विवाह सोवैजाजी तथा Booking एजेंसी बन गये हैं लड़कों को सुले बाजार सेवा जात है। इस विवाह को समाज नहीं सुधार सका। वहाँ भी यही सोवैजाजी का वनाशा है। ऐसे काम में कार्यसमाज ब स्वामी दयानन्द के सिद्धांत सब को मूल जाते हैं। ऐसे समय में बिरोधक अप्रशान जाति में इतने बड़े आदर्शवाद को क्रियात्मिक रूप देकर भी गुप्ता जी ने सारे कार्यसमाज का मसक उँचा किया है। 'कहूँ २ वघाई' क्या उन से कोई और लख लेया ? सं.

श्री शास्त्री दो अक्टूबर १९०४ को मुगल सराय में एक मजलीस पराने में उपनयन हुए थे। जब वह ढेढ़ वर्ष के थे तो उनके पिता का देहान्त हो गया। उनका पालन उनके नाना ने किया। उन्होंने अपना आरम्भिक शिक्षा स्वामीय हरिद्वर गुरुकुल में पाई। उन्होंने १९२१ में अपना शिक्षा छोड़ दी। और गांधी जी द्वारा आरम्भ किए गए असहयोग आन्दोलन में हो गए। श्री शास्त्री बन्दी बना लिए गए और रिहाई के बाद उन्होंने कारागीरिया पीठ में पुनः पढ़ाई शुरू की और यहाँ से ही उन्होंने शास्त्री की उपाधि प्राप्त की। उनका सर्वोच्च आकांक्षित पीपल कोशाष्टी से भी प्रतिष्ठित सम्बन्ध था। श्री शास्त्री ने १९२१ और १९४५ के मध्य हुए कांग्रेस के सभी अधिवेशनों में भाग लिया था। वह आठ बार बन्दी बनाए गए और लगभग दस वर्ष जेल में रहे। १९४२ के काम चुनावों के बाद श्री शास्त्री राजस्थान के लिए चुने गए और श्री नेहरू ने उन्हें परिवहन तथा रेलमन्त्री नियुक्त किया। १९४७ में यह इलाहाबाद निर्वाचन क्षेत्र से लोकसभा में चुने गए और मृत्यु तक इसी क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते रहे। मई १९४७ में वह, परिवहन तथा संचार मन्त्री बने। कुछ समय के लिए वह वाणिज्य तथा उद्योग मन्त्री भी रहे। श्री शास्त्री ने अखिल भारत को कम महत्व दिया। उन्होंने संगठनात्मक मामलों को सम्भालने के लिए उत्तर प्रदेश अखिलमंडल से त्यागपत्र दे दिया। पुनः रेलमन्त्री के पद से उन्होंने यह कह कर त्यागपत्र दे दिया कि उरवागूर देखने दुर्घटना का सांख्यिक तौर पर सारा उत्तरदायित्व उन पर है। जब कामराज योजना का दावा बना तो उन्होंने शुद्धमन्त्री के पद से त्यागपत्र दे दिया और संगठनात्मक कार्य सम्भाला किया।

## भारत के सर्वप्रिय नेता प्रधान मन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री का संक्षिप्त जीवन चरित्र

श्री शास्त्री ने कांग्रेस संगठन के भीतर और बाद में स्वयंसेवक क्षेत्र में शांति वायम करने की भूमिका निभाई। ताशबन्द और खर सम्मेलन की सम्पानन के शीघ्र बाद उनके आरम्भिक देहांत ने इस भूमिका को एक विशिष्ट रूप प्रदान कर दिया। श्री शास्त्री का स्वर्गीय नेहरू के अतिरिक्त आचार्य नरेन्द्रदेव, श्रीरफी आहमद किदवाई और पी. वी. टंडन जैसे महान नेताओं से निकट सम्बन्ध रहा। वह एक निम्न वर्ग में पैदा हुए भारतीय राजनीति में उच्चनाम स्थान पर पहुँच गए किंतु एक प्रमुख नेता के तौर पर सफलता प्राप्त करने के बाद भी उनका स्वभाव नहीं बदला। उनका जीवन बहुत साधारण था जबकि १९४२ तक वह आर्य भी नहीं पीते थे। श्री शास्त्री का कांग्रेस के आदर्शों में दृढ़ विश्वास था और वही प्रतीति की जटिल समस्याओं को हल करने के बाद उन्होंने लोगों के हृदयों तथा इतिहास में एक महत्वपूर्ण तथा अद्वितीय स्थान प्राप्त कर लिया था। स्वर्गीय नेहरू की तरह ही शास्त्री रात को बैठे तक राष्ट्र सेवा के कार्य में लगने रहते थे इसके साथ ही प्रातः उठने के आग्रह से थे। प्रातः से ही वह आगन्तुकों से भेंट करना शुरू कर देते थे। कई बार ऐसे भी आगन्तुक आते थे जब वह आध्यात्मिक रात को संचालक से बापिस आते थे। १९६४ में श्री नेहरू के निधन के बाद जब नेहरू का साम्राज्य विचारार्थीन आया तो उन्होंने अपने आप को गृहमन्त्री में रखा उन्होंने स्पष्ट कर दिया कि वह प्रधानमन्त्री का पद नहीं सम्भालेंगे

यदि कांग्रेस पार्टी उन्हें सर्वसम्पत्ति से अपना नेता चुनेगी। तबन्त ही यह स्पष्ट हो गया कि सभी राज्यों तथा संसद के कांग्रेस पार्टी की बहुसंख्या ने श्री शास्त्री को राष्ट्र का नेतृत्व संभालने के लिए अधिमान दिया। श्री कामराज ने सदस्यों से विचार विमर्श किया था, घोषणा की कि बहुमत श्री शास्त्री के पक्ष में है। उन्होंने राष्ट्र के नाम अपने पहले प्रसाराण में ही घोषणा की थी—हमारा मार्ग सीधा और स्पष्ट है। अर्थात् हमारा लक्ष्य देश में समाजवादी लोकतंत्र का निर्माण करना और सभी को समृद्ध बनाना और विश्व शान्ति को बनाए रखना तथा सभी राष्ट्रों से मैत्री बनाना है। पड़ोसी देशों के लिए भारत की मित्रता का संदेश लेकर उन्होंने नेपाल की यात्रा की थी। काहिरा के तटस्थ सम्मेलन से लौटते समय श्री शास्त्री कुछ समय बराची में भी रुके थे जहाँ उन्होंने प्रधान मन्त्री का से संक्षिप्त बातचीत की थी। हाल ही में श्री शास्त्री का स्वदेश में बहुत व्यस्त कार्यक्रम था किन्तु उन्होंने बर्मा के राष्ट्रपति जनरल नेविन के निमन्त्रण का सम्मान करते हुए गत वर्ष दिसम्बर की बर्मा की राजकीय यात्रा की थी। श्री शास्त्री ने लंका में रह रहे भारतीयों के मातृभूमि के लिए एक समझौता करके दोनों देशों के सम्बन्धों में बनी एक मुख्य बाधा को दूर किया था। हाल ही में काश्मीर में पाकिस्तान द्वारा उत्पन्न स्थिति का जिस घोषणा से श्री शास्त्री ने सामना किया, इनसे उनकी कर्माचर-

शीमा पर पहुँच गई थी। पाकिस्तानी आक्रमण को पछानने के लिए लाहौर और स्वल्कोट सेक्टरों में भारतीय सेनाओं को आगे बढ़ाने का आदेश देने के निर्णय ने उन्हें वास्तविक राष्ट्रीय नायक सिद्ध कर दिया था। जहाँ श्री बहु गणलाओं लोगों ने उनका शानदार स्वागत किया। बम्बई व लखनऊ और फ़ारुख जैसे बड़े नगरों में तथा देहाती क्षेत्रों में जनता प्रधानमन्त्री को सुझने के लिए उमड़ पड़ी थी। श्री शास्त्री ने आज ताशकन्द से भारत लौटते हुए काठुल रुकना था जहाँ उनका सीमांत गांधी स्वच्छन्द गुफ्तार खां से भेंट का कार्यक्रम था किन्तु निरवधि को कोई नहीं टाल सका। काल के मूर हाथों ने उन्हें हथ से सदा के लिए छोन लिया। जैसा कि श्री कोसीगन ने कहा, शास्त्री का नाम इतिहास में अपने शांति प्रयत्नों के लिए सदा अमर रहेगा।

**आर्य-जगत रोहितक के समाचार**

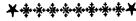
१. स्वामी प्रधानन्द बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में आर्य समाज प्रयागमोहल्ला की ओर से दिनांक ११ पीप को प्रयाग फेरी की गई। २-१२ पीप तदुत्तर २६ दि-रविवार के दिन आर्य वैश्वीय सभा की देल देल में आर्य वीर दल के तत्वावधान में स्वामी अद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया। २६ पीप संवत् २०२२ रविवार तदुत्तर १ जनवरी को रोहितक की समस्त आर्य समाजों व संस्थाओं का सम्मिलित सार्वत्रिक आर्य समाज प्रयाग मोहल्ला में हुआ। ५. अर्धपोस्तव निर्वचन तिथि से एक सप्ताह पूर्व आर्य प्रथम फागुण सं० २०२२ (१२ फरवरी) को आर्य वैश्वीय सभा के तत्वावधान में यह पवित्र दिन मनाया जायेगा जिस के कार्यक्रम में प्रायःकाल की प्रयात केरियां, जलस व सार्वजनिक जलसा करना, निर्वचन है और अर्धपोस्तव के दिन प्रत्येक आर्य समाज व प्रत्येक आर्य वर दीपमाहा दोगी —पिथार्य

भगवान् वेद में एक सारमयित मन्त्र आता है। संव यो है, 'न तं विदाय य इमा जज्ञानामन्त्रं युक्तामकमन्तरं वभूव, नीहारेण प्रावृता जन्वयाचाह्वयुप उक्त्वा शाश्वतं रचरित।' इस मंत्र का भावत्व यह है कि उस परमात्मा को कौन नहीं जानता, वे नहीं पहचान सकते जिनका मन अभिमान रूपी कोहरे से ढका हुआ है, वह हमें भेदा करने वाला है एवं इस से भिन्न है। यहाँ भट्टैवाद् का स्पष्ट शाब्दों में खंडन है। (दा सुपर्णा सयुता सभावा) में आलंकारिक रूप से ईश्वर जीव, प्रकृति की भिन्न र सत्ता का प्रतिपादन है। इस मंत्र में भी ऐसा ही संवेत है, ब्रह्म जीव नहीं, जीव ब्रह्म नहीं बन सकता, अलग र होते हुए भी ब्रह्म संवेत है जीव अल्पह्य है। इच्छा रखते हुए भी जीव उसे नहीं पा सकता क्योंकि पाप का अघोर उस पर छा हुआ है। जब भगवान् मानु भास्कर मेघो से आछादन हो जाता है तो प्रयत्न करने पर भी मनुष्य उसे नहीं देख सकता। अमरत्व प्राप्ति में बाधक है संसार के पाप, दुःख व्यवसन। महा कवि टैगोर ने गीतांजलि में लिखा है कि प्रभु! मेरी चील निकल जातो है जब मैं स्वयं निमित्त बन्धनों को काटना चाहता हूँ। जैसे सफ़ेद बड़े ही प्रयत्न से जाला बुनती है किंतु अंत में चक्षी में फँसकर मृतवाप हो जाती है, इसी प्रकार मनुष्य अपने बांधारिक कार्यों में लिप होकर संसार-निर्वृता को विस्तर देता है। महाभारत में एक रोचक शिष्या-प्रद प्रसंग लिखा है। विदुर भूवराष्ट्र को बतलाते हैं कि राजन् ! राजि के अन्धकार में एक मनुष्य घबरा जाता है। झले-झले बादलों में जब बिजली कौंधती है तो सामने ते वृष पर वद जाता है। पुनः बिजली चमकने पर वह देखाता है कि वृष को एक कांता व एक

## जीवन का सरल मार्ग

ले० श्री दयानन्द जी आर्य एम. ए. मिसचं स्कालर,

वि० वी० शोध संस्थान होश्यापुर



सफेद चूड़ा काट रहा है, नीचे कुदं में अन्नगर फण फेलाप बैठता है। वह मयमीत हो उठता है। अक्षरमानु मधु-मक्खियों के छत्रों से रस टपकता है, वह उसी के आनन्द में भयानक टटनों को भूल जाता है। वृष कट गया, वह कुदं में गिरा गया। महाभारत कार ने इस दुर्घटना का मुल नर-जीवन की ओर भोड़ा है। मानव-जीवन वृष है, आंभी बादल विषय है, संप मृत्यु है, लः मुंह वाला हाथी, लः अतुल्य है जो च्या-च्य मानव-जीवन के समय को काटतो हुई दूत गति से ज्वलीत हो रही है। किंतु मानव संसार को ही सर्वस्य मानता है, इसे ही उपास्य समझ लेता है, त्रिभु मृत्यु का अन्नगर लेल समाप्त कर देता है। कंसे मिले वह प्रभु ? जब संसार ही साध्य बन गया, भगवान् वेद कहते हैं 'तेन त्यक्तेन मुंजीथा' संसार को भोगो किन्तु त्यागी बन कर के। नाव सागर में रहतो है डीक है किन्तु जब सागर का पानी नौका में रहना प्रारम्भ कर देता है तो नौका डूब जाती है। कठोपनिषद् का नचिकेता ब्रह्म जिज्ञासु है। यम प्रलोभन देते हुए मिनता है—ये वे का मातुलंभा मरत्यंलोकं सर्वान्कामाशिक्षन्दतः प्रयथैव इमा रामाः सरथाः सरथाः सुदृशं नदीदृशा लम्भनीया मनुष्येः अविमंश्रयामिः परिचारवसनचिकतो सरथं मानुषाणः यम तीनीं लोकों का वैभव उसे देने को उगत है वह कल्पधेनु है किन्तु नचिकेता टस से मस न हो कर वरपर देता है—'श्वोभावा मरत्यस्य वदन्तु कैतस्वयंभ्रियाणं जरयन्तिजः। अपि सचे जीवितमल्पमेव तवैववाहा-

सव नृत्यगीते।' नचिकेसरीसिता पदावीं को नश्वर बना कर अन्नवर ज्योति को दूटना चाहता है। उस के उत्तर में बही युक्ति है जो वृद्धारत्कोपनिषद् में मैत्रेयी याज्ञवल्क्य को कहती है, धन्वम इयमगोः सधो पृथिवी विचो न पूर्णा स्यात्कथं तेनामृता स्वामिति, क्या सारी भूमि का ऐदवयं मैत्रेयी को अमरता दे सकता है, उत्तर मिलता है नहीं, फिर वह भी याज्ञवल्क्य का साथ देती है। मानव संसार का न बन कर भगवान् का बने। मन्त्र में कहा है कि प्रभु-भक्त अभिमान न करे। कवि ने एक शिष्या-प्रद कल्पन की कथा बनाई कि काला बादल धरती की ओर आ रहा था व सफेद बादल उंचा स्वर्ग लोक को पहुँचना चाहता था। स्वर्ग लोक के द्वार पर पहुँच कर द्वारपाल से स्वर्ग में स्थान प्राप्त करने के लिए कहा। द्वारपाल ने कहा कि आभी थोड़ी देर हुई एक किन्त स्थान था वह काले बादल को दे दिया गया। नम्रता से विद्या चमकती है। अभिमान मानव को मानवता से नीचे गिरा देता है। योगेश्वर राष्ट्रनूता देव दयानन्द जी से लोगों ने पूछा स्वामी जी ! आप ज्ञानी हैं कि ज्ञानी। कहने लगे जिस कार्य को नहीं जानता वह ! जो ज्ञानी व जिस को जानता हूँ वह ज्ञानी। श्रद्धि का प्रभाव बहूँ और पढ़ा। किन्ती नरभि-मानता। अपना कोई पन्थ नहीं चलाया, अपनी लाश को भी जलाने को कहा ताकि किसी कृषक के लेत को लाभ हो जाय। जो प्रभु की अन्नल सृष्टि को देखते हैं, उन्हें उसमें नित्य नया आवि-

ष्कार दिखाई देता है मानव की बुद्धि चकरा जाती है। वह उस भूमि का विस्तार है, उसके तीनों में चराचर विसृष्टी है; वह भूमि तो ब्रह्मांडों की संस्था के अगो एक पैसिल से ढाला हुआ बिन्दु-मा है। अभिमान किस का। जिस पर मानव अभिमान करता है वह तो चिरस्थायी नहीं है। मानव की पिब से प्रिय वस्तु यहाँ रह जाती है। अन्नब खेल है प्रभु का, मोलता ललात मानव पैसा हो जाता है कि मानो सदा के लिए कोई अपरिचिव हो। तब है मानव, शास्त्रों का उप-देखा देती है कि संसार में रह कर उस प्रभु के चरणों में बैठे। धन का वास किया, सुख पदार्थों को भोगा, किंतु यदु कस्य सम्य भगवान् की उपासना नदीकी तो कुञ्जी नहीं किया। यजुः २३:४० में लिखा है—वदं सूर्यं श्रवसा महा। अस्ति सत्ता देव महा। अस्ति सत्ता देवानामसुर्वः पुगेहितो विभुः ज्योतिरदाभ्याम्य अथांनु हे मनुष्यो, जिस ईश्वर ने पालना के लिए अन्नादि को उत्पन्न करने वाली भूमि और मेघ का प्रकाश करने वाला सूर्य रचा है वही परमेश्वर उपासना करने योग्य है। वाल्मीकि रामायण बालकांड २३:११-२२ का श्लोक भोग, आश्रा सितो लस्रमनो रामः सन्ध्यामुपासत वषाण कन्ता है कि राम लक्ष्मणा ने प्रातः उठ कर स्नानादि के बाद ईश्वर का ध्यान करके यज्ञ किया। अयोध्याकांड ६:११ में 'सहपत्नया विरालाका नारायणमुपासत' ईश्वर भजन करने की महापुरुष में कलेश्वर परायणता दिखाई है। न्युटन से उन्नत विद्या के सागर में थोड़े ता कल्प युवने को बना रहे हैं। सुकरात को किसी ने कहा कि आप तो बड़े ही बुद्धिमान हो, कहने लग, (शेष पृष्ठ ८ पर)



स्वास्थ्य की ओर—

# स्वास्थ्य के मुख्य आधा

(ले० कविराज वैद्य रामसिंह जी आरोग्य मंदिर यमुना नगर)



कविराज वैद्य रामसिंह जी आरोग्य मंदिर यमुना नगर के बड़े प्रसिद्ध आयुर्वेद के गुरु हैं। विशेष रूप से वे आध्यात्मिक स्वास्थ्य के लिए प्रसिद्ध हैं। वे मानते हैं कि आध्यात्मिक स्वास्थ्य के लिए प्रसिद्ध आयुर्वेद का उपयोग करना आवश्यक है। वे मानते हैं कि आध्यात्मिक स्वास्थ्य के लिए प्रसिद्ध आयुर्वेद का उपयोग करना आवश्यक है। वे मानते हैं कि आध्यात्मिक स्वास्थ्य के लिए प्रसिद्ध आयुर्वेद का उपयोग करना आवश्यक है।

प्रकार के वेद पर्याय रूप से आध्यात्मिक स्वास्थ्य के लिए प्रसिद्ध आयुर्वेद का उपयोग करना आवश्यक है। वे मानते हैं कि आध्यात्मिक स्वास्थ्य के लिए प्रसिद्ध आयुर्वेद का उपयोग करना आवश्यक है। वे मानते हैं कि आध्यात्मिक स्वास्थ्य के लिए प्रसिद्ध आयुर्वेद का उपयोग करना आवश्यक है। वे मानते हैं कि आध्यात्मिक स्वास्थ्य के लिए प्रसिद्ध आयुर्वेद का उपयोग करना आवश्यक है।

स्वास्थ्य के मुख्य आधार चार माने जाते हैं।

- 1-आध्यात्मिक और सौंदर्य भोजन।
- 2-विविध निद्रा।
- 3-आध्यात्मिक और नियमों के अनुसार आचरण।
- 4-विविध और नियमित व्यायाम। इनकी संपूर्ण विवेचना अपने वर्षों के अनुभव के आधार पर की जाती है।

सर्वप्रथम आधार आहार शरीर की रक्षा के लिए हम जो बहुत मुल्य अथवा नासिका से भीतर ले जाते हैं वह सब आहार में सम्मिलित है। इस में विविध प्रकार का भोजन, सब

कार्य करते, बसने-फिरते एवं भी इवास आदि विभिन्न प्रकार के शरीर की रक्षा के लिए आवश्यक है। हमें अपनी शक्ति को बनाए रखना चाहिए। हमें अपनी शक्ति को बनाए रखना चाहिए। हमें अपनी शक्ति को बनाए रखना चाहिए। हमें अपनी शक्ति को बनाए रखना चाहिए।

## आर्य जगत का ऋषिवोध ग्रंथ

पाठकों की सेवा में शिवराज के अक्षय्य पर छपकर आ रहा है। इस ग्रंथ में राष्ट्रीय एकता पर विशेष तौर पर भारतीय विद्वानों के चर्चित किए जा रहे हैं। इसके साथ ही प्रसिद्ध ऋषियों की अर्थशास्त्र भी समावेश की जा रही है। मुल्य ५०० रु। सुन्दर बद्धिया तैयार किया जा रहा। सभी समाजों में संस्थापन अपने अपने आदर्शों की समर्थन पर देने की कृपा करें। विज्ञापन हाता विज्ञापन देकर लाभ उठाएं। एक प्रति का मूल्य ३० नप देसे होगा।

हम उसे लेने के लिए शरीर इकट्ठो बार के नियम के संग को सदान कर लेना, किन्तु बार-बार के अन्वयन से अक्षय्य हो जायेगा। इसी बिना मूल्य व्यास लाते-पीने के अज्ञानता पूर्ण स्वाध्याय के कारण आद्य तन्त्रे प्रविष्ट व्यक्तियों को मैं चेतावनी देना चाहता हूँ कि वे यदि रोगों से बचना चाहते हैं तो आहार का विशेष समर्थन। किन्तु अन्वयन के अज्ञानता पूर्ण अन्वयन से अक्षय्य हो जायेगा। इसी बिना मूल्य व्यास लाते-पीने के अज्ञानता पूर्ण स्वाध्याय के कारण आद्य तन्त्रे प्रविष्ट व्यक्तियों को मैं चेतावनी देना चाहता हूँ कि वे यदि रोगों से बचना चाहते हैं तो आहार का विशेष समर्थन। किन्तु अन्वयन के अज्ञानता पूर्ण अन्वयन से अक्षय्य हो जायेगा। इसी बिना मूल्य व्यास लाते-पीने के अज्ञानता पूर्ण स्वाध्याय के कारण आद्य तन्त्रे प्रविष्ट व्यक्तियों को मैं चेतावनी देना चाहता हूँ कि वे यदि रोगों से बचना चाहते हैं तो आहार का विशेष समर्थन।

## आर्य जगत में विज्ञापन देकर लाभ उठायें।

अनमोल रत्न छप गया—छप गया संध्या पर भाषणा ले०—मूल्य अज्ञानता इंस्त्राल जी उपरोक्त मुल्य काज से १२ वर्ष पूर्व मुल्य की भी महामाया इंस्त्राल ने लिखी थी। यहका प्रकाशन काहीरे में ही हाथों हाथ विक्रय गया था। उसके बाद यह मुल्य काज एक अज्ञानता थी। उसकी एक क्रापी डी. ए. बी. काश्चिन्त बाबाश्वर के आचरणवाय मुल्यकाज में सुप्रसिद्ध थी। उसका हृदय अज्ञानता करके आर्य प्रादेसिक प्रतिनिधि काज में अज्ञानता किया है।

के बद्धिया काज पर छप कर विक्री के लिए म० इंस्त्राल साहित्य विभाग में था तुकी है। सुन्दर गेटकाय के साथ महामाया इंस्त्राल जी का तिरङ्गा फोटो बीच में देकर मुल्य को सुन्दर बनाया गया है काजत के ५५ १/- है। पाठकों! इस अज्ञानता की रक्षावादन कर संध्या के विशेष महल्य को समर्थन कर ईस्त्राल प्राप्ति की ओर गप उठायें। नोट—२०% कमिशन दिया जायेगा। प्राप्ति स्थान—महामाया इंस्त्राल साहित्य विभाग आर्य प्रादेसिक प्रतिनिधि समा निफ्ट फोर्ट आस्त्रानर

## जीवन का सरल मार्ग

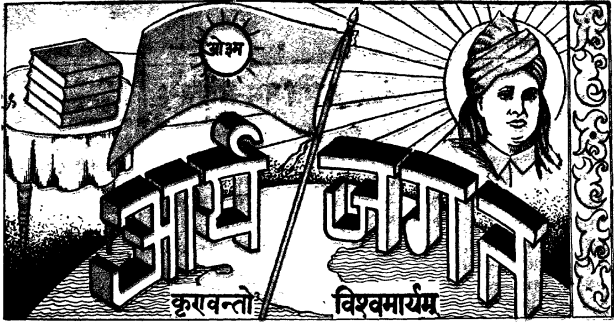
(हुट ७ का रोप)

मैं स्वयं को स्वयं से बचाने के लिए मरता हूँ। प्रसिद्ध वैज्ञानिक आर्गन्टीन आध्यात्मिक को अपना वैज्ञानिक मानता है क्योंकि एक समस्या वह हल करता है जो अन्य नहीं हल करती है। इसमें अज्ञानता है, अज्ञानता अज्ञानता है, अज्ञानता उसकी कृपा है। इसमें अज्ञानता है, अज्ञानता उसकी कृपा है। इसमें अज्ञानता है, अज्ञानता उसकी कृपा है।

## लेख राम नगर में बह

१२-१-६९ से डी०ए०बी० हावर से बसवती कृष्ण के संस्थापक महामाया कर्म चन्द जी की पावन स्मृति में उनके सपुत्र ज्ञान बागवती मित्र जी के पर बकुर्नेद पराध्याय बह सुन हो रहा है जिसकी पूर्ण-आहुति २२-१-६९ को दिन के डीक ग्यारह बजे होगी।—रोहनलाल मंत्री

मुद्रक प्रकाशक श्री अशोकराज जी काय प्रादेसिक प्रतिनिधि समाज काश्चिन्त द्वारा वीर विज्ञापन प्रेष, विज्ञापन रोक बाकायदे से मुद्रित समाज काश्चिन्त बाकायदे अज्ञानता इंस्त्राल सभन निवत बसवती आस्त्रानर राक्षर से प्रकाशित काश्चिन्त—आध्यात्मिक प्रतिनिधि समाज काश्चिन्त



टेलीफोन नं० ३०२७

[आर्यभट्टसिंह प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र]

Regd. No. P. 1

एक प्रति का मूल्य १३ नये वैसे

वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६ अंक ५)

११ माघ २०२२ रविवार—दयानन्दवाक्य १४१-२३ जनवरी १९६६

(तार 'प्रादेशिक' जालन्धर)

## वेद सूक्तयः

एकं सद्बिधाबहुधावदन्ति

उस एक भगवान् को जो सद्-सत्य रूप है, विधाः—शान्ती, योग, बहुधा-बहुत नामों से वदन्ति—कहते हैं, बोलते हैं। परमात्मा एक ही है, किन्तु भेषाभी उसे अनेक नामों से पुकारते हैं।

### दद्वै शो न रूपम्

उस परमात्मा का रूपम-रूप नहीं बदरेंगे—द्विस्वार्थ है। प्रभु निराकार है, अरूप है। इधी लिए उसका रूप भी नहीं है और इसी कारण वह इन आँकों से किसी को भी दिखाई नहीं देता। वह तो अकार्य और अरूप है।

### साध्यानामविराजो बभूव

वह भगवान् ही साध्यानाम-कारे जीवों व चराचर पदार्थों का अधिराजः—स्वामी है। इस सारे विश्व का विभवपति बही है। बही प्रजापति व जगत पति है।

### तस्य भूतं भर्ग्यं वशे

वह जितना भी भूतम-भूत है, पेशा हुआ संसार है और भव्यमन विस्वाहै देने वाला जगत् है—सारा ही तस्य-उसी के वश में है। सबका नियामक है।

अथर्ववेद से

अधिष्ठाता—श्री संतोराज जी

## वे दा मृ त

शत्रु को काट दिया जायेगा

इदमिन्द्र शृणुहि सोमप यत्त्वा हृदा शोचता जोहवीमि ।  
शूरचामि तं कुलिशेनेव वृत्त यो अस्माकं मन इदं दिनस्ति ॥

अर्थ—(इदम्) यह मेरी घोषणा (इन्द्र) हे इन्द्र (शृणुहि) सुनो (सोमप) वीरता के सोम रस का पान करने वाले (यत्त्वा) जो तुम को (हृदा) दिल से (शोचता) दृष्टि से भरे हुए दिल से (जोहवीमि) पुकारता हूँ। मैं (इदमिन्द्र) काट डालूँगा (तम्) उस दुष्ट का शत्रु को (कुलिशेन) तेज कुन्हाड़े से (वृत्तम् इव) जैसे वृत्त को काट दिया जाता है। (यः) जो भी दुष्ट पापी (अस्माकम्) हमारे (मन इदम्) इस मन को (दिनस्ति) हिंसा करता है, मारता है।

### इस का भाव यह है

मेरा मन सदा शान्ति चाहता है। इस में उदार विचार भरे हुए हैं। सब से प्रीति-पूर्वक व्यवहार करता है। किन्तु जो शत्रुता से भरे हुए विचारों को लेकर मुझ से बैर-भाव रखते हैं। अपने राक्षसी-पन का परिचय देते हैं। अथवा जिन को अपने बल पर अधिमाम है और इसी कारण ऐसे राष्ट्रपानी शत्रु, चोर लुटेरे मेरे मन को मारना चाहते हैं। मेरे मन के विचारों को भ्रम से उत्तर न देकर प्यार का निरकार करने में लगे हैं। वे कान खोल कर सुन लें कि जैसे तेज कुन्हाड़े से पेड़ को काट दिया जाता है। उसी प्रकार मैं भी अपने विचारों की, साधियों की वीरता मरी तथा हथियारों की शक्ति से उन सारे शत्रुओं को काट कर रल दूँगा। कोई मूल में न रहे। ऐसे पिराचों को चकनाचूर कर के रल दूँगा। अथर्ववेद २-१२-३

## ऋषि दर्शन

व्याप्तो ज्ञानस्वरूपरच

वह परमात्मा सब स्थानों पर व्यापक है। कोई भी स्थान ऐसा नहीं है जहाँ पर भगवान् व्यापक नहीं है। परमेश्वर ज्ञान रूप है, सारे ज्ञानों का भण्डार है। उसकी कृपा से जीवन में ज्ञान का प्रकार मिलता है। ज्ञानस्वरूप प्रभु को प्रणाम।

### नास्मात्पर उत्तमः

संसार में अनेक प्रकार के पदार्थ सुन्दर व बाढ़िया हैं किन्तु भगवान् से बढ़कर कोई भी वस्तु उत्तम नहीं है। सब से प्यारी तथा सर्वोत्कृष्ट तो भगवान् ही वस्तु है। उसके स्थान पर न तो कोई पृथक् है तथा न सर्वोत्कृष्ट ही है।

### परम कारुणिकान्तर्धामी

वह भगवान् बड़ा ही दयालु करुणा के भण्डार है। उसकी कृपा का दर्शन सर्वत्र होता है। वही अन्तर्धी भी है। प्रत्येक बात के ज्ञाता है। हमारे हरेक कर्म को जानते तथा उसका फल हमें प्रदान करते रहते हैं। उस से कोई भी बात छिपाई नहीं जा सकती।

भाष्य मू नि का से

सम्पादक—त्रिलोक चन्द्र शास्त्र

(गवांक से आगे)

बुद्धि कोच से विगड़ती है ।

क्रोध की अग्नि जलने से बुद्धि के तनु जलकर भस्म हो जाते हैं ।

योग पढ़ाते से क्रोध को दवाने का भी एक ढंग है और वह यह कि जैसे ही कोपान्न प्रवृत्तिलाल हो

अपने जिह्वा को दाँवा तले दबा लो और मुँह से हो आभ तन्-तन्...

आभ तन्-तन् का जप करो । इससे क्रोध स्वयंमेव भाग जाएगा ।

यह क्रोध को दवाने का एक ढंग है । यदि आप यह चाहते हैं कि आपको क्रोध आए ही नहीं तो इसके लिए कठोर परिश्रम की आवश्यकता है । क्रोध बुद्धि-नाशक है ।

बुद्धि का विगाड़ने वाली दूसरी चीज बहम है । दुनिया में-दिल्ली की बलें बहस या भ्रम के कारण उत्पन्न होती हैं। भ्रम के कारण ही बुद्धि विगड़ती है । एक सचन ये ।

वह भ्रमिदिन तीन साधुओं को भोजन कराने के पश्चात् ही सारिबार भोजन करने को बैठने थे । एक दिन वह प्रातःकाल कार्का देर तक तीन साधुओं की लोच करते रहे लेकिन न जाने क्यों कोई भोजन का इच्छुक न भिन्न । बड़े निराश हुए ।

अपने दैनिक जप को ताड़ने को बह तैयार न थे । उन्होंने एक तारीख सोच निकाली और वाजार से चीनी (लाडू) के बने हुए तीन 'चाये' घर ले गए । घर पहुँच कर परनी से कहा—'भायव शान । बहुत ठूठने पर मा' काई साधु महारमा भोजन करने के लिए नहीं भिले ।

मे चीनी के तीन 'चाये' ले आया हूँ । तु इन्हें ही भोग लगा दे ।' इतनाक से तीन साधु भोजन की तलाश में मुहम्मल ही मे क्लामर और उक्त महाराज ने प्रसन्नता पूर्वक उन्हे भोजन के लिए अपने घर बुला लिया । जब तीनों साधु आसनों पर विराजमान हो गए तो उक्त महाराजजी वाजार से दही लेने चले गए । इतने में शुकल पढ़ने के लिए गए तीन बच्चे घर में आ गए और

## राष्ट्र-भक्ति और प्रभु-भक्ति-६

(श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज की अमृतभरी कथा)



उन्होंने रसोई में पड़े चीनी के तीन बाँधों को देखा तो एक ने कहा—'माँ एक बाँधे को मैं खाऊँगा

दूसरे ने कहा—एक को मैं खाऊँगा । और तीसरे ने भी जव यही कहा तो तीनों साधु आसन छोड़ कर भागे ।

उन्होंने मोचा कड़ा मुलीषत में फस गा । भोजन करने आए थे, स्वयं भोजन बनने जा रहे हैं । महाराज जी जब दही लेकर आए तो यह देख कर बड़े परेशान हुए कि तीनों साधु महारमा अपने २ आसनों से गायब हैं। पत्ना सेपूजा तोउसने 'चाये' वाली बात कह सुनाई । महाराज जी भागे-भागे फिर वाजार में पहुँचे और उन साधुओं के आगे हाथ जोड़ कर कहा—'महाराज । बच्चे तो चीनी के 'चाये' खाने की बलें कर रहे थे । आप को भ्रम हुआ । मेरे घर परचारिए । मेरा तो सारा परिवार भूखा बैठा है ।

यह है भ्रम से बुद्धि विगड़ने का एक उदाहरण । आपसमाज देवी देवताओं का पूरा सम्मान करता है । आर्यसमाजी भगवान कृष्ण को श्रद्धा की दृष्टि से देखते हैं । कृष्ण ने गीता का महान सन्देश संसार को दिया । मयोदा-पुरुषोत्तम राम भी हमारी श्रद्धा एवं सम्मान के पात्र हैं । देवी देवताओं की भी हम पूजा करते हैं । आज ही प्रातः महात्मा आनन्द भिक्षु जी ने यज्ञ कराया और बड़े देवी देवताओं के लिए अनेक आहुतियाँ डाली गईं । लेकिन इस सभ के बादजुड़ कृष्ण लोगों ने आर्यसमाज के विरुद्ध एक बहम पैला रखा है ।

विरुद्ध विगड़ने का तीसरा कारण है चिन्ता । यह बहम ही भयंकर है । हमें कभी चिन्ता नहीं करनी चाहिए । चिन्ता ही ब्रह्मण चिन्तन

करना चाहिए । बड़े लोगों को यही सिखा रहती है कि उन्हें कोई चिन्ता नहीं है ।

इसी तरह बुद्धि के विकास के भी तीन तरीके हैं— प्रथम सदा प्रसन्न रहो भगवान् कृष्ण पांच हज़ार वर्ष पूर्व कह गए हैं कि जो व्यक्ति हमेशा प्रसन्न रहता है उस के कष्ट अपने आप हट जाते हैं । श्रमियों ने लिखा है कि हमारे शरीर में ७२०२०१ कीटाणु हैं । जब इंसान दिन खोलकर ईसला है तो यह सब कीटाणु नष्ट हो जाते हैं । एक सचन कहने लगे कि किसी सभा-सोसायटी में बैठ कर जोर से हँसना शिष्टाचार के विरुद्ध है । मैंने जवाब दिया—अरे भाई ! शिष्टाचार का तो हमेशा खयाल रखना चाहिए । समा-सोसायटी में हँसना पसन्द नहीं तो स्नानागार में जाकर हँस लो । हँसे बिना गुजारा नहीं हो सकता ।

When you weep your Trouble Deep, or When Laugh your Trouble Sweep.

जिसका अन्वयःशुद्ध है, ईर्ष्या, द्वेष का जो शिकार नहीं, काम, क्रोध से जो बचता है वही सुलुकर हँसेगा ।

बुद्धि के विकास का दूसरा तरीका यह है कि अच्छे ग्रन्थ पढ़ो । उपन्यास और सिनेमा की गान्धी पुस्तकें पढ़ने से बुद्धि विगड़ती है । हमें उपनिषद्, गीता, रामायण और अन्य धार्मिक पुस्तक का पाठ करना चाहिए । तीसरे—अच्छी संगति में बैठना चाहिए । ससंग में जो कुछ भी हो उसे ग्रहण कर लेना चाहिए ।

एक पंडित जी की सेवा पर कथा कर रहे थे । एक दुकानदार का लड़का आबावरा था । उसने उसे कहा—'जा बैठा ! पंडित जी रोज सभा करते हैं । तु सुनाकर, शब्द तुम्हें भी कोई अच्छी संगति का धारण हो जाए ।' लड़का कथा सुनने जाने लगा । पंडित जी ने कथा में कहा कि यदि गाय कहीं कुल खा रही हो तो उसे रोकना नहीं चाहिए । दूसरे दिन लड़का अपने पिता को धाँदे, दाल की दुकान पर बैठा था कि एक गाय आकर आटे को बोरी में मुँह मारने लगा । लड़के ने पंडित जी की कथा के इस वाक्य को पल्ले बांध रखा था कि जब गाय खा रही हो तो उसे रोकना नहीं चाहिए और लड़के ने दुकान पर आटा खा रही गाय को भी नहीं रोका । इतने में लड़के के पिता भी आ गए और जब गाय को आटे की बोरी में मुँह डाले देखा तो फिरला कर कहा—'अरे मूखे ! देखता नहीं गाय आटा खा रही है ।' लड़के ने कहा—'पिता जी ! पंडित जी ने रात कथा में कहा था कि खा रही गाय को मत रोको ।' पिता ने क्रोध में कंपते हुए कहा—'मूखे ! पण्डित की कथा को रात वही छोड़ आया करो ।'

सत्य आचार—परमात्मा ही हम सच्चा आचार है । परमात्मा महान, सन-अनन्यार्थी भी है । जिसे प्रभु का आशीर्वाद प्राप्त है, उस पर कभी कोई विपदा नहीं आ सकती । यदि किसी की शहर के वापेदार से दोस्ती हो जाए तो वह वाजार में अकड़कर के चलता है । परशु वदि परमात्मा से सम्बन्ध स्थापित हो जाए तो क्या कहने । परमात्मा से सम्बन्ध बनने से अकड़ नहीं, नम्रता आगयी । सर्व-अनन्यार्थी ईश्वर दिखाई देता है । बातें भी करता है, लेकिन उसे देखने के लिए अन्तरात्मा के नेत्र सुलने चाहिए । (कमरा)

सम्पादकोय—

# आर्य जगत

वर्ष २६ | रविवार २०२२, ३ जनवरी १९६६ | अंक ४

## गणतन्त्र दिवस का संकल्प

प्रतिवर्ष २६ जनवरी का दिवस भारत के लिए गणतन्त्र दिवस के रूप में आता है। इस दिन भारत के आननीय प्रधानमन्त्री नई देहली में ऐतिहासिक लाल किले की ऊंची प्राचीर पर खड़े होकर राष्ट्र की लाखों करोड़ों जनता के सामने राष्ट्र का ऊंचा मंठा लहराते हैं तथा सारे देश को एक विशेष सन्देश देते हैं। यह दिवस हमारे देश के इतिहास में एक विशेष महत्व रखता है। उसी की स्मृति रूप सारा देश अपने संकल्पों को दुहराता रहता है। भारत आता के आन सम्मान की रक्षाद्वित तन मन धन अर्पित करने की हम अपने जीवन में दीक्षा लेते हैं। सारे देश में बाघा से लेकर कम्पाकुमारी तक तथा डारिका से लेकर नागा प्रदेश तक इस गणतन्त्र दिवस पर बड़े-२ समारोहों में राष्ट्रभूमि की रक्षा का म्म लिया जाता है। इस बार का यह दिवस सारा राष्ट्र आसुओं के साथ मना-वेगा। वैसे तो इस बार भारत ने एक सफल संभाम का सामना किया है इस युद्ध में हमारे पड़ोसों ने भीषण से भीषणमम शस्त्रों, टैंकों, विमानों तथा दूरभार तोपों का बलपूर्वक प्रयोग किया। भारतीय वीर जवानों ने आत्मबलिदान से एक नया बीता का इतिहास स्याही से नहीं बरन अपने रक्त से लिख दिया है। युद्धविराम के बाद रूस के महान मन्त्री श्री कोसीगिन ने बड़ा प्रयत्न करके ताराकन्द में हमारे देवस्वभाव प्रधान मन्त्री श्री शास्त्री जी की

तथा उधर से श्री आयुव को बुलवा कर परम्पर शान्ति से अपनी समस्या हल करने के लिए जो पक्षसन्धीय काम किया। वह इतिहास का एक ऊच्यय धन गया है। अन्तिम दिन सम्मिलित घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर भी हो गए। किन्तु बिधना को कुछ भी ही मञ्जूर था—रात को एकदम दिल के दर्द से मात का शान्त भिय देवता नेता प्रधानमन्त्री श्री शास्त्री जी कुछ मिट्टों में ही रुदा की नीद में सो गये। विमान से उनका शव फाया। सारा देश व सारा विश्व रोया है। केवल १८ मास के थोड़े समय में इस महान नेता ने कितना कमाल कर दिखाया। राष्ट्र को नई चेतना दे दी। गुलाब से कामल तथा वज्र से कठिन ऐसे ही होते हैं। यदि वह जीवित होते तो आज के गणतन्त्र दिवस का रूप ही कुछ और होता। वह तो विश्व-शान्ति के लिए अपना जीवन बलिदान कर गये।

गणतन्त्र दिवस तो हम मना-येगे—किन्तु वह सर्वोपय शान्ति युद्ध हम में नहीं है। इसलिए इस बार रागरंग का समारोह कम होगा। हां गम्भीरता हमारे मुख व चिचारों में होगा। हम इस दिवस पर संकल्प धारण करें कि जिस देश के गौरवमान के रक्षण के लिए हमारे रक्षण नेता श्री शास्त्री जी ने अपने जीवन अव्यक्तिलय के सारे सुल साधनों को एक ोर रखकर भारत को उन्नत करने में दिन रात एक कर दिया। काम करते हुए न

दिन का ध्यान किया और न रात को विभ्राम का विचार किया। शान्ति स्थापन के लिए विदेशों में जाकर दो-२ बजे रात तक जाग २ भारत के सम्मान को आगे रखा। वह यज्ञमय, राष्ट्रमय, दुःखामय ही बन चुके थे। आज हम भी उनके जीवन बलिदान से इस गणतन्त्र दिवस पर संकल्प लेवें कि हम अपने तुच्छ स्वार्थ हितों का परित्याग करके राष्ट्र के विशाल सम्मान को सदा आगे रखेंगे। भारत माता क सम्मान व रक्षा के हित अपनी प्यारी से प्यारी वस्तु को बलिदान कर देंगे। राष्ट्र का जीवन हमारा जीवन, गौरव हमारा गौरव तथा इसकी उन्नति हमारी उन्नति होगी। इस के लिए यदि हमें अपना तन-मन-धन और सवस्व भी अर्पित करना पड़े तो हमें हस्त दे दे देंगे किन्तु माता के मान पर कोई आंच न आने देंगे। तभी सच्चे भारतीय हैं।

—त्रिलोकचन्द्र

## आर्यसमाज मन्दिर (डेरा वसी में) आल पार्टीज शोक सभा

दिनांक १३ जनवरी को आर्यसमाज डेरावसी की ओर से सा० व.गीराम जी गिटावर्ध तहसीलदार कलसिया स्टेट की प्रधानता में आल पार्टीज शोक सभा हुई, जिन में अहाली लीडर श्री गुम्बुल सिंह जी शाय, श्री बलवन्तसिंह जी अहाली प्रान्तीय कमेटी वल्लभ आ देशराज जी शास्त्री भूतपूर्व मंत्री 'ए. पी. की. स्कूल डेरा वसी के—स्वर्गीय श्री लालबहादुर जो के सराहनीय कार्यों पर पकारा डालते हुये, उनकी आत्मा की सद्गति और उनके परिवार को शान्ति प्रदान के लिये प्रार्थनाये करके अर्द्धाजली अेंट की गयी।

धर्मपाल गुप्ता मंत्री आय सभाज

## आर्यसमाज चंडीगढ़ (मैकटर २२) में

१६-१-६६ रविवार को एक विराट शोक सभा हुई जिस में निम्न प्रस्ताव पाम किए गए। चरडीगढ़ के आर्य नर-नारियों की यह विराट सभा भारतीय संस्कृति के अमर पुजारी, स्वातंत्र्य संग्राम के अमर सेनाना, युद्ध एवं शांति के अग्रदूत अतन सोपिय प्रधान मन्त्री स्वर्गीय श्री लालबहादुर जो शास्त्री के तार कंद में आकरिक निधन पर हासिक शोक प्रगट करती है। उनकी महान आत्मा को परम पिता परमात्मा सद्गति तो प्रदान करेंगे ही, परन्तु जिस शुभ कार्य के लिए आप ने अपना जीवन ग्योष्ठ्यकर किया है उस आपूरे कार्य पूर्ति के लिए हमें सम्पूर्ण शक्ति प्रदान करें। तथा उनके संतत परिवार एवं अनेक मित्र मण्डली को इस महान दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

चरडीगढ़ के आर्य नर नारियों की यह विराट सभा भारतीय संस्कृति क अमर पुजारी स्वातंत्र्य संग्राम के प्रमुख सेनानी स्वर्गीय श्री काका साहिब न.हरि विष्णु गाडगिल जी के निधन पर हासिक शोक प्रगट करती है। आजीवन से संवाम में जुके रहे। अगले जन्म में प्रभु उनके देश सेवा के लिए पुनर्जन्म दें।

यह सभा उना संतत्य परिवार एवं स्वस्थियों तः अनेकानेक मित्र मण्डली को इस महान दुःख को सहन करने को शक्ति प्रदान करें।

वेदप्रकाश 'प्रभाकर' कुने मंत्री आय सभाज

★ कृत में दक्षिणी हने . वो में सत्य आहितः।  
अर्थ—मेरे दायें हाथ में वस है बायें हाथ में विजय है। (अथर्व)

## सभा का वार्षिक अधिवेशन

आर्य प्रादेशिक सभा पंजाब जालन्धर शहर की विशेष अन्तरंग समाम की नेटक सभा कार्यालय महादामा ईशराज भवन में सभा के माननीय प्रधान श्रीयुक्त यश जी की अध्यक्षता में हुई। पंजाबी सुवा की समस्या पर विशेष विचार होता रहा। अन्य आवश्यक बातों के साथ एक तो यह वस्तु निरूपित किया गया कि इस बार आने वाला शिवरात्रि का वर्ष सारे समाजों में विशेष कर पूज्यमाम से मनाने का आयोजन हो। नगरों में कर्मों में इस दिन बड़े ही समारोह के साथ सारी जनता को मिला कर शानदार जलज निकाले जायें ताकि समाज की संगठित व जीती जागती शक्ति का पूरा परिचय मिले। उत्साह से एवं मनोवा जाय।

इस के साथ सभा का वर्ष समाप्त हो रहा है। इसी लिए इसका अगला वार्षिक बैठक व निर्वाचन अधिवेशन भी निर्धारित किए जाए। अन्तरंग में निश्चय किया गया कि सभा का वार्षिक अधिवेशन आर्य-समाज विक्रमपुरा जालन्धर के विराल मंदिर में किया जाए। वास निवासार्थि का प्रबन्ध आर्य-समाज विक्रमपुरा जालन्धर की तरफ से किया जाएगा। अधिवेशन के लिए २० फेब्ररी सन ६६ रविवार दो बजे बाद दोहराई है। सभा के मान्य अधिकारी अपना कार्य करते रहे और कर रहे हैं। वास्तव में आर्यसमाज ही सभा का रूप है। वर्ष के बाद आर्य-समाजों के निर्वाचित भाई रहिने इकट्ठे होकर अपनी पंजीय सभा का अगले वर्ष के लिए कार्यक्रम बनाने हैं। गत वर्ष के तमाम कामों को देखते व सुनते तथा अगले साल के कामों को निश्चय करते हैं। यह वर्ष तो आर्यसमाज के लिए एक विशेष कार्य का वर्ष है।

पंजाब प्रांत के आकाश पर उड़े हुए भीषण संघाम के काले बादलों से तो शायद थोड़ा सा पैत मिल जाये। भारत ने ताशकन्द में अमन शांत के महान दूत अपने स्वदेशिय नेता प्रधान मंत्री श्री लाल-बहादुर शास्त्री जैसे देवता की जीवन छाहृति दे दी है। किन्तु पंजाब के वतवारे का पंजाबी सुवा व हरयाणा प्रांत बनाने के लिए जल मरने वालों की बाँटें अजाज भी उसी प्रकार से कायम हैं। आर्यसमाज के सामने सब से बड़ी समस्या खड़ी है और भी अजाज-इक बाँटें हैं जिन पर इस बार सारे प्रतिनिधियों ने मिलकर विचार करके उनका हल ढूँढना होगा। यह वर्ष समसाम्यों का वर्ष है। सभा का यह अधिवेशन अथा आनन्दयक होगा। इसलिये भुलना नहीं होगा—०

### गुरु विरजानन्द मेला

व्याकरण के स्य गुरु विरजानन्द सरस्वती ने सवार को देवता दयानन्द जैसा महान शिष्य प्रदान किया। अमीका निवासी महादामा

वृन्दीनाथ जी करतारपुर जी. टी. रोड पर बड़ा भव्य गुरु विरजानन्द की याद में स्मारकरूप में विशाल स्थान बनवा दिया। जनता उम महान गुरु का भी उपकार मानती रहे। महापुरुषों के मेले जनता में चेतना और प्रेरणा भर देते हैं। हम चाहते थे कि प्रविष्य गुरु विरजानन्द जी का बड़ा भारी समारोह करतापुर होता रहे ताकि प्रचार हो। इस बार बड़े हर्ष की बात है कि इस स्मारक में पहली फरवरी ६६ से लेकर पूष्य महारामा प्रभु आभित भी रोहटक वालों की अध्यक्षता में चारों वेदों का महान् यज्ञ आरम्भ होकर ता० १८ फेबरी शिवरात्रि को पूर्णाहुति होगी। बड़ा भारी समारोह होगा सुन्दर प्रबन्ध भी होते रहेंगे। भोजन तथा ठहरने का प्रबन्ध यज्ञ प्रबन्ध मंडल की आर से होगा। आने वाले सञ्जन वहाँ एक सप्ताह पूर्व आराम में सुचना देंगे। यह समारोह बड़ा भव्य होगा। हम प्रबन्धकों से एक नम्र निवेदन करना चाहते हैं कि कहीं ऐसा न हो कि इस बार तो इतना भारी समारोह कर दें और अगले वर्ष कुछ भी न हो या मामूली हो अब आरम्भ किया तो प्रविषय यह शुरूमेला समारोह है। जनता स्व्य पढ़ें।

### क्या गजब हो गया

शिवप्रकाश शर्मा 'अनिल' वेगमपुरा उज्जैन (म. प्र.) क्या गजब हो गया? शासन ने हिन्दी को भिक्कर कर डाला, हल्दी, डीरा, राई, मिर्ची राहद खोपारा और इलचची नकलो दाही, नकली मुँह, असली घो नकलो कर डाला, असली नकली का घंवा, कोई जा शासन से लीये। कितने नकली हैं देशभक्त, ये कुर्सी पर डट कर देखे, हमको तो भाई जीवन में, नकली से पहा सदा पाजा। अमी-अमी लाहौर गया, कविता का करने पाठ वहाँ, असली-नकली नून हिन्दी युक्त बना गजक इक नई यहाँ नकली रेटे, कठ बनाकर सब गुरु को गोबर कर डाला, नवल चलेगी, दाल गलेगी, मटपट से लिचड़ी बन जाय। गुं गाय, बहारा सुन-सुन, बीच-बीच में ताल बजाये, नबसुग के इस नये रंग ने, बुद्धा की तर्कणी कर डाले।  
क्या गजब हो गया.....

### आर्य समाज हिसार

आज १२-१६ को आर्य-समाज दयानन्द भवन हिसार में दोनो समाजों की ओर से सम्म-लित यज्ञ और उपदेश हुआ। पदचार एक शोक सभा में आर्य विद्वानों ने अपने पूष्य नेता स्वर्गीय श्री लालबहादुर शास्त्री के चरखों में अर्धाजिवाय भेंट की गई।

—नन्दलाल मज्जी समाज

### आर्य समाज रेलवे रोड

#### अम्बाला शहर का वार्षिक निर्वाचन

- श्री जगदीश चन्द्र जी प्रधान
- १. मा. करतार चन्द जी उप. प्र.
  - २. प्रो. कृष्णवत्स जी शर्मा उप. प्र.
  - ३. मातुराम जी मंत्री
  - ४. रूपलाल जी भाट्टा उपमन्त्री
  - ५. प्रो. वेद नकाश देवालकर उपमन्त्री
  - ६. तलमल जी कोषाध्यक्ष
  - ७. मा. मूलचन्द जी पुस्तकाध्यक्ष
  - ८. विलायतीरामजी लेखानिर्वाह
- मातुराम मंत्री

### शोकजनक निधन

अश्रुतसर लारेंस रोड अमाज के दो माननीय सञ्जनों का गत दिनों देहावसान हो जाने से समाज की बड़ी च्ति हुई है। उन में माननीय ला० अतारामजी दयानन्द नगर के हैं। आप ने अमाज में समाज का बड़ा काम किया। बापस आकर अश्रुतसर में रहते हुए भी बड़ा दान दिया। बुद्धावस्था में भी समाज की बड़ी लगन थी। उनके चले जाने से समाज की च्ति पहुँची। इसी प्रकार श्री ला० गुरुचरण दत्त जी के मान्य भाई ला० रामलाल जी का देहान्त भी शोक-जनक है। सारा परिवार समाज का प्रेमी है। लाला जी यहाँ से बीनार वे पिर भी उनकी विधा-मानता समाज के लिए बड़ी सामकरी थी। आर्यसमाज ने सारे परिवार से इस शोक के अन्वेष पर हादिक संवेदना प्रकट की। दोनो स्वर्गीय महात्माओं के देहावसान पर शोक प्रस्ताव पारित किया। —अन्नीसभाय

आय प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का वार्षिक साधारण कार्य-वेशान २०-२-१९६६ रविवार २ बजे बाय दोपहर कायेंसमाज विक्रमपुरा में होगा। प्रधान जी के निर्देश तथा १-१-६६ की हुई अंतरग सभा की समुष्टि के बाद यह तिथि निश्चित की गई है।

इसके वार्षिक विवरण तथा १९६६ सन् का आनुमानिक बजट प्रस्तुत किया जाएगा। साथ ही आगामी वर्ष के लिए आधिकारिक-तया अन्तरंग के सदस्यों का चुनाव भी होगा।

१ अगस्त १९६४ की अंतरंग सभा के निष्पत्ति सभा सम्बन्ध के लिए कम से ५ म ४) दशरथ तथा १४) वेद-प्रचार निधि में देना आवश्यक होगा—समुष्टि के लिए आयाग।

सब समाजें अपनी दशरथ इस तिथि से पूर्व ही समा-कार्यालय में भेज दें।

आने वाले प्रतिनिधियों के निवास और भोजन का प्रबन्ध कायेंसमाज विक्रमपुरा में ही होगा।

वार्षिक कार्यवेशान की सूचना नियमित रूप से अलग भी भेजी जा रही है। सभा की रिपोर्ट और बजट की प्रतियाँ भी शीघ्र ही भेज दी जाएंगी।

आ.प्रा.प्र. सभा का लेखा-जोखा

६ जनवरी १९६६ के आर्य जगत में स्पष्ट किया गया था कि वार्षिक हॉट से सभा इतनी पुष्ट नहीं जितना कि प्रायः समझा जाता है। हाँ, यदि सभा से सम्बद्ध समाजें सभा का धन, जो कि उन्हें नियमित रूप से सभा को देना है, भेजती रहें तो सभा का कार्य ठीक ढंग से चल सकता है। सभा की आनुमानिक आय ६० हजार के लगभग है। इसमें से दशरथ चार हजार आना चाहिए। वेद प्रचार निधि में २४ हजार चाहिए। इसके अतिरिक्त सभा में शीघ्र ही आकाश रहता है, सभा की सम्पत्ति

## आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के समाचार



से आप होती रहती है यद् वस सम्पत्ति का व्यावसायिक ढंग से प्रबन्ध हो सके तो, बलुतः सभा का सम्पत्ति सम्बन्धी काय इतना आधिक है कि इस कि अलग सम्पत्ति निरीक्षक रखने की आवश्यकता है। इस दिशा में इस वर्ष कुछ कार्य हुआ है पर अभी बहुत कुछ और करने के लिए शेष है, क्योंकि सभा की सम्पत्ति बहुत है पर उससे आय अपेक्षाकृत बहुत कम। इस वर्ष केवल हिसार के जिले में सभा की वास प्राप्त की भूमि से १९४४ रु० तथा किराए आदि के ६२२) प्राप्त हुए हैं। ठीक प्रबन्ध होने पर यह आय लगभग २० हजार वार्षिक तक पहुँच सकती है।

सभा के आनुमानिक दशरथ तथा वेद प्रचार दान का उपर उल्लेख हुआ। इस वर्ष बलुतः सभा को २३३३) दशरथ तथा ६०६) वेद प्रचार निधि में प्राप्त हुए हैं।

वेद प्रचार निधि को कम धन आने के दो कारण हैं। एक तो २-२३) मास युद्ध का वातावरण रहने से बहुत-सी समाजों के उत्सव न हो सके। अतः उनका धन भी न आ सका। दूसरे महात्मा हंसराज जयन्ती के सम्बन्ध में आर्य समाजों ने पर्याप्त धन संग्रह नहीं किया। दस हजार के लगभग जयन्ती के आयसर पर एकत्र हुआ तथा सौस हजार के लगभग जयन्ती नोटों की विक्री से प्राप्त हुआ। जयन्ती नोटों की विक्री से प्राप्त धन के दो खोत रहे। डी. ए. वो. संस्थाओं से जो धन प्राप्त हुआ उसके लिए ला. सन्तोपराज जी ने बहुत परिश्रम किया। सभा इसके लिए उनकी आभारी है। डी. ए. वो. संस्थाओं का भी इसके लिए विशेष आभार है। वास्तव में देखा

जाए तो आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का महल डी.ए.वो. संस्थाओं के स्वामियों पर ही खड़ा हुआ है। इन संस्थाओं के प्रिंसिपल तथा हैडमास्टर महोदय के सहयोग के बिना यह सभा एक मास भी नहीं चल सकती।

महात्मा हंसराज जयन्ती सम्बन्धी नोटों की आय के लिए सभा के महोपदेशक तथा उपदेशक वर्ग का काम भी बहुत प्रशंसनीय रहा। उन्होंने बड़े परिश्रम से कष्ट सहकर यह कार्य सम्पन्न किया। इन समाजों ने सभा के कार्य-कर्ताओं को इस विषय में सहायता दिया उनमें कायसमाज लारंस रोड अमृतसर सबसे प्रमुख रहे। उसके दो मुख्य कार्यकर्ता वैद्य विद्यासागर जी तथा डा० वेदव्रत जी के पुरोधार्य से सभा को इस दिशा में बहुत सफलता मिली। आर्य समाज, लारेंस रोड अमृतसर एक ऐसी समाज है जिस ने कथा ही, जयन्ती हो, कोई भी सभा की सहायता का आचर हो खाली नहीं जाने दिया। सभा की हर समय सहायता की है। सभा इसके लिए इस आर्य समाज की मुक्त कंठ से आभारी है। इस समाज का एक अनुकरणीय आदर्श है। यह समाज सभा के महो-पदेशकों के अतिरिक्त किसी और से कथा या प्रचार कार्य नहीं कराती ताकि सभा की सहायता में किसी प्रकार की कमी न आ सके।

इस सभा-सहायता के काय में पूजनीय महात्मा आनन्द स्वामी जी, स्वकिन्तन रूप से हमारे उप-देशक महोदयों ने तथा अन्य आर्य समाजों ने जो कार्य किया, प्रयत्न किया, सफलता प्राप्त की उसका उल्लेख अगले अंक में किया जाएगा।

—कमराः सत्यदेव विशालकार

अग्नी समाज

## शोक प्रस्ताव

आयेंसमाज सैक्टर ८ चंडीगढ़ की यह सभा भी लाल बहादुर शास्त्री के शोक निधन पर जो दे-दिन एवं तशकन्द में हुआ गहरा दुःख और शोक प्रकट करती है। ५० जवाहर लाल नेहरू के सुयोग्य वारिस के नाते वे न केवल युद्ध के दिनों के ही एक सफल नेता विद्वान्, अविभूत शांति प्राप्त करने में भी। मगर सब से बड़कर वे एक विशुद्ध चरित्र और विनय तथा सहनशीलता के पुत्र थे। हम अपने समूचे देश तथा संसार के साथ मिलकर इस महान् राष्ट्रीय ता और विश्वराजनिधि के लिए शोक प्रकट करते हुए उनकी दिवंगत आत्मा के लिये शांति का प्रार्थना करते हैं। हम आज के दिन एक महान् राष्ट्र के निर्माता के लिये निज का अपेक्षा करें, यही उनकी सब से बड़ी यादगार होगी।

इस प्रस्ताव की प्रतियाँ भारत के प्रधानमन्त्री श्रीमती जतिता शास्त्री तथा पं. से को भेजी गईं। पंजाब के भूपवंश रायचवाल डा० नरहरि विष्णु शाहगल जी के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए उन्हें अर्द्धजालि अर्पित की गई और शोक प्रस्ताव पारित किया गया।

—आशुगराम आर्य पुरोहित

## आर्य समाज मदीनादांगी में शोक सभा

श्री० बहादुरसिंह जी की प्रधानता में यह शोक सभा सम्पन्न हुई जिस में महदेव जी शास्त्री तथा ५० प्रमुदपाल जी सभा उपदेशक ने भी लालबहादुर शास्त्री जी के आर्यसमिक निधन पर अपनी अर्द्ध-जालियाँ अर्पित कीं। उपस्थित जनता ने २ मिमिट मीन रह कर उनकी आत्मा की सद्गति व परिवार को धैर्य प्रदान करने की प्रभु से प्रार्थना की गई।

संजो आर्यसमाज



(गातों से आगे)

युद्धकाल में विशेष दायित्व छात्राओं का होता है। पचसल अथवा दिवंगत जवानों को सान्त्वना देने के लिए जैसा कार्य छात्राएं कर सकती हैं वैसी सफलता छात्र वर्ग से सम्पादित नहीं हो सकती। नसिग का कार्य तो छात्राओं को ही शोभनीय है।

४. युद्धकाल में कोई देश न तो विपुल अनाज के सहारे ही जी सकती है न प्रक्षेपणास्त्रों के सहारे ही, अविपुल धन और समर में अढ़ा की भावनाएं उसे जीवित रखती हैं (श्रीर अनाज: जीत भी दिलाते हैं।) ऐसे काल में विद्यार्थियों का यह कर्त्तव्य होता है कि वे अफवाहों द्वारा गुमराह न हों (विद्यार्थियों का गुमराह न होने देना अघ्यापक का ही परक- मात्र कर्त्तव्य है।)

५. विद्यार्थियों का यह भी एक दायित्व है कि वे शृंगार विषयक सामग्री को कदापि न पढ़ें। वासनात्मक वेराभूषा को भी वे दूर ही रखें। सिनेमें भी ऐसे ही देखे जाएं जो सामरिक महत्व के हों। लेकिन भारत में आज युद्धकाल की स्थिति होती हुए भी सिने-जगत् हालीयुद्ध का हरकारा बना हुआ है।

६. चित्रकार-विद्यार्थी जनता तथा जवानों में जाश जगाने के लिए प्रभावोत्पादक चित्र तैयार कर सकते हैं।

७. नाटकों एवम् दंगलों का आबोचन करके विद्यार्थी वर्ग सुरक्षा कोष के लिए अच्छी रकम जुटा सकते हैं।

८. स्वयं विद्यार्थियों में सहिष्णुता तथा औरों को सान्त्वना देने की भावनाएं बूट-कूट कर भरी होनी चाहिए। लेखक का यह सन्देश निजो अनुभव है कि स इतरन बजने पर लोगों में

## युद्धकाल में विद्यार्थियों का दायित्व

(श्री सुन्दरलाल जो बोहरा, जोधपुर)



अनावश्यक रूप से लक्ष्मणी मच जाती है। 'मरना तो है ही' इस प्रकार की भावना से प्राप्त हो कर कई लोग (विशेषतः बूढ़े) लाइवों में घुसने से इन्कार कर देते हैं। ऐसी दुविधा की चढ़ी में विद्यार्थियों को ही आगे झा कर भीड़ को शान्त करना चाहिए। लोगों के साथ सहानुभूति प्रदर्शित करते हुए उन्हें चुप कराना चाहिए।

मिलते ही उन्हें चाहिये कि वे अपनी 'बानर-सेना' सहित सजग एवम् सक्रिय हो जाएं। पिछले महीनों में बिघटनकारी घुसपैठियों को पकड़वाने में जैसी तत्परता विद्यार्थियों ने दिखाई है, कुरालता परिचित पुलिस अधिकारियों के लिये भी एक बदाहरण रूप में ही रहेगी।

सही आर्यों में एक जनतापरम जब युद्धकाल की स्थिति उत्पन्न

६. घसपैठियों का सुराग

## स्वर्गीय शास्त्री जो के प्रति

ले०-श्री रामभूति जो कालिया, दिल्ली-२७

(१)

मध्वाह्न में तम छा गया है,  
कुहराम सा क्यों मच गया है ?  
बिजली गिरी बिन बादलों के,  
या कि गगन ही फट गया है ?

(२)

मृत्यु लक्ष्मी क्यों मिलकती है,  
श्री 'मा' लक्ष्मी क्यों बिलकती है ?  
हा ! लाल मेरा सो गया है,  
ज्वाला हृदय में धकती है।

(३)

कोटि हृदय क्यों रो दिये हैं  
क्यों अन्न हार पिरो दिये हैं ?  
जिस ने जगाया था सभी को,  
वे नौद गहरी सो दिये हैं।

(४)

तुम ने कहा था जय जवान,  
तुम ने कहा था जय किसान,  
अब लो सुनो जयकार अपनी,  
हैं कर रहे जो जवां, किसान।

(५)

संसार लिज हो रह गया है,  
कौ मुक स्वर कछ कह गया है,  
इतिहास था जो बना रहा,  
इतिहास बन कर रह गया है।

होती है तो विद्यार्थियों के दायित्व का निर्धारण उन के स्वयं के द्वारा न हो पर शिक्षकों तथा संरक्षकों द्वारा होना चाहिये। यदि स्वयं शिक्षक वर्ग का जीवन-दर्शन ही मुसाहिबी-टाइप (Yaku-ism) का है तो चूक की स्थिति में विद्यार्थियों को दोषो टहराना न्यायसंगत नहीं है। विद्यार्थी हमेशा स्वयं को स्वयं के रूप में ही प्रवृत्त करते हैं न कि उसे सापेक्ष मान कर।

## पटना जिला आर्य सभा बाढ़ (पटना)

यह सभा भी लाल बहादुर शास्त्री जो के आचार्यक निधन पर गहरा शोक प्रकट करती है। आप लोक विष नेता होने के साथ २ थोड़े समय में ही भारत को नया उत्साह व एकता का जो पाठ पढ़ाया उसको हम कभी नहीं भूल सकते। हम आप को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए आपकी आत्मा की सदृगति व परिवार को धर्म धारण करने की प्रभु से आग्रह करते हैं।

राम लखन आर्य  
प्रधान सभा

## हंसराज महिला कालेज शास्त्री जो के श्रद्धांजलि

जालन्धर। हंसराज महिला महाविद्यालय जालन्धर की छात्राओं तथा स्टाफ को एक शोक सभा प्रिंसिपल कुमारी विद्यावती जी आनन्द की अध्यक्षता में हुई। विभिन्न वक्ताओं ने शास्त्री जो के हार्दिक श्रद्धांजलियां अर्पित कीं। शोक प्रस्ताव पास करने के बाद दिवंगत आत्मा की स्मृति में दो मिनट मौन धारण किया गया।







टेलीफोन नं० ३०२७

[आर्यभारदेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्वर का साप्ताहिक मुखपत्र]

Regd. No. P. 12

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे

वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६ अंक ८८

६ फाल्गुण २०२२ रविशार—दयानन्दवाग्ध १४१—२० फरवरी १९६६

(तार 'प्रादेशिक' जालन्वर)

## वेद सूक्तयः

भारं भरराचित्

बह परमेश्वर ही भारत-रस जड़ चेतन जगत् के भार को भरति-धारण किए हुए है आर्यन्तु मूल रूप से। इस विशाल विविध रूप का जितना भी भार है, सारा उसी प्रभु ने ही धारण किया है।

## ऋतं पिपति

वही परमात्मा ऋतम्-रस विचित्र विविध संसार को, सत्य ज्ञान को पिपति-पालन करता है। इस विश्व में जितने भी नियम हैं-उसी के बनाने हुए हैं।

## अमृतं निपाति

वही प्रभु ही जितना और जहां वा जो भी अमृतम्-अमृत्य है उसको निपाति-निरा देता है, मार देता व नाश कर देता है। अमृत्य देर तक टिक नहीं सकता है।

## तेन जीवन्ति प्रदिशः

उसी ऋष से ही सारी प्रदिशः वे दिशाएं और इन में काम करने वाले प्राणी जीवन्ति-जीते हैं। प्रभु से ही सारा विश्व जीवन प्राप्त करता है। वही जीवन का आधार है।

अथ एवं वेद से

## वे दा मृ त

हे इन्द्र ! शत्रु को मार दे  
यत इन्द्र भयामहे ततो नो अमयं कृधि ।  
मधवञ्चग्धितव तन्न ऊतये विद्विषो  
विमृधो जहि ॥

साम० अ० ३ सू० ५ मन्त्र २

अर्थ—हे वीर इन्द्र ! (यतः) जहाँ और जिस से भी हम (भयामहे) भय करते हैं। जो भी हमें भयभीत करता है (ततः) उस स्थान और उस शत्रु से (नः) हमें (अमयं) निरभय (कृधि) कर दो। (यतः) इन्द्र आप (राज्य) सामर्थ्य रखते हो (तव) तेरा (मन्) बह बल शक्ति है (नः) उतये) जो हमारी रक्षा के लिए समर्थ हैं। हे वजी ! (विद्विषः) जितने भी शत्रु हैं, द्वेषी हैं तथा जो भी (मृधः) राक्षस, पापी तथा लुटेरे हैं उन सब को आप (जहि) मार डालो। उनका नाश कर दो।

भाव—हे वीर सेनापति ! इन्द्र यन कर वज्र की शक्ति को धारण करने वाले सधन ! आप नाश प्रकार के बलों, शत्रुओं के भयहार से मरपूर हो। बड़े बलवान हो। हम को जिस भी स्थान से या जब कभी जिस भी शत्रु से किसी प्रकार का भय पैदा हो। चाहे आकाश से हो, धरती से या पवन व सागर से हो। आपके पास वो हर प्रकार की सेना की शक्ति है। हरेक स्थान से आने वाले शत्रु के भय से आप हमारी रक्षा करो। आपके होते हुए हमें किसी प्रकार की चिन्ता नहीं है। आप जितने भी शत्रु हैं, पापी व आक्रमणकारी हैं, उन सब को अपना वज्र लेकर के अपनी शक्त शक्ति के साथ मार डालो। उनको अर्धनियम बांधों से भयम कर दो। अपने वज्र से उन हथोरों की लोपड़ियां फोड़ दो। राक्षसों को मिटा दो। जिसको का नाश कर दो—सं

## ऋषि दर्शन

परमेश्वरः सर्वज्ञः

परमेश्वर सर्वज्ञ है, सब कुछ जानने वाला है। कोई भी स्थान ऐसा नहीं जहाँ उस प्रभु की महती महिमा का चित्र दिखाई नहीं देता। कोई भी ऐसा कर्म नहीं जिसको प्रभु जानते नहीं हैं। उस से छिप करके कोई भी बात नहीं हो सकती तथा कोई भी काम नहीं हो सकता। वह सर्वज्ञ है।

सर्व-व्यापी सर्वाप्यन्वः

वह भगवान् सर्व-व्यापक है। सारे ब्रह्माण्ड में उस रहा है। वही सारे विश्व का अन्वले है, स्वामी है। समस्त विश्व उसी के नियम मर्मबंधों में चल रहा है। ब्रह्माण्ड का कोई भी पदार्थ उसके नियम से भाग नहीं है। सारे संसार का वही स्वामी है।

शरीर सम्बन्ध रहितः

वह परमात्मा शरीर के सम्बन्ध से रहित है। उस का कोई किसी प्रकार भी प्रकार नहीं है। वह निराकार ही है। जन्म-मरण के बन्धन से रहित है। जो लोग प्रभु को शरीरधारी मानते हैं वे परमात्मा के साथ व्याप नहीं करते बड़े अज्ञान्य हैं।

—भाष्य मुमुक्षु से

(गाँव के धारो)

मैं भी साथ में था। दूर-दूर से मशकों में पानी लाकर हम लोगों ने पीठित लोगों को पानी पिलाया। खन्ड बांटा, हमारो अनाथ बच्चे आर्यसमाज ने पाले मुझे बाद है, दयानन्द कालेज के विद्यार्थी एक घर में एक बूढ़ा के पास उसे पीने का पानी और कुछ खाने देने के लिए गए तो उस बूढ़े मां ने कई दिनों से अपने भूखे बच्चे को अपनी छाँवों से भूख से तड़पते देखा था। माला-धार में भी जब अकाल पड़ा तो आर्यसमाज पीड़ितों की सेवा के लिए वहाँ पहुँचा। हम वहाँ कई दिन रहे। मैं और मलानचन्द जो जगन्नाथोर जा रहे थे। एक वकील ने दूसरे से बानचीन करते हुए कहा कि आर्यसमाज तो बहुत बड़ा सेठ मालूम होता है। कांगड़ा में भूकम्प आया तब भी आर्यसमाज वहाँ पहुँचा। आर्यसमाज के सेना-दल के इंचार्ज रावबहादुर सोहन लाल थे। मैं भी वहाँ गया था बाजी, पुजारी और सभी लोग वहाँ भूकम्प से दबे पड़े थे। हम ने कई दिनों तक उनकी वहाँ सेवा की। अंभोज डिटी कमिश्नर ने बाद में कहा कि आर्यसमाज के कार्यकर्ता सब से पहले कांगड़ा पहुँचे। कोयटा और बिहार के भूकम्प और बंगाल के अकाल के समय भी आर्यसमाज के कार्य-कर्ताओं ने वहाँ पहुँच कर जन और धन की सेवा की। अथ पाकिस्तान का हमला हुआ तो हज़ब के युद्ध पीड़ितों की सेवा के लिए आर्यसमाज ने जालन्धर में कैप लगाया। सद्भावना यही है कि सारा भारत हमारा है और हम भारत के, लिए हैं। इसलिये परस्पर मेल-मिलाप और सद्-भावना नितान्त आवश्यक है। आक्रमण पंजाब पर हो या कहीं और, इस का सारे देश पर प्रभाव होता है। प्रभु की कृपा है कि बांसे

## राष्ट्र-भक्ति और प्रभु-भक्ति-११

(श्री महाराज आनन्द-स्वामी जो महाराज को अमृतमरी कय)



सरकार ने इस संकट की घड़ी में देश को एक सूत्र में बाँध रखा है, लेकिन उसने भाषायी राव्य बना कर एक हिमालय सी भूल की। जटिल मेहर चन्द महाजन का यह सुभाष कितना अच्छा है कि सारे देश को चार पांच प्रशासकीय क्षेत्रों में बाँट दिया जाए, एक संसद हो। यह यह सुभाष मान लिया जाए तो यह सारा देश एक हो और यह छोटे-छोटे क्षेत्रीय भगड़े भी खड़े न हों। हमें संकुचित एवं संकीर्ण विचारों का परित्याग कर रहे हैं। उनके इस रविये से न जाने कितनी हानि होगी। भगवान इन लोगों को सद्बुद्धि प्रदान करें। ब्रह्म तेज, और क्षेत्रीय तेज मिलने से ही राष्ट्र की रक्षा होती है। चाणक्य एक सच्चे एवं ऊँचे ब्राह्मण वैभार के प्रधान मंत्री थे तब अराकान से ईरान तक भारत की सीमा थी। हमारे वर्तमान प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री जी का जीवन भी अत्यन्त सादा और सुन्दर है। वह देश के लिए जोते हैं, देश के लिए खाते हैं। कोई बनावट नहीं, बिलकुल सादा एवं साधु स्वभाव के व्यक्ति हैं।

मैं और को चाणक्य के जीवन की एक घटना सुनाता हूँ। महान नीतिज्ञ चाणक्य अपने छोटे से घर में एक आसन पर बैठे थे कि एक भिक्षु युद्ध शरयें गच्छाम्भि, कहते हुए पधारे। चाणक्य ने उन्हें भोजन के लिए प्रार्थना की जो भिक्षु ने स्वीकार कर ली। इतने विशाल भारत के प्रधानमंत्री ने भीतर से दृढ़ता-मृष्टता सा आसन का के दिया और केले के पत्ते पर भोजन परोस दिया। भिन्न प्रथा-मन्त्री के रहन-सहन के इस ढंग

को देखकर आश्चर्य चकित रह गया। चाणक्य का छोटा सा परिवार था। एक पत्नी, और मां लक्ष्मी गुरुकुल में रहता था। चाणक्य ने उक्त भिक्षु को बताया कि मैं राज्य से एक पैसा भी नहीं लेता। अपना जीवन बलाने के लिए पुस्तकें लिखता हूँ और राज्य की सेवा और पुस्तकें लिखने के बाद जो समय बचता है, उधमें मैं दुष्टियों की सेवा करता हूँ। अब चाणक्य ने भिन्न से उनके पधारने का प्रयोजन पूछा तो उन्होंने बताया कि एक निकटवर्ती गाँव में दस्तुओं ने उत्पात मचा रखा है। वे गाँव के गाँव लूट कर भाग गए हैं। चाणक्य तुरन्त उठे और महाराजा की साथलेकर उस गाँव में पहुँच गए। वहाँ उन्होंने ग्रामीणों को पूर्ण सहायता का आश्वासन दिया। चाणक्य ने गाँव से लौटने पर महाराज से कहा कि आप इन ग्रामीणों की सहायता के लिए कुछ कबल और अन्य सामान मेरे निवासस्थान पर भेज दें। राजा की आज्ञा से भारी संख्या में कबल आदि चाणक्य के निवास-स्थान पर पहुँचा दिए गए। दस्तु भी इन सब बातों पर नज़र रले थे। उन्होंने जब बहुत-सा माल-सामान प्रधानमंत्री के निवास पर पहुँचते देखा, तो उन्होंने वहाँ भी लूट-मार करने की योजना बनाई। चांदनी रात में, ठिठुरती सर्दों में, जब दस्तुओं का वह टोला चाणक्य सुनि के महान में लूटमार के लिए पहुँचा तो देखा कि एक और कबलो दा डेर लगा है। किन्तु चाणक्य अपने एक फटे-पुराने कंबल पर लेते हैं। दस्तुओं का सरदार यह देखकर स्तब्ध रह गया। उसने अपने साथियों से कहा कि ऐसे आदमी को लूटने का क्या लाभ,

जो एक महाने ईशान है, भिन्नने अपने घर में पड़ी हुई बेलों की चीन्नी की मोर माल उठाकर भी नहीं देखा। चाणक्य के त्याग को देखकर दस्तु सरदार का हृदय परिवर्तित हो गया, और उसी क्षण अपने साथियों को आदेश दिया कि पिछली रात जितना भी माल खसाम लूटा है वह यहीं लाकर डेर कर दिया जाए। सुबह होने से पहले लूट का सब माल चाणक्य के निवास-स्थान पर पड़ा था। प्रधानमंत्री ने शहर में छिटोरा पिटवा दिया कि किस किसी का माल चोरी हुआ है वह आनन्द उठा ले जाए।

ये थे प्रधानमंत्री की चाणक्य। शास्त्रों ने ही अपने तप-त्याग स राष्ट्र को बनाया। कवियत्राघम का पालन करते हुए राष्ट्र की रक्षा करते हैं। मनुष्य तो जन्म से ही एक फौजी है। यिश्चिवा विधान के पठितों का कहना है। कई करोड़ जीव अगुआ आपस में सड़ते हैं। युद्ध के बाद जो बलवान जीव अगुा बच जाता है उसी से मनुष्य बनता है। निरन्तर आगे बढ़ना मनुष्य की जन्मपृथी में है। सैनिक का काम है चलते रहना परन्तु कोलह के बैल को तरह नहीं जो पचास वर्ष तक चलते रहने के बाद भी वही का वही रहता है। आज कल तो दुश्मि उड़ गया और खरी रह गया। जरा सी बात हुई तो हम भागने लगे। यह रस्ते! ईरान से हमने भागना शुरू किया और आगे-आगते बाधा के इस पर आगे लड़े हुए। अब हमारे दुश्मिदार तोर तलवार या नहीं नहीं रहे बल्कि घड़ी, डकैती और येनक बन गए हैं। क्या इन्हीं दुश्मिदारों से हमने बाब्रों माब्रों और अय्यर मुठों का सामना करना है। भगवान् कृपा से लिखा है कि बलहीन को परमारमा भी नहीं मिलते।

(कमरा)

समाधिकार्य—

# आर्य जगत

वर्ष २९ | रविवार २०२२, २० फरवरी १९६६ [वक्र ८

## सभा के प्रतिनिधियों से

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर का वार्षिक अधिवेशन आज के दिन ता० २० फरवरी सन् १९६६ रविवार दो बजे बाद दोपहर आर्य समाज विक्रमपुरा के सुन्दर मन्दिर में हो रहा है। सभा से सम्बन्धित आर्यसंघों के प्रतिनिधि आई और बहिनें दूर २ से इस में पचार रहे हैं। वर्ष के बाद सभा के माध्यम सज्जन सभाओं के प्रतिनिधि के रूप में एकत्रित होकर गम्भीर समस्याओं पर विचार करते हैं। मत वर्ष किप गप सभा के सारे विस्तृत कार्यों का विवरण सुनते तथा आभिम्य वर्ष का व्यापक कार्यक्रम निवृत करते हैं। कितनी कठिनाईयां आई और आर्य बीन २ की समस्याएं सामने हैं। क्या: काम-हानि हुई ? वेद प्रचार की प्रगत कैसी रही। विशेष बात कीन-की है ? इन सारी कानों पर पूरी तरह से विचार किया जाता है। यह महान् अधिवेशन सभा के विशाल परिचार के सभ प्रकार के चिन्तन के लिए होता है। यह वज्रट अधिवेशन व निर्वाचन का दिन भी होता है।

आर्य प्रादेशिक सभा के वार्षिक अधिवेशन में अपने डी. प. बी. कानेजों, स्कूलों के मान्य प्रतिपल महाद्वय भी सभाओं के प्रतिनिधि के रूपों में पचारते हैं। सभाओं के आधिकारी एवं विधान सभा के सभासद भी। आर्यसभाओं की ओर से सारा पदा लिखा देया वर्ग इच्छा हो कर आर्यसभाओं की प्रगत पर विचार करता है। इसारी

सभा की आरम्भ से एक विशेषता रही है कि यहाँ सारा कार्य, निर्वाचन आदि सर्वसम्मति से होता है। विचारों के प्रकाशन की परम्परा के बाद निर्वाचन के काम में एक मिनट ही लगता है। यह स्वस्थ परम्परा आर्य प्रादेशिक सभा की शान है। आर्यजगत की ओर से इस अधिवेशन में आने वाले मान्य प्रतिनिधियों का स्वागत है। वनसे एक निवेदन है कि इस बार जिस परिस्थिति में सभा के सारे हितैषी जालन्धर में इकट्ठे हो रहे हैं। वे विद्वट समस्तार्थी सामने हैं। सबसे बड़ी विषम समस्या पंजाब के विभाजन की भारत की इस वीर युवा को दोनों ओर से काटने का पलन जारी है। सन्नी जी धर्म मन्दिर में बैठ कर अपने आप को जला देने की धमकियां दिये जा रहे हैं। दूसरी ओर नैतिक दशा का कितना चिनीना चित्र है ? मिट्टी का तेल को घट्टों बंक्त में लपेटे होने पर मिले न मिले। किन्तु शराम जितनी चाहे और जब चाहे ले लो। शराम सली है। शराम का कोटा बढ़ाया जा रहा है। दुकानें और ग्यारदा की जा रही हैं। शराम पिछाने का प्रचार है। आज नैतिकता का गला घोंटा जाता है। विज्ञासिता का मोल-बाझा है। धर्म से रुचि घट गई है। ससज्जों की क्या दशा है ? धर्म प्रचार में कितने नवयुक्त आते हैं ? हाथर वंकी प्लूनों में संकलन को स्कूल निकाला मिल चुका है। वेदप्रचार में धन कहाँ है ? तब-युवकों का रङ्गवङ्ग क्या है ?

वैदिक साहित्य कितना निकलता है ? युवकों को सम्भालने वाला कीन है—ऐसी कितनी ही समस्याएँ हैं जो आज सामने हैं। समाज के सिवाय किसे विचना है। आज तो, आर्य समाज को अपनी तारें ही जुदा २ हो रही हैं। अलग-अलग जागिरे बनती जा रही हैं। सच कुछ हन को बढ़ाने के लिए होता है परन्तु वेन्द्र का ध्यान कम है। वेद प्रचार के लिए कितनी बड़ा है, कितन दिया जाता है ? यह सच जानते हैं। ये आज के सारे वक्षलन भयन हैं, जिन पर आज सब ने मिश्र कर विचार करना है। भाय समाज का सभा जीवन ही संघर्ष में कीता व कीत रहा है। वर्ष के बाद आप सारे इच्छे हो रहे हैं। सारी बातों पर आप ने पूर्णतया विचार करके बड़ी शक्ति के साथ कार्यक्रम बनाना है। यह भूलूत देने वाला हो। सभा को हर प्रकार से ऊंचा कर दें। स्वर्गीय महात्मा ईश्वरान जी का यह महान् सभा रूपी श्रोत आपनी विविध पाराओं से सारी तृषण जीवन भरती को ध्यात्वाचित करता रहे—त्रिलोक चन्द्र

## आर्य जगत् भी

सभा का साप्ताहिक गुलपण आर्य जगत् वर्षों से सभा द्वारा सेवा कार्य में रत है। पृथ महत्त्वासा आनन्द स्वामी जी के दिये गये आदेश - गुलपण स्वर्गीय भी, सत्याधी जी के बाद यह सेवा कार्य भी अवैतनिक रूप से सम्भाला। वर्षों से कर्तव्य का पालन किये जा रहा है। सभा के उपदेश का काम करते हुए सायद यह कार्य भी हो रहा है। मान्य सभा अधिकारियों, सहयोगी उप-देशक भञ्जनीक सज्जनों, संस्थाओं के सज्जनों, सभाओं के महान्-मावों, विद्वान लेखकों व प्रेमी द्वितीयों की प्रगत् पर बड़ी कृपा रहती है। किन्तु जगत् की वर्तमान

व्यवस्था से मेरा दिल सन्तुष्ट नहीं है। यह ठीक है कि सभा के वार्षिक पत्रों को सर्वत्र फैली सभारथा है। फिर भी बहुत कुछ किया जा सकता है। यदि सारी समारें, सस्थाएँ तथा आई बहिन और योधा सा इतर ध्यान देवें तो यह काम हो सकता है। अवश्य विचार—सं०

## आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर का

वार्षिक सभापराय अधिवेशन २० फरवरी रविवार के दिन आर्य समाज विक्रमपुरा जालन्धर में होना निश्चित हुआ है। सभाओं के सभ प्रतिनिधि अपनी प्रतिनिधि स्थित साथ ताकर ठीक समय पर दर्शन दें।

नोट—निवाह व खान-पान का प्रबन्ध साईदास एग्लो संस्कृत H.S स्कूल में होगा। आतः बाहर से आने वाले सभ सज्जन सीधे स्कूल में ही पहुँचने का कष्ट करें।  
—व्यवस्थापक

## शुभ समाचार

श्री वृजलाल जी गुलट दोहना निवासी के सुपुत्र श्री राजेन्द्र जी गुलट वी०२० का पाष्ठी प्रह्लाथ संस्कार आगरा निवासी ता० चन्द्रमानु जी की सुपुत्री शशि बाला के साथ ६. २. ६६ को सम्पन्न हुआ। इस प्रसन्नता में आर्य जगत की ओर से नव दम्पती तथा वृजलाल जी गुलटा के परिवार को बहुत-बहुत बधाई।  
व्यवस्थापक

## सोवियत रूस

वाकि के हिसाब से दो वर्षों का चयन देने पर कोई भी मास्को का प्रकाशन १ वर्ष अधिद दिया जायगा। सोवियत नारी ४० ८.४० देकर तीन वर्षें प्राप्त करें।  
जयदेव ब्रदर्स बड़ोदा-१

भारतीय साहित्य में वेदों का आलम्बिक महत्व माना गया है। वेदों में राष्ट्रीयता की भावना की झूट-झूट कर भरी हुई है। वेदों में साहित्य की सबसे बड़ी देन 'राष्ट्र' शब्द है। ऋग्वेद में आलम्ब वेदों में यह शब्द अनेक बार आया है और इस शब्द में आर्यों की बड़ी भावना, बड़ी सामिकता और श्रेष्ठतम अनुभूति निबद्ध है। राष्ट्र का अन्वय, राष्ट्र की उत्पत्ति, राष्ट्र की संरचना और राष्ट्र की रक्षा के लिए आर्य लोग अपने प्राणों को न्योछावर करने को सदा तैयार रहते थे। 'राष्ट्र' की परिभाषा भी वेदों में बड़े उदार दृष्टिकोण की रूपरेखा रख कर की गई है। अथर्व वेद के प्रसिद्ध मन्त्रानुभूति के विषय में एक मन्त्र में कहा गया है —  
 अन् विभ्रत बहुधा विवाचस  
 नाना धर्मोऽणु प्रथिषी बधोऽसम  
 सहस्रवार इतिवाचय मे  
 दुहा प्रवेय अनुत्तमकुन्तुभिः।  
 अर्थात् अनेक प्रकार की भाषा बोलने वाले, नाना प्रकार के कर्तव्य करने वाले धर्म पर विश्वास रखने वाले मनुष्यों को अनेक प्रकार से एक ही धर्म में रहने के समान धारण करने वाली स्थिर मन्त्रानुभूति युक्त धर्म की सहस्र बार उद्धरण दे जैसे निरचल गी हृद्य की धारा देती है। अनेक प्रकार की भाषा में बोलने वाले अथवा विविध विचारों को धारण करने वाले, विविध प्रकार के विभिन्न वर्णन करने वाले मनुष्यों को एक परिवार के समान जो मन्त्रानुभूति समान रीति से धारण कर रही है वह मन्त्रानुभूति हम सब को अनेक प्रकार का धन देवे।  
 आर्य लोग सदा यह कामना करते थे कि वे राष्ट्र को अविचल करें, राष्ट्र को स्थिर करें, राष्ट्र राष्ट्र को सुदृढ़ करें और अन्तिम राष्ट्र को निरपेक्ष रूप से धारण करें—

# वेदों में राष्ट्र-दलन का आदेश

(श्री गुरुशत्रुघ्नजी वेदोत्संकार सं. १ एल टी. बी. कॉलेज, भोखरपुर)



प्रभुं ते राजा बंधुयो,  
 प्रभुं वैवी शुहृत्सि।  
 प्रथ त इन्द्रधेनिह्व,  
 राष्ट्रं धारवता प्रथम्॥  
 अथ प्रदन् उपरिपत्त होता है कि राष्ट्र रक्षा कैसे हो सनती है ? दुष्ट अथ बहुधा सभार में, अपने राष्ट्र तथा शासन सिद्धान्त और विचार, स्वातन्त्र्य और आजादी की रक्षा के लिए सद्यु बनने से काम नहीं चलेगा। राष्ट्र बच नहीं सक्ता। राष्ट्र की रक्षा के लिए भेदनीति और शत्रुनीति द्वारा राष्ट्र दलन का राष्ट्र आदेश वेदों में दिया गया है। वेद में राष्ट्र रक्षा के लिए भेदनीति का उल्लेख करते हुए लिखा है—  
 विहृदयम् वैमनस्यम्  
 वदामिषुे दुष्टुमे,  
 विद्वेय कन्मथ भयममिषुे  
 निदध्मसवैमान दुष्टुमे उहि।  
 अथर्ववेद १२१।१।  
 अर्थात् हे रथ की दुष्टुमि।  
 बरियों में हृदय की अशुभता, मन की चिन्ता कर दे। राष्ट्रको ये घृष्ट, द्वेष, भय उत्पन्न कर दे। इस प्रकार हे रथदुष्टुमि। तु राष्ट्रको जो राष्ट्र की रक्षा के लिए परित्यज कर। हमें ऐसी व्यवस्था करने की चाहिए कि जिस से राष्ट्र श्रेष्ठ के घृष्ट, आपस में वैर, वैमनस्य व्याकुलता कष्ट, दुःख, आपस का विरोध और भय उत्पन्न हो।  
 वहीं भेद नीति है और इस से राष्ट्र रक्षा होगी है।  
 राष्ट्र रक्षा के लिए शत्रुओं की प्रकृति और नीतिगणना पर वेदों में बहुत जोर दिया गया है। ऋग्वेद के मंत्र १०। १०० ३६ मन्त्र २ में कहा है—  
 स्थिरा व सन्ध्याशुषा  
 पराशु ये वीक्षु उव प्रावन्धमे।

दुष्माकमस्तु त्विषी पनीयसो  
 मा मन्सव धार्यन्त ॥  
 अर्थात् राष्ट्र के शत्रुत्व राष्ट्रको जो दूर भगाने के लिए युद्ध रहे और राष्ट्रको का अंतिकर्मण्य कार्य कार्यों से प्रतिकर्म करने के लिए बलवान रहे। दुष्टारी शक्ति प्रशसनीय हो। दुष्टारी अथवा (पाकिस्तान, चीन आदि) दुष्ट कष्टी राष्ट्र राष्ट्रों की शक्ति बढ़ने में बाधे।  
 वेद में शास्त्रियाली सौतों की सौगा और उनकी रक्षा की प्रार्थना भी की गई है यजुर्वेद के २२-२२ मन्त्र में समूचे राष्ट्र के अन्वयव के लिए अजासकी और पवित्र माननाए व्यवस्था करते हुए कहा है—  
 'आ राष्ट्रं राज्यं शूर इयवो-  
 उतिष्ठावी महारयो तापयाम'  
 बहादुर वायुविद्या, शास्त्र संचालन में चतुः, दुष्टों को अत्यन्त घटित करने वाला महारथी जयिचरणी हो। ऋग्वेद मंत्र ६५४ सुक्त के मन्त्रों में रथाश्रय का बहुत साहसिक और सामिक बलून किया गया है। ३१ मंत्र में कहा गया है —  
 तूक्षीर अनेक बाणों का पिता है। कितने ही भाषा इवके पुत्र है। बाण निकालने के समय यह तूक्षीर 'त्रिहवा' शब्द करता है। यह योद्धा के घृष्ट देश में निबद्ध रहकर युद्धकाल में बाणों का प्रसव करता हुआ सारी सेना को जीत लाता है।  
 ७ वें मंत्र में कहा गया है -  
 'पौत्रे टायो से पुत्रे जगते हुए फार रथ के साथ सवेगा जते हुए हितहितले है। और ये पौत्रे राष्ट्रको पर आक्रमण कर राष्ट्रकी टायो से जनकी 'अमरत परी देते है।'

१२वे मंत्र में कहा गया है—  
 'राष्ट्रों का मुक्त बना करने के लिए हमारे शत्रु एतिस्यारी हों। हमारी सेना जीताए की तरह अमरुत हो।  
 १२वे मंत्र में कहा गया है—  
 हमारे बाण विचलित है, इतने अथवा शक्ति और इनका मुक्त लोहवच है, बल वायु देवता की मन्सकार है। (अथ सच शत्रुओं का प्रतिनिधि है)।  
 (कर्मवच)  
**आर्यसर्वोच्च संज्ञा (दुष्टियाना)**  
 का अर्थभोक्तव्य ३, ३, ३ मंत्र की होना निश्चित हुआ है। इस अक्षर पर बड़े बड़े सन्ध्यासी, महाशायी, अथर्वको तथा अथर्व नीकों का कार्य-क्रम होगा।  
 इसके अतिरिक्त २४ से २६ परकी तक भी नन्दाल जी वैदिक मिशरारी नौक लालने द्वारा समवायुक्त फिर्मे दिखायेंगे। भी मूख अन्तर्गरी भी महाराज की कला होगी ४ मंत्र से ६ मंत्र तक भी शोभायाम, भी हमारोलात्त की केमजन होंगे।  
 —सुनारीय प्रवान समाज  
 स्वर्गीय श्री लालबहादुर शास्त्री प्रवान मन्त्री भारत सरकार के आक्षरिय निवन पर मित्र २ संस्थाओं की ओर से दीव्य  
**शोक प्रस्ताव**  
 भावसमाज श्री एनटीएन पाटें १ नई देहली, आर्यसमाज रजौली (जिला फर्रुखा), आर्यसमाज सोलापुर, जी.पी. हार्डि सैक्रेट्री स्कूल व आर्यसमाज जना (जिला होशियारपुर), आर्यसमाज रामगढ़ नई देहली, जिला वेद-प्रचारिणी समा (होशियारपुर) आर्यसमाज लंबला पूर्व निमाद (मं १०), जी.ए.भा. हार्डि सैक्रेटरी स्कूल दीहपुर (जिला होशियारपुर)।

देश की सिपा सम्बन्धी विर-  
ल्लिखितों पर विचार विवेक करते  
के लिए महर्षि दयानन्द के सभा-  
पत्रिका में स्वामी ब्रह्मानन्द जीका  
साक्षात्कार महात्मा गांधी जी०  
झोहराम महात्मा हंसराज आदि  
सदस्य आगमिष्ठ हैं। इसके सदस्य  
आले-आचने विचार व्यवस्था करने  
की प्रतीक्षा कर रहा है।

स्वामी ब्रह्मानन्द :-

सभा के अन्तर्गत ब्रह्मानन्द  
जी (आचार्य जी) की ओर से वेतन कंठे  
हुए) महर्षि दयानन्द जी  
की परियोजना को पूर्ण करने और  
प्राचीन भारतीय संस्कृति और  
व्यवस्था को पुनर्जीवित करने के  
से लिए गुरुकुल शिक्षा प्रणाली  
आरम्भ की थी। किन्तु सरकार  
की उपेक्षा और 'लाइसेंसिंग' के  
कचने की लूठी करने वाली अधिपति  
सम्पत्ता से रंगी हुई भारतीय  
जनता की अज्ञानीता से आज  
आगतर्ष के गुरुकुल भी सुखों का  
रूप ले रहे हैं, या रुक ही रहे हैं।  
लाला लाजपतराय :-

गुरुकुल पद्धति के द्वारा प्राचीन  
आर्यीय संस्कृति और सभ्यता के  
पुनर्जीवन में विश्वास देल, अर्थात्  
यव से बरीभूत जनता के लिए  
अनेक साधियों के सहयोग से  
स्थापित किए गए डी. ए. पी. की  
कांजि और स्कूल सामान्य  
कांजिमें और लुको का रूप लेते  
जा रहे हैं। वनमें अपने उदर्य के  
प्रति सजगता बहुत कम मात्रा में  
हो चुकी हैं।

महात्मा गांधी—

मान्यवर अध्यक्ष महोदय !  
मुनिवादी शिक्षा का भी गणेश  
देश की परिस्थितियों को ध्यान में  
रख कर किया गया था। अध्ये-  
शिक्षकों के अभाव में इस (मुनि-  
वादी शिक्षा पद्धति) का अधिक  
उपलब्ध नकर नहीं आता। किसी  
विशेष संस्थान के प्रयत्नों की परमा-  
व्यवस्था है। जो कि वैदिक

# महापुरुषों की बैठक

## नाटकीय खेलों पर

(श्री अग्निदेवजी 'शास्त्री' (वि. वै. शोध संस्थान) होस्पातपुर)



शिक्षा का देश पर लगा संके।

चौ० छोट्टराम—

(सके होकर) महर्षि आचर्य  
जी ! तथा भारत के हितेषी  
अनुभूषो ! आप सब की निराशा  
बढ़ जान कर भारता में बचल  
बाकी चाहिये कि—'हरिवाण्य'  
त्रेण में चल रहे गुरुकुल जीवन गति  
से अर्थात् कर रहे हैं। और अन्तिक  
से अर्थिक संस्था में नवीन  
गुरुकुल तथा डी० ए० पी० संस्थाएं  
भी सुन रही हैं। जो कि निरुक्त  
अर्थिक में आप की इन सभी  
आशाओं को साकार करके  
दिखायेंगी।

महात्मा हंसराज—

मान्यवर महर्षि जी ! आज  
का युग आज्ञालु भावा से युक्त  
सभ्यता की ओर आग्रस हो चुका  
है। इसके सुधार के लिये जैसे ही  
वातावरण की आवश्यकता है।  
जैसा कि आजका युग हो चुका है।  
संस्कृत में कहावत है—'देशकाल  
बर्ण शाल्वा एवं कार्यणि सापयेत्'  
अर्थात् लाला जी के वक्तव्य का  
दोहरावा हुआ, कि डी. ए. पी.  
संस्था ही आज के युग में प्राचीन  
सभ्यता के विचारों को फैलाने में  
शीघ्र सफल हो सकनी हैं।  
वेदता हूँ।

(अथ किंचित् निरुत्तर से आने  
वाले दो सदस्य 'चित' भेज कर  
भोजन समय मंगिने में उफल  
हो जाते हैं।)

एक पीराणिक पृथित

पूण्यनीय समापति जी ! पृथपि  
मैंने बार के एक दो वक्तव्य सुने  
हैं। मेरा विचार है कि डी. ए. पी.  
संस्थाओं के ऊपर 'नई' नो दिन  
पुंतीनी जी दिव' वाली वक्ति

परिचाय होगी। क्योंकि नया २  
शोभाय देना ही बलवा है। अतः  
प्राचीन सनातनधर्म से संस्थापित  
'एल. डी.' स्कूल एवं कांजि ही  
संस्थाओं का नाम रखना चाहिये।  
डॉ०अमरसिंह शारदायें महात्मा  
परिष्ठत जी की ओर देखते  
हए आचर्य नाम से क्या आनि-  
पाय है, सुधारवादी कर्मठ व्यक्तित्व  
के लिये वह अर्थिक नहीं कि 'डी.  
ए. पी.' न होकर 'एल. डी.' होना  
चाहिये। 'विष्णु शर्मा ने कहा जो  
टोक है— अर्थ निरः परो वेति  
गणना कचुपेवसामु। और ऐसी ही  
संस्कृत भावनाओं ने नाश्वना  
विश्वविद्यालय का विध्वंसकृत देला  
और अग्निदो से मोहमय राजनी  
आदि के द्वारा कठोरों का मोना  
तुलना हुआ देला।

(इतने में अध्यक्ष जी पक्षी  
से रुकने का संकेत करते हैं तब-  
नकर सर्व अध्यक्षीय भाषण लगे  
होकर देते हैं।)

महर्षि दयानन्द जी

मान्यवर सुधारक अनुभूषो !  
अग्निदो के शासनकाल में सरकार  
और डी और जनता और थी।  
उस समय भारतीय जनता की  
आयें भावनाओं को कुलना जाता  
था। हमारे देशकेन मार्ग को नहीं  
अपनाने दिया जाता था। आज  
भारत में जनता का जनता  
द्वारा जनता के लिए शासन  
है। आजमाइ आर्थिकल में वेदों  
उपनिषदों, धर्मशास्त्रों, समुत्थि  
द्वारा, अर्थिक मार्ग को अपनाने में  
हम सब समर्थ तथा स्वतंत्र हैं।  
अतः आओ ! इन सभी गृह  
समर्पों को छोड़कर वेद अर्थिक  
मार्ग पर चलें तथा जनता में भी  
वेद की पवित्र भावनाएं भरें।

इतने में करवल प्चनि से  
आकाश गूँज उठता है तथा सभा  
विस्तारित होती है।

आयें युवक परिषद, दिल्ली-६

## अधि मेला

आयें युवक परिषद दिल्ली को  
ओर से अधि बोधोत्सव के उप-  
सदस्य में शुक्रवार १८ फरवरी  
१९६६ को अधिमेला रामकीला  
मैदान में दोपहर ११। बजे से  
लुको के छात्र-छात्रियों को 'अधि  
दयानन्द के उपकार' विषय पर  
भाषण प्रतियोगिता होगी।

प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय  
विजेता छात्र-छात्रियों को प्रथम  
भी बोधोत्सव की मर्यादा बढोद  
अपने कर कमलों द्वारा पारितोषिक  
वितरित करेंगे।

प्रतियोगिता में भाग लेने वालों  
के नाम १० फरवरी तक परिषद  
के कार्यालय, १६२४ कृष्ण दिल्ली  
राज, हरियाणा, दिल्ली-६ के लेते पर  
पहुंच जाने चाहियें—प्रोग्राम द्वारा नं०

## अधि केन्द्रीय सभा करनाल

अधि बोधोत्सव का कार्यक्रम

इस बार अधि बोधोत्सव बड़ी  
पूण्यमा से मनाया जा रहा है।  
विधि २०-२६ को सारे नगर में  
प्रभात फेरियाँ होंगी तथा १६-२६  
दोपहर बाद जन्म निकाशा जयन्ता  
और रात्रि को भी बोरेंद्र जी  
सम्पादक प्रताप की प्रधानता में  
सांस्कृतिक सभा होगी जिस में  
बोरेंद्र जी के अतिरिक्त अध्यक्ष नेता  
भी पवार रहे हैं। २०-२६ को  
अधि दंगल का आयोजन है जिस  
में भांग के अध्ये २ पृष्ठलानों ने  
भाग लेना हीकार कर लिया है।

## शोक समाचार

डो० ए० पी० डो० हॉ० से० स्कूल  
दौलतपुर व आर्यसमाज का  
समिन्धित शोक समा ने सुदेशर  
रामसिंह जी, सुपुत्र जेतदार महोदय  
की श्रीमतिहिं जी, को मृत्यु पर  
अभाव शोक प्रकट किया तथा  
जनकी आत्मा की सदृश पर  
परिवार के लिए धैर्य और शांति  
प्रदान करने की प्रार्थना प्रार्थना की।

वेदों में सभी विधाओं का ज्ञान मरा हुआ है। आश्चर्यका इह बात की है कि उनके मन्त्रों का अर्थ समझा जाये। परन्तु यह कार्य बहुत ही कठिन है। वेद मन्त्रों के अनेक अर्थ हैं, किसी भाष्यकर्ता ने कोई अर्थ अपनाया तो किसी ने कोई और अर्थ। इसी कारण से वेद-मन्त्रों का कोई निश्चित एक अर्थ न रह सका और भी अरविन्द के शब्दों में वेद रहस्यारमक ही बने रहे।

महर्षि दयानन्द के आग्रहमन से पूर्व अनेक भारतीयों तथा पाश्चात्य विद्वानों ने वेदभाष्य करने का प्रयत्न किया। इन में आधुनिक युग में सायब के भाष्य का अग्रिम महत्त्व है, सम्मान है। इन सभी वेद-भाष्यों को पढ़कर पाठक की अथा वेदों से निश्चित ही ठग जाएगी क्योंकि इन भाष्य-कारों के मजालुसार वेदों में पौराणिक कथाओं, गोश्राभ अइया, यह भी बलि प्रथा तथा कर्मिन्व इतिहास का अर्थ न है। महीधर, उमठ तथा उनके छायागुप्तारी भी ज्वालासाद सिम ने वेदों से भी सभी खुराफातें छिद्र करने का प्रयत्न किया।

ऐसे समय में महर्षि यानन्द सरस्वती ने गुजराती होते हुये भी वेदों का संस्कृत तथा हिन्दी में भाष्य करके वेद ६ जगत् में अद्भुत क्रांति उपस्थित कर दी, उनके प्रयत्नों के परिणाम स्वरूप जनाता में वेदों के प्रति अज्ञा, विस्वास और प्रेम उत्पन्न हुआ। वास्तव में महर्षि दयानन्द का जीवन वेद ही था। श्वेद के हिन्दी भाष्य कर्ता पंडित रामगोविन्द त्रिवेदी श्रद्धि के विषय में लिखते हैं—  
कार्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती वेदों के परम-भक्त थे। उन्होंने कार्यसमाज की नींव वेदों के आधार पर रखी थी। वे भारत में ही नहीं, समस्त विश्व में वेदों का मेघ मन्त्र विना सुनना चाहते थे, वस्तुतः स्वामी जी वे द्

## महर्षि दयानन्द के वेदभाष्य का विश्लेषण

(आचार्य मित्रनेत्र जी एम. ए., सेवा सदन, कटरा, अलीगढ़)



प्रचार के लिए ही श्रिप और मरे।  
(वैदिक साहित्य पृष्ठ ३६८-३६९)

महर्षि दयानन्द ने सम्पूर्ण यजुर्वेद तथा श्वेद के सप्तम मन्त्रक के ६१ सूक्त तक भाष्य किया। उन्होंने अपने भाष्य से यह समझाने का प्रयत्न किया कि वेदों में पौराणिक कथाएं, गो-शांभ अइया बलिप्रथा तथा कर्मिन्व इतिहास नहीं है। महर्षि ने वेद व्याख्या में वैज्ञानिक शैली अपनाई। इस बात को महाभद्रोपाध्याय पं. गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी भी मानते हैं—'वेद के वैज्ञानिक युग के व्याख्याकार भी स्वामी दयानन्द सरस्वती हैं। इन्होंने वेद के गौरव की ओर धार्य जाति की दृष्टि बहुत कुछ आकृष्ट की है। इस कारण से उनका भी उपकार विशेष माननीय है।'  
अपने वेद भाष्य में महर्षि दयानन्द ने वे शैलियों अपनाई जो बहुत बड़ी विशेषताएं मानी जाती हैं।

वैदिक शब्द यौगिक हैं  
स्वामी दयानन्द जी ने वेदों में आये समस्त शब्दों को यौगिक माना है। अपने परम्परा के अनुचित अर्थ को नहीं माना। इसकी पुष्टि करते हुए भी बलदेव जो उपाध्याय प० प०, साहित्याचार्य भी कहते हैं—'स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भी संश्लिष्टों भी भाष्य लिये हैं। ...स्वामी जी ने भाष्य संस्कृत में लिखे...स्वामी दयानन्द के भाष्य में समस्त वैदिक शब्द यौगिक माने गये हैं। (आचार्य सायब और सायब पृष्ठ २२२-२२३)  
शक शाकटायन पतञ्जलि आदि श्रद्धियों ने भी यही प्रयासी अपनाई थी, निरुक्त में भी यही उंग अपनाया गया है। आचार्य सायब ने परम्परागत अर्थों को अपनाया। इनकी पुष्टि पुराण, इतिहास, स्मृति आदि ने भी की है।

लेकिन महर्षि दयानन्द ने सायब के वेदार्थ को प्रमाया नहीं माना बलुवेद भाष्य में शत-पय ब्राह्मण के कुछ अंश को तो प्रमाया माना है।

अनेकार्थ की शंका  
वैदिक शब्दों को यौगिक मानने पर एक शंका यह होती है कि प्रत्येक शब्द अनेक धातुओं से सिद्ध हो सकता है। और अनेकार्थः हि धातवः के आधार पर उनके अनेक अर्थ होने कतः यौगिक अर्थ मानें तो शब्द शास्त्र के सिद्धांत से उन का एक अर्थ से सम्बन्ध नहीं हो सकता। वरर में निवेदन है कि शब्द समानार्थक या अनामार्थक होते हैं और वे चिरकाल के प्रयोग से स्थिर अथवा रूढ़ हो जाते हैं, वही अर्थों को प्रकृत किया जाता है। प्रसंग और विशेषण को ध्यान में रखते हुए यौगिक अर्थ मानना ही उचित प्रतीत होता है। यही कारण है कि श्रद्धि से पूर्ववर्ती कुछ भाष्य-कारों क मत में यह और यह सामग्री, यह पात्रादि का अर्थ न भी अनेक मन्त्रों में हैं परन्तु महर्षि की शैली से वही अर्थों में (यह में (यह की एक- एक वस्तु में) प्रकारा तथा उत्तम अर्थ प्रतीत होने लगता है।

त्रिविध प्रक्रिया  
वेदों का अर्थ शक में तीन प्रक्रियाओं से माना है। आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक महर्षि ने भी इन्हीं त्रिविध प्रक्रियों के अनुसार अर्थ किया है। परन्तु उन्हें आध्यात्मिक अर्थ विशेष रुचिधर था, उनके विचार से यह शब्द भी इन्हीं अर्थों में प्रयुक्त होता था।  
ऐतिहासिक शैली मान्य नहीं  
महर्षि दयानन्द के अनुसार वेद में एक भी ऐशा स्थल नहीं है

वेदा में कर्मिन्व इतिहास हो। कश्चि पूर्ववर्ती आधार कर्मिन्व तथा वैयक्तिक इतिहास मानते हैं। इह से वेद सर्वकालीन और सर्वगामी नहीं माने जा सकते। श्रद्धि की यौगिक शैली से 'वशिष्ठ, जमरदिनि आदि आदि ऐतिहासिकों ने इह आध्यात्मिक अर्थ वाले शब्द हैं, इह शैली से अपने इन्हें लिख प्राकृतिक घटनायें मान कर वेदों को सर्व कालिक एवं सर्वगामी छिद्र किया। निश्चयकार भी ऐतिहासिक अर्थ नहीं मानता।

वैज्ञानिक अविव्कार  
महर्षि का यह दृढ़ विचार था कि वेद में विज्ञान है। भाष्य में तथा स्थान इहका परिचय भी दिया गया है। भारत के दुर्भाग्य से वे अधिक दिनों जीवित न रह सके जिससे प्रयोगात्मक विज्ञान का अविष्कार वेद से न हो सका। बाद के भाष्यकारों ने उनके बताये मार्ग पर चलकर इह कमी को बहुत कुछ दूर करने का प्रयत्न किया।

वैदिक देवता  
आपक भाष्य को पढ़कर वैदिक देवताओं के वास्तविक स्वरूप का पता चलता है। आचार्य सायब आदि के अनुसार अग्नि, वायु आदि देवता जेतन है जो अपने-अपने मखडल के अधिष्ठाता हैं। वेदांगी भी इसकी पुष्टि करते हैं। परन्तु श्रद्धि ने यौगिक शैली से इनके अर्थ उनके गुण समूह की दृष्टि से किए हैं। अथवा ने परमात्मा के वाची हैं। श्रद्धि के मत में तैत्तिरीय देवताओं की स्मृति वेद में नहीं है।

सभी विनियोग मान्य नहीं  
पूर्वकाल के भाष्यकारों ने वेद मंत्रों का उचित और अनुचित विनियोग माना और उसे स्थान में रखकर भाष्य किये। फलतः जो शब्द वेद मंत्रों में हैं ही नहीं, फिर भी उनका विनियोग कभी-कभी गानी करके माना गया जिस के अर्थ का अर्थन हुआ।

कन्या ने साधारण भाषा में अपने हृदय के ज्वार स्वामी दयानन्द की के-प्रति प्रकट-किए हैं। अक्षर्य पवित्र।

आचार्य वसन्त से महापुरुषों का जन्मदाता रहा है। समय-समय पर इस पवित्र भूमि में अनेक महापुरुष जन्म लेकर देश जाति और धर्म की रक्षा करते रहे हैं। समय पैसा भी आया कि भारत में आर्य जाति को दशा काफ़ी बिगड़ गई थी। समाज में बाह्य-विवाह अशु-विवाह आदि अनेक कुटीरियाँ प्रचलित हो गई थीं। साध-साध आर्य महिलाओं और विधवाओं की दशा अत्यन्त शोचनीय हो चुकी थी। शूद्र और नारी को वेद की छत्र बचायी सुनना तथा पढ़ना निषिद्ध था। विधवाओं के कष्टम क्रन्दन से देव में दिन प्रतिदिन गरीबी बढ़ती जा रही थी। निषिद्ध ऐनो हो गई थी कि

कृष्ण कहा नही जा सकता।  
सँकड़ो बघों के अन्तकारणुणु युग के परभाव परम पिता श्रीधर्म की असीम कृपा से विक्रमी संवत् १६८१ में गुजरात प्रांत के मीरवी नामक रियासत के (टंकारा) नामी स्थान में देश, जाति तथा वैदिक धर्म को पुनर्जीवित करने के लिए एक माता ने ऐसे होनहार बालक को जन्म दिया। जिसने भविष्य में महर्षि दयानन्द के नाम से संसार में प्रसिद्धि प्राप्त की। आप ने बाल्यावस्था में ही धर्म में अतुराग रखने हुए, एक छोटी सी घटना से प्रभावित होकर सोचे हुए देश तथा जाति को जगा दिया।

तेरह वर्ष की आयु में शिबरात्रि के अक्षर्य पर एक चढ़े की शिव-पिच्छी पर चढ़कर कल्पित शिव का रूपमान करते हुए देख कर उसी दिन से सच्चे शिव की शोख में अपने को लगा दिया। आपने गुरुद्वय के समस्त देवधर्म को तात पर कर मृष्टि के कर्त्तों दुनियाँ के सुल्लों के हरता विश्व के कन्याया-

कर्मों की तलाश में सर्वदा के लिए गृह त्याग दिया। लगभग सोलह वर्ष तक घोर दुःख संकट सहकर अन्त में पूज्य स्वामी विरजानन्द जी महाराज के वहाँ गये। वहाँ पर आपने अपनी पूरी लगान तथा पूर्ण रूप से गृह वैदिक धर्मों का अध्ययन करके गुरु जो से जाने की आज्ञा ली। प्राते समय पुष्पापाद स्वामी विरजानन्द जी महाराज ने उन से कहा, 'दानन्द समस्त आर्यवंत और संसार के सभी देवों में अग्र्याय और अस्वाचार दिन प्रतिदिन बढ़ रहे हैं।

आर्य जाति अनेक कल्पित धर्मों को अपना रही है। मैं आप से गुरु दक्षिणा के रूप में यही मांग करता हूँ कि आप सारी दुनियाँ में वैदिक धर्म के सत्य स्वरूप को आर्यवंत के समस्त विद्वानों के सामने तथा जन-साधारण के सामने रखने की कोशिश करें, वामिने आर्य संसार में अधिका के कारण फैले हुए घोर अन्धकार तथा अन्ध-विश्वास का नारा हो सके। स्वामी दयानन्द जी ने उत्तर दिया कि मैं अपनी सारी आयु वैदिक धर्म के प्रसार में लगा दूंगा, और आपकी आज्ञा का पालन पूरा रूप से करूंगा।' स्वामी ने वहाँ से प्रस्थान किया। कई वर्षों तक आर्यवंत के सभी नगरों शहरों और गाँवों में वैदिक धर्म का प्रसार कर के अंत में बम्बई शहर में १८७२ में आर्य समाज की स्थापना की। आपने भारत के धार्मिक सामाजिक और राजनैतिक परिस्थितियों की सुधारते हुए काफी सफलता प्राप्त की। एक समय कौरी आदर्श तपस्या का फल था। आप आदित्य ऋद्धा-शरीर और परम ईश्वर भक्त थे। इसी कारण आपने अपने परम गुरु स्वामी विरजानन्द जी महा-

## जी सरस्वती

(श्री) कुमारी प्रमिला रामकृष्ण मारीवास)

राज का कहा हुआ अमर बचन का पालन पूर्ण रूप से किया। आप अपने गुरु के एक सच्चे शिष्य और भक्त थे।

अंत में श्री स्वामी दयानन्द जी ने संसार को यह ज्ञान भी दिया कि पर्येक को अपनी ही उन्नति में संलग्न न रहना चाहिए। किन्तु, सब को उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए। ऐसे महान योगी तपस्वी के तपयुक्त सिद्धांत के अनुसार उन की भेंट में हम यदि उन के प्रति अपने को नल दृढ़ न भदों जल अर्पित करने की शुभ भावना जागृत न करेंगे, तो क्या करेंगे? ऐसे महान पुरुष के पवित्र चरणों में मेरा बारम्बार नमस्कार है।

आज उन के अनुयायियों लाखों की संख्या में विदेशों में भी है, जैसे मोरिसस, फिजी, अफ्रीका और आर्जेन्टीना आदि देशों में उनके शतवत्स्य हुए पवित्र धर्म और मांग पर चल रहे हैं। इन सभी विदेशों के हर शहरों गाँवों में हजारों की संख्या में आर्य मंदिर हैं, जहाँ पर नियमित रूप से साप्ताहिक संसंग यज्ञ होते रहते हैं। यह सब उनके प्रचार का फल है जो आज हम आँखों से देख रहे हैं।

आज इन विदेशों में आर्य-समाज के द्वारा जो कार्य हुए हैं, और हो रहे हैं, उन की जितनी प्रशंसा की जाए कम है। वहाँ पर इस पवित्र वैदिक धर्म की कृपा से हजारों सरकारी पाठशालाओं में नियमित रूप से (दैनिक) हिंदी आर्य-भाषा की पढ़ाई हो रही है। विगत वर्ष १९६३ में यहाँ पर एक आर्य गुरुकुल की स्थापना भी हो गई है। गत वर्ष पुष्पापाद स्वामी अखिलानन्द जी महाराज सरस्वती की असीम कृपा से यहाँ

मोरिसस के शहर (पोर्टलुइस) में एक की० पी० सी० कलेज की स्थापना हुई है, इस समय उस में सँकड़ों छात्र हिन्दी संस्कृत पढ़ रहे हैं। इन छात्रों को भारतीय छात्र-वृत्तियाँ दिलाने की व्यवस्था भी हो गई है। हर्मास (मोरिसस) में आर्यसमाज ने काफी प्रगति कर ली है। और कर रही है।

अंत में मैं आचार्यवत के सभी श्रद्धिपत्तों आर्य उपदेशों आर्य विद्वानों से प्रार्थना करती हूँ, कि वे इस नव वर्ष १९६६ के श्रद्धि-भोयोत्सव के शुभ अवसर पर पुष्पापाद महर्षि दयानन्द के अमृत कार्य को पूर्ण करने का पवित्र संकल्प करें। आज हो के दिन हम अपने विद्वहै भाई बहनों को गले लगा कर उनको सच्चे आर्य समाजो बनाने का सुभन्सर है। इसी दिन हम अपने मन पवित्र करके विचार कर सकेंगे कि श्रद्धि के भिगत को पूरा करने के लिए किना त्याग कर सकेंगे। आओ आज इस अर्थो रजि का हम एक हो कर प्रभु से प्रार्थना करे कि वह श्रद्धि-भोयोत्सव हम सभी के लिए पल नई प्रेरणा, उमंग लेकर आए। ताकि हम सारी दुनियाँ को आर्य बना सकें।

हमारी आर्यवंत के रहने वाली आर्य जाति सदा फुले फुले। यही मेरी शुभ कामना है। जयहिन्द।

## हरियाणा (जिला होशियारपुर) में आनंद का स्रोत

श्री भीमसेन जी कपिल हैड-मास्टर डी. पी. बी. हाई स्कूल हरियाना की सुश्री कुमारी शारि का शुभ विवाह श्री रवि जी श्रोवराय सुभ्र सहाय श्री वजीर चन्द्र के साथ १४.१४ जनवरी को बड़ी धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। उपस्थित सम्बन्धियों तथा मित्र जनों ने इस नवीन दम्पती और परिवार को हार्दिक बधाई दी। इस शुभ अवसर पर हैड-मास्टर जी ने २०० रुपये दान की घोषणा की।



ईसराज महिला महा-विद्यालय जालन्धर

उपच - बन्ध्या समिति के लक्ष्यान में विद्यालय के स्थाप-क, महात्मा हसरान जी के शान्ती समारोह के उपलक्ष्य में ईसराज-स्मारक कृत: विद्यालय भाष्य-प्रतिबोधिता का आयोजन किया गया, इस प्रतिबोधिता में पंचम के लगभग सभी प्रमुख विद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। समारोह की अध्यक्षता वैदिक एवं वैदिकी विद्यालय के स्वामी श्री चण जी ने की।

प्रतिबोधिता के अन्त में श्री चण जी ने सभी प्रतिबोधितों की भाष्य-कला तथा उनके प्रास-सिद्धिवादी की अंशदा की, परस्कार विजेताओं को हार्दिक बधाई दी तथा जो इस प्रतिबोधिता में पर-स्कार नहीं जीत सके उन्हें अपनी भाष्य-कला को निलारने और आगामी बार परस्कार जीतने के लिए प्रोत्साहित किया।

समारोह की समाप्ति पर उप-स्थित गण से हुई।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि

उपसभा कार्यालय द्वारा आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग नई दिल्ली

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उप-सभा की अध्यक्षता सभा की गत वैदिक दिनांक ३०-१-१६६ में यह सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि कार्यसमाज के प्रसिद्ध सेनानी स्वर्गीय महात्मा हसरान जी की जयन्ती आगामी फरवरी १६६६ को दिल्ली में अमलत आर्यसभाओं की ५० वीं संस्थाओं तथा केन्द्रीय सभा के सहयोग से बड़े समारोह के साथ मनाई जाने का निश्चय हुआ।

इस अवसर पर हमारा यह परम कर्तव्य है कि महात्मा जी

की जयन्ती के उपलक्ष्य में एक बल संहत मनाई जाए यह कार्य तभी सम्भव हो सकता है यदि आप इस में अपना पूर्ण योगदान दें और इस प्रत्येक वर्ष को सफल बनाने का भर-रुक प्रयास करें। -राजकुमार मन्त्री

भारत कानून प्रधानमंत्री

सर्वप्रथम प्रधानमंत्री श्री जवाहर लाल नेहरू जी के स्वर-वास हो जाने के उपरान्त पाकिस्तान के कमिश्नी कालांको के अन्त-कार-अपना-नेहरू जी की दुर्निरा राप्ती को चुनने है। बड़ी बंध राष्ट्र की प्रधानमंत्री बनती हैं। पहिली बार प्रधानमंत्री के शिष्य मुकामिका हुआ है। श्री. नेहरू जी ईश्वरी ने मुकामिका में लक्ष्य को कर प्रधानमंत्री बनने की सर्वसम्मति की परस्पा को समाप्त कर दिया है। जनतन्त्र में पैला होता ही है। भारत के इतिहास में महिला प्रधानमंत्री की प्रथम बार निश्चित हुई है। भारत ने यह प्रकल्प दे दिया है कि उस के अन्तर्गत में प्रकृष और महिला में अन्तर्गत के रूप में कोई अन्तर नहीं है। दोनों का सम्मान बराबर है। महिला सम्मान भारत का गौरव प्रसिद्ध है। आज हमारे देश के इतने ऊंचे आसन पर महिला प्रधानमंत्री बन कर बैठी हैं। हम स्वागत करते हैं। श्रीमती इन्दिरा गान्धी स्वर्गीय अणुहराल नेहरू की योग्य विधुषी सुपुत्री हैं। सारी समाप्ताय उनकी आंखों के आसने हैं। विशेषकर के आज कठिनतायें सामने हैं ऐसे विषय अवसर पर सारे देश का कर्तव्य है कि वह उन को पूर्ण सहयोग दें। हम अपने नये प्रधानमंत्री का स्वागत करते हुए इन से बड़ी-बड़ी आशाएं रखते हैं।

नई दिल्ली १. (पंच १६६६ के लिए) प्रधान-डा० गोबिन्द लाल दत्त, भूतपूर्व उप-मुख्य विषय विश्वविद्यालय, उप-प्रधान-डा० मेहरचन्द महाजन भूतपूर्व उच्च न्यायाधीश भारत सरकार, जस्टिस बीधनलाल कपूर - वैद्यरत्न लाल कर्मशान, राय बहादुर डा० महा-राज कृष्ण कपूर, राय बहादुर कृष्णभद्रमहाकाश रिटायर्ड पीप इन्जीनियर, श्री पम. कार. कोहली, श्री हरिचन्द्र काटपालिया, जस्टिस राम गुप्ताभा ओबराय, प्रधान-मंत्री-राय बहादुर डा० गोबिन्द दास कपूर, मन्त्री-श्री लालचन्द लखा, श्री बल. पल. वर्मा, श्री बृजलाल मदन कर्मशी, डा० दीलतराय बहला, राय बहादुर अमरनाथ पुरी, श्री आर. पन. गुप्त, डा० अकाउण्टेंट-श्री पन्नालाल सू, श्री जैस्वाराय, श्री पन्नालाल सू, श्री सेवाराय कपूर, श्री कौशराज। जी० डी० कपूर प्रभावमन्त्री

आर्य समाज सीताराम बाजार देहली

प्रधान-श्री बल्लू किशन दास उपप्रधान - , दीलत राय उपप्रधान - , देवराज अमरनाथ , श्री मन्मथ लाल कर्मभोकेट , श्री राजाराम शास्त्री मन्त्री - , गोशिशंकर भारद्वाज सहायक - , सत्यप्रकाश जी महेद्वरी उपमन्त्री - , सेमरद बादना , वैद्य प्रकाश कोषाध्यक्ष - , नरेन्द्रनाथ गुप्ता पुस्तकाध्यक्ष - , आनंद स्वरूप , लेखाल निरीक्षक , अनन्तराम वेदी इसके अतिरिक्त २२ अन्तरंग सदस्य युने गये। श्री शंकर भारद्वाज मन्त्री समाज

श्रीरक्षित गांधीवादाय

विश्व संघालक-श्री विषयकुमार

श्री सिवलय सहायक - , I - , कृष्णा जी , II - , वैद्यप्रकाश जी आर्य शाखा संघालक - , रामकुमार जी गोवल संरक्षक - श्री का. सुलाराम जी अरोड़ा मन्त्री - श्री सत्यपाल जी सिधल उपमन्त्री - , अरविन्द कुमार जी कोषाध्यक्ष - श्री महेन्द्र कुमार जी सिवलय पुस्तकाध्यक्ष - , विषयकुमार गोवल शाखा नायक - श्री शिबू कुंभार जी सिवलय सत्यपाल मन्त्री

आर्य समाज (सैक्टर ८) चण्डीगढ़

प्रधान-श्री नालक चन्द श्री पंडित कल्पनायक-श्री अन्तराम मैत्री, मि. हरिराम, मि. त्रिलोकीनाथ, श्री प्रकाश चन्द महाजन तथा श्रीमती विद्यावती अमरनाथ।

मन्त्री-श्री देवराज मलिक उपमन्त्री-श्री देकराम, श्री राम प्रताप, श्री विषय कुमार तथा निरिखर मलिक

कोषाध्यक्ष-श्री रामकृष्ण गुप्ता

पुस्तकाध्यक्ष-श्री आनिवासी लाल निरीक्षक-श्री रामलाल जौहर अन्तरंग सदस्य - प्रतिष्ठित सत्यक जी चालन लाल आहुड़ा, श्री परमेश्वरी दास बहल, डा० तुलसी दास, मि० जी०. ए०. ल० न तथा न्यायाधीश देव चन्द और २० अन्तरंग सदस्य युने गये।

देवसाज मलिक मन्त्री समाज

आर्य केन्द्रीय समाज करनाल

प्रधान-श्री मेला राम जी बर्क मन्त्री-श्री श्रीहराम जी कोषाध्यक्ष-श्री अनन्तराम जो आण्डिट-श्री अमरनाथ जी मन्त्री लखा

मुद्रक ब प्रकाशक श्री कनोपराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि समाज संघालक जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजतग कार्यालय महात्मा हसरान मवन निकट कचहरी जालन्धर राहूर से प्रकाशित मासिक-आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंचम जालन्धर



देहीकोन नं० १०२०

[आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र]

Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे

वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६ अंक ६)

१६ फाल्गुण २०२२ रविवार—दयानन्दवाच १४१—२७ फरवरी १९६६

(तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

## वेद सूक्तयः

### यस्तन्न वेद

हे लोगो ! वा—जो भी अपने इस मानव जीवन में लक्ष्य परमेश्वर को न वेद—नहीं जानता, नहीं मानता और उसे नहीं प्राप्त करता। श्रु पथ पर नहीं चलता।

### किमुचा करिष्यति

ऐसा अभाग्य श्रु से हीन नरनारी अर्थात्—इन चमकीले भौतिक पदार्थों से वा अपने कोरे लक्ष्यवादी से किम्—क्या करेगा ! श्रु के बिना वे श्रुति के चमकीले पदार्थ उसे क्या देंगे ?

### य इत्तद् विदुः

और वे—जो नर-नारी अपने इस जीवन में ही श्रु—उस श्रु को मानते जानते और प्राप्त हैं। उसके प्रेम के रसीले प्याले का पी लेते हैं।

### ते अग्नी समासते

अग्नी—ये वे, ही वे, ते—वे नर-नारी श्रु प्रेमी ही अपने इस पवित्र जीवन में समासते—आनन्द का स्थान प्राप्त कर लेते हैं। य मानव को पा लेते हैं।

अथ वं वे व से

माननीय श्री यश जी प्रधान आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, पंजाब—जालन्धर

आर्यप्रादेशिक सभा पंजाब जालन्धर नगर के ता० २० फरवरी १९६६ रविवार के

वार्षिक अधिवेशन में सवसम्मानित से आप को सभा का प्रधान चुना गया तथा अधिकारियों एवम् अन्तरंग सभा के सदस्यों का चुनने का आा को सर्वाधिकार दिया गया। आप ने सारे मान्य प्रतिनिधियों से जोरदार शब्दों में कहा है—आप ने सभा का जो बड़ा दायित्व मुझे सौंपा है। उसके लिए आप ने पूर्ण सहयोग देना है। यह वर्ष समस्याओं का वर्ष है। वेदप्रचार के काम को बढ़ाना है। आज का युग आर्य-समाज के निष्काम सेवकों की ओर देख रहा है। आज से ही हम सब सभा की सेवा में तन मन धन से जुट जावें।



## ऋषि दर्शन

### स विष्णुरीश्वरः

वह विष्णु ईश्वर ही है। वही परमेश्वर विष्णु कहलाता है। सर्वव्यापक होने से भगवान विष्णु कहलाता है। उस सर्वव्यापक प्रभु से ही जीवन की सारी कामनाएं पूरी होती हैं उमा को मानो और उही से मांगना सीखो।

### चक्रवर्ति राज्यम्

आपका राज्य चक्रवर्ति है। सारे विश्व को जनता आपके स्वराज्य तथा सुाज्य की शंखता करती रहे। कोई हमें पराधीन न बना सके। मानविक दाव भी न बनें हम चक्रवर्ति राज्य का प्रसाद प्राप्त करें।

### अनन्त पराक्रमवान्

वह परमेश्वर अनन्त बल पराक्रमी का भयदाह है, सारी शक्तियों का बही केन्द्र है, उस की शक्ति के सामने कौन बलवान ठहर सकता है। अग्निमानी बली उस महाबलों के सामने हार गये, जुद्ध न चली वह बली है।

भाष्य सूक्ति का से

(गतांक से आगे)

हम आज अपनी मातृभूमि, संस्कृति और भाषा को भूलते जा रहे हैं। हमें इन तीनों की रक्षा करनी है। जिसके परममें मां जीवित हो उसे कहीं बाहिर तीर्थों पर जाने की जरूरत नहीं। मां की सेवा से बड़ा कोई तीर्थ नहीं। मां ही हमें सुन्दर विचार देती है। शास्त्रों में मां को बहुत ऊंचा स्थान दिया गया है लेकिन मां भी मां होनी चाहिए 'सेकण्ड' वाली मम्मी नहीं। हमें अपनी जननी जन्मभूमि की सेवा करनी चाहिए। वह सबसे बड़ी मां है। किसी शायर ने कहा है—

तुलुलत ५१ गुल सुवारिक  
गुल को चमन सुवारिक  
हम का मेरे प्यारे  
प्यारे बचन सुवारिक

★ अपने देश, अपनी संस्कृति और अपनी भाषा के प्रति लगाव रखने वाले। वाद रखो कि यदि तुमने जननी जन्मभूमि से प्यार करना न सीखा तो उसी तरह अमरीका से भी निकाल दिए जाओगे जैसे यमों, लंका और इंगलैंड से निघाले जा रहे हैं।

एक जन्म माना-विना न दिया और दूसरा जन्म गुरू देने हैं। गुरू का अर्थ है वह व्यक्ति जो ज्ञान के पास है जो चारों वेदों का ज्ञान रखता है और आत्म-दर्शन करके जागृत अवस्था में है। गुरू बनने के लिए इन्द्रियों पर विजय की आवश्यकता है और इन्द्रियों पर विजय के लिए जिज्ञा पर जो बोलती भी है और छाती है, नियन्त्रण जरूरी है। रूढ़ यदि कोषी है। तो वह गुरू बनने के योग्य नहीं।

गुरू भिला तब जानिये  
मिटे मोहा मनोप  
हृषं शोक व्यापे नहीं

फिर गुरू समझो मिलिए

अथर्ववेद में राष्ट्रभक्ति और प्रभुभक्ति को समान दर्जा दिया गया है। जो राष्ट्र सेवा में अपने प्राणों की आहुति देते हैं और जो

## राष्ट्र-भक्ति और प्रभु-भक्ति-१२

(श्री महात्मा-आनन्द स्वामी जो महाराज को अमृतभरी कथा)



परमात्मा के लिए आत्मसमर्पण करते हैं, उनको समान शर्तों और भावनाओं के वाद पराधीन की गई है। आत्म ज्ञान के वाद प्रभु में लीन हो जाने वालों और मातृभूमि की रक्षा के लिए आक्रमणकारी शत्रु का मुकाबिला करते हुए वीरगति प्राप्त करने वालों के मध्य परमात्मा का दृष्टि में कोई अंतर नहीं।

कल दीक्षा, तप, धारि गुरू को वात चल रही थी। दीक्षा का अर्थ है दृक्—Alertness—चौकसी। आज पूर्ण रूप से दृक् रहने की आवश्यकता है। हमें देखना है कि कोई शत्रु हमारे देश की सोमाओं पर घुबरेट तो नहीं कर रहा। देश के अन्दर दूतारों के रूपों पर चलने वाले देशद्रोही सक्रिय तो नहीं हैं। जिस तरह देश की सोमाओं पर दक्षता जरूरी है, उसी तरह परिवारों के अन्दर भी पूर्ण दक्षता अनिवार्य है। जिस परिवार की मुखिया देवी नियुक्त एवं दक्ष होना उसका प्रबन्ध लूप अन्वष्टी तरह चलेंगा। जहां कोई अन्दरू-नो स्त्री परिवार की मुखिया होगी वहां समय पर भोईं भी बल्लु अपनी जगह पर नहीं मिलेगा और सारा प्रबन्ध अस्त-व्यस्त रहेगा। आज कल लड़कियों को गूलों में गृह-विज्ञान—Home Science

पढ़ाई जाती है। Home Science का अर्थ भी यही है घरों में सभी प्रबन्ध को सुचारु ढंग से चलाने की शिक्षा। वाद रखो! एक छोटी-की गलती एक बहुत बड़ी विपदा का कारण बन सकती है। दक्षता में अज्ञान्य, प्रमाद और लोभ मुख्य बाधाएं हैं। लोभ कर्तव्य-पालन में सब से बड़ी बाधा है। १९४७ में पाकिस्तानी

आक्रमणकारी काश्मीर की ओर बढ़े। बारमूला पहुंचे तो लूट मार शुरू कर दी। यदि वे तुंटेरे लूटमार न करते तो बट्टे-बट्टे श्रीनगर पहुंच जाते। भगवान की कृपा से भारतीय सेना पहले पहुंच गई और श्रीनगर को समय पर बचा सकी। एक बार कुछ सरदार व्यक्तियों ने खुले बाजार में एक दुकान में डाका डाला। जब डाकू लूट मार में लगे थे तो एक बहुत बड़ी भीड़ ने दुकान को घेर लिया। डाकूओं का लूट के माल सहित भागना कठिन हो गया। डाकूओं के सरदार ने मट एक तरकीब निकाली और लूट के माल में से दस हजार रुपय के नोट मोड़ पर बरसा दिए। मोड़ नोट डालने में लग गई और डाकू भाग निकलने में सक्षम हो गए। वह दो घटनाएं जनता के लिए पयांल हैं कि लोभ कतघ्न पालन में कोवाही सिखाता है।

शरीर का तप आग में जैतना या पानी में खड़ा होना नहीं। देवता और गुरू की पूजा करो कि तु शरीर की भी रक्षा करो। सुवं वायु-चन्द्रमा ये सभी देवता हैं। इन्हें ही कृपा दृष्टि की प्राप्ति के लिए यह पद्धति चलाई गई। मातृ देवो भव, आचार्य देवो भव अतिथि देवो भव जब हम कहते हैं तो इसका अर्थ यह है कि आचार्य और गुरू हमारा मार्ग दर्शन करते हैं हम उनको प्रणाम करते हैं। आजकल तो गुरू भी कई प्रकार के हैं। एक लड़के ने गुरू से पूछा— गुरू जी! कवचर को कैसे पहनना चाहिए। गुरूदेव ने मट से कहा— पहले कवचर को गर्दन से पहनो और फिर उसकी आंखों में गर्म-गर्म मोम डाल दो। जब कवचर को दिखाई देना बन्द हो जाय तो उसे पहन लो। शिष्य लड़के ने पूछा—

'महाराज! जब मोम डालने के लिए कवचर की गर्दन पहननी है तभी क्यों न उसे पहन दिया जाय?' यह ने डांटेते हुए कहा— 'शर्म नहीं' छाती मुझे गुरू को चुनौती देते हुए। यदि बिना मोम आंखों में डाले पहन लिया तो उसमें उल्टाही कैसे होगा। गुरू वहीं पूजा के पास हैं जो सम्मार्ग विलाएं। महाश्वि दधानन्द अपने गुरू विश्वानन्द की पूजा करते थे। मन्थु भारा से गंगाजल लाकर गुरू को स्नान कराते थे।

शरीर की रक्षा करो और प्रबन्धों का पालन करो। इन दोनों बातों पर अमल करके ही आत्म-दर्शन सम्भव है। नेपोलियन बोनापार्ट इसीलिए मारा गया कि उसने प्रबन्धों का पालन नहीं किया। अहिंसा का मानव जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। अहिंसा का यह अर्थ कमी नहीं कि यदि चोनी हमला करके हमारे प्यारे देश में अहिंसा हो जाय तो अहिंसा परमो धर्म: का भजन गाने लगे। तब अहिंसा का अर्थ है कि अटल होकर, कर्तव्य के साथ शत्रु का संघार करो। अथर्ववेद में तो यही तक लिखा है कि शत्रु यदि अजित रह जाय तो उसे पानो के शोष्य भी न छोड़ो। अथ मैं बाणों की चर्चों करता हूँ। हे मानव! ऐसी बाणों बोल जिससे दूसरे को पीड़ा न हो और कि जो सुनने वाले को शीत-कता पहुंचाए। सच बोलते समय भी धर्म हित, अहित का विचार करना चाहिए। सच बोलो किंतु मीठा। अत्रिय सच न बोलो। वाणी का अर्थ है कि इन्धान की जिज्ञा के आगे प्रभु भरा हुआ हो। मन और जिज्ञा दोनों मीठे हों। वह कमी नहीं भूलना चाहिए कि वाणी के कारण ही महाभारत ५१ युद्ध हुआ। दुर्बोधन हितसुपर में पांडवों के राजमहल को देखने गए। महल के एक भाग का नाम छल-महल था। (कमरा)

संपादकीय—

# आर्य जगत

वर्ष २६ रविवार २०२२, २७ फरवरी १९६६ [अंक ६]

## सभा का शानदार अधिवेशन

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा वंजब जालन्धर का आधिपत्य अधिवेशन गत २० फरवरी १९६६ रविवार दो बजे बार रोपड़ आर्य सभा विक्रमपुरा के नये श्री सुन्दर हाल में माननीय श्रीयुक्त यश जी सभा प्रधान की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुआ। इस अधिवेशन में वंजब के कोने २ से दूर २ से मान्य प्रतिनिधि पचारे हुए थे। जालन्धर, अम्ब, हीवहारपुर आदि छारे स्थानों से समाजों के मान्य भाई बहिनें उपस्थित थे। हमारे कलेजों के तथा स्कूलों के छादर-शीय प्रतिनिधि महानुभाव, ववापार जेज, राजनीति में कार्य करने वाले तथा अन्य भी केन्द्रों में बैठ कर काम करने वाले सचन सभा के हितचिन्तक थे। इस सभा को इस बाबू का गौरव प्राप्त है कि उसके विशाल सामाजिक परिवार में शिक्षा क्षेत्र के बिहारद, विश्वात नेता तथा राष्ट्रिय कार्यकर्ता शामिल हैं। ये सारे अधिवेशन में पचारे थे।

श्रुत कोलकर समराधामों पर अपने-अपने विचार व्यक्त करने का बोलने वालों को समय मिला। माननीय प्रतिनिधियों ने नामा प्रचार की आवश्यक बातों और सभा की ऊनवि के छापनों पर अपने कीमती तथा ठोस विचार रखे मात्र विभाजन के तर्कों का शक्ति से प्रतिकार करने के लिए

सभा की संगठन शक्ति की सुन्दर सराहना की गई। इस वर्ष प्रचार कार्य भी और भी तीव्र करने, समाजों में और भी वरसाह भरने की योजनायें पेश की गईं। युवकों के संगठन के कार्य को सभा द्वारा हाथ में लेने पर सबसे बड़ा बल दिया। इस वर्ष आर्ययुवकों को सूत्र में पिरोने का विशेष कार्य होगा। गावरी पाठ के बाद भारतीय महान नेताओं एवं समाज के महारथियों के निघन पर कोकर-व्रतियां प्रस्तुत की गईं।

सब के अन्त में निर्वाचन का काम शुरू हुआ। आर्यप्रादेशिक सभा को इस बात का चला सके गौरव प्राप्त है कि सभा का निर्वाचन सर्वसम्मति से होता है। यही परम्परा इस बार भी कायम रखी गई। सभा के प्रधान पद के लिए श्रीयुक्त यश जी का नाम प्रस्तुत हो कर सर्वसम्मति से स्वीकार हुआ तथा बाकी निर्वाचन का सर्व-धिकार भी प्रधान जी को सौंप दिया गया। अधिकारियों व अन्तरंग सभादि के नाम स्वयं घोषित करेंगे। बड़े अंश से शक्ति प्राप्त हुए अधिवेशन समाप्त हुआ। आर्यसभा विक्रमपुरा जालन्धर के आर्य अधिकारियों का भी तो विशेष प्रबन्ध है जिन्होंने समाज की ओर से इस अधिवेशन में पचारेने वाले सारे सचनों के निवास तथा भोजन-पान आदि का बदरता एवं सुव्यवस्था किया। अधिवेशन समाप्ति पर भी बहिया जलपान का प्रबन्ध था। नाम में जो जलपान था परन्तु उसमें लान-पान की वस्तुओं की कमी न थी। इस अधिवेशन की सबको बधाई।

—त्रिलोकचन्द्र

## अपनों से गिला

★ ★ ★ ★ ★

भारत के संविधान में चौदह भाषण स्वीकृत की गई हैं। उनका अपने रूप में विकास का प्रबन्ध है ही। हिन्दी को राष्ट्रभाषा का स्थान मिला है। अन्ये ६ राष्ट्र

अपनी राष्ट्रीय भाषा का सम्मान करता है। भारत की विदेशी सत्ता को समाप्त हुए वर्षों हो गए। प्रति वर्ष हम गणतन्त्र दिवस मनाते हैं। लोकसभा का अधिवेशन भी होता रहता है। इस बार प्रधान मन्त्री के उच्चासन पर माननीय भोगी इन्दिरा गांधी जी विराजमान हुई हैं। हमारे राष्ट्र को गौरव प्राप्त है कि उसने इतने महान् जनतन्त्री राष्ट्र में एक देवी को यह सम्मान देकर अपना नारि सम्मान व्यक्त किया है। इही प्रकार हमारे राष्ट्रिय साय-वर डा० राधाकृष्णन जी विद्व विरुधात नेता हैं। पर इस बार एक बात का दिल में बड़ा खेद हुआ कि श्रीमती इंदिरा जी ने राष्ट्र के नाम अपना जो प्रथम सन्देश-भाषण दिया, अंगरेजी में दिया। इही प्रकार हमारे राष्ट्रिय शि भी भी लोक सभा के इस अधिवेशन में अपना भाषण अंगरेजी में ही पढ़ा। दूसरे देशों वाले क्या कहेंगे? राष्ट्र की किसी भी भाषा में बोल देते तो गिला न था। पर इतने वर्षों के बाद भी हमारे नेता विदेशी भाषा में बोलना गौरव समझते हैं। यदि नेताओं के मन में ही राष्ट्र-भाषा के प्रति सम्मान न होगा तो जनता क्या करेगी? हम इसे मानसिक हास ही समझते हैं। राष्ट्र भाषा का यह अपमान भी है। हम नम्र निवेदन करना चाहते हैं कि आगे से प्रथम भाषण राष्ट्र की भाषा में दें। बाद में चाहे उसका अनुवाद अंगरेजी में कर

दिया जाये। राष्ट्र के मान के लिए राष्ट्र-भाषा का मान बढ़ा ही आवश्यक है—सं.

## हरियाना का जलसा

श्री. प. वी. हार्दिकूल हरियाना का जलसा मूलतः मान्य है-मास्टर श्री भीमसेन जी कपिल के वरसाह से बने समारोह से मनाया गया। समाज का भी यही जलसा होता है। स्कूल के छात्रों का बड़ा सुन्दर मनोरंजक कार्यक्रम था। अन्त में सभा की ओर से व. त्रिलोकचन्द्र शास्त्री, व. चन्द्रसेन शर्मा आर्य हितियों, व. हजारीलाल जी शामिल हुए। जलसा हर प्रकार से सफल रहा। श्री हैदमास्टर जी का समाज प्रेम व उत्साह प्रशंसनीय है।

## आर्य जनता भावधान रहे

विदित हुआ है कि डॉ. राजनारायण दुबे नाम का कोई व्यक्ति मध्य प्रदेश आदि के आर्य समाजों में घूम रहा है। वह अपने को कई विषयों में पी० एच० डी० और तुलुकल कांगड़ी व रावेकसर बताता है।

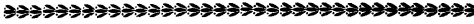
यह व्यक्ति अपने को सां-देशिक सभा से सम्बन्ध भी प्रकट करता है।

इस व्यक्ति का सांदेशिक सभा के साथ किसी भी प्रकार का सम्बन्ध नहीं है। न सभा ने इन्हें समाजों में घूमने का प्रमाण पत्र ही दिया है। ऐसे व्यक्तियों से आर्यसमाजों और नर-नारी सभ-पन रहे और इन्हें किसी भी प्रकार का प्रोत्साहन न दें।

रामगोपाल मन्त्री सांदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली—१

# आर्यप्रादेशिक सभा का वार्षिक विवरण परिचय

## महात्मा हंसराज जयन्ती, सेवाकार्य, साहित्य प्रकाशन



### आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

के दीर्घकालीन जीवन में एक वर्ष की और वृद्धि हुई। पिछला वार्षिक अधिवेशन ३१-१-२६ को लॉरेन्स रोड आर्यसमाज अणुसरर में हुआ था। इस वर्ष आर्यसमाज, विक्रमपुरा, जालन्धर के नये विशाल मंदिर में हम सब एकत्रित हुए। लौंगमन एक लाख रुपयों की लागत से बना यह मन्दिर बरबस हमें अपने निमाताओं, स्व० ला० शंकरदास जी ग्रेहन, श्री देशराज जी महाराज, डा० हनुमचन्द जी भरला ला० सन्तोपराज जी तथा वि० प्यारे-साहू जी वेरी का स्मरण कराता है, जिनके अग्रिय पुरुषार्थ से जालन्धर में इस मंदिर के रूप में आर्यसमाज के बरा और सम्पत्ति की वृद्धि हुई।

जालन्धर अत्यन्त प्राचीन नगरी है। इसका विशेष ऐतिहासिक महत्व है। नाथों, बौद्ध सन्तों तथा मुस्लिम सूफ़ी फकीरों ने इसे अपनी साधना के लिये चुना। आर्यसमाज की दृष्टि से इसका एक विशेष महत्त्व है। क्योंकि इसी नगरी में श्री लामगण्डभी स्थान पर आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी ने सन १८७७ विभवर, अक्तूबर में वैदिक धर्म का प्रचार किया।

शुचि दयानन्द जी के प्रचार स्थान पर पक्षर हम सब लोग यदि आर्यसमाज के काम के लिए कुछ स्फूर्ति ग्रहण कर सकें तो हम अपनी भी बरबादाय करीगे—वतमान भयंकर संकट में फँसे अपने प्रांत का भी बरबादाय कर पायेंगे तथा देश को भी अन्धमन दिला सकेंगे।

### शोक प्रकाशन

१९२५-१९२६ का यह वर्ष

भारत के लिये एक महान संघर्ष का वर्ष रहा। इस में हमने अनेक पुण्य कारनामों के विधायक दुःख को सहा।

१—श्री ज्ञान बहादुर जी शास्त्री, भारत के प्रधानमंत्री लगभग १८ मास के अपने बहुत्वपूर्ण कार्यकाल में भारत का, युद्ध और शांति के दोनों क्षेत्रों में ही सफलता पूर्वक नेतृत्व कर उच्चतर सूर्य के समान पूर्ण प्रकाश की अवस्था में ही अचानक कालमस्त हो गये। इस सन्त, साधक, प्रधानमंत्री की अकाल मृत्यु से देश ने गहरे आघात का अनुभव किया।

२—स्वा० प्रधानन्द जी, पूर्व नाम श्री धुरेंद्र शास्त्री राजगुरु का भी इस ही वर्ष देहान्त हुआ। आपकी मृत्यु से आर्यसमाज ने एक महान् कार्यकर्ता तथा एक विशिष्ट विद्वान् को हाथ से गंवाया। आप ने आर्य सांख्यिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान के रूप में भी महत्वपूर्ण कार्य किया।

३—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के तथा आर्य संस्थाओं के महान् कार्यकर्ता, जिला होशियारपुर तथा कोलकाता में प्रचार के प्राण तथा अग्नि में वेदभाष्य प्रकाशित करने वाले महाराजा देवीचन्द जी भी आज नहीं रहे। उनकी मृत्यु से आर्य समाज की अपार क्षति हुई।

४—लाहौर तथा जालन्धर में आर्यसमाज के विशेष कार्यकर्ता तथा पिछले वर्ष सभा के कार्य को बहुत ही योग्यता से सम्पन्न करने वाले ला० ज्ञानचन्द जी माटिया

का अल्पकाल तथा जालन्धर की आर्य संस्थाओं की विशेष शान्त समझी जायें।

५—हृदी पत्र-कारिता के क्षेत्र में देश-भक्ति का सन्देश देने वाले तथा जीवनो साहित्य के समर्थक श्री सत्यदेव जी विद्यालंकार (देहीजी प्रोफ़े) तथा वैदिक साहित्य के विशिष्ट विद्वान् श्री चण्डूबयि जी विद्यालंकार पालीरन का विधायक भी इस वर्ष की दुःखद घटना है।

६—शुचि दयानन्द जी के विशेष भक्त श्री टी. एच. बल्लानी जी तथा आर्य साहित्य के विद्वान् तथा लेखक श्री गंगाधरदा जी प.प. के स्वर्गवास से जो आर्यसमाज की क्षति हुई उसका उपाय शायद होता नहीं देखता।

७—श्री यश जी तथा श्री रघबीर जैसे लेखनी के वीर तथा देश सेवकों की माला श्रीमती मेलादेवी जी का भी इस ही वर्ष स्वर्गवास हुआ। आर्यसमाज के लक्ष्मीकान्ति के सन्त महाराजा आनन्दस्वामी जी, पूर्व रूप ला० सुराहालचन्द जी की धर्मपत्नी होने का सौभाग्य प्राप्त करने वाली भगता मेलादेवी ने जीवनभर अपने पति का अनुसरण करते हुए आर्यसमाज के कार्य में भी सदा रुचि ली।

८—पंजाब प्रांत के पिछले राबपाल की नरहरि विष्णु गाढगिल जी की दुःखद मृत्यु इस प्रांत की एक विशिष्ट क्षति है।

### सभा कार्य

देश में तथा देश का एक अंग होने के नाते इस प्रांत में एक विशेष बात देखनी का रही है। आर्यसमाज का क्षेत्र फैला रहा है, संस्थाएं बढ़ रही हैं, नई-नई समाज

पनप रही हैं पर साथ ही साथ आर्यसमाज का जन्म जिन अंश के निराकरण के लिए हुआ था उन में भी कोई कमी छाती दृष्टिगोचर नहीं होती।

सुविधुमान करने वाली की संस्था घट नहीं रही है, तीर्थस्थानों के आभरण घट नहीं रहे हैं, भिल ३ने साथों की सेना कम नहीं हुई। फलित ज्योतिष का, चमत्कारी टगों का, मूर्ति पूजा का, पुस्तक पूजा का, कबर पूजा का, भिन्न-भिन्न सन्प्रदाओं के प्रर्थों का महत्व किसी प्रकार भी कम हो गया ही ऐसा कुछ भी दिखाई नहीं देता।

इस धार्मिक पालंढ के साथ-साथ राजनीतिक अड्डा, अंधकार की अशुचिता तथा जमीन में अवांछनीय मूल्यों की स्वीकृति ने इतनी नई समस्याएं उत्पन्न कर दी हैं कि हम सब एक बावले विकमुद बालक की तरह सिखाव चारों ओर देखकर इलारा होने के कुछ कर नहीं पा रहे।

आर्यसमाज को यदि जीवित रखना है तो अपने सधनों, अपनी संस्थाओं, अपने कार्य-कर्ताओं तथा अपनी सभाओं को देखना परखना होगा। अपनी दुर्बलताएं दूर करनी होंगी, अपने लक्ष्य को स्पष्ट करना होगा तथा अपनी कार्य विधि में आवश्यक परिवर्तन करने होंगे।

इन सब बातों पर विचार कर वर्ष के लिए नया सम्पन्न प्राप्त करना ही धार्मिक अधिवेशन का मुख्य कार्य होय है। भारा है हम सब समाज के प्रतिनिधि तथा अधिकारी इस अधिवेशन के (दोप दृष्ट ५ पर)

### औद्योगिक सभा को वार्षिक विवरण परिचय

(पृष्ठ ४ का दोरा)

इस दृष्टि से देखेंगे केवल परम्परा के अनुसार काम चलाऊ रूप में न देखेंगे।

#### सभा की स्थिति

सभा की आर्थिक स्थिति सम्भवतः पिछले कुछ वर्षों में सन्तोषजनक नहीं रही। इसी कारण एक तो सभा में आवश्यक सुधारों में प्रचारक नहीं रहे जा सकते और दूसरे सभा के मान्यता आदि की ठीक रूप में नहीं लाया जा सकता, तीसरे सभा के पत्र आयाजगत का रूप और अच्छा नहीं बनाया जा सकता और चौथे सभा का साहित्य विभाग आर्थिक चलत नहीं हो सकता। इस वर्ष इस सब दिशाओं में कुछ कार्य हुआ। इस क लिए कुछ सुयोग और दुर्योग दोनों उत्पदायी हैं। सनका ज्वेलर बनाना आवश्यक है। इस वर्ष भारत पाकिस्तान के युद्ध ने इस प्रांत के जन-जीवन को अपना चलत-पलत दिया कि सभा को इसके कारण विद्युत् परिस्थिति में से गुजरना पड़ा। जम्मू तथा श्रीनगर की समानों को विशेष कर तथा अन्य सीमा देशवर्षी समानों के सामान्यतया करव न हो सके।

२-सांख्यिकी का गणवत् के कारण प्रचारक की का प्रचार कार्य करना कुछ मात्र बन्द करना पड़ा।

३-इसके परिणाम स्वरूप सभा के लिए आवश्यक धन-संग्रह का कार्य नही सका।

इस भीषण युद्ध के साथ यदि महात्मा हंसराज जन्म शताब्दी का सुयोग न आता तो सम्भवतः इस वर्ष सभा का कार्य बहाम्ना लगभग असम्भव हो जाता। महात्मा हंसराज जन्म-शताब्दी समारोह

यह समारोह पिछले वर्ष ११ अप्रैल से १६ तक बड़ी धूम-

धाम से मनाया गया। ११ अप्रैल से व्याख्यान माला का क्रम आरम्भ हो गया। १७ तारीख को कार्य संस्थाओं की ओर से एक विशाल जलूस निकाला गया। १७ से १६ तारीख तक विभिन्न सम्मेलन किए गए और १९ तारीख को एक विशाल काँग्रेस की गई जिसमें १२२ के उप-शाखा मन्त्री भी यश जी प्रधान सभा, मुख्यमन्त्री श्री रामकृष्ण जी, कार्यस प्रधान प. भगवन् दयाल जी आदि प्रांत तथा देश के गण्य-मान्य नेताओं ने म. हंसराज जी की अपनी प्रद्वान्जलि कियी की।

११ अप्रैल से जो व्याख्यान माला आरम्भ हुई उसमें कार्य-समाज, महात्मा हंसराज तथा भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलुओं पर आचार्य हजारी प्रसाद जी विवेदी पंजाब विश्व विद्यालय, प्रो. अश्रुल मजौद जी, श्री सुवैभानु जी उपकूलपति कुरुक्षेत्र विश्व-विद्यालय, डा. अनूपसिंह जी डा० गोपीचन्द्रजी जी दत्त, प्रधान जी १० वीं काँग्रेस मैनेजिंग कमेटी तथा श्री मोरारजी देसाई, पूर्व विधेय मन्त्री केन्द्रीय सरकार, जैसे विद्वानों के विशिष्ट भाषण हुए।

यह व्याख्यान माला अपने ढंग की कार्य समाज के क्षेत्र में एक नई पंख थी।

१७ अप्रैल का जलूस व्याख्यान माला तथा १६ अप्रैल की यह प्रसभा कार्य-समाज के इतिहास में स्मरणीय समारोह थे। इनके प्रतिरिक्त यह तथा वेद सम्मेलन, धर्मप्रचार सम्मेलन आदि अनेक महत्त्व पूर्ण सम्मेलन हुए। इस शताब्दी का कार्य क्रम बहुत सफल और विसृत रहा। जलूस सम्मेलन काँडैस तथा अन्य कार्यक्रमों के प्रतिरिक्त महात्मा हंसराज जी ने जीवन तथा उनकी रचनाओं के सम्बन्ध में अच्छा साहित्य तैयार किया गया।

श. न्दी के उपलक्ष्य में लगभग

३३ हजारों रुपया व्यय हुआ। आशा थी कि लाखों रुपये इस अवसर पर एकत्र किये जा सकें और कोई ठोस विशिष्ट कार्य किया जा सकेगा, पर पाक आक्रमण की विपत्ति ने कार्य समाज की इस आशा पर तुष्टारपात कर दिया।

हमें यह प्रकट करते हुये खेद होता है कि प्रांतीय सरकार तथा पंजाब के मुख्य मन्त्री जी की सेवा में बार-बार प्रार्थना करने पर भी वर्तमान पंजाब का निमोष करने वाले इस पृथ्व पृथ्व की जयन्ती पर सरकार की ओर से एक नया पैसा भर भी सहायता नहीं दी गई। यद्यपि अन्य सम्प्रदायों के महापुरुषों की जयन्तियों पर उदारता पूर्वक सहायता दी जाती है।

केवल प्रधान श्री यश जी के विशेष अनुरोध पर इस दिवस को अवकाश दिवस घोषित कर दिया गया। इस सहयोग प्रदर्शन के लिए भी सभा सरकार के प्रति अपनी आभार प्रकट करती है।

युद्ध के कारण ऐसी स्थिति न रही कि जयन्ती का नवम्बर में होने वाला समारोह भी मनाया जा सके अतः अंतर्गत सभा के निश्चय अनुसार जयन्ती समारोह की समाप्ति नवम्बर १६-६६ में मनाई जायगी।

#### युद्ध पीड़ित केंद्र

भारत पाक के भयंकर युद्ध ने श्री नगर जम्मू तथा अन्य सीमा प्रदेशों के हजारों परिवारों को बेघर बार कर दिया। जालन्धर में जम्मू, श्रीनगर तथा अमृतसर की ओर से आने वाले हजारों विस्थापितों की सेवा का प्रयत्न एक बड़ी भारी समस्या बन गई। प्रधान श्री यश जी ने इस अवसर पर सभा की ओर से तीन विशाल केंद्र स्थापित करने का प्रयत्न किया।

बस अक्षा अमृतसर पर सभा के कार्यकर्ता पं० सुशीराम जी, महात्मा मेळाराम जी तथा भक्त

वृन्दाभक्त जी और पक्काबाग के श्री बलदेव राज जी ने कार्य सम्भाला। दूसरा कैंप स्टेशन पर था जिस का प्रयत्न ला० इन्द्रसेन जी, श्री धर्मपाल जी महेश्वर, श्री दुर्गादास जी तथा श्री कृष्णलाल जी आदि ने किया। तीसरा कैंप होशियारपुर स्थापित किया गया। जिस का कार्य संचालन चौ० बलवीरसिंह जी ने पं० हनुमन्नाम जी तथा श्री भोमप्रकाश जी बनाके के सहयोग से किया।

यह कैंप कार्य प्रायः तीन सप्ताह रहा। जनता ने खुले दिल से इस विचार धर्म में धन, वस्त्र तथा धन द्वारा सभा की सहायता की। ईशराम सहिला महाविद्यालय की निरिपल कुमारी विद्याकी आनन्द और साईदास एजल्लो संयुक्त मुक्त चिकित्सुओं की संस्था-ध्यायिका श्रीमती कृष्णलाल ने शरणा-धियों के लिये बहुत से कपड़े भिजवाये। यह कपड़े विभिन्न कैंपों में बाँट दिये गये।

#### पंजाबी युवा आंदोलन

अभी युद्ध के बादल साफ भी न हो गये थे कि गवर्नमेंट की ओर से सन्तकोविन्द तथा उनके साथियों की पंजाबी युवा सन्तन्वी मांग पर पुनर्विचार की घोषणा कर दोबारा पंजाब के राजनैतिक तथा सामाजिक वातावरण को सुख कर दिया गया। पिछले हिन्दी आंदोलन के बाद तथा पंजाबी युवा के आंदोलन के बाद गवर्नमेंट की ओर से घोषणा कर दी गई थी कि अब इस प्रांत विभाजन पर कभी विचार न होगा।

पंजाब की दोनों कार्य प्रति-निधि सभाओं ने मिलकर अन्य राष्ट्रीय तत्वों के सहयोग से नए पंजाबी युवा आन्दोलन के विरोध के लिए प्रयत्न आरम्भ किये। दोनों प्रतिनिधि सभाओं की संयुक्त समिति ने तीन अक्टूबर १९६५ को इस आन्दोलन को (शेष पृष्ठ ६ पर)

### आर्थ प्रादेशिक सभा का वार्षिक विवरण परिचय

(पृष्ठ ५ का रोप)

बलाने का निरूपण किया। इसके लिए लोक सभा द्वारा निर्वाचन उपसमिति को मेमोरेण्डम पेश किया गया तथा इस सम्बन्ध में अल्प कदम भी उठाये गये। अभी यह आन्दोलन चल रहा है।

#### कार्यकर्त्ताओं के ग्रेड

इस वर्ष अक्टूबर सभा में सब कार्यकर्त्ताओं को दिव्य का प्यून रखते हुए महोदयेशक, उपदेशक, अग्रणीक तथा अन्य कार्यकर्त्ताओं के वेतन आदि का स्तर निश्चय कर कर दिया है। इस में सभा पर कुछ आर्थिक बोझ कल्पित पड़ा है पर कार्यकर्त्ताओं के हितों की सुरक्षा हुई है।

#### आर्थिक समायाण पर फिरोजपुर

आर्थिक समायाण फिरोजपुर जो कि आर्थिक प्रदर्शिका सभा की एक महत्वपूर्ण संस्था है, उसके प्रकथ में इस बार एक विशेष परि- बर्तन हुआ है, जिसकी अन्तिम रूप देना अभी विचारार्थीन है।

श्री अवहत्या जी नन्दू ने पिछले सात आठ वर्षों से कनाथा- लव की सेवा कर इस संस्था को सब प्रकार से सुरक्षित तथा समृद्ध संस्था बना दिया। उनकी देख- रैक और प्रयत्नों से इसका स्थायी कीच नील साक्ष से ऊपर का हो गया। इस वर्ष विशेष साधना के लिए उन्होंने कन्याका प्रार्थना कर लिया है।

उनके स्थान पर अमी भी प्रतापचन्द जी सहता तथा उनकी सुयोग्य धर्मपत्नी भीमती परमेश्वरी देवी जो कार्य कर रही हैं।

सभा की सम्पत्ति की देखभाल

आर्थिक प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की जाली रूपों की सम्पत्ति का प्रबन्ध ठीक न होने के कारण सभा के लिए ज्योगी नहीं छिद्र हो रही। ठीक प्रबन्ध होने पर सभा

की स्थायी आय का यह महत्व पूर्ण भाग बन सकता है। इस और पूरा ध्यान देने के लिए रोह- तक के वकील श्री सहादेव मलिक से श्रायना की गई है। उन्होंने यह कार्य सम्भाल लिया है। अभी तक इस दिशा में विशेष प्रगत इस लिए नहीं हो सकी क्योंकि उन्होंने यह कार्य वर्ष के अन्तिम दिनों में प्रारम्भ किया है, धारा है कि श्री सहादेव मलिक के सहयोग से सभा सम्पत्ति का प्रबन्ध सुचारुरूप से हो सकेगा और सभा को इस ओर से अच्छी धारा प्राप्त हो सकेगी।

#### साहित्य विभाग

इस वर्ष साहित्य विभाग की भी वैद्यकशास्त्र जी मन्दीश ने सम्भाला। उनकी देख-रेख में विभाग में अच्छी जति थी। एक तो उन्होंने इसे सुव्यवस्थित किया— लगभग २-५ सौ रुपये खर्च करके नई आलमारीया बनाई गईं। पुस्तकों को बहुत परिष्कृत कर जांच पड़ताल के बाद ठीक किया। दो नये महत्वपूर्ण प्रकाशन भी हुए। एक जर्मनी में महाराज हंसराज मेकर आक टी मास्टरन बंजाक, लेखक भी (प्रिं) भीराम जी शर्मा धर. व.। दूसरा प्रकाशन महात्मा हंसराज जी के संस्था पर स्वा- क्तवान। ओं महोत्रा जी ने इस विभाग को आधुनिक तथा सफल रूप में संगठित करने का पूर्ण प्रयत्न किया।

इन दिनों दो प्रकाशन, एक सामवेद भाष्य तथा दूसरा वैदिक शुद्धता अभी आर्य हैं—शीघ्र ही छप कर विक्रयार्थ आ जायेंगे।

#### आर्थिक जगत

सभा का यह आसाहिक पत्र पंच प्रज्ञोक्तचक्र जी राष्ट्री के संपादकत्व में कुछ प्रगति कर सका। पर सभा की सभाओं की ओर से अभी पूरा सहयोग अभी सहायता इस पत्र को नहीं प्राप्त हुए।

बरा अन्वेषक सभा-अधान सभा-अध्यायी

### राष्ट्रीय चेतना के अग्रदूत महर्षि दयानन्द

वेद पथिक पं. धर्मवीरजी आर्य अंदाधारी, व्याख्यान मूलक अल्पक धर्मवीर ग्रन्थमाला प्रकाशन विभाग सराय रहेला, नई दिल्ली ५



विरव वन्दनीय लोक उपकारी ज्ञानि के अमृत वैदिक समाज के स्वनाम बन्ध नेता, कल्याण मिथान युग प्रवर्तक, वेदो उद्धारक, काये समाज के संस्थापक भारत के भव्य भाल महर्षि दयानन्द जी राष्ट्रीय जीवन ज्योति के ऐरा- न्तिक के अमृत वे।

महर्षि दयानन्द के महान उपकार केवल भारतीय जनता पर ही नहीं हैं अपितु विश्व के मानव मात्र पर अत्यन्त उपकार हैं।

आज विश्व में जहाँ भी नव चेतना विरव शांति की किरण दिशा दिखाई दे रही है या आर्- विश्व, दूरान, पुराणों में संशोधन आदि के कार्य रहे हैं उन सब विचार धाराओं में मूल धारा का प्रबल प्रभाव महर्षि दयानन्द जी की विचार धारा तक शंकाओं का तथा प्रबल स्वयन्त का ही है।

विश्व के राष्ट्र पुरुषो आओ आज हम शिवरात्रि के निर्वाण का महाप्रत धारण करके वैदिक राजव विधान के नव-निर्माण का शुभ संकल्प करके समुधा को वेद सुधा का धान कराये।

आज मैं भारत के कर्णधारों से, विश्व के राष्ट्र नायकों से तथा विश्व के वैज्ञानिकों से विद्व के मानव समाज से यह कह देना आश्चर्यक सम्भला हूँ कि जब तक

### आर्ययुवक परिषद् दिल्ली-६

#### का वार्षिक निवर्तन

आपचय—श्री देवचत परमैन्दु उपाध्यय—, ईश्वरदत्त धर.प. मन्त्री—, ओडेय प्रकाश परीधानन्दी, हरिदत्त

बृज शंकर जादान प्रचार मन्त्री

विरव का मानव समाज महर्षि दयानन्द के कलाय हुए वेद मार्ग का पथिक नहीं बनेगा तब तक विश्व शांति का होना संभवा- अशंभव है। आतः आज से हम मन, बचन और कर्म से आर्य कहलाने का गौरव प्राप्त करें।

महर्षि दयानन्द ने विश्व के मानव समाज को वैदिक विचार धारा में आभय रत्न कोष है जिसे प्राप्त करके सतुण्य हूत हो जाता है। शुभ कर्मों तथा शुभ भावनाओं का देवी बन जिस पुरुष की श्रात हो जगता है वह देव बन जाता है, महा दार्शनिक, महा योगी सुतुण्य अ- ज्ञानी परमात्मा की सत्ता की महत्ता में विचरत कर के अपना जीवन तन, मन, पत विषय के उपकार में लगा कर वह महापुरुष प्रभर पर को प्राण्य कर लेता है।

महर्षि दयानन्द की अमर कीति जब तक नम में सूर्य, चन्द्र और तारे रहेंगे जब तक विश्व इतिहास में आर्य जाति का नाम रहेगा, आर्य जाति का अस्तित्व रहेगा तब तक महर्षि दयानन्द की अमर कीति ललाका ओडेय पगाइ नम में पहाती रहेगी। ओडेय की पूजा एक ईश्वर की उपासना महर्षि दयानन्द ने सिखाई है। आर्यदेव हम आज महर्षि दयानन्द के वरकारों पर विचारों करें।

महर्षि दयानन्द जी ने अपने अमर प्रन्ध 'संसार प्रकाश' में सब पूर्ण स्वराज्य का वक्षोष किया था।

हिन्दी को राष्ट्र भाषा पद पर आसीन करने का आर्ीक प्रयत्न प्रवल महर्षि दयानन्द जी ने किया था।

(अपूर्ण)

(गलाक से आगे)

१६वें मंत्र में कहा गया है—  
‘शत्रु द्वारा तेज लिए गए और  
हिंसा पराजय थाया, हम छोड़े  
जाकर भिरो, जाओ और शत्रुओं  
पर पड़ जाओ। किसी भी शत्रु  
को जीते ही नहीं छोड़ना।’

इस सूक्त के प्रथम मंत्र में  
राष्ट्र नेता प्रधानमन्त्री या राष्ट्रपति  
के विषय में कहा है—

‘युद्ध छिड़ जाने पर जिस  
समय राजा लड़ हमय कबच पहन  
कर जाता है, उस समय वह साचात  
प्रलयकर मेघ मालूम पड़ता है।’

इस प्रकार वेद के अनेक सूक्तों  
में शत्रुओं से उठकर लोहा लेने  
और उनका संहार करने की प्रवृत्त  
प्रेरणा भरी दिखाई देती है।

अथर्ववेद ११६ सूक्त में मातृ-  
भूमि की स्वतन्त्रता की रक्षा के  
अर्थे युद्ध की किस प्रकार तैयारी  
करना चाहिए, इस का स्पष्ट संकेत  
किया गया है। इस सूक्त का  
देवता ‘अरुंदि’ है। ‘अरुं’ धातु  
का अर्थ गति और हिंसा है। जो  
सेनापति गतिशील हो, शत्रु पर  
हमला करने वाला और वीर हो  
वह सेनापति इस का देवता है।  
इस सूक्त के प्रथम मंत्र में कहा  
गया है—

‘वीरों में जो बाहुबल और  
शस्त्र अन्न खादि हैं तथा अन्व-  
करण के अन्दर जो विचार और  
सकप्य हैं उनका प्रयोग करके  
शत्रु की पराजय और अपनी  
विजय अवश्य करनी चाहिए।’

दूरवे मंत्र में कहा है—  
उत्पिष्टव सं नद्यध्वम्,  
मित्रा देवजना युयम्।

### सोवियत रूस

वार्षिक के हिसाब से दो  
बर्ष का चन्दा देने पर कोई भी  
मासिको का प्रकाशन १० वर्षों  
अधिक किया जाएगा। सोवियत  
नारी २०-२५० देकर तीन वर्षों  
प्राप्त करे।  
जयदेव षडस बडोदा-१

## वेदों में शत्रु-दलन

(श्री सुरेशचन्द्रजी वेदालंकार एम.ए.एल.टी.डी.बी.कालेज, गोरखपुर)



संछटा: गुणा: वः सन्तु,  
या नो मिश्रायसु दे ॥

अर्थात्—समय पर जो हमारी  
सहायता के लिए आए हुए दल हैं,  
वे मित्र हैं। जो स्वार्थ स्वार्थ से  
दुष्ट शत्रु को हटाने के लिए होने  
वाले युद्ध में अपने आहुति देने  
को सिद्ध होते हैं वे देवताओं के  
समान पूज्य होने के कारण देवजन  
हैं। इन सब वीरों को युद्ध  
के दिनों में सदा-सर्वदा सब  
प्रकार से सिद्ध अर्थात् तैयार  
रहना उचित है। युद्ध का अन्वसर  
कम होगा इसका पता नहीं होता।  
युद्ध के समय अपने मित्रों को  
सुरक्षित रखना चाहिए और  
शत्रुओं पर हमला करना चाहिए।

एक दूसरे मंत्र में कहा है—  
उद्वेपय त्वमर्बुदेऽमित्रा  
याम्युः सिचः।

जयाहं च जित्प्राचाऽमित्रां  
जयतामिन्द्र मेदिनी ॥

हे शूरवीर, शत्रुओं की इन  
सेना पक्षियों को तू कंटा दे,  
शत्रुओं को जीतने वाला और जय-  
शील वीर वे दोनों अपने नेताओं  
के साथ रहते हुए विजय प्राप्त  
करें। शूरवीर ऐसा युद्ध करें कि  
शत्रु की सेना के सैनिक कांपने  
लग जायें। शत्रु को पराजित करने  
वाले तथा जिन को जय प्राप्त हुआ  
है वे दोनों प्रकार के वीर सदा  
परमेश्वर को स्मरण करें और  
अपने विजय से घमंड न करें।

यदि चित्त में घमंड का आवेग  
तो विजय कठिन हो जायेगी।  
उत्कसन्तु हृदयान्ध्रवः  
प्रायः उद्योयन्तु।  
शौलकारथमनु वतेतास  
मित्रान् मोत मिथियाः।  
अर्थात् अपने सैन्य से ऐसा

युद्ध करें जिस से शत्रु के दिल उलझ  
जायें। उनमें घबराहट फैल जाये  
और उनके पास अपने स्थान पर  
न रहें। परन्तु अपने सैन्य में ऐसी  
व्यवस्था करें कि जिस से अपने  
सैनिकों के हृदय आत्म-विश्वास  
से परिपूर्ण रहें। पास में घबराहट  
उत्पन्न न हो, हृदय में आत्म-  
विश्वास और मनोबल स्थिर रहे।  
ऐसे वीरों की पराजय असम्भव है।

वास्तव में सत्कार के इतिहास  
पर दृष्टि डालने से हमें पता चलता  
है कि साहित्य में वीरों की गाथायें  
गायी जाती हैं, कविताओं की लेख-  
नियों वीरों के जीवन को काव्य  
का विषय बनाती हैं। राम को  
भगवान बनाने वाली वाल्मीकि  
रामायण राम की विजय यात्रा  
है। महाभारत का महाकाव्य  
वीरों की उज्ज्वल भाषाओं का  
चिन्तक है। हिन्दुओं की पवित्र  
पुस्तक गीता हाथ में चक्र धारण  
करने वाले श्रीकृष्ण का युद्ध का  
उपदेश है। ऐसी स्थिति में वेद का  
आदेश है :—

जगो जवानो आत्र,  
गृह्यारी जगो जवानो।

और इसी लिए हमें चाहिए  
कि आज हम अपनी लेखनी,  
भाषण शक्ति अपनी शारीरिक  
योग्यता, अपनी स्वास्थ्य अपनी  
तन, मन, धन सब राष्ट्र के लिए  
न्योछावर कर दें। और स्पष्ट शब्दों  
में कह दें :—

अमर राष्ट्र, यहूद राष्ट्र,  
उत्तुम्न राष्ट्र यह मेरी बोली।  
अब सुधार समझौते वाली,  
मुझको आवी नदी ठठोली।  
मैं न सहींगा पाक चीने ने  
मूछ भरोडी

## भोर जगाकर जोत युध्म गई

श्री श्रीमप्रकाशजी अंशु नई देहली  
समय इस मई का काला दिन,  
कालिमा दिवस पर छाई है।

बहुं छोरे अंधेरा छाया,  
डगर किसी को मिल न पाई ॥

फिर आया इक दिन उसका,  
दिवस गए रातों नीली।  
समय कटा, सगलों सय में,  
कामिस की अब आरई कसीटी।

उस दिन नेत्रवृत्त लेना था,  
छाया अन्धतः जून नी।  
खिड़की पे बिछेरी जन माँके,  
ऊवा पूर्व फटी पी।

दुनिया झाँकी मन ही मन  
लगा करने लाल का कार्य बहादुर।  
उम मन न पाई कुतर्ब कालिमा,  
वह ...न...नहा बना चतुर ॥

जीवन काल हो गया सूधम,  
समय ने शानी लुट गई।  
ताशकन्द की शान-परीक्षा में,  
भोर जगा कर जोत युध्म गई।

### आर्यसमाज खन्ना

(रुघियाना)

का बापकोरसव ४, २, ६ मार्च  
को होना निश्चित हुआ है। इस  
अवसर पर षडे-बडे संघासी  
महात्माओं, उपदेशकों तथा भज  
नों का कार्य-क्रम होगा।

इसके अतिरिक्त २४ से २६  
फरवरी तक श्री नन्दलाल जी  
वेदिक मिशनरी मैजिक लालटेन  
द्वारा समयानुसूल फिल्में दिखा-  
येगी। श्री पूष्य आनन्दगिरि जी  
महाराज की कवा होगी ५ मार्च  
से ६ मार्च तक श्री शोभाराम जी  
की हजारीलाल जी के भजन होंगे।

—सुनरीराम प्रधान समाज

जाने दे सिर लेकर सुध्म को  
ले सम्भाल यह लोटा डोरो  
अन्त में यजुर्वेद ६.२२ के अनु-  
सार हमारी भी यह अग्नि-  
लापा है :—

वयम् राष्ट्र जाग्याम पुरोहिताः  
अपने राष्ट्र में नेता बनकर  
हम जागरण शील रहें।



हिन्दी साप्ताहिक

आर्य-जगत

जासन्धर के स्वामित्व अधिकांश तथा अन्य विषयों का व्योरा फार्म ४ (अतिनियम नं० दोहो) १० प्रकाशन स्थान—काणोज

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि समाज जासन्धर नगर। २. प्रकाशन की कृपाधि—साप्ताहिक। ३. मुद्रक का नाम—श्री संतोषराज जी।

जाति—भारती। पता—हैदराबाद दरानन्द मोहन स्कूल जासन्धर।

४. प्रकाशक का नाम—श्री संतोषराज जी। जाति—भारती। पता—हैदराबाद दरानन्द मोहन स्कूल जासन्धर।

५. संपादक का नाम—श्री पं० शिवोक्त चन्द्र जी शास्त्री पी.ए. जाति—भारती। पता—महोपदेशक आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि समाज जासन्धर नगर।

६. पत्र के स्वामी स्वामियों के नाम अथवा पते जो उसके संपादित हैं अथवा इसकी सम्पूर्ण पूंजी के प्रचालन से अधिक भागों के मालिक हैं।

आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि समाज रजिस्टर्ड संस्था ही इस पत्र की स्वामिनी है।

मैं संतोषराज इस लेख द्वारा घोषित करता हूँ कि ऊपर लिखे विषयों की पुष्टता मेरे ज्ञान व विश्वास के अनुसार सच्चा तथा पूर्ण है।

(हस्ताक्षर) संतोषराज प्रकाशक आर्यजगत, जासन्धर।

जी. ए. हाई स्कूल मंगवाल अधिभोग उल्लव भी धर्मसिंह जी सुवेदार की अध्यक्षता में वही भूमिवाच से सम्पन्न हुआ।

यह इधन के पश्चात अनेक विद्वानों के सहज जी के अधिन पर प्राप्य सम्पन्न हुआ।

संरक्षक—डा. व्हीपसिंह जी, राय साहब वशीरासिंह जी, डा. नूतनामसिंधी, श्री रोशनलाल जी प्रधान—श्री धर्मसिंह जी सुवेदार, मन्त्री—महाशय लुगीराम जी, सहायक मन्त्री—मास्टर देवराज जी, कोषाध्यक्ष—पं. रामचन्द्र जी शास्त्री, जेला मंत्री—श्री रामेन्द्रनाथलालजी सेनी पी.ए.पी. एड।

—रोशनलाल शास्त्री हैदराबाद स्कूल

अत्यन्त शोक-जनक आर्यसमाज के वधुदत्त विद्वान लेखक श्री पं० गंगाप्रसाद जी भीषज ज टिहरी के निधन से सारे समाज की भारी श्वांति हुई है। आपने कई महत्त्वपूर्ण पुस्तकें लिखी हैं। The fountain head of Religion तो उनकी वही प्रसिद्ध पुस्तक है। इसका हिन्दी अनुवाद भी धर्म का आर्य शोक के रूप में प्रकाशित हुआ था। श्री परिलाल जी सार्वदेशिक समाज के प्रधान भी रह चुके हैं। आर्यसमाज से एक वशीरासी तथा अनुभव महान् लेखक नेता का पता जाना समाज के लिए बड़े ही दुःख शोक की बात है। पर विधाता का विधान।

उपलक्ष्य में आर्यसुखक परिषद और से स्कूलों का ज्ञान-ज्ञानियों की निबन्धन प्रतियोगिता कराने का आयोजन किया गया है जिसका विषय है—

आर्यसमाज के दस नियमों में से किसी एक पर निबन्धन। निबन्धन हिन्दी भाषा में, कुल-रूपेण साईज के दो पृष्ठों में, स्वामी से तथा आपना लिखना होना चाहिए जो १ मार्च १९६४ तक परियद्ध कार्यालय, १६४४, कृष्णा दक्षिण-दिशा, हरिचाराण, दिल्ली-६ पते पर भेज दिये।

परियद्ध की ओर से सर्वोत्तम २ विजेता छात्र-छात्राओं को पारित्य्यि जायेंगे।

नोट—परियद्ध की कृत्याथ-भरारीकी परीक्षाएँ इस वर्ष ४ अक्टूबर ६६ को होंगी। नई पाठ विधि परीक्षा मन्त्री आर्यसमाज मोहन बस्ती दिल्ली-५ से मिलकर वा पत्र लिखकर मुक्त प्राय करें।

—मोहन प्रकाश, मन्त्री आर्यसमाज सेक्टर २२ चण्डीगढ़

में २२-२-६६ रविवार प्रातः एक मुस्लिम महिला की आर्यसमाज मन्दिर में टुट्टि की गई। महिला का मया नाम धीमाकुमारी रखा गया। अन्धधर समय समाज मन्दिर में ही महिला का विवाह संस्कार कर दिया गया।

—वेदप्रकाश प्रभाकर कुंठे मन्त्री

निःसन्तान परिवार ध्यान से पढ़ें

यदि आप विवाह के बाद क्कय तक निःसन्तान हैं तो इस रोग के सकल चिकित्सक भी पं० इयाम सुन्दर जी स्नातक (महोपदेशक पंजाब प्रतिनिधि समाज) से मिलें वा पत्र व्यवहार करें। श्री स्नातक जी भारत के अनेक परिवारोंकी सफलता पुष्के चिकित्सा कर चुके हैं।

पुष्के कोर्स ३ मास व्यय २००/-

पता—स्वामिसुन्दर स्नातक महोपदेशक पंजाब समाज

दीवाने हाल देहली



आर्यसमाज लॉरेसरोड अमृतसर

आर्यसमाज लॉरेस रोड अमृतसर में शिवाग्नि अवाह बड़े समारोह से मनाया गया। प्रातःकाल यज्ञ होता। पं० शिवोक्तचन्द्र शास्त्री की कथा होती रही। शिवाग्नी के दिन वही रोक थी। आर्य पाठ-शास्त्र के कथनों का कार्यक्रम बना ही मनोरंजक तथा उत्तम था। देवियों तथा सज्जनों का उत्साह बड़ा था। मान्यवर पं० दीक्षितराज जी शास्त्री तथा श्री सुचोरी सिंह जी का कार्यप्रसंग भी हुआ।

आर्यसमाज वांजार सीताराम दिवली

पं० तेजराज की वैदिक सिद्धान्ती वही पर शिवोक्त आर्य से प्रेरित का कार्य कर रहे हैं आर्य इस समय तक २०० ग्राम संस्कार और पत्रिका निम्नलिखित, राष्ट्रीय भाषा, आध्यात्मिककार्य, जाति संघर्ष पर १२४ सार्वभौम और मनोहर भाष्य जनता में दिये हैं। इन से एकत्रित किया हुआ सैंकड़ों रुपयों का दान आर्यसमाज के कोष में जमा कराया है, कई घरानों में जाति, धर्म के लिये बहुत लक्ष्य शह करके सुन्दर कथा की और शुभ कार्य किया।

गऊ रक्षा, अनाज के संवत् को दूर करने के लिए खाद आदि कई सम्पन्न किये और इनकी रिपोर्टें प्रकाशित कीं। आप के दिन में देरा जाति, धर्म के लिये बहुत लक्ष्य पैदा जायी है, जनता पर आपके विचारों और शुभ कार्य का अन्धका प्रभाव पड़ रहा है। देवराज सुप्या

फिक्सड डिपोजिट्स (FIXED DEPOSITS)

12% वार्षिक व्याज तथा 1/2 से 6% तक कमोशन भी प्राय करें। मिलें अथवा लिखें— DEWAN & CO., Fixed Deposit Agents. Rly. Road. Opp: Rest House. SONPAT

मुद्रक व प्रकाशक श्री संतोषराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि समाज जासन्धर द्वारा कीर मिहाराप्रीस, विनायक रोड जासन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत कार्यालय महात्मा इंदराराज मयन निवृत्त कृष्णजी जासन्धर शहर से प्रकाशित मालिक—आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि समाज पंजाब जासन्धर



देवीकोन नं० १०२०

[आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुसपत्र]

Regd. No. P. 121

दक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे

वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६ अंक १०)

२३ फाल्गुण २०२२ रविवार—व्यानन्दम्ब १४१-६ मार्च १९६६

(तार 'प्रादेशिक' जालन्धर)

## वेद सूक्तयः

**अयं वाचः परमं ज्योम**

अयम्-यह परमात्मा ही वाच-वेद वाणी का परम-परम ज्योम-सूक्त व आश्रय है। वेद-वाणी का स्वामी और रक्षक स्वयं परमात्मा ही है। वेद का ज्ञान प्रभु ही देते हैं। यह प्रभु वाणी है।

**देवस्य परय कान्यम्**

आत्में रखने वालों! उस देवस्य-महान देव भगवान् के इस महान दिव्य कान्यम्-कान्य को पश्य-देखो। विश्व के इस विविध विचित्र नियमों के कीर्ता को तो देखो।

**ये हत् तद् विदुः**

इस संसार में वे-जो लोग ही मनु-स परमात्मा को आपने जीवन में जानते हैं तथा आश्रय-द्वेष साधनों को आपनाकर उस प्रभु को पा लेते हैं-येसे।

**अमृतत्वमानशुः**

लोग प्रभुभक्त ही आपने जीवन में उस दिव्य तथा परम-स्वादु अमृत के कटोरे को भर न कर लेते हैं। उस भक्ति के परम-रस का परम स्वाद लेते हैं।

भा व र्ग वे द से

## अमर शहीद पं० लेखराम जी

### का बलिदान दिवस

६ मार्च को बड़ी धूमधाम से मनाएं। सार्वदेशिक समा के आदेशानुसार विशाल आयोजन इस दिन किया जाए। उनके साहित्य का उनकी भावनाओं का प्रचार करें। स्थान २ पर प्रभात फेरी, उनके बलिदान पर भाषण आदि का प्रोग्राम बनाएं तथा अमर शहीद का संदेश प्रचारित करें।

पं० लेखराम जी आर्य जाति के सर्वप्रथम शहीद थे, जिन्हें सार्वारिक व्यस्तताएं भी प्रचार कार्य में बाधा नहीं पहुंचा सकती थीं वीए तो आर्यसमाज के लिए, भरे तो समाज का कार्य करते हुए। उनके हृदय में आर्यसमाज की वफ़द थी। इस तद्दक के कारण उन्हें संसार का कोई कार्य अच्छा नहीं लगता था। रात दिन वेद प्रचार की पुन लगी हुई थी। महर्षि दयानन्द जी का सच्चा भक्त होने के नाते उनके मार्ग का ही अनुसरण करते रहे। मानवता, आर्य संस्कृति दृष्टोद्धार तथा वेद प्रचार का लक्ष्य पालने में पूरी तन्मयता से कार्य करते रहे। मरणासन के समय उनके निम्न शब्द आर्यसमाजों को चेतावनी दे रहे हैं कि 'मेरे बाद आर्यसमाज से लेख का कार्य बन्द न हो' कितने मार्मिक और ध्यान देने योग्य हैं।

## ऋषि दर्शन

**वयं परमेश्वरस्यैव प्रजाः**

हम सारे ही उस परमेश्वर की प्रजा हैं। जिस प्रकार सनान माता और पिता की प्यारी होती हैं, उसी प्रकार सारे छोटे-बड़े आपस में एक ही विशाल परिवार के अंग हैं तथा परमेश्वर हमारा पिता और माता हैं। उसी की ही प्रजा हैं।

**ईश्वरोपासका मेधाविनः**

जो परमेश्वर के उपासक हैं, प्रभु के भक्त हैं, जीवन में परमात्मा पर आस्था रख कर प्रायः सायं उसके समीप बैठते हैं, वे प्रभु में भी मेधावी हैं, हानी हैं। ऐसे प्रभु के प्यारों को कुछ क्षम की ज्योति प्राप्त होगी है। प्रभु भक्ति से मेधा व ज्ञान मिलता है।

**स एकोऽद्वितीयः**

वह परमेश्वर एक है तथा अद्वितीय है किन्तु का निर्माता, धारक बड़ी परमात्मा है। ईश्वर एक है। जो नाना प्रकार के ईश्वर मानते, देवी देवताओं को परमेश्वर मान कर इन को पूजते हैं वह मूल में हैं। प्रभु एक और अन्य नहीं।

भा एव भूमि का से

एक स्थान पर दुर्घोषन ने देखा कि पानी ही पानी है। उसने जूहा उतारा और चलने लगा तथा किन्तु वह तो एक छलावा था, वहाँ पानी तो था ही नहीं। दुर्घोषन इस छलावे पर बहुत मुँह मलाया, सकपकाया। दूर खड़ी द्रौपदी दुर्घोषन की इस हालत पर मुस्कराई। दुर्घोषन थोड़ा झोर आगे बढ़ा। वहाँ फरो बिरकुल मुला और चिकना देखाई दे रहा था। दुर्घोषन ने क्रम आगे बढ़ाया और अचानक से पानी के तालाब में गिर पड़ा। वह दोबारा छलावे का शिकार हुआ। पानी को उसने मुला समझा और मुले को पानी। द्रौपदी ने दुर्घोषन की इस हालत पर कसती कबी—अपने का बेटा भी अंध हो जाता है। द्रौपदी के इस वाक्य पर दुर्घोषन आग बजला हो गया और यही आक्य महाभारत के युद्ध का कारण बना। महाभारत होने से पूर्व हमारा सभ्यताम चक्रवर्ती राज्य था। महाभारत के बाद हम अंधन ही पर में दास बन गए और वाणी के कारणा उपनिषद कह के कात्याधारे-मीरे वह सिधाि आ गई कि आज लोग भारत को अंधन बन कहते हुए भी रामें महत्त्व करने लगे हैं। वाणी के कारण ही परिशरों में मगड़े हैं। समाज असेंबली, संसद, और सुरक्षा परिषद वाणी के कारण मगड़ों का केन्द्र बने हैं। पंजाब विधान सभा में तो हर रोख वाणी हुनर देखने को मिलते हैं। वाणी का जीवन में बहुत महत्त्व है मीठा बोलने वाले दुकानदार के पास प्राइक अधिक आते हैं, चाहे वह सौदा महीना ही क्यों न बेचता हो। लेकिन राजा ने भी सिर मुकाए हुए कहा—मैंने भी बचपन में मा की नजर से बच कर चोरी येने खाए थे। मैं भी इस मोघ्य नहीं हूँ कि अंधन को बिरकुल अंधगुसी कह सके। राजा के इन शब्दों से सभा में लज्जता छा गई। फाँसी

## राष्ट्र-भक्ति और प्रभु-भक्ति-१३

(श्री महात्मा अन्नद स्वामी जी महाराज की अमृतमयी कथा)



का वंश प्राण चोर ने एकदम उठ कर कहा—भाइयो! वहाँ तो राजा से लेकर एक गरीब किसान तक सब चोर हैं। इन सभी को फाँसी लगाओ, मुझ अकेले को क्यों लगाने हो।

इसीलिए हे मानव! तु अंधन भावओ भी देख। रोज प्रातः उठ कर आराम-परीक्षा भी किया कर, अथवा भी मूलांडन किया कर, केवल दुसरो के दोष और अवगुण देखने से ही कोई गुणवान और निर्दोष नहीं बन जाता। प्रति दिन अवश्य कोई एक बेहतर कार्य करो और प्रातः से बेहतर बनने के मार्ग पर चलो। इस स मन के अन्दर प्रसन्नता आयेगी। मन प्रसन्न रहने से धृणा, ईश्या, द्वेष और अंधकार के लिए स्थान नहीं रहता। एक बार अन्धेरा भगवान का पास गया और शिकायत की कि प्रकाश के आने पर मुझे मागना पड़ता है। यह बहुत बड़ी व्याधी है। भगवान ने अन्धेरे को सुनने के बाद जब प्रकाश को बुलाया तो वहाँ से अन्धेरा गायब हो गया।

इसलिए जब मानव के अन्तर में प्रकाश आ जायगा तो वहाँ अन्धेरे को कभी स्थान नहीं मिल सकेगा। प्रसन्नता उसी के दिल में आयेगी जिसको प्रभु पर विश्वास है। बिना वहाँ आपसी यहाँ प्रभु पर विश्वास नहीं है। जो व्यक्ति मानव शरीर की रक्षा करते हुए अपने परायण हो कर प्रभु को याद करता है उसे हमेशा ईश्वर का साथ मिलता है। जो प्रभु की याद में परिभ्रम को मानसिक तप करते हैं। महर्षि दयान ने मानव जीवन में हर प्रकार के दुःख को सहन करने की तप की संज्ञा दी है।

शब्द जीवन में सत्य आचार, और बिलजिहों में कोई अन्धर

और आचार तथा सत्य उच्चार की नींव रखो जाय, पृथु मायना अपनई जाय, वसुधैव कुटुम्बकम् पर अमल किया जाय तो राष्ट्र के प्रति और मानव जाति के प्रति सेवा संभव है। आज के युग में तो भारत को वसुधैव कुटुम्बकम् की मानना को सर्वाधिक मह्यु करने की आवाश्यकता है। मेरे देश ने माताओं, बच्चों और बहनों—घमनी ने बड़े कष्ट सहन किए हैं। हमारी संस्कृति वेध, भाषा और धर्म नष्ट हो गए हैं। इसलिये अब—

हर पदमन दिल को रोना मेरा  
रहता दे  
वेहीरा जो पड़े हैं शायद वनई

इतिहास में साढ़े छह सौ वर्ष पूर्व की एक घटना का उल्लेख है। दिल्ली के तख्त पर तब प्रतापदीन खिलजी बैठे था। चित्तौड़ में राजा भीमसिंह का राज था। पद्मिनी अपूर्व सुन्दरी राजा भीमसिंह की महारानी थी। अलाउदीन खिलजी ने एक बहुत बड़ी सेना के साथ चित्तौड़ पर आक्रमण कर दिया। खिलजी की आँख पद्मिनी पर थी। तीन साह तक चोर युद्ध हुआ। चित्तौड़ की बहादुर सेना ने आक्रमणकारियों का मुल फेर दिया। खिलजी को विवरा होकर श्वेत मंजा लहराना पड़ा। आक्रमणकारियों ने राजा भीमसिंह से सुलह कर ली। राजपूत परम्परा के अनुसार भीमसिंह अलाउदीन खिलजी को राखभल के अन्दर ले गए और आभोग्यता की। बाद में भीमसिंह खिलजी को जब बिदा के लिए गए तो ऊर्ध्वे भोले से कैद कर लिया गया। जहाँ तक भोलेबाबा की सम्बन्ध है जेठों

नहीं है। पद्मिनी इस वसुधैविय पर प्रबन्ध नहीं उसे खिलजी का सन्देश मिला कि वह स्वयं दिल्ली आए और वहाँ आकर राजा भीमसिंह को ले जाय। पद्मिनी ने इस निमन्त्रणको स्वीकार कर लिया और उसे सूचित किया कि वह चित्तौड़ की महारानी के रूप में दिल्ली आयेगी। खिलजी बहुत प्रसन्न हुआ। कुछ दिन पश्चात पद्मिनी लूच बाने-गाने बंगरबकों और कछुओं को साथ लेकर दिल्ली पहुँची। खिलजी ने महारानी का लूच स्थापन किया कि वह चित्तौड़ की अलाउदीन से कहा कि मैं अपने पति से मिलूँगी। खिलजी ने यह बात भी मान ली और उसी के देखते-देखते पद्मिनी राजा भीमसिंह को आधी की रक्षा में वापिस चित्तौड़ ले गई। खिलजी के महल में जब यह खबर पहुँची तो मगदड़ मच गई। महारानी के साथ अन्धरबकों कछारों और बाले-गाले वालों ने जो वासव में सैनिक थे दिल्लीको का महल के अन्दर ही लूच सहाया किया। इस घटना के कुछ ही दिन पश्चात चित्तौड़ पर चढ़ाई कर दी। पुनः मरुकर युद्ध हुआ जिसमें हथारों ग्वजिये मारे गए। खिलजियों ने चित्तौड़ किल्ली नाकाबन्दी बन्द कर दी। जब नाकाबन्दी बन्द कर दी तो वीत गए और किल्ले में रसद काई समाप्त होने लगी तो राजा भीमसिंह की बड़े विन्तित हुए उन्होंने अपने सरदारों को बुलाया और कहने लगे कि भूले व्यासे कैसे लड़ेंगे। अब दो ही रास्ते हैं या तो सब भूले मरें या भीर गति को प्राप्त करें। सभी सरदारों का भाषाव्यं भी कहा कि हम पूरी शान के अनुसार भीर गति को प्राप्त करेंगे। किन्तु एक नूटे सरदार ने कहा कि त्रियों का क्या बनेगा सभी महारानी पद्मिनी ने कहा कि हमारे लिए 'जीहरी' धर्म के पालन का विधान है। (कमराः)

सम्पादकीय—

# आर्य जगत

वर्ष २६] रविवार २०२२, ६ मार्च १९६६ [अंक १०

## अमर शहीद पंडित लेखराम जी

आर्यसमाज के महान् अमन की बुनियाद बलिदान पर रखी गई है। इसके संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपना जीवन, शरीर एवं अमर तक का विश्वसेवा के पवित्र कार्य में बलिदान कर दिया था। उन के सम्पर्क में जो-जो भी आता गया, वही जीवनदानी बन कर अपने को समाज की अंत करवा गया। देव दयानन्द के बाद इस बलिदान वैदी पर जिस ने सभ से पहले अपने को मेंट कर दिया वह अमर शहीद पंडित लेखराम जी आर्य मुसाफिर थे। ऋषि दयानन्द के दर्शनों के बाद तो पंडित लेखराम जी वैदिक धर्म व आर्यसमाज के ही बन गये। उनकी वेद श्रद्धा तथा समाज भाँक्त का कौन बर्हान कर सकता है। निर्भयता की साक्षात् मनोरम मूर्ति थे। अस्वयं के सामने कभी नहीं मुकते थे। आर्य मुसाफिर बनकर ऋषि के जीवन चरित्र की घटनाओं को हूँदने के लिए कितना रात दिन सफर किया। वेदप्रचार में उनकी लगन का अनुमान कौन कर सकता है? ५ चत्वार मीत के बल्लरे पर है पर आर्य मुसाफिर लिफाफा बिलते ही भोजन छोड़ कर जाव के अलग होने वाले लालों को बचाने को चल देते हैं। कितना बड़ा दिल था। कम से कम पाँच हजार घुट्टों की खोजभरी सामग्री दे गये।

आर्य मुसाफिर माने हुए वक्ता थे, गवब के लेखक थे। एक ही सुन थी वेद प्रचार की। अर्घी, फारसी, पर्द के प्रकाश पंडित

थे। हिन्दी के विद्वान, संस्कृत से बड़ा प्यार था। रिसर्च स्कालर थे। इस्लाम व विशेषकर कादियाँ के अहमदी बग के नेता मिर्जा गुलाम अहमद जी के लखों व पुस्तकों का मुँह तोड़ जवाब देने वाले थे। मिर्जा साहिब से पब्लिश जी के लेखों का जवाब न बन पड़ा। आर्यमुसाफिर के लिए मीत की पेशगोई की गई आर्यमुसाफिर सब कुछ समझते थे। वह कादियाँ पधारे, काफी दिन रहे। यहाँ पर आर्य समाज स्थापित किया। उसके सभासद मुसलमान भी बने। चिन्ता प्रभाव था? ६ मार्च को घोले से एक नीच ने शूद्र होने के बहाने से उनके पास रह कर छुरे से शहीद कर दिया। ६ मार्च उनका शहीदा दिवस है। अन्तिम समय उनका सच को यही सन्देश था—आर्यसमाज से तहरीर का काम बन्द न होने पाये। हम देखें कि इतने बड़े बलिदानों वीर का हमने क्या सम्मान किया है? क्या उन का शहीदी दिवस सब जगह मनाया है? माहृष्य का क्या बना है? प्रसन्नता है कि आर्य समाज किसी न किसी रूप में अपना कर्तव्य निभाता चला आता है पर इस के लिए बहुत कुछ करना अभी शेष है। आर्य मुसाफिर समाज के लिए अपना बलिदान दे गए। छुरे से पेट फड़वा कर भी तहरीर के काम को जारी रखने का अन्तिम सन्देश दिया—पर हम क्या कर रहे हैं? इस दिशा में पूर्ण विचार करें। इस पावन पर्व पर हम मी

समाज के साहित्य निर्माण तथा बलिदान की भावना को जगाने का प्रयत्न करें। —त्रिलोक चन्द्र

### लेखराम नगर कादियाँ

कादियाँ, जिला गुरदासपुर में अच्छा खासा बस्वा है। राष्ट्र विभाजन से पूर्व यहाँ पर अहमदिया मत का भारी कन्द्र था। अब भी उन की जमात यहाँ पर है। मिर्जा गुलाम अहमद साहब इस सम्प्रदाय के संस्थापक थे। यहाँ पर ज़िंदा की समाज मिल कर चार पाँच-छः माचों को अमर शहीद आर्य मुसाफिर को याद में बड़ी धूम - धाम से शहीदी मेला मंडल के रूप में मनायी है। दोनों सभाओं तथा सारे मान्य नेताओं का सहयोग प्राप्त होता है। सारे भारत में ऐसा शानदार शहीदी मेला पब्लिश लेखराम जी की बलिदान स्मृति में कही नहीं मनाया जाता होगा, जैसा यहाँ होता है। यहाँ के सारे भाई आर्य-हिन्दु-सिख इसे अपना समक कर समारोह से मनाते हैं। इसका नाम भी लेखराम नगर कादियाँ प्रसिद्ध हो गया है। परन्तु हमें इस पर पूरा सन्तोष नहीं। हम चाहते हैं कि टंकारा, मधुगा, अजमेर तथा अब कतापुर के महामूर्तों के बाद लेखराम नगर कादियाँ के इस शहीदी मेला मनाने की ओर गम्भीरता से विचार करके पूरा ध्यान दिया जाये। इनको शानदार प्रांतीय रूप दिया जाये। यहाँ क सबजन तो मिल कर अपना कर्तव्य निभाते हैं, किन्तु आर्य मुसाफिर का यह शहीदी मेला केवल यहाँ वालों का नहीं—सारे समाज का है। उस अमर शहीद को प्रायः अब तक सारे समाज ने सुनाये रखा है। यह पाप है। अब इस का प्रायः दिव्य करना ही चाहिए। इस बार भी लेखराम नगर कादियाँ में चार-पाँच छः माचों को भारी शहीदी मेला हो रहा है।

## तोपवन से मेरा सम्बन्ध नहीं

कितने ही पत्र मेरे पास आते रहते हैं जिन में तोपवन-देहरादून के सम्बन्ध में पृच्छाछह होती है— इन सब पत्रों के उत्तर देना मेरे लिये कठिन होता है, क्योंकि मैं चिरकाल से तोपवन नहीं गया और मैंने तोपवन बसेटी से भी त्यागपत्र दे दिया हुआ है, न ही अब तोपवन जानें का कोई विचार है—अतः तोपवन के सम्बन्ध में मुझे पत्र लिखने का कोई लाभ नहीं, मुझे अब भारतक रजिक मिलाने नहीं देहली लिल्ला जा सकता है—आनन्द स्वामी सरस्वती

## यह जलने की धमकी

पंजाब भारत का सीमाप्राप्त है। राष्ट्र विभाजन से इसे बड़ा धक्का लगा है। फिर भी पंजाब वासी परिश्रमी तथा साहसी हैं। प्रायः ने काफी धननि की है। अब इस युद्ध में पंजाब ने बड़ी वीरता वा परिश्रम दिया है। शानि भी बड़ी उठाई है। अपने लुप्तपूँ नही होने पाई कि पनायें सुधा वा खेल खेलने में लग जा, ने जल मरने की धमकी देनी प्रारम्भ की हुई है। शराब, धनचांग, अन्-तिरता, भोगवाद, नागिनता के प्रवाह को गोकने के लिए तो सन्त जो बलिदाने नहीं देते पर पंजाबी सुधा बनकर छोटा सा यह दोआब बट जाये। इत के लिए धर्मस्था-न में बैठ कर आत्मदाह की धमकी देते हैं। यह देश का दुर्भाग्य ही है। सन्त जो तो एकता के टुकड़े करने के लिए जल मरने को तैयार हैं पर योगिराज सुयेंद्रे आदि नेता एकता बनाये रमने को बलिदान देना चाहते हैं। कामिसे हाईकमान के दिल में पना नहीं क्या समाया है? काज लानो लाजपत होने तो यह स्थिति होती? यदि जलने से ही पान बनने लगे तो पना नहीं क्या होगा? सारा पंजाब बटवारे का विरोधी है फिर हाईकमान कमजोरी क्यों दिखा रहा है? मोका है कि इस का पूरा डट कर विरोध किया जाये।—३०

## नारी हृदय...

पुप से कोमल-पथर में कटोर  
(ले०-श्रीमती मुपमा वर्मा जालन्धर)



पुपों-सा कोमल एवं पथर-सा कटोरा—क्या शीर्षक है, जैसे कोई पक पहेली हो, जिसे लिखकर मैं स्वयं ही न समझ सकी। पर मुझे इसका साक्षात्कार यदि मिला तो केवल नारी में ही। यों तो नारी के प्रति मेरी भावना बहुत उच्च रही है विशेषकर तब जब मैंने यह अनुभव किया कि पति के लिए प्रेम, संतान के लिए समता समान के लिए शील, विश्व के लिए दया तथा जीवन मात्र के लिए कष्टना सहन करने वाली महान-प्रकृति का नाम ही नारी है। ऐसी भावनाओं तथा गुणा से युक्त नारी ही माना है, जगत जाता है। परन्तु पुनर्जात के अतिरिक्त व्यक्तिगत अध्ययन ने मुझे बाध्य किया कि नारी का दूसरा रूप भी है। बड़े-बड़े बोरों की तलवार की मंफार उस नारी की स्वर-लहरों में कम्पित होकर सदा के लिए सोने को बाध्य हो गई, नारी का वह रूप है महारी का रूप। महारी का अर्थ होता है नचाने वाला। नारी इस पृथ्वी पर सदा से ही मानव को नचायी आई, पर स्वयं अपने कभी मम पर धार तो क्या सिर तक नहीं हिलाया। महाराजा भरतूर ने मिथमंगां का रूप ले लिया, पर पिगला ने कभी भूमि पर सोकर भी नहीं देखा।

कितना मातृक और कोमल है नारी का हृदय कि जरा-सी दो मोटी बातें करो, सर्वत्र दे डालेगी, पर जहाँ उसे यह विश्वास हुआ कि दुर्बल मानव नेरा गुलाम है, वस फिर देखिए उस नारी को। कपड़ों में लिपटे हुए कितने ही बच्चे जो पुलिस सड़कें पर प्राण करती हैं, नारी की कटोरता के प्रमाण हैं। यह नारी उस समय कितनी कोमल

रही होगी जब उस बच्चे के पिता को अपनी सख्त समर्पण किया होगा, परन्तु अब उन नारी ने ही यह दिखा दिया कि ममता के अतिरिक्त मैं कटोरता में भी आदर्श हूँ। नारी की कटोरता पति की मृत्यु को भी लांघकर बच्चों तक छुरी फेलती चली गई है।

प्रत्येक व्यक्ति के चाहे वह श्री हो या पुरुष हीन पहलू होते हैं। एक तो वह, जो बड़े स्वयं को समझता है, दूसरा वह जो समाज उसे समझता है, और तीसरा वह जो कि वह वास्तव में है। नारी अपने अपने आप को क्या समझती है, यह तो हर नारी स्वयं जानती है, और समाज उसे क्या समझ रहा है, इसकी कोई आवश्यकता नहीं, किन्तु वह वास्तव में नारी है। नारी का शील-गुण सम्पन्न रूप ही आदर्श है। इसी रूप पर स्वयं राम ने भी पुण्य अर्पण किया, क्योंकि यही रूप संसार की सबसे महान नींव है। इसी रूप का दूसरा रूप संसार की महान से महान रचना है। कवियों की लेखिनी, बोरों की तलवार, कलाकारों का मस्तिष्क-विकास इस रूप की देन है। जिन देन पर प्रकृति का कण-कण सुकरा रहा है, भूमि रहा है।

नारी का यही रूप सदा-सर्वत्र स्थिर रहे, इसका उत्तरदायित्व बहुत कुछ पुरुषों पर है। प्रायः पुरुषों का अविबेदपूर्व व्यवहार ही नारी के इस मंगल तथा मृदुल रूप को अमंगल तथा कटोर रूप में परिवर्तित कर देता है, और फिर कहना पड़ता है कि, नारी पुप से भी कोमल और पथर से भी कटोर है।

## श्री जय कृष्ण जी नंदा

श्री जय कृष्ण जी नंदा ने पिछले १५-१६ वर्षों अनाथालय फिरोजपुर का जिस निस्वार्थ भाव से और प्रेम से कार्य किया उस की

जितना भी प्रशंसा की जाए थोड़ी है। गजनेरिट के सेवा-कार्य से निवृत्त होकर उन्होंने इस धार्मिक तथा परोपकार के कार्य में अपने को खपा दिया। अपने जीवन के अन्तिम क्षणों तक उनकी धर्मपत्नी जी भी इस पुण्य कार्य में लगी रहीं। उन के पुरुषार्थ से इस संस्था ने अमृत पूर्व उन्नति की। इस का कोष जो पहले प्रायः रिक्त था अब ढाई तीन लाख तक जा पहुँचा।



बच्चे और वृषिकों का प्रबन्ध, रहन सहन व खान-पान बहुत ही व्यवस्थित हो गया। सब से विशेष बात तो यह है कि उन के सौजन्य और कार्य में प्रभावित होकर फिरोजपुर की सम्पूर्ण श्राव्य संस्थाओं ने उन्हें अपना पूरा सहयोग दिया।

श्री जय कृष्ण जी नंदा की इस निस्वार्थ सेवा के लिए आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा तथा समस्त आर्य जगत् उन का आभार मानता है।

श्री नंदाजी के इस सेवा कार्य में उनके मुख्य सहायक श्री प्रतापचन्द्र जी मेहता तथा उनकी धर्मपत्नी भीमती परमेश्वरी देवी जी का निस्वार्थ कार्य बहुत अधिक महत्व का है। अब वे इस कार्य को निभा रहे हैं, क्योंकि श्री नंदा जी लगभग डेढ़ वर्ष के लिए भक्ति-साधना के लिए महान्या आनन्द स्वामी जी के आश्रम-देहरादून जा रहे हैं।

—सत्यदेव पुरातन मन्त्री

### हंमराज महिला महा-विद्यालय जालन्धर

हंमराज महिला महा विद्यालय के छात्रावास का छात्रावासों एवं प्राचार्यों ने देश में उद्वेगन हुई

### फिक्सड डिपोजिट्स (FIXED DEPOSITS)

12% वार्षिक व्याज तथा 1/2 से 6% तक कमीशन भी प्राप्त करें। मिलें अथवा लिखें—  
**DEWAN & CO.,**

Fixed Deposit Agents.  
Rly. Road, Opp: Rest House. SONPAT

लाभान्न की विशेष रूप से चावल की संकट कालीन स्थिति को देखते हुए 'चावल' खाने बन्द कर दिये हैं। छात्रावास में सप्ताह में दो बार चावल दिये जाते थे परन्तु देश में चावलों के अभाव को अनुभव करते हुए तथा केरल के लोगों की आवश्यकता को अनुभव करते हुए इस छात्रावास में निशास करने वाली सभी लक्ष्मियों ने उद्योगिक निष्पत्ति किया है।

**आर्य जगत् में  
विज्ञापन देकर  
लाभ उठाएँ**

## अमर शहीद लेखराम जी का बलिदान

श्री करनैलसिंह जी विद्यार्थी विद्यादायकस्वति आर्यसमाज

लक्ष्मणसर अमृतमर



आर्य पंथ पद्धति व सार्वदेविक समाज के आदेशानुसार इस वर्ष आर्यसमाज के श्रद्धि दयानन्द के सच्चे सेवक अमर शहीद पं० लेखराम का बलिदान दिवस समारोह से मनाया जा रहा है। लेखराम नगरी (कादियाँ) इस महान पंथ की प्रति वर्ष ६ मार्च को मनायी है। बड़ी धूम-धाम से इस नगरी का यह उत्सव ता सचमुच देखने और सुनने से सम्बन्ध रखता है। युवकों का जोश भी ठाढ़ मारता दिखाई देता है।

मेरी तो सुनता हूँ कि जिस प्रकार महारमा हसराम जी को जयन्ता का प्रोत्साहन लगभग सारा वर्ष ही रहा है उसी प्रकार उपादान नहीं तो २३ फरवरी से ६ मार्च तक पं० लेखराम बलिदान सनाहरी भी बड़ी धूमधाम से मनाया जाना चाहिये। लेखराम नगर (कादियाँ) के गुरुक सञ्चन तो इस वर्ष पर महान जलूस भी निकालने हैं, प्रभाव फेरी भी और स्थानों पर भी ऐसा-ऐसा प्रोत्साहन होना चाहिये। नेताओं द्वारा जनता को अमर शहीद का संदेश भी पहुंचाना होना परिये जो ने आर्य समाज के लिए क्या कुछ किया सहा यह सब कुछ उसके जीवन को पढ़ने से सामने आ जाता है। महर्षि का यदि सच्चा पक्का और पहला भक्त हुआ है तो पं० लेखराम। श्रद्धि युक्त मन थी सच्ची मानवता के प्रति, आर्य संस्कृति के प्रति। आर्यसमाज ने, श्रद्धि दयानन्द के कार्य ने उससे जो कुछ भी मांगा, जब भा मांगा, वीर लेखराम तयार था चाहे वह आराम कर रहा है, चाहे रोटा खा रहा है चाहे बच्चों के बीच बैठे है पर श्रद्धि का कार्य सुनते

हो सब कुछ वहां का वहां ही छोड़कर चल पड़ते हैं श्रद्धि-पथ पर। कैसी मस्तानी लगन है।

मे तो उसे एक अद्भुत मुसाफिर कहता हूँ, जो आज वहां—कल वहां, आज इस शहर में कल उस शहर में, आज इस मुहल्ले में और कल दूसरे मुहल्ले में। वह मुसाफिर जिसके हाथ में वेद सन्देश और वह ऐसे भागता चला जा रहा है जैसे छावियों और नुफान हो। उस का दिल विषमताओं और सुलोकियों से डरने वाला नहीं। कुछ क्यों न आ पड़े हृदय में विजय का दृढ़ निश्चय उसे प्रतिक्रिया उठसाना रहना है, रुकने नहीं देता। पथ है सनवाले दोबाने, परचाने दयानन्द के शिष्य वीर लेखराम। नू जग तक जोया, आर्यसमाज की सेवा करता रहा

कादियाँ में रहने वाले अहमदियों के बारे में भी कई लोग जानते हैं किने चतुर चालाक आदमी हैं ये। इनके गुण पता है आपको, कौन थे। इनके गुरु का नाम था मिर्जा गुलाम अहमद कादियानो। कभी यह अपने आपको उष्ण पोषित करता था तो कभी राम होने का दावा करता था अपने आपको ईश्वर का पैगम्बर मानता था और यह उसने घोषणा कर रखी थी कि जो कोई भी उसके पास कादियाँ रहकर एक वर्ष में उसमें कोई भोजने (चमत्कार) को न देख सके या सुन सके तो उसे वह २०० रु० मासिक के हिसाब से २५०० रु० देगे। पं० लेखराम भी को जब इस प्रकार को घोषणा का पता चला तो उन्होंने मिर्जा जी से मुलाकात करके उसके भोजने देखने के लिए विव्हा। पर मिर्जा जी अपनी रातों से थिड़क गये

## आर्यसमाजमंडी (हि. प्र.)

आर्यसमाज मंडी (हिमाचल प्रदेश) को यह विशेष सभा पत्राभी भाषा की झाड़ में स्वतन्त्र सिक्ख राज्य के निर्माणा की अकालियों की सांप्रदायिक भांग का घोर विरोध करती है जो मा० तारासिंह के वक्तव्यों तथा सन्त फतहसिंह के सम्पाद दाताओं को दिये गए ताजा वक्तव्य से सुस्पष्ट हो गया है।

यह सभा भारत सरकार से मांग करती है कि वह किसी भी दबाव अथवा धमकी में आकर इस भांग को स्वीकार न करें क्योंकि स्वतन्त्र सिक्ख राज्य के निर्माण से पाकिस्तान और नागालैंड के निर्माण से भी अधिक भयावह, उन्नतमें और स्थितियों पैदा हो जायगी, जिसको समस्त उत्तरदायित्व भारत सरकार पर होगी।

—चेतनाम देहल और ऐसा वैसा जवाब दिया। पर पं० जी तो घर चहुं चने वाले थे। कादियाँ गये काफी बड़े हुए। पूरे दो मास कादियाँ रहे और मिर्जा जी को निरुत्तर करके वहां एक प्रभावशाली समाज स्थापित करके हूँ हिले। पर विरोधियों का और तो कोई साधन न मिला हां पं० जी को जान के पीछे पड़ गए और पं० जी का वाया देकर आर्यजति से डान लिया। उदा! उदा! आर्यों शहीद के जीवन से शिक्षा लें।

वेदाभूत-वर्षा पृथ्व महात्मा  
**आनन्द स्वामी जी सरस्वती**  
आर्य समाज लारेंस रोड में ३ मार्च वीरवार से आरम्भ कर रहे हैं  
समय प्रातः ७ से ८ बजे तक परिवार तथा इष्ट मित्रों सहित पधारने की कृपा करें  
निवेदक—  
मोहनलाल श्रोता—प्रधान विद्यासागर—सन्धी

## अमर हुतात्मा पं० लेखराम बलिदान दिवस

मन, वचन, कर्म से सत्य-निष्ठा ईश्वर, धर्म और राष्ट्र के सच्चे और क्रियाशील उपासक अमर हुतात्मा पं० लेखराम जी आर्य मुसाफिर की पुण्य स्मृति को जागृत रखने के तथा सत्यं रथा प्राप्त करने के निमित्त कानपुर नगर की सब आर्यसमाजों की ओर से मेट्टेन रोड में सामूहिक रूपेण श्रद्धांजलि समर्पित करते हुए पं० विद्याधर जी श्रीयुत मूलचन्द जी, श्रीयुत डा० हरिदत्त जी शान्नी, श्रीयुत तेजभान जी मदान श्रीयुत ललिता प्रसाद जी एवं स्वामी वेदानन्द जी, प्रशासक पं० विजयपाल शास्त्री आदि के उद्बोधन किया कि निश्चिने पाणु दिये पर प्रण नहीं छोड़ा और लाक कर्षण की भावना से सम्पूर्ण जीवन समर्पित किया उनको वसोयत से प्रेरणा ले कर पारस्परिक भेदभाव को मुलाहम कर सब प्रशस्त मार्ग का अनुसरण करें।

विद्याधर सन्धी  
केंद्रीय आर्यसमाज कानपुर

## वैदिक मंत्रार की महान् त्रुति

देश को यह सूचना पढ़कर अति दुःख होगा कि स्वतन्त्रता संग्राम के वीर सेनानी और सहस्रों क्रांतिकारियों के मार्ग दर्शक श्री विनायक दामोदर सावरकर का देहांत हो गया है। आर्य २२ वर्ष की आयु तक लंबी विमारी भोगने के बाद सामाजिक कार्य को अग्रुप छोड़कर इस संसार रूपो सागर की पार कर गये।  
आम महान् पुरुष थे जो इस युग में दूसरों के लिए ज्योति लिए आगे बढ़ता चला गया।

**आर्य समाज चराडीगढ़  
सेक्टर २२ के ममाचार**

श्री साबरकर जी की मृत्यु पर निम्न शोक प्रस्ताव पास किया गया चरडीगढ़ के छात्रों की सभा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महान सेनानी, भारतीय संस्कृति के अमर पुजारी भारत माता के महानतम सपूत स्वतंत्रता वीर साबरकर के के निधन पर हादिक शोक प्रकट करती है तथा ईश्वर से उन की आरामा की सदृशति के लिए प्रार्थना करती है। कल्याण नर-नारी एवंगत महापुरुष के जीवन से प्रेरणा लेते हुए देश को वैभव संपन्न बनाने का दृढ़ संकल्प लें।

“चरडीगढ़ के नर-नारियों की यह विराट सभा पंजाबी भाषा की की भाड़ में स्वतंत्र सिक्ख राज्य के निर्माण की आकांक्षियों की आस्थादायिक मांग का घोर विरोध करती है जो मां-तरासिंह के वक्तव्यों तथा संत फतहसिंह के सम्पादनात्मकों को दिव्य गप ताबा बवतव्य मे सुपष्ट हो गया है।

यह सभा भारत सरकार से मांग करती है कि वह कहीं भी द्वाबा अक्षया धमकी में आकर इत मांग को स्वीकार न करे क्योंकि स्वतंत्र सिक्ख राज्य के निर्माण से पाकिस्तान और नागालैंड के निर्माण से भी अधिक भयावह उत्सर्जन और परिस्थितियों उत्पन्न हो जाएंगी जिसकी समस्त उत्तरदायिता भारत सरकार पर होगी।  
—वेद प्रकाश 'प्रभाकर'

★ पंजाबी सुवा के विेष में हिन्दुओं की सभी श्रेणियों ने आवाज़ उठाई है। अब भी गवर्न-मेंट के कानों पर जू नहीं रहेगी तो अविष्य में इसका परिणाम तुरा ही होगा। सरकार को सावधान होकर इसका कड़ा मुकाबला करने की जरूरत है।

**हरराज महिला महा  
विद्यालय जालन्धर**

ऋषिबोध उत्सव श्री पं. सत्यदेव जी विद्यालंकार के सभा पतित्व में मनाया गया।

ऋषिबोध उत्सव का प्रारम्भ वेद मंत्रों के सवर उच्चारण से किया गया। तदनंतर महर्षि दयानन्द के चरणों से अष्टौजलियां प्रस्तुत की गईं। श्रीमती सुवीरा जी ने श्री वार्मा जी को अष्टा-मानव, महा-ऋषि एवं महान आत्मा सिद्ध करते हुए कहा कि भारत आज यदि एक स्वतंत्र देश के रूप में विकास प्रकलित एवं पुष्पित हो रहा है तो इसका समस्त श्रेय उस महायोगी को है।

प्रधान पद से बोलते हुए पण्डित जी ने कहा कि दयानन्द एक द्रुष्ट एवं जगत् नेता थे जिन्होंने रूपनी 'लेखनी कथनी एवं वरनी' सभी के द्वारा भारतीय जनता की सेवा की, उनका प्रथ 'सत्याभ्रप्रकाश' सचमुच सत्य के आलोक का प्रसार करने वाला प्रकाश स्तम्भ है।



**कुछ तुम कहो, कुछ मैं कहूँ**

तुम नित्य के साथी रहे, तुमने मुझे अपना लिया, अपना सखा मुझको किया, जीवन मेरा तुलसा गया।  
नित साथ मैं तेरे रहूँ, कुछ तुम कहो, कुछ मैं कहूँ ॥



मैं सत्य शिव हूँ सदा से, तूने मुझे सुाहर बिधा, सौवर्ष अपना दे दिया, और तुल तुमको कर दिया।  
नित प्रे मे मैं अहित वरु कुछ तुम कहो, कुछ मैं कहूँ ॥



रसमय हृदय हो प्रेम मे, नित प्रेम ही करने लगा, तू प्रेममय सच्चा सखा, तुम से हृदय बनने लगा।  
मैं निरुट अब तेरे रहूँ, कुछ तुम कहो, कुछ मैं कहूँ ॥



रसमय रहे मेरा हृदय, नित प्रेम ही करता रहे, आनन्द में भरपूर यह, अपने में सब को स्थान दे।  
मैं स्वर्ध तुम मे रहूँ, कुछ तुम कहो, कुछ मैं कहूँ ॥

—लालचन्द्र मंसूरी



**अश्लीलता निवारण  
के लिए**

संसद् भवन पर उग्र आंदोलन की तैयारियां।

नई दिल्ली—वेद पथिक पं० धर्मवीर महाधारी ने आज प्रेस प्रतिलिपियों को यह बतलाया है कि रुले काम चोरहो पर नग्न अर्ध नग्न सिनेमाओं के चित्र लगे हुए हैं युष्मन और आलिगन का खुला प्रचार देश के सभी नगरों में हो रहा है श्री महाधारी जी ने बतलाया कि इस प्रकार के अश्लील चित्रों के प्रदर्शन से लाखों और करोड़ों विधाधियों का जीवन निष्पत्त हो रहा है। देश का अरबों रुपया मासिक तुरे संस्कारों के प्रचार पर मनोरंजन के नाम पर बरबाद हो रहा है। देश की उन्नति और आर्थिक समस्या के लिए अश्लीलता निवारण अत्यन्त आवश्यक है। श्री पं० धर्मवीर जी ने अपने वक्तव्य में यह बताया कि देश भर से एक करोड़ हस्ताक्षर संदेश करके राष्ट्रपति को पेट

किया जावेगा।

**संसद् भवन पर प्रदर्शन**

२१ मार्च को संसद् भवन पर सभी धर्म और वर्गों के लाखों नर-नारियों द्वारा उग्र प्रदर्शन किया जावेगा। देश भर की समस्त आर्य समाजों तथा समाजसंघर्ष संस्थाओं की ओर व ईसाई और मुसलमानों की ओर से इस प्रदर्शन में नर-नारी भाग लेंगे।

**आमरण अनशन की घोषणा**

सरकार यदि कड़ी चेतावनी और एक करोड़ हस्ताक्षर और प्रदर्शन पर ध्यान नहीं देगी तो श्रीमती इन्टा गांधी की कोठी के समने वेदपथिक पं० धर्मवीर जी ने कहा है कि मैं आमरण अनशन प्रारम्भ करूँगा।

**हमारी मांगें**

१. अश्लील फिल्म कंपनियों के मालिकों को कठोर दंड दिया जाए।

२. बोर्ड के अधिकारियों को बदलकर धार्मिक प्रतिनिधियों को सदस्य बनाया जाए।

३. अश्लील चित्र छापने वालों को और बेचने वालों को कठोर दंड दिया जाए।

४. २० वर्ष तक की बालु के विधाधियों को सिनेमा देखने पर कड़ा प्रतिबन्ध लगाया जाए।

धर्मवीर आर्य  
महाधारी

**पूज्य महात्मा आनन्द  
स्वामी जी**

आर्यसमाज लारेंस रोड अमृतसर में आर्यजगत् के प्रसिद्ध परम सन्त पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज की वा. २ मार्च १९६६ सुषवार से प्रातः ७ बजे से आठ बजे तक मनोहर कथा आरम्भ है। नगर की जनता अनुत्पान कर रही है।

जिस कव्यायुक्त शिवाचारी के पंवे ने 'मूलशंकर' को बोध कराके 'मूलशंकर' से महाशक्ति दयानन्द सरस्वती बनाया था, इस महान् पंवे को मनाने के लिये ऋषुत्सव की 'केन्द्रीय धार्य सभा' की ओर से १९ फरवरी शनीवार को एक विशाल जलस का संगठन किया गया। इस जलस की विशेषता यह थी कि इस जलस में श्रुति के प्रतिप्रेम प्रकट करने के लिए 'मिथिला भर की धार्यसभाओं', सनातन धर्म सभाएं और विश्व नेता भी शामिल थे। यह ऋषुत्सव के इतिहास का प्रथम ऋषुत्सव है कि इतना महान् जलस सभी धर्मों के नेताओं के साथ एकता की पुष्पमालाओं से श्रोतभोज होकर 'महाश्रुति दयानन्द की जय भारत' गीता की जय 'हिन्दी भाषा की जय' 'हर हर महादेव' और 'जो बोले सो निहाल सतवरो अकाल' के नारों से राहुर के बड़े-बड़े बाजारों में गुञ्जा हुआ निरल रहा था।

यह ऋषुत्सव जलस धार्य-समाज मन्दिर लोहगढ़ से शुरू होकर टेलीफोन पक्षसंज्ञक-भद्रानन्द बाजार-कर्मों द्विदोशो-कटड़ा अहिल-वाला-चण्डा घर चौक-बाजार भाई सेवा-गुरु बाजार से होना हुआ कटड़ा, सफेद में धार्यसमाज मन्दिर के आगे खतम हुआ। जलस के आगे ध्वजारोही पुत्र सवार थे। और पीछे एक जीप गाड़ी में सभी नेता गण्य जो जगत्-नारायण जी के साथ पुष्पों से लदे बैठे थे। जनता का ठाठे मार रहे खलस में धार्यसमाज-स्त्री धार्य-समाज और स्कूलों वा कालिजों के लड़के वा लड़कियां बड़ी शक्ति पूर्वक श्रुति गुण्य-मान करते चल रहे थे।

दुसरे दिन २० फरवरी रवि-वार को गोलबाग के विशाल मैदान में एक सभा भी धर्मपाल जी बी. ए. मुन्निरीषक कमीशनर

## सामूहिक एकता का प्रतीक ऋषुत्सव का श्रुतिबोध उत्सव

( श्री नरदेवराज जी वर्मा धार्यसमाज लखनपुर ऋषुत्सव )



ऋषुत्सव की प्रधानता में की गई जिसमें बड़े भेष्ट और लच्छ-कोटी के कवियों ने श्रुति गुण्य-गाया किया, और पं. श्रीप्रकाश जी खतोली वाले, मजदूरी रामदाती सिलों के नेता ज्ञानी रामविह जी, सनातनधर्म नेता श्री जगन्नाथ जी मिश्रा और धार्य नेता श्री वीरेन्द्र जी ने महाश्रुति दयानन्दजी को श्रद्धांजली अर्पित करते हुए पंजाब के भाषा सम्बन्धी वाद-विवाद पर अपने-अपने विचार प्रकट किये। विशाल जन समूह के सामने श्री श्रीमत्प्रकाश जी ने कहा कि 'हिन्दी चीनी भाई-भाई वा हिन्दु मुस्लिम भाई-भाई के नारे लगाने से मैत्रिक सम्बन्ध स्थापित नहीं होते। महात्म गांधी, पं० नेहरू वा सर्वोदय के नेता और विनोबाबाबो इस कार्य में सफल न हो सके। राष्ट्र की एकता केवल मात्र भावों की एकता से हो सकती है, जिसे कि महाश्रुति दयानन्द ने चरुचरुत किया। हमारी सरकार पंचरोज और अहिंसा को गलत अर्थों में अपने समुल रखती आ रही है। यह ठीक है कि हम किसी को काटना नहीं चाहते लेकिन अपनी तुलनाकार को तो मत छोड़ो। क्यों नहीं सैनिक शक्ति को और उन्नत किया जाता? और क्यों हमारी सरकार यह कहती है कि हम ऐतम् शक्ति नहीं बनायेंगे? जब कि तुम्हारे चारों तरफ से आस्रें उठाए देख रहे हैं, हमारे स्कूलों वा कालिजों के लड़कों को लड़कियां दी जा रही हैं कि ऋषुत्सव चलो चलाना सीखें। देश का जब बेकार में ही लखें किया जा रहा है। अगर तुम देश को बचाना चाहते हो तो श्रुतिदयानन्द के कथनानुसार 'एकता के सूत्र' में

बन्ध जाओ और सब मगने छोड़कर एक स्वर में कहो कि 'हम सब एक हैं।'

सिलों के नेता ज्ञानी रामविह जी ने कहा कि आज हम स्वतन्त्र हैं तो इसका मुलाधार महाश्रुति जो ही है। जिन्होंने हमारी रगों में स्वतन्त्रता प्राप्ति की फूक दे दी थी। आज हम उस महान् श्रुति के उपधारो से ऊबल हैं और उसके प्रति श्रद्धांजलि देते हुए हमारा सर लुद-लुद कुक रहा है। उस महान् श्रुति न एकता का ऐसा पाठ दिया जैसा कि हमारे गुरु महाराज ने दिया था। लेकिन पंजाब के कुछ मन-पले लोग पंजाब के टुकड़े करना चाहते हैं। यह कहकर कि पाकिस्तान को लड़ाई में सिलों ने सुरक्षामानों से टकरा ली और भारत को विजय प्राप्त कराई, इस लिए सिलों को लुटा करना चाहिये और इन्हें पंजाबी नृश दे दिया जाए। परन्तु मैं बवा देना चाहना हूँ कि इस लड़ाई में लड़ने वाले केवल पात्र सिल ही नहीं थे बल्कि हिन्दू मिलटरी भी उनक साथ थी। परन्तु इन सिलों में सब से अधिक सक्ता मजदूरी और रामदाती सिल थे, जिन्होंने लखनऊ जूझियां और कर्की जैसे अति भयानक इलाकों में अपना लून बधाया था। मैं मजदूरी रामदाती सिलों का प्रतिनिधि और नेता होने के सारे आप को बवा देना चाहना हूँ कि 'हम कभी भी पंजाब को पंजाबी नृश के रूप में भारत से अलग नही चाहते और इसका उट कर मुकाबला करेंगे। यह मांग केवल मात्र 'मैकालफ' के चेलों की है गुरु

के चेलों की यह कोई मांग नहीं। श्रुति दयानन्द ने जैसे देश के हित के लिये अपना जीवन दे दोगे। पर भारत का कोई अंग टूटने नहीं दोगे। यही हमारी सच्ची श्रद्धांजली है।'

इनके पश्चात् सनातन धर्म, नेता जो जगन्नाथ जी मिश्रा ने कहा कि मैं महाश्रुति दयानन्द का आभारी हूँ क्योंकि मैं समझता हूँ कि अगर श्रुति न आते तो हिन्दु-जाति का नामो-निगान ही न रहता। हम तो उस श्रुति के उपधारो को कभी मूल भी नहीं सकते और उनके प्रति श्रद्धांजलि देते समय सर कुक जाता है। वह सनातन धर्म और धार्यसमाज कौनो क दो फरे है परन्तु वेद नाम की कील से श्रुति ने बाण्य दिया है।

परन्तु आज पंजाब में फूट डालो और राज करो की कारवाही चल रही वह पंजाब के समस्त जन समूह को ले लूवेंगी।

पाकिस्तान से हुए पर विनारा ताएडव को अभी जनता मूल भी नहीं पाई कि पंजाबी नृशे का शोरा छेद दिया गया है। पंजाब का जनता आज एक है और सरकार की कोई दूषित कार्यवाही सही नहीं जायेगी। श्रुति ने हम को एकता का पाठ दिया है और हम उस पर अमल करते हुए श्रुति के उपधारो को नहीं मूल सकते। इसके पश्चात् धार्य नेता श्री वीरेन्द्र जी ने भाषण दिया और कहा कि शिवाचारी पहले भी श्रावी थी और हम पहले भी शिवाचारी का उरसब बनते थे परन्तु बालस में शिवाचारी का उरसब जिस ढंग से मनाना चाहिये वह — यह काल दिन वा। जिस में कि सब हिन्दुमात्र ने एकता का सवृत्त दिया है। श्रुति का सन्देश धार्य-समाज के लिए ही नहीं सनातन- (शेष पृष्ठ ८ पर)



### अतमृतसर बोध उत्स

(एप्ट ७ का रोष)

धर्म बलिष्ठ समस्त हिन्दु जाति के लिए था। आज की शिवरात्री में हमने इन्हें मिलकर इतिहास का रुल बदल दिया है। मरिक्का विक्टोरिया के समय एक सर्वधर्म सम्मेलन हुआ कि एकता कायम की जाए। लेकिन वह सम्मेलन सफल न हुआ परन्तु आज के शिवरात्री जल्लुल श्री सभा में कार्य समाज, सनातनधर्म सभा—जैन सभा और सिक्ख नेताओं के एकजिह होने पर वह सफल है कि एकता सफल हो रही है। अगर बातावरण कुछ शीत रहे तो एक दिन आपस कि सब एक हो जायेंगे। लेकिन पंजाब के अकाली पंजाब की एकता में भाषा के नाम पर विच्छेद डाल रहे हैं। लेकिन मैं उन्हें कहना चाहता हूँ कि हम हिन्दु अपनी हिन्दी को छोड़ देते हैं और आप सिल आपनी पंजाबी को छोड़ दो, बलो। बही भाषा आपना लें जो कि दसहें गुरु महाराज ने आपनी भी। गुरु तेग बहादुर ने हिन्दुओं के लिए बलिदान दे कर हिन्दुओं पर उपकार किया है—हम कभी भी उनके उपकारों को भूल नहीं सकते। यह गुरु बासव थे हमारे भी गुरु हैं। आज शिवरात्री के उत्सव पर हम श्रद्धि के प्रति अद्भुत-जलि अर्पित करने आए हैं यह हमारे लिख महान् दिन है। श्रद्धि

**पठनीय एवं मननीय साहित्य**  
 देव प्रकाश ५/- मोतासार ७/-  
 वैसे, जलमगीर के पत्र १/- जेदारम संस्कार १/५० वैसे, जेरो जाठ रोचक कहानी ७/- वैसे, लीकट ७/- वैसे, सल्लहति जीवन ५० वैसे, कर्म मीमांसा २/२५ वैसे, सतति नियमन वही और कीले १/५ वैसे, वैदिक व्याकरण भास्कर ५/- व्यायाम बोधक पत्र ११/२० वैसे, साहित्य प्रकाशक १/-  
 जयदेव प्रदसं बड़ोडा-१

ने हमारे लिये क्या किया देखना हो तो आज भारत विधान सभा कर दें। सन १९५० से पहले ही श्रद्धि ने स्वतन्त्रता का पाठ खिलाया और कहा कि 'दूसरों का राज चाहे' कितना भी अच्छा क्यों न हो, अपने राज से वह सुराही है।' आज ४५ करोड़ जनता की प्रधानमन्त्री एक औरत का होना और उस देश में जहाँ कि कहा जाता था—  
**डोल-गवार-गुड़-पयु-नारी,**  
**वे सब लक्षण के अफिकारी**  
 परन्तु लंगोट श्रद्धि संस्थाधी श्रद्धि श्रद्धि वामान्द ने कहा—  
 यत्र नायंस्तु पृथग्यने,

रमते तत्र देवता।  
 यह उसी श्रद्धि की रूप्य है जो कि श्री जाति को भी उसमें के बराबर दर्जा दिया। इतिहास लेखक अजर कलम उठा कर इतिहास के पन्ने लिखेगा तो उसे जरूर लिखना पड़ेगा कि जिस देश में औरत को पूर्व की पीछ समझ जाता था वहाँ की प्रधानमन्त्री इन्द्रा गांधी का बनना या उच्च पदों पर औरतों के आने का श्रेय केवलश्रद्धि लंगोट कन्द संस्थाधी को ही है। एक सौ वर्ष पहले जितने भी नेता हुए किसी ने तो धर्म के लिए, किसी ने शिक्षा के लिये और किसी ने जनता की सुखीतियों के लिए कार्य किया। लेकिन श्रद्धि एक देखे नेता थे जिन्होंने सब प्रकार की शिक्षा देकर जनता को राह-रास्ते पर डाला। सिल हमारे भाई हैं और गुरु महाराज हमारे पूजनीय हैं। सिद्धों को तो हम छाती से लगा सकते हैं लेकिन अफिकारियों से हमारा कोई सम्भोजता नहीं हो सकता। अजर अफिकाली समर्थ कि हम सरकार को धमका कर पंजाबी सुभा ले लेंगे तो वह कार्य हम ही कर सकते हैं। और अगर यह समर्थ कि सल

## श्री. प्रतितिधिं क पदाधिकारी मनोनीत

श्री इन्द्रसेन, श्री भीमसेन बहल, प्रि. रत्नाराम और चौधरी बलवीरसिंह उप-प्रधान नियुक्त

जालन्धर २२ फरवरी—आयं प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री बरा ने आज सभा के अन्त्य पदाधिकारियों के नामों की घोषणा कर दी।  
 गत अन्त्य पदाधिकारियों के नामों की घोषणा कर दी।  
 गत अन्त्य पदाधिकारियों के नामों की घोषणा कर दी।

प्रधान द्वारा मनोनीत किए गए पदाधिकारियों के नाम इस प्रकार हैं—  
 उपप्रधान—डा. इन्द्रसेन जी, श्री भीमसेन बहल, प्रि. रत्नाराम और चौ. बलवीरसिंह।  
 सन्धी—टी. देवप्रकाश मलहोत्रा व-अन्त्री—श्री देवजित अमृतसर,

फतेहसिंह को जलाकर सुभा प्राप्त कर लेंगे तो इसके विपरीत हमारे हीन महारथी नेता जलने को तैयार हैं। और अगर समर्थ कि लक्ष्म हम सुभा प्राप्त कर लेंगे तो वह समर्थ लें कि आज के हिन्दु भी सोके हुए श्रद्धि के लक्षण कर कर देना चाहते हैं कि हम सिद्धों प्रकार भी पंजाब के टुकड़े नहीं होने देंगे और सदा एकता के लिए प्रयत्न शील रहेंगे आगे से जितने भी दिन त्योहार होंगे चाहे गिबराती हो या रामनवमी आये समाज और सनातन धर्म इन्हें ही मनाया करेंगे।  
 इस भाषण के पश्चात् महान् जन समुदाय की सभा विघ्नित हुई।

कै. शिवराम जी को बरार और पं. दुर्गादास।  
 कोषाध्यक्ष—संतोषराज जी।  
 पुस्तकालय—श्री बलदेवराज वल्लभाइ।  
 प्रतिष्ठित सदस्य—श्री सहायना आनन्द स्वामी जी, डा. मेहरचन्द जी महाजन (भारत के भूतपूर्व मुख्य न्यायाधीश) श्री सुयंभानु जी (डा. कुलपति पत्राज विश्वविद्यालय) डा. गोवर्धनलाल दूध (भूतपूर्व उप-कुलपति वज्जैन विश्वविद्यालय), डैटन के.रावचन्द्रजी, प्रि. हानचन्द जी, प्रिंसिपल दीवानचन्दजी कानपुर, श्री देसराजजी महाजन, ज्ञानी सिद्धीदास जी, श्री मेहरचन्द जी और श्री परमेश्वरीदास बहल।  
 अंतरंग सदस्य—कुसारी विधावती आनन्द, श्री प्यारेलाल बेरी, जेग विद्यासागरजी, पं. रुद्रचन्द जी, श्री बलदेवसिंह भंडारी, श्री वृजलाल टोहाना, महाराज अन्त्याराम लुधियाना, श्री सत्यपारा शिखला, श्री कृष्णलाल गुप्ता जम्मु, श्री लक्ष्मराम जी दोशियाचन्द्र, ,, किरानचन्द विश्वाजी, श्री चमकलाल जी अन्त्याल, वैद्य प्रकाशनाथ सिवाजी, जालन्धर, सगत सुहृदचन्द जी जालन्धर, श्री सत्यदेव विशालकर जालन्धर, डा. मिललीराम, अन्त्याल पं. विश्वभरदत्त करनाल, प्रो. वेदीराम, श्री प्रि. हरिराम जी, चण्डीगढ़, प्रि. चण्डीदास जी, श्री बलदेवराज और श्री लुहाहालचन्द पाराशर।

मुद्रक व प्रकाशक श्री अन्तोषराज जी आयं प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा कीर लिलायण्डे स, सिमाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आयंजगम कार्यालय महात्मा इंदिराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मासिक—आयं प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



डिजीकोन नं० ३०४७

[आर्यप्रदेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र]

Regd. No. P. 121

प्रक प्रति का मुख १३ नवे देसे

वार्षिक मुख्य ६ रुपये

वग २६ अक ११)

३० फान्गुल २०२२ रविवार...वयानन्दाव १४१-१३ मार्च १९६६

(तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

**वेद सूक्तयः**

तमै यमाय नमः

उस चम रूप भावान को नमस्कार हो। वम की काल रूपी प्रभु की शक्ति है जो समय समय पर संसार को आपना प्राप्त बनाती रहती है। प्रभु की इस शक्ति से कोई बच नहीं सकता। उसे नमस्कार है।

**गिरिष्यः पाहि नः**

हे तृति के योग्य परमात्मन ! हम सारे आपके ही हैं हमारी आप ही रक्षा करो। नाना प्रकार के संकटों से आपकी कृपा से ही हम सदा सुरक्षित रहें। आप ही हमारे रक्षक, पाता, परिव्रता हैं। इसी लिए तो आप पिता हैं, सच्चे रक्षक हैं।

**स हि स्थिरो विचरषिणः**

बहु प्रभु स्थिर है सदा एक रस है, अटल है। यह जगत परिवर्तनशील है, पर परमेश्वर सदा एक रस है, उसमें कभी परिवर्तन नहीं होता। वही सबका निरीक्षक है। सब के बाहर अन्दर के कार्यों भावों को देखा, जानता है। उससे कोई भी धाव गुप्त नहीं है।

सा म वे द से

**वे दा मृ त**

**बलिदान की अमर ज्योति**

अग्निवृत्राणि जड्धनद्रविणस्युर्विपन्ययः।  
समिद्धः शुक्र आहुतः ॥

वेद का उपदेश है कि अग्नि आहुतियों को प्राप्त होकर खूब प्रदीप्त होता है। अन्धकार तथा रोग के कीटों को मार देता है। राष्ट्र की स्वतन्त्रता के अग्नि को प्रदीप्त करने के लिए भी वीर-पुरुषों के जीवन की आहुति चाहिए। विदेशी सत्ता का उन्मूलन करने के लिए स्वराज्य आंदोलन की अग्नि की चमकाने में पंजाब केसरी ने छाती पर लाठियां खा कर अपना बलिदान देकर बड़ा भारी कार्य किया। हमारा भी कर्तव्य हो जाता है कि उन बलिदानी वीर लाला लाजपतराय जी के जीवन से हम धर्म व देशार्थ तन-मन-धन देना सीखें और देश की स्वतन्त्रता को चिरस्थायी बनाएं।

**ऋषि दर्शन**

सर्व परमेश्वराय

हे भोगों ! जीवन में जो भी प्रिय वस्तु है, उसे परमेश्वर के अर्पण कर दो। परोपकार में लगा दो। सब कुछ प्रजापति का है, उसी का दिया हुआ, उसी के निर्मित लगा दो। भोगों को त्यागभाव से ही भोगो।

**वयं परमेश्वरस्य एव**

हम सब उसी परमेश्वर की प्रजा हैं, उसा प्रजापति की संतान हैं। वही हमारा पिता है हम उसके अग्रपुत्र हैं। इस नाते जो कुछ भी हमारे पास है, हमें जीवन में प्राप्त है सब उसी की कृपा का प्रसाद है। यह सब उसी का है—कथञ्चिद् धनम्।

**पुत्रवदंतेमहि**

प्रभो ! हम सारे आपके पुत्र ही तो हैं, आप हमारे पिता हैं। इसलिए हमारा कर्तव्य है कि हम पुत्रों के समान ही वर्तव्य करें। आपके आदेश के अनुसार चलते रहें। आपके आज्ञाकारी बन कर हम सुपुत्र बनते जायें।

भा प्य मृ णि का से

(गतांक से आगे)

गुरयो ने शत्रु से लड़कर बीर प्रति प्राण करने और शत्रुओं ने जोहर की ज्वाला में आहुति देने का निरवचन कर लिया। किले के अन्दर जोहर के लिए लकड़ी जमा होने लगी। पद्मिनी समेत सभीस्त्रीयोंने हार स्वीकार किया। कुछ लोगों का कहना है कि इस जोहर में १३००० शत्रुओं ने भाग लिया और कुछ की राय है कि शत्रुओं की संख्या १०००० है। एक बहुत बड़े आग्नि-कुण्ड में खड़े होकर पद्मिनी ने कहा था—“हमारा विरासत है कि भारतवर्ष की देवियों को धर्म और राष्ट्र के प्रति कर्तव्य पालन में हमारे इस कृत्य से साहस और प्रेरणा मिलेगी।”

इधर जोहर से आग्नि की लपटें उठ रही थीं उधर राजपूत खिलजियों पर इस तरह बार कर रहे थे जैसे खिलजियों पर काल फिर रहा हो। शत्रु में भगदड़ मच गई। लाशों के ढेर लग गए। सब राजपूत शहीद हो गए। बचो खुदों खिलजी सेना के साथ अलाउद्दीन किले में दाखिल हुआ। उस ने पद्मिनी को खोज में किले का चत्पा-चत्पा हथान मारा तभी एक युधिष्ठा ने जोहर कुण्ड से राख उठा कर खिलजी के सिरे में डाल दी। राष्ट्र और धर्म के लिए इस से बड़ा बलिदान देवियों का और क्या हो सकता है। मार्च १६४७ की घटना है। राजलक्ष्मी, अष्टक और जेहलम में सुलतानाने के अत्याचार ज़ोरों पर थे। आंग्ल प्रतिनिधि सभा वंजाय को सूचना मिली कि गुजर खां तहसील के गांव से एक सौसे अधिक देवियों सुलतान आन-ताईयों के शिबले में हैं। शत्रुओं देवी जी, रामेश्वरी नेहरू कुछ अन्य देवियों और अग्र पुरुष न देवियों की सहायता के लिए उक्त गांव को रीताना हुए। दल में ३ भी था। तीन दिन तक गांव के लोगों ने आतताईयों का मुकाबला किया आतताईयों ने गांव की नाका बन्दी

## राष्ट्र-भक्ति और प्रभु-भक्ति-१४

(श्री महात्मा आनन्द स्वामी जा महाराज की अमृतभरी कथा)



कर ली और पानी तक पहुँचने में पावन्ही लगा दी। गांव की लगभग सौ रूपरतियों पर आतताई सुगल-मानों की नजर थी। कोई कहना था कि मैं ये लूंगा और कोई कहता था कि मैं हूँ लूंगा। यह गांव एक पहाड़ी पर था और पहाड़ी के नीचे सरदार गुलाबसिंह एडवोकेट का कुटुंब था। प्रातः स्मरणीय लाजवन्ती के नेतृत्व में इन सौ के करीब देवियों ने जब शिवति को आर्यन्त ब्रह्मज्ञान अनुभव किया तो एक-एक करके इस कूर्प में छलांग लगा दी। तब कोई जपमी साहिब का पाठ कर रही थी, कोई गीता का और कोई वेद मन्त्र था। हम सब लोग दिल को हिला देने वाली इस घटना के दस दिन बाद वहाँ पहुँचे और मन बहुत दुखी हुआ। इस गांव की देवियों ने साढ़े छः सौ वर्ष की घटना की पुनरावृत्ति कर दिखाई।

आज भी देश भयंकर संकट में है। वेद कहना है कि अपने में सत्य आचार, सत्य आहार, सत्य व्यवहार, सत्य विचार आदि आठ गुणों को पैदा कर लो तभी देश का बालबाँका नहीं हो सकेगा। इन आठ चीजों पर अमल करते हुए प्रभु से मिलना असम्भव नहीं आर इन्हीं आठ बातों पर अमल करने हुए राष्ट्र भक्ति के मार्ग पर चलना भी कठिन नहीं। हाल ही में जब अगस्त में पाकिस्तान ने कारभार पर आक्रमण किया तो मैं वहाँ ही था। मैंने अपनी आँखों से देखा कि किस तरह नीजवानों ने चुन-चुन कर आक्रमणकारियों का सफाया किया। उस दहशत को देख कर मेरे मन से आवाज उठी कि माई का लाल है जिस में यह साहस हो जो मेरे देश को गुलाम बना सके।

भगवान कृष्ण ने पांच हजार वर्ष पूर्व हमें एक संदेश दिया था। यदि हम उस पर अमल करते तो आज हमारी यह स्थिति न होती। बन्दोंने अपने सन्देश में कहा कि सदा अपने मन को प्रसन्न रखो। गम न हूँ न रहो। मन में पवित्र भावनाओं का संचार करो। जो चिन्ता करना है दुखी रहना है। निराशावादी हाना भोडोक नही। जीवनमें हम सद्य-भर नाकारामक पहुँच को देखने वाले कभी प्रसन्न नहीं रह सकते। जो हर बात में अश्रुगुण देखेगा, अश्रुगुणों ही जायेगा। मैं मुद्रादावाद में था। एक व्यक्तित्व मेरे पास करते हैं दूध लेकर आया। मैंने ले लिया। एक सज्जन पास हो बैठे थे, कहने लगे 'क्या साध भी दूध पीते हैं?' मुझे उसकी बात सुन कर बड़ा आनन्द आया। मैं बहुत छोट्टा था। हमारे घर में तब एक गाए हुआ करती थी। एक दिन पिता जी ने मुझे गाए को पानी पिलाने को कहा। मैंने गाए को पानी पिलाते हुए देखा कि उसके तनों के पास कुछ काली-काली सी चीजें वहाँ गाए का दूध पीने के लिए जमा हैं। मैंने जब पिता जो का ध्यान पशु और दिलाया तो उन्होंने कहा कि 'बेटे, ये जोकें हैं। दूध नहीं पीती, खन पीती हैं। मैं बड़ा परेशान हुआ कि दूध के समुद्र के पास आकर भी इन की किस्मत में दूध नहीं खून है। हे मानव! तू जोकें बन, बड़का बन। खून न पी दूध पी, अश्रुगुण न दूँ, गुण दूँ ! मधुमक्खली बनके शाहद इकट्ठा कर, मक्खली बनकर गंदगी पर मत बैठे। प्रभु ने हमें यह मानव बोला इस लिए नहीं दिया कि हम दूसरों के अश्रुगुणों को दूँ बने फिरें। हमें यह कदापि भूलना नहीं चाहिए कि

केवल परमात्मा ही सर्वगुण सम्पन्न है बाकी सब में अश्रुगुण और दोष हैं।

एक बार एक राजा के महल में चोरी हो गई जिसके अफियोग में तीन व्यक्ति पकड़े गए। राजा ने तीनों को फाँसी का हुकम दिया। दो को तो फाँसी पर चढ़ा दिया। गया। जब तीसरे को बारी आई तो उसने कहा—कि मैं राजा को यह संदेश देना चाहता हूँ कि मुझे लोहे से सोना बनाने की कला आती है। राजा ने जब यह सुना उसे लोभ हो गया। फाँसी रोक दी गई। सारे शहर में डिटारा पिटवा दिया गया जिस किसी के पास लोहा हो वह वहाँ लोहा लेकर आए। डिटोरों का पिटना, बाकि लोग अपने घरों और दुकानों से लोहा लेकर महल में पहुँचने लगे। वहाँ तक वे कड़की और कड़ाही तक लाने लगे। फाँसी का दंड प्राप्त व्यक्ति कहने अनुसार दो कान्ठेबल जंगल से लोहे का सोना बनाने वाली तूटी भी ले आए। राजमहल का प्रांगण लखाख बरा हुआ था। उक्त चोर ने अपने स्थान पर खड़े होकर कहा—सज्जनों! जिस किसी ने जीवन-भर कोई चोरी नहीं की उस के हाथ लगाने से यह सोना बनेगा ऐसा मेरे गुरु ने मुझे बताया है। चूँकि मैं तो चोरी के अपराध में पकड़ा गया हूँ और मुझे फाँसी की सजा का हुकम भी हुआ है इसलिए जिस व्यक्ति ने कभी कोई चोरी नहीं की वह आगे आए और लोहे को लू कर सोना बनाने में योग दे। किसान, दुकानदार, ठेकेदार, मन्त्री, राजा के छोटे भाई—सभी ने एक के बाद एक उठ कर कहा कि उन्होंने अमुक समय पर चोरी की थी। आलिं-कार राजा से जब लोहे को लू कर सोना बनाने को कहा गया क्योंकि उस के तो कभी चोरी करने का प्रवृत्ति नहीं था।

(क्रमशः)

सम्पादकोय—

# आर्य जगत

वर्ष २६ रविवार २०२२, १३ मार्च १९६६ [अंक ११]

## उत्तम और उपयोगी साहित्य

धर्म प्रचार के लिए जहाँ दूसरे आवश्यक साधनों का प्रयोग किया जाता है, वहाँ उत्तम साहित्य भी विचारों के प्रचार के लिए बहुत ही जरूरी साधन तथा ऋंग है । साहित्य अपना स्थायी प्रभाव डालता है । नाना प्रकार के पूर्व और पश्चिम जगत् के सम्प्रदायों की विचार धारा का प्रसार करने वालों ने इस बात को समझा और अपने सम्प्रदाय के जैसे- जैसे विद्वानों का प्रसार करने के लिए लाखों रुपये व्यय कर के अपना साहित्य निर्माण किया । अपने धर्म प्रचारों को नाना भागों में छपाकर उनको फैलाया । बाईबल इस का प्रमाण है । आज विश्व की अनेक भाषाओं में इस का अनुवाद कर के सब जगह पहुँचा दिया गया है । साहित्य जीवन को प्रभावित बनाने में बहुत भारी साधन माना गया है । बड़े से बड़े का भाषण भी थोड़ी देर से बाद आकाश में मिल जाता है किन्तु वही साहित्य के रूप में लालों तक पहुँच सकता है । आज भारत अपने पुरातन दिव्य साहित्य के कारण विश्व गुरु बना हुआ है । देवता राम-कृष्ण को अमर बनाने में रामायण, महाभारत का ही हाथ है । ऋषियों का दिया उपनिषदों व दर्शनों, महाकवियों का काव्यों, सन्तों का भक्तिरूप, पीरों का बीर पुस्तकों के रूप में दिया साहित्य भारत की सब से बड़ी सम्पत्ति है । आर्य समाज के महान् प्रवर्तक महर्षि

दयानन्द सरस्वती इस रहस्य को जानते थे । तभी उन्होंने इतना शानदार ऊँचा साहित्य धार्मिक ग्रन्थों के रूप में सारे विश्व को दिया । आर्यसमाज के प्रारम्भिक युग में विद्वानों ने बड़ा उपयोगी साहित्य लिखा । उस से धर्मप्रचार शुरू फैला । तब समाज के पास मन्दिर इतने शानदार न थे । संस्थाएँ इतनी विशाल नहीं थी । किन्तु साहित्य के मण्डार भरने वालों की कमी न थी । उस से समाज आगे बढ़ा ।

अब मन्दिर व संस्थाएँ बहुत ऊँची हैं किन्तु साहित्य प्रकाशन की गति बहुत ही मन्द है आज व्यक्तित्व रूप से जितना साहित्य आर्यसमाज के ओजस्वी लेखक भी पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय ने दिया है—उतना कौन दे सकता है ।

आज ऊँचे वर्ग को विशेषकर अंगरेजी पढ़े लिले वर्ग के हाथों में देने के लिए हमारे पास क्या है ? अपनी जनता को देने के लिए भी क्या है ? इधर ध्यान कम है । जितने बड़े र समाज हैं यदि वर्ष में एक या दो लेखकों भी मध्यम-स्तर की कलम र विद्वानों से लिखवा कर अपनी कोर से प्रकाशित करवा कर जनता तक पहुँचाते रहें तो कितना प्रचार हो सकता है ! अकेला पुन का पक्का व्यक्ति क्या नहीं कर देता । जिस ओर चल पड़े उधर ही काम में लग जाता है । भी पं० सातवलेकर जी अपनी ही वर्ष के लगभग आधे में

## एक युग पुरुष की स्मृति

भारत की यह स्वतन्त्रता आदर है किसके कारण ? किसने उठाया बुद्धि से रुढ़ी का कटार आवरण ? किसने भगवान को पत्थर बनाने से बचाया है ? किसने हमें पशु से मानव, अश्वों से दृश्य बनाया है ? किसने ललकारी दासदत्ति, सुल्ल लोगों को उठाया ? किसने मोहलत में प्रकाश, निर्बल में बल जगाया ? किसके कारण प्रेरित और आज हम जीवित हैं ? किसके हेतु न मान सुसंस्कृति का हुक्का चबकित है ? कोई नहीं यह युग पुरुष अमर दयानन्द था । बना मानवता की सेवा जिसका जीवनानन्द था । पाकवहों का खरखन भर किया रुढ़ियों से युद्ध, निःशाय लक्ष्मी, विधवा बनता रहा, बह बीर प्रभुष । होनहार विरवान के हैं होत चिकने पात, तभी छूटा प्रसाद देल रुख रैव बो जागा प्रभात । मानवता वे हेतु शय सिध उसने कोजना चाहा था, समुद्रत ऋषि ने जग हितु मन्त्र कृचना चाहा था । यूँ एक शिव रात्रि को लागी वैधी प्रभात करण थी । मानव हीलत में उठी यही ज्ञान वृक्ष की पण थी । दानवता की रसियाँ प्रभु की सीमाएँ तब टूटी थी, ज्यंघ के काष्ठमन्त्रों में नव रंजित मानवता छुटी थी । आज दयानन्द नहीं आया, ज्ञान रात्रि आई है, उसकी दिव्य प्रभा औँ स्मृत्यु त किरण को लई है । करो प्रण इस शुभ दिवस पर करो ऋषि अनुमरण, देश रचा बरने, रुढ़ीसे हट दूर, हटा देगे भयावरण

—अरुण मरीन

कितना काम करते हैं । आचार्ये विद्वबन्धु जी ने अकेले कितना भारी काम किया व कर रहे हैं । आज होशियारपु जाकर साधु आश्रम में उस विशाल काम को देखकर मनुष्य चकित हो जाता है । एक वर्ष में १२ लाख रुपये के लगभग बजट होता है । सबका अपना-अपना मार्ग है । विदु इन लोगों की विशेषता तथा अथक परिश्रम का मुक्त कंठ से प्रशंसा करनी ही पड़ती है । आर्यसमाज के पास कितने विशाल कालेज हैं, गुरुकुल हैं । किन्तु इनसे कितना साहित्य निकलता है । यदि हमारा अत्येक कालेज अपनी र शक्ति के अनुरूप वर्ष में एक विशिष्ट ग्रन्थ भी अमेज़ी में या यथा रुचि अपने किसी महान् विद्वान् रकारर से लिखवाकर

प्रकाशित करता रहे तो कितना काम हो सकता है ? संस्थाओं के पास धन व विद्वानों की कमी नहीं, पर ध्यान कम है । हमारी विशाल दयानन्द कालेज वेमेट्री का बाथिक बजट लाखों या करोड़ों का होगा, कितना प्रभाव है, कितने रकारर हैं परन्तु साहित्य की ओर ध्यान कम है । यदि यह काम हम नहीं करेंगे तो और कौन करेगा ! यहाँ बात समाजों से कहनी है । हजारों व्यय करके शानदार जल्मों के समारोह होते हैं—पर साहित्य की एक पुस्तक भी तो नहीं निकलती—इसके साधन अगले सप्ताह के लेल में पड़ें ।

—त्रिलोकचन्द्र

# अन्नैर्मा दिव्यः कृषिभित्कृषव्स

(त्रुआ मत लेलो, सेती करो)

(श्री सुरेशचन्द्र जी वेदालकार एम० ए० एल० टी० डी० बी०

फाल्गु, गोरखपुर)



आज भारतवर्ष अन्न की दृष्टि से अभाव का राष्ट्र हो गया है। जिस राष्ट्र में अन्न का कमी हो जाती है, भोजन मिलने की आशा कीया होने लगती है उस राष्ट्र का जीवन अस्त व्यस्त हो जाता है, उसका शारीर क्षीय होने लगता है और वह अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा भी कठिनाई से कर सकता है। संस्कृत में किसी कवि ने कहा है, 'सुमुञ्चतः किं न कीरति पापम्' भूखा मनुष्य क्या पाप नहीं कर सकता? आज हमारे देश में अन्न की कमी को देखकर और इस मनोवैज्ञानिक सत्य को समझ कर अमेरिका अपने पक्ष में हमें लाने के लिये अन्न शान दे रहा है, हमारे मानसिक बल को गिराने के लिए प्रिटेन सहायता करने को प्रस्तुत है, हमारे देश में ईसाई धर्म का प्रचार करने के लिए पाप ने अपनी सहायता दी है और दूसरों से सहायता की अपील कर रहा है। इस तथ्य को प्राचीन भारतीयों ने समझा था और इसीलिए उपनिषदों में अन्न को प्राण माना है। 'अन्नं च प्राणः' अन्न ही प्राण है क्योंकि अन्न से मनुष्य को शारीरिक बल प्राप्त होता है और शारीरिक बल से परमात्मा को प्राप्ति होती है। बलहीन मनुष्य परमात्मा को प्राप्त कर सकता है, बलहीन मनुष्य ने राष्ट्र की रक्षा कर सकता है, बलहीन मनुष्य अपनी स्वतन्त्रता और मान सम्मान को भी नहीं बचा सकता है। इसीलिए उपनिषदों में कहा गया है 'नायमात्मा बलहीनो लभ्यः' यह परमात्मा बलहीन मनुष्य से नहीं प्राप्त होता। 'शरीरमाशं सलु धर्मो साधनम्' शरीर ही धर्म का ऋणा साधन है। उपनिषदों ने शारीरिक शक्ति को आभिवृद्धि के लिए बल दिया है और इसका लक्ष्य 'अन्नं को लुप उपजाओ' को लक्ष्यकोय में रखकर 'अन्नं प्रदा' 'अन्नात् अन्नं बहु कुर्वीत' एवं 'अहम् अन्नं अहम् अन्नम्' आदि कहा है।

अन्न के प्रति हमारी पूर्ण और आदर्शपूर्ण भावना होनी चाहिए। अनाज का एक दाना भी हमें नष्ट नहीं करना चाहिए और न उसका अपमान ही करना चाहिए। अनाज का अपमान भगवान का अपमान है। भगवान को वेद में 'अन्नपति' भी कहा गया है और उनसे अन्न की याचना की गई है। इसलिए अन्न कोने वाले किसान को जेठे-शाकी और दिव्य भावनायव माना गया है। खेत में धेव रखना अत्यन्त आवश्यक है। जब खेत में पड़े बीज के अंकुर निकलते हैं तब उनको बढ़ते देखकर किसान उन्हें अपने पुत्र की तरह प्यार करने लगता है। वह उन्हें देखता है, वह उनकी रक्षा करता है, उनकी वृद्धि वसको प्रसन्न करता है, उनकी क्षति उन्को कष्ट देती है। रघुवंश में ऐसा वर्णन आया है कि पावनी ने अपने सिर पर पानी के चड़े रख कर देवदार के वृक्षों को सींचा, बड़ा किया और बालकों की भाँति उनका पालन-पोषण किया। जब कभी हाथी आदि आकर उनसे अपना शरीर रगड़ते थे और उनकी छाल निकल डालते थे, तब वह दुःखी होती थी। तब शंकर ने खलवाले रत्ने :—

अमुः पुः परवर्षे देवदाहं  
पुत्रोऽज्जेडो यो वृषभयन्नेन ।  
अरे दिलीप ! वह जो क्षमने तु देवदाहं पेश देल रहा है यह शंकर को प्यारा है, यह बात रघुवंश में श्रेय ने बड़े प्रेम से दिलीप से कही है। प्राचीन सनातन हिन्दू धर्म में अनाज के पौधों को ही नहीं बलत्वात, लता, पात्र तथा

# केन्द्रीय आर्य समाजवृत्तर

भी सम्भवकर महोदय !

सदर नमस्ते ! पिछले दिनों अखबर में दिव्यों के दक्षक के सम्बन्ध में गेष्टर लगे हुये देखे गये थे जिन में दो दिव्यों के अर्धनन (सीम करहवा) चित्र देकर लोगों में उनका दक्षक लेलने की लालसा उत्पन्न करने का दुःसाहस किया गया था। जनता ने इस नयी बीमारी को बहुत बुरी दृष्टि से देखा और, वैश्वीय आर्य समाज की ओर से इस के विरुद्ध एक पब्लिक जलसा में प्रस्ताव भी पास किया जिस में इस निलम्बता तथा जनता के आचार पर बुरा प्रभाव डालने वाले कुर्म को बन्द करने के लिये डी. सी. साहिब से प्रार्थना की गई।

अब ज्ञात हुआ है कि दक्षक के प्रबन्धकों ने इस दंगल की आगवनी का कुछ भाग अर्ध विद्यालय विंगलवाका आदि संस्थाओं को देने और कुछ सरकार के रिजर्व फण्ड में देने का ठोस रच कर डी. सी. साहिब से स्वीकृत प्राप्त कर ली है और बापे ही दिनों के पचास अर्ध-विद्यालय के भेदान में यह दक्षक ईशान्य का प्रबन्ध हो रहा है। पहले ही जनता, विशेषतः नौजवानों के आचार को विनष्ट करने वाले कितने साधन बियमान हैं। इन पर यह एक नई बीमारी कितनी भयानक सिद्ध होगी इसका अनुमान लगाना कठिन नहीं है।

अतः आप की सेवा में सविनय निवेदन है कि जनता की आवाज को दृष्टि में रखते हुये इस भ्रष्टाचार की आग को हवा देने वाले कुर्म के विरुद्ध पग उठा कर समय से पूरा ही दक्ष नगीर रोग को रोक दिया जाय।

अक्षय-धर्म  
अभयान केन्द्रीय आर्य समाज  
अक्षयकर

फल तरकारियों में भी मानवी भावना प्रधान की गई है। गर्मी में तुलसी के ऊपर अर्धपेक पत्र से सतत धार डालकर उसे हम गर्मी का अनुभव नहीं करने देते। महात्मा गाँधी के जीवनमें एक घटना आती है कि एक बार बीरा बहुत चुनकी की ताल में लगने के विष नीम के पेड़ की छाँटी रात के समय तोड़ लाई। महात्मा जी ने पूछा 'इतनी खारी पतियों का क्या होगा? पतियाँ तो सुड़ी भर चाहिए थीं। देखो, ये पतियाँ कैसे सो गई हैं? कैसे बन्द हो गई हैं?' रात्रि के समय पतियाँ नहीं तोड़नी चाहिए। लताओं के प्रति, फूल पौधों के प्रति हमें दिव्य मानवी भावना रखनी चाहिए और समझना चाहिए कि रात के समय ये भी सो जाते हैं।' अभिज्ञान शाकुन्तल में शाकुन्तला का बर्णन करते हुए कव्य श्रुति कहते हैं— शाकुन्तला बुझो को पानी विलाये बिना पानी नहीं पीती है। उसे फूल और पत्तों का शौक था। फिर वह उन वृक्षों, लताओं एवं पौधों के पत्ते और फूल नहीं तोड़ती। उस में भ्रमयी शाकुन्तला के विचोय में भ्रामक के पौधों में, लता बेलियों में, वृक्षों में आसु गिराव। रामायण में आवा है कि रामचन्द्र जी को अयोध्या के पाषाण निर्मित प्रसादों की अपेक्षा धन के कुछ अधिक प्रिय थे। उन्हें रामायण में वन कानन प्रिय ! शब्द से सम्बोधित किया गया है। वृष और उल्लेखें सने सम्बन्धियों जेसी लगती थीं। सीता ने अपनी कर्णकुटी के अर्धमास फूल तरकारियों और सम्बन्धियों के पौधे लगाय। (अभयः)

## महर्षि दयानन्द और शिवरात्रि का प्रभाव

(प्रोफेसर एम० आर० शर्मा एम० ए० R.G. कालिदास कन्यादा)



वात सन् १८३८ ई० की है। जब शिवरात्रि की पुरव तिवि पर शिवालय में शैव मत के सभी पुजारी पूजा करते इकट्ठे हुए थे। नया आरम्भ था कि उस समयमूह में से ही एक चौदह वर्ष का बालक शिवरात्रि की महत्ता को और भी चार चांद लगा देगा। लेकिन किसी और उद्य से भारतीय स्वोहारों का आन्ध्याधुम्य अनुकरण करके नहीं आप्तु इन स्वोहारों को घुटभूमि और महत्त्व को पूरी तरह समझ कर।

यदि हम चण भर के लिए मनोवैज्ञानिक का रूप धारण करके एक चौदह वर्षीय बालक का मनो-विक्षेपण करें तो स्पष्ट हो जायगा कि उसके मन पर प्रत्यक्ष रम्यो हुई बस्य का साधारण प्रभाव सत्य्य हो गया। इस निवम से मैं जिस बात पर पहुँचना चाहता हूँ वह है बालक मूलरंकर के मन पर शिवरात्रि की घटित घटना का प्रभाव।

“शिव की मूर्ति तक आते हुए चूहे को उसने देला और मूर्ति के समक्ष रखे हुए प्रसाद को चूहे द्वारा खाते देला तथा उसके प्रति बालक की भद्रता न रही।” जो लोग इन जगदों का अभिप्राय यह करते हैं कि मुझगाइर की शिव के प्रति आत्मा न रही—वे शायद कुछ भूल करते हैं। वहाँ तो केवल शिव की मूर्ति थी—वह पत्थर की थी—त्रिशुलचारी चन्द्र शैलर शिव साक्षात् नहीं थे। खुदपरांत वो लोग प्रतिवाद के रूप में यह कहते हैं कि वह एक साधारण बालक नहीं था, वसे शिव, उसकी रात्रि और काव सभी ज्ञात थे और उसे बतलाया गया था कि पापात्माओं का संहार करने वाले और सद्-जनो को मुक्ति-मदाय करने वाले शिव हैं न्यू बात: हे को दूर भगाने

का सामर्थ्य न देल कर बालक मूलगाइर का मन आस्थाहीन हो गया। किस के प्रति? यह प्रश्न अति गहन है। प्रत्येक व्यक्ति के विचार अलग-प्रलग होते हैं। जो लोग उत्तर देते हैं कि शिव के प्रति अज्ञान न रही—मैं उन से कवई सहमत नहीं हूँ।

मेरे विचार में बालक-की गड्डा मगनाथ शिव के प्रति कम नहीं हुई बल्कि उसमें और भी शक्ति हुई। गड्डा कम हुई तो केवल उस जन-समूह के प्रति जो उस रात शिव-मन्दिर में इकट्ठा हुआ था। वह इसलिए कि जो टोंगी कठिन व्रा रलकर भी उसका पालन नहीं कर सके, वे उसका आरम्भ ही न करते। शिव-मन्दिर में जाकर जागरण करने के स्थान पर सो जाना और फिर प्रातःकाल अन्य लोगों में शीक का डिंदोरा केवल इसलिए पीटना कि उन्हें प्रसाद मिले—ये थे वे कारण जिन्होंने उन के मन में उन लोगों के प्रति दया भाव भरा और शिव के प्रति और भी अधिक अज्ञात का।

वह इसलिए कि बालक मूलरंकर को शिव की शक्ति का पूर्ण परिचय दे दिया गया था, देवताओं में उनका क्या स्थान है—इस बात का ज्ञान भी उन्हें कराया दिया गया था। इस सब बातों का ज्ञान होने पर भी जब बालक ने शिव की मूर्ति पर चूहे को कुदते देला वो सम्भव है—सम्भव ही नहीं सत्य है कि बालक ने सोचा—“इतने शक्तिवन्शी होने पर भी शिव कितने सहनशील हैं जो चूहे मात्र को भी स्वेच्छा उछराने—कुदने का आचर देते हैं। अन्य है उनकी सहनशीलता और भोलापन—तभी लोग उन्हें मोझे शंकर कहते हैं।”

## वर्षिक मेला

निःशुल्क शिवालय का प्रभाव गुरुकुल वेदि, आश्रम, वेदध्यास रात्र केला (कलकत्ता) सुवीच मार्चक महोत्सव १८ फरवरी १९६६ तक

वही वह घटना थी जिसने दयानन्द सरस्वती के बचपन जीवन को बदलकर रल दिया। सहनशीलता का प्रथम पाठ उन्होंने वहाँ से ही सोला और तभी बाद के जीवन में इतने दुःख और शोक सुलनेसे विना ‘शान्य’ तक कहे मेल ली। वहाँ तक कि विश्व ने शालों को भी शमा दान दिया और उन्हें अपने पास से धन देकर जगदी भाग जाने के लिए कहा ताकि चूहे के समान सुच्छ वे पापी भी स्वेच्छा से इस विश्व-मन्दिर में उद्वल कूद लें, चाहे वह स्थान दयानन्द का कल्याणकारी शरीर भी क्यों न हो। चौदह वर्ष की छोटी-सी अकथ्या में शिवरात्रि में घटित इस घटना का कितना गहरा प्रभाव पड़ा उनके जीवन पर कि वह अग्निम सावत तक उसको कायांशित करते रहे।

महान आराम्य जीवन में सीले हुए पाठ को कभी नहीं भूलती आप्तु उसे सीलकर आनु पवनेत उस पर आचरणा करली है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन-सहन शोकाता की प्रतिमा था—पाप-पग पर कट्ट सह कर भी उन्होंने जान-बूझकर कबो को कट्ट देने का कभी प्रयास नहीं किया—लोगों द्वारा किए गए पत्थराव को सह्यन किया, साठियों की प्रार सहन की। जगन्नाथ रसोइये का उद्धार करने के लिए अरते-मरते भी उस पापात्मा का बचाव कर गए और सदा के लिए उस पापी की आँसे खोल गए।

महर्षि के जन्म-दिन से यदि शिवा प्रहृण को आ सकती है तो वह है सहनशीलता का सुन-हरी पाठ।

विश्विन समाप्य हुआ। ५ नवीन बालक गुरुकुल में प्रविष्ट हुए। १८ नवनवासी भादवो को वैदिक धर्म में पुनः प्रविष्ट किया गया। गुरुकुल वैदिक आश्रम में प्रविष्ट प्रसाधारियों को निम्न प्रकार से ज्ञान भूषि का बचच भिजा। १. श्रीमती यशवन्तकौर गोभार, २. श्रीमती सुनीति आर्या, ३. श्रीमती शक्तिदेवी सैनी, ४. श्रीमती मोहनलाल अग्रवाल, ५. श्रीमती कमला चांद (जमशेदपुर), ६. श्रीमती यमुनादेवी शरदानी ने एक पत्र प्रवासी को मासिक व्यय पठन करने का वचन दिया।

उत्सव में भाग लेने के लिए आये हुए निम्न महादुमावो ने सहायना दी। १. श्रीमती कल्मी-देवी आर्या (कलकत्ता) २०१, २. श्रीमती शानिदेवी सैनी (कलकत्ता) १०१ ३. श्रीमती यशवन्तकौर गम्भीर (कलकत्ता) १०१ ४. श्रीमती हरिचन्द्र जी वर्मा (कलकत्ता) १०१ श्रीमती रामकुमार वर्मा (जमशेदपुर) १०१ श्रीमती आंवेती देवी सुराना (राज गांगपुर) १०१ श्रीमती निन्तादेवी गुप्ता (कलकत्ता) ४४

श्रीमती वीरावती बलिवचदेव (कलकत्ता) ५१ श्रीमती सांवीदेवी खेड़ा (कलकत्ता) ५१ श्रीमती सुनीलदेवी आर्या (कलकत्ता) ३१ श्रीमती करतार-देवी (कलकत्ता) २४ श्रीमती विद्यावती शावरवाल (कलकत्ता) २४ श्रीमती कमला चन्द्र देवी (जमशेदपुर) ३१ दान दिये।

इस के अतिरिक्त राजगांगपुर रात्र केला आदि स्थानों से उत्सव पर वंधारे हुए अर-नारियों ने भी अयाशक्ति दान देकर संस्था की सहायता की। उत्सव पर पयारे संस्थादी महारामा और विद्वानों की व्याख्यान तथा अजन गुरुकुल भूषि तथा वेदध्यास मेला भूषि में होतें रहे। आश्रम के पास वेदध्यास और सुवर्ण गांव में सांस्कृतिक अज्ञान का शिवात्मास भी हरिचन्द्र जी वर्मा प्रधान आयसभाज कस-कला के करकुल से हुआ।

—श्यामी प्रधानम्बजी अध्यक्ष आश्रम

**स्वामी सत्यानन्द जी का दिल्ली जाते हुए हर जगह हार्दिक स्वागत होगा**  
**प्रादेशिक सभा की सूचना**

जालन्धर — आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के उपपधान ला० इन्द्रसेनजी ने एक बयान में कहा कि सत्य फतेहसिंह की राष्ट्रीय हित के विरुद्ध पंजाबी सुवा की साम्प्रदायिक भाग और मा० नारासिंह की सिल राय के लिए धमकी तथा सरकार की दखलियत व अनिश्चित नीति के दृष्टिगत पंजाब व सभी देश-हित-धियों के लिए आर्य समाज के प्रसिद्ध सत्यासी स्वा० सत्यानन्द जी ने १५ मार्च से आर्य समाज दीवान हल में मरयाजत रखने का निश्चय किया। आजकल अत्यन्त ही उन्हीं इतनी बड़ी कुर्बानी देने का फैसला किया है। उनका यह हृदय निश्चय था कि दिल्ली में मरयाजत रखने से पहले वह पंजाब के सभी बड़े-बड़े नगरों में जाएँ और जनता को अपनी कुर्बानी देने के कारण बताएँ कि तु आस्वाध हाने के कारण वह ऐसा करने में असमर्थ है इस लिए अब वह अपने आश्रम यमुना नगर से सीधे जालन्धर पधार रहे हैं जहाँ १२ मार्च को जालन्धर की सभी स्थापनाओं की ओर स ५६ विराट सार्वजनिक सभा में उनका स्वागत किया जाएगा और १३ मार्च को प्रातः ५ बजे की गाड़ी से वह सीधे दिल्ली के लिए चल पड़ेगे। ऐसे अवसर पर इतनी बड़ी कुर्बानी देने वाले एक सत्यासी का स्वागत करना हर आर्यसमाजी, सनातन धर्मी, जैनी, सिल हरिजन तथा समस्त देश प्रेमियों (जो पंजाबी सुवा के विरुद्ध हैं) का यह कर्तव्य है कि वह अपने-अपने नगरों व कस्बों के रेलवे स्टेशनों पर जब

**राष्ट्रीय चेतना के अग्रदूत**  
**महर्षि दयानन्द**

लेखक : वेदपथिक श्री पं० धर्मवीर आर्य मंडाधारी, व्याख्यान  
 भूषण नई दिल्ली—५  
 \* \* \* \* \*

(गंगा से आगे)  
 गौरा आन्दोलन का सुन-पात महर्षि दयानन्द जी ने ही किया था।  
 कृष्ण-कृत के भयंकर मृत को हिन्दू जाति से महर्षि दयानन्द जी ने बचाया था।  
 वेद विरोधियों से शास्त्राधी की भूम संचार वेदों का प्रवर्ध प्रचार महर्षि दयानन्द जी ने किया था।  
 भारत की जनता वेद पथ को भूल कर रीय दुःखों में भटक रही थी।  
 विधवा अनाथों की कुरूप अवस्था को देखकर फूट-फूट कर आंसु बहाया था अनेक आश्रम आर्यसमाज की ओर से चल रहे हैं जिसमें हजारों निराश्रित बालकों और बालिकाओं को भोजन, वस्त्र और शिक्षा का सारा प्रबन्ध आर्यसमाज कर रहा है। महर्षि दयानन्द के गुणों का गान किन शब्दों में गाया जाये।

नारी जाति की शिक्षा व उन्नति का सबसे बड़ा श्रेय महर्षि दयानन्द जी को है। आज भारत की प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्द्रा गांधी हैं। इसका सारा श्रेय महर्षि दयानन्द जी को है। आज एक-दो नहीं हजारों कन्या विद्यालय,

पुण्य स्वामी जी की गाड़ी १३ मार्च को गुजरे तो उनका भव्य स्वागत करे और बड़े शक्तिपूर्ण ढंग से स्वागत करते हुए सरकार को बता दें कि वह पंजाबी सुवा की स्थापना के सच्चा विरुद्ध हैं। पुण्य स्वामी जी १३ मार्च को जालन्धर से सुबह ५ बजे ३३८ डाऊन पैसंजर ट्रेन द्वारा दिल्ली के लिए रवाना होंगे। यह गाड़ी लगभग ६.३० बजे शाम दिल्ली पहुंचेगी।

संस्कृत विद्व की समस्त भाषाओं की ज्ञानी है इस के लिये महर्षि दयानन्द जी ने जो कार्य किया है वह स्वल्प-कालों में अकित करने योग्य है।

आज आर्य समाज की ओर से आनेको गुरुकुल, कन्या गुरुकुल, संस्कृत विद्यालय देश और विदेशों में चल रहे हैं। यह सब उस जेक दयानन्द जी की दया का ही प्रतिफल है।

आर्य समाज ने देश के जागरण में जो कार्य किया है वह उल्लेख किन शब्दों में किया जाये, सभी दिशाओं में आर्य समाज ने आगे बढ़कर जो कार्य किया है उस का सारा भारत का स्वर्ण इतिहास है।

महर्षि दयानन्द और वेद प्रचार वेद प्रचार का जो कार्य देश और विदेशों में आज हो रहा है। उस कार्य को करने के लिए आज आर्य समाज के हजारों विद्वान उपदेशक, सत्यासी प्रचारक कार्य कर रहे हैं। मेक्स मूलर ने स्वामी जेक के वेद भाष्य की प्रबल शक्तों में सराहना की है। इस कार्य पर करोड़ों रुपय वाषिक कलंक हो रहे हैं यह सब उस एक योगी का महा तप और त्याग है, जिसका नाम मूल शंकर था।

**महर्षि दयानन्द और वैदिक :**

**साहित्य का निर्माण**  
 महर्षि दयानन्द जी ने मानव को वेद बनाने के लिए धर्म अर्थ, काम तथा मोक्ष सुखी सिद्धि जैसे अमूल्य प्रणय को सिलकर तथा सत्यार्थ प्रकाश जैसे पाथन प्रणय को सिलकर जो देश को भ्रम जाल से बचाया है उसका श्रेणी सारा संसार है। विद्व क मानव समाज महर्षि दयानन्द का आत्सल कृतज्ञ है।

(कथराः)

देश-विदेशों में आर्यसमाज की ओर से चल रहे हैं और लाखों विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करके भारतीय जीवन की विचार धारा को अपना कर वैदिक संस्कृति की रक्षा में अग्रसर हो रहे हैं महर्षि दयानन्द और यज्ञ महर्षि दयानन्द के पूर्व यह के नाम पर बड़े-बड़े पाप और अनर्थ हो रहे थे। यज्ञ के नाम पर पशु और कहीं नरमेघ यह चल रहे थे। पार्ल्ड अविद्या अधकार में लोग भटक रहे थे। वैदिक कर्मकठों का प्रचार पंच महा-यज्ञों का प्रबल प्रचार महर्षि दयानन्द ने किया। आज त्यों नर-नारी प्रतिदिन संख्या और यह कर रहे हैं। अपना जीवन यज्ञमय बनाकर आत्म उन्नति की दिव्य दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। इस का सारा श्रेय महर्षि दयानन्द को है।  
 बाल विवाह और महर्षि दयानन्द बाल विवाह की प्रथा ऐसी चल पड़ी थी कि दुष मुझे बच्चों की शारिर्वा पूजाचार हो रही थी। इस कलंक में हजारों विधवायें नित्य विधमियों के जाल में जाकर देश के लिये अमिश्राप हो रही थी। विधवाओं के कुरूप कन्दन को सुनकर बाल विवाह की प्रथा का प्रबल विरोध महर्षि दयानन्द जी ने किया था।  
 गुरुकुल शिक्षा प्रयासी और महर्षि दयानन्द गुरुकुल प्रयासी का जोष हो चुका था वेद विद्या और संस्कृत के प्रचार के लिये जो कार्य महर्षि दयानन्द जी ने किया था उसे आज सारा संसार जानता है।

साहित्यकार एक और मनुष्य को पलायन और भय से बचने को प्रेरित करता है तो दूसरी ओर युद्धोत्साह और युद्ध लिखने के नरक में पहुँचने से बचाता है। युद्ध के प्रति साहित्यकार के दृष्टिकोण पर भी विष्णु प्रभाकर के विचार, आज जब हम युद्ध की स्थिति से गुजर चुके हैं, पाठकों को कुछ सोचने की प्रेरणा देंगे। यह विचार उन्होंने आकाशवाणी, दिल्ली से प्रस्तुत किए थे।

युद्धकाल में साहित्यकार का कर्तव्य क्या है? यह एक ऐसा प्रश्न है जिसका उत्तर सहसा हो या न में नहीं दिया जा सकता। साहित्यकार सबसे पहले मनुष्य है अर्थात् नागरिक है। नागरिक के नाते वह युद्ध सुविधाओं का अधिकारी है और इसीलिए उस पर उत्तरदायित्व भी आता है। युद्धकाल में उसके भी कुछ कर्तव्य ही हो सकते हैं। वे कर्तव्य आवश्यक नहीं कि उसे साहित्यकार के नाते कुछ करने को विवश करें। नागरिक के नाते वह उन सभी कार्यों में भाग ले सकता है जो युद्धकाल में आवश्यक हो जाते हैं। उदाहरण के लिए वह खाइयाँ खाई सकता है, ब्लैक-आउट में पहरा दे सकता है। यदि स्वस्थ है तो स्वयं सेना में जाकर लड़ सकता है। यानी संकटकाल के दिनों में काम हो सकते हैं वे सब यह एक नागरिक के रूप में करने का अधिकारी है। लेकिन उसके लिए यह आवश्यक नहीं कि वह साहित्यिक के रूप में ही यह सब कुछ करे। प्रश्न यह सकता है कि साहित्यकार और नागरिक, वे क्या दो व्यक्ति हैं? जब वह नागरिक के रूप में युद्ध में भाग लेता है तो उसका साहित्यकार अङ्गण कैसे रहेगा। प्रश्न असंगत नहीं है। फिर भी यह सही है कि साहित्यकार के रूप में उच्च व्यक्ति का दायित्व नागरिक के दायित्व से कुछ अधिक है। आदि काल से युद्ध होते आए हैं, शब्द होते

आकाशवाणी के सौजन्य से

## युद्ध और उसके बाद

(विष्णु प्रभाकर)



भी रहेंगे। किसी को युद्ध लग सकता है, लेकिन जब तक प्रभुसत्ता, राष्ट्रीयता, देशभक्ति और मेरा धर्म ये शब्द हमारे लिए पवित्र हैं तब तक युद्ध से मुक्ति नहीं है। लेकिन इसके साथ ही वह भी सत्य है कि अनादिकाल से ही विश्व के विचारकों का एक वर्ग युद्ध का विरोध रहा है। उन्होंने सदा युद्धबंदीन एक विश्व की कल्पना की है। दक्षिणपन्थी और धर्मपन्थी और मध्यमवर्गीय सभी ने। क्यों कां है? क्योंकि उन्होंने समझ लिया था कि युद्ध में जो निर्दोषी बन्तु हैं वह है हानि पहुँचाने की दृष्टि, अदम्यपुण्या, प्रतिशोध की उधता और प्रभुता जमाने की भावना। युद्ध में सहज विनाश का भय हो ही ही, चेतना में जो अंधे डटे उसके विनाश का भी भय है। चेतना छोड़कर जीन का संरक्षक कहा जाता है? युद्ध की प्रतिक्रियाओं के फलस्वरूप जो विचार परिचय के साहित्यकारों द्वारा प्रतिबिम्बित या अंकित हुए उनका परिचय इस कविता से मिल सकता है --

युद्ध और युद्ध के बाद,  
दोनों एक थकाकर,  
स्वीकार करते हैं शांति,  
किंतु क्या मिलती है मुझे,  
तुम्हें जनता को  
नये-नये टैक्स, हर घर बिचपाण,  
कटे हुए पाँवों की पैराली,  
और कज गैसें पर नागृत सरीला।  
‘महाभारत’ युद्ध का अर्थ  
माना जाता है। लेकिन हम नहीं  
जानते कि युद्ध के विरोध में सबसे  
अधिक दक्षिणराष्ट्राली धर्म कभी लिखा  
गया है। वह युद्ध की व्यवस्था की  
गोता है। हमारा इतिहास साक्षात्

है कि हर युद्ध के बाद धर्म का एक चरण टूट गया है। टापर के अन्त में महाभारत के युद्ध के बाद केवल एक ही चरण शेष रह जाता है। वही तो कलियुग है। और कलियुग को कौन अच्छा मानता है। युद्धों को भी कौन अच्छा मानता है। साहित्यकार तो कभी भी नहीं मान सकता। वह तो सृष्टिक और शाश्वत के अन्तर्गत को मानने वाला है। सृष्टिक पर जीने वाले जान-नीतिज्ञ क नियंत्रण को वह आवे दूँ कर स्वीकार नहीं कर सकता। उसके नियंत्रण पर साहित्यकार को शंका करने का अधिकार है और होना चाहिए। यदि उसे वह अधिकार नहीं मिलता है तो उसकी वही अवस्था होगी जो पार्थिव के साहित्यकारों की हुई।

### जब युद्ध अनिवार्य हो जाए

लेकिन समस्या इतनी आसान नहीं है कि यह कहकर हम मुँह छिपा लें। क्या इस देश का और सारे विश्व का इतिहास ऐसे दृष्टान्तों से नहीं भरा पड़ा है कि विनाशकारी परिणामों और सम्भावनाओं के बावजूद युद्ध कभी अनिवार्य हो जाता है। उस क्षण युद्ध से मुक्ति की बात कहना विश्व पलायन है। जब हम साहित्यकार के शंका करने के अधिकार की बात को मानते हैं तब हम उसे पलायन करने को आज्ञा नहीं देते। क्या कृपा ने महाभारत के युद्ध को रोक्ने की कोशिश की थी? केवल पांच गाँव सांगने के लिए वह स्वयं दूत बनकर कौरवों की सभा में गए थे। सीता को वापिस लाने के लिए क्या राम ने बार बार अल्पमान सहकर भी रावण की सभा में दूत नहीं भेजे थे। पिछले ही

विश्वयुद्ध में जिस व्यक्ति को सब से अधिक आलोचना की गई उस चैम्बरलेन ने इस विनाशकारी युद्ध को रोकने के लिए क्या नहीं किया था। वह आत्मसमर्पण की नीमा तक पहुँच गया था, लेकिन फिर भी आलोचना का दुराग्रह अक्षिण रद्द और विश्व-युद्ध के विजयी बोद्धा बर्बल का प्रादुर्भाव हुआ। रूस भी तो विवश होकर ही उसमें आया था। आज ये सब देश युद्ध की विभीषिका से पूरी तरह परिचित हैं, जबलिये उन के प्रथम युद्ध रोकने के लिए ही हैं। भारत तो सदा शांतिप्रिय रहा है। युद्ध से बचने का उसने सदा प्रयत्न किया है। लेकिन युद्ध ने बचने का अर्थ नसकता आकार करना नहीं है। कायर हाना नहीं है। प्रायत उद्देश्य के लिए उचित युद्ध भी धर्म हो जाता है। हम से कम तब तक के लिए वह निरवय ही धर्म है जब तक हम प्रभुसत्ता, राष्ट्रीयता और देशभक्ति से मुक्ति प्राप्त, अस्वस्थ मानवाता को स्वीकार नहीं कर लेते। किसी एक देश स्वीकार करने से काम नहीं चल सकता। सम्पूर्ण विश्व को ही इसे स्वीकार करना होगा। एक या देश उससे आजग रहता है तो युद्ध से मुक्ति नहीं है। तब हमें गाँवों की के शब्दों में कायरता के स्थान पर हिंसा को स्वीकार करना होगा। उन्होंने कहा था : मैं चाहता हूँ कि भारत कायतरापूर्व दृष्ट से वैदव्यती का अस्वास्थ्य शिकार बने या बना रहे, इससे अक्षरक यह है कि वह आपनी जान की रक्षा के लिए शस्त्र तब का प्रयोग करे। मैं नहीं कहता कि भारत पर आक्रमण करने वाले राष्ट्रों के साथ हिंसा सब कर्त। युद्ध में भी कहा था, ‘जा दशक का पात्र है। उसे दृष्ट दिशा ही जाना चाहिए। तथागत की शिक्षा यह नहीं है कि जो लोग शांति बनाए रखने का कोई उपाय शेष न रहने पर, धर्म के लिए युद्ध करते हैं, वे दोषी हैं।’ (कर्मशः)



**वैदिक डायजेस्ट**

(इंगलिसा में)

मासिक पत्रिका — वार्षिक चन्दा ६/- विदेशों से १०/- एक प्रति का मूल्य—६० पैसे प्रकाशक — जयदेव भास्कर आरम्भाराय पण बहोवा—१

पत्रिका— २० X ३० क आकार पर १६

प्रति मास प्रकाशित होती है। शुद्ध वृष्ट बहिया देरे रंग का। इसारे पाठ जनवरी फरवरी १६ का अंक बौद्ध है।

विषय सूची से ज्ञात हो जाता है कि अनुपम की आरम्भोन्नति के लिए हर प्रकार की सहायता का समर्थन किया गया है। ज्ञान पीपासा को शांत करने के लिए यह पत्रिका अनुपम साधन है। तथा अति उपयोगी होने के नते सख स्कूलों कालिजों में भेजने योग्य है। प्रत्येक पठित व्यक्ति के मनन-योग्य है।

**दयानन्द ब्राह्म महा-विद्यालय हिसार के समाचार**

यह विद्यालय वैदिक धर्म के प्रचारार्थ दयानन्द कालिज प्रबन्ध-कर्त्री सभा चित्रगुज सारंगी नई दिल्ली की देख-रेख में दस वर्ष से चल रहा है। यह विद्यालय देरा बन्दवारे से पढ़ने लाहौर में २१।

प्रसिद्ध लिमिटेड कम्पनियों में

**फ़िक्सड डिपोज़िट्स (FIXED DEPOSITS)**

12% वार्षिक व्याज तथा 1/2 से 6% तक कमीशन भी प्राप्त करें। मिले अग्रथा लिखें—

**DEWAN & CO., Fixed Deposit Agents. Rly. Road. Opp: Rest House. SONEPAT**

जिससे सुखी उपदेशात्क वषं के भिन्न-भिन्न प्रातों वैदिक धर्म का प्रचार कायं बड़ी योग्यता तथा सफलता के साथ कर रहे हैं। केरल में दो हजार ईसाई युद्ध किए हैं। इस विद्यालय में तीस विद्यार्थी हैं जिनको दूरान, व्याकरण, संस्कृत, साहित्य तथा तुलनात्मक वैदिक सिद्धान्त पदाने के लिए तीन अध्यापक हैं।

विद्यार्थी चिन्मिन्न प्रान्त-वासी हैं। यथा आन्ध्र प्रदेश, केरल, मद्रास, मैसूर, बंगाल, बिहार तथा पंजाब।

विद्यार्थियों का सकल व्यय भार विद्यालय पर ही जो लगभग चार हजार २० मासिक है।

जिसको दानी महागुभाब ही पूरा करते हैं। और जिसके संग्रह का भार अपने पृथ्व श्री ला० ज्ञानचन्द्र जी पण. प. आचार्य ही के ऊपर है।

विद्यालय का प्रवेश वर्ष जुलाई मास से प्रारम्भ होता है। अर्जल मास में वार्षिक परीक्षा होगी।

दानी महागुभाबों को इस और विशेष ध्यान देना चाहिए।

—मुरारीलाल शास्त्री ढप्याचार्य विद्यालय

**आर्यजगत रोहतक के समाचार**

१२ फरवरी १९६६ (१ फाल्गुण) को आर्य केन्द्रीय सभा रोहतक के तत्वावधान में सम्मिलित रूप में श्रव्य बोधोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। रोपहर को नगर कीर्तन किया गया तथा रात्रि को आर्यसमाज अञ्जोर रोड के पंढाल में सांवेदेशिक आर्यवीर दल के सेनापति भी कोदेम प्रकारा जी दयागी का कर्तिकारी भाषण हुआ। १८ फरवरी को सब समाजों में यह वर्ष धूमधाम से मनाया गया

वर्षगात्री की शोभा रकी गई। रोहतक से १०। मौल दयानन्द प्राम में दूसरी कक्षा में पढ़ने वाली अननद प्रामोया माता पिता की पुत्री भचल कुमारी अपने दो जनों का प्रभुत्वारी है। पहला लाहौर (मुरारी) के सुखलमान के यहां दूसरा पानीपत के यहां ग यादर के रूप में २२ वर्ष की आयु में पेट दर्द के कारण मीत होना बवाती है। अपने पूर्व जन्म के भाई का नाम योगेश्वरनाथ तथा बहिनो-का नाम कैलाश व दर्शना बगौटी है। एक भाई व बहिन लुधियाना के झूजा परिवार में तथा दूसरी बहिन दिल्ली के चावला परिवार में विवाहित हैं। प्यारेलाल नागपाल पानीपत से कहीं और चला गया है। यदि किसी सचजन को उपरोक्त परिवार का कुछ ज्ञापना मादुम हो तो कृपया हमें सूचित करने का कष्ट करें।

आर्यसमाज प्रधान सोहल्ला की यह सभा भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के वीर सेनानी अमरवीर श्रीयुग विनायक दामोदर सभरकर के अकाल निधन पर हादिक शोक प्रकट करती है तथा उस महान वीर के वीरोक्ति कृत्यों की सराहना करती है।

परमानन्द 'विद्यार्थी' प्रयाग मोहनका, रोहतक

**आर्य समाज संवदा पूर्व निमाड़ (म. प्र.) वार्षिक निर्वाचन**

प्रधान—श्री भी.एस. अंबारी साहिब उपप्रधान—श्री रामकृष्ण जी पालीवाल, श्री रामचन्द्र जी आर्य। मन्त्री—श्री डा० अश्वर कुमार जी वर्मा। उपमन्त्री—श्री कुपाराम जी आर्य। प्रचारमन्त्री—श्री केलाल चन्द्र जी पालीवाल कोषाध्यक्ष—

श्री वं. हरिश्चन्द्र जी तिबारी पुस्तकाध्यक्ष—श्री रमेश चन्द्र जी रामां निरीक्षक — श्री अन्नन्त रायकर को० उ अन्वरण सरस्व निर्वाचित हुए।

**दलितोद्धार समिति का निर्माण**

श्री रामचन्द्र जी आर्य व दलितोद्धार समिति निर्माण और उसके लिए विद्यमान उपायन के क्रियायें की जायें जायें। एक धर्मार्थ क्रीयापालय भी खोलने का सुप्रयत्न दिया गया।

चुनाव समिति इस प्रकार बनावी गई— श्री व, हरिश्चन्द्र जी तिबारी। श्री सेठ कन्दैयालाल जी लखेवाल, श्री रामचन्द्र जी आर्य, श्री पूरुमचन्द्र जी आर्य, श्री बालाराम जी आर्य।

**श्रुषि-बोध दिवस शिशारात्री**

आर्यसमाज संवदा पूर्व निमाड़ में दि० १८-२-६६ को श्री रामकृष्ण जी पालीवाल उप-प्रधान आर्य-समाज की अध्यक्षता में दयानन्द बोध-दिवस एवं शिशारात्री पर्व मनाया गया। शान्ति पाठ के बाद कार्य-क्रम समाप्त हुआ।

—कैलाशचन्द्र पारसीबाबू मन्त्री आर्यसमाज, लखवा

**पठनीय एवं मननीय साहित्य**

वेद प्रबन्ध ५/- मोतासार ७५ पैसे, ज्ञानमयीर के पत्र १/-वेदारम्भ सूक्तर १/५० पैसे, मेरी आठ रोचक कहानिया ७५ पैसे, लोकट ७५ पैसे, सङ्कलिते जीवन् ५० पैसे, कर्म मीमांसा २/२५ पैसे, तदति नियमन क्यो वीर कौसे १५ पैसे, वैदिक व्याकरण मास्कर १/- व्यापम कोषक पत्र ११/२० पैसे, साहित्य प्रचारक १/- जयदेव ब्रदस बड़ोदा—१



टीकीकोन नं० ३०३०

[आर्यभादेशिक प्रतनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र]

Regd. No. P.

एक प्रति का मूल्य ११ नये पैसे

वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६ अंक १.)

७ चैत्र २०२२ रविवार—वयानन्दाब्द १४१-२० मार्च १९६६

(सार 'प्रादेशिक' जाण्ट

## वेद सूक्तयः

**अयं लोकः प्रियतमः**  
अयं-यह लोक-ससार कायथा शरीर तो प्रियतम बड़ा ही प्यारा है। यह जगत् मिथ्या की एक झुंड नहीं है। स्वप्न या कल्पना नहीं बरन मीठा स्वा प्यारा है। यह जीवन की बड़ा सचुर एवं व्यथा है। इसे बेकार नहीं समझना चाहिए।

**मा पुरा जस्तो सृषाः**  
ब्रह्म-सृष्टि से पुरा-पुर्व मा सृषा-स्रव सर। हे मानव! इस मानव जीवन जैसे भीते प्रसाद को प्राप्त करने दुःशापा से पहले न सर। पूरी श्रायु योग कर जाना चाहिए। प्रयत्न किबा जावे कि श्रमो से स्वामी श्रायु हल भोग सबे।

**निरवोचं शतं रोपीः**  
आत्मविश्वास के अन्तरे पर मैं शत-शतकों रोपी-नीचाओं को, बाधाओं व दुःखों को निरवोचम्-दूर कर देता हू। मैं इन से पच-राने वाला नहीं हू। वे श्लाघी हैं पर मेरे दर्जा को रोक नहीं सकते।

**मा ते प्राण उपदस्मन्**  
हे मानव! ते-तेरा प्राण-जीवन प्राण मा-मत उपदस्मन्-विनाश को शायद हो। मेरी प्राण शक्ति कमजोर न बने। कलसा मे दुःखसा व श्लाघे पावे। प्राण शक्ति से सदा भरपूर रहू।  
आय व वेद से

## वे दा सृ त

### राजा व शासक कैसा हो

स्वस्तिदा विशांपतिवृत्रहा विमृशो वशी।  
वृषेन्द्रः पुर एतु नः सोमया अभयंकरः ॥

अयं वेद काठ प्रथम सूक्त २१ मन्त्र १

अर्थ—राजा या शासक (स्वस्तिदा) कल्याण का देने वाला (विशांपति) प्रजाओं का पालन, रक्षक स्वामी (वृत्रहा) वृत्रो-सन्तुओं का नाशक (विमृशः) दुःस्वप्नों को कुचल देने वाला तथा (वशी) अपने पर व सब पर वश करने वाला हो। शासक (वृषा) मुल की वर्षा करने वाला (इन्द्र) इन्द्र राजा (पुर) हर स्थान व वात में आगे (एतु) चले (न) हूयावे (सोमया) प्रभु भक्ति का सोमपान करने वाला (अभयकर) सबको अभय कर देने वाला होवे।

भावार्थ—राज्य के शासन के ऊंचे आसन पर हर एक को नहीं बैठना या बिठाना चाहिए। प्रत्येक कार्य के लिए उस कार्य के जाटा की आवश्यकता होती है, तभी काम चलता है। राज्य का काम तो बहुत बड़ा कार्य है। उसे सम्भालने वाले शासक मे विशेष गुण तो होने चाहिए। वेद में राजा, शासक या राज्य को सम्भालने वाले के मन मे नौ गुण बताये गये हैं। शासक सबका कल्याण करे, सबकी रक्षा करे, शत्रु का दमन करे, राष्ट्रवासियों को कुचल दे, आत्म-विश्वो ही, प्रभु भक्त हो, वीर बन कर राज्य को निर्भय बना दे, सुखदायक हो, लोभी न हो। ऐसा राजा ही शासक बन कर राष्ट्र को बना सकता है।  
—सम्पादक

## श्रापि दर्शन

सत्य न्याय प्रकाशकान्  
जिनके जीवन में सत्य है, जिनको सदा सत्य से प्यार है, जो अपने जीवन के आचार-विचार व प्रकृता से प्रकाशित होकर दूसरों को परममाने वाले हैं। सत्य प्रेमी, न्याय प्रिय होते हैं। प्रत्येक काम में लक्ष्य प्रविष्ट हैं—

### सर्वहितं चिकीर्षुः

जो सम्पन्न हैं, सारे राक्षस की प्रजा का सदा द्विष्ट करने वाले हैं। कपसा ही स्वाय विद्व करने वाले नहीं बरन सारी प्रजा के हितैषी बनकर सचका भला करते हैं। द्विर्वचिनक बनकर परसेवा में लगे रहते हैं—

### धर्मात्मनः सभासदः

समाजों के हर प्रकार का-कारी बनावे, राष्ट्र क ऐसे-ऐसे कर्मिकारी बनाने चाहिए जो धर्मिया हों। जिनके जीवन में सत्य धर्म का प्रेम हो। जिन के प्रत्येक काम में धर्म प्रमुख होता है। किसी भी प्रसंग में जाने वाले न हों। धर्मो होंमें वे सदाध बनने।

भाष्य मू कि का से

# राष्ट्र-भक्ति और प्रभु-भक्ति-१५

(श्री महात्मा आनन्द स्वामी जो महाराज की अमृतभरी कपा)



गत पांच दिनों में मैंने कथक्के-वेद के बारहवें कांड के पृथ्वी सूक्त का लक्ष्य किया है जिस में माह भूमि के गुणों का वर्णन है। माह-भूमि की रक्षा कैसे हो? दान कैसे किया जाए, गुह्र भक्षण कैसे किया जाए? आदि इस सूक्त में ६३ मंत्र हैं। कोई देरा-परेरा बलिदान के विना सुखी नहीं रह सकता। स्वराज्य का मुख्य बुधानाही पदता है। हम ने भी अपने स्वराज्य का मूल्य चुकाया लेकिन वह अपेक्षा-कृत योद्धा था। ठीक है कि माताओं ने बच्चों ने, जवानों ने जवानियां, पनवानों ने धैलियां दीं लेकिन यह पूरी कीमत नहीं थी। अब यह छोड़ा करनी ही पड़ेगी इस के सिवा कोई चारा नहीं है।

सेवा देश की कमनी बड़ी श्रीली गलज्ज करनियां देर सुखलियां ने प्रथम का अर्थ है ज्ञान, विज्ञान का प्राप्त करना लेकिन वैसाही कैसे हो, जवानों को कैसे तैयार किया जाए। हमें आज अकेले जवानों को ही तैयार नहीं करना लेकिन देवियों को भी ऐतिक रूप से तैयार करना है। सारे देश में ऐतिक अनुशासन होना चाहिए, लेकिन हो क्या रहा है, कहीं भाषा का भगड़ा कहीं प्रवेश में भिन्न प्रकार की भाषियां बोली जा रही हैं। हमारे देश में अनेक धर्म हैं, सम्प्रदाय हैं, मतमतंतरे हैं, लेकिन इन सब के बावजूद हम सब को एक परिवार के समे आईयों की तरह रहना है। इन्हीं की नाना प्रकार की धाराओं, सुख-सम्पत्तियों दूध रसलं की रक्षा तभी सम्भव है जब हम समे आईयों की तरह रहेंगे। अन्न-राज्य का निर्माण, सेती-बाड़ी ऐतिक वैसाही-यह सब कुछ विज्ञान बढ़ाता है। विज्ञान का यह रूप भौतिक ज्ञान है उप-निषदों में भौतिक ज्ञान को अविद्या कहा गया है। अविद्या, शोक, शिवा को दूर करती है। ज्ञान से

अभिभावः अध्यात्मिक ज्ञान से है। इस ज्ञान के द्वारा मानव यह सम्पन्नने को कोरिारा करता है कि मैं क्या हूँ, कहां से आया हूँ और किस लिए आया हूँ। इस ज्ञान को प्रथम ज्ञान का नाम भी दिया जाता है। प्रथम ज्ञान की प्राप्ति के लिए आत्मा और शरीर दोनों का टीक होना आवश्यक है। शरीर की रक्षा तब तक की जानी चाहिए जब तक इस में आत्मा है। 'आत्म' की व्याख्या उपनिषदों में पति, पानी, बहन, माई, पानी इत्यादि सभी सुख पहुंचाने वाली वस्तुओं के नामों से की गई है। चावल, गेहूं ही अन्न का अर्थ नहीं है। भौतिक ज्ञान को प्राप्त करके हम भौतिकवादी प्रवृत्तता पाते हैं। जीवनमें भौतिकवादी प्रवृत्तता भी नितान्त आवश्यक है लक्ष्मी के विना नारायण का गुजारा नहीं चलता। यदि आप यहां लक्ष्मी का बास चाहते हैं तो यह करना चाहिए, वेद मंत्रों का पाठ करना चाहिए। जहां यह दोनों बातें होंगी वहां नारायण भी पधारेंगे। लक्ष्मी का स्थायी रूप से वास नहीं होगा वहां नारायण होंगे। हे मानव यदि तू धन के लिए चाहता है तो यह कर। धन की लिए भी यह होते हैं। धनी वही बन सकता है जो इन्द्र, प्रजापति सवित, सौम्य और अग्नि के गुण प्राप्त करे। इन्द्र से अभिभावः है कि निर्धनों की रक्षा करे। राक्षसों का संहार करे। प्रजा के पालन करने वाले को प्रजापति कहते हैं। सविता का अर्थ है जो कोई सम्पर्क में आए उसे प्रेरणा दे साहज बदार, सौम्य का अर्थ है कि स्वभाव में क्रोध न हो, मन प्रसन्न रखे और चेहरे पर भी आनन्दपूर्ण न लाय। अथर्ववेद में कहा गया है कि अपनी अग्नि

आयु और शरीर को सुन्दर रखना चाहते हो तो दाढ़ी मूँछें सब मरखवा दो। अग्नि की व्याख्या इन शब्दों से की गई है कि चारों कोई ताम उठाए वान पर अग्नि जलती रहे। अर्थात् दू अपना कर्म किए जा तू यह मत सोच कि इसका फल क्या होता है। उपरोक्त पांच गुण आत्मे से ही, आत्मा ही बनवान बनता है। लेकिन हमारे शास्त्रों में धन की निन्दा भी की है। यह सब साया है जो साधु महात्माओं को भी टग लेती है। धन की निन्दा का एक बड़ा कारण यह है कि इसका दुरुपयोग होता है। जैसे आज कल अमरीका धन का प्रयोग कर रहा है। वह रुपये से संसार को लखीदना चाहता है। याद रखो! अमरीका इंगलैंड वालों ने आज संसार में जो रवैया अपना रखा है वह अत्यन्त भयंकर है योही देर बाद यह संसार में भीव मानते नजर आयेंगे। इंगलैंड का सर्व हूट गया है अमरीका का भी वही हाल होगा। धन का दुरुपयोग बहुत बुरा है। किसी विषय में एक रोगी को सुझाव दिया कि वह पुराने गुड़ से दवा का सेवन करे। रोगी एक दुकानदार के पास गया और बोड़ा पुराना गुड़ मांगा। दुकानदार ने उत्तर दिया कि मैं सब को बोझ-बोझा गुड़ देता रहता तो मेरा यह गुड़ पुराना क्यों होता इस पुराने गुड़ को तो चार गुणा भाव लगेगा। यह है एक कज्जल मनोवृत्ति का उदाहरण। मैंने बिलार से प्रथम ज्ञान का लक्ष्य किया। हमें भौतिक और अध्यात्मिक दोनों प्रकार का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। इसके आगे जाता है यह, इसके अन्त-

गत देव पूजा की जाती है। वह एक वैज्ञानिक विधि है। जो और सामग्री भाग में अकारण वातावरण को पवित्र बनाया जाता है, बिलारों को इकट्ठे किया जाता है। यह से हमें विनम्रता का संचार होता है। यह हमें दान करना सिखाता है। दान का अर्थ है धन का उपयोग। जहां आनन्द-व्यवस्था हो वहां लक्षं कर। हमारे देश में सपासी हैं। संवास का अर्थ है स्वाग। पवित्र बनवान बनें फिर स्वाग करो। परमात्मा यह नहीं कहता कि संवार का भोग न करो। यह कहता है कि अच्छे ढंग से खाओ लामो। किसी को दुखी मत करो। सहयोग और सहकारिता का ढंग अपनाओ। आगे एक कमला था, सभी खाते थे। अब सभी खाते हैं फिर भी पुरे नहीं पकते। कारण यह है कि इतने अपना आवश्यकताओं को बढ़ा लिया है। आज चाव ही हमारी एक बहुत बड़ी आवश्यकता हो गई है। मुझे एक घटना याद आती है मैं कदापि मेज में सकर कर रहा था। सामने की सीट पर एक देवी अपने पिता के साथ बैठी थी। अचानक उस लक्ष्मी के चेहरे का रंग पीला पड़ने लगा और देखते ही देखते वह बेहोश हो गईं। मैं बहुत विचित्र हुआ और लक्ष्मी के पिता से पूछा कि ये क्या बात है, लक्ष्मी बेहोश क्यों हो गईं? वह कहने लगे कि क्या बताएं इस देवारी को आप न भिंते तो उसकी तबीयत खराब हो जाती है। मैं यह सुनकर बहुत हैरान हुआ। हे मेरे भगवान आप न भिंते तो उसकी तबीयत खराब हो जाती है। प्रभु की कृपा से जल्दी ही अनाले स्टेशन पर गाड़ी रुकी और मैं टी छटा से भाग कर वाप लेकर आया और लक्ष्मी का मुंह दबाकर उसके मुंह में चाप डाली गई। जैसे ही रो पूट लक्ष्मण गप लक्ष्मी स्वयं होकर बैठ गईं। (कमराः)

सप्ताहकीय—

# आर्य जगत

बर्ष २६] रविवार २०२२, २० मार्च १९६६ [अंक १२

सैंसर लग जाने के कारणा  
लेख नहीं दिया जा सका

## रायसाहिब श्रीमचन्द्र जी

श्री-श्री मजीठा आर्य-समाज के प्रेमी मन्त्री श्री सत्यपाल जी के प्रेम से बर्षा जाकर सभा की ओर से प्रचार का अवसर मिला। साथ में सभा की प्रसिद्ध मंडली पं. जगतराम जी बत्तीराम जी थी। प्रचार तो हुआ ही। बर्षा कन्या पाठशाला का काम देखकर भी प्रश्नचूना हुई। सबसे बड़ी बचन भूलने वाली बाल तो यह है कि बर्षा पर ६३-६४ वर्ष की आयु में भी आर्यसमाज व सभा के लिए अपने दिल में भारी तल्प रखने वाले रायसाहिब श्रीमचन्द्र जी के दर्शन तथा घण्टों उनके पास बैठकर समाज के कामों के बारे में विचार विनिमय हुआ। रायसाहिब स्वर्गीय महात्मा इं-स-राज जी के परम शिष्य पंचम अग्रगण्य भक्त हैं। सभा के बड़े प्रेमी तथा आर्यसमाज के हीबाने हैं। आज भी समाज में इन जैसे हीबानों का दर्शन करके प्रेरणा मिलता है। हीबान बटरीदासजी, ड० हीबानचन्द जी कानपुर, हीबान अलखचारीजी, डा. नारंग जी के युग के हैं। बाँते तथा समाज को उनका दिया सन्देश तो फिर लिखा जायगा। ऐसे समाज

के अनन्य हीबाने के दर्शन व बातों से जीवन में बहुत कुछ मिलता है। —६—

## आवरसकता है

एक सुयोग्य उपदेशक की आवसकता है जो कि प्रचार के काम के कतिरिक्त आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, दिल्ली के कार्यालय को भी सम्भाल सके। वेतन योग्यता आर इतुमव के आधार पर दिया जावेगा। दिल्ली या दिल्ली के समीप रहने वाले महानुभाव को प्रधानता दी जावेगी। प्राथम्यता पत्र निम्न लिखित पने पर आने चाहिये।

कृप्याचन्द्र रहन

प्रधान—आर्य प्रादेशिक प्रति-निधि उपसभा मार्फत जे-३४

साऊथ एक्स्ट्रीम-१

नई दिल्ली—३

## आर्यसमाज खंडवा पूर्व निमाड़ (म. प्र.) में

होली उत्सव पूर्व

आर्यसमाज खंडवा पूर्वनिमाड़ में दि० ६-२-६६ रविवार को भी सेठ चन्दीयालाल जी खन्डेलवाल के निवास स्थान पर श्री श्री ० एब० भंडारी प्र० जि० आ० सं० की अध्यक्षता में होली पर्व आदर्श रूप में मनाया गया। सायंकाल ६। बजे से पूर्व पद्धति अनुसार बृहस्पति किया गया।

दि० ७-२-६६ सोमवार को प्रातः ६। बजे से १०१ गायत्री मन्त्रों की आहुतियों के साथ यह की पूर्णाहुति हुई।

कैलाराचन्द्र पालीवाल  
मन्त्री समाज

आर्य जगत में  
विज्ञापन देकर  
लाभ उठाएं

गतांके से आगे  
वह उन्हें गोदावरी के पानी से  
धीवती थी। आजा राष्ट्र के संकट  
के समय सोता और शकन्तला की  
अनुयायी भारतीय महिलाओं को  
भी चाहिए कि वे अपने घर के  
चप्पे चप्पे भूमि के टुकड़ों पर  
सन्निवाह आदि उगाये और उन्हें  
पुत्रों के समान ग्रिय मानें। उनके  
प्रति रबी गई सदभावना और  
अपनत्व का फल वे कई गुणा कर  
के देंगे। अग्नेय के १०१०११८  
मंत्र में कहा गया है:—

सीरा युञ्जन्ति कवयो युगा  
वितन्वते पृथक् । धीरा देवेषु  
सुभया ॥

पेशवाली बुद्धिमान किसान  
दिव्य विभूतियों में उत्तम मन  
रत्नकर हल जोतते हैं और जोड़े  
अलग अलग जोते हैं। उस समय  
राष्ट्र में लहलहाते खेत दृष्टि गोचर  
होते हैं। जो सब का कल्याण  
करते हैं।

सचमुच विचार करते पर पता  
चलेगा कि किसी भी राष्ट्र का  
आधार व्यापार, सद्दा और कल-  
कारखाने उनकी मात्रा में नहीं है  
जितनी मात्रा में कृषि है। अतः  
वेद में बड़े भाव भरे शब्दों में  
किसानों से अन्न उत्पन्न करने की  
अपीली की गई है। वेद में मनुष्यों  
के संबोधित करते हुए कहा  
गया है—

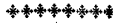
अर्षेभोदिव्यः कृषिभित्कृषस्वः ।

अर्थात् जुआ मत खेले। खेती  
कर। आजा भी तो अपने राष्ट्र  
के लिए। उसकी स्वतन्त्रता के लिए  
हमारे प्रधानमंत्री स्वर्गीय लाल  
बहादूर शास्त्री ने 'जय जवान'  
के साथ 'जय किसान' का नारा इसी  
भाव से लगाया था। सचमुच  
आजा हम सभी अथर्ववेद के  
३१९७२ मंत्र के अनुसार अपने  
किसानों से कहेंगे—

## अक्षैर्मा दिव्यः कृषिभित्कृषस्व

(जूया मत खेले, खेती करो)

(श्री सुरेशचन्द्र जी वेदालंकार एम० ए० एल० टी० डी० बी०  
कालेज, गोरखपुर)



युनस्त मीरा विभुया तनोत

कुने योनी वपनेद् बीजम् ।

विराजः श्रुष्टिः सभरा असन्नो

नेदीय इत्युत्थः पक्वमा ववना ।

अर्थात् हे विशेष शक्ति वाले  
किसानो! हलों को जोतो! जुओं  
को फैलाओ, लकीरें बनाने  
पर यहाँ बीज बोओ जिस से  
हमारी अन्न की उपज भरपूर  
हो। हमारे हँसुर या अन्न काटने  
के सान कच्चे और अपरिपक्व  
अन्नों को न काटो।

हमारे देश में अन्न की कमी  
सरकारी आँकड़ों के अनुसार केवल  
२ प्रतिशत है। यदि भारतवर्ष की  
जनता और विशेष कर हमारे देश  
के कृषक इस कमी को पूरा करने  
के लिए हृदय से साधधान होकर  
जुट जायें तो हम अन्न के मामले  
में पराधीन नहीं रहेंगे। हमारे  
किसान उत्तम बीज को समय पर  
बोयें तथा उनकी खाद आदि की  
उत्तम व्यवस्था करें और जनता  
तथा सरकार का उन्हें सहयोग  
मिले तो यह निर्विवाद है कि हम  
खेती की संख्या में वृद्धि कर सकेंगे।  
अर्थात् जिन खेतों में हम एक या  
दो फसलें काटते हैं वहाँ तीन  
फसलें काट सकेंगे। यही अन्न की  
शीघ्र प्राप्ति का भाव है।

वैदिक अपने लुट से और

किसान अपने पसीने से राष्ट्र की  
रक्षा करते हैं। परिश्रम के साथ-  
साथ खेती में आने वाली बाधाओं  
और इनको हटाने वाले  
कृषि, चूड़े आदि से भी हमें  
साधधान रहना चाहिए। वेद  
में कहा है:—

पृथिः सेविषकषामान्तरा

जक्याभित्स्वदन् ।

श्रमेयानह्वान् कीज्ञात

कीनाशाहभित्कृषः ॥

अथर्व ३१११०

अर्थात् अपने पावों द्वारा  
विनाश को करने वाले चूड़े कीड़े  
आदि कृषि नाराज जन्तुओं को  
पराजित करता हुआ और जोंधों  
द्वारा अन्न को ऊपर करता हुआ  
अर्थात् परिश्रम से अन्न उत्पन्न  
करता हुआ, बैल और परिश्रम के  
साथ खेती करने वाला किसान ये  
दोनों उत्तम अन्न-पान को सब  
प्रकार से प्राप्त करते हैं। जिस राष्ट्र  
के किसान परिश्रम करना छोड़  
देंगे और जहाँ के बैल कमजोर  
और निरुमे हो जायेंगे उस राष्ट्र  
का उत्थान न हो सकेगा। इसलिये  
राष्ट्र के किसानों। परिश्रमी बने।

किसान देव हैं। देव उसे कहते  
हैं, जिसमें दिव्यता होती है। श्रेष्ठता  
होती है। किसानों से बढ़कर कौन  
श्रेष्ठ है? राजा उनसे जीता है,  
व्यापारी उन पर निर्भर है, द्वात्र  
धर्म का रक्षक सैनिक उन पर  
आश्रित है, ज्ञान का नेता ब्राह्मण  
के जीवन दाता किसान हैं। किसान  
देव हैं। किसान राष्ट्र के जीवन हैं  
और जब वे राष्ट्र रक्षा के लिए  
सन्नद्ध हो जाते हैं तो विजय  
निरिचय हो जाती है। अथर्ववेद  
के एक मंत्र में राष्ट्र निगरियों को  
संबोधित करते हुए कहा गया है:—  
देवा इवं मथुना संयुतं यवं

सरस्वत्यामथिमण्णाव चक्रुः पुः ।

इन्द्र धासीयुं घोरपतिः शलक्रुः

कीनाशा आसात् नः स्वानवः ।

विजय की इच्छा करने वाले

देवों ने—राष्ट्र निवारियों ने पानी

के प्रवाह से युक्त उत्तम भूमि में  
में जब कौटे जी, गेहूँ, चावलों की  
खेती की अर्थात् जब राष्ट्र के  
किसान परिश्रम के साथ अन्न  
उत्पन्न करने को तत्पर हो जाते  
हैं, उस समय इन्द्र देवों का राजा  
या शासक उसके खेत की रक्षा  
करने वाले बन जाते हैं। किसान  
राष्ट्र का उत्तम दाता (मरुत)  
हो जाता है। यहाँ इन्द्र का रक्षक  
होने से यह तारम्भ है कि राष्ट्र के  
परिश्रमी किसानों के लिए उत्तम  
खाद, बीज तथा सिंचाई की  
व्यवस्था द्वारा शासकों को चाहिए  
कि खेती की पूरी तरह रक्षा करें।  
जब शासक रक्षक और किसान  
परिश्रमी हो जाते हैं तब राष्ट्र  
धन-धान्य की वृद्धि राष्ट्र के कल्याण  
और उन्नति का कारण बनती है।  
अतः वेद का नारा है:—

युनक्त सीरा विभुया तनोत

कुने योनी वपनेद् बीजम् ।

विराजः श्रुष्टिः सभरा असन्नो नेदीयः

इत्युत्थः पक्वमेयाव ॥

अग्नेय १०१०११३

अर्थात् हे किसानो! हल  
चलाओ! बैलों की जोड़ियों को  
जोतो! जब जमीन ठीक हो जाय  
तब उस पर बीज बोओ और पके  
हए अनाज के पास ही धान्य  
काटने के यन्त्र और हथियाँ ले  
जाओ। याद रखो! दूसरों से  
अनाज की भिष्ठा लेकर बहुत समय  
तक राष्ट्र की रक्षा नहीं की जा  
सकती है, दूसरों से अनाज की  
भिष्ठा लेकर हम अपनी स्वतन्त्रता  
की रक्षा नहीं कर सकते हैं, दूसरों  
से अनाज की भिष्ठा लेकर हम  
अपनी संस्कृति को बचा नहीं  
सकते हैं, दूसरों से भिष्ठा लेकर  
राष्ट्र की भूल को दूर करने की बात  
तो एक जुभा है। जिस प्रकार

जुप का परिणाम क्या होगा, यह

नहीं जाना जा सकता है ठीक उसी

प्रकार राष्ट्र भी यदि दूसरों से अन्न

(रोष दृष्ट ६ पर)

निच पाठक-सम्ब

'धर्मार्थ काम मोक्षयात्मारोग्यं

सुख कारयम् ॥'

रोगात् स्वास्थ्यद्वरितः,

श्रेयसो जीवितस्य च ॥'

हमारे जीवन का लक्ष धर्म

अर्थ काम मोक्ष की प्राप्ति आरोग्य शरीर के ही द्वारा है। शरीर की आरोग्यता का भोजन से बहुत कुछ सम्बन्ध है। बैठने उठने चलने स्वास लेने तथा किसी भी कार्य के करने में शारीरिक शक्ति व्यय होती है। इस शक्ति की पूर्ति हम भोजन द्वारा ही करते हैं। अतः भोजन ऐसा होना चाहिए जो जीवनीय संघटकों से युक्त हो।

'प्राणिनां पुनर्नलयाहोरो

वलवर्णो जसाम'

(सु० सुत्र स्यान् १ प्रत्वा)

समस्त जीवों और उनके बल

रूप भोजन ही का मूल आधार है।

अहारः प्रीणतः सती-

बलवृद्ध देहवारकः ।

आयुःसुखः समुत्साहः,

स्वस्थोऽपिनि विवर्धनः ॥

(सु० चि० अ० २४)

अहार पुष्ट करने वाला, तुल्य

बलकारक देह को धारण करने

वाला, आयु तेज उत्साह स्थिति

अोज, अग्नि को बढ़ाने वाला

होता है।

उपरोक्त जो आहार का कार्य

है। वही चिह्न रूप में जीवधारियों

को देखने पर उनके शरीर की

पुष्टि, बल, तेज, अोज, उत्साह

के रूप में प्रकट होता है। इसके

समानी यह है जो हम खाते हैं

उससे शरीर बनता है। अतः

स्वस्थता प्राप्ति में भोजन का बहुत

बड़ा हाथ है भोजन स्वास्थ्य के

अनुकूल होना चाहिए।

"Our body is made of what we have eaten."

१. शक्ती के क्षिप्तकों में

स्वास्थ्य प्रद भोजन है पर एक का

स्वास्थ्य-निच

## भोजन द्वारा स्वास्थ्य

(से०-डा० अमृप्रकाश जी, प्रकाश हस्पताल जिला एटा (पू.प्रो.))

का सफेद भाग कम मुख्य रकता है

काला रंग हमारी प्यारी बहनों को खटकता है। इसलिये वह सुनी दाल बनानी है। हम लोग खाते हैं और कहते हैं "कि दाल बड़ी बढिया बनी है"। मैं कहता हूँ कि जिनका जो स्वास्थ्य प्रद भाग था वह तो हम ने सीमाय शाली पशुओं को लिला दी या और हम भाग्य हीनों ने स्वास्थ्य प्रद भाग अर्थात् Vitamins से रहित दाल खाई, फिर भी बढिया कहना अपनी नादानी दिखाना है। चावल जिसका छिन्ना मूलतः से उतारा गया हो, अच्छा होता है पर उस में उतनी चमक नहीं होती जितनी कि मशीन के द्वारा जिनका उतरे हुये चावलों में होती है। सहाय की पतियां उसे उतर्द नहीं करती हैं। उन्हें सफेदी की होइ है। मशीन से जिनका उता-

रने में स्वास्थ्यप्रद भाग नष्ट होता है। तो आप ही बतायें ? कि जब हमारा भोजन स्वास्थ्यप्रद भाग से रहित होगा तो हमारे स्वस्थ होने का तो श्रत ही नहीं उठता। इसी प्रकार से गेहूँ को भी आप समझिये। इस के ऊपर जो गेहूँ रंग का भाग शरीर बर्धक होता है। बी

जब हम सफेदी की ही रट लगाते हैं, तो ऊपर भाग लुप्तकर पिसाई की जाती है। सफेदी की मांग के कारण मैदा को तरह पिसाई होने लगे, और बहनें महीन चलना संझानी हैं मैदा अर्थात् की श्लेष्मिक कला पर पलस्तर का कार्य करता है। उस से आंत्र पाचक रस नहीं निकल पाता, फलतः भोजन का सम्यक परिपाक नहीं होता। उससे कब्ज रहने लगता है। अथवा प्रवाहिका (जिसे पेशाब) कहते हैं हो जाती है। तब डाक्टरों विद्य और हकीमों के द्वार खटखटाने पकते हैं। त्रिय पाठक वृद्ध हमारी सफेदी रटन ने हमारे स्वास्थ्य का नाश कर दिया। हमारी सफेदी की मांग ने शक्कर डालने वाले मसाले को जन्म दिया जिसको किसान लोग अन्न गुहू में भी डालने लगे हैं। यह बहुत हानि कारक वस्तु है। हमारी सफेदी की मांग ने तलों को बनासपति घी का जन्म दिया। जिस में सफाई कार्टिक सांझा से की जाती है जो लुजली पैदा करता है। और

### निःसन्तान परिवार ध्यान से पढ़ें

बदि आप विवाह के बाद अब तक निःसन्तान हैं तो इस रोग के सफल चिकित्सक श्री पं० श्याम सुन्दर जी स्नातक (महोपदेशक वंजाब प्रतिनिधि सभा) से मिलें या पर व्यवहार करें। श्री स्नातक जी भारत के अनेक परिवारों की सफलता पूर्वंक चिकित्सा कर चुके हैं।

पूरी कोर्स ३ मास व्यय २००/-

पता—श्यामसुन्दर स्नातक महोपदेशक वंजाब सभा

दीवाने हास देहली

दाता मोटा करने के लिये निकल धातु का चूर्ण डाला जाता है। जो अन्नो को कमजोर करता है। जो लोग इसका सेवन करते हैं उन में से ५० प्रतिशत का कहना है कि इनसे गला पेट दोनों खराब हो जाते हैं। अमेरिका के प्रिन्सो-सोहा विशालय के शरीर विज्ञान के डाक्टर पैसल कीज जिन्होंने १० हजार व्यक्तियों पर इस खेज का परीक्षण किया। उनका कहना है कि अमेरिका वासियों का यह सच से बड़ा शत्रु है। इसके सेवन से ५ लाख व्यक्ति को वर्ष में एक का शिकार बन जाते हैं। आप का कहना है कि इन तलां के सेवन से रक्त में "कोलेस्ट्रॉल" की मात्रा बढ़ जाती है। इसके हिन्दों में गाढा पिल कह सकते हैं। इसका सम्यक मात्रा ही शरीररोग्योगी है। वनस्पति तेलों से हमको यात्रा बूढ़ जाती है। अतः दिल के दौरा होने लगे हैं। आयुर्विज्ञान की चीमारियां इसी की देन है। त्रिय पाठक वृद्ध अहार सफेदी पर ही हमारा ध्यान लगा रहा, हम ने भोजन की वास्तविकता का उपयोग न किया तो हम कभी भी स्वस्थ नहीं हो सकते। हम का भोजन के विषय में तान सिद्धांत अपने सामने रखने चाहिए।

Eat to live, not live to eat.

जीवन क लिए भोजन है भोजन क लिए जीवन नहीं है। अतः रसना की स्वादपूर्ति के लिए भोजन नहीं करना है। पर अपने जीवन शुद्धि के लिए भोजन करना है।

Health depends not on how much money is expended on food, But on what food the money is expended. स्वास्थ्य इस बात पर निर्भर नहीं है कि भोजन कीमती हो। पर सस्ता भोजन कीमती है।

Cheapest and simplest food is the best food. सारा और सस्ता भोजन भी स्वास्थ्यकारी है। त्रिय पाठक वृद्ध। संवदा भोजन को बनवाने में तीन उपरोक्त सिद्धांत रखे-कमशः

वही जातिवां संसार में सर्वा-  
नीय प्रगति करती है जो जीवन  
भर बागुति का पाठ पढ़ती है।  
निर्दल राष्ट्र जब अपने कर्तव्य के  
श्रम सावधान हो जाता है तो वह  
एक सबल राष्ट्र कहलाता है। संग-  
ठित समाज का ध्यान यदि प्रकाश  
की ओर हो तो वह अपने गन्तव्य  
स्थान पर शीघ्र पहुँच जाता है।  
किन्तु जो झालस कर सो जाता  
है, कर्तव्य-कर्म से च्युत हो जाता  
है वह अपनी प्राप्त संपत्ति से भी  
हाथ धो बैठता है। जीवन क्या  
है, जागते रहना, मरना क्या है  
सो जाना। भगवान वेद कहते हैं  
'वर्ष राष्ट्रं जाग्रामा भुगोहितः'  
तथा यो जागारः तमृषा कामयते'  
अर्थात् अर्थात् उसका स्वप्न करती  
है जो चेतना-युक्त होता है।  
संसार एक बर्हीड़ बन है।  
इसे मसखली विछोना कहना  
अपने से भोला करना है। पग २  
पर समस्राष्ट्र, आपदाएं अंकावत,  
प्रलोभन, कांटे बिड़े पड़े हैं व मुँह  
फाड़े मानव को निगलना चाहते  
हैं। वही इनको बीरता इम्हा  
मुग्ध पर बढ़ता जाता है जो  
बचरता नहीं, सङ्कलनाता नहीं  
बचरता नहीं। एक अंग्रेज विद्वान,  
ने बितना सुन्दर कहा है "Vigil-  
leave is the price of  
Liberty." स्वतन्त्रता की प्राप्ति  
का मूल कारण जागृति है। वेद ने  
राष्ट्र के नाम संदेश देते हुए योग  
व क्षेम का सुवाच रूप से बर्णन  
किया है योग कहते हैं किसी  
पदार्थ को प्राप्त करना, क्षेम है  
प्राप्ति की रक्षा करना, योग है  
परन्तु क्षेम नहीं तो भी हानि  
ही हानि है। राष्ट्र का नाश  
करने वाले राष्ट्र जब तक हैं  
तक राष्ट्र भी वनप ही  
सकता। आज दरिन्दे पाकिस्तान  
ने भारत का राष्ट्र बन कर क्या  
हुकूम नहीं किया ? यह उसका

## हम जागते रहें

श्री सत्यपाल 'सहदेव जी विद्यावाचस्पति' लेखारामनगर कादियां

जागना नहीं परन्तु बर्बरता पूर्ण  
पाशकिका का नग्न नृत्य सुढो  
ओर आयुष खां की अकल का  
जनाजा समझ जाता है। पाकि-  
स्तान का मान-मर्दन जिस  
शूरवीरता से भारतीय वीरों ने  
किया है उसकी जितनी भी भूरी-  
भूरी प्रशंसा की जाए उतनी ही  
कम है। कौमें बलिदानों से चमका  
करती हैं वीरों का स्तुन इतिहास  
की स्थाही का शुभ कार्य करता  
है। भारतीय समाज ने इस  
विषय बातवचरूप में "एक भारत  
का रूप धारण किया। इन प्रवर  
सैनिकों की टंकारों में अजुन का  
गंभीर, कृप्य का चक्र, भीम की  
गदा, शिवा की लखवार, प्रताप की  
वीरता दवानन्द की देश भक्ति  
गूजती है। यह भारत वह भारत  
है जिस की गर्दन कट सकती है  
मुक नहीं सकती। भारत में शांति  
भी है किन्तु जब जराखण्ड-कंस  
अत्याचार का प्रलयकारी तुफान  
बसलते हैं तो कृप्य उनके लिए  
काल बन जाते हैं। यह वही भारत  
है जिस में शहीद राम प्रसाद  
विरमिल स्थर रहे कहलते वतन  
हम तो सकर करते हैं' का वीर  
वोप करते हुए फांसी के तल्ले पर  
हँसते हुए चढ़ते हैं। भक्तसिंह  
शापवराज सुभाष आदि भारत-  
माता के उज्ज्वल रत्न हैं वे  
सितारे हैं उस आकाश में  
जिस की पावन धरती ने  
व्याकुल मानव को जीवन-वापन  
के सफल उपाय बताए हैं। यहाँ  
तो मामी रोकने वाली विपत्तियां  
बरदान बन जाती हैं। क्यों? भारत  
जागता है, हिन्दुस्तान का बचपना  
बचपना जागता है तभी तो आज  
विक्रम हमारी है शत्रु की नानी  
भर चुकी है कुलों की तरह सुढो  
ओर अयुष भौक रहे हैं। जो

गरजते हैं वो बरसते नहीं, पाकि-  
स्तान को मुँह की लानी पकी है।  
इसका कारण यही तो है कि हम  
जागते हैं।  
संसार के लोग उसे चाहते हैं  
जो रणवीर भर्मे वीर होता है  
सफलता झारली वतारने के  
लिए किसी राम की तलाश में  
फिरा करती है आज वीरता देवो ने  
भारत के चन्दन का विलक किया  
है, हमारी वीरता की गाथाओं में  
एक नया इतिहास जुड़ गया है।  
हम अब भी जागते रहें। शत्रु  
बौलला उठा है, क्या पना मरा  
मरा भी क्या करे? सारा  
देश सावधान रहे। अमी हमने  
स्वतन्त्रता का मूल्य छोरे देना है।  
इसकी रक्षा में रुक-मुड़ों का  
बलिदान देना है तभी सितारे  
आने वाली संतान को हमारी  
कहानियां सुनाया बरेंगे। भगवान  
कृपा बरे इस "अप्यन्तु करात्याः"  
के अनुसार शत्रु का मलिशा जेत  
कर देंगे। ताकि हमारा जागरण  
फलदायक हो सके, यही शहीदों  
की पुकार है वीरों की अंकार है  
व धर्म का विनाश है। जय भारत

## आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि

### उपसभा दिल्ली

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उप-  
सभा दिल्ली का कार्य दिल्ली के  
हलाके में सृष्ट अच्यौं तरह से  
चल रहा है। इस से सम्बन्धित  
३१ कार्य समाजें हैं और १४  
स्वतन्त्र आर्यसमाजें इस सभा से  
उपदेशकों का कार्यक्रम लेती हैं।  
सभा के पास दो अमनोपदेशक  
और लगभग ७० अल्पतानक उप-  
देशक कार्यक्रम में भाग ले रहे हैं।  
५० घण्टी-अंति भी कार्यालय के  
कार्य को अभी प्रकार चला रहे  
हैं। कृप्याचन्द्र रहनु  
प्रधान उपसभा देखली

## आर्यसमाज योगेन्द्रनगर

### (H. P.)

आर्यसमाज योगेन्द्रनगर ने  
१३-२-६६ से दैनिक वाचनालय  
का प्रवन्ध किया है। इस में  
दैनिक, साप्ताहिक तथा मासिक  
समाचारपत्रों के संगाने का प्रवन्ध  
किया गया है। जनता स्वाध्याय  
द्वारा लाभ उठा रही है तथा  
समाज के इस शुभ पग की  
सराहना कर रही है।  
इसी प्रकार लाला लामपत  
राय पुस्तकालय का उद्घाटन  
किया गया है। इस के प्रबन्धन  
के लिए नयपुस्तक मंत्री मनोनीत  
करके उसकी सहायताएं अय्य  
शाह सत्यो की समिति का  
निर्माण किया गया है।

सुरारीलाल  
मजी समाज

## अज्ञेयों दिव्यः

### कृषिभिक्षुधर

(दृष्ट छ का रोष)

की भील लेकर यदि जीवन रहने  
की बात सोचता है तो इसका  
परिचाय निश्चित नहीं है। भील  
देने वाले राष्ट्र जिस दिन चाहेगें  
हमें अपनी शर्तों को मानने के  
लिए बाध्य कर देंगे। इसलिए  
भारत के साधुमंत्रों को आज  
'अर्थिकान' को बरिनाथ बरने  
के लिए अन्न की भील से ध्यान  
हटाकर, इस जू से अपने को  
दूर कर वेद के शब्दों में कृषि की  
ओर ध्यान देना चाहिए। इसलिए  
सारासंजी से हम वेद के शब्दों में  
बढ़ेंगे।

'अज्ञेयों दिव्यः कृषिभिक्षुधर'

जुष्ठा मत लेल। लेती कर।

✱ इस नवंबर शरीर धारियों  
ने काम वेतु सी लक्ष्मी पाई तो  
क्या ? शत्रुओं को पराजित किया  
तो क्या ? धन से मित्रों का  
सम्मान किया तो क्या और कल्प  
सक जीता रहा तो क्या इम्हा ?  
जो परलोक न बनाया अर्थात्  
उसका सन निपटल है।

संस्कृत भाषा के अर्घ्यशास्त्रमय को हम दो भागों में विभक्त कर सकते हैं— शास्त्रीय साहित्य और लोकित साहित्य । शास्त्रीय साहित्य से हमारा तात्पर्य वेद, उपनिषद्, वेदांग, दर्शन, स्मृति, धर्मशास्त्र आदि उच्च ग्रन्थ समूह से है जिनमें भारतीय जातियों के पद्य, दर्शन, तत्व—ज्ञान, अध्यात्म तथा कर्म-काण्ड विषयक विचारों का विवेचन हुआ है। इस साहित्य के अद्ययन में कई शास्त्रविद्यां लागू गईं। सहस्रों शास्त्रीय ग्रन्थों के मुद्रित और प्रकाशित होने के उपरान्त भी अभी खतरा: ऐसे ग्रंथ वेद हैं जिनकी पारदुर्लभता पुनर्क भ्रष्टाओं और अज्ञानुशासकों की शोभा बढ़ा रही है तथा जो अभी भी प्रकाशन की प्रतीक्षा कर रही हैं। इसी प्रकार अनेक ग्रंथ ऐसे भी हैं जो सर्वथा अज्ञान ही के तथा जिनमें नामों का उल्लेख मात्र ही मिलता है, अथवा जिन के उद्धरण यज्ञ-ग्रन्थ ग्रंथों में उपलब्ध होते हैं। संस्कृत साहित्यविद्यार्थ के प्रमत्त विद्वानों के अनुसार इस शास्त्रीय साहित्य का रचनाकाल ईसा पूर्व २००० वर्षों से लेकर ईसा के एक हजार वर्षमात्र तक फैला हुआ है। भारतीयताओं के परम्परागत विश्वास के अनुसार वेदों की रचना सृष्टि के आरम्भ से ही हुई और तब से लेकर विक्रम सं-स्रब्धी शताब्दी पर्वत शास्त्र ग्रंथों के अद्ययन की परम्परा अविच्छिन्न गति से प्रवाहित हो रही है।

शास्त्रीय साहित्य से जिन उद्धारक ललित साहित्य को आचार्यों ने काव्य नाम से अभिहित किया है। काव्य का मूल वेद ही माना गया है। अथर्ववेद के अष्टाध्याय वेद परमात्मा का विषय काव्य है जो न सरता है और न भील होता है। वेद में ईश्वर को 'कवि' नाम से सम्बोधित किया गया है। रामायण और महा-

## महर्षि दयानन्द के परवर्ती आर्य सामाजिक विद्वानों की संस्कृत साहित्य सेवा

(प्रो० भवानीलाल जी भारतीय एम० ए० पाली (राजस्थान)



भारत के ऐतिहासिक महाकाव्य बर्णिक दृष्टि से विद्वाने महत्त्वपूर्ण हैं इतने ही काव्य और साहित्य को दृष्टि से भी। कौच विद्युत में से एक का वच देखकर महाभूमि भारतीयता के हृदय में कल्प रस के जिस स्थायी भाव शोक की उपस्थिति हुई वही रसो क बन कर संसार के प्रथम कौचिक काव्य के रूप में प्रादुर्भूत हुआ।

रामायण और महाभारत आर्य प्रतिमा अद्ययन भारतीयता और व्यास जैसे रस सिद्ध कवियों की अमर कृतियाँ हैं जिनमें काव्य तत्व पुष्ट और प्रतिष्ठित रूप में उपलब्ध होता है। इतना ही नहीं, ये महाकाव्य परवर्ती काव्य, नाटक, आख्यायिका विषयक शोभा: ग्रन्थों के उपजीव्य रहे हैं। इन्हीं से प्रेरणा लेकर भास, कालिदास, भवभूति जैसे नाटककार और भारवि, माघ, श्रीहृष जैसे कवियों ने अपने दृश्य और अन्य काव्यों की रचना की है।

स्वामी दयानन्द के परवर्ती आर्य समाजी विद्वानों ने संस्कृत साहित्य के इन दोनों क्षेत्रों में कार्य किया है। शास्त्रीय और रस-परक साहित्य का सृजन करने में इन विद्वानों की लेखनी अविश्ववृत्त गति से प्रवाहित रही है। शास्त्रीय ग्रन्थों के इतिहास में मूल ग्रन्थों की रचना के साक्षर उच पर भाष्य, टीका, शालिक, विवरण, न्यास, वृथ्णिका आदि व्याख्या ग्रंथों के लिखने की परिपाटी जितनी प्राचीन है उतनी ही महत्त्वपूर्ण भी। यहाँ तक कि पतंजलि, शंकर, वाचस्पति मित्र एवं उपनिषदाचार्यों जैसे महान आचार्यों ने व्याकरण, वेदांग, दर्शन, गद्या आदि के स्वतन्त्र ग्रंथों

की अथेका जिन भावों और टीकाओं की रचना की है, उन्हीं में उनकी खोज प्रतिमा, अन्तरी उद्गा तथा नवनवोपेयराजिनी कल्पना शक्ति के दर्शन होते हैं। यही कारण है कि इन भाष्य और टीकाओं के लेखक आचार्यों को भी परवर्ती लेखकों ने 'प्रधान भाष्यकार' जैसे आदारास्पद बचनों से सम्बोधित किया है।

आर्य समाज के विद्वानों ने भी वेद, वेदांग, दर्शन, उपनिषद, स्मृति तथा रामायणादि इतिहास ग्रंथों पर भाष्य टीका विवरण आदि ग्रन्थ लिखकर विद्युत साहित्य का निर्माण किया है। इन लेखकों ने वेद वेदांग तथा दर्शन जैसे गुरु-शास्त्रों को अग्रणी टीकाओं और व्याख्याओं द्वारा सुगम, सुबोध तथा अनुसुगत बनाने का जो प्रयास किया है वह सर्वथा इनाम-नीय है। आर्यसमाजी विद्वानों ने इन शास्त्रीय ग्रंथों पर संस्कृत भाष्यादि जो लिखे ही हैं जोकभाषा हिंदीमें भी उनकी विशद व्याख्याएं प्रस्तुत की हैं। इस प्रकार गीर्वाण-बाणी की शास्त्र सम्पत्ति को अधिकाधिक लोकियोगों बनाने का कार्य अद्ययन करने में आर्यसमाज ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। आर्यामी संकलों से हम आर्य-समाजी विद्वानों द्वारा किए गए शास्त्रीय साहित्य विषयक कार्य का विवेचन करेंगे।

वेद व वेदविषयक साहित्य-आर्यसमाज के अर्चक ने वेद के संक्षिप्त भाग के मूल्य का विशद रीत्या प्रतिपादन किया। उन्होंने अथर्वकालीन आचार्यों की इस धारणा का स्पष्टन किया कि मंत्र और ब्राह्मण दोनों ही वेद सहा हैं। उन की यह मान्यता थी कि केवल

मंत्रहीनवेद ही वेद कहलये की अधिकांशिकी है और ब्राह्मण ग्रंथ इस में ही अपि प्रतीय उपाध्याय।

स्वामी दयानन्द की दृष्टि में वेद संहितार्य ईश्वरस्यत होने के कारण स्वरूप: प्रमाणा है तथा भाष्य ग्रन्थ मनुष्य मोक्ष होने के कारण परत: प्रमाणा है। स्वामी दयानन्द ने वेदाध्य विवेचन और वेद की विश्व व्यापि के लिए जो कार्य किया उनका विवेचन पूर्व अध्याय में हो चुका है। स्वामी जो के परलोकगत होने पर आर्यसमाजी पवित्रतों ने उनके अपूर्णवेद भाष्य का पूरा करने का प्रयत्न किया तथा स्वतन्त्र रूप से भी वेद व्याख्या एवं वेद-विवेचन विषयक प्रभूत साहित्य का निर्माण किया।

स्वामीजी के अर्घ्य अद्यवेद भाष्य का पूर्ण करने के प्रयत्न में रेट निवासी श्री. तुलसीराम स्वामी ने अत्यन्त साधिक धन प्रकाश में अद्यवेद भाष्य के शोभा: को पूर्ण करने का प्रयत्न किया। वेद भाष्य जुलाई १९६६ के अंक से आरम्भ होकर आचार्यी रूप में कई अंकों में प्रकाशित होया रहा। भाष्य हिन्दी तथा संस्कृत दोनों भाषाओं में लिखा गया था। तुलसीराम स्वामी की मृत्यु के उपरान्त उनके अनुचर तथा वेदप्रकाश संस्थाक पुत्रलाल स्वामी ने भी इस भाष्य का कुछ अंश लिखा।

अद्यवेद भाष्य को पूरा करने का द्वितीय प्रयत्न विद्वाना निवासी श्री. शिवरीकर रामों काव्य गीर्ध द्वारा हुआ। वे भी इसे पूरा नहीं कर सके। इस विषयक सर्वाधिक ससम्पन्न यत्ने महाशहोपाध्याय आर्यभूमि का था। आर्यभूमि जो ने स्वामी जी द्वारा छोड़े गए अद्यवेद के सत्यमसखल के ६९वें मुद्रण के श्रीय ग्रन्थ से आरम्भ कर जन्म-मरुदक पर्वत ग्रन्थों का संस्कृत तथा हिन्दी भाषा में भाव लिया। (कमरा:



भाष्यसुवाची के सौजन्य है

# युद्ध और उसके बाद

(निष्पु प्रकाश)



(गणक से आगे)

इसलिए एक सीमा आती है जब युद्ध छोड़ना ही होगा है। जो युद्धकाल कभी-कभी बीता है, हम एक ही सीमा पर आ पहुँचे थे। कभीर का प्रश्न मात्र एक प्रश्न का प्रश्न नहीं है। वह हमारी भावना, हमारे विचार का प्रश्न है। धर्मांधता के विरोध में धर्म-निरपेक्षता, मानवता का प्रश्न है। इसीलिए हमने निरपेक्ष किया कि हम अपनी भावना का हनन नहीं होने देंगे। हम कायर नहीं होंगे। इस से कथिक सहना अपने प्रति ही विरक्तपाद्य होगा।

युद्धकारी मनोवृत्ति से खरदार बड़ी साहित्यकार का दृष्टिकोण आता है। उस के लिए वह आश्चर्य नहीं कि वह गला फाड़-फाड़ कर गर्जना करे। जो कर सकते हैं करें, लेकिन साहित्यकार के लिए वह कनिषाचर्या नहीं है। उस के लिए बड़ी कनिषाचर्या है कि वह इस बात को न भूले कि युद्धकाल कालकालिक है, जीवन की स्वाधीनता सभूय व्यपस्था नहीं है। अथित उद्देश्य के लिए संघत युद्ध करने का अर्थलियता और युद्ध-रुमाद नहीं है। साहित्यिक लेखशाही का अर्थन नहीं कर

**पठनीय एवं मननीय साहित्यिक**  
 वेद प्रथम ५/- गीताधार ७५  
 वेद, भास्वगीर के पथ १/- वेदाध्यय  
 संस्कार १/५० वेद, मेरी आठ  
 रोषक कहुमिया ७५ वेद, लोकर  
 ७५ वेद, लक्ष्मणते जीमन ५० वेद,  
 कर्म मीनाला २/२५ वेद, संघति  
 नियमन का और किसे १५ वेद,  
 वैदिक व्याकरण भास्कर १/-  
 व्यापार जोषक पथ ११/२० वेद,  
 साहित्य प्रचारक १/-  
 जयदेव प्रदर्स बर्षीया-१

सकता। वह उसके लयों से साधन ही कर सकता है। वह राष्ट्र के मनोबल को सही दिशा दे सकता है। युद्ध-काल में छानना आना स्वाभाविक है। साहित्यिक उसी उपान के बीच में लड़ा हो कर युद्ध को बीता है और जीवन के सुखों को परलया है। नए सुखों का निर्माण करता है। वह निर्भीकता और पौरुष का निर्माण करता है। वह निर्भीकता और पौरुष का प्रशासक नहीं था। नागरिक साहित्यकार का कालर यही स्वर होता है। नागरिक उपान में बहकर सैनिकशाही और युद्धलिप्ता का समयक बन सकता है। काननाते काननाते बह सकता है। लेकिन साहित्यकार इसी काननाही स्थिति से ही बचने का मार्ग छुसता है। वह जानता है कि युद्ध से बचने का हमारे सामने कोई विकल्प नहीं रहा था इसीलिए हमने युद्ध के लिए युद्ध को नहीं स्वीकारा। देशी स्थिति में हम काकदया करने बाह्येका विरोध करने उसके काननामय करने की शक्ति को नष्ट करेगा। लेकिन इस बात को नहीं भूँगे, कि युद्ध में जक और पराजय दोनों की सीमा उसा दोनों का प्रभाव, इनमें कोई विशेष अन्तर नहीं होता। पाठन दल में केवल छात व्यक्ति बचे थे और केवल दल में केवल तीन। विजय की पाठकों को मिली। लेकिन वह विजयकी केशी थी, वह क्या केशी को बताना होगा ? साहित्यकार का यही प्रयत्न रहता है कि वह अपने नागरिक को वैसी विक्रयकी के प्रति संवेत करा रहे।

१००००० का शुभ विवाह श्री रविशंकर जी के सुपुत्र श्री अशोक त्रेहन के साथ सम्पन्न हुआ। विवाहकार्य व आशीर्वाद पूज्य स्वामी विद्यानन्द जी विवेक हाट १२-२-६६ को उनके निवास स्थान पर हुआ।

कार्यभगत की ओर से इस नवदम्पती को तथा १०० आपुरारम की के परिवार को हार्दिक बधाई।

## आर्य कन्या सदन पाटोदी हाऊस, दरियागंज, दिल्ली

इस समय ३ वर्ष से लेकर १८ वर्ष तक की आयु की १५ छात्रा छात्रा

जो दुर्बल हैं, जो पलायनवादी हैं वे कभी-कभी देशी स्थिति का लाभ उठाकर उसी नारेबाजी में फँस जाते हैं जिस में युद्धलिप्ता-वादी फसे रहते हैं। साहित्यकार इन दोनों के बीच में सही गति का निर्माण करने वाला होता है। युद्ध करते हुए भी वह युद्ध के परिणामों को दृष्टि से ओभल नहीं होने देता। गीताका ज्वरहीन युद्ध साहित्यकार ही लड़ता है। 'उद्धत्व विगतव्याः' कथ्य ने ऐसा ही युद्ध करने के लिए कानून को प्रेरित किया था। उसे पलायन से बचाया था। साहित्यकार की बड़ी शक्ति का भाव के संघर्ष में आती जा सकती है। एक और वह मनुष्य को भय और पलायनवाद से मुक्ति पाने की प्रेरणा देता है तो दूसरी ओर युद्ध-धन्माद और युद्ध-लिप्ता के तरक में पकने से बचाता है। उसका यह दृष्टिकोण युद्ध मात्र के प्रति होना चाहिए किसी देश विशेष में लड़े जाने वाले युद्ध के प्रति नहीं, तभी उसका यह दावा, कि वह केवल मात्र राष्ट्रीय नहीं है, सही हो सकता है।

आर्य के लिए वेद शास्त्र अपना प्रतिदर्ष चाहिए।

आपसे सानुरोप प्रार्थना है कि आपनी पुत्र्य बर्षाई में से कथिक से कथिक दान भेजने की कृपा करें।

इस समय लगभग ८०० भाग्य देविणा इसकी मासिक सदस्या है जो १ रुपये से लेकर १५ रुपये तक सहायता प्रति माह देती रहती है। आप से भी प्रार्थना है कि आप इस अल्पपत्र चण्णोनी संस्था का मासिक सदस्य बनने की कृपा करें।

—देवराज बाबरी प्रथम समाज

## आर्यसमाज स्थापना दिवस

नई दिल्ली ८ मार्च—आर्य केन्द्रीय समाज दिल्ली राज्य की ओर से २ विचार विचारक २७ मार्च १९६६ को सार्वकालिक अग्रमल का पार्क, करोलाबाग में बड़े समारोह पूर्वक मनाया जावेगा।

आर्य केन्द्रीय समाज सभी आर्य समाजों, स्त्री आर्य समाजों तथा शिक्षण संस्थाओं से प्रार्थना करती है कि वे अपने २ स्थानों में इस पुरव्य पर्व को बड़े समारोहपूर्वक मनाते और जनता से शपथ करें कि वे कथिक से कथिक संस्था में कानमल लां पार्क उल्लभ में भाग लें। —राजनाथ शर्मा समाज

प्रसिद्ध सिमिटेड कम्पनियों में

**फिक्सड डिपोजिट्स**  
**(FIXED DEPOSITS)**  
 12% वार्षिक व्याज  
 तथा 1/2 से 6% तक कमीशन भी प्राप्त करें।  
 मिलें कृपया लिखें—  
**DEWAN & CO.,**  
 Fixed Deposit Agents.  
 Rly. Road. Opp. Rest House. SONEPAT

युद्ध व प्रकाशक श्री अयोध्याजी की आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि समाज आत्मन्तर द्वारा और सिद्धार्थ प्रेस, सिद्धार्थ रोड आत्मन्तर से युद्ध तथा आर्य समाज के अग्रमल महात्मा देवराज मनन निष्कट कचहरी आत्मन्तर राहट से प्रकाशित मासिक—आर्यवार्षिक प्रतिनिधि समाज १०१४ आत्मन्तर



टेलीफोन नं० ३०४७

[आर्थशास्त्रिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र]

Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे

वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६ अक्र १३)

१४ चैत्र २०२२ रविवार—द्वयानन्दव्य १४१-२७ मार्च १९६६

(तार 'शास्त्रिक' जालन्धर

## वेद सूक्तयः

### नमो यमाय

यम रूप उस परमेश्वर को नमस्कार हो। परमात्मा के अनेक नामों में यम भी उसका एक नाम है। क्योंकि वह सबका नियामक है। सबको अपने नियम में रखता है। कोई भी यस्तु उसके नियम से बाहर नहीं जा सकती है। वह यम है।

### नमो अस्तु मृत्यवे

मृत्यु रूप उस भगवान को नमस्कार है। वही देह को आत्मा से या आत्मा को शरीर से अलग-अलग करता है। सब को अपने-अपने कर्मों का उचित फल प्रदान करता है। उसके नियम विधान को कौन तोड़ सकता है ?

### तमर्गिण पुरोदधे

मैं उस आनिमय भगवान को अपने जीवन में सदा आगे रखता हूँ। वही मेरा नेता तथा नायक है। परमेश्वर ही मेरा पथ प्रदर्शक है। वही इन्द्र धनुष परदेक कार्य में मेरा नेतृत्व करता है। उसे ही सदा आगे रखता हूँ।

### अस्मै अरिष्टाताये

इस जीवन के कल्याण व सुख के लिए मैं भगवान को नमस्कृत करता हूँ। परमेश्वर ही कल्याण करता है। वही सुख-दाता है। अथर्व वेद से

## वे दा मृत

हे वीर ! तू वज्र का वज्र है

द्यूष्या दूष्मि हेत्या हेतिरसि मेन्या मेनिरसि ।  
आ मुहि श्रेयांसमति समं क्राम ॥

अर्थ—हे वीर नर ! तू (द्यूष्याः) दोष निकालने वाले का (दूष्िः असि) दोष निकालने वाला है। तू (हेत्याः) तलवार की भी (हेतिः असि) तलवार है और तू तो (मेन्याः) वज्र का भी (मेनिः असि) वज्र है। तू अब (आनुहि) प्राप्त हो (श्रेयांसम्) श्रेष्ठ उत्तम मनुष्यों के पास पहुंच कर तथा (समम्) बराबर वाले से (अतिव्राम) आगे बढ़ ! तू शक्ति की शक्ति तथा वज्र का भी तेज वज्र है। तेरे सामने कौन ठहरे ?

इम का भाव यह है

हे वीर नर ! तेरा क्या कहना ? कौन तेरे सामने आने का साहस कर सकता है। जो दुष्ट दोष निकालने वाले हैं। जब वे तेरे सामने आते हैं तो उनकी अपनी बोलती बन्द हो जाती है। तेरे सामने आते ही उनके अपने दोषों का डेर उनकी आँखों के आगे आ जाता है। उनका तेज कुहड़ावा तेरे सामने सर्वथा बेकार हो जाता है। उनके पास यदि वज्र भी हो तो तेरे आगे वह मिट्टी का टैला सा बन जाता है। हे राष्ट्र के वीर नर ! तू वज्र का भी वज्र है। शक्ति की भी शक्ति तथा शस्त्र का भी शस्त्र ही है तेरे आगे शत्रु के, राक्षस पिशाच के, बोर लुटेरों के सारे शस्त्र बेकार हो जाते हैं। हे वीर ! अमे ही आगे बढ़ते जाओ।

अथर्व वेद २-१-१

## ऋषि दर्शन

### त्रयस्य धर्मस्य स्वरूपम्

राज्य में पापी अघराधी दुष्ट को कड़ा दण्ड देना क्षत्रिय का उन शासन को चलाने वाले का धर्म का लक्षण है। दण्ड देना उसके धर्म और कर्तव्य में शामिल है।

### उत्तमकर्मकारिण्यः

### आनन्दकरः

राज्य के नायक का यह धर्म है कि जो उत्तम काम करने वाले हैं, उन के लिए आनन्दकारी बन जाये। 'नयमो का पालन करने वालों को तो सुखी बनाता रहे तथा—

### एकं सहस्रद्वितीयं

### मुश्रन्त्

उन दोनों में एक तो शांति व भय है और दूसरा उमता से दण्डविधान है। राज्य का काम चलाने के लिए शांति की भी आवश्यकता है तथा दण्ड भी जरूरी है ता कि कबल एक से काम नहीं चला करता।

मा पव भूमि का से

धार्मिक चर्चा—

## अनुभूति



सत्संग, स्व-अध्ययन, मनन के ईश्वर भक्ति में रुचि बढ़ाने के साधन हैं। सत्य का संग सत्संग है। सदा-चारी जनों का सम्पर्क भी इसीलिए सत्संग कहा जाता है। स्व-अध्ययन और अंतर्मुख होकर अपने अन्तःकरण का अवलोकन करना, एक लामकारी साधन है। चरित्रवान लोगों के जीवन वृत्त अपने अन्दर जाग्रति उत्पन्न करते हैं तथा आकांक्षा की उत्पत्ति में सहायक होने हैं। परम पवित्र और सर्वोत्तम आश्रमों में भगवान ही हैं जिनके ज्ञान और तपस्विता के जगती को नियमित रूप से चला रहे हैं। ज्ञान के अनुष्ठान के लिए सकल्प किया जाता है और फिर पूरी लगन से ज्ञान रहस्य अनुवाधान करने तक प्रयत्न किया जाता है। प्रयत्न जब शिव सकल्प से प्रेरित होता है तो अध्ययन मकल होता है क्योंकि इस में विश्वव्यापक के साथ साम्य स्थापित हो जाता है। प्रार्थना वह उर्ध्वटा है जो शुद्ध हृदय में उपरन होती है और जिसकी पूर्ति के लिए साधक पुरुषार्थ करने के लिए उद्यत होता है। उद्यत हुआ उसका मनुष्य की सहायता करता है और मनुष्य में सत्य को धारण करने की क्षमता हो जाती है जिसे अज्ञा कहते हैं। अज्ञा में ही सफलता मिलती है। विन्यास और अज्ञा से कर्तव्य करने हुए जो मनुष्य को अनुभव होने हैं और जिनके सहारे मनुष्य उत्तरोत्तर उन्नति करता रहता है उन्हें ही अनुभूति कहा जाता है।

आजकल योगीजन अनुभूति शब्द से उन अनुभवों का ही व्यवहार करते हैं जो अनुभव के विना

केन्द्रों में चक्को में हुक्का करते हैं। स्पष्ट अर्थ अनुभूति का अनुभव ही है। अनुभूति का सम्बन्ध समस्त मानव से है ज्ञान बुद्धिगम्य है। स्थितप्रज्ञ मनुष्य जिसकी बुद्धि निरवल हो चुकी है जो कुछ अनुभव प्राप्त करता है वह अनुभव ज्ञान-तक ही सीमित है। ज्ञान द्वारा उपलब्ध अनुभव जब तक कर्मानुष्ठान में नहीं आते जीवन विकसित नहीं होता। जीवन का निरन्तर विकास होना चाहिए यदि साधन सम्यक् रीति से किए जाएं और साधन भी ठीक हों। साधक के लिए धर्म मर्यादाओं का पालन करना अत्यावश्यक है। धर्मशील मानव ही माथन से उन्नत होता है। धर्म, व्यक्ति, परिवार, समाज राष्ट्र क्या सारी जगती का आधार है। धर्म के नियम पालन करने से प्रगति सुगम होती है और गति तीव्र होती है। जीवनचर्चा की बुद्धि और नियमना परम आवश्यक है। कभी-कभी आत्म-साक्षात्कार को होता है वह उचितदर्शन नहीं है। आत्मश्रुति का केन्द्र यद्यपि हृदय है पर उदीपन उचित तो सुलभ-मयल तथा मलिनिक से लेकर सारे शरीर के अवयवों को पवित्र और सशक्त करती है। साधक में आत्मव्यक्ति नहीं होना चाहिये। आत्मव्यक्ति प्रसाद केवल समय का ही हास नहीं करते इन के द्वारा तो जीवन च्य हो जाता है। आत्मव्यक्ति प्रसाद युगल-व्यसन तमोगुण की सन्तान है और मोह को सामने लाकर कामना को विकृत कर देते हैं। विकृत कामना ही लालसा और वासना है। तमोगुणी मनुष्य में यदि गति भा भी जाए तो वह तमोगुण युक्त होती है उसमें विकृत काम की प्रधानता

## राष्ट्र-भक्ति और प्रभु-भक्ति-१६

(श्री महात्मा आनन्द स्वामी जो महाराज को अमृतभरी कथा)



(गतांक से आगे)  
अरे भाई! अपनी आर्त कथों बिगाड़ते हो। जब पांच कपड़ों में गुजारा हो सकता है तो बड़े-बड़े संवृद्ध करने से क्या लाभ? जितना तप्यइ ओना पाला जितना टक्कर ओना मुंह काला। अपनी जहरतों को कम करो दूसरों का भला करो। यदि सब कुछ आप अपने ऊपर हो खर्च करते गए तो अपना बचपों पर खर्च कौन करेगा? उन महादुर जवानों की कौन सुख लेगा जो हिमालय की १५, १५ हजार फुट की ऊंचों चोटियों पर जहाँ इतनी सर्दी है कि सड़नी नहीं बनती, रोटी नहीं पकती, सब कुछ विमानों से ही पकता जाता है सावधान खड़े होकर हमारी सीमाओं को रक्षा कर रहे हैं। यदि कुछ बचाओगे नहीं तो इन जवानों के लिए क्या दे सकोगे? खाओ पीओ दुनिया आप के लिए है, लेकिन टंग से। यज्ञ का अर्थ है कि संसार के भोग भी कर साथ रहती है और पूत न होने पर कोष का कारण बनती है। यह क्रम हास का है। साधक को सत्व-गुण में तट भूमि तैयार करनी चाहिए जिसे नियमित प्रगति पकाश और निश्चय तब-जीवन है। सत्वम्य हुए विना मनुष्य के अंतर आत्म प्रेरणा सम्भव नहीं। आत्म प्रेरणा से ही मानव पूर्ण आनु भर से ही मानव पूर्ण आनु भर स्वस्थ रहता हुआ भगवत अनुकूल कर्तव्य करके भगवान की प्रेरणा के पाने का प्राधिकारी होता है। भगवत प्रेरणा भगवान का प्रसाद है वह तो अनुकूल जीवन-चर्चा देसकर भगवान ही अपनी कृपा से दिया करते हैं।

में प्रभु की भी मत भूल। अपने-आपको प्रभु और राष्ट्र के अर्पित कर देना ही यज्ञ का मूल अर्थ है। आजकल लोग शराब भी बहुत पीने लगे हैं मैं कहता हूँ पीओ, जी भरकर पीओ लेकिन ऐसी मत पीओ कि रात को पी और सुबह उतर गई। उस प्रभु के नाम की शराब पीओ तो कमी उतरे नहीं। नाम खुसारी नानका, चढ़ी रहे दिन-रात मूलशंकर ने टंकारा में पी थी। ऐसी पी कि जीवन भर नशा रहा। शराब चढ़कर उतरने वाली पिलाई तो क्या पिलाई साकी, जो एक बार चढ़ के न उतरे वह पिलाओ तो जानू। यज्ञ की भावना परमात्मा की देन है, सद्देश्य है। खाना, पीना, सोना, सन्तान उत्पत्ति तो पशु भी करते हैं। पशु और प्राणी में ऊन्नर होना चाहिए। यज्ञ प्रभु के दर्शन पाने का एक साधन है। यज्ञ यह भी सिखाता है कि अपनी इन्द्रियों को नियंत्रण में रखो। दशरथ का अर्थ है दश इन्द्रियों का मालिक। दशरथ का अर्थ है ऐसा व्यक्ति जिस का अपनी दशों इन्द्रियों पर नियंत्रण हो। रावण, इन्द्रियों का गुलाम था। हमारे शाश्वतों ने इन्द्रियों पर विजय पाने का एक ही साधन बताया है कि अपने मन पर काबू पाओ। अतः काबू करके ही परमात्मा के दर्शन पाए जा सकते हैं। मन ही मनुष्य के कथन और मोक्ष का साधन है। यही सब आठ बातें जिन का मैंने अद्य तक उल्लेख किया। राष्ट्र-भक्ति और प्रभु-भक्ति सिलसिली है। राष्ट्र-भक्ति और प्रभु-भक्ति दोनों एक हैं। (समाप्त)

सम्पादकीय—

# आर्य जगत्

वर्ष २६ रविवार २०२२, २७ मार्च १९६६ [अंक १३]

## संस्कृत की ओर

भारतीय संविधान में स्वीकृत बौद्ध भाषाओं में संस्कृत भी एक भाषा है। भा.स. सारी भाषाओं में जिन २ समय पर समाचार तथा अन्य बातें आकाशवाणी द्वारा प्रसारित की जाती हैं। किंतु संस्कृत संविधान में स्वीकृत भाषा होने पर भी ऐसी कभी तक कभी भी नहीं हुई है कि जिस के द्वारा प्रसार प्रसारण करेई भी कार्यक्रम प्रसारित नहीं कराए। जैसे तो आये दिन भारत के बड़े २ उंचे लोग, मान्य राष्ट्रपति से लेकर मंत्रियों पर्यन्त संस्कृत भाषा के गौरव के सम्बन्ध में आये दिन के सम्बोधनों में बहुत बूढ़ कहते रहते हैं। किन्तु खेद यह है कि किंवदन्ति रूप में संस्कृत के लिए किया बल भी नहीं जाता। स्कूल में संस्कृत समाप्त होती जा रही है। संस्कृत की पराधाएं आये वर्ष कम हो रही हैं। संस्कृत वालों की हक बात में उपेक्षा की जाती है। जीवन क्षेत्र में जिस की भी उपेक्षा की जायेगी, वह वस्तु वा तत्व पीछे होना चला जाएगा। संस्कृत वाला व्यक्ति अपने ही देश में अपने आप को सरकार तथा जनता में उपेक्षा ही उपेक्षित समझता है। इसीलिए वह ऐसी दशा में अस्ति-नीची कर के जीवन के दिन बिताते में लगता है। स्कूलों में सरकार की ओर से संस्कृत तथा संस्कृत वालों के साथ जो व्यवहार किया जाता है। संस्कृत की पढ़ाई का क्या हाल है। इस की तुरन्त कान नहीं जानता ? कभी गत दिनों रायच सम्म में एक मान्य सदस्य ने यह पूछा कि संस्कृत भाषा में समाचार

प्रसारित क्यों नहीं किये जाते ? उत्तर में कहा गया कि इस पर विचार किया जा रहा है। पता नहीं कभी की ओर किन्तु वर्ष इस पर विचार करते लगा जायेंगे। एक ओर जर्मनी है। वहाँ जो संस्कृत में एक विशेष कार्यक्रम प्रसारित किया जाने लगा है। दूसरी ओर भारत है जहाँ की संस्कृत संस्कृत में निहित है। वहाँ अभी तक विचार ही हो रहा है। किन्तु खेद यथा संस्कृत की कितनी उपेक्षा है ?

यह समाचार निकला है कि चौथी योजना में संस्कृत प्रसार के लिए दो करोड़ रुपये रसे गए हैं। इतना महान् देश, इतनी प्राचीन भाषा और भारतीय राष्ट्र की सरकार और केवल दो करोड़ की रूप्य राशि ? मछलियों, मुंगियों, सूकर पालन, शराब आदि के लिए तो पता नहीं किन्तु करोड़ किन्तु संस्कृत के लिए केवल दो करोड़ ऐसी ही स्थिति संस्कृत की हमारे भारत में। युवक यह कहते हैं कि संस्कृत पढ़कर मूर्खों क्यों रहें। गत दिनों पंजाब के शिक्षामन्त्री श्री प्रबोधचन्द जी ने कहा कि संस्कृत वालों के भेद की. टी. के समान बनाने पर विचार किया जा रहा है। पता नहीं यह विचार त्रिवार्षिक निर्णय में क्या समने कायगा। हम चाहते हैं कि संस्कृत के प्रति इस उपेक्षा शक्ति को समाप्त करके इसमें समाचार भी प्रसारित हों। स्कूलों में भी इसकी पढ़ाई का प्रयास हो। जीवन यात्रा में भी संस्कृत वालों का ध्यान रखा जाये तभी कल्याण होगा।

—त्रिलोकचन्द्र

## भाषा के आधार पर

पंजाबी भाषा के आधार पर गृहमन्त्री श्री नरिंदा जी ने लोक सभा में पंजाब के मुख्यमंत्री घोषणा कर दी है। पंजाब के मान्य त्रिभुक्ति नेता श्री लाल जगन् नारायण जी संसदसदस्य, श्री यश जी एवं शिक्षा मन्त्री पंजाब प्रधान कार्य प्रादेशिक सभा आलखर श्री वीरेन्द्र जी एस० ए० तथा जनसय के नेताओं एवं वैदेशी के श्री लाल रामगोपाल जी शाल वाले मन्त्री साध्विरेन्द्र ६ समा, श्री प्रबोधचन्द्र जी स्वामी आच नेताओं ने पंजाब एकता समिति ने मिल कर गृह-मन्त्री से इस के सम्बन्ध में सुल कर बातें की। आक्षेपक आवास-समाप्त किये। अशुभर में बोर यक्षद जी शर्मा ने अपना अनुरोध प्रव श्लोक दिया है। पंजाब में आश्रय शक्ति का बालाशय पैदा होता जा रहा है। पंजाब में पुलिस द्वारा जो अत्याचार किये गये हैं उनकी जांच पड़ताल करने को गृहमन्त्री श्री नरिंदा जी से अनुरोध किया गया है। आच समाज के प्रसिद्ध संस्थापकी श्री स्वामी चर्यामन्द जी ने आर्यसमाज दीवानहल देहली में इसी सम्बन्ध में अपना अनुरोध प्रारम्भ किया हुआ है। हम भी सरकार से बलपूर्वक अनुरोध करते हैं कि पंजाब में पुलिस को ओर से जो २ व्यादवियां हुई हैं। उनको अवश्य ही जांच पड़ताल कराई जाये।

## आदर्श शुभ विवाह

लाला आर्यसमाज के प्रान्तिक कार्यकर्ता श्री लाल रूपचन्द जी की सुपुत्री, धर्माज्ञ के वरसाही मन्त्री श्री वैद्यपारा जी की बहुव सुशीला जी का शुभ विवाह धूम-धाम से सम्पन्न हो गया। विवाह संस्कार में श्री वं सुशीराम जी शर्मा अचिष्टता वेद प्रचार कार्य प्रादेशिक सभा, वं त्रिलोकचन्द्र शास्त्री, वं जगन्नाथ बशीरामजी की मजबूती शामिल हुई। विवाह

समय पर आदरी था। पूर्णतया वैदिक रीति से हुआ। श्री रूपचन्द जी के सुपुत्र श्री वैद्यपारा जी तथा उनकी सारा परिवार आर्य-समाज के रहने में रत्ना हुआ है। भारत के स्वामन सम्मान में कोई भी कसर न रखी गई। सम्वा की जनता पर इस आदर्श विवाह का बड़ा ही प्रभाव पड़ा। वर वधु को अपने शुभारोहण दिया। इस अवसर पर आर्यसमाज, आर्यसमाज और समाज को दान भी दिया गया। हम इस आदर्श विवाह पर वरपत्नी के मंगल मंगल्य की प्रार्थना करते हुए सारे परिवार को बधाई देते हैं।—सं०

## करनाल मंडल के जल से

करनाल मंडल में आर्यसमाज कर्माहुरा का उत्सव समारोह से हो गया था। दुर्गासिंह जी व. दुर्गासिंह जी, प. चन्द्रसेन जी, श्री. नरहराम जी, डा. मंगेशदास जी शामिल हुए। आर्यसमाज कुलपुरा का वाषिक उत्सव समारोह से हो गया। श्री वं नन्दलाल जी, श्री दीनानाथ जी, श्री कंचनमान जी, गोविन्दराम जी, मन्त्री श्री हरिचन्द जी आदि सबको तथा देवियों के उत्सव से लूब होभा रहा। जसे में समा की ओर स.पं. त्रिलोकचन्द्र शास्त्री, वं चन्द्रसेन जी, राजनारायण मयन मोहन जी की चिमटा मजबूती डा० दुर्गासिंह जी, मं नरहराम जी तथा करनाल से डा. मंगेशदासजी भी उत्सवचन्द जी शरर पानीपत शामिल हुए। बड़ा समारोह था। आर्यसमाज के अतिरिक्त सभा को (२०७) ४० मिले। डा० दुर्गासिंह मंडल ने उत्सवाही में प्रचार किया।

आर्य जगत् में  
विज्ञापन देकर  
लाभ उठाएँ

# भारतीय सैनिक की प्रतिष्ठा बढ़ी तत्त्वा योजना का पालन कार्यक्रम के अनुसार

१९६५-६६ की रक्षा मंत्रालय की रिपोर्ट



रक्षा मंत्रालय की १९६५-६६ की वार्षिक रिपोर्ट में कहा गया है कि भारतीय सेना के जवानों ने एक बार फिर अपनी वीरता की याद जगायी है और जनता के दिल में भारतीय सैनिक की प्रतिष्ठा बढ़ गई है। सितम्बर १९६५ की घमासान लड़ाई में भारतीय सेना के अधिकारियों और जवानों ने अपनी जान हुयेली पर रखकर देशी वीरता और बहादुरी का परिचय दिया, जिस से भविष्य में कोई भी आक्रामक हरेगा। सारा देश अपने जवानों के शौर्य पर गर्वित है और जवानों ने देश में अपने प्रति बड़ी अद्भुत अजित कर ली है।

आज जारी की गई इस रिपोर्ट में कहा गया है कि उन्नत लड़ाई में २ हजार ७६३ व्यक्ति मारे गये, ८ हजार ४४४ घायल हुए और १ हजार ४०० लापता हुए। ८ हजार ४४४ घायलों में से ५ हजार ४८६ ठीक होकर अस्पताल से निकल कर अपने काम पर लौट चुके हैं और ३३६ का इलाज करके उन्हें भीमारी की छुट्टी पर भेज दिया गया है। अनुमान है कि ४६२ व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो जायेंगे। लापता लोगों में से १००४ व्यक्ति युद्धक्षेत्रों के रूप में पाकिस्तान से लौट चुके हैं।

उक्त लड़ाई में ४० करोड़ रु. खर्च हुए, जिसमें नष्ट हुआ और काम में आया साज-समान भी शामिल है।

सेना के विस्तार, अधुन-धी-धीरे और अन्य विकास कार्यों के लिए १९६५-६६ की वार्षिक के लिए ४०० करोड़ रु. का रक्षा

योजना है, जो निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार लागू की जा रही है। आशा है कि इस योजना का सचं योजना में निर्धारित आंकड़ों के अनुसार ही रहेगा रिपोर्ट में कहा गया है कि यह योजना चीन के खतरे को ध्यान में रख कर बनाई गई थी और यह खतरा अब भी है। पिछली लड़ाई के दौरान कुछ देशों द्वारा भारत को सामान की सप्लाई रोक देने के बाद रक्षा की जरूरतों के लिए विदेशों पर निर्भर रहने और इस मामले में स्वावलम्बी बनने का विचार अब जोर पकड़ गया है। रक्षा मंत्रालय में रक्षा पूर्ति का एक नया विभाग खोला गया है जो आयातित सामान की जगह देश में सामान बनाने का प्रयत्न कर रहा है।

रिपोर्ट में बताया गया है कि साल के शुरू में कच्छ में पाकिस्तानी आक्रमण के मुकामले में और बाद में युद्ध-विराम रेखा तथा अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर पाकिस्तानी आक्रमण का सामना करने में सेना ने क्या काम किया। १९६५ की घटनाओं में रक्षा की तैयारियों की योजनाओं की परीक्षा हुई और प्रशिक्षण, साज-सामान, आयाजन और युद्ध संवाहन, और देश के सैनिकों का शौर्य इस परीक्षा में अचूक उभरा। पाकिस्तान के साथ लड़ाई के दौरान देश पर चीनी खतरे को नजर-अन्दाज नहीं किया गया और हमारे जवान हर समय कारबाई के लिए तैयार रहे गए। इस लड़ाई में प्राप्त अनुभव का अध्ययन किया जा रहा है और देश की सेना को सचम और खरब बनाए रखने के लिए उचित उपाय किए जा रहे हैं।

# श्री स्व० ए० इंहराज जी के विषय में कुछ महोदयों की संक्षिप्त सूत्रों में सद्भावना

(श्री० श्री दौलतराम जी शास्त्री अमृतसर)



१—१९०६ में ओरियंटल कालिज के मुख्य संस्कृत प्राध्यापक महामहोपाध्याय श्री शिवदत्तजी को उनके छात्रों ने पूछा कि गुरु जी! श्री ला० इंहराज त्रिभिषल के विषय में आप की क्या सम्मति है ?

परिचित जी ने कहा—कि श्री इंहराज जी नीति में विदुर, और धर्म में गुण्डित हैं।

२—शांति कुटिल शिमला में सनातन धर्म व अरायसवाज तथा कुछ अन्य हिन्दू संस्थाओं के सम्मिलित संग में स्व० मालवीय जी ने महात्मा जी के लिये निम्नस्थ विरोधण कहे।

वे आदेश त्यागी—भविष्य-दर्शी पक्षों ता कोमल कमल से, अर्थ तो हिमालय से।

३—डॉ० ए० बी० कालिज के फारसी के प्रोफेसर मौलवी भोरा-बकश जी को छात्रों ने पूछा कि प्रा० सादिक सुना है कि आप को इस्लामियाँ कालिज में बही तनस्वाह मिल रही थी—आप ने उसे क्यों छोड़ा वह तो आपने दान का कालिज था।

मौलवी जी ने कहा कि—साहेब !

मेरा मक्का डी० ए० बी० कालिज—मेरा नबी ला० इंहराज ! मैं बलिहार दोनों पर।

४, श्री काली प्रखन बैटर्डी ट्रिप्यून के सन्ध्याक होशियारपुर के उत्सव पर गए। प्रातःकाल नौलियों पर स्नान करते गए। एक सत्रजन ने उनको पूछा कि बापू जी आप सारे भारत में घूमे कीन-कीन से देवताओं का दर्शन किया ? बापू जी बोले (मसौली डींग से) हरय तो कानके देखे उनमें

यहां की नौलियां भी हैं। देवता तो मुझे कहीं नहीं मिले सिवाय लाहौर के। वे भी देवता, दो ही। सत्रजन कहने लगे कीन से दो ?

बापू जी ! पास-पास ही रहते हैं दो - गले !!

एक इंहराज, और दूसरे लाज-पतराय ! बस दो ही।

५. भाई जगतसिंह जी डी.ए.बी. कालिज के मुख्योपदेशक हुए हैं। वे वीर रस की मूर्ति दूसरे भूषण कवि थे। जनता में जोरा भरने के लिए वे भूषण-सी ही कविता पढ़ते थे। वे हमें सुनाया करते कि जब मेरा क्रोध सीमा पार हो जाता तो महात्माजी के पास चला जाता। महात्मा जी (उनको भाई जी कहते थे) कहते भाई जी—कहो किसी तबीयत है ? भाई जी कहते थे कि मैं इतने में पेशा हो जाता जैसे कभी जन्म में भी क्रोध न किया हो।

सत्रजनों:—महात्मा जी को महाराम बनाने वाले इरयादि अपनेको गुण्य थे। हमारा उन्हें और उनक गुणों को नमस्कार।

## वे लोग ! वे बातें...

★ विद्वज की कोटी भी शक्ति मानव को गिरा नहीं सकती, मानव को गिराने वाला मानव स्वर्भ हो है।

—स्वामी विवेकानन्द

★ मैं नरक में भी उत्तम पुस्तकों के स्वाध्याय में व्यस्त रहना पसन्द करूंगा।

—लोकमान्य तिलक

★ भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिए सचसे पहले स्वामी ध्यान के आवाज उठाई।

—डॉ० केशव

(गतक से आने)  
यह माध्य ६ खण्डों में समाप्त हुआ है। आर्य के आरम्भ में लेखक ने निम्न श्लोकों में अपने माध्य विषयक प्रारम्भिक बख्शव्य ो प्रस्तुत किया है—

दधानन्दः समास्तवातो ।  
दस्थान्ने च सरस्वती ।

एतन्नामान्भितः स्वामी  
दधानन्दः सरस्वती ॥

सेतुलोकं वनस्थाना  
नौरासीद्वेदवारिचेः ।

वेदस्य स्थापना तेन  
ह्यारिच भूतले पुनः ॥

एक चरितमें तुच्छे  
समने मडले तथा ।

द्वितीय मन्त्रं सन्नाय्य  
तद्ग्राह्यमज्ञातं गतम् ॥

इत्यालोच्य प्राविन्नेत सया  
ऽऽमुनिनाऽऽवना ।

शेष विधास्ये च माध्य  
शामिमागोत्तापिना ॥११

अथान् दधानन्द सरस्वती  
स्वामी नामक जो सहाय्य हुए

हैं उन्होंने बराबान पर वेद की व्यवस्था और मर्वादा की स्थापना की । उन्होंने सत्रम मखडल के दर्से

सूक्त के द्वितीय मंत्र पर्यन्त माध्य किया, तन्पुत्रवान स्वर्ग विचार गये । दुःखपूर्वक उस स्थिति का अनुभव कर सुम आर्य मुनि द्वारा

शेष श्रवण का यह माध्य स्वामी दधानन्द प्रदर्शित मागोनुसार बनाया जा रहा है ।

१. श्रवण माध्यम् श्रीमदाथे-  
मुनि निर्मितम् संवत् १६७४ १० १

आर्येमुनिहुत श्रवण माध्य के जन्म मखडल में वेदविषयक विस्तृत विवेचनों के आन्तर लेखक ने निम्न श्लोक में माध्य आरम्भ करने की स्थिति का निर्देश किया है—

क्रम्या शिवमे मासे मार्ग-  
शोषं मनोरमे ।

त्रयोपस्थां त्रिवी कार्या मुनि-  
त्रेच प्रकाशिता ॥

सन्वत् १९७४ मार्गशीर्ष शुक्ल  
-त्रयोदशी को यह माध्य आरम्भ

## महर्षि दधानन्द के परवर्ती आर्य सामाजिक विद्वानों की संस्कृत साहित्य सेवा

(प्रो० भवानीलाल जी भारतीय एम० ए० पाली (राजस्थान)



हुआ । सत्रम मखडल पर्यन्त माध्य द्वितीय खण्ड में समाप्त हुआ जो १९७४ में विमें काशी के बार्ज प्रेस तथा चन्द्रप्रभा प्रेस में छपा । अष्टम मखडल का माध्य एतवी तथा चतुर्थ खण्डों में समाप्त हुआ । ये दोनों खण्ड रामपाट निवासों की. एल. पावकी के हितचितक यन्त्रालय में छापे । इनका प्रकाशनकाल क्रमशः १९७६ वि. तथा १९८० वि. है । नवम-मखडल का माध्य ४५ तथा छठे खण्ड में समाप्त हुआ । ये दोनों खण्ड क्रमशः काशी के चन्द्रप्रभा तथा हितचितक प्रेस में वि. सं. १९८० तथा १९७८ वि. में छापे ।

आधुमुनि के श्रवण माध्य में प्रथम मन्त्र पुनः पद पाठ, तन्पुत्रवान् संस्कृत पदार्थ तथा भाषाथे दिया गया है । अथयं परत्येक मन्त्र का हिन्दी पदार्थ तथा भाषाथे भी दिया गया है । माध्य की संस्कृत भाषा सरल और सुगम है । संस्कृत भाषा का नमूना दृष्टय है—

परमात्मोपदिशति-भो जना !  
अस्मिन् जगति अथापकाना-  
नुपदेशकानाञ्च सर्वोपरि पदे  
वर्षते, अतो मवद्विः तय-  
दस्य सर्वेष्व रक्ष्यं कार्यम्

अन्वच्य अथहानाम कर्मणा  
निष्कृत एव सन्तानो याति, यतद्व  
ईश्वरज्ञानुवायिनः ईश्वरनिचयं  
पालयन्ति, पतयते तु सुखिनः, ये  
ईश्वरीय नियमान् न पालयन्ति  
तेषां मासा दिनान्यपि दुःखेन  
याति, इत्यभि प्रायेणोक्तं तेषां  
मासा अवीरा एव अयन् अना-  
पद्विस्तयः ॥११

उपर्युक्त माध्यों के अतिरिक्त  
लक्ष्मण रूप से भी श्रवण के हिन्दी

भाषा में लिखे गये माध्य उल्लेख-  
नीय हैं । चतुर्वेद भाष्यकार  
जयदेव शर्मा विद्यालंकार का  
श्रवण भाषा भाष्य, ३ भाषा  
दामोदर सातवलेकर का श्रवण  
सुबोध भाष्य तथा विद्यानन्द विदेह का चतु-  
र्वेद व्याख्या प्रथम महत्वपूर्ण है ।  
लाला शेषीचन्द ने स्वामी दधानन्द  
के चतुर्वेद भाषा भाष्य का अंग्रेजी  
में अनुवाद भी किया है ।

सामवेद भाष्य— स्वामी  
दधानन्द का सामवेद पर कोई  
माध्य उल्लेख नहीं होता । सर्व  
प्रथम मेरठ निवासी १० तुलसी  
राम स्वामी ने सामवेद पर महत्व  
पूर्ण माध्य लिखा ५६ संस्कृत तथा  
हिन्दी दोनों में लिखा गया है तथा  
दो भागों में स्वामी प्रेस मेरठ से  
छपा । अन्व हिन्दी भाषाओं में  
जयदेव शर्मा विद्यालंकार का भाषा  
भाष्य, बीरेन्द्र शर्मा का सामवेद  
माध्य हरिचन्द्रचन्द्र विद्यालंकार का  
दधानानाथक माध्य, २ भाषा  
दामोदर सातवलेकर का सुबोध  
भाष्य तथा लाला शेषीचन्द का  
अंग्रेजी अनुवाद महत्वपूर्ण है ।

१. श्रवण माध्यम् — भी  
महाथेमुनि निर्मितम् प्रस्तावना  
१० ५५

२. श्रवण माध्यम् — भी  
महाथेमुनि निर्मितम् प्रस्तावना  
१० ४ ।

३. प्रकाशक—आर्य साहित्य  
संस्कृत, अजमेर ।

४. प्रकाशक आर्य स्वाध्याय  
संस्कृत पारङ्गी ।

५. प्रकाशक वेद संरक्षण अजमेर

स्वामी दधानन्द क माध्य पर  
विस्तृत टिप्पणियां दी हैं तथा  
माध्य में प्रयुक्त संस्कृत को व्याख-  
रय की दृष्ट से सुष्ट किया है ।  
विवाच्याकार ने आपनी विराट  
भूमिका में वेद हान का स्वरूप  
वेद और उसकी शाखायें, देवता-  
वाद, जादोवाद, भातुओं का अनेक-  
थैत और सौमिकवाद, वेदाथं की  
त्रिविध प्रक्रिया जैसे महत्वपूर्ण  
विषयों का संशोर्गांग विवेचन  
किया है ।

दधानन्द माध्य के अतिरिक्त

श्रवण माध्य के अतिरिक्त

श्रवण माध्य के अतिरिक्त

श्रवण माध्य के अतिरिक्त

श्रवण माध्य के अतिरिक्त

श्रवण माध्य के अतिरिक्त

श्रवणमायी विद्वानों ने चतुर्वेद  
पर कतिपय अन्व हिन्दी भाष्य  
भी लिखे हैं । जिन में जयदेव  
शर्मा विद्यालंकार का भाषा भाष्य,  
वैदिक संरक्षण कुटावन द्वारा प्रका-  
शित चतुर्वेद भाष्य, श्रीपाद दामो-  
दर सातवलेकर का सुबोध भाष्य  
तथा विद्यानन्द विदेह का चतु-  
र्वेद व्याख्या प्रथम महत्वपूर्ण है ।  
लाला शेषीचन्द ने स्वामी दधानन्द  
के चतुर्वेद भाषा भाष्य का अंग्रेजी  
में अनुवाद भी किया है ।

सामवेद भाष्य— स्वामी  
दधानन्द का सामवेद पर कोई  
माध्य उल्लेख नहीं होता । सर्व  
प्रथम मेरठ निवासी १० तुलसी  
राम स्वामी ने सामवेद पर महत्व  
पूर्ण माध्य लिखा ५६ संस्कृत तथा  
हिन्दी दोनों में लिखा गया है तथा  
दो भागों में स्वामी प्रेस मेरठ से  
छपा । अन्व हिन्दी भाषाओं में  
जयदेव शर्मा विद्यालंकार का भाषा  
भाष्य, बीरेन्द्र शर्मा का सामवेद  
माध्य हरिचन्द्रचन्द्र विद्यालंकार का  
दधानानाथक माध्य, २ भाषा  
दामोदर सातवलेकर का सुबोध  
भाष्य तथा लाला शेषीचन्द का  
अंग्रेजी अनुवाद महत्वपूर्ण है ।

श्रवण माध्य

स्वामी दधानन्द अथर्व वेद  
पर भी माध्य रचना नहीं कर  
सके । सर्वप्रथम प्रयाग निवासी  
शेखरगणदास त्रिवेदी ने अथर्ववेद  
पर संस्कृत और हिन्दी में माध्य  
लिखा । यह जानकर सचमुच  
आश्चर्य होता है । शेखरगण दास  
त्रिवेदी का प्रारम्भिक शिक्षक  
उर्दू और फारसी भाषा के माध्यक  
से हुआ था और वे जीवन भर  
रेलवे में कर्मचारी रहे, परन्तु

अपने स्वाध्याय और अध्ययनार्थ  
के चल प उर्दू में संस्कृत भाषा  
और वेदों पर असाधारण कार्यकार  
प्राप्त कर लिया संमकरणा त्रिवेदी  
ने अथर्ववेद के प्रथम कण्ठ का  
माध्य संवत् १९६६ वि. (१९६२ ई०)

(शेष दृष्ट १ पर)

श्रवण माध्य के अतिरिक्त

श्रवण माध्य के अतिरिक्त

श्रवण माध्य के अतिरिक्त

श्रवण माध्य के अतिरिक्त

श्रवण माध्य के अतिरिक्त

श्रवण माध्य के अतिरिक्त

श्रवण माध्य के अतिरिक्त

स्नायु-मण्डल का स्वाभाविक स्थिति में बने रहना ही हमारी स्वस्था का घातक है। स्नायु-मण्डल से प्रकृत-विरुद्ध कार्य लेने पर व्यक्ति का शारीरिक, व आध्यात्मिक पतन हो जाता है। उत्तेजित स्नायु-मण्डल व्यक्ति के विचारों को विचलित कर देता है। उत्तेजना के कारणों में व्यक्ति निरंकुर और विवेकहीन हो जाता है। ऐसी स्थिति में वह स्वयं को ही एक मात्र सही व्यक्ति मानता है। उत्तेजित व्यक्ति की इन्द्रिय विवेक से विलाग हो जाती है। ऐसा व्यक्ति प्रेत-बाधा से प्रसन्न व्यक्ति की तरह समिपात प्रसन्न हो जाता है। बात-बात में वह झड़क जाता है। उसके व्यवहार में क्रुत्रिमता और चिड़चिड़ापन छा जाता है। वह न तो सुख से खा पी सकता है और न चैन की नींद ही सो सकता है। मधुमन्दिषियों की तरह अनेक अंत-पटांग विचार उसके मस्तिष्क को त्रस्त करते रहते हैं। व्यक्ति में विद्रोह की भावना का पोषण भी स्नायु-मण्डल की उत्तेजना द्वारा ही किया जाता है। अपने पर किये जा रहे अन्याय का प्रतिकार करने के लिए हर व्यक्ति क्रोध के रूप में उत्तेजित होता है। क्रोध व्यक्ति में ऊर्ज्ज्वल उत्तेजना है। किन्तु जब व्यक्ति इस प्रकार की उत्तेजना को किसी बाह्य नशे के सेवन द्वारा तुल्य लेगता है तो उसका मानसिक व शारीरिक चरम होने लगता है। यही बात भूल, भोग व निद्रा के बारे में भी कही जा सकती है। क्रुत्रिम भूल लगाने के नाना प्रकार के चूर्ण और चट्टनियों को उदरस्थ किया जाता है। रसना को उग्र करने के लिए विभिन्न प्रकार के स्वादिष्ट व्यन्जनों का आधिकार किया जाता है। लेकिन यह स्वाद ही आगे चल कर व्यक्ति को विभिन्न व्याधियों का शिकार बनाता है।

## क्यों नशा ही हमारी प्रेरणा है ?

(ले०-श्री सुन्दरलाल जी बोहरा जोधपुर)



अजीर्ण, पेचिरा, बवासीर, मधुमेह व खिचर द्वारा उत्पन्न आध्यात्मिक व्याधियों को अंतिम सांस तक व्यक्ति को डोना पड़ता है। इस तरह क्रुत्रिम भूल को उत्तेजित करने के लोभ में जहां एक ओर अनेक लोग युवावस्था में ही नृद्ध बन गये हैं, वहां दूसरी ओर असंख्य चिकित्सालय व चिकित्सक पल रहे हैं। किसी वैद्य ने अपनी सुमारी में कह दिया—पान से पाचन-व्यवस्था ठीक रहती है। फिर क्या चाहिए, लोगों ने इस तरह मुंह भर-भर कर खाने शुरू कर दिये कि देखकर ऊंट और बकरियों को भी लजित होना पड़ा। जब तक लखनवी नवाबों द्वारा प्रयुक्त विभिन्न मसालों युक्त पान की गिलोरियां न चबायी जायें तब तक पान खाना ही पाप है। आखिर पाचन-व्यवस्था को सुधारना है, शरीर में मर्दानगी (!) का अनुभव जो करना है, बेचारे पनबाड़ियों के बाल-बच्चों का पालन जो करना है। और ? और एकदम उजली सड़कों व फरों पर चलते हुए आधुनिक कला की विभिन्न डिजाइनों बनाना है।

किसी लफंगे ने कभी छाती टोक कर बात कही थी : कीड़ी सिगरेट के सेवन से जुकाम कभी भी नहीं होता। फिर क्या, फटा-पट बीड़ियों के मण्डल खाली किये जाने लगे, सिगरेटों के खाली पैकेटों से सारी सड़कें, बसें और रेलगाड़ियां पाट दी गईं। जिधर देखो उधर बस बुझाई ही बुझाई—हम किसी देल के इंजिन या फेन्ट्री की चिमनी से कम थोड़े ही हैं। चिलम और हुक्का तो भारत की प्रायः ओर रहती परम्परा के नाम से चल रही रहे हैं। भक्ति-भक्ति

की बिलमें और उंची कीमतों के हुक्के बनाये जाने लगे। 'पूली खाप' 'गुजरातिन' लखनवी 'खेती-बाड़ी' और भी न जाने कितने नामों व रंगों की तम्बाकू को सजा सजा कर मसनद पर सम्मान दिया गया। लेकिन फिर भी मजा नहीं आया। तब ? तब 'वर्नीनियान-बू' का आह्वान किया गया। प्लास्टिक और वैकैलाइट बाजार में आ ही चुके थे, अथावा गति से जुद्ध बनाये जाने लगे। सलेपन और टिकावपन के लोभ में साहब लोगों ने सिगर को पीना शुरू कर दिया। वस्तुतः आदमी को हमेशा सभ्य के अनुसार ही चलना चाहिये। इंसानों और चिमनियों के युग में हमें तदनुसार ही आचरण करना चाहिये वरन् हम 'जंगली' ही रह जायेंगे।

लेकिन अफीम का बणान किये बिना तो रामपत्तों का इस्तेमाल ही नहीं लिखा जा सकता। व्यक्ति के अन्त से लेकर मृत्यु तक अफीम तो गलना ही चाहिये, अन्यथा इस भूमि पर जन्म लेना ही निरर्थक है। अफीम खाने में कड़वी लगी तो उसे गुल्लर के पानी में धोल कर पिखा जाने लगा। यदि किसी ने मर्हफिल में बैठकर भी अफीम लेने से इन्कार कर दिया तो उसे चार आदमियों ने पकड़ कर उसके गले में अफीम को उतारा गया—सामाजिक तो आखिर अफीमची ही हुआ करते हैं। इस अफीम के लोभ में अनेक जागीरियां समाप्त हो गईं, फिर भी मर्दानगी और शूरत्व के लिए अफीम खायेगी ही।

(क्रमरः)

## पानीपत की घटना पर प्रधानमन्त्री का चरित्र

प्रधान मन्त्री, भीमवी इंदिरा गांधी ने पानीपत की घटना के बारे में बहू बक्तव्य जारी किया है। पानीपत में १५ शत्रु को जो कायद हुआ, उससे सारे देश को और मुझे भी गहरा धक्का लगा। क्या हम भारत के महान सपनों के आदर्श को भूल गए हैं ? क्या हमने स्वतन्त्रता की लड़ाई इसीलिए लड़ी और स्वतन्त्रता इसीलिए पाई कि हम अपने ही देशवासियों की हत्या कर ? भारत के मान और स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए पानीपत में अनेक लड़ाइयां हुई हैं। क्या आज पानीपत के नाम पर वह कलंक लगेगा कि वहां ऐसे अमानवीय और नृशंस कार्य भी होते हैं। सारे देश के प्रभुद लोगों, विशेषकर कांग्रेस संगठन के कार्यकर्ताओं को इससे सचक लेना चाहिये और ऐसे नृशंस कार्यों के खिलाफ जनमत तैयार करना चाहिये। श्री कौलि कुमार, श्री सम्भाराम लाम्बा और श्री दीवान चन्द्रकन्त ने अपने सारा जीवन देश की सेवा में व्योह्वार कर दिया था और अब भी शहीदों की तरह उन्होंने प्राण दिए हैं।

## मर्हिये दयानन्द के.....

(खट्ट ४ का पुनः) में प्रकाशित किया। पुनः क्रमरः सम्पूर्ण बीस काण्डों का भाष्य प्रयाग से प्रकाशित हुआ। अथर्व वेद पर अथर्व वेद रम्यो विद्वत्कार ने भाषा भाष्य, श्री पादशास्त्रोदर शास्त्रोदर ने सुशोभ भाष्य तथा लाहौर की. ए. बी. कालेज के संस्कृत तथा दर्शनशास्त्र के प्राध्यापक ए. राजाराम ने भी भाषा भाष्य लिखा। (क्रमरः)

१. वेदवाणी काशी के विशेषांक के रूप में
२. प्रकाशक-सांवेदिक प्रकाशन लि. दिल्ली सम्पत् २०१२ वि.
३. भाष्य प्रयाग लोहाई के अन्तर्गत।

(गाँव से आगे)

**महर्षि दयानन्द और विश्व विज्ञान की भव्य भावना**

महर्षि दयानन्द जी भारत को ज्ञान के शिखर पर पहुँचा कर भारत को विश्व का गुरु बनाना चाहते थे। चक्रवर्ती वैदिक साक्षात्पथ स्थापित करना चाहते थे। वे विश्व के आर्य भाई बहनो हम् महर्षि दयानन्द जी के अधूरे कार्यो को पूर्ण करने का स्वयं रुक्मण्य करके विद्वध में आपना चक्रवर्ती वैदिक साक्षात्पथ स्थापित करके पुनः प्रेम की गंगा बहा कर वेद क पवन भूँदश को दुःखयन्त्री विश्व मायम के उपदेशो को चरितार्थ करे।

आप समाज को विश्व के मानव समाज का पदशोक बनाने में वह वेद विद्या के प्रचार म आपनी सारी शक्तियों को लागाकर आपना जीवन बह मय बनाये। आज पत्रकार केसरी लाला लजपत-राय, महात्मा हंसराज शाहीदि आजम अद्वैय स्वामी अद्वानन्द स्व० लाल धडाडुर जी शास्त्री जेसा आदर्श स्वामी हैं। भारतीय गौरव के सुर्वे शिवाजी, महाराष्ट्रमा प्रताप अमर शाहीद धर्मवीर पं० लेखराम आजाधो के दिवाने वीर भगतसिंह देवता स्वरूप भाई परमानन्द, देशभक्त कुंवर चाँद-करण जी शारदा, वीर साबरकर जैसे महापुरुषों की आबश्यकता आर्य समाज को है। ऐ महर्षि दयानन्द के सेनिकों आपने सारे अतमेदों को भूलकर वेद प्रचार करने में जुट जाओ। ओशम की पवित्र पलाका को धारण करके वेद पथ पर आगे बढ़ो। अपनी अंगठन शक्ति को बढ़ाओ, विश्व की सेवा के लिये आपने तन, मन, धन तुच्छ सर्वस्व की आज अेंट बढ़ा दो।

सृष्टि के आदि कालसे ऋष तन का इतिहास ध्यान पूर्वक पढ़ने से वह ज्ञात होता है कि पुरुषार्थी अनुप्य के लिए कोई कार्य असम्भव नहीं है। अनुप्य शक्तियों का कुत्र

**राष्ट्रीय चेतना के अग्रदूत**

**महर्षि दयानन्द**

लेखक : वेदपथिक श्री पं० धर्मवीर आर्य भंडाधारी, व्याख्यान

भूषण नई दिल्ली—५



है। अतः आपनी शक्ति को पहचानो, आपनो अन्तर आत्मा के सिद्ध नाद को ध्यान पूर्वक सुनो। राष्ट्रिय चेतना के अग्रदूत महर्षि दयानन्द थे इस बात को आज सब भली प्रकार जानकर उनके दिव्य गुणों को उपदेशों को धारण करके आपना जीवन वेदोक्त बनाकर अमर बनो।

आश्चर्यक नोट -

सृष्टि के आदि काल से अब तक कोई भी विश्व का वैज्ञानिक

जन्म के असंख्य तारों की ठीक प्रकार गणना नहीं कर पाया है। उसी प्रकार महर्षि दयानन्द जी के अज्ञातित उपकार को गिनना वा शर्दों की सीमा में लाना लेखक की लेखनी से सर्वथा परे है। महर्षि दयानन्द के उपकारों का जगुणो आज संसार में अनीश्वर बाद और भौतिकवाद भोग वाद की ओर आबाध गति में अनुप्य बढ़ रहा है, पर यह याद

**सावधान !**

(रचयिता -प्रकाशचन्द्र कविरत्न, अजमेर)

सावधान हो, सावधान हो सुनी छोड़ जवान।  
 शस्त्र सम्भाल हाथ में नु जन वीर प्रताप शिवाजी  
 माधुर्मि की रक्षा करने, लगा जान को वाची  
 ले जमंग निज अंग - अंग मे  
 मिह बधर - ता कुद जंग मे  
 बात छोरे ! दर की क्या ! तेरा रसक जव भगवान संग में,  
 चरण बढ़ाये ता निराहु, आगे नु छुनी तान।  
 सावधान हो, सावधान हो, सुनी छोड़ जवान।  
 अघाचारी, प्रपञ्चियों की सारी पोल खोल दे  
 दूरा-प्रोद्धियों के दल पर नु धाबा विकट बोज दे  
 गेठ, अकड़, मय, मान भाड़ दे  
 मार - मार हलिये बिगाड़ दे,  
 चारों खाने चित पछाड़ दे  
 पूर्ण विजय को अंजा गाड़ दे  
 फाड़ क्लेशा हिरण्यकश्यप का नूनसिंह समाज।  
 सावधान हो, सावधान हो, सुनी छोड़ जवान।  
 छोड़ व्यर्थ की बात बनाना बिगड़ी बात बना ले  
 कर 'पकाश' सेवा स्वदेश की जग में कीर्ति कमा ले  
 जग में आपना अमर नाम कर  
 देश सुनी हो बढ़ी काम कर  
 स्वदेश के ही लिए समर्पण  
 निज तन, मन, धन, धरा धाम कर  
 स्वदेश-भाषा, स्वदेश-भूषा, स्वदेश के हों गाँ।  
 सावधान हो, सावधान हो, सुनी छोड़ जवान।

रहे ईश्वर और धर्म को आपनाये बिना अनुप्य लाल धन करने पर भी लास जन्म में भी सुख शान्ति तथा आत्म ज्ञान का अधि-कारो कदापि नहीं बन सकेगा। महर्षि दयानन्द के गुणों का आभो आज हृदय में ध्यान कर के हम भी आज बोध प्राप्त करके इस जीवन यात्रा को सुखी बनाए।

**वेद विश्व विद्यालय**

विश्व की समस्त राष्ट्रभाषाधी के ज्ञाता वेदों के प्रकाश पुनश्चर विज्ञान उपदेशों को तैयार करने म लिये विश्व मे व्यापक वेद विद्या के अन्वेषण प्रचार क लिए हमें वेद विश्व विद्यालय का निर्माण करना है। नालन्दा विश्व-विद्यालय के समान वेद विश्व-विद्यालय का निर्माण कर नवलान भारत की राजधानी मे करना है। इसके बिना महर्षि के वैदिक मिशन का ठोस और व्यापक प्रचार नहीं हो सकेगा।

आज हमें हजारी, उपदेशकों, तन्त्रात्मियों, वाणार्थियों, प्रचारकों के टुटने में स्वाभ्याय करने तथा उनके भोजन व विज्ञान की व्यवस्था करनी है। विश्व के समस्त वेद भक्तों के नाम यह सुनाए है। इस कृत्य के पालन में सब जुट जायें।

**वेद प्रचार से ही विश्व**

शान्ति होगी

वेद विश्व विद्यालय निर्माण समिति, नई दिल्ली के मंत्री वेद पथिक पं० धर्मवीर जी आर्य भंडाधारी ने आज गिरगाव, चम्बई से आपने एक प्रेस वक्तव्य में यह बतलाया है कि जब तक विश्व का मानव समाज वेदों की शिक्षाओं को अपनाकर आपनो जीवन वेद-कृत नहीं बनायेगा, तब तक विश्व शान्ति वा होना संभव असम्भव है। आप ने आपने वक्तव्य में यह भी बतलाया है कि वेदों का अनुवाद और प्रकाशन का कार्य विश्व की समस्त प्रमुख राष्ट्र भाषाओं में किया जायेगा।

(सोप पृष्ठ = पर)



# भारत सूचना

तुर्गभद्रा नहर में

महापत्र

केन्द्रीय विचारों के

मंत्री श्री फलकशीन द्वारा

ने श्री कोल्ला देवैय्या तथा चार

अन्य सदस्यों के प्रदन के उत्तर में

आज्ञा लोकसभा को बताया कि तुर्ग-

भद्रा योजना के लिए आग्रह प्रवेश

सरकार को १८ दिसम्बर, १९६६

को १ करोड़ रु० और ३१ जनवरी,

१९६६ को ६० लाख रु० अर्थात् मंजूर

किया गया। राज्य सरकार ने इस

योजना के लिए १ करोड़ ६८ रु०

का और अर्ध भाग है।

आकाशवाणी से बच्चों के

कार्यक्रम का समय

गर्मी की छुट्टियों में बच्चों के

कार्यक्रम अधिक अच्छे तरह सुन-

वाने के लिए, १४ मई से ६ जुलाई

तक बृहन्नी और शनिवार के दिन

बच्चों का कार्यक्रम दिल्ली 'क' से

सुबह १० से १०-३० तक प्रसारित

किया जाएगा।

रविवार को बच्चों के कार्यक्रम

का समय पहले की तरह १० से

से १०-४४ बजे तक प्रसारित किया

जाएगा।

दया याचिकाओं

आज्ञा लोक सभा में

रान के प्रदन के उत्तर में गृह मंत्रा-

लय में मंत्री श्री जयसुखलाल हाथी

ने बताया कि १९६४ में राष्ट्रपति

पठनीय एवं मननीय साहित्य

वेद प्रबन्ध ५/- गोदासारा ७५

पैसे, आलमगीर के पत्र १/-शंभारम्भ

संस्कार १/५० पैसे, मेरी आठ

रोचक कहानियां ७५ पैसे, लोकट

७५ पैसे, सद्गुरुके जीवन ५० पैसे,

कर्म मोर्मासा २/२५ पैसे, संतति

नियमन नवी और कीर्ति १५ पैसे,

सैनिक व्याकरण भास्कर ६/-

व्यायाम बोधक पत्र ११/२० पैसे,

साहित्य प्रचारक १/-

जयदेव ब्रदर्स बढोदा-१

## श्रीमती उच्च शिक्षा की राष्ट्रीय परिषद में विचार

१६ मार्च, १९६६ को यहां

श्रीमती उच्च शिक्षा की राष्ट्रीय

परिषद की बैठक हो रही है।

बैठक की अध्यक्षता श्रीमती शिवा

मन्त्री, श्री मोहनलाल खन्ना की

चागला है।

विश्वविद्यालयों के लिए अनुदान

श्री बी० एन० भार्गव के प्रदन

के उत्तर में केन्द्रीय शिक्षा मंत्री

श्री मोहम्मद अली करीम चागला

ने आज रातभ सभा में बताया कि

१९६५-६६ में विश्वविद्यालय अनु-

दान आयोग ने विश्वविद्यालयों

को ह्रापेक्षाने खोजने अथवा उन

में सुधार करने के लिए ६, ८५,

६४८, ८० रु० अनुदान दिया।

## आवरयकता है

एक युवायुवक उपदेशक की

आवरयकता है जो कि प्रचार के

काम के अतिरिक्त कार्य प्रादेशिक

प्रतिनिधि उपसभा दिल्ली के

कार्यालय को भी सम्भाल सके।

देवन योग्यता और अनुभव के

आधार पर दिया जावेगा। दिल्ली

वा दिल्ली के समीप रहने वाले

महानुभाव को प्रधानता दी

जावेगी। प्राथना पत्र निम्नलिखित

पत्र पर ध्याने चाहियें।

कृपया पत्र रहन

प्रधान-आय प्रादेशिक प्रति-

निधि उमसभा मार्क्ट जे-३४

साइड पकस्टेशन पाठ-१

नई दिल्ली-३

## नये बालकों का प्रवेश

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

के विद्यालय विभाग में नये

बालकों का प्रवेश वापिकोसव

पर ११ से १५ अप्रैल १९६६ तक

होगा। गुरुकुल की उपाधियां

सरकार और विश्वविद्यालयों द्वारा

विचारों की प्राथमिकता के अन्तर्गत प्रस्तावित कर दिया।

## पाकिस्तानी एजेंटों की गतिविधियां

आज्ञा लोक सभा में बड़े स्पीर तीन अन्य सदस्यों के प्रदन के उत्तर में गृह मंत्रालय में मंत्री श्री हाथी ने बताया कि इस बात का कोई सबूत नहीं मिला है, कि अम्बू व बन्दीर में पाकिस्तान एजेंट फिर सक्रिय हो गए हैं। फिर भी उपयुक्त सतर्कता बरती जा रही है।

## अतिम तारीख ३१ मार्च

भारत सरकार ने स्वयं (नियन्त्रण) नियम, १९६६ के मसौदे पर लोगों के विचार और सुझाव प्राप्त करने की बबबधि ३१ मार्च १९६६ तक बढ़ा दी है।

वह सूचना वित्त मंत्रालय के राजस्व और बीमा विभाग की वेब विज्ञापन में दी गई है।

## गोपनीय रजिस्टर हॉली

सरकार को जरूरी सामान को गोपनीय नियमित होनी रहे, इसके लिए पूलि और विदेशी फर्मो से पहले से अापने नाम रजिस्टर करने को कहा है।

## जनवरी १९६६ में ६६ करोड़

रु० का निर्यात

जनवरी १९६६ में ६६ करोड़

रु० का माल विदेशों को भेजा

गया। पिछले वर्ष की इसी अवधि

(जनवरी १९६४) के मुकाबले इस

बार २ करोड़ १० लाख रु० का

निर्यात अधिक हुआ। इस बार

सभी वस्तुओं के निर्यात में लगभग

समान वृद्धि हुई।

संयुक्त हैं। आभ्रम प्रयाली, शुद्ध जलरायु, उच्च आचार व्यवहार इस संस्था की मुख्य विशेषतायें हैं। प्रवेशार्थ प्राथना पत्र तथा नियमावली गुरुकुल कांगड़ी विश्व-विद्यालय अिला सहरानपुर से मंगाये जा सकते हैं।

धर्मपाल विद्यालंकार स० मुख्याधिष्ठाता **आर्यसमाज, गोविन्द नगर** (ब्लाक नं० २) कानपुर

सम्भ वीर सावरकर के निचन पर शोक प्रस्ताव पारित किया गया।

आय समाज में होली का त्योहार भी विशेष आकर्षक ढंग से मनाया गया। इस अवसर पर श्री देवीदास जी आर्य ने होली को महत्व पर आध्या दिया। सदस्यों ने चन्दन और खसीर से एक दूसरे का स्वागत किया। गले लगाया।

धर्मवीर १० लेखराम दिवस पर भी आम सभा की गई, जिसमें श्री देवीदास आर्य का भाषण हुआ।

भवदीय मोहनलाल मन्त्री सभाज

## मर्षि दयानन्द

(ग्रह = का शेष)

आप ने बताया है कि नई

दिल्ली में वेद विश्व-विद्यालय का

निर्माण होगा। इस वेद विश्व-

विद्यालय के अर्थन पर तथा वेदों

के अनुवाद और प्रकाशन पर एक

करोड़ रुपये का आरम्भिक व्यय

होगा। वह शास्त्र है कि विश्व

शांति का तथा वेदों का पावन

संदेश लेकर १० धर्मवीर जी आर्य

विश्व के राष्ट्र नायकों से मिलने

के लिये तथा उन्हें वैदिक साहित्य

का उपहार भेंट करने के लिये दिल्ली से शीघ्र ही विदेशों की यात्रा पर प्रस्थान करने वाले हैं।

मुद्रक व प्रकाशक श्री लखोपराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा अजाब जालन्धर द्वारा वीर मिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजनाम कार्यालय, महात्मा इंदिराजी अमन निजद कचहरी जालन्धर तह से प्रकाशित साप्ताहिक-आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा अजाब जालन्धर



दिलीकोन नं० ३०१०

[आर्यशादेयिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्वर का साप्ताहिक मुखपत्र]

Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे

वारिक मूल्य ६ रुपये

४ वर्ष २६ अंक १४)

२१ चैत्र २०२२ रविवार—दयानन्दान्न १४१—३ अप्रैल १९६६

(तार 'प्रादेशिक' जालन्वर)

## वेद सूक्तयः

अयमग्निरूपमयः

यह अग्नि : अग्नि रूप परमात्मा ही उपमयः—प्राप्त करने योग्य है। वही प्रकाश-राता परमेश्वर सदा प्रकाश करने के योग्य है। वही उपमय के लिए उपमयता के योग्य है। उसी को पाना होगा।

उदेहि मृत्योर्गम्भीरतः

हे मानव ! अपने इस जीवन में इस गहरी भीत से उदेहि—ऊंचा उठ जा। भीत से निभी प्रकार का भी मय न कर। भीत को कुत्ते-न दे। तेरा जीवन अविनाशनी जीवन बनना जाय। भीत से मरना नहीं।

दृष्ट्वाच्चित्तु तमसस्यरि

और हे वीर मनुष्य ! यह जो आप आप का काला-काला अन्धकार है, जिससे जीवन भी काला बन जाता है। इससे भी तु परे रह। आप का अन्धकार भा तुझे स्वर्ग न करने पाय।

ऋषि बोधप्रतिबोधो

तेरे पास तो ये दोनों बोध और प्रतिबोध रूप में आ रहे हैं। बोध का अर्थ है ज्ञान और प्रतिबोध का अर्थ है स्मरण शक्ति के—अर्थात् बुद्धि और मन तु बुद्धि और मन का मार्ग है। तुके वना चिन्ता— आधुनिक दे दे से

## वेदा मृत

राजा व शासक के कर्तव्य

वि न इन्द्र मृधो जहि नीचा यच्छ पृतन्पतः ।  
अथमं गमया तमो यो अस्मां अभिदासति ॥

अथर्व वेद काण्ड प्रथम सूक्त २१ मन्त्र २

अर्थ—हे (इन्द्र) राजन ! शासक आप (न.) हमारे सारे (मृधः) शत्रुओं को (वि जहि) मार देवें और (नीचा) नीचे पुरुषों को (नीचा यच्छ) नीचे कर दो, दबा दो। जो भी [पृतन्पतः] सेना से हमला करते हैं उन शत्रुओं को कुचल दो। उन को [अथमं] नीचे मण्डली को [गमया] पहुँचा दो [तमः] अन्धे में जेल में व मृत्यु को कोठरी में डाल दो [य] जो भी [अस्मान्] हम को [अभिदासति] अपना दास बनाना चाहता है।

भाषार्थ—राज्य के ऊँचे आसन पर बैठ कर शासन चलाने वाले राजन् ! आप इन्द्र हैं। जो भी शत्रु बन कर या नीचता के विचारों में भर कर राष्ट्र को हानि पहुँचाना चाहते हैं। सेना लेकर राष्ट्र की भूमि भवन अथवा सम्पत्ति के भण्डारों को हथियाना चाहते हैं। हमारी आज्ञाओं को समाप्त कर के प्रजा जनता को पराधीनता की वेष्टियों में बाँधना चाहते हैं। उन सब शत्रुओं को, राष्ट्र-घातकों, देश के एकता के सूत्र को तोड़ने वाले देश-द्रोहियों को, विघटन पैदा कर के राज्य के जन-जीवन की शान्ति से खिलवाड़ करने वाले वीरों विरोधियों को पूरी शक्ति से कुचल कर रख दे। उन को बन्दी बना डाल। उन को पूर्णतया दबा दे—सं०

## ऋषि दर्शन

दुष्ट शत्रुणां पराजयार्थम्

हे राष्ट्र के नायक ! प्रजा के लोगों व वीर पुरुषों ! आप मारे मिल कर दुष्ट शत्रुओं को पराजित करने के लिए सदा ही तैयार रहो। उनसे संघाम करते रहो।

सदा विजयं प्राप्नुवः

हम सदा ही ऐसे समाज धर्म और राष्ट्र का रक्षा करने वाले अत्याचारी शत्रुओं से टक्कर लेते हुए विजय प्राप्त करें उनको परास्त करके विजयी बनें।

त्रिविधां सभां प्राप्नु

सभा तीन प्रकार की होती है। राजा व सभा विद्या सभा और तीसरी धर्माय सभा। राष्ट्र को सुखी बनाने के लिए इन तीनों सभाओं की पालना करते हैं। राज, विद्या, और धर्म का ठीक-ठीक काम चले।

तत्रैव प्रजाः सुख्यः

उस देश में, उस राज्य में सारी प्रजा, सारे लोग अश्रय-सुखी होते हैं। यह स्वाभाविक ही है। जहाँ पर उसमें सबका हित है, वहाँ पर जनता को हृ प्रशान्त का जीवन में सुख होता है। दर विभाग में स्तर ऊंचा होता है।

भाष्य भूमि का सं

श्रविष्ठाता—श्री संतोषराज जी

सम्पादक—त्रिलोक चन्द्र शास्त्र

अस्मै ते प्रतिहृयेते

जातवेदा विचर्यते।

अग्ने जनाभि सुदुग्मि ॥

अ ८।४१।१।

हे सर्वज्ञ, सर्वेश्वर के स्वामी, हे ज्ञान स्वरूप, सर्व प्रकाशक, प्रकाश स्वरूप, हे सर्व द्रष्टा, प्रत्येक जीव को चाहने वाले तेरी मैं उत्तम स्तुति किया करूँ।

भगवान प्रत्येक जीव को चाहते हैं सभी प्राणियों का मंगल करते हैं। भगवान की स्तुति उनके दिव्य गुण धारण करने से होती है।

सर्व विधाय दास्युषे

रविं देहि सहस्रिण्यम्।

अग्ने वीर वती भिषय ॥

अ ८।४३।१४

हे जीवन दाता हे तेजस्वरूप हे सर्व नियन्ता! उदारचरित दिव्य गुण सम्पन्न मेधावी मनुष्य को सहस्रों सुख और गेदबवं और वीरता युक्त अन्न दिया जाता है।

दिव्य गुण सम्पन्न मनुष्य भगवान को द्वारा लगता है वृत्ति वह भगवान को अनुकूल उदारता और श्रेष्ठता का व्यवहार करता है। भगवान उसे हर प्रकार यश, मान, संपदा देता रहता है। दिव्य गुण सम्पन्न मानव पेशवर्धवान होता है, मतिमान होता है और कीर्तिमान होता है।

यदङ्गदासुषे त्वभरने भद्रं करिष्यति।

तत्सेवस्त्वमङ्गिरः ॥

अ १।१।६

हे प्रेममय प्रभो, हे परम सुहृद! तू दानशील मनुष्य को नित्य कल्याण करता है, यह तेरा स्वप्न है।

स्तुति करने का वेद भगवान

का आदेश

प्राग्नेवाचमीरव वृषभाय

स्तीनामः ॥

सनः पयं अतिद्विषः ॥

अ १०।१८०।१।

मनुष्यों के अमीष्टों को बरसाने वाले जीवन - दाता प्रभु के लिए

धार्मिक चर्चा—

## स्तुति

(श्लो-स्वा० साक्षचन्द्र जी)



अपनी बाबी को प्रकृष्टता से पेरित कर । वह हमें ढ़ेणों से पार लगावेगा।

अग्निदेव वृषभ है। अपनी कृपा बरसाते हैं। भगवान में संकीर्णता नहीं, संकोच नहीं। भगवान मनुष्यों की भांति छुपण नहीं। छुपण मनुष्य तो ही हरस के योग्य, क्योंकि पेशवर्धवान होकर भी वह उदार नहीं। भगवान से उदारता सीखनी चाहिए। अपना हृदय उदार बनाना चाहिए।

भगवान ढ़ेणों को समाप्त कर देते हैं। जब मनुष्य घर-घर बासी हृदय विहारी को अपने साथ में छुनुभव करता है तो शूर्या और पृथा नहीं करता इस प्रकार ढ़ेण

का शानन होता है। अर भगवान की स्तुति करने वाले को वेद भगवान आदेश दे रहे हैं। स्तुति जब ही पूरी समझनी चाहिए जब कि उपास्य देव के अनुकूल जीवन व्यवहार होने लगे।

### उपासना

उपवासा अपने विवेचिये दोषावशस्त्रिचिंयावयम्। नमो भरन्त पमसि ॥

अ ० २।२।०

राजन्त मन्वराणां

गोपामृतस्य दीदिविम्।

वर्धमानं स्वेदमे ॥

अ ० १।१।८

हे अग्ने ! हे सर्वेश्वर पद प्रभो !

## सच्चे सेवक हो लो

(रचयिता—श्री प्रकाशचन्द्र जी कविरत्न अजमेर)

भारत माता की जय बोलो।

जगतों में वो जन नोका है, जो सेवक निज जननी का है जो सेवा इसकी करे, अमर ही जाता नाम उसी का है भूलो न कभी तुम पर भारी, अल इस पावन धरती का है इस में हो जन्मे, इस ने ही, पालन भी किया सभी का है मन, वचन, कर्म से मातृमूर्ति के तुम सच्चे सेवक हो लो।

भारत माता की जय बोलो।

निज गौरव पर मर मिटने का, देदा दिल में अरमान करो शरीरिक बल के साथ-साथ आत्मा अपना बलवान करो हे लक्ष्य निकट ही यदि मन में, तुम प्रव संकल्प महान करो निर्माण और करिये अद्यय, पहले चरित्र निर्माण करो औरों को शिक्षा दो पीछे, पहले अपने कर्ममय धो लो

भारत माता की जय बोलो।

तुम याद करो तो अपने उन पूर्वज वीरों, रणवीरों को रण-मय किन्हेन शयन हेतु, था सेज बनाया तीरों को किन्तों ने किया देश हित बलि, धन वैभव स्वस्थ शरीरों को घट अमीति था फोरा तोड़ा, परबशता की जजीरों को परमार्थ-प्रेम रस यह 'प्रकाश' अपने भी जीवन में पो लो।

भारत माता की जय बोलो।

हम प्रतिदिन रात और दिन के समय बुद्धि ब कर्म से नगरकार की भेंट लाते हुए तेरे समीप आ रहे हैं।

हे भगवान ! हम तेरे समीप भाप हैं, तू दिला रहित सत्कर्मों का रचक है तू दिला रहित सत्कर्मों में विराजता है तू अत का रचक है तू अपने सामर्थ्य में प्रकाशमान है।

मगवान स्व-सामर्थ्य में विराजता है सारी सृष्टि का वह आधार है। उसी एक आदित्य प्रभु का आभय ही परम आभय है। वह सर्वोभार जीवन का जीवन आत्मा का आत्मा परमात्मा है हम अपने आचरण द्वारा उसके निकटवर्ध होयें। इस छोटे से श्लोक में मैं केवल आचेद के ही कुछ मंत्र दे सका।

वेद का स्वाध्याय करना स्तुति दायक है इस स्वाध्याय से चेतना का विकास होता है। इस स्वाध्याय मे हृदय निर्मल होता है बुद्धि उज्वल होती है। इस स्वाध्याय से आस्था स्थिर होती है। मनुष्य में अज्ञा की उत्पत्ति वेद के स्वाध्याय द्वारा बहुत सुगमता से होती है यह हमारा वर्षों के स्वाध्याय का अनुभव है। अग्निदेव का चिंतन उन्हें अपने आदर प्रेरक और रचक के रूप में देखने से मनुष्य अग्रय हो जाता है। विपस में जो धैर्य स्थिर रखने के लिए अग्निदेव की उपासना बहुत उपयोगी अनुभव में आई है।

प्रतिदिन अज्ञा और विदवास से अग्नि सुक्तों के स्वाध्याय से सामर्थ्य की शक्ति होती है निराशा दूर होती है और मनुष्य स्वावलम्बी रहता हुआ अग्निदेव की रक्षा में दिनोदिन अधिकाधिक लक्ष्य रहता हुआ उन्नत होता है।

वे लोहा ! वे बातें...

★ भूदान आन्दोलन के प्रचार में हिन्दी ने मेरी बड़ी सहायता की।

—दावाचर्य विनोबा भावे

सम्पादकीय—

# आर्थ जगत

वर्ष २६ रविवार २०२२, ३ अप्रैल १९६६ [अंक १४]

## पंजाब का भीषण काण्ड

कॉंग्रेस कार्यकारिणी ने भी कामराज की ऊपद्रव्या में पंजाबी भाषा के आचार पर अकारिणियों की बमकियों के सामने मुकदमे पंजाब प्रांत को बांटने का बहदम निलंबन कर दिया। उसका प्रभाव पंजाब के एकता प्रेमियों पर पहना स्वाभाविक था। अब तक ता कॉंग्रेस गले से चिल्ला कर स्वयं बह बहती रही है कि इस प्रांत का विभाजन नहीं किया जा सकता। स्वर्गीय प्रधानमन्त्री पं० नेहरू जी की आँसों के सामने मां तारासिंह ने भूल इतना रक्खी। अकारिणियों ने गहवद भरा आन्दोलन किया। पर रिजनाल फामूला तो मान लिया गया विन्तु प्रान्त का बटवारा किसी भी रूप में नहीं माना पिता ने जिस किसी प्रकार भी न स्वीकार किया, उसे ऊब उन की पुत्री भीमती इन्दिरा गांधी ने प्रधान मन्त्री के आसन पर बैठ कर मानने में देर न की। जो बात पिता के विचार में सर्वथा अनुचित और गलत थी, वही बात पुत्री के विचार में उचित और ठीक है। इस पंजाब की छोटे २ भागों में बांटना मान लिया। एकता के शरीर पर छुरी फेर दी गई।

इस बटवारेके निलंबन से पंजाबमें उबल-पुथल मच गई। एक ओर जनसंघ के नेता वीर बल्लदत्त जी शर्मा ने अमृतसर में कटका भाई सन्तसिंह के सुते चौक में इस कॉंग्रेस के मिथैब के विरोध में अपना कानूनन कारभार कर दिया। दूसरी ओर देहली में कार्यसमाज के नेता स्वामी सत्यनन्द जी ने

अपनी जान की बाजी लगा दी। पटियाला तथा अम्बाला में भी कानूनन ब्रती बैठ गए। पंजाब के अनेक बड़े-बड़े नगरों में इन्वैली व्यापक हड़तालें हुईं जिसका उदाहरण गत इतिहास में कम मिलता है। सारा हिन्दु समाज मिल गया। कॉंग्रेसी भाई भी बटवारे के निरर्थक से डरुकी हो गये। कार्यसमाज, जनसंघ तथा पंजाब एकता समिति के सारे नेता मिल गये कॉंग्रेस सरकार शायद अपने दिल में हिन्दुओं को कमजोर भेड़ें समझती रही है। वह मुसलमानों, अकारिणियों व नागार्थों के सामने नाक रगड़ना जानती है। देशभक्त हिन्दु समाज को मारती रहती है। पंजाब में हिन्दु समाज ने अपने त्याग, बलिदान तथा एकता का भारी परिचय दे कर हार्दिकमान और सरकार के दिल से ऊब भ्रम दूर कर दिया है कि हिन्दु भेड़ें नहीं हैं।

इतने दिनों तक करोड़ों शरण की व्यापार की हार्तिन बरके बाजार गन्द रहना हिन्दुसमाज के त्याग, बलिदान का चमकता उदाहरण है। पंजाब में भी लाख जगत-नारायण जी, भी चरा जी, भी वीरेन्द्र जी, भी केशवचन्द्रजी, वा. बलदेव-प्रकाश जी, ला. रामगोपाल जी शाल वाले आदि नेताओं ने मिल-कर जो काम किया है—उसकी स्मृति छदा रहेगी। वीर बल्लदत्तजी की भूलसहजाल सुते मैदान में थी। इस महान् बलिदान ने जना में कितना जोश भर दिया। सब नगरों में जवानों, नर-नारियों ने जो लखसों का प्रदर्शन किया, वह इतिहास के अन्याय बन गए

हैं। पंजाब में कामरेज रामकिशन जी की पुलिस ने जो-जो भीषण अत्याचार किये—उनके लिए भी यश जी ने स्या ला, जगत नारायण जी व भी वीरेन्द्र जी आदि नेताओं ने जो वृद्ध बहा, लिखा है—उससे तो जलियावाला बाग तथा मार्ला की याद ताजा हो जाती है। उसके लिए जांच करने की वारो ओर से अकारिण उठ रही है। अत्याचार चले जाते हैं पर उनका अत्याचार उनके जीवन पर सदा के लिए काला टीका लगा देता है।

कामरेज आज पंजाब के मुख्य मन्त्री हैं—पर, हेमेशा यह आसन उन के पास रहने का नहीं आसन वाले बदलते रहते हैं। पर उन के इस युग में लोगों पर, बच्चों पर, देवियों पर तथा मन्दिरों के पुजारियों पर जो-जो जुद्ध किया गया, वे धम्मे तुल नहीं सँभे—जिन १० हार्तिन पहुँची है उन से तो खन को आन्तरिक सहानुभूति है। पंजाब में इन अत्याचारों का उदाहरण बातावरण शांत होने पर इच्छा कर के लिखा ही जाना चाहिए। हम पंजाब के नेताओं को इस एकता पर, जनता को महान् त्याग पर तथा बलिदान पर बधाई देते हैं। अब हार्दिकमान उन को भेड़ नहीं मानेगा। उस की भी कालें खुल गई हैं। कार्य समाज ने भी अपने जीवन का परिचय दे दिया है। परम्परा कायम रखी है।

—त्रिलोक चन्द्र

### आर्थ समाजों से

पंजाब में कार्य समाज एक जागता हुक्का विशाल आंदोलन है। इस के पास सर्वक नेता हैं, वरसाही युवक हैं, भक्ति भाव भरी बहिनें तथा इस की आवाज पर सब हुल्ल देते बाकी जनता है।

आय समाज के पास अपना संगठित प्रचार विभाग है। वहा प्रभावशाली प्रेस है। वरतन क्लेट कार्म है। बड़े २ रिषयसंभाजन

हैं। कोई भी बर्मी नहीं है। कार्य समाज का मान में बहा सुन्दर संगठन है। सारी जनता कार्य समाज के कार्यक्रम व वही श्रद्धा-से बलती है!

प्रचार की इस समय बड़ी आवश्यकता है। अनेक प्रकार के नये २ संस्थाएँ दा होकर लोगों को विशेष बर प्रियों की श्रद्धा का कचुचित लाभ उठा रहे हैं। वही आनन्दप्रियों का जोर तो बड़ी पर ब्रह्म वकारियों वा प्रचार है। व्यास वाले शांताशामिनी वा काम जारी है। अनेक अकारिण व साधुओं के डेरे अपने काम में लगे हुए हैं। सत्य भी अपनी सन्तानियाँ बनाते जाते हैं। इस प्रवाह को रोकने के लिए प्रचार की बड़ी आवश्यकता है। आय समाज के सिवाय इस अन्ध श्रद्धा के प्रवाह को रोकना और किसी के बस का नहीं है। इस लिए प्रचार हर एक नगर व कस्बे की कार्य समाज को चाहिए कि वह अपने २ समाज का जल्सा करने का प्रयत्न करे। प्रत्येक समाज जल्से के अतिरिक्त कथा आदि के प्रचार का प्रयत्न करे। इस प्रचार की आज के युग में बड़ी आवश्यकता है—सं.

### आर्थ समाज लक्ष्मणसर

(अभ्युत्तर)

धर्म प्रेमी जनता को यह जान कर, दुःखी होगी कि अगामी रविवार ३ अप्रैल को आर्थ समाज लक्ष्मणसर के साप्ताहिक अधिवेशन में बम्बई के प्रतिष्ठित कार्य-उपदेशक लास सिह जी आर्थ एक अत्यन्त उपयोगी और सारगमित भाषण देंगे जिसमें सार्दक द्रव्यों विशेषतः तन्मात्र, पाप आदि के प्रयोग से होने वाली हानियों और इन से बचने के उपायों पर प्रकाश डालेंगे।

—सुदरश शर्मा  
प्रधान समाज

योगीन्द्राज कृष्ण जी ने गीता में कहा है :

वृक्षाहार विहारस्य युक्त

चेष्टस्य कर्मसु ।

युक्त स्नानाद्य बोधस्य

योगी भवति दुःखहा ॥

अर्थात् कचित अहार कर, क्वचित कर्म कर, क्वचित चेष्टस्य कर । हमारी जीव हमारे बरा में नहीं। सादा भोजन हमें अच्छा नहीं लगता है । उद्यान के खाद के लिए हम तीनों बातों का उर्ध्वान कर देते हैं । पिछले लेख में मैंने लिखा था Eat to live, not live to eat. पर हमारे प्यारे बन्धुओं ने इस सिद्धान्त को उल्ट कर रल दिया, अर्थात् live to eat not eat to live. यह प्रमुख

जीवन का लक्ष्य है, अर्थात्, काम, मोल को प्राप्ति है । फिर यह कहना कि हम खाते के लिए जीते हैं, केवल नरानो है । पिछले लेख में भोजन सम्बन्धी द्वितीय सिद्धांत मैंने लिखा था। Health depends not on how much money is expended on food, but on what food money is expended स्वास्थ्य इस बात पर निर्भर नहीं है कि भोजन कीमती हो पर केला भोजन कीमती हो। हम मंहगाई का रोगा पीते हैं । कहने हैं पुत दुःख नहीं मिलता, स्वास्थ्य कैसे अच्छा हो। हम चाय जो १५ पैसे रुप पड़ती है ४० पैसे के बिस्कुटों सहित खाता में बेंटर पीना परमन्द करते हैं, परन्तु पात्र दूध जो पूर्ब से कम कीमत का है पीना परमन्द नहीं। यद्यपि वह चाय बिसकुटसे अधिक शक्ति देती भोजन में भले ही कमी या जाय पर बिगरेट के बिना जीना कठिन है चाहे इसके पुर्ब से गले का कैंसर भले ही हो जाय हम स्मूराक को मंहगा बनाने की कोशिश में प्रयत्नय रहते हैं। मंहगा सराफ खाना बुल नहीं, पर स्वास्थ्यकारी

स्वास्थ्य विचार :-

भोजन द्वारा स्वास्थ्य

(ले०-श्री डा० श्रीमप्रकाश जी अग्रवाल ए.एम. ए.एम. (पट्टा)



भी ठीक दूध रोटीकी अपेक्षा परामटे को अच्छा देते हैं। यह रोटी को अपेक्षाकृत भारी और देर से पचने वाला होता है । दाह में पोट्टा पी लय करके दालने की अपेक्षा सूखा बोरा देने को मंहगा देते हैं। इस ची को अगर खाते न पचा सकें तो बहुर से रोग पैदा होते हैं। हम समझते हैं कि जो जो खाना खूब लाकन देगा सो मेरे भाई बहू ताकन जो देता नहीं मरती वाक्या लेगा है । हमारी शक्ति का हरण करता है । हम नाम दूध की अपेक्षा रबड़ी को, गाजर की सब्जी अपेक्षा हलुवे को, बेसन लकड़ुओं को अपेक्षा, बिसकुट खगई केक पेटरी को मंहगा देते हैं। हम यह पता नहीं लगाते कि कौन-प्रा भोजन स्वास्थ्य-पद है। मंहगा को मंहगाई के गुण में मंहगी बनाने की कोशिश करते हैं। अगर स्वास्थ्य-पद खराब का मंहगी बनाने की कोशिश कर्त्त ता मुझे कोई पराजत्र नहीं है । एक सेठ जी थे, धन-दायक की उनके पास कमी न थी। पूरा दुःख की अपेक्षा खट्टा खाने को उनको इच्छा हर समय बनती रहती थी । उनके मजान पर मैंने और गावों की तो कमी न थी । मिल-प्रति उनके दुःख का यह दही जमवाया करते थे। दही बनाया अच्छा है बुरा नहीं परन्तु यह अम्ल दही ही खाना करते थे। अवात बनके बरा में भी नहीं। एक बार उनको मोंकारिटा नाम की व्याधि हो गई। इस व्याधि होने के काह अन्धकी होने पर कांछी रोय रह जाती है। सेठ ये जवान ह्रास उनके लिए लठ्टे दही न खाना खाति

तुकर था । खांसी की दवा लेने यह किसी वैद्य के पास गये और कहा मुझे वैद्य भी बड़ी खांसी उठती है कृपया कई दवा दोगिय ताकि मेरी खांसी दूर हो जाय । वैद्य ने उनको खांसी की दवा दे दी। खांसी की दवा से उनको काम न हुआ लय यह शिवायत करने लगे, कि आपकी दवा ने मुझे काम न किया वैद्य था हाशियाट करने विचार करके पूछा आपने कोई लठ्टी बीज जो नहीं खाई है, सेठ जी बोले मेरो लठ्टे दही खाने की आदत है, उसको मैं खूब खाता हूं दही खाना मुझे से छूट नहीं सकता । वैद्य राज ने कहा कि मैं आपको दवा नहीं देना आप लठ्टा दही कोड़ने ता खांसी नहीं दूर होगी। सेठ जी चल दिव और दूसरे वैद्य के पास पहुंचे कहने लगे मैं लठ्टा दही खाना नहीं छोड़ सकता । क्या आपके पास कोई औषधि है जो मेरो खांसी समाप्त कर सके। उस वैद्य ने मना कर दिया। सेठ पर-एक कंके लेंदगां वैद्य के पास गये और खर से पूर्बवर् दही पदन किये कि मुझे खांसी है लठ्टा दहा खाना मैं नहीं छोड़ सकता, अगर आपके पास कोई दवा है जो खांसी दूर कर सके तो दे दो। सभी ने मना कर दी। सेठ जी बड़े हगुला हुए और आपने मजान पर छोड़ द्याये। अन्धोनिऊ जिनो बाद किसी वैद्य की प्रक्रिद्ध सुनी, उनके पास भी पहुंचे और कहने लगे, वैद्य राय जो । मुझे खांसी का रोग है । कई दही खाने की मेरी आदत है । क्या आप के पास किसी कोई औषधि है जो लठ्टे दही खाने पर भी मेरी खांसी दूर कर सके। वैद्य था काफी विद्वान

और खलुवकी उमने कहा कि आप खूब लठ्टा दही खाएँ ? इतने से आपको बीन खाना होगी। प्रथम यह कि आपके पास कुला नहीं थावेना। दिलेन यह कि आपके घर में मोरी कमी नु होगी। दुसरेन यह कि आप पर बुद्ध्या कमी नहीं थावेना । सेठ जी कूब कर चुक्य हो गये। और प्रकृतिना प्रथम मुद्रा में बांटे, अचक्षा ! यह तन काम मुझे होगी। जरा यह ता बतलाइये कि कैसे होगी। यह तोन काम । वैद्य ने कहा खांसी आपको नहीं जायेगी धीप रात्रि में लसैंगे और यह देण कर सेठ खाव रहा है हर से ही माग जायेगा। खांसी रहेतो आप जोई शरीर हो जावेगि धनः आप को लठ्टी सेकर चलना पड़ेगा, कुला दूर से उरकर भाग जायेगा। और दुसरेन काम भी बतान दूं सेठ जी ने कहा अरक बतलाइये। (अमर)

दयानन्द स्मरक टूट

टंकारा

भवेत्काराच आर्य जनता को प्रियतम किया जाता है कि इष्ट-नेशनल सर्वश्रेष्ठ दयानन्द विद्यालय नाम का संस्था विद्यमान अथवा कायेंचंद्र टंकारा और जीवापुर के मन्व ने बनाने की घोषणा की है और अन्तरराष्ट्रीय सर्वश्रेष्ठ दयानन्द संस्था विद्यालय बनाने जा रहा है खार में गीताला नामवेंदराय यश्वरि का कार्यक बन कर मनसंघ की अध्यक्ष कर रहा है पर १६ भोजपुर राबी द्वारा स्थापित परम संस्था है जिसका सर्वश्रेष्ठ दयानन्द स्मरक टूट टंकारा से कोई सं-कल्प नहीं।

जनता भ्रम में न रहे धनः यह स्पष्टोक्तया किया गया है। धानन्द विद्यालय सन्नी टूट टंकारा आर्य विद्यासमा विद्यमन्त रोड नई दिल्ली।

वार्षिक आपिषेदान २ भाष्य ६६ को सविनाश-२००० बने की. ए. पी. कॉलेज मैनेजिग कॉलेज विद्यमन्त रोड नई दिल्ली के कार्यालय में दोग-अध करण्ये लोक समय पर उभार कर दूजिन-हैं।

प्रधान की की आशासुखकर प्रार. वन. पौरध मन्त्री-अमर

आर्य शत्रो देवी रविपुत्र  
आपो भवन्त पीतये । शोषोरारि  
सवन्तु नः ॥

शब्दिक अर्थ:— भो देव्य=  
परम पिता परमात्मा का मित्र  
आमः । शत्रु=कल्याण्य कारी ।  
नः=हमारे लिये । देवी=सर्व  
प्रकारक । रविपुत्रे=मनोवाञ्छित  
सुख के लिये । आप=सर्वव्यापक  
अव्यय=होवे । पीतये=पूरे  
आमिन् (मौख) की प्राप्ति के  
लिये । शोषे=सुख शक्ति और  
कल्याण की । अमि=आर्य और  
से। सवन्तु=धीमी-धीमी वर्षा  
करें । नः=हम पर ।

सरल अर्थ गद्य में :-  
हृद्दे सर्वव्यापक और सर्व प्रकारक  
परमात्मा, आप हमारे मनो-  
वाञ्छित सुख और आशीर्षक की  
प्राप्ति के लिए करुणाशील हों, और  
हम सब पर बारों और सुख  
की धीमी-धीमी वर्षा करें।

सरल अर्थ पद्य में :-  
आकार पशु तेरा नाम,  
गुण गावे संसार तमाम ।  
तेरी महिमा गावें देव,  
तेरे जपे न भ्राते खेद ॥  
सन्चित ध्यानन्द स्वरूप,  
निराकार निर्मेय अनूप ।  
जग का स्वामी पालन हारा,  
जग प्रकारक व्यापक सारा ॥  
मन माने सुख भोग तमामी,  
पूर्व-ध्यानन्द दिया हे स्वामी ।  
वर्षा सुख की करो सहेश,  
तीन ताप हूँ दूर क्लेश ॥  
व्याख्या :- हे सर्वव्यापक  
परमेश्वर ! मुझे शक्ति दे कि वेद  
के ज्ञान के आधार पर आपने  
जीवन को उन्नत करे। हे सर्व  
प्रकारक परमात्मा ! शक्ति प्रदान  
करें कि आपके पवित्र वैदिक धर्म  
पर चल कर आपने जन्म को  
सफल बनाऊं। हे ध्यानन्द के  
अधिकार ! मुझे शक्ति दें कि मैं काम  
वासना को काट रख कर शारीरिक  
सुखों से छुटकारा पाऊं। हे पिता

**‘आओ ! हम वैदिक सन्ध्या रूपों सागर  
में डुबकी लगाएं, ताकि अमृत्यु रत्न पाएं’**  
(ते.० श्री परमा नन्द जी विद्यार्थी रोहतक)

[आचमन मन्त्रः]



मुझे शक्ति दें, ताकि आपकी  
आज्ञा अनुसार अहिंसा और  
धर्मा जैसे प्रती का चरोरुत रूप  
से परिपालन करते हुए अपने जीवन  
को शांत करूं। हे माता ! मुझे  
शक्ति मिले, ताकि मैं ‘प्रथम यज्ञ’  
अर्थात् आपको सर्वत्र और सर्व  
स्थान पर समझना हुआ आठों  
पहर चौबीस घण्टे आपकी स्तुति  
करता हुआ आरंभ करूं और अर्ध  
प्रयत्नशील रहूं।

विद्योय संकेत- (6) १५६

पवित्र वेद मन्त्र बारों वेदों में पाया  
जाता है। (ख) सन्ध्या करते समय  
पहले ‘पायसो’ पदवाच इय मन्त्र

में ध्यान करना चाहिए। (ग)  
भगवान् दयानन्द जी ने वैदिक  
सन्ध्या में आचमन मन्त्र के नाम  
से पुकारा है। (घ) यदि कफू प्राणाय  
तथा सुस्ती न हो, तो बिना आचमन  
इस मन्त्र का ध्यान करना चाहिए।  
(ङ) यदि जल न हो, तो तीन बार  
जल न हो, तो आचमन करने  
की कोई आवश्यकता नहीं, क्योंकि  
आचमन करना एक शारीरिक  
कर्म है और परमात्मा ध्यान  
मानसिक और आत्मिक धर्म है।  
(च) इस मन्त्र का केंद्र बिन्दु  
‘पोतिये’ है अर्थात् जिस के बाहर  
मन्त्र प्रथम रहा है, वह पोतिये—

**करो भारत से ही अनुराग**

आरत की निज शान जगा दो !  
शुभ संस्कृति की ज्ञान जगा दो !  
निज सन्तति में गान जगा दो !  
कूट न कर भर दो जन में देश-भक्त अनुराग !  
करो भारत से ही अनुराग !  
इतिहास को रट क्या कर लगे ?  
अरबी को पढ़ क्या भर लगे ?  
भूले द्वार-द्वार भटकोगे !  
आत्म-संस्कृति से न करोगे, यदि हड़प मज्जानाग !  
करो भारत से ही अनुराग !  
जो संसृति का प्रथम गुण है।  
कहां विधाता अग्य करू हैं ?  
‘भू’ पारस अग्य मरू हैं !  
होगे क्यों नः पतित कहो फिर जो भू करू अनुराग !  
करो भारत से ही अनुराग !  
वेद सूर्य से उभा उदित है !  
श्रौत-धर्म से आर्य सुदित है !  
धर्म-संस्कृति जिस में निहित है !  
पद्य संस्कृति के आसिद्ध बन कर सृष्टो पुत्र पराग !  
करो-भारत से ही अनुराग !  
नामदेव राघ गगनने ‘पथरोट’

पूज्य ध्यानन्द की प्राप्ति है। इ  
मन्त्र पर ध्यान करने से साध  
को ईश्वर के ज्ञान प्राप्ति क  
इच्छा, वैदिक धर्म पर चलने क  
अभिमान, काम वासना क  
नियन्त्रित करने की शक्ति अहिंस  
तथा धर्मा के ज्ञान के पालने कर  
की सुसुप्ति, प्रथम यह के महत्  
को समझने की ताकत तथा ईश्व  
के गुण-गान की प्रेरणा प्रा  
होती है। अन्धारी को निरन्त्र  
अन्धकार करके अन्धकार वनन  
चाहिए। (कमरा-  
टिप्पणी :-

इस पवित्र मन्त्र में ‘नः’ शब्द  
दो बार आया है। जिसका अ  
हमारे और हम पर है। हम  
हमारे बहु बचन शब्द है। अत  
किस हूमा कि बिना किसी तमीर  
के प्रत्येक व्यक्ति पर सुख क  
वर्षा होवे। इस प्रकार पवित्र वे  
पायसो में आपने हजारों मन्त्र दे  
किए जा सकते हैं। कहाँ हैं वे साध  
वारी (कम्युनिस्ट) और समाजवा  
(सोशलिस्ट) जो चित्ला-चिन्त्र  
कर आपने इक्षम (बाद) की दुर्दृ  
मचाने हैं। इस पृथ्वी तल पर फें  
हुए समस्त मत-मतान्तर अ  
Political parties आपने  
आपने समाज के अंगों (मिम्बरों  
के लिए जीते हैं और उनके लि  
मरते हैं, परन्तु मानवता के लि  
एक कीर्ती का काम नहीं करते  
केवल वेद भगवान ही सर्वक  
मलाई की शिष्या देता है और वेद  
भगवान की शिष्या के अनुसार  
चलने वाला ही ‘मानवता’ का  
प्रचार कर सकता है। अतः सुखल-  
मान, सिख, ईसाई, जैनी-बौद्ध,  
राधा स्वामी तथा देव समाजी  
आइयों से शर्मना है कि आओ  
वेद भगवान की शरण में। यह  
मनुष्य जीवन बड़ा अनमोल है  
स्वयं में न गंवाओ !

# वैदिक (आर्य) तथा अर्यवैदिक (अनार्य) विज्ञान

(ले० श्री दौलतराम जी शारी अमृतसर)



आज के युग में वैज्ञानिकों ने चन्द्रमा तक पहुँच लिया है। अब सन्देह नहीं रहा कि चन्द्रमा भी एक लोक है। आर्य ग्रन्थों में भी चन्द्रलोक का वर्णन है। अद्यतनपर्यन्त मंत्र में लिखा है—

**'स्यो चन्द्रमती धाता**

**यथा पूर्वमकल्पयत् ।**

पूर्व कल्पों के समान परमात्मा ने अब के कल्प में भी सृष्टि तथा चन्द्रमा आदि बनाए ।

संख्या में 'पंचत्र देवानामुदगावनीष' इस मंत्र का भौतिकार्थ करने पर विदित होता है कि—

देवानां दिव्यं शुभं द्रवतानां लोकानां चित्रं कर्तृकं कृदमुनिं सैनिकं द्रव्यं, (आकाशी) वृद्धं अग्रात् उदितम् आसत्' राज्ञे—

दिव्यं शुभं सुवत् लोकं लोकानां कीं विचित्रं सेना आकाश कीं उदितं हृद्दि—जो उस रचना करने वाले अगवान की सत्ता तथा बला चातुरी की ज्ञापक है ।

इस से सिद्ध होता है कि अगवान ने आदि सृष्टि में लोक-लोकान्तरो की रचना करके उस की गति विधिति की भी सजाया बांधी। अनार्य ग्रंथों में जो वर्णन किया गया है उसे पढ़कर न केवल हँसी झालती है अपितु जन की अकर्म्यी बातों पर अक्षुब्ध-सी हो रही है । कुल यहाँ दिग्दर्शन के रूप में दिया जाता है ।

एक मंत्र चन्द्रमा की उत्पत्ति के विषय में है कि—

**"अत्रनेयनं समुत्सृज्योतिः"**

चन्द्रमा अग्नि अर्थ के नेत्रों से उत्पन्न ज्योति है । किसी-किसी ने अर्थ देने के लिए मंत्र पढ़ते हुए वह भी लिखा है कि—

**"अत्रि गोत्रं ससृजुव."**  
अत्रि के गोत्र में जन्म लेने वाले तुमने नसृजकर ।  
जिन सज्जनों ने आजकल के अन्तरिक्ष यात्रियों द्वारा लिए गये चन्द्रमा के कोटो देखे हैं—वे लोग ऊपर लिखे मंत्र का कितना मान कर सकते हैं ?

भागवत वेद्यों को वा एक और मत है कि समुद्र मन्थन के समय १४ रत्नों में से जहाँ रत्नोः ऋषा षोडश, और ऐरावत हाथी-धन्यतर देवा आदि भी गये हैं । चन्द्रमा भी समुद्र में से निकला था ।

एक पौराणिक कि बहन्ती यह है कि एक आदि स्थान करके आ रहे थे—कारों के आते समय पर फिस्क गया और वह गिर गए । चोट लगी । चन्द्रमा रुहे देरुकर इस पदा अर्थ ने ओषावेरा में अणना की चन्द्र भरा गीला कगोछा चन्द्रमा पर दे मारा—चन्द्रमा में धरंवे दृष्टत होते हैं वे उस कगोछे की चोट के चिह्न हैं ।

**सम्पादकीय टिप्पणी**

यदि चन्द्रमा के समुद्र से उत्पन्न होने से पहले देवता अमृत-अग्नी धन्यतर उच्छेः ऋषा तथा ऐरावतादि उत्पन्न हुए थे तो वह मन्त्र—

**'सृष्ट्याचन्द्रमती धाता**

यथा पूर्वं मकल्पयत्' उस देवा-सुर संघसे अन्तरिक्ष बना हमका जायगा जो सृष्टि नियम के विपरीत है । विवाह विधि में श्रोत्र 'चन्द्रमा नक्षत्राक्षामयि पतिः' यह मन्त्र भी निरर्थक तथा मंत्रों की अवीर्यवैधता में बाधक होगा स्वर्त बाधन के मन्त्रों में पदा बहु वेद मंत्र—'सुषो देवतां चन्द्रमा देवता ।' इत्यादि

# उद्गार

प्रेषक श्री पं० रुद्रदत्त जी शर्मा, अमृतसर



पंजाब के विभाजन के सम्बन्ध में कांग्रेस कार्य कारिणी के रुद्र-वर्मा नित्यंय से देश भवत जनता के हृदयों को गहरा झपावात पहुँचा और उसके दुष्परिणाम जो पिछले दिनों देखने में आये वह अत्यन्त दुःस्वभायक थे । जिनके लिये जहाँ एक ओर सर्वसाधारण को पथ अष्ट करने वाले कम्युनिस्ट तथा इसी प्रकार के देश और जाति के शत्रु वर्ग (जमादार हैं) वहाँ दूसरी ओर पंजाब पोलिस की निर्दयता पूर्ण सजितियों और असीम क्रूरताचारों ने जलती पर तेल डालने का काम किया । पोलिस ने अशुभ सं, लाठीचो और गोळियों के बेतहाशा प्रयोग के अतिरिक्त निरपराध व्यक्तियों को क्रूरकरण गिरफ्तार करके और जनपट्टी मूठी निराधार की अमाननी धाराय लगाने में कोई कसर नहीं छोड़ी इस के अन्तिगत उदाहरणों में से एक अपनी ही कहानी आप के सामने रखना चाहता हूँ ।

मैं पञ्जाब के विभाजन का विरोधी हूँ और अशुभ पं. जवाहर लाल नेहरू के ऐतिहासिक निर्णय के अनुसार इसे हिन्दुओं सिक्कों तथा देवा भर के लिए हानिकारक

मंत्र सृष्टि के आदि प्रथत हुए—  
**यह भी चिन्तनीय होगा ।**

**'सदाचार शुभिकी सामुनेमं कस्मिदेवाय हविषा विधेम'**

इस मंत्र में शुध्वी आदि टुकों में स्थित सारा ब्रह्मावृद्ध उस परमात्मा के आचार पर स्थित अनादिकाल से विद्यमान आ रहा है । पुराण्यदि मनुष्यकुल ग्रन्थों में श्रोत्र कर्णोत्त कल्पित हैं ऐसा धर्म प्रेमी सज्जन निरपच करेंगे !

समझता हूँ और अपनी धन्यति पिछले दिनों एक शिष्ट मजलके रूपमें प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी श्री गुलजारीलाल नन्दा गृहमन्त्री श्री कामराज और श्री वेबर जी के सामने प्रकट कर चुका हूँ । परन्तु साधु-शुभ और लशहद की नीति को आपने तथा देश के हित के लिये सर्वथा धातक समझता हूँ । इस के बावजूद १८ मार्च प्रातःकाल पर बैठे मुझे अमान कमेटी में सम्मिलित होने के बहाने पोलिस भारी संख्या में आकर घाना में ले गयी और गिरफ्तार कर लिया । कई दिन हवाकाल और जेल में रहने के पश्चात २२ मार्च रात को जमानत पर छोड़ा गया । मुझे ज्ञात हुआ है कि मुझ पर, बलवा आग और ऐसे ही दूसरे कितने ही गम्भीर कमियों मुठभूट लगाये गये हैं । निरुद्धेह गवाय और सच्चाई वा मुझ चिदाने वाली बात है ग्यायालय ने २ अप्रैल की तारीख

नियत की है वहाँ अर्भोवास्तविकता सामने आ जायेगी । परन्तु पोलिस वा बिना कारण मनपचन, काल्पनिक और सर्वथा निराधार चाराएँ आरोपित करने का दुष्साहस उनके दुर्व्यवहार और अत्याचारों की शुद्ध बोलती तस्वीर है । ठीक ऐसा ही व्यवहार मेरे दूसरे साथी एक प्रारंभित नागरिक श्री गिरधारी लाल परधान के साथ हुआ । इस के सम्बन्ध में निष्पक्ष जांच होनी चाहिये और इस के लिये जिमादार और अपराधियों को जचित दण्ड मिलना चाहिये, जिस के बिना वास्तविक शान्ति स्थापित होना कठिन है ।

(गलाक से आगे)

इरकार ने अफ़ीम पर प्रतिक्रम-  
इया दिया तो क्या हुआ, लोगों  
ने डाक्टरों से 'अफ़ीम के बिना  
जीवित रहना असम्भव' के प्रमाया-  
पत्र लेकर सरकार-सममत अफ़ीम  
खानों शुरू कर द। कोयला और  
खील लगाने के फ़ाले बपड़ेमें मिला  
कर अफ़ीम को इधर से उधर लाया  
ले जाने लगा। अफ़ीमबच्चों को  
तब भी मंगलाने नहीं हुआ। उन्होंने  
अफ़ीम के छिलकों को चाय के  
साथ उबाल कर पीना शुरू कर  
दिया—एक पय दो काज।

असली बात तो अमी बाको  
है। मद्रिदा के बिना तो महिथा-  
सुरमार्दिनी की पूजा ही नहीं हो  
सकती। शराब का सेवन शास्त्र-  
समस्त सिद्ध पर बनेक लफ़ंगों ने  
अपनी रसना को शान्त किया है।  
'शराब पीना राजा का धर्म है, इस  
तरह की कुस्तिन धारणाओं का  
प्रचार कर शराबी लोगों ने अनेक  
रजवाड़ों को भित्ती में मिला दिया  
है। रसना के गुलाम व्यवधियारी  
शायरों ने अपनी सम्पूर्ण शायरी  
को शराब को ही समर्पित कर  
दिया। शराब की उत्तेजना में इन  
लोगों ने इतने कुस्तिन शेरब उगले  
जिनको पढ़ या सुन कर देवाल  
में बैठे हुए व्यवक्ति की इन्द्रियां भी  
विचलन हो जाती हैं। अचिकांश  
बद्ध-शराबी शराब से संतोवार  
है ! गली-गली और पर-पर में  
शराब को भद्रियां लगाई गई हैं।  
अन्यतः विवश होकर सरकार को  
शराब पर प्रतिबन्ध लगाना पड़ा।  
लेकिन क्या हुआ ? लोगों ने रिक्ट  
में पानी मिला कर 'प्रसादी' लेनी  
शुरू कर दी। वैद्य और डाक्टरों  
ने शराब-युक्त औषधियों के  
निर्माया को स्वास्त्व के लिए हित-  
कर बताया। 'माता जी के प्रसाद'  
के रूप में आज भी मद्रिद्री में  
बैठ कर शराब पी जाती है।  
डाक्टर कहते हैं—नामल रूप में

## क्या नशा ही हमारी प्रेरणा है ?

(श्री सुन्दर लाल जी बोहरा, जोधपुर)



पी गई शराब भूल लगाना है, लून  
बढ़ाती है, शरीर में शक्ति और  
ताजगी लाती है, आदमी को हर  
दम 'मर्दे' बनाए रखती है—इस  
लिए शराब हानिकारक नहीं है।  
और कमी-कमी दबी जवान से  
डाक्टर जन यह भी कहते हैं—  
शराब से लिबर और आति चलनी  
हो जाती हैं, चय और कैन्सर की  
सम्भावना बद्ध जाती है। लेकिन  
पीने के लोभ में पियककड़ लोग  
सम्भावित व्याधियों को परवाह  
ही नहीं करते।

यहाँ बात है कि शराब के सेवन  
और गले व लिबर के रोगों में  
चाली-दामन का सम्बन्ध है।  
चिकित्सालयों में कैन्सर व इत्य  
के रोगियों को संख्या दिन दूनी रात  
चौगुनी बद्ध रही है, पागलानों  
में नय पागलों के लिए स्थान हो  
नहीं है, बलाकार और आम-  
हत्या क अपराध अभावगति स  
बद्ध रहे हैं, युवका में आरिष्टना व  
वृत्तिकुल्ला की पवृत्त असम  
होवी जा रही है, फिर भा 'जायध'  
के लिए शराब पाना आवश्यक है।  
हर कृते में मयवाने

मेंसे मुक में काइम।  
पेरिस जाने की युके  
अव स्वाहिरा नहीं है।  
और भाग ? ओह, भांग  
के बिना तो भोलैनाथ रीम ही  
नहीं सकते ! भोलैनाथ भांग पीते  
हैं, इसलिये हम भी पीएंगे, शिवजी  
भद्रा खाते हैं, तो हम धनुरे के  
बीजों की ही भांग के साथ रगड़  
कर पी जाएंगे, आशुतोष झाक का  
सेवन करते हैं, तो हम झाक के  
दूध में गाँजे को तर कर बिलम  
में फूँकेंगे। आखिर हमें गुरु  
गोरखनाथ जो बनना है। क्योंकि

जिधने न पी भांग(गाँजे) ही कली।  
उस लड़के से लड़की भली ॥

न जाने इन लफ़ंगों ने कितने  
सुकुमारों को पथश्रुत किया है न  
जाने राष्ट्र में कितनी भसाप्य  
आक्रमणवाता को कुलुष्णा बनाए  
रखा है, न जाने कितने टगों और  
मिस्वमंगों की जमातों को जन्म  
दिया है। 'विजया' के बिना भला  
इस प्रकार की विजय ही कैसे  
प्राप्त हो सकती है। भांग पिय  
बिना कवि का 'मूढ' ही तो नहीं  
बनता है, 'भंग-भवाणी' को भला  
तलाक कैसे दे दें—वेचारे अनेकों  
हलबाइयों और चाट-पकीर्ण वालों  
की री-ही मारी जायगी। भोजन  
कराने से पहले तो यजमान भांग  
का प्रथम करवा दे उबकी तो फिर  
इकौंस पीयावो दे तर जाती हैं।  
हकीकत में इन अचारा नरोबाजों  
ने भांग को घम का चाला पहना  
कर हिंदूधर्म को बदनाम करने में  
बोई कसर नहीं रख छोड़ी है।  
आज तो हमारे दे स्वोहार ही फीक  
हैं जिन में हिली भी पकार-क नरो  
की व्यवस्था न हो।

चाय और काफ़ी तो सम्बना  
के पय जो ठहरे—इहें भजा हम  
नशा कैसे करें ? लोगों को एक  
उबाल वाली चाय में मजा नहीं  
आता इसलिये एकदम कड़क चाय  
बना कर पी जाती है। नरा देर  
तक बना रहे इसलिये उस में  
अफ़ीम के छिलकों को उबाला  
जाता है। होटलों की चाय से  
पृथा है, इसलिये अपने आपको  
वैष्णव कहने वाले लोग चांदी व  
जमैत लिबर के वर्तनों से चाय  
पीते हैं। राककर नहीं मिलती है  
तो गुड़ की ही चाय पी जाती है।  
आंतों में खुरकी, आंतों की रट्टि  
में सन्दी, पीलिया, कडज, बवासीर

व शुक्रोषो जैसे रोगों की जननी  
होते हय भी चाय का महल से  
लेकर ओपड़ी तक में स्वागत किया  
जाता है। इस चाय पीने वाली  
जमात को धयबाद देना चाहिये  
जिसके कारखेचारे नकली दाँत  
बनाने वाले डाक्टरों का ध-धा  
चल रहा है। लेकिन पपने को  
'आति अकलमय' समझने वाले  
चाय की, जगड़ काफ़ी पीते  
हैं। क्यों ? यही कि काफ़ी में  
पोषण (nutrition) होता है,  
काफ़ी स्पेशल चाय को भी मात करती  
है। चाय अथवा काफ़ी चाहे चीना  
के प्याले से पी जाय अथवा चांदी  
क कटोरी से, अनन्तः बह है चाय  
ही। डाक्टर और वैद्य लोग भी  
चाय के साथ ही दवा लेने को  
बुँधें—चाय हमारा प्राणिय पय  
जो ठहरा।

आज शहरों में हर दस कदम  
पर चाय के होटल खुले हुए हैं।  
व्यति यहाँ तक पहुँच गई है कि  
बिना चाय पिये गृहियी घर का  
काम-काज ही नहीं कर सकनी,  
चाय की चुस्कियाँ लिये बिना  
बनना लोग घारा प्रवाह बोल ही  
नहीं सकने, बिना चाय का प्याला  
पिये विद्यार्थी पढ़ ही नहीं सकने।  
हमारी एक दिन के लिये चाय बन्द  
कर दीजिये, हमारी रियति एक  
मृत चूहे के समान हो जायगी।  
चाय के लिए लोगों ने अपने कपड़े  
तकिये डाले हैं। बामा ठाने बाना  
एक मजदूर अपने एक सयय को  
भोजन का स्वाग व निरुक्त कर  
सकता है, किन्तु चाय के एक प्याले  
के पिये बिना वह एक कदम भी  
चल नहीं सके—उसके मज-  
दूरी करने का इच्छेय ही यही है  
कि 'चाय-पानी' के पैसे हाथ लग  
सके।

वह भोज ही अचूरा है जिस  
में चाय की प्रधानता न हो।  
'सर्दी और लूकाम से बचने  
के लिये चायपान व धूपपान  
आवश्यक है। (कमरा)



मेरे द्वारे पंजाबी भाइयो

भाइयों का भी सीमाओं के लंघन

पंजाबी भाइयो मेरी परीक्षा बहुत

किसी प्रकार की परीक्षा का परि-

स्थिति कठोर अनुभव हुआ होता है।

'वज्रम कुट्टमम्' का नाम

लगाने वालों हम ही आपस में

पूट व घृणा के बीज बो रहे हैं।

ऐसे दृश्य देखकर पढ़ाई में चित्त

नहीं लगता। आर्यसमाजी (सच्चा

आर्यसमाजी) तंग दिल वाला

नहीं होता, सत्य बातों को कहने से

डरता नहीं, भाषा व जाति के

नाम पर पूट डलवाता नहीं, आत्म

निरिच्छय ही उसको सुधार के

पथ पर ले जाता है। मैं स्वयं

नहीं कह सकता कि मैं सच्चा

आर्यसमाजी हूँ। आज ही तामिल

पत्र में पंजाब की परिस्थिति पढ़ी।

आत्म-निरिच्छय किया। आपसे

समय रख रहा हूँ 'चाहे इसे

स्वीकार करो, चाहे उकरा दो।'।

आज पंजाबी सुधा मांग

स्वीकार हो चुकी है। आत्म-

निरिच्छय करने पर मुझे १९५०-५१

के दृश्य स्मरण हो जाते हैं। उस

समय मैं १२ वर्ष का बालक था।

सांसारिक ज्ञान न था। हमारे घरों

में बुद्ध राजनीतिज्ञ नेता और बुद्ध

हिन्दी प्रेमी आया करते थे। घर-२

बच्कर काटते और लोगों को भूट

बोलने का पाठ पढ़ाते। वे कहा

करते थे 'आपने मेरे अपनी मातृ-भाषा

पंजाबी न सिकाना। जन-गणना

वाले पहले तो मूठ-मूठ ही मातृ-

रत्नाम में वैदिक धर्म प्रचार

आर्य जनता को यह सुम

समाचार पत्रकर ऋति प्रसन्नता

होगी। क रत्नाम में वैदिक धर्म

प्रचारार्थ तथा ईसाई मिशन है।

प्रशिष्ट हिन्दू जनता के उदारार्थ

श्री पं० देव प्रकाश जी आचार्य

अप्रैल मास में प्रमथा के लिए

जा रहे हैं। जनता से प्राथना है।

कि आचार्य जी जहाँ-जहाँ पधारे

जनका पूर्णतया स्वागत करें।

—व्यवस्थापक

# पंजाबी

(श्री बलदेवराजजी गुप्ता एम.ए., आन्ध्रप्रदेश)

\*\*\*

भाषा हिन्दी लिखना, बालक-पत्र प्रवृत्ति के कारण मैंने कहा आप स्वयं पंजाबी बोल रहे हैं, हिन्दी क्यों नहीं बोलते, और आर्य-समाजी होने के नाते आर्य-समाज के जलजो-प्रो ऐंसा ही प्रचार सुनता रहा। इसका परिणाम क्या होगा उस समय मुझे क्या मालूम। हम अपनी मातृ-भाषा को क्यों मिटाना चाहते हैं? मातृ-भाषा के जलजो-प्रो ऐंसा ही प्रचार प्रवृत्ति का उत्तर १९४६-४७ में स्वयं मिला गया। आर्य समाज ने (हिन्दी - प्रेमियों) आन्दोलन बनाया 'हम पर पंजाबी न ठोसी जाय। कोई भाषा किसी पर टोसना आन्वय है' मातृ-भाषा पंजाबी क्यों नहीं। इस का भी उत्तर मिला गया 'क्योंकि पंजाबी स्थान-स्थान पर बदलती है।' और इन बातों से समुद्र हो गया। पंजाबी से घृणा के परियाम स्वरूप पंजाबी-प्रेमी कैसे चुप रह सकते हैं उनके लिए पंजाबी सुधा मांगने के सिवा और चारा ही क्या था।

वे दूँ। संसार की कोई भी भाषा ऐसी नहीं जो स्थान-स्थान पर परिवर्तन न होती हो। मैं हिन्दी का विरोधी नहीं हूँ पंजाबी मातृ-भाषा होते हुए भी हिन्दी में बहुत शोक है। किन्तु राजस्थानी, ब्रज आदि अनेक हिन्दी-भाषाएँ हैं। उनको नहीं समझ सकता। हिन्दी क्या स्थान-स्थान पर नहीं बदलती। क्योंकि हिन्दी स्थान-२ पर अनेक रूप से बोली जाती है। इसलिये हमारी मातृ-भाषा 'कहीं' यह कहना मानो हिन्दी से ही विद्वांसपात है। मैं पूछ रहा से अनेक भाषाओं का प्रेमी हूँ। आर्य-समाज में राजनीति के बीज न पनपते तो पंजाबी भाषा का विरोध न होता। पंजाब का विभाजन न होता। लड़ाई मगधे न होते। पंजाबी के साथ हिन्दी भी पनपती। ऊँच राष्ट्र भाषा हिन्दी के स्वयं लन स्वयं हैं। ये लोग भी कहते हैं 'हिन्दी प्रेम स्वयं पंजाबी (जो हिन्दी के निषट है) टोसना का विरोध करते हैं तो हम पर हिन्दी क्यों टोसते हैं'।

इस लेख के लिखने के आशय के पद बिना विरोध न करें। मैं चाहता हूँ कि आर्य समाज अब भी राजनीति के चक्र से मुक्त होकर पंजाब पक्ष, हिन्दू-सिख पक्ष, पंजाबी-हिन्दी प्रचार को डोर अपने हाथ में ले आयेगा आर्य समाज पर ही पूट उठवने का ईश्वरक रक्षा के लिए रहेगा राजनीतिज्ञों को कौन पूछेगा। बन्धुप कुट्टमम्' के शेष से आर्य समाज एकता के आन्दोलन में लग जाय हिन्दू-सिखों को मिलाय। विभाजन से केवल आर्य समाज क्या सकती है। यही मेरे लेख का आशय है।

# मोहन आश्रम हरिद्वार में ऋषि-मेला

ईदवरभुक्ति तथा वैदिक धर्म का प्रचार ही इस आश्रम का मुख्य उद्देश्य है

इस वर्ष ता० ८, ९, १० और ११ अप्रैल सम् ६६ को ऋषि-मेला मनाना जावेगा, जिस में मुख्यपाद संन्यासी महात्माओं के और विद्वान् महाशुभार्थों के सहउपदेश होंगे। उन्हीं दिनों में श्री पूज्यपाद महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज की ओर से बज्रुचैव परारायण कुण्ड यह होगा।

## कार्यक्रम

प्रातः ७ बजे से ८ बजे तक ब्रह्म  
८ बजे से ९ बजे तक अन्न कीर्तन  
९ बजे से ११ बजे तक उपवेश  
सायं ५ बजे से ७ बजे तक अन्न कीर्तन  
७ बजे से ९ बजे तक उपवेश  
११ अप्रैल को प्रातः ६ बजे  
श्री पूज्यगुरु।

सर्व महाशुभार्थों से सागुरोच  
निवेदन है कि इस मेले में सम्म-  
हित होकर ऋषि दयानन्द जी  
महाराज की भावनानुसार वैदिक  
धर्म प्रचार कार्य में सहयोग प्रदान  
करें और धर्म लाभ उठावें।

(स्वामी) सच्चिदानन्द शीघ्र ऋषिपन्थिता

★ छल कपट से दूसरों को ठग कर आपना प्रयोजन साधने वाले को पोष करते हैं।  
—स्वामी दयानन्द

## पठनीय एवं मननीय साहित्य

वेद प्रथम ५/- नीतासर ७५  
पैतः, बालकमीर के पत्र १/- वेदार्थ  
संस्कार १/५० पैतः, मेरी आठ  
रोचक कहानियाँ ७५ पैतः, लीकट  
७५ पैतः, सत्रकाशिता जीवन ५० पैतः,  
कर्म नीमाशा २/२५ पैतः, स्वाति  
निषयन कर्मा और कर्मे १५ पैतः,  
वैदिक व्याकरण भास्कर ६/-  
न्यायय गोकप ५५ ११/२० पैतः,  
साहित्य प्रचारक १/-  
जयदेव श्रद्धं बड़ोया-१

मुद्रक व प्रकाशक श्री छत्रोत्तराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि समा पंजाब जालन्धर द्वार भीर मिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत कार्यालय महाराज ईसराज मचन निकट कचहरी जालन्धर राहूर से प्रकाशित मालिक—आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि समा पंजाब जालन्धर



डेजीकोन नं० ३०४७

[आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का मासाहिक मुखपत्र]

Regd. No. P

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे

वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६ अंक १७)

१२ वैशाख २०२३ रविवार—दयानन्दराव १४१—२४ अप्रैल १९६६

(तार 'प्रादेशिक' जालन्धर)

### वेद सूक्तयः

#### ते प्राणस्य गोपतारो

बुद्धि और ज्ञान नाम के ये दोनो ऋषि तेरे प्राणी की, जीवन की मोधारी-रक्षा करने रहते हैं। ये दोनो मन व बुद्धि मनुष्य को सन पथ से गिराने नहीं देते हैं। सदा सावधान किये रहते हैं।

#### दिवा नक्तं च जागृताम्

ये मन और बुद्धि स्त्री दोनों ऋषि सदैव जागते रहते हैं। मानव जीवन को सुमानो पर चलाने रहते हैं। दिन को भी जागते हैं रात को भी। इन का जागना मनुष्य का जागना व सा जाना उसका भी जाना है। ये ऋषि हैं।

#### मा विभे न मरिच्यमि

हे मानव! तू मा विभे-भय मत कर, डरना नहीं। तू न मरिच्यमि-नहीं मरेगा। तू भीत के लिए नहीं है। तेरा ध्याना तो धम्मर है। भीत तेरा बाध भी बाँध न कर सकेगी। निमग्न होकर काम कर।

#### इहैषि पुरुष

हे पुरुष! तू इह-इस ५-नार में, इस जीवन म तथा इस मानव शरीर में पधि-निवास कर, बुद्धि को ज्ञान होता रह। इस जगत् में रहता हुआ ऊर्ध्व के मार्ग पर बढ़ता चलता जा। अथ ये वेद से

### महात्मा आनंद स्वामी जी महाराज



आप पिछले दिनों वेद प्रचारार्थ थाईलैंड प्रस्थान कर गए हैं। वहाँ वैकाक में ती-३-वार दिनवेद कथा करके मिंगापुर पहुँच गए हैं यहाँ लगभग एक मास तक वेद प्रचार करेंगे।

### ऋषि दर्शन

#### जना विद्रांसो धर्मात्मानः

मनुष्य विद्वान्, ज्ञानी हैं और धर्मात्मा भी हैं। यदि वेद ज्ञानी व विद्वान् हैं तो वे उनमें धर्म की भावना नहीं होगी, ना वह कोरा ज्ञान मानव का नीचे भी गिरा सकता है। धर्म तो ज्ञान के ऊपर ऊँचा है। इसके बिना जीवन दुर्घटना भरा हो जाएगा।

#### मदा मुग्धाः मोभ्याः

राज्य में काम करने वाले ऋषिकारी ऐसे ही जो धजा को मदा मुग्ध देने वाले होने चाहिए तथा सत्य प्रकृति वाले हो। जबल आपने स्वार्थ के लिए ही काम न करने श्रेष्ठ कठोर स्वभाव वाले भी न चने। परहित का ध्यान रखन हुए तोवल स्वभाव के होने चाहिए। तथा राज्य नाय चलना है।

#### दुष्टान् प्रत्युग्रो व्यवहारः

राष्ट्र में जो लोग उप बतकर अन्ध-अन्ध से जनता में उपान मचाकर सारे शान्त वातावरण को अशांन करने वाले हैं। ऐसे नीच, दुष्ट, राष्ट्रघाती लोगों के साथ सदा उप व्यवहार ही करना चाहिए। उनके साथ नरमी के साथ कभी पैरा न आवे। ऋग्वेदादि मा प्य म् मि का से

वैदिक ऋषियों ने मानव जीवन की महत्ता बताते हुये लिखा है कि 'पुरुषो वाच यज्ञः ॥ अर्थात् मानव जीवन एक-एक यज्ञ है। यज्ञ के तीन सबन होते हैं। जिन में क्रमशः २४-४४ तथा ४५ अक्षरों वाले गायत्री, त्रिष्टुप तथा जगती छन्द के मन्त्रोक्ते जाते हैं। मनुष्य भी वसु, रुद्र तथा आदित्य ब्रह्म-चर्य द्वारा मनन करता है, क्योंकि मन्त्रा मननान्। ऐसा यादक ने कहा है, जैसे मन्त्रों के बिना यज्ञ अधूरा है। तथैव तीनों ब्रह्मचर्यों के बिना मानव जीवन का कोई गुल्लक नहीं है। इसी आश्रम के द्वारा तो मनुष्य अपने नाम के अग्रिप्राय की गम्भीरता को समझने ही योग्यता प्राप्त करता है। यज्ञ शब्द जिस धातु से बना है, जिसके तीन अर्थ हैं। देव पूजा, संगतिकरणा तथा दान। मनुष्य भी जीवन के उषःकाल ब्रह्मचर्यांश्रम में देवपूजा ही करता है ॥ विद्यापुंसो हि देवाः ॥ अर्थात् ब्रह्म निष्ठ भोजिय आचार्यों का पूजा, एवं संगति करना है। उन की संगति से आध्यात्मिक देव पूजा अर्थात् दिव्य गुणों की पूजा करता है। उस के जीवन में दिन प्रतिदिन दिव्य गुण अपना स्थान बनाते जाते हैं। जब अन्तःकरण पूर्ण देवत्व से भर जाता है तो समावर्तन होता है, तब 'प्रत्युमि सयन्ति देवाः ॥ देव लोग देखने आते हैं कि हमारे अन्ध में एक और देव आ गया चलो इस का स्तब्ध करें। जब आधार भूत इस आश्रम में द्वितीय आश्रम में जाता है, तो सत्कार में चञ्चले के लिये अपने द्वितीय साधो से संगति करण करना है। जहाँ संगति करण होता है, वहाँ बुद्धि तथा कुल नवीनता को उत्पन्न करता है। वह बुद्धि तथा नवीनता पुत्रोत्पत्ति के रूप में समझ आती है। उपनिषत्कारों ने पुत्रोत्पत्ति को भी यज्ञ का नाम दिया है। जीवन के दोष दो आश्रम दान के

धार्मिक चर्चा—

## जीवन यज्ञ

श्री पं. सत्य प्रिय जी शास्त्री सिद्धान्त शिरोमणि  
प्राध्यापकः—दयानन्द बहा महाविद्यालय हिसार



प्रतीक हैं, जिसमें दान ही दान होता है, अपना घर, सम्पत्ति, स्त्री, पुत्रादि को छोड़ देता है, अपने सुख के लिये नहीं। प्रत्युत अपना जीवन भी तो वह संसार की संसार के कल्याण के लिये ही होते हैं। अपने लाभ वा सुख के लिये नहीं। कई मनुष्य जीवन में त्याग को करते हैं, परन्तु त्याग के फल का त्याग नहीं करते हैं। वे त्याग के फल अर्थात् प्रशंसा व स्तुति को सुनना चाहते हैं, लेकिन अन्तिम आश्रम में तो त्याग के फल का भी त्याग किया जाता है। संन्यासी होते समय सर्वस्व त्याग के साथ २ ऐषणप्राय का त्याग होता है, उन्हीं के मध्य लोकेपशा के रूप में अपने त्याग के फल स्तुति अथवा प्रशंसा और कीर्ति का भी त्याग होता है। यह

है वास्तव में सर्वत्र दान के साथ-साथ दान के फल की कामना का त्याग। यह होने पर जिस में से सुगन्धि उठकर वायु मसहल को सुगन्धित करती है। ठीक इसी प्रकार जीवन में से सुन्दर सद्-बिचारों की सुगन्धि उठकर मानव-जाति को सुवासित करती है। यदि यज्ञ में पुष्पां उठा तो सुगन्ध मारी गई ठीक इसी प्रकार जीवन में अशुद्धा तथा नास्तिकता का पुष्पां उठकर जीवन की सुगन्ध का विनाश कर देता है। अतः मानव जीवन में आस्तिकता तथा श्रद्धा बराबर प्रदीप्त होनी चाहिये। तभी जीवन से श्रेष्ठोत्तर तथा सद्बिचारों की सुगन्धि निकलकर विद्वद को सुगन्धित कर अज्ञानदुःख बना सकेगी। यह है मानव जीवन रूपी यज्ञ जिसे हम में से

## सब कुछ ही बलिदान

रचयिता—श्री वेदप्रकाश जी एम० ए०

बीरबरो पंजाब आप से मांग रहा बलिदान,  
पंजाबी सुवे की ज्वाला जला रहे शीतान,  
पंजाबी सुवा यह क्या है? क्या यह ख्यालतान ?  
नफरत वैर विरोध कि जिन से उपजा पाकस्तान।  
हिन्दी साइनबोर्ड मिटाना हिन्दी का अपमान,  
ऐसे को न ब सुवा देगे पहुँचा कर शरमान।  
हिन्दी है तन बदन हमारा हिन्दी ही है प्राण,  
तन मन धन क्या कर देगे हम सब कुल ही बलिदान।  
हिन्दी भारत माँ की विन्दी हिन्द देश की शान,  
हिन्दी हम, जय हिन्दी भाषा, जय जय हिन्दुस्तान।  
गोली गोले बरसें चाहे, गिर ले बज महान,  
प्रलयकारी धीर न रुकते प्रलयकर सन्तान।

हू एक ने सिद्ध करना है। सभी जीवन की सार्थकता है।

## आर्यसमाज खंडवा पूर्व

### निमाड़ में वेद प्रचार

आर्यसमाज खंडवा के अन्तर्गत दलितोदार समिति की ओर से दिनांक ३०-४-६६ को ग्राम आषलिया में और दि० ४-४-६६ को ग्राम विराग पुरा नामा में १२४ ग्राम की पंच सम्मति हुई थी जिस में बलाही जाति सुधार के विषय में भी पुनर्मन्त्र जी आर्य ने एवं आ० स० खंडवा के प्रचारक सुखराम आर्य सिद्धान्त शास्त्री ने मानव जीवन उन्नति ईश्वर भक्ति, महापुरुषों के सत्संग से मानव महामानव बन सकता है आदि विषयों पर सारगर्भित भाषण दिया। जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

इसो अथसत् पर शिक्षापद धार्मिक ट्रेड प्रचारार्थ नि.शु.६ विनया किये गये इस कार्य से लोगों में आर्यसमाज एवं वैदिक धर्म के प्रति श्रद्धा बढ़ी।

### अर्य युवक परिषद् देहली

प्रसिद्ध आर्योपदेशक श्री पं० देवव्रत जी धर्मन्दु रिटावर होने के पदचात अपना समूह समग्र देकर आर्य समाज के प्रचार कार्य में ही सतत लगे हुए हैं।

आर्य स्त्री समाजों, युवक सभाओं के साप्ताहिक सत्संगों तथा पारिवारिक सत्संगों, वाच्य उत्सवों विशेष प्रचार कमाओं, शुभ संस्कारों तथा यज्ञोद्घादि पुण्य कार्यों में आप सच श्री पं० जी की सेवाओं से लाभ उठाये।

श्री पण्डित जी को हुलासे, प्रश्रयबहार करने वा मिलने का पता निम्न है।

श्री पं० देवव्रत जी धर्मन्दु आर्योपदेशक, १६४४, कृष्णा दक्षिणीराय, परिवारगंज देहली-६

सम्पादकोय—

# आर्य जगत

वर्ष २६ रविवार २०२२, -४ अप्रैल १९६६ [अंक १७]

## शराब का खुला प्रचार

विदेशी सत्ता को भारत से गये हुए बीस वर्ष होने को आये। स्वर्गीय महात्मा गांधी जी ने कांग्रेस के विशाल कार्यक्रम में अन्य बातों के साथ-साथ शराब-बन्दी का भी लाभकारी कार्यक्रम बनाया। उन दिनों कांग्रेसी युग में शराब की दुकानों पर भारतीय-नर-नारी गिरे-छिंटा किया करते थे। हंसते हंसते पुलिस की लाठियों भी खाते थे। जनता के जीवन से इस महापाप को दूर करने के लिए सब ने मिल कर बड़ा भारी सवर्ष किया। स्वराज्य की प्राप्ति के समय तो शराब पर प्रतिबन्ध लगाने की बात कही जाती थी। किन्तु महान् खेद है कि आज इस के बारे में क्या हो रहा है। शराब के विरुद्ध वे भारी-भरती चली गईं!

वैसे तो सारे देश के प्रायः सभी प्रांतों में ऐसी अवस्था है। परन्तु पंजाब की शराब सम्बन्धी स्थिति को देख कर तो दिल बड़ा ही दुःखी होगा है कि क्या इतना बलिदान और संघर्ष इसी लिए किया गया था कि सरकार की ओर से देसी और विदेशी शराब का इतना खुला प्रचार किया जाये। लोगों को शराब पीने का भरपूर मोसाहल मिले। क्या स्वराज्य प्राप्त करके उस सत्ता के आसन पर बैठने वालों को इस लिए चुना जाता है कि वे शराब की नदी प्रवाहित करने में पूरी शक्ति लगा दें? कहां चले गये वे बड़े-बड़े दाए और सारी योजनाएं? शराब का

खुला प्रचार जनता के जीवन को कितना पतन के गहरे गर्त में गिराता जा रहा है, यह बात किस के सामने नहीं है। आज दूध महंगा है, घी मिलता नहीं पर शराब सस्ती की जा रही है। उनक ठेके दुगने-दुगने किये जा रहे हैं। विदेशी शराब की दुकानें बढ़ाई जा रही हैं। प्रांत को खुले रूप में शराबी बनाया जा रहा है। यह सब इस लिए कि शराब से करोड़ों रुपये मिलते हैं। क्यों भारत का देश गर्के करने लगे हों? जीवन को शराबी बनाकर किस स्थिति पर ले जाना चाहते हो? शराब रूपी साधन से मिलने वाला धन क्या जीवन की नौका नहीं डुबा देगा। स्वतंत्र राष्ट्र को किस मार्ग पर धकेलने में लगे हों। क्या महात्मा गांधी का यही मार्ग है? क्या बलिदानों का यही परिणाम है? क्या सत्ता इसलिए प्राप्त की है? क्यों देश को निरा शराबी बनाने पर लग गये हो। आज तो पर २ में शराब पहुंचाई है। ऐसा पैसा जीवन के लिए बिच बनेगा। भारत की थोड़ी तो परम्परा कायम रखो। परिवारों को मरुशाला मत बनाओ।

आर्यसमाज को अपने कामों से समय नहीं मिलता। लोग थक-थककर बैठते जा रहे हैं। जो कुछ होता है होने दो ऐसा विचार भी करने वाले हैं। बाहर निकल कर समय देने वाले को बहुत थोड़े हैं। राजनीति के प्रचण्ड ने तो और भी जन-जीवन को उलझा दिया है। देवता महात्मा हंसराज सतीले प्रभावशाली नेता कहां हैं

जिन की बायो सारे वातावरण को प्रभावित कर डालती थी। ऐसी ही आज की अवस्था। फिर भी निराशा नहीं होना। वेद का प्रेमी, देव दयानन्द का अनुयायी, आर्य धर्म का विश्वासी वदास नहीं होता। कोई साथ दे या न दे, कोई बोले या न बोले। कोई चले या न चले परन्तु आर्य हर तुरी बात के प्रतिकार के लिए अथेला ही चल पड़ता है। वह अथेला स्वयं एक महान् आंदोलन बनता है। इस शराब के खुले प्रचार के विरुद्ध आर्य समाजों को खुले रूप में मैदान में आकर जनता को जगाना चाहिए। स्थान स्थान पर बड़े २ सम्मेलन करके सरकार की इस शराब पीने की नीति के विरुद्ध कड़ा प्रोटैस्ट और क्रियात्मिक काम करना चाहिए। आर्यसमाज इस विषय प्रवाह को जल्दी रोकने का काम आरम्भ करे।

### वीरों का इतिहास लिखें

वीरों पर सारे समाज को बड़ा मान होता है। वीर बालक, युवक तथा बलिदान का प्याला पीने वाले अपना जीवन देकर समाज का व देश का इतिहास बनाते हैं। जनता उनसे सदा प्रेरणा लेती है। पंजाब में पंजाबी युवा बनाने के सरकारी विधियों पर आन्दोलन हुआ। इतने दिनों तक बड़े-बड़े नगरों में हड़ताल रही। करोड़ों रुपये का प्रसन्नता से घाटा व्यापारियों ने सहन किया। जनता ने सरकार की पुलिस की लाठियां खाईं। उसकी गो'लियों से इस आंदोलन में नी-चारह वर्षों के बच्चे शहीद हुए। मर्दनरों तथा मातृ-शक्ति का अपमान किया गया। पंजाब के पकता प्रेमियों ने आर्यसमाज, जनसंघ, एकता समिति के रूप में मिलकर अपने विचारों का परिचय दिया। बर्कों तथा भाताओं ने

अपने जीवन का पता दिया। स्वामी सरानन्दर जा एवं वीर वज्रदत्त जी ने अपने जीवन को अनशन द्वारा बाजी लगा दी। लाठियों, क्यूरेस तथा गो'लियों का भी हंसते-हंसते सामना किया। सब कुछ एकता तथा पंजाब को एक बनाये रखने क लिए किया गया। इन दिनों के इस आन्दोलन में किये गये बलिदानों तथा सारी घटनाओं का इतिहास पुस्तक के रूप में लिखा जाना चाहिए। इस आंदोलन के सारे मान्य नेताओं से हमारा निवेदन है कि वे सारे मिलकर संगठित रूप से इस सारे आंदोलन का पूरा-पूरा सचित्र इतिहास अक्षरय ही तैयार करावे। ऐसा इतिहास सारे समाज को जीवन में बड़ी प्रेरणा दिया करता है। यह भी एक प्रकार की जनता को जीवन देने वाली संपत्ति होती है। इस समय के तथा आगे आने वाले नर नारी ऐसे बलिदानों से भरे इतिहास से बहुत कुछ सीखा करते हैं। हम अपने सारे मान्य नेताओं से इस आन्दोलन का नाटा तथ्य भरा इतिहास तैयार कराने का आग्रह पूर्णक निवेदन करते हैं। ये आवश्यक इन ओर ध्यान देकर इस आग्रहपकता को पूर्ण करे। अधिक संख्या में ऐसा बलिदान इतिहास प्रकाशित होकर लाखों मांटे घरों के हाथों में पहुंचे। इस से चेतन व स्फूर्ति मिलेगी। पंजाब का इन दिनों का आंदोलन जन जीवन का एक बड़ा सुन्दर अध्याय है। इन में सब ने अपना अपना योग दिया है। प्रांत को एकता की इसी रूप में स्थिर रखने के लिए बलिदान व त्याग में किसी प्रकार की भी कमी नहीं की। ऐसा सचित्र इतिहास हीय निकलना ही चाहिए। सं०

★ असतो मा सद्गमय।  
(देवदर भी असमर्थ है यागसन् प्राह्यकर)

कितने ही वर्षों से मेहता रामचन्द्र जी शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, पंजाब, सिंध, बलोचिस्तान, लाहौर के दशों नदी कर पाया था। परन्तु विद्वाने सन्नाह सुमे को कानिरे

में कथा के लिए जाना पड़ा तो वहाँ मेहता जी के दशों करके हृदय गदगद हो गया इस समय उनको आनुकम्प १०० वर्ष की है और उनको आजाब में बड़ी भोज है जो युवावस्था में था परन्तु उनको टांगों ने चलने से इंकार कर रखा है। मेहता रामचन्द्र जी अपने सुपुत्र श्री दत्ता जी के पास ठहरे हुए हैं वा कोकानेर में Deputy Inspector General police है। कितनो अद्भूत, अजित और प्यार से ओ दत्ता जी, मेहता जी की सेवा कर रहे हैं। इस युग में ऐसे पुत्रों का मिलना बड़े भाग्य की बात है।

मेहता रामचन्द्र जी शास्त्री ने कितनर ४० वर्ष वेद प्रचार का कार्य किया है। मेहता जी पेशावर में निवास करते थे। एक मिरजई सुखलमान अब्दुल लतीफ ने हिन्दु सुखलमानों में फूट डलवा दी जिस के कारण से हिन्दुओं को अपना खलाग स्कूल National School के नाम से बनाना पड़ा। यह १९२४ की बात है तब बरफी गोकुल चन्द जी ने सुबहों की मुस्लिम प्रभाव से बचाने के लिए बड़ी भाग-रीझ की। मेहता रामचन्द्र जी शास्त्री इसी स्कूल में पढ़ाने लगे। और साथ ही लीमा प्रांत के इस भाग में बन्दू को हाट, हंग, पटवाबाद इत्यादि नगरों में वेद-प्रचार के लिए जाने लगे। आर्यसमाज पेशावर के, उसव पर भी भाई परमानन्द जी, ५. भगताराम जी शास्त्री और दुबरे उपदेशक पहुँचे। मेहता रामचन्द्र शास्त्री का भाषण सुनकर ये बड़े प्रभावित हुए। लाहौर पहुँचकर भाई परमानन्दजी और वडित भगताराम जी ने

## श्री पूज्यपाद महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज की मेहता रामचन्द्र शास्त्री से भेंट



महात्मा ह्यराज जी को बताया कि मेहता रामचन्द्र जी शास्त्री कितने अच्छे वक्ता और विद्वान हैं। महात्मा ह्यराज जी ने मेहता रामचन्द्र जी शास्त्री को पेशावर में पत्र लिखा कि वो आर्य-प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा में काय करना स्वीकार करें। आर्य प्रादेशिक सभा की स्थापना १९६२ में हो चुकी थी। मेहता जी महात्मा जी के पत्र मिलते ही लाहौर पहुँच गए। उस समय ला० रामचन्द्र जी की ७० वर्ष प्रादेशिक सभा के सत्रों पर काम कर रहे थे। यह १९०४ की बात है। मेहता रामचन्द्र जी को कार्य करते हुए एक महीना बसोले हुआ तो भाई परमानन्द जी १९०७ ने मेहता जी से पुश्ता कि मासिक वेतन क्या लगे ? मेहता जी ने कहा कि मैं वेतन लेने के लिए लाहौर नहीं आया। जिस प्रकार पेशावर में काय करता था उसी प्रकार यहाँ करता रहूँगा। पंजाब कैसरी लाला लाजपतसिंह जी भी पास बैठे थे, कहने लगे कि जोवन निबाँह के लिए कुछ तो लेना ही चाहिए। बहुत साधारण वेदन पर मेहता जी १९०४ से १९४० तक कार्य करते रहे। उनके भाषणों की धूम मच गई। रामायण की कथा सुनने के लिए दूर-दूर से जनता पहुँच जाती। वेद सत्रों की भी कमी नगरे देने। आर्य समाज ने जय शुद्धि का कार्य चारम्भ किया तो मेहता जी ने 'पत्नीशं की शुद्धि की स्तानाभ है' के नाम से एक प्रमाणिक पन्थ लिखा जो कितनी ही भाषाओं में प्रकाशित हुआ। केवल रूपमें ही देश में नहीं मेहता जी कमीका भी पहुँचे और वहाँ

लोगों को वेद संदेश सुनाया। कितने ही शास्त्रार्थों में मेहताजी ने वैदिक सच्चाई का सिर ऊँचा किया। गर्भियों के दिनों में श्री मेहता चन्द जी महाजन मेहता जी को अपने साथ धर्मशाला ले जाया करते थे और उन से वेद कथा सुना करते थे। १४ सितम्बर १९४० की बात है कि जब मेहता जी Upper Dharm Shala में महाजन जी की कोठी में ठहरे हुए थे तो अकस्मात उनको टांगों में धमन होने लगा। निबंलता बढ़ने लगी। फिर भी मेहता जी ने वेद-प्रचार का कार्य जारी रखा परन्तु १९६२ में शरीर काम करने से रह गया। देश विभाजन के पत्र बात मेहताजी ने नई दिल्ली में अपना भवन बनवा लिया और देहली को आर्यसमाजों में जाकर वेद-प्रचार करते रहे। जब तक उनके शरीर में शक्ति रही आर्य समाजी उन से निरन्तर काम लेते रहे। परन्तु जब शरीर काम करने से रह गया तो फिर उन्हें पुछा तक नहीं गया। हाँ उनके पुत्रों ने उनकी भरपूर सेवा की और अब भी कर रहे हैं। प्रभु कृपा से मेहता जी के सारे सुपुत्र बहुत ऊँचे सरकारी बोहदों पर हैं। जयपुर जाने के लिए, ला० मेहर चन्द जी पुरी ने मेहता जी को रेलगाड़ी पर चढ़ाने का कष्ट किया। मेहता जी अपने सुपुत्र के पास पहुँच गए। डाक्टरों ने उन्हें मली-भति देखा। और कहा कि यह तो बुढ़ावस्था का रोग है जो जान नहीं सकता। अक्टूबर ६२ में मेहता जी को पेशाब का कष्ट हुआ। दो महीने अस्पताल में रह कर आपरेशन काने से कम्पन आधिक हो गया। इसी बीच में उनके पितृ-

मन्त पुत्र भी तदर्थे बी का देहाव हो गया। इससे उन्हें अधिक आघात पहुँचा। परन्तु इस से भी अधिक उन्हें कष्ट इस बात का हुआ कि आर्यसमाज की ओर से उनसे बहुत कम सहायुधुव की गई। उन्हें यह भी शिकायत है कि आनारकली आर्यसमाज नई दिल्ली ने शोक पत्र भी नहीं लिखा। परन्तु मेहता जी के हृदय में वेद-प्रचार की स्तान कम नहीं हुई! २४ मार्च को बी दत्ता जी की विशाल कोठी में सरलज का आयोजन किया गया उस सत्र में मेहता जी ने दो मन्त्रों की ऐसी सुन्दर व्याख्या की कि सब लोग गद्गद हो गए। मेहता जी के सुपुत्र भी नरेंद्रचन्द्र जी Deputy Inspector general Police और उनका परिवार वन, मन, धन से मेहता जी को सेवा में लगा हुआ है।

मेहता रामचन्द्र जी शास्त्री ने अपना लगभग ४००० रु० का इस्तिफालय आनारकली आर्यसमाज के पास भेजा था। मेहता जी चाहते हैं कि इस पुराकालय का सदुपयोग किया जाए जो ज्ञानन्दर में नहीं हो सकता और यह पुस्तकालय उनकी इच्छा के अनुसार आयसमाज आनारकली, नई दिल्ली के पास भेज देना चाहिए। ताकि विद्वान लोग उस से लाभ उठा सकें।

### श्री अमरनाथ खोसला का निधन

श्री अमरनाथ जी खोसला जो कांगड़ा के प्रमुख सामाजिक कार्यकर्ता थे, बिगत सप्ताह देहाव हो गया। उनकी आयु ७२ वर्ष की थी। आप कई वर्ष कांगड़ा आर्यसमाज के प्रधान, तथा G. A. V. H.S. स्कूल कांगड़ा की पञ्चवीक समिति के प्रधान भी रहे। आर्यसमाज कांगड़ा की यह क्विब कर्णियों ही रहेगी। आर्यजगत उनके परिवार से सहायुधुव प्रकट करता है।

१९४० में जब हिन्दु संसद का स्थापना से मारपीट कर निकाले गये तो इन्हें धरते ही कुछ सांघातिक अफ़सली नेताओं ने खालि-स्थान का नाम लगाया था। पर पश्किस्तान का कड़वा स्वाद सब को बराबर मिला था इसलिये पञ्जाब की जनता ने उनकी न सुनी। कहीं-कहीं पारमों में सांघातिकता की अग्रिम मड़की पर जनता की मुक़द्दम से शान्त हो गई। उन्नत परचाम को कुञ्ज नेता अग्रिमो डफली बजाते ही रहें तथा जनता को चैन से बैठने न दिया शाहब केम्रीय सरकार भी थोड़ा बहुत मुझी गई पर खालिस्थान के काम पर उन नेताओं को पञ्जाब में वहुदा सहयोग न मिला। लाभ यही रहा कि सिक्खों को कुञ्ज न कुञ्ज सरकार देवी हो रही जिस से हिन्दु सिक्खों में कुञ्ज खाड़ी बनती चली गई और यहाँ तक हुआ कि धार्मिक स्थानों में विरोध कर कभी-कभी दोनों भाई एक दूसरे पर कीचड़ उड़ालते रहे। सब से अचिकखाड़ी तब पैदा हुई जब सिक्खों की धार्मिक लिपि गुरुमुखी को पञ्जाबी भाषा की लिपि ठांस दिया गया। १९४९ के क्षेत्रीय योजना ने तो गुरुमुखी लागू कर के ३० प्रतिशत हिन्दुओं को तोसरे दर्जे के नागरिक बना दिया। अफ़सली मनो-वृत्ति के सरकारी अफ़सरों ने जनता पर, जो गुरुमुखी नहीं जानती थी, अस्वाचार करने पराम्म कर दिए। कई मामलों में तो बुरा बड़े-बड़े नगरों से भी ऐसी शिकायतें मिली कि काले दिल के अफ़सरों ने वहु, हिन्दु तथा अंधेरी के, प्राथेता पक्षों तथा पुस्तकों को फाड़ा तथा जनता का अपमान किया। इससे लोगों का स्वाभिमान खालत हुआ तथा-जन समूह हिन्दु रक्षा के नाम अपना रोष लेकर उठा तथा भारत के इतिहास में प्रथम बार आषा के नाम पर किये जा रहे

## पंजाबी सूबा तथा आर्यसमाज

प्रिंसिपल भगवान दास जी ही०ए० वी० कालेज अम्बाला नगर



अस्वाचारों का विरोध किया। सरवाप्रदियों को जो कष्ट दिये गए वह कभी भूल नहीं सकते पर सरकार ने ५६ मान लिया कि रोष सत्य था तथा चाहे कोई रूप दिया न रहा पर साम्प्रदायिक अफ़सरों के होश डिकाने आ गए तथा गुरुमुखी अस्वाचार बन्द हुए। दूसरा लाभ इस एकादीजन का यह हुआ कि अफ़सली भाईयों ने समकू लिया कि खालिस्थान की चाल उनकी नहीं चलती तथा उ-होंने सिक सूबा के नाम को छोड़कर पंजाबी सूबे का नाम पराम्म किया। भाषा अस्वाचार के पाव इतने ताजे थे कि हिन्दुओं को उनके कड़वे पर विश्वास न आया तथा उनका नाम वयर्थ में रह गया।

हिन्दु आंदोलन में कुञ्ज आर्य समाजी नेताओं के स्वार्थ तथा बुद्धलता के कारण एक दुखदाई बात हुई अर्थात् वह यह कि गुरुमुखी की अनिवायता हरियाणा पर बनी रही। गत दस वर्षों के मिथिल परीक्षा परिणाम तथा प्राईमरी के लक्ष्यवृत्ति परीक्षा परिणाम यह बतावगे कि गुरुमुखी की अनिवायता के कारण हरियाणा के बच्चे बहुत पिछड़े गए क्योंकि पंजाबी क्षेत्र के हिन्दुओं को तो एक लिपि ही सीखनी पड़ी पर हिंदी क्षेत्र के विद्यार्थियों को लिपि तथा भाषा दोनों ही सीखनी पड़ी जो बहुत कठिन कार्य है। भारत के किसी प्रदेश में द्वितीय भाषा अनिवाय नहीं पर हरियाणा को इस कठिनाई में जबर से डाला गया। पर्याप्तमान् पंजाब में तीन प्रकार के नागरिक बन गए—

(६) वह जो लिपि तथा भाषा को धार्मिक क्षेत्र में वर्षों से जानते थे तथा (बी) भी वही बोलते थे। (६) वह जो बोलती तो बोलते थे पर लिपि नहीं जानते थे।

(१) वह जो न लिपि जानते थे तथा न बोलती बोलते थे।

आर्य समाज के नेता यह भूल गए कि गुरुमुखी की अनिवायता ने तो पंजाब के टुकड़े हो जाने का अंकुर बोजा था। संसार के इतिहास में मजहब के नाम पर तो लोगों को बदला भी गया और युधक भी किया गया। भाषा के आधार पर तो भेदभाव कहीं सुने नहीं। पञ्जाब को एक रखने का यह एक निराला ढंग था। जिसका प्रमाण इतिहास में नहीं इस का परिणाम यह हुआ कि पंजाबी सूबा की नींव रखी गई। जब मैंने १९४० में यह कहा तो कुछ कमिनों नेता तथा आर्य समाजो नेताओं ने मेरा मसौला उड़ाया और मैं स्वयं नहीं जानता था कि मेरा अनुमान २१ वर्ष में ही सत्य निकलेगा। अब यह स्वार्थी नेता क्या उत्तर दे सकते हैं। हरियाणा को हमने स्वयं काट दिया क्योंकि अगर वह अलग न हो तो भाषा का जबर कैसे जाये। पंजाबी क्षेत्र के हिन्दु भी इतने उत्तरदायी हैं।

दूसरी बात जो पंजाबी सूबे के निर्माण में बहुत सहायक हुई वह था आर्यसमाज का परेल्स युद्ध। इस युद्ध में यह बहुत कर्पायक बात हुई कि युद्ध बिना कहे क्षेत्रीय दृढ़ पकड़ गया इस पर अभी मैं चुप रहना चाहूंगा केवल इतना कहूंगा कि आर्यसमाज जो सर्व-समिति से भाषाई प्रांतों के विरोध में था आज परेल्स युद्ध के कारण उसका एक बड़ा अग्रदल पंजाबी सूबे के पक्ष में है। अगस्त १९४० से पूर्व मैंने कई मित्रों को कहा कि आर्यसमाजी भाई पंजाबी सूबा बना कर रहेंगे। अगस्त में जब कुछ आर्य नेताओं ने मुझे लिखा अथवा पंजाबी सूबा के विरोध के लिये कहा तो मैंने तपट्ट कहा

तथा लिखा था कि पंजाबी सूबा बनेगा। पञ्जाब के कमिनी नेता जो पंजाबी सूबा के घोर विरोध में थे वह भी मानते कि पंजाबी सूबों का क्षेत्र आर्यसमाज की फूट के कारण तैयार था। हरियाणा को पीछे रखना, गुरुमुखी की अनिवायता तथा आर्यसमाज की फूट बड़े भारी बिन्दु थे। पञ्जाब के विभाजन के विरोध में दो बड़े नेता जन्होंने मित्र-मित्र समय पर आराम बलदान को चोपखा की थी जब कहीं मिले तो मैंने सादुरीय कहा था कि कोई लाभ नहीं आराम से बनने दें।

तोसरी बात जिसमें पंजाबी सूबे के लिये बहुत सहायता की वह थी पञ्जाब कांग्रेस के पर में युद्ध भोड़ा नहीं बहुत। बाहर से काय चलता दीखता था और शायद अक्ष भी चल रहा होगा पर अन्दर से समुदा नियन्त्रण टूट चुका है। स्वाध्यायद तथा कुटुंबवाद के नगन मुख्य ने पंजाब की जनता के दिलों के हो उठके न कर दिये अथवा पञ्जाब के भी। अफ़सली बात इस फ़ान्दे में यह रहा कि पंजाब की कांग्रेस के अन्दर यह भाण्डे साम्प्रदायिक जोड़ तोड़ के आधार पर जैसे कि पहल्ले हुआ करते थे, न होकर केवल स्वाध्यायद करने हुए। (कसयः)



### आर्यसमाज (कालिज विभाग) वटालाका चुनाव

१०-४-६६ को निम्न प्रकार से हुआ।  
 प्रधान—म० मनोहरलालजी, उपप्रधान—भीमदी शकुन्तला राय, भी जुगलकिशोर जी भाद्राज।  
 मन्त्री—भी दर्शन कुमार जी हांडा, उपमन्त्री—भी दर्शन कुमार जी शारदा, भी कुलदीप जी मरठा।  
 काव्यध्यक्ष—भी देसराज जी जलका।  
 पुस्तकाध्यक्ष—भी वेदपाल जी हांडा।  
 अनंरंग सदस्य—डा० राम-पकाश जी वृकल, भी सुलखराज जी, भी शिवचरनसिंह जी।

# आदर्श त्यागी म० हंसराज जी

(ले० पं. यदवत जी शर्मा प्रधान कार्य समाज लक्ष्मणपुर अमृतसर)



संसार में दूसरों को सुखी देख कर जलने वाले लोग तो शायद दिखाई देंगे परन्तु ऐसे महान आत्मा विरले ही मिलते जो दूसरों को दुःख में देखकर अधीर और दुःखी हो जायें। उन में भी ऐसे ब्रह्महर्षा बहुत कम मिलेंगे जो दूसरों का दुःख दूर करने के लिये स्वयं दुःख उठाते और अधिक से अधिक कुशान्ति देने के लिए तैयार रहें। निम्नलिखित वह मनुष्य नहीं देवता कहलाते हैं। महात्मा हंसराज जी में ये गुण पराकृष्टा का पहुँचे हुए थे। उन्होंने संसार के दुःखों का उन्हे उनके सबसे बड़े कारण अन्धकार को दूर करने के लिए मानो अपना जीवन बकफ कर रखा था। दूसरों के कष्ट निवारण करना उनके जीवन का ल्येय बन चुका था। उन्होंने इस ध्येय की पुति के लिए अपने गरीब माता पिता की खून पसीने की कमाई और दिन रात के परिश्रम द्वारा प्राप्त की हुई उच्च कोटि की शिक्षा, अपनी जवानी और जवानी की समर्पण और इसके साथ अपना जुवाप भी ग्योद्धावर कर दिशा अर्थात् अपने जीवन के अन्तिम चरण तक परिपक्व का मुनसमा बने रहे।

महात्मा जी ने जिन दिनों B. A. पास किया, उन दिनों B. A. की डिगरी को आचार्यिक मान और प्रविष्टा की इष्टि से देखा जाता था त्रैपुट होते ही कड़े से बड़े सरकारी पद पतीका में लखे मिलते थे। महात्मा जी को सरकार की आर से अपनेकी निमन्त्रण प्राये परन्तु उन्हे तो देश और जाति की सेवा की खून लग चुकी थी कतः उन्होंने मर्हण दयानन्द की पुण्य स्तुति में स्थापित किये गये D. A. V. High

School में दुःखाध्यापक और पीछे कालज बन्ने पर प्रिंसिपल के रूप में बिना वेतन कार्य करना स्वीकार किया। उनके गुजारा के लिए ५०) मासिक उनके पुत्र्य भ्राता श्री मुलकराज जी, भरला अपने पास से दिया करते थे। जिसमें श्री महात्मा जी कल्पन्त तन्त्री के साथ निर्वाह किया करते थे और बहुत बार उन्हे परिवार सहित भूले रहना पड़ता था।

देश और धर्म के लिये सीस फटा देना अध्यापक जिन्दा चिन्ता में जल भरना अतीव कठिन है परन्तु आयु भर पुरो तपस्वी की भ्रष्टी में जलते रहते और दूसरों को प्रकाश देना उससे भी अधिक कठिन है। एक बार भावजा जी के नाराज हो जाने के बारण बड़े भ्राता जी द्वारा ५०) की सहायता मिलनी बन्द हो गयी घर में नितान्त अश्वेरा ला गया। पाका कड़ी अथान् भूले मरने की नीवत आ गयी। चने मिलने भी दुर्लभ हो गये। तब अधीर होकर पुस्तकें लिखकर निर्वाह करने का विचार किया। आन्मारी से एक पुस्तक निकाली बड़े भगवद्गीता थी। सोलते ही सामने श्लोक आया 'कर्मव्येवाधिकारते मा फलेषु कदाचन'। पढ़ते ही मन को शांति आ गयी, और दृढ़ता पूर्वक अपने कर्तव्य पालन में लग गए। उधर बड़े भ्राता जी ने अपनी भूल अनुभव करके फिर से सहायता आरम्भ कर दी। अब भी देश और जाति पर कोई आपत्ति कोई महात्मा जी सदैव सेवा के लिये आगे निकल आते थे। कांगडा आदि के २, ३ कम्पनी मालावार आदि में मुसलमानों द्वारा हिन्दुओं पर किये गये अत्याचारों के समय तथा मलिकाना राजपूतों की शुद्धि आदि के अवसर

# जोगेन्द्रनगर समाज में

हिमाचल में प्राये समाज जोगेन्द्रनगर भी समा से सम्बन्धित समाजों में बड़ा जागृत समाज है। इसका विशाल भवन तो सारे हिमाचल में प्रसिद्ध ही है। साय-साय कार्य भी बड़ा सुन्दर होता

पर उन्होंने जो महान कार्य किए वह आर्ये साज के इतिहास में स्वरगाचरों में लिखने योग्य हैं। महात्मा जी जहाँ और जिस कार्य के लिए लखे हो जाते थे उन्हे कोई हिला नही सकता था जब आगे पग बढ़ाते तो कोई रोक नही सकता था। जब वेद प्रचार अभ्यास विद्या के प्रसाराथ धन के लिये अपील किया करते थे तो पुरुष और स्त्रियां धन, वस्त्र और भूषण लुटा देते थे। देश में ही ०० वं० कालजों और स्त्रियों का जा जाल फैला दिखाने दे रहा है। यह सब महात्मा जी के पार परिश्रम और त्याग का फल है। वह जब तक जीवित रहे, स्वयं सरकारी के कठने पर भी कभी एक पाई तक प्राप्त न ही और न कोई सरकारी प्रतिबन्ध सहन किया।

कृत निरिच्छ अंगरेज सरकार ने उनके सुपुत्र श्री बलराज जी पर देश प्रेम क बदले साजिशा का कंस बला कर फाँसी की सजा सुना दी। उस समय क गवर्नर न कहला भेजा कि वाद महात्मा हंसराज एक बार संभेत भी कर दें तो मैं भी बलराज को तुल्य मुक्त कर दूंगा। परन्तु आरम्भ सन्मान क पुतले महात्मा जी ने गवर्नर के सामने धार्यन करना स्वीकार न किया। आपिपु एक दिन गवर्नर हीं ०० वीं कालज देखने के बहाने स्वयं आ गया तो महात्मा जी ने उस दिन कालिज से छुट्टि ले ली ताकि शिष्टाचार के नाते गवर्नर का स्वागत और सत्कार करने पर कही गवर्नर यह न समझ बैठे कि महात्मा जी अपने भेदे को छुट्टाने के लिए उधकी आधी भक्त कर रहे हैं।

है। जहाँ वृद्धों के साथ युवक वर्ग होगा, वहाँ जीवन की ग्योति होगी। श्री गुरुवराकविह जी प्रधान, श्री धवन जी, श्री अंधा-लाल जी, श्री बलराजजी, श्री बलरा जी, श्री लालसिंह जी आद्य, श्री ताराचन्द जी, श्री मिलसोराम जी आदि सज्जन उससाही हैं, वहाँ युवक श्री गुरारीलाल जी मन्त्री, श्री राजकुमार जी श्री सत्यपाल जी भी खूब काम में जुटे हैं। इस बार ता० २२ से १२ अप्रैल तक लूच कथा व उत्सव की पूरा रही। भातः पञ्च व रात को प्रचार था। इस बार समाज ने बड़ी प्रगति की है पंजाब केसरी ता० लाजपत-राय वाचनानलय का भी समारोह से उदघाटन हुआ। हिमाचल के गवर्नर जी की सेवा में साहित्य भेंट किया गया। श्रीत मोहन समारोह का तो कहना ही क्या? कथा-उत्सव में ८० त्रिलोकचन्द्र शास्त्री तथा ०० राजपाल मदन-मोहन संबंकी गई थी। श्री प्रधान जी की सुपुत्री ने समा वेदप्रचार में १०१) रुपये दिये। मंडी से भी श्री इन्द्रसिंह जी, श्री चेताराम जी की धर्मपत्नी पचारये। समारोह देख कर मन प्रसन्न हो गया—सं०

# महात्मा आनन्द स्वामी जी का पत्र आर्यजगत के नाम

नेदरे प्यारे ८० त्रिलोकचन्द्र शास्त्री सभे म नमस्ते ! मैं ६ अप्रैल को देहली से उधकर ३१ तीन घंटे में धार्लैंड पहुँच गया था। उस दिन से हिन्दु समाज के विशाल भवन में कदा शुरू है। वहाँ गर्मी तो बहुत है, परन्तु लोग अश्राद्ध हैं। वहाँ के राजा को राम कहा जाता है। बुद्ध भगवान की पूजा होती है। १५० फुट लंबी बुद्ध मयथान की मोने की मूर्ति है। वहाँ १० अमल तक कथा करके १८ को बैंकाक से सिंगापुर चले जाना है। वहाँ एक महीना सेवा करके फिर मतेरियावा पहुँच कर सेवा करूंगा। मनुष्य को मनुष्य बनाने का ढंग वेद कथा बलाताता है यही कथा कर रहा है। सब को नमस्ते। आनन्द स्वामी सरस्वती मूलासल पयड कण्ठी ७/१ हाई स्ट्रीट सिंगापुर-६

कविराज रामसिंह जी वैद्यवा-  
चस्पति आयुर्वेदाचार्य आरोग्य  
मन्दिर यमुनानगर एक माने हुए  
वैद्य हैं। आपने अपने जीवन के  
वर्षों के अनुभव के पश्चात् स्वास्थ्य  
के लिए आसनों के महत्त्व पर  
ऊपर देते हुए आज के युवकों के  
लिए बड़ा ही महत्त्वपूर्ण कार्य  
किया है। क्रियात्मक जीवन है।  
आपका लिखित आरोग्य प्रकाश  
स्वास्थ्य का प्रतिपादक है। आय-  
जगत् में आपने विचारों को देकर  
कृपा करते रहते हैं—स.

### जीवन का अनुभव

मैं अपने प्रिय पाठकों को  
अपने २४ वर्षों के अनुभव के  
पश्चात् यह सन्देश देना चाहता  
हूँ कि आसनों का अध्ययन  
निस्सन्देह एक नया जीवन प्रदान  
करता है। लगभग १६-१७ वर्षों को  
आयु तक मेरे स्वास्थ्य की दशा  
बढ़ी दयनीय थी। इसका  
कारण यह था कि मेरे मन में  
विद्या प्राप्ति की बड़ी लगन थी।  
बहुत अधिक समय पढ़ने में ही  
व्यतीत होता था। श्रेणियों के प्रथम  
रहने की धुन के कारण सुस्वप कार्य  
पढ़ना ही हुआ करता था।  
अतः व्यायाम तथा विश्राम की  
रूमी के कारण पाचन शक्ति दुर्बल  
पड़ गई। परिणाम स्वरूप स्वास्थ्य  
दिन प्रतिदिन विकृत होता गया।  
मैट्रिक में प्रथम दर्जे में पास होने  
का सौभाग्य तो प्राप्त हुआ, किन्तु  
स्वास्थ्य दुर्बल होने के कारण  
जीवन में आनन्द का अभाव  
प्रतीत होने लगा।

जब डॉ० प० वी० कानोज  
लाहौर में आयुर्वेद की शिक्षा  
प्राप्ति के लिए प्रविष्ट हुआ तो मैं  
शारीरिक रूप में आपने आप को  
सारी श्रेणियों में कमजोर देख कर  
बड़ा ही लज्जित हुआ करता था  
और उन्हीं समय से विद्या को  
उन्नति के साथ-साथ स्वास्थ्य को  
उन्नत करने की भी प्रवृत्त भावना  
मन में पैदा हो उठी। जब कोई  
भाषना मन में प्रवृत्त वेग का रूप

## स्वास्थ्य में आसनों का महत्त्व

(ले०—कविराज श्री रामसिंह जो यमुनानगर)



धारण कर ले तो प्रभु कृपा से  
उसकी पूजा का लाभ भी अचरित  
प्राप्त ही जाता है। ऐसा ही  
मुझे उस समय तथा उस वार  
भी कई बार अनुभव हुआ है।

लगभग छः मास के निरन्तर  
अध्ययन का आरंभजनक प्रभाव  
मैंने अपने शरीर पर अनुभव  
किया। मेरी भूल बढ़ने लगी,  
स्वास्थ्य सुधरने लगा। शरीर  
में एक नई जीवन शक्ति, स्फूर्ति  
अनुभव होने लगी। जिस में एक  
विशेष प्रकार की प्रेरणा रहने लगी  
और साथ ही विद्या-अध्ययन में  
भी विशेष सफलता मिली। प्रभु  
कृपा से आयुर्वेद की अन्तिम श्रेणी  
में सर्वप्रथम रहने और स्वर्णपदक  
(Gold Medal) प्राप्त का  
सौभाग्य मिला। शारीरिक, मान-  
सिक और आध्यात्मिक विशेष  
विकास एवं विश्रुति जीवन के  
विशिष्ट लक्षण, विद्याध्यास में विशेष  
सफलता का साधन, इस नियमित  
जीवन और योगासनों के अध्ययन  
में मेरी इतनी बड़ा बड़ी कि आज  
तक भी मैं अपने जीवन को उन्नी  
प्रकार नियमित रूप से व्यतीत करने  
का यत्न करता हूँ। अब मैंने योगा-

सनों, प्राणायाम और उपासना को  
अपने जीवन के कार्यक्रम का एक  
अंग बना लिया है।

इस माग पर चलते हुए जहाँ  
एक सफल विद्यार्थी होने का  
सौभाग्य मिला, वहाँ अन्य परि-  
वारिक व सामाजिक कर्तव्यों की  
पालना में भी प्रभु-कृपा से पूरी  
सफलता मिली जो शक्ति, स्फूर्ति  
उत्साह शरीर तथा मन में २०-२२  
वर्षों की आयु में थे। इस नियमित  
कार्य-क्रम और आसनों के अध्ययन  
क परिणाम-स्वरूप आज पैतालौस  
वर्षों की अवस्था में भी वैसा अनु-  
भव करता हूँ। मैं अपने प्रिय  
पाठकों का विशेष कर प्रिय विद्या-  
वियों और भाई-बहनों को यह  
सन्देश देना चाहता हूँ कि यदि  
आप भी जीवन में सफलता चाहते  
हैं, सुख शान्ति व आनन्द को प्राप्ति  
चाहते हैं तो प्राचीन महापुरवों के  
अनुभूत इत वैदिक भाग पर चलें।

### आर्य जगत् में विज्ञापन देकर लाभ उगाएँ

### सूचना

इन दिनों में सभा मन्त्री, वेद प्रचार अधिष्ठाता का कार्य  
सम्पन्न कर रहा है। अतः वेद प्रचार तथा उसमें के प्रोद्योग  
सम्बन्धी सारा पत्र व्यवहार मन्त्री सभा के नाम पर किया  
जाय। आर्य समाजों के अधिकारियों से नम्र निवेदन है कि वे  
अपने उसमें हत्यादि की विधियों को पश्चात् समय पहले ही  
रखीकृत करा लिया करें ताकि पीछे प्रोद्योग बदलने की आवश्यकता  
न रहे।

वेद प्रकाश मलदोत्रा

सभा मन्त्री

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

जालन्धर

### आर्य प्रतिनिधि सभा का भविष्य

आर्य प्रतिनिधि सभा और  
आर्य प्रादेशिक सभा के मूल  
विरोध के अतिरिक्त भारत सरकार  
ने पंजाब के विभाजन की घोषणा  
कर दी है। जिस से दोनों सभाओं  
के बहुत दुःख हुआ। कुछ महातु-  
भावों के दिल में शक पैदा हो  
रहा है कि कहीं पंजाब के विभाजन  
की तरह आर्य प्रतिनिधि सभा  
पंजाब का विभाजन करके आर्य-  
समाज का संघटन छूट-भिन्न न  
हो जाय। मैं आर्य समाजों और  
आर्य भाइयों को विश्वास दिलाता  
हूँ कि यह सभा सर्वप्रथम पंजाब में  
आर्यसमाज के संघटन के लिए  
हमेशा कोशिश में रहेगी और  
सभा के विभाजन का किसी तरह  
का प्रश्न ही पैदा नहीं होगा।  
इस विषय में किसी तरह का  
संदेश नहीं देना चाहिये।

रामसिंह प्रधान  
सभा

### अप्रवल वर की आवश्यकता

उच्च कुल की शक्ति तथा  
परेल कामकाज में निपुण आर्य  
कन्या के लिए सुयोग्य वर की  
आवश्यकता है जो शक्ति, धनो-  
पार्जन में योग्य तथा कुलान कुल  
का ही विवाह में किसी प्रकार का  
आडंबर न करने तथा विवाह  
संस्कार वैदिक रीति से कराने के  
पक्ष में हो, लेनेदेने के लालच से  
मुक्त हो। निम्न पते पर पत्र-  
व्यवहार करें। भारत मन्त्री  
आर्यसमाज अलाबलपुर (जालन्धर)

★ हम ने विधियों को तो  
भोगा नहीं उठते विषय ही ने  
हमें भोग लिया, हम तप न तपे  
पर तप ने हमें तथा दिया और  
समय नहीं बीता परन्तु हमारी  
आयु अलक्ष्यता व्यतीत हो गयी।  
परन्तु इतने पर भी लक्ष्णा सुखी  
नहीं हुई बल्कि हम ही बड़े हो गये।



# स्वर्गीय महात्मा हैसराज जी का र्शि जीवन परिचय

ले० श्री कृष्णचन्द्र जी प्रधान आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उप सभा दिल्ली और उप प्रधान आर्य केन्द्रिय सभा दिल्ली



१८६४ (१६ फरव्रल) विजवाड़ा जिला होरवारपुर (पूर्वी पंजाब) में ला० चुनीलाल जी के गृह में जन्म हुआ।

१८८२—दी जेनेरेटर आफ फायरवेल अमेरी साप्ताहिक पत्र जारी किया।

१८८५—(नवम्बर) बी. ए. की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए और अपना जीवन आर्यजमाज और श्र. प. वी. कालिज कमेटी के अर्पण कर दिया।

१८८६—(१ जून) डी. ए. वी. कालिज की लाहौर में स्थापना और महात्मा जी को आवैतनिक प्रिंसिपल नियुक्त होना।

१८८८—आर्य समाज और आर्य प्रतिनिधि सभा लाहौर के प्रधान बने।

१८८२—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की स्थापना की।

१८८५—'आर्य गजट' साप्ताहिक पत्र का भी ला० साव्यपतराय जी पंजाब केसरी के साथ सम्पादन आरम्भ किया।

१८९१—कालिज के प्रिंसिपल के पद को त्याग दिया और प्रादेशिक सभा के काम में तन-मन से लग गये।

**पठनीय एवं मननीय साहित्य**  
वेब प्रकरण ५/- गीतासार ७५ पैसे, ब्रह्मसमीर के पत्र १/-वेदाङ्ग सङ्ग्रह १/५० पैसे, मेरी जाट रोचक कहानिया ७५ पैसे, लोकट ७५ पैसे, सङ्ग्रहाते जीवन ५० पैसे, कर्म मीमांसा २/२५ पैसे, संतति निवमन क्यो और कैसे १५ पैसे, वैदिक व्याकरण भास्कर ५/- ब्याजाम बोधक पत्र ११/३० पैसे, साहित्य प्रचारक १/-  
जयदेव ब्रदर्स बड़ोदा—१

१८९३—द्वानन्द कालिज कमेटी के भी प्रधान बनए गए।

१८९४—ज्येष्ठ पुत्र भी बख्तराज जी को लाठ हार्डिंग केस में सात साल का दंड मिला और महात्मा जी की धर्मपत्नी का देहान्त हो गया।

१८९८—पंजाब शिक्षा कान्फे्रस के प्रधान चुने गए।

१८९९—नेशनल कोरियल कान्फे्रस के प्रधान चुने गए।

१८२२—हिन्दू सङ्गठन की योजना तैयार की और नगरा इत्यादि स्थानों में मलखानों की शुद्धि प्रारम्भ की।

१८२४—कालिज भारतीय शुद्धि सभा के प्रधान चुने गये।

१८२७—कालिज भारतीय आर्य कान्फे्रस दिल्ली के प्रधान चुने गये।

१८२८—महिला महाविद्यालय लाहौर स्थापित किया।

१८३७—प्रादेशिक सभा के प्रधान पद से प्रत्यक्ष हो गये।

१८३८—(१५ सवम्बर) केवल २० दिन बीमार रह कर ओ३२ का जप करते २ रात्री के ११ बज



## निःसन्तान परिवार ध्यान से पढ़ें

यदि आप विवाह के बाद अल्प तक निःसन्तान हैं तो इस रोग के सफल चिकित्सक श्री पं० श्याम सुन्दर जी स्नातक (महोपदेशक पंजाब प्रतिनिधि सभा) से मिलें या पत्र व्यवहार करें। श्री स्नातक जी भारत के अनेक परिवारों की सफलता पूर्वेक चिकित्सा कर चुके हैं।

पूर्णे कोर्स ३ मास व्यय २००/-

पता—श्यामसुन्दर स्नातक महोपदेशक पंजाब सभा

दीवाने हाल देहली



## आर्यसमाज स्टेशन रोड

मैसूर—भी कृष्णजी शास्त्री के तत्वाधान में निम्न सुनावसम्पन्न हुआ।

प्रधान—श्री लक्ष्मीचन्द जी, मन्त्री—श्री ए. एस. आर्यगढ़, कोषाध्यक्ष—श्री के. रामकृष्णाया पुत्रकालयाध्यक्ष—श्री लक्ष्मी नरसिंहराम।

अंतरंग सभासद :- श्री हनुमन्तराव, श्री ड० नानपव, श्री रत्नेया सेठी, श्री वैकट रमन गुप्ता।

## आर्यसमाज नंगल

### टाउनशिप का वार्डिकोस्तव

८-४-६६ से १०-४-६६ तक तक बड़े धूमधाम से मनाया गया। २ अप्रैल से ७ तक लाभी विधानसद सख्तों (काठगढ़ वाले) की कथा तथा श्री राजपाल मदन मोहन जी भी मेलाराम जी के अजन होते रहे। कथा तथा उत्सव का रात्रो कार्यक्रम मेन मार्केट में सांस्कृतिक स्थान पर हुआ। उपस्थिति अच्छी रही।

### आर्यसमाज (अनारकली) मन्दि

मार्ग नई देहली का बुनाक प्रधान—श्री तीर्थेश्वर हांडा उपप्रधान :-

राज बहादुर डा० गणेशदास कपूर प्रिंसिपल शान्ति नारायण श्री सुकुमारज भन्ना, कोषाध्यक्ष स्वामी गणेशपतराय ललाह, सेवाराम कपूर, सम्पतलाल हांडा, रामचन्द्र थापड़, दयाराम शास्त्री मन्त्री—श्री क्षेमनाथ गुप्ता उपमन्त्री :-

श्री दयारामलाल, सुराराम सचदेवा, प्रकाशचन्द्र महाता, हरिसिंहलाल महल, राधाकृष्ण ठाकुर, गोपाल कृष्ण दत्ता जी, जगदीशचन्द्र जी, मगधत स्वर्ण जी, शान्ति नाथ जी कोषाध्यक्ष—श्री हुजसाल खोनी उप-कोषाध्यक्ष—श्री भकृष्ण भारद्वाज लैला-निरीक्षक-श्री रामस्वामी कपूर पुत्रकालयाध्यक्ष—प. सोमकीर्तिका सहायक, —श्री दीरालाल बाबला भवदीय—दरबारीलाल



रेजीफोर्मे ३०००

[आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र]

Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ नये पैसे

वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६ अंक (१८)

१६ वैशाख २०२३ रविवार—वयानन्दाब्द १४१- १ मई १९६६

(तार 'प्रादेशिक' जालन्धर)

## वेद सूक्तयः

### अश्विनो निविध्य

हे वीर सर ! जो भी शत्रु बन कर तेरे राष्ट्र पर आक्रमण करना चाहता है। जो भी हानि पहुँचाना चाहता है तथा जो भी उपद्रव करता है—तुझकी अश्विनो दोनों आँखें निविध्य-वीन्य डाल ! उसे नेत्रों से हीन कर दे ताकि गडबड़ न करे।

### हृदयं निविध्य

ऐसा जो भी राष्ट्रघाती, मान-बला को नाश करने वाला शत्रु बन कर आता है उसके कलेजे को चीर डाल। शत्रु पर दया करना उचित नहीं चरम् राष्ट्र की शान्ति भंग करने वाले को मार डालना ही अच्छी देहा मक्ति है।

### नतुन्धि

उस पापी, दुष्ट, देशद्रोही शत्रु की जमान काट डाल। ऐसा शत्रु अपनी जमान से राष्ट्र की एकता को छिन्न भिन्न करने के लिए नाना प्रकार से विधे विचारों का प्रचार करता रहा है। इसे इस पाप से रोकने से बांधी हीन कर देना चाहिए।

अश्विनो वेद से

## वे दा मृ त

### राजा व शासक कैसा हो

वि रन्नो वि मृषोजहि वि वृत्रस्य हन् रुज।  
वि मनुयुमिन्द्र वृत्रहन् अमित्रस्याभिदासतः ॥

अथर्ववेद काँड प्रथम सूक्त २१ मन्त्र २

अर्थ—हे इन्द्र ! राजन् ! जो भी (शत्रुः) रक्षस हैं और

जो भी (मृषः) राष्ट्र के घातक हैं, उनको (विजदि) मार दे।

तथा (वृत्रस्य) दृष्ट शत्रु की (हन्) दाहों को तथा हमला करने के तमाम साधनों को (वि रुज) तोड़ डाल। हे वीर शासक ! शत्रु के (मनुयुम्) अभिमान को भी (इन्द्र) राजन् ! हे (वृत्रहन्) शत्रु का नाश करने वाले शासक ! (अमित्रस्य) शत्रु के (अभिदासतः) हमें दास, गुलाम बनाने वाले राष्ट्र के घातक के अभिमान को, शोचन को चूर २ कर दे अपने बल के बज्र से उसकी दाँवें ही निकाल दे।

भाव—राजा व राज्य का शासन चलाते वाला शासक कैसा हो ? वेद के इस मन्त्र में इसी का उपदेश दिया है।

केवल शांति से राज्य का काम नहीं चला करता। जो भी राक्षस हैं, जितने भी राष्ट्र में गड़बड़ मचा कर उसकी आजादी को नष्ट करना चाहते हैं। जिनको भी अपने बल पर अभिमान है या जो भी राष्ट्र के वातावरण में अशान्ति लगाने में तुले हैं। हे वीर राजन् ! उन सब को भली भाँति ठीक करने के लिए कुचल कर रख दे। उनके दाँव निकाल दे, दाँवें तोड़ डाल। उन का सारा अभिमान चूर २ कर दे, ताकि राज्य में शांति की व्यवस्था पनी रहे।

—सं०

## ऋषि दर्शन

### तद् द्विविधं भवति

यह राक्षसों या राजकुमों है। यह तो दो प्रकार का माना गया है। राज्यस्य के दो नियम होते हैं। राज्य में मनुष्य भी जब देव और अश्रु रूप में दो प्रकार से हैं। उन के काम भी दो तरह के हैं। उन के साथ व्यवहार भी दो प्रकार का ही होना चाहिए—

### भवति एकं सहस्वत्

उस राक्षसों के दोनो प्रकारों में पहला सहस्वत्—यें नाम से पुकारा जाता है। सहस्वन का अर्थ है सहनशील होना। जो उच्च मजावन हैं, उन से तो सहनशीलता हो। या जब कभी जनता उचित प्राण के लिए राज्य की समालोचना करे तो शासक को सहनशील होना चाहिए।

### द्वितीयमुग्रवत्

राक्षसों का दूसरा रूप उग्र-वत् है अर्थात् उग्रता से भरा होना चाहिए। राज्य में जब कभी सम-व्यवस्था पर दुष्टजन जनता में उग्रता मचाने लगे। राज्य के नियमों को तोड़ने लगे तो ऐसी अवस्था में राक्षसों को उन दुष्टों का दमन करने के लिए उग्र रूप होना चाहिए।

या मत्त मूर्ख का से

यज्ञ करते हुए मन्त्र बोलते हैं। 'अथन्त इधम आत्मा ॥ अर्थात् दे यज्ञ कर्ता ? यह तेरे शरीर में स्थित जो आत्मा है, यह इधम अर्थात् समिधा है। समिधाओं को जन-सामान्य को भाषा में लक्ष्मियाँ कहा जाता है। परन्तु यज्ञ प्रकरण में उनका नाम समिन् है इसी की सादृश्यता को लेकर यहाँ आत्मा को इधम कहा है। इधम शब्द जहाँ से निकला उस का मौलिक अर्थानु शीति है। जो प्रक-रित हो सके वह इधम है। अतः यज्ञ में समिधा डालते समय ध्यान रखा जाता है कि वे गीली, गली सड़ी या विष्कार युक्त न हों, पष्य तथा सूखी हों, जिससे प्रदीप हो सके। आध्यात्मिक अर्थ में आत्मा को समिधा बनाया है। शायद इसी लिए प्राचीन काल में अपने मन की शंका निवारणार्थ विद्वान् की सेवा में जाने वाले जिज्ञासु के लिए उपनिषत्कारों ने नियम बनाया था कि 'तस्य गुरु सवेभिगच्छे समि-थ्याः। श्रोत्रिय श्रद्धा निन्द्यम् ॥ अर्थात् जिज्ञासु हाथ में यज्ञ योग्य समिधा लेकर विद्वान्, सायक गुरु की सेवा में पहुँचे। अन्य गौण प्रयोजनों के साथ हाथ में समिधा लेकर जाने का मुख्य प्रयोजन प्रदीप होता है कि वह अपने आत्मा को समिधा बनाकर आ रहा होता है, जैसे वह स्थूल समिधा यज्ञात्म के संसर्ग से प्रदीप हो उठता है, लाल हो जाता है। ठीक इसी प्रकार जिज्ञासु का आत्मा भी आचार्यकुण्ड के अर्चक पचकती ज्ञान-रूपी अग्नि का संग प्राप्त कर प्रदीप हो उठता है, वह चमकने लगता है, उस प्रकाश और लाली में वह जीवन के तत्वों को समग्र देखा है। जो उस अवस्था से युक्त होता है, वह ही वास्तव में देव होता है। देव शब्द का अर्थ खोलते हुए महर्षि यास्क ने जहाँ कई अर्थ दिए हैं उनमें एक अपने 'दीपनाह' भी है।

धार्मिक चर्चा—

## यज्ञ की सार्थकता

श्री पं० सत्य प्रिय जो शास्त्री सिद्धान्त शिरोमणि प्राध्यापक-  
दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार



अर्थात् जो अपने ज्ञान द्वारा स्वयं प्रदीप हों और साथ ही जीवन के सरल व सच्चे रास्तों से भटक कर जो घोर संसार जंगल में घूम रहे हों, उन्हें अपने ज्ञान से मार्ग-दर्शन कराए, वह देव हैं। ऐसे देव ही अपनी शरीर पूरी के याज्ञक होते हैं। अतः देव इनकी पुष्पची बनती है, अर्थात् शरीर का विस्तार होता है। आत्मा सभी इनके भक्त उनको सशरीर अपने निकट हमेशा देखते हुए इनके आदेशों का सम्मान करते हैं। वे अनुकरणीय लोग ही अपनी पुष्पची को देवच-जनि बनाते हैं। अर्थात् दिव्य गुणों

का यह करते हैं। यह करने पर जोड़े से भी तथा सामग्री का काफी विस्तार हो जाता है। ऐसे ही अपने जीवन में दिव्य यज्ञ कराने वालोंका भी विस्तार होता है। उसी के लिए तो कहा गया है कि 'वदुभ्यस्वाम्ने ये प्रति जाग्धि' अर्थात् दे आत्मनः । तु जाग, सोच विचार और जीवन में प्राति, कर। आगे लिखा है की प्राति । 'इष्टपूर्व'। दोनों प्रकार के प्रति जागरूक होना है, अभ्युप-और निःशेष अर्थात् इस लोक में तथा परलोक दोनों में सुख देने वाले कर्मों की साधना है। यजमान

## तप त्याग निस्स्वार्थ मूर्ति (हंसराज)

(श्री वेद प्रकाश जी एम. ए. आर्य स्कूल लुधियाना)

अधिकारों ने कर्त्ता नीचे कुचल दिए कर्त्तव्य सभी, सिंसक न पाते ब्राह्म तलक भी भर वे पाते नहीं कभी। अधिकारी कुर्सी पर इतना अम कर बैठे हैं भाई, प्राहि-प्राहि कुर्सी चिल्लाती रामत मेरी है आई। तपस्व्याग निस्स्वार्थ मूर्ति पर हंसराज कुल ऐसे थे, निरा दिन दीन दुखी के सेवक प्रभु जाने वे कैसे थे। तन मन धन सब कळ ही अर्पया वे तो करने वाले थे, दीन अनार्थो विधायाओं हित जीने मरने वाले थे। खाने पीने सोने जगने कपड़े का था ध्यान नहीं, ध्यान अग्र था यही कि क्योकर फैला पाया ज्ञान नहीं। अज्ञान में भारतवासी क्या-क्या टोकर खाते क्यों, सुखको सुख संवर कर विद्व प्रकाशक ज्ञान नहीं फैलाते क्यों। सुखको को सत्य पर लाकर अन्ध भाव भर पाए थे, दी-दी० पं० की० संस्थाओं द्वारा सफल प्राप्ति कर पाए थे। पराधीनता पेड़ यहाँ जो भूम-भूम था फूल रहा, देश प्रेम से जड़ें हिला यह मानव हरता शूल रहा। यज्ञ से उस दिव्य पुरुष को आभी शीश मुकुट पर हम, सेवा का त्रस लेकर, पापों को क्षामूल हिलाएँ हम, यह मिल जाय, वह खा जाएँ वही नहीं अपनाएँ हम, भारतवासी भारत की संस्कृति को फिर उँहाराँ हम।

पाश क्रियाओं को गौण मान कर चलता है। वास्तव में तो वह जीवन का नाटक खेल रहा है। इस बल्ल कर्म काण्ड के द्वारा तो वह अपने जीवन की मानसिक भूमि की तैयारी करता है। तीन समिधाओं के द्वारा मानो वह मन, बचन तथा शरीर से किये शुभ कर्मों अथवा अपने ज्ञान, कर्म और उपासना को अपने पिता के समुल उपस्थित कर ईश्वर प्रार्थिधान करता है। इस भाव यज्ञ की प्रत्येक क्रिया को यदि स्वस्थितमान जीवन के यज्ञ का प्रतीक माना जाये तभी इस यज्ञ की सार्थकता तथा उपेक्षितता है।

## आर्य समाज जोगेन्द्रनगर के अंतर्गत लाला लाजपत राय लाइब्रेरी का उद्घाटन समारोह

दिनांक १३ अप्रैल १९६६ को आर्य समाज जोगेन्द्रनगर द्वारा आयोजित गायत्री यज्ञ की पूर्णाण्ड का बाद भारत केसरी ला० लाजपत राय लाइब्रेरी का उद्घाटन समा-रोह माननीय श्री गुरुद्वालकी प्रधान आर्यसमाज की अध्यक्षता में हुआ जिस में पं० त्रिलोक चन्द्र जी शास्त्री, श्री इन्द्रसिंह जी उपप्रधान आर्यसमाज मयडी, भीमती सरला देवी मन्नायी आर्य महिला मयडल सरली, पं० हरिश्चन्द्र जी शास्त्री राजकीय पाठशाला ओ० नगर पं० राजपाल मदनमोहनजी, सुरारी-लाल मन्जी आर्यसमाज जोगेन्द्र-नगर ने भाग लिया। श्री गुरुद्वाल जी प्रधान आर्यसमाज ने लाला लाजपत राय लाइब्रेरी का उद्घाटन किया।

★ प्रकृति जीव और परमात्मा तीनों का पूरा ज्ञान प्राप्त कर लेने के बाद यदि सच्चे मन से परमेश्वर की भक्ति की जाये तो ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है।

सम्पादकोय—

# आर्य जगत

वर्ष २६] रविवार २०२३, १ मई १९६६ [अंक १८

## विजवाड़ा नगरी में

महापुराणों के जन्म स्थान एक प्रकार के तीर्थ होते हैं। जिन स्थानों में किसी भी महापुराण ने अपने भौतिक जीवन को प्रारम्भ किया हो—वह ऐतिहासिक बन जाते हैं। हम भौतिकवाद के विरुद्ध हैं परन्तु उन्मत्त स्थानों पर समारोह तो मनाना ही चाहिए। आस पास के इलाके की जनता को प्रेरणा मिलती व प्रचार भी होता है।

आर्य प्रादेशिक समा पञ्जाब के महान संस्थापक त्याग-नाप के देवता स्वर्गीय महात्मा हंसराज जी के जन्म स्थान वजवाड़ा जिला हरिद्वार पारपुर में प्रतिवर्ष उनके जन्म दिन १६ अप्रैल को समारोह हुआ करता है। देशविभाजन से पूर्व तो भी धनीराज जी भदला वहाँ पर बड़ा भारी रङ्ग ब मेला दिया करते थे। विभाजन के बाद समा ने अपनी ओर से प्रतिवर्ष वहाँ इस परम्परा को कायम रखा हुआ है। इस वर्ष भी वहाँ समारोह हुआ है। वहाँ जा कर अपनी आँकों से देखा, सुना तथा शामिल होकर बहू बहने सुनने का भी अनुभव मिला। इस बार यह बात चिन्ता के बन्दी जा सकती है कि वहाँ पर आचार्य विवेकचन्द्र जी के साधु आश्रम के एस० ए० दरानाचार्य व शास्त्री पास महानुभावों ने जो काम किया, जो उत्साह दिखाया तथा जो प्रशम्भ दिया। उसके लिए उनकी प्रशंसा करनी ही पड़ती है। प्रायःकाल यह से लेकर शाम को शासिचाने व वरिधों के साथ

इकट्ठा करने तक वे लगे रहे। इस समारोह में विद्वान् आदि पधारे। सबकी चर्चा कलम समाचार में पढ़ सकते हैं। यह उत्सव समारोह से मनाया गया। वहाँ डी.ए.पी. स्कूल होशियारपुर, वजवाड़ा स्कूल व सज्जनों बहिनो का सहयोग मिला। समा व्यव व दक्षिण करती है। वजवाड़ा समाज के जनक्यक मन्त्री श्री जगदीश जी भदला का बड़ा प्रेम है। महात्मा जी के परिवार के निवृत्त सम्बन्धी हैं।

इस में जो विशेष बात वहाँ साँसे बत्ताओं, विद्वानों ने कही तथा अनुभव की वह यह कि यह समारोह भारी समारोह से मनाया जाना चाहिए। बाहर का यदि कोई सज्जन आकर वजवाड़ा देखे तो क्या वह। वजवाड़ा उत्सवता जा रहा है। भारत में महात्मा जी के भक्तों की कमी नहीं यदि वहाँ कोई ऐसी चीज़ शिल्प केन्द्र महात्मा जी के नाम पर बन सके तो उत्सम होगा। वहाँ तो स्वयं महात्मा जी के नाम पर चलने वाली पुरानी कच्चा पाठ-शाला भी सरकार को दे दी गई है। उस से महात्मा जी का नाम भी समाज होकर गवर्नमेंट नाम आ गया है। स्वयं की बार जल्दा भी वहाँ न होकर समाज मन्दिर में होगा। बड़ी नम्रता से कहना चाहेंगे कि इस समारोह को पूरी शान से मनाना चाहिए। जालन्धर होशियारपुर से भी काफी तर-नारी वहाँ शामिल हों। यह तो मेला

# पूज्य महात्मा जी सिंगापुर में

आर्य जगत के तपस्वी रुत महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज का जीवन लोकसेवा में धर्ममय, यज्ञमय बन चुका है। भारत के कोने २ में तो वेदाभ्युत्थान पान कराने के निमित्त भ्रमण करते ही हैं। इस आयु में भी उनका स्वास्थ्य देख कर सिर मुक जाता है। विदेशों में भी वेद प्रचार के लिए पधारते हैं। आजकल महाराज जी गत दिनों से दक्षिण से थाईलैण्ड, सिंगापुर, बैंकाक तथा मलेशिया देशों में वेद प्रचार के लिए गये हुए हैं। आप कितना भीठा, प्रभाषशाली तथा रक्षित

बोलते हैं। यह तो सारे ही जानते हैं। आर्य समाज को नहीं बरन भारत को इस देवता पर बड़ा मान है। हम प्रयत्न कर रहे हैं कि वहाँ पर जनता में घाटा जाने वाला कथा अमृत वहाँ भी आर्य जगत की प्रेमो जनता को पीने को प्राप्त होता रहे। प्रभु महात्मा को सदा स्वस्थ रखें। महात्मा जी ने अपने हाथों से जो पत्र लिखा है उसकी वृत्त पत्रियाँ दें—  
मेरे प्यारे शिष्यो कचन्द्र जी सधे स नमस्ते।

मैं दक्षिण को देहली से उड़ कर साठे तीन घण्टे में थाईलैण्ड पहुँच गया था। उसी दिन से हिन्दु समाज के विशाल भवन में बधा शुरू है। वहाँ गर्भों तो बहुत हैं, परन्तु लोग अज्ञात हैं। वहाँ के राजा को राम बहा जानता है। कुछ भगवान की पूजा होती है। १४० फुट लम्बी मूर्ति बुद्ध की रखी है। वहाँ १० तक कथा करके १८ को बैंकाक से सिंगापुर चले जाना है। वहाँ एक भद्रीना का रूप धारण कर लेते तभी शोभा है। अपनी समा की सेवा में इस बारे में एक आश्चर्यक व विस्तृत निवेदन भी विचारार्थ किया जायगा।  
—निलोकचन्द्र

सेवा करके फिर मलेशिया पहुँच कर सेवा करना। मनुष्य को मनुष्य बनाने का ठाँव वेद क्या बतलाता है—यही कथा कर रहा है। सब को नमस्ते—

## आनन्द स्वामी सरस्वती

पूज्य महात्मा जी को वेद प्रचार के पवित्र मानवधर्म को फैलाने की दायिती तबू है। देश-विदेश में यह महान सत्य अपने पवित्र कार्य में लगे हैं। प्रभु सदा स्वस्थ रखें।  
—सः

\*\*\*\*\*

## आर्य बाल सम्मेलन

आर्य समाज करोल बाग नई दिल्ली के बापिबंसोस पर शनिवार रा० ८ मई १९६६ को सभा २ से ४ बजे तक 'आर्य बाल सम्मेलन' का आयोजन किया गया है।

जिसमें गृहवर्धियों तक के बड़े बालक बालिकाओं की 'आर्यसमाज' विषय पर तथा बिल्डल तक के छोटे बालक बालिकाओं की 'महाभूय दशानन्द' विषय पर भाषण प्रयोगियायें होंगी। दोनों भागों में विजेता १६ बालक-बालिकाओं को सुन्दर-सुन्दर पारितोषिक दिये जायेंगे।

बोलने के इच्छुक बालक बालिकाओं के नाम ता० ५ मई १९६६ तक सम्मेलन के संचालक श्री ए० देवप्रत जी धर्मन्तु, आर्योपदेशक १९४४, कृपा दत्तनी राय, दूरियानगर, दिल्ली ६ के पते पर भेज दिये जावें।

\*\*\*\*\*

## महात्मा बुद्ध

महात्मा बुद्ध को संकल्प व्रत से ही बौद्ध वृत्त की नींव तथा में बोध प्राप्ति हुआ था और वे राज्य पाठ त्याग कर मानव मात्र की सेवा में लग गये थे। महात्मा बुद्ध ने विद्व-उपाधी अहिंसा का प्रचार किया था।

आर्यसमाज के महान् नेता, तप-योग की साक्षात्सजीव मूर्ति भारत में शिक्षा रूची गंगा के बसंमान भागीरथ तथा आर्य वाद-शिक समाज पत्रावक संस्थापक स्वर्गीय महात्मा हंसराज जी की पुण्य स्मृति में वार्षिक जन्म-दिवस उनके जन्म स्थान बजवाड़ा जिला होशियारपुर में समारोह से मनाया गया। जैसे तो यह समारोह एक प्रकार के शानदार मेले के रूप में मनाया जाना चाहिए। इतने महान् योगी सर्वभेदी का दिवस-समारोह तो दशोनीय होना चाहिए। जिसने सर्वभेद कर दिया हो उसकी स्मृति किस का मन्त्रक नहीं हुआ देनी।

व० १९ अर्धशतक से ही यह के कार्यक्रम के साथ दिवस-समारोह का काम शुरू हो गया। इस बार आचार्य विश्वबन्धु जी के साधु आश्रम के विद्वान् प्राध्यापकों तथा विद्यार्थियों ने जो सुन्दर सहयोग दिया, उससाह के साथ प्रशंस किया उसकी शंसा होनी ही चाहिए। आर्यसमाज में वहाँ प्रायः प्रति सप्ताह ही समाज का कार्यक्रम चलाने के लिए यही युवक वर्ग आ कर सलसंग करता है। बजवाड़ा समाज के मन्त्री श्री जगदीश चन्द्र भल्ला महात्मा जी के परिवार में से हैं। वह तो वही ही तल्प रखते थे काम करते हैं। साधु आश्रम से आने वाले युवक वर्ग से उन को उससाह मिला है। साधु आश्रम से आकर काम करने वालों में व० वेदप्रकाश साहित्याचार्य, श्री दयानन्द आर्य एम० ए०, श्री चन्द्र प्रकाश एम० ए०, श्री मूपल एम० ए० व० वेदव्रत शास्त्री, डम्बरू बहादुर जी दर्शनाचार्य, व० अमृतसेन जी दर्शनाचार्य तथा शाश्वत भी था। इस अवसर पर भी व० अमिनदोत्री जी, आचार्य रामानन्द जी शास्त्री, बिसिपल रामदास जी एवं व० पी०, बिसि-

## महात्मा हंसराज जी की जन्मभूमि बजवाड़ा में

### जन्म-दिवस का महान् समारोह

महात्मा हंसराज अमर रहें के जयघोष



पल महेंद्र जी प्रधान हाइवाएलुट समाज, व० लक्ष्मीराम जो शर्मा महात्मन्त्री दयानन्द कालेज कमेटी होशियारपुर, आचार्य चारुदेव जो शास्त्री भी उनीयाल जी एम० ए०, व० सस्तान चन्द्र जो, ला० संसार चन्द्र जी एडवोकेट, बिसिपल बजवाड़ा स्कूल, कैप्टन वृदाराम जी, व० त्रिलोक चन्द्र शास्त्री, व० चन्द्रसेन जी, व० ज्ञानचन्द्र जी समा से तथा होशियारपुर डो० ए० बी० का वैड, बजवाड़ा स्कूल का वैड, कन्या स्कूल की लड़कियाँ, अध्यापक तथा नरनारियाँ थी।

यज्ञ के कार्यक्रम के बाद दोपहर की शान्दार जलूस निकाला गया। गली २ महात्मा हंसराज जी को जय, आर्यसमाज अमर रहे के गानभेदों घोषों से गुं चडा। सारे कर्णों में जलूस ने चक्कर लगाया। उस स्वर्गीय तपस्वी देवता महात्मा हंसराज का तपगमय जीवन सब को आत्म-विभोर कर रहा था। तीन बने तक जलूस की बड़ी शोभा थी। उस के बाद आचार्य रामानन्द जी शास्त्री साधु आश्रम की प्रधानता में काय-क्रम आरम्भ हुआ। श्री दयानन्द आर्य एम० ए० ने इस दिवस को महान् मेले के रूप में प्रति वष मनाने की ओर सब का ध्यान आकर्षित किया। आर्यसमाजों, सभाओं एवं दयानन्द कालेज कमेटी के ऋषिकारियों को इस की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। उस सर्वभेदी का दिवस भी उसके अनु-रूप ही मनाया जाना चाहिए।

अमल्ले वर्ष से यह समारोह अपनी शान का निराला हो। श्री व० वेद प्रकाश जी ने कहा कि आज कल तो युवक अपनी नौकरी की तलाश में फिरते हैं। परन्तु महात्मा

जा ने तो धरतों वीरन अवस्था लाकेश को भेंट कर दा। निःशान भावना के वह आदर्श प्रतीक थे। माई मो हा तो ओ मुनलराज सरोला हो जिसने युवक हंसराज जो को अपना सारा सहयोग दे कर जीवन पर्या निनाया। संछुत में कहा गया है—अंगीकृत सुरु-तितः परिपालयन्ते। महापुरुष धारयन् विद्म ह्यु व्रत को पालना करते हैं। महात्मा जो ने युग की धारा को बन्द कर रख दिया। युग प्रवाह के साथ बढ़ना तो सब को आता है किन्तु महापुरुष युग धारा को बदलकर रख देते हैं। अमा-मारत में कहा है कि राजा कालस्य कारयत्—राजा, नेता एवं आत्म-विश्वासी युगधारा को बदल देता है। महात्मा हंसराज जो युग-पुरुष थे। उनका कार्य आज हमसारे सामने है। आर्यसमाज इनका दिवस समारोह उनके अनुसूच ही मेले के रूप में मनाए।

दयानन्द कालेज कमेटी होशियारपुर के मन्त्री व. लक्ष्मीराम जी ने कहा कि महापुरुषों का कार्य बालपन से ही प्रारम्भ हो जाता है। आज जितना भी शिक्षा का काम है इसका सारा श्रेय उसी देवता को दिया जा सकता है। वह तो सेवा को अपना कर्तव्य समझते थे। किसी प्रकार का श्रेय नहीं लेना चाहते थे। उस महा-पुरुष के जन्मदिन की यह अवस्था देखकर दुःख पैदा होता है। हमें चाहिए कि आज का दिन एक महान् पर्व के रूप में यहां पर मनाया करे। मेरेया मिलेगी।

आर्य समाज के महान् विद्वान् पण्डित चारुदेव जी शास्त्री एम० ए० ने भाव भरे शब्दों में कहा कि महापुरुषों के ऐशे-ऐसे जीवन एवं समाज व सारे देहा को प्रेरणा देते

हैं। धार्मिक मनुष्य की पहिचान दो समय पर होती है। एक तो प्रलोभन की लारों के सामने और दूसरा विपत्तियों के समय। सत्य के समय को मनुष्य की परीक्षा होती है। नीत का समय सब से बड़ा भयंकर होता है। जो उस समय भी शान्त रहता है, वह महापुरुष कहलाता है। महात्मा जो का जीवन विपत्तियों में अविचल रहा है। श्री बजराज जो के विषम केश में भी विचलित नहीं हुए। उन के सामने अर्थ से डट भी आया पर तनिक भी हांसडाल नहीं हुए। चन्दन को चिसने से वह सुगन्धि ही देता रहता है। अना काटने पर वह अपने मिठाल नहीं छोड़ता। स्वयं को जितना तपसा वह अधिक चमकता है। इसी प्रकार महात्मा भी समय-समय विपत्तियों में पड़ कर अपने जीवन में अडिग ही रहते हैं। महात्मा हंसराज जी जीवन में यही पवित्र बात काम काम करते थे। रुई व पड़ाइ की चट्टान में हवा चलने से रुई का भारी डेर भी उड़ जाता है पर चट्टान विचलित नहीं होती। महा-पुरुष पर्वत की चट्टान होते हैं। हम ने इसे महान् मेले का रूप देना होगा।

### दयानन्द ब्राह्म महा विद्यालय, हिसार

इसके सुयोग्य स्नातक भारत के भिन्न-भिन्न प्रांतों में वही योग्यता काये कुशलता, तथा कर्मठता के साथ वैदिक धर्म का प्रचार कार्य कर रहे हैं।

उसी तरह श्री पंडित वेदव्रतजी शर्मा सिद्धांत भूषणा स्नातक विद्या-लय, आलासम शिव में वैदिक धर्म के प्रचारकों जा रहे हैं। उनके सम्मान तथा अभिनन्दन के लिये एक विराट सांस्कृतिक समा माननीय नेत्र विरोधकी ही डा० शिरधर सिवानी शास्त्री के सन्-पतित्व में १-२-६६ को दिन के ६ बजे आर्यसमाज नागोरी गेट हिसार में होगी। कृतः सब सम्प्रदों की उपस्थिति आर्षेणोय है। सुरारी लाल शास्त्री

## मीठी लेकिन गहरी

(श्री यश जी प्रधान आर्य प्रादेशिक सभा पंजाब)



चोट इत्नी-जो, पर कितनी गहरी। कुम्भेश्वर विरत्रविद्यालय ने नेपाल के प्रधान मन्त्री श्री सूर्य बहादुर थापा का सम्मान करने के लिए उन्हें 'डाक्टर आरम्भ लिटने रेक्टर' की सम्मानार्थ उपाधि दी। इस बड़े बंध के लिए विरत्रविद्यालय का विशेष दीक्षांसमारोह जुलाया गया। कारवाहों के बाद उपकुलपति श्री दीपचन्द्र बर्मा ने कुलपति श्री उज्ज्वलसिंह से प्राथना का कि वह दीक्षांसमारोह आरम्भ करने की अनुमति दें। कुलपति ने अनुमति दे दी। तब उपकुलपति ने श्री सूर्य बहादुर थापा की सराहना करते हुए कुलपति से प्राथना की कि वह माध्यम अतिथि को सम्मानार्थ उपाधि प्रदान करें कुलपति ने ऐसा ही किया और तब रजिस्ट्रार 'कार्य सचिव' ने इस कारवाही की संसृष्टि कर दी। यह सारी कारवाही अग्नेवो में हुई। परन्तु जब कुलपति श्री वल्लभसिंह ने अग्नेवो में हा नेपाल के प्रधानमन्त्री से प्राथना की कि वह अपने विचार प्रकट करें तो श्री सूर्य बहादुर थापा ने नेपाली भाषा में भाषण दिया। नेपाली भाषा और हिन्दी में अधिक अन्तर नहीं है। लगभग नव्वे प्रतिशत शब्द साम्य हैं। इसलिए सुनने वालों के लिए समझना कठिन नहीं था। पहले तो सुनने वालों ने नहीं समझा कि वह शायद हिन्दी में बोल रहे हैं। इसलिए जैसे ही उन्होंने बोलना आरम्भ किया, सारा हाल तालियों से गूँज उठा।

लोग प्रसन्न हो रहे थे, मैं नैव न रहा था। हमारे मान्य अतिथि ने कितनी मीठी, लेकिन गहरी चोट की थी। हम अपने देश में अपनी भाषा बोलने में लज्जा अनुभव

करते हैं। दूसरे पता देता में अपनी भाषा बोलने में गर्व अनुभव करते हैं। इस से भी अधिक गहरी चोट और की गई। जब श्री सूर्य बहादुर थापा नेपाली भाषा में भाषण दे चुके, तो इनके सैकेटरी ने इस भाषण का अग्नेवो में अनुवाद सुनाना आरम्भ कर दिया। हमारी सबद्वी देखिय कि हम बन्से शिवायव भी नहीं कर सक कि आर अग्नेवो अनुवाद कभी सुना रहे हैं। यदि अनुवाद सुनाना ही है तो हिन्दा में सुनाइय। जब हम स्वयं अग्नेवो बोलने रहे, तो दूसरे से हिंदी में न बोलने की शिवायव कैसे करें। लेकिन सुनने वालों ने इस चोट की पोड़ा अनुभव ही नहीं की, अपितु इसकी अभिभक्ति भी की। जब श्री थापा नेपाली भाषा में भाषण दे रहे थे, तो हर वाक्य के बाद तालियां बजती रही। परन्तु जब अग्नेवो में अनुवाद सुनाया गया, तो किसी ने तालीन नहीं बजाई। सुनने वालों ने यह प्रकट किया कि उन्हें नेपाली तो समझ में आई, अग्नेवो समझ में नहीं आई। मंच पर बैठे कितने व्यक्तिके एक बार अग्नेवो के अनुवाद के दौरान ताली बजाई, लेकिन इसका साथ किसी ने नहीं दिया। दाबारा उले साहू भी नहीं हुआ कि अग्नेवो में अधिक समझने का प्रदर्शन कर सके।

यह पहला अवसर नहीं है कि जब किसी विदेशी ने हमारी आरव्यकता से अधिक अग्नेवो-प्रियता की अनुभूति कराई हो। कई बार कोड़े की-सी तेज-तरार साट हूँ जगा चुकी। लेकिन हर बार जब वायुक पड़ता है, तो हम

## विचार-तरङ्ग (८)

(श्री राम सुजी की कालिया एम० ए० नई दिल्ली)



अपने लिए तो पशु पक्षी भी करते हैं। परहित की भावना का खेत तो मानव हृदय ही है। इस भावना से शुभ्य मानव बिना पूँछ और सींग को पशु है। दूसरे का का कल्याण चाहने वाले के लिए ससार में कोई कार्य भी कठिन नहीं होता। तुलसी दास जो ने टोक ही कहा है—

'परहित बस जिन के मन माहीं,  
जिन कहां जग दुर्भल हुआ नाहीं।'

हिन्दु भावना की पूर्ण के लिए यदि कठिनाई का सामना करना भी पड़े तो साहस और पीरुष का परिचय दे देना चाहिए। स्वतंत्रताओं से जुझने में चारित्रिक विकास निहित है। सरल धारणा जीवन व्यतीत हो, इस में जो कोई आनन्द ही क्या ? मखा तो कल कल विवाद में, पथरों से टकरा कर रास्ता बनाने वाली धारा में है। शोमनीय और आनन्ददायक दृश्य

सामयिक रूप से जग्य कर कि जड़का की नींद सो जाते हैं। जैसे यह एक साधारण-सी बात हो। इधर पड़ी, उधर बढ़ गई। मैं पृथ्वी हूँ, आखिर अग्नेवो कितने और कोशों को आश्चर्यकता है कि जब हमें अपने राष्ट्रीय साम्यमान की अनुभूति होगी ? हमारे देश की 'देह भाषण' हैं। एक से एक मीठो, एक से एक अच्छी। हमारे देश की अपनी राष्ट्र भाषा भी है। प्रत्येक दृष्टिकोण से सम्पूर्ण। हम इन सब को छोड़कर ऐसी भाषा बोलने में गर्व क्यों अनुभव करते हैं, जिसे हम स्वयं प्रायः गलत बोलते हैं, और सुनने वाले गलत समझते हैं। गलत समझने वालों की संख्या भी मुश्किल से तीन चार प्रतिशत है।

तो उसी बेगमवो प्रवाह का है। जीवन का सरल और उथल पुथल से रहित होना भी शुष्क-सा बन जाना है। यह शुकता अलग-अलग लगी है और जीवन व्यर्थ-सा, निष्क्रिय से जान पड़ता है। तभी तो कहा—बला जाता हूँ हंसवा खेला भोजे हवापस में, अमर आसानीयां हों जित्नी दुदरार हो जाये।'

कठिनाइयों को सहन करने का सामर्थ्य रखने वाला भक्ति अपने मार्ग को प्रशस्त बना ही लेता है। वह निर्भीक बन कर अग में विचरण करता है। सोने के तपने के बाद कुन्दन-सा बना हुआ उस का शरीर आभा विवेकता है। वह अफानों से उल्ला नहीं बलिक स्वयं एक तुकान-सा बन जाता है। श्री बिनावा भावे ने एक बार कहा, 'Cyclones do not change my programme, I am a cyclone myself.' (क्रमरः)

### आर्यसमाज दम्पत्या

का चुनाव १९५५-६६ को निम्न प्रकार से हुआ।  
प्रधान—श्री० राजेन्द्रनाथ जी B.S.C., B.T. उपप्रधान—श्री हरवंसलाल जो मुज्रिम। मंत्री—श्री बलदेव मिश्र, अधि यम, ए. एडवोकेट, उपमन्त्री—राजेन्द्र जी जोषी एडवोकेट स्वजांची—पं० देवीदयाल जी, वृत्तकाध्यक्ष—सुरेन्द्र कुमार जी B.S.C.B.T. एडीटर—ज्ञा० दुर्गादास जी एडवोकेट। प्रतिनिधि सदस्य—पि० राजेन्द्रनाथ जी, श्री हरवंसलालजी मुज्रिम, श्री बलदेव मिश्र जी अंतरंग सदस्य—श्रीम प्रकाश जी एडवोकेट पं० जगदीशचन्द्रजी, श्री सी-वैट म्युनिसिपल कमेट्री ला० ज्ञानचन्द्र जी सराफ, म० दीवानचन्द्र जी, पं० अश्वीरचन्द्र जी।

(गतांक से आगे)

इससे पंजाब में साम्प्रदायिक ढंग न आया तथा भाई को भाई से प्रेम रहा। हानि यह हुई कि रंग गुट के अकालियों ने अपनी बुद्धिमत्ता से इस बहिंस के अगड़े का, कार्यसमाज में घुट का तथा हरियाणा के रोप का पूर्ण लाभ उठाया। मास्टर थंडे के अकाली तो देखते ही रह गए पर संतपतह सिंह ने लोहा गर्भ देखकर सूब समय पर चोट की।

त्याग इतना और तप की दृष्टि से तथा ऊँचे जीवन की दृष्टि से संत जी का मुकामला आज भारत का कोई नेता नहीं कर सकता पर समझ बूझ में भी कमाल कर दिया। अगर यह अबसर निकल जाय अथवा हरियाणा की शिक्षावर्ग पर सरकार ध्यान दे देती तो शायद संत जी का सफलता न होती। यह अबसर तो प्रत्येक समय न था सकता था और तो और अगर आर्य समाज की फूट दूर हो जाती तो संत की सारी शक्ति पंजाबी सूबा बनाने में सफल न हो सकती।

पंजाब कांग्रेस की सुदृढ़ता के सामने थोड़े ही वर्ष हुए थे कि जब संत जी तथा मास्टर जी की मिली-जुली शक्ति भी निरपलव गई थी। अगर संतगुरु अबसर का लाभ न उठाता तो शायद फिर उनका वास्तविक जल भरना भी पंजाबी सूबा न बना सकता।

पंजाबी सूब के निर्माण में संत जी ने एक और बात भी सूझ-बूझ से की। वह यह है कि जब पाकिस्तानी वम-वर्षा कर रहे थे तो वह भारत सरकार की सिल्ली उठा रहे थे पर किसी के बहने पर अथवा ऊपर की आवाज पर उन्होंने अपने ढंग की बदल कर अपना जल भरना स्थगित कर दिया था अगर वह उस समय मास्टर तारासिंह जी की मनोवृत्ति अपनाते और प्रव

## पंजाबी सूबा तथा आर्यसमाज

(श्री प्रिंसिपल भगवानदास जी डी.ए.वी., कालेज अम्बाला नगर)



रखते और जल भरते तो कोई पंजाबी उनकी आरम्भ-हत्या पर आप्तु भी न बहाता। पंजाब की जनता में कोई रोष हो पर वह देश के शत्रु को क्षमा नहीं करते। इसलिये उन दिनों में अपना जल कर भरना स्थगित करके संत जी ने देश प्रेम का प्रमाण दिया तथा अपने मिशन की सफलता की ओर गए।

पंजाबी सूबे सम्बन्धी कमिश्न महामंडल की घोषणा पर जो रोष देखा गया वह दुल्हदाई था। उसमें किसी भी दल का दोष न था जनता बिना नेतृत्व के गलत रास्ते पर चल पड़ी। केन्द्रीय नेताओं का निश्चय बहुत वेदंग से तथा शीघ्रता में पोषित किया गया तथा रोष क दिनों में कोई नेता पंजाब न पधारे। सब से दुल्हदायक बात यह रही कि संत जी ने पीड़ित जनता की पकड़ धकड़ के विरोध में एक शब्द भी न कहा तथा बहुत से निर्दोषी होते हुए भी कष्ट के भागी बने। कई तगरो में कोई नेता मिली कि कई साम्प्रदायिक लोगों ने हलवा, लहड़ तथा प्लाओं बांट कर जलती पर तेल का कार्य किया। ऐसे भड़काने वालों की सरकार ने पकड़ नहीं कहा। संत जी जो अपने आपको हिन्दू सिक्ख एकता का पुजारी कहते हैं अबश्य इन बातों पर रोप प्रवट करना चाहिए था। सरकार इस पकड़-पकड़ में न केवल विद्यार्थियों को ही पकड़ डेटी आप्तु जनता पर काट रखने वाले कुछ नेताओं को भी पकड़ कर जेल में डाल दिया। आर्य समाज का भला इसी में है कि कब एक हो जायँ। जो लोग पंजाबी सूबा में सिक्खों की बहु-दृष्ट्या का विरोध करते हैं वह गरीबी करते हैं। पंजाबी सूबा वर्तमान पंजाबी क्षेत्र में से, सरद,

होदिनपुर, पठानकोट, अमोहर, पाकिष्का आदि तहसीलें निकाल कर बनना चाहिए। जितनी हिन्दुओं की संख्या कम होगी उतना ही सुसंगठित होकर वह साम्प्रदायिक वृत्ति को नष्ट कर सकेंगे। जो सुविधाएँ सिक्खों को पंजाब में २२ प्रतिशत पर मिल रही हैं वह सुविधाएँ हिन्दुओं को पंजाबी सूबा में तभी मिलेगी अगर हिन्दू रूप संख्या में होंगे। इसका दूसरा लाभ यह होगा कि अकालियों का साम्प्रदायिकता की ऐनक छोड़ कर सबको साथ लेकर चलना पड़ेगा। अधिक से अधिक क्षेत्र हरियाणा के साथ होने से राष्ट्रीय तत्वों को बढ़ावा मिलेगा। अकाली यह याद रखें कि भाई भ्रान्तों में जो तार हिन्दी को है उसका अनुमान इससे लगाया जा सकता है कि महाराष्ट्र में तो लिपि देवनागरी है ही पर गुजरात तथा दूसरे प्रदेशों में देवनागरी लिपि की मांग दिनोंदिन बढ़ रही है। जिन गुजरातियों ने लक्ष्मण कर गुजरात प्रदेश बनाया था वही ज्ञान गप हैं कि गुजराती लिपि में कार्य नहीं चल सकता तथा सुल्लम-सुल्ला देवनागरी की ओर बढ़ रहे हैं। दूर दक्षिण में भी ऐसा वातावरण देखा जा सकता है। भोग जब एक-दूसरे की भाषा नहीं समझ सकते तो अंग्रेजी की बजाय हिन्दी का प्रयोग करते हैं। महा-विद्वन्-विद्यालयों में देवनागरी लिपि बनाने के प्रयत्न चलते ही रहते हैं। लासोँ व्यावह प्रतियर्ष हिन्दी की परीक्षाओं में अपनी इच्छा से बैठते हैं। पंजाबी सूबा का निराला ढंग अगर छोटे से छोटे प्रदेश में चलेगा तो कुछ वर्षों में एक मंडूक को होश आने लगेगी उनका भारत से दूर जाने का ठकं मैने कभी नहीं माना

तथा नहीं यह होगा। आर्यसमाज का नाद होना चाहिए कि पंजाबी सूबे को छोटे से छोटा करो।

जो तीनों प्रदेशों में सभिक तत्वों की बात है वह भी कुछ नहीं। सभिक तत्वों का लाभ तभी हो सकता है अगर अकाली पंजाबी की लिपि में स्वतन्त्रता दें। अगर जैसा कई अकाली करते हैं कि उनकी हिन्दी गुरुमुखी लिपि में लिखने की भी छूट हो तो दे देनी चाहिए। कौन उन पर लिपि ठोस सकता है। सभिक तत्वों से अगड़े बहुत बड़ेगे तथा अछाचार भी। सिवाय हाई-कोर्ट के कोई बात चल न सकेगी। पंजाबी सूबा बनाना है तो सिक्खों की बहु-संख्या से छोटे से छोटा सूबा बनाना ही ठीक रहेगा तथा आर्य समाज को एक होकर यही बल देना चाहिए।

### आर्य समाज बागोरीगट हिसार

का चुनाव १०-५-११ को निम्न प्रकार से हुआ।  
 प्रधान—श्री० नयन लाल जी,  
 उपप्रधान—पं० जगन्नाथ जी, ला० फतेहचन्द जी, प्रो० विजयचन्द जी।  
 मंत्री—ला० नंदलाल जी, उपमंत्री—ला० सुरेन्द्रनाथ जी, श्री यशवंत जी, प्रचार मंत्री—प्रो० रामविषाचार जी, पुस्तकालयाध्यक्ष—राजेंद्रमोहन जी, कोषाध्यक्ष—चूनीलाल जी, लेखालीनरीक्षक—ला० दीनदयाल जी।

**आर्य समाज योगेन्द्रनगर**  
 ला० लाजपतराय लायब्रेरी संचालन समिति का निर्वाचन इस प्रकार से हुआ—  
 संरक्षक—श्री गुरदयाल जी,  
 प्रधान—श्री गिरधारीलाल जी,  
 उप-प्रधान—श्री सत्यपाल जी,  
 मन्त्री—श्री राजकुमार जी, कोषाध्यक्ष—श्री वैद्यनाथ जी, सहायक मन्त्री—श्री हरिश्चन्द्र जी, प्र००० सरदार—श्री गुरारीलाल जी कर्मवीर समाज, शिवायाम जी, कलारचन्द जी।

बैंग जी ने उत्तर दिया कि जपानी में ही भर आओगे। तुदापा खाने का ंदन ही नहीं बढ़ता। तब कहीं सेठ जी संकेत हुए और उन्होंने लहड़ा बंदी खाना छोड़ दिया।

भोजन का तीसरा सिद्धान्त मैंने लिखा था **Cheapest and Simplest food is the best food.**

अर्थात् छाना सस्ता भोजन भी स्वास्थ्यकारी होता है। चर्क में भोजन के सम्बन्ध में यह लिखा है।

“अष्टकान शांतिमुद्गाविव सैन्धवात्मकं येवान् अतिरिक्तं पयः सर्पिताङ्गलं । चाश्वसेत ॥

तत्रच नित्यं शुकुजीत स्वास्थ्यं येनामुवन्ते । अजातानां विद्याराणामनुत्तराणि करन्चयन् ॥”

शास्त्रों के चावल, साठी के चावल, मूग, सैंधानमक, आंवला येहूँ आकाशीय जल, दूध घृत राहद इनका नित्य सेवन करे। देह की स्वास्थ्यवस्था को जो न विगाड़ें, और रोगों को रूफन न करें वह द्रव्य खाने चाहिए। यह भोजन-धरता, सारिबक, स्वास्थ्य कारी है। नवीन विज्ञान के अनुसार प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, फेट, विटामिन, साकर, वाटर, माइरन आदि आदि संघटकों से युक्त आहार चाहिए। जो चरक ग्रंथि द्वारा बताये भोजन में जिसका विवरण उपरोक्त है सभी संघटक पाये जाते हैं।

भोजन सदा पच जाने पर ही करना चाहिए। अल्पन्ध भूल, सारीर में लघुता, शुद्ध हकार आना, उत्साह होना यह आहार के पच जाने के लक्षण हैं। बिना पचे भोजन पर भोजन करना, सैंकड़ों रागों को जन्म देना है। लिखा भी है।

‘अर्षेरात्रेऽपि मुक्ताः । परमार्थं युयुक्षतः । शुभी वैष परिस्थायी इयापिभित्तिं मिभूयते ॥’ अल्पन्ध भूल खाने पर आभी रात में भी भोजन करने वाला

**स्वास्थ्य विचार—**

**भोजन द्वारा स्वास्थ्य**

ले०—श्री डा० ओमप्रकाश जी अग्रवाल वी.ए.एम.एस. (एट०)

(नोट—इस लेख का पूर्व भाग ३ अप्रैल के अंक १४ में पढ़ें ।)



सुदिमान मनुष्य वैद्य का त्याग कर देने पर भी रोगों द्वारा पराजित नहीं होता। पर आज तो चाहे भूल लगे अथवा न लगे। हमने हर समय खाना ही जीवन का लक्ष बना लिया। हमको उठते ही ‘चैड’ टी की आवश्यकता पड़ती है। उसके बाद न मालूम हम कितने वार खाते हैं। हमने सिद्धांत बना लिया है यह खा, वह खा, खड़े होके खा, बैठ के खा, सेट के खा, सफा में खा, रसोई पर में खा, भिय बन्धुओ आपको मालूम होना चाहिए कि सन् १४ में फौज में भर्ती होने वालों का डाक्टरों ने स्वास्थ्य का निरोक्षण किया। उनमें से ६६% को मनुष्यों का स्वास्थ्य खराब निकला। आवश्यकता के अनुसार खराब स्वास्थ्य के आदमी भी भरती करने पड़े। उनके स्वास्थ्य के खराब होने का कारण उनकी विलासिता तथा भोजन का अति मात्रा में वार-वार खाना निकला। फौज के नियमित भोजन ने चन्द मर्दानों में ही उनके स्वास्थ्य का पूर्ण सुधार कर देनेके बजने को १०-१० पींड बढ़ा दिया। अतः भिय बन्धुओ भोजन के सम्बन्ध में याद रखो वयादा खाना पाप है। आज कल तो दुपत्तों में जाकर रिश्वात देना लोगों ने अपना कर्त्तव्य समझ लिया है। उबी प्रकार पेट भर जाने पर जीम के नीचे ऊपर चटनी का लेपन करना अपना कर्त्तव्य समझ रखा है।

जब पेट भर चुका फिर चटनी मखना जो है रिश्वात की मनोवृत्ति है। स्वामी रामवीर जी महाराज के अमरीका में कहा था ‘ओ

मनुष्य आपने को जीत सकता है। यह निरादेह सारे संसार को जीत सकता है।’ हम देश का अष्टाचार मिटाना चाहते हैं। नित्य अष्टाचार करते हैं। आवश्यकता से अधिक किसी भी चीज का लेपन अष्टाचार है। तो क्या अधिक खाना जबकि हमारा पेट भर चुका है अष्टाचार नहीं है? आवश्यक है। इस अष्टाचार का प्रारम्भ ‘बहनों की बनाई हुई खट्ट-खट्टी चटनी का जिझा रानी पर लेपन से होता है।

हमारे पेट में भोजन को पचाने वाली तीन चीजें होती हैं। जिनको **Hydrochloric acid, pepsin, Renin** नाम दिया जाता है। इन तीनों चीजों को ही मिलाकर आमाशयिक इसको नाम दिया है। इस रस को आनाशयिक प्रथिया बनाती है। जब हम खाना अधिक खावेंगे। तो हमारे उदर सैलों पर रस निर्माण का कार्य बढ़ जायेगा इतने पर भी भोजन को हम ने संतुलित किया तो कार्य भार की दृष्टि से उनके सूजन होना स्वभाविक है सूजन हो जाने पर या तो उनका कार्य भार विलुक्त रुक जायेगा या अल्प परिमाण में इसका निर्माण करती रहेगी। जब ऐसा होता है तो डकार अधिक आना, उल्टी होना, उदर पीड़ा, मुल में वार-वार कफ आना अर्थात्, बुलवार, पतले दस्त, आदि रोगों को जन्म मिल जाता है। इस प्रकार का रोग जब उत्पन्न हो तो अच्छा यह है कि भोजन को ही संतुलित कर ले, उपवास का सहारा हो। पर जो भाई और बहनें इस रोग के उत्पन्न करने की तथा चिकित्सकों

के दरवाजें खलखलाने की, आदी हों वह निम्न उदाहरणों से मना लें यह पेट के सब रोगों पर अमृत का कार्य करता है।

घृत कम्पारी (बी कुमार) का पट्टा का रस ५॥, नीबू का रस ५॥ दोनों को बूढ़े पर गर्म करें। एक उबाल खाने पर नीचे उतार लें और उस में नोसादर ५ काली मिर्च ५, काला नमक ५ इन तीनों का कपड्डन चूना करके मिला दें और पोटलों में भर लें। मात्रा १ तो० से २॥ तो भोजन के बाद पियें।

१. भोजन की मात्रा नियंत्रण के लिये पेट के क्लिप्त चार हिस्से कर लें। पहले दो हिस्से ठोस खाना से भर लें। एक को ताल पदार्थ से भर लें, एक भाग खाली छोड़ दें।

२. भोजन प्रारम्भ के पहले थोड़ी-थोड़ी अन्नक और काला नमक आवश्यक खाना चाहिए।

३. कच्चा दूध कभी न पिये इस में वेव-टीरियाज प्रविष्ट हो जाते हैं। जो रोगोत्पादक हैं। तथापि धारोण्य दुग्ध अमृत के समान है। दूध को एक उबाल खाने तक ही गर्म करना चाहिए। ज्यादा उबाल देने से विटैमिन नष्ट हो जाते हैं।

४. भोजन के बाद १०० कदम टहल कर बाईं करबट लेट जाय और भिम शब्द त्परी रूप रस गंध का प्रयोग करे परन्तु वृत्त सारिबक हो।

आहार शुद्धी सचच शुद्धिः सचच शुद्धी ब्रह्म स्थितिः । स्मृति स्तम्भे सर्वं प्रधीनां विष मोक्षाः ॥ परमात्मा करे हम लोग स्वस्थ रह सली बनें। हमारे अन्दर बसुधैव कुटुम्बकम् की भावना जायत हो और सब मिल कर जब जाय करें ‘भारत माता की जय !’



# आर्यजगत का (महात्मा) राज विशोष

(श्री सत्यदेव जो एम० ए० विद्यापीठ संटलटोन जालन्धर)

मन्य सम्पादक जी,  
 भायें जगन् का 'महात्मा  
 ईशराज शंकर' प्राप्त हुआ। मैंने  
 प्रारम्भ से ध्यान तक इसे पढ़ा।  
 लेख-सामग्री अच्छी है। सम्पादन  
 परिश्रम से हुआ है। पृथक् महात्मा  
 जी के सम्बन्ध में अच्छी सूचना  
 प्राप्त होती है।

दो सालें अच्छी। जिन के  
 लिये यह पत्र लिख रहा हूँ। एक  
 दो भी यत जी का लेख नहीं। वे  
 वर्तमान अवस्था पर कुछ पकड़ा  
 डालते।

दुन्दरे आप यह शंकर १६  
 अगस्त १९६६ को निराज रहे हैं  
 जब महात्मा ईशराज को अमानत  
 समाज और डी. ए. बी. संस्थाएं  
 दोनों का भविष्य इस पंजाबी  
 सूत्रों में पंजाब में नहीं बोको कि  
 भी यश जी के शब्दों में बह सर  
 गया है—डाबाडोल है। आप  
 कभी मा० तारासिंह, स० केहरसिंह  
 बैदागी, स० बुधिराज तथा अन्य  
 अकाली हल के नेताओं के  
 व्याख्यान सुनिए। यह बह अकाली  
 दल है जिस के सामने केन्द्रीय  
 सरकार ने घुटने टेक दिए हैं।  
 उसके नेता जा कुछ कहते हैं वह  
 सुनिद और फिर बतलाइए कि  
 क्या स० ईशराज के डी० ए० बी०  
 स्कूल प्रारम्भ से हिन्दो पढ़ा सकेंगे  
 या नहीं। क्या हमारे स्कूलों में

**पठनीय एवं मननीय साहित्य**  
 श्रेष्ठ बचन ५/- मीठाबरा ७५  
 पैसे, आनमगीर के पत्र १/-वेदारम्भ  
 संस्कार १/५० पैसे, मेरी जाट  
 रोचक कहानिया ७५ पैसे, लोक  
 ७५ पैसे, महत्कृतो जीवन ५० पैसे,  
 कर्म मीठाबा २/२२ पैसे, सतति  
 निपमन कवी और कंठे १५ पैसे,  
 वैदिक व्याकरण भास्कर ६/-  
 श्यामाम बोधक पत्र ११/२० पैसे,  
 साहित्य प्रचारक १/-  
 जयदेव ब्रदर्स बड़ोदा-१

सब विषय हिन्दी में पढ़ाए जा  
 सकेंगे या नहीं? सीधा प्रश्न है।  
 सीधा उत्तर चाहिए।

मेरा यह पत्र भाय जगत में  
 प्रकाशित कौञ्च और उत्तर  
 माँगिए।

दूसरा एक और प्रश्न है। वह  
 है भायेंसमाज का। भायेंस भायें-  
 समाजी भाई गांव-गांव में हैं।  
 क्या पंजाबी सूत्रे की सरकार-  
 जिधमें पोलिस के विमान और  
 जिज्ञा के अधिकारियों से सिस-  
 भाई बहुत अधिक संख्या में होंगे,  
 उन भायसमाजियों की अकालियों  
 के आस्थावारी से रक्षा कर  
 सकेंगे।

क्या आपके पछड़ी जातियों  
 के भायें-हिंदू भाई अपने को बचा  
 सकेंगे। क्या भायसमाज का  
 संगठन इतना प्रबल है जो उन्हें  
 सहायता दे सकेगा ?

मेरा कहने का अभिप्राय  
 यह है आज जो प्रश्न इस पंजाबी  
 सूत्रों में हमारी आंलों में उगली  
 जुभोकर उत्तर मांग रहा है, उनके  
 विषय में आपका म० ईशराज  
 शंकर मीन है। म० ईशराज जी की  
 विरासत का बचाने के लिए हम  
 क्या कर रहे हैं, इसके विषय में

## वापकास्तव

भायें समाज सलन्धर का  
 वापिकास्तव तिथि १०-१२-१६  
 अगस्त को बड़े प्रभावशाली रूप में  
 सम्पन्न हुआ। उल्लेख से पूर्व तीन  
 दिन पृथक् प०० क्रोमपकारा जी भायें  
 सहोपदेशक की वेद क्या हुई।  
 भायें जगत की प्रसिद्ध विमता  
 भजन महदली महाराय राधेपाल  
 भदन् मोहन शाली कुंवर जगतलाम  
 बल्लौराम जी की संघर्षालोपा पचाई  
 हुई थी। १० जी के व्याख्यानों का  
 और भजनों का जलज पर प्रबल  
 प्रभाव पड़ा। नगर कीर्तन का बहुप  
 बहुत शानदार वा नौजवानों ने बड़े  
 उत्साह से जल्ल में भाग लिया।  
 बड़े जोश-खरोग से भजन गाते  
 रहे।

भायें समाज की ओर से समा  
 को १५४/- वेद प्रचार फण्ड, ५/-  
 शावरानि फण्ड, १२/- भायें जगत  
 शुल्क, ५०/- किराये - भाड़े में  
 दिए गए।

—जियालाल भायें  
 मन्त्री समाज

पत्र रहने से काम न चलेगा।  
 अधिक क्या लिखूँ। भायें  
 जगत के द्वारा इन प्रश्नों का उत्तर  
 जलता से माँगिए। भायेंसमाज के  
 अधिकारियों से माँगिए।

## आर्यसमाजों से निवेदन

आर्यसमाजों से निवेदन है कि जून और जुलाई के मास  
 में होने वाले उत्सवों तथा कथाओं के प्रोत्साहन स्वीकृत करने के  
 लिए मुझे पत्र लिखें ताकि समा के कार्य-द्वन्द्वों को भेदने का  
 उचित प्रोत्साहन बनाया जा सके। हिमाचल जम्मु-काश्मीर तथा  
 पंजाब के पहाड़ी क्षेत्रों की समाजों में विशेष तौर पर निवेदन  
 है कि वे इस अवसर का लाभ उठावें।

—वेदपकारा मसदोत्रा, समाज मन्त्री  
 धार प्रवेशिक प्रतिनिधि समा  
 जालन्धर

## शुंडन संस्कार

जाला लाला कर्मचन्द जी  
 रिटानमें Principal Higher  
 Secondary School Nako-  
 दर, के पीर जी बलदेव मिश्र के  
 सुपुत्र विरजजीव राजीव कुमार का  
 शुंडन संस्कार, देहली में वैदिक  
 रीति के अनुसार, सैंकड़ों स्त्री-  
 पुरुषों, सम्पन्धियों और मित्रों की  
 उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। सबका  
 मिठाई, चाय से स्वागत हुआ।

## आर्य जगत के बारे में

आर्य समाज मारीशस के मन्त्री  
 श्री विद्यानंद रामदयालजीका पत्र  
 पृथक् सम्पादक जी, हृदय से  
 नमस्ते।

मुझे आप की पत्रिका भायें-  
 जगत काफी पसन्द आई और  
 सनाहद नियमित रूप से पढ़ने  
 रही है। मेरी दृष्टि में आर्यजगत  
 भारतवर्ष की ही नहीं संसार की  
 सर्वश्रेष्ठ धार्मिक पत्रिकाओं में से  
 है। इसके हर अंक में नवीनता  
 रहती है। आधुनिक युग में इस  
 प्रकार की पत्रिका की बड़ी आव-  
 श्यकता थी। इस कमी की पूर्ति  
 करके भायें प्रादेशिक प्रतिनिधि  
 समा पंजाब ने बड़े साहस का  
 परिचय दिया है।

मैं ईश्वर से सदा यहा कामना  
 करुंगा कि वह पत्रिका सदैव  
 इसी प्रकार सारी दुनियां के  
 कोने-कोने में वैदिक धर्म का  
 प्रसार करती रहेगी।

भवदीय—विद्यानन्द रामदयाल  
 मारीशस टाउ

★ जिस बस्तु को उपासना की  
 जाती है उसका गुण उपासना करने  
 वाले में आ जाते हैं। जैसे यदि  
 कोई विद्वान की उपासना करे तो  
 उसे विद्या प्राप्त होगी। इसी प्रकार  
 यदि कोई पत्थर की पूजा करेगा तो  
 वह पत्थर के सामान जड़, मूल  
 और चालसी तथा अज्ञानी हो  
 जाएगा।

मुद्रक व प्रकाशक श्री अमृतभरज जी भायें प्रादेशिक प्रतिनिधि समा पंजाब जालन्धर द्वारा मीर मिलाप, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा  
 भायेंसमाज काशास्य महात्मा ईशराज भवन निकट कचहरी जालन्धर राह से प्रकाशित मासिक—आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि समा पंजाब जालन्धर

## वेद सूक्तयः

### अश्विनो निविंश प्रदतो मृगीहि

उम धोलेवाज राक्षस के तो दत :—दान्त भी मृगीहि—तोड़ छाल। हे बीरवर ! तू इस प्रकार के दुष्टजन शत्रु को ऐसी मार दे। उसे के दान्त भी निकाल दे ताकि वह विष वमन न कर सके—

### इहैव भव

इह—इस जगत् में तथा रूपने इस शरीर में भव—सुख-पूर्वक निवास कर। इस रूपार को शूद्रता न जान तथा अपने इस मानव चोले को भी तुच्छ पथ साधारण अत समझना। सुख से दिन बिता।

### नः सोम मृडय

प्रसुदेव ! आप सोम हैं—ताप संताप को दूर करने वाले हो। सारे सक्तों को काटने वाले आप ही हैं। सुख शांति के दाता हो। कृपा करते हुए नः—हमें मृदल—सुखी बना दो। सदा आप की कृपा से सुख मिले।

### ताः सर्वा नश्यन्तु

भगवन् ! वे सारी बीमारियां मन की बुराईयां हमारे शरीर तथा मन से परे हट जायें। सब का नाश हो जाय। कोई भी बीमारी तथा बुराई हमारे शरीर एवं मन में न आने पायें। सदा स्वस्थ तथा चित्तवृत्त बनें।  
आ ध वं वे व से

## वे दा मृत

### राजा का कर्तव्य

अपेन्द्र द्विपतो मनोप जिज्यासनो वधम् ।  
वि महच्छर्म यच्छ्र वरीयो यावया वधम् ॥

अथर्व वेद काण्ड प्रथम सूक्त २१ मन्त्र ४

अर्थ—हे राजन् ! इन्द्र इन को (अप) परे हटा दे जो (द्विपतः) द्वेषी हैं, शत्रु हैं उनके (मनः) नीच मन को भी (अप) परे हटा दो जो (जिज्यासतः) शत्रु बन कर सदा हमारी हानि चाहने और करने वाले हैं। उनके (वधम्) हमले को भी परे कर दे। हमें (सहव) बड़ा (शर्म) सुख कल्याण (यच्छ) दे तथा (वरीयः) राष्ट्र के शत्रु के (वधम्) हमले को भी (वधय) दूर कर दे। हर प्रकार का शत्रु भग. दे।

मातार्थ—राष्ट्र की शान्ति को कई प्रकार से भय होता है। परस्पर द्वेष, वैमनस्य फैलाने वाले शत्रु सदा गड़बड़ किया करते हैं। हानि पहुंचाने वाले राष्ट्र की शांति को भंग करने में लग जाते हैं। इसी प्रकार शत्रु भी शस्त्रों से राष्ट्र को भूमि पर आक्रमण करके उसको अपार क्षति कर देते हैं। इन का प्रतिकार न किया जायें तो सारा देश अन्दर से खोखला हो जाता है। इसलिए वेद की राजा अथवा शासक के लिए यह आज्ञा है कि इन तथाम प्रकार के शत्रुओं, वैरियों और हमला करने वालों को पूरा रूप से कुचल दिया जायें ताकि देश में किसी तरह की भी अशांति व गड़बड़ न होने पायें—सं०

## ऋषि दर्शन

### इन्द्रियाणिमदैररत्नक्षीयानि

राज्य के आसन पर बैठे हुए राजा से लेकर मन्त्रि मंडल तथा कर्मचारी वर्ग के लिए आश्चर्य है कि वे अपनी इन्द्रियों का सदा रक्षण किया करें। आरामवशी व भ्रामविजयो हों। कामी या इन्द्रियों के दास लोग राज्य के काम को कभी चला नहीं सकते। अनाचार की मार राज्य को मार देती है। आराम-दमन चारुहै।

### श्रोज एव ज्ञत्रम्

शास्त्रों में ऐसा विधान माना जाता है कि भोज ही ज्ञत्र है। शक्ति तथा बल को ज्ञत्र का नाम दिया है। बल शक्ति के बिना राज्य का काम चल ही नहीं सकता। यह शक्ति बल बिना सदाचार के आता नहीं। कामी तथा अपनी इन्द्रियों का दास बना कर्मचारी कायर होगा है।

### वीर्यमेव राजन्यः

वीर्य या बल ही राजन्य अर्थात् क्षत्रिय होता है। बल के बिना क्षत्रिय नहीं कहा जा सकता। क्षत्रिय उसे कहा जाता है जो विपत्ति में पड़े दुश्मनों को बचाता है, दुःखियों की रक्षा करता है। जो कमजोर है वह क्या बचायेगा ? इसीलिए वीर्य को क्षत्रिय माना है।

मा ध्व भूमि का से

आन्तरिक एवं बाह्य जीवन में माधुय, मिठास का इच्छुक है। अर्थन, ज्ञान प्रकाश स्वरूप परमात्मा इसका देवता, विद्वत्प्रकाश स्वरूप परमात्मा इस मन्त्र में निहित भावना का आचरण किया जाए, तो मानव का जीवन मधुमय बन स होता है। इसमें कोई सन्देह नहीं।

वैसे तो संसार का प्रत्येक नरनारी आधुनिक युग में धन की दौड़ में व्यस्त है और बिना धन के निर्वाह भी सम्भव नहीं, किन्तु वेद मन्त्र में जिस धन की घोषणा की गई है, वह लौकिक धन से बहुत विलक्षण है।

सर्वप्रथम धन को 'रवि' शब्द से कहा गया है। रवि शब्द 'री गतिपथयोः' धातु से 'इ' प्रत्यय करके बना है। अतः 'रवि' का अर्थ हुआ, वह ऐश्वर्य, जिसमें गति, हल चल, एक स्थान से दूसरे स्थान पर गमन आना जाना और इच्छा का भाव हो।

आधुनिक वेद के अनुसार हमारा ऐश्वर्य ऐसा नहीं होना चाहिए, जो एक जगह पड़ा हुआ सदा रहे, किसी के काम न आए। किसी तालाब का जल निरन्तर खड़ा रहे, तो सड़ जाता है। स से दुर्गन्ध आने लगती है। यही अवस्था ऐश्वर्य की है। रवि शब्द में दूसरी भावना इच्छा की है। हमारे धन में दूसरों का उपार करने की इच्छा भी हो। पथ्या में खोज का भी

केवलार्थो भवति केवलादी।' सी हाथों से कमा, हजारों हाथों से दान कर, अकेला खाने वाला केवल पापी होता है।

यह रवि आये कहां से? भोगे किससे? इस पर भी ध्यान दीजिए। सर्वप्रथम धन की याचना प्रभु से की है, क्योंकि वे ही रविमान् हैं। अथ मनिः पुीच्यो रविमान्

कुन्ददास के विषय में ऐसा प्रसिद्ध है, कि एक बार अकबर बादशाह के बुलाने पर उन्हें फतहपुर सीकरी जाना पड़ा, जहाँ उनका बड़ा आदर हुआ। पर अन्त तक उन्हें इसका खेद रहा, जिसे व्यक्त करते हुए उन्होंने लिखा—'संतन कशा सीकरी सो काम ? आबत जात पनहियां दूटी, बिसरि गयो हरिनाम ।'

## मधु-कलश

(१)

अधम लोग विद्वानों के भय से शुक नहीं कर पाते मध्यम लोग विघ्न आने पर पीछे को हट जाने लेकिन उत्तम लोग हमेशा विघ्नो को टुकरा कर पूरा करते काम कर्मी भी पीठ नहीं दिसलाते

(२)

सब दुविधाएं मिट जाती हैं सब संकट कट जाते बरकर जिन्दगी हो जाती है यूं ही हंसते गाते मधुर बोलने वाले को तो इस दुनिया के अन्दर अपने तो क्या बेगाने तक बढ़ कर गले लगाते

(३)

तुम इसकी गरिमा को समझो गौरव को स्वीकारो जो कुछ है धनमोल साथियों सोचो और विचारो मेरी वाणी का मतलब है दुर्ग दुनियां वालों जब चाहो तब इसके अन्दर अपना रूप निहारो

(४)

जिसकी अवनति से डिग जाता जग का धर्माचार उन्नत है जिसकी उन्नति से विश्व धर्म-न्यायार जिस से सुखद प्रेरणा सब को सदा धर्म की मिलती उस भारत को देना प्रसुवर आभा अपरम्पार (कमराः)

एडिटर इनचार्ज पंजाब केसरी-विजय निर्वाच

ही महात्मा कैबट ने अपनी धर्म-पत्नी से कहा—'यदि हमारे यहां रहते हुए राजा को पाप लगता है, तो उठाओ चटाई, यहां से चलो। राजा ने कई बार उन्हें फिर भी कहलवाया। पर कैबट ने उत्तर दिया, 'दम यही आप से मांगते हैं, कि आप इसी समय यहां से चले जाइये।'

मुद्राराक्षस में जब पाटलिपुत्र का एक विद्यार्थी दूसरे विद्यार्थी से आचार्य चाणक्य का घर पूछता है, तो वह तुरन्त उत्तर देता है—'उपल शकलमेवद भेदकं

गोमयानाम, बहुभिरुपहतानां बाह्यां स्तुपमेवद ।

शरयामपि समिद्धिः

शुष्यमायाभिराभि,

विनामत पटलान्त इदयते

जीर्णं कुक्षम् ॥

ऐसे ये हमारे सत्ताचारी मंत्री।

उनकी तुलना कीजिये, तनिक आज़

के शासकों से। आकारा-पाताल

का अन्तर है। आर्यसमाज के

प्रसिद्ध कवि स्व० नाभूराम शंकर

ने उन पर क्या ही फवली कही

है—'कितने ही राजकर्मचारी,

जिनके घर बाग है हमारी। वेतन

भरपूर पा रहे हैं, लिख पर भी

पूँख खा रहे हैं। (कमराः)

★ जो माषीन प्राण्य प्रन्व

आदि अथि मुनि कृत सत्पात्रं पुस्तक

है कभी को पुराय, इतिहास, कल्प

गाथा और नारायणी कहते हैं।

सम्पादक—

# आर्य जगत

वर्ष २६ | रविवार २०२३, ८ मई १९२६ | अंक १९

## हमारी आर्य कब खुलेंगी

विदेशी सत्ता के शासकों ने तो आपना साम्राज्य स्थापित किये रखने के लिए भारतीय इतिहास में बहू गड़बड़ की तथा स्कूलों वा कलेजों में ऐसा इतिहास लिखवा कर पढ़ाना प्रारम्भ किया—कि भारतीय विचारधारा को विगाड़ करके रख दिया। भारत के मूल निवासी आदिवासी थे, द्रविड़, काल आदि थे। आर्य बाहर से आये। दोनों में संग्राम हुआ। आर्य लोग शान्ति बढ़ते गये। आर्य लोगों के खान-पान में मांस का यहाँ तक कि गोमांस तक का खूना प्रयोग होता था विचारों पर वैलों का मांस पकाया जाता था। शराब भी खुले रूप से पी जाती थी। भारतीय ऋषि मुनि भी गोमांस का पयोग करते थे। आज भी इतिहास में ये बातें पढ़ई जाती हैं। भारतीय इतिहासकारों ने भी यही पद्धत का चरमा लगा कर भारतीय संस्कृति को उड़ी रूप में देखा, सोचा, माना, जाना व लिखा भी। उनक मन और मांसक पर भी पश्चिमी विचारधारा काक बैठ गई। यहाँ तक कि स्वामीय प्रथान मन्त्री भी प० नेहरू जी ने भी आपनी (डिफेंसरी) आष इतिहास नामक पुस्तक में वेद के बारे में, गोमांस खाने तथा रामायण, महाभारत के बारे में जो कुछ लिखा है—उसे पढ़कर महान् दुःख होता है। सभ उसा प्रवाह में बह गये। उसी सारणों पर चल पड़े। पश्चिमी लोगों का अन्धानुकरण किया गया। भारत का कितना दुःभाग्य है। आज भी भारतीय शिक्षा-संस्थाओं में बह

इतिहास के रूप में पढ़ाकर राष्ट्रीय जीवन का नेशा गक किया जाता है। सारे मौन है। आर्य यह है कि इन लोगों के दिमाग पर अंग्रेज राज्य कर रहा है। आर्य पश्चिम की, बायो पश्चिम की तथा मन भी पश्चिम का है। मैंकाले का खन साकार हो गया है। इसका प्रभाव लेवे।

अभी-अभी राजधानी देहली में महाधीर जवन्ती का जैन समा-रोह था। उसमें केन्द्रीय मन्त्री आ जगजीवनराम जी को भी निमन्त्रित किया गया। सार्वदेशिक आष अतिथि सभा देहली क मन्त्री प० रामगोपाल जी शाल वाले भी निमन्त्रित थे। आपने प्रभावशाली भाषण में भारतीय आदिवासी पश्चिम के भारतीय आदिवासी पर बंदक विचारधारा प० ट करते हुए उन्हींके बहा कि आज तो मांसाहार आगे से भी अधिक होता जा रहा है। गोहत्या जारी है। बापेंस सरकार को महातमा गांधी का आदर्श सामने रखना चाहिए। इस पर थो जगजीवनराम जी ने प्रश्न प्रश्न में कहा कि मांस खाना आदि काल से चला आ रहा है। भारत के ऋषि मुनि भी गोमांस खाते थे.....

आदीवासी ! आर्य लोको। और उरा सोचो ! आप कहाँ लड़े हो। भारत सरकार के मन्त्री के विचार पढ़ो और सुनो। इन लोगों का दिमाग किस प्रकार से काम कर रहा है। भारतीय संस्कृति का इनके विचार में क्या पुरातन रूप है ? बह बात प्रत्यक्ष ही जाता है। सार्वदेशिक सभा के मन्त्री जी ने

निर्भीकल से दुई बातों का बहा उत्तर दिया। बह तो यथाई के पात्र है। हम यह कहना चाहते हैं कि मूल में विदेशी सत्ता जो जान बूझकर भूल पेंदा कर गई। -सी का आज विपटन के रूप में परिणाम सामने आता है। जब तक इस भूल का पबन्प नहीं किया जाता, तब तक पलो को पानी देना बेकार है। स्वामी दयानन्द पहला महा-पुरुष था, जिसने इस बाहिष्टाल बात के बिहद आपनी लेखनी उठा कर चोर प्रतिवाद किया। आर्य समाज का कर्तव्य है कि इन विचारों का प्रतिकार करने में जोर से काम करें। आज हमारे परिवारों के बच्चे भी स्कूलों में आपने स्कूलों क इतहास में यह बातें पढ़ते, याद करते तथा परीक्षा में लिखते हैं। यही विचार बालपन में सख कर पकड़ हो जाते हैं। अपने लोग भी इधी धारा में बह रहे हैं। आर्यों ! आर्य लोको। इन विपैले विचारों से भरे इतिहास को बदलने के लिए संगठित आवाज उठाओ। यह विष है जो विचारों के रूप में सभ को पिलाया जाता है। राजनीतिक लोगों को तो समय नहीं है। संस्थाओं के सजनों की अज्ञा नहीं परिवारों को आकार नहीं तथा साधारण जनता को आबधयकता नहीं तो फट कवा होगा ?

### केन्द्र की विशेषता

बूच चाहे कितना महान हो, उसे मूलरूपी केन्द्र से रस मिलता रहता है। यदि वह मूल निर्वल हो जाये तो सारा हराभरा बूच सुख जाता है। राष्ट्र का केन्द्र थो यदि कमजोर हो जाये तो महान देश भी नाना टुकड़ों में बह जाता है। भारत की पराधीनता का सबहा बहा यही कारण था कि उसका केन्द्र निर्वल हो गया था। धम

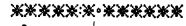
श्यानों की भी यही अवस्था होती है। आर्यसमाजें आपने-आपने स्थान पर बहा भारी काम करती हैं। किन्तु इन समाजों के मनोरम मनके सभा रूपी केन्द्रीय सूत्र में परिरोये होते हैं। यही सूत्र उनको परस्पर जोड़े रखता है। सूत्र क टूटने पर मनके बिखर जाते हैं। माला समाप्त हो जाती है शकन जाती रहती है।

आर्य प्रादेशिक सभा की स्थापना उस संवेगो युग-पुरुष महाराम हराराज जी ने की था। यह केन्द्र था जिसक द्वारा सारे समाजों के रस मिलता रहा। शोक इ कि अब यह केन्द्र निर्वल होता जा रहा है। इससे सम्बन्धित समाजों के विशाल भवनों को देखे समाजों द्वारा चलाई जा रही संस्थाओं को देखें, बच्चे-बच्चे शास्त्र संस्थानों को देखें। उन पर हाने वाले लाल चुरोड़ों क ज्वय को देखें। इधर सभा रूपी केन्द्र क भवन, तथा प्रचार का आर्थिक अवस्था को देखें तो क्लेशा मुंह को आता है। तबना लता लिपटी के बह देते हैं कि सभा रूपी माला की दशा चिन्तानक है, दुर्वल है—और इस के पुत्र-पुत्रियां मौन मेलें में सल है। देवता हराराज क इतने महान् भवन है किन्तु आर्य प्रादेशिक सभा क महाराम हराराज भवन बनान क लिए किशों को भी विचार नहीं। समाजों माता के पुत्र पुत्रियों के पास सम्पाय के अष्टहा भरे पड़े हैं पर इस माता के पास वेद प्रचार भी चार पैसे भी शायद नहीं। सभा के इने-गने मान्य अधिकांशों को चिन्ता है या प्रचार क वर्ग-निष्ठा पात्र ले कर स्थान-स्थान पर भट-कता रहता है या कुछ उदार समाज वे सज्जन ध्यान रखते हैं। सभा रूपी केन्द्र कमजोर न होने देना। सभा आमा है। समाजें (शेष पृष्ठ ४ पर)

महात्मा हंसराज जी के जन्म-स्थान बज्रबाड़ा जिला हीरवारपुर में उनके जयन्ती समारोह पर बोलते हुए महात्मा जी के अन्य भक्त पं० मस्तान चन्द जी ने कहा कि मैंने स्वर्गीय देवता के साथ २५ वर्ष काम किया है। उनके गुणों का गान कैसे करूँ? वह सचमुच गुणों की खान थे। वह सच्चे धर्मों में मुग्न थे, स्वयं प्रह्व थे, आडिग चहान थे। हंसराज का बड़े से बड़ा प्रलोभन और अत्याज विपत्ति भी उस महात्मा के मन को तर्क ही विचारित नहीं कर सकती थी वह धर्म प्रचार में जब जाते थे तब मार्ग में भूल लगने पर सन्न घोसकर पी लीते थे। आज ऐसे नेता कहाँ हैं? बाहर ही नहीं दिखते। मैं अपने जीवन में प्यारे से प्यारे सम्बन्धी को तो भूल सकता हूँ किन्तु महात्मा जी को वदपि नहीं भूल सकता। मुझे तो स्वप्न में भी महात्मा जी दिखाई देते हैं। वतें करते और चतें पूछते हैं।

विश्विपल रामदास जी ने कहा कि आज के दिन इस नगरी में उस चालक ने जन्म लिया, जिस से इस बज्रबाड़ा की शोभा हो गई। उनको शालपत्र में तपस्या करनी पड़ी। यही तप उनको कुन्दन बना गया। वह तो जन्म से ही महात्मा थे। उंचे लोगों में प्रारम्भ में ही विशेष चीज होती है। आश्चर्यकरता केवल पदों उठाने की हवा काली है। वह दिव्य गुण प्रकट हो जाते हैं। कूल में और भी विचारों थे पर किद्विचयन डेड-मास्टर को उत्तर देने वाला हंसराज ही था। विपत्तियों में प्रायः मनुष्य गिर जाते हैं, पर आदर्श पुरुष नहीं गिरता। महात्मा जी आदर्श पुरुष थे। उनका जीवन विनाट स्वरूप था। आचार्य भद्रसेन जी ने वेदना भरे भाव प्रकट करते हुए कहा कि प्रानता का समाज पर इतना विश्वास था कि और संस्थाएँ ता फेल हो सकती हैं पर आर्यसमाज का संस्था कभी

## बज्रबाड़ा का समारोह— तपोनिधि महात्मा हंसराज जी



फेल नहीं हो सकती। महात्मा जी आठवें नियम के साक्षात् प्रतीक थे। सर्वेश्वर यज्ञ किया। भारतीय संस्कृति के सच्चे उपासक थे। धर्म शिक्षा स्वयं पढ़ाते थे। मैं बड़े दुःख भरे दिल से कहता हूँ कि हमने दूसरे नगरों में तो महात्मा हंसराज जी के बड़े-बड़े स्मारक रखे कर दिये। उनका जन्म-स्थान बज्रबाड़ा वज्र रह रहा है। यहाँ पर उनका उचित स्मारक बनाना होगा। बज्रबाड़ा को बसाना होगा। आज बाहर से कितने लोग आए हैं? विचारो? ऐसी व्यवस्था रही जो बोलने वालों के साथ हमें सुनने वाले भी बाहर से ही साथ लाते होंगे।

श्री संसारचन्द जी एडवोकेट ने कहा कि सागर में प्रकाश स्तम्भ जहाजों की मार्ग दिखलाते हैं। महा-पुरुष भी प्रकाश के मीनार होते हैं। महात्मा जी चमकते मीनार थे। दोनों भाई ही आदर्श थे जीवन में आकर्षण था। कितने युवक बनाकर समाज को दिए। सत्य, ध्याय व सेवा का मार्ग उनका मार्ग था परिष्ठत चन्द्रसेन जी आर्य प्रादेशिक समा ने कहा कि महात्मा जी सच्चे नेता थे। हर सम्प्रदाय का व्यक्तित्व उनको सादर निमन्त्रित-रता व सम्मान करता था शिक्षा की दृष्टि से महान् थे। सा। भय धनको है। वेद प्रचार के लिए आर्य प्रादेशिक समा स्थापित की। हूँ इस और विशेष ध्यान देना है श्री दवानन्द आर्य एम० ए० ने कहा कि आज आर्य समाज के पास सब कुछ है। किन्तु युवकों का निर्माण करने वाला महात्मा हंसराज जी जैसा देवता नहीं है। वज्रबाड़ा समाज में आकर हब सत्संग लगाते हैं। श्री जगदीश चन्द

जी भला मन-प्रो समाज आर्य सजजन बड़ा प्रयत्न करते हैं। किन्तु मन्दिर के लिए अभी तक दूरियाँ भी नहीं हैं। यह समाज उस तपो-धन की स्थापित समाज है। इसकी उन्नति का भी ध्यान रखना है। सारे हूँ सब वयोग दें।

१० त्रिलोक चन्द्र शास्त्री ने भी अपने विचार रखे। १० इन्द्रजित जी उदियाल एम० ए० ने शानदार कविता पाठ किया। पं० ज्ञानचन्द जी भजनोपदेशक के मोटे भजनों के बाद श्री पं० रामानन्द जी शास्त्री भाषावति ने अपना प्रभावशाली प्रवचन दिया है कि—

महापुरुष की पहिचान संपत्ति और विपत्ति में होती है। दोनों में एक रूप रहना महात्मा की परिभाषा है। महात्मा हंसराज सदा अविचल रहे। वह सच्चे धर्मों में कर्म योगी थे। जो जीवन को कर्म में लगाये रखता है और उसी में मग्न रहता है। वह महात्मा कहाया है। कर्मयोग ही उनका सब से बड़ा योग होता है। महात्मा लोग टट्ट संकल्प होते हैं। अपने सिद्धांत में वे अज से भी कठोर तथा जन-सेवा में मूल तसे भी कोनल होते हैं। तप के समय तप तथा स्वाम्य के समय त्याग करते रहते हैं। यही उनका आदर्श होता है। महात्मा हंसराज जी के जीवन में किवा-त्सिक त्याग एवं तप था। उनके जीवन से कितने जीवन बन गये। आज जीवन तो बहुत है पर उन के निर्माण करने वाले विरले ही हैं। आज के इस महान पर्व पर बैठ कर हम सब प्रवृक्ष करे कि महात्मा हंसराज के समान अपने जीवन में विशेष कार्यप चुन कर उस पर चलना आरम्भ कर दें।

द्विती कल्याण होगा। इस प्रकार समारोह समाप्त हुआ। सब ने जोर दिया कि आगेले वर्ष इसे जेले के रूप में मनाया जाए।

## गुडगावां में महात्मा हंसराज दिवस

२४-४-६६ को आर्यसमाज मन्दिर मातल टाउन गुडगावां में महात्मा हंसराज स्मृति दिवस बड़े समारोह से मनाया गया। गुडगावां की समस्त आर्य संस्थाओं ने भाग लिया पं० हरिदत्त जी पं० नन्दलाल जी के भजन और महाशय कृष्ण चन्द जी प्रधान आर्य प्रादेशिक उपसभा देहली आदि सज्जनों ने महात्मा जी के जीवन पर प्रकाश डाला।

## कुरुक्षेत्र में सूर्यग्रहण का मेला

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि समा की ओर से अण्डाला जिले के कडरुश की अमरसिंह जी सूर्य ग्रहण मेला पर प्रबन्ध के लिए नियुक्त किए गए हैं, इस अवसर पर निवास, भोजन पचार आदि का प्रबन्ध समा की ओर से सुचारु रूप से किया जा रहा है। समा का यह कैम्प १५ से २० तक रहेगा। जिसमें धर्म प्रचार के अतिरिक्त मनोहर भजनों का भी प्रबन्ध रहेगा।

## केन्द्र की विशेषता

(पृष्ठ ३ का लेख)

व संस्थाएँ इस का घटक व शरीर है। शरीर को भोजन दिया जाये पर आत्मा व मन को मूला मागा जाए तो शरीर का क्या बनेगा? हम स्वर्गीय महात्मा हंसराज जी के भक्तों, प्रेमियों तथा अदालुओं से नम्र निवेदन करते हैं कि वे समा रूपी केन्द्र मूल का कभी से ध्यान रखना प्रारम्भ कर दें। केन्द्र को केन्द्र बना दें। कोई सुनना—६०

## विचार-तरङ्ग (६)

(श्री राम मूर्ति जी कालिया एम० ए० नई दिल्ली)



हवी और गभी दोनों ही जीवन के ऋज हैं। संसार के बहुधा लोग आप के साथ हंसना-खेलना पसंद कर लगे किन्तु आप का रोना-धोना सुनने के लिये न किसी की कामना है, न ही किसी के पास व्यर्थ का समय। सुल में मिल बैठना सब चाहेंगे, दुःख भक्ति अकेला भोग ले, संसार शब्द कृद-कृद ऐसा ही चाहता है। आप हंस कर, मुस्कुरा कर किसी से बात करें तो दो चार षष्ठा सुल-दुल की बात कोई कर लेना चाहेगा किन्तु उसो हा आप ने अपना मुह असोसा कि किसी ने किनारा किया। आखिर हमें समाज में तो रहना ही है, अकेले तो कोई बड़ा नहीं बनता और ईश्वर किसी को पकड़ोपन दे भी न। तो रोने से क्या लाभ। 'दिगी' का नाम जित्ना दिल्ली ही तो है। अतः मुस्काना सीख लो, बह-बहाना सीखो और सीखो गुन-गुनाना। वह दिल तो सुर्पा है जो कभी खिलकाया नहीं। ठीक ही तो कहा है विद्वान लेखक ने—  
**'It is a poor heart that never rejoices.'**

सुशी हो अथवा गर्मी दोनों एकसाँ हैं। दोनों का जीवन पर अविचार है। दोनों झाली हैं और चली जाती हैं। दोनों में कोई भी स्थायी नहीं है। यदि आज बसंत है तो कल प्रमद। आज सुशी है कल गभी हो सकती है। रात्रि के बाद पी फटी है और बाद रवि अपनी रविचयों से जग में पुनः मित कृटक देना है। और जहाँ बजते हैं नक्कारे वहाँ मातम भी होते हैं। अतः वह खिलखिला नो चलता ही रहेगा किन्तु जो बात अपनेनाये योग्य है वह ही हर हालत में मुस्कुराना सीखना।

संसार यदि दुःख सुनने का हाभी नहीं तो मैं क्यों सुनाऊँ। ईश्वर से मैं भी यही मांगू कि दुःख अपनेला मेले' और संसार जो हँवते ही देखने का आदा है उसके सामने हँवता रहूँ।

हंसना स्वाभाव्य वा प्रतीक है यह निश्चिन्त सत्य है। दुःख और गर्मी में सुमग्नाना यह माहस और शौच का लक्षण है। संघर्ष और आभाओं में भी सुमग्नाना सम्भव का प्रतीक है। अन्तर्गत ईश्वर की भक्ति है। जो सम्नोषा नहीं है वह अस्ति भी नहीं है। ईश्वर जो विकासक है अर्थात् हमारे भूत वर्तमान और भविष्य को जानना है वह जिस स्थिति में हमें रखे, उस का वह न्याय ही है इस प्रकार समझने वाला व्यक्ति ही सम्नोषा कहा जाता है। ऐसा सम्नोषा जीव ही मस्त रहता है, मुस्कुराना है और निर्भीकता से सं संसार में विचरण करता है। ऐसे ही भक्त पर उस का भगवान भी प्रसन्न रहता है। उद् के एक कवि ने ठीक ही फरमाया है—  
**'सुशी हो, गम हो, चाहे कृद हो, पर खुश रहिये,'**  
जो खुश रहते हैं खुश उन पर हमेशा है खुदा उनका।"

हां यदि न हंसने की कसम ही किसी ने खाई हो तो उस पर दया करनी चाहिए। और न हंसने के लिए भी बातें हैं जहाँ मैं प्रार्थना करूँगा कि कोई न हंसे। मेरे कहने का भाव है किसी की मूर्खता पर, किसी की विचरता पर और वृष्टियों पर। इन के अति अन्त में हंसने की आवश्यकता है। यदि हम हमेशा प्रसन्न सुल हैं तो ईश्वरिक बरदान समझें अथवा अविचार।

## विचार तरंग [८]

(ले०—श्री राममूर्ति जी कालिया एम० ए० नई दिल्ली)



(मार्ग से आगे)  
परहित की भावना से अहित-प्रोत है जिसका मन, उद्वेग की प्राप्ति हेतु जिसने मार्ग प्रशस्त कर लिया हो एवं हृदय से जिसका वृद्ध आगे बढ़ रहा है ऐसे शूरी और हृदय की मार्ग में छोटी-मोटी बटिनाइयाँ तो विद्र के समुल मचत्र हैं। जिवित होकर नत मतक ही वे स्वयं मार्ग से हट जाती हैं। फिर वह प्रवल शौच धारो संकटों और अथवाओं का आह्वान करता है। सुखों की तुलना में संकटों में सुल का अनुभव करता है। ऐसे ही अलमस्त व्यक्ति पुकार उठते हैं, 'वे लरा किसमत हैं जिन पर गर्वो व्याप आती है।' कबारदास जी ने तो

सुल को भोसा और दुल को सगहा। इसी को अमिष्यकन करते हुए उन्होंने लिखा—  
**'सिता परे उम सुल पर,**  
नाम हदय ते जाये,  
बलिहारी उस दुल के,  
पल-पल नाम रटाप।  
दुल पर बलिहारी जाने बाबों के लिये वह दुःख ही सुलकां हो जाता है। मार्ग की बटिनाइयाँ ही आसार्थवां बन जाती हैं, सुल ही फुल हो जाते हैं। जीवन में कोई ऐसी बटिनाई एवं शत्रु नहीं जिस का सामना न किया जा सके और पराजित न कर सकें। किन्तु परहित की भावना लेकर, हृद संस्करण करके मार्ग पर पग धरें तो सही।

## आर्य समाज संवदा पूर्व निमाड़ (म. प्र.)

आर्य समाज लडवा के अत-गत वलितोद्वार समिति की आर से दि०२२-४-६६ को पाम कुंड्या में बलही जाति सुधार सभा में १२२ प्राम की पंच समिालित हुई थी जिस में आर्यसमाज के स्थायी

प्रचारक सुलराम आर्य सिद्धान्त शास्त्री ने (वैदिक वरुं व्यवस्था मानव जीवन का उद्देश्य, जातियों का निर्माण, कुआकुत) आदि विषय पर वैदिक सिद्धान्तों का आधार पर ओजस्वी भाषण दिया। उपरोक्त भाषण का प्रामोद्य जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

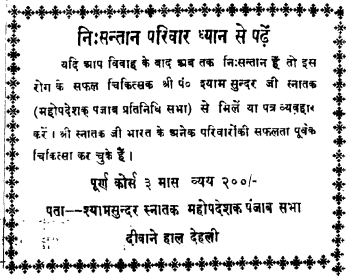
## निःसन्तान परिवार ध्यान से पढ़ें

यदि आप विवाह के बाद अब तक निःसन्तान हैं तो इस रोग के सफल चिकित्सक श्री पं० दयाम सुन्दर जी स्नातक (महोपदेशक पंजाब प्रतिनिधि सभा) से मिलें या पत्र व्यवहार करें। श्री स्नातक जी भारत के अनेक परिवारों की सफलता पूर्वक चिकित्सा कर चुके हैं।

पूर्ण कोर्स ३ मास व्यय २००/-

पता—रथामसुन्दर स्नातक महोपदेशक पंजाब सभा

दीवाने हाल देहली



# चेतावनी

## आर्यों का मीट मसाला

श्री मयुरा दास जी आर्य समाज नवकोट, अमृतसर



यू तो आर्य समाज के नाम पर, आर्य के नाम पर, स्वामी दयानन्द के नाम पर अनेक दुकानें अनेक बाजें, और अनेक आर्य कार्य हो रहे हैं, परन्तु २-४-६६ को मिलाए वर्द के सँडे पडीशन में और हो सकता है हिन्दी मिलाए व आर्य समाज वरगें में भी हो एक विज्ञान 'मीट मसाला' आर्यों को दृष्टो २२३६ तिलक बाबाए स्वामी बाबलो देहलो—६ का छपा है जिस में लिखा है कि उनका मसाला खुद और तरीदार हर बरकर के मीट (मांस) को अति स्वादु बनाता है और इस नाम के लिये अद्वितीय बरगें है।

मैंने जब यह इस्तर पढ़ा तो विचार आया कि आर्य समाज का प्रचार तो लगभग एक शताब्दी से मान के न खाने की हो रहा है कई डेक छपे स्वामी दयानन्द जी ने इस का घोर खरडन किया, उनकी पुस्तकों में अनेक स्थानों पर इस के खाने का निषेध किया गया है उनके बाद भी आज तक आर्य समाज ने सामूहिक रूप में इस का खरडन किया है और कर रहा है। परन्तु अब दुकान का नाम 'आर्यों की दृष्टो' रख कर और मांस खाने का प्रचार करना यह तो बहुत ही अनुचित बात है, आर्य शब्द का अरथमान है, वहाँ तक मेरा विचार है यह दुकान महाशियां दी दृष्टो का ही हिस्सा है इनकी दुकान पहले स्वालकोट में था, पाकिस्तान बनने पर अब देहली में कारोबार कर रहे हैं और प्रवीन होता है अब उन्होंने दो दुकानें कर ली है, स्वालकोट में क्या वहाँ आर्य भी वह भिर्च, मसाला, बेघो, जल जौरा आदि बनाते रहे और उन के इतिहास भी निकाले रहे परन्तु अब आर्य शब्द के नाम पर यदि मांस खाने का प्रचार किया जावे ता मेरे

विचार में आर्य समाजों को आर्य तथाको को विशेष कर आर्य सांबदेशिक समा को तो उन्हें अवरय हो रोचना चाहिए। हो सकता है कि कुछ आर्य समाजी मांस खाते भी हो परन्तु आर्य समाज को खाने की आज्ञा नहीं देता हां घोर विरोध करता है। इस कारण आर्य नाम क साथ मांस खाने का प्रचार तो बिल्कुल बन्द होना चाहिए। एटाएन अनेक दिए जा सकते हैं, यहाँ कथल एक ही देता है कि तिलों में सिमेट तम्बाकू पीना बजित है, विद्वानों रूप में परन्तु कई सिल तम्बाकू सिमेट पीते हैं परन्तु आज तक जिन्ही को साइस नदी दुष्मा कि सिलों के नाम पर गुरु नानक के नाम पर या गुरु गोविन्दसिंह जी के नाम पर सिमेट या तम्बाकू का प्रचार पर सके। तिल क्या किसा दूसरे मतवाले को भी खाईस नहीं हुआ कि इस प्रकार का कोई प्रचार करे। परन्तु यहाँ ता कार्य लोग ही आर्य नाम को लेकर विशेष बस्तुओं का प्रचार कर रहे हैं और आर्य समाए तथा आर्य समाजें चुप साधे हर हैं। उहाँ तक मेरा विचार है आर्यों दा दृष्टो के मांसिक करोल बाग या किसी दूसरी देहली को आर्य समाज के समासद भी होंगे, करोल बाग एक जीती जागती समाज है उन का बरन्थ है कि वह उनको समझाए और इस प्रचार को बन्द करे। यह आर्यम है यदि इसे रोका न गया तो इसके पड़वाल और भी कई प्रकार के अनुचित और अविदिक प्रचार लोग कर सकेंगे। इस कारण चेतावनी दी है इस पर आचार्या का नाम समाजों की समाजों का काम है जो कि अवरय होना चाहिए अन्यथा इस का परिणाम अच्छा नहीं होगा।

# हिस्सार के साम्प्रदायिक हिन्दी पत्र आनन्द भूमि के आरोप का खरडन

(ले०—श्री सुरादिलाल जो शास्त्री प्रधान आर्य समाज हिस्सार)



स्थानीय साम्प्रदायिक पत्र 'आनन्द भूमि' हिस्सार ने अपने दिनांक ११ मार्च १९६६ के पत्र में आर्य समाज और उसकी संस्थाओं को लालित और हानि पहुँचाने की मिश्या एवं आचार्य हीन झूठी और असफल चेष्टा की। आर्य समाज हिस्सार की समस्त संस्थाएँ दोनों प्राइमरी स्कूल, हाई स्कूल, दयानन्द प्रज्ञा महाविद्यालय, आर्य कन्या महाविद्यालय, समस्त पुस्तकालयें लुटे रहे। पढ़ाई होती रही और पीछाएँ भी चलती रहीं।

डिगरी कालिज प्रबन्धक वर्ग एवं आचार्य महोदय को विवश होकर बन्द करना पड़ा। क्योंकि दूसरे कालिज के लड़के वहाँ आ गये।

उक्त समाचार पत्र ने अपने व्यक्तिगत पक्षपात वा भ्रष्टान किंवा है क्योंकि उस ने किसी और संस्था का नाम नहीं लिखा और नाही उस संस्था क लड़कों का बर्णन किया है कि जिन्हें जेल भी भेजा गया।

आर्य समाज जैसी गम्भीर एवं विचारशील संस्था जो जिसने स्वतन्त्रता प्राप्त करने और स्थिर रखने के लिए बीनियों बलिदानों और अरुण श्रिये इनको वह दृष्ट पाने वाले मजबूत लालित और त को चुपचात करते हैं। आर्यों समाजों की संस्थाएँ विना किसी भेद भाव क निर्वेद वर्ग को उच्च शिक्षा प्रदान करने के लिए अपने जन्मकाल से ही लगी हुई हैं। देश पर जब भी कभी काटनाई आई तो आर्य समाज उसका मुकाबला करता रहा है।

चीन और पाकिस्तान के आक्रमणों को असफल बनाने के लिए आर्य समाज और उसकी स्थानीय संस्थाओं ने हजारों रुपए खर्च करके देश के लिए समर्थन दिये। आज उसकी देश भक्ति की यह लोग जनता में प्रति उल्लेख

करने की असफल चेष्टा कर रहे हैं। इनको यह ज्ञान नहीं कि किसी वक्तो हुई संस्था पर आलग-आलग विचार रखने का अधिकार प्रत्येक मनुष्य को है। हां, उनके पत्रों के लिए गम्भीरता एवं विचार शीलता का मार्ग अपनाना अत्यावश्यक है। देश की सम्पत्ति को तोड़ फोड़ करना अथवा शारीरिक हानि आर्य समाज को स्वीकार नहीं आये वह इसको प्रूया की दृष्टि से देखा है।

समाचार पत्र के संवाहक महोदय से निवेदन है कि उनक चमके जो इन चाल से चल रहे हैं यह ना तो आर्य क लिये लाभदायक हैं और न जनता क लिये, हां, इनका हलवा मांडा अक्षय्य बन जाता है।

## आल इंडिया दयानन्द मालवेशन मिशन होशियारपुर के समाचार

१. आर्यको यह अनुकर अति दुर्घ होगा कि जो देववत शर्मा दयानन्द प्रज्ञा महाविद्यालय के एक स्नातक को नियुक्त आचार्य प्राण में वैदिक धर्म के प्रचारार्थ की है और उनको वर्ग मई १९६६ में कार्यार्थ भेजा जा रहा है। इनके आतिथिक आवास म मिशन के एक अनवरक कार्यकर्ता श्री मोहनलाल महादेव आर्य दृष्टो ही वैदिक धर्म का प्रचार तथा शुद्धि का कार्य कर रहे हैं।

२. लाला नानकचन्द कसर राम नारंग चेरी टेबल टूट चुपल जिला गोरखपुर (यू.पी.) ने आल इंडिया दयानन्द मालवेशन मिशन होशियारपुर के कार्य की सराहना करते हुए मिशन का संरक्षण (वेतन) बनाना स्वीकार कर लिया है जिस के फलस्वरूप उन्होंने अपनी पहली किस्त पाँच सौ रुपये की भेज दी है।

—रामदास, प्रधान मिशन

# क्या नशा ही हमारी प्रेरणा है ?

(ले०—श्री सुन्दरलाल जी वोहरा जोधपुर)

नोट—इस का पूर्व भाग ३ अप्रैल के अंक में पढ़ें ।



(गर्तक से आगे)

इस तरह की दलील देने वाले लोगों ने जुकाम का फल नबले के रूप में सुनाया है । इस पैशानी नशेबाजी के आचार पर ही आज अस्मत्त्व औषधों-वक्त्रेताओं, डाक्टरों व वैद्यों की रोजी बल रही है । अण्डे को बीरों से उंचा व वैश्व सिद्ध करने वाले लोगों ने जहाँ एक ओर प्रश्रयान से घृणा की तो वहाँ दूसरी ओर चांदी अथवा हथी दाँत से बनी डिब्बिया में सुपनी व जई को सहाल कर रखा । आज सुपनी व जई की सपुहार वही इच्छतदारी के साथ की जाती है । गैरिद्ध द्रव्य को मिटाने के लिये नूना मिश्रण हुए जई को रामभाण घोषित किया गया है । जिनके घूने के साथ जई बीड़ी खाने में चिन आती है वे जई को पान में मिला कर अस्मत्त्व स्वरूप करते हैं । ऐसे लोग जहाँ भी बैठेंगे, पान का पीक चुकेंगे, सुपनी को हवा में उड़ाएंगे और जई का पीक चुक-चुक कर आसपास की जगह को चिनीनी बना देंगे । लाचारी है ।

नरो की स्थिति में शरीर से उलकी क्षमता से अधिक कार्य किया जाता है, फलस्वरूप आँतों व स्नायु-मण्डल में खुरकी बढ़ जाती है । इस खुरकी के कारण ही शरीर चय व पनीमिवा जैसे रोगों का शिकार हो जाता है । हिस्टिरिया जैसा पाजी रोग भी शरीर में खुरकी बढ़ने के कारण ही होता है । शरीर में बिना खुरकी बढ़े चेंबर का होना ही असम्भव है । इस खुरकी के कारण ही जुकाम नबले में बढ़तने लगता है । आपको चर्खा लगाने वाले वे ही

लोग मिलेंगे जो जुकाम व नबले के रोगी हैं । नजला जब आँतों में उतर जाता है तो चरमा लगाना पड़ता है, जब आँतों की ओर बढ़ जाता है तो खजाब के लिये दौड़-भूप करनी पड़ती है । लेकिन हम इन रोगों का इलाज नशीली औषधियों के रूप में खोजते हैं । भला इन्द्रियों की इच्छाओं की पूर्ति करते हुए भी क्या कभी कस्वथ शरीर का इलाज किया जा सकता है ? परन्तु हम झिड़कते बतने के दौड़े की ओर भूल कर भी नहीं देखते—हम तो आन्धा-धुन्ध उस बतने में पानी भरना ही जानते हैं ।

नशाबन्दों का प्रचार मात्र ननक कह गया है ।

समस्त मदिरालयों पर ताला लगा दीजिए, देश में उपलब्ध समस्त प्रकार की तम्बाकू व उससे तैयार की गई बीड़ी व सिगरेट का स्टॉक जप्त कर लीजिए, देश में पहली चाय व काफी की समस्त पेटिटो व वैकटों को अरब सागर में डाल दीजिए, अफीम, गाँजा, व भांग को भुंसे की तरह जला दीजिए, हमारी युवक एक पलक कपकपे वृद्ध हो जायेंगे, अनेकों बूढ़ों को लकवा मार जायगा, अस्मत्त्व व बीड़ों की वकालत उलझ जायगी, धारा-प्रवाही मूक हो जायेंगे, सिंकाँले लेलक प्रेरणाहीन बन जायेंगे, अनेक समाचार पत्रों के संवाददाता व सम्पादकों के कलम टूट जायगी, अस्मत्त्व मोटर व रेल ब्राइवरों तथा पाइलटों को नींद का जापगी । सही अर्थ में आज हमारे शरीर के इन स्वयं

संवाकन न होकर हमारे शरीर लिखा हुआ नशा ही हमारे प्रेरणा

## अम्बाला जिला में यज्ञ व उत्सवों की घूम

श्री अमर सिंह जी की अध्यक्षता अम्बाला मण्डल की ओर से कन्नड़ माजरा जिला अम्बाला में ३० मार्च से १५ अप्रैल तक यज्ञ व उत्सव सम्पन्न हुआ ।

प्रादेशिक समा की ओर से श्री जगदीश चन्द्र जी शास्त्री की अध्यक्षता में यज्ञ सम्पन्न हुआ पश्चात अमरसिंह जी का उपदेश हुआ इस सम्पूर्ण कार्य क्रम में जनता ने ब्रह्मा व धर्म का परिचय देते हुए पूर्ण तथा सहयोग दिया । वल्ये के श्री वैजनाथ जी, श्री कदमीरी लाल जी आद मद्गानु-भाषों के पूर्ण सहयोग से यज्ञ, उत्सव निर्विघ्न समाप्त हुए । समाज की ओर से १२५/- चेद प्रचार व आर्य जगत को प्राप्त हुए ।

इसी प्रकार (कोट) जिला अम्बाला में भी ७ अप्रैल से १३ अप्रैल तक यज्ञ व उत्सव सम्पन्न हुआ । प्रचार व भवनों की घूम रही । १२५/-चेद प्रचार और आर्य जगत का चन्द्रा प्राप्त हुआ । इस सम्पूर्ण कार्य में नगर निवासियों ने विशेष कर श्री सुलेख चन्द जी श्री राम स्वरूप जी आदि सज्जनों ने पूर्ण सहयोग देकर इस कार्यक्रम को सफल बनाया ।

श्री अमर सिंह जी को दोनों मण्डलों भवनों से जनता को तृप्त करती रही ।

## आर्य समाज (किला)

### विक्रमपुरा जालन्धर

यह विशेष समा पंजाब सरकार की इस नीति का जोरदार विरोध करती है कि रंजाब के प्रमुख नगरों में शराब के नए ठेके काज लो—

नशा ही नींद लाता है, नशा हमको जगाता है । नरो में अस्मत्त्व इच्छा, नशा ही नींद लाता है ॥

लोले जाएं । यह समापन तब सरकार से यह भी मांग करती है कि शराब जैसी नशीली वस्तुओं पर प्राबन्धी लगाई जाए ।

आशा है कि सरकार देश के स्वतन्त्र नागरिकों के इस प्रस्ताव पर अवश्य विचार करेगी और हमारी मावनाओं का मान करेगी ।

मन्त्री आर्य समाज

## डी.ए.वी. हायर सैकण्डरी

### स्कूल दोलतपुर होशियारपुर

मिडल परीक्षा परिणाम गत-वर्ष की भांति इस वर्ष भी शानदार है । जो कि ६३ प्रतिशत है । प्राप्त के अन्त विद्यार्थियों के परीक्षा परिणामों के मुकाबला में, इस विद्यालय की सराहना साधारण जनता में हो रही है । इस सफलता का श्रेय विस्मयल महोदय श्री जगननाथ शास्त्री तथा जगह परिश्रमी अध्येक्षक वर्ग पर है ।

## सार्वभौम अर्य परिव्राजक

### मंथ खरखोदा (मेरठ)

'सर्व साधारण को विदित हो कि असीमानन्द सरस्वती नाम का कोई संस्थापी सार्वभौम आर्य परिव्राजक रूप में उपमंडल अथवा प्रचार भन्नी नहीं है । अतः इस नाम के व्यक्ति के मांगने पर किसी भी प्रकार की धन राशि संच के लिए कोई भी आर्यसमाज अथवा आर्य जन न दे ।

—स्वामी आत्मानन्द तीर्थ महामन्त्री

'यतोऽभ्युद्य-निःश्वस सिद्धिः स धर्मः'

यह कथादि मुनि के वैशेषिक दर्शन का बचन है । इस का अर्थ यह है कि जिन बातों के चारण करने से इस संसार में सुख प्राप्त हो सके और सुख को प्राप्ति हो तथा अन्त में मोक्ष होकर आनन्द की प्राप्ति हो उन्हे धर्म कहते हैं ।



### आर्य समाज विजवाड़ा

(जिला होशियारपुर)

महात्मा इंहराज जन्म-दिवस

सोत्साह पूर्वक मनाया गया

१६ अप्रैल १९६६ को विजवाड़ा

जिला होशियारपुर में म० इंहराज

जन्म दिवस समाज मण्डल में

भूमिधाम से सम्पन्न हुआ। १६ को

प्रातः सुबह ६ बजे से कार्यक्रम

प्रारम्भ हुआ। यह परबान् श्री

व. त्रिलोकचन्द्र जी शास्त्री जी.प.

का ध्या, भिक्षु प्रवचन हुआ।

कल्पवृक्ष विशाल जल्लय नगर

के बड़े-बड़े भागों से होता हुआ

समाज मण्डल में समाप्त हुआ।

इस विशाल अनुस में, श्री. व. बोहा० सं०

स्कूल, होशियारपुर श्री. भी. हार्द

स्कूल का बैठ गया ध्या वार दल

ध्या व समाज विजवाड़ा, व होशियारपुर

के नागरिकों में भाग

लिया। महात्मा इंहराज जी के

जय घोषों से आकाश गूँज उठा।

२॥ बड़े साधु ध्याम के अग्रवच

की व, रामानन्द जी अग्रवचना में

कावेवाई पारम्भ हुई। श्री वं.

त्रिलोकचन्द्र जी भी. प., श्री वं.

चन्द्रसेन जी, श्री ज्ञानचन्द्र जी,

प्रो० वासुदेव जी शास्त्री एम.ए.

एम. प्रो. एल. वं, दीनानाथ जी

श्री भस्मानचन्द्र जी वी.ए., श्री

संसार चन्द्र जी सुद, श्री प्रो. इन्द्र

दत्त जी जलियाल, श्री भस्सेन जी

दर्शनाचार्य, श्री वेदप्रकाश जी

पठनीय एवं मननीय साहित्य

वेद प्रथम ५/- गीतावार ७५

पैते, बालकमीर के पत्र १/- विचारम

संस्कार १/५० पैते, मेरी आठ

कर्म कहानियाँ ७५ पैते, लोक

७५ पैते, सहस्रशतके जीवन ५० पैते,

कर्म मीमांसा २/२५ पैते, संवि

नियमन क्यों और कैसे १५ पैते,

वैदिक व्याकरण भास्कर ६/-

व्यायाम योग्य पत्र ११/२० पैते,

साहित्य प्रचारक १/-

जयदेव ब्रह्मर्षि बड़ोदा-१

आर्य वीरदल, श्री... नन्द जी एम.ए. रिखसे रालर... अमनीक नेत्रकर पूर्ण सहयोग... २००) की धनराशि से सहा-

### आर्य पाठशाला शादीपुर जुलाना

यह पाठशाला श्री चंद्रगी राम जी अग्रज, तथा श्री रामचन्द्र जी नंदल के पुत्रवार्थ से दिनों दिन उन्नति के शिलर पर जा रही है। इस समय पाठशाला में ११४ छात्र

महात्मा इंहराज साहित्य विभाग के दो नवीन प्रकाशन

### संख्या पर व्याख्यान

(ले०-२६० महात्मा इंहराज जी)

यह पुस्तक आज से ४२ वर्ष पूर्व लाहौर में लिखी गई थी। इसका पहला प्रकाशन १ वर्ष में ही समाप्त हो गया था। उसके बाद अप्रकाशित रही। ४२ वर्ष बाद इसकी एक जीर्णोद्धार कापी ६० पं० की काठेज जालन्धर के ज्ञानप्रवराय पुस्तकालय से उपलब्ध हुई है। इसी पुस्तक को नवीन आवरण देकर इंहराज साहित्य विभाग ने पुनः प्रकाशित किया है। पुस्तक के आरम्भ में महात्मा इंहराज जी का तीन रंगों वाला फोटो बिलाली क्रांटे पेपर में छापकर संलग्न किया गया है। पुस्तक 18x22 के 16 Point पर छपी गई है। मूल्य केवल 1/- रुपया।

### महात्मा इंहराज Maker of the Modern Punjab

(ले०-प्रिंसिपल भीराम जी एम० ए०)

Director Institute of Public Administration UNA Punjab

इस पुस्तक का दूसरा प्रकाशन २००० की संख्या में प्रकाशित

हुआ है। पुस्तक 20x30 के बहिष्वा ५५५ पर छपी गई है।

लेखक महात्मा इंहराज जी के अग्रिम साथी होने के कारण उनका जीवन घटनाओं का ठेक २ वर्णन कर पाए है।

बिचारकथक बनाने में विभाग ने पर्याप्त धन खर्च किया है।

१७२ पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य 1-50 और बहिष्वा सजिल्द का 2-50

प्राणि स्थान—

महात्मा इंहराज साहित्य विभाग आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि समा निकट जिला कचहरी, जालन्धर

शिवली की ओर दिलाया है जिस से गरीब अनवा इस पत्रिक परार्थ से बंचित हो रही है तथा दूध से बनने वाली मिठाइयों पर कानून द्वारा निषेध का झा देने की प्रार्थना की है।

शिवली बडेरा  
मंशावी स्त्री समाज

### गुरुकुल वैदिक आश्रम वेदव्यास P. O. राज केला (उड़ीसा)

शुभवी म्हाणनद जी महाराज ने दो मास में ४२ स्थानों पर प्रचार किया। २० ईसाईयों को शुद्ध करके पुनः वैदिक धर्म में प्रविष्ट किया। शिवरात्री पूर्व बड़ी भूमिधाम से मनाया गया।

१२-२-६६ को अग्रज महिला विम इन्ध्या की शुद्धि करके उस का पाणि प्रहया संस्कार करण कुमार इंजीनीयरे के साथ सम्पन्न हुआ। कन्या का नाम ललितका राव रखा गया। दोनों दम्पती राउर केला में निवास कर रहे हैं।

### आर्य समाज सावुन बाजार लुधियाना

महात्मा इंहराज जन्म दिवस श्री धर्मपाल जी खन्ना एडवोकेट की प्रवानता में १७ अप्रैल को सम्पन्न हुआ। जिस में श्री इंहराज जी शमा, श्री रम्यबीर जी शास्त्री, श्री मेघराज भारद्वाज, स्वामी जयराम दास जी, प्रिंसिपल गांवा शर्मा और वेद प्रकाश जी एम. ए. के भाषण तथा कविताएं हुईं। महात्मा जी के जीवन पर तथा उनके गुणों पर प्रकाश डाला गया।

### आर्य जगत में विज्ञापन देकर लाभ उठाए

मुद्रक व प्रकाशक श्री कलेश्वरदास जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि समा जालन्धर द्वारा वार मिलापत्रोच, मिलापत्र रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत का साहज्य महात्मा इंहराज जन्म दिवस निकट कचहरी जालन्धर राह से प्रकाशित मासिक—आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि समा जालन्धर



दैनिकी सं. नं. २०५७

[आर्यभादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र]

Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ पैसे

वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६ अंक २०)

२ ज्येष्ठ २०२३ रविवार १४१- १। मई १९६६

(तार 'प्रादेशिक' जालन्धर)

## वेद सूक्तयः

### दूतौ यमस्य मानुगा

हे मनुष्य ! सावधान हो जा । इन यम के दूतों दूतों के मानुगा— मत पीछे चल इनके चल में मत हो जाना । यम के दो दूत कौन हैं ? मुख और पार, सना और पीना— रसना का स्वाद । सना-पीना जीवन के विट हैं न कि जीवन खाने पीने के लिए ।

### अग्निजीवपुरा इति

सावधान ! जग्ने जीवपुरा— पापों की दूत दुष्टी पर, इनके गारे चारों पर, जगना सनाम इन्द्रियों पर अग्निदेहि, अग्निदेह रज । इनकी जग्ने जग्ने मे रज । इनका स्वादी बन, दास न बनना । वे तेरे बने रहें, तु इनका न बनना । नहीं तो मुझे ये कही का नहीं रखें ।

### प्रत्यक् सेवस्य भेषजम्

हे मानव ! तू अपने जीवन को स्वस्थ रखने के लिए प्रत्येक भेषज-उत्पन्न पर, और तब तब शुद्ध सार्विक पदार्थ सेवन करना रूढ़ । वेरा आहार शुद्ध होना चाहिए । क्लिष्ट तथा सामान अन्न मत खा—

### पुनानो भुवनोपरि

यह परदेसपर सारे जगत् में रज रहते हैं । सबके ऊपर विपद्य रहते हैं । यह सबको पवित्र करने वाला है । उसी के जालीयों से सबको पवित्रता मिलती है । उसी की कृपा से सारे साध संसार निट जाते हैं । ब ब र् न के द दे

## वे दा सृ त

### राजा के कर्तव्य

अद्वास्मद् भवतु देव मोमामिन् यज्ञे मरुतो मृडना नः ।  
मानो विददभिभा मो अशस्तिर्मा नो विदद् वृजिता  
द्रोष्या या ॥

अर्थ—वेद वांड प्रथम सूक्त २० मन्त्र १  
अर्थ—हे देव-पोप-गजन ! हमारा धनु (अदारसूद्) स्त्रियों का मुख न पाने वाला (भवतु) होवे । (अस्तिम्) इस (यज्ञे) युद्ध रूपः राष्ट्रिय यज्ञ में (पशत) वीर सैनिक (मृडत) मुख शक्ति देवें (न) हम को । (या) मन (नः) हमें (विदद्) प्राप्त हो (अभिभाः) हम से मुकाबिला करने वाला धनु तथा (मा उ) मत जान सके (प्रवदित) नो ब बिचार का बंदो (मा नः) हमें न (विदद्) आ सके (वृजिता) पापी तथा (द्रोष्या या) ब्रितना भी द्रोंपी हो । कोई भी हमें न जान सके व न पा सके ।

भाव—राजा तथा राष्ट्र के शासक का यह कर्तव्य ! कि उसकी सारी प्रजा चारों ओर से सुरक्षित हो । किसी प्रकार का भी कहीं से भय, आतंक न हो । संग्राम एव राष्ट्र रक्षा भी एक यज्ञ है । ब्रितने भी वीर सैनिक हैं, वे पशु देशवासियों को सब ओर से सुरक्षित रखें । किसी दिशा से भी धनु को हथपटा करने का साहस न हो सके । मुकाबिला करने वाला, नीच कर्म वाला और पापी, द्वेषी धनु हम को न जान सके तथा न प्राप्त कर सके । राजा का इतना सुन्दर प्रबन्ध हो कि धनु को किसी बात का भी पता ही न लग सके ।—सं०

## ऋषि दर्शन

### अतिष्ठा मभा

मभा यह हीरो है जो अतिष्ठा हो अर्थात् निजम बड़-बड़े विद्वान् राज मभा के महद्व पने-पने वीर बने जो कि राजनीति के विद्वान् हैं । राज वर्ग का जिन्होंने सम्भीतना में अध्ययन किया हुआ हो । ऐसे विद्वान् ही राज मभा की घोषा होने हैं । ऐसे राजनीति विद्वान् में राज्य सुन्दर रूप से चलना है ।

### नमस्कृत्य राजकर्मारम्भम्

भगवान् को नमस्कार करते राज कर्म का आरम्भ करना चाहिए । जो भी शासक हो तथा जो भी राज्य का मन्त्रपद हो वे सारे शासक तथा धनु विद्वानी हैं । प्रभु का नाम निकर राजमभा का काम किया जाये उन्में विद्वान् आ जाना है । प्रभु प्रेमी राज्य में मन्त्र परंपकार का काम करते हैं । मानि चाहते हैं ।

### परमेश्वरस्य वशम्

जिस राज्य का मन्त्र शासक मन्त्र प्रभु के वश में होता है । अर्थात् परमेश्वर का प्यारा है । उनके जीवन में तथा कामों में अतिष्ठा है । बहुत नम्ची मानि है, सम्पत्तिया आ जाती है । उनका नहीं होते । प्रभु प्यार होगा ।  
भा व्य भू मि का वे

धार्मिक चर्चा-

# धर्म अर्थ काम और मोक्ष

श्री बलदेव राज जी गुप्ता एम० ए० (संस्कृत)

स्वामी दवानन्द जी ने सभ्या के एक अंश में लिखा है 'हे ईश्वर दयानिधे ! भक्तकृपयानेन जपोपासनादि-धर्मार्थकाममोक्षणां सदाःसिद्धिर्भवेत्।' भावार्थ यह कि हमें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष में सिद्ध मिले । मैं इसी पर अपनी लेखनी उठाया हूँ ।

धर्म अर्थ काम और मोक्ष में से मोक्ष ही इच्छा केवल परलोक के लिए की जाती है। काम की इच्छा इह-लोक के सुख के लिए प्रायः सभी प्राणी करते हैं। धर्म और अर्थ केवल काम की प्राप्ति के लिए साधन मात्र हैं। आज, अतो पहले काम के साधनों पर विचार कर ले।

धर्म की अनेक प्रकार से परिभाषा दी गई है। इसीलिए कहा गया है 'धर्मस्य तत्त्व निश्चितं मुद्राम्याम्' अर्थात् धर्म के तत्त्व को कोई नहीं जानता। मनु महाराज ने धर्म के वृत्ति-श्रमा आदि दश लक्षण विवेचिन्तु मेरे प्रस्तुत लेख में धर्म का केवल एक ही अर्थ 'कर्तव्य-पालन' होगा। इस सम्बन्ध में 'महाजनों मेम गत म धर्मः' सूचित विचारणीय है।

इस में भी धर्म का अर्थ कर्तव्य है यानि बड़े लोगों ने जिस पथ का अनुसरण किया है, उसी पथ पर चलना हमारा कर्तव्य है। मनुष्य जन्म में ही धर्म के बन्धन में आ जाता है। जो धर्म (कर्तव्य) को निभाता जाता है, उसे अर्थ की प्राप्ति स्वयं हो जाती है। गीता में भी कहा : 'कर्मणि-वाक्पिकारस्तो मा फलेभु कदाचन' अर्थात् तेरा अधिकार कर्तव्य-पालन में है न कि फल में। तदुपरान्त एक जगह भी इच्छा में कहा है 'योगश्चेन ब्रह्मस्यैतम्' अर्थात् यदि धर्म (कर्तव्य) पर उठे रहो तो स्वयं आपको योग (न मिले हुए अर्थ की प्राप्ति) और क्षेम (मिले अर्थ की सुरक्षा) की

प्राप्ति हो जाएगी। समाज के प्रति भी हमारा धर्म (कर्तव्य) है; निस्वार्थ उसको निभाते रहने के सारे ही समाज को उस व्यक्ति की चिन्ता रहती है। इस प्रकार धर्म से अर्थ की स्वयं प्राप्ति होती है।

अर्थ (धन) प्राप्त होने पर कर्मेच्छा की पूर्ति के लिए मार्ग सुलभ जाता है। कामेच्छा की पूर्ति के लिए विवाह कराना आवश्यक है। वैवाहिक जीवन धन के बिना मूला है। शास्त्रों में केवल सद्यत कामेच्छा पूर्ति की मर्यादा का विधान है। सभोग केवल सन्तानोत्पत्ति हेतु ही करना चाहिए क्योंकि विवाह का उद्देश्य कामेच्छा-पूर्ति ही नहीं, अपितु विधु-उत्पत्त्य-प्रयत्न से सदाचारी पुत्र की उत्पत्ति होगी। वही पुत्र मोक्ष का साधन है जैसे ही यास्क ने पुत्र शब्द की व्युत्पत्ति करते समय लिखा है 'यु नाम नरकात्-नायते इति पुत्रः' उसे कहते हैं कि जो पुत्र नाम नरक से बचाता है जिससे मोक्ष व स्वर्ग की प्राप्ति होती है। वास्तव में बात है। धर्म अर्थ काम के साधन हैं।

# आर्य प्रादेविक प्रतिनिधि सभा सीमा-आयोग को कोई ज्ञापन नहीं देगी : श्रीयश

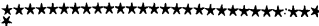
समा राज्य को अविभज्य मानती है : सभा का भी विभाजन नहीं किया जाएगा

जालन्धर—आर्य प्रादेविक प्रति-निधिसभा के प्रधान श्री यश ने आज यहा घोषणा की कि सभा पंचाब को भाषा के आधार पर अविभाज्य मानती है इसलिए वह सरकार द्वारा नियुक्त सीमा निर्धारण आयोग को कोई ज्ञापन नहीं देगी।

श्री यश ने जो संवाददाताओं से बातचीत कर रहे थे कहा कि आर्य प्रादेविक प्रतिनिधि सभा बुनियादी तौर पर विभाजन के ही विरुद्ध है। इसलिए इस बारे में कोई राय देने का सवाल ही नहीं उठता कि विभाजन का आचार १९६१ की जन-धी ठीक। पुत्र ही मुकब होकर सारे घर का प्रबन्ध अपने ऊपर जब लेता है तो पिता को सांसारिक-प्रबन्ध से मुक्त मिल जाता है जिससे वह ईश्वर-भजन व परोपकार करने परतोक में मुक्ति रहे।

इस प्रकार काम (गृहस्व-जीवन के द्वारा ही) अर्थ मोक्ष मिल सकता है। धर्म अर्थ काम के साधन हैं।

गणना होना चाहिए या कोई अन्य। उन्होंने कहा कि उनके लिए इस बात का कोई अंतर नहीं कि कोई लहलुहल इस राज्य में जाती है या उस राज्य में। श्री यश ने यह भी ऐलान किया कि आर्य प्रतिनिधि सभा के वर्तमान स्वरूप को कायम रखा जाएगा और कि इसे प्रस्तावित पंचाब या हरियाणा से विभाजित नहीं किया जाएगा। यह निश्चय हरियाणा के प्रतिनिधियों की राय के अनुसार सर्वसम्मति से किया गया है। श्री यश ने विचार प्रकट किया कि चट्टीयद के महत्व को बनाए रखने के लिए इसे एक सशाय समर घोषित कर दिया जाए जहा पंचाब और हरियाणा दोनों की राज-वासियां हों। यदि यह सहर किसी भी एक प्रांत को सौंपा गया तो यह उजड़ जाएगा। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि भाइयदा परिवोजना के लिए दामोदर घाटी परिवोजना नियम की तरह का एक नियम बना दिया जाए जो व्यापारिक आधार पर काम करे। इस नियम में सभी सबसदस्यो के प्रतिनिधि हों।



## प्रशाम

श्री. शूरर जी एम० ए० आर्य कालिज पानीपत

ओ तुङ्ग द्विपालय शृङ्गा तुष्य उज्ज्वल महान् ।  
गम्भीर पर पावन चरित्र संग समान ।  
ओ ब्रह्मचर्यं साकार दिव्य जीवन अनूप ,  
पासष्ट दम्भ के लिए उस विद्रोह रूप  
ओ दया अहिंसा , सत्य स्याय के चमत्कार,  
ओ अन्ता हीन अनाथ दलित के चीकार ।  
ओ पयोधि से शात, विजयियो तो विद्वान् ,  
ओ प्रखर तेज में सूर्य , चन्द्रमा से हीतल ।

निर्भीक, तपस्वि, परिवार, कौपीन धारि ,  
आचार्य ऋषिपर दयानन्द ओ ब्रह्मचारि ।  
ओ जगहित निज जीवन अर्पित करने वाले,  
विष पी - पी कर भी पर पीरडा हरते वाले ,  
ओ तेजस्वि, ओ श्रातदर्शी ओ सत्याकाम ,  
मुग पुस्य हमारा मुग-मुग तक तुम्ह को प्रशाम ।



## आर्यसमाज चंडीगढ़ सैक्टर

में महात्मा हंसराज

जयंती समारोह

१९-५-६६ को जी. ए. वी. स्कूल

के मंदीप में ५ बजे राय काल को श्री न्यायधीश श्री टेकरचन्द जी की अध्यक्षता में मनाया गया। जिस में श्री हरिराम जी शिमोलीय जी. ए. वी. ह्युरतेकेडरी स्कूल चंडीगढ़ जी० स्कचन्द जी एडवोकेट, डॉ० विद्वनाय जी श्री गोपाल-दास जी शंभर, श्री लतराम जी नीती आई. ए. ऐस. आदि विशिष्टवरो ने महात्मा हंसराज जी के जीवन पर प्रकाश डाला जत में न्यायधीश श्री टेकरचन्द ने श्रद्धान्जलि अर्पित करते हुए कहा कि महात्मा हंसराज जी ने देश और जाति को जनाया उनका उपकार हम सभी मूल नहीं सकते।  
आधुराम आर्य पुरोहित समाज

सम्पादक—

# आर्य जगत

वर्ष १६ रविवार - ०२३, १५ मई १९६६ [अंक २०]

## प्रशंसा के योग्य

आर्यसमाज के महान नेता, भारत के सर्वप्रथम सुप्रीम न्यायालय के चीफ जज, टंकारा ट्रस्ट के प्रधान तथा दयानन्द कानेश कमेटी के मान्य कार्य-धार डा० मेहरचन्द जी महाजन तथा उनके सारे साहित्यों के जगज उसाह से नई देहली में आर्यसमाज अन्तार-कनी टीविंग रोज का विद्यालय भवन बना है। बहुत ही सुन्दर और शान-दार है। उस का कार्यक्रम भी बड़ा रोचक होता है। बड़े २ ऊँचे पथ पर बंठे हुए सज्जन इस समाज के अधिकारी तथा सदस्य हैं। समाज का महात्सव समारोह भी प्रति वर्ष देखने योग्य होता है। प्रतिगणना भी महा उच्चकोटि के विद्वानों के प्रवचन होते रहते हैं। अपनी इस समाज के सारे कार्य पर सब को बड़ा मान है। आर्य प्रादेशिक उपसमा का दिल्ली कार्या-लय भी इसी समाज में है।

आर्य जनता मह मुन कर बड़ी प्रसन्न होगी कि अब इस समाज के मान्य नेताओं एवं अधिकारियों ने वेद के पवित्र सन्देश का अंगरेजी पद लिखे अने शासन के विभागों में काम करने वाले, लोक सभा के सदस्यों और विदेशों के राजदूतवासियों में काम करने वाले वैसी विदेशी लोगों तक आर्य समाज के बंकिम विचारों को पहुँचाने के लिए बड़ा ही सुन्दर कार्यक्रम बनाया है। जैसा यह समाज है उसी के अनु-रूप ही विद्यालय योजना बनाई गई है। योजना यह है कि आर्यसंस्कृत बंकिम धर्म का प्रचार करने के लिए जहाँ प्रति-सप्ताह हिन्दी प्रवचनों का उत्तम कार्य क्रम चलता है। समय २ पर संस्कृत में भी भाषणों का प्रवचन होता है।

बहुत पर अब महीने में एक बार विशेष कार्यक्रम बना कर अंगरेजी में भी बंकिम सिद्धान्तों पर बड़े २ योग्य विद्वानों व शिक्षितियों के द्वारा भाषण कराये जायें। उस में विशेष रूप से विशिष्ट जनता को निमन्त्रित किया जायगा। अंगरेजी बालाबरण में रहने वाले तथा अंगरेजी में ही अपना सारा जीवन कार्य चलाने वाले लोग आर्य समाज के सम्पर्क में आकर बंकिम सन्देश से लाभ उठा सकेंगे। इंग्लिश के प्रवचनों के द्वारा उन लोगों तक भी समाज का सन्देश पहुँचला रहेगा। इस योजना के लिए आर्यसमाज अन्तार-कनी नई देहली के सारे अधिकारियों को बहुत बसाई हो। आर्यसमाज ने वेद प्रचार के लिए बड़ा ही सुन्दर काम किया तथा कर रहा है। नाना प्रकार की भाषाओं में समाज का साहित्य प्रकाशित करने के विविध प्रान्तों में एव विदेश में भी भारी काम किया है। साहित्य की ओर भी अधिक आवश्यकता है। यदि प्रत्येक बड़ी-बड़ी समाजें वर्ष में साय-साय साहित्य लिखना कर बाटने का प्रयत्न कर लिया करे तो प्रचार का बड़ा काम किया जा सकता है। जो लोग अंगरेजी में पढ़ते, लिखते, बोलते सीखते तथा काम करते हैं, उन तक आर्यसमाज का सन्देश इंग्लिश में पहुँचाना होगा। इसका भी पूरा-पूरा प्रयत्न करना पड़ेगा। लोग आर्यसमाज को जानना चाहते हैं, उनके पास इतना लिख के माध्यम से अपना सन्देश देना होगा। आर्य-समाज ने हर प्रकार के साहित्य में उपेक्षा यदि नहीं की तो उदासीनता तो डकर दिखाई है। नीता प्रेस के

समाज हमारे पास भी क्या वेद प्रेस है ? क्या इतना साहित्य प्रकाशन हमारे पास है ? इसके लिए हम कितना उत्सर्ग करते हैं ? आर्य-समाजों को इधर विधेय ध्यान देना चाहिए। उत्तम २ साहित्य के लिए समाजों को व्यय करना ही होगा ? यही बात प्रचार के बारे में कही जा सकती है। आर्यसमाज अन्तारकनी टीविंग रोज नई देहली ने अंगरेजी में अपने भाषणों का जो प्रचार का कार्यक्रम तैयार किया है। इसके लिए समाज के सारे अधिकारी विशेष सम्मान के पात्र हैं। प्रति मास बंकिम सिद्धान्तों पर विशेष व्याख्यान इंग्लिश भाषा में होगा। उस में विशिष्ट लोगों को निमन्त्रण दिया जायगा। ऐसे लोग भी समाज के वातावरण में आकर बहुत कुछ सीखेंगे। आर्यसमाज के पास कितनी बात की कमी है ? फिलिस्टर प्रिंसिपल दीवानचन्द जी कानपुर, डा० गोचरचं काल जी दत, प्रिंसिपल सुबंभानु जी वास्य चालसर, प्रिंसिपल दीनानाथ जी धर्म, प्रिंसिपल भगवान् दास जी, प्रिंसिपल भीमदेन जी बहल, आचार्य विठलचन्द जी, प्रिंसिपल श्री राम धर्म प्रिंसिपल देवराज गुप्ता, प्रिंसिपल बहादुरचन्द जी, प्रि० घालि नारायण जी श्री प० भवबहुत जी, प्रिंसिपल घोबर जी प्रि० चमनलाल जी आदि कितने विद्वान हैं जिन पर समाज को मान है। इसी प्रकार बड़तो व बगला में भी प्रवचनों का प्रवचन हो रहा है। प्रभु करे कि यह कार्य जल्दी प्रारम्भ होवे।

### नया अंगरेज चला गया ?

भारत में विदेशी शासन समाप्त होकर स्वदेशी सत्ता स्थापित हो गई। वैसे तो सब कुछ अपना ही माना है। किन्तु मन में यह विचार आता है कि क्या भारत से अंगरेज गया है ? आज हमें तनिक तो मात्र आजी ही चाहिए। कितना वेद होता है यह देखकर कि नीस वर्ष होने को आए,

प्रतिवर्ष गलुराज दिवस मनाया जाता है। अभी तक हमारी शक्तता की प्रवृत्ति में परिवर्तन ही नहीं हो सका। शरीर के रूप में तो मान्य अंगरेज बना गया परन्तु विचारों के रूप में तो अंगरेज का प्रभाव आगे से भी अधिक होता जा रहा है। भारत के नगरों में वेले दुकानों के नाम पट्टी को देखे—बहुत पर अंगरेज नहीं बंठा। आज राष्ट्र हिन्दी कहा है ? भारत की राजधानी नई देहली में और सत्यना बाँसामन नगरों में क्या वेद है। अभी तक राष्ट्रभवा हिन्दी के प्रति मान ही नहीं है। नाम-पट्टी पर अंगरेज बंठा है। लोकसभा में उनी की धारा है। सम्मान करने हुए यह बात कहना चाहते हैं कि भारत के महान् राष्ट्रपति भी अभी तक अपने आरम्भ का भाषण अंगरेजी भाषा में ही देने है। जब राष्ट्रपति जी का अपनी राष्ट्र भाषा के प्रति ऐसा भाव है तो अग्यों की बात क्या कही जाए। सब तो है कि मनोदासता की प्रवृत्ति उसी प्रकार से बनी हुई है। कितनी बि-स्मना है कि स्कूलों, कालेजों में यदि छात्र अंगरेजी वेप में एक-दो अकों में भी रूढ़ जाए तो उसे सारी परीक्षा में अनुवीण कर दिया जाता है। क्या उसने इंग्लैंड जाना है ? आज हर क्षेत्र में, हर बाज में तथा प्रत्येक विचार में अंगरेज ने अपना प्रभाव जमा रखा है। सारे विषय में अंगरेज, वेदाभूषा में अंगरेज, पर के कमरो में अंगरेज, स्कूलों, कालेजों में अंगरेज, दुकानों के पत्र व्यवहार में अंगरेज, शरीर पर अंगरेज, विद्यान समाजों, लोकसभा में अंगरेज, पुस्तकालयों में अंगरेज, आत्मों तथा वाशों पर अंगरेज सब स्थानों पर अंगरेज पूरी तरह से छाया हुआ है। भारत का क्या बनेगा ? यह मसम में नहीं आता। इतने वर्षों के बाद भी आज तक अंगरेजी भाषा का व्यापार कर्म नहीं हो पाया। प्रतिदिन बसता ही जा रहा (शेष पृष्ठ ६ पर)

## जनसंघ और आर्यसमाज

(पृष्ठ ७ का योग)

आर्यसमाज में कार्यशील भी है, प्रजा-सोवियट भी और जनसभी भी। पर आर्य समाज इतने अलग भी कुछ है। आर्य समाज में स्वतन्त्रता के आंदोलन में कार्य में का पूरा साथ दिया। नाका राजपुत्रता, स्वामी श्रद्धानन्द तथा अन्य लाखों आर्य मजदूरी जेल गए और हर तरह का नुकसान भी उठया। पर जब कार्य में को मुनसुमायो का पक्षपात कर देना का नाश करने देखा, वही ला-० लाजपत-राय और स्वा-० श्रद्धानन्द कार्य में के चिरोप में लगे हो गए। जब आर्य समाज गांधी जी और जवाहर लाल के आगे नहीं झुका तो श्री अटल बिहारी वाजपेयी, श्री बलराज मयोक्तवा जी यजदत्त के आगे धक्का भुंजता। आर्य समाज को अपने सिद्धांत प्रिय है, उनके लिए किसी और के विचार का हमारे मामले कोई हस्त नहीं।

इसका यह अभिप्राय नहीं कि हमारे मन में भी यजदत्त तथा अन्य नेताओं का मान नहीं। हम उन सब का सम्मान करते हैं। विशेष कर श्री यजदत्त जी का तो पत्राचार के सब हिन्दू हृदय में मान करते हैं। पर आर्यसमाज का नेतृत्व और सिद्धांत स्वतंत्र ही रहने चाहिए। पराभिन नहीं।

एक सबसे अलग और विशेष बात यह है कि आर्य समाज वैदिक धर्म के प्रचार के लिए स्थापित एक संस्था है। वैदिक धर्म सनातन इस्लाम, क्रिश्चियनिटी तथा ब्रह्म धर्म आदि धर्मों में मूल्य एक धर्म है। राजनीतिक पाठिया कांप्रसं. जनसंघ आदि अर्थात् दल है जिन्होंने कुछ देर बाद नष्ट होना है। पर वैदिक धर्म तो सृष्टि प्रारम्भ से अब तक बना आ रहा है और यम-चन्द्र विद्याकर्त्री रहेगा। यह एक स्वामी बन्तु है।

धर्म और राजनीतिक पाठियों की कोई तुलना नहीं। राजनीतिक पाठिया मदा धर्मों के प्रभाव में रही है और रहेगी।

इस प्रकार यदि बन्तु स्थिति स्पष्ट समझनी जाय तो आर्यसमाज की स्थिति और महत्व मदेह रहित रूप में सामने आ जायेंगे।

## आर्य समाज और वैदिक साम्राज्य की स्थापना

श्री धर्मवीर जी आर्य मंडाधारी व्याख्यान भूषण अध्याय धर्मवीर ग्रन्थमाला प्रकाशन लि. रायकहेला, नई दिल्ली-५

आर्य समाज के स्थापक विन्व बंदनीय महर्षि दयानन्द जी ने आर्यों मित्रिय नामक अपनी प्रारंभना पुस्तक में एक नही सैकड़ों बार चक्रवर्ती वैदिक साम्राज्य के लिए वेद मंत्रों के आधार पर प्रारंभना की है। कानि के अग्रतम महर्षि दयानन्द जी महाराज चक्रवर्ती वैदिक साम्राज्य स्थापित करना चाहते थे। उन्होंने विन्व के मानव समाज के पथ प्रदर्शन की अलौकिक भव्यमानना में ही आर्य समाज को स्थापित किया था। आज ईसाईयत और ईस्लाम की भयकर आधी से यदि विन्व के मानव समाज को आय समाज बनाया चाहता है।

यदि धर्म विज्ञाता का और वेदों का प्रचार विन्व व्यापी रूप से आर्य समाज करता चाहता है। आर्य समाज यदि वैदिक युग का निर्माण करना चाहता है। आर्यसमाज यदि वैदिक कर्मकांडों का विन्व व्यापी प्रवर्त प्रचार करना चाहता है। यदि आर्य समाज यह चाहता है कि विन्व की समस्त राष्ट्रभाषाओं में वेदों का अनुवाद और प्रकाशन तथा प्रचार का कार्य द्रुत गति से किया जायें। यदि आर्यसमाज के नेतृत्व हजारी और लाखों की संस्था में अपने उपदेशकों को वेद विद्या, अध्यात्म विद्या, ब्रह्म-विद्या, योग विद्या, मोक्ष विद्या आदि के महा विद्वान् ज्ञाता बना कर विन्व के सभी नगरों में मानवता की रक्षा के लिये भेजना चाहता है। यदि आर्य समाज विन्व के समस्त राष्ट्रों में वेद विन्व विद्यालयों को स्थापित कर के वेदों का पठना पढ़ाना मानव मान के लिये अनिवार्य रूप से चाहता है। यदि आर्यसमाज सूर्य और चन्द्र के समान विन्व गगन में प्रवर्त प्रकाश के समान चमकना चाहता है। यदि आर्यसमाज विन्व में रामराज्य

स्थापित करना चाहता है। यदि आर्यसमाज वैदिक राज्य विधान का निर्माण करना चाहता है। यदि आर्यसमाज विन्व शांति की विन्व दिलावे अथवा अन्तर्गत वैदिक जीवन की विन्व श्रोतिका प्रकाश पुत्र बनकर अलौकिक जीवन का सीधमें जन्मपाना चाहता है। यदि आर्यसमाज वैदिक मंत्रों का विचार चाहता है। यदि आर्यसमाज विन्व के इतिहास से नया जीवन, नया अरमान, नया मोक्ष मानना चाहता है। यदि आर्यसमाज बसुंधा को वेद सुधा का दान देना चाहता है तो आर्यसमाज को आपसी दलबन्धियों के दलदल से ऊपर उठकर रामराज्य स्थापित करने के लिए राजनीति के अखाटों में कूदकर राज्य संता अपने हाथ में लेनी पड़ेगी। राज्य शासन का मूल संचालन जब तक आर्यसमाज नहीं करेगा तब तक विन्व के मानव समाज का सुधार लक्ष प्रयत्न और प्रचार करने पर भी होना संभव अमभव है।

ऐ विन्व के आर्य (हिन्दू) भाईयों और बहिनी आज अपने अतीत गौरव को देखो। हम चक्रवर्ती साम्राज्य के मूल संचालक रह चुके हैं। हम उन चक्रवर्तियों के स्थापित करने वाले पिताओं के पुत्र और पुत्रिया हैं आप अपने अधोपगत को देखकर तनिक विचार करो कि हमें क्या बनना है आज मर्यादा पुरोहितम भगवान राम का जन्म-दिन रामनवमी है। आज राम-राज्य स्थापित करने का, वैदिक स्वराज्य, वैदिक साम्राज्य, स्थापित करने का महाव्रत धारण करो।

आर्य समाज के जन्मदाता विन्व बंदनीय महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने अपने अग्रतम सत्यार्थ प्रकाश के छठा समुल्लास में वैदिक राज्य के मूल संचालन पर लिखा है। आज इस

वैदिक राज्य विधान के अर्थों को आर्य समाज भूल कर पशु बन गया है। आर्य समाज विन्व काया पतट देने की अलौकिक मरता है।

आर्य समाज के पास एक में एक विचारक है। आर्य समाज में एक से एक साहित्यकार लेखक है। आर्य समाज में एक से एक ओक गी बक्ता है। आर्य समाज ने जो कार्य किया है वह स्वर्णशरो में अंकित करने योग्य है।

ऐ आर्य बीरो आज आज, भारत भूमि धर्म बीरो से विहीन हो गई है। आज देश धर्म के दिवालों को धर्मबीरो को भारत माता स लिये आवाहन कर रही है कि आज भारतीय सस्कृति और सभ्यता की रक्षा नहीं हो रही है। आज कार्य सं सामुदाय के कर्म-धारी ने धर्म को तिलाजलि देकर धर्म प्रचलन भारत भूमि को इस महर्षियों की जन्मदादि भारत बसुंधरा को धर्म विहीन बना दिया है। धर्म और वैदिक सस्कृति से मूल्य वेदों की विज्ञाओं से मूल्य राज्य और स्वर्ण किस काम का है।

आज मानवता रो रही है। आज नारी जाति का सतीत्व अस्वील फिर्मों के कारण नृदा जा रहा है। आज मान और अन्धे का धर-धर में प्रवर्त प्रचार हो रहा है। आज भी बीटी. तन्त्रक, शाराब, और नरस, भाग, गाथा आदि दुष्कर्मों पर देत का अर्थो रूपया बरपाद हो रहा है। आज मुकुन्द विद्या प्रशाशी सम्पन्न होती जा रही है। आज स-विज्ञा के कारण मित्य अपवित्र प्रेम के कारण मित्य देश की सजनायें भारी संस्था में गर्भपात करवाती हैं। आज भारतीय वेदभूषा को धारण करने में हमारे तोखवान हिंस्रकिचाते हैं। आज स्कूलों और कालिजों में अंधे ज्ञाने अंधे ज तंवार किये जाते हैं। आज शिक्षा सुध का मोप हो गया है। मुस्लिमों का माता पिताओं को विदेशी सभ्यता के कारण कोई आदर सम्मान नहीं दिया जाता है। आज सर्वत्र संघम सत्परात्र ब्रह्मधर्म का अज्ञान हो गया है। आज किल्ली सितारों और शारिकार्ये बनेने की प्रवर्त बून हमारे देश के मुक्तकों और युवतियों की हो गई है। (प्रभाषः)

'सनाईम जून उन्नी को पेंड के 'आर्य जगत' नामक साप्ताहिक पत्रिका मे भक्ताराय जी गार्ग अकीका वाले) 'आवनर' का तब और अब के आर्य समाजी' नामक लेख पढ़ा। इसी के अनुसार मैं अपने विचार प्रस्तुत कर रहा हूँ. 'लेखक'।

आर्यसमाज सत्तार को प्रसस्त मार्ग पर से जाने वाली. एक अत्युत्प्रेरणा गति से चलने वाली सस्था है। प्रारम्भ मे देव दयानन्द ने इस का सृजन इसी लक्ष्य से किया था कि मनुष्यमात्र का कल्याण करने वाली यह परोपकारिणी सस्था सत्तार मे जेरीयमान होकर सत्तार पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर पायेगी। किन्तु हो रहा है इसके प्रतिकूल, ऐसा क्यों? एक ही विचार ध्यान मे आता है कि आर्य समाज के नायक स्थित हो गये है। समाज बड़ी पल्लवित तथा सर्वाधिक होना है जिस के अद्वर समुद्र तथा सद्भावना-मय हो। आप कहेंगे कि जिस आर्य समाज के सिद्धान्त प्रत्येक समाजिक सस्था को स्वीकृत हो। जिसके प्रबन्धन त्याग भूति तथा दयानिधान हो फिर वह सस्था अवगति की ओर आर्य आदर्श की बात है। किन्तु बन्धुओं! दुःख के साथ लिखता हूँ कि इस विद्युत् सस्था मे आज उदरभरती तथा पेट पूति करने वाले, आडम्बर करने वाले लोगों को कभी नहीं है।

जिसी सस्था के कर्णधार उसके मूल-तत्व होते है। उन्हीं के आधार पर सिद्धान्त कायम रह सकते है। जब मूल विनाश की ओर जायेगा तो वृक्ष स्वय ही नष्ट हो जायेगा क्योंकि— 'छिन्ने मूले फल नैव पुष्यम्' बस्तुतः सामाजिक विचारों को किन्वाचित रूप देने वाले नेता लोग होते है।

जब हम इन अर्वाचीन तथा उन प्राचीन नेताओं को एक कक्षीटी पर रखकर परखते है तो हमें आकाश और पताल जितना अन्तर साम्य होता है कितने ही उपयुक्त उदाहरण

## भूत और वतमान के आर्य समाजी नेता

ले०—श्री बलदेवमिह ब्री शास्त्री, विद्या प्रभाकर

देकर पण्डित भक्ताराय जी ने प्राचीन आर्यसमाजी नेताओं का त्याग दिखाया है। उनकी कार्य शक्ति का परिचय दिया है। उनके चर्य की गिनती की है। उनके व्यवहार तथा आचरण का चित्र खँचा है। किन्तु मे उन आदर्श पुरुषों का पुनर्गणन करना आवश्यक न समझ कर इन वर्तमान नेता मानी लोगों का व्यवहार भी आपको दिखाना आवश्यक समझता हूँ। कोई व्यक्ति स्वयं नेता कहलाने मे नेता नहीं होना। जब तक उसमे नेता के गुण बिसामान न हो उसे नेता कहाने वाले व्यक्ति मनुष्यमात्र को मुसों की श्रेणी मे ही रखना पड़ेगा।

मेरा अनेक वर्तमान आर्यसमाजी नेताओं से बिलिप्त सम्पर्क रहा है। उनके प्रबन्धन भी मुझे है। किन्तु कहना कुछ व्यवहार कुछ यह उनका स्वाभाविक गुण है।

दूसरों की निन्दा करना दूसरों पर कीचड़ फँकना ही उनका कार्य रह गया है। आर्य समाज की इंट मे इंट बजाना, आर्य समाज को कल्पित करना ही उनका ध्येय रह गया है।

मेरे ऐसे आर्य नेताओं से अनुरोध है कि वे आर्य समाज से सम्बन्ध लेकर कनकबतु हाथ मे उठा आर्य समाज को सिद्धि मे मिलने मे वनाये। आर्य समाज को उनकी इन स्वार्थपूर्ण सेवाओं को आवश्यकता नहीं। क्या प्रतिनिधि क्या प्रादेशिक और क्या सार्वदेशिक सब ओर स्वार्थ लिप्ता, पदलिप्ता बड़ी जा रहती है। इस 'अहं पूर्णचं र नीति' ने समाज को दुर्बल तथा दुर्भावनामय बना कर रख दिया।

केवल मात्र परोपकार के कार्य मे अपनी शक्ति की आहूति देना इन से कोसों दूर हो गया है। बन्धुओं! कोई व्यक्ति आपसे से निगुण ही और वह कहने लगे कि मेरा दादा अशुक्ल पुरुष सम्पन्न बं। हमारा पुरुखा इस प्रकार का था, तो यह

स्वयं समाज तथ्य नहीं कहा जा सकता क्या यही स्थिति आज के नेताओं की। दयानन्द के नाम पर, इत्यादि के नाम पर श्यामन्द ने नाम पर ही मे लोग खाने का आडम्बर भरने लगे है। यदि यही स्थिति रही तो उन्हें भूखे पेट ही इन समाज से सन्नमय करना पड़ेगा। इन नेताओं का शीघ्र अहं व्यादा दिखाने का नहीं। वह दिन दूर नहीं जबकि इन को मुह की खानी पड़ेगी।

सस्कृत मे जाता है कि—'कुक्कुर कुक्कुर कुक्कुराने' इसी के अनुरार आज के नेता स्वर्था और र्थार्थ' को अर्थि मे अपनी आहूतिया देने को तत्पर रहते है। क्रोध को अर्थि दधकती ही रहती है। उन्हें गीता का निम्न पदोक्त ध्यान मे करना चाहिये कि—

‘‘क्रोधाद् भवति समोहः  
मनोहन्तु स्मृतिविभ्रमः।  
स्मृतिभ्रसाह बुद्धिनाश  
बुद्धिनाशान् प्रसायति।

बस्तुतः क्रोधानि मनुष्य को इन लोक से समाज कर देती है। आज के नेताओं को उन्नी स्थिति मे नेता कहा जायेगा जबकि मनु डाग प्रतिपादित निम्न पदोक्त का आचरण करेंगे।

‘यत्नेदेक कुलस्यायं धाम-  
स्थायं कुल त्यजेत्।  
जनपदस्थायं  
आर्याभ्यं पृथिवी त्यजेत् ॥’  
बस्तुतः त्यागमय जीवन व्यतीत करने वाले व्यक्ति को समाज समाप्त करना है। इसके अनेकों उदाहरण आर्यसमाज के मूलकार्त्तव्य इतिहास मे है। मुमुक्षु भैरवाचार जि० रोहनक के सत्याग्रह श्री पूरुष चिन्तन भक्त फूलमिह ने पटवार मे ली रिजल वापिस करके सत्तार के सामने त्याग का अनुभव उदाहरण प्रस्तुत किया। किन्तु आज के स्वार्थी नेता प्रतिनिधि द्वारा दी गई बस्तु को भी हथिया लेते है। उसपर अपना आधिपत्य कर बस्तुओं को लोगों मे अपना बना

धिया, अधिकार कर लिया। लोगों की आत्मा मे धूल भोक्कर कोर्ट नेता बनने की चेष्टा करता है तो वह उनके निग अग्रभ्रम नहीं हो कठिन प्रबन्ध हो। आज के विनये ही नेता अपनी नक्रादा गव धा सम्पत्ति बनाए बँडे है। मे अपने पूरुषता हूँ कि क्या दया-नन्द को कवक तराया उन्होंने 'मोचा है' या उन्होंने वचन खाई है' कि हम आर्यसमाज को विद्युत्तना मे दूर करने छोड़ेंगे? आज नो परका भी मन्दिष व रा अर्प देती है। उनमे उनकी आयदादा का लेखन करवाती है नो फिर इन नेताओं को क्या सुनो है। जो वे इस सक्ती के ध्यान की ओर दौड़े जा रहे है।

अन्य मे मेरी इन्मे प्रार्थना है कि आर्य नेता हमको माफ करे क्योंकि भावी समय वे ऐसा नहीं कि समाज हम प्रार्थो के निन्दानो को श्रवण की भी आवश्यकता न समझ समझ बँडे।

## दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार को धार्मिक सेवःयें

यह विद्यालय हिसार मे मुवाक रूप मे चल रहा है। इसके अनेक सुयोग्य स्नातक भारत के भित्त-भित्त प्राणो मे धर्म का प्रचार कार्य कर रहे है। उन्नी तरह ही ०० बेवद्यत मार्ग सिद्धान्त भूषण स्नातक विद्यालय आराम प्राण मे वैदिक धर्म के प्रचारार्थ जा रहे है। उनके सम्मान तथा अभिनन्दन के निम्न एक विराट् मार्वाञ्जिक मन्त्र माननीय डा० गुनानी के सम्प्रातिपत्र मे १-५-६६ को दिन के दम बजे आर्य-समाज 'हिसार' मे हुई। आर्यसमाज हिसार की विवेक सस्थाओं की ओर मे ओर वाहर की समाजों की ओर मे श्री ०० बेवद्यत शर्मार्थ जी का पूर्वमालाओ तथा भाषणों द्वारा भय्य स्वागत तथा अभिनन्दन किया गया और उनको १०१) ०० भेट किया गया। इस प्रकार स्वागत समारोह सफलतुपूर्वक समाप्त हुआ।

★ इस समाज की वनी आशों से परम्परेर को नहीं देख सकते पर आजमा मे उनका अनुभव करके मान प्राप्त कर सकते है।

महः  
योग

**क्या अंगरेज चला गया ?**

(पृष्ठ ३ का वेध)

है। मंते से आज भी टाई बांध कर गौरव अनुभव किया जाता है। समक नहीं आता कि देश का क्या अनेका ? मारी का अन्धन उसका हासिकर नहीं होता अतना कि मनोकथन बुरा होता है। अंधेज के मानस पुत्र आज अपना परिवार बढाते जाते है। ऐसा प्रतीत होता है कि अंधेज ने अपना प्रभाव साकार रखा है। मैकाले का स्वप्न शास्त्र होता जाता है। भारतीय अपने पत्र व्याख्यान मे, निमन्त्रण पत्रो में, भी अंधेजी का प्रयोग करना गौरव समझते है। अभी तक अपनी राष्ट्र-माया का मान मन में नहीं है। यह बात देसाहिन के अनुकूल नहीं है। जिस देश की जनता अपनी भाषा पर मान नहीं करती। विदेशी भाषा में बोल्ती है, निखती सोचती है—वह देश पूजा हो जाता है। हम सब से यही कहना चाहते है कि मानसिक दासता की इस प्रवृत्ति के प्रसिद्द की रोकने का भरसक प्रयत्न करो। देश के जीवन मे इस प्रभाव को निकालो। तभी राष्ट्र का कल्याण हो सकेगा—

**समाजों की सेवा में**

यह बात सारे समाजो व सस्याओ से बलपूर्वक कहना चाहते है कि वे अपने- अपने समारोहो मे, उसयो मे अन्य कार्यो के साथ-साथ आर्य समाज का साहित्य गृह्णर जनता मे बाटें। समाजो का जहा और इतना व्यय हो जाता है वहा पर साहित्य के लिए भी अबश्य व्यय किया जाए। जनता के हाथो मे वैदिक धर्म का साहित्य पहुंचाया जाये। समा की ओर से हिन्दी व इन्ग्लिश मे सुन्दर साहित्य प्रकाशित किया गया है। अभी-अभी स्वर्गीय महात्मा हजराज जी लिखित सन्ध्या पर व्याख्यान नाम की पुस्तक प्रकाशित की है। सन्ध्या पर महात्मा जी की बड़ी सुन्दर विचार धारा है। अमात्रे व सस्याए अपने साहित्य वि-

**महता रामचन्द्र जी शास्त्री भूतपूर्व महोपदेशक आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि समा**

**श्री मन्तराम जी शर्मा (अधीका बाले) जालन्धर**

परम पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज के 'आर्य जगल' २४-४ मे प्रकाशित 'महता रामचन्द्र शास्त्री मे भेंट' शीर्षक लेख द्वारा यह जान कर खेद और चिन्ता हुई कि वह १४-९-४७ मे रोमी चले आ रहे हैं। इस से भी अधिक दुःख यह हुआ कि आर्यसमाज मे उनके प्रति इस कष्ट मे अपना अत्य स्वल्प कर्त्तव्य भी (मौखिक अपवा लिखित सहामुभूति द्वारा) पूरा नहीं किया। महता जी को केवल मान सम्बेदना चाहिए। किन्तु शोक की बात है कि आर्यसमाजी इस मे भी रण मे इस पुस्तक को अधिक सख्या मे सभा मे मगवा कर उम का प्रचार करे। - स०

**आर्य समाज पटेलनगर**

आर्य समाज पटेलनगर नई देहली का बाणिक महोत्सव समारोह घूमघाम से संपन्न हो गया। मन्दिर बडा ही सुन्दर है। कार्य भी उत्साह से हो रहा है। स्त्री समाज की उत्साह से भरपूर है। एटा वाले स्व० बहामन्द जी वेद का यज्ञ कराते रहे। सभा की ओर से पण्डित लुधो राम जी शर्मा, प० विनोद चन्द्र शास्त्री, प० राज पाल मदन जी की प्रसिद्द चिमटा-मण्डली कथा व उत्सव पर आये। स्वामी रामेश्वरानन्द जी, आर्य गिणु जी लुधारे। सार्वेदिक समा के मान्य प्रचार को प्रताप भाई जी की प्रधानता से आर्य सम्मेलन हुआ जिस मे प० रामगोपाल जी शालग्राले, डा० महा-वीर सिंह जी ज्वालिनगर, प० विद्याधर जी कामपुर, प० बालरेडी हैदराबाद, श्री कृष्ण चन्द जी प्रधान आर्य प्रादे-तिक उपसभा देहली बोले। ऋषि मण्डारा तो विद्यालय था। बात सभा व स्त्री समाज का महोत्सव भी बडे ही समारोहे से किया गया। अधिकारी बडे उत्साही है।

पूरे न उतरे। फिर शिकायत होती है कि आर्य समाज में उपदेशक नहीं आ रहे। क्या वे उस समाज में आर्य जहा अपुण्यो की पूजा और पुण्यो का तिरस्कार होता है ? जब महता जी जैसे उच्च कोटि के वेदोपदेशक के प्रति ऐसी उदासीनता है तो साधारण प्रचारक को कौन पूछेगा ? यदि हम "वेद प्रचार" चाहते हैं तो हमे प्रचारको का मान कल्ला सीखना चाहिए। आर्य समाज (अन्तारकाली) नई दिल्ली के उस समय के मन्त्री को महता जी से क्षमा याचना करनी चाहिए, क्योंकि वस उन के सुपुत्र जी नरेन्द्र के देहान्त पर शोक पत्र भी लिखते मे असमय रहे और उन्हे इस असाध्यानी के लिए प्रायश्चित करना चाहिए।

- अधीका मे जो आर्य सन्ध्यामी और आर्योपदेशक पहुंचे वे निम्नलिखित है—
- (१) प० गुरुानन्द जी महोपदेशक (आर्य प्रतिनिधि सभा)
  - (२) प० माधुर शर्मा भजोपदेशक (आर्य प्रतिनिधि सभा)
  - (३) प० ईश्वर दत्त जी स्नातक गुरुकुल कावडी (हरिद्वार)
  - (४) डाकुल प्रवीण सिंह स्वतन्त्र भजोपदेशक
  - (५) प० महाराणी बाबू
  - (६) सत्यव्रत जी स्नातक
  - (७) शोफेसर रामदेव
  - (८) प० चम्रपति एम ए०
  - (९) बुधदेव जी स्नातक
  - (१०) महात्मा कमचन्द कदिया
  - (११) प० बालकृष्णजी बन्धई
  - (१२) प० सत्यापाल जी स्नातक
  - (१३) प० ऋषिराम बी०ए०
  - (१४) प० बुधदेव मीपुरी
  - (१५) प० भन्तराम सहवाल
  - (१६) महता जेमिनि(स्वा.आनन्द)
  - (१७) प० सत्यदेव स्नातक
  - (१८) महता रामचन्द्र शास्त्री★

- (१९) डाकुल जोरावरसिंह भजो-पदेशक बरनाला (सयुरा)
- (२०) श्री चाम्द करसु शारदा अबमेर
- (२१) आचार्य नंबनाथ शास्त्री
- (२२) प० हरिसाबुदर विद्यायो (गुरुकुल शुष्क तीर्थ)
- (२३) प० नागरदासजी गुरुकुल शुष्कतीर्थ
- (२४) प० महेश नाथ जी
- (२५) स्वा. भवानी दयाल जी
- (२६) प० केशवदेव ज्ञानी
- (२७) म० बदनाथ

श्रीमती जगनोदरी - जी मृतपूरुम आचार्य कृपया महाविद्यालय जालंधर प. आनन्द गिणु बढोदा (वे दोनो धन एकत्रित करने के लिए गिणुमण्डल लेकर गए वे।)

**अ्य संन्यासी**

- (१) स्वा. स्वतन्त्रानन्द जी
  - (२) स्वा. नारायणानन्द जी (मह छावनी)
  - (३) स्वा. प्रभुानन्द जी
  - (४) महात्मा आनन्द स्वामी जी
  - (५) महात्मा आनन्द गिणु जी
  - (६) आचार्य विद्यानन्द विवेह
- ★ उपर्युक्त प्रचारको में महता जी उन प्रभावशाली ब्रह्मात्रो में से एक है जिन्होमे बहा घूम मचा दी थी, वेद प्रचार को।
- माननीय महता रामचन्द्र जी शास्त्री अधीका प्रचारार्य पहुंचे तो सन् १९३५ मे आर्य समाज दारुसलाम (ईस्ट अधीका) के साहित्यकोष पर आर्य प्रतिनिधि सभा ईस्ट अधीका, नौरोबी की सेवा मे प्राथना कर के महता जी को बुवा भेजा। वह और प० सत्यदेव जी स्नातक पवार। मैंने यहां भी आदरणीय महता जी के स्था-स्थान सुने हुए मे परन्तु बहा उत्सव से पहिले व्याख्यान मावा के अन्तर्गत मुने भाषणो द्वारा उन की विद्वत्ता की अत्यधिक छाप पडी। तत्कालीन मन्त्री महोदय मे उन के प्रलेक भाषण को विद्याने की दृष्ठा प्रकट की ताकि वह बुजराती भाषा में अनुवाद करके वहाँ के बुजराती पत्रों में छपाये। (अमः)

# जनसंघ और आर्यसमाज

श्री सत्यदेव जी विद्यालंकार एम.० ए.० प्रो.० कृपा

महाविद्यालय, जालनभर

अन्य सच भारत की, राजनीति के संघ में एक उन्नति करती हुई पार्टी है। अखिल भारतीय स्तर की राजनीतिक पार्टियों में उसका स्थान कांचेस और कम्युनिस्ट पार्टी के बाद है। विशेषकर यह है कि यह स्थान अपने पिछले १०-१८ वर्षों में प्राप्त किया है। उनके पास राष्ट्रीय स्तर तक संघ के अर्थक और नौजवान कार्यकर्तियों का बड़ा भारी दल है और यही उसकी शक्ति का ही मुख्य आधार है।

जब तब प्रारम्भ से भारतीय संस्कृति और सभ्यता का आधार मान कर अपना कार्य चला रहा है, इसलिए स्वभावतः आर्य संस्था और समाज जैसे अवधार और सहानुभूति की दृष्टि से देखती रही है और जहाँ तक बन सका सहयोग भी देती रही है। मुझे अच्छी तरह स्मरण है कि प्रारम्भ में राष्ट्रीय स्तर तक संघ में प्रशिक्षण देने के लिए पंजाब की आर्य समाजों के अनेक युवक कार्यकर्ता तानपुर गए थे। उस समय हिन्दू माण की सहानुभूति इस स्तर से थी, विशेषकर हिन्दू विचार के लोगों की।

इस वर्ष जनसंघ का अखिल भारतीय अधिवेशन जालनभर में हुआ। जलम और अधिवेशन दोनों ही उपस्थिति और उत्साह की दृष्टि से शानदार रहे। पर इन वर्ष एक नई बात भी थी। वह भी पंजाबी युवा की मांग के कारण पंजाब का विभाजन। जनसंघ की कार्यवाही पर इस नई महत्त्वपूर्ण घटना की पूरी छाप पड़ी। इस घटना ने तथा इससे मिलती-जुलती दूसरी घटनाओं ने जनसंघ के दृष्टिकोण में परिवर्तन कर दिया। जनसंघ के नेता अब आधुनिक राष्ट्रवादी (Secular Nationalistic) दृष्टिकोण अपनाया चाहते हैं। वे अब हिन्दू रूप में रहकर भारतीय रूप धारण करना चाहते हैं। पर इसके लिए उन्हें दो बाते करनी पड़ेंगी। एक उनके नेताओं में मुसलमान ईशार्द तथा सिख वर्गों के समूह भी आने चाहिए और पर्याप्त राष्ट्रीय स्तर तक संघ को अत्याधिक प्रचार पट्टे का राष्ट्रीय स्तर तक

संघ को कोई भी व्यक्ति आधुनिक अर्थ (Modern Sense) में राष्ट्रवादी मस्था नहीं कह सकता। हमारा विचार है कि जनसंघ यह दोनों बातें ही नहीं कर सकता।

इस नए दृष्टिकोण को अपनाकर जनसंघ के नेताओं ने तीन ऐसी बातें की जिससे आर्यसमाज के हिंदुओं की हानि हो रही है।

पहली बात यह कि पंजाब के हिन्दुओं को हिन्दी-देवनागरी त्याग कर पंजाबी-गुरुमुखी अपनी भाषा माननी चाहिए।

दूसरी बात यह कि जनसंघ के वर्तमान प्रधान श्री बलराज मधोक ने जायंसमाज और अकाली पार्टी को एक स्तर पर लाकर इन दोनों को पंजाब की आत्मरक्षा की गड़बड़ का दोषी ठहराया।

तीसरी श्री यशवत जी ने अपने भाषण में नाम न लेकर श्री सोरठ, श्री जगत नारायण तथा श्री यश को प्रशंसा-गुरा कहा।

आर्यसमाज की ओर से इन तीनों ही बातों का निराकरण आवश्यक है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि पंजाब के हिन्दू विशेषकर आर्यसमाजी हिन्दी-देवनागरी से प्यार करते हैं। जनसंघ क्या किसी भी पार्टी के कहते हैं वे इस प्यार को छोड़ नहीं सकते। पंजाब के हिन्दू हिन्दी-देवनागरी से आज सिक्खों या पंजाबी के हँच के कारण प्यार नहीं करते तो। तब से करते हैं जब कि अकाली पार्टी और जनसंघ का जन्म भी नहीं हुआ था। श्रुति देवानन्द ने जब वर्ष १८८२ में अपने सम्पूर्ण प्रकाश में यह लिख दिया था कि जब बालक या बालिका पाच वर्ष के हों तो उन्हें देवनागरी अक्षरों का अभ्यास कराया जाय तो पंजाबी गुरुमुखी के संक शेषक अभी पंजाब में ही जन महात्मा हजरत और स्वामी

श्रदानन्द जी ने अपने स्कुल-कालिज और गुरुकुलों से हिन्दी-देवनागरी को शिक्षा का माध्यम बनाया था तब तो पंजाब में उन्हें का बोधवाना था, पंजाबी का नहीं।

आर्यसमाजी को चाहे वह किसी प्रांत का भी क्यों न हो हिन्दी-देवनागरी बंदी ही प्यारी है, जैसे कनाडा और अमरीका में पंदा हुए सिक्खों को भी पंजाबी-गुरुमुखी प्यारी लगती है, जैसे भारत में पंदा हुए मुसलमानों को भी अरबी-फारसी प्यारी लगती है। हिन्दुओं की हिन्दी प्यारी इसलिए नहीं कि उन्हें पंजाबी से डर है बल्कि इसलिए कि उनका मांग माहिय हिन्दी-संस्कृत में है। वे इसे छोड़ नहीं सकते।

रही जनसंघ की बात। वह एक राजनीतिक पार्टी है। राजनीति में कलाचरित्रा जैसा स्वाभाविक है। सिक्खों के नेताओं की आवश्यकता ही तो पंजाबी-गुरुमुखी ठीक है और हिन्दुओं में नेताओं की आवश्यकता ही तो हिन्दी-देवनागरी ठीक है।

हिन्दी आंदोलन में जनसंघ और आर्यसमाज दोनों माय थे। हजारों लोग जेल गए, बोलियों अपभ्रंश करा बंटे। पोलिस ने भी भी पर कर पीटा और जेल में बाइंडों ने भी लाठिया चलवाई गई। इसका प्रभाव सिद्ध हंरों ने छत्र-चन ने इस आंदोलन को कुचल दिया। यदि बलिदान में आर्यसमाज और जन संघ दोनों का भाग था तो अपफलता में भी दोनों का भाग था। एक वचन नहीं सकता।

दूसरी तरह कांग्रेस के भी नेहरू जी से लेकर कांग्रेस व दलार माफ करने वाले जमादार तक सब ने—अर्थात् सांभल के छोटे-बड़े सब ने एक स्तर में कहा कि पंजाबी सुभा नहीं बन सकता। लोगों को निश्चय हो गया कि पंजाबी सुभा नहीं बनेगा। जब संत फागू सिंह ने जब मरने की धमकी देकर पंजाबी सुभा की मांग की तो नेता के सिख सेनापतियों के लेकर

कांग्रेस - कम्युनिस्ट पार्टी सोशलिस्ट पार्टी तथा अकाली दल-कुं सब सिक्खों ने उठ मान का खूने या दबे शब्दों में समर्थन किया। कांग्रेस के नेता सिक्खों की इस मांग के अंतर्भूत गए। पिछले १८ वर्ष के बाद में हुए गए और पंजाबी सुभा को बनाना मान लिया। पंजाब के हिन्दू लोगों पर उसकी प्रयत्न प्रतिक्रिया स्वाभाविक थी। श्री यशवत जी तथा श्री सत्यानन्द जी ने आगरा अनुभव का इतना रखा। अभिभावक यह कि इस आंदोलन में भी जनसंघ और आर्यसमाज माध्यम माय थे।

इसमें सन्देह नहीं कि इस आंदोलन का परिणाम कुछ अल्प नहीं हुआ। विना किसी निमित्त आन्दोलन के आंदोलन सम्भव हो गया। पर यदि श्रेय है तो जनसंघ और आर्यसमाज दोनों को और यदि अपफलता की बरतानी है तो दोनों को। जनसंघ के नेता इस मामले में आर्यसमाज को बुरा प्रभाव कैसे कह सकते हैं।

आर्यसमाज की अकालियों के साथ जोड़कर जनसंघ राष्ट्रपति नहीं बन सकता। यह राजनीति की गुप्तनी फिन्दी-पिटी चाल है। कार्य में जनसंघ और अकाली पार्टी को सांख्यिक कहर अपने को राष्ट्रवादी कहती है। कम्युनिस्ट कार्य में अमरीका के पिछड़युवा कहर अपने को सिंगलों और मजदूरों के हिंदी कहते हैं। सोशलिस्ट पार्टी कम्युनिस्ट पार्टी को मर और चीन या गणेश कहती है। राजनीति में मूठ बोलना और गाना देना धर्म है। जनसंघ तो भारतीय संस्कृति का भाग लेता है उसे कुछ उची बात करनी चाहिए।

तीसरी बात श्री सोरठ, श्री यश तथा श्री जगत नारायण श्री-भुवरा-भवा कहते की है। वे तीनों मरकन आर्यसमाजी हैं, देवाभक्त हैं, कमठों पर कले जा चुके हैं, राजनीति के चतुर सिन्धारी हैं। चोट महाना भी जानते हैं, चोट लगाना भी। अब आर्यसमाज की बात को अस्वीकार नहीं। (सिप पृष्ठ ४ पर)



**आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि  
उपमभा दिल्ली**

मार्फत आर्यसमाज अनाकरकली  
भरिण भाग नई दिल्ली

श्री कृष्ण चन्द्र जी प्रधान आर्य  
प्रतिनिधि उपमभा दिल्ली  
तथा उपप्रधान आर्य केन्द्रीय सभा  
दिल्ली ७ साल से सरकारी नौकरी  
से मुक्त होकर सारा समय अतन्त्रिक  
रूपसे आर्यसमाज के कार्यों में लगा  
रहे हैं। आर्यसमाज के सप्ताहिक  
सत्रोंमें भी व्याख्यान देने जाते हैं।  
जिन समाजों को उनकी सेवा की आवश्यकता  
हो वह अपनी आर्यप्रादेशिक प्रति-  
निधि उपमभा आर्यसमाज भरिण भाग  
नई दिल्ली को पत्र द्वारा सूचितकर दें।

**शोक समाचार**

पंजाब के बानी श्री परमेश्वरी-  
वास जी बल्लू का ५ मई बीरवार  
को उनके अपने निवास स्थान आर.  
मोहन टौन लुधियाना में रात  
५५ पर स्वर्गवास हो गया।  
आप कट्टर आर्यसमाजी होने हुए  
सबल स्वभाव के व्यक्ति थे चिरकाल  
तक पंजाब गवर्नमेंट के डेप्युटी सचिव  
पर रिटायर हो कोतो हुए रहे। आप  
के निधन से आर्यजगत् की महानसति  
होई है।  
आर्यजगत और आर्य प्रादेशिक  
प्रतिनिधि सभा उनके इस विजोह पर  
हार्दिक शोक प्रकट करती है तथा  
उनके परिवार से शवेदान्त प्रकट  
करती है।

**आर्यसमाज  
चण्ड**

केवल पुरुष  
स्त्रियों के विरुद्ध आर्यसमाज  
बाणदीपक का प्रस्तव

दिनांक २४-४-१९ को आर्य-  
समाज संकेत ८ चण्डीगढ़ को सायं-  
जनिक सभा पंजाब निर्वाचनाध्यक्ष  
(बीक अनेकडेनर ओपीनर) के श्रेय  
में केवल पुरुषों विधि में मतदाता  
स्त्रियों के प्रकाशित करने के विरुद्ध  
जोरावर प्रोटैस्ट कराती है। जिन  
कारण सार्वो गुप्तसूची न जा-  
बानो को उनके मौनिक मार्ग  
अधिकारों (अपना नाम पढ़ सकने) से  
बन्धित कर दिया गया है। अतः यह  
सभा पंजाब सरकार तथा भारत  
सरकार से प्रार्थना करती है कि वह  
साथ राज्य पंजाब से दिल्ली तथा  
पुरुसूची दोनों विधियों में तुल्य  
मतदाना सूचना प्रकाशित कर  
जनाता को पहुंचाए। - देवराज मलिक  
मन्त्री आर्यसमाज

**पठनीय एवं मननीय साहित्य**

श्रेय प्रबन्धन ५/- मीसारा ७५  
पैसे, जालमगीर के पत्र १/- देवराज  
संस्कार १/५० पैसे, पेरी आठ  
रोपक कहानियां ७५ पैसे, लोक  
७५ पैसे, सख्तवाते जीबन ५० पैसे,  
कर्म मोक्षा २/२२ पैसे, सतति  
विगमन स्त्री और कंठे १५ पैसे,  
वैदिक व्याखरण भास्कर ५/-  
व्याखरण बोधक पत्र ११/२० पैसे,  
साहित्य प्रचारक १/-  
जयदेव श्रद्धां बहोदा-१

**म० हंसराज वैदिक साहित्य विभाग**

विभाग्य आभ्यन्तरिक पुस्तकें  
चारों वेदों के सजिन्द मूल ईट प्रति सैट २५.५० पैसे  
ऋग्वेदादि भाष्य मूखिका ३.०० पैसे  
संस्कार विधि २.० पैसे  
दयानन्द द्विज साक्षर एहद वर्क (अंग्रेजी में) लेखक श्री  
सूर्यमानु जी एम० ए० वायस चांसलर डुरुलेश यूनिवर्सिटी  
भूषण १.५० पैसे  
सत्पार्थ प्रकाश (उर्दू) ३.५०  
सभी आर्यसमाजों में आर्य सत्पार्थ हिन पुस्तकों को उपच स्थान  
देकर सुशोभित करें  
प्राति स्थान - म० हंसराज साहित्य विभाग आर्य प्रादेशिक  
सभा निक्ट कोर्ट जालन्वर

मुद्रक प्रकाशक श्री सनोपचान जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्वर द्वारा कीर विनाय शंभू, मिलाप रोड जालन्वर से मुद्रित तथा आर्यजगत  
कार्यालय महाराज हंसराज भवन निक्ट कचहरी जालन्वर शहर से प्रकाशित मालिक-आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्वर

**र विदेशों में**

**आर्य हवन सामग्री की धूम!**  
सुगन्धित पोष्टिक रोगनाशक हवन सामग्री के  
लिये आज ही लिखें।

देश और विदेशों के सभी प्रमुख वैदिक विद्वानों ने हमारी हवन सामग्री  
को उत्तम मोहित किया है।  
विश्व की समस्त आर्यसमाजों ने निवेदन है कि हमारी सर्व रोग नाशक  
आर्य हवन सामग्री का ही नित्य प्रयोग करें।  
संश्लेषित नगरों में हवन सामग्री के विक्रेताओं की  
आवश्यकता है  
न० १ मेवा मुक्त हवन सामग्री का भाव २।) है।  
न० २ सुगन्धित हवन सामग्री का भाव १।) किन्तो है।

**एक किंबदन्त हवन सामग्री शोक मंगाने वाले प्राहकों को-  
दस रुपयों की पुस्तकें भेंट की जायेंगी  
वेद पथिक धर्मवीर आर्य**

महाराष्ट्र व्याख्यान भूषण  
अध्यक्ष आर्य हवन सामग्री निर्वाहसभा, सरायरुहेला  
नई दिल्ली-५

**धर्मवीर ग्रन्थमाला के सुपनों की  
यत्र-तत्र, सर्वत्र धूम !!**

विश्व के ममल नगरो में धर्मवीर ग्रन्थमाला के साहित्य सुपनों के  
विक्रेताओं की अविलम्ब आवश्यकता है।  
वेद और जीवन 1), वेद सन्देश 1)  
विश्व श्रेम का श्रमतकलश 1), वेद सुधा सार काव्य में 1)  
यज्ञ और जीवन 1), उपवेशामृत १११ उपदेश 1))

**आवश्यक निवेदन**  
शोक मंगाने वाले प्राहकों को २५ प्रतिशत कमीशन दिया  
जाता है।

साधनान महाविद्यालय दिल्ली के धर्म विभा में अनुभव उपवेश केप  
और जीबन यह दोनों पुस्तकें स्वीकृती की गई हैं आर्यजगत की विशाल-  
संस्थाओं से आर्यसमाजों से साहित्य विक्रेताओं से निवेदन है कि अपना  
आर्य आर्य ही करें।

विश्व विख्यात सभी आर्य नेताओं, महाराष्ट्रों साहित्य-  
कारों ने धर्मवीर ग्रन्थमाला के साहित्य सुपनों  
की सराहना और उपयोगिता की प्रशंसा  
शब्दों में प्रशंसा की है।

**—वेद पथिक धर्मवीर आर्य**  
महाराष्ट्र व्याख्यान भूषण  
अध्यक्ष धर्मवीर ग्रन्थमाला प्रकाशन विभाग  
सराय रुहेला नई दिल्ली ५



दैनिकीय नं० ३०५७

[आर्यशादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक सुसुपत्र]

Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ पैसे

वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६ अंक २१)

६ ज्येष्ठ २०२३ रविवार—दयानन्दाब्द १४१— २२ मई १९६६

(तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

## वेद सूक्तयः

### संश्रुतेन गमेमहि

हम वेद के अनुसार चले।  
हमारा जीवन वेद के अनुकूल हो।  
हमारा पथ वेद पथ तथा हमारे कार्य  
वेद से अनुमोदित हो। जो कुछ  
मुझे उन पर आचरण करने रहे।

### मा श्रुतेन विशिषि

हम कभी भी वेद के प्रतिकूल  
न चले। कथन, मनन, चिन्तन तथा  
जीवन का आचरण वेद के विपरीत  
न हो। जो भी मुझे उसे भुला न  
देवे, उसका विरोध न करे तथा  
उससे आक्षेप न करे।

### देवदत्तं ब्रह्म गायत

यह वेद का ज्ञान देव का  
भगवान का दिया हुआ है। उन  
परमेश्वर की वाणी है। सब के  
लिए उन चित्त का दिव्य श्रेय मीठा  
प्रसाद है। उन वेद का नाम करो।  
वेद का गीत संगीत गाते रहो।

### असि होता न ईदृष्यः

प्रभो! आप होता है। इस  
सारे-ससार में आपका ही महान्  
वश ही रहा है। आप इस सारे  
वश के होता हो और न-स्यारे  
लिए ईदृष्य-भूलि के सोच हो।  
आपकी स्तुति हम सोच किया करे।

### मित्रं वयं हवामहे

हम उस भगवान को गुजाले  
हैं, जो हमारा मित्र है। हम ससार  
के मित्र, साथी तो कुछ आ पकने  
पर साथ छोड़ जाते हैं। पर प्रभु  
ऐसा परम मित्र है जो सदा हमारे  
अंत-संग रहकर मुझे करता है।  
सा म मे इ मे

## वे दो द्वा र क



### महर्षि दयानन्द सरस्वती

अपने देव की विराही बधा को गुणान्द व गुण प्राय, वेदज्ञान को पुनः  
प्रचारित करने तथा स्त्री जाति की अधोपति को देखते हुए अपना तन,  
मन, धन सब कुछ देव के समर्पण कर दिया।

## ऋषि दर्शन

वेदा ईश्वर रक्षित सर्वविद्यासि  
मुद गुण कर्म स्वभाव पारमार्थी  
रमान् आदि गुणा धारता है वेद  
जिग मुक्तक से ईश्वर के गुण कर्म  
स्वभाव के अनुकूल करने जो वर  
ईश्वरकृत, अथ मही और जिन से  
साहित्यम प्रयोजित प्रमाण प्रदा  
के और पवित्रता के व्यवहार में  
विश्व कृतन में जो वर ईश्वरकृत।  
वेदा ईश्वर का विशेष ज्ञान वेदा  
जिन मुक्तक से प्रति रचित ज्ञान  
का प्रतिपादन हो वह ईश्वरकृत।  
वेदा परमेश्वर है और जसा मुक्ति  
रक्त मया है वेदा ही ईश्वर, मुक्ति  
कार्य कारण और जीव का प्रति-  
पादन जिन से श्रेष्ठ वर परमेश्वरकृत  
मुक्तक है। जो प्रयोजित  
प्रमाण विद्या में अधिक है मुद्राभा  
के स्वभाव में विश्व न ही, एक  
प्रकार के वेद है।

मार्गधर् प्रकाश मे

### अमृत्य वचन

दिव की सम्पन्न आर्यगमात्री  
में रक्षित सत्यम अनिवाद्य मय मे  
पान्ति किंग जाग। और वेदा का  
पटना पढ़ाना और मुक्तक गुणाना  
सब भावक साथ के जीवन अम का  
अम बन जाग। नर परमात्मा पर  
अद्वय विद्याम करने पर उन कार्य  
के निग प्रसन्न गुणान्द आरम्भ कर  
रने पर मया मे अममम विद्वे  
बारे कार्यो को मन्त्रम करके दिखाना  
देने को अममम धारता हम मे आ  
जाती है।

हमारे प्राचीन महामनीषी महर्षियों ने सांसारिक मानवों के लिये प्रतिदिन यज्ञ करना जीवन का अंग निरूपण किया है। यह स्वल्प यज्ञ तो मनुष्यों के अन्न इतरा को भोग्यमान की ओर वे जाने के लिये भूमिका मात्र है। वास्तव में इन बाह्य क्रियाओं के नाटक द्वारा वहां तो पुरुष अध्यात्म जगत के चमत्कार देखता है। इसीलिये ऋषियों ने कहा - 'यज्ञोर्विद्वेदमम कर्म' हुए एक शुभ कर्म यज्ञ है। मन, वचन और शरीर से विद्यार्थीए पवित्र कर्म यज्ञ नाम के अधिकारी है। जब तक मनुष्य बाह्य क्रियाओं के आचार पर अन्तःकरण को गुण्य कर्मों की ओर प्रेरित करना रहता है तभी तक इस बाह्य भौतिक अग्निहोत्र की आवश्यकता अनुपपन्न की जाती है। जब मनुष्य का अन्न करण अपने जीवन के लक्ष्य को ममत्क कर किन्ती बाह्य क्रिया के आश्रय के बिना ही निरन्तर मार्ग का पथिक बन जाता है। तभी उसके लिये बाह्य अग्निहोत्र का कोई मूल्य न रह कर वह उम किना-कलापर से स्वतन्त्र हो जाता है। मनुष्य के जीवन में इसी अबस्था को मन्मासात्म्य कहते हैं जिसमें मनुष्य परिणतभावस्था को पहुँचकर भौतिक तथा आध्यात्मिक जगत के पथाश्रं स्वरूप का साक्षात् करता है। उसने पूर्व वह दूसरों के अनुभवों के आधार पर चलता है।

**धार्मिक चर्चा-**

**अध्यात्म यज्ञ**

**लेखक—श्री पं० सत्यशिव जी शास्त्री सिद्धान्त शिरोमणि  
प्राध्यापक—दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार**

उन बाह्य क्रियाओं के द्वारा अपने अध्यात्म जगत का निर्माण करता है। जैसे भौतिक अग्निहोत्र में होता अग्नि कुण्ड में प्रज्वलित अग्नि पर घृत तथा सामग्री की आहुति डालता है। ठीक उसी प्रकार अपने अन्दर अध्यात्म जगत में जावश्यकमान आत्मानि में श्रद्धा की आहुति डालना भी योग्य है। इस आहुति से अन्तर्जगत प्रकाशित होता है। अग्नि का स्वाभाविक ज्ञान है, जिसके प्रकाश में अपने जीवन लक्ष्य निरन्तर मार्ग को देखना है, परन्तु यह अग्नि बुझ सकती है, यदि उसमें श्रद्धा रूपी घृत की आहुति नहीं पड़ी। इस लिए श्रद्धा में कष्ट नया है श्रद्धाभिन्निः समिप्यते अर्थात् से श्रद्धा से अग्नि प्रदीप्त होती है। घृत चिकना होता है, बंधे ही श्रद्धा भी स्नेहरूप ही है। बाह्यजगत् में तीन समिधाए अर्पित की जाती है, बंधे ही इस अध्यात्मयज्ञ में शरीर, मन तथा आत्मा की तीन समिधाए चढ़ानी है, तभी तो उक्त समिधाए उम कुण्ड में पड़ कर पम-केली। हम कहते हैं कि 'अयं त इम

आत्मा' अर्थात् हे प्राणियों ? यह आत्मा तुम्हारे अध्यात्म यज्ञ के लिए समिधा है, उस कुण्ड में इसे डालनी तथा प्रकाशित करो। इन समिधा की डालकर ही हम निम्न वाक्य चरितार्थ कर सकते हैं 'उद् बुधस्वान्ने प्रति जागृहि' हे अग्नि में पड़े आत्म रूप समिध् ? तुम उद्वुडु हो—अपने लक्ष्य को पहुँचानी और उसकी प्राप्ति के प्रयत्न के प्रति संयत्ता जानासक रहो। इसी तत्व के उद्-बोधन के लिए महीयत् एतरेय में अपने ब्रह्म एतरेय ब्राह्मण में 'चरन्ति चरन्ति' की श्रेक देकर तत्व जानियों के उद्बोधनार्थ एक रहस्य पुरुष आत्मिक गीत लिखा है। बाह्य यज्ञ में चार मन्त्रों द्वारा कुण्ड के चारों ओर जल का प्रोक्षण किया जाता है। अध्यात्म यज्ञ में वही जल शुभ कर्म का रूप धारण कर लेगा है। हमने आत्मिक यज्ञ के चारों ओर गुण्य-कर्मों का जल छिड़-कना है। जल और अग्नि यत्नि

विरोधी माने जाते हैं। परन्तु यज्ञ में दोनों का संगति-करण होता है, ठीक वैसे ही इस आध्यात्मिक यज्ञ में ज्ञान और कर्म दोनों का संगति करण होता है, क्योंकि दोनों एक दूसरे के बिना अर्थात् है। बाह्य अग्नि में 'स्वाहा' कहकर आहुति डालते हैं और 'द्वन्द्व-मम्' कहते हैं। ठीक यही दशा यज्ञ भी है। ज्ञान में श्रद्धा की आहुति पड़ते ही 'स्वाहा' अर्थात् प्रत्येक इन्द्रिय से अपने विषय का यहण जीवन के कल्याणार्थ है न कि अथ, पतन के लिए। बाह्य कहते हैं बोलना वाग्निन्द्रिय सभी इन्द्रियों का उपलक्षण है। यह सब कुण्ड उम कल्याणनिधान जगदीश्वर की है, अतः अध्यात्म यज्ञ के यज्ञमान के मूल्य से उसके प्रति श्रद्धा तथा अपनी हीनता का मुचक वाक्य 'द्वन्द्वमम्' निकलता है। यह उसके जीवन में नम्रता, विनय को धारण करता है। यह है अध्यात्म यज्ञ के कुण्ड रहस्य। मनुष्य सोच कर जीवन में इस यज्ञ की ओर बड़े। यही तुम्हें उत मानवस्य-मन्यास अर्थात् त्याग की ओर बढ़ावेगा, क्योंकि त्याग ही यज्ञ है।



**★ मधु कलश ★**

श्री विजय निर्वाण जी आर्टिस्ट इंजांज पंजाब केसरी

दोषनाश भी जिसके यश के गीत नहीं गा पाते जिसकी रज को स्वयं देवता सादर शीघ्र चढ़ाते भारत मां के निर्मल यश का भंडा जग में फहरे हर गुण्यो मुलभा लें उसके बालक हंसते गाते।



हाथ हिलाते मुझे देखते जब-जब ज्ञानी ध्यानी मैं अचरज में पड़ जाता हूँ होती है हेरानो सच तो यहही प्रभुकी भाषा आती नहीं समझ में मानव की गति नहीं आजकल गई किसीसे जानी



बहुत गलत है बात-बात पर भावों में बह जाना बिना विचार के काम किया तो पड़ता है पछताना आंस भींचकर चलने वाला सा जाता है ठोकर नामुमकिन है विष पीकर के दुनिया में जो पाना



घर को छोड़ा, मुंड मुंडाया, वस्त्र गेरए घारे लिए चिमटा और कर्मबल दर-दर फिरते मारे ऐसे लोग ससे संन्यासी कभी नहीं हो सकते बात-बात पर गुस्सा करते वचन बोझते छारे।

—(कमशः)

**आर्य जगत के पाठकों से निवेदन**

आर्य समाजों, आर्य संस्थाओं और आर्य बन्धुओं की सेवा में यह लिखते हुए हमें हर्ष होता है कि आप की सभा के प्रमुख पत्र आर्य जगत् की अवस्था को सुधारने की ओर पग उठाए गए हैं। इस का टाईप बदल दिया गया है। मुल पृष्ठ का श्लाक भी बदला जा रहा है। इससे पत्र के सौंदर्य में वृद्धि हुई है। अब इस की उपयोगिता भी बढ़ने चाहिए। आप सभों से प्रार्थना है कि अपने बटुमूल्य लेख लिख कर भेजें। इसके साथ इसकी श्राट्क सन्ध्या बड़ा कर सभा की सहायता करें। इस से भी इस पत्र की उपयोगिता बढ़ जाएगी।

इस महंगाई के समय में सभों समाचार पत्रों का मूल्य बढ़ चुका है। फिर भी सभा प्रचारार्थ इस पत्र को पुराने मूल्य पर ही दे रही है। इस से इस का पाटा बढ़ रहा है। यह यत्न करें कि यह पत्र सभों आर्य परिवारों में पहुँचे जिस से इस घाटा को पूरा करने में कुछ न कुछ सहयता आवश्यक मिलेगी। धन्यवाद !

११ पादकवय --

# आर्य जगत

वर्ष ६६ रविवार ०२३, २२ मई १९६६ अंक २६

## आर्यसमाज की बेदी

आर्यसमाज ने अपनी बेदी के द्वारा बहुत बड़ा काम किया है। गम्भीर विद्वानों के गम्भीर भाषणों ने जन जीवन को उसम से उत्तम बिचारों का प्रसाद दिया। शास्त्रों की चर्चा की एक वैदिक सिद्धान्तों को लेकर जनता की आँखें खोलने का शानदार काम किया। आर्यसमाज की बेदी की प्रस्ताव बड़े २ लोगों ने खूले दिल से की। प्रत्येक सम्प्रदाय के बड़े २ लोग मुद्रकण्ठ से यह मानते और कहते हैं कि समाज की बेदी अपना रूप आज ही है। आज जितना भी परिवर्तन दिखार्इ देता है, वैदिक बिचारों का जितना भी प्रचार है, जीवन में जागृति प्रतीत होती है तथा सामिक, सामाजिक, राष्ट्रिय चेतना है—इस सारे श्रेय का कारण बिना पक्षपात के आर्यसमाज को ही दिया जा सकता है।

किन्तु कुछ समय इस बात को अनुभव किया जाने लगा है कि आज समाज की बेदी को यह पुरातन गम्भीरता व शान कम होने लगी है। इस का कारण यह नहीं कि समाज के सिद्धान्तों में कुछ परिवर्तन आ गया है या इस के पास सन्ध्या महात्मा और विद्वानों की कमी है अथवा ऊंची कोटि के योनेन वाले कम हो गये है। इस बातों में मेने कोई भी सतु कम नहीं है। आज भी समाज के प्रभावशाली सन्ध्या महात्मा, गम्भीर बिचारक, ओजस्वी वक्ता, दार्शनिक विद्वान तथा आर्य जीवन के नायक व मधुर नायक मौजूद हैं। शिवा खेन के बिचारकों की भी कमी नहीं है—किन्तु ऐसे महान् व्यक्ति अब कुछ उदासीन होने लगे हैं। अपनी बेदी की वर्तमान अवस्था को देखते हुए उन उच्च कोटि के विद्वानों की उपरमाता व उदासीनता ठीक ही कही जा सकती है। आर्यसमाज अपना उसब का समारोह इसलिए रखता है ताकि वैदिक बिचारधारा का प्रचार होता जाय। जनता बंद के प्रति हार्दिक प्रेम आर्यसमाज के सम्पर्क में आ सके।

दशा कुछ और की और बदलती जा रही है। समय के बातावरण का प्रभाव काफी मात्रा में हमारी बेदी पर भी पड़ने लगा है। इस की पुरानी शान व गम्भीरतामें कमी आने लगी है। जनता की साधारण रसिक अनुकूल ही इच्छाओं वाना का प्रयत्न किया जाने लगा है। आर्यसमाज वेद के प्रचार के लिए स्थापित किया गया था। वैदिक सिद्धान्तों को बिद्योपना इसके जीवन की सभ से बर्डी भिटा है। अन्य बातें तो दूसरी बेदिगं में भी कही तथा सुनी जा सकती है। इधर उपर के बिचारों का प्रचार तो और स्थानों से भी हो सकता है। किन्तु वेद के विविध विषयों पर ओजस्वी प्रवचन आर्यसमाज के विशिष्ट कार्यभारों का एक विषय भाग है। यदि हमारी बेदी से भी बड़ी बातें होंगी जो कि अन्य स्थानों से होती हैं—तो फिर वेद की बातें कौन बतायेगा? ऋषि दयानन्द जी ने अपना सारा जीवन वेद प्रचार के निमित्त लगाया। इसी परिवचन कार्य के लिए उनका बलिदान हुआ वेद को पररक्षक मान कर उसे ही प्रमुखाता दी। आर्यसमाज ने अपने प्रारम्भिक युग में बेदी विविध विषयों पर जनता को बड़े मजे हुए विचार दिए। उचित व स्वस्थ समझौचना की। किन्तु अब वह बात बदलती जा रही है। हमारी बेदी की महत्ता में दरार पड़ने लगी है। यह भी शैद का विषय है कि इस बेदी पर अब राजनीति व राजनीतिक लोगों का अधिक बोलबाला होने लगा है। बड़े से बड़ा नगरीती महात्मा तथा विद्वान तो एक कोने में चुपचाप बंटा रहे किन्तु इधर-उधर की बातें कहने वाले व्यक्ति समाज की बेदी पर खटा कर जो चाहें कह जायें और जिस रूप में आये बसा जायें। न ऐसे लोगों का समाज का पता, न सिद्धान्तों का परिचय और न ही जनता का पथ प्रदर्शन ही करने का बिचार होता

है। जो बाके की और दो बगलें की बातें कह देते हैं। सारा बातावरण कुछ और ही बन जाता है। परिणाम यह होता है कि बड़े २ स्वाध्याय शील व्यक्ति अब समाज की बेदी से सकोच करने लगे हैं। अन्वया सब की आत्में के सामने है। इसपर समाज को अवश्य बिचार करना ही होगा। बेदी की परिवचता हर हालात में रखनी है। वह अन्वया इगकी महत्ता सर्वथा समाप्त हो जाएगी विशिष्टता भी नष्ट होकर पुररणों के समान अनेक विरोधी विषयों का पिटारा ही बन जाएगा। समाज के मान्य पुरुषों को इस पर बिचार करना ही चाहिए बात कड़वी भले ही हो पर है तो सच्ची ही।

—निबोकचन्द्र

## अंगरेजी का मोह

अभी-अभी उन कि दिवस भारत में थी गोलन की का दिवस मनाया गया। नमाचार पत्रों ने उनके चित्र छाये, उनकी जीवनी प्रकाशित की तथा उनके स्वतन्त्रता विषय के बड़े सुन्दर लेख भी लिखे। महामुषकों के दिवस मनाने ही चाहिए। उसी रात भारत के मान्य दार्शनिक राष्ट्रपति जी ने भी श्री गोलनके जी के जीवन को लेकर आकाशवाणी में जनता के नाम अपना इस विषय का सुन्दर और ओजस्वी सन्देश भी प्रसारित किया। परन्तु एक बात का अलग लेख दें कि १८-१९ वर्षों के बाद भी आज भारत का इतना महान् राष्ट्रपति भी अपना भाषण पहले अंगरेजी में देते हैं—बाद में उसका हिन्दी भाषा में अनुबाद किया जाता है। राष्ट्रपति जी भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी को प्रमुख स्थान न देकर उसे दूसरा दर्जा देते हैं तथा विदेशी भाषा इंगलिस को प्रथम स्थान देते हैं। बाहर देशों के लोग जब भारत के महान् राष्ट्रपति का सन्देश अंगरेजी भाषा में सुनने होंगे तो वे मन में क्या कहेंगे होंगे कि १८-१९ वर्षों के बाद भी इतना महान् नेता अपनी राष्ट्रभाषा में नहीं बोलता। जिसमें अनुबाद होना चाहिए उस में तो मूल भाषण दिया जाता है। और जो राष्ट्रपति है उस में अनुबाद किया जाता है। यह अवस्था भारत के मान्य महान् नेता की है। वह भी १८-१९ वर्षों की स्वाधीनता के बाद की है। कोई बोले या न—पर हम ने जब आकाश बाणी ने अर्ध-जी में भाषण सुना तो बिचार

बाया कि भारत की अवस्था का यह परिवर्तन कम होगा। जब राष्ट्र के सर्वोच्च नेता के मन में अपनी ही राष्ट्र भाषा के प्रति यह बिचार है कि वे १८-१९ वर्षों की स्वाधीनता के बाद भी इंगलिस को प्राथमिकता देते हुए राष्ट्र की भाषा हिन्दी को स्वयं दूसरा दर्जा एक अनुबाद की भाषा समझते हैं तो अन्य लोगों की क्या का अनुमान लगाया जा सकता है। भारत की कितनी भाषायों को सविधान में मान्यता प्राप्त है। उन में से किसी भी भारतीय भाषा में अपना राष्ट्रीय संदेश दिया जा सकता है। पर इंगलिस का इतना मोह बसुणु, ही बंद जनक है। हम अपने राष्ट्रपति जी का अत्यन्त सम्मान करते हुए नम्रता किन्तु जोरदार शब्दों में प्रार्थना करना चाहते हैं कि महात्वर राष्ट्रपति जी तो बड़े विद्वान है भारतीय है नवा अपनी पुण्यन सङ्कति के प्रथम पीपक है। १ तो सारे देश का नेतृव करने चाहिए। जनता को महान् लोगों का अनुकरण व अनुसरण किया जाना है। यदि बड़ी विदेशी भाषा का इतना ध्यानमें करेयें तथा राष्ट्र भाषा की उपेक्षा करेयें तो दूसरों की ओर से तो उपेक्षा वृत्ति अधिक ही होती जायगी। यह परम्परा स्वस्थ नहीं कही जा सकती है। बड़े २ व्यक्तियों का कर्तव्य है कि मान्य राष्ट्रपति जी में मित कर प्रविष्टय में राष्ट्र भाषा के यथाचित सम्मान का प्रयत्न करें—

## आल इंडिया दयानन्द सात्वेशन मिशन होशियारपुर

(१) वर्तमान बहती हुई महाराष्ट्र की मूर्च्छा रहते हुए आज इंडिया दयानन्द सात्वेशन मिशन होशियारपुर ने अपने कार्यकर्ताओं के महाराष्ट्र अलाऊन में, बिनाक वेतन महाराष्ट्र अलाऊन सहित १५०/२० मासिक या इस से कम है, १०/- १० की मुद्रि १०-४-१९६६ से कर दी है।

(२) आल इंडिया दयानन्द सात्वेशन मिशन होशियारपुर की जवरल जोड़ी की वारिक बंडक बिनाक २५-५-१९६६ रविवार को शाम के साठे चार बजे मिशन के कार्यालय, राय अश्रम, राय बहादुर मीठावाल रोड, होशियारपुर में होगा। सभी सदस्य समय पर पहुंचा कर कुतार्थ करें। निवेदन—रायदास प्रधान मिशन

अकाशियों को बुझ करने के लिए जनसभ में आयेसमाज पर हमला तो कर दिया लेकिन अब स्वयं ही खबर, रहा है। पञ्जाब जनसभ के मूल्युर्ध्व प्रयाण कोटेशन केन्द्र चन्द्र ने उन बहुत को दण्ड करने की अपील की है जो इन प्रश्न पर हो रही है।

लेकिन यह बहुत शुरु किन ने की? और फिर इन बहम को व्यक्तिगत स्तर पर कोन ले आया? अजिन भारतीय जनसभ के प्रधान ने गारे आयेसमाज पर लाच्छन नगा दिया। यह जबाब के बालावस्था को साराब कर रहा है। और उनके बाद हर छोटे छोटे जनसभ ने आयेसमाज और उनके नेताओं पर बरसना शुरू कर दिया। उनका ही नहीं, सासा असानारासस ब श्री औरेश्वर के विरुद्ध पटिया भागा मे ऐसे लेक विचे ने गा। जिनका किनी भी सुनको मरणा मे कोई सम्बन्ध नहीं। वहुत मिद्वान को हो, रबीन मे बजत हो और मरणा को मीमा मे रहू कर एक दूसरे का केम काटने को कोशिस को जाग तो मैं हरे युग नहीं मरमत। लेकिन जब लडाई व्यक्तिगत स्तर पर पडूब जाओ और उन मे मतभेदो का उल्लेख न होकर गरिया निकासी जाग तो स्वाभाविक रूप मे हर किनी को अकरोम होगा। लेकिन जनसभ में यही क्यों समक निया कि केवल बही हमला कर सकता है? जब प्रयुजन चिपने सवा तो बह परेनाम को उठा। हर मरसा मे जहा उत्तर-दरिन्ध हीन व्यक्ति होते है, सहा एक सममदशर बयं भी होना है। जनसभ का दुर्भाग्य यह है कि इसके प्रधान और कई दूसरे नेता उत्तरदायिन्ध हीन है। इसलिए ये यह मान्ये हो नहीं कि जो पग ये उठाने जा रहे है उनका परिष्कारा ब्य निरुक्त सकता है। जनसभ यदि अपने आपको राजनीतिक मरसा मानता है तो उसे राजनीतिक मरसाओं से ही बनना चाहिए, पामिक या सामाजिक मरसाओं मे उनम कर बह अपने आकं कमजोर ही कर सकता है, नना प्रायन नहीं कर सकता। आयेसमाज कई राजनीतिक पार्टी नहीं है। इन के विश्वद दिल की भडास निकालने के दो ही मतनय हो सकते हैं, एक यह कि जनसभ अपने आप को राजनीतिक और असामाजिक पार्टी कहना अरथ्य है। लेकिन दिल ये नहीं मानता। उसके दिल मे बही बात है जो मानस तारावह और सत्त फोहमि

# गलती की स्वीकारोक्ति करो!

(श्री यश जी प्रधान अर्थ्य प्रादेशिक सभा)

के दिल मे है। इन दोनों नेताओं का विश्वास है कि धर्म और राजनीति असम-अलग नहीं हो सकती। इन दोनों नेताओं ने धर्म का प्रयोग राजनीतिक सत्ता प्राप्त करने के लिए किया है। जनसभ का आयेसमाज में उनभना यह सिद्ध करता है कि वह भी धर्म की आड में राजनीतिक शिकार सेलना चाहता है, दूसरे यह कि जनसभ भी भारत की राजनीति मे वही भूमिका



निभाना चाहता है जो किनी समय मुस्लिम लोग ने निभाई थी। मुस्लिम लोग बालो का विषयमा या कि जो व्यक्ति मुस्लिम ली. मे शामिल नहीं हों, वह मुसलमान नहीं है। इसलिए ये किनी ऐसे मुसलमान को सहन नहीं करते थे जो मुस्लिम लीग के अलावा किसी और पार्टी में हो। मी० अयुष-कलम आजाद को ससवार भर के मुसलमान तो मुसलमान मानने थे लेकिन मुस्लिम लीग उन्हें 'काफिर' समझती थी। कावेस अजमान अहरग उठा तक कि मुसलिमिस्ट पार्टी में जितने भी मुसलमान थे, वे चाहे पाच बलत नमाज पढ़ने के पावद हो तो भी मुस्लिम लीग की निगाह में वे मुसलमान नहीं थे। यह फामिस्ट रचना मुस्लिमलीग ने इसलिए अपनाया क्योंकि वह मुसलमानों की एकमात्र प्रतिनिधि मरसा बनना चाहती है। वह कावेस या किसी दूसरी राजनीतिक पार्टी के मूर-मुस्लिम नेता को तो सहन कर लेती, किन्तु किसी मुस्लिम नेता का नाम तक सुनना बगार न करती। इसी प्रकार अब जनसभ बह कोशिस कर रहा है कि हिन्दू पर उम्का एकाधिकार हो जाय। उसे यह सहन नहीं कि किसी और पार्टी के भडे तले काम करने वाला कोई हिन्दू बिराट्टर स्थान प्राप्त

करे। मुस्लिम लीग की तरह वह एक हिन्दू लीग की भूमिका निभाना चाहता है और उन लोगों को हिन्दू मानने से इनकार करने लगा है जो जनसभ मे नहीं है। दूसरी गमी पाटियों मे काम करनेवाले मूर हिन्दुओं को तो वह सहन करता है किन्तु कोई हिन्दू उसे बगार नहीं। आयेसमाज या उनके नेताओं से उनभने का इसके सिवा कोई अर्थ हो ही नहीं सकता। आयेसमाज न तो कभी चुनाव मे भाग लेता है और न इन पर किसी एक राजनीतिक पार्टी का अधिकार है। असत्य आयेसमाजसे ऐसी है, उनके पदाधिकारी जनसभों में हैं। ऐसे भी हैं, जिनके पदाधिकारी सोसलिस्ट हैं। आयेसमाज मे कार्य भी है और ऐसे लोग भी हैं जिनका सम्बन्ध किसी राजनैतिक पार्टी में नहीं। आयेसमाज ने कभी किसी पर आपत्ति की, न किसी पर प्रति-घुम लगाया। जनसभ बालो ने कई जगह आयेसमाज के मच और मगदन का दुष्प्रयोग करने का सन अवय्य किया। दम्बर उरु रोका जहर मगा, किन्तु निराला नहीं गया। अलबत्ता जनसभ का यह प्रयत्न अवय्य असफल हुआ कि वह इनमे आयेसमाज पर तुरणरूप से आक्षिपय्य जमा ले। सभवत इस प्रयत्न की असफलता ही उस श्रेय का कारण है, जो अब आयेसमाज पर निकाला जा रहा है। लेकिन जनसभ बालो ने कभी मोचा नहीं कि यदि आयेसमाजी जनसभ को छोड़ जाय, तो बाकी क्या रह जाता है?

मैं कोटेशन केशचन्द्र जी मे महमत हू कि यह बहम स्वयं ही बारी चाहिए। किन्तु हम समाज मे नहीं छेडा। स्वयं जनसभ के नेताओं मे छेडा है। आयेसमाज किनी भी राजनीतिक पार्टी के उलभना नहीं चाहता और न किसी राजनीतिक पार्टी के लिए अपने दरवाजे बन्द करना चाहता है। किन्तु यह सम्भव नहीं कि जनसभ अकाशियों को प्रस्तन करने के लिए आयेसमाज पर लाच्छन भी लगाओ और यह आशा हो ले कि उसे प्रयुज्जत नहीं मिलेगा। अभी तो आयेसमाज सामोस है। आयेसमाज के कुछ नेताओं में ही जनसभ को उत्तर दिया है। संस्था के रूप मे अभी कुछ नहीं गया। आयेसमाज मे सहन शक्ति बहुत है। यदि वह अकाशियों का हमला सहन कर सकता है, तो जनसभ का भी। किन्तु

हर बात को एक सीमा होती है। यदि जनसभ का यही रवैया रहा तो फिर उसे भी हरकत में आना पड़ेगा। वेहतर हो कि जनसभ अपनी गलती को स्वीकार करते हुए आयेसमाज से शमा माग ले। आयेसमाज को इस बात मे कोई सरोकार नहीं कि जनसभ अकाशियों से गठगोड़ करता है या स्थानन पार्टी से, यह उसका अपना इच्छिकोण है। आयेसमाज चुनाव के पचमे मे नहीं पड़ता। लोय जनसभ को अच्छा समझने मे उसे बाध देय, कावेस को अच्छा समझने तो उसे सफल करा देये। इस ने आयेसमाज का कोई सम्बन्ध नहीं। लेकिन आयेसमाज जनसभ को यह अनुमति नहीं देगा कि वह चुनाव जीतने के लिए एक पामिक मरसा पर कीचट उठाने।

## सार्वदेशिक अर्थ्य प्रति-निधि सभा

अर्थ्य धीर दल केन्द्रीय शिविर १२ जून १९६६ से २६ जून १९६६ तक दिल्ली मे श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी प्रधान सनसलत सार्वदेशिक अर्थ्य धीर दल को अव्यस्ता मे आयोजित किया गया है। इस शिविर के प्रतीय अधिकाशियों के अतिरिक्त आये धीर दल का मेवा कार्य करने के इच्छुक शिविन्ध व्यक्ति भी भाग ले सकते हैं। प्रतिक्षय्य प्राप्त करने के पचात् ऐसे व्यक्तियों की नियुक्ति केन्द्र की ओर से विभिन्न प्रातो मे की जायती। शिविर मे भोजन का प्रवन्ध नि-मुक्त होगा। जो आये धीर दल मे भाग लेना चाहे वह अपना प्रायंन पत्र पथामसम्भ अपने प्रायंन सचालको के द्वारा मन्त्री सार्वदेशिक आये धीर दल दयानन्द भवन, आसफअली रोड, नई दिल्ली के पते पर २१-५-६६ तक भेजे।

शिविराधियों को ११ जून की शाम तक दिल्ली पहुंच जाना चाहिए। जगदेव-मन्त्री सार्वदेशिक आयेधोय दल

## शुभ विवाह

श्री चन्द्रन की अर्थ्य हिलिपी की सुपुत्री आरुमन्त्री दीपती देवी का शुभ पारिषद्दहय संस्कार श्रीरुद्र मन्थरहाल साय श्री सुपुत्र श्री मोतीराम जी साजपत्र नगर सोनोपल निवासी के साथ २१ मई शनिवार को शोभा निष्ठानत हुआ है। सब सम्बन्धी और इष्ट मित्र समय पर पमार कर बर बधु को शुभ आशीर्वाद देने की कृपा

# आर्यसमाज और राजनीतिक्रान्त

(ले० श्री गंगाराम जी श्रमधर)

आर्य समाज की स्थापना श्री दयानन्द जी ने भारतीय संस्कृति अर्थात् वैदिक संस्कृति और सत्य और असत्य का निर्णय करने लोमो तक पहुँचाने के कार्यरहित की थी।

परन्तु यह एक प्रामाणिक बात है कि गलत की ही मध्य सिद्ध करने और लोगों को निश्चय करने का कार्य किसी व्यक्ति द्वारा ही किया जा सकता है। विधेयत, बहु धार्मिक राज्य गणित ही होनी है। अन्वया वह म ग की भावनाएँ, दिल की दिल में ही रह कर भ्रुसव जाती है। ईसायत का प्रचार मुसलमानों के सरक्षय काल में ही हो सका और ईसाईयत का प्रचार भी ईसाई सरकार (विदेशी सरकार) द्वारा ही भारत में शुरू किया गया। इस के अतिरिक्त भारत में यह बात मय के प्रत्यक्ष है कि बौद्ध धर्म का प्रचार और कार्य राज्य सरक्षय में ही हुआ। यही नहीं बल्कि जैनमत और सिखमत भूट को सत्य सिद्ध करने के लिए राज्य का ही आश्रय लेते रहे।

भूटें मत-भावनार अपने भूट को सत्य सिद्ध करने के निचे प्रयत्नशील रहे। लेकिन वेद है कि आर्यसमाज जो संदेह सत्य का पुजारी और सत्य का उपदेश करता रहा है, जिस का सम्मान अपने घर में ही नहीं बल्कि विदेशो में भी देखा जाता है, वो अपने सत्य को फलाने के लिए एक धार्मिक संस्था के रूप में ही रह गया है। बड़े संदेह से कहना पड़ता है कि आर्यसमाज के नेताओं ने अपने गुरु महाश्वरि दयानन्द जी के कथन का अवरोधर पालन नहीं किया। श्वरि ने महा धार्मिक प्रवृत्ति को फलाने का उपदेश दिया महा शिक्षा संस्थाओं में लक्षके और लक्षकियों को बराबर शिक्षा देने का अधिकार और राजनीति को भी सम्भावने का सत्याय-प्रकाश के छेडे समुल्लस में उपदेश दिया था। लेकिन आज हमारी परिस्थिति क्या है? अगर इस को दसनीय परिस्थिति कहे तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। धार्मिक प्रचार में आर्यसमाज सदा ही अग्रसर रहा है। परन्तु कुछ शिक्षा और राजनीति का सम्बन्ध है उस क्षेत्र में आर्यसमाज ने जतना के समुच्च श्वरि कर्मानुसार कोई विशेष कार्य नहीं किया। जेसा कि हमारे सिमो-मुस्लिम नीतियों या मैसाईयों की सत्याय शिक्षा के क्षेत्र में

कार्य कर रही है। शिक्षा के माध्यम से ही अपने अध्यापको द्वारा प्रत्येक बच्चे की मन-नस में अपने धार्मिक विचार कूट-कूटकर भर रही हैं। परन्तु वर्तमान समय में आर्यसमाज की शिक्षा संस्थाएँ सरकार के सहाय-ताय धन देने के लिए किसी प्रकार का कार्य अध्यापको या बच्चों में वैदिक विमर्शो का कार्य नहीं कर रही।

यह दोनों कार्य तभी मयपूर्व हो सकते हैं जब राज्य सरकार द्वारा सरक्षय प्राप्त हो। परन्तु यह बात संदेह सत्य है कि संस्था या व्यक्ति किसी हृदय के सहारे उन्नति नहीं कर सकता। आर्यसमाज के स्वर्गीय नेता ला० लाजपतराय जी या स्वामी श्रदानन्द जी कार्यरत में कष्ट मठेने हुए भी स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए बलिदान ही मयें। केवल दूरी हेतु कि अपना राज्य होने पर अपनी संस्कृति और सम्पत्त को देश में फलाने हुए कृष्णयोग विस्मयार्थम् का कार्य कर सकेंगे। आर्य कीर भवतिरि, रामसदा विमयव और चन्ददेवक आजाद जेमे हज़ारो नेता स्वतन्त्रता के कुण्ड में कुद मयें और एक दिन आर्य कि १५ अगस्त १९४७ को उनका स्वयं रम लाया और स्वतन्त्रता हुई। वही कार्यरत विमको आर्य नेताओं ने अपनी रम-रम का पून देकर महाकुड किया कुछ समय पदन्तु वही कार्यरत आर्यसमाज के विचारी ने भिन्न हुई। लेकिन आर्य नेताओं ने अपना दिल नहीं छोडा जेताके प्र ही राष्ट्रिय स्वयं मेवक सध ने जनसध की स्थापना की उनका यह आश्वानम मिलने पर कि भारतीय संस्कृति गत्यों की उन्नति स्वतन्त्र दिवाने और जनता की मनोभावनाओं का प्रतिनिधि करेगा, वो सम्पत्त आर्य नेता जनसध में शामिल हो गये। यू ही कुछ समय ने पनटा क्षाय कि जनसध रूपिदेवी का श्रु पड उठने लगा और यह बालितक रूप में सामने आने लगी। तो पता चला कि यह कुरुपा लालच और मोह में भरपूर है। जिस को केवल भाषन में शोटे दृक्कृत करने का लालच और तथा प्राप्ति की लालसा सताए रहा रही है। और सी लालसा में उसने अपने सिमें हुए पहले विस्वासन यथा कि

# हिंदी को पंजाब में पंजाबी के सामान्य अधिकार दिया जाए

आर्य प्रतिनिधि तथा पंजाब का विभाजन नहीं होगा

पंजाब आर्य सम्मेलन के महत्वपूर्ण निरुचय

जालन्धर (डाक में) — पंजाब प्रदेश के आर्य समाजों का प्रतिनिधि सम्मेलन श्री० रामसिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि तथा पंजाब की अध्वशना में सम्पन्न हुआ। १२० के लगभग प्रतिनिधि उपस्थित थे। सम्मेलन में भाग की गई कि:—

१. आर्य प्रतिनिधि तथा पंजाब का विभाजन न किया जाए, क्योंकि आर्य समाज ने कभी भी पंजाब के विभाजन की स्वीकार नहीं किया।

२. पंजाब में हिन्दी को भी पंजाबी के समान स्थान दिया जाए।

३. गल आन्दोलन में हुए दुःखित के संदेह अत्याचारों की जांच की जाए।

इस भारतीय संस्कृति और सम्पत्त को प्रत्येक मयस्स विचारसरणएँ जो गो लुका का विनोय, समूलमनो और ईसाईयों का भागनवाधियों पर किये जा रहे हैं प्रतिदिन उपद्रवों का उन्हर और मानुभायो का रा-अभाव हिन्दी को उन्नित स्थान दिवाने को निचे अग्रसर रहेगे। मगर जनसध ने पहले ही रि-लनो का पान कर दिया जा जेप हिन्दी भाषा के प्रम पर भी हाज श्री मे जो अधिवेशन जालन्धर में किया गया उमने भी अपना धार-धार्मिक रूप प्रकट कर दिया। जिस जनसध को आर्यसमाज अपना सरक्षय मयभगी थी उसी जनसध के अधेश्वर श्री बननज मयिक श्री अटलबिशारी ब्राजोई और श्री बजदत्त धर्मो ने आर्यसमाज को दुर-भावा कह कर आर्य गत्यों के मयसध में अशोभनिय मयद करे। यही नहीं जिस हिन्दी भाषा को राष्ट्रीय भाषा होने का सम्मान प्राप्त है अपने शोटी के लालच में उनका भी अपमान कर दिया।

अब इन सब शाली ने भिन्न होता है कि आर्यसमाज की धर-धर की विस्मयमान ने गो यही अच्छा है कि जनमान समय में अपने प्रमिद्ध नेताओं और आर्य कार्यकर्तव्यों द्वारा एक राज्य मया, भारतीय लोक सध के नाम पर स्थापित की जाये और श्वरि श्वर में उन्कए होंगे।

३.२० व नो १

(क) आर्य प्रतिनिधि तथा पंजाब के निरन्तर प्रयत्न के बावजूद भी हुए पंजाब के विभाजन को एक अत्यन्त दुःखपूर्ण घटना मानता है।

२. इस सम्मेलन का यह निश्चय मत है कि परिवर्तित परिस्थितियों में भी पंजाब के आर्यों को अपनी शक्ति, विचारधारा, आत्म सम्मान, और अधिकारों की सुरक्षा के लिए अपना मयजद दिलनी, हुर-माया, शिमानव्य लासमीर आदि नमी क्षेत्रों में प-पुर्ण बनाये गवना चाहिए। उनका ही नहीं अपितु विभाजन के उन्नयन हलान का मुचावला करने के लिए आर्य प्रतिनिधि तथा पंजाब को इस मयुर्ध क्षेत्र में पहले से भी अधिक पुर्वता एज गणित में कार्य करना चाहिये। जिस में किसी भी क्षेत्र में आर्यों के अधिकारों और कार्य को धरि पहुँचाने का महत्त्व न हो।

(ख) यह सम्मेलन धार्मिक करारा कि सरकार द्वारा विभाजन की घोषणा कर देने के बाद भी धार्मिक सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण में उन्नत मय क्षेत्रों को मयसध आर्य एक रहेगे और उनके मयजद पुर्वव्य समूचे क्षेत्र के समान हितों की र्हित में कार्य करने रहेगे। इस सम्मेलन की यह मान्यता है कि लयाकथित पंजाबी मूय में भी मयमय ४० प्रति-शत जनता को धार्मिक, सांस्कृतिक तथा मानुभावा हिन्दी रहनी। अन-वह सम्मेलन मयकार में भाग करता है कि अधिवेशन की मान्यताओं तथा प्रजाताणिक मिश्रणों को ध्यान में रखते हुए पंजाबी मूया में हिन्दी को न केवल राष्ट्रभाषा के रूप में अपितु क्षेत्रीय भाषा के रूप में भी पंजाबी के समान अधिकार दिया जाय और पंजाबी को मयपुर्व दिवानगरी और मयसधवी लिपि में लिखने पढ़ने की शूटी दी जाए।

(ग) मनीष परिस्थिति में यदि पंजाब में हिन्दी अध्याय आर्यों के माध किसी प्रकार का अभाव हुआ या उन के मौखिक अधिकारों पर कुठाराघात हुआ, तो अतिशयोक्ति, दिल्ली व हिमा-चल (सिप पृष्ठ ६ पर)

# स्वास्थ्य विचार

## आसनों से शरीर की पुष्टि

इन भौतिक शरीर को चिरस्थायी बनाने के लिए जहां आहार, स्थान, पुष्टि, बहाचर्य आदि अनेक सामानों का आश्रय लेना पड़ता है। उनमें से शरीर को पुष्टि के लिए आसनों का प्रयोग भी अनिवार्य है इससे शरीर पुष्ट और आयु की वृद्धि होती है। जीवन का वास्तविक आनन्द प्राप्त किया जा सकता है।

वैदिक काल में ८४ आसनों का विस्तृत वर्णन उनके लाभ तथा करने का विधान भी दिया है। इस पर अनेक छोटे-मोटे ग्रन्थ लिखे जा चुके हैं। वर्तमान समय में बंदा रामसिंह जी कविराज का लिखा **आरोग्य प्रकाश** नाम **आसनों की विधि** ग्रन्थ पर्याप्त स्थिति प्राप्त कर चुके है।

इस पर आनन्द स्वामी जी महाराज के कुछ विचार पाठकों के सम्मुख रखते हैं।

“शरीर में शक्ति, बुद्धि के सम्बन्धिता, मन में प्रसन्नता और हृदय में विश्रान्ता, ये चार गुण जिसके पास हैं उसी का जीवन सफल है, और इन सब का आधार शरीर का नीरोग रहना है। हमारे पूर्वजों ने शरीर को स्वस्थ रखने के लिए ऐसे साधन खोज निकाले जिन पर ध्यान करने से शरीर और लाभ प्राप्त हुए, उन्हीं साधनों में एक बड़ा साधन योग आसन है। यह पुस्तक उन आसनों का भौतिक विवरण देकर बताती है।

### सबसे पूर्व सिद्धासन की विधि

इस आसन का नाम सिद्धासन इस कारण है कि सब सिद्ध महापुरुष इसी आसन में बैठकर मानसिक शान्ति, भाव्य ज्ञान, और ब्रह्म ज्ञान की सिद्धि के लिए साधना करते रहे हैं। हस्तारण्य इसका नाम सिद्धासन पदने का यह है कि इस आसन का विशेष सम्बन्ध वीर्य संस्थापन से है। इसके अन्वय से सम्बन्ध अङ्गोष्ठी (Testicles) से वीर्यकोष (Seminal vesicle) की ओर जाने वाली मार्ग (Seminal cord) दोनों एरिक्टो के बीच से दब जाती है और इस प्रकार निरन्तर दबी रहने के कारण अनन इरिक्टो में पैदा होने वाली अनावश्यक उत्तेजा (Innecessary Excitement)

### पद्मासन



मन तथा इन्द्रियो को माल रखने तथा ध्यान को एकाग्र रखने के लिए

शान्त हो जाती है। जिनमें वीर्य-संरक्षण में बड़ी सहायता मिलती है। वीर्य संवर्धन वास्तविक का सार रूप होने में हमारे मानसिक, आन्तरिक और सब शरीर को शक्ति, सकृति, और उत्साह प्रदान करता है। मुझ पर तेज और चमक उपनयन करता है। ब्रह्मचर्य में प्रबन्धन की सिद्धि को इसी आसन में बैठकर प्राप्त किया जा सकता है। जो मानसिक शान्ति, आन्तरिक शक्ति को प्राप्त करने तथा परमात्मन्द के स्वीकृत उस सन्निवृत्त स्वरूप परमात्मिता की प्राप्ति को माध्याम की सिद्धि भी इसी आसन पर बैठ कर अर्थात् करने से प्राप्त होती है। इस कारण ही उमाका महापुरुषों ने सिद्धासन रखा है।

मानसिक शान्ति, आन्तरिक सतोष, मानव का परमात्मन है, जिनके माध्याम से ब्रह्मानन्द का वह अर्थकारी बनता है। हमारा जो सब भौतिक वस्तु प्राप्त करने भी मानव का मन शांत और स्थिर नहीं होता, आत्मा की भांति में नहीं होता, मानव कदापि सुख शांति और आनन्द का अधिकारी नहीं बन सकता। यदि मन शांत और स्थिर हो तो सब भौतिक पदार्थ मानव के लिए सुख, शांति और आनन्द की प्राप्ति में सहायक सिद्ध हुआ करते हैं। इसके विपरीत वे सब अनावश्यक भौतिक विकास से बुद्धि पर अंधकार का पर्दा

# श्री बाल गृह व श्रीयुद्धि की पंजाब में पंजाबी कन्या सदन का श्री मेहरचन्द जी खन्ना

(केन्द्रीय मन्त्री भारत सरकार) द्वारा निरीक्षण

दिल्ली (शुक्र से) भारत सरकार के मन्त्री श्री मेहरचन्द खन्ना ने १० मई की सुबह ८ बजे सार्वजनिक राजधानी की प्रमुख समाजसेवी सस्था आर्य बाल गृह व आर्य कन्या सदन का निरीक्षण किया।

सम्बन्धों की सफाई, व्यवस्था और बालकों की आगोशान देख कर श्री मेहरचन्द खन्ना अत्यन्त प्रभावित हुए। उन्होंने कहा कि मुझे इस सस्था को देख कर अपार हर्ष हो रहा है और मैं अश्चर्य करता हूँ कि सस्था की जितनी भी महायत्ना सम्भव हो हूँ करती पावति।

## मैत्रि के धनी वीर शिरोमणि शिवाजी

शिवाजी ने जो सफल, साहस, वन और पुरुषार्थ में आर्य जाति की रक्षा की थी उसे कौन नहीं जानता है शिवाजी के जीवन को देखें तो सत्य सिद्धि के विषये हमें अनुभव प्रेरणा का स्त्रोत मिलता है।

पढ़ जाया करता है और मानव सब प्रकार के भौतिक सामानों को प्राप्त करने भी अज्ञात दिखाई देता है। अतः मानसिक शांति और आन्तरिक सतोष तथा ब्रह्मानन्द के इच्छुक सब मानव वस्तुओं को इस आसन में बैठ कर मन से कम एक-दो घंटा प्रातःमात्र प्राणायाम और उपासना द्वारा आत्म ज्ञान की वृद्धि का अन्वय अवश्य करना चाहिए—

### सिद्धासन करने की विधि—

विधि सरल है। बाएँ पैर को एही गुदा और मूत्रेन्द्रिय के बीच के स्थान पर रखें और दाएँ पैर की एही को मूत्रेन्द्रिय के ऊपर या जाए और मूत्रेन्द्रिय का मूल दोनों एरिक्टो के बीच दब जाए।

### लाभ

मानसिक शान्ति प्राप्त करने में के दोनों को हूर करने में सहायक है। साधना, उपासना में उपयोगी, वीर्य रक्षा में सहायक है। नोट—अनेक अंग में पद्मासन का वर्णन पवित्र।

# हिंदी की पंजाब में पंजाबी के सामान अधिकार....

(पृष्ठ ५ का सेष)

बल के आर्य कन्यु पंजाब के आर्यों के साथ मिल कर सम्बन्धों का हल करने में साथ होने और पंजाब के आर्य सदा यह अनुभव कर सकेंगे कि हम अकेले नहीं हैं, अतः उक्त क्षेत्र के सभी आर्य उनके साथ हैं।

(४) सम्मेलन की दृष्टि में कुछ व्यक्तियों द्वारा आर्य समाज के संगठन को स्थिर-मिन्न करने का प्रयत्न सभी विभागात्मक सांघटनिक मनोवृत्ति को प्रोत्साहन देना है, जिनके कारण पंजाब का विभाजन हुआ है और जिस का आर्य समाज सदा विरोध करता रहा है। पंजाब की वर्तमान सम्बन्धी परिस्थितियों में यह चेष्टा आर्यसमाज के हित की दृष्टि से अत्यन्त अप्रति-जनक और अनुचित है।

(५) सम्मेलन आर्य समाजों से प्रायः करता है कि—

१—प्रत्येक दृष्टि से आर्यसमाज के संगठन को शक्तिशाली बनाने का प्रयत्न करे।

२—अपने उल्लंघनों, कथा तथा प्रचार आदि की व्यवस्था पूर्ण उल्लाह से करे।

### प्रस्ताव सं०-२

यह सम्मेलन पंजाब पुलिस द्वारा पंजाब के शांतिपथि नागरिकों पर किए गए बर्बर अत्याचारों की धोर निम्ना करता है। और सरकार से माग करता है कि इस सारे काष्ठ की न्यायिक जाय कराई जाए।

### प्रस्तव सं०-३

यह सम्मेलन पंजाब सरकार के शराब के प्रचार को प्रोत्साहन देने की नीति को अत्यन्त अनुचित समझता है। सम्मेलन की माग है कि सरकार शराब के प्रचार पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाए।

### प्रस्ताव सं०-४

पंजाब सरकार द्वारा सह-विस्था की नीति को प्रोत्साहन देने को यह सम्मेलन अनुचित और भारतीय सम्बन्धों के विपरीत समझता है। सम्मेलन की माग है कि सब बालकों और लड़कियों की शिक्षा का प्रबन्ध पुष्क-पुष्क किया जाए।

❖ कनी नहीं! मूर्ति पत्थर की बनी होती है। वेद में कहीं मूर्ति पूजा का विधान नहीं। मूर्ति पूजा से आर्यों को कोई लाभ नहीं हो सकता।

गतक से आने

महर्षियों और वेदों के आलाओं के स्थान पर जिस देश के पय प्रदक्षक सिन्धुभाओ के एक्टर होंगे उस देश का सर्वनाश न होगा तो और क्या होगा। आज कार्ये साक्षात्पत्र में चरित्र बल की ओर कोई ध्यान देने वाला नहीं है। भारी और निवारण की अग्नि की ज्वालाएँ घपक रही हैं। देश की सङ्कति और सम्पदा कंशान परस्ती की आप में जित्त की बिगारियों को समाज धु-नु करके जल रही है। देश आज निवारण के पय पर वेदोक टोक प्रतिलक्षण आरंभ बंद रहा है। आज विव्व की मानवता लज्जित और कलज्जित हो रही है। आज वेद शास्त्रों, उप-निषदों का रामायण और भीता केपदवेधों का उपहास उडाना जाता है।

आज देश की निचित्र अवस्था हो गई है। आज देश में भ्रष्टाचार बड़ रहा है। इसका मूल कारण यह है कि आज मनुष्य ईश्वर और धर्म को भूल चुका है। वेद ईश्वर और धर्म धारण किये बिना मनुष्य में ओर पशुओं में कोई अंतर नहीं रह जाता है।

विव्व वदनीय महर्षि दयानन्द जी वैदिक युग का निर्माण करना चाहते थे। महर्षि दयानन्द अविद्य, अकार की दूर भया कर वेद विद्या का प्रबल प्रचार करना चाहते थे। महर्षि दयानन्द वैदिक राज्य विधायक का मूल संचालन कर के मानव की देव बनाना चाहते थे। विव्व के मानव मान को महर्षि दयानन्द जी धर्म अर्थ, काम तथा मोक्ष का अधिकारी बनाना चाहते थे। सोलह सत्कारों के अधार पर मानव का महर्षि दयानन्द निर्माण करना चाहते थे।

महर्षि दयानन्द जिस काम को बकते रह कर, कर गये उस कार्य को हम कर्तव्य की सव्या में रूढ़ कर आर्य भार्य नहीं कर पा रहे हैं। इसका मूल कारण क्या है ?

इसका मूल कारण यह है कि हमारे जीवन में श्रदानन्द जैसी अज्ञा नहीं है। महर्षि दयानन्द जैसा तप नहीं है। धर्मवीर पं० वेङ्कटराम जैसी तपत्र और आर्य नहीं है।

ऐ आर्य बन्धुओं आओ श्रदानु रूपों अपने निज स्वार्थी को त्याग कर राठु निर्माण महायज्ञ में जुट जाओ। वैदिक साम्राज्य स्थापित करके वेद-विद्या के प्रचार में अपनी सारी शक्तियों को लगा दो।

# आर्य समाज और वैदिक साम्राज्य की स्थापना

## ले० श्री धर्मवीर जी अश्वत्थ धर्मवीर ग्रन्थमाला

### सराय रुहेला नई देहली-५

आज यह ध्यान देकर सुनो। राज्य सत्ता के बिना इस युग में देश का सुचार नहीं हो सकेगा। इसलिए आगामी चुनाव में देश-द्रोहियों को धर्म-विरोधियों को अपना बहुमुख बोट कदापि मत नो। आर्यसमाज के उम्मीदवारों को ही अपना बहु-मुख बोट देकर वैदिक साम्राज्य की स्थापना में जुट जाओ।

बदि भारत बंध देश को पुन. विव्व को गुरु बनाना चाहते हो तो आर्य भार्यो और बहिनो राज्य शासन का मूल संचालन करो। अपने कोथती बोटों के अधार पर धर्म सूर्य कांशस साम्राज्य को सभार्य करो। कार्य में देश का सुधार, धर्म की रक्षा की आशा रखना निरा ध्रम है। मुझे पूर्ण आशा थी। विव्वास है कि भारत की समस्त आर्य समाज सत्ता सत्तात धर्मा भार्य बहिन अपना सनातन वैदिक सङ्कति की रक्षा के लिए समुत्सुह रूप से प्रबल प्रयत्न करके राज्य सत्ता को अपने हाथ में लेकर देश का सुधार करेगी।

### देश का दयानिय चित्र

आज देश में मुसलमानी और वेदोन्जगरी का नम विव्व हमारे सामने है। आज तक ढकने के लिए लोभो क पास वरत्र नहीं है। पैठ की जवाला को शान्त करने के लिए अन्न नहीं है। ऐसी अवस्था में अन्धा धुपुप नम अस्तोिन कियुं का निर्माण करके मनोअनन के नाम पर जगत के सुन-पत्थीने की कमाई की नूट मच रही है। अस्तोिन कियुं का तत्र दितकर बहिकार करे।

भारत में गी वध कार्यस के मस्तक पर कब्रक है। आज स्वराज्य हुए कियेने धर्म बीत गये हैं इतने दिनों में गोबध बढ जिस सरकार ने नहीं किया है उस कार्यस के उमेवधारो को बोटा देना गोबध को प्रोत्साहन देना तथा पाप को प्रोत्साहन देना है। अतः इस कार्यस साम्राज्य में सुधार लाने के लिये हमें सोच विचार कर काम करना होगा। विश्व देश में कनी दूध धुत की नदियां बहा करती थी उस देश में आज सत्ता सत्ता किये

पानी मिला दूध बिग रहा है। दम रूपया कियेने धुत किये रहा है। आज जीवन उपयोगी वस्तुओ में मित्रावट चल रही है। देश रसातल की ओर जा रहा है।

**जब रोम ऊल रहा था**  
जब रोम ऊल रहा था तो नीरो बासुदी बजा रहा था। उसी प्रकार आज साम्राज्यक शासिया भित कर देश को टुकड़ कर जा रही है, घुटने टेकनी जा रही है। कार्यस के कर्मधारय सफल की नीद में चादर तान कर तो रहे हैं।

**पाकिस्तान क विप बूढ**  
कार्यस के नेनाओ ने पं० जवाहर लाल जी नेहरू की अथक बल के सातल ए पाकिस्तान बना जिन मुसलम लीग ने पाकिस्तान बनवाया उसी लीग से कार्यस की शासक बोटे लेने के लिये पडबन्धन करले है। कार्यस सरकार की कृपा से पजाब नहीं रहा है। पजाब का अस्तित्व समाप्त कर के रख दिया गया है। पाकिस्तान के बटवारो में अरबो रसयो की सम्पत्ति हिन्दुओ की पाकिस्तान में रह गई थी। लाखों आर्यमी जान से मारे गये प। कराची के बाजारो में हिन्दु युवा नटकियो का नया जन्म निकाला गया था। उन दुखद घटनाओ के समाचारों की स्वाहो अनी सुख नहीं पाई है। पाकिस्तान से समस्त हिन्दुओ को निकान दिया गया है। ऐसी अवस्था में अब भारत के मुसलमानो को पाकिस्तान में कार्यस सरकार को नहीं अजती है। मुसलमानो को भारत से रहने का कोई अधिकार नहीं होना चाहिये। भारत में रहे हुए मुसलमान भारत सरकार की जडे सोलसी करके फिर देश के बटवारो का न हल्ला ओर भयासये।

आज देश में ईसाई मिशनरी लाखों की सख्या में आकर नगाओ को बहका कर नगावलड बनाने में लगे हुए हैं परन्तु ईसाई मिशनरियो के उपर कोई रोक सरकार नहीं लगा रही है।

आर्य बीरो देश और धर्म को बचाने के लिये कमर कस कर राजनीति में कूद पडे। वैदिक राज्य साम्राज्य स्थापित कर तब इस सत्ता में जीवित रह सकते हो अन्धया जीते की करे समाप्त हो।

# विचार-तरङ्ग (१०)

(श्री रामभूति जी कानिया, एम० ए० नई दिल्ली (१०))

अरबो के प्रसिद्ध विद्वान श्री कारनार्डेन की बडी मुद्रर उक्ति है। 'The latest gospel in this world is know. They work and do it' अर्थात् विव्व का यह नवीनतम सिद्धान्त है कि अपना कार्य जानो और उमे कर डालो। बात निश्चिन्त रूप में म्युनित्वायक है और यदि काम नित्त हो, पाप तो आनन्द और प्रसाद को हमसे निवमान भी म्यान नहीं है। कार्य को जान लेना पर आवश्यक है। उस कार्य की पूर्ति एक अनप विषय है। कार्य को जान लेना जान है और करना कर्म दोनों का सामञ्जस्य हो पाप तो जिनकी स्वर्ग म्यान है। जीवन में क्या करना है इसी का निर्णय करने में जीवन म्यान हो जाना है और वदो-बूढ होकर धार्मिक-बन का आश्रम लेना पडता है। अतः जो कुछ भी हम मोचे उसे धरुन कार्यरूप में आने के लिए उताव हो जाए तो आनन्द की उप-सत्थी हो सकती है।

बधा कुछ ऐसी है कि जब कोई बडा कार्य करने के लिए उताव होने है तो हमारा ध्यान प्राय. अनेक-नेक शूद्र कर्मओ में उलभ जाता है और हय पय में भ्रष्ट हो गी जाते हैं। इस प्रकार गति अकञ्च-नी हो जाती है और मुस्य कार्य अकृत अथवा अपुत्र रह जाता है। ईश्वर में प्रार्थना करे कि हम अपने जीवन के कार्य का निर्णय कर को और तप-आन उम्को करके ममय हमारा ध्यान शूद्र बानो में न उलभे।

कार्य करने में धरशरना कार्यरता है। यदि कोई व्यक्ति श्रेष्ठ काम के निमित्त पूर्ण मन में कठोर परिश्रम भी करता है, उमे कभी अकान अनु-ब्रम नहीं होती। इस प्रकार के कार्य करने में धोर परिश्रम करते-करते कोई भरा हो, ऐसी बात आज तक तो हम ने सुनी नहीं।

परिश्रम करने के लिए ममय की प्रतीक्षा करना व्यर्थ की बात है। सारी शक्तियों को सजो करके कार्य करने का समय बही है जब यह विचार मस्तक में आये। कार्य करने का समय यही और केवल यही है। मविष्य के लिए यह स्थापित करना (वैप पृष्ठ ८ पर)



विचार-तरंग

(पृष्ठ ७ के निम्न)

कभी भी लान्धास्य नहीं होगी। निम्न पुरजो को अपने पुरजामों के बन पर ही सकलता मिलती है न कि किसी और कारण से 'किया सिद्धि' सन्ने भक्ति महात्मा। जतः सत्य सिद्धि के लिए सतत कार्य करने का दृढ़ सकल्प करने एक दलु भी स्वयं यथात्ता अधो-भनीय है। कई बार ऐसा देखने में आता है कि हम कार्य के समय को परस्पर की प्रसंसा में अपना चापलुती से ही गंवा देते हैं। स्मरण रहे कि नीतता समय हमेशा के लिए नीत रहा है और प्रवल करने पर भी वह हाथ नहीं लगता। फिर पछतावे क्या होत सब चिन्तिया न्यून गर्द भेते। अतः वर्तमान को हाथ से निकलने न हो।

पूर्वजो के मुशयान करना बुरा नहीं। बीरो का पूजन प्रत्येक देश किसी न किसी रूप में करता ही है। किन्तु पूर्वजो के कार्यों की रटना लगाने से ही तो कल्याण होने वाला नहीं। कल्याण तो अपने ही कार्यों से होगा। अतः अकर्मयता और निष्कर्मता के भूविष विचारो को छोड़ कर्मय एव लक्ष्मि होने की परम आवश्यकता है। धाद ल्हात आपकी आशु को वर्षों से नही कार्यों से ही जाना जाएगा। कमजो से ही जीवन सुखय एव सु-भय बनता है। उर्दू के एक पाठर ने टीक ही लिखा है।

'अमल मे जिवन्ती है बनती है जलन भी जहन्नुम भी।'

कार्य करने के बाद फिर आगे की चिन्ता व्यक्त का काम नहीं। कार्य करते समय कार्य-कर्ता के मन मे यह धारणा न रहे कि उसकी किसी की चिन्ता ही।

वठनीय एवं सननीय साहित्य

वेद अथयन ५/- नीताधार ७५/-  
पैरे, जानमगीर के पत्र १/-वेदायम संस्कार १/५० पैरे, पैरो आठ रोचक कहानियां ७५ पैरे, लोकट ७५ पैरे, सबखशते बीकन ५० पैरे, कर्म मीनासा २/२५ पैरे, सतति निधयन क्यो और कीसे १५ पैरे, वैदिक व्याकरण भास्कर ६/-  
आयाम बोधक पत्र ११/२० पैरे, साहित्य प्रचारक १/-  
जयदेव ब्रदस बडोदा-१

आर्यसमाज शू

देहली का टाबा बां

ते १५ मई तक बड़े मनाया गया। जिस में राम जी महोपदेशक आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि जालन्धर की रात्रि को बेद कया होती रही तथा श्री राजपल मदन मोहन जी के भजन होते रहे। उत्सव में अनेक विद्वान सन्यासी तथा कवियण पचरे।

आर्य जगत् रोहतक के समाचार

ईसाई अराष्ट्रीय प्रचार विरोध सन्निधि रोहतक की ओर से ५० ह० केरल मे चलने वाले शुद्धि-यज्ञ मे अहित किए गए।

आर्य केंद्रीय सभा के लक्ष्याधन मे रोहतक सभर की सपल आर्य-समाजो का समिन्धित सलन आर्य-मायाज माडल टाऊन मे दिनाक १२ जून को सम्पन्न होगा।

केरल मे शुद्धि कार्य मे निरत प्रो० प्रजेन्द्र जी जिज्ञानु लिखते हैं कि यहा शुद्ध होने वालो की तो भर-मार है, परन्तु अर्वाभाव के कारण कार्य रुक ही गया है। अर्वाभाव इतना विकट है कि शुद्धि यज्ञ के बाद प्रसाद बाटने के लिए भी भन नहीं है। यदि आर्यसमाज इस समय न

महानुभावो स प्रायथा ह कि २० ३५ कार्य में दान देकर हाथ बटाए। दान निम्न ढते पर भेजे;—

श्री नरेन्द्र मूषल आर्य जी.ए. c/o Aryan youth league & Publishers of "Arya-Bharthi" P.O. Chengannur (Kerala)

आर्यसमाज विक्रमपुरा जालन्धर में

१५. से २१ मई तक प्रतिदिन शानदार कया क काय-क्रम (समय : रात्रि ८ बजे से ९-३० बजे तक)

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पनाज के प्रसिद्ध महोपदेशक श्री बोम्पू प्रकाश जी आर्य, पनाज भर के प्रमुख तगरो का दौरा कर के तथा सामयिक परिस्थितियों का पन्मीर ध्यान करते आ रहे हैं। 'आर्य समाज का आज की परिस्थितियों में क्या कर्तव्य है' इस विषय पर वे बेरो और ऐतिहासिक घटनाओं के प्रमाणो-साहित्य अपने विचार जलता के सम्युक्त प्रस्तुत करते। कया से पूर्व श्री जलन्धर जी के मनोहर भजन हुवा करते।

सपलत धर्म-प्रमियों से नञ्च निषेधन है कि निम्नित समय पर परिवार सहित दर्शन देकर साज उठावें।

साईं दास भल्ला मन्नी सभाज

आर्य समाज सांवा का उत्सव

२४, २५, २६, अर्धन ६६ को हुवा जिस मे २० अर्धन से २३ अर्धन तक पूज्य प. ओम प्रकाश जी प्रयाग कया और क. जगत राम जी मन्नीर जी के मनोहर भजन हुवा। २४.५.६६ को पूज्य यश जी प्रयाग समा प्रधान का भाषण हुवा, २६, को डा० ओम प्र ाश जी, सकल स्कानर, प. चन्द्र लन जं और पूज्य प. ओम प्रकाश जी के उपदेश और प. आम चन्द जी व कं. जगतराम जी व श्री वल्लोराम जी के मनोहर भजन हुए जिनका जलता पर भारी प्रभाव पडा। वेद प्रचार मे १९१/- मार्ग श्यय ५२/- दिया गया।

शोक समाचार

अर्य समाज सेक्टर - चंडौगड़ मे श्री परमेश्वरी दास जी बहन के आकस्मिक निधन पर गहरा शोक प्रकट किया गया तथा उनको आत्मा की सद्गति व परिवार को शानति व धर्म के लिए प्रभ से प्रार्थना की गई।

(ब) स्वर्गवास होने से पूर्व लता जी ने आर्य समाज को ५१००/- का दान देने का जो अनिम आदेश दिया। उसके प्रति समाज उनका आभार प्रकट करती है।

(स) श्री फकीर चन्द जी मितल एडवोकेट के देहात पर भी शोक प्रकट किया गया।

जिला वेद प्रचारिणों सभा होशियर पुर

अपनी बैठक में श्री बा. निरवाही साप जी रिटायर्ड रेलवे अक्वॉंटेंट, बापीपूर की मूयू पर हासिक शोक प्रकट किया। लता जी की पश्चि अरमा को सद्गति प्रदान करने की प्रभु से प्रार्थना की। सूती प्रकार जी परमेश्वरी दास जी बहल को आकस्मिक मूयू पर भी गहरा शोक प्रकट किया तथा उनके परिवार से गहरी सम्बन्धा प्रकट की गई।

म० हंसराज वैदिक साहित्य विभाग

विश्रमार्थ आबधक पुस्तकें  
चारों वेदों के सजिन्द मूल सैट प्रति सैट २५.५० पै  
ऋग्वेदादि भाध्य भूमिका ३.०० पै०  
संस्कार विधि .२२ पै०  
दयानन्द द्विज लाक्ष एण्ड वर्क (अग्नेओ में) लेखक श्री धर्ममानु जी एम० ए० वायस चांसलर कुरुक्षत्र यू नवमिटी  
सूयम १.५० पै०  
सत्यार्थ प्रकाश (उर्दू) ३.५०  
सभी आर्यसमाजों व आर्य संस्थाए इन पुस्तको को उच्च स्थान देकर सुशोभित करें  
प्राप्ति स्थान— म० हंसराज साहित्य विभाग आर्य प्रादेशिक सभा निकट कोर्ट जालन्धर

मुद्रक व प्रकाशक श्री सतीपराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा बीर मिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यसमाज कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित प्राप्ति—आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



दलीकोल नं० ३०१७

[आर्यपारदेशिक प्रतिनिधिमहा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र]

Hogd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ पैसे

साप्ताहिक मूल्य ६ रुपये

२५ २६ अक्ष २२)

१६ अप्रेल २०२२ रविवार—इशानमन्दाद १४१— २६ मई १९६६

(तार प्रादेशिक) जालन्धर

### वेद सूक्तयः

#### शिशिर इन्नु रन्त्यः

यह शिशिर-वृक्षक की शब्द की व्याप्री है। जीवन में किसी अकस्मा की आ जाती है जैसी पक्षभट में होती है। मनुष्य मनुष्य सिद्धि ला बन जाता है। इन्नु इत वसा में जी निरुण न होना चाहिए। मरुत न लाने।

#### त्वा स्तुवन्ति कवयः

हे परमेश्वर! ज्ञान की माते कवि मेघाशो, ज्ञानीज सरा स्तुति करते हैं, जितने भी बड़े ऽ विद्वान् ज्ञानी तर हैं, वे माते रान् यशोना—आने हैं। तेरा ही स्तवन करते हैं, स्तुति के नील माते रहते हैं—तेरे लोना है।

#### अन्न आयूषि पवम

हे प्रकाशमान प्रभो अन्नियेव आप कर्ण करने के हेतु आयु स्वस्वय दीर्घजीवन प्रदान करे। आप की कृपा से हम दीर्घजीवी, पयास्की कीर्ति बाने लया शरीर बाने बनकर कार्य करते रहे—

#### श्रीष्य इन्नु रन्त्यः

यह गर्मी की शब्द की हूँ व्याप्री है लपते और मूलमाने वाली गर्मी से भी रहना न चाहिए। इस से भागना नहीं चाहिए। यह भी व्याप्री समझो। जीवन में ऐसी दशा आने पर उदास निरास कभी मत हो जाना।  
सा म न वे से

### कांग्रेस दल जब चाहेगा मैं त्यागपत्र देदूँगी

श्रीमती गांधी की घोषणा  
गांधी जी और नेहरू जी की मूलभूत नीतियों  
से हटने के आरोप सर्वथा गलत

समा 'वादी समाज की रचना का कोई विकल्प नहीं

मैं मेरा भावना की नेकर प्रयास-की करी हूँ : गेमकं के लिए कर्वाई—अज महा प्रयास-की शीतल गांव में कार्य में सह-मनित के बधिवेशन १० मन्वी भक्त करे हुए कहा कि "यदि मुझ पर अपने पिता एवं पितामह के सिद्धांतों की रूढ़ नीतियों से हटने का बांी नयाया गया तो मैं एक दिन में प्रयास करने पर तैयारी हूँ।" शब्दों मांसे ने काले काले वरु चरन की कर्तव्य की वैदेशिक नीतियों के निर्यात के समय विन्दुव निकट समर्प दे री है और उन्हे विरुद्ध नहीं समझती है। प्रयास-की ने कहा कि वह इन्विए प्रयास-की करी है कि छोटी की बेहतर दंग से मेरा कर मकं नाकि किसी ऐवई के लिए। यदि लम्का दर उन्हे नहीं चाहता तो वह किसी भी समय त्यागपत्र देने की तैयार है।

श्रीमती गांधी ने जाने दर के बोरो से अबीन की कि वे सगे मत जेवों को गुणाकर समर्पित हों, माहन से जाने खारने महान करों का सचना करे। सपाजब-दी-नवदवा लागू करने के जिवा हगरे समयने कोई विकल्प नहीं। कार्य म ब्रज नरेक ऐसे दालिद प्रती ब्रह्मर निभा नहीं रही जो उनके विरुद्ध है। श्रीमती गांधी ने दः शलोचना से मुहामति प्रकट की कि कार्य म डागा स्वीकृत बनेक प्रस्तावों को गुणुंवाय निर्यात नहीं किया गया। यह इन प्रमाणों की जांच करती। सरकार का सं के लघो जिकार नहीं मान लकनी कृषिक महा विजिन मान-नो पर अनर-मनन दृष्टि-कोसल है। प्रयास-की ने कहा कि जब तक आर्थिक विकासकी गति तेज नहीं होती तो के लिए कोसल का कोई बर्ष नहीं होगा।

विदेशी महामता का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि जब तक उनके इन्कार कर देना 'मार्कोस' नहीं हो।। साध स-म्या के बारे में उन्होंने कहा कि यदि नहीं समती है तो उसे मुधारना होगा। साका निक प्रय कल्प व्याप न बढ़ाने का है। यदि विद्वान् ने प्रसिध व की तो राउट लकाह हो जायए। श्रीमती गांधी ने कहा कि वह तक भारत का सम्पन्न है उसे संसार की कोई शक्ति उसकी सर्वमान्य नीतियों से हटा नहीं सकता। गांधी विदेशी दबाव अकेले खारत पर ही नहीं सभी देशों पर है निश्चि हने अपने उन्पर गुना शरोगा है।

### देश की सर्वोत्तम माध्यम

विज्ञान : सूर्यमनुष्य

परमात्मा—कम महा राम-पदिवा टिंग लनेक के गति-नोपिक निररको) एवं की कल्पना का से हुए पंजाब विचारधारायय के उाकूनन की गुणुंवायु जी ने कहा कि विचार ही माध्यम है जिस से देश समृद्धि के विविध पर उन्नत सकता है। विचारिय वेव्य का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि यदि हरे सही दंग से मवाई का बिन्दु इतना है तो केवल विज्ञ ही हो सकती है और यह भी सब बर कि विचारः सही इन से ही आ।। पंजाब विचारविद्यलय में मुदतम र्चमियरविद्यय बोनेने वाली टीम के विचारियों की सर्वोन्नत करते हुए की गुणुंवायु जी ने कहा कि यह भी जिविय अंग नहीं होती परािएव बलिक उन्हे दलते की वेहतर बने की शोचिय शारी लकनी चाहिए। उन्होंने विचार जाने वाले श्रमपासको से अपने उन्पर विचारिय पैदा करने और समाज में कीनी गुणुंवायु की हुए काले में लोगों को संरक्षण देने की बोधि बो।

★ महर्षि दयानन्द और स्वामी श्यामनन्द तथा सर्व वीर पं० नेमराय की के अर्थिय लकनी को प्रयास प्रुंरक सुने और उनके स्वामी को और उनके लकनी के लकनी को प्रुंरक करने के लिए ओरेम् का महा भारक करने लिए पर कलन बाय कर लोने की ललकना कर, विचारिय पय पर आगे बढ़ो।

पिपताप—श्री संतोषराज जी

मपादक—त्रिलोकचन्द्र श

**इन्द्रिय स्वर्गोः मन्त्र नं० २**

ओ बाक् बाक् । ओ प्राणः प्राणः । ओं वल, वलु, । ओं श्रोत्रम् श्रोत्रम् । ओ नाभिः । ओ हृदयम् । ओ कण्ठः । ओ शिरः । ओ बाहुभ्यां यशो बन्धम् । ओ करतल कर पृष्ठे ॥

शब्दायः— बाक् बाक्—मेरी बायीं और बाहीं के उच्चारण करने वाली जिह्वा को) प्राणः प्राणः— मेरी नासिका तथा नासिका द्वारा लिए जाने वाले प्राण वायु को ) वलुः वलुः— मेरी आँख और आँसु द्वारा देखने वाली शक्ति को ) श्रोत्रम् श्रोत्रम्—(मेरी कान और कानों द्वारा सुनने वाली शक्ति को) नाभिः—(मेरे शरीर के समस्त भागों में नय-नाडियों द्वारा परिवर्तित पृष्ठबन्धे वाली नाभिः अर्थात् शरीर के केन्द्र स्थान को ) हृदयम्—(मेरे शरीर के मध्य और स्वच्छ लून को निकालित और प्रकृष्ट करने वाले एवम् जीवन स्थिर रखने वाले दिल किन्तु मृत्यु-रोग-रक्षावाज के उपलब्ध करने वाले कण्ठ कृषी वक्त्र को )

शिरः—(मेरे शरीर सर्व-उत्तम भाग अर्थात् शिर को)

बाहुभ्याम् (शरीर के समस्त अंगों के रक्षा करने वाली दोनों बाहुओं को) यशो बन्धम्—(एसा बन्ध, जो यस पृष्ठ ही)

करतल कर पृष्ठे—(शरीरों हाथों को वृद्धे तों तथा हाथों के पीठ वाले भागों को)

सर्तल अर्थ (पथ मे) :—हे परम पिता परमात्मा, आप कृपा करके मेरी बीड्या, नासिका आंखों तथा कानों और उनकी बीडन, पृष्ठबन्ध व शाल लेने, देखने और सुनने वाली शक्तियों को, इनके अतिरिक्त नाभि, दिल, गले, शिर तथा दोनों बाहुओं को ऐसी शक्ति प्रदान कर, ताकि इन इन्द्रियों से जो भी क्रिया कृम, वह कौत्त युक्त हो।

सर्तल अर्थ (पथ मे) :—दीन दयाल दया के सागर ।

दीर्घ हृमको वृद्धि उच्चारण ।

मान-कर्म वल इन्द्रिय वल ।

कनी न जाए पाप के नेडे ॥

रत भरी सुम बोले बाह्मी ।

प्राण पवित्र करो हे स्वामी ।

दो आंखें तो मान प्रभु जी ।

देने, मुझे पवित्र कृपा जी ॥

नाभि, हृदय कण्ठ मुजाए ।

हाथों से न पाप कमाए ।

मल-वन निम्नना मिले प्रभु जी ।

सुभ कर्मों से लगे सदा ही ॥

**पार्थिव चर्चा—**

**स्त्रात्रो! हम वैदिक सन्ध्या के सागर में**

**डुबकी लगाएँ, ताकि अमूल्य रत्न पाएँ**

**(परमात्मन् जी 'विद्यार्थी' रोहकत)**

व्याख्या :—हे ईश्वर !  
मुझे पार्थिव प्रदान कर, कि मैं

पवित्र वेदका ज्ञान प्राप्त करके आपके पवित्र वेद ज्ञान के अनुसार वैदिक धर्म पर चल कर अपने जीवन को उत्तम कर और सफ़ती भूत करूँ ।

हे माता ! मुझे बल दो, ताकि काम वासना! पर काबू पा कर शारीरिक रोगों से छुटकारा पाऊँ । दे ईश्वर ! मुझे साहस दे, कि मैं शरीर को किसी भी कर्म तथा आत्म इन्द्रिय से किसी भी प्रकार की, किसी भी हालत में मूर्खी किरा-न कऊँ, ताकि मेरा जीवन धात रहे । प्राणों से प्यारे प्रभु ! मुझे ताकत दे, ताकि प्रदूषण यज्ञ अर्थात् आप को सर्वनाशक समझता हुआ आप को पाने अर्थ वृत्त कर्मों द्वारा प्रप्रत्यन्-शील रहूँ ।

विशेष संकेत :—(१) यह मन्त्र इन्द्रियों को पवित्र तथा शक्ति प्रदान करने वाला है । (२) किसी वेद का मन्त्र नहीं, अर्थात् जगत गुरु दया नन्द जी महाराज ने पवित्र वेद 'बाणी से इन शब्दों, शब्दों को चुन कर शारीरिक उन्मत्त अर्थ वैदिक सन्ध्या में नम दिया है । (३) भक्त को भगवान का निकटतम स्थान लेने से पहले शरीर को बलवान बनाना चाहिए। बलवान ही नहीं, अपितु पवित्र वेद बाणी अनुसार हरेक कर्म व ज्ञान इन्द्रिय से पवित्र विद्या करनी चाहिए ।

(३) भगवान तथा स्वस्थ शरीर से बलवान तथा स्वस्थ आत्मा रह सकता है ।

(४) यदि शरीर में आलस्य हो, तो उपरोक्त विधि अनुसार जब स्पर्श करने पवित्रता की भावना हृदय में लानी चाहिए । यदि पानी न हो, तो पानीमान और प्राणायाम से भी आलस्य दूर किया जा सकता है । पानी तो एक बाष्प (वाहुर) की चीज है अतः जल न मिले, जिससे स्नान किया जाए या पात्र लाना भी जाए, तो सन्ध्या कर्त्तनी नहीं छोड़नी चाहिए । पानी का सम्बन्ध तो शरीर से है, आत्म-परमात्मा के मिलन से नहीं । अतः ब्रह्म मुहूर्त (रात्रि के तीन वा रात्र बने) परमात्मा के ध्यान के

(वैदिक सन्ध्या अर्थ सहित) जुट जाना चाहिए । श्रेय-भ्रष्टा से सन्ध्या करने से ध्यान सतता है । जैसे हथ कड़े, बंसा मनन और आचरण करें । सन्ध्या के पीछे ओशेम् या पाथपी का जाप करें, पहले नहीं ।

आओ ! हम वैदिक सन्ध्या कृपी सागर में डुबकी लगाएँ, ताकि अमूल्य रत्न प्राप्त करें । नं० २

**मार्जनं मन्त्राः नं० ३**

ओ मूः पुनातु शिरसि । ओ मूः पुनातु नेत्रयोः । ओ स्वः पुनातु कण्ठे । ओ महः पुनातु हृदये । ओ जनः पुनातु नाम्बाम् । ओ तपः पुनातु पादयोः । ओ सत्य पुनातु पुनश्शिरसि ॥ ओ ष ब्रह्म पुनातु सर्वत्र ॥

शब्दायः—ओ (परम पिता परमात्मा का निज नाम) मूः (प्राण स्वच्छ) पुनातु (पवित्र करो) शिरसि (मेरे शिर को) स्वः सुशो के देने वाले) पुनातु (पवित्र करो) कण्ठे (गले को) महः (सब से महान्) पुनातु (पवित्र करो) हृदये (दिल को) जनः (पिता) पुनातु (पवित्र करो) नाम्बाम् (मेरी नामि को) तपः (पापियों को उनके कर्मों अनुसार सजा देने वाले) पुनातु (पवित्र करो) पादयोः (मेरे दोनों पावों को) सत्य (सत्य स्वच्छ) पुनातु (पवित्र करो) पुनः (फिर) शिरसि (शिर को) सत्म् (आकाश को भाति) ब्रह्म (महान् ईश्वर) सर्वत्र (सब स्थानों पर)।

सर्तल अर्थ सव में—हे प्राणों से मुझे ओशेम् जी ! मेरे शिर को डुबे विचारों से रहित करके पवित्र रखो । हे मेरे सुशो के दूर करने वाले परमात्मा ! आप कृपा करके मेरी आंखों को रोगों तथा अशुभ दृष्टियों से दूर रखो, ताकि पवित्र बनी रहूँ । समस्त सुशो के दाता ! मेरे गले को पवित्र करें, ताकि स्व-रक्त से निकलने वाली प्रथमे ध्वनि युद्ध, सन्ध रूप मे निकले । हे सबसे स्वच्छ परमेश्वर ! आप दया करके मेरे दिल को पवित्र करो, ताकि जहाँ अस्तीन भाव स्थान न पा सकें, वहाँ जीवन गति में किसी प्रकार की बाधा न पड़े । हे संसार के उत्पादक तथा पावक ! आप मेरी नामि चक्र (धुली)

को पवित्र रखें, ताकि शरीर के समस्त अंगों तथा भागों में शोधन द्वारा मिलने वाली शक्ति ठीक ढंग से पदुमा सके और न ही किसी प्रकार की पीडा हो हो । धर्मियों को सजा देने वाले प्रभु ! आप सर्वत्र ही मेरे पावों को पवित्र कर ताकि मैं किसी बुरे स्थान पर बुराई करने निमित्त न बलन और न ही मेरी टांगों और पावों में किसी भी प्रकार का भोग हो । हे सत्यपितु आत्मन् स्वच्छ मेरी माता ! हुररी बार फिर प्रायणा कला हूँ, कि मेरे शिर को हर अवस्था में पवित्र करें, क्योंकि युद्ध व पवित्र विचारों वाले शिर के शरीर में आपके दर्शन पा सकता हूँ । सर्वत्र और सर्व व्यापक मेरे स्वामी ! कृपा करो, दया करो, कि मेरे शरीर के समस्त अंगों को चाहे प्रत्यक्ष ही अपना प्रीति अंग हूँ, इन सबको पवित्र करें अर्थात् मैं इनसे कोई ऐली किया न करू, जो आप को आत्मा का उत्पन्न करने वाली हो ।

सर्तल अर्थ पथ मे—

प्राणों मे ही प्यारे भगवन ! शिर को पवित्र करो निश्चि दिव । दुःख विनाशक दीन दयाल । आंखो मे रहे जान उजाला । सब व्यापक सुशो के दाता । करो पवित्र कण्ठ विचारो । महा प्रभु तुम प्रुष्य धरारे । करो पवित्र हृदय हमार । करो पालना जगत बना कर । नामि मेरो करो पवित्र । दंड दाता प्रभु जान भंडार । रहे पवित्र माय हमार । सत्य स्वच्छ अविनाशी ईश्वर । पुनः पवित्र करो मेरी शिर । सत्य स्वच्छ दया सागर हो । अवनवी तुम अजर अमर हो ।

व्याख्या—प्राणों से प्यारे भगवान् ! आप मुझे शक्ति प्रदान करें, कि मैं आपके पवित्र वेद का ज्ञान प्राप्त कर के जीवन को उन्मत्त करूँ । हे सुशो को दूर करने वाले दीन दयाल ! मुझे शक्ति मिले, ताकि आपके पवित्र वैदिक धर्म पर चल कर जीवन को सफ़तीभूत करूँ । हे सुशो के दाता ! मुझे बल दो, ताकि काम वासना पर नियन्त्रण पाकर शारीरिक सुशो के बँदकर्म पर चल कर जीवन को पवित्र कर सकूँ । हे सुशो के दाता ! हे समस्त संसार के पावक ! मुझे (शेष पृष्ठ ८ पर)

कोई समय था जब कि घारे संसार में आयों की वृद्धि बोलती थी। सारा संसार 'बैदिक धर्म की जय' का निवारण करता था। परन्तु आज कहीं है यह स्वर्ण धारा? कहा है हिन्दुओं का चन्द्रमूर्ति शासन? क्या यह सब झूठ था? नहीं यह सब सत्य था परन्तु आज हमें यह सब कुछ कल्पना मात्र लगता है। आज अपनी दशा देख कर हृदय हाहाकार कर उठता है, आशों के आगे अन्वेष छा जाता है और मलिनक जैवना शून्य हो जाता है कि हम क्या थे और क्या हो गये। मित्रों इसके उत्तर देना ही हम स्वयं हैं। अपनी मूर्खता, अज्ञानता व जैवना हीनता के कारण आज हम इस विषय पर सारा को आ पहुँचे हैं।

अभी तो हमारी न जाने क्या अवस्था होती यदि भारत के भाषा-काण्ड पर एक बाल दिवाकर का उदय न होता। यह बाल दिवाकर और कोई न था लेकिन गुप्तर दयानन्द ही था जिस के सिंहासन से भयभीत हो कर मुस्लिम व ईसाई कृषी सिंघार दुग्धना कर भागने लगे। गुप्तर द्वारा लजाये गये बुद्धिके लोगों को न जाने किन-किन अमर बीरों ने अपने पवित्र रक्त से सिंचित किया। यह वह समय था जबकि भारत माता पराधीनता की बेदियों से जकड़ी हुई कराह रही थी। सार्वभौमिकता सत्ता भारतीयों ईसाई बनाती का हृदयकारक बुरी चीज थी। पर यह दे धर्म के दीवाने आयों। गुमने अपने कोयों से ब्रिटिश सत्ता को भ्रमण कर दिया। उनके हृदय में हर समय महर्षि के आदेश को पूरा करने की उड़प थी।

जब भारत वर्ष स्वतन्त्र हुआ तो ईसाई पादरी भी अंधों को सत्य ओरिया-विस्तार मोल कर जाने लगे थे। पर हास दे दुर्भाग्य। दूने हमारा पीछा न छोड़ा। भारत की वर्तमान सरकार ने 'धर्म निरोध राज्य' की घोषणा कर दी। परिणाम स्वल्प ईसाई फिर से जम गये और अपने काले कारनामों से हजारों गरीब हिन्दु आदिवासियों व पिछड़ी जाति के लोगों को ईसाई बनाते लगे। यदि इस का अन्वेष देखात हो तो नागार्जुन मिश्रों प्रवेश छोटा नागपुर, उड़ीसा, केरल इच्छर करता है। जब कुछ दिनों में अंधमान, निकोबार से एक नया नागार्जुन, मिश्रों लंड की माग उठ सही होगी। केरल में इस समय

# भारत का आर्य जन-सावधान

(श्री महानन्द सचदेवा बी० एड छात्र, रोहतक)

५०% लोग ईसाई व मुसलमान बन चुके हैं।

आयों! जाने, सब तुम्हारी जड़ें काट रहा है। यदि आज तुम न जागृत हुए तो याद रखो कि आगामी १०-२० वर्षों में केवल अनुपयोगी पर गिनने लायक हिन्दु रह जायेंगे। धर्मसिंह, रामध्वज के स्थान पर हवाई नाम रिचर्डसन, एन्ड अदि होंगे। दोस्तों जमाने की चाल को समझो। तेज देखो और तेज की चार देखो वाली उचित चरितार्थ करो। ईसाई-मुसलमानों की प्रवेक बुरी चाल का उत्तर वही चाल बन कर दो।

दक्षिण भारत में स्थिति विषय हो चुकी है। हिन्दु लड़कियां नाम कर मुसलमानों से निकाह कर रही हैं। केरल प्रांत में ईसाई लोग अनुचित हवकन्दे अपना कर भोगे भांगे लोगों का धर्म परिवर्तन कर रहे हैं। छात्रावृत्त का मृत आज भी मुंह फाड़े बना है। परन्तु हम गुपचाप अपने घर को लगी आग का समाया देव रहे हैं। दिन रात यही नारा लगाने हैं 'कुश्नतो विचमयार्थ' पर भारत में विर्वाणियों को भना नहीं सके। अपनी शांति का अन्वेष पर प्राप्त करने, एक दूसरे पर कीचड उछालते तथा एक दूसरे की टांग लंबने में कर रहे हैं। इस आग को बुझाने का प्रयत्न नहीं किया जा रहा। यदि बोवा-सा कार्य करते हो तो उसे पहाड़ की भांति बड़ा करके मणित करते हैं तथा अपने मुंह मिथा मिट्टू बन जाते हैं।

दक्षिण गुप्तर हरियाले प्रांत केरल में ईसाईयों ने केवल मात्र ही व्यक्ति ही टक्कर व रहे है एक है दयानन्द बाबा मणिधाय हिलार के स्नातक श्री नरेन्द्र नूपण बी० ए० तथा एक वही के सयासी महोदय। भाषाव्यव नरेन्द्र जी किसी प्रकार के सम्मान की लावसा न कर विदेशी प्रतिष्ठानों से जुक्त रहे हैं। इस बीर पर हास में ही रात्रि के समय जब वह tour से लौट रहा था। ईसाईयों ने शांतक आत्मस्य कर दिया तथा मर हुआ जानकार छोड गये। कहे के गुच्छर रहे हिन्दु राहगीरों से उन्हें उठाकर हस्पताल पहुँचाया। इस व्यक्ति ने केरल में गुणम ला दिया है। ईसाईयों के हीयने पल ही

गये हैं। दो वर्ष के अल्प समय में इन्ने संकटों लोण शुद्ध करके हिन्दु बना लिये हैं। दयानन्द कालेज पोला-पुर के प्राध्यापक व आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्ता श्रीयुक्त राखेन्द्र जी जिज्ञासु जो आरकल केरल में नरेन्द्र जी के साथ कार्य कर रहे हैं, लिखते हैं कि हजारों लोग इस प्रतीशा में है कि कब उन्हें शुद्ध किया जायेगा। परन्तु इन धर्म के दीवानों के पास धन की अत्यन्त कमी है। सब करने के लिये, यज्ञोपरालत प्रसाद बाँटने तथा वेपनूर में कोमिन जहा लोग भारी सावधान में शुद्ध होने को बैठें हैं, तक जाने के लिए मार्ग व्यय भी नहीं है।

आयों! अरे भारत के हिन्दुओं! आज केरल में शुद्ध किया जायेगा प्रारम्भ हुआ है। आशों अपनी जिम्मे-वारी पहचानो। यह समय बार बार हाथ नहीं आता। धन के श्रौत दास मत बनो। इस पवित्र महालय में अपनी आहुति डाल दो। धर्म-जाति के परवाने जो आज धन की कमी महसूस कर रहे हैं, उनकी भीमता भर दो। यदि तुम चाहते हो कि नागा लेंड, मित्रों लेंड की सम्पत्ति सम्पत्ति हो सके। 'उ एकर' के मूल्य में बन्ध जए तो इस महालय को उजाना को और अधिक प्रबलित करना तथा इसे ममस्त भारत में फँसा दो।

मुझे आशा है कि आर्य जन! विवेकपथा उत्तर भारत के आर्य-जन तथा हिन्दु मान इस लोभ ध्यान देंगे। उत्तर भारत की सभस आर्य समाजे, सनातन धर्म समाजें आर्य प्रतिनिधि सभाए तथा सावैदिक तथा के अधिकारी धारस्पर्धिक भगवों को छोडकर कसर कसर कर विदेशी दलितयों के विनाश के लिये ब्रह्म प्रहार करने और वे लोग आज शुद्ध होने के लिये हमारी तरफ आया लजाये वेंडें है, को शुद्ध करने में श्रेयस्त नरेन्द्र नूपण की दक्षिण में तथा अन्य बीरों की जो छोटा नागपुर, नागार्जुन व ईसाई, मुसलमानों से टक्कर व रहे हैं, सहायता करने तथा इम कष्ट संके।

'कुश्नतो विचमयार्थ'  
सत्यमेव ज्यते नातृम्य  
सत्य की जय होती है मूठ की कमी नहीं।

# महता रामचन्द्र जी शास्त्री

भूतपूर्व महोपदेशक आर्य प्रादेशिक सभा (लेखक श्री भगतराम जी शर्मा) (अफ्रीका वाले) (सतक में आगे)

परन्तु महता जी ने उत्तर दिया कि वह ब्याख्या के समय नोट में लिखा कर अथवा जो कोई Short hand जानता हो उसके द्वारा लिखा लिया करे। जैसा कि महता जी ने लिखा है कि महता जी वेद मन्त्रों को भंडी लगा देते हैं वस्तुतः उनकी वेदों में बहुत अच्छी गति है। जिस विषय पर भी बोलेपि वह वेद मन्त्रों से ओतप्रोत होता। महता जी वेद विषय को वेद मन्त्रों के प्रमाणों से सिद्ध करते हैं।

आर्यसमाज का वाणिफोसव २२ तथा २३ जून मई १९६६ दानि कोर रवि को दिन आर्यसमाज मन्दिर में सम्पन्न हुआ था। उनके विषयों का ब्योरा निम्न प्रकार था—  
(१) मानवीय जीवन का वैदिक आदर्श।  
(२) वैदिक सदाचार।  
(३) राष्ट्रीय जीवन में वेद और आर्यसमाज की आवश्यकता।

उपरिलिखित वेद विषयक ब्याख्याओं से महता जी के वेद पर अधिकारक कर्म मन्त्र में ही अनुमान लगाया जा सकता है मन्दिर स्वास्त्रक भरा हुआ होता था। उस उत्सव पर कार्यक्रम में नरेन्दी से अथवा भारत से कोई भ्रजने-पदेशक पद्वच सकने के कारण मुझे ही प्रोवाभ भुगलाना पया था। महता जी अफ्रीका में हिंदी में बोलने बोलते कहीं २ पञ्जाबी वाक्य भी बोलजाते थे। एक दिन एक गुप्तरजी भाई ने महता जी से निकालत की कि 'पवित्र जो! आप बोधी का वजामी ही पञ्जाबी बोल जाते हैं तो बोलें—प्रवाह में ऐसा हो जाया करता है। अनुतु मैं ध्यान रखू गा। महता जी मितभावी और मिताही हैं। अन्तिमान उनको छुड़ा तक नहीं। मृत को स्वीकार करने में कभी नतुनय नहीं करते। यह उनके जीवन में विशेष गुण है। सादरी की तो साधात मूर्ति हैं। वेप है उनका बन्द गले का कोट, पावामा और टटरी।

(गेष पृष्ठ ८ पर)

**महता रामचन्द्र जी शास्त्री**

(पृष्ठ ७ का शेष)

१९४८ में जब मैं अमीका से **दीर्घायु** पर आया था तो जगन्धर में आर्यसमाज मन्दिर (अड्डा होशियार) के अन्दर इतना फिरे थे। मैंने उनको भी बताया कि वे भी कि वह अमीका प्रचारार्थ चले। परन्तु उन्होंने अवस्थ रहने के कारण मेरी प्रार्थना बन्धी कर दी थी। मैंने भी उन्हें उस समय निबल पाया था। दारिद्र्यताम के आर्य भाइयों का कुशल समाचार पृष्ठ कर बहुत प्रसन्न हुए थे। सदा के लिए भारत लौटने पर सन् १९५४ से लेकर आज तक उनके **बर्धन** का सीमाय प्रार्थन ही होता है।  
मुनि, स्मृति, पुराण, इतिहासिक के प्रमाणों से अवहृत् और प्रबल बुक्तियों से सुसुचित महता जी का धर्म 'पतितो की सुदि समागत है' सुदि के विरोधियों के लिए अयोध बल्लभ है। माघ स० १९८० बिक्रमी सदनपुरा जयन्ती सन् १९४४ में तुलसी बाबू छपा था। मुनिका लेखक हैं पंजाब केसरी २३० लाता नाजपत राय जी । २ अक्टूबर सन् १९०९ को लिखी थी जो २० पृष्ठों पर है। मैं जब भी मेढा-तलवाड़ा से बाहिर **बंकार**, उत्तर, सुदि के अवसर पर **अपुन** मेने पर प्रचारार्थ जाता था तो यह पुस्तक भी साथ ले जाता था। मेरे पास 'पतितो की सुदि समागत है' की दो प्रतियाँ हैं। एक प्रति फायरू है। यह किसी आर्य भाई को आवश्यकता हो मुझ से मगवा सकता है। जिस का पत्र पहिने आयेगा वह इसे प्राप्त करने का अधिकारी होगा।  
डाक व्यय भी मेरे विन्मो है पता—

५२, भादवं कालान्ति, रेडियो स्टेशन के निकट, जालन्धर नगर।  
'रामायण से विद्याएं' विषय पर व्याख्यान में महता जी ने एक महत्व

**पठनीय एवं मननीय साहित्य**  
वेद प्रबन्ध ५/- मोलाहार ७५  
पैते, आत्मगीर् ६ पत्र १/-**ब्रह्म**  
हस्तार १/५० पैते, मेरी जाड  
रोषक क्लानिया ७५ पैते, लीकट  
७५ पैते, लक्ष्मणदेवी जीवन ५० पैते,  
कर्म मीमांसा २/२५ पैते, सवित  
निगमन बनों और कैंडे १५ पैते,  
वैदिक व्याकरण भास्कर ६/-  
आयाम बोधक पत्र ११/०० पैते,  
साहित्य प्रचारक १/-  
जयदेव ब्रदर्स बड़ोदा-१

**आर्यसमाज अखनूर (जम्भू)**

निम्न दानो सज्जनों ने ध्वस्त आर्य समाज मन्दिर के निर्माणाथं बन से जो सहायता की हम उनके कृतज्ञ हैं और आशा करते हैं ध्यव दानी सज्जन जिनके हृदय में आर्यसमाज की कुछ तटपर काम करी है वे भी अपनी पवित्र कर्माई में से यथा शक्ति सहायता करते हुए पुण्य के भागी बने।  
दानदाता—हरि निवास कौण्ड 10/-, रामप्रकाश नामपात 10/- श्री मूलचन्द्र जी सुरापाम 5/-, श्रीमती के. पी. वासी राजी 10/- डा. जगदीशचन्द्र जी रोहतक 20), जोधप्रकाश जी मेहरा पानीपत 5), **अनुकर** कौम **इंस्टीट्यूट** (जो मन्त्री 20), आर्य समाज योनेन्ड नगर 25), आर्यसमाज फरीदकोट

की बात कही थी कि 'पवित्रो विद्वान् कहते हैं कि रामायण कपोल कल्पित है। इस के पात्र राम सीता आदि कोई नहीं हुए। ऐसा मान भी लिया जाये तो जिस बुद्धिमान् ने ऐसा विधा प्रद बन्ध रचा उस भारतीय के महिषक की सराहना होनी चाहिए।  
ऐसे विद्वान् का जीवन धन्य है। जयाने तो जिस बुद्धिमान् ने ऐसा विधा प्रद बन्ध रचा उस भारतीय के महिषक की सराहना होनी चाहिए।  
ऐसे विद्वान् का जीवन धन्य है।

जयाने तो जिस बुद्धिमान् ने ऐसा विधा प्रद बन्ध रचा उस भारतीय के महिषक की सराहना होनी चाहिए।  
ऐसे विद्वान् का जीवन धन्य है।

**आर्य जगत के पाठकों से निवेदन**  
आर्य समाजों, आर्य संस्थाओं और आर्य बन्धुओं की सेवा में यह लिखते हुए हमें हर्ष होता है कि आप की सभा के प्रमुख पत्र आर्य जगत् की अवस्था ने सुधारने की ओर पग उठाए गए हैं। इस का टाईप बदल दिया गया है। मुख पृष्ठ का न्साक भी बदला जा रहा है। इससे पत्र के सौंदर्य में सुदि हुई है। अब इस की उपयोगिता भी बढ़नी चाहिए। आप सभी से प्रार्थना है कि अपने बहुमूल्य लेख लिख कर भेजें। इसके साथ इसकी ग्राहक संख्या बढ़ा कर सभा की सहायता करें। इस से भी इस पत्र की उपयोगिता बढ़ जाएगी।  
इस महंगाई के समय में सभी समाचार पत्रों का मूल्य बढ़ चुका है। फिर भी सभ्रा प्रचारार्थ इस पत्र को पुराने मूल्य पर ही दे रहें हैं। इस से इस का घाटा बढ़ रहा है। यह यत्न करें कि यह पत्र सभी आर्य परिवारों में पहुँचे जिस से इस घाटा को पूरा करने में कुछ न कुछ सहायता आवश्यक मिलेगी।  
छात्रगण—

100), आर्यसमाज मन्धी (मोगा) 101) आर्यसमाज शाहवाह (करनाल) % श्री सुधीराम जय भगवान 101), आर्यसमाज दीनानाथ 154) 60 न. पं. ला० परलेखरीदार श्री बहल उन्वहार सुधियाना 100), कृष्णलाल जी मुख अखनूर 10),।  
कुमयोर्ग—672.60 न. पं.  
—जिवालाल आर्यमन्त्री समाज

**आर्यसमाज पुरानी मंडी जम्भू में वैदिक धर्म प्रचार**

आर्य समाज पुरानी मंडी जम्भू तथा ब्की नगर में १९. ४. ६६ के श्री मेलाधर जी रेडियो सिंघर (सभा की ओर है) पं० काम प्रकाश जी धर्म देहातून बाने, तथा डा० भस्कराम जी प्रचारार्थ पचार प्रचार कार्य उसाह पूर्ण रहा। जनता ने अन्ध सद्गोण देकर सभाज के अधिकारियों का उत्साह वर्धन किया।  
इन स्थानों के अतिरिक्त रणधीर हिस पुरा, बिषानाह आदि स्थानों में भी पं० हरिश्चन्द्र जी शास्त्री व मेलाधर जी के व्याख्यान और मजन होते रहे। आर्य समाज पुरानी मन्धी की ओर से १०१/- वेद प्रचार, ५१/- शिवराजि फंड, कुल १५२/- प्राप्त हुए।  
—मोहन लाल मोरवाल मन्त्री समाज

**दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार**

बड़ी अन्धी छात्रों में चल रहा है। इस वर्ष इसके उपदेशक विभाग में 20 छात्र दाखिल करने हैं। जोकि शरीरसे पूर्ण दृष्ट-पुष्ट होना १६ वर्ष से २० वर्ष तक के अंदर होनी चकरी है।  
विद्या हिन्दी सस्कृत लेकर दसवी पाठ की हो। उपरोक्त योग्यता के साथ अगर आयु कम भी होनी तो उन्हें दाखिल कर लिया जाएगा। ऐसी सहा में उन्हें एक वर्ष अधिक लगाकर विद्यालय में हिसा पानी होगी। प्रवेश सुलाई में होगा। प्रार्थनापत्र १५ नूतन तक भी आचार्य जी दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार के नाम भाने चाहिए। जीवन की सभी आवश्यकताएँ विद्यालय ही महत् करेगा। पूर्ण कोर्से चार वर्ष का है।  
नोट— विद्या पूर्ण कर लेने के पश्चात् भारत के भिन्न २ प्रांनों में वेद प्रचारार्थ जाना होगा।  
पुराणीलाल शास्त्री एच आचार्य विद्यालय

**आर्य वैदिक...**

(पृष्ठ २ का शेष)  
पतित निवे. ताकि बहू यज अर्थात् आपको सर्वत्र अर्थात् आजाक आजाक अर्थात् सर्वत्र करने निमित्त शुभ कर्म करने जीवन पर्यन्त प्रयत्नशील रहें।  
विशेष संकेत:— २. यह पवित्र मन्त्र स्थापना में तीसरा स्थान रखता है, भगवान् दयानन्द जी ने इसे मार्चन मनन के नाम से पुकारा है। यदि हम शुद्ध जल शरीर के प्रत्येक अणु पर छिड़कें और अन्ध-अंध शारा जोडू का ध्यान करें और पवित्रता को भावना को हृदय में स्थापन दें, तो शरीर का आत्मस्य अवयव भाभी हर हो जाता है। परन्तु वैदिक सन्ध्या करने से पहले नहाये या न नहाये, जल भावर्न करें या न करें। किन्तु शरीर का आत्मस्य अवयवमेव दूर करें। चाहे व्यायाम करें अथवा प्राणायाम। क्वोकि पानी का सत्वस्व केवल शरीर से है आतः जल छिड़कने की महता को प्रथम स्थान दें। ताकि बहू महत्ता का समय सन्ध्या के विना नुबर न जाए। (२) यह वेद मन नहीं, अतित प्रभुवर दयानन्द जी महाराज ने वेद-नाथ्य युग कर इसे मन दिया है। (३) जेवा कि हम पवित्रता चाहते हैं, वैंसा हूँ अमानी कम्पनी और करनी को एकीकरण में माना चाहिए। अन्धवा ठोड़े कोसने से कोई साधन नहीं।



दैनिकीकरण नं० १०५७

[धार्मिक-प्रार्थना प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र]

Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ पैसे

वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६ अंक २३)

२३ ज्येष्ठ २०२३ रविवार—दयानन्दवाब्द १५१— ५ जून १९६६

(तार 'प्रार्थना' जालन्धर

## वेद सूक्तयः

### तस्मै यमाय नमः

उस यम रूप भगवान् को नमस्कार हो। यम और काम कृषी प्रभु की शक्ति हैं जो समय समय पर संसार को अपना प्रास बनाती रहती हैं। प्रभु की इस शक्ति से कोई बच नहीं सकता। उसे नमस्कार है।

### गिरिशाः पादि नः

हे हनुमन्त के योग्य परमात्मन् ! तुम सारे जगत् के ही हैं हमारी आप ही रक्षा करो। माना प्रकार के संघर्षों से आप की कृपा से ही हम सदा सुरक्षित रहे। मान ही हमारे रक्षक, पाता, परिचाया हैं। इसी लिए तो आप पिता हैं, अपने रक्षक हैं।

### स हि स्थिरो विचर्षणिः

वह प्रभु स्थिर है सदा एक रस है, अदम्य है। वह अनाद परिवर्तन-रहित है, पर परिवर्तन सदा एक रस है, उस में कभी परिवर्तन नहीं होता। यही सच्चा निरोक्षक है। अक्ष के बाह्य अन्दर के काश्यों भावों की देखावट, भावना है। उसके कोई भी बात गुप्त नहीं है।

### राज्ञी ददातुवाजिनम्

बड़े शाही—अब बच, आज यादिक का दावा परदेवर मुझे और सब को बच प्रदान करे, आज का प्रसाद देवे, शासिक पराक्रम का दान देगा रहे। उसके सिवा इन सम्प्रदायों को और देवे शाही के भावों। बड़ प्रभुं सर्वं शक्तिमान है, हमें शक्तिप्राप्त बनाये। सा म मे व से

## वे दा मृत

### राजा कैसा हो

इतरश्च यदसुतरश्च यद् वषं वरुण यावय ।  
वि महर्द्धम् यद्ध वरीयो यावया वषम् ॥

अथर्व वेद काण्ड प्रथम सूक्त २० ध्यन्त्र ३

अर्थ :—हे राजन् ! जो कोई (इतरश्च) इतर वेदों (यद्) जो भी धनु या (असुतः च) उस और से, किसी भी और से (यद्) कोषधन्) आक्रमण या उपद्रव, गडबड़ करता है तो हे (वरुण) धनु का नाश करने वाले राजन् ! उस धनु, जो (यावय) दूर कर दो। तथा (महर्द्ध) बड़ा (धर्म) युद्ध हर्ष (यच्छ) देवें और जो भी (वरीयो) बड़ा भारी (वषम्) हडता को (यावया) रोककर कुचल देवें। आक्रमणकारी के हर हमले को पूरी शक्ति से समाप्त करके राष्ट्र की रक्षा करे।

अर्थ :—राष्ट्र की स्वतन्त्रता को हथियाने के लिए धनु तथा देवधारी नामा प्रकार के यष्टयन्त्र करते रहते हैं, उत्पात मचाते हैं। नाता विचारों से और अनेक तरीकों से देश पर हमला करते हैं। उनसे बचा ही हर बात को भय होता है। ऐसे हमले को रोकने के लिए तथा इस प्रकार के मुठों उत्पन्नियों, आक्रमण करने वालों दखने, कुचलने, मसलने के लिए राजा या शासक का सबसे प्रथम कर्तव्य यह है कि वह पूरी तरह सावधान होकर ऐसे-ऐसे धनुओं को कुचलकर राष्ट्र की रक्षा का पूरा-पूरा प्रयत्न करता रहे। धनु, जो राष्ट्र से बहुत दूर रहे। प्रजा को धुंसी करता रहे। —म.

### अमूल्य उपदेश

मोक्ष अवस्था का परमानन्द प्राप्त करने का सुयोग साधन एक ही है कि कर्मकार्यों को विना जाए और अन्तर मुक्त होकर परम-तन परी-भरी योग नाम की महिमा का नाम और मन्त्राण किया जाए। आज के स्वर्ण प्रयास में परच पिता से कोटि-कोटि धर्मना है कि विरच का मानव समाज सर्वं दुर्घातों को त्याग कर मोक्ष सुखों की सिद्धि में लल कर अपना जीवन देवोत्त भाँकर परमानन्द को प्राप्त करके निरामयन के मार्ग पर चलें।

## ऋषि दर्शन

### ईश्वरमत्तया च धारितः

ये सारे लोक-लोकान्त्र भूमि मूर्धं यादिका आयम में पूजते हुए भी उस परदेवर के सदा नियम से धारण किए हुए हैं। इन को संभालना तथा नियम में रखने वाली बही वेतना शक्ति ही है।

### सर्वाणि सुखानि दाशत्

यह भूमि अपने नियम में कभी हुई सब को अनेक प्रकार के सुखों को देती है। यह माता के समान सब को पालती, खिलाती पिलाती है। जीवन के लिए यह मोदी है। इसी से सब कुछ मिलता रहता है।

### प्राणिनः प्रपूयन्ति

यह भूमि माता अपने उत्तम उत्तम भद्राओं से, अनेक विषय पदायों से तथा उत्तम २ ब्रह्मों से अपने सारे पुत्र-भूमियों को, जीवमान को भर देती है, गुप्त करती रहती है, मातामात्र करता है।

### सोममन्त्रलोकः

सोम मन्त्रलोक को कहते हैं। सोमल मात किरणों से सब को धीरे-धीरे करके ताप दूर कर देता है। अन्तस्त्वियो, सोमियों में रस भरता है इसलिए अन्तमा को सोम नाम दिया जाता है।

मा ध य भूमि का

# विचार तरंग

(ले० श्री राम भूति जी-ज्ञानिया, एम. ए. आई. दिल्ली-११०)

कपटी को भी कोई डोर नहीं।  
 काठ की तुझिया कोई बार-बार बोधे  
 ही पकती है। मनुष्य समझता है कि  
 किमो को पोना दे कर वह काम सिद्ध  
 कर लेगा। किन्तु कपटी को सिद्धि  
 सचिप्य भी-अवधानी हुआ करती है।  
 महाभागों के कथनानुसार दूसरों को  
 उनके वाचा स्वयं पढ़ते उठा जाता है।  
 और फिर किसी के मन में शिष्यत्व  
 बनाने में भी समय समझा है। कण्टक्य  
 सप्रमहार से उम विद्यालय पर कूटारापास  
 कर देना वहा की बुद्धिमत्त है। उनमें  
 मे सुख नहीं किन्तु उगाई रखते मे पोहा  
 भाङ्गाद सबद है। सत्त कबीर के ये  
 शब्द बड़े मार्मिक हैं —

कबिरा आप ठापाइये, और न ठगिये  
 कोए,  
 और ये सुख होन है आउतु तु सुख  
 होए।

किन्तु धोखा करने समय व्यक्ति  
 यह तो सोच कि वह किन से ऐसा  
 प्रहार कर रहा है। कण्ट कर के वह  
 कृपण तो नहीं कहायैया, यह विचार  
 तमिक कर लेना चाहिये। व्यक्तित्व तो

एक तरफ, साथ पता है कि मुझसे  
 स्वामी, मित्रता, सम्बन्ध और सम्बन्धित-  
 मान ईश्वर के प्रति भी-कण्ट का  
 व्यवहार करने में मनुष्य को आँसूबन्ध  
 नहीं। हम मानते हैं कि सपत्न्य  
 पर कृपानु है। किन्तु ये श्रमार्थनी  
 ही होती है। मन की बात जानने में उन  
 को देर नहीं लगती। वे तो पट २  
 बाधी है। एक सण विचार करे कि  
 हम जिनके Hypocrite कपटी हैं।  
 आख की भाँक मे ही बदल जाते हैं।  
 भगवान का ध्यान करके हूँ मुझ से  
 उच्चारण करते हैं स्वमेव माता न  
 पिता स्वमेव, स्वमेव वगुण्य सखा  
 रामेव, किन्तु आत्त सूचते ही हम  
 और को माना एष पित्त कहना प्रारम्भ  
 करने हैं। क्या यह भावना के प्रति  
 काट नहीं? ऐसे भक्ता को कहा डोर  
 है २ तुलसी जी ने अपने मन को  
 सम्बोधित करते हुए ठीक कहा —

अर अमृतीन अयाव हरि,  
 कल्पना कल्पित प्रयास  
 तुमकी दास भ्रूयु सठ मर्कट,  
 छाँड़ि अमरत अजाव।

निश्चयता का अदृश्यत्व व्यक्त्या  
 पुत्र दूष और जल की बेंबो से देते  
 हैं। दूष जल को अपना आकार दे  
 देता है, कपटे ही भाव पानी को बिका  
 देता है। बन भी इस बेंबो के  
 व्यवहार को मूलता नहीं। दूष जब  
 आप पर रखा जाता है पानी स्वयं  
 को जवा देता है। दूष मित्र को  
 तलाश में उफनता है। पानो पुत्रः  
 मिल जाने से उफान सान्त होता है।  
 निश्चय ही यह निष्कर्ष मैत्री का  
 बड़ा सुन्दर उदाहरण है। किन्तु  
 तुलसी जी ने बड़ी सुन्दर बात कही  
 कि 'कण्ट छटाईं पुनि मित्री, मोरस  
 भई, एष जाई'। कपट का छटाईं  
 के मिथ्यता से ही दूष पट जाता है,  
 सोनो मित्र मिलन हो जाते हैं। परस्पर  
 के व्यवहार में कण्ट न आ पावे,  
 ऐसी ही परस्पर से प्रार्थना करनी  
 चाहिए। क्लत छिद्रि किनी को पसन्द  
 नहीं। राम चरित मानस मे राम  
 कहते हैं 'मिमं मन जन मो मोहि  
 पाथा, मोहि कण्ट छत छिद्र न  
 भावा।'

स्मरण रहे कि छिद्रिया कभी भी  
 बसा नहीं बन पाता। मुँह विद्याने  
 की बात कुछ और है किन्तु पीठ पीछे  
 उस की सभी निन्दा ही करे। यह

सर्व-प्रसिद्ध ज्ञान है प्रकृतः बाप किसी  
 को-श्रेया है, ज्ञानं तप आन कृते  
 ही प्राप्तेन।' निष्कर्ष सति कलत  
 निन्दा मे होगी। कभी कदातना मन हो  
 कते बाधो होती है। उसके विचार,  
 कण्ट एव कार्य सभी शान्तिप्रद होते  
 हैं। उसके अन्वहार मे पवित्रता रहती  
 ही। इसी अन्वारे में सह इत्यान. होजा  
 है। केश व्यक्त चरितों से भी  
 अन्वरा है। सभी तो कहा कि—

“कुरितो ते देहतर है इत्यान होमा,  
 मगर दसमे सपनी है मेहतन उपादा।”

★ ★

## शुभ विवाह

बायसमाज के प्रविद्ध नेता, आर्य  
 प्रतिनिधि सभा परबन्ध, के श्रीपापल्लव  
 श्री रामनाथ भल्ला की सुपुत्री कुं  
 उमाशानी का शुभ विवाह श्री जवाहर-  
 लाल जी बोसना के साथ २२ मई को  
 सानन्द सण्णन हुआ। इस शुभ अव-  
 स्तर पर प्रो० रामसिंह एम०ए०,  
 श्री जयदेवसिंह विद्यार्थी एम०पी,  
 श्री रघुवीरसिंह लालकी सभा मन्त्री,  
 आदि आर्य नेता उपस्थित थे। उप-  
 स्थित जन-समुद्र ने बर-कन्या को  
 सुखी-पिरलोकी रहते का आशीर्वाद  
 प्रदान किया।

★ शुभ, पूज, दही, मसख,

मिठान, सहर, चाक तथा अनादि  
 वस्तुएं साने योग्य हैं किन्तु ये बुद्ध  
 बढ़ती और शरीर पुष्ट होता है।  
 दही का सेवन करना चाहिये तथा  
 भात, शराब, तम्बाकू, विषपेट, बीड़ी,  
 मांग आदि को बिल्कुल छोड़ देना  
 चाहिये।

## मधु कलश

(श्री विजय निवाँ एडिटर इनचार्ज पंजाब केसरी)

(१)

एक प्रश्न उठता है बीना कितने दिन है भाई।  
 राम देव के बनर तुम ने कौंसे टांग फँसाई।  
 अपसल लेकर अबर किए तो भार ही मया जौना।  
 मय के साथ मील भी जाए तो भी है सुखदाई।

(२)

दुषिया का जानन्द सिंहिन है केसव अपने पन में।  
 दया भाव से बड़ा नहीं है कुछ भी इस जीवन में।  
 तुलन पर भी श्रेय करो तो इतना कभी न करना।  
 संका करने लगे मील भी जिधे देख कर मन में।

(३)

म्योछावर है तुम लोगों पर नम के बाव विहारे।  
 स्वयं मनुज हूँ अतः मनुज हूँ मुझे भाए से प्यारे।  
 बिन तुम्हारे मुझे स्वयं भी नहीं चाहिए चाघी।  
 पीर नरक भी स्वयं तुम्य है रह कर साथ तुम्हारे।

## पाखंड खंडिनी पताका

(श्री शरर जी एम. ए. पानीपत)

बंदो वीर शखर सडनी स्वजा उड़ाते  
 कब तक पके रहोये तुम सोते मदमाते  
 तुम ने सोचा था असत्य को मार भगवान,  
 लख्य तुम्हारा रहा दिख के आर्य भगाना।

सम्प्रदायो की अड़ उखाए सडमें स्थापन,  
 सदा रहा उदरेप तुम्हारा जग हित चिन्तन।

किन्तु न जाने किस का जाड़ु चला तुम्हरी पर,  
 पाप दम्भ की माया देख पड़े मुस्काते।

इसीकिये क्या दयानन्द ने जहर पिया या?  
 अद्वानन्द ने निज उर पर पिस्तौल सहा या?  
 लेखराग क्या आया तुम ने साग्य चले थे?  
 मनु को सम्मुख पाकर जो नहीं हटे थे।

क्या विद्याल जीवन का उनको प्राप्त नहीं था?  
 उनके दिव की पढ़कन, कसब, कभी सुन पाते!

देखो आज चतुर्दि पाप दम्भ की माया,  
 पीरो अवतारो ने ही क्या जाल बिछाया।

बडा परा पर कोई बडमा लोड रहा है,  
 कोई आपकी फिर जीवन से जोड रहा है।

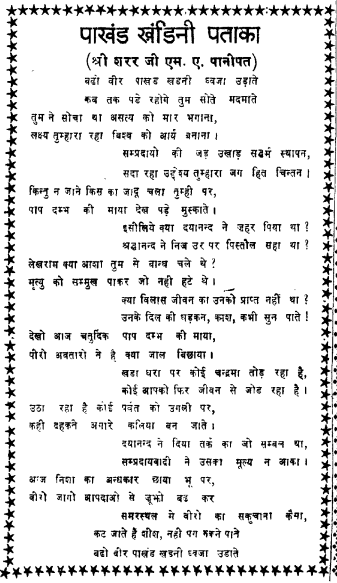
उठा रहा है कोई पंत को उगसी पर,  
 कही रहकने अगारे कानिया बन जाते।

दयानन्द ने दिया तर्क का जो सम्बन न था,  
 सम्प्रदायवादी ने उसका मुय न जाका।

आज निजा का अन्धकार छाया भू पर,  
 बीरो जागो भापदायो ने जूको बड कर

समरस्य मे बीरो का सक्चाना कीना,  
 कड जाते है बीघ, नही पग कचने पाते

बंदो वीर पाखंड लखनी वजा उठाते



सम्पादकीय—

# आर्य जगत्

वर्ष ६] रविवार ०२६, ५ जून १९२६ [अंक २३

## भारत और भारतीयता

बन्दना के योग्य माता पर यदि कोई किसी प्रकार का भी हमला करे तो उस की मारी सन्तान माता की सुरक्षा के लिए प्राणपण्य की बाजी लगा देती है। माता का सम्मान सगति के सम्मान का महान् प्रबल बन जाता है। इसी प्रकार यदि कोई बंदी विरोधी मान्-भूमि का व्यवधान करता है तो उस की रक्षा के लिए भी भूमि की सन्तान तन-मन-धन लगा कर अपने कर्तव्य की निश्चाली है। भारत हमारी माता है। हम ने इसे माता मान कर समाहार किया है (बन्दे मातरम् का शीत गति २ विदेयो सता की गोलिया बाई है। इस जन्म भूमि के सम्मान हित ध्या ने के प्यारी बन्धु भी भेट कर दी है। जिस किन्हीं ने भी इस का किन्हीं प्रकार से अपमान करने की नीचता की, उसे यकी मानित छुटी का द्वेष पाद कर दिया। भारत की माता मान कर प्रत्येक भारतीय ने इस पर सर्वस्व बर दिया है।

इसी प्रकार भारत मे भारतीयता भी जन-जीवन की सब २ में एव प्रवास २ मे समाई हुई है। भारतीयता आत्मा का स्थान रखती है जिस के द्वारा सारे भारत को जीवन व ज्योति मिलती है। भूमि के समान भारतीयता पर होने वाले अपमान को भी भारतीयों ने कभी सहन नहीं किया। इतिहास मे भारतीयता की रक्षा की गाथा सुनहले बखरी मे लिखी मिलती है। किन्तु भारतीयता पर आक्रमण करने वालों की भी कमी नहीं हुई। प्राचीन समय में भी और वर्तमान काल मे भी आक्रमण कारियोंके दलके दल भारतीयों को मिताने मे लगे एव लग रहे हैं।

हम इस समय की बात कहते हैं। आज चारों ओर भारतीयता को समाप्त करने के लिये बड़ा भारी हमला किया जा रहा है। भारत मे रहने वाले हम सब प्रभावित हो रहे हैं। प्रतीत होता है कि केवल रण में ही भारत के लोग भारत के हैं, किन्तु सारी बातों

मे भारतीयता से कोसों दूर आगने जा रहे हैं। विशेषकर ईसाईयत के प्रचार ने तो भारत का चित्र ही बदल कर रस दिया है। अपनी कोई भी तो वस्तु अच्छी नहीं समती है। जिस प्रकार धर्म पर आज धन चढ़ गया है। है। सब कुछ धनमय बन गया है। उन्हीं प्रकार ही जीवन भी अमर-रतीय बनता जा रहा है। भारतीयता सर्वथा बन्दने लगी है।

इस का कारण ईसाईयत का प्रभाव है। ईसाई मिसन सगतिन रूप मे भारत के चारों ओर अपना आक्रमण करते पाद कीर्माने मे लगा है। हिन्दु समाज को कुक्षीयके लागाने, इन्डिया, प्रभाग के मया स्तानों अथवा समुदाय पुनन से ही अबसर नहीं है। धनपति आनीति कारियों का भरने मे लगे हैं। उनका पैसा बिबाह पर बिजली पर, चाल सड़क में तथा इधर उधर के दिखाने वनाम व पानी की तन्त्र बढ रहा है। बाधा तक भारत बट गया, मोगा प्रदेश मे भारत विरोधी जमाव है, ईसाईयत प्रचार के लिए ३० करोड रुपया बिदेशो मे आता है। हिन्दु समाज को हड़ाने की तैयारी मे वे सब लगे हैं। इस को तनिक भी किसी को चिन्ता नहीं। सब से बड़े दुःख की बात यह है कि मुगल काल के पौर अत्याचारों को सहन कर भी भारतीय जीवन मे भारतीयता भी अपना जीवन थी। पण २ पर टक्कर लेते थे। वस्तु हूड समय यह भावना मरने जाती थी। आधुना यदि पर जाते तो भारत का बाकी क्या बचेगा ? पूजोपति पूजो के पण्डे तक पण्डे राजनीतिक अपनी अपनी उपनी बजाने मे मस्त हैं, भोगो भोग मे लगे हैं। तो भला भारतीयता पर होने वाले हमले को रोकेगा कौन ? बापें समाज पर विरहास किया जा सकता है वही एक मात्र सच्चा है। किन्तु समा हिया आर्य कि यह भी अब जल्द प्रिय बनता जा रहा है। राजनीति का पुट अतिक है और आर्यपन का बहूत

कम। फिर भी इसके सिवाय और कौन है ? सब मोर्चा पर दूरे ही लड़ना है, सब काम इसे करना है और सब का ध्यान भी इसे ही रखना है। भारतीयों मे भारतीयता की भावना मरने न दो। भावना का सख पुकते रहो। भारतीयता पर ईसाईयत का जो भयानक छुका हो रहा है—उसे पूरी तनिक लगाकर आर्यसमाज ने ही रोकना है। बापों ! जन-जन के मन-मन मे जावना भर दो—विशोकम्पाद

## नेहरूसंस्कृत विश्वविद्यालय

भारत की राजधानी देहली मे स्वर्गीय प्रधान मन्त्री श्री नेहरू जी के नाम से संस्कृत विश्वविद्यालय खुला है। जैसे तो जैसा पढ़ा है कि इसका कोई भवन नहीं है। अभी-अभी देहली के सीक कमिश्नर श्री झा जी ने इसका योजना भाषण देते हुए संस्कृत भाषा की बड़ी महिमा गाई है तथा बिदेशो मे इसका प्रसार करने का संदेश दिया है।

विचार बड़े ऊंचे हैं तथा सबके लिए मनन के योग्य। परन्तु यह उह है कि संस्कृत की प्रशंसा तो भारत के सारे बड़े-बड़े लोग करते हैं। इसकी उन्नति की बात भी खूब कहते हैं। उनका धन्यवाद है। किन्तु संस्कृत के लिए हो क्या रहा है ? आज यह बात कहना बत चुकी है कि संस्कृत पवन याना सूखी मरता है। भारत की रामायण, गीता, उगनिषदों व दर्शनो की वा ऋषि वाल्मीकि, व्यास, काली, दास महाकवि को रसीली भाषा संस्कृत का अंगरेजी के सामने क्या महत्व है, क्या प्रतिष्ठा है ? संस्कृत भाषा ज्योति आज अपने मन मे अपने देव मे ही भारी ज्योति अनुभव करता है। इसकी कोई माय नहीं, सम्मान नहीं। सस्कृत के महान केन्द्र भारत मे ही सस्कृत का व संस्कृत बालों का जितना पौर बचपन है, उतना धरती के किसी भी भाग मे नहीं। बापें-समाज भी इसी मे शामिल है। देहली का यह नेहरू संस्कृत विश्व विद्यालय संस्कृत व इसके पढ़ने वालों को यदि सम्मान दिना संके तो यह महान काम होगा। अन्वया समारोह तो चलने ही रहते हैं। हमें तो प्रतीत होता है कि भारतीय मे न रूप की मिलेगा, न परिष्ठत पुरोहित मिलिये, न धर्म मिलेगा और न संस्कृत के पढ़ने वाले ही मिलिये—

## शराब पर किंकिंटिंग

कभी वह दुःख था कि कांशेस पताका के नीचे भारत के भाई बहिन अंगरेजो कालन मे शराब को दुकानो पर किंकिंटिंग करते हुए माना कट्ट खरते थे। आज यह समय आ गया कि बड़े बिजान वाले भाई बहिन कांशेस शासन मे उन्की हुई शराब को रोकने के लिए नगरो मे शराब की दुकानो पर धरना मारने है। अपने राज्य मे इतना शराब का प्रचार होगा ? यह किसी के स्वल्प मे भी नहीं आया था। जनता की शराब छुड़वाने के स्थान उन को लाराओ बनाने की प्रवृत्ति को बढ़ावा देना क्या अच्छा है ? रामायण मे कौन भी शराब नहीं पी। शराब राज्य लुका मे शराब की भरमार थी। दोनो मे यह भी अन्तर था। रामराज्य का कोई बासी शराब नहीं गंगा वा—राबख राज्य मे हीर चलते हैं। हमारी सरकार देव को रामराज्य बनाता चारुंन है या गवना राज्य ? उहें साक कह देना चाहिए। शराब को बन्द करना प्रो सब का चाहिए कि प्रबल ज्वलत पैदा किया जाए—न०

## क्रियात्मिक देवता चलावना

वमा

आर्य गणना शम चोगीस के प्रधान, ममा के अन्तरा महस्य, किशामिक और बाने, कृषि प्रधानव्य व महाया उमराज ओ के अनुभव भक्त श्री परमेवरी शम जी बहल का मृगु ममाचार खचान के समान है। जैसे तो समाज के उडे ० सज्जन है वस्तु की बिहन जी जैसा सायिक, नश, मोन की समीच प्रैण, समाज के कालो मे मुक्तकाल मे शान करने बाने, अखनत अछानु सज्जन सचमुच विरने है। सारे परिजाम के मुआरुण मे धर्मनीय उनके जीवन के सुश्राण ही है। श्री बान जी अब नहीं मिलेने। सारे समाज के लिए भांओ आधान है इय महान् दुःख मे दुःखी है। उनकी विशेष स्मृति स्मयपित करनी चाहिए।

- स०

★ मनीन, बिडा. मबादि के मेल मे उन्तर हुये शाक, पान, कबादि न खाने चाहिये। इनके अतिशय मिलने पर पतिये। उन्के उन्के पण्डे, सहसुरन आदि उनका खाना भी समा-मुण की बडाता है।



आज भारत में सफ़्ट की स्थिति है। यह सफ़्ट चीन के वृहत् आक्रमण से तथा पाकिस्तान की साजिश के कारण उपरिष्ठ हुआ है। चीन निरिषत भारत के इलाके हथियाता चाहता है। सदाश के भाग जिसे कबल चिह्न कहते हैं उन पर कबलत कबल जमाये रखने का निरयम चीन ने किया हुआ है। उसके सुवे सिधयाग में जाने के लिये कबल चिह्न में से चीन ने सी मोल सन्धी करी प्री करी है। यह हथ इलाके को परास्त किए बिना नहीं छोडेगा। पाकिस्तान एक गीदर की तरह इस ताक में है कि कब चीन कधी रोए भारत को मारे तो यह जो आगे यह कर मास मोचने में भाग में। यह सफ़्ट वास्तविक है। बचोले कलित नहीं। बिना युद्ध चीन हमारे २० हज़ार बंभे मोले से पीछे नहीं हटेगा। यह सुनिश्चित तथा अपरिह्य है।

द्वय गम्भीर स्थिति में घासन का संद्वयम धर्म मैतिक नैयारी है। हम ने इस ओर उदासीनता रखा। चीन ने इस का अनुकूल फायदा उठाया। हमारा राष्ट्रीय अवमान हुआ। सभार की शक्ति में भासित गिर गया। अब हमें इस अपमान को मनमान में बदलना होगा। इस पराजय को विजय में लब्धनी करना होगा। तब हम अपने गौरव का पुनर्लाभ करेंगे। इस के लिये सर्वे प्रथम भारतीय सरकार को पर्याप्त युद्ध सामग्री तैयार करनी होगी। चीन के शिष्टी दल का मुक़ाबिला करने में लिये मेना बढानी होगी सकल युद्ध का बानावरल कायम रखना होगा। भारतीय निरिषत रूप से आराम पमद हो गये हैं। भारत की भूमि पर पिछले सी वर्ग ने युद्ध की गोशिया नहीं बनी। भारतीय जनता युद्ध के भयकर रूप की कल्पना करने के लक्ष्यमें है। हमारी सरकार को बोदक लोर पर लोमों को युद्ध के लिए उद्यत करना होगा। भारतीय जनता में बहु मनोवृत्ति पैदा करनी होगी जो युद्ध के लक्ष्य तथा फट्टी का स्वागत करती है और बलिदान के लिए सर्वे साधारण को तैयार रखती है।

परन्तु यह सारी मैतिक नैयारी धरो-बराई रह जायगी यदि देश की आन्तरिक स्थिति दानत उन्माह भूषे तथा कलता परवर्धन न हो। १९१४ के युद्ध में—मर्मो १९१८ तक मैतिक शिष्टीकोष में निजमा था। मिश्रराष्ट्र नगणार पीछे हट रहे थे। परन्तु

## आर्यसमाज तथा राष्ट्रीय संगठन

प्रि० प० रत्नाराम जी एम० ए०, एम०एल०ए० होशियारपुर

एकाएक जर्मनी हार गया। ब्रिटेन, फ्रांस तथा यू. एच. ए. विजयी हो गये। उसका एक मात्र कारण था कि जर्मनी ने आन्तरिक विच्छेद हो गया। परन्तु कलह जगृत हो गई। परिष्ठा-मत्तः विजयी जर्मनी हार गया है। युद्ध में स्वस्थ देश परन्तु कलह से विनष्ट हो जाते हैं। किसी भी देश के सैनिक फट्ट की अपेसा आन्तरिक या होम फ्रंट कम महत्व का नहीं अपितु आर्थिक महत्व का है। राष्ट्रीय मोराज (Morale) पराजय को समय पाकर विजय में परिधलित कर देता है। पिछले युद्ध का मिटेन तथा रूस का रतिहास इस बात का साक्षी है।

इस होम फ्रंट की संरक्षित, सुध-वस्थित, सुखद तथा अदम्य बनाने के लिए धार्मिक तथा सांस्कृतिक सत्याए एक विशेष नेल अडा कर सकती हैं। राष्ट्रीय को सकल सोना चांदी नहीं बनाने और भी तथा बलिचवान अव्यक्त गादू को सवले बनाते तथा स्वतन्त्र रखते हैं। धन तथा सामग्री मानवी बुद्धि बन तथा परिधन से वेदा हो जते हैं। श्रुति ईमसन अननी एक कनिम में कहते हैं—

Not gold, but only men  
can make A people great  
and strong men who for  
truth and Limon's Sake  
Stand fast and supper long  
Brave men who work while  
Others sleep who dare  
while others fly. They  
build a nation's pillars  
deep. And lift them to  
the sky

यह मानव निर्माण का काम अध्यात्मिक सर्व या धार्मिक सत्यापै ही कर सकती है। सुलाब्ध स्थिति मैतिक सिद्धान्तोकी सुविधाको बलिबेदी पर कुत्थान कर देते हैं। इसी लिये लार्ड एक्टन की विख्यात लोकोक्ति कि Power corrupts and absolute power corrupts absolutely, अर्थात् सत्ता, सत्ताधारी बना देती है और एक मात्र सत्ता धारी होना नो पूरुलतया सत्ताधारी बना देता है। यह सर्वत्र सभिद्ध ही है। इस का एक मात्र द्वाज उच्च मैतिक आशयोकी पानन में तथा आध्यात्मिकता में है। यह काम निराल सुधार्मिक

सत्ताको वा है।

देश में सत्ताधारी के विरुद्ध हाहाकार है। यह हाहाकार देश की शासनयो उन्नति तथा सुध्दिक के लिये बहुत ही खतरनाक है। यह चीनी आक्रमण को रोकने तथा अपने देश के खीने हुये भाग को वापिस लेने में बाधक है। यह स्थिति जो सत्ताधारी तथा जोर बाजारी से पैदा होनी है वह देश को निर्बल बनाती तथा होम फ्रंट को कमजोर करती है।

आर्यसमाज के उच्चनैतिक आदर्श तथा वैदिक आध्यात्मिकता इस प्रयोजन को सिद्ध करने की क्षमता रखते हैं। वे राष्ट्र के अर्थबन्धों को स्वयंप्रिय, न्यायपरामर्श तथा सुचरित्रबान बना सकते हैं। परन्तु लोक की बात तो यह है कि प्रायः आर्यसमाज स्वयं इस सत्ताधारी, भूट, अनुत्, मायावाज, दुग्ध, मनकारी, आत्यन्तकी के गर्व में गिर चुका है। जो कुप्रथाए तथा सत्ताधारी शरनैतिक लोमों में देखे जलिये उससे कही अर्थिक विनाशनी बातें अब प्रायः आर्यसमाज के समुद्र में पानी जाती हैं। आर्यसमाज का डाया सत्ताधारी अनुत् में खोखला कर दिया है। जो निराशा पैदा करने वाली बात है वह यह कि बहुसंख्या में आर्यसमाजी इस दुःआई को दुःआई के रूप में नहीं देखते। कई उम पुतानों तथा कृत्तलता को जो आर्यसमाज के साधारण संचालन में आ गई है उसे उचित तथा ठीक बताते हैं। मैंने अनेकों आर्य समासियों को इस अन्वारी तथा दुःआचा का समर्थन करते देखा है। राजनैतिक क्षेत्र तथा दलों की लुत्थान करके तथा दलकी उपमा देकर। इसका यह अर्थ है कि हमारा आचरण ही प्रतिन नहीं हुआ अपितु हमारे उच्च आदर्शों में घुलने पड़ गए हैं, और कई दिवाओं में शिष्टि से ओन्नत हो गए हैं।

मुझे तो इस नैतिक पतन का एक मात्र इलाज यह नजर आता है कि आर्य जनता जेते और और जाग-रत उन सब सत्ताधारीयों को जो आर्यसमाज के उन्नत आदर्शों को धृष्टि में मिला रहे हैं बाहर निकाल दें। धृष्टियों की कोई परमाह न करे। आशो, इस सफ़्ट में हम स्वयं समानों गार्मी तथा उच्चनैतिक आदर्शों के समर्थक बनने का व्रत ले

और आर्यसमाज को अन्वारी तथा सत्ताधारी से संशोधित करने का प्रयास करें। पहले हमें अपने आप के साथ आराम करना होगा। तब हम समाज में जनैतिक को जनैतिक, सत्ताधारी को सत्ताधारी, अन्वारी की अन्वारी तथा दुग्ध को दुग्ध कह सकेंगे। ऐसी स्थिति पैदा हो जाने पर हम राष्ट्र में से सत्ताधारी तथा जनैतिक को समाप्त करके होम फ्रंट को मजबूत बना सकेंगे। यह हमारी सच्चे अर्थों में राष्ट्र रखा तथा देश सेवा होगी।

दशानन्द ने आर्यसमाज की नींव सत्य तथा सुचरित्र पर रखी है। यदि हम आर्यसमाज में उच्च नैतिक आदर्शों के लिये दृढ़ भावना तथा रक्षक बचपारी जागृत कर सकें और आचरण में दालिन कर सकें तो दशानन्द के स्वल्प चरितार्थ हों और देश को हम अवश्य संकट से निकाल सकेंगे।

## भारत सूचना कार्यालय से प्राप्त

सैनिकों को उद्योग प्रबंध की शिक्षा

आजकल नई दिल्ली में ३५ रिटायर और रिटायर होने वाले सैनिक अपनए उद्योग प्रबंध की शिक्षा ले रहे हैं। इस में से २८ अन्वारी सेना के, ३ नौसेना के और ३ वायुसेना के हैं। यह पाठ्यक्रम ४ सप्ताह तक चलेगा।

## श्यामलपुर में मुंडन संस्कार

श्री गुरु प्रसाद श्री मन्नी श्यामलपुर आचरण ही प्रतिन नहीं हुआ अपितु हमारे उच्च आदर्शों में घुलने पड़ गए हैं, और कई दिवाओं में शिष्टि से ओन्नत हो गए हैं।

मुझे तो इस नैतिक पतन का एक मात्र इलाज यह नजर आता है कि आर्य जनता जेते और और जागरत उन सब सत्ताधारीयों को जो आर्यसमाज के उन्नत आदर्शों को धृष्टि में मिला रहे हैं बाहर निकाल दें। धृष्टियों की कोई परमाह न करे। आशो, इस सफ़्ट में हम स्वयं समानों गार्मी तथा उच्चनैतिक आदर्शों के समर्थक बनने का व्रत ले

श्री गुरु प्रसाद श्री मन्नी श्यामलपुर आचरण ही प्रतिन नहीं हुआ अपितु हमारे उच्च आदर्शों में घुलने पड़ गए हैं, और कई दिवाओं में शिष्टि से ओन्नत हो गए हैं।

२२—५—६६ को प्रो० कुण्डल आर्यसमाज के उच्चनैतिक आदर्शों के लिये दृढ़ भावना तथा रक्षक बचपारी जागृत कर सकें और आचरण में दालिन कर सकें तो दशानन्द के स्वल्प चरितार्थ हों और देश को हम अवश्य संकट से निकाल सकेंगे।

परिवारिक जीवन के निर्वाह के लिये धन एक अनिवार्य उपकरण है। वेद मन्त्रों में स्थान स्थान पर परमात्मा से धन के लिए प्रार्थना की गई तथा 'अराधयः' अर्थात् दान न देने वालों की निन्दा की गई है। स्पष्ट है कि दान भी धन से ही सम्भव है। अनि-प्राप्य यही हुआ कि प्रत्येक व्यक्ति जो साधारण जीवन व्यतीत कर रहा हो, धन से मुक्त होना चाहिए। धन संभारों के लिए पाप है तो निर्धनता गृह्य के लिए अनिप्राप्य है। किन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि हम जैसे तैसे भी धन प्राप्त कर लें। ऐसा निश्चय कर ही हम चोर डाकुओं को प्रोत्साहन देने वाला साहस्य सिक्खने के अपराधी माने जाएंगे। इसी सन्ध में कुछ दिन पूर्व हम ने अपने बहिनो के सम्बन्ध एक प्रश्न प्रस्तुत किया था कि आप का धन कहा जाता है? यह श्रम्य मन्त्रों की व्यवस्था का निर्धारण है। किन्तु आज मन्त्रों की व्यवस्था भी प्रश्न आकर्षक है। हमें आज के मासों पर धन्य के मन्त्रों में भी अधिक ध्यान देना है। अबका यों कहिए कि यदि हमारे आपके के मास्य युद्ध एवं निवर्तन में तो धन्य प्रयाणी स्वन्, मुक्त जाएगी। ईशान्वारी की कर्माई स्वर्गात्मक रूप में अपने कामों में खर्च होती है इनके मूल में एक रहस्य यह भी है कि यह मूल पत्नी के की कर्माई निर्वाह के लिए ही कर्माई से पत्नीक पत्नी है। अर्थात् नष्ट करने के लिए कहा में आए?

हमारी आज का उद्गम श्रम्य क्या है? यह हमारे जीवन के बनने विपन्न का प्रश्न है। धन की तुलना जल में की जा सकती है। यह जल की भाँति प्रवाह शीन है। रक्षीम जो ने इसी कल्पना के आधार पर कितना सुन्दर लिखा है :-  
 यों जल बहें नामे में धर में बाँधें दाम।  
 डोह हाव उनीचिए यही मन्त्रमन्त्रों काम।  
 हमारे यहाँ जैसे धन की अना-स्यक बुद्धि विनाश का मूल मानी गई जैसे ही धन का उद्गम श्रम्य मन्त्रिन होना भी जीवन को यदता कर देने बासा समझा गया है। आप विचार लीजिए जल जैसे स्थान से आता है अपने शुद्ध लिए रहता है। समुद्र से आने वाली हवाएँ यहाँ लाती हैं शुष्क मत्स्यवीच पत्थने धूल तथा धुँकी जाती हैं। उग्र प्रदेशों से उठने वाले जल चक्र माय मन्त्र में समीरन करते हैं। पुनः धन का प्रभाव जीवन पर पड़े बिना कैसे रह सकता है? स्मरत

नारी स्तंभ-

बहिनों से एक प्रश्न-  
 आप का धन कहाँ से आता है?  
 (कुमारी सुशीला आर्या एम० ए० विद्या वाचस्पति)

रखिए धन की कर्माई आपके परिवार के जीवन की समृद्धि तथा मच्छरिचना का अङ्क माधन है।

आज के युग में इस तथ्य पर लोग तन्हेह करने लगे हैं। हमारा लक्ष्य ऐसा रह गया है। वह कंसा ही, इसकी विना हमें नहीं। कुछ लोगों को मूर्ख संस्कार व्यापार स्या विवत-कर्तरी में कोटिडा बनाने, बैंक बन्दन बढ़ाने एवं सिखनगुजो द्वारा प्रदान की गई प्रतिष्ठा कमाने देख लीय यह श्रम करने लगे है कि सम्भवतः काला बाजार के उम युग में ईश्वरीय कर्म-फल व्यवस्था भी कुछ परिचलित हो गई है। किन्तु इनमें मार नहीं। ऐसी श्रापितियों का निराकरण करने के लिए हमें सामन्तकारों की शरस्य में जाना चाहिए। योग दर्शन का प्राप्य करने हुए अय्य मुनि ने कर्मफल व्यवस्था का बहुत सुन्दर निर्रंभ विवेचन किया है कि कुछ कर्म हमें मुन्दन करने देने वाले होते हैं कुछ देने तक पड़े रहते हैं। नीचरे प्रकार के कर्म मुक्त कर्मों में डूबे पड़े रहते हैं। जैसे ही हो न। अनुजिन साधनों में धन प्राप्ति करके भी सुखी दीक्षने वाले व्यक्ति को के किन्हीं शुभ कर्मों की प्रया-पना से ही ऐसा है। यह नहीं कि पाप की कर्माई पत्र रही है, मी मी कमी फल ही नहीं मकनी ऐसी टड धारणा बनाना हमारे आपके सोचों की मनि-पना सिटाने का सर्वप्रथम उपाय है।

धन में कोई बुरा मातने की बात नहीं आज हमारे आपके श्रेण गदने ही चुके हैं। इने निने धर ही ऐसे होगे जिन में कही ने किसी प्रकार की अनुचित कर्माई का अथ न आता हो। दम कर्माई के अनेक रूप हैं। कोई रिक्खव न हो, तत्कर, व्यापार हो कर, ऐसा जावषयक नहीं। मत्स्यार्थ के नाम पर दान का धन सामा, हट्टु कट्टु होकर भी भीक्ष मागना, निरस दृष्टी पर लगे है उमे पूरा न करते हुए बेसन लेना, शिस्ताब किताब में बेईमानी करना, चोरी में आय कर या दिन्धी कर बचाना इत्यादि विविध प्रकार हैं जो शुद्ध कर्माई में नहीं गिने जा सकते। इनके धासलेटी पी की उपमा दी जा सकती है।

अब आप सारे देश के सुधार का ठेका भरे ही न उठाइए पर अपने घर परिवार पर दृष्टि डाल कर देख लीजिए। इसकी ई टयें संभवपर भाषणदा बाध में सीमेंट के स्थान पर रेली लया कर डेकेदारी के बन्दे तो नहीं आई? यदि आप इस्कर हैं तो रोगी के प्राणों में खिलवाड करके तो आप अपने पुत्र को अमेरिका पठने नहीं भेज रहे? आप कर्म हैं तो कापजों के उपर लिबे अको की श्रद्धा बढनी से प्राप्त धन को निग-पेट के धुग में नहीं उठा रहे? आप अध्यापक हैं तो कर्तव्य की उपेक्षा करके बेन की नारीस की प्रतीता तो नहीं कर रहे? उन तथा और अनेक निपत्तियों में अपने भीतर भाक कर देलता है। जो परिवार धन के मोक्ष की दृष्टि में उल्ले है वे आज भी कनिपुग में आदातीन मानिक विचारधारा रखते हैं। मंथे मंथे धन पाानी पीकर हम कन तक स्वस्थ रह सकते हैं? साम्ण कहते हैं 'अन्न में पोसा' अन्न में ही प्राण्य धारण्य विग जानें है। करहण है नन्ना भाओ अन्न बनाये जाय नम।

धन में केषव गेहू की सफाई वा पुष्टि करण्य मुग्य में ही अस्मिध्व नहीं उसकी प्राप्ति के उय में भी है। एक बात और भी यह नहीं कि आपका मन्त्रुय धन अनुचित मार्ग में ही आता है। मन्त्रव है आप परिधम में धन कमाने हो किन्तु मन्त्रों की कोई भी देलने जन की धारा उम गद्वन नीर में मिल गई तो सारी पत्थिना को ने डूनी। पानी के रक्ख होज में आप एक बन्दी गधना अन्न डाल कर देख लीजिए। ऐसी ही हमारी बाओ का परीशस अपने परिवार पर साल छ, महीने कर लीजिए। कर्माई के अनुचित साधनों के नाथे बन्द कर देलिए पुनः जीवनवर्ष कितना काम उठ जायगा। परिवार के एक एक उमे पर मनिता का अन्ना लगने में बचाना गृहिणी का कर्तव्य है। इस में यही कहेयें— कोई बुरा माने बाहे प्रला—देस की सम्य अर्थात् कर्माई में लिए हमारी देविषा उस रदायी है वे अपने सरअको को तंग करके ऐसा करने पर विषय

करती है। हमारी कर्माई की सुदता की जांच कोई कमीशन विद्या कर तीन काल में नहीं हो सकती इसे तो देविषा ही करती। इस लिए बहिनो! आप से प्रार्थना है कि आप अपने पिता, पति, पुत्र, भाई किसी की भी कर्माई का एक-एक पैसा जांच कर प्रयोग में लाने दें। अनुचित कर्माई के नये पैसे को भी मत छुए। यह काला माप है जो आप के परिवार में विष्य व्याप्त कर देगा। मन्तानों के हुक्मों ने नग निच नए रोगों में धक्के भारतीय गृहयो। समनो और देखो, आप का धन कहा में आता है? आलो देखते विद्यमन्त भोजन पर मत दूट पडो। जौती मन्थनी मन निगनो। धनी में हित है।

सूचना कार्यालय भारत  
 सरकार

रक्षी संघनालय को भारतीय  
 कवा के नमने भेंट

भारत सरकार ने वेतिनयंत्र के इन्फिनेट गवटानय को भारतीय कवा कृतिग का प्रतिनिधि मन्त्र भेंट करने का निर्यय किया है। उम में पक्कर और कसय सुनिदा वादृतिविषय, चिन और लोक कवा के नमने होये।

पंजाब उच्च न्यायालय के  
 नयायुच्य सुष्य ग्याधायीय

राष्ट्रपति ने न्यायाधीश भी महर-मिग को जो उम समय पत्रात्र उच्च न्यायालय के कार्यकारी सुष्य न्याया-धीश हैं २९ मई, १९६६ में राजा-उच्च न्यायालय का न्यायी सुष्य ग्याधायीय नियुक्त किया है।

जवाहर बाल भवन

जवाहर बाल भवन स्कुलीनर मत्स्यग होगी, जिन में कर्तव्य ध्यापक अनुभव प्राप्त कर सकेंगे और अनेक ऐसे कार्यों में शिस्ता में सकेंगे जो हमारे स्कुलो के पाठ्यक्रमों की कर्मिणा पूरी कर सकेंगे। ये भवन कर्तव्य में जोर मरेये और उनमें जीवन के प्रति अनुताम पैदा करेये। उन में समूने विषय को एक समयमें और जानने की विज्ञाना संगणय है।

जवाहरसाल नेहरू स्मारकनिधि

जी जवाहरसाल नेहरू की पूसरी बरती के अन्तर पर २५ मई के अन्ध मन्थिने ने २० से २५ मई १९६६ तक निधि के लिए एक इक्कड़ करने के लिए विषेय अभियान चानने का फैसला किया है।

समाज एवम् सस्था के संचालन के लिए भाषा अत्यन्तवश्यक है। भाषा समाज विशेष की ऐतिहासिक प्रगति व सांस्कृतिक अग्रदुव क्य दारण है। भाषा के द्वारा एक समाज में प्रचलित रिति-रिवाजों के बारे में विस्तृत ज्ञान हो सकता है। जिस प्रकार एक श्रृंखला में लिटकी हुई कडी में श्रृंखला का ठोक-ठीक परिचय मिल जाता है उसी प्रकार किसी भाषा के शब्द विशेष से उस भाषा की परम्परा का आभास सहज ही मिल जाता है।

ह्र भाषा के शब्दों के उच्चारण का डग व उमसे सलन बेहरे की भास-परिभाषा अलग-अलग होते हैं। एक भाषा में जो शब्द सहानुभूति का बोधक माना है दूसरी भाषा में बेटी शब्द पूसा का प्रतीक हो सकता है—इस भाषा का निर्माण विशेषतः बकाल के बोलने के डग पर निर्भर करता है। यह मिद्वान्त केवल भावना-प्रधान जगत् में अधिक कार्यशील है। भावना-प्रधान जगत् में शब्द का महत्व कम, इशारे (जिस्चर) का अधिक होता है।

जहा तक व्यक्तिक के बौद्धिक विकास का प्रश्न है, शब्द उत्तरोत्तर महत्वपूर्ण बनते जाते हैं। ह्र बात का निर्माण तर्क की कसौटी पर किया जाता है। तर्क में शब्द की ही प्रधानता होती है। यही को यही बात समाज विषय की वैज्ञानिक उपलब्धियों के बारे में कही जा सकती है। जिस वस्तु का जहा मूजन हुआ है, निश्चित रूप से उसका नामकरण भी निर्माता समाज के लोगों के उच्चारण के डग व जीवन के प्रति इष्टिकोसा की इष्टितत रखकर ही होगा। ह्र वैज्ञानिक उपलब्धियों के पीछे समूह विचार का जीवन-दर्शन छिपा हुआ है।

**भाषा व भौतिक विज्ञान**

लेकिन वैज्ञानिक उपलब्धिया समूहों एसाजाल्म जगत् के लिए उप-योगी होती है। व्यक्तिक की आवश्यकता व एहसास के प्रसारण के साथ-साथ उसकी वैज्ञानिक उपलब्धिया भी बढ़ती रहती है। ह्र वैज्ञानिक उपलब्धि समाज में नये शब्दों व भाषाओं को जन्म देती है। प्रत्येक आविष्कार ह्र समाज के उपयोग में आने लगता है तो समाज में नये शब्दों व नये बर्णों का निर्माण होने लगता है। लोगों में संघ व सघर्ष की प्रवृत्ति प्रबलतर होती रहती है। इस प्रवृत्ति के फल-स्वरूप भी नये शब्दों व मुहावरों का

**हिन्दी का हिमायती कौन ?**

(श्री दूनदरलास जी वोहरा जोधपुर)

आविष्कार होता है। इसी कारण आवश्यकता को आविष्कार की जन्मी कहा गया है।

व्यक्ति में आविष्कार का यह उद्गम ही रहा है जिसके कारण वह एक ओर गुरुेशन से उठकर गीता का मूजन कर सका है, दूसरी ओर युष्का से निकल कर गणमण्डली अट्टालिकाओं में प्रथम पा सका है। इस प्रकार मानव का सांस्कृतिक व सांस्कृतिक विकास एक प्रकार से शब्दों व भाषा का अधिकार व श्रृंखलाबद्ध विकास रहा है। व्यक्तिक की सांस्कृतिक मुहूर्तता के साथ साथ उसकी भाषा भी समजित व सुव्यवस्थित हुई है।

**शासन व शब्द**

इस प्रकार ज्यों ज्यों व्यक्तिक की वैज्ञानिक उपलब्धिया व भाषा समान्तर चलते रहे, उसकी राजनैतिक चेतना में भी तदनुकूप गिलार आता गया है। 'मुष्क-मुष्के मतिभिनः' की बात ह्र जगत् साक्षात् होने लगी। समाज में सघो व सस्थाओं की बाड़ आने लगी। ह्र समूह अपने ही शब्दों को समानत मान कर चलने लगा और तो और एक ही शब्द की व्याख्या को बदला जाकर स्या ही शब्द गदा जाते सगा। शब्दों की इस तोड मरोड में ही व्यक्तिक का सांस्कृतिक अग्रदुव हुआ, सस्थाओं के आपसी सघर्ष की कहानी शब्दों के माव-परिचर्चन से ही प्रकृत है। ह्र समूह अपने ही किले और कृषाल के सरदार के विवे उमल रखने लगा। समाज में 'राजा माने सो ही रानी शेष सब भरे पानी' की विर्बन्धी प्रवृत्ति का पोषण इसी कुष्ण के कारण हुआ है।

जिसके हाथ में शस्त्र हैं, शासन है, यही शक्ति पर विष्णुसमीध नियामक है—साधारण जन समूह पर राज्य का रोक स्पष्ट रूपसे हाथी होने लगा। जो बात किले अथवा कचहरी में तय हो गई, वह तब, शेष सब मिथ्या व आचारहीन। इस प्रकार शनः शनः कुण्डल समाज का निर्माण हुआ। लोगों की शासन व शब्द के प्रति आस्था दूनतर होती गई। जीवन के ह्र शेष में व्याकरण ही प्रथम दिखने सगा। परिणाम-स्वरूप संस्था की बलिधेरी पर वैयक्तिक उपलब्धियों की

आवाज - हवा करने पर बाध्य होना पडा। जीवन व जगत् की व्याख्या भी सांस्कृतिक सीमाओं में रह कर ही की जाने लगी। भाषा व साहित्य भी दीर्घकाल तक इन सीमाओं में ही सिस्कता रहा। ऐसी दम घुटने वाली परिस्तिथियों में लोकतन्त्र का आग्रह्यय अनिवार्य हो गया।

किर भी समस्या पुणतः सुलभी नहीं। व्यक्तिक के लिये किसी न किसी सस्था अथवा सघ के प्रति वफादार होना आवश्यक हो गया। यद्यपि ऐसे शासक थे, जो एकता चको रे के स्वर पूंके है, लेकिन ऐसा उपद्रोप साधारण व्यक्तिक की पड़च से परे रहा है। भेर-प्रवृत्ति प्लास्टिक का चस्मा लगा कर प्रकट हुई। लोगों को अनुशासन अथवा अधिकार के नाम में देन देन प्रकारसे अनुसरण करना ही पडा है। जिन्होंने ऐसा करना अपने अह के प्रतिष्ठा समझा वे, बहुसाग में, समाज से परित्यक्त हो रहे, ऐसे व्यक्तिक को बूझा नगण्य मामलों में ही हुई।

जो कुष्ण भी हो, समाज में सस्था द्वारा प्रचलित शब्दों व सविधान की ही प्रधानता व प्रतिष्ठा रही लोकतन्त्र में भी साठी साठी ही रही।

**अनुसूचदायिस्वयुवत अनुशासन**

भारत में चूकि व्यक्तिक के आध्यात्मिक विकास पर ही सस्था की श्री-वृद्धि को महत्वपूर्ण माना गया है। अतः जब तम् १९५० में ही राष्ट्र का राजनैतिक मानो पर ही गठन हुआ तो यह समस्या सहलबाहु की तरह उभरने रोड रूप में प्रकट हुई। आध्यात्मिक रूप से तो अर्द्ध-वर्षान का आविष्कार व अनुसूचित करके, भारतवासी पुणरुपण लोकतन्त्रों व व्यक्तिकवादी बन ही चुके थे। इसी कारण भारत में विषय तथा भौतिक विज्ञान के प्रति लोगों की एक प्रकार से विरक्ति ही रही है। यहा ह्र विज्ञान की पुनर्जाति जगत से विरक्ति के रूप में की गई है। लोग कमबोध का प्रतिपादन एवम् प्रचार करते हुए भी लौकिक विषयों के बारे में कुण्ठित ही रहे। देश का दर्शन वैज्ञानिक रहते हुए भी विरक्ति से ही आविष्कृत रहा।

भारतवासियों की जीवन के प्रति इस उदासीनता में उन्हें अनेकों बार

विदेवी लोगों से जातकित रखा। अथार्थ व अनुशासन में अनुसूचन रहने से राष्ट्र-धन-धन अनुसूचदायी लोगों का प्रादुर्भाव होने लगा। ह्र बात में लोग अल्प व अनुशासन की दुहाई देने लगे। 'राज्य ही सब कुछ करेगा' इस प्रकार की संतुष्कारणी कुष्ण ने पिछली अनेकों घातकियों तक भारतवासियों को आध्यात्मिक रूप से भी अपालन रखा है।

जिस प्रकार आध्यात्मिक रूप से हमें एकान्ती रहना सिध रहा है, ठीक उसी प्रकार राजनैतिक क्षेत्र में भी हम कई बार एकात्मन की वैयक्तिक व समानता दुहाई देने लसते हैं। स्वाभिमान व धर्म के नाम में हम में से अधिकांश को मूष मण्डक बने रहना भारती भी माता है। जयचन्दी-कुष्ण हमारी हमी मूष मण्डकता का चिह्न एव विर्षाण रूप रही है। अपने वैयक्तिक हितों के लिए हमसे सात्त्विक मित्रि को हरेखा ही गौरव माना है। यह प्रष्टि चाहे आध्यात्मिक क्षेत्र में ही अथवा अनुशासनिक क्षेत्र में, हमें अनुसूचदायी लोकतन्त्री बनाए रहे है।

**वर मरो चाहे वषु जोशी को टेके से मतलब !**

हिन्दी का प्रश्न हमें आज अनुशासनिक तौर पर अज्ञान बनाए हुए है। हमारी इस अज्ञानिता का कारण हमारा अध्यात्मिक विवालिवापन है। यह उस 'धम्मणी की कुष्ण' का विषय पल है जिसके कारण हम पिछली दो सदियों तक ( व इससे पूर्व भी) विश्वरुख रहे हैं। हमारी स्थिति उस बन्धर जैसी हो गई है जिसका हाथ चपनो से भरी औसली में फंस गया है। एक के बाद एक बना निहाल कर खाने का उसको बंधं नहीं, द्यर पूरी मुष्ठी भर कर बना एक साथ बाहर निकल नहीं सकता। कड़ने का तात्पर्य यह है कि हम राष्ट्रीय एकता चाहते हैं, लेकिन प्रांतीय भाषाओं को प्रयुक्ता देकर। माने वर मरो चाहे वषु, जोशी को टेके से मतलब—हिन्दी रहे अथवा न रहे, प्रांतीय भाषाओं को तो पसपने ही थे।

इस सन्धर्ष में अनेक भाषी राष्ट्र स्वोदरलेख्य का उदाहरण प्रस्तुत किया जाता है। लेकिन वहा की परिस्तिथिया भारत में प्रचलित परम्पराओं से बिल्कुल विपरीत है। कोरा लोकतन्त्र होमा ही पर्याप्त नहीं है।

(बन्धक)

# हिंदुओं के लिए

## आत्म विस्मृति अन्तर्गत है

(ले० श्री ज्ञानी पिंडोवास जी आर्य प्रधान आर्यसमाज लोहागढ़)

परमात्मा जाने वह कौन। अनुभव विना जा जन पद कोमुन कुछ पंजाबी युवकों ने हिन्दुस्थान के मनुष्य, हिन्दु महा सभा के सचिव भूत प्रधान का-स्थान प्रसाद मुकर्जी की जन्मे जाल में फांसा और इतिहास नैसर्गिक कर्मों से का हिन्दी अनुवाद करके भारतीय जनसंघ के नाम की कांटे से की प्राति एक घर्म विरोध संस्था की स्थापना कर डाली जो एक और हिन्दु सगठन होने का उद्देश्य करते और दूस-ओर सेक्यूलरिज्म का दम भरती।

जन्म में फले कतिपय आर्य नेशाओं और हिन्दु नीटियों का आगेबिन्दे भी इन सस्था को प्राप्त था, इसी कारण यह गोष्ठे यिनो में ही जन्मा का स्थान अपनी ओर आकर्षित कर सकी।

वास्तव में इस संस्था की प्रथम दिवस में ही कोई 'समन्ती सोचों' नीति पिचोवती नही थी। जिस पर कि 'सुहाई से' स्थिर रहती। उदाहरणतः-

१-प्रातःकाल निवृत्त रहने सारी भारी युवक हिन्दुधर्म का दम भरते, 'नमस्ते उद्या शारदने मातृभूमि' स्थाया हिन्दु भूमि कुछ बचिओस्तुम्हें' गाते हुए 'हिन्दु भूमि का स्तोत्र' पाठ्य करते, परन्तु अनसध में जाते हैं कि हिन्दु मुस्लिम-ईसाई-यहूदी की एक साम्नी भारतीय संस्कृति की दुहाई देवें सगरी। मनु देव और मुन कर जन्मां बलिष्ठ रह-गो।

२. प्रथम दिवस से हिन्दी की सुहाई देते जाते, देव नामरी विधि के सम्बन्ध में, हिन्दी आन्दोलन के दिनों सहजां हिन्दी प्रेमियों के साथ कारा-गार भोगने वाले इन जनसभी सज्जनों के प्रधान प्रा० मधोक के आत्मचर-वाले भाषण में जब हिन्दी की बच-हेतना करदेते देखे जाते तो लोग "कुछ न समझे लुब्ध करे कोई" कह कर बचाव रहे जाते।

३. एक और साक्षी सोचों के हस्त शर करमा कर गो हत्या बच कराने के लिये राष्ट्रपति भवन से कई उन कागज भौरेपत्र की शकन में डेर कर दिया जाता और दूसरी ओर गत बकर ईद (बकर अर्थात् ती) के अन्वेषण पर जिस दिन मुसलमानों के जन्मदिन की कुज्जानी शक्ति कर्तव्य-पत्रक जाता है, राजधानी के जनसभी

नेता 'ईद मिलन' का डींग रच कर कामा मस्जिद की छाया में ज्याकरी प्रकृति में ही देव धर्म एव जाति का कम्पाय संभवहोते है।

४. वर्तमान पंजाब में कभी मुसुली विधि में पंजाबी का विरोध कभी संभव, देहली में इस का पक्षपात और उर्दू का प्रतिनिधित्व तेरहके आत्मचर अन्वेषण के प्रभाव प्रा० मधोक को लुप्त किये जब उन्होंने पंजाबी हिन्दुओं को उपदेश दे डाला कि वे हिन्दी से, जो कि देस की राष्ट्र-भाषा होने के अतिरिक्त उनकी सामाजिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं सांस्कृतिक भाषा भी है, सम्पन्न विच्छेद करले और मुसुली विधि में पंजाबी की अपना ओडना बिजोना समझें जिसे न माराजा रणजीतसिंह राष्ट्र भाषा के पद पर आसीन कर सके न अंशेज वे इसे यह स्थान प्रदान करना उचित समझें।

५-आजकल तो आर्य समाज और आर्यसमाजी कार्य-कर्ता इन मनु-मुसुली को अन्वेषण वग एव है किन्हीने जनसभी की मनु-युवकता की पगने के क बचकर प्रदान किया, अपने मस्जिद तथा अन्य सस्थानों की उपरस्ता पूर्वक इस्तेमाल के लिए इन्हे दिव और जो इनसे बड़े-बड़ी आयाए करते हुए समक रहे थे कि हिन्दु, हिन्दी, हिन्दुस्थान का उबार इन ही देव

भक्तों, जति हित-चिन्तकों और धर्म प्रेमियों की कृपा से ही हो सकेगा। मगर अपने अन्वेषणीय भाषण में प्रा० मधोक के ये संकेत कि—

"पंजाब की स्थिति को और खराब करने से बचाने के लिये यह (अर्थात् सरकार की ओर से जनसभ की दिने गे सथाकथित आस्था-सर्गों को कायमिष्ठ करना अति आवश्यक है, प्रकट करते है मानो पंजाब की स्थिति को असाधारण बनाने का आर्यसमाज ही उत्तरदायी था। या मुं सम्बन्धे कि भारत-नात मे सांसाधनिकता का अस्था लगाने वाले, आत्मसिद्धि और भारत मघ से युवक हो सकेने के हक को मांग करने वाले अकामी और महानि सदानन्द के निरुत्थान-निष्कारणमा से देस की देवा करने वाले आर्यसमाजी, किन्हीने मांग तक बाने जिसे-कभी कोई मांग नहीं" को

# चरित्र बल के धनी बनो

ले०-वेद पथिक पथिक श्री धर्मवीर जी आपं सदाशारी व्याख्यान-भूषण सराय रहेला, नई दिल्ली-५

आज मृष्टि की आदि काल से अब तक या पिन्व के इतिहास को स्थान पूर्वक अवलोकन करने से यह ज्ञात होता है कि बुराईयों और पापों में कृतकार्यों में एक कर बहुते से बडे साध्याय तवाह और समाजत हो चुके हैं इस लिए ए मनुष्य, पर नारी को रिति छुटि समझो, हुवाहल या पलाया समक कर इनके भौहवान चित्तन से अपने आप को बचावो अन्वया लोक और परलोक में दुसह दुक्नों को भोयना रहेना। सधम, सदाचार, धोर नैराग्य, तप, जप, पत्र अनुष्ठान के बिना मनुष्य विच्छेद के निखर पर नासक जन्म मे भी नहीं पहुँच सकता है।

सदाचार मनुष्य का जन्मीक रसत कोष है। यह प्लाया र पलाया पत्र पाहे लाखों और करोड़ों की सम्पति सपदा आते, चाहे कानाको के दिनों मे एक फूटी कौड़ी तक न रहे इस बात को बिना मत करो परमात्मा पर अटल और अटूट विस्वास रखो।

साध्याय से भी पूरवधान-मनुष्य का चरित्र बल है इसकी रक्षा करो।

यह ध्यान रखो जरा गीत जन में मरया समान है। सुयव मनुष्य का जीवन धन सर्वल है इतलिये युवक कर्तों के करने में लोक उफार करने में देस बिना के प्रबल सचार में यह के अनुष्ठान में संयमी सदाशारी, परीषत्सरो संत महात्माओं महा योगियों और विद्वानों की सेवा और सहजता में अपने धन को और शरीर को सथाको।

यह ध्यान रहे मनुष्य चाहे चारो वेदों का मनु ज्ञाता हा, सकन बिबन को विद्याको हा मनु विभिनो हो, यदि उनका चरित्र नष्ट नही है, उनके मन मे या की भावनाए है तो बड़ मटा मूठ है और निरननीय है।

एक व्यक्ति चाहे वह कम पडा लिखा हो बड़ समक के साथ रहना है उसका जीवन मज मय है उनके जीवन में भिन्न नही है यह परमाशर की भिन्न में और लोक सेवा में अतिक सत्कृति और सभ्यता की रक्षा में अन्तान जन-मन-धन निखार करने की प्रति: कतिबद्ध है।

देव धर्म की रता के लिए मर कउन बाधे फिरता है यह हुयारे आदर और पूजा तथा सभाम का पात्र है।

यह ध्यान रहे पर नारी से प्रीन करने के कारण ए राजक की सोने की मंका आज वे १ लाख सयं पूर्व रास में मिल गई थी। चरित्र धन और विद्याकी के कारण मुगल साम्राज्य का मूर्ध अस्त हो चुका है।

चरित्र बल राष्ट्र का रत्न कोष है। पर नारी के हारे फिरना की मूँल उखरते और अनगिनत जूते पड़ते और फिरनां को जेल जाते और विद्वानों को मौत के घाट उतरते मीने देखा है। आज आधम सभ्यता को बलंकित करने वाले सभ्ये बाने को बट्टा सभाने बाने एक गही देस में लाका लोग धम रहे हैं इसलिये रहे हुए देस धर्म के क्षयको से साध्याय रहो और उन का बाणी मान से भे सम्मान मत करो

अरबों सगो से और चक्रवातों मंठी, प्रा० मधोक की कृपा के समान पात्र बन गये। अजान बताया: जाय कि इस दिन वैतरनाश्री का विनाय अकारिणियों के साथ आरामी साधारण युवाओं पर अपविन गठ-नगधन की दुराशा तथा चन्द चोटो के लोभ के दुहाय क्या कारण हो सकता है ?

वस्तुस्थिति यह है कि जब तक हिन्दु अपने समस्त सामाजिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक स्वल्पो के लिये हिन्दु के रूप में बीरता पूर्वक नहीं सोचने और बस निर्धनसंभल के प्रमजानको लोक कर संगठित रूप से बट कर कार्य लेंच में नही उतरेगे, तब तक हुजारी सधवा लाशों की सथा वाले सप्रदाय उमरते रहेंगे, सकन मनोरप होते रहेंगे और चासीस कराइ की यह आन्दार हिन्दु कोम इन सक्लर आङ्गुररी के इन्धनमास में फले हाने के कारण पिटती रहेंगे, विफल प्रयत्न होती रहेंगे चाहे यह महामुआब आदीयन चलायें, हिन्दी भाषा मोचां लषामे अन्वया पंजाबी सूया विरोधी अधिधान चालू करें। अब यह अवसर था गया है जब कि हिन्दुओं को अपने दुःख पर अंकित कर लेना चाहिये कि—

"आर्य विस्मृति आत्मघात है"

(कृपा)



**आर्यसमाज संस्कृत**

के १५ वर्ष तक बड़े प्रयासों के मज्जा में था। जिस में पं० लुधियाना जी महोदयदेवक आर्य प्रार्थना प्रतिष्ठानि जासम्बर की रात्रि को बंद करना होवे। रही तथा जो राजान मदन मोहन जी के मज्जा होने रहे। उत्तम में बनेक विद्वान्, सम्मानो तथा कर्मिये पावारे।

**आर्यसमाज विक्रमपुरा जालन्धर शहर**

सन्निहित सत्तर रविवार १५-१०-११ को प्रातः ८ बजे हवन का कार्य प्रारम्भ होने के पश्चात् प्रथम आरणा भारती उत्पन्न हुई। अनन्त पुरोहित जी का मनोहर व्याख्यान हुआ। सभी सन्तों के समुदाय भावना है कि समय पत्र बन्द कर बन्युहोत करें।

**आर्य कन्या महाविद्यालय**

**बढ़ोदा**

कन्याओं का नया प्रवेश। कन्या महाविद्यालय बढ़ोदा में प्रवेश करने वाली छात्राओं का नया प्रवेश हुआ है। कन्याओं का प्रवेश करने के लिये नया कार्यक्रम प्रारम्भ करके दोन, बढ़ोदा की शिक्षक संघ के अध्यक्ष डा० १० बुद्ध ने पूर्व प्रारंभ किया है। नवीन कन्याओं का ता० १६ से २० तक प्रवेश किया जायगा।

संस्थाका ईश्वरी विद्यालय बरकर रखने है। एत० एत० ६०० तथा स्थायिक दोनों का सम्मान कर रहा गया है। जिन कुल ६० ५० है, वार्षिक प्रीज ५० ५५ है।

निदेशिका  
अधिकांश कुमारी बाबाजी

**पञ्जीय एवं मन्तीय साहित्य**

वेद प्रपञ्च ५/- गोकार ५/-  
शैल, व्याकरण के पत्र १/नेवारायण  
हस्तार १/५० शैल, वेदो वेदो  
रोचक कृतियाँ ५५ शैल, शीतल  
५५ शैल, सङ्कलित जीवन ५० शैल,  
कर्म मोक्षार्थ २/२५ शैल, अंतिक  
निर्वाण कर्म और शैल १५ शैल,  
दैनिक व्याकरण हस्तार ५/-  
व्यायाम योग्य पत्र ११/२० शैल,  
साहित्य प्रचारक १/-  
जयदेव प्रवर्तक बढ़ोदा-१

**आर्ययुवक परिषद् दिल्ली-६**

वार्षिक निर्वाचन  
आर्य युवक परिषद् (रिज०) का वार्षिक निर्वाचन निम्न प्रकार हुआ।  
अध्यक्ष—श्री देववत जी मर्जेठ  
उप-अध्यक्ष—श्री० इन्दरदेव जी; कर्मी—  
प्रो० श्री०मृगेश्वर; परीक्षा मन्त्री—  
हरिवल जी; कोषाध्यक्ष—श्री०मृगेश्वर  
—प्रचार कर्मी

**आर्य समाज दौवान हाल दिल्ली का निर्वाचन कोर्ट ने रोक दिया**

दिल्ली।—नगर की प्रसिद्ध आर्य समाज दौवान हाल दिल्ली का निर्वाचन कोर्ट ने रोक दिया है। युवक सन्तों की प्रार्थना पर कोर्ट ने रोक दिया। समाज के युवक प्रयासकारी सन्तों का कहना है कि समाज के प्रयास की सम्मोचना का मत है अल्पवयस्कारों की भद्रता कर रही है और समाज का प्रयोग अपने निजी स्वार्थों के लिए करते हैं।

व्यासनाथ के समय बना-या रहकर प्रकट होते हैं इसकी प्रतीक्षा है।  
विष्णुधर १५-सुधान राय,  
नई दिल्ली

**आर्यसमाज राजोरी गाँव नई दिल्ली**

पिठिय वार्षिकोत्सव १ से ८ पर तक बड़ी बुधवार के मज्जा मया।  
अमर आर्य संस्था के प्रत्येक मंत्र की सविस्तृत व्याख्या पढ़ने के इच्छुक हैं

**रवर्षीय महात्मा हंसराज जी की लिखित**

**संस्था पर व्याख्यान**

पुस्तक विक्रय-मूल्य १ रुपया  
पवि माय महात्मा हंसराज जी की लिखित कृतियों के प्रकाशित कृत्यों में से एक है।  
श्री रामजी आर्य एम. ए. भूतपूर्व सिन्धीपल डी. ए. की कालिज बंबोई की लिखित (इंग्लिश) में

**महात्मा हंसराज**

**Maker of the Modern Punjab**

पुस्तक का अन्वयान करने कीमत १.५०, सजिवर का २.५०

प्रतिष्ठान  
महात्मा हंसराज साहित्य विभाग आर्य प्रार्थना प्रतिष्ठानि सभा निकट कोर्ट जलन्धर

उत्तम प्रातः को व रामजी हीतो के सार भजन होते रहे।  
—नगरकोटोर परिया मन्त्री समाज

**आर्यसमाज सांवा (जम्मु)**

जुमाव २२-५-११ को निम्न प्रकार के सम्मन हुआ।  
अध्यक्ष—श्री रामनाथ जी सराफ, उप-अध्यक्ष—श्री नामक पन्त जी शर्मा, मन्त्री—श्री वेद प्रकाश जी शर्मा, उप-मन्त्री—श्री लारमणि जी, कोषाध्यक्ष—श्री० कर्मा कर्मा जी मुख्या, अंतिक उपाय—श्री श्री० कर्मा जी शर्मा, श्री शीमा नाम की शार बंद करवाया गिह की लिए गए और प्रार्थना तथा के लिए दो प्रतिष्ठानि श्री वेद प्रकाश जी, श्री शारवा विह की बुने गए।

**आवर्यकृता**

पञ्जीयवेदिक की  
विद्या वेद प्रकाशकी तथा होषियार पुत्र को एक योग्य कार्य सिद्धान्तों से प्रेरित पवित्र अन्वेषणदिल्लीकी आ-वश्यकता है। वेदान्त योग्यता अनुप्राणित किया जावेगा। प्रचार का काम शान्ति से करना होगा। पूजा राम-मन्त्री विद्या प्रचारणी तथा, होषियारपुत्र।

**आर्यसमाज राजोरी गाँव नई दिल्ली-१५ का चुनाव**

प्रधान—श्री हंसराजनाथ जी शर्मा, उप-अध्यक्ष—श्री मणोरमाय जी, श्री जयशंकर जी शर्मा, मन्त्री—श्री नरेशचौर की शारिणा, उप-मन्त्री—श्री इन्द्रनाथ जी, श्री सतगुरु जी, श्री मोहनप्रसाद जी, कोषाध्यक्ष—श्री श्री० शारु मुख, पुस्तकाध्यक्ष—श्री चर्चोरी जी शर्मा, देखा निरीक्षण—श्री इन्द्रनाथनाथ जी केलाज सभी लिखकारियों का निर्वाचन एवं सम्पत्ति है हुआ। अन्तर में सत्ता के सन्तों के निर्वाचन का अधिकार प्रयास एवं मन्त्री को छोड़ा गया।

**आर्यसमाज रैनावाड़ी (श्रीनगर) का चुनाव**

२१ को निम्न प्रकार हुआ।  
अध्यक्ष—श्री कर्मा नाम जी, उप-अध्यक्ष—श्री ध्यान नाम जी, मन्त्री—श्री राम मुखर जी शैल, कोषाध्यक्ष—श्री शारनाथ जी शारवा, पुस्तकाध्यक्ष—श्री मदन मोहन जी, सभापति—श्री शीमा नाम जी।

**मेला कुल्लुखन, सूर्यप्रहलषण**

एत जेते पर १५ से २० पर्यंत आर्य प्रार्थना के प्रथम में किए सत्ताया गया। सत्ता की शीर में श्री १० सत्ता की शारणी शारवा प्रचार कोर की रखोया गिह की व्यापक पुरोहित का कार्य करते रहे। प्रति दिन दोपहर के बाद तथा रात्री को शारणी मन्त्रीयों के सन्तों का शारणा तथा पूजा। इन्द्रनाथ पर कोषाध्यक्ष का सम्मोचना अन्तर्गत में हंसराजरायों में प्रचार कर शीतल का काम इत्यम्। एत सारे सन्तों ११ १० पर्यंत की व सा० संवारायण जो का निवेश सत्ताया जाय होया रहा।

**श्रीक समाचार**

श्रीक समाचार की शारणीय प्रकाशित उपर्युक्त वेदिकीय पुस्तकें की वेदोक्त की पुस्तक का २२-५-११ को विक्रय रात के १५ बजे हुपुतल के वेदप्रकाश हो मया उत्तरी किया एत २ पुत्र सत्ता ५ बजे उत्तरे-निष्का-स्वारा शी०० निष्काशित नई नई वेदिकीय होयो। उत्तरे कर्माजीय के लोक सत्ता पर शारणी के शारणी है।



दैनिकी १०/११/२०

[आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिपत्रा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र]

Regd. No. P. 121

एक पत्रिका का मूल्य १३ पैसे

दैनिकी मूल्य ६ रुपये

कम २६ अंक २४)

३० ज्येष्ठ २०२३ रविवार—दयानन्दम्ब १४१— १२ जून १९६६

(तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

## वेद सूक्तयः

### १ गिनिरस्मि जन्मना

हे लोगों! कान काल कर पुत्र से। मैं तो अन्वकाल से ही अग्नि बन के आया हूँ। अग्नि के समान सब से आगे चलना तथा सब को प्रकाश देकर जीवनपर्यन्त दिखाना ही। दुष्टों को भी भस्म भी कर देता हूँ।

### धृत्ं मे चक्षु

यह मेरी आंखें बड़ी शक्ति की हैं। कोई भी धर्म का, समाज या राष्ट्र का द्रोही धनु मेरी आंखों से बच कर निकल न सकेगा। मेरी दृष्टि से बच नहीं सकता। सब को मेरी आंखें देखती हैं।

### इमृतम् म आसन

मेरे मुख में अमृत भरा है। जैसे अप्सराएं कर के तुलसी हो जाती हैं वैसे मेरे मुख से निकले शब्दों को सुन कर सारे दुष्ट, भस्म हो जाते हैं। मधु की तरह मेरे मुख में मीठा अमृत-रस भरा हुआ है।

### यशसो अस्याः संसदः

मैं इस संसद का, समाज तथा का प्रवर्तनी सम्राट् बन के रहूँ। हर समाज में या किसी भी क्षेत्र की प्रजा ही अर्थात् राष्ट्र की संसद हो चली पर की वेद पर संसदा रहे। मेरे कार्यों की सर्वत्र कीर्ति हो।

सा मे वे दे

## वे दा सृ त

### राजा का धर्म

शाम इत्या मह्यं अस्मिन्नमाहो अस्तुतः ।  
न स्य हन्यते सखा न जीयते कदाचन ॥

अर्थात् वेद कांठ प्रथम सूक्त २० मन्त्र ४

अर्थ—हे राष्ट्र के पालक शासक राजन्! आप (शासः) शासक (इत्या) इस प्रकार से (महान्) बड़े भारी (अग्नि) हो। आप (अग्निवशाः) धनुओं—अग्नि को बंध से रखते बाने हो। आप (अस्तुतः) किसी से भी न मार बाने बाने हो। सुरक्षित हो। (न) नहीं (स्य) जिस आप का (हन्यते) मारा जाता है (सखा) मित्र व प्रजानोक तथा न ही आप के राष्ट्र की जनता को कोई भी धनु (जीयते) जीता जा सकता है (कदाचन) कभी भी।

भाव—हे वीर शासक! राष्ट्र के प्यारे राजन्! आप राष्ट्र के शासक हो, बीरता से भरपूर राजा बने हो। आप का आचार, चिन्ता, व्यवहार हर प्रजाजनो से प्यार भी महान् ही है। आप स्वयं महान् ही। राष्ट्र को समग्र-नाम पर रहति पट्टबाने बाने जितने भी विरोधी, धनु तथा उत्पत्ती बन कर पश्यद पैदा करना चाहते हैं। उन सब को बंध से रखते हो कुशल कर रख देते हो। आप को कोई भी जो मार नहीं सकता है। जिस प्रजा के बंध की आप पालना करते हो, उसे न तो कोई मार ही सकता है और न ही उसे पराजित किया जा सकता है। यह राजा का धर्म है।—स०

### अमृत्य वचन

#### विज्ञा मे मधुमत्तमा

“मेरी जिह्वा मीठी हो।” बचान की कटुता से ही कितने भगद और फसाद होते हैं। यदि जिह्वा में मिठास आ जाएगी, तो सब कुछ मीठा हो जाएगा। इसी लिए वेद की आज्ञा है:—

“जिह्वया अर्धं मधु मे, जिह्वा मूले मधुमत्तमा”

“मेरी जिह्वा के अर्ध भाग में और जिह्वा के मूल में मिठास रहे। मेरा बाल-बलन मीठा हो। मेरी आली मीठी हो। मैं मीठा बनूँगा। मैं मीठे से ही अधिक मीठा बनूँगा।” इत्यादि जेठोपदेश मया प्रजा से रखने योग्य है। स्वभाव की भावुरी का इस प्रकार अत्यंत महत्व है। यह वैदिक मधु-विद्या देखने से पाठकों को बहुत बौध्मिक सकता है। निश्चय ही मयात्र से संसदा बाने का अमोघ दस्त है। इस लिए विषयकेन्द्र पाठक इस उपदेश को बचपाने का मूल करे।

## ऋषि दर्शन

### यत्रैको मनुष्यो राजा

जिस देव ने एक ही मनुष्य प्रजा बना जता है, सारी दक्षिण उसी के हाथ में होती है, प्रजा की कोई सखा व आबाध नहीं होती। अकेला अधिनायक होता है, जिस्टेटर-शिप बनती है, अकेला ही सब कुछ होता है—प्रजा।

### तत्र पीडिताश्च

बहा, उन देव में, राष्ट्र में सारी प्रजा सारी जनता, सारे लोग पीडित हो जाते हैं दुःखी होते हैं वह अकेला जन तत्र को कुचक्र कर अधिनायक बन कर मनमानी चलाता और मन-मानो करता है। लोग अजीब कष्ट पाते हैं।

### एताः तिस्रः सभाः

इसलिए सारे कामों को ठीक रूप से चलाने के लिए राष्ट्र में तीन मयाए बनानी चाहिए। त्रिक सारे देश में राष्ट्र के लोगों के काय उत्तम एवं से चलाने रहे। इन धमानी के द्वारा सारी प्रजा जीवन में सुखी बनती रहे।

### एका राजाज्यं सभा

राष्ट्र के कार्यों को ठीक एवं से चलाने के लिए तथा प्रजा को सुखी बनाने के निमित्त पहली राजाज्यं मया बनानी चाहिए। जिस का काम सारे राष्ट्र प्रबंध को चलाना है। राज-नीति ठीक बने।

भा व्य मू नि का से

सम्पादक—त्रिलोकचन्द्र शास्त्र

निराकार शब्द का अर्थ है— आकार, रूप एवं आदि से रहित होना ईश्वर को मानने वाले को आस्तिक कहते हैं और न मानने वाले को नास्तिक। आस्तिकों के भी दो भेद हैं। इन में से एक ईश्वर को साकार मानते हैं और दूसरे निराकार। साकार रूप के उपासक प्रभु की मूर्ति बनाते हैं और उस मूर्ति की प्रतिष्ठा करते उससे नाना प्रकार की बस्तुओं की मांगना करते हैं। अब प्रश्न उपस्थित होता है कि प्रभु को साकार मानकर उपासना करने से कौन-ता बड़ा भारी पहाड़ टूट पड़ता है? लोग इसका विरोध करते हैं। क्या इससे कुछ हानि की सम्भावना है। इस विषय में हम एक पुरानी कहानी याद आ रही है। एक मनुष्य के दो शिष्य थे, एक ईश्वर सर्वव्यापक मानता था और सम्मान था कि पहाड़ के सर्वोच्च शिखर पर, समुद्र की सबसे नीची सतह पर, नदियों की धारा में तेज बहती नदियों की गति में वह प्रभु विद्यमान है। दूसरा शिष्य प्रभु को एक देशी समझता था और वह साकारोपासना करता था। गुरु ने एक दिन अपने दोनों शिष्याओं को बुला कर परमेश्वर की सर्वव्यापकता समझाते हुए कहा कि बिना प्रभु को सर्वव्यापक माने हम पापों से दूर नहीं हो सकते और जब तक समाार में पाव रहते तब तक मुझ को प्राप्ति अवश्य रहेगी। दूसरे शिष्य ने इस का विरोध किया। दूसरे दिन गुरु ने दोनों को दो फल दिए और कहा कि तुम इतने ऐसे स्थान पर जानना जहाँ तुम्हें कोई न देखे। एक ने किबाड़ बन्द किए, वहाँ किसी को न देख कर उसे काटा और प्रसन्नचित्त गुरु के सामने आ उपस्थित किया। दूसरा शिष्य साया और कहा कि मुझे ऐसा स्थान कहीं भी न मिला जहाँ कोई भी मुझे न देख रहा हो। इस वृत्तान्त का उद्देश्य है कि जो आस्तिक प्रभु को सर्वव्यापक मानेगा वह उसे सर्वत्र विद्यमान समझ कर कोई भी अनुचित काम करते हुए उस के देशने के भय में उस से विरत हो जायगा और जो उसे एक देशी मानेगा। वह उस में बच कर पाप को और प्रवृत्त होगा और जब वह प्रभु को साकार माने तो उस समय उसका एक देश में रहना स्वाभाविक हो जायगा। क्योंकि साकार वस्तु सीमित होती है। इस लिए परमेश्वर को साकार समझते हुए हम अपने को पापों से मुक्त नहीं कर

धार्मिक सर्वाः—

प्रभु निराकार हैं

(श्री सुरेश चन्ध जी वेवालकार एम० ए० एल० टी० डी० बी०)

कालेज, गोरखपुर)

सकेंगे। इसके ठीक रूप में इस प्रकार हम समझ सकते हैं कि यदि परमेश्वर साकार होने से सीमित होगा और सीमित आकार प्रकार या मूर्तिमान परमेश्वर गोरखपुर में रहेगा तो दिल्ली और कानपुर वालों के दोषों को वह नहीं देख सकेगा और जब उनके दोषों को नहीं देख सकेगा तो या तो वह उन्हें अपराध करते पर भी दण्ड नहीं देगा और दण्ड देगा तो उस में दोष होने से वह म्याकासे नहीं हो सकेगा। यदि परमेश्वर को व्यापकारी मानना है और उसे सर्वव्यापक मानना है तो उसे निराकार मानना पड़ेगा। परमेश्वर के साकार उपासक मुरदास तक ने भी निम्ना है—

‘रूप, रस, गुण जाति जुगुति विनु हि निरालम्भ मन कर्तु धारं विनु सगुण नीला पर जावं ।’

मुरदास वास्तव में त्रिगुण भगवान् की उपासना करना चाहते हैं पर उसके रूप को न समझने के कारण उसकी मूर्ति की कल्पना कर लेते हैं। इस प्रकार साकार उपासक भी परमेश्वर के निराकार रूप के ही उपासक हैं। इसी लिए वेदों में कहा है:—

न तस्य प्रतिमा अस्तित् यस्य नाम महत्त्वाः । हिरण्यं गभं इत्येष नाम मा हिण् । सीरित्येषां मत्मान जात इत्येष । य० ३२ । ३ । (यस्य) जिसका (महत्) महान् (नाम) प्रसिद्ध (पद): यश है (तस्य) उस परमात्मा की कोई (प्रतिमा) प्रतिमा (न अस्तित्) नहीं है। (हिरण्यं गभं इति एषः) हिरण्यं गभं इत्यादि मन्त्रों में (मा मा हिण्) हिरण्येषां 'मा मा हिरि हिरियेषां' मन्त्रों से प्रकट (मत्मान् जातः) 'यस्मान् न जातः' इन मन्त्रों से उसका वर्णन होता है।

एक दूसरे मंत्र में दैव ब्रह्म पुराणा सब से बृहत्वा देव ब्रह्मत्वा गया है और कहा गया है कि वह महान् अवकाश में स्थित है और न इस के हाथ है और न पाव फिर आदि अर्थात् वह अर्थात् वह अचारी निराकार

है और सब के अन्दर हुन अथवा व्याप्त है। शरीर रहित होने से यह निरवयव है और इसी कारण यह सब में व्याप्त है। यह परमेश्वर अत्यन्त है और इस मंत्र में परमेश्वर की प्राप्ति के उपाय का उल्लेख करते हुए यह कहा गया है कि ब्रह्मन् आत्मिक शक्ति सम्पन्न मनुष्य ही इसे प्राप्त कर सकता है। 'नामाभावा ब्रह्महीनस्य' यह आत्मा ब्रह्मणो को प्राप्त नहीं होता। तुम्हें जो आत्म स्वस्व की प्राप्ति बहो? उसके लिए तो दुःख, दरिद्रता और दीनता ही रहती है—

स जायते प्रथमः पत्यागु महो बुन्दे रजतो तस्य योनी । अषादीशीं मुहुरानो अन्तायो बुवानो बुधमय नीले । ऋ० ४।१।१ ।

(सः प्रथम पत्यागु जायत) वह पहिला प्रजापति से हुआ है (तस्य महः रजसः बुन्दे योनी) वह इस महान् अंतरिक्ष के मूलस्थान में होता है। यह (अषादीशीषी) पाव फिर आदि अवयवों से रहित है (अन्तः मुहुरानः) अन्तर गुण है। यह (बुधमय नीले) बीच में युक्त पुरुष के स्थान से (आया-बुवानः) सपत्न्या या सम्पत्तन का कार्य करता है।

एक मन्त्र में ३२-२ मंत्र में परेश्वर के निराकार स्वरूप के विषय में बतलाते हुए कहा है—

विषेण तेजस्वी भूः सृष्टि में पूर्ण व्यापक परमात्मा से सब निमेष आदि काल के अवयव होते हैं। कोई भी इस परमात्मा का न ऊपर है, न तिरहट, न मध्य भाग में पूर्णता से ग्रहण कर सकता है। अर्थात् काल के सब अवयव और सब गति उठी देनासी सर्वव्यापक परमात्मा से प्रकट हो रही है। उस परमात्मा का ऊपर नीचे आदि कोई अवयव नहीं अर्थात् वह निराकार है।

श्रुत्वे ८/१२/३ मंत्र में कहा गया है कि वह तो गुण का गुड़ है। अर्थात् जैसे गुँगा बाढ़नी गुँड का स्वाद नहीं बता सकता उन्ही प्रकार प्रभु की सत्ता का अनुभव करने पर

उस का रूप नहीं बताया जा सकता है। मंत्र है:—

अन्तरिक्षस्थित तं जने रडं परो मनीषया गृह्णन्ति जिह्वाया ससम् । अर्थात् जो (मनीषया) बुद्धि से (परः) परे हैं (तंजने) उस रड प्रभु की ज्ञानी मुमुक्षु (जने अर्थात्) मनुष्य के बीच में—आत्मा के भीतर (इच्छन्ति) चाहते हैं कोजते हैं। जैसे (ससम्) कूल को (जिह्वाया) जिह्वा से गृह्णन्ति) गूहण करते हैं।

यवुर्वै का ४० वा अध्याय जो ईशोपनिषद् के रूप में भी प्रचलित है उस के ८ वें मंत्र में निम्ना है:—

यं पर्यगाच्छुक्रमकामयजसमन्ता- निरः ७ बुद्ध शीघ्रकरी । कर्मयोगी परिभुः स्वभूर्भावापत्योऽनोऽनो व्यवधा- श्चावलीयः समाप्तः । मनु ४।०।८ । जो बहू शीघ्रकरी, तेजस्वी, सर्वगतिमान् पूँस एव स्पृश सदीर्घः से रहित अर्थात् कभी भी तस नाड़ी के कण्ठ में न आने वाला, अविद्यारि दोषों से रहित, सदा पवित्र, पाप संगम में तथा पुण्य संगम, जन्मयोगी, दुष्टों का निरकार करने वाला स्वसत्ता में परानवेश, अनादि स्वस्व अर्थात् जिसकी संज्ञा से उत्पत्ति, विनाश से नाश, माता पिता जन्म, मर्मसाय, जन्म मरण कभी नहीं होते, सर्वत्र व्यापक है, वही परमेश्वर नित्य जीवस्व प्रजापति को टीकाकाल से, वेद द्वारा तब दार्शनियों को देता है अथवा कर्म फल देता है। इस मंत्र में कितने ढंग से ईश्वर की निराकारता का प्रतिपादन किया गया है।

श्रुत्वे के ८/१९/११ मंत्र में कहा गया है—

अपारिन्धो अपारिन्धिविदेवा अमस्तु । वरुण इदित् अयतमायो अमनूयत नस्त संशरीरारिष ॥ ऋ० ८/१९/११ ।

(वरुण) समुद्र में ऐश्वर्यं यथान प्रभु (अर्थात्) निराकार है। (अग्निः) वेतन जीव (अर्थात्) निराकार है और (विदेवे देवाः) अस्तुत्वां सब इन्द्रियां और सूर्य चन्द्रादिं मुख के सांघन हैं अथवा इस काल के घात से सभी विद्वान् मोक्ष या आनन्द प्राप्ति करते हैं। अर्थात् निराकार न मानने वालों को अज्ञान बंध कष्ट होता है। (वरुण इत् इह अवयु) वरुण—सर्व-श्रेष्ठ अथवा वही इस सासार में सर्वत्र वास करते हैं। (अम्यः तंयु अमनूयत) विध्वंसः इन काल में सब सृष्टियां उच्छेदो प्राप्ति होती है जिस वेद पृथु-८/१७)।

सम्पादकोय—

# आर्य जगत

वर्ष .६] रविवार ०२१, १२ जून १९६६ [अंक २४

## कब आंखें खोलोगे

हिन्दुसमाज के आँखें बन्द करने का भीषण परिणाम सारे देश के सामने आया। सारा समाज आँखें बन्द कर के सो गया। इस का अनुचित नाम उठा कर विदेशी सत्ता के लोग इस्तेमाल और ईसाईयत के रूप में भारत में खूब खेले। हमारी दुर्बलता, झूट तथा ऊंच नीच की भेषबाबना को देखते हुए हमारे घर की प्रत्येक वस्तु को हथियाने में लग गये। आज भारत का सीमा शान्त, भीर दाहुर का सिन्धुप्रान्त, भीरभूमि पंजाब का अधिक भाग तथा आने से भी अधिक बगाल राष्ट्र के विराट शरीर से काट दिये गए। स्वर्गभूमि काश्मीर भी तो कुछ चला गया। भारतीय समाज सोता रहा। यहाँ के लोग नदियों में स्नान, सूर्यपूजा को मुक्त कराने, तीर्थों की यात्रा एक कानूनी देवी को प्रतिष्ठा में सजे रहे। परन्तु काली का बगाल बच न सका। किन्तु हीरति हो गई। इस घर जितने आसू बहाये जाये वोड़े हैं।

इस घर भी भारतीय समाज की आँखें नहीं खुल सकी। अब तक भी नमाया सामने रहे रहा है। केवल में शकृत्पाचार्य की भूमि पर ईसायत की पताका का जोर है। आराम, मार-खब्ब व छोटा नागपुर में तथा मध्य प्रदेश में ईसाई अपना काम करके हिन्दुसमाज को ईसाई बनाने में पूरे जोर से लगे हुए हैं। उनके पास धन जन की कमी नहीं है। विश्वो से लाखों नही करोड़ों रुपया इस काम के लिए आ रहा है।

**भारतीय समाज की सरिता के कगारों को यह विदेशी प्रवाह सिराता जाता है। देश की शासक पाटों को इस की सतक चिन्ता नहीं उस की जाने बला चाहे सारा भारत ईसाई बन जाये या मुसलमान। उस का तो काग्रिस का नाम कायम रहना**

**चाहिए। इन लोगों में किसी को भी इस बात का ध्यान तक नहीं। केवल इस बात की चिन्ता है कि हम लोक-सभा, विधान सभाओं व मन्त्रिमण्डलों को कुस्तों पर बने रहे।**

स्वार्थ में स्वामिमान को दबा रखा है। आने वाले निर्वाचनों के लिए ऐसे लोगों को अभी से रात को नींद नहीं आती। पाण्डु बेचने में लगे हैं। अपने २ सिद्धान्तों को बेचने में लग पड़े हैं। स्वार्थ व सत्ता से सब को अन्या बना दिया है।

उसे जो जितनी भी उदासीन है। अब तो विचार एक नहीं कि ईसाईयत क्या कर रही है। वह अपने परिवार के पालने में मस्त है। लाखों पति धनी लोग तो सधमी के दास बन चुके हैं। अपने बच्चे भी ईसाईयत के स्कूल में प्रविष्ट करा कर ईसायत को अपने घरों में लाते जा रहे हैं। राजनीतिक दलों की बात ही न कहे। उनके सामने केवल चुनाव ही है और किसी बात के लिए समय नहीं है। आर्यसमाज ही शेष है जिस में होश काम किया और करता है। किन्तु सत्य यह है कि इस में भी रक्त देने वाले दीवाने बलिदानी बिरते हैं। दूसरे पीढ़ी मोज बनने वाले अधिक हैं। सारा काम प्रचारक ही करते रहे। उनका ही यह फर्क है कि स्वामी श्रदानन्द की की तरह सीने में गोशियाया धार्य, १० सेखामाज की तरह बच्चे को मौत के मुह में छोड़ कर धूम २ कर पेट में छुद्र साकर मरे। स्वामी संवदानन्द बन कर पने बचाये महात्मा हंसराज बन कर जीवन भेट कर दे। जब आर्यसमाज की ओर से किसी प्रचारक का सत्याग्रह आदि का आन्दोलन हो तो अपने परिवार बच्चों समेत जेल में जाकर बने बचाये। सरदी, गर्मी में सदा यात्रा पर रह कर बेद

का सन्देश सुनाये। मुसलमान व ईसाईयों से टकरा लेते रहे। अपनी सन्तान को भी प्रचारक बना कर मातनार्थ सहन करते रहे। इसी काम में ही मर जाये। इस समय का यह दृष्टिकोण है। बात ठीक है। प्रचा को के लिए यह सम्मान है।

क्या यह पर्याप्त है? क्या हम ते प्रवाह रुक जायेगा? सत्य तो यह है कि भारतीय समाज को मिलकर काम करना होगा। धनी समाज को धन से भर देवे। समय देने वाले समय देवे। काम करने वाले काम करें। उन के परिवारों के साथ सहानुभूति रखने वाले सहानुभूति रखें। बड़े-बड़े व्यक्ति, आर्य समाज के वरदे व्यक्ति अपना समय निकान कर भ्रमण करें। साहित्य का काम जारी हो तभी काम चलेगा। इमानन्द की फीज का मुकामिना कीन कर सकता है आप को पता होना चाहिए कि इगलैंड के पहले प्रधानमन्त्री का एक लड़का मिशनरी है जो कि मिशन के काम पर लगा है।

भारतीय समाज जितनी जल्दी आँखें खोले उतना ठीक होगा। आज वेद प्रचार का पात्र संस्था साक्षी है। प्रचारको की कमी हो। फिर ईसाईयत का प्रवाह रुकेगा किये? हर बड़ा आर्य परिवार अपना एक एक लड़का समाज की सेवा के लिए अर्पण कर दे। प्रवाह बढता आ रहा है—**आँखें खोलो।**

—दिवाक प्रभ

## जीवन-मरण का प्रश्न

सनातन धर्म सभा पञ्जाब नेता श्री स्वामी गणेशानन्द जी ने जालन्धर के सनातन धर्म मन्दिर माई हीरा गेट के पुस्तक द्वारा अपनात पर अपने वक्तव्य में दशे जीवन-मरण का प्रश्न कहा है। गत दिनों पंजाबी सुबा भारतीयन में अन्य नगरों में जी-जी अत्याचार हुए। उन में जालन्धर में और अपनात के साय-साय वेदमन्दिर तथा सनातनधर्म मन्दिर माई हीरागेट में जो कुछ हुआ। यह कितने भूख सकता है? अपने राज्य में यह सब कुछ हो सकता है? यह देख चुन पद कर तो सारे तस्थ रह गये। आर्य-समाज को यद्यपि मूर्खजन में मतबेद है, परन्तु धर्म मन्दिर के सम्मान में यह सब से आगे है। धर्म स्मरणो का अपनात आर्य समाज के लिए भी जसस्य है। हम मरुद गजनी की आज भी खुले रूप में नित्यनीय समझ

कर कोसते है। क्योंकि उनसे धर्म-मन्दिरों का धोर अपनात क्रिया था। हैदराबाद का सत्याग्रह निजामशाही द्वारा बहा के मन्दिरों के अपनात भी एक कारण था। आर्यसमाज स्वामी गणेशानन्द की जी आवाज में आवाज मिला कर कहना चाहता है कि जिनमें भी धर्मस्थानों का अपनात किया है—उनकी पूरी-पूरी जाच पढगान कराई जाए। यदि कुछ नहीं हुआ तो कामरेड मरकार जुडियियल जाच पढताल वगैरै कराती? कोई भी समाज हम अपनात पर चुप नहीं रह सकता।

## यह चौबीस करोड़

पंजाब के मान्य निता मन्त्री श्री प्रबोध चन्द जी ने अ-जी कहा है कि इस समय पंजाब सरकार इस प्राल में शिक्षा पर चौबीस करोड रुपये व्यय कर रही है तथा पंजाब में २५ लाख छात्र छात्राए शिक्षा प्राप्त कर रहे है। इस शिक्षाभार के कर्तव्य कं पूरा करने के लिए सरकार की सराहना है। किन्तु एक बात कहनी है कि आज की शिक्षा का प्रभाव क्या है? इस पर भी सरकार ने कभी ध्यान दिया है। आज के स्कूलों के छात्रावरुण को तथा शिक्षा पाने वालों की वैशम्यता तथा उनके कामों को देख कर सज्जा को भी सज्जा आती है। क्या यही भारतीय शिक्षा का जीवनमरण है। आज की शिक्षा में गुरु शिष्य का प्राचीन मीठा सम्बन्ध सर्वथा समाप्त या होजा आ रहा है। भगदर व कलत्रत कार्याक्रमों का जोर है। फीस के प्रवाह को भी यदि सरकार अपने शिक्षारुस्थानों में न रोके सकी तो यह कितारी शिक्षा सर्वथा बेकार होगी। जीवन का आदर्श बिगड रहा है। परमात्मा के लिए आज के शिक्षारुस्थानों का भगडास्मन न बननाये। धार्मिक शिक्षा के विना यह शिक्षा किसी काम की नहीं है। स्कूली छात्रावरुण को यदि बदला न ग गया तो करोड़ों का व्यय किस काम का

—स.

## आर्यजगत के बारे में

आर्य प्रादेशिक समा पंजाब जानन्धर बहाइ का सारोहित्क मुखबत आजकल प्रति सत्साह हो होकर सभा के कार्यभार को लेकर मान्य महात्मा स्वामीजी, नेताओं व विद्वानों के सम्मोह विचारों के लेखों के साथ आपके भगवाणों, परिवारों व सस्थाओं (लेख शृङ्ख ५ पर)



मानो न मानो आपका यह अस्वभाव है। हम नकी बंद जनाब को समझते जायेंगे।

हिन्दु जाति तथा इस के आधुनिक नेताओं की अवस्था देखकर मसूरा की एक पटना याद आती है। यमुना नदी में कुछ सुभाषित रातो रात किल्ली दुपरे नगर को जाने के लिये नाव में सवार हुए। रात अंधेरी थी, निरन्तर बच्चे चलाते रहे। प्रातः काल थोड़ा प्रकाश होने पर बड़ा र डमारते दिखाई देने लगी। स्थान किया कि हम अपने ज्येष्ठ स्थान पर पहुच गये हैं। बच्चे चलाने बन्द करने उबारती को देखने लगे तो मामूज हुआ कि मसूरा के तट पर बही खड़े है जहा रात को किल्ली में सवार हुए थे। रात भर बच्चे चलाने के बाबजूद अपने आपको बही देखकर बहुत हैरान हुए। कारण बच्चे लगे तो मामूज हुआ कि किल्ली का रस्ता घाट पर लगे कुछे दे बंधा रहा, इसलिये किल्ली एक कदम आगे नहीं बढ सकी और मारी रात को मेहनत और समय व्यर्थ गया। यही हालत कोहलू के बँल की होनी है, जब दिन भर बन्धी हुई आत्मो के साथ चलती और चलते जाने के पश्चात् सायकाल उनकी आँखें सोनी जाती है, तो वह अपने आपको वही उस कोहलू के साथ बंधा हुआ पाता है।

में अपनी जाति के पंच प्रद-शंको, नेताओं और तन-मन से इनके उत्थान के लिए दिन रात एक करके बासी संस्थाओं के सामने न प्रस्ता पूर्वक एक प्रश्न रखना चाहता हूँ, कि कभी उन्होने यह देखने की तकलीफ उठाई है कि बपों की निष्काम सेवा और सोर परिश्रम के पश्चात् वह जाति को नेंस्था को किसना आगे ले जा सके है या वह वही की बही खड़ी है अथवा आगे जाने की बजाये (बँसा कि देखा जा रहा है) की उनटी अपने उर्द्ध्व से और भी पीछे तो नहीं जा रही ? अन्तिम दोनों अवस्थाओं में इसका कारण दूटना जाति के प्रत्येक युवाविकल्प का परम कर्तव्य हो जाता है। सुष्टि के आरम्भ में लेकर महाभारत काल तक युवाविक पर चरन्वर्ती राज्य करने वाली आगे जाति उठने का नाम नहीं लेती। इस का हर कदम अपनी शानदार प्राचीनता की तरफ से बढ़ने की बजाये यूरोप और अमरीका की विनाशकारी अग्रभ्रमता की तरफ जा रहा है। माह, शत्रव, दुराचार, अस्वीय माने और

## देश और जाति के करण-धरो !

### सावधान

श्री हरदत्त जी शर्मा प्रधान, आयंसमाज लक्षनगर अमृतसर

नाथ, सिन्धवा तथा रेडियो के अग्रानक दुरोपयोग और कलचरल घोषामो के नाम पर स्थापित आधार हीनता के सूखे प्रचार में हूँ कहां से कहा जा फँका है ? हमारे नवयुवक आज धर्म ईश्वर और वेद का नाम सुनने को तैयार नहीं। उनकी दृष्टि में रामायण और महाभारत कल्पित कहानियाँ हैं। उनके विचार में राम और कृष्ण नाम के कोई महापुरुष इस ससार में नहीं हुए।

धर्म निरपेक्ष सरकार की तरफ से हमें बेदीन और धर्म हीन बमाने का पूरा यत्न किया जा रहा है। ऐसी अवस्था से साथ उठने के लिए मुसलमान और ईसाई हर उचित और अनुचित बड़ने से अभाग्य हिन्दू जाति के युवकों और युवतियों का धर्म भ्रष्ट कर रहे हैं। अब जो राज्य की अंधा कर्त गुणा अधिक सन्ध्या में यूरोपियन मिशनरी भारत के कोने-कोने में रघ्या, कृषदा, अनाज, की और दुध के डिब्बे वाट - वाट कर प्रायः कृतीव हिन्दुओं और विधेयत अखुत कहलाने वाले भाइयों को वे बहके धर्म भ्रष्ट कर रहे हैं। परन्तु हमारी सरकार चीन, ब्रह्मा और लन्डन की तरह इन को देश से निकालने की बजाये उल्टा समय-समय पर उनकी सहायता करती और उन्हें हर प्रकार की सुविधाएँ देती है। आज इस जाति की अवस्था नदी किनारे सड़े उस मूल की भी हो रही है जिस की जड़े हर समय पानी के घरेडो में खोलनी हो रही है। अनेकाल आयं समाज वेद प्रचार और सिधा आदि के कार्यों में लगा होने पर भी अपनी धमिति के अनुसार ईसायत्व की बाड का भी मुकाबला कर रहा है। परन्तु क्या जाति के अत्येक हितैषी को इसकी चिन्ता नहीं होनी चाहिए ?

एक तुकावन्दर भी बयं भर के पीछे देखात है कि उसने क्या क्रमाया और क्या बनवाया है ? आखिर कोई समय तो ऐसा भी आना चाहिये जब भारतीयता और राष्ट्रीयता के सत्यक अपने काम का निरीक्षण करे और देखे कि इनसे परिश्रम के पश्चात् भी क्या बह कोहलू के बँल की तरह अपना सृष्टे के साथ बन्धी हुई किल्ली की तरह बही की बहो तो नहीं खड़े ?

मत चूनाव के समय चूक जाने के कारण शासन की ओर से हिन्दुओं तथा मातृ-भाया हिन्दी के साथ हो रहे और अत्याचारों के जो कटु अनुभव इस पाक बपों में हुए उन्हे सामने रखते हुए जाने वाले चुनाव में अपनी आवाज को अधिक से अधिक बलवती और प्रभावशाली बनाना इस समय आप के ह्राय में है। यदि तुम्हारे हृदय में वस्तुतः देश और जाति के लिए तप विद्यमान है तो प्राचीन साम्यता और संस्कृति के अनुकूल विचार धारा माने नेताओं समाजो और सन्ध्याओं को कुछ काम के लिए अपने मत भेदी और द्रोपी को भूना कर तथा स्वार्थ की भावना को मिटाकर केवल जाति के उत्थान के महान लक्ष्य को सामने रखते हुए एक समुक्त मार्ग निर्धारित करना होगा। देश और जाति का हित चाहने वाली जनता ऐसे निष्पक्ष का सच्चे हृदय से स्वागत करेगी।

हा. इसके लिए उदारता और त्याग की आवश्यकता है। पृथक् पृथक् गुट-बन्धियों से ऊपर उठना होगा और संगठित एक सम्मिलित शक्ति के साथ उच्चतम योग्य महापुरुषों को सफल करने के लिए कटि बढ होना होगा। ऐसे शुभ उर्द्ध्व के लिए मित्र कर चलने से किसी को भी हानी नहीं होगी, अपितु अधिक सतिष्ट के जुट जाने से अधिक से अधिक सुखमें हुए उम्मीदवार सफल हो सकेंगे। यदि किसी सन्ध्या को आरम्भ में किसी अव में कुछ हानी प्रतीत भी होपी तो वह उस निराशा पूर्व और अपमान जनक ह्राय से कहीं बेहतर होगी जो पृष्ट की अवस्था में मोट बट जाने के कारण परिश्रम और धन व्यय करने के पश्चात् असफल होकर देवनी पड़ेगी और उसके साथ बपों तक फिर सारी जाति के विरोधियों और विधर्मियों द्वारा पहरित होना पड़ेगा। सेकडो बपों की युगानी के पश्चात् हमें निष्कमे इतिहास से कुछ तो सिधा प्रहृष्ट करनी चाहिये और अजोषज्ज के एक मात्र कारण पृष्ट रूपी राक्षसी से बचना चाहिये।

जिन संस्थाओं में प्रभु गुण से कुछ जागृति दिखाई देती है, वह देश और जाति का हित रखते हुए पी

शाक्ति के मधो में तथा लगदिली का धिकार होकर अपनी सन्ध्या को ही सब कुछ समझते हुए विशाल जातीय दृष्टि कौन से सोचने और एक दुसरे के साथ मिल कर चलने की तैयार नहीं होते जिस के परिणस्त्व स्वयम् बहू पुरी सफलता प्राप्त नहीं कर सके, जो मिलकर चलने की अवस्था में कर सके हैं। दूसरी तरफ कई महापुरुष अपनी सफलता में विश्वास रखते हुए भी केवल इस स्वयम् से सड़े हो जाते हैं कि व्यक्तिगत ईर्ष्या के कारण सामुख सड़े अन्धे से अन्धे उम्मीदवार को ह्रायि पर्वु सके। वह जाति के सब से बड़े शत्रु हैं।

इस समय 'लोक सभा' और विधान सभाओं आदि में ऐसे अनुभवी, सदाचारी और आदर्श महापुरुषों को भेजने की आवश्यकता है जो रूस और अफ्रीका आदि की तरफ आँखें लगाते रखने की बजाये भारत और भारतीयता के सच्चे पुजारी हो और जिनके हृदय में देश और जाति दोनों के लिए वास्तविक हित और अटूट श्रदा हो और किसी अवस्था में भी जाति के नाम पर देश को और देश के नाम पर जाति के हितों को थोडाबकर करने के लिए तैयार न हो सके। अन्त में वास्तविक हित का एक दृष्टांत देकर अपनी इस प्रायंता को समाप्त करना चाहता हूँ—

एक बार अदावत में एक बच्चे के सम्बन्ध में दो बहियों का भाडा पेश हुआ। दोनों ही माता होने का दावा करती थीं। मण्डिष्ट जब किसी प्रकार भी वास्तविक (सच्ची) माता का निश्चय न कर सका तो उसे एक उपाय सूझा और आदेश दिया कि चू कि दोनों देविया बच्चे की माता होना का दावा करती हैं और उसे लेना चाहती हैं अतः इसका एक ही उपाय हो सकता है कि बच्चे के दो टुकड़े कर दिए जाएँ और दोनों को एक-एक टुकड़ा दे दिया जाये उस के साथ ही अल्पाद को दुना लिया जाय। जूही जलाद ने तत्पार उपाय तो अस्वीता माता तद कृद कर छाई में बा खड़ी हुई और कहते सनी कि भगवान के लिए बच्चे के टुकड़े मत करो इसे छेदी सलासत दूसरी देती की ही देदी। ठीक इसी तरह अब समय है कि देश और जाति का सन्ध्या हित चाहने वाले नेता और संस्थाएँ (विष पृष्ठ ६ पर)

**आर्य समाज पुरानी**

**मंडी जम्मु**

इस वर्ष आर्यसमाज पुरानी मंडी का अधिकारी बर्न बहदुर ही उपाह्व और सत्य से समाज का काम करता रहा है। पिछले कई एक वर्षों से चल रही सब प्रचार की विधिवलता दूर हो गई है। समाज में एक प्रकार से नया जीवन आ गया है। समाज के सब बड़े उस्ताह्व और समारोह से मनाने ला रहे हैं। साम प्रचार की ओर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। पीछे श्री डा० ओम प्रकाश जी (Doctor of Philosophy) के कई स्थानों पर कई प्रभाषणाएँ भाषण कराये गये। फिर श्री डा० भवत राम जी महल्ल (Vedic missionary) जी को एक मास के लिए जम्मु नगर प्रचारार्थ बुलाया गया। उनके साथ श्री ० मेनाराम जी समीत कलाकर भद्रनोपदेवक प्रादेनिक प्रतिनिधि समाज बुलाये गये। इनके काम का भी जताता पर बहुर प्रभाव पडा।

विद्या प्रचार के लिए भी आर्य समाज पुरानी मण्डी, बहुर उस्ताह्व से काम कर रहा है। आर्य कन्या विद्यालय हाई स्कूल पुरानी मण्डी बडी सफलता पूर्वक चल रहा है। जिसमे एक हजार से ऊपर कन्याओं की संख्या है। पिछले एक वर्ष से लड़कों का भी ० ए० वी० हाई स्कूल भी चालू कर दिया है। जो अच्छी उन्नति कर रहा है।

विद्यालय के परिणाम बहुर अच्छे हैं। विद्यालय का भवन बहुर विभाजित है। तो भी कन्याओं की बडती हुई संख्या को देखकर और महती आवश्यकता अनुभार और नए कमरों और एक बहुर बडी सुन्दर बस शाला का निर्माण किया जा रहा है। विद्यालय मे धर्मशिक्षा मुख्य है। प्रथम उत्सव है शिक्षा विभाग की परीक्षाओं के अतिरिक्त प्रतिवर्ष कुछ कन्यायें आर्य प्रतिनिधि समाज पन्नाह द्वारा संचालित धार्मिक परीक्षायें, 'चर्च प्रवेक्षिका,' 'धर्माधिकारी' आदि मे भी लड़कियां काफ़ी संख्या मे भाग लेती हैं, जो सफल होती हैं।

इसका श्रेय निरपेक्ष रूप से काम कर रहे (Retired Inspector of school) भूतपूर्व शिक्षाशास्त्र विद्या विनाम श्री मुल्काज जी प्रधान सयाज एवं भी मा० पूनी साज जी वर्तमान प्रबन्धकी होती है। इस वर्ष प्रोफेसर श्री वेद प्रकाश जी मल्होत्रा, प्रधान आर्य समाज भाडन

टाउन जासन्धर आर्य प्रादेनिक प्रतिनिधि समाज के मन्त्री, समाजहित के लिए २१-५-६६ को जम्मु में पवारे। रविवार २२-५-६६ के साप्ताहिक अधिवेशन मे उनका बहुर ही प्रभावशाली, मौलिक शब्दों मे बेदोपदेव हुआ।

२३-५-६६ सोमवार आर्यकन्या विद्यालय मे उनके कर कमजो से धार्मिक परीक्षाओं मे उत्तीर्ण हुई ६६ छात्राओं को Diplomas (प्रमाण पत्र) प्रदान किए गये। और प्रोफेसर जी ने इन परीक्षाओं की उपयोगिता, शिक्षा, नैतिकता, आर्य समाज का मोरव, और जीवन की सफलता, कर्तव्य परायणता, संस्कृति, मम्यता और संस्कारों आदि के महत्व पर भाषण दिया जिस का छात्रावर्ग, शिक्षकवर्ग, और प्रबन्धक वर्ग पर अमिट प्रभाव पडा।

—गोपाल कृप्य उपमन्त्री समाज

★ पृथ्वी से लेकर ईश्वर पर्यंत पदार्थों का सत्य विचार और उन से यथायोग्य उपयोग लेना विद्या कहना है।

**आर्य जगत के बारे में**

(पृष्ठ ३ मे आगे)

में पहुँचता रहता है। समाजों के पदों को चिन्ता पटा रहता है यदि यह लोग जान पावे तो उनको अचम्भा होगा। अपनी यह समा धर्मप्रचार के नाते प्रचार विभाग में घाटा उठाकर भी काम करती रहती है। समा के मान्य अधिकारियों का ध्यान आर्य जगत को और भी सुन्दर बनाने का है। इन के मान्य अधिष्ठाता श्री वी० सन्तोपराज जी, समा मन्त्री श्री वेदप्रकाश जी एम० ए० तथा सही ही अधिकारी अपना प्रचारकवर्ग, संस्थाओं व समाजों के सज्जनों का इस से स्नेह है। अब इस का टायर बारीक सुन्दर कर दिया गया है ताकि पठन-सामग्री अधिक आ सके। नया ल्याक बनाया जा रहा है। लम्बों का भी ध्यान दिया जा रहा है। आपकी समा आप का आर्यजगत् आप ही सहायक है। हम केवल निगाही हैं। प्रवेक्षक समाज, परिवार, संस्कृत, इन की ग्राहक संस्था बढाने की कृपा करें-०

**गीत**

(आचार्य मित्र संन जो एम० ए०, अलोगढ़)

सुख के साथी मिले हजारों, दुःख मे कोई पास न आया।  
धन के भाई तो बहुरे, निर्धनता मे धाम न आया।  
उपर नगर की भरी दरारियां जब तक साथ रहें तस्पाईं हैं।  
तब तक बजती रहें हमारें इदं गिरे जलि की गहनार्थ हैं।  
ज्यो ज्यो इलती उच्च हमारो, अपना नन भी काम न आया।  
सुख के साथी मिले हजारों, दुःख मे कोई पास न आया।  
बलती गाडी देख मभी ने मिल कर उन को दिया सहार।  
दहुरी नदिया बहें किनारे सच ने अपना हाथ पखार।  
बकती गाडी और नदिया के तट पर, कोई कभी न आया।  
सुख के साथी मिले हजारों, दुःख मे कोई पास न आया।  
उल्ला मानव देखा ज्योही पल्ला सब ने जा पकडा।  
गिरता देखा ज्यो ज्यो उसको बीच भवर मे पल्ला छोडा।  
तरले मानव सब ने तारे, तूण को इन्हा तनिक न भ्रामा।  
सुख के साथी मिले हजारों, दुःख मे कोई पास न आया।  
भाई, बन्पु, कुटुम्भ, कबीला जिस ने मिल कर साथ निभाया।  
सब के सब रह गये बहुर पर क्या पलती क्या अपना जाया।  
भरपट तक तो शाय रहें पर, आगे कोई जाने न पाया।  
सुख के साथी मिले हजारों, दुःख मे कोई पास न आया।

**हर्ष समाचार**

श्री मेहर चन्द्र जी जोनी अब्खाला छात्रनी निवानी ने अपने सुपुत्र रणवीर गुमारा जी के शुभ विवाह पर निम्नलिखित संस्थाओं को दान दिया। इस शुभ दान के लिए आर्य प्रादेनिक समाज उनका शुद्धिक धन्यवाद करती है। इसी प्रकार सभी सज्जन युव अवसरों पर समा का ध्यान रखें तो समा की आर्थिक अवस्था पर्याप्त मात्रा में सुधर सकती है।

आर्य प्रादेनिक प्रतिनिधि समा ५५/-  
आज इंडिया सेवा समिति २१/-  
आर्य समाज उरसुर

होमियापुर	२१/-
आर्य समाज पनाबी मुहल्ला	२१/-
अनाया छात्रनी	२१/-
भाडन टाउन सुधिया	२१/-
पनुना नगर	२१/-
१० जालेन्द देव जी वास्डी	२१/-
आर्य जगत जाजपवर	२१/-

—धन्यवापक

**आल इंडिया दयानन्द**

**माल्वेशन मिशन**

**होमियारपुर**

आज इंडिया दयानन्द माल्वेशन मिशन होमियारपुर ने १० हृत्सयनद विद्यार्थी भी० ए० वी० टी० जम्मु, को आसाम तथा उत्तरप्र प्रत मे प्रचारार्थ तथा मिशन के लिए धन एकत्रित करने के निमित्त नियुक्त किया है।

इनके अतिरिक्त मिशन ने अपने एक कार्यकर्ता श्री वेदवत को भी आसाम मे प्रचारार्थ तथा मुद्रि कार्यायें भेजा है। श्री मोहन लाल महादेव आर्य जो आसाम मे कार्य करते थे, को अब महाराष्ट्र तथा मध्य प्रदेश मे वैदिक धर्म के प्रचारार्थ नया मुद्रि कार्यायें भेजा जा रहा है।

रामदास प्रधान मिशन

★ जिस वस्तु की उपार्सना की जाती है उसके गुण उपार्सना करने वाले मे आ जाते हैं। जैसे यदि कोई विद्वान् की उपार्सना करे तो उसे विद्या प्राप्त होगी। इसी प्रकार यदि कोई पत्थर को पूजा करेगा तो वह पत्थर के समान जड़ मूर्त्त और आतसी व अज्ञानी हो जायेगा।

★ इन सत्त्वों की बनी आत्सो से परसेश्वर को नहीं देख सकते, पर आत्मा मे उसका अनुभव करके ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

(गतक के आगे)

माना, आधुनिक लोकतन्त्र व्यवस्थित रूप प्राप्तवाय जगत् ने दिया है, पर जहाँ तक भारत में उसके प्रचलन का प्रश्न है, बुद्धिजीवी वर्ग को कुछ विचार करना ही होगा।

भारत में हिन्दी के नाम में अशांति का कारण लोकतन्त्र की आधुनिक व्याख्या है। इस लोकतन्त्र के पीछे सार भौतिकवादी पादवाय दर्शन है। इसकी व्याख्या की सारी शब्दावलि प्राप्तवाय सम्मत्ता से प्रसूत है। इस लोकतन्त्र में व्यक्ति को प्रसूत मानते हुए भी सत्या का अस्तित्व अनिर्वाय निश्चित किया गया है।

अगर हम लोगों से आज तक यही प्रश्नित रही है कि हम बहुत कम अर्थों में अपने वैयक्तिक स्वार्थों का साम्यनिक सिद्धि के लिए बलिदान करने को तत्पर हुए हैं। इसे निश्चित रूप से 'लोकतन्त्र की कुण्डल' ही कहा जाएगा। हमारी यही दुर्गम हृदयमिता हम पर विदेशीयन को थोपे हुए है। हिन्दी का प्रश्न अती तक पूर्णरूप में सुलभा ही नहीं है और हम प्रांतीय भाषाओं की प्रसूता की बाग देने लगे हैं। परंपराय यह है: अर्थ जी अभी चलने दो। याने विलियम की सवार्ड में अन्तर व्यावाचीय। किन्तु है हमारी राष्ट्रियता, कहा है हम में त्याग की प्रसूति, कहा है हमारी आध्यात्मिक उपलब्धि, कहा है अर्द्ध व अनायस को समझने-समझने वाले ?

**शब्दों का संयत्करण**

माना, भाषा के मामले में सेना-शाही (regimentation) नहीं होनी चाहिये, लेकिन जहाँ राष्ट्रियता व संस्कृति के संरक्षण को प्रश्न उठता है, हमे किसी न किसी भाषा के प्रति श्रद्धा व अकारार होना ही पसता है। हिन्द-राज्य, निश्चित रूप से, एक दिशा स्वय ही है। कहा भी है: एक सार्थ सब सार्थ, सब सार्थ सब जाय। रात को हमारे पर के आगन में विच्छु रंग रहे और हम मसाले नेकर अजल में रंग रहे विच्छुओं का सफाया करने निकले है। भारत का बुद्धिजीवी वर्ग आज इसी रीतीमी का गिकार है।

**अनुशासन आवश्यक**

रुके किया जाता है: प्रायः सारी वैज्ञानिक उपलब्धियाय प्राप्तवाय है, इसलिये भाषा भी प्राप्तवाय ही रहे। तर्क समयानुकूल है। सही शब्दों में, आज हिन्दी में अर्थजी का भाषा के नाम में सार्थ कम, संस्कृति व सत्पत्ता

**हिन्दी का हिमायती कौन ?**

(श्री सुन्दरसाज जी वोहरा, जोधपुर)

के नाम में ही अधिक है। समस्या है: आयरनेस व बेस साथ-साथ कंथे चले ? आज जीवन व अमृत के प्रति मानव का समूर्ण हैटिकोण ही तो बदल गया है।

पर समाजिक के प्रति व्यष्टि की मरिंत अभी भी एक आबस्थक सार्थ मानी जा रही है। लोकतन्त्र में भी संस्था की अनिर्वायता स्पष्ट होती जा रही है; अथवा समाज नाम का कोय शब्द ही नहीं रहेगा यदि व्यक्तिवाद के नाम में अनुत्तरदायित्व को ही पसना हमारा सख्य ही तो इसी क्षण हूँ गुणवासी बन जाना चाहिये—भाषा व भेदभाव का प्रश्न चिह्न ही मित्त जायगा।

जो भी हो, साम्यनिक अस्तित्व अनुशासन के लिए हूँ एक भाषा माननी ही पड़ेगी। भारत के लिए ऐसी भाषा निश्चिन रूप से हिन्दी ही है। किसी न किसी रूप से यह कस्मीर-कन्याकुमारी व कच्छ के कुचाक के पार तक लक्षी व समभी जाती है। और यो कलशापर व लिंकनशावर को अर्थजी में भी विचारणीय अन्तर है। जन भाषा कभी भी सेना की भाषा नहीं हुवा करती। यदि ऐसा कर दिया जाए (जैसा कि तानाशाही व साम्यवादी व्यवस्थाओं में किया जाता है) तो व्यक्ति-आपति न रह कर बर्बात बन जाएगा।

बौद्धिक व वैज्ञानिक विकास के नाम में व्यक्तिव का बलिदान शासक में भी अपेक्षित नहीं होना चाहिये।

**भाषा के नाम में व्यष्टित्व कुण्ठित नहीं होता**

यह सख्य है कि राष्ट्रियता व भाषा का जोती सापन सा सम्कन है, पर इस प्रसूति से व्यक्ति का आध्यात्मिक विकास रुकता है, यह बात तर्क सम्मत नहीं है। व्यक्ति अपने आध्यात्मिक विकास के लिये किसी भी भाषा का बरखु कर सकता है। रवि ठाकुर, योगी अरविन्द व स्वामी विवेकानन्द प्रसूति लोग इस बात के अवलन प्रमाण रहे हैं। लेकिन ऐसे लोग भी मातृ-दुग्ध के साथ यहुण्य की गई भाषा में निःस सपत्ता के साथ अपने अन्तरतम भावों को अभिव्यक्त कर पाते थे, उनके द्वारा प्रसंगिक अणवार्द गई भाषा में उनकी अनुकृति माय

ही रहती थी। तभी तो कहा जाता है कि हर भाषा की अपनी संवेदना व शास्वत प्रतिभा (genius) होती है। समाज विशेष में बसे हुए बुद्धि-जीवी वर्ग के स्वाद व सत्यास को ही ध्यान में रख कर किसी भाषा को राष्ट्रिय स्तर पर आयरणीय व अनुसरणीय बनाए रखना नतांश में भी न्याय संगत नहीं है।

**दो विभाजनकारी शब्द**

पर भारत में आज हिन्दी कपी वृण की 'जड़ों में अद्भुत व भीडपानी एक जैसा सीका जा रहा है। राष्ट्र का स्वनिर्मित संघिधान लागू हुए आज पन्द्रह वर्ष से अधिक समय हो गया है, फिर भी 'पुनर्गूणको भवः' का नाटक अर्णू में है। हिन्दी का सख्य बडा अहित व लोग कर रहे है की संघिधान में हिन्दी की राष्ट्रिय भाषा के रूप में मान्यता स्वीकार करते हूँ भी, आज तक "हिन्दी भाषी" व "अहिन्दी भाषी" शब्दों का प्रयोग कर रहे है। अंतक गम्भीर वक्ता व लेखकगण इस राष्ट्रपती आर्थि में मुनत नहीं है। जब यह निश्चित हो चुका है कि हिन्दी समूर्ण भारत गणतन्त्र की राष्ट्रभाषा है, कि "हिन्दी भाषी" व "अहिन्दी भाषी" शब्द क्या अर्थ रखते है ? इन शब्दों का प्रयोग करने वाले निश्चित रूप से हिन्दी के विरोधी ही है।

इस 'अहिन्दी भाषी' नारे कपी जयचन्द की आठ में आज अंतको विपत्तकारी प्रविनिता राष्ट्र में पवन रही है। इसी अनिष्टकारी नारे के कारण वलिय के प्रात 'अनिश्चित काल के लिये अर्थजी में काम हो' की हृदयमिता को पाल रहे हैं और तो और, उत्तर वाले प्रात भी हिन्दी में लिखे गये पत्रों के साथ अर्थजी का अबाध संवाग करना अपना गौरव समझते हैं।

यदि कुछ काल तक राष्ट्र में 'हिन्दी भाषी' व 'अहिन्दी भाषी' की विभ्रंसकारी प्रसूति प्रचलित रही तो यह निश्चि बुर नहीं, जब उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश व राजस्थान एक असंग राष्ट्र बनाये, सिक्किमताज व जामार देश बंगाल की सिक्कीकुण्डा अभी मरी नहीं है, द्रविडस्थान अपने आपको पहले से ही पाक सयके हुए

ही ही। जनवरी १९६५ में तमिलनाडु में हुए दंगे इस बात के अवलन प्रमाण हैं। नतिभय में पीड़ित लोगों के केराव कड़े के नाम में पवन में पिछले दिनों भीषण रक्तपात करवाया है। इन सब का एक ही कारण है: हम विष वृष के पत्रों को काट रहे हैं, लेकिन पाष ही साथ अपने निहित स्वायों से पूर्ण अनेक रसायनों से उसकी जड़ों में पोषण भी पहुचा रहे हैं। गांव चाहे नुको मरे, अपने घर में अनाज का सख्य होता रहे—हमारी सही कुप्रवृति आज राष्ट्रिय एकता कपी भवन की नीव खो रही है।

**हो हल्का हिन्दी नहीं है !**

हमारी दृष्टि में हिन्दी का अत्याधिक व अनुसामनिक महत्व गौरव है; हमे, हिन्दी के नाम में, आजीवनन व आतक कमाना ही बरणीय रहा है। (अमयः)

**सावधान**

(पृष्ठ ४ का खेग)

व्यस्तित्व हासि सहन करने भी जाति और के टुकड़े होने में व बचने के लिए मंदाय में निकन पटना यह तभी हो सकता है यदि हम जाति के हित को अपने और अपनी संस्थाओं से अधिक महत्ता दे। निःसंदेह इसी में सब का कल्याण है। अथवा—

बनोगे न तुम और न सानी तुम्हारे।

अगर नाव डूबी तो डूबोगे सारे ॥

**ला. लाजपतराय लायवरेरी:**

आर्य समाज योगेन्द्रनगर का

**चुनाव**

गन्तक—श्री गुरदयाल जी भव, प्रधान—श्री विरधारी लाल जी पवन, उपप्रधान—श्री सत्यपाल जी अग्रवाल, मंत्री—श्री राजकुमार जी, उपमंत्री—श्री हृदियन्तरी जी शास्त्री, कोषाध्यक्ष—श्री केदारलाल जी, कार्यकर्ता—श्री शिवचम जी आर्य, सम्मानित सख्य—श्री कृतराज चन्द जी, श्री गुरदारीलाल जी।

इस समय में का उद्घाटन समारोह श्री गुरदयाल जी भव प्रधान आर्यसभाज योगेन्द्र नगर के ककनसो ले हुआ। यह समय ही आर्यसभाज के सहयोग से चल रही है। बाबनालय में चार पांच दैनिक पत्रों, पांच छः साप्ताहिक पत्रों का प्रबन्ध किया गया है। इस के अतिरिक्त सामाजिक उपन्यास, नाटक, कहानियां व जीवनी हैं। अनया पूरा साभ उठा रही है।

राज कुमार मणी पुस्तकालय

## चरित्र बल के धनी बनो

ले० वेद पब्लिक श्री समवेत जी आर्य शंकाधारी  
व्याख्यान-भूषण सराय रहेला, नई दिल्ली-५

(लताक से आगे)

### द्वैत का समाचार

आर्य समाज करोड़बाल दिल्ली के आधिक उसख का अतिम दिन ९ मई सोमवार को था अतिम दिन श्री ९० बेम बन्द जी सुदम स्वातक श्वालापुर महाविद्यालय की अध्यक्षता में कवि सम्मेलन राती के ११ बजे तक चला। इक कवि सम्मेलन मे मौलाने का संभाषण शुभे भी प्राप्त हुआ। सम्मेलन समाप्त होने पर शांति पाठ के पश्चात आर्य समाज संम्भूर की धर्मद्वी के उस्ताही कर्मवीर मनजी श्री ९० देववान जी मुन्ने मिले उन्होंने चालीस किताबें हवन सामग्री के आदर्श मुन्ने देखा। उनसे जब मैने विद्यानन्द जी का समाचार पूछा तो उन्होंने ने आशों में खुन के आनू बहलने दुबे मुन्ने यह बालाया कि स्वामी जी सावना आशम बन्दई के सतसग में आने वाली एक कन्या को लेकर भाग गए।

विद्यानन्द पहले एक सजाह तक इतने आर्य समाज करोड़बाल के अपना प्रस्ताव कर गये थे उन्हे सामूहिक सभा के मन्त्री भी लाता राम गोपाल जी ने अपना पुत्र भोषिण कर दिया। था। उनके चिप सायदेविक के अनेक में उनके प्रति ह्ने चुके है। इस दुःखर समाचार को सुनकर मेरी अतर बेदना का कोई धारवावर न रहा कि विद्यानन्द जी काम वासनाओं के कीचड़ में फल कर आर्य समाज की ओर लाजा राम गोपालजी की प्रतिक्रमा को मिट्टी में मिलाकर सदा के लिये चरित्र अष्टता की मौत मर चुके है।

इस समय काम वासनाओं को प्रतीन करने वाले अलील किन्धो का निर्माण हो रहा है। गन्दे इक के गानों का अकाकस वाली से रात दिन प्रबल प्रचार हो रहा है। धर्मविद्या और महात्मा तथा श्री योडा देव रखक धर्मरखक पुष्यों के निर्माण पर आज तुनिक भी कार्यो के राम राज्य की दुहाई देने वालों का प्यान नहीं है। धर्म शून्य राज्य से समाज का सुधार लाक करने पर भी नहीं होगा।

भाईयों और बहिनों वैदिक शास्त्राय स्थापित करो। दुराईयों

और पाप कर्मों से सवार को बचाने का आज योडा उठाओ। चरित्रवान् पमंत्मा महा पुष्यों का सदा मान सम्मान करो और विद्यानन्द जैसे पतितों की पूजा नूलो मे करना सीखो। चरित्र उन्नत बनाओ।

समाज का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य धर्म है। आर्य समाज से ही विश्व के मानव समाज का जीवन धर्मयुक्त वैदिक बनेगा।

भाईयो और बहिनो महर्षि दयानन्द जी अकेले रह कर देश को जगा गये आज करोडो की सन्ध्या मे आर्य स्त्री पुष्यों के होने हुए देश का सुधार और उपकार नहीं हो रहा है। इस लिये महर्षि दयानन्द और आर्य समाज के नाम से चार बाद लगाने का महा अत धारण करो। देश को और विश्व के मानव समाज को चरित्र के पतन से चरित्र की मोत से बचाओ।

## आश्रो लुधियाना चलें

११, १२ जून को लुधियाना के

ऐतिहासिक नगर मे आर्य वीर दल का ऐतिहासिक सम्मेलन होने जा रहा है। पंजाबी सूत्रा के निर्माण पश्चात यह आर्यों का प्रथम अधिवेशन आर्यों को हुए प्रकार से सफल बनाना चाहिये अपने और प्रचारे आर्यों की शक्ति से परिचित हो सके, ऐसा प्रयास करना चाहिये। अतः पंजाब के आर्य भाई बहिनो मे मेरी प्रार्थना है कि आजो इस लुधियाना चले। प्रसन्ता का विषय है कि पुष्पगज, नरवाना, कंचल, रोहताक, निबानो, करलाक, अन्वला भादि नगरो से सैदील बने, लुधियाना को पहुँच रही है। जानमर से दर्शकों के अतिरिक्त २०० आर्य वीर आ रहे है। अमृतसर से भी काकी आर्य भाई पवार रहे है यह आर्यों का एक भव्य समारोह होगा। कृपया अभी से इस के लिये तैयारी करे।

उत्तम चन्द 'धारर'

सवालक

## अब आर्यसमाज क्या करे

(श्री रामदास जी प्रधान व. स. नि. होशियारपुर)

आर्य जगत में एक दो पिढानो के लेख प्रकाशित हुए है कि वैदिक धर्म का प्रचार संसार में किस तरह हो सकता है और समाज को अब कमजोर हो गया है इस को फिर से जीवित करने के लिये क्या साधन उपलब्ध करने चाहिये। अन्त मे तान उसी अग्रह पर टूटती है कि जब तक आर्यसमाज के हाथ मे राज्य सत्ता न आएगी तब तक वैदिक धर्म संसार मे नहीं फैल सकता। कृष्णवती चिन्तनार्थम् का सन्ध्या पूर्ण नहीं हो सकता। इस के लिए दूसरे मतो के उदाहरण दिए गए है परन्तु इनको मैं यहाँ लेख मे नहीं लाता। लेख इनका ही कहना चाहता हू कि यह विचार ठीक नहीं है कि मजहब (मत) का प्रचार राज्य सत्ता द्वारा हुआ। पहले यह अच्छी तरह समझ लेना चाहिये कि केद का धर्म है और दूसरे धर्म नहीं है, मजहब या मत नहीं। इस लिये धर्म और मत मे अन्तर को जानना अत्यावश्यक होगा।

बुद्ध मत का उदाहरण दे कर कहा जाता है कि समाट अशोक ने जब इस को गृहण कर लिया तो राज्य सत्ता से यह मत अधिक फैल गया, यह गलत है। सम्राट अशोक ने बुद्ध मत को फलाते के लिये तबबारा या शक्ति का प्रयोग नहीं किया। परन्तु उस का अपना जीवन, अपना जीवन चरित्र एक चमकता हुआ, उदाहरण था। उस ने अपने पुत्र तथा पुत्री को भिक्षु बना कर इस मत के प्रचारार्थ देश देशान्तो मे भेजा। इस कारण लोगों ने बुद्ध मत को अधिक मात्रा मे गृहण कर लिया। जीवन से जीवत उपलब्ध होना आवश्यक है। ईसाईयत के प्रचार के लिये भी राज्य सत्ता के डिप्लोमा का नहीं उहराया जा सकता। ईसाईयत का अधिक तर प्रचार उन प्रचारकों द्वारा हुआ जिन्होंने एक दूसरे के पश्चात अपनी जान की हुवाँनिया दी। परन्तु जब ईसाईयत ने शक्ति का प्रयोग किया और Inquisition को काम मे लाया तो इस के अन्दर विरोह उत्पन्न हो गया और वास्तव मे लोगों को ईसाईयत के सिद्धान्तो ने प्रेरित नहीं किया। अब भी तीस ईसाईयत के विचारों से प्रभावित हो कर इस मत को ग्रहण नहीं करते परन्तु धरजू जाबजमकताओं की पूर्ति

के लिये ही ऐसा करते है। इसलाम का बोनाबाला भी उस समय हुआ जब खलीफो ने अपने जीवन तथा हुवाँनिया मे इस का प्रचार किया। परन्तु जब इसलाम ने तबवार उठाई तो इस के विरुद्ध भी लोगों ने बगवात कर दी। और इस ने न ग्रहण करने का भी यही कारण हुआ।

अब आर्यसमाज के इतिहास को भी देखना चाहिये। जिस समय इस का बोनाबाला था तो उस समय इस के हाथ मे कोई राजकी शक्ति न थी अपितु राज्य सत्ता इनके अति विरुद्ध थी। इस के अतिरिक्त उस समय आर्यसमाज ने अधिक माा उ मंतां को अपनी ओर आकर्षित किया क्योंकि उस समय के आर्यों के अन्दर जीवन शक्ति, शुद्ध जीवन चरित्र, नोक मेवा की भावना तथा यशम जीवन था। वे जो कहते थे वही करके दिखाते थे और इसके लिये हर हुवाँनिया देने के लिये हर क्षम ल्यार रहते थे। स्वामी दयानन्द जी महाराज ने देकर महात्मा हसराम तथा स्वामी श्रदानन्द जी तक यही अवस्था रही। इस के पश्चात सत्ताओं के कारण या राजकीय श्रेय ने भाग लेने के कारण, अब आज का राज्य सत्ता मे अधिकार पैदा हुआ तो चरित्र हीनता, खिलावा तथा चाप-लूची पैदा हो गई। इन के कारण वैदिक धर्म के प्रचार मे प्रगति रुक गई। इस तरह जैसे-जैसे आज लोग राजनैतिक क्षेत्र मे प्रगति करते गये जैसे-जैसे आर्यसमाज का पतन होता गया और वर्तमान अवस्था आपके सामने ही है।

मत को जबरदस्ती, तबवार मे या शक्ति द्वारा लोगों पर ठोसा प्र द सकता है और वे ना मानते हुए भी उस की स्वीकार कर लेते, परन्तु वे इस को अपने जीवन मे धारण नहीं करिये और एक दिन विरोह ही आयेगा।

धर्म का प्रचार तथा प्रसार तो शुद्ध जीवन चरित्र, धार्मिक वृत्ति और शुद्ध उपाहण द्वारा होगा। धर्म को गृहण करने से पूर्व लोग यह देखते है कि जिन सिद्धान्तो का वे प्रचार करते है वे उन के अपने जीवन मे क्या तक प्रवेश कर चुके है। यदि चरित्र और (येध पृष्ठ ८ पर)

# बढ़ावें

## आयसमाज लक्ष्यस्य अमृतसर

आयसमाज एक पवित्र पुत्र सदाचारी समाज का नाम है जो दुनिया को सीधे रास्ते पर, ठीक मार्ग पर चलाने का समर्थक है। भारत के एक महान दूरदर्शी ने जब भारत की अवस्था देखी थी तो उसके मन में बहुत डेल लगे, दुःख हुआ कि ओह? वह जाति जो कभी पवित्र, पुत्र सदाचारी थी आज घोर अन्याय के पथी है इस को किस प्रकार सीधे रास्ते पर लाया जा सके? क्या कोई उपाय है इस जाति को उठाने, बचाने का? यदि अनेक विचार थे उनमें महान विनिमय थे।

इन सब प्रश्नों का जवाब उस भारत के महान हितैषी देव दयानन्द ने एक ही दिया जो 'आयसमाज' के नाम से जनता के समक्ष रखा और इस के सदस्यों पर बहुत भारी जिम्मेदारी ली, बहुत बड़े कर्तव्य सीधे जिन ने एक तो दुनिया का भना हो सके दूसरे इन का स्वयं का भी भना हो सके।

जैसा कि 'आयसमाज' के नाम से ही स्पष्ट सामने इसका कर्तव्य आ जाता है इस समाज ने भारत की बास कर बहुत देखा की। जनता की इसी दृष्टिकर प्यारी बना गई कि कोई इसे अपनी भा कहने लगा, कोई इसे पुत्र कहने लगा, कोई इस पर आज न्यौछावर करने लगा आदि २। तब आयसमाज उन पवित्र, चमकीले रत्नों का भण्डार बन गया जिन को देख, सुन, बर्ताव करने लोग इसकी ओर बढ़ी तेजी से क्षीये आने लगे। यह सब था उनके अपने निजी जीवन से प्रभाव जनता पर। जनता यह नहीं देखती थी कि इनके पास वेद है या

इन के पास सत्याग्रहप्रकाश है। यह सब तो जनता को बाद में पता चला, पहले वह बर्ताव और गुणों को देख कर ही खींची आई।

इनका सेवा-भाव सदाचार इतना था कि जो कोई एक बार भी इनके सम्पर्क में आ जाता सदा ही इनका बन जाता इतना ही नहीं बल्कि आजीवन इनका श्रेणी रहता। बाल्य में आयसमाज का सख्त बही है कि दूसरों की सेवा करना उनके कर्तव्य को दूर करना। आयसमाज जब तक, जितना भी इस अपने पवित्र कार्य को सत्य मान कर मेदान में आया उसका ही उज्ज्वल, पवित्र और शुद्ध बन कर मेदान में निकला।

आज तक आयसमाज लगातार अपने लक्ष्य की प्रति के लिए धामि बढ़ता बना आ रहा है। पर अब इसकी प्रति कुछ आगे की अपेक्षा घट गई है। इसका यह मतलब नहीं कि इनके महान लक्ष्यों व सिद्धान्तों में कोई कमी आ गई है या कोई सिद्धान्त भुला निकला है बल्कि कारण यह है कि हमने सेवा का पवित्र जो काम था दुनियाँ के वरों को सुनने का जो महान लक्ष्य था, निरम था उसको मूल मने है। हमने अपने भविष्य में से एक रख लिये है सेवा करने के लिए

पर स्वयं करते नहीं। यह बात गार रखनी चाहिये कि जो कभी एक बार भी गरीब बरिठ, दुकिया का दंड दूर करता है, वह गरीब दुकिया उसका सदा के लिए हो जाता है। श्रुति में हमें सेवा करने हमारे बंध मिटाने के लिए कई बार जहर पीना था, पिछली बार ईंटें पत्थर खांडे थे अपने निरम पर, कितना रंग लाया उसका यह सेवा भाव, सब जानते हैं।

उठो! जाओ! अपने लक्ष्य को पहचानो! हमारा लक्ष्य सेवा करना है, कुछ दूर करना है जिसके लिये हमें कुछ पवित्र सदाचारी बनना है। मेदान में आना है। अपने मुक्तों पर कुमारों पर ऐसा ही प्रभाव डालना है, श्रुति के पवित्र सिद्धांत को बचाना है महान दूरदर्शी ने जो वृक्ष लगाया था आजों उसकी सेवा करने का व्रत ले।

## मोहन आश्रम हरिद्वार

### में अमृत कथा

आयसमाज के प्रसिद्ध विद्वान पं० खट्वाले जी दारुनी विद्याभारत की भनीरन कथा मोहन आश्रम हरिद्वार में ११ जून से २० जून तक होती रहेगी। वर्य में भी साहजों से प्रायतना है कि ठीक समय पर पधार कर अमृत कथा प्रकल करके आत्मानंद लाभ करें।

सहिषादानन्द तीर्थ

## म० हंसराज साहित्य विभाग

आप की प्रतीक्षा में है

### शीघ्रता कीजिए

आयसमाज की सदस्यता के प्रवेश पत्र—२.२५ पैसे %  
 आयसमाज का आय-सूचक वृत्तिरत लेखक—१ रुपया  
 आयसमाज का मासिक नवधा का रजिस्टर—१ रुपया  
 आयसमाज के नियम उपनिषय—२५ पैसे

जीवन व्यापार प्रिन्सीपल दीवान बनर जी एम० एल०—७५ पैसे  
 म० हंसराजजी की जीवनी ले० प्रिन्सीपल दीवानबनरजी एम.ए. कृत १ रु०

### सत्याग्रह प्रकाश (उर्दू) ३.५० पैसे

सीता—३.७०, पार्वती—२.५०, पंचिनी—३.००, यह छंद महात्मा आनन्द स्वामी जी ने एही जाति की प्राचीन सभ्यता को धराने के हेतु कथा रूप में लिखा है। वहीच में देने योग्य है।

प्राप्ति स्थान

## म० हंसराज साहित्य विभाग A.P.P. सभा

निकट कचहरी, जालन्धर

## पठनीय एवं मननयोग्य साहित्य

वेद प्रबचन ५/- गोसावार ७५ पैसे, आनमगीर के पत्र १/२-वेदरमरम संस्कार १/५० पैसे, मेरी आज रोकर कहानियां ७५ पैसे, लोकट ७५ पैसे, सड़कहाते जीवन ५० पैसे, कर्म गोसांसा २/२५ पैसे, संतति नियमन भयो और ११५ पैसे, वैदिक व्याकरण मास्कर ६/- ध्यायमाय घोषक पत्र ११/२० पैसे, साहित्य प्रचारक १/-  
 जयदेव ब्रह्मर्षि बड़ोडा—१

## प्रभु निराकार है

(पृष्ठ २ का लेख)

प्रकार बंधक शक्तियां बन्धे को प्राप्त होती है। ईश्वर और जीव दोनों निराकार हैं पर ईश्वर सब व्यापक है, जीव नहीं।

आएँ अब हम उस निराकार प्रभु का मुखामत करें:—

मूल शक्तिवत् वर्तमान का जो प्रभु है अत्यन्त ही।  
 विभव श्याम में व्याप्त हो रहा जो निकल का है स्वामी।  
 निरिकार आनन्द कर्म है, जो शक्तिवत् रूप सुखदायक।  
 उस महान् आसीत्वर कोई है, शक्ति वेदा नम्र प्रथाम।

## श्रवण आर्यसमाज क्या करें

(पृष्ठ ७ का लेख)

विचारों में अन्तर होगा कोई इस विचारों को धारण नहीं करता।

यदि अब आयसमाज चहता है कि फिर से इसका पहलू की तरफ अधिक तीव्रता पूर्वक प्रचार तथा प्रसार हो तो फिर वही समय आरंभ, शुद्ध धरिण तथा निर्यातों सोच सेवा की भावना को धारण करना होगा। नही तो परिस्थितियां और विपद्घटो बर्झनीं।

## आर्यकुमार सभा नारनौला का चुनाव

निम्न प्रकार से सम्मन हुआ।  
 प्रधान—सर्वजी हीरालाल जी, उप-प्रधान—श्री हरीचन्द्र जी, मन्त्री—महेन्द्र प्रताप जी, कोषाध्यक्ष—श्री राधुदेव जी, पुस्तकालयाध्यक्ष—कंठदेव जी बरोडा (मुकुन्दगंज)  
 मन्त्री—महेन्द्र प्रताप रहेगा

## शोक समाचार

### आयसमाज रत्नदात्री (श्रीनगर)

के बहितीय विधान बनारसी श्री जानकीमाय जी के निधन से स्थानीय आयसमाज को तथा अन्य आयसमाजों तथा सभाओं को उनके विधियों से अत्यन्त दुःख है। ईश्वर से उनकी सुसंस्थित म परिश्रम को प्रशंसा प्राप्त करके की प्रभु से प्रायतना करती है।  
 श्याम सुन्दर बंध  
 मन्त्री कल्याण

मुद्रक व प्रकाशक श्री सतीशराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा श्रीर. मिश्रा प्रेस, मिताप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आयसमाज कार्यालय महात्मा हंसराज ब्रह्मर्षि निकट कचहरी जालन्धर धर से प्रकाशित प्रासिक—आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



दैनिकीक नं० ३०५७

[धार्मिकप्रदेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुलपत्र]

Regl No P. 1

एक प्रति का मूल्य १३ पैसे

साप्ताहिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६ अंक २५

६ आषाढ़ २०२३ रविवार—दयानन्दवाक्य १४१— १६ जून १९६६

(तार 'प्रदेशिक' जालन्धर)

**देश की समृद्धि व उन्नति के लिए गांधी का विकास आवश्यक**

**आयंबीर दल सम्मेलन में श्रीमती सखिता शास्त्री के उद्गार**

शुधियाता — श्रीमती सखिता शास्त्री ने आज यहाँ आयंबीर दल सम्मेलन में आयंबीर दल की सेवाओं की सराहना की और कहा कि देश की समृद्धि, उन्नति और भव्यता के लिए गांधी की उन्नति अत्यावश्यक है। स्वामी शास्त्री जी कहा करते थे कि जब तक गांधी जी जड़े मजबूत नहीं हो जाती, देश को सही रास्ते में मजबूत नहीं कहा जा सकता और यह जड़े हैं गांधी। हमें चाहिए कि हम स्वयं गांधी के जा कर लोगों की समस्याओं को समझ कर उनकी सहायता करें। हमने इसी उद्देश्य के लिए शास्त्री सेवा निकेतन कायम किया।

मैं आयंबीर दल में निवेशन करती हूँ कि वह इस काम में निकेतन को सक्षम करे। देश को उन्नत करने के लिए यहाँ से छात्रावास, निषेधना और जनश्रुता को खत्म करना चाहिए और बस यह काम अच्छी तरह कर सकता है। मैं जानता तो भी सहयोग की अपील करती हूँ। हमें पहले जब श्रीमती शास्त्री माणस्य देने को स्ट्रेच पर आई तो माता सखिता शास्त्री 'विधावाप' शाल बहादुर शास्त्री विधावाप' भूमि स्थानन्द अमर जूने' के बारे में बताना चाहिए।

**हथियार मागे जा सकते हैं किन्तु मागे हुए हथियारों से लड़ा नहीं जा सकता श्री यश जी का जनरल स्पेंसों के अभिनन्दन समारोह में भाषण लड़ाई के मैदान में जवानों के इरादे लड़ते हैं**

जालन्धर श्री यश जी ने कहा यहाँ कहा कि मत सितम्बर के भारत-पाकिस्तान संघर्ष में भारतीय जवानों ने यह साबित कर दिया कि लड़ाई के मैदान में अकेले हथियार नहीं, जवानों के इरादे लड़ते हैं।

आगे आपने जो राजादा स्टेटिम में मेजर जनरल राजेंद्र सिंह स्पेंसों, लैंडमैजेंट कर्नल तथा और अन्य सैनिक अफसरों के सम्मान में आपोजित एक समारोह में भाषण दे रहे थे, करतल ध्वनि के मध्य कहा कि हमारे बहादुर जवानों ने हथियार मागने वालों की भ्राति भी दूर कर दी और यह साबित कर दिया कि हथियार मागे तो जा सकते हैं लेकिन मागे हुए हथियारों से लड़ा नहीं जा सकता। उन्होंने कहा कि लड़ाई के मैदान में हमारे बहादुर राजादाकुलों ने जिस सूरभूज और बुद्ध कौशल का परिचय दिया वह अद्वितीय एवं प्रशंसनीय है। पाकिस्तान ने अमरोका से बड़े-बड़े वंश टैंक और अन्य सस्त्रास्त्र तो प्राप्त कर लिए लेकिन उसके जवानों और अफसरों को न कोई सूरभूज भी और न हमारे जवानों और अफसरों की तरह मजबूत इरादे थे। भारतीय जवानों ने इस लड़ाई में अमरोका के वंश टैंकों की जी दुर्गत की उस से अमरोका वाले भी आश्चर्यचकित रह गए।

श्री यश जी ने जनरल स्पेंसों द्वारा १७ वर्ष पूर्व जोशीला दर्रा की लड़ाई में दिखाए गए कालानुमा का उल्लेख किया और कहा कि भागना का निषादी नहीं भी लड़ना है वह एक नया रिकार्ड कायम करना है। भारतीय जवानों ने जोशीला से टैंक के जाकर बसाया पर को पकित कर दिया था। जनरल स्पेंसों जिस तरह स्वायत्त संकेत की घमासान लड़ाई के हीरो थे वही ही की जोशीला की लड़ाई के भी।

★ विजयी सच्ची विधावाप तथा शासन मनुष्यों के जीवन के लिए लाभदायक है उन सब का जानना धर्म के अन्दर ही आजाता है। धर्म उन विधाओं का निरोधी नहीं। उसके अतिरिक्त धर्म कभी नहीं मर सकता। आत्मा और परमात्मा के बिच में जानना और ईश्वर की शक्ति करना भी मनुष्य के लिए आवश्यक है।

**भारत सरकार से परमाणु बम बनाने की मांग श्री यश जी की अध्यक्षता में आयंबीर दल के उद्घाटन सम्मेलन का प्रस्ताव**

शुधियाता आयंबीर दल का आज यहाँ राष्ट्र उद्घाटन सम्मेलन श्री यश जी की प्रवक्तृता में हुआ। विषय में प्रस्तावित में दो प्रस्ताव पाल किए गए। पहले प्रस्ताव में विजे महात्मा आनन्द बिरो जी ने पेश किया, सरकार से जोरदार मांग की गई कि सीमाश्री की निर्दिष्ट के मुद्दे पर सरकार परमाणु बम बनाने पर की विचार करे। दूसरे प्रस्ताव में कहा गया कि देश और जाति-पाति को प्रयास से समाज की शोकांत कर दिया है। इन को समाज का नाशिए। प्रस्ताव में आवं भाइयों न अजीब की गई है कि वह वहन विष्णु न दे और अपने माता के मात जाति न लिख कर केन मायं निष्ठा करे।

निष्ठाश्री श्री ज्ञानचन्द्र ने सम्मेलन को समापित करने हुए धर्म और वेद में प्यार करने पर और दिया और कहा कि धर्म देश-पार को नहीं रोका। आयंबीर दल समारोह में जो एक ही विष्णु स्वतन्त्रता के पीरे की अपने रक्त ने सोचा। हो सकता है कि कुछ लोग धर्म में भ्रम कर रहे किन्तु एक सच्चा के रूप में आयंबीर दल की कुशीली अद्वितीय है। मूर्छित दयानन्द ने स्वयं पहले स्वतन्त्रता का नारा लगाया था और कहा था कि पलन देय में धर्म-विक्रम नहीं कर सकता इसलिए धर्म-पार के लिए स्वतन्त्रता आवश्यक है।

आज बिब्व का मानव समाज परमात्मा की प्राप्ति के लिये अधीर है व्याकुल है। कोई काशी में जाता है कोई कावेय में तो मर्के और मदीने में झाक छाता है। कोई मन्दिर में कोई गुम्बदारे में कोई चर्च में तो कोई मन्दिर में बिब्वदा करता है। आज इस विशाल बिब्व का मानव समाज परमात्मा को पाने के लिए उच्चिब्व अवस्था में ठोक रहे सा रहा है। ऐ बिब्व के तर नारियो या रक्षी यदि परमात्मा को प्राप्त करना चाहते हो! यदि स्वर्गिय सुखो को प्राप्त करना चाहते हो। यदि मोक्ष अवस्था में बिब्वरख करना चाहते हो, यदि जन्म मरण के सुख सुखो में सुख होना चाहते हो। यदि पिताभो की पिता से बचना चाहते हो। यदि अश्वय सुखो को प्राप्त करना चाहते हो यदि प्राण प्रियतम का साक्षात्कार करना चाहते हो। यदि परमात्मा से बातोबात करना दिब्व चाहते हो। यदि परमात्मा का दिब्व सदन अपनी अन्तर आत्मा की गहन गुम्बदो में करना चाहते हो यदि वेदोक्त जीवन के रहस्य के मर्म को जानना चाहते हो, यदि महर्षियो के जीवन की भाक्तियो को देखना चाहते हो, यदि मुष्टि की आदि काल के उन कल्पशकरी सदो को देख जान के मुनो को जो आज आकाश में गूज रहे है उनडे सुनना चाहते हो तो आजो आज मन मन्दिर का पुजारी बनो। आजो आज ह्य प्रेम योगी बने आजो ह्य आज प्रेम पुजारी बने आजो आज ह्य अपने मन मन्दिर में प्रेम की अलङ्ग ग्योति जलावे। जलावे ह्यदय दीप लक्ष्मीन होकर मक्ति रहे। श्रद्धावान बने श्रद्धा और प्रेम के बिना मन मन्दिर की ग्योति का प्रकाश पु ज मिलत नही है। मन मन्दिर में हो परमात्मा का निवान है रत्न जडित मन्दिरों में भगवान को दूटना सर्वथा वेकार है।

जिस मनुष्य का मन अपवित्र नही। जिस मनुष्य के मन में आशो में बाणो में भावनाओ में इन्द्रियो में पवित्रता नही हो। जो मनुष्यकवशाता के समान पवित्र अपने शरीर को नही रखता है। जो मनुष्य कुशावगयो का और इन्द्रियो का दास है जो मनुष्य अपने धन पर बिब्वय नही प्राप्त कर सका है वह मनुष्य लाल जलो में भी परमात्मा का दर्शन नही कर सकेगा।

ऐ बिब्व के तर नारियो जीवन की सफरता के लिये बिब्व सकल्यो के

-धार्मिक विचारधारा

मन मन्दिर

वेद पथिक पं. धर्मवीर आर्य संडाधारी व्याख्यान भूषण  
अध्यक्ष धर्मवीर ग्रन्थमाला प्रकाशन विभाग सराय  
रुहेला नई दिल्ली ५।

सुख अपने मन को बना तो माया की मदिरा का पान मत करो। ससार के सोनवर्ष में बिब्व के कल-कल में फूलो में हवा में निजंन बनो मेकायाज में बन्द रहे सुर्व में तारो में पवन में कला में वक्ता की बाणी में महात्माओ और योगियो के जीवन बिब्वान में जीवन निर्माण और बिब्व रचना में पूब्यो में पानाल में जुगल जीधियो के प्यार में, महात्माओ के वंराय में अनुगाम में शक्तिदर्शी कवियो की बाणी में भक्तों की डेर में धनधोर आपसओ में समठो में जीवन की तरल तरगो में उपा काल की लावो में सद्य सागर के कोप में समुद्र की गहराईयो में धन वत्र सर्वत्र उस परमात्मा को देखने का अपना अनुभव अनुभूषण मय सरल सरल सल्लेस सम्भाव भाव मन लो अपने मनयो में परमात्मा की दिब्व छवि को आज बिब्वेक द्वारा देखो।

गायत्री माता की गोद में बैठे का परमात्मा का अमृत्यु और पुत्रिया कहलाने का परम लोभाय बनाओ। मनो निग्रह कर मन में लेस माय भी बिचार न आने दो।

मनसो बनी: जो मनुष्य मन पर बिब्वय प्राप्त कर सकना है और परमात्मा को मन मन्दिर में प्राप्त कर सकता है वह बिब्व बिब्वय करने की समता भी प्राप्त कर सकता है। यह धार सको कृकर-शुकर कीट पतंगो के समान हमारे जीवन समाज भोग वाद की ओर दुर्गति में जागे बन्द रहे है। बिब्वर का मानव समाज अपने आप को और परमात्मा को भूल कर प्रतियुद्ध विनाय के नत आ रहा है आज ह्य मानव भूल के घर्म कर्म को भूल कर भूल और शाति की भाशा रखते है। सुख शाति आनन्द ऐब्वर्य का परम धाम परमात्मा की भक्ति में तथा बिब्व की मानवता की रखा में ही है।

यह धार रहे सुख और शाति चाहते हो तो दीन-दुखियो दरिदो आर्त-जनों की सेवा करो निष्काम कर्म करो। बिब्व कल्याण महायज्ञ में लव जाओ धोर तप करो तपस्वी बनो। आत्मस. कायतता भीष्ता को पास न

आने दो देवी गुणो को प्राप्त करो। जीवन को सादा और मन को पवित्र बनाओ। भारतीय संस्कृति और सभ्यता को अपनाओ। शिक्षा भूष की रखा करो। देश प्रेम देग सेवा देग उन्नति में अपने जीवन को लगाओ।

परमात्मा की प्राप्ति युग कर्मों के करने में तथा धर्मयुक्त जीवन के निर्माण से अनायास हो जाती है। परमात्मा का दिब्व सदन भावनाओ में परम प्रसन्नता में ही होता है।

ऐ बिब्व के तर-नारियो अपने आपको पहचानो परमात्मा को अपने मन मन्दिर में ही प्राप्त कर सकते हो। परमात्मा को दूडने के लिए कोई गन्द-कने की ओर दूर जाने की कोई आवश्यकता नही है। समन, सदाचार, वंराय अनुप्राण युक्त हो अपना जीवन सदन, मोह माया भगता को विषमता न सलावे तमी मन मन्दिर के ह्य पुजारी बने मन मन्दिर में ही ह्य आज उज्जुद्ध करे ज्ञान अणि रति को। यह धार रहे ज्ञान के बिना गति नही है ज्ञान ही वेदो का और दल्लो का उपनिषदो का महर्षियो की पवित्र बाणी का सार है। मन मन्दिर में ही जन्म-जन्मान्तरो का संस्कार सुधम पिचार और कर्मरेखा की गति प्राप्ति सुपुत्र अवस्था में पड़ी हुई है। मन में विशाल वेदों का ज्ञान छिपा हुआ है मन की अमत्य शक्तियो की मनो-विज्ञान के निकर्मों को जान जाने पर तथा मन को बध में कर लेने पर जिस परम आनन्द का अनुभव मनुष्य करने लग जाता है उसका श्रावण भाग भी चक्रवर्ती सम्राटो को प्राप्त नही होता है।

मन को बध में कर लेने शाला मनुष्य देव बन जाता है मन को बध में कर लेने वाले और मन मन्दिर में ही परमात्मा का दिब्व सदन करने वाले महात्माओ महापुरुषो के सदन कर लेने में मन में परम शाति और आनन्द से परिपूरित मनुष्य जीवन के ही परमात्मा का दिब्व सदन करने वाले महात्माओ महापुरुषो के सदन कर लेने में मन में परम शाति और आनन्द से परिपूरित मनुष्य जीवन के ही दिब्व दिशाओ में आनन्द की विधिच शरटें तरमित होने लग जाती हैं।

आजो आज ह्य मन मन्दिर के सन्धे कुशादी बने आत्मा कुर्त अनु-रागी अराक्य बने। जल-जमनी का आज बह खेले है। महर्षियो का तथा वेद शास्त्रो का आज यह आदेश है कि जीवन मरण के बन्धनो से मुक्त होने के लिये मन मन्दिर के पुजारी बनो वेद विज्ञान, कर्म विज्ञान, धर्म विज्ञान, आत्म विज्ञान, मुष्टि विज्ञान, सूर्य विज्ञान आदि विद्याओ विज्ञानो को प्राप्त करने के लिये आप्त शानी महात्माओ के सलंम में जाओ जहा जाने से सशय सुख मिट जाते हैं। मन की वेदोक्त तरल तरगो में देखो वह परमात्मा हमे दे रहा है।

आज कुशावनाओ, कुसत्कारो, कुकर्मो और कुविचारो को भस्म सात कर दो। दया, मित्रता, बिब्वेक, अनुप्राण से अनुपुल्ल अपने जीवन को बना लो। जीवन पथ को भूल न जाना। जीवन पथ में पथ रस्ता बन कर चाहे फूल आये वा आये शूल उन मूलो को या फूलो को अपना आर-दावों के अंगारो को कह दो अब ह्य परमात्मा के समुद्र मिलन में तल्लीन हो चुके हैं। इस लिए तुम भाग जाओ।

यह ध्यान रहे अपनी चित्तवृत्ति को पवित्र बना लो। मन को पवित्र बनाना चाहते हो और मन मन्दिर में ही परमात्मा का दिब्व सदन करना चाहते हो तो ओम् नाम का पत्र दिन षडो षडो प्रतिपण जाप करो। परमात्मा को एक क्षण के लिये भी मत भूलो। सुख चाहते हो तो समन युक्त सदाचार युक्त निष्कलक निबिकार निलिप्त अपने जीवन को बना लो। आज से ऐ धर्मवीर धर्म को ही अपना मित्र बना लो। धर्म को मित्र बना लेने पर ससार स्वय मित्र बनायेगा। परमात्मा को अपनी मित्रता जोडो। परमात्मा को अपना मित्र बना लो। अपने मनयो में प्राशो में बाणी में परमात्मा की बसा लो।

मन मन्दिर को पवित्रता के लिये अपना जीवन धन सर्वस्व निखार कर दो। यह धार रहे परमात्मा को भूल जाना महा अज्ञान है और महा मृत्यु है। परमात्मा की प्राप्ति में आत्म-चित्तता में लग जाओ।

जीवन की जटिल समस्याओं का यदि समाधान चाहते हो यदि बिब्व को बिनास से बचना चाहते हो यदि धन मन में वेदों के ज्ञान का प्रकाश (शेष पृष्ठ ८ पर)

सम्पादकीय—

# त्रार्य जगत

वर्ष [६] रविवार ०२३, १६ जून १९६६ [छक २५]

## यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च

राष्ट्र की उन्नति के लिए बड़ा और धन शक्तियों का होना बड़ा आवश्यक है। बंद का यह अमर मन्त्रेया युगो से बना जाता है। मान के दल के साथ ० ब्रह्मण का बल भी चाहिए। बुद्धि का अपना स्थान है और बाहु का अपना। जिस देश में ब्राह्मण और क्षत्रिय दोनों मिल कर चलते हैं, वह देश सदा प्रगति के पथ पर अग्रि ही आगे बढ़ता जाता है। क्षत्रिय के बिना ज्ञानकोर्म हो कर रह जाता है। शस्त्र और शस्त्रों से दोनों ही राष्ट्र के जीवन के प्रसिद्ध साधन हैं। ज्ञान का प्रसार तथा अन्वय च आविष्कार का प्रतिकार प्रत्येक राष्ट्र का कर्तव्य होता है। इस के लिए भक्ति के साथ ० भक्ति हीनी चाहिए। भारतीय सभ्यता के जीवनरूप के ये दोनों पहिले साथ ० बना करते हैं। हमारा पुराना इतिहास इन दोनों साधनों को साथ ० रखता था। भारतीय महापुरुषों ने सरस्वती ओरि क्षत्रि दोनों का प्रती मानित समर्थक किया था। मृग युव्य राम और कृष्ण, विद्य-प्राप्त आदि सब में दोनों बल का समावेश था। राष्ट्र की शक्ति के लिए ये आवश्यक है। आर्यसमाज के महान् संस्थापक ऋषि दयानन्द जी ने बंद का यह भूला हुआ सन्देश सब के सामने रखा। आर्य समाज ब्रह्म और क्षत्र दोनों साधनों का प्रचार करता है। कोई मान से पाकिस्तान या चीन के भेदियों को कैसे रोका जा सकता है। उस के लिए क्षत्र शक्ति का प्रयोग करना ही पडा।

आज का युग तो शक्ति का युग है। जिस व्यक्ति या समाज के पास शक्ति नहीं होगा। उस की आवाज अन्धकारोदम होगा। युगमान जगल में जेते रोने वाले के रोने को कोई नहीं सुनता। उसी प्रकार शक्ति से हीन समाज ब जाति की आवाज को कोई भी नहीं सुनता। यदि कोई सुनता भी है तो ध्यान देने की आवश्यकता नहीं समझता। हम सारे हिन्दु समाज

की बात नहीं कहते हैं। जेते लोग आज के विश्व में बड़ा ही कमजोर माने रखा है। उस का प्रमाण भी सामने है। आज बाधा नक़्स्लाम का राज्य है। हिन्दु समाज अपना सब कुछ छोड़ कर बाधा के इस पार आ गया। हम अभी तक विश्व के दिल में हिन्दु समाज की निर्वलता की भावना को हटा नहीं सके। ईशान्वय हमें कमजोर जान कर अपने पन जग के जोर से अपने काम में लुप्त रूप से लगी हुई है। अपने ही प्रान्त पञ्जाब का सर्व सब ने देखा। महा पर आर्यसमाज का बरा भारी केन्द्र है। शक्तिशाली वेदी है। प्रभावशाली ग्रंथ है। विशाल सस्थाओं का जाल बिछा हुआ है। हमारे पास बड़े ० नेता, महाशयरी, पुत्रावधार बक्ता व लेखक है। जालान्धर समठ है। समाजो का जाल बिछा हुआ है। जन्तुओं व उल्लोको की कमी नहीं है। दूसरी और क्या है? बोले के व्यक्ति तथा स्त्री गिनी सस्था में नेता कहे जाने वाले लोग। किन्तु यह तथ्य है कि सारा जोर लगाने पर भी, मूख हड़ताल करने पर भी, हड़ताल से, करोड़ों की हानि उठने पर तथा नौ ० बंध के कुमारो के रोलियों का निर्माण बनाये जाने पर भी, अपने धर्म स्थानो व मानुसतिक का अपमान करने पर भी, बड़े ० जलते जलूख करके प्रस्ताव पारित करने पर भी हमारा पञ्जाब बाट रहता प्यार। भूखहड़ताल का कुछ न बन सग्य। हम ने अपनी आस्था के सामने ही प्राप्त को बाटा जाता हुआ मान लिया।

बात कबची पर है सच्ची। यह सग्य है कि हम ने कोई भी नहीं रखा। हमारे मरणावसतो की किसी को भी चिन्ता नहीं है। हमारे जन्तुओं, जसो, सम्बेलनो व प्रस्तावो का कुछ भी अभाव नहीं है। दूसरी ओर के लोगों से धरती और आकाश भी कांते है। कमीशन के निर्णयों में भी

परिकरन हो जाता है। आज का विश्व कोरे जान को नहीं मानता। उसे शक्ति का परिचय चाहिए। हम सदा आशावादी है। निराशा बंद में पाप माना गया है। किन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि मूठा आशावादी केर अपने को धन में रखा जाये। आर्यसमाज की वह पुरातन शक्ति बर आयेगी। आर्यसमाज बोलता था तो सारा देश उसकी ओर देखा था। उस की आवाज पर निर्णय होता था। आज हमारी आवाज कितनी है? केवल जलूसी से काम नहीं चलेगा। शक्ति का प्रभाव पंदा करना होगा। हमारे प्रति दूसरो की प्रतिक्रिया को भाव भर गया है। उसे दूर करने के लिए क्षत्रल का परिचय देना होगा। जलूसी चाहिए पर समाज केवल जलूसों पर जीवित नहीं होगा। इसके लिए तो शक्ति की आवश्यकता है। इस कष्टदे पञ्जाब में आर्यसमाज के कर्णधार इस पर विचार करके शक्ति का केन्द्र जुटाए। आर्यसमाज की शक्ति का प्रभाव पंदा करे—शिक्षिकोत्पन्न

### बटाला का गर्लस कॉलेज

बटाला जिला मुख्यालय व्यापार कला कौशल का एक प्रसिद्ध स्थान है। यहां लोहे की भारी इंडस्ट्री है। यहां पर अन्य विशाल संस्थानों के साथ आर्यसमाज की विशाल सफाई भी बड़ा सुन्दर काम कर रही है। यहां का डी. ए. बी. स्कूल व आर्य कन्या स्कूल अपने विद्यार्थ्या-प्रचार के काम में लगा है। अमर बलिदानो वीर हीरकल की धर्म-पत्नी सती लक्ष्मी का मार्ग मिला प्रति बंधं यह लगता है। कई आर्य समाज के काम करती है। बहुत दिनों से एक कमी थी कि बटाला में कोई डी० ए० बी० कॉलेज नहीं था। यहां पर शिक्षिपयन कॉलेज है जिसमें लवके लक्ष्मीया इन्ट्रू पढते है। बटाला जंसे केन्द्र में ईसाईयो का कॉलेज तो हो पर डी० ए० बी० कॉलेज न हो यह बात अक्षरती थी। यहां के अन्धकार सोशल कार्यकर्ताओ की महाभाग गोजुक चन्द जी, डी० ए० बी० वी० स्कूल के प्रिंसिपल ० गुणलक्षिको जी एम० ए० आदि सज्जनो ने मिल कर इस भारी कमी को पूरा करा दिया। लक्ष्-शिको का डी० ए० बी० कॉलेज लुगना दिया। बड़ी सफलता से चला रहा है। इस महान् परिश्रम के लिए हम सारे कार्यकर्ताओ को बधाई देते हैं। अब परिवारो की बेटीया निरिचर रूप से

डी० ए० बी० कॉलेज जैनी सस्था में विशाल प्रान्त कर सकेंगी।

### आर्य जगत् नये ब्लाक में

अपका प्यार, आर्य प्रादेशिक सभा का साप्ताहिक पत्र आर्य जगत अपने शानदार परिवर्तनों के साथ आप की सेवा में पहुंच रहा है। इस का टाइप कारीक सुन्दर कर दिया गया है। इस का ब्लाक भी नया बनवा दिया है। लेखों में भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है। सभा पर्य प्रचार के विचार से इसे प्रकाशित करने का कर्तव्य निभाती चनी जाती है। जलता भी तो अपना कर्तव्य निभाये। आज कल सामिकपत्र चलाना किन्तु कठिन है। यह बड़ी जगते है जो इस के अन्दर है। फिर भी सभा अपना काम कर रही है। चिन्ता यह है कि हम पर्य प्रचार के लिए कम सग्य देते हैं। कौन सा ऐसा परिवार है जहा पर गेने जेते पत्र मैजजिनी नहीं आते। किन्तु आर्य जगत जेसे सभा के पत्र चिताने परिवार मगवाने है। यदि हम बंधं में सभा को केवल छ. रुपये भेज कर उसके साप्ताहिक पत्र के प्रसार में सहयोग नहीं देते तो और कौन देगा। हम सभी सज्जनो से निवेदन करते हैं कि वे अपनी ओर से एक-एक पत्र किसी के नाम लपवायें। यह भी एक कर्तव्य है। सभासे व संस्थाएं आर्य जगत् की प्रतिस्पर्धाई कई प्रिसियां इन्ट्रू भयवकार लोगो तक पहुंचवायें। यह भी अपनी भागी की काम है।

### शोक नमक

सांवेदिक सभा नई देहली के माननीय प्रवात भी तन्तु प्रयाग भाई की पुत्र्या माता का स्वर्णभाव हो गया। इस तमाचार से सारा आर्य जगत अपने शोक में घोकापूर है। माननीया माता जी का सारा जीवन आर्यत्व के रस में सारा हुआ था। धार्मिकता की तो साक्षान् सजीब प्रतिमा थी। हेम कृष्ण केवल बन्दी के साथ प्रयात थी प्रयाग भाई के उच्च आर्य परिवार में मानवा माता जी के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। मान्य प्रयाग भाई अपनी माता जी का बड़ा ही सम्मान करते थे। सभासे के पत्रिच व धर्मन जेते जीवन की साथ नारे परिवार पर भी। पर्य कार्यों में माता जी बंद बंद कर हिस्सा लेती थी। माता जी के दिवंगम होने पर इस दर्दना में आर्य जगत् भी प्रयाग भाई के साथ है। प्रभु दिवंगत आत्मा की शान्ति प्रदान करे। माननीय प्रयाग भाई अपनी पुत्र्या माता जी की स्मृति में कुछ न कुछ स्थायी स्मृति कायम करने पर विचार करें—स०



गुरुकुल कांगड़ी में महान उप-कुलपतियों की एक लंबी शृंखला रही है। इस शृंखला में जहां स्वामी भद्रानन्द, आचार्य रामचंद्र और श्री बभ्रुपति जी रहे हैं वहां इसकी अन्तिम को कड़ी भी इन्द्र विद्यालयस्थिति और श्री सत्यवती जी सिद्धान्ताचार्य रहे। श्री इन्द्र जी स्वामी भद्रानन्द जी के सुपुत्र और गुरुकुल कांगड़ी के प्रथम स्नातक थे। वे एक महान लेखक, पत्रकार, बक्ता, राजनीतिक कार्यकर्ता एवं आर्यसमाज के प्राण थे। भारत के राष्ट्रीय जीवन पर अपने पिता के छापान उनकी गहरी छाप थी। उनकी पहली कृतियां अब भी बड़े पात्र से पढ़ी जाती हैं और पढ़ी जाती रहेंगी।

अन्य पहली जून को इस शृंखला की अन्तिम कड़ी श्रीधरचन्द्र सिद्धाचार्यकार ने अपना कार्यभार इस न टूटनेवाली शृंखला की एक अन्य कड़ी को धोष दिया। उनका कार्यकाल पूरा हो जाने पर शीघ्र ही एक उपकुलपति ने ३ हप्तान व्यक्तियों के नामों की सिफारिश की। इनमें से गुरुकुल के विभिन्न मंडल प्रताप शास्त्री एम.ए., एम.ओ.एल. को चुन लिया। इस निर्णय के अनुसार आर्य प्रतिनिधि समा पत्राच के प्रथम एवं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० रामसिंह जी एम.ए., ने श्री शास्त्री जी को गुरुकुल विश्वविद्यालय का उपकुलपति नियुक्त कर दिया और वे एक जून की प्रातः से इस पद को सुशीलित कर रहे हैं।

श्री शास्त्री जी गुरुकुल के वातावरण में ही पले हैं। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा गुरुकुल बुन्दानन में और बाद को अन्य कालेज में हुई। श्री शास्त्री जी के पिता का सबसे स्वामी भद्रानन्द जी से बहुत निकट का था। उनके पिता डा० माधवसिंह जी स्वामी भद्रानन्द जी द्वारा स्थापित अखिल भारतीय बुद्धि बहासभा के महासूत्री थे। आचार्य के बुद्धि बानीयल में उन्होंने स्वामी भद्रानन्द जी के दार्शनिक हाथ का कार्य किया। श्री महेन्द्र प्रताप शास्त्री इन्दी डा० माधवसिंह जी के एकमात्र सुपुत्र हैं।

एम० ए० की परीक्षा पास करने के बाद १९२५ ई० में राजाराम कालेज कोलारपुर में श्री शास्त्री जी अध्यक्ष संस्कृत विभाज नियुक्त हुए। १९२८ में राजकुमार बाबुरामसिंह (शाहपुरवासीय मेवाड के पौत्र) के

## गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के नये उपकुलपति

(प्रो० गंगा राम, एम. ए., रजिस्ट्रार, गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार)

संस्कृत तथा विषयक बनकर इम्प्लेंट में। वहां से लौट कर आप १९२९ में डी० ए० की० कालेज देहरादून में कई वर्षों तक प्रोफेसर तथा अध्यापक रहें। देहरादून में आप आर्य समाज के कमेंट कार्यकर्ता थे और कई वर्षों तक वहां की समाज के प्रधान भी रहे। पर आपका कार्यभार देहरादून तक ही सीमित नहीं था। आप उत्तर प्रदेश की आर्य प्रतिनिधि समा के कई वर्षों तक महासूत्री और उपप्रधान रहे।

आपके चरित्र पर भी स्वामी भद्रानन्द जी की गहरी छाप है। जाति पात के बन्धन की शृंखला को तोड़ कर आपने अपने पिता जी की स्वीकृति से विवाह किया। आपकी पत्नी कन्या गुरुकुल हायरस की सुपुत्री हैं और अब भी वे इस गुरुकुल का कार्यभार समाले हुए हैं। आपने अपने

तीनों पुत्रों के विवाह जाति पात तोड़ कर किए।

श्री शास्त्री जी डी० ए० की० कालेज लखनऊ के कई वर्षों तक प्रिंसिपल रहे। उसके पश्चात् उन्होंने जाट वैदिक कालेज बड़ौदा का सहायक भी बड़ी सफलता पूर्वक किया। पर आपने कभी भी आर्यसमाज को नहीं भूलाया। आप सार्वभौमिक समा के भी अन्तर्गत सदस्य रहते हैं। आप जाति तथा आर्यसमाज के क्षेत्र में आपने वैदिक धर्म प्रचार का जो महान् कार्य किया है उसे कभी नहीं भूलाया जा सकता है। आप अनेक सामाजिक एवं शिक्षा मसालों के प्रधान, मन्त्री, प्रबन्धक रहे हैं। आचार्य लखनऊ विश्वविद्यालय तथा उत्तर प्रदेश बोर्ड में उनका सम्बन्ध रह चुका है।

पहली जून से जब आपने गुरुकुल

## आचार्य-प्रदर्शन

मेरी पुत्री सरस्वती बार्वा के पुत्र विवाह पर जो कि आर्य समाज के प्रसिद्ध शास्त्रार्थ महारथी श्री० प० गान्धि प्रकाश जी अविष्कारता वेद प्रचार कार्य प्रति निधि समा पत्राच जानमभर के सुपुत्र शिष्य गुरुभाज आर्य के साथ लेखन नगर कार्ययों में मयत्र हुवा है। कई सज्जनों ने अपने सुभागीवार्द के पत्र मेरु कर अनुपहीन किया। यद्यपि मीने बाहर बहुत कम ही भूषणा दी है। फिर भी मात्र सज्जनों तथा अपने पत्राकर सज्जनों, तमाज के भार-बहिनों तथा समाजों के सज्जनों व मित्रों ने जो आशीर्वाद दिया है, आर्यजात द्वारा उन प्रभु का आदर्क आभारी हूँ। मैं उसे प्रार्थना है कि उन का आशीर्वाद व प्रेम सदा निमता रहे।

विनीत  
शिवोक्त चन्द्र शास्त्री  
आर्य प्रादेशिक समा

कांगड़ी विश्वविद्यालय के उपकुलपति का भार सभाना है तब मे पत्राच, उत्तर प्रदेश, राजस्थान तथा अन्य प्रदेशों के आर्यसमाज तथा आर्यनेताओं से बर्षाई के सदेव लगातार आ रहे हैं। पहली जून को ही गुरुकुल में अधिकारियों की एक सभा हुई जिस में सभी मे शास्त्री जी को अपने पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया।

हमें पूर्ण आशा है कि श्री शास्त्री जी की निष्पन्न गुरुकुल के लिए ही नहीं अपितु आर्य जनता तथा आर्य समाज के लिये बरदान सिद्ध होगी।

## डी. ए. वी. कालेज (लाहौर) थंवाला शहर

तमाम कलाओं। श्री-मुनिबन्दि श्री-मैत्रीकल, श्री-मैत्रीनिर्वाण हीन बर्षीय हिन्दी कोम (वार्टस व सार्डस) का प्रवेश १ सुत्तार् १९६६ से वाररुभ हो रहा है। पढ़ाई और छात्रावास का अत्यन्त उत्तम प्रबन्ध है। प्रोफेक्टरस लेहू निवर्त्त। २०) देकर मीट रिजर्व करवाई जा सकती है।

प्रिंसिपल भगवान शाह

★ सच्चा धर्म भगवा हस्त करता। बलिष्ठ भूठा धर्म विधि मजहब कहते हैं, भगवो की वड हो सकता है। श्रुतियों ने जो धर्म के सत्य, बताये हैं उनमें मानने से संसार में कमी बढाई अमद नहीं हो सकती।

## आर्य वीरो!

### श्री वेद प्रकाश जी एम० ए० आर्य स्कूल, लुधियाना

आज गुरु गरिमा गई, मां बाप की इज्जत गई  
राह पर मा बहिन के लिए पर है नित शान्त नई।  
हाथ हाहाकार निश्चिन्त अपराधों ई कर्तं।  
आज अभुत बन गया शिष्य प्रीति है मकरत भई।

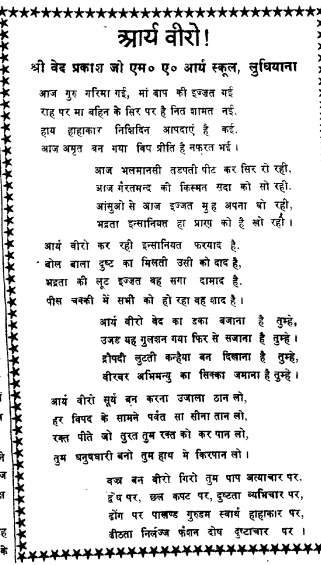
आज भलमानसी तटपती पीट कर लिए रो रही,  
आज नरतमन्द की किस्मत सदा को रो रही,  
आंखों से आज इज्जत मुह अपना को रही,  
मदता इन्सानियत हा प्राण को है को रही।

आर्य वीरो कर रही इमानियत फरदाय है,  
बोल बना टुट्ट का मिसली उठी को शाय है,  
भद्रता की लूट इज्जत बह सगा दामाद है,  
पीस चक्की में सभी को हो रहा बह दाद है।

आर्य वीरो वेद का टका बजाना है तुम्हें,  
उजड़ यह गुनजन गया फिर से सजाना है तुम्हें।  
द्रौपदी लूटती कन्हेया बन दिखाना है तुम्हें,  
वीरवर अभिमन्यु का सिक्का जमाना है तुम्हें।

आर्य वीरो सूर्य बन करना उजाला ठान लो,  
हृद विषय के सामने पर्वत सा सीमा ठान लो,  
रक्त पीते जो तुलत तुम रक्त को कर पाव लो,  
तुम धनुषबारी बनो तुम हाथ में किरपान लो।

बख बन बीरो मिरो तुम पाप अत्याचार पर,  
द्वेष पर, छत कपट पर, दुष्टता व्यभिचार पर,  
द्रोह पर पाकषट्ट मुहम स्वार्थ हाहाकार पर,  
डीठला निर्वन्ध फँसत दोष दुष्टाचार पर।



बच में मनुष्य बचने का हम करने लगा है। उन्ने हमी से शरीर बचने के लिए बचने का उपयोग प्रारम्भ कर दिया। वे बचन चाहे किसी प्रकार के नहीं न रहे हों वह स्वस्थ है कि इनसे उनमें गर्मी-सर्दी से रक्षा का आभ्यासन प्राप्त किया। निःसन्देह बचन न केवल मानव को समय सुलक्ष्ण एवं सुन्दरतर रूप में हमारे समक्ष प्रस्तुत करते हैं अपितु स्वास्थ्य की दृष्टि से भी वे अद्भुत रूप से उपयोगी सिद्ध हुए हैं। इस प्रकार स्वास्थ्य, सौंदर्य एवं सुखता की दृष्टि से प्रयोगों में मनुष्य ने बचन प्रारम्भ किए। किन्तु जहाँ तक पुरुष जाति से पुरुषक कर केवल स्त्री जाति के दृष्टिकोण से इस प्रश्न पर विचार किया जाए तो इस प्रयोगों में एक और महत्वपूर्ण प्रयोग जुड़ जाएगा और वह है लज्जा की रक्षा। अर्थात् नारी जाति के बचन प्रारम्भ का मुख्य उद्देश्य लज्जा की रक्षा करना है, यद्यपि शरीर को अपना इसके अन्तर्गत ही लज्जा की रक्षा का प्रयोग भी पुरा हो जाता है किन्तु 'शरीर को रक्षाना' इस शब्दों का दुस्प्रयोग जिनका इस युग में हुआ है उनका पूर्व तो सम्मनन: कभी किसी ने आधा भी न की हो।

प्रस्तुत प्रश्न के उत्तर में हमारी तथाकथित आधुनिकता एवं प्रगतिशील बहिनें कह सकती हैं कि वे स्त्री तो बहिनें को सूचक बचन के पात्र तर्क वाप कर रखती हैं। इस प्रश्न में प्रश्न तो हमें यह विचार करना है कि शरीर के जिस भाग पर वे बचन पहनती हैं क्या उसे दानपने के लिए अपना शरीर भी अधिक प्रदर्शित करने के लिए? इस प्रश्न का उत्तर पुरुष कष्ट अपना मनुष्य शब्दों में देने की आवश्यकता नहीं, उत्तर तो स्वयं हमारी बहिनों के बचन दे रहे हैं जिन्हें सभी प्रकार के लोग सर्वथा सर्वत्र देखते- देखते ही रहते हैं कि हमारी बहिनों में आज बचनों को शरीर छिपाने का नहीं अपितु पोषणियों अर्थात् त्वक के बड़े प्रदर्शन का साधन बना लिया है लज्जा की रक्षा का नहीं अपितु निर्वन्धता का प्रयास मान लिया है।

बचनों का प्रयोग इस प्रकार उलटने की कसर में भारतीय नारी ने दो बातों का आभ्यासन किया है। एक तो बचन ही ऐसे ढंग का होना जिस से वह भी ढका होने जैसे कि शरीर पर बचन ही की भाँ नहीं? जैसे माईवीन

नारी स्तम्भ—

हमारी बहिनों के कपड़े

(डु० सुवीला जी आर्या एम० ए० आर्य कन्या मूकूल, नरेला)

की साक्षियों व पुनिया इत्यादि जिन्हें पारलु करना परिलोप के अतिरिक्त अन्य किसी लक्ष्य की पूर्ति का साधक नहीं। इसका और इस से भी बड़ा कमाव हमारी देवियों में बचनों की सिखाई कमा में किया है। बचन चाहे भीम न हो, सामान्यता शरीर को छिपाने में सक्षम भी ही तो भी आधुनिकता के पीछे विधानी बहिनें उनकी सिखाई में सब कमी पूरी कर देती हैं। जैसा कि स्मरित है आज भारत में चुलत पोशाक का फंशन जोरों पर है।

समाचार-पत्रों के पढ़ने से ज्ञात होता है कि नैपाल में भी ऐसा फंशन बल पकड़ रहा है। किन्तु वहाँ की नैतिकता प्रिय सरकार इस प्रकार की बेधभूषण पर राजकीय प्रतिबन्ध लगाने की सोच रही है। इसरी ओर वगैरह है हमारी लोकतन्त्रीय सरकार! जो आज सूक्ष्म दृष्टि से बहिनों को (बिधेयतः दुःसहयोग के क्षेत्र में) शिरोधार्य एवं अर्थात्मान्य मानने को सर्वत्र समझ रही है। तभी तो चुलत पोशाक की प्रेमी सितलियों को बसों के ऊंचे पायदानों पर चढ़ाने में रुझिमाई न हो इस विचार से नीचे पावनायकी वाली बसों

के निर्माण की योजना है। जब जनतन्त्र!

जो भी हो, लज्जा नारी जाति के लिए विचारणीय है। बहिनो! क्या हम फंशन की केशी पर अपनी लज्जा, मान-जयौषा को इसी तरह बलि का बहुरा बनती रहेंगी? क्या हम कोई भी कार्य करने से पूर्व उसके सुख दुःख परिणाम पर हठिपणत करने का कष्ट कभी करना न सोचेंगी? यदि नहीं तो सचमुच हमारे साथ देश का भविष्य भी खतरों में डालने का कलंक हमारे माथे पर अवश्यमेव लगेगा। याए रजिबे हमारी निर्लज्जतापूर्ण बेधभूषण देश में अनैतिकता तथा बर्बर हीलाता को प्रकट दे रही है और यही एक बड़ा कारण है—देश में हथियारों का कम उत्पादन होने से भी बड़ा—कि हमारी राष्ट्रिय सुरक्षा स्थिति हमारे पड़ोसी देशों से निर्वल है। यह आवश्यक नहीं कि इस प्रकार के निजी व परेजु बन्दों पर भी हम सरकारी प्रतिबन्धों की ही शरए सेने पर बाधित किए जायें। अन्ततः हम भी एक स्वतन्त्र राष्ट्र की नागरिक हैं। हमारे सामाजिक और पारिवारिक कल्याण हमें चुनौती

दे रहे हैं। फिर एक बात और भी बहिनें बचन स्वास्थ्य के लिए कितने हानिकारक हैं: यह किसी शरीर विशेषतः में पृष्ठने की आवश्यकता नहीं। इनके शिकने में जकड़ी हुई हमारी बहिनें अंगों के सम्बलन में बिधवाता की दृष्टि बनी स्वतः दुःखका प्रमाणा है। वेद है कि इनमें कष्ट व अस्वस्थता का प्रयास अनुभव करते हुए भी केवल सुराग्रहवच या मेडा चाल नीति के कारण इन्हे अपनाते हुए हैं, और अपना तथा जगत की हली बानी कदापि मिड कर रही हैं। एक समय या जब हमारी बेधभूषण में अंगों की गोचन शक्ति का कर्षित दण्ड होने से उल्लेख करने के कि वता ही नहीं चलता नारी से ही शारी है कि शारी में ही शारी है और आज हम अपने नरकान्त शरीर को नमनतर रूप में प्रस्तुत करे, फिर कहें हम बहुत समय बहुत शिष्ट और प्रगतिशीलियों हो गई हैं। अतः— महदु आश्चर्य !!

भारतीय देवियों को अपने दिव्य देवी स्वरूप की अवशिष्टिजन परम्परा बनाये रखने के लिए—साक्षी या सेवका जो भी वे पहनें—कनीन लेशभूषण स्वास्थ्य लज्जा और शालीनता की रक्षा की दृष्टि से निर्बाधित कनीन पहिणें, अन्त्याधुन्य अविचार शीलता से नहीं इसी में हमारा तथा हमारे देश का कल्याण है।

आर्य समाज लक्ष्मणसर

रविवार ५ जून प्रातः हिन्दी दिवस मनाया गया जिस में समस्त हिन्दू मातृ को अपने सभी कार्य तथा पत्र व्यवहार विरोधयथा विवाह आदि के निषेधण पर हिन्दियों ने उपबाने का तथा अपनी सन्तानों को सर्वप्रथम हिन्दी पढने का शत्र लेने को कहा गया अन्त्य सरकार से माग की गई कि हिन्दी भाषा देश की राज्य भाषा होने तथा पञ्जाब की प्रमुख भाषा होने के नाते पंचे पञ्जाबी सुझा में इस का सरकारी कार्यों तथा शिक्षा क्षेत्र में पूरा संरक्षण किया जाये। उपरल किशोर उपभरनी समाज

आर्य समाज लेखराम नगर कादिधाय

आर्य समाज लेखराम नगर की तरफ से तिवि ५, ६, ९ के साप्ताहिक सप्ताह के बाद हिन्दी दिवस मनाया गया और प्रस्ताव पास किया गया कि हिन्दी को पञ्जाब में उचित स्थान दिया जाये। मन्त्री आर्य समाज लेखराम नगर

\*\*\*\*\*  
**जीवन का मूल्य**  
 (श्रीराम मूर्ति जी कालिया एम. ए. नई दिल्ली-१७)  
 दिख रहा मसार में जीवें ममी हैं,  
 बा रहा जो साथ, क्या जीवन यही है ?  
 मूय कर मत भूलना, फिर जान ऐसा,  
 मीत को भी बर सके जीना यही है।  
 (२)  
 से सहारा दूसरो का, क्या जिया है,  
 दे सका न मास, उनसे क्या पिया है,  
 मर चुके, जो सोचते अपने तिवे ही,  
 दुःख पर का न हर सके तो क्या किया है।  
 (३)  
 वीर सब जो रो रहे उन को हसाओ,  
 बच सिते जो चुन है उनको सिलाओ,  
 मीत का जो खिन्गी का मूल्य बाओ,  
 सड़ रहे जो घुस में उनको सजाओ।  
 (४)  
 मूल्य जीवन का बढ़ाना काम तेरा,  
 दूसरो के काम से ही नाम तेरा।  
 लें न पावें साथ बंटें स्मृति तुम से,  
 सच कहे फिर ज्वरं सुन्दर बाम तेरा।  
 \*\*\*\*\*

मेरा दृष्टिकोण क्या है ? आप का दृष्टिकोण क्या है ? दूसरे तीसरे का दृष्टिकोण क्या है जो मेरा दृष्टिकोण है मेरी दुनिया बनी ही है । मैंसा आप का दृष्टिकोण है आप की दुनिया उस जैसी ही है । श्री प्रकाश दूसरे की तीसरे की दुनिया उनके दृष्टिकोण के अनुसार ही है । तब तो जितने व्यक्ति हैं उतनी ही दुनियाएँ हैं । हा, ऐसा ही तो है । यद्यपि दुनियाएँ एक ही है तथापि इनके इतने ही रूप हैं जितने व्यक्ति । यही तो कारण है कि दुनिया में इतने मत हैं उतने भेद हैं उतनी विचार-धाराएँ हैं । सभी तो अपनी संघातान्ताएँ इतने कवच-केसर, मंत्र-मंत्रमन्त्र और लड़ाई-मजदूर-दंभ में आ रहे हैं । जितना जमाने में जनमानस फँसता (अथवा स्वकृत्य कहेंगे) बढ़ता जाएगा उतना ही यह धारणा और निष्ठावा भी बढ़ता जाएगा । सारा मे ऐसे बहुत से मनीषी-विचारवान हुए हैं किन्होंने इस विभिन्नता के दुष्परिणामों को अपनी दिव्य दृष्टि से स्पष्टतया देखा और संसार के लोगों के दृष्टिकोणों को एक मर्यादा और एक शृङ्खला में पिरोने का प्रयास किया । जितने-जन-समूह ने किसी एक ऐसे मनीषी की विचार-धारा को स्वीकार किया उनमें ही सम्प्रदाय बन गए । अब भी यह क्रम जारी है । जहाँ ऐसे महापुरुषों का उन की संबन्धना और परंप्रदायों के लिए उनके अनुयायी और अन्य लोग भी-आमार किया है वहाँ इस बात को दृष्टि से जोधना नहीं करना चाहिये कि ऐसे पंच-प्रदकों के मन्तिक से निकली विचार-धारा ने कुछ व्यक्तियों के दृष्टिकोणों को अर्द्धतया विचरीत मार्ग पर चलने के लिए भेले ही प्रेरित किया हो परन्तु मानव-जाति के विशाल हित को ध्यान में रखा जाए तो उन्होंने उपकार करने की वजाएँ हानि अधिक की है । यदि इतना-कथित 'विचार-स्वातन्त्र्य' पर किसी प्रकार का नियन्त्रण नहीं लगाना तो जन-समूह के अन्दर मत-भेद बढ़ता ही जाएगा । और जितनी मात्रा में मत-भेद बढ़ेगा उतनी ही मात्रा में दुष्ट क्रोध, डर विरोध-बंभनत्व और खँबातानी बढ़ेगी । क्या जब के संसार की मनोवृत्ति इस का ज्वलन उदाहरण नहीं प्रस्तुत कर रही । कोई देते देखते हुए अनेकवी करमा होते तो और बात है अथवा यह चमकते हुए सूर्य को भाँति प्रखर है । राष्ट्र-राष्ट्र में जाति-जाति में

## दृष्टिकोण

(श्री बृटाराम जी मंत्री जिला वेदप्रचारिणी सभा होशियारपुर)

प्रारंभ-प्रारंभ में नगर-नगर में घाम-घाम में घर-घर में इस-के उदाहरण देखने को मिल रहे हैं । क्या ईश्वर की सृष्टि का यही नियम है ? कदापि नहीं क्योंकि मानव जाति को छोड़ कर अन्य जितना प्राणी-जग है उन सबकी एक-एक पक्ति (जाति) में एक सा स्वभाव एक ही शक्ति सूरत, एक सा रंग रूप, एक सा रहन सहन एक ही चाल डाल एक ही बोल-बाणी है । यह केवल मनुष्य ही है जिसे ईश्वर ने अपनी अन्य सब विभूतियों से विभूतित करने के साधन-साधन सोचने के लिए विकसित मस्तिष्क और बोलने तथा समझने सामर्थ्य सौंप्ये बाण्यो भी दी है । इन दो शक्तियों के प्रयोग से मानव इस संसार को जैसा चाहे बना सकता है । अब प्रश्न यह है कि इस स्वतन्त्रता का और विकास का उपयोग कैसे किया जाए जिस से यह सारा स्वयं धाम बन सके । उत्तर एक ही है और वह यही है जो आरम्भ में निवेदन किया है अर्थात् विचारों को एक सबी में, एक शृङ्खला में पिरोया जाए । अब सवाल यह रह जाता है कि वह एक विचार-धारा कोन-सी है और उस का श्रोत कहाँ है और क्या है ? स्पष्ट है कि यदि वह किसी एक व्यक्ति पर आधारित हुई (वह व्यक्ति सारा में बिसमान ही अथवा सारा छोड़ चुका हो) तो इस का हल कभी भी नहीं मिलेगा । तब क्या कोई रास्ता है भी ? हाँ है और वह है उसी शक्ति का अवनमन जिस ने इस संसार को रचा है । जिसने सब के लिए सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी, आकाश, जल, वायु, अन्न, प्राण आदि समान रूप से दिए देखे-सुने चकने, सूर्य से सूर्ये बोलने जैसी शक्ति प्रदान की । जिस ने इतना कुछ दिया यह कैसे हो सकता था कि वह इंसान को समझ-बूझ (ज्ञान) और महसूस करने की शक्ति (अनुभूति) प्रदान न करती । मानना पड़ेगा कि आज भी यह दो शक्तियाँ जितनी भी मात्रा में मनुष्य को प्राप्त हैं उनका आदि श्रोत यही शक्ति है । भले ही इंसानने उनको अपने अभ्यास (practice) से विकसित कर लिया हो पर आदि श्रोत उस के अनिर्दिष्ट किसी भी को मानना जहाँ कृतधृता की परा-कारता होगी वहाँ इस निष्पट प्रवृत्ति के हल के बूँडने में ही आयु व्यतीत हो जायेगी जिस पर भी हल नहीं मिलेगा । यह एक निर्विवाद तथ्य है कि उस शक्ति को देव का, प्रेरण का, रूप का वर्ण के लिए एक ही हो सकता है जैसा कि चरित्र-परिचय वर्ण के अन्दर प्रत्यक्ष देखने में आ रहा है, ऐसे ही मनुष्य समूह के लिए भी उसकी प्रेरणा का (ज्ञान का) स्वरूप एक ही हो सकता है बहुत नहीं ।

उसने दिया भी है एक ही ज्ञान प्रदान ने उसे विभन्न-विभन्न मार्गों (Channels) में प्रवाहित करने उसके रूप को ही यदय दिया है नहीं नहीं दूषित कर दिया है । मानव जाति का इस हित में है कि ऐसी-ऐसी विभिन्नता फँसने वालों को एकदम रालते से हटा दिया जाए और एक केवल एक ही मार्ग का अवलम्बन किया जाए । वह एक मार्ग कोन-सा है इसी की खोज समस्त मानव जाति के सारे प्रयत्नों का केन्द्र बन जाना चाहिये ।

वर्तमान युग में महर्षि दयानन्द एक ऐसे महापुरुष हुए हैं जिन्होंने ऐसी खोज की और उस खोज के परिणाम स्वरूप उनको देव रूपी मरण हाथ लगी । संसार के लोगों को सब परलयात और आशु (विद्व) छोड़ कर उनकी खोज से लाभ उठाना चाहिये और इस को यथा शक्ति आगे बढ़ाना चाहिये और सारी मानव जाति के हितार्थ विना जाति-भेद, राष्ट्र-भेद, रंग, नस्ल के भेद से इस का प्रचार और प्रसार इस मात्रा में करना चाहिये कि संसार का कोई भी व्यक्ति इस से बचित न रहे ।

ईश्वर ने स्वयं मानव को आवेश दिया है :-  
सर्वच्छत्र सर्वद्वयं च  
यो मानसि जानत ॥  
देवा प्रागं यथा पूर्वं  
सं जानाना उपासते ॥

(प्रेम से मिलकर चलो बोलो सभी ज्ञानी बनो पूर्वजों को भाँति तुम करुण्य के मानी बनो)  
समानो मनः समितिः समानी,  
समान मनः सह चित्तमेवात् ॥  
समानं मंत्रमहि मंत्रेण च  
समानेन चोऽपि वा जुहोमि ॥  
ही विचार समान सब के चित्त न हो

## आवरणकता

आर्यसमाज बचीर बाग श्रीनगर बास्ते ऐसे पुरोहित की आवश्यकता है जो पुरोहितार्थ के अतिरिक्त डी.ए.के. हाई स्कूल में चम घिसा भी पढ़ा सके । वेतन योग्यतासुचारु दिया जाएगा निम्न स्तर पर पत्र-व्यवहार करें ।  
**पं० राधा कृष्ण जी गंजू मंत्री**  
आर्यसमाज बचीरबाग श्रीनगर (हाथीर)

## केन्द्रीय आर्य सभा अमृतसर

केन्द्रीय आर्य सभा की एक साप्ताहिक सभा ५, ६, १६ को केंद्र केन्द्र चन्द्रजी की प्रधानतामें सम्पन्न हुई जिस में निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकृत हुए ।  
'केन्द्रीय आर्य सभा अमृतसर की यह बैठक हिन्दी भाषा को राष्ट्र भाषा के अतिरिक्त, अपनी मातृभाषा और धर्म भाषा मानती है । केन्द्रीय सरकार से अनुग्रह मांगती है । कि यह न-निमित्त पत्रावय से हिन्दी को प्रवासी के साथ विद्या में और शासन के क्षेत्र में सहायक भाषा घोषित करे और इस तरह के हिन्दी भाषी लोगों के देश के स्वीकृत विद्या में वास्तविक अवसरों के अधिकार देने का शोध निम्न करे ।'  
—मधुरदास उपमन्त्री

## जनपद हिन्दी सम्मेलन, लुधियाना

**हिन्दी दिवस घूमघाम से मनाया**  
जनपद हिन्दी सम्मेलन, लुधियाना के कार्यकर्ता प्रमाण की रक्षणी की शास्त्री सुचित करते हैं कि आर्यसमाज सावुन बाजार में श्री नन्दलाल जी आर्य की आयतना से हिन्दी दिवस घूमघाम से मनाया गया । श्री शास्त्री जी ने सहायता कि हिन्दी अन्य प्रांतों के साथ होने सगठित करती हैं । दिवसों में भी इसका प्रचार उत्तर गोरख ही रहा है । हमें हिन्दी की उपरति के लिए समस्त पत्र-व्यवहार, निम्नत्रण एवं तथा विज्ञापन आदि हिन्दी में ही अपनाता चाहिए । साहित्य गोष्ठियों का आयोजन कर जनता में इसके प्रति रुचि उत्पन्न करनी चाहिए । साहित्यकारों को विविध साहित्यिक आदि देकर सम्मानित करना चाहिए यह सम्मेलन शीघ्र ही लुधियाना में हिन्दी के पठन-पाठन के लिए एक केन्द्र खोल रहा है । श्री पं० ज्योत्सनादेवी शास्त्री तथा अन्य समाजिक जो भी हिन्दी की उपरति के लिए ठीस कार्य-क्रम प्रस्तुत किया ।

वेप्रकाश ए. ए.  
मन्त्री हिन्दी सम्मेलन

---

ज्ञान देता हूँ बरबार  
भीष्य पा सब नेक हों ॥  
बहसो अपने दृष्टिकोण को इस आदेश के अनुसार और बदल दो संसार के दृष्टिकोण को ।

# हिन्दी का हिमायती कौन ?

(ले०—श्री सुन्दर लाल जी बोहरा, जोधपुर)

(पताक से आगे)  
बेट मानने के संदर्भ में हिन्दी का हो-हुका किया जाता है: अर्बजी के नामपत्र व पत्र जलाये जाते हैं। लेकिन इससे आणालक राहत ही मिलती है—उन्हे अर्बजी का बोलना बरता है।

आज हिन्दी के नाम में निहित स्वार्थ सरकारी नोकरीयों व अनेक अन्तर्राष्ट्रीय मन्त्रालय के पदों को अपने परिवार वालों के लिए सुरक्षित रख रहे हैं। हिन्दी के साहित्य सहिष्णुकार ऐसे कम ही होंगे जो अपने बच्चों को अर्बजी भाष्य के विद्यालयों में भेजने को न तृप्त हो। हमें आज अपने पेटों के मोचे जलती हुई बरती का भान नहीं है, पर्वत पर लगी हुई आग को बुझाने को हम जी जान से दौड़ बना कर रहे हैं।

## अखिर समाधान क्या ?

अर्बजी का जहा तक तकनीकी शिक्षा से सम्बन्ध है, उसका उल अर्ब विज्ञेय में बने रहना किसी को खिचे हानिकारक नहीं है। इस कमी को हिन्दी में आभाषिक अनुवाद द्वारा पूरा किया जा सकता है। उत्तर के प्रान्तों में हायर सैकण्ड्री स्तर तक तो प्रायः विज्ञान की शिक्षा हिन्दी के द्वारा ही दी जाती है। जिन्हें प्रान्तों में ऐसा नहीं किया है, उन्हें शीघ्र-शीघ्र ऐसा कर लेना चाहिये।

अन्य प्रान्तों में हायर सैकण्ड्री तक प्रायः सारे विषय प्रांतीय भाषाओं से ही पढ़ाये जाते हैं। इस पर भी चिन्माया रूपी भेड़ की लाल में अर्बजी रूपी भेड़िये को हायर सैकण्ड्री स्तर तक बनाये रखना तिलांश्र मे भी उचित नहीं है। भाषा के तौर पर एक एक प्रत्येक पत्र हिन्दी व प्रांतीय भाषा में पढ़नी कथा से ही शुरू हो जाने चाहिये। अर्बजी स्वतः ही उठ जायगी।

विषयविद्यालयों में भी अर्बजी भाषा की आवश्यकता केवल उम लोगों को लिये ही होनी चाहिये जो इसे ऐच्छिक तौर पर पढना चाहें। समाधान यह हो: हायर सैकण्ड्री स्तर तक सारे विषय प्रांतीय भाषा से व विश्व-विद्यालय में सारे विषय हिन्दी से पढ़ाए जाएं।

यह केन्द्रीय स्तर की प्रयात्मिक सेवाओं का बचाना। तो यह भी कोई किञ्चित् समस्या नहीं है। अर्बजी का प्रत्येक पत्र केवल उन्हीं लोगों के लिए विषयक रहे जो विदेशी मामलों के विभाग में जाने वाले लोगों के लिए अर्बजी में जाने वाले लोगों के लिए अर्बजी के पत्रों को कोई आवश्यकता नहीं है। ऐच्छिक विषय लेने वाले परीक्षार्थियों के लिए हिन्दी अवकाश अर्बजी में लिखने की छूट रहे।

इस सम्बन्ध में प्रांतीय भाषा का प्रत्येक उठाना कदापि उचित नहीं है। प्रांतीय भाषा के उपयोग की छूट केवल प्रांतीय स्तर तक की सेवा की प्रतियोगी परीक्षा में ही रहनी चाहिये। इसके अलावा कोई दूसरा चारा ही नहीं है।

प्रांतीय स्तर की सेवाओं में अब लोग प्रायः प्रांतीय भाषा में ही लिख ले गये हैं। उत्तर के राज्यों में तो सारे उम्मीदवार हिन्दी में ही उत्तर लिखते हैं।

फिर भी इच्छुक प्रयात्मक की एक शिक्षागत नेत्र यह जाती है, साक्षात्कार के समय अर्बजी में ही प्रत्येक लिखे जाते हैं। इसका हल यह है, निर्वाचक समिति के सदस्यों को चाहिए कि वे केन्द्रीय स्तर की सेवाओं में (सिवाय विदेशी मामलों के) अनेक इच्छुक लोगों से हिन्दी में ही बातचीत करें। प्रांतीय स्तर की सेवाओं में तो साक्षात्कार के समय बातचीत तो हिन्दी में ही होनी चाहिये। निर्वाचन समिति के सदस्यों से प्रान्त विज्ञेय की भाषा का कुछ ज्ञान रखने की अपेक्षा आवश्यक की जा सकती है।

सही शब्दों में, आज भारत में अर्बजी भाषा एक सार्वजनिक समस्या कम, सांस्कृतिक ही अधिक है। इस भाषा के हम मानसिक रूप से इतने प्रीतवस हो चुके हैं कि इससे नाता तोड़ना हमें अपने वंशज के अस्तित्व के लिए सबसे बड़ा खतरा समझते हैं। जहा भी 'दो पैसे' की कमाई का प्रसंग आता है हम हिन्दी की हुरदी का तिरस्कार कर अर्बजी का चूक स्वीकार करते हैं।

## संस्कृत क्षांति रहे

इस सम्बन्ध में संस्कृत के बारे में

# विचार तरंग (१२)

ले० श्री राममूर्ति कालिया, एम. ए., नई दिल्ली-१७)

जीवन धरुण-मगुर है। पम् प्रथम, सत जन ससार के हित के लिये ऐसी घोषणा बार-बार करते रहते हैं। इस विचार का चिन्तन विवेक है। विवेकी मृग्य जीवन में कुछ स्फूर्ति-दायक कार्य कर जाता है। चलती हुई धीकनी यहसा कब बन्द हो जाये यह विचार आते ही अपने विचारों को हय कुछ किया रूप देकर पूर्ण कर देने की सोचते हैं। यह अच्छा लक्ष्य है। मृग्य तो अवस्थ-भावी है ही। कबीर ने तो जीवन को पानी का बुदबुदा 'प्रभात तारा' बह करके इती क्षण भरुता की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया है। पंचभूतों से निर्मित यह शरीर अथम माना गया, कारण इसका नाशवान होता ही है। नसत बुधवीर्यास जी ने लिखा कि 'छिन्नी, जन, पावक गगन ससीरा, रंच वंशित अति अथम सरीरा'। इस स्पष्ट तत्व को बस्तुतः भूलना ही बड़ी भूल है। नारायण कवि ने दो बातों की ओर हमारे ध्यान को आधेन का प्रयत्न किया है और इसी में उन्होंने वे ससार का कयालय समझा। उन्होंने ने आदेश देने हुए कहा—

भी दो बाध कहना अव्यासमिक नहीं होगा। संस्कृत को हायर सैकण्डरी स्तर तक एक विशिष्ट भाषा के रूप में पढाया उचित प्रसीत नहीं होता। इसमें तो निभापी रूपी त्रिशु कु की पोषण ही मिलेगा। संस्कृत पढ़ने से ही कोई संस्कृत होता है, यह तर्क आधारहीन है। ऐच्छिक तौर पर संस्कृत पढाई जाय तो अधिक उपयुक्त रहेगा। इस समानता व सर्व भाषा अजनी के पुनरुत्थान के लिये अन्य उपाय भी तो मिले आ सकते हैं। आखिर इसका आधुनिक पद्धति के समाज में उपयोग भी तो देलना है। जिस विज्ञानो को मूल प्रथम देखने की विज्ञासा हींगी वह संस्कृत क्या, कोई भी आवश्यक भाषा पढ़ने को तयार ही जाएगा। 'रघुवीरी हिन्दी' के ती भायः सारे शब्द संस्कृत-भ्रतु ही हैं। तरम्यरा के नाम में शाय मस्तिष्क पर अतिरिक्त बोधा तादना उचित नहीं है।

सबसे महत्वपूर्ण बात निहित स्वार्थ यदि शात रहें तो हिन्दी कोई समस्या ही नहीं है।

'दो बातों की भूल मन जो सही कथाए। नारायण इक मोर को, भूने श्री भगवान। पन पल बीतने में जीवन बीतना है अरं बहु समय आ पहुंचता है जब प्राण पसेक लम्बी उदारी भर उसी शरीर में बाधिन नही लौटता। समय की गति में संसार उस का चिक्तरण करता है। अर्बजी के एक कवि ने बड़ा सुन्दर कहा:—

Months buries our day, year raises the stone and rubbing wind makes us unslown.

इसी भाव को उर्बु के एक शायर ने अपने शब्दों में बड़े सुन्दर ढग में प्रस्तुत किया है—

'यह उर भू ही नमान हो जायगी, मरने की खबर भी आग ही जायगी गेने हो 'उत्सर्ग' क्या उजानी को, पीरी की सहर भी शाय हो जायगी।

मौत का स्मरण और जीवन की शक्तिमान का दामिन् की यदि नितात बाध रहे तो पाप गुण्य की कल्पना उस के मस्तिष्क में स्पष्टतर रूप धारण करती चनी जायेगी। दूसरों के मन को विषुय और प्रताडित करने से वह दिनोदिन बचता ही बचा जायेगा। ऐसे अनेकानेकानेक उदाहरण हमें अपने जीवन में मिलते हैं जहा निरट सम्बन्धी की अभावक मृग्य में भक्ति के जीवन में सहसा पलट-सा आ जाना है और फिर अपनी मृग्य के स्वरु में भक्ति तो पाया से और 'श्री भ्रम-भित ही उठता है। जनः भगवान ने भी पहले यदि कोई वस्तु स्मरणीय है तो वह है मृग्य।

संस्कृत और हिन्दी के सहसृष्ट्य में जीवन की क्षण मरुत्ता को सम्भ्राने के लिये विद्वानों ने अनेकानेक सुन्दर उपयायों दी है। इस छोटे-से लेख में तो केवल संकेतो वे बात करनी पडती है। हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि निराला ने 'पात समीरुण सभ' जीवन को कहा और सुसु बंद की शीघानी कविमित्री महादेवी वर्मा जी ने लिखा—

:सिकता में अकित रेखा सा, नाव विकिपरु दीप निराला सा, काव कपोनो पर भासू सा, दुस जाता अश्रवान। (शेष पृष्ठ ८ पर)

मन मन्दिर

(पृष्ठ २ से आगे)

पुष्पिणी चाहते ही तो धुम कर्नों को झोंकरो। लोक और परलोक की सिद्धि का साधन तथा परमात्मा की प्राप्ति का साधन मोक्ष सुख का साधन एक मात्र निष्कारण कर्म और मन की पवित्रता है मन की पवित्रता में ही मन मन्दिर में ही परमात्मा की प्राप्ति होती है।

मन मन्दिर के पुजारी बनो। मनो निग्रह करो मनकी कनो, सदा-चारी और सदाचारी मनो इतनी में अपना और संसार का परम कल्याण लिखित है। बाह्य हम आदि सृष्टि का इतिहास पढ़ रहे थे। उस में यह सिखा हुआ था स्वर्णशरो में कि मनुष्य स्वयमेव अपने भाग्य का विधाता है मनुष्य अपने धुम कर्मां से मन की पवित्रता से सुख पाता है और बुरे कर्मां से दुःखदर्शां से रोदध नरकमय महा दुःख पाता है। बर्त्सों र्पणां से बहकर मनुष्य के धुम विचार और धुम कर्मां हैं। इसलिये आजो आज से हम निवृत्त यज्ञ को करे।

किये महा मन्त्र के ह्यम यजनम बने अपना जीवन यजनम बनाकर परमात्मा की मोक्ष में बंझे का अविचार आज ही इसी क्षेप में अपने आपको बना लें। परमात्मा का दिम्ब दर्शन ह्यम मन की गहन मुकाबो में करके ह्यम अमर बनें। मनुष्य की स्वीय उन्नति का मूल मन मन बचन और कर्म की पवित्रता है। मन एव मनुष्याणाम् कारण बंध मोक्षयोर् गीता में प्रमत्तान् कल्प्य जीने यह कहा है कि बचन और समोष का कारण मनुष्य का अपना मन है। वेदों के संकहो मनो में यह सिखा हुआ है कि मनुष्य की उन्नति सुखम सुदुष्ट 'सुस-रुदुष्ट मन से ही होती है।

पञ्चमी एवं मननीय साहित्य  
वेद्य प्रबन्ध १/० मोलावर ७५  
पेरे, आलमगीर के वन १/०-१/०-१/०  
संस्कार १/५० पेरे, मेरी जाठ  
रोपक कदागिमां ७५ पेरे, लोकर  
७५ पेरे, सडककावे जीवन ५० पेरे,  
कर्म मोक्षशा २/२५ पेरे, संतति  
विचयन मनो और कंसे १५ पेरे,  
सैदिक व्याखरल मारकर ६/०  
ध्यानाय मोक्षक वन ११/२० पेरे,  
साहित्य प्रचारक १/०  
जयदेव ब्रदसं बडोदा-१

मन की अग्रम दक्षिणां हूं मन की महिमा को नि शब्दों में माया अपने संकल्पों की छिद्र का और मोक्ष का साधन मनुष्य का अपना मन है।

विचार तरंग

(पृष्ठ ७ का चेष)

जीवन का परिचय देते हुए उन्होंने कहा—  
“मैं नीर भरी टुक की बदली, परिषय इतना, इतिहास यही उमड़ी कब की, निट बाव बली।’  
इसी प्रकार संस्कृत में बड़ी सुन्दर उष्मा दी गयी :—  
‘नलिनो दल मल जलमयि तरल,  
तद्वर्जोपनमलमयमपलम।’

अर्थात् कमल के पत्तों पर फिर-फिरती ओस की दूद के सदृश्य जीवन दर्शिक है। जब इतना ही हृषापर जलितल है तो फिर जीवनमें आनन्द, प्रमद, मय, बहुकार और ध्यय के अविधान का क्या स्थान। क्यों न फिर हम नीति से जिने ? अपने निर्धारित उद्देश्य की ओर क्यों न अवसर होने के लिये कदमिद ही जायें ? मनो न अविवेक का साथ श्रेय निवेक धारण करे ? क्यों न अज्ञय का परिणाम कर सत्य का आह्वान करे ? मनो न एक स्वर से पुनः पुकार उठे कि 'मृत्योर्नां अमृत मयय' ? क्यों कोई कामं बुझाने में कलने

के लिये विस्थास : आवेया ही धन प्राप्त करल यम के सम्बन्ध में। विमर दानेद विहासु के लेको ने आरं व हिन्दी अगत के सामने जो चित्र लीणा है, उस के सम्बन्ध में अनेक स्थानों से धर्म और जाति की पीड़ा रखने वाले महापुरुषां ने ने बर के पते पर राजेन्द्र जी के नाम पत्र लिखें हैं, कि “बन” कहा और किस के नाम बने ?

अगर आप संख्या के प्रत्येक मंत्र की सविस्तृत व्याख्या पढ़ने के इच्छुक हैं तो श्री रामजी शर्मा एम. ए. भूतपूर्व प्रिन्सीपल डी. ए. वी. कारिज चंडीगढ़ की लिखित (इंग्लिश) में महात्मा हंसराज Maker of the Modern Punjab पुस्तक का अध्ययन करे कीमत १.५०, सजितब का २.५० प्राप्ति स्थान महात्मा हंसराज महित्य विभाग आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा निकट बोट जालन्धर

के लिये विस्थास : आवेया ही धन प्राप्त करल यम के सम्बन्ध में। विमर दानेद विहासु के लेको ने आरं व हिन्दी अगत के सामने जो चित्र लीणा है, उस के सम्बन्ध में अनेक स्थानों से धर्म और जाति की पीड़ा रखने वाले महापुरुषां ने ने बर के पते पर राजेन्द्र जी के नाम पत्र लिखें हैं, कि “बन” कहा और किस के नाम बने ?

के लिये विस्थास : आवेया ही धन प्राप्त करल यम के सम्बन्ध में। विमर दानेद विहासु के लेको ने आरं व हिन्दी अगत के सामने जो चित्र लीणा है, उस के सम्बन्ध में अनेक स्थानों से धर्म और जाति की पीड़ा रखने वाले महापुरुषां ने ने बर के पते पर राजेन्द्र जी के नाम पत्र लिखें हैं, कि “बन” कहा और किस के नाम बने ?

आर्य समाज प्रधाना मोहल्ला रोहतक शहर का प्रशंसनीय पत्र

केरल प्रान में चल रहे युद्धि मत्र के सम्बन्ध में आर्य समाज प्रधाना मोहल्ला ने ३०) ६) मासिक छः मास तक अनेक का संकल्प किया है। इस

के लिये विस्थास : आवेया ही धन प्राप्त करल यम के सम्बन्ध में। विमर दानेद विहासु के लेको ने आरं व हिन्दी अगत के सामने जो चित्र लीणा है, उस के सम्बन्ध में अनेक स्थानों से धर्म और जाति की पीड़ा रखने वाले महापुरुषां ने ने बर के पते पर राजेन्द्र जी के नाम पत्र लिखें हैं, कि “बन” कहा और किस के नाम बने ?

अगर आप संख्या के प्रत्येक मंत्र की सविस्तृत व्याख्या पढ़ने के इच्छुक हैं तो श्री रामजी शर्मा एम. ए. भूतपूर्व प्रिन्सीपल डी. ए. वी. कारिज चंडीगढ़ की लिखित (इंग्लिश) में महात्मा हंसराज Maker of the Modern Punjab पुस्तक का अध्ययन करे कीमत १.५०, सजितब का २.५० प्राप्ति स्थान महात्मा हंसराज महित्य विभाग आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा निकट बोट जालन्धर

के लिये विस्थास : आवेया ही धन प्राप्त करल यम के सम्बन्ध में। विमर दानेद विहासु के लेको ने आरं व हिन्दी अगत के सामने जो चित्र लीणा है, उस के सम्बन्ध में अनेक स्थानों से धर्म और जाति की पीड़ा रखने वाले महापुरुषां ने ने बर के पते पर राजेन्द्र जी के नाम पत्र लिखें हैं, कि “बन” कहा और किस के नाम बने ?

कल्प की पूर्ति जब आर्यसमाज के रूप पुरानह मसिक राम रंज जी तिस में ५०) ६) ६) की विद्यार्थी जी ७) ६) और सर्वेधी भवानी दास, पुन, दीनाराम, जगदीश मास्टर, ., प्रेम नाथ बजवर्ती महापुं

शुभ सूचना

आर्यसमाज विष्णुपुरा आलम्बर का साप्ताहिक वसंत रविवार १९-६-६६ को श्रावः आठ बजे कारम्भ होगा। देव यज्ञ आदिके पत्रपाठ श्री महात्मन कुन्दन लाल जी बत्ती बुजा लाल का मनोहर व्याख्यान होयेगा। सभी शुभकाली श्रावण है कि समय पर पधार कर अनुपस्थित करें।

नीट—आर्यसमाज विष्णुपुरा में नये पुरोहित जी आ गये हैं, अतः जो श्री सतजन नैदिक रीति से संस्कार करवाना चाहते हैं वे कृपया कमीजी की को सुनिश्च करे और तय उठाए। पुरोहित जी हरीया लताय मन्दिर में ही रहते हैं, उन ने अब चाहे दिन सवने हैं। मन्नी—आर्यसमाज विष्णुपुरा जालन्धर

श्रद्धालुती नोटिस

अज अवलत श्री देसराज जी महात्मन सत्य अज बर्जा । राजपुरा (पटियाला) रीट केम नं० ५ बुकना २०. १. ६६ / रवेस दास बल्लू लालकन्द स.कन टाऊन विष राजपुरा सातम।

हरिचन्द्र बल्लू कुन्दनलाल शहालू साकन बकान नं० २८१० टाऊन विष राजपुरा पटियाला.....मलोन अलह दरकासित केवधकी कोठडी अजां मकान नं० २८०० जेर दख १३ रीट रेंदुडीमलान पटिया

इस्राहद बराए इतना हरिचन्द्र मयल अलह। पुकदना मुन्धकी भवान काका बदायत हडा को बकीर ही बुधा है और मयल अलह बबकूरा का बर लामोस सयन मासुली लारीके से मही ही बकीर। महात्मन अलह बबकूरा भासा की बकीरया इस्लामर हजा मारदल (आर्य जात बानांकर) सतना दी जाती है और को आल्या लारीके पोकी २२. ६. ६६ को सुबह साडे नी बजे असायनया बा बकानलान हाविर अदायत हडा होकर पेरयाई न जवान-देही मुन्धका काका बने। मयल दीपर उसके विहाय कार्यवाही यह तर्फ अयम में लाई जायेगी। आज व लारीके २२. ४. ६६ को व दखन हमार से मोहर हडा से आरी किया गया। मोहर

शुद्ध म प्रकाशक श्री मनोपराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा कीर लिखत संत, निराय रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यसमाज कार्यालय महात्मा हंसराज अमल निष्कट कपथरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मासिक—आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर









सम्पादनकाल-

# आर्य जगत

वर्ष ६६ रविवार ०२४, २६ जून १९६६ [अंक २६]

## आज और अभी ही

आर्य प्रादेशिक समा पंचाव आर्यभर के माननीय प्रधान श्रीकृष्ण पय जी ने बुधियाणा के सम्मेलन की प्रस्तावना करते हुए अपने को विनाश जनसमूह के सामने जोखनी भाषण दिया है उसमें वास्तविकता है। बहु सारे हिन्दी प्रेमियों को आसँ लोलने जाता है। भारत भाषण ही इस योग्य है कि उसे प्रत्येक नर-नारी तक पहुंचना चाये। सब से बड़ी विरोधात्ता उस में यह है, कि यह ठोस स्पष्ट है कि सब पर इस समय आचरण करने की बड़ी आवश्यकता है। इस भाषण में हिन्दी के प्रेमियों को भंभोड़ते हुए उन हिन्दी प्रेम का किम्वानिक रूप देने को कंठार गया है। अपने विचारों को स्पष्ट करते हुए समा प्रधान जी तमाम हिन्दी के हितियों में तथा बिलोप कर पंचाव के तमाम प्रकार के शोष में काम करने वाली से यह बात बतलाने काही है कि वे यदि वास्तव में हिन्दी भाषा के साथ प्रेम करते हैं, इसे संभालना चाहते हैं एवं इसे सम्मान देना चाहते हैं तो वे आज और इसी समय ही अपने-अपने घरों, दुकानों आदि के नाम पट्ट हिन्दी में कर देंगे। यदि किसी दूसरी भाषा में भी लिखना चाहते हैं तो उन की इच्छा—किन्तु उपर का प्रथम स्थान हिन्दी को ही देंगे। यह हिन्दी भाषा के प्रेम का किम्वानिक रूप है। इस से सब का हिन्दी के प्रति प्रेम का भी परिचय मिल जायेगा। इस बात का भी प्रमाण मिल सकेगा कि हम केवल कोरी बातें ही नहीं कहते बल्कि उनको किम्वानिक रूप भी देना जानते हैं। अपने-अपने समय-समय पर होने वाले परिचारिक व सामाजिक समारोहों पर भी दूसरों के पास निमन्त्रण पत्र भी हिन्दी भाषा में भेजने चाहिए।

बात बड़ी ठोस है। यदि हमारे कहने व करने में भारी अन्तर है। हम हिन्दी-हिन्दी बिल्लाते हैं। हिन्दी भाषा अमर रहे के ऊँचे-ऊँचे घोष लगाते हैं। बड़े-बड़े लेख व बुझांगार भाषण देकर हिन्दी के प्रेम में पसीना पसीना ही

फाते हैं। हिन्दी के मान्योपन में वेनों में भी चले जाते हैं। हिन्दी की उन्नति न करने के लिए स्थान-स्थान पर क्लृप्तकार की कड़ी व कट्टी सलाहिका भी करते रहते हैं। किन्तु हमारा अपना आचरण यह है कि हमारा पत्र व्यवहार तथा पत्रों पर लिखा हुआ पत्रा भी हिन्दी में न लिखा ही कर केवल अंग्रेजी में ही होता है। घरों व दुकानों पर नाम व कलम पट्ट भी अंग्रेजी में होते हैं। सारोहों के बहवर पर निमन्त्रण पत्र भी विदेशी भाषा में होते हैं। घरों में भी इसी का प्रयोग होता है—तो फिर हिन्दी प्रचार कैसे हो सकेगा। जनयोधो तथा केवल हिन्दी का नाम लेने से तो इस का प्रचार कदापि न होगा।

आज सारे नगरोके बाजारों, दुकानों, मकानों को देखा जायें तो किलनों के नाम हिन्दी में है? हमारे निमन्त्रण पत्र किस में होते हैं? आर्य समाजके साम्य नेता प्रिंसिपल प्रभावनादास जी दयानन्द कालेज अन्वला सरोवरा ही कोई सच्चा हिन्दी प्रेमी अपनी सुगुनी के विवाह के निमन्त्रण हिन्दी में छपवाते हैं? हमारे घरों में आंगरेज बंठा है। आर्यजपत् के दही स्तम्भों में एक बार हम ने लिखा था कि क्या आंगरेज भारत से क्या गया है? भौतिक रूपसे चाहे बना गया हो पर मानसिक व जात्मिक रूप से वह दूसरी दुनानी, मकानो, सावधान की मेजो, पत्र व्यवहार व निमन्त्रणों, कांफेसों, मरत तथा बासी पर आज भी उठी प्रकर बंठ हुआ है। सच्ची बात यह है कि आज अभी तक अंगरेजी से सब का बड़ा मोह है, हिन्दी से प्रेम नहीं है। सर्वत्र अंगरेजी का सम्मान है हिन्दी का नहीं। समाज का अड्डा कम है। यदि हिन्दी प्रेमी सारे यह निश्चय कर ले कि यदि किसी की निमन्त्रण पत्र अंगरेजी में जाये, हिन्दी की अवहेलना की जाये तो उस समारोह में कदापि न जायेंगे तो बहुत कुछ काम बन सकेगा। हिन्दी

हमारी सज्जुबाया है। सज्जुबुके के बनकार के—कलम—सज्जुबुबाया की बनकारों की बड़ी कलम कलम कीहिन्दी बहु बनकार, चाहे किसी की ओर के भी क्यों न हो। बनता जो बड़ी भाषण होती है। इस बार अन्ततः प्रवक्त भाषण का ही हो के सखिस्तक है कि मान्या प्रधान मान्यी कीकसी द्दिनार मान्यो अपना आरंभक बासी का भाषण पहले राष्ट्रभाषा हिन्दी में सेनाँ फिर अंगरेजी में। राष्ट्रभाषा का इत्मान यदि राष्ट्र के ऊँचे अधिकारी नहीं करते तो केवला कते बरहेकी कीक वषे स्वाधीनता को होने जाते किन्तु किलना सेव है कि १० वर्षों के बाद भी राष्ट्र का मान्य सर्वप्रथम नेता राष्ट्रपति अपना भाषण राष्ट्रभाषा हिन्दी में न देकर विदेशी भाषा में देता है। भारत के लिए किलनी सेव जनक बात है। सोचते वषे में तो किसी भाषा का एम. ए. किया जा सकता है, किन्तु अभी तक राष्ट्रभाषा में भाषण भी नहीं दिया जा सकता। ऐसा तमाला भारत में ही हो सकता है।

इसलिए हम सारे हिन्दी के हितियों में कहना चाहते हैं कि वे अपने घरों का हिन्दी करण करे। पंचाव के नरनारियों के लिए समा के मान्य प्रधान श्री पय जी के प्रभावनादासी शब्द बड़े आवश्यक हैं कि हिन्दी के लिए सर्वत्र के शोष में उलट्टे हुए सब से पहला काम यह है कि ठोस पत्र उठावें।—

विनोद चन्द्र

### ये काले अंगरेज

बुधियाणा के वेद सम्मेलन में आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् संन्यासी स्वामी समर्थगानन्द जी ने कहा कि इस समय देवों की सभ्यता तथा भौतिक संस्कृति को घोर अंगरेजों से उतना भय नहीं है जितना कि काले अंगरेजों से है। उनका संकेत उन भारतीय लोगों की बीर या कितने दिग्गम वर पतिव्रती सभ्यता ने अपना पूर्ण अधिकार कर रखा है। जो रूपरों के सिवाय हर बात में अंगरेज बने हुए हैं। जिनको भारत की कोई भी शक्ति, पुस्तक, स्थान, विचार तथा महारूप अच्छा नहीं लगता। उनके विचार गुरु, भोजन गुरु, मति गुरु, शेषगुरु गुरु, भाषा भाषा गुरु, सिखा सिखा गुरु तथा राजनीति गुरु अंगरेज ही अंगरेज हैं। ऐसे लोग ही काले अंगरेज हैं। उनके कारण जोख भारतीय परिवार भर-बर व शिंशोय संस्थाएँ घोष के सभाम बनते जा

रहे हैं। काले अंगरेजों की विचारों के लिए अंगरेज रूप के पैरों पर उठनी बनना बना रखा है। अंगरेजों को सब स्त्रीयों, कालेयों से पशुसमय निकल करके पैरों पर कुठारोसाल कर रहे हैं। वे काले अंगरेज भौतिक चरकर हैं। आर्यसमाज को इन काले अंगरेजों से पूरी तरह से टक्कर लेनी है। विचारों के मुझ में इनको बराबल करना है।

### स्वामी प्रिंसिपल आरिदाजी

स्वामी प्रिंसिपल आर्य समाज आरिदाजी को इस से बुधा हुए एक वर्ष ही बना। वस १० वृष १५ की वह स्वर्गवाली हुए। आर्यसमाज भावन-डाउन जालमगर ने उनका स्मृति विषय बड़े समारोह से मनाया। स्वामी की आरिदाजी की आर्य प्रादेशिक समा के सभी उपप्रधान व मन्त्री रहे। ही० ए० वी० कालेज कमेटी के स्तम्भों में थे थे। आर्यभार की दयानन्द कालेज कमेटी के तो वेपर्यवेन में। भारत उन्नत समाज का सब प्रथम उन्नत उन्की तरफत; समाज साधना, धर्म प्रेम तथा प्रचार कथा का परिचय देता है। प्रिंसिपल आरिदाजी की यज्ञ के तो बड़े प्रेमी थे। प्रातःप्रातः दैनिक रूप से समाज मन्दिर में स्वयं वाकर यज्ञाओं को अपने हाथों में मांजते थे। सब से पहले स्वयं यज्ञ करते। स्वाध्यायीय थे। प्रिंसिपल के ऊँचे पद से रिटाकर होने के बाद तो वह समाज के, कालेज कमेटी तथा समाज के ही हो गये। अधिक काम करने के कारण ही उनका स्वास्थ्य बिगड़ने लगा। अब्दु ने उन को हर प्रकार की भौतिक सामग्री कोठी, वन, उत्तम योग्य यन्त्रात तथा प्रतिष्ठा प्रदान की। उनका सारा जीवन ब्रह्मिण, प्रभु प्रेम से भर था। यामिका इतराज की के मन्थ्य कल से। तथा को उन्नत करने में बड़ा हाथ है। सारा परिवार अर्थात्पार व भरपूर है। उनके सुपुत्र भी बलविर-चन्द जी आज कल माण्डल डाउन समाज के मन्त्री बन कर अपने स्वामी पिता जी के पद पर चल कर समाज की बड़ी सेवा करते हैं। अभी-अभी एक हजार के रूप से हाथ को हर प्रकार से सुन्दर कल सिखा है। आरिदाजी अपनी बत स्मृति दे गये हैं। बुधक उनके जीवन से प्रेरणा लेवें—

—शु—

सब पाव बीर वरद सदासी जेते निरभ, बाडको, देन, जाके के देवन करे से भी हासि होती है!

# Bari Doab Bank Limited

Registered Office :

**Gowshala Bazar, HOSHIARPUR**

Subscribed Capital	Rs. 2,00,000
Paid up Capital	Rs. 2,00,000
Reserves	Rs. 9,15,000

## FIFTY-FIRST REPORT BY THE DIRECTORS

The Directors beg to submit to the shareholders the Balance Sheet and Profit and Loss Account of the Bank for the year ended 31st December, 1965 together with the Auditors' Report.

The net profit for the year amounts to Rs. 1,01,496-57, which with Rs. 2,04,996-06, brought forward from the previous year, makes a total Rs. 3,06,492-63 available for disposal.

The Directors recommend the amount to be disposed of as under :-

	Rs.	P.
To Statutory Reserve Fund	50,000	00
To Dividend @ 12% p.a.	24,000	00
To provision for Income tax	30,000	00
To Dharamada	2,000	00
To carry forward	3,06,492	63
<b>Total</b>	<b>3,06,492</b>	<b>63</b>

The payment of dividend proposed is subject to the sanction of the Reserve Bank of India.

The Bank's business continued to function satisfactorily.

Hoshiarpur  
 JAS RAJ } Directors  
 SHAM SINGH }  
 28th March, 1966 JANAK RAJ }

## Report of the Auditors to the shareholders

We have audited the foregoing Balance-sheet of Bari Doab I Limited, Hoshiarpur, as at 31st December, 1965 and also the foregoing Profit and Loss Account of the Bank for the year ended upon that date.

In accordance with the provisions of Sections 29 of the Bank Companies Act, 1949 read with the provisions to sub-section (1) and of Section 211 and sub-section (5) of Section 211 and 227 of Companies Act, 1956, the Balance-sheet and Profit and Loss Account are not required to be audited and are not drawn up in accordance with Sixth Schedule to the Companies Act 1956 they are, therefore drawn in conformity with Forms A and B of the Third Schedule to Banking Companies Act, 1949.

We report that —

- We have obtained all the information and explanations with the best of our knowledge and belief, were necessary for the purpose of our audit and have found them to be satisfactory.
- The transactions of the Bank which have come to our not have been with in the powers of the Bank.
- In our opinion proper books of accounts as required by law have been kept by the Bank so far as appears from examination of those books.
- The Bank has got no branch.
- The Bank's Balance Sheet and Profit and Loss Account drawn up by this report are in agreement with the books of account.
- In our opinion and to the best of our information and according to the explanations given to us, the said accounts give a true and fair view of the state of affairs of the Bank as at 31st December, 1965, and the Profit and Loss account gives a true and fair view of the profit for the year ended upon that date.

NEW DELHI.  
 Date, 15th March 1966.

SODHBANS & Co.,  
 Chartered Accountants.

## BARI DOAB BANK LIMITED, HOSHIARPUR. Profit & Loss Account for the year Ending 31 December, 1965.

31.12.1964 Rs.	EXPENDITURE	Rs.	P.	31.12.1964 Rs.	INCOME	Rs.
55,723	1. Interest paid on Deposits, borrowing etc. ....	78,293	36		(Less provision made during the year for bad and doubtful debts and other usual or necessary provision)	
19,433	2. Salaries, allowances and Provident Fund. ....	19,706	25	1,20,203	1. Interest and Discount ...	1,48,239 3
—	3. Directors and Local Committee Members Fees and allowances...	—	—	127	2. Commission, Exchange and Brokerage ...	163 3
2,812	4. Rent, Taxes, Insurance, Lighting etc. ....	3,071	56	—	3. Rents ...	—
521	5. Law Charges. ....	829	84	—	4. Net profit on investments, Gold and Silver, Land, premises and other assets (not credited to Reserves or any particular Fund or Account) ...	750 0
535	6. Postage, Telegrams and stamps ...	546	87	—	5. Net Profit on revaluation of investments Gold and Silver, Land, premises and other assets (not credited to Reserves or any particular Fund or Account) ...	—
300	7. Auditor's Fees. ....	300	00	32,223	6. Income from non-banking assets	7,788 1/2
1,238	8. Depreciation on and Repairs to the Banking Company's Property. ....	1,225	55	22,489	Less expenses	22,237 68
620	9. Stationery, Printing advertisements etc. ....	696	09	9,734	7 Other Receipts	
—	10. Loss from sale of or dealing with non-banking assets. ....	—	—	70,741	(i) Dividend on Shares	68,576 00
148	11. Net loss on sale of shares and securities. ....	—	—	2,902	(ii) Miscellaneous Earnings	2,561 65
22,980	12. Other expenditure (including income-tax paid at source Rs. 19,360 80) ...	21,911	86	73,643		71,137 6
99,397	13 Balance of Profit (Subject to Taxation) ...	1,496	57			
	Note 1—Particulars of remuneration paid to the Chief Executive Officer during 1965 :— Salary Rs. 4,080 (Rs. 4,080), Allowances Rs. 1380 (Rs. 1,260), Perquisites Rs. 204 (Rs. 204) : Total Rs. 5,664 (Rs. 5,544). Figures in the brackets are for 1964. Rs. 360 paid as conveyance allowance have been included in the figures against allowances in and outside the bracket.					
2,03,707	<b>TOTAL</b> ...	<b>2,28,078</b>	<b>95</b>	2,03,707	<b>TOTAL</b> ...	<b>2,28,078 9</b>

# Bari Doab Bank

BALANCE SHEET AS

31-12-1964 Rs.	CAPITAL & LIABILITIES		Rs.	P.	Rs.	P.
	<b>1. Capital</b>					
(2,00,000)	Authorised Capital : 4000 equity shares of Rs. 50 each	...			2,00,00	00
	Issued, Subscribed and paid up Capital					
2,00,000	4000 equity Shares of Rs. 50 each fully paid up	...			2,00,000	00
8,90,000	<b>2. Reserve Fund and other reserves</b>	...			9,15,000	00
	<b>3. Deposits and other Accounts</b>					
12,87,625	Fixed Deposits	...	13,21,472	35		
3,85,167	Saving Bank Deposit	...	4,00,524	34		
3,97,188	Current accounts, Contingency accounts etc.	...	3,41,779	29		
2,500	Employee's Security Deposit	...	2,500	00	20,66,275	98
20,72,480	<b>4. Borrowing from Banking Companies, agents etc.</b>	...				
	<b>5. Bill payable</b>	...				
6,367	<b>6. Bills for Collection being bills receivable as per contra</b>	...				
	<b>7. Other Liabilities :</b>					
	Provision for Income tax :					
74,569	Balance as per last Balance Sheet	72,845 35				
38,326	Additions during the year	44,033 90				
1,12,895		1,16,879 25				
40,050	Less Income-tax paid	35,879 95	80,999	30		
72,845	Dharmada		7,328	56		
6,029	Dividend unpaid	...	213	15	88,541	01
127						
79,001	<b>8. Acceptances, endorsements and other obligations as per contra</b>	...				
	<b>9. Profit and Loss Account :</b>					
2,80,599	Balance as per Balance Sheet as at 31st December, 1964	...	2,99,996	06		
	<b>Less appropriations .</b>					
25,000	Statutory Reserve	25,000 00				
36,000	Dividend	36,000 00				
1,000	Dharmada	2,000 00				
18,000	Provision for Income-tax	32,000 00	95,000	00		
80,000			2,04,996	06		
2,00,599	Add profit for the year ended 31-12-1965		1,01,496	57	3,06,492	63
99,397						
2,99,996						
	<b>10. Contingent Liabilities</b>					
(15,300)	On Partly paid Shares Rs. 15,300					
35,47,844	<b>TOTAL</b>	...			35,76,309	62

# BANK LIMITED, AMRITSAR.

AT 31-12-1965

Previous Years Figures	PROPERTIES & ASSETS		AMOUNT		TOTAL	
	Rs.	P.	Rs.	P.	Rs.	P.
	<b>1. Cash</b>					
9,89,715	In hand with Reserve Bank and State Bank of India (including foreign currency notes)				11,55,238	66
	<b>2. Balance with other Banks</b>					
5,01,717	<b>A. In Current Accounts.</b>					
7,451	(i) In India	11,19,906 43				
	(ii) Outside India	6,131 53	11,26,037	96		
7,25,000	<b>B. In Deposit Accounts.</b>					
Nil	(i) In India	5,95,000 00				
3,00,000	(ii) Outside India	—	5,95,000	00	17,21,037	96
	<b>3. Money at call &amp; short notice</b>					Nil
	<b>4. Investment at Cost</b>					
19,53,048	(i) Securities of the Central & State Govt. and other Trustee Securities including treasury bills of the Central & State Govts		20,06,253	00		
4,15,612	(ii) Shares					
	(a) Ordinary shares fully paid up	7,857 75				
	(b) Preference shares do	3,17,981 74	3,25,819	49		
	Note: (a) Shares on which market quotations are available:					
	Previous year Book Value	3,09,051 74				
	5,52,945 Market Value	4,37,111 75				
	(b) Shares for which market quotations are not available: Book value (Previous year)	16,787 75				
		20,088 00				
Nil	(iii) Debentures or Bonds				Nil	
Nil	(iv) Other investments				Nil	
Nil	(v) Gold				Nil	
	<b>5. Advances</b>				23,32,092	49
44,43,311	(a) Loans, Cash Credits & Overdrafts					
4,94,628	(i) In India		42,82,490	81		
	(ii) Outside India			1 00		
54,252	(b) Bills discounted & Bills purchased					
Nil	(i) In India		99,105	20		
	(ii) Outside India			Nil	43,81,597	01
	particulars as per separate schedule attached (Provision for bad & doubtful debts has been made as per contra)					
7,75,943	<b>6. Bills receivable being Bills for collection as per contra</b>				9,00,683	43
Nil	(i) Payable in India				Nil	
	(ii) Payable outside India					9,00,683
8,46,028	<b>7. Contingent liabilities for acceptances endorsements and other obligations as per contra</b>					
1,93,626	<b>8. Premises at cost up to 31-12-64</b>	1,96,409 07				
2,783	Additions during the year	93 20				
	Total	1,96,502 27				
Nil	Less Lahore Premises written off	64,979 35	1,31,522	92		
66,136	Less Dep. up to 31-12-64	67,534 08				
Nil	Dep. Written back on Lahore Premises	21,945 88	45,588	20		
1,398	For current year		1,363	07	46,951	27
45,122	<b>9. Furniture &amp; Fixtures Last Balance</b>	45,418 97				
297	Additions during the Year	363 00	45,781	97		
29,520	Less Dep. up to 31-12-1964	31,109 72				
1,590	For current year	1,464 96	32,574	68	13,207	
	<b>10. Other Assets</b>					
34,577	(i) Interest accrued on investments but not realized		30,100	40		
32,875	(ii) Misc. account recoverable		22,485	74		
10,776	(iii) Due from Banks in Liq. and under scheme.		10,776	13		
1,85,065	(iv) Income Tax deducted at source on yield of investment		1,85,064	86		
268	(v) Stamps in hand		225	87		
19,125	(vi) Advance payment of Income Tax		22,993	45		
1,006	(vii) Advance payment of deposit insurance premium		979	99		
Nil	(viii) Compensation due from Govt.		25,954	07	2,98,580	5
	<b>11. Non Banking Assets Acquired in Satisfaction of claims</b>					
3,62,606	(i) Land & House Property at cost	3,69,525 81				
6,920	Additions during the year	61,691 21				
	Total	4,31,217 02				
Nil	Less written off during the year	2,64,933 23	1,66,283	79		
1,64,080	(ii) Other assets at cost					
48,400	Last balance	1,92,980 41				
	Additions being expenses	148 54				
	Total	1,93,128 95				
19,500	Less sales during the year	3,500 00	1,89,628	95	3,55,912	7
1,24,96,087			Total		1,17,83,197	7

VED PAL SURI  
General Manager

JAG RAJ  
CHITRANJIV LAL AGGARWAL  
CHANDKA GUPTA  
DINA NATH

Directors

**THE PUNJAB CO-OPERATIVE BANK LIMITED, AMRITSAR.**  
**PROFIT & LOSS ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED 31ST DECEMBER 1965.**

Previous Year's Figures	EXPENDITURE	AMOUNT		TOTAL	
		Rs.	P.	Rs.	P.
1,89,729	1. To interest paid on deposits, borrowing etc.	..	..	2,41,116	81
1,35,459	2. To salaries & Allowances to Staff	..	..	1,69,074	66
1,150	3. To Directors & Local Committee member's fees & allowances	..	..		
21,002	4. (a) To Rent, Taxes, Insurance, Lighting etc.	Rs. 19,116	63	700	00
3,880	(b) To Deposit insurance premium	3,940	06	23,056	69
5,176	5. To Law Charges	..	..	2,920	16
7,498	6. " Postage, Telegrams & Stamps	..	..	8,248	44
900	7. " Auditor's Fee	..	..	900	00
3,472	8. " Depreciation on and repairs to the Banking company's property.	..	..	4,469	65
5,007	9. " Stationery, Printing & Advertisement	..	..	8,024	64
Nil	10. " Other Expenditure	..	..		
68,567	11. " Loss on sale of shares of Tata Iron & Steel Co. Ltd.	..	..	Nil	
156	12. " Loss on Redemption of Government Securities	..	..	30,472	00
Nil	13. " Provision for Bad & Doubtful debts	..	..	36,191	37
Nil	14. " Assets written off	..	..		
137	(i) Pakistan debts and advances	..	..	4,32,369	50
Nil	(ii) Other Advances	..	..	64,259	46
Nil	(iii) Shares of joint stock companies held as investments	..	..	3,300	75
Nil	(iv) House Property in Pakistan	..	..	3,07,966	70
Nil	15. " Provision for payment of Bonus	..	..		
37,412	16. " Provision for Income Tax	..	..	34,189	72
33,800	Tax deducted at source on yield of investments	..	..	Nil	
1,52,391	Balance Provision	..	..	34,189	72
	17. To Balance of Profit	..	..		
	Particulars of the remuneration paid to the General Manager during 1965	..	..	80,590	08
	1,939 (i) Salaries	9,000	00		
	(ii) Allowances	..	..		
	(iii) Sitting fees	..	..		
	(iv) Bonus for 1962 & 1964	485	60		
	(v) Employers contribution to Provident Fund pension fund or any other superannuation Fund	..	..		
	102 (vi) Payment by way of gratuities, pensions or otherwise, in excess of employer's contributions and interest thereon	562	44		
	180 (vii) The monetary value of any other benefits or perquisites	720	00		
	2,221	10,768	04		
6,63,736	Total			14,53,750	64

Previous Year's Figures	INCOME	AMOUNT		TOTAL	
		Rs.	P.	Rs.	P.
	1 By Interest and Discount	..	..		
3,59,339	(a) Interest and Discount	3,77,159	41	4,53,804	43
54,667	(b) Interest on Govt. Securities	76,645	02	39,967	43
39,760	2. " Commission, Exchange & Brokerage	..	..	11,028	65
8,382	3. " Rent	..	..		
1,545	4. " Net profit on sale of investment, gold and silver, land, premises and other assets (not credited to reserve or any particular fund or account)	..	..	Nil	
Nil	5. " Net profit on revaluation of investment, gold and silver, land, premises and other assets (not credited to reserve or any particular fund or account)	..	..	Nil	
16,595	6. " Income from non banking assets and profit from sale of or dealing with such assets	..	..		
20	(a) Rents o. Property	9,846	00		
Nil	(b) Incoe from Agricultural land	40	00	9,886	00
6,088	(c) Profit on sale of Property	..	..	Nil	
1,10,286	7. " Other Receipts	..	..	6,765	98
487	(a) Miscellaneous Earnings	..	..	95,763	90
68,567	(b) Dividend on Shares	..	..	1,466	59
Nil	(c) Written off bad debts realised	..	..		
Nil	(d) Transfers from Contingent Reserve	4,91,061	58	1,70,000	00
6,63,735	General Reserve	1,74,006	08	8,35,067	66
	Unclaimed Deposits of Evacuees	..	..		
	Total			14,53,750	64

**The Punjab Co-operative Bank Limited Amritsar.**  
**Schedule of Particulars required by the Banking Companies Act, 1949 (Act X of 1949)**  
**attached to and forming part of the Balance Sheet as at 31 December, 1965.**

Previous Year's Figures		Loans, Advances, Cash Credits and Overdrafts		
		Rs.	P.	
44,18,808	(i) Debts considered good in respect which the bank is fully secured. ...		37,61,488	82
5,73,383	(ii) Debts considered good, for which the bank holds no other security than the debtor's personal security. ...		6,20,108	19
Nil	(iii) Debts considered good, secured by the personal liabilities of one or more partners in addition to the personal security of the debtors. ...		Nil	
49,92,191	(iv) Debts considered doubtful or bad, not provided for. ...		Nil	
Nil	(v) Debts due by Directors or Officers of the Bank or any of them either severally or jointly with any other person. ...	Nil		
Nil	(vi) Debts due by companies or firms in which the Directors of the bank are interested as directors, partners or managing agents or in the case of private companies, as members ...	Nil		
Nil	(vii) Maximum total amount of loans, including temporary advances, made at any time during the year to Directors or Managers or Officers of the Bank or any of them either severally or jointly with any other person. ...	Nil		
Nil	(viii) Maximum total amount of loans, including temporary advances, granted during the year to the companies or firms in which the Directors of the Bank are interested as Directors, Partners or Managing Agents or, in the case of private companies, as members. ...	Nil		
Nil	(ix) Due from Banking companies. ...	Nil		
	TOTAL		43,81,597	01

# भाषा के आधार पर

## देस के बटवारा की गलती

### पंजाब का विभाजन राज्य सरकार की दुबलताओं

#### क कारणां दुहा

#### सुधियाना में श्री बंस जी का भाषण)

सुधियाना—कल रात यहाँ आंसीरी वली की ओर से असीरीय राइट रखा समुल्लेख में भाषण करते हुए भी यद्यपि मेरा ये देश के आंध्र प्रदेश पर देश के बटवारे और देस सुबो की स्थापना को राष्ट्रीय हित के लिए हानिकार करण विषय और इस बात पर और दिया कि देस को कुछ प्रशासनिक भागों में बांट देना ही काफी होगा। उन्होंने कहा कि भाषा की आज में देस का यह बटवारा जारी रखना तो एक दिन देस के टुकड़े-टुकड़े हो जाएंगे और हमारी एकता और देश की अखंडता को भारी मुश्किल पहुंचाना भाषा देस के बटवारे का कारण नहीं बल्कि एकता और संगठन का कारण होना चाहिए। भाषा विचार अनिच्छा का साधन है और इस तरह वह देस के विभिन्न भागों के लोगों को एक-दूसरे की भावनाओं आदि को समझने में सहायता देती है। इस तरह एक राष्ट्रभाषा देस को एक बनाने में सहायक होती है। इसलिए जब हमारे देस का विधान बनाया गया तो उन लोगों ने जो हिंदी नहीं जानते थे देस की राष्ट्रभाषा हिंदी को बचाने का फंसेला किया किन्तु यदि १८ वर्ष बीत जाने के बाद भी हमारी एक राष्ट्रभाषा नहीं बन पाई तो हमें केवल मॉरार सरकार का रोष है बल्कि हमारा अपना भी दोष है क्योंकि हमने हिंदी को उचित उठाते और उसे राष्ट्रभाषा बनाने में देरी की बजाए अपना ध्यान सिंधियाई गलती यह कि देस को भाषायी आधार पर बांटा हुआ कर दिया और राजनीतिकों ने प्रश्न की भा संकेतिया कि बजाए अपना ध्यान हमारी ओर लगाए रख। संघर्षरत सुधियानाई गलती यह कि देस को भाषायी आधार पर बांटना मुश्किल विषय और राजनीतिकों ने प्रश्न को ऐसा उलझाया कि वह देस में आने और बटवारे का कारण नहीं। प्रहाउपट बना, पुनरुत्पन्न बना, कांश्रि बना और इस तरह भाषा के

नाम पर कई सूचे बने और अब आज का नाम मेकर पंजाब का बटवारा कर दिया गया। यह इलाका पंजाबी लोगता है और यह इलाका हिन्दी लोगता है। यद्यपि तथ्य इसके सर्वथा विपरीत है। जहाँ-जहाँ हिन्दी बोली जाती है वहाँ-वहाँ पंजाबी भी बोली जाती है, इसलिए यहाँ भाषा के आधार पर बटवारा हो ही नहीं सकता। पंजाब का बटवारा आपके सामने है। किस तरह लोग छोटे-छोटे टुकड़ों के लिए लड़ रहे हैं। मैं पूछता हूँ कि इसमें भाषा कहा जाती है? कौन-सी वस्तु जो आप भाषा के नाम पर नाम रहे ही और ब्याख्या छोड़ रहे हैं। अपने भाषण को जारी रखते हुए आपने कहा कि हम पंजाबी बोलते हैं किन्तु यह हमारी मातृभाषा नहीं हो सकती। हमारी मातृभाषा वह है जिसका हम अपनी माँ की तरह सम्मान करते हैं। इस कह यह भी अर्थ नहीं कि हम पंजाबी के प्यार नहीं करते। जो अपनी माँ का आदर करता है वह दूसरों की माँ का सम्मान भी करता है। हमारी मातृभूमि वह है जिस में हमें जन्म दिया किन्तु हम मातृभूमि उसे कहते हैं जिस को हम प्यार करते हैं। मैं जलवापुर जट्टा (पाकिस्तान) में रहा हूँ। मैं किन्तु पाकिस्तानी हूँ अपने देश के दौरान मैं मैं चाहता था कि वह इलाका तवा हो जाए क्योंकि यह मेरी मातृभूमि नहीं है। जब कोई मेरे देश को और देखता था तो मैं चाहता था कि उसको आते निकाल लूँ। मैं बड़े देश की घर्ती अपनी है। नुबो का बटवारा पानी की एक रेखा है। लोग प्रश्न करते हैं कि हम अब पंजाब में चले जाएं। यह बर्ती अपनी है। उद्योग कहा कि किसीने इतना साहस नहीं हमारी ओर आकर उठाकर देस के है। यह बर्ती अपनी है। हम यहाँ का अनाज खाते हैं। हमें चाहिए कि हम पंजाब के हिन्दुओं को समझित हैं। आर्य समाज को डराए जा सकने का कोई कारण नहीं। हमें अपने सिद्धांत पर डटे रहने की आवश्यकता है। राज-

# श्री आर्य समाज भाटलंडाउन जालन्धर में अमृत वर्षा

जालन्धर १०-६-६६ श्री आर्य समाज चन्द्र श्री शास्त्री अरविचन्द्र महोदय देसक आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा तथा श्री गुरुपाल मदन मोहन जी विभवाट्टा महोदयों द्वारा इस सप्ताह समाज में पयारे। श्री अयदीचन्द्रजी शास्त्री ने कटोपनिषद की अन्वयात् चर्चा पर महोदय व्याख्यान दिये। यम निषेधात् की कथा बड़े सुन्दर व सरल ढंग से की श्री शास्त्राचार्य महोदयों जी के नीचे भजनों ने भी माहल टाउन के नर-नारियों को खूब प्रभावित किया। श्रोतागणों ने भी बड़े उत्कण्ठित के विधान तथा पुराने आर्य परातो के शिष्ट नर-नारी विद्यमान थे। इस कार्यक्रम से सबको हार्दिक प्रसन्नता हुई। यह सारा कार्यक्रम आर्य समाज के नव-निमित्त हास में हुआ जिसे विजयो के देस पखों और आठ तीजान लाइट ट्यूबों से अग्नी-अग्नी सुसज्जित किया गया है।

—वेदप्रकाश महोदय  
प्रधान आर्य समाज  
भाटलंडाउन, जालन्धर

# माता ललिता शास्त्री जी

आर्यवीर सम्मेलन सुधियाना में पंजाब के आर्य समाज ने अपनी शक्ति व सयत्न का परिचय दिया, नाम तो इतका आर्य वीर हल मम्मेलन मारे आर्य समाज का था। सुधियाना समाजों ने इसके लिए जो परिश्रम किया। आर्य समाज के सारे नेताओं ने तो पूरा सहयोग दिया। आर्य समाज ने ज सस्थाओं ने जो परिश्रम किया। इसके सारे समाज को बधाई हो। इस क्षेत्र पर भारत के स्वर्गीय देव-सुभाष शस्त्र और शास्त्र दोनों की श्रद्धीक बने हुए प्रधान मन्त्री श्री लाल

नीतिक पाठिया यह देखती है कि उन्हें बोट दिखते मिल सकते हैं। बोट के विचार में यह अपने सिद्धांतों पर दृढ़ नहीं रह सकती। इस राजनीतिक पाठियों ने टक्कर लेने की प्रति आर्य समाज में है। हम कमजोर नहीं हैं। पानी की यह रेखाफ टिक कर खोजें। प्रयात सागर पर छोटी-छोटी किस्तिया चल सकती हैं किन्तु दुष्कण हुए जा तो बड़े-बड़े महाज दुब जाते हैं। आर्य समाज अपनी रक्षा करना जानता है; राष्ट्र भाषा की रक्षा करना भी जानता है और देश की रक्षा करना भी जानता है।

बहादुर शास्त्री की शक्ति को सभी ब्रुति धर्म पत्नी अस्मिता-शास्त्री की सुधियाना सम्मेलन में पयारे कर बुधावीप दे गई। हमारे लिए यह माननीया सीता है। माता को बुध आशीर्वाद देती काम देता है। आर्यवीरों का मार्ग दर्शन कर गई। आर्य वीरों ने बड़ा काम किया है। सुधियाना व कलान्त के बंधे यह तीवरा सम्मेलन था। अब सम्मेलन तो हो गया। इसके बाद अब विश्व की भी अस्मिता-शास्त्री है। बुधक शक्ति को समझित करना होगा। सम्मेलन में अस्मिता प्राप्त हो रहे हैं तथा बुधाविकी को ठोस संकेतों अपने प्रधान पर होगा है। अब अस्मिता-कल्प में लग आई—

# सभा का प्रचार कार्य

श्री प. ओमप्रकाश जी महोदयों के साथ सभा ठा. दुर्भासिह जी की भजन मंडली एक मास के लिए जोधेन्द्र नगर, धर्मसाला पालमपुर, नूरपुर, नगरोटा बुधा आदि समाजों में वेद प्रचार पर होगा है। सभी समाज पूर्ण महयोग देने की कृपा करें।

# गुप्त सगाई

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के रिटायर हेड क्लर्क श्री नेहरुचन्द्र जी के सुपुत्र श्री मुनीलकुमार जी की सगाई किया गुप्तधाम में उनके निवास स्थान छोडो मुहल्ला में ११-६-६६ को श्री प. बुधावीर जी शर्मा ने सम्पन्न कराई।

# आवश्यकता

आर्य कन्या महाविद्यालय बडोदा को एक नूत महापुत्राव्य जो कि मेट्रिक को दिवनी में गणित और साइन्स (विज्ञान) गदा सब। अनेत्रन पत्र नीचे के पत्र पर भेजे।

# आर्य कन्या महाविद्यालय बडोदा

# मूल सुधार

आर्य अक्सर ५ जून १९६६ के अक में आर्य समाज दीवाने हाल के बारे में जो सुचना प्रसारित की गई थी वह मूल से छप गई थी, जिस का हमें बहुत वेद है। हमारे दिल में श्री लाल रामगोपाल जी शास्त्राचार्य की सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि में भी से बहुत आदर सत्कार है। इस मूल से छापे गए समाचार के लिए हमें अति वेद है। —ईश्वरचन्द्र



### चुनाव

आर्य कुमार समा बाजार

सीताराम दिल्ली का

अध्यक्ष—श्री रामचरणसिंह जी

उपप्रधान—श्री रामकुमार जी

कमी—श्री नरेश चन्द तन्ना जी

उपकमी—श्री बीरेन्द्र बा सि-

कुमार जी

कोषाध्यक्ष—श्री बीरेन्द्र जी

कीर्त्याध्यक्ष—श्री मोहनलाल जी

पुस्तकाध्यक्ष—श्री रामचन्द्रनाथजी

(लेखक सुधील)

आर्यसमाज प्रध्याता सुहृत्सः।

#### रोहसुक

ब्रह्मण्य—श्रीमद्देव शर्म जी  
 बफील; प्रधान—श्री किशोरीदास जी,  
 उपप्रधान—श्री प्रेमचन्द्रजी बन्धवर्ती,  
 व श्रीमती दयावती जी, मन्त्री—श्री  
 मन्नाजीराय जी, उपमन्त्री—श्री नर-  
 लास जी, व श्रीमन्मन जी, कोषाध्यक्ष—  
 श्री रामदत्त। मन्त्री जी, पुस्तकाध्यक्ष—  
 श्री विश्वाम्नी जी, लेखा निरीक्षक—  
 सुरदिपायजी, मजदारी—श्री सुकर-  
 दासजी, अवतर सदस्य—सिकन्दरसिं  
 श्री, मन्नेज जी, प्रो. जगन्मोहन प्र  
 सुहृत्स जी ।

### आर्यसमाजों को सूचना

वेद सन्नाह आयोजी उपाकर्म की  
 शक्ति पुनीत पूर्व, आ रहा है। उन  
 दिनों सारी समाजों का इच्छा कार्यक-

### आर्यजगत का विशिष्टक

स्वामी म. देवीचन्द जी के  
 प्रथम स्मृति विवसत के अवसर पर  
 आर्यभट्ट जगत की पुष्प स्मृति के म.  
 देवीचन्द स्मृति अंक १-७-६६ को  
 प्रकाशित कर रहा है, सब कार्य  
 सत्कार्य रूपसे आगे बढ़ते से सुविधि करें।  
 —व्यक्तवाचक

बनाने में कठिनाता हो जाती है। इस  
 लिए पहली अवसर से १० सितम्बर  
 ६६ तक सात समय-बेस सन्नाह की  
 कृतियों के लिए है। समाजों में विभिन्न  
 हैं कि समाज को इस विषय में अभी से  
 सुचना केवल शक्ति सब का इच्छित  
 आर्यभट्ट समाज जा इच्छे।

वेद प्रकाश मलहोत्रा  
 समा मन्त्री

आर्य प्रादेशिक समाज जालन्धर

### गुरुकुल-कांगड़ी-विश्व-विद्यालय

मुक्तुसु—कांगड़ी, इश्वरदा मे  
 से १० तक आयोजी के इच्छा-  
 कार्यके का प्रवेश १ जुलाई १९६६  
 को शुरुआत होगा। शिक्षा नि:मुक्त।  
 सब कृतियों की शिक्षा। आर्यभट्ट-बास।  
 सूक्त विषयों की शिक्षा। आर्यभट्ट-बास,  
 विशेष देख-रेख। सीमा-सादा भारतीय  
 जीवन। कठूरा अनुशासन। एकसा  
 रहन-सहन। प्राकृतिक, सुन्दर, स्वास्थ्य-

यद साता  
 पाठक-रोस  
 उपाधिगत  
 प्राप्त। निः

1197

श्री प्रकाशक जी  
 आर्यभट्ट जगत  
 P.O. मुक्तुसु काशीर

### आर्यसमाज २७५ अवाहनगरजी

#### गौरगांव बन्दई-६२

श्री दीवानचन्द्र जी साहनी की  
 मन्मत्ता में १५-५-६६ को निर्दिष्ट  
 प्रकार से सम्पन्न हुआ—  
 प्रधान—श्री दीवानचन्द्र जी साहनी  
 उपप्रधान—श्री सत्यलाल जी शर्मा  
 मन्त्री—श्री वेदविश्व जी भास्कर  
 उपमन्त्री—श्री जगन्मोहन जी शर्मा  
 कोषाध्यक्ष—श्री सत्यवीर जी मुक्तुसु  
 शिक्षा निरीक्षक—श्री रामचन्द्र जी  
 सिकन्दर  
 पुस्तकाध्यक्ष—श्री शिव प्रसाद जी  
 श्रीमती सुधीला जी साहनी, श्री सत्य-  
 लाल जी अचयान, श्री बाबूदास जी  
 चौधरी, श्री मन्नाजी जी, श्री प्रम-  
 दयाल जी मूलिक अवतरण सदस्य।  
 इस समाज के ५० सदस्य हैं। समाज  
 के भवन निर्माण कार्य में २०५००  
 रुपये देने के लिये श्री सत्यवीर जी ने  
 योगदान की। आशा है समाज का  
 अपना भवन १९०० तक बन जायेगा।  
 वेदविश्व—मन्त्री

आर्यसमाज तोरोगांव बन्दई

### आल इश्वरिहया दयानन्द

#### सात्त्वेशन : मशन होश्यापुर

श्री जी. आर.० चावला, पंचमर, १२-वीं  
 सेक्रेट, मेरठ पार्क, ने प्रसन्नता  
 पूर्वक आल इश्वरिहया दयानन्द सात्त्वेशन  
 मिशन होश्यापुर को निर्दिष्ट लोगों के  
 सहायतापूर्व, कुछ रोगियों के सेवाएं  
 (आधुनिक चिकित्सा के लिए) उन  
 वैदिक धर्म के प्रसारार्थ १२००/- का

### रजिस्टर्ड नं० बी० १२११

जान विद्या है। जिनके के निर्दिष्ट  
 प्रकाशक मन्मत्ता की है।

आल इश्वरिहया दयानन्द सात्त्वेशन  
 मशन होश्यापुर की बनी (मुक्तुसु)  
 'रज' के कार्यकर्ताओं के ५० नामक  
 आ जी, शिक्षा के अभावक, सम्प-  
 नील तथा सर्वोत्तम कार्यकर्ता हैं जो  
 मिशन की सेवा की शारदा के अन्तर्  
 है, के नेतृत्व में सत्ता (अक्ष) में विधि  
 विधियों के २०० परिवार लिये सत्ता  
 की कुल संख्या १००० है, का मुना  
 वैदिक (हिन्दू) धर्म में प्रवेश करे हैं।  
 रास सात प्रधान विद्या।

### श्रीक प्रस्ताव

आर्यसमाज शिक्षा का सब  
 उपाधिका निर्दिष्ट आर्यभट्ट जगत  
 प्रतिनिधि समिति के अध्यक्ष, आर्यभट्ट-जी  
 प्रधानसिद्धि की शाना की की दृष्ट  
 पर हादिक जोर प्रकट करता है और  
 उनके परिवार से पूर्वतया सहायुध  
 रहता है। साथ ही परम-विद्या  
 बरवाला से विद्यय करता है कि  
 विद्वान आर्या की सहायिता प्रदान  
 करें और उनकी उपछाया से संश्लि  
 होने वाले शिष्य परिवार को इस  
 विद्या को सहाय करती की शक्ति में।

इस प्रस्ताव की एक प्रति श्री  
 प्रतापसिंह शर्मा जी बलमदास प्रधान  
 सांवेदिक आर्य प्रतिनिधि समा के  
 पास भेजी गई। —नन्दलाल मन्त्री

### आर्यसमाज शिक्षा

#### पठनीय एवं मन्नीय साहित्य

वेद प्रबन्ध ५/- मोशारा ७५  
 वेद, आलवीर के पत्र १/-वेदोत्तरक  
 अक्षर १/५० वेद, मेरी आठ  
 श्लोक महाविद्या ७५ वेद, लीक  
 ७५ वेद, सत्त्वज्ञाने जीवन ५० वेद,  
 धर्म भीमाशा २/२२ वेद, संतति  
 निगमन कर्म और डेडे १५ डेडे,  
 वैदिक व्याकरण शारद ६/-  
 व्याकरण श्लोक ११/२० वेद,  
 वैदिक व्याकरण ६/-  
 अक्षर वेद वेद वेद वेद

### म० हंसराज वैदिक साहित्य विभाग

विक्रयाय आर्यभट्ट पुस्तकें  
 चारों वेदों के सविन्द मूल सैट प्रति सैट २२.५० पै  
 ऋग्वेदादि मान्य भूमिका ३.०० पै०  
 संस्कार विधि २.२५ पै०  
 दयानन्द दिज हाइक एण्ड वर्क (अंग्रेजी में) लेखक श्री  
 ब्रह्मभानु जी एम० ए० बापस चांसलर इकवेनर यूनिवर्सिटी  
 मुम्बई १.५० पै०  
 सत्पार्थ प्रकाश (उर्दू) ३.५०  
 सभी आर्यसमाजों व आर्य सत्पार्थ ज्ञ पुस्तकों को उच्च स्थान  
 देकर सुशोभित करें  
 प्राप्ति स्थान— म० हंसराज साहित्य विभाग आर्य प्रादेशिक  
 समा निकट कोर्ट जालन्धर

### निःस्तान परिवार ध्यान से प्रहें

पदि आप विवाह के बाद बड़ तक निःस्तान हैं तो इस लेख में  
 सकल चिकित्सक श्री पं० ध्याम सुन्दर जी स्वातक (महोपदेशक पंजाब  
 प्रतिनिधि समा) के-कर्मों वा पत्र व्यवहार करें। श्री स्वातक श्री ध्याम  
 के अनेक परिवारों की सफलता पूर्वक चिकित्सा कर चुके हैं।  
 पूर्ण कोर्स ३ मास व्यय २००/-  
 पता—ध्याम सुन्दर स्वातक महोपदेशक पंजाब तथा  
 दीवाने हाल देहली

मुद्रक व प्रकाशक श्री सन्तोषराज जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि समा पंजाब जालन्धर द्वारा बीर मिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यभट्ट  
 कार्यालय महात्मा हंसराज अम्बल निकट कचहरी जालन्धर शहर से प्रकाशित मासिक—आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि समा पंजाब जालन्धर









दैनिकीक मं २०१७

[आर्यप्रदेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का मासाहिक मुखपत्र]

Regd No. P 121

एक प्रति का मूल्य १३ पैसे

मासिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६ अंक २८)

२७ आषाढ़ २०२३ रविवार—द्वयानन्दवर्ष १४१— १० जुलाई १९६६

(तार 'प्रादेशिक' जालन्धर)

### वेद सूक्तयः

#### इन्द्रमित् स्तोता

उस इन्द्र भगवान की ही स्तुति किया कती श्लोक कती परमात्मा माने मेकबली का अन्धकार है। एवं मुझों ममदासो का प्रयास है। उसे ही जानो, उसे ही मानो, उसी का ही स्तवन प्रकृत और प्रकृत करो।

#### मुहुर्कथा च शंसत

मुहु- बार ७ वेद की आत्माओं मास के पत्नीओ, स्तुति के अर्थों नया अन्धकार अपने आधी में उठी की गीत गाओ, उसी के स्तोता बन कर सोचरस के कठोर घर ६ बार ७ जीवन में पान करो। अपने प्रतिन रस सिंचो, धाम को पिचो, बार ७ पिचो।

#### यश्चकार सदावुधम्

जो बार-बार प्रभु का प्रती उस जीवन में सुख साहित सम्पन्नता साहित की वृद्धि प्रदान करने का मैं उस महाशय को पाकर अपना साथी नेता बना नेता है, उनका आश्रय प्राप्त कर लेता है—उसे अपना नेता है।

#### मा चिदन्त्यद् विशंसत

हे लोगो! शाकवान हो कर मुझों कि आप लोग अन्ध-धर्मोन्धर के निष्ठ प ओर किन्हीं बलु पदार्थों की या मनुष्य की, देवी देवता की ईश्वर के अभाव स्तुति उपलब्ध, प्रकाश न करो। मनुष्य का प्रकृत प्रकाश ही है।

वर्ष २६ अंक २८

## वे दा मृ त वीर बन कर आगे बढ़

शुक्रोऽसि भूजोऽसि स्वरसि ज्योतिरसि  
आप्नुहि श्रेयांसमति समं क्राम ॥

अर्थ - हे वीरणा का उपवास करने वाले मनुष्य! तू (पुरु, अग्नि) वीर है जुड़ है वीर तू (आप अग्नि) धनकीना है, परिपक्व है और तू (वर्त्म) आनन्द म भंग है (श्रेयांसि अग्नि) तु प्रकाश है। इन्द्रमित् (आप्नुहि) प्राप्त कर (श्रेयांसम्) श्रेष्ठ मादल को माया (सम्पत् अन्विताम्) जो तेरे जगहन है उन में आगे बढ़ना सा। तू वीर है शोचनी है, अपना पथ स्वयं बनाने वाला है तथा तू प्रकाश है। मातृ को मार दिना।

#### इम का भाव यह है

हे वीरवर! तेरे होके हुए किसी को क्या निम्ना हो सकती है? वस्तु को अब क्या शक्ति है जो वह अब हमारी ओर आस की उडा सके। तू बुद्ध है। हर प्रकार से आचार विचार में, जीवन के हर क्षणों में तू बुद्ध है। मरु को साहस कहा कि वह तेरे सामने मुझ भी दिना मरु? तू आत्मान है, फोनादी है। बल के महान पक्का है। मरु उक्कर मातृ ७ कर अपना सिर थोक गेमा। तू अपना मार्ग स्वयं बनाने वाला है। तेरे आगे नदी-जल मातर-नदी तथा बन भी आश्चर्यजन मार्ग नहीं रोक सकते। मरु को काटना चीरना तथा पार करना हुआ अपना पथ बना कर चल पड़ना है। तू प्रकाश है। हे वीर! राजसो को मानने के निम्न अर्थ ही आगे बढ़ना सा।

अर्थ २११७

★ मने से बुद्धि अन्ध होनी है। बुद्धि अन्ध होने में मान ही हो जाता है। साम्बल हृदिम होता है। मन पाप करने की ओर लौटना है। मन में पूरे विचार आने है। धरिद में नेम उपलभ हो जाते है। वैक्या स्वयम हो जाता है, सारी, दया, करुणा आदि गुण भी पैदा हो जाते है। इस के अतिरिक्त स्वया तथा स्वयं बर्णना होता है। यदि उन वीर का शय्य बन्तुका में शय्य बिना जाय तो बहुत ही गार्भ ही।

### ऋषि दर्शन

#### तटाज्ञानुष्ठातारः

जो लोग भगवान् के भक्त उस परमेश्वर की अन्ता का ब्रह्मांडन करने में आदिग पर चमत्कृत हो गये हैं परम चिन्ताकी अवधार उस दिना की निर्धारित मर्यादाओं पर चलते हैं। उसी के बन जाते हैं।

#### स्थिरा भवन्ति

वे अतृप्त तृप्त के पंथों अपने जीवन के पथिक काम से स्थिर हो जाते हैं। उन का ध्यान अटल, मन स्थिर तथा कर्म धारणा हो जात है। उनको अपने जीवन पथ से हटाने की कोई भी शक्ति विचारान नहीं कर सकती है। वे शूच होत है।

#### विद्वांसः क्रान्तदर्शना

जो विद्वान् हैं, विक्रान्त ज्ञान का प्रकाश पा दिना है। मनुष्य विद्या का प्रचार दिनाको निष्ठ तथा वे ज्ञान-धर्मों वन जाते हैं। उनकी वृद्धि धरि हुए पंथों बन जाती है। दरवाजी हो जाते हैं।

#### ज्ञान स्वरूपश्च

नया बहु जगत्सिन्धु सात स्वयम है। मने आनी का कण्ड और मरुदा है। तब मनुष्य विद्या और जो पदार्थ विद्या में जाने जाते हैं, उन महान आदि प्रभु परमेश्वर है। उसी में मनुष्य का ज्ञान की शक्ति होती है। ज्ञान के श्रेष्ठ में ही जो ज्ञान विद्या है।

मा पथ अति का मे

ममादक—त्रिलोकचन्द्र शाह

### प्राणायाम मन्त्राः नं० ४

ओं भूः । ओं भुवः । ओं स्वः ।  
ओं महः । ओं जनः । ओं  
सवः ॥ ओं सत्यम् ।

सन्ध्या के इस चौथे मन्त्र के शब्दों का अर्थ 'प्राणमन्त्र' है। यह एक नुके है (विशेष २६ ईई का आनंजल) केवल कविता या पद्य रूप में नीचे अर्थ जान लें—

#### पद्य में अर्थ

प्राण स्वस्थ प्राणों से प्यारे।

दुःख दूर सब करने हारे ।

सुख स्वस्थ सुखों के दाता ।

सब से बड़े जगत पिता-माता ।

दुष्टों को दंड देने हारे ।

सब की सुध लेने हारे ।

सत्य स्वस्थ दया सागर हो ।

अविनाशी तुम अजर-अमर हो ।

#### व्याख्या

प्राणों से प्यारे परमात्मा । मुझे शक्ति दे, कि मैं पवित्र वेद का ज्ञान प्राप्त करके अपने जीवन को उन्नत करूँ । हे दुःखों के दूर करने वाले ईश्वर ! मुझे शक्ति दे, कि आपके पवित्र और सर्व-श्रेष्ठ (बौद्धिक धर्म) पर चलकर अपने जीवन को समशील मूल बनाऊँ । हे सुख के आधार परमेस्वर ! मुझे बल दे, कि मैं काम वासना को नियंत्रित रखकर शारीरिक रोगों से छुटकारा पाऊँ । हे सबसे महान् पिता ! मुझे बल दे, कि मैं विवाहित अथवा अविवाहित अवस्था में वेद के आदेश अनुसार 'ब्रह्मचर्य' का व्रत धारण करता हुआ और विभिन्न 'प्राणायाम' करता हुआ अपने मन को स्थिर कर पाऊँ, ताकि आपके दर्शन करने निमित्त पात्र बन सकूँ । हे पापियों को दण्ड देने वाले ! मुझे ताकत दे, कि ब्रह्म 'यज्ञ अर्थात्' आधुनिक सर्व-व्यापक समताता हुआ आठो पहर-चौबीस घण्टे आपके गुरु (सुति) मान करता हुआ आधुनिक निकटतम स्थान जाने अर्थ 'प्रवर्णशील' रहूँ ।

#### विशेष संकेत

(१) यह वेद का मन्त्र नहीं, अमृत उपनिषदों में आया मन्त्र है, जिसे प्राणायाम मन्त्र के नाम से भगवान् दयानन्द जी महाराज ने चौथे स्थान पर 'बौद्धिक सन्ध्या' में अंकित किया है। (२) प्राणायाम करने अर्थ शिल्पी महान् विद्वान् के चरणों में अंकुर चिह्न लीकनी चाहिए ।

### धार्मिक विवेक

## आत्मो ! हम बौद्ध संन्यासकी सखायें में दुबकी लगाएँ ताकि त्रमूढ्य रत्न पायें

(श्री परमात्मन् जो विद्यापीठ, वेदपुर)

नोट—इस से पूर्व तीन मन्त्रों की व्याख्या पहले अंकों में प्रकाशित हो चुकी है

(३) इस मन्त्र का केन्द्र किन्तु, अर्थात् जिसके बाहर मन्त्र पूजता है 'ओ ईश्वर' है, शेष शब्द आए हुए इससे विशेषण मात्र हैं। (१) मह मास्वय मे मानसिकीष्णार्येण ज्ञान है। अतः सन्ध्या करते समय अथवा वैसे प्रमाण याग करते समय 'मन द्वारा' इस के शब्द अर्थ पर विचार करते हुए प्रमाण पर ध्यान जमाना चाहिये। (२) मह मास्वय मास आस्वय और बुद्धे विचारो और भावो को दूर करने की वचन देना है। अनुभव की वस्तुओं का कथन है कि ब्रह्म प्राणायाम करने से जुकाय-नजवा, क्षासी, दमा, तप-दिक, अपाचन, बद्ध (कब्ज) शूल, पररु, अफाटा आदि अनेक रोगों का नाश हो जाता है। बड़ा परम पिता परमात्मा का ध्यान जमाने से यह अमोघ शक्ति है। (३) विविध प्राणायाम करने से आतु बढ जाती है। (४) यदि प्राणायाम विविधतः तथा शक्ति अनुभार किया जाए और साथ ही उचित मात्रा में शुद्ध वृत् और मास का दूध भी सेवन किया जाए तो शरीर में ऊर्जा (शक्ति) तो बढ़ती ही है इसके अतिरिक्त आत्मिक शक्ति' इतनी बढ जाती है, कि परमात्मा-मिथ्या में देर नही लगती। (५) योग के आठ दर्जों में इस प्राणायाम मन्त्र का चौथा स्थान है, अर्थात् किन्हे प्रमू-मिलन की इच्छा हो, जन्म-मरण के चक्र से छुटकारा पाया अभीष्ट हो अथवा मोक्ष पर जाने की प्रबल वासना हो । उन्हे यम-नियम की दस बातों पर आचरण करने आसन पर कान्ठ पा, प्राणायाम द्वारा करना चाहिए ।

### ईश्वर-रचना-चिंतन मन्त्र

सृष्टि-उत्पत्ति के मन्त्र (सन्ध्या का दूसरा भाग) ओम् मू ऋतन्म सत्त्वाम्बीदात्, तेषोऽप्यजायत । ततो राध्म जायत ततः समुद्रो अर्जवः ॥ १ ॥ समुद्रार्धवादि सवत्सरो अजायत । अहोरात्रि विदपद्विषय मिषतो वशी ॥ २ ॥ सूर्याचन्द्रमयी धाता यथा पूर्व मन्त्रवत्पू ।

दिकन्व प्रुषिस्वीष्णात्तित्ति मन्त्रोक्तः ॥ ३ ॥  
शब्द अर्थ ओ ईश्वर (परमात्मा का निज नाम) सृष्टि (सूर्य, चन्द्र, आदि) जगत की कारणता का प्रतीक, अमि (चारों ओर से) इष्टता (प्रकाश स्वस्थ) से तपसः (आन स्वस्थ से), अधि-अजायत (उत्पन्न हुई), प्रतः (उसी से), रात्रि (महा प्रलय), समुद्रः (भूमिस्थ समुद्र), अर्जवः (आकस्मिक मेघ रूप जल सागर) समुद्रात् (भूमिस्थ समुद्र से), अर्जायत (आकाशस्थ जल-कोष से), अधि (पीछे) सत्त्वत् (सर्व, काल तथा शून्य), अजायत (उत्पन्न हुआ), अहो रात्रि (दिन-रात) विदपत् (बनाए), विषय (जगत के) मिषतः (सहज स्वभाव से), वशी-वशा मे रखने वाले परमात्मा) सूर्याचन्द्रमयी (सूर्य और चन्द्र को), धाता—(धारण करने वाले ने) यथा पूर्वम् (जैसे पहले कल्प की सृष्टि में) अकल्पतः (बनाया) दिवम् (सुनोके को) प्रुषि-वीम् (भूमिस्थ) को अथो (और) स्वः (भूमि तथा सुनोके के नीचे के लोक-लोकान्तरो को) ।

#### सरलार्थ गद्य में

प्रकाश स्वस्थ और समस्त जगत को प्रकाश मे प्रकाशित करने वाले तथा समस्त जानकी भंजार परम पिता परमात्मा ने अपनी शक्ति से प्रलय रूपी रात्रि में पृथी शून्य अवस्था की प्रकृति को विकृत करके सृज्ज रूप दिया । इसी सृज्ज प्रकृति से आकाश का वाकार प्रकट हुआ, जिस मे प्रकाश के पुच्छ 'सूर्य' को उत्पन्न करके उसके तीर जगत अर्थात् मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, यम, वासु, वासुकी आदि को जन्म देने के साथ 'पृथ्वी' को उत्पन्न किया । यह हमारी पृथ्वी 'सूर्य की पुत्री' सहजाई । जन्म बना, को पृथ्वी का पुत्र कहलाया इस प्रकार सूर्य का पृथ्वी पर कल्याण । जब पृथ्वी बनी, तो अग्नि का गोला होने के कारण सूर्य के बाहर निश्चित मार्ग पर और

अपनी शक्ति पर प्रकट बनने लगी। इन प्रयोगों के, कर्म, धर्म, विष्णु-राज और अन्य अन्य शक्तियों का जन्म हुआ। संसार को प्रकट स्वभाव से एक में रखने के लिये परमेस्वर ने अपनी अकार प्रकृति से पृथ्वी को उठा करके निश्चित 'महासमर' का अवलोकन किया किता यम इस जल-कोष पर सूर्य की किरणों का प्रकाश पड़ा, तो जल का वाष्पीकरण हुआ, तो आकाश में बादल छा गये। इन दोनों से इस भूमि पर वर्षा हुई तो भूमि की रही तही गर्मी दूर हुई। भव भूमि का शुष्क स्थल उठा हुआ तो समस्त संसारों के धारण या पालन वाले परमात्मा ने इस भूमि पर अमलः पर्वत, पोटार, मैदान की वनाकट के पर्वत धार-पूत, पेड़-पौधे बनस्पति को उत्पन्न किया। अर्थात् कीट-पतंगों, पशु-पक्षी अर्थात् मनुष्य समाज की समस्त आवश्यकताएँ पूर्ण करने अर्थ पदार्थ और वस्तुएँ पैदा करने सर्व-प्रथम अमंजुनी सृष्टि के नियम से पैदा होने वाले अग्नि, मायु, आदित्य तथा अमिरा महर्षियों के पवित्र हृदयों में प्रकृतः शक्ति, यज्ञ-वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद का प्रकाश हुआ। इन पवित्र आत्माओं ने एक-दूसरे को प्रत्येक वेद का ज्ञान कराया और पीछे पैदा होने मनुष्य समाज को इन वेदों का ज्ञान सिखाया । इस प्रकार आत्मन् में उत्पन्न हुआ मनुष्य समाज ने पवित्र वेद वाणी से संपन्न होकर अपना जीवन सुचारुता का मार्ग पाया । सुनो आता या बुरदलीं व मूक मनो द्वारा देखा जाने वाला समाज, जिससे अनेक सूर्य, हजारों-सहस्रों पुत्रियाँ और करोड़ों चन्द्रमा हैं, यह सब के सब उठी प्रकार आप मे ज्मात, जँते ज्मात कास मे लोक-लोकान्तरो को आप बनाते चले आ रहे हैं । हे मेरे पिता ! तेरी महान् शक्ति, चाहे अन्तर्गत हो, चाहे प्रत्यक्ष दिखाई देने वाली प्रकृति के रूप में हो अथवा सू लोके की हृत्तामें हो, यह सब के सब आपकी महता को प्रदर्शित करते हैं ।

सरल अर्थ वच में, प्रत्येक मन्त्र का पृथक्-पृथक् रूप में :- (शुद्ध मन्त्र का)

उसी आनन्द तथा सब प्रकार के प्रकाशमान परमात्मा की जन्म प्रकृति से वेद और किन्तुआत्मक सत्य प्रकट हुईं। सपथी शक्ति से महा प्रलय तथा सर्वत्र पृथ्वी तथा आकाश में जल उत्पन्न हुआ ।

(क्रमिक)

पञ्चाङ्ग-संस्करण

# आर्य जगत

वर्ष ६१, रविवार, ०२२, १० जुलाई १९६६, अंक २८

## हिन्दी प्रेमियों को चुनौती

सन्त प्रसन्न सिंह एक भुज से तो निम्न २ कारों कहते हैं। एक ओर तो पंजाब के हिन्दू सिखों की एकता की बात करते हैं, कि मैं दोनों की एकता के लिए काम करता रहूँगा। उसी संस में एक के सर्वथा विपरीत बात कह देते हैं कि पंजाब में भाषाई अल्पसंख्यकों है नहीं। सब की भाषा पंजाबी है। हिन्दी कितनी मातृभाषा नहीं है। पंजाब में हिन्दी की वही स्थान मिलेगा जो कि मद्रास आदि में मिला हुआ है। ऐसी तर्क इस प्रकार की ओर भी कई बातें आये दिन कहते रहते हैं। पहले तो हमें यही बात ही संभव में नहीं आती कि सन्त जी ऐसे दमपन किस आधार पर करते हैं। इस प्रकार बड़ बड़ कर बातें कहने का उर्त का आधार तथा अधिकार क्या है? क्या वह पंजाब के मुख्यमन्त्री का राक्षसपन अतिक्रमण है अथवा सभ्यता? उन को यह अधिकार किसने दिया है कि वह दूसरों की मातृभाषा का स्वयं नियंत्रण करे। मानवमानी भ्रष्टाचार करते फिरें। केन्द्रीय सरकार की कमजोरी तथा पंजाब की बुराईयत फूट के कारण सन्त जी का पंजाबी सुबा का स्वयं पूरा हो गया है। अब उनका कर्तव्य तो यह था कि वह पंजाब के सारे लोगों में विस्थापन पंजाब करके इस अल्पसंख्यक दुकड़-दुकड़ कर दिए गए प्रेमियों के विमोक्षण करने में सहयोग दें। विपरीत इसके अभिमान करने वाले कहकर दमनके करते फिरते हैं। भाषा के मान पर पंजाब जैसे सुल्तान, स्वयं-अन्त सुल्तान आदि के झण्डे को फहराते हैं। फूट तथा स्वाधीनता को विस्थापन हो गई। किन्तु वह विस्थापन के बारे में सन्त कहते हैं ऐसी बेकुरत एकिकता देना योग्य नहीं देता। उनको अपनी ही सीमा में रहना चाहिये। अद्य इस प्रसन्न के शर्मोष्ण पीछान के छिछाना तावक पर बसना सब रह्य है। नैतिकता का किन्तु पक्ष ही रह्य है। मांस की फिलानो अतिक्रमण हो रही है। साधारण-रसु-नी बात पर एक-दूसरे की हत्या

होती है। कश्मीरियों व जैतों के कपरे बाधु का क्या रूब बताते हैं! यूंगर, अचार, बिचार, विचार तथा परिचारों का संसार फिजना बिगड़ता जाता है। इसकी तो फिलानु नहीं है। यदि रात दिन जोर दिया जाता है तो इस बात पर कि पंजाबी सुबा में हिन्दी मातृभाषा सहयोगी भाषा नहीं बन सकती। हिन्दुओं की मातृभाषा हिन्दी नहीं है। हमारे लिए यह एक चुनौती है। यह प्रश्न राजनीति के विचार को लेकर नहीं है वरन् जीवन का प्रश्न है। इस बात का सन्त जी को किसने अधिकार दिया है कि हमारे परिवारों की मातृभाषा का निर्णय वह करते फिरें। प्रत्येक इस बात को सुन्दरता में जानता है कि उसकी सत्ता फौज में है। मेरी मातृभाषा कौन-सी है, यह मैं जानती हूँ। मैं जिस भाषा को अपनी मातृभाषा मानता हूँ—उसमें दूसरे को हस्तक्षेप करने का हक किसने दिया है। निषान वरत साज बाप प्रत्येक को अधिकार देता है कि अपनी मातृभाषा का स्नेह प्रकट करे। कौन है? जो हमारी मातृभाषा को बखल सकता है। १९६१ की जनसंख्या में प्रत्येक ने अपनी माता के समान मातृभाषा का भी सम्मान कर के उसे अधिकृत करवा है। कौन होता है जो मेरी माता व मातृभाषा के सम्मान में हस्ताक्षेप करता है। इसे कदापि सहन नहीं किया। भाषाएँ हैं। हज़र हिन्दी को अपनी मातृभाषा मानने वालों को भी इस बात में कहना चाहते हैं कि इस चुनौती को भी स्वीकार करना है। इस के लिए भी संगठन, ध्यान, साहस तथा तिर मिना कर-बेजो की आवश्यकता है। हिन्दी हमारी मातृभाषा है। पंजाबी केवल बोली है। हमने जहाँ-जहाँ युग में भी मातृभाषा से प्यार किया। अब कौन हमारी मातृभाषा का अपमान कर सकता है। हिन्दी प्रेमियों! आप को निर्बन्ध ध्यान कर बार-बार चुनौती दी जा रही है। जानो! स्वयं को

छोड़ कर संगठित हो कर इस चुनौती का ऐसा उत्तर दो ताकि सन्त जी के दमनके हवा में ही रह जायें।

—नितीकचन्द्र

## वर्षाई ही वर्षाई

आर्य समाज अन्य आवश्यक कार्यों के साथ-साथ अविद्या के नाश और विद्या की वृद्धि के पवित्र काम में भी लगा हुआ है। दयानन्द कालेज कमेटी की देख-रेख में कितने बड़े-बड़े कालेज और स्कूलों का विद्यालय आन विद्या हुआ है। जिन में बहुत बड़ी संख्या में विद्यार्थी प्रविष्ट, परोक्ष-आदि देते हैं। इन विद्यार्थी संस्थानों की अपनी विशेष, आनन्द परम्परा है।

इस बार भी पंजाब के विन्ध्य-विद्यालय की परीक्षाओं में भी हमारे स्कूलों व कालों में परीक्षा में कमान कर दिया है। डी० ए० वी० कालेज जालन्धर ने कमान कर दिया। इनके विद्यार्थी भी १०० ए० हो या भी, एम.बी.डी. एम० ए० हो या प्री० डी० निर्यात परीक्षा हो—माना प्रकार के विषयों में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। यही बात हस्तगत महिना कालेज जालन्धर डी.ए.सी. कालेज अमृतसर, सार्वदास एम्बेरो बंदिह ह्यार संकटरी स्कूल जालन्धर के बारे में है। इन सब में आनन्द परिसर दिखाने है। यही परम्परा हमारी अन्य संस्थाओं की है। इस आनन्द व गौरवमयी परम्परा के लिए हम माननीय प्रिंसिपल भीमसेन जी बहल डी. ए. सी. कालेज जालन्धर, प्रिंसिपल विद्यावती जी आनन्द ह्यार राज महिना कालेज जालन्धर, प्रिंसिपल चमनलाल जी आरोडा डी. ए. वी. कालेज अमृतसर, प्रिंसिपल प्यारेलाल जी नेरी साइडस ए. ए. स्कूल जालन्धर व स्टाफ एवम अन्य कालेज स्कूलों के मान्य आचार्यों के बहुत-२ वर्षाई देते हैं। यह आनन्द परिसर इन संस्थाओं के अध्यापन, प्रबन्ध तथा साधना को प्रकट करती है।

## दो तमारा

आर्य समाज के सम्बन्ध लेखक वक्ता मान्य प्रो० सत्यदेव जी विद्या-लंकार एम. ए. आनन्द ने आर्य-जगत के मत महामाया देवीचन्द्र स्मृति विधिभाष्य में जिन दो तमारा की बर्णना की है। उस से सारे आर्य समाज की आंशों-शुभ जाती चाहिए। तमारी पर टरने की घोषणा करने आरत के बड़े २ नेताओं के पास धुंभने वाले हठयों तथा जालन्धर

ब्रह्माकुमारियों के अधिपतन में पूर्व के प्रकाश में अन्ध के पदों लिये युग में दिने ऐसे विचारों के तमारा की ओर कितना आवश्यक ध्यान दिनाया है। जनता की विचित्रि क्या है? आज भी कितना खुना पाषण्ड पनपता जाता है। सब मुनिते वेदों में पर मौन है? क्या आर्यसमाज की आशों के सामने यह सारा कुछ होता रहेगा। कितना प्रबल प्रवाह है इस पाषण्ड का? इसे रोकने का कौन प्रयास करेगा? आर्यसमाज को इस पर विचार करके दृढ़ प्रयत्न के पाषण्डों का प्रतिकार करने के लिए विशेष काम करना होगा। आर्य समाज से वेदों से अब काम नहीं चलेगा।—स०

## समाजके नये पुरोहित

आर्यसमाज बिक्रमपुर आनन्दर यह केन्द्र का आर्य प्रादेशिक सभा में सम्मिलित आनन्द समाज है। नया नया सुन्दर भवन है। अब समाज के मान्य अधिकारियों ने अपने मन्दाब में श्री ए० भीमसेन जी दासनी को पुरोहित के पवित्र कार्य पर लगा कर समाज को इस कर्मी को पूर्ण कर दिया है। श्री ए० भीमसेन जी दासनी दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय के योग्य स्नातक हुए हैं। उनके मन्दाब में जा जाने से समाज का उत्थान तो चलेगा ही, यहा नगर के अपने परिवारों में बंदिह संस्कारों को करने का भी प्रचार होगा। मान्य समाज के अधिकारियों को बधाई हो। इन का योग्य स्थान पर योग्य विद्यान कि गये।—स०

## श्री स्व०ला० शंकरदास

### जी की स्मृति में

आर्यसमाज के स्वर्गीय नेता श्री ला० शंकरदास जी नेहम जालन्धर की पुण्य स्मृति के जनके सुमुख सा० आनन्दजी को अपने अन्त परिवार में यदुर्बन्ध का पारायण्ड अब अपने निवास स्थान २६५, साखरतराय नगर में करता रहे हैं। सोमवार, ८ से ९ बजे तक उनकी बर्णाई हुई यज्ञशाला में श्रद्धा पूर्णक व्रत हो रहा है। परिवार के लोडें बड़े तथा समय २ बाहर के मजदूर भी सम्मिलित होते हैं। रविवार १० तारीख को प्रातः समा-रोह के साथ पूरुसाहित्य ग्रन्थी जाएंगी। सब सज्जनों से प्रार्थना है कि टीक समय पर पूरुसाहित्य के समय दर्शन दें।

आर्यसमाज के केरल में वैदिक धर्म के प्रचार के पुनीत कार्य के लिए कई बार प्रयत्न किए। आर्यसमाज केरल में क्यों विराट रूप धारण न कर सका इस का कारण आर्य नेताओं की मूर्खता है न कि केरलीय जनता। जब अमर हताभा स्वामी श्रदानन्द जी महाराज ने दलित वर्ग के जन अधिकारों के लिए कार्यक्रम में सत्याग्रह का नेतृत्व किया तो केरलीय जनता ही नहीं अपितु सारा दक्षिण उस भ्रूत प्रतापी संन्यासी के बदन्य उसाह और आर्यों की धर्म धुन पर सोझित हो गयी। वेद है कि आर्य समाज ने स्वामी श्रदानन्द जी महाराज के प्रति दक्षिण भारत के लोगों की श्रद्धा का लाभ उठाकर केरल मद्रास व मसूर आदि में वैदिक धर्म के प्रचार की श्रेय योजना न बनाई। दक्षिण में राष्ट्रवीर ला० राजनरायण जी ने भी श्रद्धि सन्देश सुनाने के लिए भ्रमण किया। जनता ने उनके प्रति भी श्रद्धा है। आर्यसमाज की ओर लोग बाह्यदृष्टि पर हम ही ऐसे कर्तव्य विभूत सिद्ध हुए कि आर्यसमाज के समूह का बड़ा विस्तार न कर पाए।

जब मालाबार में हिन्दू लूटे पीटे व मारे गये तो वीन बुद्धी के त्रास महाराज हंसराज तक्ष उठे। स्वामी श्रदानन्दजी व महाराजा जी ने संकट की इस बेला में सीना धान कर पीड़ितों की सेवा का संकल्प किया। देव दयानन्द के दौगने ससार को पकित करते हुए अविन में कूट पडे। समाज के कार्य वीर दूर दक्षिण में भा जाये। अपनी सेवा व सदाचार से आर्यों ने जनता के हृदय को जीत लिया। आर्य प्रादेशिक समाज ने तब केरल में जो कार्य किया वह इतिहास में बड़ा महत्व रखता है। आर्य प्रादेशिक समाज ने काशीकट्ट मे सुन्दर समाज मन्दिर का निर्माण कराया। काशीकट्ट के क्षेत्र में सुतिलच लोग का समूहन राष्ट्रीय हितों को एक बुद्धी बुनोती रहा है। प्रादेशिक समाज ने इस क्षेत्र में प्रचार का प्रबन्ध किया है। १९५४ के फरवरी मास में दमानर ब्राह्म महाविद्यालय हित्मार से विहाई पाकर श्री नरेन्द्र भूषण जी ने केरल में वैदिक धर्म का सन्देश सुनाने का संकल्प किया। आर्येण सारे प्रांत का भ्रमण कर के बहा की स्थिति का अध्ययन करने अपने अनुकूल व प्रतिकूल सब तत्वों को देखकर कार्य की

# केरल में आर्यसमाज का प्रचार

(ले० श्री राजेन्द्र जी एम. ए., जिज्ञासु शोलामुट्ट)

योजना बनाई। किसी तथा से तो कोई सहयोग अब तक मिला नहीं आये की प्रगलान जाने। आर्य जनता के सहयोग से यह युवक आर्य समाज को केरल में फंजाने में सफल हो रहा है। केरल में आर्य समाज के पांव टिक गये हैं। आया करनी चाहिए कि अगले पाच वर्षों में वहां आर्य समाज एक जीती जगती शक्ति बन जाएगा।

इस धर्म केरल में आर्यसमाज का जो विधिर नरेन्द्र जी ने आयोजित किया उसमें सारे प्रदेश के विभिन्न भागों से प्रतिनिधि पधारे। इनमें प्राध्यापक, संस्कृतज्ञ, साधु, सुविद्वित युवक आदि थे। केरल के सब भागों के लोगों को ओ००० स्वच्छ के नीचे इच्छु करने का यह पहला प्रयास है। नरेन्द्र जी कई कई समर्थन स्थापित कर चुके हैं। कई युवक समाज वहां चल रही हैं। केरल से हमारा मासिक निभायी पत्र आर्य भारती सफलता पूर्वक चल रहा है। वैदिक धर्म के प्रचार के लिए दक्षिण में यह पत्र अत्यन्त उपयोगी कार्य कर रहा है।

केरल की क्षेत्रीय भाषा मलयालम में वैदिक सिद्धांतों पर कई टुकट छप चुके हैं।

सहस्रो विषयों में वैदिक धर्म में प्रवेश पा चुके हैं।

केरल में आर्यसमाज के प्रचार के राष्ट्रीय भावनाओं को बल मिलाया स्वाभाविक ही है। केरल में हिन्दी के कई कालेज हैं। हिन्दी पाठ्यालया स्थापन-स्थापन पर मीने देखी। दक्षिण के लोग संस्कृत निष्क हिन्दी ही समझ सकते हैं। मिनेषा की फरती उरू के बोधिल हिन्दी ही ब्रह्मण्ड में हिन्दी के प्रथम श्रेणी है। दक्षिण के भाषायें बहुत संस्कृत निष्क हैं। हिन्दी में दक्षिण की भाषाओं के शब्द अपनाते से उत्तर व दक्षिण में प्रेम बढ़ेगा। राष्ट्रियता की भावना प्रबल होगी। सत्य जसत्य, जीवन मरण, जब, देव, गुरु, विनय, हृद विनय, नित्यत्व, मातृभूमि, सहोद्री आदि शब्द मलयालम में भी हैं इससे पता चलता है कि दक्षिण की भाषायें हिन्दी से दूर नहीं।

# तब और अब

(गुप्त ५ का अंग)

'तुम क्या उसे मिटा सकते हो !'  
'आपक पर तुम बनाती तो वही !'  
'बात ! और कुछ नहीं, मेरा एक माई वही हो गया है !'  
तो इतमें रोने की क्या बात है ?  
यह तो बुद्धी का समाचार है।  
बातक क्रोषित दृष्टि से देखते हुए बोला 'तुम्हारे लिए हो तो बुद्धी की बात है पर मेरे लिए तो रोने की। क्योंकि इसके मुझे बहुत हानि होगी।  
'माई से हानि ?'  
'हां भैया से हानि !'  
'कैसे ?'  
'वही मानते तो सुनो जब तक पिताजी की सम्पत्ति पर मेरा ही एका-पितरय वा और जब उसमें प्राण जुने बासा जा गया !'  
आरे प्राण-प्रेम

# आर्यशकता

आर्य समाज तत्परस्य अमूल्यर के एक सुयोग्य पुरोहित की बाव-दकता है सत्कार, व्याख्यान, धर्म कथा आदि करने में निपुणता रखता है। निवास समाज परिवर में रहता। निम्न पते पर प्रायन्त पत्र भेजें।  
मुम्बल किशोर उषमंजी आर्य समाज लक्षमणसर अमलसर।

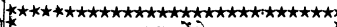
# डी.ए.वी. हायर सैकण्डरी

# स्कूल कान्दियां का शानदर

नतीजा  
डी० ए० की० हायर संकंडरी स्कूल कान्दिया का हायर संकंडरी भाग प्रथम (कॉर) का परिक्षाम फल वर्ग की तरह बड़ा शानदार रहा है। नतीजा ८०% रहा है। इनाका घर में निती की स्कूल का नतीजा इनाका शानदार नहीं थिकका इस बमलत संकलता का जेब थिकके के मान्य मिलितर श्री प्रतापसिंह जी इकराज तथा उनके योग्य स्टाफ को है।  
—टीपुन सात

# आर्यसमाज माबड़ टाउन

गुडफ्राई का बुद्ध २५-५-५६ को निम्न प्रकार से हुआ १ प्रथम—श्री० शंलूराम—की० उषमंजी—की० नन्दीरामजी, फोडुंबकी, महामंत्री—की० मिलोकामजी की, मनी—की० शिवराम दयाल नृपक, उषमंजी—की० तुमालचन्द्रजी, कौशाम्बल—मास्टर हनुमंजी की, सेवामिरीक—की० कृष्णचन्द्रदेव जी, तामबरीरिपुन व स्टीर श्रीदूर व० तीरपट्टाजी हाहायक—की० अमृतलालजी महेश्वरस्यम सुधरा मंजी—आर्यसमाज



# माताओं से

(श्रीमती विजय लक्ष्मी एम०ए०, असोसिएट)

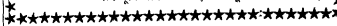
हे माताओं ! सच्चे बर्धों में तुम माताएं कहलाती हो।  
मा गाकर सच्चे वीर गाऊ, पुत्रों को वीर बनाती हो।

मूल गई उन माताओं को, प्रताप जंसा वीर बनया, धर्म प्रेमी नोसिन्द मुक्त ने, मुगलों से निज धर्म बनया।  
दोनों बालो ने धर्म के कारण बलि देदी पर शीघ्र बहया।  
देव आधुनिक दशा ह्यारी बार-बार यह ध्यान में बाया।  
मुत्त केसरी पुत्रो को, क्यों न आज जगती हो ॥१॥

मातायें है धन्य वही, जिन्को स्वधेय पर करते देखा, गोक न करके नृत्त शिशु का, उसाहित करते देखा।  
स्वामिगान का तुलसी पुत्र जो, पाठ पढ़ाये ही देखा, कर में दे तलवार हुद हिन, भुजा पूजते ही देखा।  
धन्य तुम्ही माताओं जो ऐसे वीर बन्याये हो ॥२॥

मा गा कर मातेन्द्र के, मोर्चा, पर, करणा छोडे, काम अब्र पर चडे हुवे की, कामवासना को मोडे।  
प्रेमपास में बंध हुबो की, रज्जू मार काट कर तोडे, छिद्र-मित्र उन्ही तारों में, वीरत्व तार का तुम मोडे।  
मोह स्वप्न में मुत्त सुत्रों को, क्यों न आज जगती हो ॥३॥

माताओं आ गया समय जब, केसरिया बना पहिलाबो, देव पताका खतरे में है, पथ उरचित का बलनाबो।  
तुम आप के वीर बनें, निव ऐसे ही गाने गाबो, गान गान में यह तान रहे, देश की खातिर पर जाबो।  
वीर भूमि भारत को अब, बलि भूमि क्यों न बनाती हो ॥४॥



आर्यभट्ट ने बहुत विस्तृत, विस्फार और प्राचीन देख है। इसके इतिहास भी विस्तार के लिए आर्यभट्ट-दीपस्तम्भ रहा है। आर्यभट्ट और महाभारत का यह महात्वपूर्ण सम्मान है। नाचों बर्ष के बीच जाने पर भी भारत की जनता राम को न भूल पाएगी। यह विस्तार आर्यभट्ट और महाभारत के आर्यभट्ट का पाठ करती है। प्रतिबर्ष रामजीवालों का आयोजन करती है। किन्तु कोरे मुण्डान के कार्य पूरा हो जायगा ? हम अपना अन्तर्द्वन्द्वित इतने से ही पूरा निम्ना सकते ? इत्यादि जलते प्रश्न प्रत्येक भारतीय के हृदय में ज्वलन-मूलक उठते रहे हैं। आइये इस अवसर पर हम आर्यभट्ट-निरीक्षण करें। आइये कि तब और अब में किन्तु परिवर्तन हो गया है। सीबिये तीन विषय उल्लिखित हैं :—

(१)

विद्यालय राजमहल का एक भाग। अनेक दास-दासियाँ शीघ्रता से इधर-उधर जा आ रहे हैं। सबके मुख म्लान हैं, महल के प्रकोष्ठ में एक ओर राजा कुम्हड़ अवस्था में पड़े हैं और सामने राम खड़े हैं।

'वेदा! मान जावो। इस हत्यारे सिता को कंध कर ली और अयोध्या का राज्य करो यय्य तुम्हारे साथ है, परम तुम्हारे साथ है, प्रजा तुम्हारे पक्ष में है।' राजा ने कहा—

'ठीक है सिताजी ! पर मैं तो सिता के बचाने को सत्य सिद्ध करने के लिए ही बन में जा रहा हूँ। इतने बर्षों के मुझे रोकर अन्वेषण के भागी न बनिये।' राम ने उत्तर दिया। राजमहल पर लातों की सत्या बँध चला खड़ा है। एक ओर रथ पर राम अन्वुज के ओर श्रिय पत्नी के साथ आरम्भ होने जा रहे हैं, पर रास्ता अवच्छेद है। बन्दा अपने नियुक्त राजा को जाने नहीं देना चाहती। परन्तु राम महाकवि मुण्डान के शब्दों में :—

'राजीव तोचन राय चले तबि,  
बाप को राय बटोड़ की नाई !'

★

बापुनिक न्यायस्थल का एक भाग अनेकों स्त्री-कुल का जा रहे हैं। सामने ही कर्णवीर कुल उल्लेख कर रहे हैं। एक कर्मरे में न्यायाधीश अपने सहकारियों के साथ विचारणामें हैं। मुण्डान की सुनवार हो रही है।

'क्या वे तुम्हारे पिता हैं ?'

'जी हाँ !'

'तो किन्तु समय प्रश्नों से तुम्हारे भाई के नाम सारी जवाब सिद्धी उत

रामायण के दोस्तों पृष्ठ :-

## तब और अब

(आचार्य मित्रसेन जी एम० ए० शास्त्री, अलौगढ़)

समय के दिन और दिमान से दुस्त नहीं वे।

'जी सरकार !'

'तुम यह सिद्ध कर सकते हो ?'

'जी, और विहित पुत्र पिता को प्राप्त सिद्ध करने में लग गया।



(२)

पंचतीय प्रवेश, चारों ओर सुरम्य वातावरण। पेंड-पेंड फल-फूलों से लदे खड़े हैं। एक ओर शक्ति में अनुपम भरता कल-कल च्यपि ने बन की मुगता हुआ बचा आ रहा है। मानों यह रहा हो जपने उरुष्य पथ पर विचन बाधाओं को चिन्ता न करते हुए बढते बलौ। तो दूसरी ओर मुनिजनों के आग्रह से निकलता हुआ यज्ञभूमि उन्नति की प्रेरणा देते हुए उमर की ओर जा रहा था, स्वच्छ स्फटिक शिवायें यथ तथ विहरी पड़ी हैं। उन्नी से से एक पर भगवान राम अन्वुज सहित विचारणामें हैं तो दूसरी पर मन्त्रिमण्डल सहित सुभीष।

'एक देवी रीती कलपती बाकक मान से डेबाई वा रही थी, सम्भवतः कही मांता सीता हो।' बानरराज सुभीष ने धार्मिक्यं करते हुए कहा।

'हो सकता है आपका अनुमान सच्यार्थ में हो। परन्तु केवल अनुमान से ही महात्वपूर्ण कार्य सिद्ध नहीं हो सकते। सर्वेष्ट विचारण के लिए कोई न कोई ठोस प्रमाण होने चाहिये।' राम ने कहा।

'आपने बात सुनियुक्त पूर्व, कही है। परन्तु कुछ स्मरण हो जाकर हुए सुभीष ने कहा। 'सायब उस विमान से एक छोटी पोटीनी वाली

गई थी जो हमें प्राप्त हो गई है।' बीच में ही परवसुन बोले।

'आपने उचित समय पर स्मरण दिया।' लाली जलती लाली।

'बानरराज ने कहा।

'तुममान ने एक छोटी-सी पोटीनी साकर राम को दी। किन्तु लोकाकुल राम उसके आमुख न पहिचान सके। उन्होंने उसे लम्पला को देते हुए पहिचानने को कहा। लम्पला ने बहुत सावधानी पूर्वक एक एक कर सभी अक्षरों की परीक्षा की किन्तु वे भी न पहिचान पाये कि अचानक नीचे नुदुर दिखाई पड़े। नुदुरों को देखकर उन्हें अचर हर्ष हुआ वे महाकवि बल्भीक के शब्दों कह उठे—  
माह जानामि केदुरे

माह जानामि केदुरे

नुदुरे ल्हं जानामि

निय यदाभि बन्दानाम्।  
अर्थात् भो 'प्रातः' न तो मैं केदुरों को ही जानता हूँ और न कुम्हड़ों को ही, किन्तु इन नुदुरों को भली भाँति पहिचानता हूँ कि मैं माता सीता के ही हूँ। क्योंकि वे उरुष्य निय प्रातः उनके घरए स्थर्ष के समय देखा करता था।

★

अच्छा सा बंभला, दिल्ली अभि-नेत्रियों के चिन्तों से सुसज्जित प्रादे-रुम। एक ओर रेडियो से सुनीला गाना सुनाई पड़ रहा है। कुर्तों पर एक मुबक सफेद कमीज, पंच पहिने बँठा है। दूसरी ओर पुंय मृ गार किणे हुए शिखिता नारी। दोनों का धी रहे हैं।

'देखो भाभी ! हमे माहक परेगान करने से जापको कोई लाभ तो हो नही रहा, हम तो बँते ही आपके तीरे नखर से पायल हैं।' टुप्य कह रहा था। तभी रेडियो का उठा नुदुरी से दर्द...

'देखो जी ! यह माह ठीक नहीं। किसी भले घर की स्त्री को सताना अच्छा नहीं और फिर मैं तो तुम्हारी भाभी हूँ। कुछ कृपिय शोष से और तिरछी नखर से देखके हुए स्त्री ने कहा।

'हो हा ठीक ही तो है, मैं जब ब्रह्मता हूँ कि तुम भाभी नहीं। पर

यह भी जान तो कि भाभी और भाभी भाभी...। निरन्तरता की हृत्ती के बीच पुत्र्य ने कहा।

'बड़े नटखट हो !'

'अच्छा बानरज न होवो, बचो विचार बनते हैं। एक पन्थ दो बान, संया को भी पता न क्लेमा और अपना भी काम बन जायगा।' बाप समाप्त कर प्यला रख मुबक अब हो गया। मुबक को खडे देखकर महिला भी खड़ी हो गई। बाहर शोकर से कार निकलवा कर पड़े की सीट पर दोनों बैठ गये। शीघो के पर्दे खिच दिये गये। पोरी दूर जाने पक एक हल्का सा भीकार मुनाई पडा और—

साह रे भाभी देवर का पवित्र सम्बन्ध

★

(३)

मायकाल का समय। मुद का मेदान, चारों ओर मीन का समुदा। कही कहे हाथ पड़े हैं तो कही पद बही करी शर। मिद, पीन, सिवार, कुल आदि मृत शवों को नोच-नोच कर सा रहे हैं। एक ओर विद्यालय भेद एकजिनत है। सभी के मुखाँ पर शोक के चिन्त। मध्य में कुलधर्य किन्तु सुन्दर एक मुबक बँठा है। उसके भट्टनों पर शीरधर्ष मुबक देखा है।

'हाय ! अब मैं माता को क्या उत्तर दूंगा ? जब अयोध्या की जनतां मुझ से पूछेगी कि तिन प्राण गये थे जेकेले लौटे हो तो मैं क्या कहूंगा ? बरे ! आज तक रथकुन साय पर दुद रहा पर उसी कुल में उपन्य तुम्हने कीने छोड़ दिया ? तुम तो कहते थे कि संका विजय करके सीता के साथ अयोध्या जायेंगे, कहा गये तुम्हारे ये बचन ? तुम्हारे निना मैं कीने जीवित रहूंगा ? जो तिन अन्वुज की हुई बही अवज की हो।' राम के इन शोकांतुक शब्दों को सुन छाती फटने लगी।

और ठीक भी है :—  
तुनिया में सब चीज पँदा.

पँदा न मां का लाल है।

★

दिल्ली का सीताराम बाजार, किसी विचार में मन बाये बड़ा आ रहा था कि एक पन्डह बर्षिय बालक को रोते देख रुक गया। मुझ 'क्यों रोते हैं ?' राम ने पूछा।

पुनः प्रश्न किया।

'बात ही ऐसी हुई गई है।' पोरी देर बाद उत्तर मिला।

'क्या बात हो गई है ?'  
(शेष पृष्ठ ४ पर)

स्वास्थ्य त्तम-

आसनों द्वारा व्यायाम पद्धति

शरीर को कुछ गुप्त बनाने के निम्न आसनो का अभ्यास सति उप-दर्शनी है-ए के अरर आर्य जगत के सिद्धि से हीन बर्को में आसनों का वर्धन सिंघा गया है। आसनों में सर्वोत्तम स्थान आर्य रखते हैं। आसन सुगन्ध विना कोई भी घमं डरत सजल नहीं होता साधारण्य के आधाराय कर्णों में भी आसनों को आनयकजा पवती है।

आसनों का महत्व

आसनों का महत्त्व उगना ही है कि निरुना आरोग्य का महत्त्व है। आरोग्य के साध आसनों के अभ्यासो का प्रतिष्ठ सम्बन्ध है। शरीर के सब कार्बिक अवयवों और अणो तथा नख नाडियो का ठीक ठीक ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात् प्राचीन ज्ञान के ऋषि मुनि और योगियों ने इस आसन पद्धति की विवक्षा की है। ऋषिज्णान से इस सभ्य तक जिन्होंने आसनों का अभ्यास किया है, उनको आसनों में कार्बिक प्राणिक का अनुभव हुआ है। यह ज्ञान केवल यथा अथवा सब विधासत से ही मानने की नहीं है। इस समय में भी सुदुर्गो की सभ्य में बनेक सौधों में यह आसन पद्धति के आश्रय से अर्धे ज्ञान उभरा है। आसनों केवल अर्धे न कीजिये। परन्तु स्वयं अनुभव कीजिये।

अहाँ शरीर एक दो मास के अरर ही अनुभव आ सकता है, यहा त्तों का और लीको का ज्ञान भी तथा हीं अनेक अज्ञान बीमारियाय इस पद्धति के आसनों के अभ्यास में दूर गई ही है। शरीर के देहज भी आनयकजा नहीं है, इस में थप्य कुछ भी नहीं है। केवल प्रतिष्ठ (प्रत्ययवर्त-मिन्दर कोई आसन बरत करके आर्य, आसनों काट स्या दिने के अरर ही उरसे आरोग्य का अनुभव निःसंदेह ही जायगा।

ई लोग स्थान करते हैं कि आसन करने में बड़ी कठिनाया होती है। परन्तु यह कार्बिकता नहीं है। आसनों का अभ्यास बड़ा सुगम है। आर्य जिनमें सुगम चाहेही है उरसे भी सुगम है। इतिवृत्ति इस अभ्यास से इस समय भी ३० और ५५ वर्ष के वृद्ध सुगम आन उठा रहे हैं। जो आसन ५५ वर्ष के वृद्ध कर सकते हैं वे आसन उरसे कम आरुय पाते निःसंदेह कर सकते हैं। कः वनों में केकर ५५ वर्ष तक की आरुय

पाते इस पद्धति से इत कमजोर जाग उठा रहे हैं। बाण, तच्छ, बुद्ध, तिब्व, बरनाण, रोषी, नीरोण, आदि त्तो को इस पद्धति से ज्ञान हुए हैं। इस सिधे यह प्रत्यक्ष अनुभव होने के कारण ही हुए बहु सक्ते हैं कि, इस से सब को निःसंदेह ज्ञान होगा। सिधो को प्रकृति के बहुत कष्ट होते हैं। चारों ओर आन कम है



कष्ट बर रहे हैं। इसका एक माय उपाय आसनों का अभ्यास ही है। अनेक सिधो ने इसका अनुभव किया है, सिधे ने यह सिधय पूर्वक और सत्यरंजक कहा आरु है कि जो सिधाय सिधय पूर्वक आसनों का अभ्यास करेगी और विधियतः पञ्चवीं होने पर करने योग्य आसन करती जायगी, तो उनको प्रकृति के कष्ट अद्विज नहीं होंगे।

इस प्रकार यह आसनों का अभ्यास सिधयों और पुष्यों के सिधे लाभकारी है।

आन हय शीर्षाजन्म का संवेग से वर्धन करेते। यह सब आसनों का राजा है। यह सतिष्ठ सम्बन्धी सभल रोषो एव ज्ञान प्रतिष्ठो को दुर्बलता को दूर करता है।

ताम :- बीरों की उर्यं गति करके सभल शीर्ष रोषो को दूर करता है। आसनों को सभल से पूर्व संवेद होने से रोकाज है। वेदरे पर पड़ी सुविधो, हूट प्रकार के दार, शय, आध्या-जादि को दूर करके वेदरे को सुन्दर तथा जोस और कीर्ति पुष्य बनाता है। इस के अभ्यास से रक्ताणु, स्यात् सत्पञ्च तथा सभल माय सभयान, एवं पाण्डुर सभल को सब श्रासत होता है एवं सिधेय शक्ति को उगाह प्राप्त होता

डी०ए०वी० कालेज जालन्धर का ज्ञानदार परीक्षा परिणाम

डी०ए०वी० कालेज जालन्धर प्रतिष्ठनी ही सिधायकानय को परीक्षाओं के परिणामों में बनी बख्शर पाठ्याय को उरजगत में सिधर लिए हुए है। यह हमार लिए वने ही गौरव की बात है। इसके लिए कालेज के मान्य विधिगत वी प्रोफेसरे भी बहुत को सिधेय बचाई है। उनके योग्य नेतृत्व में उनके स्टाफ के परिशय से इस वने भी परीक्षा परिणाम कजात का है। शीरे आनेय परिणाम का आय दिया जाता है—

प्री मैथिकल-परिणाम से इस

है। कालेज में बहु आनय शरीर के सब अवयवों के सिध गुणकारी है इतिवृत्ति इसे आसनों का राजो कहा गया है।

करने की विधि :-

प्रातः काल सुगन्ध से पुर्वे शीर्षादि से सिधुर होकर एकांत जांत और बुद्ध स्थान पर बरत आसन सिधय कर मुनि पर सोनी सुखसिवा रख उन पर सिध रख दें और शीरे-शीरे हाथो एव बलुणो के स्यादे दाने उरते से बाकर सोनी कर दें। यह स्थान रहे कि सिध पर सिधय कम से कम बार करें उनना ही अच्छा रहेगा। शारी प्रतिष्ठा साय के सिध में देवेत।

साधना :-

यह आसन युक्त से बहुत मोठे समय तक ही करना चाहिए। दो-चार संकट से बनेकर शीरे-शीरे शक्ति और सुविधा अनुसार दो-चार मिन्द तक करे।

दिन को सत वायु रोग हो, आसों में कुकरे व अन्य रोग हो, पर बहुत बराबर हो, ने इस आसन को न करे।

नोट :-

आसनों के बारे में पूर्ण जानकारी प्राप्त करनी हो तो बरत राम सिध जी लिखित आरोग्य प्रकाश पुस्तक का अध्ययन करे। आप ने अपने जीवन में आसनों का अभ्यास करने के पश्चात् अनुभव पूर्ण आसनों का वर्णन किया है। मूल्य २ रुपए ५० पैसे आरोग्य मन्दि (रजिस्टर्ड) यमुना नगर से मिल सकती है।

वने इस कालेज में अर्यो सुखसचय नुमादी, रजवीय अरुध पीपी, वः प्रथमः लीवरा और बीया स्थल प्राप्त किया है। इसी प्रकार-रिबल, इच्छा बहादुर तथा सुभाषचन्द्र ने उरत जोर श्रासनों स्थान किया है। सिध-विधासत के प्रथम आठ स्थानों में कालेज को पहले पांच स्थान प्राप्त हुए है। कुज सिधायक एत कालेज में मीरट सिधत में आठ स्थान प्राप्त का है। शीरे कालेज सिधयन तथा ३० प्रतिष्ठ परिणाम है।

प्री इन्जीनरिंग-परीक्षा में

एत कालेज का बरत हस्वसिधय प्रतिष्ठिदि में संकष्य रहा है। इसी प्रकार हरीयकुमार लोचर, सतार, देवतीरमण सन्तोषा और रवेयवन्त महाजन ने तीसरी, छठी और नौवीं शीरीको प्राप्त की है। सिधयिवाचन की पद्धती २० शीरीको में सब इस कालेज के सिधायिदि में प्राप्त की है। २५ श्रासों को कलत बनात आई है। परिणाम ५६ प्रतिष्ठत रहा है।

एम. ए. से स्मृत्त-ने

एत कालेज का सिधायिदि अरुधवाचन श्रासों पञ्चम वर में प्रथम बनात है। सुभादी रामकुमारी तृतीय आई। सुविधयिदि में १८ कलत सिधे जने श्रासों में से सब शीरी कालेज में है।

एम. ए. पौलिटिकल सयंस-

ने सत कालेज की कुमारी अना सुदुर और सिधयकुमार श्राया सुविधयिदि वर में संकष्य रहे। कुमारी सुदेकोर मान बर और कर्णोन्मुक्तार ने चारवीं शीरीको प्राप्त की है। सिधयिदि वर में तीस परठे बनात सिधे बादि सिधायिदि में से दो सिधयिदि सब कालेज में है। परिणाम सिधे जने श्रासों है। बहुत-बहुत बनाई।

श्रायसमा न मन्दि, हांसी

का चुनाव २१-६-६६ की सम्बन्ध हुआ

प्रधान-श्री इच्छा कुमार अरुध, उरजयान-श्री देवप्रभास श्रासों, सह-प्रधान-श्री बरुधर कर्ण, मन्त्री-श्री रवेण कुमार, उरज-मन्त्री-श्री कालेज, प्रधान-मन्त्री-श्री लोहनराज, श्री स्यासो कुमार, सवांकी-नेतृकण्ड सुतकालायामय, श्री हांसीरम, श्री-स्थल-श्री रामकुमार, संरक्षक-श्री सत प्रथम।

रिबल श्रासो पुरोसिद्धि कायं जालन्धर मीरट हांसी (सिधय)

# प्रा० मधोकर का नया वक्तव्य आर्य समाज को मुह चिड़ाता है

(जो ज्ञानी विद्वानों से जो श्रमण पंजाब हिन्दू महा सभा अमृतसर)

भारतीय जनसंघ के १३ वें आन्तरिक अधिवेशन के अन्त्यधीन भाषण में प्रा० बनराज मधोकर ने निम्न शब्द कहे थे—

'भक्ति को फिर से सामान्य बनाने और अज्ञानी अथवा भ्राम्य समाज के उपवादी तत्वों द्वारा विचलित की ओर खारख करने से बचाने के लिए यह अति आवश्यक है।'

उक्त शब्द यह दर्शाने के लिए लिखे गये प्रतीत होते हैं कि पंजाबी सूबा विरोधी आन्दोलन में जो दुर्घटनाएँ घटीं उनका दायित्व जनसंघ पर नहीं अपितु आर्य समाज पर है, और यदि भारत सरकार ने यह आवासन धूरे न किये जो जनसंघ के एक नेता को अहमदाबाद में दिने गये थे तो आर्य समाज के उपवादी तत्व फिर से विचलित को बिगाड़ देने जैसे अकालियों के फसादी तत्व सदा बिगाड़ते रहेंगे।

परपाल्ता का प्रवचन है कि लगभग दो महोदयों ने प्रा० महोदय की बुद्धिमत्ता निरुद्ध अन्वेषण मात्र गम हो गये और आपने एक नक्ल में अपने बाकायदा आर्य समाजी होने का दावा करते हुए समस्त विरोधियों को काबू में विचारां का होने का उपासक बन दिवा है।

प्रा० महोदय को भली भूमिति मिलित होगा कि उनके आर्य समाज विरोधी नीतिकां के विरुद्ध सर्वप्रथम मैंने ही उर्दू हिन्दी पत्रों में एक लेख 'आत्म अभिव्यक्ति आर्य समाज' प्रकाशित कराया था और अपना नाम संकल्पन बारी काबू में अथवा अनंतधियों में निगाना में उनकी ही बड़ी गान्धी संभवता है जिसकी बड़ी कि आर्य प्रा० समर्थने यदि कोई उन्हे सुव्यवधान होने का उपासक है।

वाक ! महाशोक कि हिन्दू समाज अथवा आर्य समाज में वह समझ और उस से उत्पन्न होने वाली अथाह शक्ति नहीं है अन्यथा वीर भारत जैसे देश-स्वभाव, कर्तव्य निष्ठ विद्वान् उच्चकोटि के ब्रह्मा, परिलभन युक्त नेता को ढक्के ओर मरल प्रत की कड़ी परीक्षा में डाल कर और अपनी अहुर दक्षिणा और अत्यन्तों के कारण उनका मरण शत जयीष्ट सिद्धि से

पूर्व ही दुःख्य कर उन्हे 'मास्टर ताराधर द्वितीय' के रूप में जनता के समक्ष प्रस्तुत होने पर बाध्य करने वाला भारतीय जनसंघ का हार्दिकमान आज उसी तरह किसी 'लगर' में जनता के नूठे बर्तन मांजने अथवा कही संघत के जोड़े भाइयों पर लगा दिया गया होगा।

कुछ भाई प्राम्थन हो जायेंगे यदि प्रा० मधोकर अपने शब्द वापस ले जें मगर मेरी तुच्छ सम्मति में अपने प्रेरणा स्रोत महर्षि दयानन्द (जैसा कि प्रा० महोदय ने नये वक्तव्य में स्वीकार किया है) के स्मरण रूप आर्य समाज के विरुद्ध साहस करने वाली का शब्द वापस लेना ही पर्याप्त बन्ध नहीं। इस प्रकार के उच्छृंखलनाय बाकी की भी तभी सम्भवता जा सकती है कि लोक-सभा की सदस्यता रूपिणी जिस लेता के प्रेम में अपने होकर अपने प्रेरणा स्रोत के साथ विरवास धात किया गया है उल्टव इच्छा होने पर भी उन्हे जग प्रेषी (सदस्यता की चुकी) तन न चुकने दिया जाए। ऐसे मनमोहों के स्वास्थ्य के विषे यही एक रामबाण औषधि है और बस !

## शुभ वार्डे

नई पीढ़ी के नवयुवक तथा आर्य जगत के मुद्रप्रदिष्ट लेखक आचार्य भिस्मर जी एम. ए. शास्त्री के गृह पर २८ फरवरी को नवीन बालक के जन्म लेकर गृहजन को प्रमुदित किया है बच्चे का नामकरण विष्णुपति रखा गया है। आर्य जगत परिवार की ओर से बच्चे के दीर्घायु होने की प्रार्थना है।

## करमगति टारे नाहिं टरे

जनयुग में बेचारी जनता भूषों रोज मरे  
करमगति टारे नाहिं टारे  
हर गठकतरा बना भिनिस्टर जेबे साफ करे,  
करमगति टारे नाहिं टारे  
मुर्गा साकर कहे भगत जी जय अगदीश हूरे,  
करमगति टारे नाहिं टारे  
अध्याचार बहु दिशि व्यापा फेसे देश तरे,  
करमगति टारे नाहिं टारे।  
-विजय निर्वाध

# केरल में आर्य समाज का प्रचार

श्री राजेन्द्र जी 'जिज्ञासु' शोलापुर

केरल निवासियों को नहीं करते। भविष्य में जो वे बाहर पड़े रहें हैं। कोई रखवाली नहीं करना फिर भी बूते गुप्त नहीं होते। रामायण में जिस पंजाब नदी का वर्णन है। मैं बहा स्नान करने जाता रहा। पत्नी ब कर्न किनारे पर उतार कर रख जाता था पर देर तक नदी में स्नान करने के पश्चात् बाहर आकर प्रवेक यस्तु मुद्रित मिल जाती। अब सुना है कि जेब कुले केरल में पंजा हो रहे हैं।

केरल के लोग सुरक्षित है पर साया है। पंजाब की भांति बहा फेशन नहीं। भोगों का प्रिय श्रेण कुर्तुं प धोती है। नये पात्र प्रभने में भी कोई मान हासि नहीं समझते। लोग सम्पन्न है। भगवान् नहीं। लोग निर्धन हैं। बागों के इस प्रदेश में इन उपजाऊ बरती में अनेक मृत्तजन वस्तुएं पैदा होती हैं फिर भी जनता का एक बड़ा भाग निर्धन है। कारण यह है कि लोगों में आत्म-विश्वास की की कमी है।

ईसाइयों का एक वन बहुत संपन्न है। हिंदू प्राय निर्धन हैं। स्कूल कालज ईसाइयों के हाथ में है। नायर मजिन सीसायटी के भी १८ कालिज व कई ती स्कूल हैं। ऐसा दीव्या है कि केरल ईसाइयों का प्रदेश है। बड़े-बड़े मध्य चर्च हैं। सड़कों के किनारे बड़े-सूए हैं जिन पर मृती का निगान होता है। पादरियों के भवन भी बड़े सुन्दर हैं। प्रवेक स्टेशन पर, बस स्टैंड पर पार्सियों व पादरियों के टोल मिलने है। केरल में रामकृष्ण मिशन के कई आश्रम हैं। कई साधु हैं पर फिर भी नाशों लोग विधर्म बन

गये। रामकृष्ण मिशन के एक साधु श्री स्वामी धर्मानन्द जी के शब्दों में कोई ईसाई हो या मुसलमान रामकृष्ण बाबों को क्या ? इनको तो बस बेदात का प्रचार करना है। आर्य समाज अब एक जीवित नागुड सस्था बन रहा है। सब मत अहिंसकी वैदिक धर्म की धरण में आकर कल्याण मार्ग के पथिक बनने ऐसी आशा है।

केरल के लोग सुरक्षित है अतः बहा साहित्य की बड़ी मांग है। अब नया आर्य साहित्य बिनने भी लग गया है। अब तक श्री नरेन्द्र जी ने मंजुको प्रपे का आर्य माहिर्य बाटा है। साथों नांमों तक इतारा साहित्य जा चुका है। यदि आर्य जनता का महोद्योग रहा तो नरेन्द्र जी अपनी विजय व तप-पाम से अवश्य अपने विजय सन्ध में मगल होंगे।

## श्री आनंद स्वामी जी महाराज का प्रि. भगवान दास जी के नाम पत्र

नरे प्यारे श्री प्रि. भगवानदास जी, संजम नमस्ते।

नमस्कार तीन महोदयों हो गये मुझे विदेश में प्रणम करते हुए, धार्मिक-मनोविद्या-सिगापुर-पी.जी. न्यूजीलैंड-वेस्ट सिंगा-हांग कांग, फारुसिया मे वेद सन्देश मुनाकर आज कन ज्ञानान में वेद कथा मुना रहा है। सिगापुर में आर्य समाज का विद्यालय बन है। कार्य भी ठीक हो रहा है। पीजी में आर्य समाज के २१ स्कूल तथा कालिज है। समाज ११ है परन्तु फूट काम बिगाड़ रही है और कही समाज नहीं हो वंकाक (धार्मिक) में एक समाज है। नांगों में अडा है, वह वेद की बात मुनना चाहते हैं परन्तु मुनाने वाला कोई नहीं, यदि दयानन्द कलेजों में मे ५-६ प्रचारक आ जाए, जो मोठी इच्छा में भाषण दे नकें तो प्रचार आगे बढ़ सकता है, आप के हृदय में अति जसनी है इसी लिए आप से निवेदन किया है।

नोट—जो सज्जन प्रचारार्थ विदेश में जाना चाहते हो वे प्रि. भगवानदास जी एम. ए., जी. ए. वी. कालिज प्रवाला से पत्र व्यवहार करें।

सेवक आनन्द स्वामी











दलीकोम नं० २०५०

[आर्यप्रार्थनादि प्रतिलिखितभा पंजाब जालन्धर का मासाहिक मुखपत्र]

Rego No P 12

एक प्रति का मूल्य १३ पैसे

वार्षिक मूल्य ६ रुपये

बर्ष २६ अंक २६)

२ श्रावण २०२३ रविवार...व्याजानन्दान्न १४१- १७ जुलाई १९६६

(नार 'प्रार्थनादि' जालन्धर

**पंजाब में हिंदी भाषियों  
को पूर्ण संरक्षण  
मिलेगा**

**राज्यपाल धर्मवीर जी की  
बोधणा**

पंजाब के राज्यपाल श्री धर्मवीर  
ने आज यहाँ एक पत्रकार सम्मेलन  
में पोरणा की कि पंजाब में मेवाओं  
का विभाजन, १९६१ की जनगणना  
में कर्मचारियों और अधिकारियों  
द्वारा लिखाई गई मातृभाषा अथवा  
बर्ष, सम्प्रदाय वा जाति के आधार  
पर नहीं किया जाएगा। मेवाओं का  
विभाजन दोनो नए राज्यों की  
जायजकानुसार ही किया जाएगा।  
नाकि नए राज्यों का प्रदाशन किन्ही  
प्रशासनिक कर्मियों के कारण दुर्बल  
न रहे। उन्होंने एक पंजाबी पत्रकार  
का यह मुद्रणक रट कर दिया कि  
हिन्दू कर्मचारियों को मातृभाषा हिंदी  
है, उन्हें केवल हरियाणा में ही मेवा  
बाँटे। उन्होंने कहा कि यदि यह  
सिद्धान्त मान लिया जाए तो इस में  
बहुतेरे क्षमता उत्पन्न हो जाएगी।

नए राज्यों में भाषाई अल्प-  
संख्यकों की रक्षा प्रत्येक पर राज्य-  
पाल ने कहा कि पंजाब में हिन्दी-  
भाषी अल्पसंख्यकों को दूर-दूर  
बदलवा दिया जाएगा और यही  
कार्य ही हरियाणा में लागू होगा।  
उन्होंने बताया कि दोनों राज्यों में  
मातृभाषी कर्मियों के अल्प पर केन्द्री-  
कृत नारीभाषी पूर्ण विचार कर  
रहे हैं।

**आर्य जगत के कर्मठ कार्यकर्ता  
श्री स्वर्गीय शंकरदास जी त्रेहन जालंधर**



आप की मारी आनु आर्देसमाओ और उनको सम्पाओ की सेवा करने ही  
सीनी। आप कई सम्वाओ के प्रयाज न मन्की पर पर भी रहे। दूबा  
कम में भी आर्य समाज कियवतुवा का अल्प खरिद निर्माण  
आप की पवित्र स्मृति का शोक है जिने देखते ही  
आप का स्मरण हो आता है। श्री विखने विने  
आप की प्रथम निर्वासी स्मृति में उनके  
सुपुत्र श्री ज्ञानचन्द जी नेहल ने एक  
सप्ताह चक्रुद पारायण यज  
अपनी संक्षी साजदल नगर में पूज्य किया जिस की पूजाहुति कम रविवार  
१० जुलाई ६६ को शारी गई। इस अवसर पर अनेक गण्य मान्य मजक्रमों  
में अपनी २ श्रदाजलिया उनके घरछों में जपिन ही।

**राष्ट्र एक-दूसरे के  
आंतरिक मामलों में  
हस्ताक्षेप न करने की  
नीति अपनाएं**

**विश्वशांति के लिए शांति-  
परामर्श अस्तिव**

इतिहासकार सत्यत विचार  
प्रचारित  
जुलाई १० - प्रयाज-  
मन्की धोमकी इन्दिरा गांधी और  
राष्ट्रपति नाथर में आज एक एक  
मध्यम वृत्तपर में विश्वशांति पर  
दुबारे के आचार्य मायाजी ने प्रयाज-  
श्री न कर्म मंत्रिदुलक अति न  
की नीतियों और राज्य में राज्य  
कम करने के लिए राष्ट्रीय विचार  
मायाजी की विचार मायाजी पर  
विचार है

मायाजी प्रयाजपन्की और  
परम आर्य मण्डलपर्य के राष्ट्रपति  
के प्रयाज पर शिखी आर्य की  
समाधि पर प्रचारित प्रयाज कर्म  
में कहा गया है कि उनके अंतरीण  
और विचार विचारण मुपुणया  
कर्मजान अन्तर्राष्ट्रीय विधि के  
प्रयाज में मुझे में अल्प रतुत की  
नीतियों को मुदत बनाने और शांति  
एव महत्वाज का अल्प बढाने के बारे  
में हुआ। दोनों नेताओं ने विश्व-  
शांति की प्रभावित करने वाली  
विभिन्न समस्याओं पर विचार  
किया तथा उन बात पर महत्वाज  
प्रकट की कि विश्वशांति का मुदत  
अन्तर् के लिए ही सम्भव प्रयाज  
किया जाए।

धार्मिक विवेचन-

आत्मो ! हम वैदिक संध्यारूपी सागर में डुबकी लगाएँ ताकि आत्मूल्य रत्न पायें

(श्री परमानन्द जी विद्यार्थी, रोहतक)

(पताक में आगे)

(हूमरे मंत्र का)

शकल सप्तर को अपने बख में रखने वाले परमात्मा ने अपने सहज स्वभाव से बल शोध रखने के अनुसार, काल के विनाश, दिन उलकेतवा-दि-आदि उपसन करने वाले रवि को रचा। ॥२॥

(तीसरे मंत्र का)

सारे जातक को धारस तथा पालन-पोषण करने वाले परमेस्वर ने जैसे पहले बलेष की सृष्टि में रचना की थी, ठीक उसी प्रकार अब इस कल्प में भी पुत्र और चन्द्र को, अर्जि कल्पे रूपने सर्वोत्तम प्रकार की, पृथ्वी को और भूमि को तथा धूम्रक के बीच के लोक-लोकान्तरो को रचा ॥३॥

सरल अर्थ पद्य में-

बपनी सत्ता से परमेस्वर । प्रकृति से जगत बनाकर ॥  
ज्ञान दिवा, गुरु कहलाया ॥  
वेदों का प्रकाश फैसाया ॥  
जीव, दूध पृथ्वी के अन्दर । नदिया, नाले च्चे समुन्दर ।  
जिस सत्ता में अग उपाजये । उसी से जग में सदाय लाये ॥  
बगल को धर में रखने वाले । परमेस्वर के खेल निराये ॥  
रात बनाई दिव्य बनाय । कल्प के हित्ने कर दिखलाया ।  
सूर्य चन्द्र भू मण्डल तारे । लोक लोकान्तर रच के साये ।  
नियम रखे इन में भी ऐसे । ये पहले कल्पों में जैसे ।

व्याख्या

हे ज्ञान के भण्डार परमात्मा ! आप मुझे शक्ति प्रदान करो, ताकि मैं पवित्र वेद का (ज्ञान) प्राप्त कर के जीवन को उन्नत करता चला जाऊं । हे प्रकाश स्वरूप परमेस्वर ! मुझे बल दो, ताकि मैं आप के पवित्र (वैदिक धर्म) के अनुसार अपने जीवन को दाल कर उसी अनुसार (अर्थ) अर्थात् धन, सम्पत्ति, वदार्थ तथा मनोबाधित बस्तुओं का सहज करके जीवन को संपत्ती भूत बनाऊं । हे सप्तर को सहज स्वभाव से बल में रखने वाले परमेश्वर ! मुझे सफल दें ताकि मैं (काम),

(शोध) को बल में करके धार्मिक दु:खों से छुटकारा पाऊं । हे सप्तर के धारस पालन पोषण करने वाले माता ! मुझे साहज दें, कि मैं (अर्धर) अर्जि अर्जि अनुचित रूप से धन संभ्रंही लालसा और है-है किल-किल, और-और को प्यास की भावना से दूर रखूँ, इस प्रकार (अभिमान) और 'कोष' के विचारों से अलग हो कर अपने जीवन को धान्त्वय बनाये रखूँ । हे अगदीश्वर ! मुझे आशीर्वाद दें, कि मैं (इष्ट यज्ञ) आप को सर्वत्र जानता हुआ, (देन यज्ञ) अर्जि यज्ञकी हुई अर्जि-मुष्ट की ज्वाला के साथ मेरे साथ आप के दर्शनमें अर्ध उत्सुक रहे और आप के महान् सप्तर का (अवलोकन) प्रकृति-निरालय करता हुआ तरे धान आने का साहज धारस करूँ ।

विशेष संकेत :-

(१) यह तीनों मन्त्र पवित्र ऋचों के हैं । (२) भगवन् दयानन्द जी महाराज ने इसे सृष्टि-रचना-मन्त्रों के नाम से पुकारा है । (३) यद्यपि विद्वान् लोग इन मन्त्रों अर्थ बतलाने में 'महर्षि अर्थ' को बतलते हैं, और अर्थ-मन्त्रों का अर्थ पापों को दूर करने वाले अर्थ भी निकलते हैं । सच-मुच यह मन्त्र पाप दूर करने में कल्पान्तर रखते हैं । यह साहज तीन हाथ का पाप तब से निमित्त पुत्रता बोधी पति पाकर जिस अकाल फूल में हो आला है, वह आका के सप्तर में ९९० दौख रहा है । जो अपने-आपको परमात्मा कहते हैं, मैं ही-ब्रह्म ही ऐसा बोलते हैं मज्जा नहीं करते, उनके कर्म क्या कर ठीक हो सकते हैं ? जो परमात्मा को देव मन्मात्री, राधा स्वामी, आनन्द स्वामी, नरकारी तथा बहुसुधार सर्वया नहीं मानते, उनका फिर अभिमान के कारण आकाश पर है । भला वह पवित्र जीवन वाले क्यों कर ठीक सकते हैं ? क्या वह नास्तिक ज्यो ज्यो बड़े बड़े सप्तर को बना सकते हैं ? या किसी और व्यक्ति में शक्ति है ? कि केवल इतनी पृथ्वी को बनाये या ईश्वर की सी कोई किंसा कर दिखाये । परन्तु अभिमान में विचार यह आदमी जब विश्वास भाव

विचार-तरंग (१३)

(श्री राममूर्ति जी कालिया एम० ए०, नई दिल्ली)

ज्ञान का कोई पायावर नहीं । सच्चा सापक ही दूध को प्राप्ति कर सकता है । मार्ग अति दुस्तर है । 'अन पंच स्थान की धारा' ठीक ही कहा है । इतने पर भी इंस बहिष्णी कुन्देन्दु तुषारद्वार पबला बीणा पुलक धारिणी सर्व शुद्धा सरस्वती के उपासक बनने की साध कई लोगों के मन में रहती है किन्तु तन्त्रे धार्म दसोंको का अभाव सा है । सरस्वती की देवत्व की कानना करने वाले (मानव) बुलाते हैं । 'सरस्वती देवयन्ती हृत्पत्नी' सीधा भाव यही है कि जो

मनुष्य विद्या का श्वर करते हैं वे देव कोटि में पहुँच जाते हैं । परि-स्थितियों से होइ लेना तो अनिवार्य है ही किन्तु कोई सिद्ध व्यक्ति कुछ रूप में प्राप्त हो जाये, उसे भगवान का विशेष अनुग्रह ही सम्भवा चाहिए । मेरा आशय उस गुरु की ओर है जिस की ओर सब कबीर ने संकेत किया कि :-

'गुरु कुण्डार, सिध्द कुम्भ है । गढ़ पद काड़े कोह । उपर से चोटें दे । और भीतर राते कोट ॥

किन्तु आज दशा तो विधि ही नहीं भयावनी भी है । गुरु और सिध्द के साहच सम्बन्धों की शुद्धता विश्वस्वत हो चुकी है । प्यार और सौहार्द और दूसरी ओर विनयशीलता इतकी अभाव है । विद्या तो विकने लगी है और शरीरवने जाने भी छाती ठोक कर खरीदते हैं । मगान और विनय का स्थान पड़े ने वे निशा है । सरस्वती लज्जो की चेरी बरकरा रह गयी है । परित्याग स्वस्थ विद्या का स्तर दिन प्रतिदिन गिर रहा है । विद्यार्थियों में उद्ध्वता, उभ्रंखलता और अनुयायन हीनता आ गई है । जो कह क्यूँ मासत्री जाना, कविपुत्र सोई गुरुकत बनाना, उक्त ठीक स्या ही अच्चा हो, कि शारवन् (Darvin's Theory) के सिद्धांत पर बहू, होने वाले पर नारी आज से पीने दो अरब साल से प्राप्त वेद-जन को किसी महान् आर्य विद्वान् की सेवा में उपस्थित हो कर सृष्टि उपति का विवरण सुन लें, तो उन्हें वेद की महत्ता का बोध हो जाये । यह चाहे, कुरान, बाइबल या किसी जीनी-बीबी पुस्तकों में बुद्धि और तर्क व विज्ञान पर पूरी उत्तरे वाली सिबाये वेद के कही नहीं मिल सकती । (५) इस पहले मन्त्र का केन्द्र किन्तु 'उपपत्ति' दूसरे का 'बसो' और तीसरे मन्त्र का 'धाता' है । जिस के बाहर मन्त्र पूँज रहे हैं । (६) जब प्रकृत अपने (पिण्डे) शरीर को पवित्र बना लेता है और सब प्राणी मांश के लिये कुछ चाहता है, तो स्वाभाविक रूप से अपने परमात्मा के बनाये 'ब्रह्माण्ड' सप्तर का अवलोकन कर के, उसे अहान् शक्ति से चकित हो कर उसे भिन्नने के निर दोषता है ।

जिस के इन अंधोपतन से हम कोन से मत में जायेंगे, ईश्वर ही जाने । गुरु जो सिध्द के जीवन के शोध, सन्तान का हूरसा नहीं करता वह नरक में पड़ेगा । 'हृष्ट सिध्द यम लोक न हर्दई, सो गुरु धोर नरक मई परई' ।

शिक्षा द्वारा तो व्यक्तित्व में निष्कार ज्ञान आवश्यक है । यह (पृष्ठ ८ पर)

सत्कारकीय-

# आर्य जगत

वर्ष २६ रविवार ०२३, १७ जुलाई १९६६ [अंक २६]

## सभाओं की सम्मिलित बैठक

पंजाब की दोनों सभाओं—आर्य प्रादेशिक सभा और आर्य प्रतिनिधि सभा की आवश्यक अन्तर सभाओं के सदस्यों की सम्मिलित बैठक आर्य समाज माडल टाउन जालनगर के बन्धु मन्दिर के हॉल में ता० १० जुलाई रविवार को आरम्भ हुई। पंजाब के दो प्राणो हरियाना एवं पंजाब के रूप में बट जाने के बाद बलवान बर्ग प्रचार, भाषा शिक्षण, पत्रक एकाता के मूल में मिलने की बात व अन्य भी कई आवश्यक विषयों पर विचार करके किसी सर्वसम्मति निर्णय पर पहुँचने के लिए ऐसी बैठक बड़ी आवश्यक थी। यह बैठक उस समाज में सम्पन्न हुई, जो आर्य प्रादेशिक सभा से सम्मिलित है तथा उस की एक बड़ी विशेषता यह है कि वहाँ पन्द्रह भागों से एक यह पवित्र परम्परा जारी आ रही है कि छोटे बड़े विषयों से लेकर वार्षिक निर्वाचन जैसे विषय पर भी आज तक कभी मतभेद की बात तो दूर रही, मतदान तक भी नहीं हुआ। बहुमत व अल्पमत का प्रश्न ही नहीं आया। सारे विषय, निर्णय और कार्य सर्वसम्मति से होते हैं। जिसमें एक का भी मतभेद हो वह काम होता ही नहीं। कितनी स्वस्थ परम्परा है। इसका श्रेय वहाँ के अधिपति स्वर्गीय त्रिसिवल ज्ञानचन्द की भाँटिया तथा अतिव्रत सज्जन कण्ठन शिवराम जी, प्रो. वेदप्रकाश जी एम० ए० बादि छात्रजनों व माताओं को है। समाज का प्रश्न व आने वाले सारे छात्रजनों के लिए शान-पान, स्वागत संस्कार का प्रश्न भी तो बड़ा ही सुन्दर था।

दोनों सभाओं की अन्तर सभाओं के सदस्य पगारे थे। आर्य प्रादेशिक सभा की ओर से श्रीयुगल या जी प्रधान सभा, प्रो० वेदप्रकाश जी एम० ए० कन्धी, श्री० कुमारी विद्यावती जी कान्कर, कण्ठन शिवराम जी, वं० छदलस जी सार्न कान्कर, श्री मेहरकन्द

जी जोशी अम्बाला, ता० सन्तराम जी लुधियाना, श्री गुरारीनाल जी जोगेन्द्रनगर, ता० कितान चन्द जी प्रधान उपसभा देहली, त्रिसिवल प्यारेनाल जी वेरी, ता० सन्तोहराज जी अधिपति आर्य बगल, श्री परावर जी, वं० सत्यदेवी जी बिजालनगर, वं० गुर्गा दास जी आर्य पञ्ज, श्री नन्दबेहराज जी, त्रिसिवल लाराम जी हौस्मारपुर चौधरी बलवीरसिंह जी. वं० लक्ष्मण जी, त्रिसिवल चंचल दास जी आदि तथा आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रो० रामसिंह जी प्रधान सभा, वं० रघुवीर सिंह जी शास्त्री मन्वी, वं० जयदेव सिंह जी सिद्धांती M.P. प्रो० वेदसिंह जी, आचार्य भागवान देव जी, त्रिसिवल दीर्घतल जी पानीपत, श्री ज्ञानचन्द जी सप्रवाल आदि काफी सज्जन पगारे। प्रो० रामसिंह जी की प्रयत्नातों में बैठक आरम्भ हुई। प्रो० वेद प्रकाश जी मन्वी सभा के आरम्भ में सभा के समाज की ओर से सब का स्वागत किया। श्री यस जी प्रधान सभा में विस्तार के साथ पंजाब के पुनर्गठन पर आर्य सनाज के कार्य और सन्मान आने वाली सारी समस्याओं तथा इस परिस्थिति में मिल कर कार्य करने की प्रभावपूर्ण शब्दों में बर्ना की। प्रचार की समस्या, भाषा की तथा संस्थाओं के अधिक व शांतिपरक तथा समय र पर आने वाली समस्याओं को उपस्थित किया। इस के बाद अनेक सज्जनों ने अपने र विचार प्रकट किए। पंजाब के दो प्रांत बन जाने पर भी आर्यसमाज का क्षेत्र तो उसी प्रकार से रहना चाहिए तथा राष्ट्रभूषण हिंदी के प्रति की जाने वाली उपेक्षा को दूर करने का प्रयत्न जारी रखा जाये। आर्यसमाज अपनी पुरानी परम्परा की निमाता हुआ जलता का पथप्रदर्शन करता रहे। अन्तर र प्रांत बनने के बाद भी आर्य समाज के नाते हुए सारे एक ही समाज के विद्यालय परिवार का पुनर्वत्त अंग है तथा दोनों सभाओं

## स्वर्गीय ला० डॉक्टरदास की स्मृति में

आर्यसमाज के विद्यालय आंदोलन में निम्न-निम्न समय और स्थानों पर अनेक प्रकार के ऐसे मान्य महापुरुष हुए हैं व है, जिन्होंने समाज-निर्माण तथा सेवा कार्य में बहुत बड़ा योगदान दिया। इतिहास लिखते समय उनको पूरा सम्मान दिया जाना चाहिए। ऐसे ही समाज निर्माताओं में जालनगर के स्वर्गीय ला० डॉक्टरदास जी ब्रह्म भो थे। जालनगर के सामाजिक सेवकों, आर्यसमाज की संस्थाओं को उन्नत करने वाली एवं मौन रहकर, दिखावे आदर्श से दूर रहकर रात दिन समाज के लिए अपना समय देने वालों में इनका नाम बड़े आदर मान से रखा गया। जालनगर में डॉ० एम० बी० कान्कर, स्कूल, आर्यसमाज व आर्य प्रादेशिक सभा की भारी सेवा की उनका काम व स्मृति अमिट है। आर्यसमाज विक्रमपुरा जालनगर का नाम बना हुआ श्रेष्ठ समाज मन्दिर तो उनके पुत्र, श्रद्धा, सेवा तथा अर्थक परिश्रम की सदा दास दिव्यता रहेगा। रात दिन सड़े होकर इसे बनाने में लगे रहे। तब तो यह है कि स्वर्गीय ला० को मिल कर अपने सगल मूल के द्वारा जोर शोर से समाज प्रचार का कार्य जारी रखा जाए। इस पर सब बोलने वालों ने ऐक्यमत होकर बगल दिया। पंजाब की इन दोनों सभाओं को मिलकर एकता के सुन्दर व्यक्त परिचय जाने पर भी विचार सूक्त किये गये तथा दोनों प्रयत्नों को अधि-कार दिया गया कि इस दिशा में सर्पितिक का गठन कर एकता के काम को जागे बढ़ाया जाये। इस पंजाबी भाषी भाग में हिन्दी के सखल से लिए भी आर्यसमाज पूरा र प्रयत्न व प्रश्न करे इस में सारे एकमत हैं। इस प्रकार का प्रस्ताव पारित हुआ। तीन घण्टे तक बड़े सुन्दर विचार विषयों होते रहे। आर्यसमाज के प्रति-हास में इस बैठक में एक सुन्दर जलद्वय सेवा किया है। हम दोनों सभाओं के अन्तरगत सदस्यों व अधिपतियों को बघार्द देते हैं कि समाज की पहिचान करते हुए बड़े सुन्दर निर्णय किये हैं। प्रभु करे कि आर्यसमाज एकता के मूल में शिरोधार्य आकर जनजीवन का नेतृत्व करे। बाद में भोजन हुआ। माहन-टाउन समाज के अधिपतियों को भी बघार्द।

डॉक्टरदास जी प्रभु भक्त, वेद के प्यारे, किष्कान्धिक जीवन वाले, समाज के दीवाने तथा ऊँचे विचारों के थे। यह भी विशेषता थी कि उन्होंने अपने सारे परिवार के जीवन पर भी सर्व-व समाज प्रेम की गहरी छाप लगा रखी थी। परिवारों में आर्यसमाज बड़ी-बड़ी होती है। किन्तु उनका सारा परिवार ही प्रभु प्रेमी, देश भक्त तथा समाज सेवी है। उनके सुपुत्र ता० ज्ञानचन्द देहल में तथा परिवार के विचारों में तो आर्यसमाज की कभी न मिलने वाली छाप है। जन-पतियों की कठिनायों में कारी होती है, और भी सजाबट का सामान होता है। किन्तु अपनी शानदार व सम्पन्नता भरी कठिनायों में विद्यालय एवं सुन्दर यश शान्ता तो बहुत विरले परिवारों में होती है। ला० ज्ञानचन्द जी मूल की कठिनायों में जहाँ प्रयत्न होता है, वहाँ यश का कार्यक्रम भी अव्ययगति से चलता है। सारा परिवार यश व प्रभु का प्रेमी है। बर्षों से निरन्तर यश यश होता है। सारे परिवार में सीमाता, अर्थ भावना की सुगुण है। ला० ज्ञानचन्द जी सच-सुच स्वर्गीय समाज के सुपुत्र हैं। वार्षिक यश प्रशिक्षण के र परिवार में सुन्दरता से होता है। इन वर्ष सारे जुलाई सोमवार से लेकर १० जुलाई रविवार पुराणहित तक अर्पणी सभा की ओर से कार्यक्रम के नाते मुझे भी इस श्रेष्ठ यश में शामिल होने का अवसर मिला। वं० ज्ञानचन्द ब्रजनों-पदेशक तथा विक्रमपुरा समाज के पुरोहित वं० भीमसिंह जी शास्त्री भी साथ रहे। लगातार एक लगाह तक इस परिवार के सत्कारण एवं वं० कण्ठन अल्पमत समीपता से देखने का मौका मिला। मन सारे परिवार की सीमाता, यश प्रेम, ईश्वर निष्ठा एवं वेदप्रेम को देख-देख कर बड़ा ही प्रसन्न हो गया। जीवन व कर्म व्यवहार में ईश्वर-वेद प्रेम भर हुआ है। छोटा बहा प्रत्येक संस्था मोक्षता, मिठास की सजीव प्रतिया है। पतुर्वेद का छविनिष्ठा अन्वय तो दन के सारे परिवार के लिए जीवन का दैनिक पाठ का अन्वय बन गया है। पुराण-हित पर मान्य त्रिसिवल नीमैतन जी बहलन ए० ए० बी० कान्कर जालनगर, श्री द्यालनाल जी वेरी साई दास

(विशेष पृष्ठ ४ पर)

—विश्वरूपचन्द

# पंजाब की दोनों सभाओं के एकीकरण का फ़ैसला भाषा प्रश्न पर प्रधानमंत्री, गृहमंत्री को ज्ञापन दिए जाएंगे

### राज्य पुनर्गठन के बावजूद सभाओं के क्षेत्राधिकार ज्यों के त्यों

राज्य यहाँ आयं प्रतिनिधि सभा पंजाब और आयं प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब की कार्यरिणियों की एक संस्था कर एक करने का ऐतिहासिक निर्णय किया गया। बंटक की अध्या-शला आयं प्रतिनिधि सभा के प्रधान प्रो० रामसिंह ने की और इस ने प्रो० रामसिंह और आयं प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री गण की एक उपसमिति नियुक्त करने का अधिकार दिया जो दोनों सभाओं के परस्पर विचार के लिए सभी विवरण और औपचारिकताएँ तय करेगी। यह भी फ़ैसला हुआ है कि चाहे सरकार ने पंजाब का विभाजन कर दिया है, दोनों सभाओं के कार्य क्षेत्र वहीं रहेंगे जो इस समय हैं। आजकल इन सभाओं के क्षेत्राधिकार के वर्तमान पंजाब, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली और जम्मू काश्मीर शामिल हैं।

उल्लेखनीय है कि लगभग साठ वर्ष पूर्व पंजाब ने आर्यभारत की हिस्से में बंट गया था और दो अलग-अलग सभाएं बन गई थी। तब से यह दोनों बंटे ही चली आ रही है, इस समय दोनों सभाओं के लगभग सात ही आर्यसभाएं सम्बद्ध हैं। आर्य समाज के दो षट्ठे में बटने का कारण यह था कि तत्कालीन आयं प्रतिनिधि सभा केवल गुरुकुल शिक्षा पद्धति की ही समर्थक थी और महात्मा हंसराज जैसे वयोवृद्ध आर्यसमाज की शिक्षा शास्त्री और कई दूसरे लोग स्कूल-कॉलेज पद्धति के समर्थक थे। जब १९०५-०६ में शिक्षाएँ सरथा की स्थापना हुईं तो मत-भेदों के कारण ही सभाएं बन गईं। एक को साधारणतया गुरुकुल पार्टी (आर्य प्रतिनिधि सभा) कहा जाने लगा। नाहरी में यह संस्थाएं क्रमशः आर्यसमाज बच्छोवाली और आर्य-समाज अनारकली के नाम से प्रसिद्ध थीं। लेकिन दोनों में सिखा शिक्षा पद्धति के और कोई संबंदातिक या धार्मिक बिबाद या टकराव नहीं था। १९११-१२ में शिक्षा-पद्धति में मत-भेद भी घटने लगा। चुनाव गुरुकुल पार्टी ने गुरुकुल लोकेने शुरू कर दिए और

कॉलेज पार्टी वालों ने स्कूल, कॉलेज स्थापित करने शुरू कर दिए।

### भाषा समस्या पर प्रस्ताव

दो बंटक में पंजाब की भाषा समस्या पर एवं सम्बन्धित से एक महत्वपूर्ण प्रस्ताव पास किया गया। प्रस्ताव में कहा गया—'आर्य प्रतिनिधि सभा और आयं प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की कार्य कारिरिणियों की यह संयुक्त बंटक विचारा संकट करती है कि पंजाब के पुनर्गठन से विरपेश हिंदी के मिश्राएँ एवं प्रचार तथा अन्य सुविधाएं प्राप्त हैं वे ज्यों की त्यों कायम रहेंगी। इस सम्बन्ध में आर्य-समाज कोई भी परिवर्तन या प्रतिबन्ध सहन नहीं करेगा।'

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि प्रोफ़ेसर गेरसिंह, श्री अजमेर सिद्धाती और आचार्य भगवानदेव ने भी, जो पृथक परिष्काराएँ प्राप्त के कट्टर समर्थक रहे हैं, हिंदी के प्रश्न पर इस प्रस्ताव का पूर्ण समर्थन किया और प्रस्ताव को सर्वसम्मतित से स्वीकार हुआ।

पता चला है कि बंटक में यह निर्णय हुआ कि यदि सरकार ने हिंदी के शिक्षाएँ, प्रचार और प्रसार पर कोई प्रतिबन्ध समाप्त तो आर्यसमाज रिगति का मुक़ाबिला करने के लिए पर आश्चर्यक पम उठाएगा। पिछले पचास वर्षों से पंजाब में ५५ प्रतिशत छात्रों का शिक्षा माध्यम हिन्दी है।

### वन विहार तथा फलाहार

रविवार २४ जुलाई १९६६ की मध्याह्नोत्तर २ बजे से कोटला फिरोज़गढ़ (दिल्ली गेट के बाहर) में आर्य युवक परिषद् की ओर से शुक्र अनुसार एक विशेष समारोह का

टी. ए. जी. वनातन और देवसमाज आदि सभी शिक्षा संस्थाओं में शिक्षा का माध्यम हिन्दी रहा है। जहाँ तक मातृ भाषा का सम्बन्ध है किसी भी व्यक्ति की मातृभाषा वह भाषा होती है जिसे वह माता की तरह प्यार करता है। भाषा भाषाओं के फलने के अनुसार बच्चे की मातृ भाषा का निर्णय उसके माता-पिता ही कर सकते हैं न कि कोई अन्य व्यक्ति।

इसी बंटक में यह भी फ़ैसला किया गया कि भाषा के प्रश्न पर प्रधानमन्त्री, गृहमन्त्री और पंजाब के राज्यपाल को एक आपन दिया जाए। आपन का मसौदा एक उपसमिति तैयार करेगी जिसे दोनों सभाओं के प्रधान मनोनीत करेंगे। बंटक में पंजाब और दिल्ली के लगभग ७० सदस्य और विशेष रूप से आमन्त्रित व्यक्ति उपस्थित थे इनमें प्रिंसिपल रत्नायग प्रिंसिपल चचलदास, साता सतोप-राज, श्री बलदेवजी, प्रधान जालन्धर नगर पालिका, चौधरी जलबीरसिंह होशियापुरी, श्री रत्नबीरसिंह दीक्षित पानीपत, श्री लालचन्द सन्धवा, श्री रघुबीरसिंह शास्त्री, सत्यदेव जी और प्रिंसिपल विद्यावती आनन्द के नाम उल्लेखनीय हैं। रोहाक हिसार और मुडगाव से भी प्रतिनिधि आए हुए थे।

आयोजन किया गया है ४ फ़िल्लेस संगीत, कविता एक कट्टर मिशन आदि का कार्यक्रम होगा।

इसमें प्रत्येक व्यक्ति २) रुपए तबा बारह वर्ष तक के कुमार १) श्यामा देकर सम्मिलित हो सकते हैं। नाम तथा शुक्र २० जुलाई तक परिषद् के कार्यालय १९५४, मुक़ा दक्षिणीयग, दरियागंज में पहुंच जाने चाहिए।

### सत्यार्थ प्रकाश दान में दंष्ट्रारों से भी दिलावये

प्रति वर्ष की भाति इस वर्ष भी नेद सप्ताह में ४ सितम्बर, १९६६ को सारे देश में सत्यार्थ प्रकाश की परीक्षाएँ हो रही हैं। स्थानीय विन क्षेत्रों में सत्यार्थ प्रकाश पुस्तक नहीं है उन में परीक्षापत्रों की सहायता के लिए हमें आप स्वयं सत्यार्थ प्रकाश दान में दे व दूसरों से विचारायें। सार्वदेशिक सभा सत्यार्थप्रकाश २) रुपये में देती है। इस के हिस्सा दे रुपये या पुस्तकें परिषद् के कार्यालय में भिजवाने की कृपा करें। जिस से परीक्षापत्रों के स्थापनायार्थ दे पुस्तकें केन्द्रों को दी जा सकें।

मन्त्री—ओमप्रकाश जी  
आर्य युवक परिषद् दिल्ली (रजि०)

### स्वर्गीय ला० शंकरदास

### की स्मृति में

(एड० का वेध)

स्कूल, प्रि० विद्यावती आनन्द जी हंसराज महिषा कालेज, प्रो० सत्यदेव जी विद्याकार, सा० इन्द्रेनी जी, सा० चमनलाल जी, श्रद्धाया से ला० सन्तराज जी, ला० सतोपराज जी, प्रि० चचलदास जी, प० कुनादेव जी आर्यभंडू, कॅम्पन विहारवाजी जी, ला० बलदेवराज जी प्रधान नगर-पालिका, प्रो० किलनचन्द जी, प्रो० वेदीपराज जी एम००, प्रो० मंज जी, समाजों के मान्य अधिकारी भाई बहिन, नगर के गृथ मान्य व्यक्ति तथा मित्र बहनु बान और देविया भारी संस्था में पुराहिणित पर पचाती थी। इत्य बड़ा ही सुन्दर था। सबने परिवार की पुण्यो की वर्षा से आशीर्वाद दिया। श्रद्धाजिन्दाय्य स्वर्ग की गईं। समाजोह से कार्यरत समाज हुआ। इस परिवार के धर्म श्रेम को देखकर ढकी प्रसन्नता हुई। बा० जानचन्द जी बंधन, उनकी धर्म परा-यथा वर्तमानो तथा सारे परिवार को बर्धाई हो। इतने सारे परिवार को बर्धाई हो। इतने जीवन में प्रस्था मिलती रहे। —श्रीलोकचन्द्र



### ★ मधु-कलत्रा ★

(श्री विजय निबांध जो, आडिटर इन्चार्ज पंजाब केसरी)

(१)  
बुद्ध आज तक कभी धिक्क का भ्रमा नहीं कर पाया, सारा अमन के बराबरक ने सबको मुक्त पड़वाया, अतः मुनास्वित है इतिहास में जियो मले के बल पर, मत पवने दो मन के उभर कभी बुद्ध की छाया।

(२)  
जब चाहो जितना भी चाहो उतना जोर लगाओ, मगर दोस्ती नामुपकिन है अधिक भाष्य ने पाता, किसी कुए से मरने मने ही तुम सागर से भर लो, सदा षट्ठे के जन्वर पानी एक बराबर आता।

(३)  
साते छपन मोष कभी यह मुझे चने चवाते, कभी छोट पर कभी टाट पर अपनी रात बिताते, जिस हलत ने रह बियापता उसने ही लुप्त रहते, महापुरुष सीमा से हटकर कदम नहीं पर पाते।



कुछ बर्षों से विहार में एक मात्र अर्थशास्त्र के रखा है। उसका नाम है 'आनन्द मार्ग'। इसके प्रसंगिक

ब्रह्माचार रंजन सरकार एक बंधारी हैं।

वे बंगालपुर (गुरंग) के रहने वाले हैं। वे बंगाल के नाम करते हैं और आनन्द मार्ग के नाम से ही उसका अन्वेषण होता है। अतः उनके नाम का नाम उसी के नाम से आनन्द मार्ग प्रचलित है। आनन्द मार्ग जी को भी उनके नाम से जाना जाता है। जब भारत मण्डली में जाते हैं तो उनके ठीक जाने के पहले उनके भ्राता एक सामूहिक भजन करते हैं कि—हे मिलनी के नेत्र बाने बाने, बहिर्या को तारने बाने, गुदराज को स्वर्ग भेजने बाने! हे गोपियों के साथ श्रीश्या करके बाने! हम भक्तों को बंधो भूले हो? आलो हय जेज गोपालबाल तथा गोपिया आप के बंधन के बंधे सातायित है। आलो।

स्वयं रहें आलो मे एनी और पुत्र्य दोनों रहें! किन्तु शिरोयो की सत्या अधिक रहती है। आनन्दमूर्ति जी सर्वो से नहीं मिलते हैं, वे सार्वजनिक सभाओं में भाग्य नहीं करते हैं किन्तु जाते हैं तो उनके अनुयायी उन्हें शिवा कर रखते हैं। यदि कोई चाहें कि मैं आनन्दमूर्ति जी से कुछ बातें बताना करूं तो उसे तब तक स्वीकृति नहीं मिलती है, जब तक वह शिवा न करता है, एवं जेज तोड़ कर न फेंके है। आनन्दमूर्ति जी शिवा और जेज के कट्टर विरोधी हैं। उनका कहना है कि शिवा और सत्य से शिवायता उपन्यस्त होती है तथा मिथ्या अभिमान होता है। आनन्द मार्ग की एक छोटी-सी पुस्तिका है 'आनन्द मार्ग चर्चाचर्चा' उस में शिवा है कि जनेन्द्रिय की उपर शारीरिक बंधारी को भी हटा देना चाहिये अर्थात् वे खलता का समर्थन करते हैं।

आनन्दमार्ग में 'ब्रह्मचर्य' का अर्थ ईश्वर के पास पहुँचना है। अतः मांस में काम से काम साधक को एक बार वीर्यपात अवश्य कर लेना चाहिये। जो बाल ब्रह्मचारी है, उसके लिए आनन्द मार्ग में कोई स्थान नहीं है। वे दोगी कहलाते हैं, जो ब्रह्मचर्य का का अर्थ वीर्यपात करते हैं।

आनन्द मार्ग में सत्यास का कोई महत्व नहीं, आनन्द मूर्ति जी का कहना है, यह आश्रम व्यवस्था पालन्य है। संन्यास सेक्टर पर छोड़ना मिथ्या है। ब्राह्मणों से अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए संन्यास घस बसाया है। आनन्दमूर्तिजी कहते हैं कि 'संन्यास' का अर्थ सम+

## आनन्द मार्ग

श्री रामानन्दजी आश्रमी उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार

न्यास नहीं अपितु सत् + न्यास है।

आनन्द मार्ग अविहीन के विषय है उसके मत में ३ ऋतु तथा ४ महा-यज्ञ हैं।

- (१) माता-पिता की सेवा, प्रथम यज्ञ।
- (२) साधना दूसरा यज्ञ।
- (३) गुरु की पूजा तीसरा यज्ञ।
- (४) गुरु की सर्वस्व अर्पण।

आनन्द मार्ग में गुरु को सर्वस्व अर्पित करने का आदेश है। एक साधक या साधिका जब दीक्षा ग्रहण करता है या करती है तो उसे धारी के अर्थक अंग पर हाथ रखकर कहना होता है कि यह सब मेरा नहीं, अपितु गुरु जी का है। इसपर निरन्तर

अभ्यास किया जाता है कि मन में पूर्ण आनना उत्पन्न हो जाए कि यह अनुभव भी न हो कि गुरु जी का यह अंग नहीं है। जब साधक या साधिका पूर्णता को प्राप्त कर जाती है तो गुरु जी को अपना अभिन्न अंग समझती है।

आनन्द मार्ग में आनन्द मूर्ति जी के दिना कोई तिथि को नहीं माना कर सकता है। भक्तों का कहना है कि हमारे गुरुदेव अत्यन्त ही हैं, उन्होंने हैं अनेक अवतार धारण किये, किन्तु स्वर्ग का अवतार वेप था, इसपर जब इस रूप में आए हैं इसके परचाय जीवन युक्त हो जायें।

आनन्द मार्ग में साधन का महत्व प्रथम है—कहते को तो यम, नियम कहा जाता है किन्तु भोजन पान पर कोई नियम नहीं है जिसकी अभिर जिस शब्द में हो बस उषी से साधक हो सकते हैं। प्रत्येक सप्ताह में एक स्वयं पर बहू के स्थानीय मार्गी एकत्र होते हैं, एक विशेष स्थान में बहू और दूसरे का प्रवेश तिथि है, एक ही दीपक बुझा कर समाधि में लीन हो जाते हैं। जो बिल्कुल समाधिस्थ हो जाता है तो विभिन्न पञ्चुओं की बोली बोलता है। आनन्द-भागियों की समाधि काक, बटेर, कोयल, कुत्ता, बिल्ली आदि सबों की बोली से पूर्ण रहती है। इन की पुस्तक का नाम है—'जीवन वेद' जो दो भागों में छाया है, किन्तु सर्वों को यह पुस्तक लभ्य नहीं है। ये लोग वाचमार्ग के समान गुरु की पूजा को अपना प्रतीक मानते हैं। यह नया कल्पित पूजावादी मख-

वाप विहार में उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा है। इसमें दीक्षा देने वाले 'आचार्य' कहलाते हैं। आनन्द मार्ग की आचार्य के बिना कोई काम नहीं करना चाहिए। वे आचार्य ही गुरु के पाम पहुँच सकते हैं। एक नूतन माधक को पहले आचार्य के पास जाना पड़ता है। जब आचार्य समक लेते हैं कि अब यह गुरु के पास जाने लायक हो गया तो गुरु जी के पास भेजते हैं। जब गुरु जी योग की विधिपद पढति बनते हैं। कहते हैं कि गुरु आनन्द-मूर्ति जी गुरुत्वधारी हैं। इन्होंने अभी एक दूसरी शायी की है। भक्तों का कहना है कि नवबाला ने गुरु जी की सेवा में अपने को अर्पित कर दिया, अतएव गुरु जी को उसे ग्रहण करना पडा। दिन प्रतिदिन भक्तों की सत्या बढ़ रही है, पुत्रिम के कर्मचारी, आचारी विभाग के आधिकार प्रसिद्धि सत्या बढ़ा रहे हैं। किये की समाज से वृद्धिपन्न है किन्तु गुरु जी की सेवा में जाकर अवसृत कहलाते हैं। इन्होंने विहार के 'योनीय स्थानों में विद्यु विद्यालय भी खोले हैं। जिनमें लड़कों को 'अर्थ' माध्यम में शिक्षा दी जाती है। उद्देश्य यह है कि छोटी अक्षर्या से ही बालको के मस्तिष्क में आनन्द-मार्ग की शिक्षा दी जाए। आनन्दमूर्ति जी देशोपनिषद की व्याख्या भी करते हैं। वेद और सस्मृत साहित्य में अनभिज्ञ होते हुए भी सर्वज्ञ हैं। 'अर्थ' में नीयमाना यथार्थता वाली कहावत चरितार्थ है।

आनन्दमूर्ति जी जब समाज अथवा राष्ट्र सम्बन्धी भाग्य करने हैं तो उस समय अपना नाम 'मन्मन् रंजन सरकार' नाम से प्रकलित करने हैं। उनकी एक सस्था—Progressive Federation of India भारत प्रगतिशील सघ। बंगला भाग में इन का एक सभाकार पत्र भी निकलता है जिस का नाम 'नूतन पृथ्वी' है। आनन्द मार्ग राष्ट्र भाषा हिन्दी का विरोधी है। प्रगत रंजन सरकार शायी जी की अहिंसा को बहुत ही बराबर समझते हैं, इनकी दृष्टि में एक ही नेता है—वे नेता जी सुभाषचन्द्र बोस। इन का टाकनीक विचार भी

एक पहेली है। शक्ति विचार तो पाठक बोधा जान ही सके हैं।

अब जनता का कर्तव्य है कि इन नूतन अर्थिक घस से राष्ट्र को अवगत कराये, नही तो व्यक्ति-सुभाषादी घस से राष्ट्र का बहुत बड़ा अकथ्यास हो सकता है।

आर्यमातृपत्र से सामार

### सूचना

राज्यों में वंशी अनुशासन हीनता को दूर कर उनमें तथा शोरी में स्थापना की प्रवृत्ति जागृत करने का एक मात्र उपाय धार्मिक शिक्षा है। माग ही आर्य समाज में नवीन रसा का प्रवेश भी धार्मिक स्वाध्याय की प्रवृत्ति जागृत करने में ही होगा। इस घस को इष्टि में रखते हुए भारतवर्ष में वैदिक सिद्धांत परिषद ने सिद्धांत विचारार, सिद्धांत मूक्य सिद्धांत-तत्त्वात्क तथा सिद्धांतार्थ (दी सन्धो में) परीक्षाओं का आयोजन किया है।

भारत में सर्वप्रथम, द्वितीय और तृतीय आने वाले छात्रों को बर्ष-भर का शुल्क पुरस्कार स्वरूप भेंट किया जायेगा। उत्तीर्ण होने पर सुनहरी पत्र प्रदान किया जाता है। अधिक परीक्षापिण्डों को सम्मिलित होकर आर्य समाज के प्रचार कार्य में सहभाग्य देना चाहिए।

परीक्षा मन्त्री,

भारतवर्षीय वैदिक सिद्धांतपरिषद  
परीक्षा कार्यालय, अलीपट

—मित्रनेत्र आर्य

—मित्रनेत्र आर्य

—मित्रनेत्र आर्य

—मित्रनेत्र आर्य

—मित्रनेत्र आर्य

—मित्रनेत्र आर्य

—मित्रनेत्र आर्य

—मित्रनेत्र आर्य

—मित्रनेत्र आर्य

—मित्रनेत्र आर्य

—मित्रनेत्र आर्य

—मित्रनेत्र आर्य

—मित्रनेत्र आर्य

—मित्रनेत्र आर्य

—मित्रनेत्र आर्य

—मित्रनेत्र आर्य

—मित्रनेत्र आर्य

—मित्रनेत्र आर्य

—मित्रनेत्र आर्य

—मित्रनेत्र आर्य

—मित्रनेत्र आर्य

—मित्रनेत्र आर्य

—मित्रनेत्र आर्य

—मित्रनेत्र आर्य

—मित्रनेत्र आर्य

—मित्रनेत्र आर्य

—मित्रनेत्र आर्य

—मित्रनेत्र आर्य

—मित्रनेत्र आर्य

—मित्रनेत्र आर्य

—मित्रनेत्र आर्य

—मित्रनेत्र आर्य

—मित्रनेत्र आर्य

—मित्रनेत्र आर्य

—मित्रनेत्र आर्य

—मित्रनेत्र आर्य

### आर्य समाज धर्मशास्त्र...

(पृष्ठ ६ का लेख)

तक श्री प्रधान जी के निवास स्थान पर सप्ताह भर सलग का आयोजन भी सुरू सधन रहा। शिपो बाजार के आर्य-बहिन्त उस सलग में सम्मिलित होकर सत्र उठाते रहे। सत्रमय दो सप्ताह बर्माशाला निवासी आश्रमाग में स्थान करते रहे। हस सत्रा के तथा अपने माध्य उपदेशक प्रचारक महाशु-भाबों के विशेष कुशल है और आजा करते हैं कि इसी प्रकार प्रचार की योजना द्वारा हमें कृतार्थ किया जाता रहेगा।

समाज की ओर से १०१) वेद प्रचार ५) भाग्य अर्थ तथा ६) युक्त आनन्दभक्त भेट किये गए।

—मन्त्री आर्यसमाज धर्मशास्त्रा



## सेंसर बोर्ड के अधिकारियों द्वारा भारत की ४६ करोड़ जनता के मविष्य के साथ खिलवाड़

प्रश्नक—ओमप्रकाश आर्य विकल्प उज्जैन म० प्र०

भारत में बढ़ती हुई शक्ति हीनाता मुष्कारदी एव बनावतार, अपहरण शक्ति की गणना आतंकवाद चर्चा का विषय बनी हुई है। परन्तु इस के कारण की तरफ कभी किसी ने ध्यान नहीं दिया है। इसका एक मात्र कारण है। 'अस्वीकृत' चर चित्र एव चित्रोबा के सिद्धांतों का जगना लिखावने वाला संसार बोर्ड के अधिकारी देश के करोड़ों लोगों के जन जीवन के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं।

अभी-अभी मेरी निगाह फ़िल्म 'बदमाश' के पोस्टरों की तरफ पड़ी मेरे दिल में बड़ी ख्याल आया कि ऐसे अस्वीकृत चित्रों को पास करने वाला संसार बोर्ड की किसी से कम नहीं है।

संसारबोर्ड द्वारा पास किये गये चित्रों में बिनाही अस्वीकृता पाई जाती है, यह तो फ़िल्म के अन्दर ही रह जाते हैं। परन्तु बाहर के बाजारक अस्वीकृत चित्रों के द्वारा जो पब्लिसिटी की जाती है, यह मनुष्य को पतल के मार्ग पर ले जाने में काफी है। इस के पूर्व इन्दौर में अस्वीकृत, चित्रों के विरुद्ध आन्दोलन चलाया था। वहाँ की महिलाएँ और बच्चे ने भी साथ दिया था, परन्तु चित्रोबा भी अपने स्थान पर ही है और महिलाएँ और बच्चे भी उनके स्थान पर ही ?

जब हम यह जानना चाहेते कि चित्रोबा यांचे का आन्दोलन सिद्ध एक ही अस्वीकृत चित्र 'सन्धे हाथ' के पोस्टर में था। क्या उनको इस आन्दोलन में समात होने के परचात् देश में अस्वीकृता के चित्रों में यांचे साथ अस्वीकृता का जनावा निकल गया ? यह नहीं तो चित्रोबा यांचे की बाणी को लक्ष्या क्यों पाया गया है ? नगर के चौकड़ों पर अस्वीकृत बोर्ड, चिन्हे स्कूल में जाने वाली छात्राएँ देखती हैं, तो उनकी गर्वन धार्य से नीचे झुक जाती है। ये अस्वीकृत चल-चित्र।

लालों मनुष्यों के हृदय में वासना-रूपी जहर धोखने के लिए काफी हैं।

चित्रोबा में बने वाली फ़िल्म 'आर्य और हवा' को कि अर्थ की में

बने वाली है, जिसमें यादमी और औरतो को पूर्णतः नया विश्वास आया वह यदि भारत में प्रदर्शित हुई तो लोगों पर अवर क्या होगा। और उनके पोस्टर किस प्रकार के हूँगे, आप स्वयं ही कल्पना कर सकते हैं, यह क्या नोनिहाली, तलख युवक और युवतियों को चारित्रिक पतन की ओर अग्रसर नहीं करेगी।

फ़िल्मों की बनावत ही देश परचि हीनाता के पथ पर अग्रसर है। जबकि परचाल्य लोग, भारतीय समाज को संकष्टि की अपनाने में अपना पौरव समझते हैं। यही भारत में परचाल्य समाज का और जोर बढ़ता जा रहा है। आतंकवादी तो इन्हीं फ़िल्मों की बनावत महिलाओं के वस्त्र, गले से आकर घीने तक उदार आये हैं। तथा बस्त्रों का पहनाया इस प्रकार का हो गया है कि, जल्मे कपड़े के अन्वय तक आध्मे तगते हैं। मानो कि जल्मे ही अपने शरीर को उकाने के लिए ही नहीं बल्कि शरीरके प्रदर्शन के लिए किए हैं। इन्हीं बस्त्रों को पहनकर जब नगरिया सड़की पर चलती हैं, तब यह चारों तरफ गूँही देखती हैं कि हमारी तरफ कोई देख रहा है अथवा नहीं ? मानो कि यह नृत्य नहीं पहनती अपने शरीर का प्रदर्शन कर रही है।

देवा में बढते हुए रोमांस, अपहरण बनावतार, लखफ़िल्मों के आगने, के समाचार इन्हीं की देन है।

सली लोक प्रियता प्राप्त करने के लिए चित्रोबायांचे के इन्दौर में अस्वीकृत, चित्रों का आन्दोलन चलाया था। परन्तु यह आन्दोलन भी आंघी की तरफ़ बनाया और पूँजान की तरफ़ चलाया गया, फ़िल्म में बढ़ती हुई अस्वीकृता का अनुमान आप ही कर सकते हैं। यदि संसार बोर्ड का दल चले तो यह एक दिन भारतीय फ़िल्मों में भी अस्वीकृतियों के मनुष्य पौज पास करके भारत में महिलाओं को मनुष्य पुरायेगे। क्योंकि यह कह सत्य है कि फ़िल्मों में जिस प्रकार के वस्त्र पहनकर, अस्वीकृता व अस्वीकृतिया प्रदर्शित की जाती हैं उन्ही प्रकार की महिलाएँ वस्त्र पहनती हैं। बड़े-बड़े

## आर्य संस्थाओं तथा आर्य बन्धुओं से निवेदन

से०—श्री सुरारी लाल जी मंत्री आर्यसमाज जोगेन्द्र नगर

आर्य समाज जोगिन्द्र नगर ने पन्ना केसरी वाला साक्षरत की जन्म दाताम्नी के वपसल में अपने बापिक उत्सव पर दिनांक १३ अगस्त १९६६ को अंसासी के महत्त्वपूर्ण दिवस पर लाला साक्षरत राम पुस्तकालय एवं दैनिक साधनालय की स्थापना की है। जनता में आर्य समाज तथा महर्षि दयानन्द की विचारधारा का प्रचार दैनिक पत्र, साप्ताहिक व मासिक पत्रिकाओं और साहित्य द्वारा पहूँचाये में पुस्तकालय एवं साधनालय का स्थान बहुत महत्त्वपूर्ण रहता है। भारत में आज ईसाई मिशनरियों में स्थान २ पर दैनिक साधनालय तथा साक्षरती द्वारा अपने साहित्य का प्रचार कर ईसाई मत का विनाश कर रहे हैं प्रत्येक आर्य समाज के अर्नत दैनिक साधनालय एवं पुस्तकालय कोल कर आर्यसमाज के प्रचार को बढ़ावा दिया जाना आज के युग में अतिआवश्यक है जिस से दैनिक पत्रों के साथ २ आर्यसमाज का साहित्य द्वारा जनता में प्रचारी हो सकता है। आर्यसमाज ने इसी उद्देश्य से लाला साक्षरत साक्षरती की स्थापना की है।

२—लाला साक्षरताराम आर्य-समाज को अपनी माता और महर्षि दयानन्द को अपने गुरु मानते थे लाला साक्षरताराम ने जहाँ आर्यसमाज के विद्यालय में सक्रिय काम किया था वहाँ स्वतन्त्रता संग्राम में भी अपनी अमिट छाप छोड़ पाए हैं वहाँ पन्ना केसरी प्रभावशाली नहीं जहा ये बड़ा उच्चकोटि के लेखक भी थे। उन्होंने अमेरिका में 'आर्यसमाज' नामक पुस्तक भी लिखी है इसके अतिरिक्त अनेकों विषय पर सम्य-समय पर साहित्य का सम्पादन करते रहे हैं परन्तु आज पंजाब केसरी लाला साक्षरताराम द्वारा लिखित पुस्तकें आर्य प्रतिनिधि व सांवेदविक प्रकाशन विभाग में नहीं है और भारतभूट में भी बहुत कम मिलती हैं इसलिए आर्य बन्धुओं तथा आर्य-संस्थाओं के पास लाला साक्षरताराम

बहुरों में तो महिलाएँ अपने साथ बच्चियों को इन्हीं उद्देश्य से लिखाया दिखाते ले जाती हैं कि यह बच्चियों के बस्त्रों के सिद्धांत देवे व इस प्रकार के बस्त्र की कर दे।

द्वारा लिखित पुस्तकें व अन्य साहित्य-कारों द्वारा प्रकाश केसरी लाला साक्षरताराम पर लिखित पुस्तकें हों तो कृपया भेजने का कष्ट करें या सृष्टि करने का कष्ट करें।

३—दूसरा निवेदन यह है कि लाला साक्षरताराम साक्षरती को पन्ना केसरी लाला साक्षरताराम के विन्-विन् प्रकार के चित्रों की भी आवश्यकता है जिन-जिन महापुरुषों के पास हो तो भेजने का कष्ट करें।

४—तीसरा आर्य संस्थाओं एवं दानी महापुरुषों की सेवा में गुरुजी निवेदन तथा अपील है कि इस संस्था को उन्नतिशील बनाने हेतु सामाजिक, राष्ट्रीय, अत्याधुनिक बंधित धर्म और मनुष्य पुत्रों के जीवन परचि समन्वित पुस्तकें दान रूप में भेज कर पुस्तकालय को विकसित करने में तन, मन, धन से सक्रिय सहयोग देकर कृतार्थ करें।

नोट—समस्त प्रकार के मुद्रक एव महापुत्रों कीयान्-रुचिकुमार अम्बी लाला साक्षरताराम साक्षरती की आर्य समाज जोगेन्द्र नगर के पते पर भेजने का कष्ट करें।

## आर्यसमाज धर्मशाला (कांगड़ा) में प्रचार

आर्य आधेविक प्रतिनिधि सभा पन्ना की ओर ले कागड़ा जिला से प्रचारार्थ सभा के सुयोग्य उपदेशक श्री ओमप्रकाश जी तथा प्रसिद्ध मन्व मन्थनी श्री डा० गुरासिंह जी तथा श्री नटपूराम जी प्रमत्त कर रहे हैं। २२-५-६६ से ४-७-६६ तक आर्य-समाज धर्मशाला में बड़ी प्रथमपथ के साथ प्रचार कार्य सम्पन्न हुआ। बापकिनि रामप्रास की कथा को लोगों में बड़े पाव से सुना और बहोत संघर्षों की निम्ति हो कर उनके ज्ञान में इस कथा से पर्याप्त वृद्धि हुई। डा० गुरासिंह जी व श्री नटपूराम जी के अत्रयोपदेश सम्भाव्यतार सुबू रंज जमाते रहे। भवन मण्डली की तन्म और कार्य संघों की सभी धाताओं ने मुक्त कष्ट ले प्रशंसा की।

आर्यसमाज मन्विर में कथा का कार्यक्रम पत्रि की ८। से १० तक चलता था परन्तु मन्वाछ में ४ से ५। (पेज पृष्ठ ५ पर)

# यजुर्वेद यज्ञ और श्रद्धाजलि समारोह

आर्य समाज के नेता स्वर्गीय ला० शंकरदास जी के परिवार में उनकी बायिक स्मृति में यजुर्वेद पारायण यज्ञ की समारोह पूर्वक पुरोहित के अवगार पर बड़ी सज्जा में उनके परिवार में अगार के गण-गण्य भाई बहिन पवारी कई माय्य सज्जानों ने सारे परिवार को चलाई दी। स्वर्गीय के प्रति अष्टा-जयिया व्यक्त की।

सब से पहिले डी ए. बी. कालेज के प्रिंसिपल श्री भीरसेन जी बहल ने परिवार को बधाई देते हुए कहा कि स्वर्गीय ला० शंकर दास जी आर्यसमाज के बड़े प्रणे, थे। दामानन्द कालेज हो या स्कूल, समा ही या समाज सब की सेवा के लिए उन्होंने बड़ा तन किया उन का परिवार भी अपने पिता के सेवा मार्ग पर चलता रहे।

साईंस एनो वैदिक H/S स्कूल जालन्धर के प्रिन्सिपल श्री प्यारदान जी बेरी ने बोलते हुए कहा—जय आर्य समाज विभक्तुरा का नाम जाता है. सब ला० शंकरदास जी याद आ जाते हैं। उन के तप के बिना सत्ता गिराव मन्दिर खड़ा न होता। तन मन लगाना अवली बुझनी है। एक वीरक बल कर सारे दीनकों को अस्पन्ना देता है। बहु उच्छ्वल वीरक थे। आज समाज को कार्यका चाहिए। उन जैसी मन भरी जाये।

श्री वेदीशम जी एम० ने मन्ना की ओर से श्रद्धाजान देते हुए कहा कि आज हम तिस पञ्चितामा का स्मरण कर रहे हैं उनके चरणों में बैठकर मैंने बहुत कुछ सीखा है। मुझ्क अपने स्मृति लेने थे। जन्म में भीमर होते हुए भी साध चलते उनके जीवन श्रद्धा और कर्म का मन्ना समायक था। स्वर्गीय का यह अर्थ यह भी है कि बाल्मा में रमण करने वाला। इस दिशा में भी बहु बहुत ऊँचे थे।

जालन्धर नगरपालिका के प्रधान सा० बलदेवराज जी ने बोलते हुए कहा कि स्वर्गीय ला० शंकरदास जी आज शरीर के रूप में तो हमारे पास नहीं है परन्तु मित्रा रूप में उनका जीवन आज भी हमारा पक्-प्रदान करता है। पुत्र के लिए अपने पिता की सबसे सुन्दर स्मृति यह है कि वह पिता के बने, आश्यों को अपनाता थाये। माता का मन जीत लें तथा पुत्रो को उन्नत करता रहे।

आर्यसमाज लुधियाना माडल-टाउन के प्रधान सा० सत्तराम जी ने

सुन्दर वाक्यों में कहा कि—जब मैंने स्वर्गीय ला० शंकरदास जी के पहली बार दर्शन किए तो मन में बड़ी प्रसन्नता हुई। आर्य समाज के लिए उनके मन में बड़ी तथ्य था। मुझकों को तो वह सदा सेवा के काम करने की प्रेरणा किया करते थे। प० सत्यदेव जी विद्यालकार ने भाव भरे शब्दों में बोलते हुए कहा कि—समाज में नेता-गिरि करने वाले लोग तो बहुत मिल जाये। किन्तु समाज में भाइ लाने वाले श्रद्धालुओं की बड़ी कमी है। स्वर्गीय ला० शंकरदास जी सच्चे समाज सेवी थे। ऐसे व्यक्ति बिरले ही होते हैं। बिना पूरा का समाज मन्दिर बनना गये। एक बात है। यदि समाज मन्दिर में समाज रहे तभी वह समाज मन्दिर है। अन्यथा वह कुछ और ही है। हमें इतर ध्यान देना है आर्यसमाज माडल टाउन जालन्धर के मान्य फेडन निवासराम जी ने श्रद्धाजलि देते हुए कहा—कि परिवार के लिए जीने वाले तो बहुत होते हैं किन्तु समाज की सेवा में अपना जीवन देने वाले कम होते हैं. ला० शंकरदास जी का जीवन साक्षात् यमराज था। आर्यसमाज की सेवा में तो वह पूष. गर्मी का भी विचार नहीं करते थे। युद्ध आयु में भी उन्हें यजमानों की विपरित काम करनी पड़ी। यह सच्चे कर्मयोगी थे। उनका यह परिवार प्रभु करे फूले-फले। माडल टाउन समाज के मान्य

आर्य समाज धारोदान—  
में प० त्रिविको चन्द्र शास्त्री ब ५०  
आन चन्द जी नजरोपदेशक समा की  
कथा तथा मयूर भजनों द्वारा पवार  
हुआ। एक दिन प० अणा राम जी  
शास्त्री मन्त्री समझ के प्रकष में  
माडल स्कूल में भी दोपं का उपदेश  
ब भजन हुए। समाज का वाग-मन्त्र  
भी अकहुर नाम में जितन किया  
गया। एक दिन डी० ए० वी० स्कूल  
में भी प्रचार किया गया। समा को  
वेद प्रचार भी मिला।

## आर्य समाज गुनदातपुर—

में भी प० त्रिविको चन्द्र शास्त्री तथा  
प० आन चन्द जी नजरोपदेशक समा  
की ओर से प्रचारार्थ गये। वहा भी  
समाज का बायिकमय अस्तुत्र मान  
में निमत किया गया।

## जालन्धर में यजुर्वेद यज्ञ—

आर्यसमाज के स्वर्गीय नेता ला०  
शंकरदास जी प्रेरण के मुद्रु भी गान  
ला० देवचन्द्र जी ने भी ५० नामिक  
शब्दों में श्रद्धाजलि दी। प० त्रिविको-  
चन्द्र शास्त्री ने सबसे निवेदन किया  
कि स्वर्गीय ला० शंकरदास जी इस  
परिवार के पिता थे—इस तथे परि-  
वार ने जो अपना कर्तव्य पूर्ण किया,  
पर बहु समज के भी थे. अपने वर्ष  
समाज उनका दिवस मनाए।

## समाज द्वारा

# समाजों में प्रचार व कथाएं

आर्य समाज धारोदान—  
में प० त्रिविको चन्द्र शास्त्री ब ५०  
आन चन्द जी नजरोपदेशक समा की  
कथा तथा मयूर भजनों द्वारा पवार  
हुआ। एक दिन प० अणा राम जी  
शास्त्री मन्त्री समझ के प्रकष में  
माडल स्कूल में भी दोपं का उपदेश  
ब भजन हुए। समाज का वाग-मन्त्र  
भी अकहुर नाम में जितन किया  
गया। एक दिन डी० ए० वी० स्कूल  
में भी प्रचार किया गया। समा को  
वेद प्रचार भी मिला।

## आर्य समाज गुनदातपुर—

में भी प० त्रिविको चन्द्र शास्त्री तथा  
प० आन चन्द जी नजरोपदेशक समा  
की ओर से प्रचारार्थ गये। वहा भी  
समाज का बायिकमय अस्तुत्र मान  
में निमत किया गया।

## जालन्धर में यजुर्वेद यज्ञ—

आर्यसमाज के स्वर्गीय नेता ला०  
शंकरदास जी प्रेरण के मुद्रु भी गान  
ला० देवचन्द्र जी ने भी ५० नामिक  
शब्दों में श्रद्धाजलि दी। प० त्रिविको-  
चन्द्र शास्त्री ने सबसे निवेदन किया  
कि स्वर्गीय ला० शंकरदास जी इस  
परिवार के पिता थे—इस तथे परि-  
वार ने जो अपना कर्तव्य पूर्ण किया,  
पर बहु समज के भी थे. अपने वर्ष  
समाज उनका दिवस मनाए।

चन्द जी प्रेरण ने अपने परिवार में  
पुत्री ५० ५५५ माडल राय नगर  
माडल टाउन में अपने पूष्य स्वर्गीय  
पिता की बायिक पुष्य स्मृति  
में यजुर्वेद पारायण यज्ञ ता चार जुलाई  
ग मयात्र में प्रारम्भ किया। ता० १०  
अतारों को मयात्रो के पुरोहित हुई।  
ता० में मया की ओर में प० त्रिविको  
चन्द्र शास्त्री ५० आन चन्द जी  
नजरोपदेशक तथा आर्य समाज प्रियम  
पुष्य जालन्धर के पुरोहित प० भीष  
सिंह जी गानिक हुए।

## आर्यसमाज माडल हाउस

में पण्डित सुशी राय जी मन्त्री महा-  
पदक मन्ना की मनोहर कथा तथा  
प० गेला रम्य जी के मयूर भजन  
होते रहे। जनता ने का सई  
मगील ने बड़ा साम उठया। तर-  
नारिषो की काफी उपस्थिति होती  
रही। स्त्री समाज के मन्त्रय ने प०  
त्रिविको चन्द्र शास्त्री प० जलन्धर  
जी का उपदेश ब भजन हुए।

## अर्यसमाज माडल टाउन

ने स्वामी मवानन्द जी का मुद्रु उप-  
देश होता रहा तथा प० जलन्धर जी  
के मयूर भजन होते रहे। जनता ने  
सुब लान उठाया।

## कांगड़ा की समाजों में—

जिवा कगडा की आर्यसमाजों में  
समा की ओर में प० आर्यसमाज जी  
पर्व नरूपदेशक तथा डा० सुभाषि-  
नी न कुनम जी को मन्त्री प्रचार के  
लिए गए हुए है। बड़ा समग में सब  
प्रचार हो रहा है।

## आन इंडिया दयानन्द

## एल्वेशन मिशन ओशियापुर

आन उडिया दयानन्द माल्केधम  
मिशन ओशियापुर में अपने कार्य-  
कलाओं के अनयक प्रवर्तनो इय डकु-  
वर्ष (१९६५-६६) में ५००१ विधिमियों  
को मुद्रु करके उनका पुन-वैदिक धर्म  
में प्रवेश किया है। इस के अतिरिक्त  
३६० हिन्दू देविपों को विधिमियों तथा  
आताईयों के पंजे में प्रवेश कराके उन  
में से कुछ भी भादवी मात-ही गई है  
और शेष को उनके मात-पिता के पास  
पहूचा दिया गया है।

रामदास  
प्रधान मिशन

# आर्यजगत का वेदांक

समा का साक्षात्पक पर आर्यजगत समय २ पर अपने चितोपाक  
प्रकाशित करता रहता है। आर्य समाज के वैदिक विद्वानों पर आम  
सामग्री दी जाती है। इस बार थावली वेद तल्लह रथाचन्वन के  
अवसर पर अगस्त में आर्यजगत का (वेदांक) प्रकाशित होगा। इस में  
वेद विषय वैदिक विद्वानों के लेख होंगे। वेद के विषय में उत्तम सामग्री  
होगी। पढ़ते तथा मनन करने योग्य विचार मालए होगी। इनकी  
समाजें तथा सस्थाएं हैं। पढ़ा नहीं क्या होता जात है। जिनके पास  
इतनी समाजें व सस्थाएं हों, उंच किसी प्रकार की कर्म करने हों  
सकती है २ पर बात ही व प्र्यान की कमी की है। कई मन्थारों न  
नमस्कार के योग्य है। बड़ा सहयोग देती है। पर बहुत-नी मन्त्रां न  
व सस्थाएं प्र्यान नहीं देनी। निवेदन है कि :—

सभा आय की व अर्यजगत आप का है। हम तो  
छोटे सपाठी हैं। इस बार इस वेदांक का पकास पकास  
से कम तो कोई भी सभा व संस्था न मंगवाये। प्रथम  
से अधिक दो प्र आडर दें। विद्वान्, लेखक महोदय गंभीर  
वेद विषयक लेखों में कुनार्थ करें। —सं०

अदालती नोटिस

इलाहाबाद जेर अदालत श्री देवराज जी महानन सबबज दस्ता अन्वय एज्युगुरा बिना पठियाला संकथान केस ५ नम्बर मोबरखा १-५-६६

धर्मवीर बन्ध अवेराम सक्ना टीनशिप राजगुरा—सायब बनाना—अनरल पबलिक दरखास्त हस्त साटिफिकेट जान-सीनी बाबल ५६११/—मुलका अवेराम मुतबकी इलाहाबाद बराए इलाहा नाम पबलिक

मुकद्दा अनाम बासा में हर बासो आम को बचरिखा इलाहाबाद इला बारकल आरंभ-अपत आरंभके इतना ही जाती है और सायब धर्मवीर ने दरखास्त हस्त साटिफिकेट जानसीनी बाबल ५६११/—मुलका अवेराम मुतबादी पेस की है अगर किसी को इस बारे में कोई उजर होवे तो वो तारीख पेसी २२-७-६६ को हाजिर बयास्त हवा होकर उजर पेस करे बरना मुनासिब हुकम दिवाा जाएगा।

अब तारीख ६-७-६६ को मेरे हजालतरे मे मुहर अदालत से जारी किया गया।

अदालती नोटिस

बा-अदालत जनाब श्री अजयनसिंह जी सीनियर सब-जज वा (गार-डियन जज) फिरोजपुर।

केस नं० १५/१९६६ श्रीमती यमुनादेवी बेना सोभासिंह बन्ध योगरसिंह धाम इन्दी (Indra) तहसील व जिना कलास सायल।

बनाम:— नम्बर १. — कर्मीरसिंह पुत्र सोभासिंह पुत्र योगरसिंह धाम, एन्दी (Indra) तहसील का विवाह करवाया।

नम्बर २. हजयनसिंह पुत्र बहादुर नन्द पुत्र चौधरी राम धाम डेठर (Thathar) तहसील फिरोजपुर फरीक दोषय।

दरखास्त जेर दस्ता ८ सिद्धि बनोस्टी वा भारडियनशिप एक्ट (Hindia Minority and Gurdian Ship Act) बराए केने इलाहा अन्वे आरजी नयालयान

बनाम दरखास्त व आाम अवर निके मुकद्दे में तारीख

आर्य समाजों की सूच

वेद सप्ताह आचर्यो उपक्रम का वा आ रहा है। उन दिनों सारी समाजों का क्रम बनाने में कठिनाता हो जाती है। इसीलिए पृथ्वी अन्तस्त से ३० सितम्बर ६६ तक सारा समय वेद सप्ताह की कथाओं के लिए है। समाजों से निवेदन है कि सभा को इस बिषय में अपनी से सूचना देवे ताकि सब का समुचित कार्यक्रम बनाया जा सके।

—वेद प्रकाश मन्डोत्रा

सभा मन्त्री आर्य प्रादेशिक सभा जांसेधर

१८-७-६६ मुकद्दर हुई है। इतिवृत्त इतना ही बचने का भी सुनिश्चित किया जाता है कि अगर किसी कम्पनी को कोई उजर मिलत दरखास्त पत्रकूर के हो वो बहू सां १८-७-६६ को बुद या बकील की राशी हाजिर होकर पेस करे। बरना हजय-बाबल कारंसाई की जाएगी।

आज निमित्त २७/७/६६ को मुकद्दर मेरे अदालत व इत्येकत्र मुकद्दर किया गया।

पुस्तक पारिच

महात्मा हंसराज कृष्णजी ने ०० की हीर-सायन जी जीतक एम० ए० अन्वय हिन्दी विभाग दयानन्द कॉलेज बीना, उर कीमत ३० नं. पं.। पृष्ठ सं० १८ यह छोटी सी पुस्तक २० x ३०/३२ के बाकार में दियव्य भाषा में प्रकाशित की गई है।

इस में म० हंसराज जी के मुफ्ती पर प्रकाश डाल कर पुस्तक के अन्त में महान् व्यक्तियों की सम्मतिधियों का संघट्ट भी किया गया है। पुस्तिका सब प्रकार से उपयुक्त है।

आदिप टिप्पण—जो-एक-एक-एक जीतक एम० ए० दयानन्द कॉलेज बीना, उर।

सूचना

आर्य समाज विक्रमपुरा जालम्बर का साप्ताहिक सतंग रजिबरा १७.७.६६ को प्रातः साठ बजे आरम्भ होगा। देव यज्ञ के पश्चात संध्या प्रार्थना तथा पुरोहित जी का मनोहर व्याख्यान होवेगा। सतंग सन्धनों के प्रार्थना है कि समय पर पधार कर अनुत्प्रेक्षित करे।

—मन्त्री आर्य समाज विक्रमपुरा जालम्बर बहर

कुम. स. धार्मिक

आर्य परिवार को यह समझार यह कर जति प्रसन्ता होती कि श्री कानि प्रकाश की सविध्याता वेद अन्वय विभाग प्रतिनिधि सभा के सुगुण श्री सुभाष बन्ध जी आर्य का पाठिसहल सस्कार श्री विनोक्तबन्ध जी शास्त्री श्री. ए. सप्ताक आरंभकाल की सुगुणी सस्कारों की आर्य के साथ अन्वयके निभाव स्थान कारिया ने सम्भन हुआ। विवाह सस्कार श्री महेन्द्र प्रताप श्री एम. ए. व्याधिवर तथा राजपाल मदन मोहन जी ने पुनं वैदिक रीति से सम्भन कराया। श्री विं० रामचन्द्र जी कावेद एम. ए. ने घर बन्धु को आशीर्वाद के साथ २ माह्दैनिक उपदेस को गागर में सागर पर दिया।

२—बरात का स्वगत कारिया के सभी दुकानदारों व सर्वसाधारण ने पुष्पो के किया भोक्नादि का प्रत्येक मानसिक डंग ने किया गया था। विवाह सब प्रकार से सफल्यथा था। —व्यासपापक

विचार तरंग [१३]

विचार के रूप में कोई नए चीज नहीं होती बसिगु जो बीज रहते है ही विद्यमान रहते है उन को सिखाती है, विकसित करती है। उस विद्या से क्या लाभ जिस से कि हमें सूत्रं ज्ञान प्राप्त न हो और हम आचन-निर्मर न हो सकें। मौलिकता का अर्थ हम आचस नहीं दे सकते तो ह्यारी विद्या, चाहे वह विषयविद्यालय की क्यों न हो, बुधा है। ऐसे ही विचार स्वागी विवेका मन्त्र जी ने प्रकट करते हुए लिखा :— "True education consists

learning to think for self and becoming a responsible of peoples though however, brilliant."

विचारों को भी साधक बनन होता है। संशुक्लता से उसे पृष्ट होनी चाहिये। ज्ञान प्राप्त के निधि मन लासियत रहना चाहिये। या जो मद्राः श्लवोयन्तु पितवः 'Let noble thoughts came to us from every side' दृष्टिकोण नितात बना रहना चाहिये। कठिन परिस्थितियों के कारण हीन भाव कदापि भी मन में नहीं आना चाहिये स्पल्ल रहे कि 'विषय में कम्प की उन्म होती है।

★ हंगरिड होकर काम करने से वैदिक धर्म का प्रचार होगा, कुटीरियों का नाश हो कर देव कीर्ति जाति का उद्वार होगा और संसार में अर्थ सम्भता फेरीगी।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि

मभा, पं नात्र

जानी अन्तरंग सना में आरंभ यह पूर जी की स्वागत पीरजी व आरंभ ही पूर को के स्वागत सायन पर ही पूर को के स्वागत सायन पर, उसका उद्वार निम्न प्रकार से आया है—

श्रीपुत्र वेदप्रकाश जी मलहोत्रा

हमारी पुष्पा स्नेहमूर्ति भावाजी की अनामसनी प्ररुची के हृदयपाठक दुःखदर अनामसनी पर आपका समवेदनात्मक सहानुभूतिपूर्ण व्याख्यान अत्यन्त मिसा। मिसले गिरिजादेवों के शोचनसन्तक उद्विग्न मन की कुछ सात्वत्य प्राप्त हुई है। कृपयं हय अन्वयकायनी है।

—प्रधानसिंह सुरती, सिद्धिपुरा

पठनीय एवं मननीय साहित्य वेद प्रथम ५/- गोलम्बर ७५ पैसे, शान्तगीर के पत्र 1/- गोलम्बर संस्कार १/५० पैसे, वेदो के कठ रोपक क्वाथिमां ७५ पैसे, लंगड ७५ पैसे, सङ्कषाते सोवन ५० पैसे, कर्म मोक्षांसा २/२५ पैसे, सतंग नियमन कर्मां और क्सेने १५ पैसे, वैदिक व्याकरण गान्धर ५/- आध्यात्म कोषक पत्र ११/२० पं०, साहित्य १-बारक 1/- जयदेव ब्रह्मसं बहोदा—१



हैलीफोन नं० ३०५७

[आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र]

Regd. No. P 121

एक प्रति का मूल्य १३ पैसे

वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्षे २६ अंक ३१।

१६ श्रावण २०२२ रविवार - इयानन्दान्द १४१ - ३१ जुलाई १९६०

(नार 'प्रादेशिक' जालन्धर

## सरकार कांग्रेस की नीतियों पर दृढ़ इदिरा जो का आलोचकों को उत्तर

### कांग्रेस संसदीय दल में भाषण

नई दिल्ली—प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी ने आज यहाँ कांग्रेस की सम्मेलनस्थली को बतया कि हम से चौथी योजना में ८३० करोड़ रु० की सहायता ही प्रत्याशित है। श्रीमती गांधी ने कहा कि सरकार दल की सीमित नीतियों पर स्थिर है और कि इन में कोई संश्लेषण या परिवर्तन नहीं आया। अर्थात् मोर्चे की कठिनाइयों को दूर करने के लिए, जो कि विदेशी सहायता में ह्रास और विदेशी इतने से सम्भरी हुई, तथा का अवमुल्यन किया गया। अब हमें समुल्लेख को छोड़ दिना कठिनाइयों का सामना करना है। ये कठिनाइयाँ जटिल हैं, लेकिन हल से दूर नहीं। उन्होंने कहा कि हम का काश्मीर पर स्टैंड अदाचित्तन है। आपने कहा कि पाकिस्तान, चीन और अफ्रीका से सहायता देने के लिए स्थिति का अनुचित लाभ उठा रहा है।

★ समय, स्थिति, मुन्दिरक, सावधान शासन का पाठ पाठ करो।

★ सुवि और वेद प्रचार के लिये अपने दिल में दवे लेकर मरना और जीना सीखो।

★ इस सत्कार में से क्या निकल जाओगे। टुक इस पर भी तो ध्यान करो।

## वे दामृत विश्व की विजय का संकल्प

कृतममे दक्षिणो हस्तेजयो मे सव्य आहितः ।

गोजिद भूयांसश्वजिद धनञ्जयो हिररर्याः ॥ ३ ॥

अर्थ—भगवान् की हृत्पा अनुकम्पा है कि (कृतम) कर्म, पुरुषार्थ है (मे) मेरे (दक्षिणे) दाहिने (हस्ते) हाथ में और (सव्य) विजय है (मे) मेरे (सव्ये) बाएँ हाथ में (आहितः) रखी हुई है। मैं तो अपने कर्म पुरुषार्थ से (प्रीति) गो को भूमि को जीतने वाला (भूयासम्) बन जाऊँ (श्वजिन्) अर्थात् का विजयी (धनञ्जय) धन प्रचारा को विजय करने वाला तथा (हिरण्यजिन्) स्वर्ण खदानों को जीतने वाला हो जाऊँ जिन और भी जाऊँ और कर्म व पुरुषार्थ बन मे में जिन पदार्थ पर हाथ रखूँ—उसपर विजयी हो जाऊँ।

### इस का भाव यह है

मैं कर्मयोग की माधना करके कर्मयोगी बन गया हूँ। नियन्त्रण कर्म करने रहना मेरे जीवन का एक स्वभाव बन गया है। आनन्द भूयं कर भी मेरे पास नहीं आ सकता। मेरा दाया हाथ कर्म का केन्द्र बन गया व मेरे हाथ पर मेरे विजय रखी है। जो कार्य हाथ में लेता हूँ, उन में विजयी हो जाता हूँ। मैंने गोओं को जीता, भूमि पर विजय प्राप्त की। अन्धकारिण को जीता। गन्तु का विजयी हूँ धनसम्पत्तिवा, स्वर्ण के भण्डार मेरे हाथ में है। कर्मयोगी बन कर प्रभु की कृपा से सब और विजय ही विजय मिलनी जाती है। अर्थ वेद ३.१०.३

ओ उदय तन्मस्यति स्वः पश्यत उत्तरम् ।

देव देवता मूर्धं मग्न्य ज्योति रतमम् ।

वेदो ज्ञानं सहा है, हे जहा पर जोति उदयनी ।

प्रभा के पूज सविता से जहा कीनी लजिन लगी ।

प्रकृति से वार होकर श्रेष्ठ नर निजतेज को देनी ।

जहा है जोति उत्तम, तुम उनी परदेय को देनी ।

आहा ! कैसा मधुर मान है ! कैसा धार्मिक पावक, चिन्ता विदारक.

उव मोनहारक, शीतल, सुखर हृदय आङ्गुलिकारी, मनोमलिन हारी, भावनान्द धारी, स्वर्गीय राव है। पवित्र चिन्ता न करो। स्वच्छ मार्ग है मुरजिन समरस्य-रव है। सदैव चलो, अधिकक का नया करो। मेज को दाम करने दिव्य धाम प्रकाशपुत्र, सर्वश्रेष्ठ पाप को प्राण हो जाओ यही तुम्हारा ध्येय अभीष्ट का प्राप्ति-स्वभाव, और जीवन का उद्देश्य है।

## ऋषि दर्शन

### एका राजाऽर्य समा

राज्य के कार्यों को ठीक दम से चलाने के लिए तथा प्रजा को सुखी बनाने के निमित्त पहिली राज्यां समा बनानी चाहिए। जिसका काम माने राज्य प्रबन्ध को चलाना है। राजकीय ठीक चले।

### द्वितीय आर्यविशासमा

दुसरी समा अर्थ विद्या समा बनानी चाहिए, उन के द्वारा माने राज्य में विद्या तथा निज का काम किया जाल। कोई भी देव भान न रहे, हम को देव भान तथा निजा का प्रबन्ध अर्थ विद्या समा की और में होना चाहिए।

### तृतीया आर्य धर्म समा

तीसरी समा का नाम अर्थ धर्म समा है। उनका काम यह है कि माने राज्य में धर्म की उत्थिति का प्रबन्ध होना रहे। मारी जनता ठीक तथा मदाचार मार्ग पर चलती रहे, सुगर्ह पकडने न पाए। आचार-विचार को उत्थिति का प्रबन्ध अर्थ धर्म समा करनी रहे।

### एकवचनस्यैव

### निर्देशात्

वेद मंत्रों में जहाँ भी स्त्री-पुरुष के विवाह की या गृह्यकर्म की बार्थ आनी है वहा पर एक वचन का ही प्रयोग किया है। उदाहरण पुरर के लिए एक स्त्री तथा स्त्री के लिए एक पुरुष का ही विचार है—

भा यं मु नि का मे

# धर्म के बिना क्या ?

(श्री वं. तिलक राज जो क्षर्मा जालन्धर)

वर्तमान समय में जबकि यमर्षे निरकृपाता, उच्छ्रद्धा, दुर्भ्रमण मूढ कष्ट, बोरी, व्यभिचार, आलस्य, प्रमाद आदि अनेको दोष विद्ये मे अपना पर बनाए बैठे है इस के मूल कारण क्या है इस पर गम्भीर दृष्टि-पात करने से यह भी प्रतीत होता है कि हर जीव अपने धर्म बर्षे सम्भता और मस्कृति को भुल बैठता है भेरा धर्म क्या है ? मे इस सत्ता मे किस-लिए आया हू ? क्या करना है ? और क्या करना चाहिए ? इस मे कि कर्तव्यनिमूढता ही सब आर अपना अधिकार कर बैठो है । मेद का विषय तो यह है कि जिस भारत की मम्भता संस्कृति धर्म बर्षे और आत्मा इन्ने उके हो जिनका उदाहरण और कही नही उनकी भी आज ऐसी दशा जो हम सभी देख रहे है विशदही जाए ? अमर इस पर विचार किया जाए तो यह कहना उचित है कि हम अपने आपको भूल चुके है कि हम क्या है ? और हमारे पास क्या है ? इस का प्रमाण मव मे बडा वही है कि आज हमें पाश्चात्य भाषा वेप सम्भता अच्छे लगते है और अपने म्हातन कृतियों के त्याग पूर्ण चरित्र धर्म एव इन्बर मे मानो हिनने लगी है इस कारण सारी पश्चिमीय विज्ञा सम्भता का प्रभाव है । कोई यह कहना उचित नही है कि यह विज्ञा बही मे प्राप्त हो रहा है । पाश्चात्य विज्ञा भी दी परन्तु हमारे पास जीवन का नुस्वी प्रामे के लिए वेद शास्त्रों को भी प्राथमिकता होनी चाहिए जिन मे सच्ची मुख शांति और सदागर्षे मिल सकता है । इस के बिना हमारे पास और कोई साधन है नही । उम मे जीवन का मुख शांति मे व्यतीत करने के लिए क नियमों का सुत्र बना पडा है जो कि विलकुल स्पष्ट और साफ है उम साधन पर चलने से ही हमारा कल्याण हो सकता है । वस्तुतः ये दुर्घुस तथा दोष बढते स्को चने जा रहे है क्योंकि हम इसने छुडाने वाले अपने गर्वभ्रष्ट धर्म की ओर से मुकते दिखाई दे रहे है । कोई पाश्चात्य विज्ञा का अग्रगण्य न करताया जाए ऐसा नही परन्तु उसके पूर्ण अपने धर्म की शिक्षा अध्ययन परमावश्यक है । विष को अन्ते खाने से मृत्यु को सुखाना है । किन्तु उम औषधि के साथ खामा जाए तो अमृत का फल देता है इसी प्रकार हम भारत वासियों को भी धार्मिक शिक्षा के साथ-साथ या धर्म

से सञ्चोचन करके पाश्चात्य विद्या का अग्रगण्य करना चाहिए । क्योंकि ऐसा न होने से हम सभी अस्वी स्वरूप को भूलते जा रहे है । यह शक्ति यदि है तो केवल धर्म मे कि बहु पुनः मुख शांति के मार्ग पर ला सकता है । क्योंकि धर्म ही मनुष्य का जीवन प्राण है और इस लोक व परलोक मे कल्याण करने वाला है । परलोक मे तो केवल धर्म ही साथ जाता है । हमें देखना है कि धारण करने योग्य धर्म क्या वस्तु है । कृतियों मे सन्मुख और सदाचार के नाम मे धर्म को व्याख्या की है । नवमान मे सीता अध्याय १६ मे जो देवी सम्पति के नाम से तथा अध्याय १७ मे तप के नाम मे जो सुष्ट नहीं है वह धर्म की व्याख्या है इनके अलावा महर्षि पराशरि के योगवेदान और मनु जी ने जो कहा इन सब को देखते हुए यह सिद्ध होता है कि सन्मुख और सदाचार ही धर्म है । जो आचार्य अपने और सारे समाज के लिए हितकर है यानि मन, वाणी और शरीर द्वारा को हृदि जो उत्तम विद्या है वही सदाचार है और अतः भाव मे जो पवित्र भाव है वही सन्मुख है । अथ तो प्रसन्न यह है कि ऐसे धर्म की प्राप्ति कैसे हो ? इस का यही उत्तर है कि मनुष्यों के लग से ही इसकी प्राप्ति हो सकती है । क्योंकि वेद स्मृति सदाचार और अपनी रचि के अनुसार परिणाम मे हित का यह चार प्रकार का धर्म का लक्षण है । मनु जी भी ऐसा चिन्ते रहे है :— वेद स्मृति सदाचार । स्वयं व त्रियमारचन । एतन्मनुष्यक प्राणु साधारणस्य लक्षणम् । परन्तु इन को एकता सतस्य से ही होती है अतः इस के जानने के लिए महापुराणों का सत आवश्यक है । अतएव मनुष्य को उचित है, प्राणु जाए पर धर्म का त्याग न करे क्योंकि धर्म पर चलने आने तथा मरने वाली को उत्तम गति होती है । गुरु गोविन्द सिंह के लक्षकों मे धर्म के लिए ही प्राण दे कर अर्चन कीति और उत्तम गति प्राप्ति की है । मनु जी ने कहा है :—

श्रुति स्मृत्युहित धर्म मनुर्गिरिभिः मानवः । इह कीर्ति भवनांति येव चाद्रतम सुखम् ॥ जो सांग वेद और स्मृति मे कहे हुए धर्म का पालन करता है वह इस सत्ता मे कीर्ति को और मर कर परमात्मा को प्राप्ति रूप अत्यन्त सुख को पाता है । वर्तमान समय जब कि सर्वत्र दुःख अधानि दिखाई दे रही है और नीचरे विद्ये नृद के लिए धारण करण से व्यर्थ चारो दिशाओं मे मण्डरा रहे है । उम समय हमें अपने उस धर्म सम्भता संस्कृति की धारण ने कर फिर विद्ये को इन विनाशकारी साधनों से परित्यज कराने की आवश्यकता जिस को कि हर देश आत्य रक्षा के लिए धरण मर मे सर्वनाश करने वाले शस्त्रों को बना रहा है और अपने को हर सम्भव कीतिज से बचाना चाहता है । परन्तु यह तो स्पष्ट है कि ऐसै-ऐसै साधन जिनसे धरण भर मे सर्वनाश हो जाता है इस की तरफ मानव की बुद्धि बढ़ती जा रही है परन्तु जो सच्ची शांति और सुख का मार्ग है वह दिखाई ही नही देता और न ही बुद्धि को उधर लगाता है । इस समय ऐसै म्हातन साधन की आवश्यकता है जो इस सत्ता को बिनाश की ओर से मुख मोह सच्ची मुख शांति के मार्ग पर चलाए । वह कहा है ? यही भारत का तो धर्म-कर्म सम्भता वेप और आधरण ही ऐसा है । जिस मे साक्षात् मुख का मुखडा निहत्त है वह तो सारी कर्मिया पाश्चात्य विज्ञा की है ऐसा धर्म जिस मे मनी को अपने जैसा सुखी और शान्त रहने की कामना है जैसे कि— सर्वे भवन्तु मुक्तिनः, सर्वे सन्तु निरामया सर्वे भद्राणि वप्सन्तु, मार्कान्धेयः कुवन्धमन्धेयः किन्ते उंचे मास है जिस मे अपने लिए ही नही विश्व की कल्याण कामना है हम सभी अपने लिए मुख होत जा रहे है । सभी तो यह विश्वसी दशा सामने आ रही है यदि हम इसी प्रकार भूल मे पड़ते चले गए और अपनी इतनी ऊंची संस्कृति वैदिक धर्म की आज्ञा का पालन करते हुए विद्ये मे

सच्ची मुख शांति के मार्ग का आवर्षे न रहने को विनाशकारी नष्टक सर्वन पड़ते । परन्तु हमें तो यह ध्यान होना चाहिए कि जो हमारे पास अनूय पवित्र वस्तु वैदिक धर्म है अगर उध पर चले और अन्य देशों को भी स्वर्षे आवर्षे बन कर मार्ग पर लाएँ तो कही मुख शांति का नाम सांयंको हो सकता है । अनी विपदा कुछ नही यदि आज भी हम अपने धर्म पर चलने का प्रयु करे तो सफलता मिल सकती है ।

## आर्य समाज पालमपुर (कांगड़ा) में वैदिक धर्म प्रचार का विशेष तथा सफल आयोजन

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि समाजवाच मे कांगड़ा वा शिक्षापाल प्रवेज के अपने समाजो मे प्रचार करने के लिए जो विशेष व्यवस्था स्वीकारा की थी उसी के अनुसार समा के सुयोग्य व्याख्याता श्री प० ओष प्रकाश जी तथा प्रसिद्ध भजन मन्थनी डा० तुर्बा सिंह और श्री नय्यु राम जी ५-७-६६ को हमारे समाज मे पधारे । उपदेशक वे मे निरन्तर आठ दिन तक बडी लगन और उत्साह से प्रचार कार्य सम्पन्न किया । भजनों मे और उपदेशों मे आर्य वेद सुत्रों के अतिरिक्त अन्य मतावगमभी भी सुदृष्टि पूर्ण भाग लेते रहे । तीन चार दिन कार्यक्रम प्रातः माय दोनो समय चलता रहा । एक दिन स्त्री समाज मे भी विशेष प्रचार किया गया । अग्य दिनों मे १३-७-६६ तक रात्रि को निरामिन प्रचार की व्यवस्था सुचारु रूप मे चलती रही । इस बार के प्रचार मे लक्ष्यक भी श्रद्धापूर्ण भाव से भाग लेते रहे । यह अत्यन्त आधाजनक एवं उत्साह बर्षक बात थी । हम समा के तथा उपदेशक महानुभावों के प्रति हार्दिक आभार प्रकटित करते है और जवाफ देते है कि वर्ष मे दो-तीन बार इसी प्रकार प्रचार की व्यवस्था की जाती रहेगी । समा के लिए आर्य समाज वा स्त्री समाज की ओर से निम्न राशियां भेंट की गईं । १) वेद प्रचार आ० समाज पालमपुर । १५) दशाश । १०) शिवरचिण फन्ड । ६) आर्य जगत् । २५) मार्ग ज्य । ५१) वेद प्रचार आर्य स्त्री समाज पालमपुर (कांगड़ा) । स्वराज कुमार मन्गी. सलमन

सम्पादकीय—

# आर्य जगत

वर्ष १६ रविवार - ०२३, ३१ जुलाई १९६६ अंक ३१

## समाज की ये जोकें

जोक का काम सदा खून पीना है। दूध के प्रसार के पाश भी खमी हुईं यह राक ही पिचेली, इध नही। खून पी २ कर ये बहोली मोठी होती जाती है। ये जहां भी लग जाती है, वहां अपना काम करती रहती है। भी हो या कोई पशु—इन से फिर जाने पर बहो दुःखी होता है। इन से सावधान रहना पड़ता है। ये जोकों अविद्याय मानी जाती है। ये जोकों अविद्याय मानी जाती है। ये जब कभी इन के केन्द्र बने हुए पानी के अन्दर कोई स्नान आदि के लिए प्रविष्ट होता है—तभी वे उस से विपट जाती और फिर अपने खून पीने के काम में लग जाती है। इन को शरीर से अलग करने में कठिनाता होती है। इन का नाम ही जोक है—जो विपट कर न छूटे। खून पीने के स्वाद में ये भारी उत्पत्ता तथा हानि करती रहती है।

इन जोकों के समाज समाज और राष्ट्र में भी बड़ी-बड़ी भयकर जोके पनपती रहती है। वे भी लोगों का खून पी-पी कर मोटी होती जाती है। उनका शरीर, पैर और तोंड फूलता रहती है। जनता का रक्त पी-पी कर उसे बेचैन किये रहती है। जीवन के हर क्षेत्र में वे छिद्र कर अपना काम बनाये रखती है। यदि इन से सावधानी न रखी जायं तो हारा समाज इतका सिक्कार हो सकेगा कि। इन को लोगो के खून पीने का इतना स्वाद आता है कि वे उसके लिए मिथित काम करते हुए भी सज्जा का अनुभव नहीं करती। वे जोकों को पानी से रहती है। किन्तु ये बड़ी- बड़ी जोकें समाज में छिद्र कर रहती है। मनुष्य के रूप में राष्ट्र के जीवन के प्रत्येक मंडल में इन की गति बनी रहती है। समाज तथा राष्ट्रीय जीवन का खून पी - पी कर ये अपने को मोटा करने में लगी रहती है। जनता की निर्भरता से इन को कोई मतलब नहीं है। विषय परिस्थिति का कोई विचार नहीं, राष्ट्रीय चरित्र का तनिक ध्यान नहीं तथा लोगों की मह-पाई की कठिनाता की भी कोई परवाह

नहीं। न धर्म का धम और इन को संभालना का स्मरण। बस लोगों का खून पीना और अपनी तोंडें बढ़ाना ही इन का एक मात्र प्रयोजन होता है। सारे समाज के शरीर का खून पी पी कर उसे ये लोहता ला कर देती है। समाज के कष्ट में इन का प्रयोग है, उस के दिवायिया में इन की बीवाली हुमा करती है। मनुष्य के शरीर में ये मयकर जोके राष्ट्र में सदा बेचैनी पैदा किये रहती है। ये जोके भी सारे समाज व राष्ट्र के लिए बड़ा भारी अविद्याय है। इनसे भी सावधान रहना पड़ता है।

आजकल पंजाब में ऐसी २ जोकों की भर-भरकर प्रारम्भ है। भारत के अन्य प्रांतों में भी जीवन की आवश्यक वस्तुओं की चोर-बाजारी के कारण बड़ा हाहाकार है किन्तु हम इन स्तम्भों में पंजाब को चर्चा कर रहे हैं। वास्तविकता यह है कि लोगों के मन में भय ही नहीं रहा था कि हम पर कोई हाथ भी डाल सकता है। मिनि-मडल के मिनिस्ट्रो ने तथा अन्य सदस्यों ने लोगों में तथा विद्यार्थन इन बड़ी २ जोकों से मोठे का सहयोग लेना होता है—इसलिए वे तो आलो पर पर पट्टी बांध कर चुप हो जाते हैं। साधारण जनता दुखी की चक्की में पिचती है—तो पिचने दो। यदि खाद्य, तेल, सोदेद, आटा तथा अन्य जीवन की मोटी २ वस्तुओं को लेने के लिए पध्दो कोशिश में लूप में लडे रहते हैं—तो उनको क्या? पदावधि में मिला-वट कर जनता के स्वास्थ्य के साथ निबबहाई की जाती है तो किन्ता क्या? लोगों में चिन्ता हाहाकार था। क्या स्वराज्य का चित्र व नशुदा यही था कि हमें मसाले में लौद भिला दो जाने, भी मे पबो और जादे मे न जाये, भी मे मिलाया जाये। हस्वी मे हटे कीस कर विताई जाये। इस पर भी चीजें मिले ही नहीं। परन्तु मनिषरबन्ध समाज हो गया। श्री धर्मवीर की राज्यपाल बन कर आये बोहा हा अपना धर्म चर्क, बचाना

आरम्भ किया। देखिए तो सही-नया ये क्या बन गया। समाज का खून पीने वाली इन मोठी २ जोकों पर बिलस समय हाथ डाला गया—तो क्या २ चित्र सामने आने लगे। इन खून पीने वाली जोकों की करतूतों को देख-देख, पढ़-पढ़ कर कोन भारतीय है, जिन को फिर लग्ना से मुक्त नहीं जाता। इन जोकों का यह है राष्ट्रीय चरित्र और यह है जीवन-आचार। सब के समाज में गने हो गये। मोटे-मोटे स्पष्ट हो गये। कितना तेल, कितना सोदेद, कितना पी और कितना अन्न निकला है। करनास की एक बड़ी जोक से तो बालीस मन बारी और छः किणो सोना—ये छः लाख रुपये कीमती सामान। ये लोग राष्ट्र के लिए भारी कलक है। अभी तो धर्मचक्र या धर्म राज्य का प्रारम्भ है। हम चाहते हैं कि इन जोकों को कडा मे कडा दण्ड दिया जाये। तनिक भी सहानुभूति न दिखई जाये। मानवीय भी राज्यपाल जी यदि इन खून पीने जोकों को हल्का कर दे तो उनकी संवेद राहना की जायगी। अभी बहुत कुछ काम करना होगा। जिन को दूसरो के खून पीने का स्वाद लग गया है—जिन का जीवन प्रयोजन ही पैसा बन चुका है ऐसी जोकों को कड़े हाथो से पकड़ा है ठीक करना होगा, तभी समाज बचपाय—

### वेद सप्ताह क्या है

वेद अर्थों के लिए रमयर्म का स्थान रखते है। परम धर्म के लिए परम कर्तव्य वा भी सब को ध्यान रखना चाहिए। आर्य समाज की स्थापना तो हुई ही वेद प्रचार के लिए है। वेद का प्रचार और करनी ही कोन समाज है। माना प्रचार के आन्दोलन तो रोडे कण्ठ और मकान के पोरो पर समाज हो आते है। कुछ स्थावरो को चीज केवल बोट ले कर हुए पाच वर्ष के लिए अनेक कुतियों पर वंडने के लिए लगी रहती है। वेद तथा वैदिक धर्म के प्रचार का आर्य समाज के विषय किसे ध्यान है? यदि आर्य समाज भी इधर-उधर के अनावश्यक कामों में मग्न हो कर अपने परमधर्म के चरम लक्ष्य में आखे बन्द कर ले तो वेद का प्रचार कैसे होगा? कृष्णवर्ती विद्यधर्मार्थ्य का महान् कार्य पूर्ण कैसे होगा। अभी तक तो वेद रोले में से एक पुरी भी नहीं कासी गई। हमारे विषय काम वेद प्रचार के काम को दुरा करने के लिए है। अभी तक तो हम लोग प्रस के समाज वेद प्रेष भी नहीं बना सके।

बायबल तो सप्टे के समाज वेदो की विषय के चीने-कोने फंजने का काम कितना कर पाये है? अभी तक तो हमारे अपने पर मे, मन्तान मे, स्थावरो मे एक आने जीवन मे भी वेद नहीं आया तो विषय का काम कितना महान् है।

फिर भी वेद का धर्म आर्यों को निराशा नहीं मिलाना। वैदिक धर्म आशावाद का धर्म है। काम बढा है पर यह करना ही होगा। वेद सप्ताह प्रति वर्ष आकर हमे यही संदेश देना है कि वेद वाणो! वेद-प्रचार के लिए तन-मन धन देना सीखो। जिन के पास समय है वे समय देकर समाज में आकर वेद का संदेश देकर। सारे समाजो का कर्तव्य है कि वेद सप्ताह पर वेद की कम्पनी का प्रयत्न करें। इन दिनों वेदो पर ही प्रचलन कराने। परमे मे वेदो के लिए विषय उठाहा भरे। जितना भी हो सके संवेक वेद भस्म परित्यज इन दिनों वेदो के महानो को, मुक्तियो को कण्ठय काता रहे। मौलिक जमा खर्च तो होना रहता है पर इन सप्ताह लेने विचारितक रूप देना होगा। वेद के स्थाप्यका का बन लेना। परिवारो के सारे कामो तथा स्थावरो के सारे समारोहो पर हम पहले मे भी अधिक ध्यान करने है। पर वेद प्रचार के लिए, इस परमधर्म के निमित्त क्या अवध्या है? मोक्ष नीयिमे। वेद सप्ताह के अवसर पर वेद प्रचार के लिए अधिक मे अधिक धन तथा के वेद प्रचार कोष में देने का संकल्प करें। विषय पवित्र विद्यान के लिए देव-दालनन मे सर्वमेव कर दिया। तत्पवी महात्मा हरप्रकाश ने जीवन को आहुति दे। सामी यशदान मे जीवन बलिदान कर दिया। अमर यहीद लेखराम ने पैर फरना दिया—अनेक बीरो ने उपमर्ग दिया—उन वेद प्रचार के लिए हम क्या देने है? मन मे विचारें। आर्यधर्म का को नही छुआयेगा। महान् महात्मा, विद्यान मेना हो—उमका वेद प्रचार कोष हासी हो—वेद प्रचार काय? किन्ती लग्ना की बात है। दूसरो को उपदेशक, वेद प्रचार बनाना चाहते है। किन्तु हमारे परिवारो के बच्चे अद्याक, प्रोरेनर, दखनोर तथा सता की कुतियो के कामे पर नते। नव वेद प्रचार कर्म होगा? बडे-बडे आर्यधर्म के मज्जन अने-अने पर मे अपना एक एक युवक धार्यधर्म का उपदेश का दयाभर का निरादो बना कर नव देवें तो कितना मुन्दर काम हो पाये। पर यह भीन करे। वेद सप्ताह पर हम के धम बन ले तो क्या कोर पर न दीयिगे—३०

नारी स्तम्भ—

# श्री राम की उच्चता में सीता का हाथ

लेखिका — कु० सुशीला जो आर्या एम० ए०  
आर्य कन्या मुकुकुल नरेना

किसी कवि की अत्यन्त प्रशंसा-मुकुल यह पत्रिका स्मरण आती है 'नारी नर का निर्णय करने वाली होती है।' नर का निर्णय करने वाली नारी का मुख्य रूप माता है। बहिन तथा पुत्री रूप में भी मारी तो पुरुष को समय-समय पर प्रभावित किया है किन्तु यह समझें कि माता की दृष्टि से मूल रहता है पुत्र: पत्नी के रूप में मारी नर का कार्यान्वयन करती देखी गई है। क्योंकि पत्नी का पति है समयो बीतने की दीर्घ अवधि तक रहता है। इतिहास साक्षी है महा-पुरुषों की महा-प्रार्थि-यं उनको पत्नियों का उत्प्रेक्षणीय योग रहा। क्या बिट्टरा, क्या शैव, क्या त्रय, क्या त्याग सभी सद्वृत्तों का पाठ स्त्री पुरुष मिल कर पठते रहे हैं। महा-आचार से सहृदयी के साथ-साथ-साधु-पाठो का रूप भी धारण कर लेते हैं। महात्मा गांधी को उच्चता के विचार तक पहुँचाने में माता कन्दूरा के योगदान से कहीं निश्चय कर सकता है? क्या देवी उर्मिला की ब्रह्मचर्य-साधना ही उस समय को 'पत्नी' को उपाचित से अर्धकृत नहीं करवाया? यही बात देवी सीता के विषय में है।

संसार में हीन प्रकार के वन है शरीर वन, मनोबल तथा बुद्धिबल। श्रीराम की चमकाने में उनके मनोबल का सर्वाधिक योग रहा है। उन्होंने रावण से युद्ध भी अपनी हीन शक्ति का राजस्व से नहीं अपितु मनोबल से ही जीता। संभव और असंभव के बीच भागते आसर्षं है और इस साधना में विवाह के पत्रवत् से देवी सीता का भी योग रहा। इस से कोई सम्यक् नहीं कि देवी सीता कोमल-सिन्धी राजकुमारी होने हुए भी शैशव में ही श्रीराम के वन वन से उत्पन्न थी। किशोरावस्था में ही भारी धनुष को हिला देने की घटना से भी यह प्रमाणित है। इस देवी का विवाह भी सीता के वातावरण में हुआ। धनुष को टूटार उठाने विवाह की पहचानें बनी किन्तु कोई कह सकता है कि पुत्रपुत्रे विद्योने पर सोने वाली राजपत्नी से बाहर वंश न रखने वाली

इस देवी ने विवाह के दुःखत परभाव्य भीन की हीन कानीव दुःखही की सी देना मे इन का तपस्वी जीवन बिताने की करन्या की होगी? उच्च राजवंश के माइने अवेष्ट पुत्र से विवाहित होकर कोई भी राजकुमारी निकट भविष्य में राजनीति होने की याशा करे, तो इस में क्या अनीबिल है? श्रीराम का पंच प्रकवनीय है कि उन्हीने राज्य के बदले पत्नी की याशा पाकर भी मूल मजिन न किया। किन्तु उस देवी को इनाम में अक्षर कहा से जाए जिसने सब मुषों की कल्पनाओ पर तुल्यराज होने दिया तथा हर्ष सहित दुःखों को भीन लयाया। आर्य मानें न मानें—दुःभार हृदय तो यही कहुता है कि श्रीराम को बना का ठोकर जीवन बिताने का साहस्य देवी सीता ने ही प्रदान किया। कौन निश्चित कर से कह सकता है कि देवी सीता का सहयोग न भिन्ना तो भी वे जैन संघ के काठो में हृद सकते? पुत्र: देवी सीता का यह त्याग शक्ति भावुतना नहीं अपितु अन्तरात्मा का निरवय वा तमी तो कहेंगे कि देवी सीता के दीर्घ अर्थि मे वे इन्ही कनाते नही हूँ, बिक्रमता ने उन्हे नही घेरा, मुर्ली की स्पर्श ने नही लयाया। तमी तो कलक रूप मे इस देवी को घरती भी पुत्री कहुता जाता है जो पंच के लिए एक सृष्ट्य उपजमा है। एक अविवाहित पुरुष अपने संभव वन से ब्रह्मचर्य पावन करता है किन्तु श्रीराम तो गृह-स्त्री की उपकी समन-साधना मे रूप से कम पचास प्रतियोग भाग देवी सीता का था। अधिक भी सम्भव है कि कितना सतक परिभाष करना कठिन है। श्रीराम ही शक्ति भी जिसने श्रीराम को लोक-दृष्टि मे दतना महुत बनाया। निवास वंश में जीवन के पितृ पूरे करने बाने अक्षर सभ्यता की नाथाओं से इतिहास भरा पहा है। उनमें से कितने अन-जन के आराध्य बन के। यतीरु मीर मधुमाली समयकीलसा उनकी अर्थात् घटना—देवी सीता के री के आनुभव मान पड़वाने वाली से जानी जाती है किन्तु इस उपाचार

## आर्य समाजों को सूचना

वेद सप्ताह श्रावणी उपारुम का वार्षिक पुनीत पर्व वा रहा है। उन दिनों सारी समाजों का इकट्ठा कार्यक्रम बनाने में कठिनाता हो जाती है। इसलिये पहली अगस्त से ३० सितम्बर ६६ तक सारा समय वेद सप्ताह की कथाओं के लिए है। समाजों से निवेदन है कि सभा को इस विषय में अभी से सूचना दें ताकि सब का समुचित कार्यक्रम बनवाया जा सके।

—वेद प्रकाश महतोत्रा

सभा मन्त्री आर्य प्रादेशिक सभा जालंधर

का निर्वाह ही देवी देवी के पुत्रप्राप्ति की विमूर्ति है। धर्म ही देवी सीता की आंखें। उनका संभव, तेज बल। जिस ओर आंखें का स्फुरण को कभी अव-र ही न मिला। दृष्टि को संभव प्रदान किया और अनेके भविष्यरहोय इतिहास का निर्णायक कर जगा।

माते भी देवी श्री सीता का तप राग था। रावण पर बिभव राग ने क्या की? यदि सीता देवी के मानस पटल मे तनिक भी बिचलितना आ जाती तो श्रीराम बना कर पते? फिर इस देवी ने राम की दिव्य का पय और रूप मे भी प्रदान किया। वे रावण के घर में थी। रावण भी उन के पास अनुरम विनय के लिए जाता था। दायित्व जादि द्वारा भी समूली समाचार भिजन रहते थे। देवी सीता के उच्च चरित्र से प्रभावित अर्थिक उनके पय मे हो चुके थे। उन के द्वारा तथा भी अनुमान जो के जाने पर देवी सीता ने सगु के अनेक सहस्यो का ज्ञान श्रीराम को कराया। देवी सीता कोई भीम की मुद्रिया नहीं थी। ऐसी होती तो मना शत्रु के पर भी अपनी मान पचींशी की रक्षा लेते कर पाती। उनमें नीति भी थी, माध्य भी उच्चकोटि की सूक्ष्म भी। उनकी समूली वलित हली को सगी थी। इस प्रकार सगु के घरे में रह कर ही उन्हीने अपने पय की दिव्यि सुदृढ की। देवी देवी से जीवन के इन सभ्यता की अर्द्धो मे तप कर सार-कचन बनने के परदात नागनी जीवन में भी श्रीराम को राजकीय पदाने में कितना सहयोग दिया होगा वह सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। इन सभ्यो से हय हय निकरने पर पड़ते हैं कि देवी सीता श्रीराम की पुत्र की। उनकी पक्ष

## आर्यजगत का वेदांक

आर्य प्रादेशिक सभा के साप्ताहिक पत्र आर्यजगत का श्रावणी के विषय वेद सप्ताह के अवसर पर वेदांक प्रकाशित किया जा रहा है। समा का अपना यह पत्र है। हमारी कितनी समायें व विचार संस्थाएँ हैं। उनका जितना बढत होता है। समा के वे स्तम्भ हैं। वेद हमारे जीवन का परम-धर्म है। महर्षि जी ने इसी के लिए सर्वसं दान किया। हम सारी सभ्यता संस्थाओं तथा वेद सेनी परिवारो से साधुपुत्र प्राप्ति करते हैं कि इस वेदांक की काफ़ी संख्या मे प्रशिया बनाकर कर जायेंगे। परिशरों में, समाजों में, इन्हें मित्रों में और दूसरे विचारों के लोगों मे बाँटें। इस से प्रचार होता है। इस वेदांक के लिए छात्रा व्यव करे। यदि हूँ वेद प्रचार के लिए पढा है तो वेदांक की प्रतिनों के लिए जन्ही ही आर्यजगत कार्यालय को लिखें। यह भी प्रचार का साधन है—सं०

में उनका सर्वे अधिक वे अधिक योग रहा। नारी जीवन के वेदोक्त भावर्ष को उन्हीने परिचालन कर विभाया। वे पति के बराबर चुनाव चढ़ने वाली वर्तमान युग की तथाकथित देवीयों की दृष्टि में अने ही पुष्टयन तथा विद्यार्थी हर्ष प्रतीत होती हैं किन्तु श्रीरामा से विचार करने पर उनमें सर्वांगित तथा संभव प्रवृत्ति सीलता का वह कर दिखाई पड़ता है जिस के अन्ततः स्वरः उदात्तता होना पड़ता है। अथवाय हमारी मुख्य देवीयों की सीता भी की शक्ति पति के जीवन निर्णय में योग देने की शक्ति प्रधान करे ताकि उनमें पुत्रप्राप्ति मुर्ली के साथ-साथ देवीयों के निर्णयोप ही हो सके। का शक्ति-कचन—मोक्ष की हो छुके।

(तलाक़ से बागे)

पुराणों की सांप्रदायिक प्रवृत्ति स्वयं पुराण धर्मविद्वानों को भी अस्वीकृत नहीं है। वे भी यह मानते हैं कि इन इन्धनों में विभिन्न देवताओं का माहात्म्य बतलित है और जिस पुराण में जिस देवता को सर्वोच्च माना है उस में इन्धनों के महत्व को अस्वीकार करते हुए उन्हें तत् देवता का सेवक, किंकर और भक्त बताया गया है। इसके प्रमाण सर्वत्र मिलते हैं परन्तु इतना कह देने मात्र में ही पुराणों पर लगाने वाले जालंधरों का समाधान नहीं हो जाता। ब्रह्मवैवर्त में ऐसा कि हम पूर्व ही लिख चुके हैं कृष्ण की महत्ता बतलित है। उसे ही परावर, विष्णुय तत्व माना गया है अतः अन्य सभी देवों देवता कृष्ण के ही अनुग्रही और सेवक बनाने योग्य हैं। एक उदाहरण इस बात की स्पष्ट कर देता। यह सभी जामते हैं कि मारकण्डेय पुराण के अन्तर्गत तो 'दुर्गा सप्तशती' का प्रकरण बताया है, उस में जालि शक्ति जिसे दुर्गा, शक्ति नामों से सम्बोधित किया गया है, का माहात्म्य बतलित है। यही दुर्गा सप्तशती की सम्पूर्ण कथा ब्रह्मवैवर्त पुराण के प्रकृतिकथन में बतलित हुई है। परन्तु इस पुराण में कथा को मोड़ा परिवर्तित कर दिया गया है। ब्रह्मवैवर्त की प्रकृतिक के अनुकूल यहाँ स्वयं दुर्गा ही महाविन्देय को कृष्ण की शक्ति करने का उपदेश देती है। देवों उत्तम ऋक ६३ वा अध्याय मारकण्डेय पुराणोक्त सप्तशती में जहाँ दुर्गा का ही महत्त्व बतलित है वहाँ ब्रह्मवैवर्त का यह तुर्गी-पाश्चान्त भी कृष्ण के ही पुराणमान करता है। साम्प्रदायिक आक्षेप के कारण ही यह सब तमामें पुराणों में दिखाई पड़ते हैं।

श्वेद तुर्गीपाश्चान्त की बात चल ही पढ़ी हो लगते हुए कुछ कथ्य बातें भी लिखना आवश्यक है। ब्रह्मवैवर्तपुराण वैष्णव पुराण है, परन्तु आमत मत् के अनुसार जो अध्याय आदि का प्रयोग देवी की दुर्गा अर्वा के लिए होता है उसका श्रुत कर विरोध करने की शक्ति यह पुराण के लेखक में नहीं। सभी तो यह पूजा के विविध कर्मों की कल्पना करता हुआ लिखता है—

शिव हवा विहीनम् ॥  
 वरा पूजा तु वैष्णवी ॥ ६४:४४  
 जोष्यन्वा रहित पूजा वैष्णव  
 पूजा है को सर्वोच्छेद है। द्वितीय स्थान

## ब्रह्मवैवर्तपुराण की आलोचना (२री किस्त)

### पुराणों में ऋषि मुनियों की निवासस्थान

#### (श्री० भवानीलाल जो भारतीय एम० ए०)

माहेश्वरी पूजा का है जो ब्रह्मिदान युक्त होने से राक्षसी है—  
 माहेश्वरी राजसी च  
 ब्रह्मिदान सम्पन्निता ॥६४:४०

किरातादि अवश्य जातिवों के पूजाकार को 'वामन' संज्ञा प्रदान की गई है। इसी लक्ष्यमा में देवी के श्रीयुक्त विनये जाने वाले ब्रह्मिदानों का भी उल्लेख हुआ है। पाठको को यह ज्ञान कर आवश्यक होगा कि इस वैष्णव पुराण में भी श्रीवर्षादि युक्त ब्रह्मिदानों का विधान किया गया है।

ब्रह्मिदान विधानं च  
 भूतानां मुनिस्तम ॥  
 मायाति महिष भाग  
 दद्यात्पार्यायिक युष्मत् ॥६४:९२

हे मुनि श्रेष्ठ ब्रह्मिदानों का विधान लो। जिन २ पुरुषों को देवी के लिये बलि चढाया जाता है उस में मनुष्य को मनुष्य सर्वप्रथम की गई है और कहा गया है कि नर बलि से ही पूजा करने का प्रसन्न रहती है, जैसे की बलि से तो वर्ष तक तथा बकरे की बलि से १० वर्ष तक—

सहस्र वर्षं सुशीला  
 तुर्गीमायाति दानतः ।  
 महिषाच्छातवर्षं च  
 दशवर्षं च षड्युगमात् ॥६४:९३

यह बलि विधान भी विभिन्न है, जैसी मेवा को सैवा मेवा पाओ। यदि मनुष्य की बलि चढाओ तो हजार वर्षों तक देवी को प्रसन्न कर पाओगे, परन्तु श्वेद है कि आज के युग में नर बलि को जानूनी दृष्टि से अपराध माना गया है और नर ब्रह्मिदान करने वाला नर हत्या का अपराधी माना जाकर सन्ध पाता है। आज के शाक्त तो शूद्र कृष्णों को मार कर ही देवी को सुन्दर करते हैं। यह बलि प्रकरण किसी उर्ध्व कथ्य या अन्य किसी शाक्त मत की पुस्तक में होता तो हमारे लिये कोई आश्चर्य की बात नहीं थी, परन्तु यह पुराण आश्चर्य का विषय है, कि ब्रह्मवैवर्त जैसा वैष्णव पुराण भी इस प्रणित शक्त के विधान में किसी बाधपरम्य के दाय में पीछे नहीं है। जिस व्यक्ति को देवी के सम्मुख बलि चढाई जाए उसके लक्षण भी इस पुराण में बताये गये हैं। इसी लक्ष्यमा के अन्त में कहा गया है—

मायावीनां स्वर्षयं च  
 भूतानां मुनिस्तम ॥  
 कथाभ्ययव वेदोक्त फल-  
 हानिर्व्यतिक्रम ॥ १००

बलि के उपयुक्त व्यक्ति का स्वर्षय अर्चनवेद के अनुसार कहता है। इसमें व्यतिक्रम ही जाने पर ब्रह्मिदान का फल नहीं मिलता। प्रथम तो पुराणकार का उद्देश्य देखिए जो नरबलि का विधान भी अर्चनवेद में दृष्टता है। इसके अनुसार तो यह जो कुछ उस अनुसूक्त लिख रहा है वह स्व किशोर्न किशोरी वेद में कहा ही गया है। एतः अर्चनरूप से तो पुराणों की बाहो तबाही का भी शक्ति इन पौराणिकों के अनुसार तो वेदों पर ही है। सभी जो माधवाचार्य जैसे सनातनी पंडितों के समक्ष जब पुराणों की किसी आश्लि-जनक कथा या प्रथम को समाधान करने प्रकृत किया जाता है तो उसका कोई समुचित उत्तर देने की कोशिश में उसे येन येन प्रकारेण वेदोक्त सिद्ध करने के लिये देवी से शोटी तक का पक्षोन्नायन सहाने सपते हैं। अस्तु। प्रकृत में नर-बलि की बात चल रही थी। आगे लिखा है—

पितृमाया विहीने च  
 युष्मक व्याधि वास्तवम् ।  
 विवाहित दीक्षित च  
 परदार विहीनकम् ॥ १०१

अजातं पिण्डुय च  
 सच्छत्र परिपोषितम् ।  
 तद्वंशुम्भो धनं दत्त्वा  
 भेत मृत्यातिरेकतः ॥ १०२

यह युष्मक विश्व की देवी के समक्ष बलि चढाई जया पिता-माता से रहित ही, युष्मक ही तथा व्याधि रहित ही उसका विवाहित और दीक्षित होना भी आवश्यक है। यह अधिमान से उत्पन्न न हो, तथा किसी सन्धुद्ध में पीणित हो। उसके बंधुओं को धन देकर उसे ब्रह्मिदान के लिए शरीर दिया जाय। यदि वह बात माधवाचार्य जैसे के समक्ष रखी जाए तो वे तुल्य ऐतरेय ब्राह्मण के उक्त प्रकरण की ओर संकेत करने लिये वे अजीबमें ब्राह्मण के पुत्र सुतः देव को बरष्ण के इमस बलि देने के लिए राजा हरिश्चन्द्र द्वारा शरीर दिया था, चाहे ऐतरेय की

इस कथा का वास्तविक तथ्यमें कुछ और ही कथों न हो। अस्तु जामे देखिए—

स्वागदिविवा च त  
 कर्तुंजीयतेह्यन कथं नैः ।  
 मात्स्यं पूंयं च तिनूरेरेष  
 गौरीचमार्गिभिः ॥ १०३

उक्त नरपण्ड को ब्रह्मिदान कर्ता स्नान कराये, तदनन्तर बस्त्र और चंदन, माता, पूर, सिन्दूर, दही और गोरोषण से उसकी पूजा करे।

पुनः तं च वर्षं प्रायश्चित्वा  
 मृत्युद्वारेण गततः ।  
 वर्णान्ते च समुत्सृज्य  
 दुर्गायेंतं निवेद्येत् ॥ १०४

अपने नौकरों द्वारा उसे १ वर्ष तक ऋणयुक्त करायें और वर्ष के समाप्त होने पर उसे मार कर दुर्गा के लिये निवेदन कर दे। यह है माधवाचार्य जी के वैष्णव पुराण में भी उपदिष्ट है।

ब्रह्मवैवर्त में यह ज्ञान—  
 ह्यम पूर्व ही यह कह चुके हैं कि पौराणिक धर्म की यह एक सामान्य प्रवृत्ति रही है कि वैदिक वत यामों की निन्दा की जाए और उनके स्थान पर मूर्तिपूजा, सनतार, तीर्थ, स्तोत्र, आदि के महत्त्व को प्रतिष्ठित किया जाए। सुमेरु शब्दों में यह कहा जा सकता है कि अथ वर्षं नवय का मार्गं मृत्यम वन गया या बना दिया गया है। अथर्ववेद, याज्ञवल्क्य, राजसूय जैसे वैदिक यज्ञ पौराणिक क्रिया कार्यों की तुलना में नश्वर हो गये। वैदिक परम्पराओं को नष्ट करने और उनके महत्त्व को अपमान करने का यह युष्मक निबोधित प्रयास था किने में पौराणिक धर्म के पुरस्कर्ताओं को समुत्सृजं सलनाय मिली। (कमलाः)

आर्यसमाज विक्रमपुर  
 जालन्धर  
 साप्ताहिक संसर्ग ३१-०-६६  
 को प्रातः ऋतु अजे दीर्घना कार्वाणो के साथ आरम्भ होता। तत्पश्चात् ही हमराज जो बावर्लैय का व्याख्यान होगा। सव सभ्य समय पर पधार कर साध उठाए।

भोट—दीर्घने ससय पहली अग्रत से सभा छैः अजे से सवा तवा बजे तक प्रातः हुवा करया। पुरोहित्तां से कार्वाणं सवस्य मन्दिरे में हृद सभय विश्व सक्ते हैं।

—पत्नी आर्यसमाज



## आर्यसमाज का संगठन और विकास का ऐतिहासिक निर्याय व उसका स्वागत श्री मुरारीलाल जो मन्त्री आर्यसमाज जोमेन्द्र नगर (H.P.)

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि पंजाब द्वारा आयोजित दिनांक १० जुलाई को आर्य मनाज मोडल टाउन जालन्धर में आर्य प्रतिनिधि सभा तथा आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब की बनतारण सभाओं की समुच्च बंटक मान्यता प्रो० रामसिंह जी की अध्यक्षता में हुई इस पवित्र आयोजन के लिये सर्वश्री गणतंत्र, वेद वेदाङ्गों का अखरोडा मन्त्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा तथा बहाई के पात्र हैं जिन्होंने इस सुप्रकार्य को आयोजित किया। मोडल टाउन आर्य समाज जालन्धर के पदाधिकारी एवं युवक कार्यकर्ताओं ने इस आयोजन पर जो जोखनादि की व्यवस्था की थी अपनावृत्त के पात्र हैं। इस पवित्र आयोजन को सफल बनाने में जो सन्निध सहयोगी सर्वश्री प्रो० रामसिंह जी प्रधान रघुबीरसिंह जी शास्त्री मन्त्री आचार्य भगवान देव जी, जयदेवसिंह जी सिद्धान्तजी तथा प्रो० शेरसिंह जी ने दिया है उनके सहयोग का स्वागत है। मुझे भी बंटक में सम्मिलित होने का शोभाय प्राप्त हुआ। सभी पदाधिकारी आर्य समाज तथा सदस्यों तथा अन्य नेताओं ने पूर्ण रधि, द्वारा निष्पक्ष होकर अपने-अपने विचार स्पष्ट रूप से प्रकट करने के बाद सर्व सम्मति से

दोनों सभाओं को एक करने का जो निर्णय किया उससे आर्य समाज एक नये मोड़ पर आकर खड़ा हुआ और उभरे एक नई दिशा मिली है इस बंटक में किए गए निर्णयों को ऐतिहासिक स्थान देकर दैनिक हिन्दू, उर्दू अर्थ जो पत्रों में प्रकाशित कर आर्य समाज के इस ऐतिहासिक निर्णय का प्रसार किया। पत्रकारों ने अपने सम्पादकीय लेखों में इसको प्रशंसा देकर आर्य समाज एवं हृदय नानन्द के मिशन के प्रति अपनी कुलजटा प्रकट कर अनन्ता का ध्यान आर्य समाज के संगठन की ओर स्थापित कर दिया है।

ऐसे समय में यह निर्णय किया जब कि भारत विश्व में एक नई करबट लेने जा रहा है, जब कि प्रान्तों का वैज्ञानिक एवं भौगोलिक आधार पर अनन्ता की मांग तथा प्रशासन की नया नया रूप देने हेतु प्रान्तीय करण किया जा रहा है इस समय आर्य समाज के इस महत्व पूर्ण पत्र एवं निर्णय को निर्यासकरण में देखने के लिए आर्य जनत एक अन-साधारण क्षास्वित है।

जो उदात्तचित्त दोनों सभाओं के प्रधानों द्वारा मनोमित करके इस निर्णय को अंजली रूप देने का निर्णय हुआ उसको पुरा करके ही नैतिक उत्तर-दायित्व समझ कर सभाओं तथा आर्य

## आर्यसमाज हिमाचल प्रदेश में प्रचार आन्दोलन कार्यक्रम

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभाने इस वर्ष जिस ढंग से हीम कालीन प्रचार व्यवस्था की है उन्ही प्रवृत्तम के अनुसार पं० बीरबकाश जी आचार्यदेवक तथा डा.कु. दुर्गासिंह जी व तनुपुत्रम बी की भजन मण्डली बसंवाला दिनांक २२-६-६६ से ४-७-६६ तक करके पालकपुर में दिनांक १३-७-६६ तक प्रचार करके दिनांक १४-७-६६ को जोमिन्द्र नगर आर्य समाज में १७-७-६६ तक प्रचार करके दिनांक १८-७-६६ को गणतंत्र को प्रस्थान कर गई है ! जिन्हा मण्डी की आर्य सभाओं में प्रचार करके मन्रीटा तथा तनुपुर की सभाओं में लौटते हुई प्रचार करेगी।

यहां पर पवित्र कोष प्रकाश जी के लोचनीय विचारों को अन्वयन में आर्य समाज की विचारधारा को तथि से सुना तथा डा.कु. दुर्गासिंह की भजन मण्डली के मनोहर तथा बीर रस के गीतों से नवयुवकों ने लाभ उठाया में सभा के पदाधिकारी विशेष रूप से श्री वेदप्रकाश जी मन्रीणा समा मन्त्री का आचारी हैं जिन्होंने इस क्षेत्र के लिये प्रचार की जो व्यवस्था की है आशा है कि जिन्हा कागड़ा तथा मन्री हिंग प्रो की आर्य सभाओं तथा को सन्निध ढंग से सहयोग देकर आर्य समाज के संगठन की सुदृढ बनायेगी। जोमिन्द्रनगर आर्य समाज की ओर से १०० रु० वेद प्रचार फण्ड में दिव्य।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभाने इस वर्ष जिस ढंग से हीम कालीन प्रचार व्यवस्था की है उन्ही प्रवृत्तम के अनुसार पं० बीरबकाश जी आचार्यदेवक तथा डा.कु. दुर्गासिंह जी व तनुपुत्रम बी की भजन मण्डली बसंवाला दिनांक २२-६-६६ से ४-७-६६ तक करके पालकपुर में दिनांक १३-७-६६ तक प्रचार करके दिनांक १४-७-६६ को जोमिन्द्र नगर आर्य समाज में १७-७-६६ तक प्रचार करके दिनांक १८-७-६६ को गणतंत्र को प्रस्थान कर गई है ! जिन्हा मण्डी की आर्य सभाओं में प्रचार करके मन्रीटा तथा तनुपुर की सभाओं में लौटते हुई प्रचार करेगी।

यहां पर पवित्र कोष प्रकाश जी के लोचनीय विचारों को अन्वयन में आर्य समाज की विचारधारा को तथि से सुना तथा डा.कु. दुर्गासिंह की भजन मण्डली के मनोहर तथा बीर रस के गीतों से नवयुवकों ने लाभ उठाया में सभा के पदाधिकारी विशेष रूप से श्री वेदप्रकाश जी मन्रीणा समा मन्त्री का आचारी हैं जिन्होंने इस क्षेत्र के लिये प्रचार की जो व्यवस्था की है आशा है कि जिन्हा कागड़ा तथा मन्री हिंग प्रो की आर्य सभाओं तथा को सन्निध ढंग से सहयोग देकर आर्य समाज के संगठन की सुदृढ बनायेगी। जोमिन्द्रनगर आर्य समाज की ओर से १०० रु० वेद प्रचार फण्ड में दिव्य।

### आर्यजगत का वेदांक

सभा का मासालिक पत्र आर्यजगत समय २ पर अपने विवेचनांक प्रकाशित करता रहता है। आर्य समाज के वैदिक सिद्धांतों पर ठोस समर्थन दी जाती है। इस बार थायवी वेद सत्याह रसायनत्व के बनतारण पर अग्रस्त में आर्यजगत का (वेदांक) प्रकाशित होगा। इस में वेद विषय वैदिक विद्वानों के लेख होंगे। वेद के विषय में उत्तम सामग्री होगी। पहले सभा मनन करने योग्य विचार मायाए होगी। इतनी सभासे तथा सत्याह है। सता नहीं क्या होता जाता है। जिसके पात्र इतनी समाज व संस्थाए हों, जैसे किसी प्रकार की कमी कैसे हो सकती है ? पर बात रधि व ध्यान की कमी की है। कई संस्थाए जो नमस्कार के योग्य हैं। बड़ा सहयोग देती हैं। पर बहुत-ही समाज व संस्थाए ध्यान नहीं देती। निवेदन है कि :-

सभा आप की व आर्यजगत आप का है। हम तो छोटे सिपाहों हैं। इस बार इस वेदांक की पचास-पचास से कम तो कोई भी समाज व संस्था न मंगवाये। अधिक से अधिक शीघ्र आर्डर दें। विद्वान, लेखक मन्दीय गंभीर वेद विषयक लेखों से कुतार्थ करें। —सं०

### म० हंसराज वैदिक साहित्य विभाग

विद्यार्थी आवश्यक पुस्तकें  
 चारों वेदों के सजिन्द मूल सैट प्रैट सैट २२.५० पै  
 ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका ३.०० पै०  
 संस्कार विधि १.२५ पै०  
 दयानन्द द्विज साह्य एण्ड बर्क (अंग्रेजी में) लेखक श्री  
 सूर्यभानु जी एम० ए० वायस चांसलर डुरुबेर यूनवर्सिटी  
 मूल्य १.५० पै०  
 सत्यार्थ प्रकाश (उर्दू) ३.५०  
 सभी आर्यसमाजों व आर्य संस्थाए इन पुस्तकों को उच्च स्थान देकर सुयोगित करें

प्राप्ति स्थान— म० हंसराज साहित्य विभाग आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा निम्नट कोर्ट जालन्धर

## शिक्षा आयोग की आराष्ट्रीय गति-विधियों

श्री पं. नरेन्द्र जी प्रधान आय प्रतिनिधि सभा

मुलतान बाजार हैबराबाद

(१) उच्च शिक्षा अग्रणी माध्यम द्वारा दी जाए।

(२) आठवीं श्रेणी के बाद संस्कृत को अनिवार्यता न दी जाए तथा संस्कृत यूनिवर्सिटीयों को निष्प्रयोजन करार दिया जाए।

(३) भारतीय सभी भाषाओं पर रोमन लिपि का आवरण चढ़ाया जाए।

पं. नरेन्द्र जी, प्रधान हिन्दी प्रचार सभा तथा आय प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण में शिक्षा आयोग के प्रतिवेदन के सम्बन्ध में एक बहस्य प्रसारित किया है जो इस प्रकार है—

शिक्षा आयोग का प्रतिवेदन प्रकाशित होकर अब जनता के सामने आ गया है। इस की रूपरेखा इस प्रकार से रही गई थी कि इस में ज्ञान, भाव और रूप के विवेधों के साथ-साथ ऐसे कोटि के भारतीयों को भी सम्मिलित किया गया था जिन में भारतीयता से बढकर पाश्चात्य मुक्त-दुर्म की प्रवृत्ता है। इस का निश्चित परिणाम यह निकला कि आयोग में जो विचारियों की है वे हमारी राष्ट्रीय भाषा और राष्ट्रीय परम्परा की माय्या के प्रतिद्वन्द्व आर अस्मानजनक है। इसे कोई बुद्धिमान राष्ट्रवादी स्वीकार नहीं कर सकता। विदेशी विवेधजन उन देशों में भी अपना सम्बन्ध रखते हैं जहाँ शिक्षा के माय्यम के साथ-साथ उनकी अपनी राजकीय भाषा का ही व्यवहार होता है परन्तु वेद है कि भारतवर्ष में सम्मिलित इस राष्ट्रीय दृष्टिकोण को उन्हे सर्वथा अस्वी दृष्टि से जोखन कर दिया है, जो न्याय समत नहीं है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह प्रतिवेदन शिक्षा विभागी की प्रेरणा एवं इच्छा पर तैयार किया गया है।

इस रिपोर्ट में सबसे अधिक आपत्तजनक और हानिकारक बात यह है कि विभागीय अर्थ को हटाकर हिन्दी अथवा अंग्रेजी इन दोनों में से किसी एक भाषा को अपनाते का

परामर्श दिया गया है। यह केवल इसी लिए दिया गया है कि हिन्दी भाषा जिसे संविधान ने राष्ट्रीय भाषा का स्थान प्रदान किया है, उसकी प्रविष्टा और गौरव को अघात पहुंचा कर, हिन्दी के विकास के प्रति उधेसा कर, अर्थ को भी अनिश्चित काल तक के व्यवहार का बहाना बनाकर इसे पूरी तरह मारु कर दिया जाए। वस्तुतः यह मनोवृत्ति अंग्रेजीय है। इस दृष्टिगत प्रवृत्ति को जितनी भी निम्न की जाए कम है।

प्रतिवेदन में हिन्दी की समवृद्धि के सम्बन्ध में जो दिव को मुझने वाले परामर्श दिए गए हैं उनपर यदि शुरुभ रूप से विचार किया जाए तो स्पष्ट हो जाता है कि कमीशन की गम अक्षरनिर्वा से पूर्ण के होने के साथ-साथ हास्यास्पद भी है।

भारतीय भाषाओं के साहित्य के लिए देवनागरी और रोमन दोनों लिपियों को स्वीकार करने की आयोग ने सिफारिश की है। इसका स्पष्ट अनिश्चय यह है कि जिन प्राप्ती में हिन्दी नहीं ओकी जाती है वे रोमन लिपि को स्वीकार कर ले जिससे कि परीक्षा रूप में उन प्राप्ती में हिन्दी को सदा के लिए समाप्त कर दिया जाए।

संस्कृत के बारे में दो बातें कही गयी हैं। एक तो यह कि आठवीं कक्षा से संस्कृत के साथ-साथ अरबी के पढाने का भी प्रवन्ध किया जाए। दूसरी यह कि संस्कृत का कोई विषय-विद्यालय स्थापित न किया जाए।

जबकि अंग्रेजी माय्यम द्वारा और विषयविद्यालयों की स्थापना की सिफारिश की गई है। संस्कृत के साथ अरबी जैसा विदेशी भाषा की सिफारिश के सम्बन्ध में जो विचार कमीशन ने प्रकट किए हैं, वे सर्वथा निरर्थक और सारहीन हैं। कारण यह है कि संस्कृत ही हमारी राष्ट्रीय और सांस्कृतिक परम्पराओं का एकमात्र परिचायक है न कि अरबी। इसलिए इन दोनों को पारस्परिक तुलना करना सर्वथा असंगत है।

शिक्षा आयोग का प्रतिवेदन उन समस्त राष्ट्रीय भाषाओं और विषयों को धूमिल करता है जिसकी प्रुति के लिए उन ने आशा की जा रही थी।

## परीक्षा परिणाम १९६६ डी०ए० वी०

कालिज, अम्बाला नगर

### प्रि० मंडिदल - में कालिज

में भेजे गए ६९ विद्यार्थियों में से ४५ विद्यार्थी पास हुए। कालिज का परीक्षा परिणाम ६५.० प्रतिशत रहा जब कि विश्व विद्यालय का परीक्षा परिणाम ६५.५ था। कालिज के चार विद्यार्थियों ने प्रथम श्रेणीजन और दो विद्यार्थियों ने द्वितीय श्रेणीजन प्राप्त किए। इसके अतिरिक्त हमारे विद्यार्थी राजेश कुमार सिंह ने ५५.६ अंक प्राप्त कर प्रथम विश्व विद्यालय में व्यवहार्य स्थान प्राप्त किया।

### प्रि० इंडोनिशिया- में कालिज

में भेजे हुए ११० विद्यार्थियों के परिणामों में से ८० विद्यार्थी उत्तीर्ण हुए। कालिज का परीक्षा परिणाम ६३.० प्रतिशत रहा जबकि विश्व विद्यालय का परिणाम ६६.० था। कालिज के विद्यार्थियों में १० प्रथम श्रेणीजन प्राप्त किए। और ०९ द्वितीय श्रेणीजन प्राप्त किए। हमारे विद्यार्थी बुल भूपाल ने ८०.९ अंक प्राप्त कर प्रथम विश्व विद्यालय में १३वां स्थान प्राप्त किया।

### B.Sc Part II - में कालिज

में भेजे गए ३१ विद्यार्थियों में से २० पास हुए। कालिज का परीक्षा परिणाम ६४.० प्रतिशत रहा जबकि विश्व विद्यालय का परिणाम ६४.० प्रतिशत था। कालिज के तीन विद्यार्थियों ने प्रथम श्रेणीजन और दो ने द्वितीय श्रेणीजन प्राप्त की। इसके अतिरिक्त हमारे विद्यार्थी जिनोकरन्ध ने ३६३ अंक प्राप्त कर प्रथम विश्व विद्यालय में १०वां स्थान प्राप्त किया।

### B. A. Part III - में कालिज

में भेजे गए ११ विद्यार्थियों में से १६ पास हुए। कालिज का परीक्षा परिणाम ६४.९ रहा जबकि विश्व विद्यालय का परिणाम ६५.० था।

### प्रि० मैडीकल - में कालिज

में भेजे गए ५८ विद्यार्थियों में से ३५ विद्यार्थी पास हुए। कालिज का परीक्षा

अब सरकार और जनता का यह कर्तव्य है कि राष्ट्रभाषा से सम्बन्धित इस प्रतिवेदन की सिफारिशों को बहुरूपीकरण कर दें जिस से कि राष्ट्रीय भाषाई, उर्दूय और अरबी की जो एक करारी चोट पहुंचने वाली है, उस से उन्हे बचाया जा सके।

परिणाम ६०.३७ रहा जबकि विश्व विद्यालय का परीक्षा परिणाम ५७.०६ प्रतिशत था। कालिज में दो विद्यार्थियों ने प्रथम श्रेणीजन और १८ ने द्वितीय श्रेणीजन प्राप्त की। इसके अतिरिक्त हमारे एक विद्यार्थी राजेश्वर सिंह ने ५०.६ अंक प्राप्त किए।

### B. A. Part II - में कालिज

में भेजे गए ६६ विद्यार्थियों में से ६१ पास हुए कालिज का परीक्षा परिणाम ६२.१७ रहा जब कि विश्व विद्यालय का परिणाम ५८.८ था। कालिज के ० विद्यार्थियों ने द्वितीय श्रेणी प्राप्त की इसके अतिरिक्त हमारे एक विद्यार्थी राजेश्वर सिंह ने १०.९ अंक प्राप्त कर कालिज में प्रथम रहा।

### B. A. Part II - में कालिज

में भेजे गए ०३ विद्यार्थियों में से १८ उत्तीर्ण हुए कालिज का परीक्षा परिणाम ६६.९ रहा जबकि विश्व विद्यालय का परिणाम ४९.१७ रहा कालिज के ३ विद्यार्थियों ने द्वितीय श्रेणी प्राप्त की इस के अतिरिक्त हमारे एक विद्यार्थी बलदेव राव ने १६६ अंक प्राप्त कर के न्यास में प्रथम रहा।

### B.Sc Part II Med. - में कालिज

में भेजे गए ३० विद्यार्थियों में से २५ पास हुए कालिज का परीक्षा परिणाम ५८.९ रहा जबकि विश्व विद्यालय का परीक्षा परिणाम ४९.१ था। कालिज के चार विद्यार्थियों ने द्वितीय श्रेणी प्राप्त की। हमारे एक विद्यार्थी राजेश्वर कुमार हुदी ने १६८ अंक प्राप्त किए और कक्षा में प्रथम रहा।

★ आय समाज के दसों नियमों को दसों दिशाओं में मुँजा दो।

★ दसों आर्य और जमाने में हलचल मना दो।

★ विश्व में राम-राज्य स्थापित करने के लिये राम और हृषण के मुणुओं को अपनाओ।

★ ईसावत और इस्लाम के जात से विश्व के मानव समाज को बचाओ।

★ आत्मा अजर-अमर है इस लिए मोत से मत बचरानो।

★ मुणु में अशोकिक भाँकियों को देखो, अमर बनो।

### दयान कालिज हिसार का शानदार परीक्षा परिणाम

कालिज के विद्यार्थी, जो वर्षावका चन्द्र आनन्द ने बी० ए० सी (पाठ ३) की परीक्षा में ५०० में से ३८८ अंक लेकर पंजाब यूनिवर्सिटी में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। यह इस कालिज का विद्यार्थी है, स्वामीय नवमंटे कालिज का नहीं जैसा कि गलती से ट्रिब्यून पत्रिका के २५ जून १९६६ के अंक में छपी समाहित सूची (Merit List) में छप गया है। कालिज का प्रतिष्ठित परीक्षा—परिणाम ९३% है।

प्री—इन्फोर्मेशन परीक्षा में हमार विद्यार्थी भी जानव देव ६५० में से ५३९ अंक प्राप्त करके पंजाब यूनिवर्सिटी में प्रथम रहा और उसने यूनिवर्सिटी का ५२९-६५० अंको वाला फिक्सा रिजार्ड भी तोड़ दिया। हमारे दो विद्यार्थी इसी परीक्षा को सम्मानित सूची (Merit List) में भी आए हैं। ग्यारह विद्यार्थियों ने प्रथम श्रेणी और २४ विद्यार्थियों ने द्वितीय श्रेणी प्राप्त की कालिज का प्रतिष्ठित परीक्षा परिणाम ७०% है जब कि आनन्दसिंह का ४४.९%।

प्री—मैट्रिक परीक्षा में हमार विद्यार्थी भी जयदीप सिंह अग्रवाल ६५० में ४३० अंक प्राप्त करके प्रथम में प्रथम रहा।

बी. ए. पाठ ३ में भी इस कालिज के छात्र हनुमान दास ने ५०० में से ३२१ अंक प्राप्त करके मुख्य छात्रों में सप्तम पंजाब विश्वविद्यालय में द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

इस कालिज का प्रायः सभी कक्षाओं का उत्तीर्ण प्रतिशत अंक (Pass Percentage) विवर-

**परीक्षा एवं मूल्यों का विवर**

वेद प्रथम ५/- गीतासत्र ७५/-  
 वेद, आनन्द के पत्र १/-ब्रह्मसूत्र संस्कार १/५०/- वेद, वेदो आठ  
 रावक कृष्णिया ७५/- वेद, लॉकट ७५/- वेद, लखनवाले जोराम ५०/- वेद, मूल मोदीया २/२४/- वेद, महाविद्यमान श्री बोर वेद १५/- वेद, वैदिक आकरल आस्कर ६/-  
 व्यायाम बोधक पत्र ११/२०/- वेद, साहित्य प्रचारक १/-  
 जयदेव ब्रदस बड़ोदा-१

विद्यालय के उत्तीर्ण प्रतिशत अंक से ऊंचा रहा है। कालिज की परीक्षा परिणाम सम्बन्धी तथा अन्य सफलताओं को देखते हुए जनता इसकी ओर अधिकारिक आकर्षण होती जाती रही है।

मन्त्री  
 स्टूडेंट्स एसोसिएशन  
 देवानन्द कालिज हिसार

**चायसमाज लोहगढ़ अमृतसर**

प्रधान—जानी विवेकदास जी।  
 उपप्रधान—डॉ० विमानदास जी  
 बरोदा ही० ए० बी० कानेज, डि० भक्ताराम जी, ही० ए० बी० हयार में ० एम०, डॉ० मधुसूदन कानेज, मन्त्री—डॉ० मुकुन्दलाल तन्जा ही० बी० बी० कानेज।  
 उपमन्त्री—सा० रोगनलाल सा० तीतारदास जानव।  
 सञ्चाली—पं० पुष्पचन्द जी जानव ही० ए० बी० कानेज।  
 आडिटर—डॉ० एम० कें० गुला ही० ए० बी० कानेज।  
 पुस्तकालय—सा० मधुसूदनदास ही० बी० ए० बी० कानेज।  
 प्रतिष्ठित—स० रमेशरसिंह जी, स० सुभद्रसिंह जी, सा० हरचन्द्रसिंह जी, सा० हंसराज जी मित्तल, सा० साहित्य स्वल्प, डि० एन० एन० सटीन, श्री धर्मपाल जी, श्री देवराज जी पुरी।  
 —निष्ठीदास जानी

**चायसमाज शकर बस्ती देहली**

इस प्रकार से चुनाव हुआ।  
 प्रधान—श्री पृथ्वीराज जी शास्त्री  
 उपप्रधान—श्री छत्रु राम जी, श्री विद्यारत्न जी सागर मन्त्री—श्री मूल-सकर जी वाल्मी, उपमन्त्री — श्री भीमसेन जी, प्रचार मन्त्री—श्री पुष्पोत्तम जी आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री

दीनासाय, अचिराम, कौरप — पुस्तकालय  
 सन बसिन्धक — श्री सुविनेश जी, लैला निरीन्द्रक — श्री इन्द्र कुमार जी, प्रतिष्ठित व्यक्ति—श्रीन विदितस्य हुए। प्रतिष्ठित सभासद छः निरालस हुए।  
 मूलसंकर शास्त्री कनवी जाय सभाज

**चायसमाज मालवीय बघर (बा. वि.) नई देहली**

प्रधान श्री बिका प्रसाद पाली  
 सचिव अन-प्रसाद श्री मंसम चाव घावण श्री मन्त्री श्री कलेश प्रसाद श्री मन्त्री श्री निष्ठीर शोके शोके उपमन्त्री— श्री राम कुमार गुप्ता महायक मन्त्री श्री अजुन देव जी कोषाध्यक्ष—श्री सरदारि जान जी सहायक कोषाध्यक्ष श्री शान्ति स्वरूप जी पुस्तकालय— श्री राम चन्द जी निरीन्द्रक—श्री नन्द सास जी  
 किशोरी सात बहन मन्त्री

### आर्य समाज श्री गंगानगर शोक प्रस्ताव

आर्य समाज श्री गंगानगर की विनांक १५-७-६६ की यह शोक तथा भाव्य अन्त के कर्मठ, स्वामी सन्नाथी कायंकला श्री स्वामी देवानन्द जी सरकारी के आकस्मिक देहावसान पर महदा तुल्य प्रकट करती है एवं परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि वे उनकी विवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें।

मन्त्री  
 आर्य समाज श्री गंगानगर

### आर्य समाज श्री गंगानगर में देहावसान विवाह सम्पन्न

विनांक १०-६६ को प्रभा ४ बजे आर्य समाज मन्दिर की सभा-मन्त्र में श्री श्रीहरिदास जी शक (राजगढ़ शक्ति) महाक रजिस्टार महकारी विवाह की गया गगर (सिकाफेर) की सुगुपी सीमन्त विनाक देवी टाक का सुम विवाह श्री हरिच चन्द्र पुत्र श्री शंकर नात्र जी टाक सांगनेर (अजपुर) की मन्त्री क्लिय मन्त्री के मालिक में से साय वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। विवाह में सवर के उपरोक्त कर्मठ में—सहायक मन्त्री उपस्थित थे विन्मोमि प्रस्ताना पूर्वक वर वधु को आशीर्वाद दिया।  
 विवाह में देहावशात बाबूने तम वृष्ट जेते प्रचायों का तिरकराक किया गया।

भारतीयों को देहा तथा जाति की रखा के लिए ऐसे विवाह का अनुकराल करना चाहिए।

मन्त्री,  
 आर्य समाज, श्री गंगानगर,  
 (राजस्थान)

### श्यादलती नोटिस

बा अयातत सन-जव विना कांगदा जपानि सेष्का ६६/३। जान-चव वगम—रोशननास।  
 श्री शानचन्द वनाम रोशननास के आदेश के अनुसार अजसह होते हुए भी अतीत ६६/३ जिसके अनुसार रोशननास सुदुण सरघाराम डात जकरर निवासी कोसपाणी नाबार धरनासाता बि० कांगडा उपयुक्त मुकदमे देवकनी में श्री रोशननास समन सातीय करुवे से जानक्य कर बकला है और फिर गया है। इन्सिफ्ट फल श्री रोशन नास के नाम पर इत्याहार (निगमन) जारी किया बसता है कि यदि रोशननास तारीख १-८-६६ को कांगडा की अदालत में उपस्थित नहीं होगा तो इसके संबंध में एक परीचन कार्यवाही की जाएगी।  
 बाय तारीख ८-७-६६ को नरे देहलावार तथा अयातत मोहर के जारी किया गया।

हस्तावर  
 सन-जव कांगडा

### निःसन्तान परिवार ध्यान

यदि आप विवाह के बाद अब तक निःसन्तान हैं ग २१ सफल बिकिसक भी पं० प्यास सुन्दर जी स्नालक (महोपदेशक पंजाब प्रतिनिधि सभा) से मिलें या पत्र व्यवहार करें। श्री स्नालक जी भारत के अनेक परिवारों की सफलता पूर्वक बिकिसला कर चुके हैं।  
 पूर्ण कोर्स ३ मास व्यय २००/-  
 पता—श्याम सुन्दर स्नालक महोपदेशक पंजाब सभा  
 देवाने हाल देहली

मुद्रक व प्रकाशक श्री सतीशराज जी आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा और मिलाप प्रेस, मिलाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत आकस्मिक महात्मा हंसराज भवन निम्नट कचहरी जालन्धर सहकर से प्रकाशित मालिक—आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



दैनिकी भाग नं० ३०५७

[आर्यप्रदेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर का मासाहिक मुखपत्र]

Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ पैसे

वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६ अंक ३०)

१ श्रावण २०२३ रविवार—दयानन्दम्ब १४१— २४ जुलाई १९६६

(तार 'प्रदेशिक' जालन्धर)

## वेद सूक्तयः

### अग्निरसिमांजनमना

हे लोगों! ध्यान खोल कर मुन नो। मैं तो अन्मकाल से ही अग्नि बन के आया हूँ। अग्नि के समान सब से आगे चलता तथा सब को प्रकाश देकर जीवनरथ दिशानता हूँ। दुष्टों को भस्म भी कर देता हूँ।

### धृतं मे चक्षु

यह मेरी आंखें बंदी चमकती हैं। कोई भी धर्म का, समाज या राष्ट्र या प्रेमी का मेरी आंखों से बच कर निकल न सकेगा। मेरी दृष्टि से बच नहीं सकता। सब को मेरी आंखें देखती हैं।

### अमृतम् म आसन्

मेरे मुख में अमृत धरा है। जैसे अमृतपात्र कर के तुमि हो जाती है वैसे मेरे मुख से निकले घण्टों को मुन कर सारे मुन, मत्स्य हो जाते हैं। मनु की तरह मेरे मुख में भीड़ा अनुसरत बरस हुआ है।

### वसन्त इन्दु रन्त्यः

हे लोगों! जीवन में कभी उदास न होना। माना प्रकाश की अवस्थाएँ जाती रही हैं। देखो! यह अमृत क्षुद्र भी हमें प्यार है, बड़ा सुन्दर है, सखीसी मनुष्य होता है। नाना-विध रंग-विरंगे पुनू मिलते हैं।

शा म के र से

## वे दा मृत

### मैं सदा विजयी हूँ

अहर्मास्म सहमान उत्तरो नाम भूम्याम्।  
अमीषाऽस्मि विश्वाषाडाशामाशां विषासहिः॥

अहं—मैं कायर नहीं हूँ वरन् (अहम् अस्मि) मैं तो सदा (सहमान) बड़ा ही साहसी हूँ (भूम्याम्) भूमि पर (उत्तरः नाम) बड़ा ही प्रतिद्वन्द्वी व उनम हूँ तथा जो भी मनुष्य बन कर मेरे मुकाबिले पर आवेगा उसे (अमीषाऽस्मि) देखने २ पराजित कर देने वाला हूँ और (आशाम्) हर दिशा व दशा में मैं (किताबतः) अन्वी तरह में मनुष्य को चकमाचूर कर देने वाला हूँ। मैं सदा विजयी हूँ। पराजय तो कभी मेरे पास नहीं आती। जो भी राक्षस, बौर बुदुरा या शत्रु बन कर मेरे सामने आया वह बही मेरे बल में समाप्त हो गया।

### इस का भाव यह है

अनु की हृषा से मैं मानवता के मान का रक्षक बन कर आया हूँ। मेरे राक्षसी, बोरी डाकुओं तथा अध्याचारियों को धिदा देने का दत्त धारण कर विधा है। उन से टक्कर लेने में लग गया हूँ। सारे लोग ही आज मेरे मन्वों को सुन लेके मैं निर्वैल कायर नहीं हूँ। मेरे पास बड़ी शक्ति सहित शक्ति का बल है। मेरा पराक्रम प्रतिद्वन्द्व हो चुका है। मैं तो शत्रुओं को राक्षसी विषाणों को, आक्रमण करने वालों को मार काट कर उनको भूमि पर गिरा देता हूँ। याचर मूली के समान काट देता हूँ। जिन और भी पाव खस्ता हूँ उधर ही विजय करता बना जाता हूँ। शत्रु को चकमाचूर करता जाता हूँ।

अवर्ष वेद 1.2.14

★ यद्यपि दयानन्द और स्वामी श्रद्धालय तथा धर्मवीर पं० विष्णुधर जो के प्रतिद्वन्द्व शत्रुओं को ध्यान पूर्वक सुनी और उनके स्वप्नों को, उनके अधूरे कार्यों को पूर्ण करने के लिये अथवा जोर-शुक् का भण्डार धारण करके सर पर कल्पन बाध कर भीड़ को भी संतुष्ट कर कर विजय विजय पथ पर आगे बढ़े। ये ही श्रद्धेय स्वामी श्रद्धालय की आशा का आज विषय के समान समाज के नाम तथा आर्यों की ओर के नाम आर्य समाज के नाम पर मथि म विषय पावन लक्ष्य है।

★ विषय के प्रतिहास में आर्य समाज का नाम स्वामीजी के अर्पित करने

## ऋषि दर्शन

### सत्यं न्यायं विज्ञानं तान

जिन मनुष्य का जीवन सत्य में भरा है, न्याय और न्याय करने वाला है और ज्ञान में युक्त है। कभी किसी काम में अज्ञान नहीं कहता व करना अपाय नहीं करता तथा ज्ञान से पारे नहीं होता है—

### स राजसमामर्हित

ऐसा मनुष्य भी, सत्यमयी, न्याय विन तनी विज्ञान हो राजसमा के प्रदत्त, अधिकांश ही नया मानन के योग्य ही मकान है। ऐसे मुगु वानि स्थिति ही राज्यमया के समापन होने या मरिचकमय में जाने का अधि-कार्य है।

### विदित सर्वं व्यवहारान्

जिन लोगों को राज्य के निम्न-निम्न विभागों के कार्य का ज्ञान है, चतुर है व योग्य है, जो राज्य के प्रदत्त से तथा कार्य में युक्त है— ऐसे निपुण लोगों उनमें अधिकांशों को ही राज्य के दायों में सदा लगाया जायिग।

### यज्ञानुष्ठानेन च

जो यह पद विम राष्ट्र में यज्ञों का युग्म कर्ता व परोक्षकार मनुष्य कर्ता का अनुष्ठान करने वाले मन्त्रज्ञ होने हैं। जहा पर परोक्ष-कार का काम करने वाले उनमें प्रवृत्ति के लोग है जहा दिव्यात्म

विद्यार्थों में इस बात पर परीच-  
न-वेर है कि कुछ विद्यार्थी बीबात्मा  
के सुपुत्रि में सुख मानते हैं और कुछ  
विद्यार्थी नहीं। यह विचार का  
विषय है। मेरा मत यह है कि सुपुत्रि  
अवस्था में सुख और दुःख दोनों ही  
नहीं होते। महर्षि दयानन्द का भी यही  
मत है। इस मतका सिद्धि के विर-  
तिन पंथिया दी जा रही है, आशा  
है स्वामीय प्रेमी और विद्यार्थी लोग  
इस लेख पर विचार करके यथार्थ  
बाद सिद्धि का प्रहार करेंगे।

बीबात्मा भी तीन अवस्थाएँ  
होती हैं—जागरित अवस्था, स्वप्न  
अवस्था और सुषुप्ति अवस्था।

जागरित अवस्था—जागरित  
स्थानों रहित्यः भाष्यकोष, जागरित  
अवस्था में जीव का सम्बन्ध बाह्य-  
पदार्थों, इन्द्रियों और मन से बना  
रहता है। उस काल का नाम जागरित  
अवस्था है। मानवीय भी स्वामी  
सुखदानन्द की महाराज से समान-  
रूप में कहा है कि "इन्द्रिय तन्मयाना-  
वस्था जागरणम्" अर्थात् विषय और  
सम्बन्ध से जब सुख-दुःख का अनुभव  
होता है उस काल का नाम जागरित  
अवस्था है अतः जागरित अवस्था में  
सुख और दुःख होते हैं।

स्वप्न अवस्था—स्वप्नस्थानोऽन्तः  
आत्मा जित्त सत्यं बाह्य-पदार्थों से मन  
छूट कर इन्द्रिय शक्ति का मन में संचय  
हो जाता है, तब वह अनुभव किए हुए  
विषयों के संस्कारों का प्रवृत्त हो  
जाता स्वप्नावस्था कहलाती है।

"इन्द्रियाणां विलयनेऽपि हृदयानु-  
गतविषयाणां संस्कारवशात् प्रमथि-  
तस्यैव स्वप्नम्" अर्थात् दर्शन, अर्थात्  
विषय समग्र इन्द्रिय शक्ति का मन में  
संचय हो जाता है। तब पूर्व देखे, सुने  
आ अनुभव किए हुए विषयों के  
संस्कारों का उद्वेग हो जाता  
स्वप्नावस्था कहलाती है। स्वप्न  
अवस्था में अर्थात् बाह्य-पदार्थों से जीव  
का सम्बन्ध नहीं रहता, परन्तु स्वप्न में  
बना रहता है इसलिए स्वप्न अवस्था  
में भी सुख और दुःख की प्राप्ति होती  
रहती है।

सुषुप्ति अवस्था—यस सुप्तो न  
संज्ञक काम भावयति न संज्ञक स्वप्न  
पर्यन्ति तत्सुषुप्तम्" भाष्य कोष, विश्व  
अवस्था में सोता हुआ मनुष्य किसी  
भी योग की कामना नहीं करता,  
बाई भी स्वप्न नहीं देखता वह  
सुषुप्ति अवस्था है। "सर्वे संसार दुःख  
विमुक्तकर्मणा सुषुप्ति" अर्थात् सर्व-  
वर्षात् संसार में मायुक्त प्रकार के सुख

सिद्धांत विचार-

सुषुप्ति अवस्था में जीव को सुख होता है ?

(वेदान्तम् आरम्भो गहोपदेशको हेतुर्वाचार)

का नाम सुषुप्ति है। सुषुप्ति अवस्था  
में जीव का सम्बन्ध मन से भी हट  
जाता है। अतः उस स्थान में कोई भी  
नैमित्तिक ज्ञान नहीं रहता, सुख दुःख  
नैमित्तिक हैं इस कारण सुषुप्ति में सुख  
और दुःख दोनों ही नहीं रहते। नैमित्तिक  
सुख और दुःख का ज्ञान बीबात्मा की  
केवल मन के साथ सम्बन्ध होने से होता  
है। सुषुप्ति अवस्था में जीबात्मा का  
मन से सम्बन्ध न होने से कोई भी  
नैमित्तिक ज्ञान नहीं होता चाहे वह  
इन्द्रियस्वप्न ही का मानस। जीव का स्वा-  
भाविक ज्ञान व्यवस्थ होने से कुछ  
भी करते हैं अज्ञान है, अतः सुषुप्ति  
अवस्था में जीव सुख-दुःख का  
अनुभव नहीं करता। मुहूर्तावस्था-  
कोपरिवार में भी कहा है कि "यस

सुप्ति न संज्ञक काम भावयति न संज्ञक  
स्वप्न पर्यन्ति" [ ४/१/७९ ]

अर्थात् जब जीव गाह्र विद्या में  
होता है उस अवस्था में जागरित और  
स्वप्न अवस्था का ज्ञान नहीं होता।  
न न सुषुप्ति अवस्था में सुषुप्ति अवस्था में  
"वा सुषुप्ते तिष्ठते"

वेदान्त संकर भोले स्वामी  
संस्कारावस्था की वृत्तते है कि सुषुप्ति अवस्था में  
सुख दुःख का ज्ञान नहीं होता।  
महर्षि दयानन्द के प्रभाव

(१) "जब विद्य और सुषुप्ति  
अवस्था में जाता है, तब उसको कुछ भी  
मान नहीं होता।

(२) जब मनुष्य का जीव सुषुप्ति  
अवस्था में रहता है तब उसको सुख न  
दुःख की प्राप्ति कुछ भी नहीं, नैमित्तिक

आर्य समाज और गौरव

रचयिता—श्री रवि वर्मा आर्य 'रवि' उज्जैन

ओ३म् धन्य तेकर दुःख गति से,  
कोन क्या जाता है आज ?  
आर्य समाज, आर्य समाज,  
आर्य समाज, आर्य समाज ॥

जिस का सिंह विलास शक्य कर,  
महापती तब बरचि,  
जेती, कुशली, बौद्ध विरायि,  
और पुराणी बबरजे ॥  
राजपूत के दम-दुर्ग पर,  
कोन फिर रहा, मन कर गाव ?  
आर्य समाज, आर्य समाज,  
आर्य समाज, आर्य समाज ॥

राज समेही, राधा स्वामी,  
रंजय बंधारिक सारे ॥  
राहु, नामक और बहीर मन,  
धनके जो टिम-टिम तारे ॥  
जिनके समूह तेव हीन ये,  
जिन हूए तब स्वभाव-पारे ॥  
जानं समाज, आर्य समाज ॥  
आर्य समाज, आर्य समाज ॥

करे कियार है बड़ंत,  
बड़ंत, विविध जग दुदा इंत ॥  
इंता-इंताव कियार है,  
सुषुप्ताव क्यों पना जनेत ॥  
नंतवार का सुसुप्ताव कर,  
कोन छर रहा तब कर जाव ?  
आर्य समाज, आर्य समाज ॥  
आर्य समाज, आर्य समाज ॥

वह शरीर के और ती है परन्तु वह  
के आरंभ में अवस्था के साथ जीव  
सम्बन्ध सम्बन्ध न रहने से सुख दुःख की  
प्राप्ति नहीं कर सकता। और जीव जीव  
का सम्बन्ध के अन्तर्गत योग नके जीव  
बहुत विद्या का सुं भा के रोगी युवक के  
शरीर के अन्तर्गत भी करते का बोधो  
है उसको उस समय कुछ विचित नहीं  
होता।

(१) "जब सुषुप्ति अवस्था में  
होते हो तब सुषुप्ति सुख दुःख प्राप्ति  
नाम नहीं होते ?" [सत्यार्थ प्रकाश १२  
समुपाख्य]

दयादि प्रमाणां से विद्य है कि सुषुप्ति  
अवस्था में जीव को सुख, दुःख प्राप्त  
नहीं होते।

अनेक प्राणी सुषुप्ति अवस्था में  
बड़ा के साथ सम्बन्ध सम्बन्ध से शक्ति  
लाभ करता हुआ युवक, कुछ समय  
परन्तु अपने २ युवावस्था में अज्ञान  
है परन्तु अविद्या के कारण जीबात्मा  
को इस का ठीक बोध नहीं होता, भो  
कि अज्ञान-कारण स्वप्न अवस्था में उस  
समय जीव होता है। उस समय जीव  
का अन्तःकरण मन से सम्बन्ध न रह  
जाने के कारण सुख दुःख दोनों ही  
नहीं होते इस में केवल अज्ञान ही कर्ण  
है कि गाव विद्यार्थी के दुःखभाव में सुख  
का आरोपण है वास्तव में नहीं।

रवि अर्थात् सुषुप्ति ही मात्र तों तो वह  
सन्देश मय दिखा रहा है कि अज्ञान  
प्रधान सुषुप्ति अवस्था में तत्त्वज्ञान से  
ही साध होने चाते सुषुप्ति की प्राप्ति  
होती होगी ? विचार पत्र में उनका  
मत भी जाता है, बहुपरिचय साथ  
योग्य वर्य निगूह हो जाता है। इसका  
कारण यह है कि सुषुप्ति अज्ञानात्  
संज्ञक सब को उदा प्राप्त है और  
वेदादि सम्भाररूप में सुख साध के  
विद्यार्थी धारण कर रहे हैं उस को  
निष्ठाकारण विद्य ही होगी, अतः सुषुप्ति  
अवस्था में सुख निम्न ही सुख प्राप्ति  
नहीं, अतः सुषुप्ति अवस्था जीव का  
मन से सम्बन्ध न रहने से सुख दुःख  
नहीं होते। यदि सुषुप्ति में सुख का  
बोध हो जाता तो वह क्या सुषुप्ति  
ही नहीं हो सकती, यह स्वप्न अवस्था  
जागरित ही होती है।

आशा है आर्य विद्यार्थी इस छोटे  
लेख पर सुषुप्ति विचार करके उचित  
का अज्ञान और निष्ठा का त्याग करेगे

★ जिस मनुष्य की उत्पत्ता की  
जाती है उसके सुषुप्ति अवस्था में सुख  
में का जाते हैं। जैसे यदि कोई विद्यार्थी  
की उत्पत्ता करे तो उसे विद्या प्राप्त  
होगी। इसी प्रकार यदि कोई युवक  
की उत्पत्ता करे तो वह तबके के अज्ञान  
वज, सुख और आधारी न अज्ञानी  
ही जायेगा।

सम्पादकीय—

# आर्य जगत

बर्ष १६ रविवार ०२४, २४ जुलाई १९६६ [अंक ३०]

## आर्य युवक समाजें

आज हम आर्य जगत के इन सत्यों द्वारा आर्य समाजों तथा आर्य संस्थाओं की स्फूर्ति करने के सामान्य सम्बन्धित तथ्यों के कर्तव्यों एवं परिवारों का ध्यान इस विषय बात की ओर दिखाना चाहते हैं जो आर्य समाज के लिए बहुत ही जरूरी है। जिस के द्वारा समाज का काम अतीवार्थ चलाया रहता है। जिसके बन्द हो जाने से समाज की चलती गाड़ी रुक सकती है। आज के युग में तो विशेष रूप से यह बात परभावजनक है। हम अवस्था में इस का ध्यान रखना ही होगा। यह बात है आर्य युवक समाजों की।

यह तो बिना विचार के समाजा गया है कि युवक परिवार ही या मात्र, समाज हो या राष्ट्र तब की उन्नति के लिए एक आवश्यक मस्यदा है। मस्यदा शब्द शरीर को लीला रहता है। इसके ठीक न होने से शरीर की प्रक्रिया विगड़ जाती है। युवकों में न्यायउत्तर, बोध तथा उत्साह भरा होता है। यह व किस कार्य में युवक होने, उस का रूप ही कुछ और होगा। युवक कार्य चाहते हैं और काम भी प्रयत्नशील। उन्हें कोरी बातों से बड़ी धरुण होती है।

आर्य समाज और अपनी विद्यालय संस्थाओं की मुद्रण छावनीयों में काम करते होते हमारे आर्य समाज परिवारों के जीवन से युवावस्था में ही समाज सेवा का प्रथम बीजा डाला। बड़ी उम्र को इन में बीज साया। इन के कारण ही जो आज समाज व संस्थाएं अग्रगण्य काम कर रही हैं। किन्तु कब तक ? यहाँ २ इन में से कोई युवा महाश्वरी अपनी आँखें बन्द करके चल जाता है, वहाँ बचपना यह होती है कि काम करने वाला कोई न होने से समाज का काम ही बन्द हो जाता है। कई स्थान ऐसे हैं जहाँ पर समाजों में काम करने वाला कोई न होने से बचपनी पड़ती ही हो गई। यह जगते हो है। बड़ी गलत अपनी संस्थाओं के बारे में कही जा

सकती है। युवक तो मिलते हैं पर धर्म के रूप में रंगे हुए रूप। यदि कोई मिल भी जाये तो अपनी संस्थाओं में उनके लिए कम ही स्थान मिलता है। वहीं २ ऐसे युवकों को बुद्ध २ करवाने वाले सम्बन्ध भी है पर बहुत थिरेले। युवक परिवारों सामने आ रहा है। हमारी इन ध्यावदार छावनीयों में हर प्रकार की उन्नति है पर आर्य समाज के वातावरण की छायामान शेष रहती जाती है। इस का एकमात्र कारण यह है कि युवकों के इस दिशा में निर्माण का ध्यान देने वाले बहुत कम हैं। युवकों के बाव समाजें समाजने वाले युवक कम हो रहे हैं। के और बिली और जा रहे हैं। युवक भी जन के प्रवाह से समाज होता है—उनके सामने रुकना आये तो वह अपना भाव बदल लेता है। आज हमें विकासवादी होने है कि संस्थाओं में, समाजों के कार्यों में नहीं आते। इस पर विचार करना ही चाहिए।

स्वर्गीय महात्मा हस्तराज जी इतने ऊंचे नेता होकर भी प्रति रविवार समाज में जाते थे। अपने साथ बिलेन ही युवकों को ले जाते। बड़ी युवक मात्र मान्य नेता के रूप में हमारे सामने हैं। डॉ० मेहर चन्द जी महाजन काशीर के प्रधान मन्त्री होकर भी बाद में भारत के सर्वोच्च न्यायालय के उच्च न्यायाधीश होकर भी परिवार समेत समाज में जाते थे। अब भी और कामों में अवकाश कर लें पर समाज में जाने का कभी अवकाश नहीं करते। इन का प्रभाव विशेष कर युवकों पर पड़ता है। किन्तु ऐसे चिन्तने हैं जो रविवार समाज में जाते हैं। अपने परिवार को तो कौन समाज में जाता है ? हमारी तो मायना यह होती है कि समाज में दूसरे लोग व दूसरे के परिवार आये। हमें जाने की क्या आवश्यकता है। हमारे व हमारे बच्चों के लिए समाज नहीं है। फिर काम कैसे चलेगा ? युवक समाजों के बिना समाजों की गाड़ी रुकती जा रही है पथ यह है परिवार त्रिक के बच्चे आर्य

समाज में जाते हैं। ऐसे ही लोगों व परिवारों पर समाज की मान है। हम सारे समाज से अनुरोध करना चाहते हैं कि आज की बचने वाली परिस्थिति में अपने युवक समाजों के विचारों का और मात्र ही ही समय से ही ध्यान देना प्रारम्भ कर दें। कोई भी समाज व संस्था ऐसी न रहे जहाँ पर आर्य-युवक समाज की स्थापना न हो जाये। यदि वस बाहर की संस्था में भी सच्चे युवक मिल दें तब ही समाज प्रगति करेगा। समा में अपने पत बायिक निर्वान अधिवेशन में आर्य युवक संगठन का विशेष कार्य अनवीन प्रस्ताव पारित किया था समा को इस आवश्यक काम को आज से अपने हाथ में लेकर इस कमी को पूर्ण करना चाहिए। समाजें सर्वत्र युवक समाजें बनाएँ। आर्य जगत की सेवाएँ इस कार्य में प्रस्तुत है—निम्नोक्त चन्द

### टंकारा का महा-विद्यालय

महर्षि दयानन्द सरस्वती की जन्म-भूमि टंकारा में और काम तो बड़ी उसमठा से किने जा रहे हैं। प्रतिवर्ष विद्यार्थि के अक्षर पर स्थेयाज टंकारा से मर-नारी बहुत भेजे हैं पहुँचे हैं। विशेष महाविद्यालय की कमी थी, जहाँ पर उन्नी शिक्षा प्राप्त युवकों को प्रविष्ट करके उनको वैदिक शिक्षा देकर देश-विदेशों में प्रेष-प्रचार के लिए भेजा जा सके ताकि वहाँ वे श्रद्धांवी व सफल में आशुतोष द्वारा वैदिक धर्म की छाप लगा सकें।

मान्य डॉ० मेहरचन्द जी महाजन के दिव में आरम्भ से ही आर्यसमाज के लिए बेबी तयन है। ऋषि के अनन्य प्रकाश है। टंकारा के वर्तमान उन्नत रूप में आकाश बना हुआ है। डॉ० महाजन जी के मन में एक लक्ष्य है। वह एक तो दयानन्द भूविचारिणी और दूसरा टंकारा का ऐसा महा-विद्यालय निमित्त करार कर आशीं के देवना चाहते हैं टंकारा के ऐसे महाविद्यालय के लिए डॉ० महाजन जी की यह योग्य, आदर्श जीवन बाने, आचार के सर्वोच्च प्रतीक व अनुभवी विद्वान् की तलाश में है। आर्य जनता की यह मुद्रण बड़ी प्रयत्नवादी होगी कि प्रधान जी ने उस ऋषि महाविद्यालय के लिए आर्य-समाज के विद्वान्, तपस्वी ब्राह्मण, नीयम्न की प्रतीक, इगलिया व सख्त के प्रभाव पण्डित तथा अनु-भवी श्री पं० सत्यदेव जी विद्यालय के एक-एक जालन्धर की अन्तर धन

भरा आर्य देकर टंकारा भेजा है। माननीय विद्यालयकार जो के बारे में विनया लिखा व कहा जाए पोछा है। डी०ए०सी० कनिज में वही एक-ए० भेरी को पठाते रहे। जब जालन्धर में ही कन्ना महाविद्यालय जालन्धर में एक-ए० को पठाते थे। जालन्धर में ही भर मकान अपना है। परिवार है। धानदार काम तथा मान-प्रतिष्ठा है। इतनी मुझ-मुक्ति छोड़कर पत्नी हर कर जाता है ? पर बोले— श्री महाजन जी के अवेक को इनकार नहीं किया जा सकता है। टंकारा चले गए। रविवार की बा० आनन्दन जी महं के परिवार में यह की पूर्णगति पर जनता में उम्मीक टंकारा धारणों की लीनारी पर भाव भर गुण माता से सम्मान स्वामन भी किया गया। योग्य स्थान पर योग्य चले गए। वयाएँ देते हैं। ऋषि महाविद्यालय मधुबन समाज का मलक उंचा करता रहे।

### सुरादपुर (रंजौरी) में नई

#### समाज की स्थापना

आर्य आश्रितिक समाज के उदयेवक पं० चन्द्रनेत्र आर्य हितौषी सोनीवाल निवासी २७ युग में नमू प्राम में प्रचारार्थ भ्रमण कर रहे हैं, पुष् के बाद बापसी पर सुरादपुर आग यहाँ प्रचार कार्य के पध्तात नई समाज की स्थापना की गई। समा में सत्यम्न स्थान समाज की ओर से धार्म भी भर के भेजे गए हैं। युवाय पं० चन्द्रनेत्र जी को देव-देव में इस प्रकार से हुआ प्रचार भी पं० देवरज प्रसाद जी का प्रचार भी पं० देवब्रिज जी धर्मा उपमन्त्री थी पं० विद्यासायन जी धर्मा, कोणास्य-धोमरी खोटा देवी धर्मा। अन्तरंग में श्री पं० ऋषिदेव जी धर्मा आदि युग युग—आशा है ने पीसा कृष्ण फलिया।

—देवमित्र धर्मा  
आर्य समाज सुरादपुर

★ महर्षियों की प्रशान्ती को अपनाऊँ। पर-पर में यह सचाओ महर्षि दयानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द के पद-चिह्नो में प्रगति है। इती में जीवन का और विश्व का कल्याण निहित है।  
★ कर्मों आर्य और जगते में हलस्य मया दी।

# धर्मसंकट में आपबीती

## श्री देवीदास जी आर्य गोविन्दनगर, कानपुर

जीवन में कई बार ऐसी घटनाएँ पड़ती हो जाती हैं कि मनुष्य धर्म-संकट में पड़ जाता है कि वह करे तो क्या करे ? किन्तु बड़ी सावधानता से उस धर्म संकट को दूर करना पड़ता है। मेरे साथ भी जीवन में ऐसा नैसा करने हुए ऐसे अनेक अवसर आए। भागवान ने समय पर ऐसी बुद्धि दी कि मैं उसे धर्म संकट से पार निकल गया। एक घटना जो कभी नहीं भूलती—वह निम्नलिखित है—

मुझे एक धर्म प्रेमी सज्जन ने सूचना दी कि उसने एक पंचायी हिन्दू कुलीन लड़की कानपुर के मधीय एक गाँव में मुसलमान के घर में बन्ध देखी है। यदि आप में हिम्मत है तो उस कन्या को मुझों के घर लाने का यत्न करो। मुझे जब यह निश्चय हो गया कि सूचना यत्न नहीं तो मैंने निश्चय कर लिया कि उस लड़की को कैद से छुड़ा दिया जाये। उस समय प्रमत्ता-पार बर्गो हो रही थी—उसी समय मैं उस प्रेमी सज्जन को लेकर उस गाँव में पहुँच गया। उसने मुझे दूर से बड़े प्रकाश दिखावा दिया कि इस मे मीने प्राप्त-काम वह हिन्दू लड़की देखी है। यह वे दिन थे जबकि किताब का आन्दोलन मुसलमानों की ओर से चलता जा रहा था। हिन्दू-मुसलिम तनाव जारी था। के. एम. मुन्शी की किताब में जिस में मुहम्मद साहिब के बारे में लिखा था—उस पर जोरों का आन्दोलन जारी था। यहाँ तक कि इस वर्ष १५ अगस्त के राष्ट्रिय त्योहार को मुसलिम लोगो विचारों के मुसल-मानों ने काने भण्डे मसानों पर नहारा कर मनाया था। इस मे अनुमान किया जा सकता है कि वातावरण कितना भयानक था। अन्तु !

मैं जोय मे यहाँ पर पहुँच गया। मकान का द्वार लटकाया। अन्दर से एक नौबवान आया और बोला—क्यों माहिब ! क्या बात है ? किस को भिगना चाते हो ? मैंने उत्तर दिया कि आपके घर में मेरी बहिन है, उसे लेने आया हूँ। नौबवान बोला—मानुस पटना है कि आप बन्ध मुन गये हैं ? यहाँ पर नौ आपकी बहिन नहीं है। जब मैंने अपने माथ आने वाले मापी को पीछे मुड़कर देखा—वह बड़ा नहीं था। केवल रिखा शाला बड़ी पबराइट के साथ लखा था। उसने कहा कि बाबू जी ! बहू तो निकल गया है। तब मैंने अनुभव किया कि उसने मेरे साथ मोखा किया है अन्यथा वह भाग क्यों जाता ? दूर

ऐसे धर्मसंकट में मुझे बंधना इस विषय बन्धना मे छोड़ कर बचा जाता ? मैंने साहस करते उस मुसलिम नौबवान से कहा कि तुम कुछ सोच रहे हो। मेरी बहिन तुम्हारे घर के अन्दर है। मैं तो उस को लेकर ही जाऊँगा। किन्तु वह जोर २ से श्रेय से घर कर यह कहना जाए कि यहाँ कोई लड़की नहीं है। मैं भी जोर से कहना था कि लड़की अन्दर ही है। पत्नी मनीस तक नीचे पहुँच गई। इस समय उसी मकान से एक बुढ़ा आन्दोलन निकला—उसने बुध के पुत्र कि आप क्या चाहते हैं ? फलफले क्यों हैं। अपनी बात उसके सवाले खोल कर मैंने कह दी कि मेरी बहिन आप के घर के अन्दर है। मैंने पुलिस को सूचना दे दी है, वह भी जाने

बाहोती ? दोषक के प्रकाश में जब उस अज्ञात लड़की ने देखा तो वह बोस उठी—कि इसे मैं नहीं जानती, यह मेरा भाई नहीं है, यह भूठ बोस रहा है। जब तो उस नौबवान का पाप गम हो गया। उसने लड़ी सम्भावने हुए कहा—मोने भाक ! हम से चालाकी करने अप्रय है। मैं तो पहले ही समकः गया था कि क्या होषा ? उस नौबवान ने मुझ पर साठी का बार करना आहा, तब बुढ़े ने रोके हुए कहा—अधुरी ! श्रेय संतान होता है।

तब मैंने कहा कि मैं मोने बाबू नहीं हूँ। यह मेरी बहिन है। वू कि पर से भाग आई है, इस लिए रोप में ऐसा कह रही है। आप मुझे इस ने बात

कानपुर गोविन्दनगर के निर्माक नेता, आर्य समाज के महारपी, सकेध आर्य श्री देवीदास आर्य ने कानपुर में मुसलमान बुझको द्वारा अण-हरण की जाती हुइ किन्ती हिन्दु परिवारों की युवती सर्जकों को उन से बलपूर्वक जीवन को कई बार मोत के तुल मे बालकर बापस लिया है। यह तो एक पुसक बन सकी है। आर्य समाज को इस आर्य और पर बडा मोरल है। हम चाहेंगे कि ऐने नरसिंह को सार्वदेविक सभा विधेय सम्मनित कर के वीरपदक प्रदान करे। इस लेख में इसी प्रकार की आपबीती को एक घटना है। आर्य जगत के प्रेमी पढ़े—तः

वाली होपी। आपका भना इसी बात में है कि लड़की मेरे हवाले कर दो। यदि ऐसा न करोगे तो इसका परिणाम भयकर निकलेगा। यद्यपि मैंने पोलिस को सूचना न किया था—पर ऐसा कहने के विषय कोई चारा नहीं था। मेरी पत्नीकी कास कर गई। बुढ़े बाप ने अपने बुधक भेटे को कहा कि इसको लड़की ले जा कर ले दो। वह इसके साथ जाएगी नहीं। तुम लड़ी रख दो, बेकार में बात का बतगद न बनाओ। नौबवान के हाथ मे लड़ी थी। मुझे बड़ी-बड़ी आँसू निकालकर के धर-पूर कर देह पड़ा था। मुक पर हलना करने चला ही था, जबकि मुझे लड़की के साथ बात कही। मुझे विश्वास हो गया कि शन मे काला है। लड़की अन्दर है। वह कोलाल मुनकर वह पत्नीकी लड़की लिखा नाम शान्त था, बाहर निकल आई। कुछ पत्नीकी भी पहुँच गये। बुढ़े ने लड़की को कड़ा कि मेरी। तुम्हारा भाई है, वह तुम से बात करला चाहा है। क्या तुम उसके साथ जाना

करने का मोका देते सब ठीक हो जाया। इस पर पदोषियों ने भी मेरी बात को उचित समझा कर नौबवान को बात करने की सम्मति दी बूढ़े पर भी मेरा आज्ञा चल गया। उसने लड़के को एक ओर हटा कर मुझे लड़की से बाबू करने के लिए कह गया। मैं अन्दर चला गया। उस लड़की को दूर एक कोने में वे बाकर हाथ जोड़ कर माफना की—कि मैं आर्य समाज का प्रभाव हूँ। तुम यहाँ से निकल चले। मैं तुम्हें तुम्हारे माता पिता तक पहुँचा दूँगा। इस पर लड़की ने कहा कि—अब मुझे माता-पिता रखेंगे नहीं। मुझे ठुकराया हुआ है, कोई रखने को तैयार नहीं था। इस मुसलमान परिवार में अब अपना कमाकर रखा हुआ है। मुझे मैं मास नहीं खन्गी। मैंने लड़की को विश्वास दिलाते हुए कहा—निश्चय रखो कि यदि तुम से अन्याय हुआ तो मैं तुम्हारा विषाह किसी योग्य पुरुष हिन्दू नौबवान ने कर दूँगा। वह मैं कल्प देता

हूँ। वह विपद कर बीली—कोन हिन्दू मुक मुक से विवाह करने को तैयार होता ? मुझे शौकर सानी पड़ेगी। यही रहते हो। फिर सहसा जोस उठी—क्या तुम मुक से शादी करोगे। दूरीको भी बात न करे। यदि वह लकीरार है तो मैं आनेके साथ चलती हूँ, मैं तनिक देर पूष हो गया—इस धर्म संकट को देख कर मैं सोस उठा, तैयार हूँ—कभी ! वह हूरात हो गई। नमोंकि हिन्दू प्रभाव की अलसता का उदर पता था। प्रयुक्त्य हुई। वह मेरे साथ बन्धने को तैयार हो गई। उसने सब के सामने कह दिया कि मैं इस के साथ जाऊँगी। मुसलमान नौबवान हूरात तो बडा था परंतु अब वह कर कुच भी नहीं सकता था। माँ के कानों की धक इच्छुं हो गये।

मैं उस लड़की को रिखा पर लिखा कर अपने घर गोविन्द नगर ले आया। मेरी पत्नी तथा बन्धने को तैयार प्रतीता मे थे। लड़की ने यह सब देख लिया और पूछा कि वे कौन है ? उत्तर मिलता कि पत्नी और बन्धने ! तब मैंने उसे कहा—यातिल ! वेमो ! मेरी बहिन कोई नहीं है। आज से तुम मेरी बहिन बनी और मैं तुम्हारा भाई मैंने तुम्हारे विवाह का जो वायदा किया था, उसे मैं पूर्ण करूँगा। उत्तम परिवार का युवक देखकर मैं तुम्हारा सवारोह से विवाह करूँगा। किन्तु अपने माता पिता का पता बताओ ताकि उन को बुला कर विधि-वह तुम्हारी शारी की जा सके। लड़की को हिन्दू अनायास वृद्धा कर उसके माता पिता को तार देकर बुलाया। वे आये। प्रेमपूर्वक उसे ने गये। जाते समय मैंने एक साठी देकर कहा—कि यह मेरी बहिन है। इस के विवाह में भाई के नाते मेरी ओर से इसको यह साठी भेंट है, उसका विवाह एक अच्छे परिवार में योग्य युवक से कर दिया गया। बहाँ वह अपना जीवन बड़े ही सुख में श्वेतोत्तर कर रही है। न जाने हिन्दु परिवारों की कितनी ऐसी-ऐसी युवती लड़कियों को मुसलमान लहकों से छुड़ाने से लिए जीवन को जोखन से बालकर कई पापड़ बेतन पड़ते हैं। बुनकर पढ़ः नहीं लिखते। अन्धिन पचाक और नहानी हलपक कर लकें होकर लकें चर की-कैने काएँ :-

पुराणों में कृष्ण मुनिगों की निरा कर्षण है। द्रुपिना ने एक बार एक मनुष्य को शिवोत्पादा नामक अस्त्रा के साथ भेड़ा करते हुए देखा। उसे देखते ही उनके हृदय में गुस्सा उठका। उन्होंने भी गई पौराणिक ऋषि की इस भावना में बड़े कष्टसे शांति होते हैं। कोई भी अस्त्रा उनके पास, त्याग और संराय को एक साथ में विनाष्ट कर सकती है। यही दुर्वास जव शिवोत्पादा और अशुर को रति भेड़ा के संक्षम देवते हैं, उस समय उनको जो बसा होसी है वह पुराणकार के द्वारा निम्न प्रकार बरिणत की गई है—

दृष्ट्वा ततोश्च भृगुवार  
मुनि कामी बभूव ह।  
शिवेन्द्रियोऽन्तर्धरादिपः  
सद्यसिगो भवेत् ॥

सहसा तस्य हृदये बभूव  
मुत्तेस्मृत् ॥ अथ च. २४।२।३  
अर्थात् उनके भृगुवार को देखकर मुनि कामी बन गये। शिवेन्द्रिय मुनि की कुशल में पड़ कर दोष युक्त हो गये। उनके हृदय में गुस्सा की दृष्ट्वा उत्पन्न हो गई।

यह ही दुर्वास ऋषि का पुराण-कथित चरित्र। अब नमस्किन की दुर्दशा देखिए। इच्छा जन्मकष्ट के उल्लेख अथवा ये यह क्या जाती है। एक बार नमस्किन अपनी पत्नी रेनुका के साथ नर्मदा तट पर गये और वहा पर एकान्त स्वतः देस कर दिन में ही अपनी पत्नी से सभोग में प्रसूत हो गये। उस समय भगवान् सूर्य ने उन्हें इस प्रकार दिवा मंत्रण में रत रह कर उनकी मार्लना की। सूर्य ने कहा आप वेद कर्ता ब्रह्मा के प्रपौत्र, स्वयं चारों देवों के जाता, वेदांगकर्ता, पर्यत और बेधजों में श्रेष्ठ हैं फिर—  
धर्म त्यजति धर्मगो  
ह्याधर्मसु स्तः अधर्म ॥

विधामंत्रण दोष च  
चित्तो वेदो विधेयतः ॥७१९१८८  
हे धर्मक, आप धर्म छोड़ कर अधर्म में क्यों रत हो रहे हैं। वेदों ने किन में मंत्रण करना विधेय रूप से दोष माना है। मनीमत यह है कि सूर्य की इस महंसा से लज्जित होकर मूर्धस्य नमन श्रुत्वा तपःत्वा,  
मंत्रुनं विजः ॥ १९  
अमस्किन ने मंत्रण त्याग दिया। परन्तु मंत्रण कर्म में विरक्त जने ही हो गये हों, उन्होंने अपने आपको दोषी नहीं माना और जागृत के लुक्नेत्र की भाँति कहने लगे—

## ब्रह्म वेर्त पुराण की आलोचना ( से-—प्रो० भवानोत्तलाल जी भारतीय एम. ए. )

तेजोविद्या न दोषाय  
मन्त्रैः समुपनो यथा ॥ २३  
अर्थात् जिस प्रकार सर्वमूर्ख अग्नि को कोई दोष नहीं लगता उसी प्रकार तेजस्वी व्यक्तियों को अनुचित कर्म में प्रवृत्त होने पर भी दोष नहीं लगता। अर्थात् नमस्किन की दृष्टि में तेजस्वी व्यक्तियों को दिवामंत्रण से कोई दोष नहीं लगता। जयदमिन इतना कहकर ही संतुष्ट नहीं हो गए। उन्होंने तो बड़ा तप कहा—

न वंशेषामना धास्तारो,  
सुभस्यासकामेष च ।  
न वासुदेव मन्त्रानाम सुभ,  
सिचते स्वचिन् ॥ २५  
अर्थात् वंशियों को उपदेश देने का अधिकार तुम्हें नहीं है। वासुदेव भक्तों का अग्रज कभी नहीं होगा। यह कहकर तो मानो नमस्किन ने यह स्पष्ट कर दिया कि वंशण्य लोग यदि कोई अनुचित कृत्य भी करे तो उन्हें सामान्य का अधिकार भी किसी की नहीं है। यथा नमस्किन का अनुकरण करने हुए आज के वंशण्य भी दिवामंत्रण में आसक्त होने के लिए तैयार हैं? जयदमिन को अपने वंशण्य होने बड़ा अभिमान था। उसी अहंकार के बसा होकर ये कहते हैं—विष्णु का मुद्रासन चक्र वंशण्यों की सदा रक्षा करता है—  
हृत्ते सुदयंन चक्रं शब्दत्र,  
शक्ति वंशेषान् ॥

उचित तो यह था कि जयदमिन सूर्य के परामर्श से अपने को उपकृत हुवा अनुभव करते और अपने दुष्कर्म के प्रति तज्जना अनुभव करते, परन्तु वे जो 'रत बर्ग' हो जायेंगे तब वे और उसी आशे से चट सूर्यों की उम्हेंगे यह साथ दे डाला—  
मम शापात्पाप ह्येषो,  
युद्ध प्रसक्तो भविष्यति ॥

मेरे साथ ने तू राहुग्रस्त हो जायगा। पुराणकार की सम्मति में जयदमिन के साथ ने ही सूर्यग्रहण होता है। इस प्रकार के घतघात पुराण में से विद्ये वा सकते हैं जिन में इन इतनी के रक्षितियों का ऋषि मुनियों को कर्मकित करने का व्येय स्पष्ट प्रकट होता है।

**सांख्यार्थिक विवेक—**  
पुराणों की रचना शंभ, शाक, गणेश्वर, सोर, वंशण्य आदि प्रिक्खिन सम्प्रदायों द्वारा किये २ आराध्य देव

को सर्वोत्कृष्ट सिद्ध करने की इष्टि से की गई है। इस दृष्टि से वंशण्य पुराण विष्णु की ही सृष्टि का कर्ता-हर्ता बताते हैं और संसुपुराण शिव को। कहीं कहीं विष्णु और शिव की एकता की बताई गई है, यद्यपि अन्यत्र पुराणों में इस के प्रतिकूल भाव भी मिलते हैं। ब्रह्म वंशत के ब्रह्म शब्द से शिव निदा का लक्षण करते हुए स्वयं विष्णु से शिव के प्रति कहलाया गया है—

ये स्था निन्दन्ति पापिष्ठा  
जानन्तीना भिषेतनाः ॥६३१२  
पञ्चमे ते कात्सपुने  
याचन्वच दिवाकरो ॥६३१३२  
जो पापी, जानहीन और अज्ञानो बुद्धारी निदा करते हैं वे अनन्तकाल पर्यन्त कानमूत्र नरक में पड़ते हैं। यह स्पष्ट है कि उपपुत्र का कृपण में शिव के प्रति आदर भाव व्यक्त किया गया है, परन्तु अन्यत्र भागवतार्थि पुराणों में शिव निदा भी कम नहीं आई है। सभी पुराणों को एक ही व्यक्ति की रचना बनाने वाले व्यक्ति इस विरोध की संज्ञा किंसे लगायें? कुछ भी हो ब्रह्म-वंशत पुराण में शिव निदा का स्वर नहीं भी ललित नहीं होता। इस के विपरीत शिव और विष्णु की एकता का भाव यत्र यत्र ललित होता है। कृष्ण जन्मकष्ट अथवा ७५ में कृष्ण नन्द ने कहते हैं—  
शिव पूजा विहीनपच  
शोडशो नरक बनेत् ॥८५

शिव पूजा विहीन शोडश नरक को जाता है। ९९ के श्लोक में तो कृष्ण स्पष्ट कह देते हैं—  
"भास्ति मे शापराज्यः"  
अकार से अधिक प्रिय मुझे और कोई नहीं है। कहना पड़ेगा कि वंशण्य पुराणों में अन्य सम्प्रदायों के प्रति जितनी उदारता के भाव व्यक्त हुए हैं उतने शंभ पुराणों में नहीं। तभी तो शंभ, शाक आदि-पुराणों को सामम कहना नया है। शिव पुराण की ही भाँति इस पुराण में भी लिगानेन की महिमा बरिणत हुई है। ब्रह्मकण्ड अथवा ६ में विष्णु कहते हैं—  
शतधात्वाभुक्तिनाम्नाऽनुक्तं ।  
शिवार्थिग्यानं स्वाम्ना,  
तीर्थं मेतद्वत् ॥ ६।१५६  
शिवार्थिग्यान का ज्ञान करने वाला शानी हो जाता है, उसे मुक्ति प्राप्त

हो जाती है और वह साधु बन जाता है। शिव लिगानेन का स्थान अतीक होने पर भी तीर्थ का महत्त्व प्राप्त कर लेता है। मनीमत यह रही कि इस पुराण में शिव पुराणोंकर दायन की कृपा की भाँति निवोत्पत्त का उल्लेख नहीं किया। (कमयाः)

## आर्यजगत के प्रेमियों से

समा का शास्त्रालक पच जयं जगत की एक उपदेशक बन कर प्रति लगाह अपने पवित्र प्रचार के काम में लगा रहता है। परो परियार, स्वस्थानो व व्यक्तियों के शत्रुओं में पढ़न कर मानवीय संसारो महात्मानों नेता महारथियों, विद्वान् लखकों के तथा अपनी समा के सदस्यों के लक्षों व शत्रुओं को लगातार होन होकर पहुंचाता रहता है। आर्य प्रादिक समा इस के द्वारा कितना प्रचार का काम करती है। वह भी बाटा उरु-कर शिव के पास १५० हार्ड व शायर नैकीही स्कूल विद्याल सजाओ की छात्रनिष्ठा हो। बडी २ समाओ का परिचार हो। इतना अंध शंभ हो—  
हित भी सब की ओर से जयं जगत के प्रति इतनी उदारसीमता समझ नहीं जाती। जीवन के सारे क्षण चलने के तो यह सरो न चले। कई मान्य प्रिभिल्ल. यथाए स्कूल समाने न मज्जन बहा ही सङ्गयोग देते हैं। पर अभी कमी है। मह नो ममा का पत्र है। हम तो केवल निगाही है। यदि गिवाही का दिन अवस्था को देखकर उदास हो तो शीघ्र नहीं होता।

अतः नम्रता से सब से निवेदन है कि आर्य जगत की ओर विशेष ध्यान दिया जावे। समाजें भी यदि प्रिभिल्ल रूप तथा पत्र की १००-१०५-५-५. प्रतिपा मयवा कर समाज में नम्रता दिया करे। स्वस्थानो के मान्य मज्जन भी इसी प्रकार करने दें। तथा समाजें भी ध्यान देवे तो उरु-नोमना शंभ ही समापत हो जावे। ब्रिहातपन इस में सज्जता कर नो सुश्रुयोग दिया जा सकता है। आप स्वयं ममा के स्वाम, महारुकी तथा उसके प्रेमी हैं। फिर आर्य जगत में तिमी उदासीमता को है। फिर आप उरु और विद्वान् ध्यान देकर इस को उरुत करने से बच जावे—हमारी तथा का स्कूल-कार्येण परिचार इतना बडा है। उम्के होते हुए समा को तथा इतके मुष्कण आर्य जगत की नैनी कितना २ देखाता बाहिए कि आर्य जगत की शिवाय कब हदती है—



# कपिल मुनि परम आस्तिक तथा शिक्षा आयोग का प्रतिवेदन

## श्री श्रीमत् का उद्घोष

(आचार्य देव प्रकाश जी आर्य समाज रतलाम) (अ० प्र०)

महर्षि दयानन्द ने पहिले कई हिन्दू तथा विषयों लोग भी कपिल मुनि को मास्तिक ही मानते थे दयानन्द ने उच्चरवर से बोधया की. कि कपिल को मास्तिक कहने वाले स्वयं मास्तिक है-कपिल अस्तिक था. आज हम इस विषय को महाभारत से उद्धृत करते हैं—कि वितामहा भीष्म भिन्दने बल युद्धक शब्दों से कपिल मुनि को आस्तिक मानते हैं।

मुष्टिपर ने कहा (भीष्म से) आप भरे परम हिंदी ही—आप ने योग मार्ग का बधोचित रूप से वर्णन किया अब—  
ताच्छे विद्वान्नी कात्स्न्यं  
विधिं प्रमुष्टि पृच्छते (२)  
अब मैं साध्य विषयक समूर्ण विधि पूछ रहा हूँ—आप मुझे बताते की कृपा करें।  
शुभु त्वमिदं सूयं  
साध्यानां विधित्वात्मना ।  
विहितं प्रतिभिः सर्वैः

कपिसादिनिरीवरैः (३)  
श्री भीष्म ने कहा—मुष्टिपर !  
आत्म लोक के जानने वाले साध्य काश्य के विद्वानों का यह सूयं जान सुम मुझ से तुमो ! इसे जानैबवं युक्त कपिसादि समूर्ण यतियों ने प्रकाशित किया है। प्रकरण बहुत विरिन्त है अतः हम आवश्यक स्तोकों को ही इस लेख के लिखने किसी ने पूर्ण प्रकरण पढना हो तो वह महाभारत मोक्ष बर्ण पर्व अध्याय ३०१ साध्य योग अध्याय पढ़े, भीष्म जी ने कहा—  
अस्मि न वित्रयाम्  
केचिद्दृश्यते यन्नुत्कर्षम् ।  
सुशुल्लभं यस्मिन् बहुसो  
योग हासित्श्च केचला (४)  
नरच्छे ! इस मत में किसी प्रकार की भूल नहीं दिखाई देती, इस में कुछ बहुत है किन्तु योग का सर्वथा ब्रह्मण है।  
अत्रापि तत्र परमं,  
शुभु सम्यङ्परिगतम् ।  
बुद्धिश्च परमा यम

कपिसाना महाभामनाम् (८)  
इस विषय में जो परम सत्य है, उसे मैं अभी आनि बता रहा हूँ तुमो ! यहाँ कपिल जी के द्वारा प्राथमिक साध्य मत का अनुवृत्त करने वाले

बहो भाया एतों को उसम विचार है, नहीं प्रस्तुत किया जाता है।  
साध्या राजन् महाभामना  
गच्छन्ति परमां गतिम् ।  
जानेमानेन कौन्तेय तुल्यं  
आजं न विद्यते (१००)  
राजन् ! कुनी कुमार महा जानी साध्य योगी उपर बताये हुए इसी परम गति को प्राप्य होते है। इस जान के साधन दूसरा जान कोई नहीं है।  
अन ते संशयो मा नृजानानं  
साध्य परं मतम् ।  
अथरं ध्रुवमेवोक्तं पूर्णं,  
ब्रह्म सनातनम् (१०१)  
साध्य आज सब से उकृष्ट माना गया है। इस विषय में तुम्हे तनिक भी सत्य नहीं होना चाहिए, इस में अक्षर, ध्रुव एवं पूर्ण सनातन ब्रह्म का ही प्रतिपादन हुआ वह ब्रह्म कंसा है।  
अनादि अमन्यनिबन् निर्द्वन्द्वं,  
कर्तुं शक्यताम् ।  
कृत्स्न चंभ नित्य च  
यद् बर्तन्ति मनीषिणः (१०२)  
वह ब्रह्मा आदि मध्य और अन्त से रहित, निर्द्वन्द्व, जानत की उत्पत्ति का हेतु मूल, सात्त्वत, कृत्स्न और नित्य है, ऐसा मनीषी मुख कहते है।  
यतः सर्वाः प्रवर्तन्ते सर्वे प्रलय विधिनाः।  
यच्च शान्तनि शारुनेषु बन्दन्ति परमर्षयः (१०३)  
सगार की सृष्टि स्थिति और प्रलयदि का कर्ता नहीं है। महर्षि अपने शारुनों से उसी की प्रशंसा करते हैं। किंतुना स्पष्ट बतसाध्य कपिल मुनि के आस्तिक होने के सम्बन्ध में है।  
सर्वे विप्रश्च देवश्च

तप शम विदो जनाः ।  
ब्रह्मर्ष्यं परमं देव  
मनन्तं परमभ्युत्तम् (१०४)  
प्रायंयन्तश्च तं विश्रा  
बर्तन्ति शुशु बुद्धयः ।  
सम्यक्सुक्ता सत्या योवाः  
साध्यापनात् सर्वानाः (१०५)  
समस्त ब्रह्माण, देवता और शान्ति का अनुभव करने वाले उसी केवल, अत्यन्त ब्राह्मण हिंदीय परमदेव पर-मात्मा की स्तुति, प्रार्थना करते हैं। उन्हे मुक्तो का चिन्तन करते हैं उसकी महिमा का गान करते हैं। योग में

पं० नरेन्द्र जी, प्रथम, हिन्दी प्रचार समा तथा बार्न प्रतिष्ठिति तथा उत्तम शिक्षा को प्राप्य हुए योगी तथा अपार आज वाले साध्य भेदा मुख्य भी उसी के मुख गते हैं। प्रभवान् भी भक्ति का सेवा सुन्दर वर्णन है।  
वामरुच हृष्टः परमं बन्धं च  
आजं च सूयं च यथा विदुष्यमः ।  
तपसि सूयमाणि सुखानी चंभ  
साध्ये यथाश्च विद्वित्तामि राजन् (११०)  
राजन् ! प्रत्यक्ष प्राप्त मन और दिग्द्रयो का संयम, उत्तम बल, सूयं जान तथा परिश्राम में मुख्य देने वाले जो सूयं वत्, ब्रह्मसाये है, उन सब का साध्य शारुच ने यथावत् वर्णन किया गया है (११०)  
हिंसा च देह प्रविर्तन्ति देव  
दिवीकनोद्योगिभ्यं पार्थ साध्याः।  
अयोधिकनैः निरतामहाहूँ

साध्ये द्विजाः पार्थिव शिष्टेष्वप्ये (११२)  
पार्थ ! साध्य जानी शरीर-व्याग के पत्थात् परम देव परमात्मा के उसी प्रकार प्रवेग कर जाते हैं, जैसे देवता स्वर्ग में। पृथ्वी नभः ! अतः शिष्ट गुणों द्वारा सेवित परम गुणवीर्य साध्य शारुच ने वे सभी द्विज अधिक अनुरक्त रहते है (११२)  
तेषां न शिर्वंगमन हि हृष्ट नार्वागतिः  
पाप कुलाधिवासः ।  
न बा प्रधान अपि ते द्विजोत्तमो ये  
जानमेतानुपेतैः सुरक्ताः (११३)

राजन् ! जो इस साध्य जान में अनुरक्त है, वे ही ब्राह्मण प्रधान हैं, अतः उन्हे मृत्यु के पीछे कभी पशु-पक्षी आदि योगी में नहीं जाना पढना, वे कभी नरकादि अयोग्यता को भी नहीं प्राप्त होते है, अतः उन्हे पापाचारियों के बीच भी नहीं रहना पढता है। साध्य विद्या परकीउत्तर।  
महाशक्ति विमल मुखार कात्मम् ।  
कृत्स्नच साध्यं नृपते महात्मा,  
नारायणो धारुतेः प्रथमेवम् ॥११४  
साध्य का जान अत्यन्त विद्यान् और परम प्राचीन है। परिपूर्ण और अति सुन्दर है। वर ना परमात्मा भववान नारायण इस समूर्ण साध्यं जान को पूर्ण रूप से धारण करते हैं।  
अर्थात् परमात्मा के जान को कपिल मुनि ने दर्शन के रूप में प्रकट किया है, जो लोग कहते है कि केवल ऋषि दयानन्द की हो उपज है कि साध्य शारुच का कर्ता आस्तिक है उन्हे महाभारत का यह स्वयं पढना चाहिए।

मध्य प्रविष्टो विद्या आत्म के प्रति-वेदन के सम्बन्ध में एक पक्षका प्रदा-रित किया है जो इस प्रकार है :—

विद्या आयोग का प्रतिवेदन प्रकाशित होकर अब जनता के सामने आया गया है। इसकी रूप-रेखा इस प्रकार से रखी गई थी कि इसमें आपान प्राप्त और इस के विशेषणों के साध-साय ऐसे कौटि के भारतीयों को भी सम्मिलित किया गया था विद्वे भारतीयता से बदकर पाश्चात्य सूक्ष्-भूषण की प्रवृत्ता है इसका निमित्त पर-परिश्राम यह निम्नाह कि आजमाने में जो शिक्षा और राष्ट्रीय परम्यन्त की मान्यता के प्रतिभूत और अपमान-जनक है। इसे कोई बुद्धिमान राष्-ट्रायी स्वीकार नहीं कर सकता। विद्वेयी विशेषज्ञ उन देवों से भी अपना सम्बन्ध रखते है जहां विद्या के माध्यम के साध-साय उनको अपनी राजकीय भाषा का ही व्यवहार होता है परन्तु वेद है कि ज्ञात वर्ण से सम्मिलित इस राष्ट्रीय दृष्टिकोण को उन्हीं में सर्वथा अपनी टिप्ट से ओझल कर दिया है, जो व्याय संयत नहीं है। ऐसा प्रति होता है कि यह अतिवेदन शिक्षा विभाग की प्रेरणा एवं इशारे पर नवीर किया गया है।

इस रिपोर्ट में सबसे अधिक आपत्तिजनक और हानिकारक बात यह है कि निमाधी सूत्र को हटाकर हिन्दी अपना अर्थ ही इन दोनों में से किसी एक भाषा को अपनाता का परामर्श दिया गया है। यह बेवजह इसी लिए किया गया है कि हिन्दी भाषा विधि संविधान में राष्ट्रीय भाषा का स्थान प्रदान किया है, उसकी प्रतिज्ञा और गौरव को अघात पहुंचा कर, हिन्दी के विकास के प्रति संशया कर, अंतर्जो को अनिश्चित काल तक के व्यवहार का बहाना बनाकर इसे पूरी तरह लापुर्ण कर दिया जाए। बतुतुः यह मनोविद्या अचरणीय है। इस दृष्टि परवृत्ति को विपत्ती भी निम्ना को बाध कम है।  
(समक)

श्री स्वामी श्रीदानन्द जी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए अपने जीवन में अगाय यज्ञा को धारण करने के लिए बर्ण के दीवाने और बुद्धि के परधाने बने।  
अबने जीजम ने राष्ट्रीय वेदाना को धारण करे।

नेता विद्याजी अत्रेयक ल... महात्माजी के सम्बन्ध में कुछ नहीं कहना है। तो केवल आर्य समाजियों के सम्बन्ध में ही कुछ नम्र निवेदन करना चाहता हूँ।

पुराने आर्य समाजियों को सिद्धार्थ का पूर्ण ज्ञान होता था। आजकल के आर्य समाजियों को सिद्धान्तों का ज्ञान नहीं है। पुराने आर्य समाजी मांस, मदिरा, तम्बाकू आदि अमशय पदार्थों का सेवन नहीं करते थे। आजकल के कई आर्य समाजी इन अमशय पदार्थों का सेवन करते हैं। पुराने आर्य समाजियों का चरित्र बहुत ऊँचा होता था। सन्ध्या, प्रारणायाम, हवनयज्ञ आदि धियोगानुसार करते थे। उन में लय और त्याग और सेवा की भावना होती थी तथा आर्य समाज के प्रचार की धुन होती थी। आजकल के आर्य समाजियों में इस प्रकार की कोई भी बात नहीं है इस का क्या कारण है? आज इसी विषय पर विचार करना है।

महर्षि दयानन्द के प्रचार से पूर्व कोई आर्य समाजी नहीं था। इसलिए जो लोग आर्य समाजी बने वह सब दूसरे सम्प्रदायों में से ही थे जो कि वैदिक ऋषि सिद्धान्तों को समझ कर इन से प्रभावित होकर आर्य समाजी बने थे। इसलिए उनको वैदिक सिद्धान्तों का ज्ञान होता था। उस समय वह ऐसा अनुभव करते थे—कि जिस प्रकार रोगी व्यथित अमावस्या की घोर काली राती के रहन अन्धकार से एकाएक सूर्य के प्रकाश में आया।

उन्हीं इस प्रकार अज्ञान वैश्वकार में निष्कारण ज्ञान के प्रकाश को प्राप्त करना अदभुत वस्तु प्रतीत होती थी। और जिस प्रकार किसी व्यथित के मन से कोई विचित्र वस्तु देखकर दूसरों को बताने की प्रवृत्त दृष्टा उत्पन्न होती जाती है इसी प्रकार पुराने आर्य समाजियों के जन्म में भी वैदिक सम्प्रदायों के अन्वेषण से लोगों को निष्कारण वैदिक ऋषि ज्ञान के प्रकाश में लाने की स्वयं ही प्रवृत्त दृष्टा उत्पन्न हो जाती थी। यह मैं जो कुछ लिख रहा हूँ अपने अनुभव के आधार पर लिख रहा हूँ। क्योंकि आरम्भ में मैं स्वयं भी पौराणिक सनातनधर्मों का ज्वर ही आर्य समाज में आया और आर्य समाज के सिद्धान्तों को समझा तो उक्त समय मेरे मन में जो दूसरे लोगों को आर्य समाजी बनाने की प्रवृत्त दृष्टा उत्पन्न हुई थी। जैसे कोई दीवाना पागल

# सर्व साधारण त्रार्यों के सम्बन्ध में मेरा निवेदन

लेखक—विशोरी लाल 'प्रेम' रंण का जिला सिरमौर (H.P.)

होता है। ऐसी ही मुझे आर्य समाज के प्रचार की धुन सजी हुई थी।

किन्तु आजकल के आर्य समाजी वैदिक सिद्धान्तों के सत्य ज्ञान को प्राप्त करने आर्य समाजी नहीं बने अपितु अज्ञ आर्य समाजी माता-पिता की संतान जैसे थे ही आर्य समाजी हैं, या किसी कारण से आर्य समाज में आने जाते जैसे। इसके अतिरिक्त स्वाध्याय न करने के कारण और आर्य समाजों में सिद्धान्तों पर बहुत कम व्याख्याय होने के कारण भी इन्हें सिद्धान्तों का ज्ञान नहीं है इसलिए उनमें आर्य समाज के प्रचार की धुन भी क्यों कर हो सकती है।

मांस, मद, तम्बाकू आदि के सेवन का एक कारण यह है कि पहले अमशय पदार्थों के सेवन करने वालों को आर्य समाज का समावेश नहीं बनाया जाता था। परन्तु अब उस और ध्यान नहीं दिया जाता।

दूसरा कारण यह है कि जिन आर्य समाजियों के माता - पिता आर्य समाजियों होते हुए भी इन अमशय पदार्थों का सेवन करते हैं उनको तत्काल भी उनका अनुकरण करनी है। भारतीय शासन भी इसके लिए उत्तरदायी होते हैं। अतः की कमी का वहाना बन कर मांस प्रशय का लुप्तमशुल्का प्रचार हो रहा है। मछलियों को

पालने के तालाब, मुर्गी खान, सूअर पालने आदि बाँधों को बढ़ावा दिया जा रहा है। और साधारण नरक में लेकर बड़े-बड़े पदाधिकारियों तक समझन सब मछ का सेवन करते हैं। तम्बाकू की उपज को बढ़ाने के लिए भारतीय शासन सब कदमिष्टिया बना रही है। इसके अतिरिक्त आर्य समाजों में अतिशय अमीर लोगों को लाने का दान किया जाता है और अमीर लोग भय-अशय का विचार नहीं करते। इस प्रकार के हूणित माता-पिता का सर्व-साधारण आर्य समाजियों पर प्रभाव पड़ना सम्भव है।

जिनके माता-पिता आर्य समाजी होते हुए भी सन्ध्या, हवन आदि नहीं करते उनका संतान न सन्ध्या, हवन क्यों करता है। जहाँ अन्धकार और धर्म

में ढट्टा न हो वहाँ सन्ध्या हवन आदि ही नहीं सकता। जिन लोगों के घरों में रेडियो सेट लगे हुए हैं वह प्रातः सायंक सन्ध्या हवन करने के स्थान पर रेडियो पर नाने सुनते हैं।

जब सिद्धान्तों का ज्ञान न हो, अथवा अमशय का विचार न हो, सन्ध्या, हवन आदि में अज्ञान न हो आर्य समाज के प्रचार की धुन क्योंकर हो सकती है। तप, त्याग और सेवा की भावना क्योंकर उत्पन्न हो सकती है। और चरित्र निर्माण कैसे हो सकता है। यह सोच किस प्रकार दूर हो सकते हैं इस के लिए मैं केवल दो सुझाव देना चाहता हूँ।

१. आर्य समाज के उच्चकोटि के विद्वान, उपदेवक, प्रचारक सन्ध्याविधियों की सेवा में मेरा नम्र निवेदन है—कि जब आप प्रचार के लिए आर्य समाजों में जाए, आप के व्याख्यानो में के विषय हो मांस, मांस, तम्बाकू आदि के सेवनका निषेध, सन्ध्या, प्रारणायाम, हवन, यज्ञ, प्रभु भक्ति तथा वैदिक सिद्धान्तों का मठन और अर्थात्क मत मतान्तरों का बलपूर्वक खंडन परन्तु खंडन मधुर शब्दों में, युक्तिवृत्त और वेद शास्त्रों के प्रमाणों सहित हो। कठने शब्दों में शब्दन न हो। जिस से किसी को चिन्ते का अवसर न मिल सके।

२. उपरोक्त महानुभाव आर्य समाज के समासदों का पूर्ण परिचय प्राप्त करें। उनके गुरु, दोषों को जानने का यत्न करें और एकल में एक-एक के दोषों को बड़े प्रेम में, सम्मतीता से और मधुर वाणी से समझ कर दूर करने का प्रयत्न करें। उन से मांस, नश, तम्बाकू आदि अशय पदार्थों का सेवन सुझावें तथा सन्ध्या, प्रारणायाम, हवन आदि करने की उन्हीं प्रेरणा दें। मध्याह्न प्रकाश, ऋच्येद आदि माध्य भूमिका व्यवहार भांग आदि ऋषि कृत क्रमों तथा अन्य उच्चकोटि के आर्य विद्वानों के लिखे हुए ग्रंथों के स्वाध्याय करने का बलपूर्वक उन से अनुरोध करें। जो व्यक्ति जिस योग्यता का हो वनी ही पुस्तकें पढ़ने के लिए उन्हीं बताएं और स्वयं आर्य समाज के पुस्तकालयों से पुस्तकें निकलवा कर उनके हाथों में

## गीत

पलकों में कोई बंटा है।  
मांता अपने में तार नहीं,

चन्दन घिसने में पार नहीं,  
गीता को देखा पलट-पलट,  
गंगा को डाला उलट-उलट  
प्यारों में कोई पंटा है।

चून् ली बगिया की कली कली  
देखी गोपी की गली गली

बट डाला पूरा मामदेव,  
सम्भन्न साधा हर ताल भेद  
अधरो पे कोई बंटा है।  
हर मुख खुला है पाल नया  
हर साग उडारा माल नया  
बाँधे हैं किन्तने सेतु नया।

लहरे हैं किन्तने अथग अथग  
लहरो में कोई बंटा है।

केसव छिछो हर हाट डार  
तारे हैं किन्तने पुत्र मगर

पावे हैं किन्तने नवल भंवर  
भेजे हैं किन्तने सबल चंवर  
मजरो में कोई बंटा है।

सुन्दरलाल जी बोहरा, जोधपुर

## आर्य युवक समाज का दिव्य (गुरदासपुर)

### का चुनाव

प्रधान—भी रवीन्द्र कुमार जी  
मन्त्री— .. अरुण कुमार ज।  
उपप्रधान— .. मंगतराम जी, भी कृष्ण लाल जी।

उपमन्त्री—भी अश्विनी कुमार जी,  
पुस्तकाध्यक्ष—भी नरपण्डित जी,  
सहायक पुस्तकाध्यक्ष—भी जोगिन्द्र कुमार जी।

प्रचारमन्त्री—भी वानि प्रकाश जी।  
कोषाध्यक्ष— .. रमेश कुमार जी  
सखार—भी लक्ष्मण जी।  
आतंकिक सदस्य— .. सोलह निर्वाचित हुए।  
भवदीय— .. अरुण कुमार आर्य मन्त्री समाज

दे और इस प्रकार उन्में स्वाध्यायशील बनाने का पूरा पूरा प्रयत्न करें। स्वाध्याय में ही सर्व-साधारण आर्य समाजों के हृदय आर्य समाज बन सकते हैं। आर्यों को मन्त्रे अर्थों में आर्य बनाने के सपथ में इतना विश्वास ही पर्याप्त है।

### डी.ए.वी. कॉलेज का एम.ए. (अर्थ शास्त्र) का शानदार परिणाम

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी डी. ए. वी. कॉलेज जालन्धर ने एम. ए. की परीक्षाओं में पचास विद्यार्थियों के सभी कालेजों को पराजित किया है। एम. ए. पाठ २ वर्ष शास्त्र (इकोनॉमिक्स) में इस वर्ष इस कालेज के उम्मीदक सिद्ध ४८० नम्बर अर्हक विद्यार्थियों में प्रथम आए। इसी कालेज की कुमारी बलवीर को तथा कुमारी अन्नप्रभा सुपुत्री प्रथीपक पंचम रास क्रमशः ४७० और ४५८ नम्बर लेकर विद्यार्थियों में द्वितीय और तृतीय स्थान पर आईं। **सम्मान का परिणाम १०० प्रतिशत रहा जबकि विद्यार्थियों का ८८८ प्रतिशत रहा।**

सकृता पाठ १ में इसी कालेज की कुमारी बनिता शूरी और तुला कुमारी क्रमशः २३४ और २३३ अंक लेकर विद्यार्थियों में तृतीय तथा चतुर्थ आईं। इस में भी कालेज का परिणाम श्रेष्ठ प्रकृत रहा। फौजिस्त कान साईस एम. ए. पाठ (१) में भी कालेज का परिणाम भी श्रेष्ठ प्रकृत निकला।

### श्री प्रमुदयाल जी आर्य प्रमाकर का प्रचार कार्य

आय प्रारंभिक सभा की ओर से नियुक्त प्रचार मन्त्री प्रमुदयाल जी आर्य की जो फि बी ए. रामनिवार जी की देखरेख में हितानुष्ठीक विधियों में प्रचार कर रही है। इन्हीं विधियों काय की मन्त्री में मंगल, मुद्राल (बाबाहेदी) मोक्षर और सोमर म प्रचार किया।

### पठनीय एवं श्रेष्ठतम साहित्य

वेद प्रथम ५/- गीतासार ७५ पैसे, भागवतगीत के पत्र १/-, वेदार्थ मन्कार १ ५० पैसे, मेरी डाट गायक कहानिया ७५ पैसे, लोड ७५ पैसे, लखनवासी जय ५० पैसे, राम माता २/४५ पैसे, सतति निवमन की ओर १५ पैसे, वैदिक शाकल्य भास्कर ५/-, श्यामल बोधक पत्र ११/२० पैसे, माहित्य ५ भाग १/ जयदेव श्रद्ध से बड़ोदा-१

### आर्य समाजों को सुवेद सप्तह्व श्रावणकी उपहार्य करवा रहा है। उन दिनों सारी समाजों का क्रम बनाने में कठिनाता हो जाती है। अगस्त से ३० दिसम्बर १९६६ तक सारा समाज वेद सप्तह्व की कथाओं के लिए है। समाजों के विवेक है कि सभा को इस विषय में अपनी से उत्तम वेद सप्तह्व का समुचित कार्यक्रम बनाया जा सके।

उत्तर प्रकाश प्रहोना  
सभा मन्त्री आर्य समाजिक सन्त जालन्धर

### आय समाज मंचन के भी रामनिवार की शानदार और भी चतुर्विध की उत्कृष्टता के साथ ही वेद प्रमाकर (१२२) प्राप्त हुए।

आय समाज मुद्राल (बाबाहेदी) में यज्ञ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर भी हजमन की को यज्ञोपवीत धारण करवाया। श्री ० मुद्राल जी के सुपुत्रों को उनके विवाह स्थान पर यज्ञोपवीत धारण कराये गए।

श्री ० दरवावाहिद जी, श्री ० मुद्राल जी श्री ० रामनिवार के पुरोयय से सभा को वेद प्रचारार्थ २२५) प्राप्त हुए।

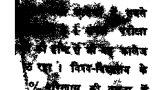
मोक्षर म १ से ७ जोडाई तक वेद सप्तह्व मनाया गया। वृहत् यज्ञ के पुरोयय पुरोहित के अवसर पर अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों को यज्ञोपवीत धारण कराए गए। यज्ञ समाप्त पर श्री ० मयाराम जी ठकेदार, बहिन शान्ति देवी जी आर्य मुष्ठाप्यायिका आर्य कल्या पाठशाखा टिटीवी, श्री ० सुगतीराम जी आर्य, श्री ० जयवाम जी श्रेष्ठ, श्री ० रिवालसिंह श्री ० जमीरसिंह जी आदि सज्जनों के पुरु पाठ से २(८) वेद प्रमाकर सभा को प्राप्त हुए। श्री ० मयाराम जी ठकेदार ने ५५) इस युग काय के लिए भेंट किया। इस प्रचार में बानप्रस्थी भूरायाम जी का विशेष हाथ रहा। आयंजयत के पत्रे भी प्राप्त किए।

अनुभवगत जी आर्य और उनकी मन्त्री का काय अत्यन्त मतोष जनक टा रहा है। सभा की ओर में उपरासत रानी सज्जनों का जोर प्रमुदयाल जी आर्य का अति धन्यवाद।  
—व्यवस्थापक

### डी.ए.वी. कॉलेज जालन्धर का शानदार परिणाम

डी.ए.वी. कॉलेज का छात्र रमेशकुमार श्री ० युनिवर्सिटी परीक्षा में ६७७ अंक लेकर सर्व-प्रथम रहा।

डी.ए.वी. कॉलेज जालन्धर में अपनी पूर्ण बर्खास्तों की शान्द रखते हुए इस वर्ष भी विद्यार्थियों का श्री ० युनिवर्सिटी परीक्षा में रिकार्ड स्थापित किया है। इस कालेज का छात्र रमेशकुमार श्री ० युनिवर्सिटी (Non medical group) में सर्व प्रथम रहा, राम गोपाल सिंह और विनोद कुमार (Medical group) में ६१५, और ९०८ अंक लेकर प्रथम और द्वितीय रहे। जलोचन-कुमार और सुभाषचन्द्र दीनो ६३३ अंक लेकर चतुर्थ स्थान पर रहे। सर्वोत्तम श्रेष्ठ बाल सुप्रसन्न शर्मा, बह्मदुरसिंह सिद्ध, पञ्च, एक और नमस् स्थानो पर रहे। इन्होंने क्रमशः ६२०, ६१७ और ६१५ अंक प्राप्त किए। रामगोपालसिंह, जलोचनकुमार, विनोदकुमार हरिवंशदा और वेदसिंह चौधरी ६०५, ६२५, ६२५, ६२५, और ६०५ अंक प्राप्त किए। वेदसिंह चौधरी और रमेशकुमार सर्व श्री ० युनिवर्सिटी आर्ट्स में प्रथम और द्वितीय रहे। कुल २० बरिष्ठ स्थाणों में से इस कालेज ने ११ स्थान ग्रहण किए। यह सत्त्वा प्रवेश के सभी कालेजों की मन्त्रा से सर्वाधिक है। ४४ छात्र बरिष्ठ सूची में आए। यह सत्त्वा भी सभी कालेजों में सर्वाधिक है। प्रथम श्रेणी में इस कालेज के ७५ छात्र



में प्रथम और द्वितीय स्थान पर रहे। इस प्रकार प्रत्येक क्रम में इसका श्रेष्ठ कालेज का परिणाम उज्ज्वल रहा। इसका श्रेष्ठ वि. ० भीषतेन भी बहल और सुयोग्य प्राध्यापक वर्ग को ही है।

### डी.ए.वी. कॉलेज जालन्धर का एम.ए. गणित द्वितीय वर्ष का शानदार परिणाम

राजप्रकाश गाहवा, मोहनलाल और वृजमोहन क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पर रहे।

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी डी.ए.वी. कॉलेज जालन्धर ने पचास विद्यार्थियों के गणित एम.ए. द्वितीय वर्ष की परीक्षा में अत्यन्त परिणाम द्वारा पश्चिमी सभी रिकार्ड तोड़ दिए। इस वर्ष इस कालेज क के राजप्रकाश गाहवा, मोहनलाल और वृजमोहन ६७७, ५८० और ५७३ अंक लेकर पचास विद्यार्थियों में प्रथम द्वितीय और तृतीय रहे। इसी कालेज के राजेशसिंह, सत्यपाल ने ५५३, ५४५ और ५३५ अंक लेकर सप्तम, षष्ठम और नवम स्थान प्राप्त किए। इस कालेज के २२ छात्र प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। अन्य किली की मन्त्रेण में उत्तीर्ण स्थानों में प्रथम श्रेणीया शान्त शर्मा जी। इसका श्रेष्ठ परिणाम विद्यार्थियों के ६८५% के सुपुत्रों के ८०% रहा। इसी प्रकार कालेज ने डी.ए.वी. की श्रेष्ठ से श्री ० ए. वी. श्रेष्ठ जी, द्वितीय वर्ष में श्री सागदार परिणाम प्रस्तुत किए। इस परीक्षा में कालेज के राजप्रकाश, मन्त्र-ज्योति बहल, और तेजराज ने १९७ १९२ और १८८ अंक लेकर तृतीय पञ्चम और सप्तम स्थान प्राप्त किए। कालेज का प्रतिष्ठित परिणाम विद्यार्थियों के ४५ के सुपुत्रों में ७०% रहा। इसका श्रेष्ठ कालेज के ३०% भी भीषतेन भी बहल और सुयोग्य प्राध्यापक वर्ग को है।



श्रीयोग सं. २०१५

[आर्यप्रदांशक प्रांतोनांघसभा पंजाब जाल्पर क सान्नाहंक मुखपत्र]

Rogd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य ५० के रूप में प्रेषित किया जा सकता है।

वर्ष २६ अंक ३२)

२३ अक्टूबर २३ ई.स. १९६६

(तार 'प्रादेशिक' ज्ञानमन्तर

### वेद सूक्तयः

**तुभ्यं धावन्ति धेनुवः**

प्रभो ! हमारी ये धेनुवः तुम्हें चले जाने वाली वासियों की तुम्हें तुम्हें-नेरे विप्रे हो धावन्ति दीवती हैं। हम जितना भी तुम्हें गाना करते हैं। यह श्रावण आने के लिए है।

### कृधि नो यशसो जनि

हमारे देव ! हृद्य करो। ये हमें जो यश के अलावा है, परमात्मक कीर्ति दाने। इति कः दीमिह, जने-कारे, जन्म-राल में प्रकृति, जन्म देवे। हृद्य कीर्ति दाने यम कर देवे। माय मेरी इत्यादि करे।

### विश्वो अग्र दिवो जहि

कामेश्वर ! हमारे अन्तर माया के विप्रे की विप्रे-जन्म-चिरमी का-की है। जन्म विप्रे-जन्म के अन्तर्गत, जन्म देवे। न कि-निश कर देवे। कोई भी जन्म में नहीं पावे। विप्रे की कीर्ति न हो।

### सदाहृक्वन्तो विश्वपरिमत

जन्म के अन्तर्गत, जन्म देवे। न कि-निश कर देवे। कोई भी जन्म में नहीं पावे। विप्रे की कीर्ति न हो।

साम मे दे दे

## तटस्थता भा० विदेश नीती का

### मुख्य सिद्धांत : कामराज

#### ग्राम चुनाव में कांग्रेस की सफलता असंदिग्ध

सोवियत सरकार ने श्री कामराज ने 'भारत की विदेश नीति' जर्गल विभिन्न विचारों पर प्रत्यक्ष किए। इस अवसर पर भारतीय पत्रकार श्री अमराज ने। तटस्थता के विषय में श्री कामराज ने कहा कि भारत तटस्थता पर ही चलता रहने के, जल्दवा रहेगा और चल रहा है। उन्होंने कहा कि तटस्थता भारत की विदेश नीति का मुख्य सिद्धांत है। प्रश्नों के उत्तर देने के बाद श्री कामराज ने सोवियत सरकार की भारतीय अंतर्राष्ट्रीय नीति पर प्रत्यक्ष किया। विपत्तियों की स्थिति पर कांग्रेस पार्टी की स्थिति के बारे में पूछे जाने पर श्री कामराज ने कहा कि कांग्रेस पार्टी विपत्तियों पर अग्रणी बनना ही सदा के निशान रखती आई है। भारत के आगामी चुनावों में कांग्रेस की स्थिति के बारे में श्री कामराज ने कहा कि कांग्रेस की विजय में कोई संदेह नहीं। उन्होंने कहा कि भारत तटस्थता को अपना विधान के लिए पूर्णतया प्रयत्नशील है।

प्रश्न के रूप में श्री कामराज ने सोवियत प्रधानमंत्री श्री क्रोमिन और सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी के जनरल सेंक्रेटी श्री बेंजेलो ने अपनी बातचीत पर संतोष व्यक्त किया।

उन्होंने कहा कि सोवियत संघ के एशियाई जलमय का प्रयत्न में बड़े प्रभावित हुए हैं।

★ विश्वका स्वयंसेवक ईश्वर की शक्ति का प्रदर्शन और विना पराजय के व्यापक और सबकी भलाई करना है, जो कि अक्षय्य आदि प्रयासों से परीक्षा किने हुए सब कार्यवाही करके ही और की वेदोक्त होने से सब मनुष्यों के लिए यही एक मात्र मार्ग योग्य है, उसकी परीक्षा की है।

★ परमेश्वर का प्रत्यक्ष आशीर्वाद का माया होकर सब चलता है क्योंकि सत्योक्तिवादी सब-सर्व सत्य का प्रचार करते हैं।

★ मनीषा विद्या, मलाई से उत्पन्न हुए फल, फल, फूलानि न खाना चाहिए। इसके अतिरिक्त विप्रे तपोभूमी पर्याप्त हो संतोष प्राप्त, तदनुभव आदि उत्तम कामा भी तपोपल की बढाता है।

## ऋषि दर्शन

**यत्रैको मनुष्यो राजा**

जित देव से एक ही मनुष्य राजा बन जाता है, सारी शक्ति उसी के हाथ में होती है, प्रजा की कोई सत्ता न आजाय नहीं होती। अनेक अविनायक होता है, किन्तु तटस्थ बनती है, बनेका ही सब कुछ होता है—बहा।

### तत्र पीडिताश्च

बहा, उल्टे देव में, राज्य के सारी प्रजा सारी जनता, सारे लोग पीडित हो जाते हैं, दुखी होते हैं। वह अनेक जन-उत्पन्न को कुचल कर अविनायक बन कर जन-नाशी करता है। लोग अतीव कष्ट पाते हैं।

### एताः तिस्रः सभाः

इसलिए सारे कार्यों की ठीक रूप से चलाने के लिए राज्य में तीन सभाएं बनानी चाहिए। तर्क सारे देव से राज्य के लोगों के काम उत्तम रूप में चलते रहें। इन सभानों के द्वारा सारी प्रजा जीवन में सुखी बनी रहे।

### राजकर्मस्ति तद् द्विविधम्

यह जो राज्य चलाने का काम है, दो प्रकार का सामान्य है, यह दो प्रकार का होता है राज्य के राज्य विधान के दो ही रूप हुआ करते हैं। दोनों ही बड़े आवश्यक हैं। सामान्य रूप के दो प्रकार हैं। आर्य मू. वि का से

द का कथन है कि हे कमंडील ? तू अपने किए कर्मों को स्मरण । वेद में जीवों को सदा बध्ने । करने का आदेश दिया । 'कुर्मन्नेवह मीरिह जिनीविपेअधम' समाः ।' अर्थात् हे जीव तू कर्म करता हुआ ही तू सब तक जीवों की इच्छा कर । इस में जिजिबिषन् । शब्द ध्यान देने योग्य है । इसका अर्थ है, जीविन्ति निष्क्रेत । अर्थात् जीवों को इच्छा कर । जहाँ तू शरीरिक इष्टि से अधिक काल तक जीना चाहता है, वह वैज्ञानिक इष्टि से भी जीने को इच्छा कर । जीवन में उसलाहो, ज्ञान हो तथा साथ देवो चाहिए पवित्रकर्म । अधिक जीना ही कोई अवश्यन नहीं है, बल्कि जीवन में कितने अधिक शुभ कर्म किए इतनी में मानव जीवन की महत्ता निहित है । नहीं तो यद्यु प्रेमी भी ज्यादा समय तक जीवित रहते ही । अतः महा आत्मिक जीवन की ओर विशेष सकेत किया गया है । इस का शब्द है 'एव' अर्थात् कर्म करता हुआ ही जीने को इच्छा करे आत्सवी निवृत्त्या वनकर नहीं । महा यद्यपि कर्म सामान्य बाधक सत्ता है, परन्तु उसका अर्थ श्रेष्ठ कर्म है । अर्थात् हे जीव ! तू शुभ कर्म करता हुआ ही जीने को इच्छा कर । मानव का अप्रमत्त चौसा पवित्र कर्मों की कमाई के लिए छिन्ता है । क्योंकि कर्तव्य कर्मों की पहिना को मानव ही पहचानता है । जीवन के लक्षण विन्दु तक पहुँचने को मानव में क्षमता है । यदि जीवन में सही-नही किना तो निरालम्बे के लिए तो और बहुत-सी योगिया है । वेद में जीव के लिए 'इतु' शब्द का प्रयोग किया है, यद्यपि इसका अर्थ यज्ञ होता है, परन्तु यहाँ 'कर्मशील बर्ष' होगा । जीवन के लिए यह शब्द अपने प्रयोग किया गया है, इसे जानने के लिए इसकी पृष्ठ भूमि को समझना आवश्यक है । संस्कृत साहित्य में कथा आती है कि जीवन में १०० यज्ञ करने पर मनुष्य इन्द्र के पद को पा लेता है और वह स्वर्ग का राजा हो जाता है । वास्तव में यह एक आश्चर्यकारक कथन है । इन्द्र नाम है जीवात्मा का, यह स्वर्ग का राजा है । वेद के शब्दों में यह स्वर्ग । 'अष्ट पञ्च मन' द्वारा देवताओं पुरयोध्या, तस्या हिरण्यक' बोधाः स्वामी ज्योतिषात् ।' अर्थात् जीव, के पास स्थान हृदय को नग्न कहा गया है, जहाँ का अधिपति इन्द्र अर्थात् जीव है । लेकिन

-आत्मिक चर्चा-

ओ३म् कृतोस्मर

पं० सत्य प्रिय जो शास्त्रों सिद्धान्त विरोधणि प्राध्यापकः—  
श्यामन्द् त्राहा मीहविद्यालय हिसार

में स्वयं का रोना हूँ । इस रहस्य को कौन जान सकेगा, जो तो यज्ञ करता । वेद में कहा—'जीवम शर दशतम्' अर्थात् तो यज्ञ तक जियें । एक-एक वर्ष मानो एक-एक पक्ष है । लेकिन बनाने से बनेगा, क्योंकि 'पशो न श्रेष्ठमयम् कर्म ।' अर्थात् श्रेष्ठ कर्मों का नाम यज्ञ है । जो पुरुष अपने जीवन के प्रत्येक वर्ष को यज्ञ अर्थात् श्रेष्ठ कर्म से भरपूर करता चलेगा । जीवन के प्रत्येक क्षण में शूभ कर्म ही करता

चलेगा तो उसकी आयु का प्रत्येक वर्ष एक वर्ष के समान होगा । निरन्तर यदि वह इसी प्रकार प्रत्येक वर्ष को यज्ञ तुल्य मान कर शुभ कर्मों द्वारा व्यतीत करता रहा तो सौ वर्ष की आयु होने पर मानो उसने सौ यज्ञ पूर्ण कर लिये होते हैं । तब वह वास्तव में अपने इन्द्र स्वर्ण अर्थात् पुण्य कर्मों के महान् ऐश्वर्य के स्वामी के रूप में अपने को पहचान पायेगा । पाठक जानते ही कि इन्द्र का अयुर्वो के साथ सदा युद्ध चलता रहता है । यही



आर्य समाज और गौरव

( श्री रवि वर्मा आर्य 'रवि', उज्जैन )

देवदूत अबतार बाद भी ,  
किस के भय में भाव चले ।  
किसके भय से तीर्थ मूर्ति ,  
काशी-काचा-तीमाप चले ॥

'जिना ज्ञान के मुक्ति न होगी'  
कौन सजाता है जावाज ?  
आर्य समाज , आर्य समाज ।  
आर्य समाज—आर्य संभाव ॥

बाव-विवाह का केश समर्पण,  
विधवा-विवाह - विरोध कहाँ,  
जाति-पाति बंध धुजा छूट का,  
बन्धन क्या अवशिष्ट रहा ॥

कहो कौन जो पुजाधार सा,  
बदल रहा है आज समाज,  
आर्य समाज , आर्य समाज ।  
आर्य समाज , आर्य समाज ॥

बैदिक सन्ध्या पत्र यज्ञ का,  
किसने पुनः प्रचार किया ।  
गुरुकुल प्राच्य प्रणाली का भी  
किसने पुनरुद्धार किया ॥

कौन बनायो की समाजकर  
मातृ शक्ति की रक्षता लाज ।  
आर्य समाज , आर्य समाज ।  
आर्य समाज , आर्य समाज ॥

आजो, उसी समाज-काज हित,  
तन-मन-धन बलिदान करे ।  
उस के संघर्षन द्वारा रवि,  
देव, जाति कल्याण करे ॥

यही हमारा सत्य - शापी,  
रक्षा, शिखा अरु सरलाज,  
आर्य समाज , आर्य समाज ।  
आर्य समाज , आर्य समाज ॥

जीवों के देवी तथा आतुरी मूर्तियों का कुंड है । परन्तु इन्द्र अपने बचने के अयुर्वो को मारता है, अर्थात् पुण्यात्मा रूपी इन्द्र के पास आत्मिक बल रूपी कठोर तथा तीक्ष्ण बर्ष होता है, जिसकी देव के आगे पाप सभी अयुर्वो नष्ट भ्रष्ट हो जाते हैं । इन्द्र देवों का राजा है । देव का अर्थ इन्द्रियों भी होता है तथा दिव्य भावनाओं भी होता है । यदि समस्त इन्द्रिया श्रेष्ठ अर्थात् दिव्य रही तभी जीव इन्द्र है, क्योंकि देवों के अन्तर दिव्यता होने से ही वे देव संज्ञा के अधिकारी हैं । यदि इन्द्रियों का अन्तर कल्पना का आई तो जीव का इन्द्र पद भी गया क्योंकि अयुर्वो द्वारा अधिकार कर लिये जाता है । अतः स्वर्ग का राज्य पहिले यामे तथा इन्द्र पद का अधिकार प्राप्त करने वाले जीव का कर्तव्य होगा कि वह अपने सैनिकों इन्द्रियों को देव अर्थात् श्रेष्ठ बनाए । इन्द्रियों के विषय हम में छूट नहीं सकते । हमारा कर्तव्य है कि इन्द्रियों का मार्ग परिवर्तित कर दे, हम देवों, लेकिन प्यारे प्रभु की महिमा देखें, मुझ भी तो परम-पिता की विविध लीला के मान सुने, सुबें परन्तु उस महान शिल्पी द्वारा निमित्त प्रकृत की गणितिक बना को । इन्द्र का यह कर्तव्य है कि वह अपने अनुयायियों के अन्तर दिव्यता भरे उसी में उसका इन्द्र है । इन्द्र का एक नाम 'राज' भी आता है । 'जान' शब्द से शकार लिया गया 'कु' से क शकार 'शक' शब्द बना है । आधुनिक संज्ञिक नाम की यह परिभाषा वेद के इस शब्द में सुपी है । अर्थात् जीव सौ वर्ष शुभ कर्मों में गुजारे इतनीलिए वेद में जीव को 'बायो ?' कहा है, वातु का पर्याय 'गणबाह' जाता है । जो एक देवा ने दूसरे स्थान में गन्ध को ले जाता । अतः हे इन्द्र जीव ? तू भी जीवन में शुभक्य का वातावरण पैदा कर, जब जब वातु शुभक्य को अन्वय पहुँचा देता है तो तू तो बेगन है, अतः तू शुभ कर्म तथा पवित्र भावनाओं की शुभक्य प्रत्येक वर्ष और प्रत्येक जन में बनेरता चल तभी तू एक अर्थात् सौ यज्ञ करने इन्द्र बनकर स्वर्ग में राज्य करेगा, यह ही तेरे जीवन का रहस्य है, जिसके लिए तूने प्रयत्न करना है ।

★ विश्व प्रसार लयीर रक्षा के लिए खाने-पीने और वस्त्रों की आवश्यकता होती है उसी प्रकार आत्मा के लिए धर्म की आवश्यकता है । धर्म के पालन करने से आत्मा की शक्ति मिलती है ।



सम्पादकीय—

# आर्य जगत

वर्ष २६] रविवार - ०२३, ७ अगस्त १९६६ [अंक ३२

## ये लीद खिलाने वाले

सारे पचास वे श्रावण कुलिस द्वारा छोपे भारते का व्यापक चक्र चल रहा है। बर्बे व व्यापारी पकडें जा रहे हैं। कहीं ठेल का भण्डार पकडा जाता है तो कहीं टायर ट्यूबों का स्टॉक सामने आता है। कहीं चालीस मय पकड़ी बाढी व आठ तिन्नी सोना बचिकार में बर लिया जा रहा है सो कहीं सोहो की बंधी व पन्नें टिकके में जा रही हैं। एक ओर दूध पी के मिलावटी केन्द्रों का पता लग रहा है तो दूसरी ओर हाने गीने की बनावटी व मिलावटी सामग्री प्रकट हो रही है। पी में चर्बी, डीबल में तेल, आटे में बुरादा मिलावे बाल केन्द्र भी पकड रहे हैं। सीमेंट के भण्डार भी सामने आगये हैं। पचास के नव राज्यपाल की घसबीर जी ने ब्रासल पर बंठे ही की बयना घमचक चलाना प्रारम्भ कर दिया है। प्राय सारा व्यापार नया हो रहा है—रू लोभ जनता के धीवन के साथ क्या र क्लेशबाड करते थे। बन कमाने के लिए पणन के इतने सहरे मठे में भी आदमी सिर सक्ता है—हन छोपो से सब की आबें लुप्त जाती हैं। जान हूय कहे सवे है—इस का भयकर रूप सामने आ जाता है। इन छोपो में अन्य बातों के साथ जब यह नात भी पडी कि कई ऐसे कारखाने भी पकड गये, बिन वे बनावटी कला मिसाल बना कर जनता को असली बता कर दिया जाता था। उस में क्या र बस्तुएँ होती थीं—यह पड कर तो ऐसे व्यापारियों को मुन कर कोन है जे उन पर भारी रोग प्रकट नहीं करेगा? ये लोग नकली मिसाला में पपीते के बीज करण के पीण्ड रेत, मिर्चों के इटल और पधियों की भीठें कट पीस कर मिसाले थे। पीठो व गुप् की सीप भी पीस कर मिसाला करते। बार तो बीठी लीद की भी पकडी गई। फाा नहीं कड के जनाता को पकिटारों के हर मिसाले की बाड में लीद पधियों की भीठें मिसाले

गई। पी में चर्बी खिलाने गई। बनावटी लान मिर्चों में लकड़ी का बुरादा तथा चना व चायला का छिलका पीस र कर मिसाला जाता रहा। सारे ऐसे नहीं—किन्तु एस हूँ ही। पचास में तो घमचक बसा है इसी लिए यह पता चला। यदि अन्य श्रावो में भी चले तो यह पर भी क्या र रहस्य प्रकट हो—यह कोन कह सकता है? आधाव भारत में यह बात किन्तु ही लम्ब की है। इसकी जितनी निम्दा की जावे चाडी है। यह भी तो जनता के बीडन के स्वास्थ की हत्या है। एस ह्यूयारे दया के पात्र नहीं है। हमारा समाज जा जीबन स्तर इस बात में किन्तु मिरता जा रहा है। वे निता पकड कर तो इस बीडन पर रोगा आता है। इसका कारण यह है कि जाव में मनुष्य का कुवल मान माया के टको से प्यार है। उसक मन में न भयमान का भय हू और पय का उसे न रुमाज का डर है न विधान का। न उसके सामने मौत है और न परलोक। यह तो केवल धन की ही सब कुछ समभता है। इनके लिए यह इतना पतित हो सकता है लोग के शारीर से खिलवाड कर सकता है तथा सबकी आको में पुल भोक सकता है। वह समभता है कि मैं पेंवे कमाकर समाज में सम्मान प्राप्त कर सकता हू। पेंवे से सब को खरीद सकता हू। मैं सस्थाका का नेता भी पेंवे के जोर स बन सकता हू। बाड जितनी धोर पय की रहत व पधियों की भीठ खिता हू—मुक पुछन बासा कोन है / यह भय जाता है कि सब दिन होत न एक समान। पाय की नौका भर कर जवय डूबती है। मारा हुमा वम उसे भार देता है। सवा काभरेड का राख्य नहीं रहता। धन का शासन भी बसा करता है। समय-समय सारे पाप उनके सामने आ ही जाते हैं। उके एक दिन बयने किए पर रोजा

पकटा है। इसके लिए सारा समाज भी दोषी है। उसका अड्डा बडा बीना है। उससे किसी को भय नहीं—तभी ऐसे ऐसे पतन में काम होते हैं। श्री राज्यपाल जी न डीक कहा है कि सारा समाज ऐसे लोगों के बिरड अभी तक हुरकत में क्यों नहीं आता। और बातों के लिए तो प्रवचन किए जात हैं पर समाज क इन शब्दों के बिरड प्रवचन का गुमान क्या नह उठता। सारी सस्था गुप क्या बडी हैं? लोभा का लाड व वीठ रेत व लकड़ी का दुरासा चर्बी व पपीन क बीज कपडों के पीण्ड खिलाने बाने य लोग भी समाज के पीर सगु है। ये केवल माया दास है। यदि समाज ऐसे लोगों के बिरड प्रवल आदोलन करे बहिष्कार करे तथा घुसा पर भी प्रभ प्रकट करे तभी इनकी आख लुगगी। जिन कमचारिया का भी इनको सहयोग मिलता है वे भी दोगी हैं। एक बात सरकार भा करे कि ऐसे गने पातक टको को दण्ड भी ऐसा कडा दिया जाए ताकि य भी याद नव और सब के भी कान सड हा जाए। य लीद खिलाने बाने समाज के सगु है।

### अग्नी से जागो

पचावी श्राव व हरियाणा प्रांत बन जाने के बाद हरियाणा न ता भाग समभोता समस्था होगी नही। यदि कोई हुड भी तो उस का समाधान यह है—नेता व जनता मिल कर करे। किन्तु इस पचाव श्राव में जा बाना बरएय होगा उस का परिचय अभी से मिल रहा है। स जो कहते हैं कि यह अल्पमत ही नही। सब की भाषा पचावी है। पंतीस व लीस प्रकटी को यह अधिकाार ही देन को तयार नो है। बिचार की घाराय भी उन को नय सय क साथ नया समजता मार देते हैं। यह हिंदी प्रमया को हिन्दी का अधिकाार तक देने को तयार नहीं है। यह बात यह बोलते नही बोलते। उनके पीछे सारे उन जैसे लोग इसी बोली में बोलते हैं। काय सी सिख बहा नदकर यही बोली बोलते हैं। अकाली बाहर बंठ कर यही बोलते हैं। बंठे के समान उन के अलग अलग हैं—पर बोली एक जंसी बोलते हैं। हमारे आदमियों में ऐसी नात नहीं है। यदि वे ही हर अगर बंठ हुए ऐसी बीरता दिखाते तो पचाव के विद्याल शारीर को इतनी बेदती

में न काटा जाता। हम तो अपनी कुर्सी सत्ता व अपना नाम पारा... उस प्राण करने के लिए कुठ र ना यह बूड किया जाता र...यम इसकी तमिक बिना मग। फिर का बन हूय जमान रहे है। अब ता राजव बार टुकडो में बट गया।

इस समय पचाव के हिन्दी प्रमियों के सामने नव न जा बना प्रव न है वह यह कि आग अन बाल समय में हमारे न्य पचावी प्रांत में हिन्दी की क्या स्थिति जागी। पचावी भाषा तो सरकारी भाषा बन जागीगी। प्रांत नी भाषा के आधार की आड लेकर बनवाया गया है। किन्तु हम न क्या पनीस चालीस प्रशिक्षण हिन्दी प्रमिया का अल्पमत मान कर उन का भावाई सरखल मिलाया हा नही? विधान हमारे पय न है पर व सारी बान धरी रह जाती है अब तक प्रवल काभरन न हो। पचावी मुदा मार बनेगा—यह मममत व। ब... लाय बग। वृशभार बान बन व। पर वनत दर न सगी। उनकी उजागर बान बान हा रही। जिन्मा में मुना तक भी नहीं। कती एस न हो—त लिए सारे हिन्दी प्रमो अभी न जाग। इस के लिए कपना नक ब... बनत लिया जाय—जिन म नारे बिचारों के हिन्दी प्रमो गाभिन हा। अल्पत सम्बाले। समान समान ना आय भी अतिरिक्त मरवावी क जायगी। यह काम केबन एक का नही। नग में साग नेता भा। हा कई गामिया बालने बान न हो। एष ही आवाज में बोलने वाले हा। हम जान तना चाहिण कि हम हिन्दी का अधिकाार सरतमान में दन बाल वे लाग नही। के ड का उच बगान भी उनकी मानस है धायद हमारी तनी। उनकी समदित शक्ति एक अबाज और नेाव से प्रभावित है। हम इन्के लिए प्रवल समय करना होगा। स्वाधबाद को छोड कर समदियाद का मानन रखन पडगा। हमारे गाम क्या कुछ नहीं है। बडा भारी प्रस है वदी है जनता का सहयोग है बड व लीग हैं। यह सब यदि भिन कर एक ही आवाज निकाल ना कोन है तो हमे राखयाय व विधान न सम्मा टिन अधिकाार से बचन कर सगना है। इस के लिए अभी से जागने की आब स्थकता है। हम सारे हिन्दी प्रमियो से बलपुत्रक कहेंगे कि अपने उर्धिन अधिकाार के रक्षाय के लिए जाग जायें—स०

स्वास्थ्य स्तम्भ -

# स्वस्थ रहने के सरल साधन

श्री जगदीश्वरानन्द जी शास्त्री, प्रा० चिकित्सक

समता के इस वैज्ञानिक युग में समय मानव सभी उद्योगें पहा रहा है। पर विचार वादी और मन से रोगी ही बनता जा रहा है। क्या करे अपना काम तो वह नीकर-पाकर को बेतन देकर करता होता है। उस के व्यापार भी हितैश्यारी ने चल सकते हैं। बड़े-बड़े मकान भी बेतन वृत्ति ने बन सकते हैं। बड़े-बड़े काम भी रिश्तेत से चल सकते हैं। बेतन वृत्ति, रिश्तेत खोरी व शास्त्रीयारी मन को शरीर को कुछ नहीं बचा सकती। मुझे अपने मन को पवित्र करना है तो स्वय ही समय का पालन, सत्याचारण, सत्य व्यवहार सत्य विचार, सत्याहार करना है, जो होगा। दुष्टि को दूख करना है, चमकाना है तो ज्ञान पाना होगा। अध्ययन में स्वय श्रम करना होगा, महापुरुषों की सेवा करनी होगी। समय में समय लगाना होगा। ऐसे ही शरीर को सुन्दर, सुजीव, स्वस्थ तथा सख्त बनाना है। अच्छा खाना होगा, उसे पचाना होगा। पचाने के लिए भूख को जानना होगा। भूख के लिए श्रम करना होगा। श्रम दूसरा करे, भूख मुझे लगे। पसीना बूझा बहाए, खाना मुझे पच जाए, ऐसी बात नहीं है। यहा तो स्वयं कमा, स्वयं पचा, इस भाँति हृष्ट, पुष्ट बन जा। जिन अन्न से हम काम रहे, कुर्मी पर बैठे, पढ़े-लिखे समय होने के कारण काम नहीं किया जाता या मन ही नहीं चाहता या शर्मिला है तो काम कैसे बने? शरीर कैसे स्वस्थ बना रहे? इन कमाने के सम्बन्ध में तो खूब श्रम करते हैं, बँसा जान पाते हैं पर जिस शरीर से कमाना है उसको मायावही किए रहते हैं। जबकि बोधी-नी साधना से ही शरीर स्वस्थ रह सकता है। 'रोगों की सरल चिकित्सा' पुस्तक के मूक्तिको लिखते हुए अनुभवों से भी महावीर प्रसाद पोद्दार ने कुछ बातें लिखीं जिन्हें मूल रूप से याद करना ही और मनन द्वारा उन्हें समझना या जीवन सही बनाना है। उन्होंने लिखा हम बीमार क्यों होते हैं? बीमार होने के कुछ कारण—

- (१) हम जरात से ज्यादा खाते हैं। नहीं जानते हमें किना खाना चाहिए।
- (२) गलत चीजे खाते हैं।
- (३) जो खाना चाहिए वह नहीं खाते।
- (४) बिना भूख के खाते हैं।
- (५) चबाकर नहीं खाते, दाँतों से पूरा काम नहीं लेते।
- (६) शिनावा चाहिए उतना पानी नहीं पीते।
- (७) अथवा आवश्यक श्रम नहीं करते अथवा जरात से अधिक और गलत तरीके का श्रम कर बैठते हैं।
- (८) लुनी हवा व धूप का पूरा उपयोग नहीं करते।
- (९) ठीक नहाना नहीं जानते।
- (१०) पुरे नजे स्व्यात नहीं लेते नही हवा व गन्धे वातावरण से रहते हैं।
- (११) ध्वनं की चिन्ताओं और कामों में मन को परेशान रखते हैं।
- (१२) शारीरिक व मानसिक व्यक्तियों का अध्ययन करते हैं।
- (१३) कोई नसा या कोई बुरी आदत अपने पीछे लगाए हुए है।

इस प्रकार रोगी होने के कारणों का संकलन किया गया। प्रत्येक बात मनन योग्य है। मनन के बाद उसे जीवन सही बनाने का प्रयत्न होगा। जैसे आध्यात्मिक दुःखों का कारण अज्ञान है तद्वत् शारीरिक दुःखों का कारण भी अज्ञान है। आहार के सबब में ठीक ज्ञान प्राप्त करे पर ठीक ज्ञान पाने के लिए क्या किनी विशेष स्थान या कालिज में अध्ययन करना होगा? यह ज्ञान तो सर्वत्र व्याप्त है। मानवैतर सभी प्राणी अपने स्वाभाविक आहार को जानते हैं, पहिचानते हैं उसका पालन करते हैं। हमें भी चाहिए, प्रकृति के प्रयोग रहे। प्रकृति से पकाई वस्तुओं को खाने पकाने, गलाने के चक्कर नहीं खाने। सर्त, गर्मी, धूप छाया से छिटा छिप कर न रहने। रोगों को कपड़ों से ढाँपते हुए सहिष्णुता की दार्ढ्य को कम न करते जाएं। प्रतिदिन यथा संभव कुछ कच्ची सब्जिया, अंकुरित चने, मूङ्ग, मूँग-फली, लोभाणा, नेहू को अंकुरित कर लेना करना चाहिए। इस से पेट साफ होता है। रक्त शुद्ध होता है। रोग प्रतिरोधक शक्तिया बढ़ती है। जीवनवर्धित करने लगती है। कच्चे अंकुरित

चने प्रातः प्रतिदिन खाने से पेट कितने साफ रहने लगते हैं, नमक आने लगती है। कमबोर होने वाले दाँत सुदृढ़ सबल होने लगते। श्याः चाय, काफी, पराठे, डबल रोटी या विस्टुट का नास्ता छोड़ कर अनुभव के विचार से कोई भी अंकुरित अन्न का नास्ता लेकर देखें। चाहे तो सायन में सूजी, प्याज जैसी कोई कच्ची सब्जी टुकड़े नमक, काली मिर्च भी मिला सकते हैं। अधिक स्वादिष्ट बनाना हो तो अंकुरित अन्न को जार सा की में छोड़ हलकी भाप में पांच-सात मिनिट जाग पर पका भी सकते हैं। करने का ज्ञान भी कोई कठिन नहीं। किसी अन्न को पानी से धोकर साफ कर लें। चाँडे पानी में भिरोकर रख दें, चार-चार घंटे बाद नाकाल किसी टाट की सेती या कपड़ों की सेती में डाल टाँग दें। चौबीस घंटे के लगभग समय में ही अंकुरित हो जायेंगे। स्वा भवे भूषकली, जोषिया, मूँग बगरहू। यह एक छोटा-सा साधारण सा अयोग है पर पालन करने में किठना महत्व का है। इस का चमत्कार दूर व देर में नहीं समीप ही सीमा दिखाई देगा। जैसे नित्य नियम से किए गए सध्या, हवन, स्वाध्याय, माता-पिता की सेवा व बलिबैध यज्ञ देखने में सामान्य होते पर भी नित्य अनुष्ठित हुए महा-यज्ञ कहलाते हैं। वस्तुतः स्वास्थ्य के लिए ज्ञान, समय व श्रम एक साथ तीनों ही प्रमुख साधन हैं। शरीर व आहार के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त करे। प्राप्त हुए ज्ञान को जीवनसमी बनाने के लिए संयम से काम लें। शरीर व शक्ति, सबल स्वस्थ रखने हेतु उचित श्रम करे। तीनों के सयन पर स्वस्थ रहना अति सरल सा बात पड़ेगी।

शेठ—अनले अन्न के इन्ही स्तम्भ में ज्ञान फल पर विचार किया जाएगा।

## आर्यजगत का वैदिक

आर्यजगत् का वैदिक धारणी उपासक पर प्रभावित हो रहा है। स्वाध्याय जीवन का आवश्यक अंग है। इस में वेद विषय विद्याओं के कोनपूर्ण ज्ञान होगा। सारी समायों, कालेय के माय्य अधिकारी तथा परिचार इसकी अधिक के अधिक प्रतियां संग्रहा कर बैठे ताकि वैदिक धर्म का प्रचार हो। यह ही प्रचार कार्य है।

## आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि समा का वेद प्रचार कार्य

आर्यसमाज पठानकोठ वना का पं० पितोकाचन्द्र शास्त्री बी. ए. के वेद विषय पर उपदेश होते रहे तथा ही पं० ज्ञान चन्द जी भवनोपदेशक के मीठे भजन। स्त्री समाज में भी उपदेश भिजा गया। तथा को वेद प्रचार भी किया हुए।

**गुजानपुर में**  
आर्यसमाज गुजानपुर में निरन्तर एक सप्ताह तक रात को पं० पितोकाचन्द्र जी शास्त्री बी. ए. के राष्ट्रिय मूलत के आधार पर भाषण होते रहे। पं० ज्ञानचन्द जी के प्रभावशाली भजन। प्रातःकाळ स्त्री समाज में भी प्रचार होता था। परिवार को हिन्दी विदेश युवकाम से ननाया गया।

**कठश्र समाज में**  
आर्य समाज कठश्रा में वेद के स्वराज्य प्रसंग को लेकर पं० पितोकाचन्द्र जी शास्त्री बी. ए. के भाषण तथा पं० ज्ञानचन्द जी के मनोहर भजन लगातार एक सप्ताह होते रहे। नये चले हुए आर्यसमाज के बारे में भी जगतो को समेत किया गया। तथा को वेद प्रचार किया।

## शोक प्रस्ताव

पंजाब प्रांतीय आर्य वीर दल की कार्यकारिणी की विधिप बैठक दि० भगवानदास जी की प्रधानता में २३-७-१६ को अन्वसा नगर में हुई जिसमें राकेश्वर आर्यसमाज के मानी की फकीर चन्द के भ्राता की मृत्यु, सुधियाणा के श्री मद्रवालचन्द की मृत्यु की मृत्यु तथा दम्पनी भवनन्द की की मृत्यु पर गहरा शोक प्रकट किया गया। परंपाराना इस के परिचारों को दुःख सहन करने की कष्टि प्रार्थन करे।

**पंजाब प्रांतीय आर्यवीर दल**  
कार्यालय आर्यसमाज प्रेम शहर करणदास

## शोक समाचार

आर्य वाठशाळा तुलाना शाहीपुर के हेड मास्टर जी राधन माल की की पुत्र्या माता का स्वर्णवास हो जाने पर भी प्रधान चन्वगीराम जी की अल्प-अज्ञा में शोक तथा की गई जिस में दिवंगत आर्या की सपत्तियों के लिए और उनके परिवार को बाधण दुःख सहन करने की प्रार्थ से प्रार्थना की गई। इस अवसर पर पं० भूरां राय जी उपदेशक आ० प्रा० श्रमा ने शोक संतप हृदयों के लिए भाँति की प्रार्थना की।

— बलीपतिवह मन्नी प्रसाद

(गणक से आगे)

और यज्ञ भागों का स्वान नाम स्मरण तीर्थ यात्रा, प्रति मार्घश्रद्धि से ले लिया। वैदिक यज्ञों की अवशेषा निम्न प्रणालियों से सिद्ध होती है। प्रकृति ऋषि के ८ वें अध्याय में एक विष्णुपुत्री पृथ्वी स्तोत्र बताया है। उसका महात्म्य वर्णन करते हुए कहा गया है—

पापेन भूयते प्राज्ञः  
स्तीक्ष्णस्य पञ्जाम्बुये ।  
अवशेषे घटं पुष्पं  
तस्मै नात्र संशयः ॥६५॥

इस पृथ्वी स्तोत्र का पहले वाला श्लोक पापों से मुक्त हो जाता है, और जो अवशेष यज्ञों का फल प्राप्त करता है, इसमें कोई संशय नहीं। दूसरे उदाहरण भी प्रष्टव्य है। इसी प्रकृति ऋषि के १० वें अध्याय में एक विष्णुपुत्री (या स्त्री) है जिसके विषय में कहा गया है—

नित्यं यो हि पेटेऽङ्कुरया  
समृद्य च सुरेश्वरी  
अवशेषे फल नित्यं लभते  
नात्र संशयः ॥ १३६॥

इस स्तोत्र को व्यक्ति गंगा की पूजा कर नित्य भक्ति पूजक पढ़ता है, उसे अवशेषे यज्ञ का फल मिलता है, इसमें कुछ भी संशय नहीं।

इसी पुराण के महायज्ञोपनिषद् ऋषि को जो समाहित चित होकर पुनरा है वह राजसूय यज्ञ के फल को प्राप्त करता है। यह उक्त महायज्ञोपनिषद् के अन्तिम ४६ वें अध्याय में कृतवर्ति के रूप में कहा गया है—

यज्ञं महायज्ञतः ऋषयः  
श्रुग्मोति संज्ञाहितः

स राजसूय यज्ञस्य  
फलमाप्नोति निर्विचिन्तम् ॥ ४१॥

अब राजसूय यज्ञ करता ही अर्थात् ही गया। अब पुराण का एक अंश सुनना ही पर्याप्त है तो राजसूय यज्ञ का श्रम कौन करे। जन्माष्टी व्रत निष्फल के प्रसंग में लिखा गया है—  
जन्माष्टीव्यापं बुद्ध्यायुषोभ्यं  
केवलं नरः ।

अवशेषफलं तस्य व्रतं  
जापत्सं विना ॥ ४५॥  
जो व्यक्ति जन्माष्टमी के दिन उपवास करता है उसे अवशेषे यज्ञ का फल मिलता है। इस प्रकार सर्वत्र आर्य समाजों की औपचारिक कर्म-कार्यों से अन्तर सिद्ध किन्ते जाने की कुबेला इस पुराण में मिलती है। हमारे कर्म

### ब्रह्मवैवर्तपुराण की आलोचना (३री किस्त)

पुराणों में ऋषि मुनियों की निवासवर्णन है  
(श्री० श्री भवानीलाल जो भारतीय एम० ए०)

का यह अतिप्राय नहीं कि कृष्ण जन्माष्टमी जैसे ऐतिहासिक पर्व न मनाने जायें। अवश्य ही रामनवमी और कृष्ण जन्माष्टमी आर्य जाति के लिये अपूर्व प्रेरणादायक पुष्प पर्व हैं जब कि हम राम और कृष्ण जैसे आर्य महापुरुषों का गुरुकीर्तन और चरित्र अक्षय करते हैं, परन्तु पुराणों में तो इन पुनीत पर्वों के मनाते जो विविधा गौ विधियों की हुई हैं। पृथ्वीक ८ वें अध्याय में जन्माष्टमी मनाते की जो विधि बताई गई है सम्भवतः उसी के अनुकरण के रूप में क्लृप्त सम्प्रदाय में इन पर्वों पर अत्यन्त स्तुत किया जांच करने का प्रचलन हुआ। आज भी जन्माष्टमी के दिन बंगाल मन्दिरों में एक स्त्री को या पुराण को देखकी नगया जाता है, यह प्रथम पीढ़ा का अभिनय करती है, तब पद्मातुं हारण को अन्न देती है आदि र सभी बातें अत्यन्त स्थूल रूप में की जाती हैं। ब्रह्मवैवर्त में इसके लिये स्पष्ट आचार मिल जाता है यहाँ कहा गया है—

स्तीक्षा नित्यक्रिया कृत्वा निर्माय  
सुताया मुहूर्त् ॥८८॥  
स्नातानि नित्य क्रिया करके  
सुताया मुहू बनाये। फिर—  
तत्र यज्ञं ब्रह्मविष्य माग्निच्छेदनं कर्तव्यम्

प्राची स्वरूपा नारी च यलतः  
स्थावरेन्दुशुः ॥८९॥  
इस सुतािका मुहू में नाभि-छेदन आदि के विविध औदार्य रते और दाई के रूप में एक नारी की स्थापना करे। कहने का तात्पर्य यह है कि जन्माष्टमी के दिन व्याप योगेवर कृष्ण की योगलिष्ठा, आध्यात्मिक भावना, उनकी अपूर्व राजनीति, सामाजिक भावना तथा उनके अत्याय सहस्रस्य मुहूर्त्तों को याद करें, यह कोई आश्चर्यक नहीं, परन्तु प्रकृति गृह का निर्माण कर मन्दिरों में कृष्ण जन्म का नाटक अवश्य होना चाहिए। पुराणकार की मन्मति में जन्माष्टमी पर्व की यही सार्थकता है। वस्तुतः जिस देस और जाति के लोग अपने महा-पुरुषों के मुहूर्त्तों को भूलकर उनकी स्थूल उपासना में ही रत हो जाएँ, उस जाति की अयोग्यता और पतन सुनिश्चित है।

सग्य तो यह है कि पुराणों में मुक्ति का एक सस्ता सौदा बना दिया है। अब न तो 'ऋते ज्ञानान् मुक्तिं' वाली बात है कि ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं होती और न यजुर्वेद में कहे गये इस बाधक का ही कोई आदर है कि 'यस्यै विदित्वातिमुक्तयेति नायः पन्थाः विद्यतेऽग्रयान्' अर्थात्

उस परमात्मा को जाने बिना मुक्ति के पाव नहीं जाया जा सकता, इस के अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं है। जबकि पुराणकारों ने तो १० वें मार्ग मोक्ष प्राप्त करने के बूढ़ निकाले हैं जिस में हरे जने न सिद्धकारी और परब पोशाकें हैं। उदाहरणार्थ इसी पुराण का गणोपस्थान और गणामहात्म्य देखिये। प्रकृतिऋषि अध्याय १० में स्पष्ट लिखा है—

गंगाप्रमेति यो ब्रूयातो वनानां गन्गंणि  
मुच्यते सर्वं पापेभ्यो विष्णुलोकं स  
गच्छति ॥३१॥

संकोच योगन दूर में ही जो व्यक्ति गंगा गंगा' मुकुरता है उनके सब पाप दूर हो जाते हैं और यह विष्णु लोक को प्राप्त होता है और यह गंगा भी कौमी है—  
कोटि योजन विस्तीर्णां

दैन्यं तत्र मुहूर्त्तः ॥१०१११॥  
करोड़ योजन में जिस का विस्तार है और जो उस में लाख पुराण सभकी है वस्तुतः ऐसे बर्तनों को पढ कर हरे स्वामी दयानन्द की बड़ उचित बर-बद स्मरण हो जाती है जिस में उन्होंने कहा है कि पुराणकर्ता भूलो ब्रिदा के तो सग्य ही है। परन्तु ब्रह्मवैवर्त-पुराण की विशेषता तो उसके सभोय बर्तनों में है। इस पुराण का कोई भी उपस्थान या प्रकरण नून प्रमन के बर्तन किए बिना नहीं चल सकता। अतः गणोपस्थान में भी गंगा और कृष्ण के समायाप का बर्तन उसी सलम सौते में किया गया है। जिनका दर्शन हम पूर्व राधा के प्रकरण में देख चुके हैं। यहाँ भी रतिकरी राधा है (१२।१९) और नवमनस्य में होने लगी मुहूर्त्त है (१२।२) जिसे देख कर राधा को सलती अन्य हीर्षणी होती है। सब ही कौमी - कौमी हाके होने लगनी है कि वह गोदोक है या मध्यकालीन सामर्थों का अन्त-पुर जिसकी स्त्रिया परस्पर सलतीकिये (सौतिया दाह) की विचार रहती है।

**मुक्ति का सस्ता सौदा—**  
**शासनाय शिलाचर्चन—**  
इसी प्रसंग में शासनाय शिला के महल की आलोचना भी अनुत्तुल न होगी। प्रकृति ऋषि अध्याय २१ में लिखा है यानि कानि च पापानि ब्रह्मा ह्यापत्किन्ति च । तानि सर्वानि नश्यन्ति शासनाय शिलाचर्चन ॥८८॥ (कर्मयः)

### आर्यजगत का वेदांक

समा का सांपासिक पत्र आर्यजगत समग्र २ पर अपने विशेषांक प्रकाशित करता रहता है। आर्य समाज के वैदिक सिद्धांतों पर शोच सामर्थी दी जाती है। इस बार धारणी वेद मन्दाह रक्षाभन्पन के अन्तर्गत पर अगस्त में आर्यजगत का (वेदांक) प्रकाशित होगा। इस में वेद विषयक वैदिक विद्वानों के लेख होंगे। वेद के विषय में उतम सामर्थी होगी। पढ़ने तथा मनन करने योग्य विचार सामान्य होंगे। इतनी समाज-वैदिक सन्ध्याएँ हैं। पता नहीं क्या होता जाया है। जिसके पास इतनी समाजे व सत्प्राण हो, उसे किसी प्रकार की कमी कंसे हो सकती है ? पर बात सचि व ध्यान की कमी की है। कई सत्प्राणों तो नमस्कार के योग्य हैं। बड़ा सहयोग देती हैं। पर बहुत-सी समाजें व संस्थाएँ ध्यान नहीं देती। निवेदन है कि :—

**समा आप की व आर्यजगत आप का है। हमें तो छोटे सिपाही हैं। इस बार इस वेदांक की पचास-पचास से कम तो कोई भी समाज व संस्था न मंगवायें। अधिक से अधिक शीघ्र आर्डर दें। बिद्वान्, लेखक महोदय गंभीर वेद विषयक लेखों से कृतार्थ करें।** —सं०



# हिमाचल की सुधि लीजिए

श्री ओम्प्रकाश जी महोपदेशक आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

हिमाचल प्रदेश की प्राय सारी समाजे आर्य-प्रादेशिक सभा जालन्धर के अधीन हैं उनमें प्रचारार्थ गए हुए हमारी सभा के महोपदेशक श्री ओम्प्रकाश जी ने वहाँ की समाजों की जो दुर्दशा देखी है उसके निवारणार्थ जो उपाय लिखे हैं उन्हें उन्हीं के लेख में पढ़िए, और सभा का कर्तव्य ही जाता है कि इस प्रदेश की समाजों को सुधवस्थित करें।

यह दुर्भाग्य की बात है कि स्वतंत्र भारत में गौरवह्वारे दुर्भाग्य की दुर्भाग्य बात पकड़ती जा रही है। ऐसा प्रतीत होता है कि इस देश में देश की भावना अबही भारतवर्षी एक है और उनका एक राष्ट्र है यह समात हो कर रहने। प्रत्येक प्रांत पर दृष्टिपात करके आप पृथक्-पृथक् रहने की—होने की भावना के दर्शन कर सकते हैं। फटे-फटे जीर अविभक्त पंजाब का बटवारा तो अभी अभी स्वीकार किया गया है। इस बटवारे के किस प्रकार के और कौन भयानक दुष्परिणाम निकलेंगे—यह तो समय जाने पर पता चलेगा—परन्तु हमें आज अपने आर्य वंशुओं, वैदिक धर्म के अनुयायियों से कहना है कि वे किस मांड मित्र में सो रहे हैं ?

हिमाचल प्रदेश और कांगडा क्षेत्र में ईसाईया का पहले ही बोधभासा था। उनकी गतिविधियां और भी तेज हो गई हैं राधा स्वामी मतवाले भी अपना पूरा और लगा रहे हैं। जबर राजनीति क्षेत्र में भीन बक साम्यवादी सक्रिय हैं। नास्तिकता अपने जीवन पर है। आहार प्राय विषय चुका है धर-धर में सराब का दौर चलता है। आर्यसमाज का संगठन और प्रचार इस क्षेत्र में संतोषजनक नहीं है। काम करने वालों को ही कमी है क्षेत्र पर्याप्त है। पञ्जानकोट

के चल कर मूल्य धर्मशास्त्रा नगरोटा सभा पामनपुर योगेश्वर नगर मण्डी मुन्दरनगर और कुल्लू में आर्य मन्दिर है परन्तु काम न होने के बगलूर है। कांगडा समाज का भी अपना पृथक और सुन्दर मन्दिर है। इस क्षेत्र में कम से कम दो तीन मुखोप उपदेशक भ्रजन मण्डलियों सहित ६ चाम्रभं अर्पित है।

हमारे वामप्रस्थी और सन्ध्याही सभी ज्योत्सामु आदि स्वानों पर रूढ़ कर ही प्रसन्नता अनुभव करते हैं। यह क्षेत्र विच्छेदा हुआ है। यदि समय रहते इसे न सम्भाला गया तो सारे का सारा क्षेत्र अवैदिक मनो का अखाड़ा बन जायेगा। चीनवादी साम्यवादियों के प्रचार प्रभाव में केवल नास्तिकता ही नहीं पलत रही अन्तिम अराष्ट्रियता और देशद्रोह की भावना भी बल पकड़ती जा रही है। आर्यसमाज सदा ही धर्म प्रचार और देश हित में सक्रिय रहा है। इस का सारा इतिहास बलिदानों और त्याग तपस्या की गौरव माथाओं से भरा हुआ है।

मैं इस छोटे से लेख द्वारा जहाँ अपने वामप्रस्थ तथा पृथ्य सन्ध्याही महानुभावों से प्रार्थना करूंगा कि वे इस क्षेत्र में अपने प्रचार केन्द्र तथा साधना केन्द्र बनाएँ की कृपा करे वहाँ

## एक भक्त की प्रार्थना और ईश्वर उपदेश

भक्त — मेरा कम अस्तव मिथ्या मम व्यवहार।  
तेरी मैं पूजा करू, मुझे लगा दे पार ॥  
चाँची मेरा काम है, करू भक्ति जप ध्यान।  
पाप मुझा कर दीक्षित, विषय करू भगवान।  
ईश्वर — मुझे करना छोड दे कहूंगा मेरा मान।  
छिद्र कर मुझसे प्रार्थना, जो चाहे कल्पया।  
भक्त — अरु काम तु सत्य है, चले नहीं व्यापार।  
मिते न धर्म कसे बता, मैं जानू परिवार ॥  
ईश्वर — तुमने नहीं विचार, मैं, रखाक पालनहार।  
मैं ही देता कर्म-फल, जानू सब व्यवहार ॥  
मुझे समझ, बात साय यम, दुख सहकरूत तात।  
श्रद्धा से तू बन मुझे, बन दुःखन निरात ॥  
सत्य मार्ग चलता हुआ, मुझ तट जा बन दास ॥  
तुझे विच्छेद मोड मे, रखू सदा निज पास ॥

—**गुरुजी लाल गुप्त, हरिद्वार**

## हिंदी व्यवहार में लाइए

नई दिल्ली २७ जुलाई—हिंदी साहित्य सम्मेलन में १५ अगस्त ६६ की 'हिंदी व्यवहार वर्ष' मनाने का निश्चय किया है। १५ अगस्त को मनाए जाने वाले 'हिंदी व्यवहार वर्ष' के सम्बन्ध में हिंदी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष सेठ गोविन्द दास ने हिंदी भाषी क्षेत्र की शिक्षण संस्थाओं के प्रिंसिपलों, मुख्य अध्यापकों आदि से अपील की है कि वे अपने कामों में हिंदी का पूरा तरह से व्यवहार करें, विद्यार्थियों के लिए मूल्यांकन और परिणत हिंदी में निकालें, सत्या के लेखन सामग्री अर्थात् लेखन, विषयक, फार्मों आदि की हिंदी में ही छपवाए और उसका हिंदी में प्रयोग करें, प्रमाणपत्र हिंदी में जारी करें।

अपने मन्त्रालय बजटों में भी अंगुरोप है कि इस क्षेत्र की उपाय न करे उभक्त समाजों, कुमार समाजों तथा आर्य और दलों का आयोजन कीर्त्तना-विशीरो हमला चाहिए।

अपनी प्रांतीय सभा से भी मुझे कहना है कि एक उत्सव इस क्षेत्र में तत्काल बना कर प्रचार कार्य को मुख्यबलित रूप देने का शुभ लक्ष्य करें।

एडिटर, हिमाचल के प्रचार हिंदी में रंजे। सेठ जी के बात पर भेद व्यक्त किया है कि हम स्वतंत्र होने के पहले क्यों पंजाब ही अधिकांश कर्म-अधीन में करते हैं और अभी तक देश के भारतीय भाषाओं के प्रति उतना उत्साह दिखाई नहीं पड़ता किना कि स्वतंत्र देशों में हुआ सकता है।

## आर्य समाज मंडी (हिमाचल प्रदेश) में वेद प्रचार सप्ताह

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर की ओर से श्रीमान् पण्डित ओम्प्रकाश जी अर्थात् सभा का ७० बुलाई हुई जो वसुपुत्रा जी की भजन मण्डली १८-७-६६ से २४-७-६६ रविवार प्रसन्नता तक पंजाबप्रदेश तथा बीर रस से भरे गीतों द्वारा जनता को आमन्त्रित किया। सप्ताह ३ बजे से ४३० तक स्त्री समाज में विशेष प्रचार होता था और रात्रि को सार्वजनिक सभाओं में वैदिक सिद्धान्तों पर विद्यार्थियों व्याख्या सुनते रहे। भजन मण्डली का कार्य वम ही विशेष सराहनीय रहा।

आर्य समाज की ओर से वेद प्रचारार्थ १०१ और ३०) मार्ग व्यय में प्रदान किए गए।

स्त्री आर्यसमाज की ओर से भी ५१) वेद प्रचारार्थ बड़ी श्रद्धा से भेट किए गए।

आर्यसमाज मण्डी अपनी सभा तथा पृथ्य पण्डित जी का ठा० दुर्गासिंह नरुपाम जी की भजन मण्डली का विशेष धन्यवाद करता है।

—**वेतराम सहज मन्त्री समाज मण्डी**

### ईदिरा जी ! भारतीय बनिए

भारत का प्रधानमन्त्री के माते दरिद्रा जी किंश बाजा पर गईं, तो स्वभाव में सब से हाथ मिलाए। शारकी जी व नेहरू जी बय विवेक जाते वे तो उन्हें हाथ जोड़े हुए देखा जा सकता था किन्तु दरिद्रा जी तो हाथ जोडना संवधा भूल गई हैं।

हमारा बाबूहू है कि उन्हें और भारत के प्रत्येक प्रतिनिधि की विदेशों में भारतीय परम्पराएँ ही विधानी बनिए। आर्य प्रतिष्ठा कोकर, तुधारी की नकल करणा मात्र कसे पर्याप्त देव से महान नेताओं के लिए किन्ही भी दृष्टि में शोकनीय नहीं।

**आर्यसभ से सारा**

आर्य समाज में जब तक प्रवेश नहीं करने, तब तक आर्य समाज के लिए उन्नत नहीं रहे सकेगा। साधक कार्य समाज भी हो जाये। नवयुवकों को आर्य समाज में लाने का एक सार्थक आर्य स्कूल है। दूसरा पारिवारिक-संलग्न। महर्षि दयानन्द जी के प्रभाव से कभी आर्य समाज के रग में रये हुए प्रभावशाली। त्यागी, परिश्रमी अध्यापक मिल जाते हैं। अब नहीं मिल रहे। जब तक इत आर्य अध्यापक न मिलेंगे तब तक आर्य स्कूल अपनी पुरानी शान के अनुसार नहीं चल सकेंगे। आवश्यक है कि अध्यापक के जीवन का प्रभाव नवयुवकों पर हो। स्कूल में शानदार अनुमान व अध्यापन कार्य हो। परिश्रम और श्रमकों की अपेक्षा ऐसे बहिष्कार हो कि सड़के अपने आप प्रवेश होने के लिए आगे चले जाएं। सड़कों के पीछे-पीछे न फिरना पड़े। अध्यापकों के मिठास-भरे, परोपकारी, परिश्रमी जीवन का प्रभाव सड़कों पर ही नहीं बल्कि लड़कों के संस्कारों पर तथा जनसाधारण पर भी हो। परम पूज्य महात्मा हंटराज जी, पं० मेहरचन्द जी, ला० मेहरचन्द जी, ला० साईदास जी किस-किस महात्माओं का नाम लिखा जाए। ऐसे अनेकों त्यागी, तपस्वी, ऋषि-भक्त महात्माओं को चुके है और अब भी कहीं २ है जहां कहीं है, वहां हमारे कारिजों, स्कूलों व आर्यसमाज की अपेक्षा अपेक्ष सुचर पाई है। अब देवता है कि ऐसे प्रभावशाली अध्यापक, प्राध्यापक, प्रतिपन्न कहां से आवें। इसके लिए मेरी मुच्छ बुद्धि में यही आ रहा है कि डी० ए० बी० कालेज मैनेजिंग कमेटी या मुमुक्षु विद्या-सभा या जैसे भी हो सके सब मिलकर आर्य समाज की ओर से एक प्रभावशाली आर्य ट्रेनिंग कालिज की स्थापना करे। गवर्नमेन्ट से स्वीकृति ले लो, लेकिन उसका प्रबन्ध आर्य समाज के अधीन हो। इस ट्रेनिंग कालिज में रिडल पाठ, मैट्रिक, एफ. ए., बी. ए., एम. ए., प्राय, विद्यार्थक शास्त्री, नीचबन्धों के लिए अलग २ ट्रेनिंग में लिखा हों। उदाहरण के तौर पर जे० बी० डी०, बी० एफ. बी० डी०, एच० बी० आदि। मिले-बस वो वर्ष जबका एक का हो। व्यय कम से कम हो। इस ट्रेनिंग कालिज में प्रविष्टि की शानदार पढाई के

## ‘आर्य समाज के प्रचार का एक आवश्यक साधन’ (ले०-गुरु प्रसाद जी आर्य सेवक अलावलपुर)

साध-साध महर्षि-श्रम पढाए जावे। भजनोपदेशक तथा उपदेशक आर्य समाज के प्रचार के साधन के रूप में तैयार करने का विशेष प्रयास हो। व्याख्यान देना सिखाया जाए। इन नवयुवकों का जीवन प्रभावशाली बनाने का विशेष ध्यान रखा जाए। भोजन-वस्त्र, शुल्क, कापियाइ इत्यादि के लिए बिल्कुल साधनों का प्रयोग हो। जो आशा अब दयानन्द ब्रह्ममहाविद्यालय या उपदेशक महाविद्यालय से पूरी करने की, की जा रही है, वही आशा इस ट्रेनिंग कालिज से पूरी की जाने की कोशिश हो। ट्रेनिंग कालिज के लिए दान अधिक से अधिक मांगा जाना चाहिए। अब सोचना है कि ऐसे महान-कार्य को चलाने वाले, त्यागी तपस्वी अनुभवी शिक्षित महान् विद्वान्, दृढ़-ऋषि-भक्त कहां से आवें। इसके लिए आवश्यक है कि अनुभवी रिटायर्ड या रिटायर होने वाले आर्य समाज के प्रेमी, भक्त, उच्च-कोटि के विद्वान्,

आचार्य प्रतिपन्न, अध्यापक और अनुभवी विद्वान अपना वेप जीवन प्रदान करे। सव्यायी, वनप्रस्थी भी सहयोग दे। ऐसे महात्माओं की खोज करके, उनसे प्रार्थना की जावे। उनके भोजन, वस्त्रादि, निर्वाह का प्रबन्ध कालिज की ओर से हो। सारे पाठकों के लिए वह एक केन्द्रिय ट्रेनिंग कालिज बन जावे। हरिद्वार मोहन आश्रम में या किसी और अच्छी जगह इस ट्रेनिंग कालिज की स्थापना हो। यह कालिज वेद प्रचार का एक प्रभावशाली साधन बन सकता है। इसके लिए अधिक से अधिक शक्ति लगाई जाए। इस ट्रेनिंग कालिज से निकले नवयुवक आर्य समाज के स्कूलों कालिजों में अपने जीवन के प्रभाव से नवयुवक बच्चों में आर्यसमाज के लिए भक्ति, श्रद्धा पैदा करने वाले होंगे। जहां भी काम करने, आर्यसमाज की शान बढ़ायेंगे। आर्यसमाजों में नवयुवकों के प्रवेश का सड़के अतिरिक्त और कोई साधन उचितोत्तर नहीं हो

रहा। आशा है कि पारिवारिक नसल होने की भी परिचारों के प्रयास चल पड़ेगे। नवयुवक न प्रवेश करेंगे तब आर्य समाजों की प्रकृषा आर्यक समाज ही है।

## सत्यार्थप्रकाश दान देवें

आर्य युवक परिपद दिवनों के प्रथम श्री देवव्रत जी धर्मोत्तु ने धनी, मानी तथा दानी भयजनों में अवीन की है कि परिपद की मन्थारं प्रकाश परीक्षाओं में बड़े बाले परिप्रायियों के निचे जिन के नाम पुस्तकें नहीं है सव्यायं प्रकाश चाहिये। दानी तजवन् स्वयं अधिक से अधिक सव्यायं प्रकाश दान देवे तथा सुखों को भी दितव्यं।

ओ३म् प्रकाश देवें  
आर्यसमाज मोहन वस्ती देहली—५  
**श्री गुरु प्रसाद जी  
अलावलपुरी की  
आंतरिक तड़प**

हमारे स्कूलों के लिए कोई प्रभावशाली परिपन्न नहीं जने कि इय ब्रियय में मेरे भाव है हैडमास्टर नहीं मिलता। आपके ध्यान में हो तो अवश्य पता देना का कष्ट करे। हमारा स्कूल अति सफट मे है। मुकाबला सफट है। दूसरे स्कूल दिन-प्रतिदिन उन्नति कर रहे है। हमारे स्कूल का आधार परिश्रम मिलनतायी है। दूसरे स्कूलों की गुष्ट पर धारी सनातन-सिख जनता है। जब दूटपा, हमारा ६० वर्षीय स्कूल दुटपा। जिसकी एक लाख की इमारत बनी है। हानत देवकर बहुत दुःख हो रहा है।

## जम्मू स्टेट में वैदिक धर्म प्रचार

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धर की ओर में श्री ए. चरसेन जी आर्य हिंसा महापदेशक सभा प्रचारार्थ जम्मू स्टेट में गे। आपने राजौरी, पुच्छ, मुसपुर, देवागडा, नोशहरा, अखनूर, रियावी और उधमपुर में प्रचार किया। इन स्थानों पर कई नवीन समाजों की स्थापना के इलावा मुनप्राय समाजों में नवीन उपाय भरा। आर्यसमाज गजौरी में १९१-६० आर्यजन का चन्दा पुच्छ में ५११ वेद प्रचारार्थ प्रथम हुए इनके अतिरिक्त कुछ कुटुंबर धन प्राण हुआ है। नशा की ओर में दानी समाजों का धन्यवाद। सभी समाजों में प्रचार कार्य की सहायता होती रही।

## आज राज महंगाई का

इस महंगाई ने कर दी सब की डिवली टाइट । मिलता था साल आने में अब प्यारह जाने का सनलाईट ॥ संन उतारो नीम छाल से अब न गुजारा हीय ॥ पचन मेरे मे अब न मिलेया लाईक बीय ॥ विन सावुन कर स्नान मत कर ध्यान सफाई का ॥ आज राज महंगाई का ॥

शामडा धी का डब्बा मिलता पूरे सो मे । देसी बारह का सेर कौन देने बाना नो मे ॥ कुबान पर लगी भीड़ एक दूसरे को रहा धंकेल । मुश्किल से मिलता एक एक बोटल मिट्टी का तेल ॥ दो पैसा नया बडा प्रति दिवासाभाई का । आज राज महंगाई का ॥

विजगए आते पर पर हुसन सारे सगले है । पर में नही कुछ खाने को पूते पी० टी० करने है ॥ फीका आधार समान और फीकी रिन्धेदारी । इस महंगाई ने तोड़ रई आज कमर हमारी । स्वगत नही कर सकती अब साम प्रभाई का । आज राज महंगाई का ॥

—समाज संदेश से साभार



**कल्प कई प्रकार के होते**  
 आम का भी कल्प होता है। कल्प कल्पों के कल्पों के पूर्व उच्चारण चाहिए। 'ये' पेहलू बूढ़ कर विना जाता है। वत ही प्रथम के कल्पों में ही होता है। यह कल्प भी के डाकूनी करता उपयोगी है। किन्तु यदि रोगी कमजोर हो तो उच्चारण या रचना के बिना भी कल्प चल सकता है।

जब आम के चुत्ताम का प्रश्न है। कल्पी आम तो होने ही नहीं चाहिए, चुत्ताम आम होने चाहिए। आम पहले रस के हों तथा मोठे हो और ताजे हों। बहुरंग हो इसका ध्यान रखा जाए। आम के प्रयोग के पूर्व उन्हें पानी में भिनी देना चाहिए ताकि उनकी परकी निकल जाए। आरम्भ बोधे ही आम से करना चाहिए। जितनी बुराक मनुष्य लेता है। कल्प के प्रथम दिन नित्य से कम बुराक रहे इसका ध्यान रहे। फिर बीरे-बीरे आम की मात्रा बढ़ाई जाए। किन्तु इसका ध्यान रखा जाए। कि बर्बादी में होने पावे या दस्त न आने नसे। यदि ऐसा हो तो आमों की मात्रा बीरे-बीरे ही घटाकर फिर बढ़ाई जाए। अतः प्रथमदिन कम खाए। फिर बीच-बीच में मात्रा बढ़ाता जाए। अन्त में फिर आम की संख्या कम कर देना चाहिए। आम के बाद घोडा-घोडा दूध पीना चाहिए। जब कल्प समाप्त हो जाए तब अन्न का भोजन प्रारम्भ करे। परः भोजन नित्य, सुपाक तथा हृकार होना चाहिए। दमिया, खीर आदि हल्की चीज भी खा सकती है। जब कल्प करना हो तब जल नहीं पीना चाहिए। और पिए भी तो यथा-समय कम से कम। मेरा विचार है कि संभव है पूर्व अग्र्यास के कारण कल्प के प्रारम्भ करने पर जल की आवश्यकता मनुष्य अनुभव करे किन्तु यदि दो एक दिन आत्म-नियन्त्रण करे तो जल की आवश्यकता का बहु अनुभव ही नहीं करेगा। आम तथा जल से तो यो ही पानी का अंश बहुत होता है अतः जलय से पानी की आवश्यकता है ही नहीं कल्प करने वाले को।

एक विशेष बात का ध्यान रखा जाए। बिना इस कल्प के सम्बन्ध में सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त किए कल्प प्रारम्भ न कर दें। बच्चा तो यही होता कि पहले स्वयं अध्ययन कर ले और फिर किसी विशेषज्ञ की देख-रेख

**स्वास्थ्य हस्तं आम का कल्प**

डा. लक्ष्मीनारायण एन टंडन 'प्रेमी'

में कल्प प्रारम्भ करे। नित्य ही परकी के दिनों में आम का कल्प करना सम्भव है क्योंकि हमी आम की फसल होती है और ताजे आम मिश्रण संभव है। यों तो विज्ञान ने इसकी अधिक प्रशंसा कर ली है कि 'कोल्टे-स्टोरेज' में रखी चीन्नी बंसी की बंसी ही बनी रहती है और बेफसल भी बे प्रत्यक्ष की जा सकती है किन्तु 'कोल्टे स्टोरेज' की वस्तुओं में वह ताजापन नहीं रहता और इसीसे वे वस्तुएं उसनी लाभप्रद नहीं होती। अतः कल्प ताजे फलों का ही करें। दूसरी बात यह ध्यान में रखें कि दूध बिना शक्कर का ही या शक्कर ही तो हल्की। यह इसलिए कि आम स्वयं बहुत मीठा होता है। और आम का प्रयोग काफी संख्या में होता है। ऊपर से दूध भी काफी मात्रा में पीया जाता है अतः यदि प्रत्येक बार दूध के काफी शक्कर रहेगी तो शक्कर तथा टोफू मिठास की मात्रा बहुत अधिक हो जाएगी। इससे न केवल मिठास के प्रति अधिक उत्पन्न हो जाएगी बल्कि अधिक शक्कर तथा मीठा समग्र है कुछ हानि भी करे। साधारण मनुष्य को एक सीमा तक शक्कर तथा मोठे को आवश्यकता होती है। जिस वस्तु की भी अति हो जाएगी वही हानि करेगी।

यह तो बिना बताए ही सम्भव जा सकता है कि मधुमेह (डाइबिटीज) के रोगी को यह कल्प नहीं करना चाहिए। कल्प कितने दिनों का हो इस सम्बन्ध में कोई निश्चित निर्णय नहीं दिया जा सकता। ३० दिन, ४० दिन ० ५५ दिन, ६० दिन कितने ही दिनों का कल्प किया जा सकता है। यह रोगी या मनुष्य की वंशा तथा स्वास्थ्य तथा विशेषण की राय पर निर्भर है।

दूध और आम का साथ परम आवश्यक है। रक्त-शय, शुक्र-शय, पित्त विकार मासे तथा कमजोर आंतों वाले रोगियों को प्रारम्भ से ही आम के साथ दूध का सेवन करना चाहिए। दूध आम की गर्मी को मार देता है। केवल यही नहीं आम के ऊपर दूध की प्रतिविद्या अत्यन्त लाभ-प्रद होती है। साधारणतया कितने आम के रस का प्रयोग हो उसका ही दूध लिया जाए। जो कमजोर आंत वाले हैं उन्हें

तो आम के साथ दूध बहुत उपयोगी होता है।

पर जो लोग मोठे हों या जिन्हे मेव विकार हो या जो कब्ज के पुराने रोगी हो उन्हें आम का कल्प बिना दूध के ही करना चाहिए। ऐसे लोग यदि कमजोरी का अनुभव करते तो दूध के स्थान पर अमुर या अनार के रस का प्रयोग कर सकते हैं। आम के कल्प में यदि तीन-चार-पाच तक दस्त आते तब तक यो ही चलते दे पर यदि इससे अधिक दस्त आते तो आम को कूटी हुई मिजली का चूर्ण तीन से छः मासे तक दे इससे लाभ होगा। प्रकृति में कितना प्रबल तथा व्यवस्था रखे छोटी है। आम के प्रयोग में बुरी प्रतिविद्या होने पर उस बाधा के दूर करने का किन्तना मुमिषाजनक तथा निष्कट का प्रबन्ध उससे रखा जाए। और यदि कब्ज या अजीर्ण हो जाये तो आम के छिन्ने का चूर्ण देने में लाभ होगा।

अब एक प्रश्न और उठता है। चुत्ताम आम का क्या रस निकालने प्रयोग किया जाए या उन्हें चूसकर खाया जाए? मेरे विचार में जिसको जिनमें मुमिषा हो या उम्र हो कम करे। उनसे कोई विशेष अन्तर नहीं पड़ेगा। पर हा, रस अपेक्षाकृत अधिक उत्तम रहेगा।

यदि कल्प करने वाला प्यसल रोगी है या कल्पकाल में उसे प्यसल के कष्ट में मुश्किल पड़े या दिक्कों के प्रदर विकार के बन्दे पर या ज्वन-दोष के बन्दे पर आम की मजरी का चूर्ण देने से लाभ होगा।

जो कल्प करने वाले पत्नीहा या बड़े हुए विगार के रोगी है या कल्प काल में यह कष्ट बढ जाए तो चोपी की एक-दो बूँद दूध में डाल कर दे (बतासि में न दे)।

मान लो कि कल्प काल में बवा-सीर का कष्ट बढ जाता है। तब भी मजरी का चूर्ण लाभ-प्रद ही सकता है। यदि सूनी बवासीर से शूल की मात्रा बढ जाए तो कुछ दिनों कल्प रोक देना चाहिए तथा विपरीत विपाक वाले फलों को देना चाहिए। विद्या-मिश्र या अन्य कोई बहुरंग फल का प्रयोग करे। और जब बहुरंग रोग में लाभ हो जाए तो फिर कल्प प्रारम्भ

कर दे। जिसे कफ-दोष ही अर्थात् कफ प्रधान दोष न होकर उप-प्रधान हो उसे आम के साथ शहद का प्रयोग लाभ-प्रद होगा। जो कमजोर रोगी हो उन्हें कल्पकाल में नहाना न चाहिए तथा वायु के तेज आंके भी उन्हें न लगना चाहिए। हा, पंचे की हवा उन्हें हानि न करेगी। बात के अनेक रोगों में आम का कल्प लाभ देता है, उससे कम रोगों में जो पित्त सम्बन्धी है और सबसे कम कफ सम्बन्धी रोगों में।

जो राजसभा (टी०बी०) के रोगी हो उन्हें पहले दूध का कल्प करना चाहिए और तब आम का कल्प। और आम के साथ से शहद का प्रयोग करे। इससे उन्हें बहुत लाभ होगा।

जिन्हे मोतियावृद्ध होने वाला हो, या दन्त हो या अमाशय और जिनर विपदा हो उन्हें आम का प्रयोग करा समन कराना चाहिए। शरीर के ऊपर के समस्त रोगों में ऐसे समन से बहुत लाभ होता है। समन इस प्रकार कराया जाए। पहले तो सुब पेट-भर दूधकर आम का रस पीना दिया जाए। और फिर १०-१५ मिनट बाद दो चुटकी मीसक दे दे। इनसे समन होगा। समन के साथ समस्त अरुचिक, विचार निकास जाये। समन ऐसे ही नहीं होना, बल्कि ५-६ बार करना चाहिए तभी लाभ होगा। पर एक दिन में एक या दो ही बार और वह भी प्रतिदिन निरंतर नहीं, एक-दो दिन का अन्तर देकर। समन प्राप्त काल कराना चाहिए। दूसरी बार दिन में कराया जा जा सकता है।

यह कहा ही जा चुका है कि अधिक आम के प्रयोग से पित्तमज्जर, प्रसन्निधि, कब्ज, रज्ज विकार, नेत्र रोग, बहुत बलाटु-मुन्नी भी हो सकते हैं। तब सीधे के चूर्ण को दूध के साथ पीना चाहिए।

आम के रस के साथ अनेक रोगों का प्रयोग होता है। शहद के साथ यदि आम के रस का प्रयोग किया जाए तो रासपयना, प्लीहा बात तथा स्लेष्मा का नाश होता है।

आम के रस के साथ यदि पी का प्रयोग किया जाए तो पित्त तथा वात सम्बन्धी रोगों का नाश होता है। बहु बल-बन्धक, बीर्य-बन्धक, भारी शीतल तथा रश्मिकर होता है। अपने के शीतल आम के रस के बर्त को निकालकर ४ ठोसा मात्रा देने में स्वयं-दोष में लाभ होता है। प्रभवः

# ताशकन्द का प्रचारक

(पृष्ठ २ का भाग)

भाषाओं का ज्ञान भी बताते हैं। कई समाजों में पुरातन हैं। उरीर स्वस्थ है, सिर पर गण्डी टोपी तथा प्रायः प्रेस किए बदन पहिने हैं। इधर भी कटुता व अस्मृती की समाजों में फेर गए हैं। उन्होंने कहा है कि मैंने बार साज भास्को (रुस) में रह कर वहा के प्रधान मन्त्री श्री कोसीगन को घेद पडाए है। अब वह वेदो का भाष्य रूसी भाषा में कर रहे हैं। मैं ताशकन्द थी वास्को जी के साथ गया। उनका भाषा अनुवादक था। यह भी कहते हैं कि बतियन जर्मनी में कई वर्षों बोस्को रखा हु। कभी कहते हैं कि ओ सती इन्दिराजी से यह काम करा हुना व कार्मरी के प्रान्तपति युवराज श्री कर्ण सिंह जी भेरे जाएयु में रोज आने थे। समाज व लक्षण भ्रम में उनको पैसे देते हैं। कृपया सांवेदिक समाज में प्रार्थना है कि अस्वी हो।

## वेद सप्ताह पर्व

इस बार वेद सप्ताह का पहिल पर्व थापणी उपक्रम के रूप में तां तीस अगस्त मे प्रारंभ हु रहा है। जमायटमी भी साव में साथ अती है। आर्यों के लिए यह वेदपर्व बडा ही पवित्र माना जाता है। इन मन्दाह वेदपत्रको भी स्वाधीन करे। वेद के स्वाध्याय का इन विषा जाए। जर्व-समाज जी वेदा ही वेद प्रचार के लिए हुना है। आज वेद प्रचार की निधि की क्या अवस्था है? आर्य प्रादेिक समा का महात्मा हंसराज वेदप्रचार कोष भर दो। समा के मुल्यत्र आर्य-जगत् के वेदाक को खूब प्रतिष्ठा मयता कर सब में बांटेने का कर्तव्य निभाए।—सं०

## कटुआ में धर्म प्रचार

१० मिलोचन्द्र वास्को आर्य प्रादेिक समा जासम्बर तथा पं० जलनन्द श्री भ्रमरीवेदिक समा का लगातार एक सप्ताह तक भारीरों व

# हंसराज महिला महाविद्यालय जालंधर के बी० ए० तृतीय वर्ष का शानदार परीक्षा परिणाम

विद्यालय की तीन छात्राओ कुमारी राज, कुमारी प्रमिला कपूर और कुमारी योगा ने क्रमशः ३२८, ३०८ और ३०६ अंक लेकर विशिष्ट शोभापान प्राप्त विद्यापियो की सूची में स्थान प्राप्त किया।

कुमारी राज विश्वविद्यालय के समस्त परीक्षापियो मे श्राद्धे स्थान पर और जासम्बर जिला में प्रथम स्थान पर रही।

विद्यालय का परीक्षा परिणाम ९०% रहा जबकि विश्वविद्यालय का केवल ९५% है। अभी तेईस छात्राओ का परीक्षा परिणाम घोषित नहीं हुआ है। इस के घोषित होने पर परीक्षा परिणाम और भी शानदार हो जाएगा।

## बी. ए. प्रथम वर्ष का परीक्षा परिणाम

कुमारी प्रवीण ओहरी १४२ अंक लेकर जालन्धर जिला के समस्त छात्र-छात्राओ में प्रथम स्थान पर रही। विद्यालय का परीक्षा परिणाम ७७% है जबकि विश्वविद्यालय का केवल ५३.४% है।

भ्रमरो द्वारा प्रचार होता रहा। इस नगर में अभी २ आनन्दमार्गमंत के गुण अपने शिष्यो समेत आये व कई लोगों व नारियों को दीक्षा दी। आनन्दमार्ग की वस्तुविक्रता के बारे में भाग्य दिव गये। श्री बा० नेराम जी वेदप्रभंन प्रधान, श्री बा० लक्ष्मण जी ऐन्डकोट मन्त्री, श्री मुल्लराज जी श्री लालजी जी आदि सारे सज्जन समाज की सेवा में लगे हैं। स्त्रीयमात्र भी खूब काम करती हैं। समा को वेद प्रचार भी मिला।

## पुरानो मंडी जम्बू

आर्यसमाज पुरानी मंडी जम्बू में भी वेद प्रचार का ममारोह होता रहा। पं० मिलोचन्द्र वास्को के उपदेश तथा पं० जलनन्द जी के भ्रमन होते हैं। स्वराज्य सुलत पर प्रामाण्य हो रहे है।

येदो के विद्वान्, देशभूषारक, त्यागी, सत्यवादी, तपस्वी, सच्चे ब्राह्मण, सच्चापनी तथा बॉल बहादुर चारी थे।

## प्री-यूनिवर्सिटी का शानदार परीक्षा परिणाम

हंसराज महिला महाविद्यालय की छात्रा कुमारी प्रमिला जैन और कुमारी कीना जैन ने क्रमशः ५०७ और ५०४ अंक लेकर जिला जालन्धर की छात्राओ मे प्रथम और द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

कुल २४६ छात्राओ ने परीक्षा दी जिन मे से २३० का परिणाम अभी घोषित हुआ है। इस प्रकार विद्यालय का परीक्षा परिणाम ६४.४ प्रतिशत है जबकि विश्वविद्यालय का केवल ५०.३० प्रतिशत है। योग १७ छात्राओ का परीक्षा फल निकलने पर विद्यालय का परीक्षा परिणाम और भी शानदार हो जाएगा।

## अत्यावश्यक सूचना

उत्कल प्रान्त में अत्यन्त भूखमरी के कारण सूकंदो लोग अपने बच्चे तथा घरों को छोडकर अन्य स्थानों को चले गये है और जा रहे हैं। सूकंदों ही अखाड पदाव का कर अपना पेट भर रहे हैं और सूकंदे ही भूख के कारण मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं। ईसाई मिशनरी इस भूखमरी का अनुचित लाभ उठा रहे हैं। उन्होंने उन भूखे तथा निधन आदिशाली लोगों तथा उनके बच्चो का धर्म परिवर्तन करने के लिए बहा अनायास, हस्पताल तथा शिक्षा-केन्द्र स्थापित कर दिए हैं। आज इडिया क्यालय माव्लेसिन मिशन होशियार पुर में भी निधेन तथा भूखे आदिशालियों के बच्चो को ईसाईयो की वस्तुमे वे बचने के लिए पातपोत, बिना सुन्दराड मे एक अनायास्य शोध दिया है जिसकी देख-भाल मिशन के एक अर्धतनिक, जलनदी तथा अन्यक कार्यकर्ता, कर्मा भी बलानन्द जी सत्सती कर रहे हैं।

## पंजाब प्रांतीय आर्य वीरदल की आर्य-श्रयक बैठक

१४-८-६६ को आर्य समाज गोविंदगढ जालन्धर में सलगन हो रही है।

सब सज्जन ठीक समय पर पधार कर सहयोग दें।

कार्यक्रम— प्रथम बैठक—९ से ११ तक दूसरी बैठक—२ से ५ तक। रात्रि ८। से ११ बजे तक सार्वजनिक समा होमि।  
—उत्तमचन्द 'सर' संचालक

## राखी का महत्त्व

देश जाति राक्षस मंत्रिदा की पुकार पर जिन सुभद्रों की वीर भावना सुना रही है।

पीडित जनों के दुःख दूरकर आशुओं को पीने चले वन के अरस्त जव साक्षी है।

सतियों के लुटेरो लतील, रक्षा के हितार्थ प्राणो को बडा दी-बली बना लेते पाशा है।

उन्ही वीर आर्य पुरुषों के हाथ, रामसिंह, रक्षा हित आर्य लखनाओं की ये राखी है।

मकलन लाल बदनलाल मुजतानपुर

## आर्य समाज विक्रम-पुरा जालंधर का साप्ताहिक सत्संग

रविवार १४-८-६६ को प्रातः आठ बजे होंगा। ईदिक कार्य विधि के बाद श्री आंमत्रकाजी नारण का मनोह्र व्याख्यान होवेगा। सभी सज्जन समय पर पधार कर अनुगृहीत करे। कर।

नोट ईदिक सत्संग प्रातः से सात बजे तक होता है। संध्या— हुवन के पश्चात श्री पुरोहित जी एक वेद मन्त्र की व्याख्यान करते है सभी सज्जनों में प्रार्थना है कि इस पुण्य कार्य में पधार कर भाग उडए।  
—मन्त्री आर्य समाज

## आर्यसमाज कालीकट (आ. प्र.) के समाचार

आर्य प्रादेिक प्रतिनिधि समा जालपर से नियुक्त बुधसिंह जी प्रचारक समा ने पिछले तीन मास में २ मुखलम और ५ ईसाइयो को बुद्ध करके हिन्दू धर्म में प्रविष्ट किया। १७ घरों में पारिवारिक सह करए। एर्रेन में २३ घरों, मई में ७ घरों, जून में ७ घरों मे बुद्ध हुवन करए। ऐसा करने से आइ का प्रचार बहुत कम हो गया है। हिन्दी विद्यालय सुवाध रूप से कार्य कर रहा है। इस विद्यालय में प्राथमिक, मध्यमा राक्ष माया, प्रवेशिका आदि शैक्षिणी ठीक चल रही है इनकी परीक्षा अगस्त की २०, २१ तारीख को बारम्हें हो रही है। साप्ताहिक सत्संग नियमानुसार चल रहे हैं।  
बुधसिंह प्रचारक  
भास

सम्पादकीय—

# आर्यजगत्

वर्ष २६, रविवार ०२२, १४ अगस्त १९६६, अंक ३२

## वेद की तीन देवियां

वेद में दशा, सरस्वती, महती नाम से तीन देवियों का सम्मान करने का सम्यक् विज्ञान है। इन में एक देवी महती है। इसे मातृभूमि का नाम भी दिया गया है। मातृभूमि की पदवी स्वर्ग से भी ऊंची है। इस से बड़ कर जन जीवनों के लिए दूराय कोई उत्तम स्थान नहीं है। हमारे पुरातन इतिहास में इसी कारण अथ्य देवों के सम्मान के साथ बं बने मातृभूमि का पवित्र जयघोष भी लगाने की बात कही है। मानव प्यारी से प्यारी वस्तु भी मातृभूमि की बेटी पर अर्पित कर देता है। स्वाधीनता सब से कीमती प्रयास है। इसे प्राप्त करने में हमारे राष्ट्र का अपना ही विश्व बलिदानों भरा इतिहास है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने राज्य को दूसरों के राज्य की अपेक्षा बहुत ऊँचा स्थान दिया है। वेद में स्वराज्य व स्वतन्त्रता के विषय में सुन्दर शब्दों में कहा है—अचंभसु स्वराज्यम्— अर्थात् स्वराज्य की प्रतिष्ठा करो। आर्य सभ्यता में अतीनाः स्थाय्य हूय स्वतन्त्र तथा अतीव होकर ही जीवन बितानें इस बात की प्रार्थना की है। स्वराज्य परमसुख एवं परराज्य परम दुःख माना है। भारत में बड़ा भारी बलिदान देकर मातृभूमि की स्वाधीनता ली है। यद्यपि ब्रिशाह राष्ट्र ने अपनी गलत नीति से दुःख-दुःखे करा लिए हैं। प्रतिभर्ष अमस्त को १५ तां० को सारा प्रायः अपना आजादी का यह पर्व-सा मनना पत्ता जाता है। इस बार के इस स्वराज्य दिवस की भी सब को बाधाई हो। किन्तु इनके वर्षों के बाद जब हमें गम्भीर विचार करने की आवश्यकता है, कि स्वाधीनता के बाँध होंगे क्या बंधा है? हमारी भावनाओं का इतना विनाशना पतन किन्तु लिए होता जा रही है। जीस बर्ष होने अथ्य इस समय इस बात की तो ब्रह्मजना है कि भारत में निर्माणा का कार्य बरही सुन्दरता से हो रहा है। अहं-सुई अंक नहीं बनेगी

जाती थी, बहा सन्तु का मुक्त मोहने के लिए टैक, विमान तथा अन्य शस्त्र बनाने लगे हैं। कला-कोशल में वृद्धि होती जा रही है। भौतिकता में राष्ट्र आगे बढ़ रहा है—किन्तु श्रेष्ठ यह है कि जीवन के स्तर में, भारतीय नैतिकता में राष्ट्रीय जीवन का विकास होता जा रहा है। भारतीय आदर्श नैतिकता का है, जब यह न रहता तो आत्मा के विना कोरा सुन्दर शरीर किस काम का है? इतने वर्षों के स्वराज्य के बाद आज जन-जीवन में यह उत्साह व उत्थाह क्यों नहीं? १५ अगस्त का दिवस आता है। सरकारी रूप से चाहे दिवस-समारोह मनाया जाता है—पर जनता का उत्साह दिखाई कम देता है। स्वराज्य के सुनहले स्वप्न कहा चले गये। क्या वीर बलिदानियों में अपना जीवन इसी लिए खेद किया था कि उन को पूरी तरह खाने-पीने को भी न मिले। देशों के भार के नीचे दबा दिया जाये। गिनाइ इतनी माहुरी हो जाये। जीवन का कष्टन ही खूने जाये। बस्तुओं की महमाई आकात को खूने जाये। दूध पी स्वप्न हो जाये। भोगवाद का बातावरण पाव पसारता जाये। मांस शराब का प्रवाह बहता जाये। गीबस समाप्त होता जाये। गोरखा की बात कहने वाली जनता और सारा महात्माओं को जेल में बन्द कर दिया जाये। मोरला पर प्रस्न पृछने वाली को लोभसा ये निकाल दिया जाये। लिप्सा और सत्ता का नशा इतना बड़ बावें कि एक बार विधान सभा और लोक सभा का सदस्य बनने पर जीवन पर्यन्त उस का पट्टा लिप्सा दिया जाये। भोगवाद को प्रोत्साहन देने के लिए लूणवाद का बोलबारा किया जाये। गलत को सत्तर अरब के कर्जों के बोझ लते दबा दिया जाये। बात - बात में सारी — गौरी का सह्युरा लिप्सा जाये। जीस बर्षों के-बाच भी विधान सभत -राष्ट्रभाषा हिन्दी के सिध् उचित स्थानों

## इस आनन्द मार्ग की गतिविधि तीव्रता में

आर्य अमल के गत एक अंक में हम ने आर्य प्रतिनिधि सभा पटना बिहार राज्य के माननीय विधान उपप्रधान श्री पं० रामानन्द जी शास्त्री का एक आवश्यक लेख आनन्द मार्ग के धीरक से प्रकाशित किया। वह लेख सब की आंखें खोलने वाला है। इस प्रकाश के भूष में श्री एसी बानें जनता में प्रचारित की जाती है, इस का हर्ष तो बड़ा अचम्भा है। जमानपुर (मुबैर) में देलवे विभाग में काम करने वाले श्री प्रभातरञ्जन सरकार जो अपना नाम अलन्दमूर्ति रख कर जनता में अपने बेशर्मा आचार्यों के साथ जाते हैं—अपने मत का नाम भी आनन्द मार्ग रखा है। इधर सभा के प्रचार कार्य के नाते जम्मु प्राय में कटुआ जिला में जब मुझे सभा के भवनोपदेशक पं० शान चन्द जी के साथ आने का अवसर मिला तो बहा जनता में अभी ताजा-

ताजा ही भी प्रभातरञ्जन ही अपनी पैला मण्डली समेत जाकर अपनी देना कईवों को दे गये थे। जनता में बड़ा कौतूहल था। आर्य समाजी मौन कंठे रहे। बहान समाच में पूरा एक सप्ताह रह कर इस नये मत आनन्द मार्ग पर विवेच भाषण देने पडे। जो भी श्री सरकार के पास दीक्षा लेने जाता है—उसे सब से पहले यह कहा जाता है कि अपना योजवीत उतार कर तथा कौटी उतार कर आओ। मैं दोनो विपत्ता कंलती है। कटुआ में तो एक अर्ध गुरुष श्री अमलराय जी का चोटी जनेक उतारने के बारे में प्रमाडा व विवाद भी हो गया। युवक हो या युवती—

न बना कर बिदेसी तथा केशव दो प्रतिशत की भाषा अंग्रेजी को ऊंचे आसन पर प्रतिष्ठा देना जाय। खाने पीने के पदार्थों में पोषे की लीध पीस कर, पशियों की बीडे, इंडे पीस कर खिलाए जायें। दवाईयों में मिलावट भी में बर्बा मिला कर जन-जीवन के स्वास्थ्य से खिलवाड किया जाए। स्वराज्य में यह हो क्या रहा है? यदि कोई इतिहास का ऐसा लेखक इस को लिखने बैठे तो कापेस राज्य के बीस बर्ष पर पत्ता नही क्या-क्या लिखेगा? चारों ओर से सारा देश ही नाचने वाला, भगडो का प्रेमी, शराब माय का महलाना, भोगवाद का दीवाना बनता जा रहा है। हर स्थान हर बात और हर बस्तु में पतन में डेरा डाला हुआ है। बघाई है नये राज्यपाल की धर्मवीर जी को, विज्ञानो प्राप्त में योडा धर्मक बलाना प्रारम्भ किया है।

उनको कहा जाता है कि तुम्हारा यह सारा शरीर एवं इस का एक २ अंग अब तुम्हारा नहीं वरन गुरु का है। इस पर अब गुरु जी का अधिकार हो गया है। तुम अपना सर्वस्व गुरु को समर्पित कर दो। दीक्षा गुप्त देते हैं। कहा जाता है कि यदि तुमने इसे प्रकट किया तो तुम पागल हो जाओगे। मन पर एक भय आनक का प्रभाव बिडा दिया जाता है। बगानी होने के नाते श्री सरकार अंग्रेजी पडे मिसे तो है ही—जनता में Progressive Federation of India भारत का प्रगतिस्थ नामक सस्था की स्थापना करते हैं। हम आर्यसमाज में जोरदार शब्दों में कहना चाहते हैं कि इस नये भोगवादी मार्ग को अभी से रोकने के लिए जोरदार आन्दोलन करो। ईक छाप कर जनता में बाटे।

## ताशकन्द का प्रचारक

यह है चित्र स्वराज्य का। फिर भी जनता को निरास नहीं होना। मिल कर इन बातों के निराकरण का प्रयत्न करना है। स्वराज्य-स्वराज्य ही। इस से बड़ कर कोई बरदान नहीं। बाकी इस दिवस निर्माण का संकल्प ले।

एक अल्पक भले व्यक्ति ३०० ओम प्रकाश पुजे नाम के कई स्थानों पर प्रभयार कर रहे हैं। वह अपने आणकी कहते हैं कि मैं भारत के स्वर्गीय प्राधान श्री लाल महादुर जी शास्त्री के ताशकन्द जाने के समय उनके सिध्-मंडल में गये था। अपने को कई (सिध् पृष्ठ ६२)

—निधोक बन्द

आज विश्व का मानव समाज अवाचक गति से प्रति क्षण वेद विद्या के ज्ञान प्रकाश को मूल कर विद्या की ओर द्रुत गति से आगे बढ़ रहा है।

आज का जगत जगल में फंसा हुआ है। आज का मानव ईश्वर और धर्म को मूल कर, सदाचार व आत्म-बल, वैदिक कर्म कान्ठो की अतीतिक धरोहर को मूल कर भारतीय वैदिक सभ्यता के रत्न कोष को तिलांजलि देकर मानव अपने स्वल्प को मूलकर माया की मखिर का पात्र कर युद्ध शान्ति और आनन्द की लताध में सन्विष्टो से व्यथित अवस्था में भटक रहा है। वेद पथ को मानव मूल कर वैदिक विज्ञान के शत्रु को त्याग कर ईश्वर को आज्ञाओं की तनिक भी परवाह न कर आज का मानव वैदिकों के भांगो में फसा हुआ है। आज विश्व के मानस भवन में वैदिक विचारों की श्रमति मचाये का वीड़ा आर्य समाज सत्कार का उपकार करता अपना परम लक्ष्य समझता है। आर्य समाज सृष्टी माता की गोद में आकर मानव मानवता की रक्षा की भ्रम्य भावनाओं से चमक जाता है।

ऐ विश्व के तर-पारिया यदि अपना कल्याण चाहते हो तो बेदो का तथा ईश्वर की आज्ञाओं का पालन करो। पुनः मानव जीवन का मितना महा क्लिष्ट होगा।

विश्व के समस्त वेद भक्तों के सामने आवश्यक सुभाषण :-

बेदो का अनुवाद और प्रकाश का कार्य विश्व की समस्त प्रमुख राष्ट्र भाषाओं में किया जाना विज्ञान आवश्यक है।

आर्यसमाज की जन्म शताब्दी के दिन निकट आ रहे हैं। इस अवसर पर कम से कम एक करोड़ सभ्यता आर्या विश्व की अनेकों भाषाओं में प्रकाशित कराकर जगत में महर्षि दयानन्द की विचार धारा का उपहार दिया जावे।

वैदिक राज्य विधान के विना विश्व की मानवता की रक्षा नहीं होगी अतः राजनीति में आकर वैदिक साम्राज्य की स्थापना आर्य समाज को करनी होगी।

भारत ने गी बच जैसे महा कर्त्तक को मिटाने के लिए आर्य समाज के मंदान में बूढ़कर हेरादारा जैसे सत्या-धर के आदोलन का सलाख बनना चाहिए और भारत सरकार के सभी जेलों को सत्याग्रह से भर देना चाहिए।

भारत की राजधानी दिल्ली नगर

## आर्यसमाज और विश्व में वेद प्रचार

वेद पथिक पं० धर्मवीर जो आर्य, झंडाधारी व्याख्यान भूषण साराय खेला देहली-५

में जहां १५० आर्य समाज है वहाँ धर्मवैदिक आर्य उपदेशक महा विद्या-पाठी का निर्माण और संचालन धीरे धीरे होना चाहिए यह उपदेशक महा विद्या-लय मालवा विश्व विद्यालय के समान बनना चाहिए हज़ारों हज़ारों उप-देशक और उपदेशिकायें अपना जीवन दान देते बाने प्रकाश महा विद्वान तैयार किये जायें।

अस्सील फिलों पर प्रतिबन्ध लगाने के लिये प्रबल आंदोलन किया जावे। अस्सील पोस्टरों में आग लगाई जावे तार को फेरे जायें। अपने भासकों और दासिकाओं के चरित्र निर्माण के लिये अस्सील फिलों पर प्रबल प्रतिबन्ध लगाया जावे इसके लिये धोर तप और बलिदान चढ़ाने की आज्ञा आवश्यक है।

### धर्म शिक्षा :-

धर्म शिक्षा :- धर्म शिक्षा के विना विश्व की मानवता देश की स्वतन्त्रता और धर्म सतरे में है। अतः प्रत्येक स्कूलों और कॉलेजों के विद्या-लयों के चरित्र निर्माण के लिए धर्म शिक्षा अनिवार्य रूप में लागू करने के लिए भारत सरकार को वाध्य किया जावे। इसके लिये विश्व व्यापी श्रमति संचाई जाये

### सह: जिज्ञा पर प्रतिबन्ध लगाओ

सह: जिज्ञा के कारण आज चरित्र का पतन से रोक-टोक हो रहा है। आज देश में नित्य हज़ारों की हस्त्या में घं हत्याए हो रही हैं। सदाचार संघम का दिवाना निकाल रहा है। श्रद्धिचार दिन दूना बढ़ रहा है।

### ऐसी अवस्था में सर्व प्रथम धर्म

विद्या तुल्य बन्द की जानी चाहिए। पुनः देश-भर में सह-जिज्ञा बन्द करने का आंदोलन चलाया जायें।

देश विदेशों की समस्त आर्यसमाजों में आर्य की रत्न के शिथिर बसाये जायें। नौकरानों को आर्यसमान में लाया जावे।

### परितीक्षिक

निर्धन होमहार लेखकों, साहित्य-कारों, धर्म प्रचारकों उपदेशकों को उनके प्रोत्साहन के लिये गृहस्थ की सल्लस्यों से दूर रह कर वैदिक विद्या के प्रचार के लिए उन्हें परि-तीक्षि नोट किये जायें। उनके भासकों का शिक्षा वीसा का पुरा प्रबन्ध किया जावे।

विश्व को समस्त धर्म समाजों में वैदिक दैनिक सल्लग की पवित्र परि-पाठी का प्रचलन किया जावे। आर्य समाजों के सभी सदस्य सपरिवार नित्य एक भष्ठा का समय निकाल कर सन्मया हृदय उपदेश के अथवा मनन ईश्वर उपासन के लिये आर्यसमाज के सल्लगों में जाने का वत धारण करें। परिचारिक सल्लग चलाते जाएँ। वैदिक कर्मकाण्ड का विश्व व्यापी प्रचार किया जाये।

विश्व की समस्त आर्य समाजों आर्य समाज की जन्म शताब्दी के उपलक्ष में कम से कम एक आर्यसमाज नई स्थापित करने का सक्लन करे। आज देश के प्रत्येक नगरो और प्रान्तों में आर्यसमाज की आवश्यकता है।

### स्वाध्याय यज्ञ

महर्षियों के ज्यूर से उच्छ्रास होने के लिये प्रत्येक आर्य नर नारी की प्रति दिन कुछ समय निकाल कर स्वाध्याय करने का वेदों के पठन पाठन का महापथ धारण करना चाहिए।

महर्षि दयानन्द द्वारा गुरुकुल विशा परिपाटि को चलाने से ही मानव मानव बन सकना अन्यथा मानव दानव बनता जा रहा है। अतः अपना और विश्व का कल्याण लिये चाहते हैं तो गुरुकुलों में अपने बालकों और बालिकाओं को अवश्य भेजे।

### वैदिक युग का निर्माण

आर्यसमाज की स्थापना विश्व धर्मवीर महर्षि दयानन्द जी ने की थी वैदिक युग के निर्माण की अन्ध भावना को नष्ट करने के लिये वैदिक युग के निर्माण के लिये विश्व में राम राज्य स्थापित करना होगा।

वैदिक संस्कृति की धरोहर की रक्षा आर्यसमाज ही कर सकेगा। मुझे पूर्ण आशा और विश्वास है कि विश्व के समस्त महर्षि दयानन्द के अनुचर भेरे दुष्मन्तों पर ध्यातुर्बक विचार करके वेद प्रचार की काया पलट में सफनी मूत होने।

आज वेद के पाठन संदेश की हूमें विश्व के घर-घर में पहुंचाने का महा वत धारण करना है।

आजो आज हम सभी-सभी और घर-घर में शास्त्रों की पूरा संचायें। ईसाई मत और इस्लाम के जाल से विश्व के मानव समाज की बचाने

के लिये बुद्धि की मूढी सिलायें बन-बन की। आज बुद्धि का काम वेद से चलाने के लिये हूमें अपने प्राणों की मजला का त्याग करना होगा। आज विश्व के समस्त राष्ट्रों में वेद-प्रचार के केन्द्र स्थापित करने हैं। वेद विश्वविद्यालय का निर्माण सब शाखाओं का निर्माण आर्यसमाज को करना है। इन कार्यों के लिये आज करोड़ों और अरबों रुपयों की हूमें आवश्यकता है। आर्य-समाज रजिस्टर्ड सदस्यों की संख्या आज करोड़ से ऊपर है। यदि सभी आर्य दृढ संकल्प होकर सब भेद-भाव को मूल कर वेद प्रचार की दिव्य शिक्षा के पथ-प्रदशन में जुट जायें तो संसार में वेद प्रचार की महा शान्ति मचा सकने हैं।

आजो आज समय की पुकार है कि हम अट्ट और अशोक के अनुचरों की श्रमति अपना सर्वस्व निहावर करके विश्व की मानवता की रक्षा में वेद प्रचार में विश्व सेवा में अपना जीवन समर्पित कर दें। यह याद रहे कि मनुष्य के लिए दृढ संसार में कोई काम नहीं है। मनुष्य पतित्यों का पुत्र है। प्रबल प्रकाशार्थ से मनुष्य इली जीवन में भवं अर्थ काम तथा धर्म को प्राप्त कर सकता है। परमात्मा की कृपा का पात्र हम को और वेद प्रचार की दिव्य व्यापी प्रचार के लिये कृपा लभ-लभ-बन, सर्वस्व निहावर करने बाने देश भक्त कर्मवीर और धर्म वीर बने।

इस सम्बन्ध में पाठक नूद अपना अवल्य सुभाषण श्रम समर्पित तथा पवित्र आशीर्वात संदेश उपर के पत्र पर प्रदान कर के कृतायें करें।

## गुरुकुल वैदिक आश्रम वेद व्यास राजा केला

आर्य प्रादेशिक राजा की ओर से श्री स्वामी बहानन्द जी ने उड़ीसा प्रांत के राजर केला में प्रचार करके हुए २२ जगदय कर्त्तों की ईसाई होने से बचा कर अपने आश्रम में निवास किया। ५ हिन्दू देवियों को मुसलमानों से छुड़ा कर हिन्दू मूल की घरल में लाया गया। २ ईसाई मिशनरियों को मूठ करके हिन्दू कुलों के साथ विवाह कर दिया।

कलाहली में अन्ध आश्रम खोल कर उठ में अन्धय बन्धों की सारा का आ रही है। शरिखर में बनीन आर्यसमाज का वर भी है। शिवा-नृति द्वारा अवाचक आश्रम चलाया का रहा है।

स्वामी ब्रह्मानन्द



दिलीकोन नं० ३०५०

[आर्यप्रादेशिक प्रतिष्ठान, पंजाब जालन्धर का मासाहिक मुखपत्र]

Regd. No. P. 121

एक पत्रिका का मूल्य १२ पैसे

मासिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६ अंक ३६)

२० भाद्रपद २०२३ रविवार—दयानन्दाम्ब १४१-४ सितम्बर १९६६

(तार 'प्रादेशिक' जालन्धर)

## वेद सूक्तयः

त्वमेतदधारयः

प्रभो ! आपने ही तनु - यह सारा बराबर जगत् धारण किया हुआ है। आप के ही चिन्तन नियमों से हर एक पदार्थ अपने-अपने काम में लगा हुआ है। आप ही इस सारे विश्व के धारक हो। निगमात्क हो।

## इन्द्रो वज्री हिरण्ययः

सोमो ! वह इन्द्र भगवान् बकी-बख वाला, भारी भारी धनुष वाला है और वह तेजस्वी है। उस की शक्ति में चन्द्रसूक्त में कोई भी तो वच कर जा नहीं सकता। उसकी निरालस बलमें सानी बकरी मक्खी पीसनी है।

## इन्द्र बाजेधु सोऽव

हे परमेश्वर ! आप बाजेधुजान के तथा जल के कामों में हमारी रक्षा करें। इस जल में इन्द्रिनी के वम न हो या कोई देवी न मरने पर-जल न कर सके। जल में बहने वाले।

## मित्रं वयं हवामहे

हम उन भगवान् की पुजति है, जो हमारा मित्र है। हम सतार के मित्र, साथी तो कहें आ पढ़ने पर साथ छोड़ जाते हैं। पर प्रभु ऐसा परम मित्र है जो सदा हमारे अंग-मग रहकर मुझी करता है।

सा म वे द मे

## वे दा मृत

त्रात्र को जीवित मत छोड़ो

अतिधावतातिसरा इन्द्रस्य वचसाहत ।  
अवि वृक एव मधनीत स वो जीवन्मा माचि  
प्राशामस्यापि नह्यत ॥

अवं — हे राष्ट्र के लोग ! (अतिधावन) तुम दौड़ो (अतिव्रत) तुम मदा अति बड़ने वाले हो (इन्द्रस्य) अपने नेता के (वचसा) बचन से सारे मनुजों को (हृत्) मार दो। उन पर तबतब दूट पड़ो। (अचि) जैसे भेड़ को (वृक) भेड़वा (मधनीत) मध-शान्ता (मव) वह मनुष्याण्य मधु (जीवन्) जीवित, जियता (मा) मन (मोर्नि) जानि पाए (प्राशाम् अस्यापि) हमके पाली की (नह्यत) बाध दो। उसे बसाकर बस में कर लो। राक्षस व मनु मनु में अब बचकर जाने न पाये।

## इसका भाव यह है

हे लोग ! मदा आगे ही आगे बढ़ने जाओ। आपका नाम ही अतिव्रत है, मदा आगे बढ़ने वाला। अतिव्रत वचकर प्रतिव्रत करने का विचार तो स्वप्न में भी बँद न होने पाए। नेता का राष्ट्र का जो नायक नेता आपका आदेश देता है—वधु, वधन की आज्ञा देता है—उसके अनुसार शत्रुओं को राक्षसों, दुष्टों को तो के पीछे भागो। उनको मधु शत्रु, कुचक मयन कर रख दो। उन में से कोई भी मनुष्याण्य होवो, पड़ो तथा सामने में एक भी बच कर न जाने पाये। इन्द्रा, कोई भी लोट कर जा न सके। अब की बोलना शक्ति की आज्ञा उनको मुझे धाम के समान जानो।

अवंवेद १०८६

## वेद के आदि और अंत में ओम्

महामुनि पारिप्लविक के मत में प्रसंगच्छे ८०-८०, यह कर्मावी देवो नियन्त्रिता स्यात्। अथ देवाणि त्रिभुवनानि यज्ञ मे वेद भगवो के अथ की 'दि' स्वर को ओम् आदेश हो जाए कहे हैं, यथा त्रिवर्तित के शकार को ओम् यथाकार त्रिभुवनोम् किया गया है उस में यह सिद्ध हुआ कि वेद के त्रिनने मत्र है उसीकी संख्या में ही उस में ओम् है। ओम् अथ्यादाने ८०-८० इस मंत्र से पारिप्लविक मत्र के आदि में मूत्र ओम् बोलता है। इस प्रकार वेद मत्र की संख्या में ओम् संख्या दुगुनी हो जाती है। अथ्याण्य प्रथम कुर्वादायवने म संख्या मनु ०-०१ वेद मंत्र के आदि अंत पाठ में ओम् का उच्चारण करे।

## ऋषि दर्शन

विद्यादि श्रेष्ठधनम्

हे पितृ ! हम आपके पुत्र पाचना करने हैं कि हमें आप विद्या आदि का उनका धन प्रदान करें। केवल विद्वान् न बने बरन यह विद्या हमें अच्छे पत्र पर ले चले। पर भी उनका कर्वाँ तवने वाला हो, धैर्य हो।

## ब्रह्मनिष्ठात्वम्

हृषे ब्रह्म मे निष्ठा हो, धडा हो विद्वान् हो, हम वेद के भी परम भक्त बने तथा ज्ञान के अर्जन प्रदान के अर्थकार को दर करने वाले हो। ईश्वर विष्णुकी देवदेवी तथा ज्ञान-अज्ञान बने।

## सोत्तमशरीरेन्द्रियाः

हमारा शरीर उनका हो मदा शरीर इन्द्रिया अपने काम को करने वाली हो शरीर रोग का धर न हो एवम् इस के किसी अंग में भी विकार न होवे। स्वस्थ और प्रसन्नता में जीवन पूरा हो।

## सदा सुखदाः सौम्याः

राज्य समा में जो लोग आदि में मदा दुखरो को शरीर प्रका को मुक्त देने वाले होवें। सम्भरी तथा नखरसमाव वाले दालत प्रकृति के होने चाहिए। उच्छ्रद्ध अभिमानि स्वभाव के न होवे।

भा प्य भू मि का से



परम देव परमात्मा का तेज पृथ्वी के कण-कण में जन मन मानव भवन की गहन मुद्राओं में धमक रहा है। सूर्य की किरणों में, उषा काव की लानी में, चन्द्र चांदनी में, मधराती में, हवा में, पानी में, बिजली में, निर्जन कर्मों में, आशा के प्रकीर्ण पुञ्ज में, जीवन के उपमान में, जीवन और मृत्यु में, यत्र, तत्र, सर्वत्र परमब्रह्म परमात्मा की सीताओं का अवलोकन करते पर दुःख और शोक में मुक्त हो कर मनुष्य परमानन्द में विचरता करते मन जाता है।

**विचार धन**

विमान विचारों के रत्न कोष को प्राप्त कर जो आनन्द की अनुपम अनुभूति एक महात्मा की महर्षिपण्य की होती है उस आनन्द कला को बच-कहीं न बचाही भी तरंगते रहते हैं। मूर्च्छित की आदि काम से अब तक का इति-हास पढ़ने में यह आनंद है कि परमात्मा की सखा की महत्ता में विचरता करने से विचारों की अनमोल मोनियाँ की असंख्य जाखल्य मान ज्योतियों को प्राप्त कर लेने से परम शांति और आनन्द को प्राप्त कर के अमर पर को प्राप्त करने वाले महर्षिपण्य हुए हैं।

**परमात्मा का साक्षात्कार**

परमात्मा का साक्षात्कार कर लेने पर मनुष्य इसी जीवन में धर्म, धर्म, काम और मोक्ष का अधिपति बन जाता है। परमात्मा का दिव्य दर्शन इतने चतुर्ध्रों से नहीं किया जाता। अर्थात् आत्म ज्ञान के प्रकाश में निष्काम कर्मों के करने में परार्थ ध्यान में कूदने में परमात्मा के विराट रूप का दिव्य दर्शन कर लेने पर मनुष्य द्रत हृदय हो जाता है।

**कर्म गाँठ**

इस ससार में कर्मों की गति विचित्र, विचल-विचल विचकार के समान है। दुकर्म कमाने से मेधा दासित का विनिर्गम आकल्पनीय विकास होता है। कर्म विनाश कर्म, जिन स्त्री कर्म नष्ट, कर्म-वि, कर्मभंग, कर्म-जान कर्म जिनके के रत्नों के मर्म का ज्ञान में; पर मनुष्य वेद धन जाना है।

सुन कर्मों के करने पर मनुष्य को परम पुण्य का फल मिलता है और इसका परम समीप प्राप्त होता है कि उस मन्त्र के बन्धनों के भंग-कर मय में मनुष्य मुक्त हो जाता है।

**कर्म काण्ड**

वेद विद्वत् अत्याज जनों की

**धार्मिक चर्चा :-**

**चतुर्विध तेरा तेज छाया हुआ है**

श्री वेद पबिक धर्मवीर जी अर्ध, संजयारी व्याख्याय भूषण, सराय रहेला नई दिल्ली-१

बैदिक कर्म काठों की दिव्य अनुपम अलौकिक, दासियों के रत्न कोष का तेज मात्र भी बांध नहीं है। वैदिक कर्म काठों की पवित्र परिपाटी को त्याग कर आज मानव दानव बन चुका है। आज संयम, सदाचार, आचार विचार व्यवहार का ज्ञान हमारे जीवन में कोसों दूर हो गया है। बैदिक कर्म काठों के करने में ही वैदिक जीवन का निर्माण होता है।

हे विद्वत् के नर नारियो यदि अपना कल्याण चाहते हो और अकाल मृत्यु के भय से बचना चाहते हो तो अपना जीवन वेदोक्त बनाने के लिए वेद पत्र के पबिक बनो। एक ईश्वर की उपासना करो। सध्या, उतासत, प्रायश्चा, यज्ञ में अपने जीवन को लगाकर परमानन्द को प्राप्त करो।

**वीर भोष्यावमुष्यरा**

इस पृथ्वी का सम्पूर्ण ओग वीरों के दिव्य ही है। आनमी, कायर, कपूत, निरुद्यमी, साहसहीन, पुरपाय रहित मनुष्यों के लिए तो यह जीवन भार न्बुष्य है। अतः आज स्वतंत्र भारत के स्वर्ण प्रभात में स्वतंत्रता दिवस के पावन पर्व पर विद्वत् विद्वत् के पत्र पर प्रति क्षण आगे बढ़ने की प्रव्रल प्रतिज्ञा करो। वीरों के लिए पुरपायियों के लिए परम तपस्वियों के लिए इस ससार में कोई कार्य अमभव नहीं है।

हम भारत वमुष्यरा की मन्ताने विद्वत् विद्वयी विनाशों के पुत्र और पुत्रिया है। आज हम यज्ञ वेदी पर चक्रवर्ती बैदिक साक्षाय स्वार्थित करने की प्रव्रल प्रतिज्ञा करें। निरासा, निराला, कायरता की भणार्थ।

विद्वत् की पाठ्य भाषा संस्कृत देव भागी देने इसके लिए कान्ति मन्त्राओं। विद्वत् के मानव समाज का जीवन पावन-पवित्र अति उज्वल बन इस वात का सतत माधना में हम मन्त्री मायक और साधिकार आराधक बनकर लगे। ज्ञान गमा की विमान दासिन् मुखा सर की अमृत वाग बहाने में लगे।

विद्वत् के इतिहास में नया मोड,

**आर्य समाज, नारनौल**

१९-८-२६ में वेद सप्ताह मनाया गया। जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा जालन्धर के महोपदेशक पं० समरसिंह जी देशानंकार—तथा श्री चन्द्र मांडु जी की जयज मण्डली में प्रवचन तथा भजन हुए। —हरिवरज आर्य मन्त्री समाज

**आर्य प्रादेशिक उपसमा देहली**

मंगलवार २-८-६६ को देहली के प्रमुख आर्यों में गोवच निरोध के निमित्त संसद के साहज ८ पटे त्क चलता दिया। प्रादेशिक उपसभा के प्रधात झा० किषान चन्द्र रत्नन ने श्री सात्वा रामभोवाल जी शास माने के साथ इस कार्यक्रम को पूर्ण सफल बनाने में पूर्ण सहयोग दिया। उपसभा के जन सभक का कार्यक्रम भी प्रभावशाली रहा। —शिवराज सिंह अत्याय प्रवृत्त

**आर्य समाज नया**

**बाजार भिवानी चुनाव**

प्रधान—श्री शिवकररायण जी, उप-प्रधान—श्री मुखेश्वर सात जी, मन्त्री—श्री सुधीरसिंह, उप-मन्त्री—श्री अमरनाथ जी, कोषाध्यक्ष—श्री ओमप्रकाश जी, पुस्तकाध्यक्ष—श्री विद्यावत जी शास्त्री पुरोहित।

**उत्सव**

२८-२९-३० अक्टूबर १९६६ को उत्सव होना निश्चित हुआ, जिसमें उरुचकोटि के सभासिध्यों, विद्यार्थों तथा भजनोपदेशकों को आमन्त्रित किया है।

**पुरोहित जी की नियुक्ति**

आर्यसमाज नया बाजार भिवानी में पबित्त विद्यावत जी शास्त्री, की नियुक्ति पुरोहित रूप से ही गई है, आर्य जनता से प्रायश्चा है कि—माननीय पबित्त जी से, यज्ञी, सत्कारों, कृपा तथा उपदेशों द्वारा लाभ उठावें। —सुधीरसिंह मन्त्री समाज

**★ अक्षरों के उच्चारण की**

विधि विधान क्या बोधने का स्वाम और प्रत्यय आदि जानना 'विशा' है। इसमें पारिणति मुनि की बनाई 'पयौ-चरारण शिवा' पुस्तक मुख्य है।

**चंडीगढ़ में वेद सप्ताह**

आर्यसमाज संस्कर ८ चण्डीगढ़ की ओर से वेद सप्ताह का आयोजन की. ए. बी. स्कूच में निमित्त प्रचार में किया गया है। प्रातः प्रतिदिन ६। में ८ बजे तक परिचारों में वेद यज्ञ और सत्सम होने पहुंचे।

मायं ७ से ८ तक आर्यसमाज संसंग हाल में पं० ऋषिराम जी बी. ए. बैदिक विमन्त्री वेद कथा किया कर्ने। ३०-८-६६ को मंगलवार प्रातः श्रावणों उपारकर्म (रक्षा बन्धन) हैदराबाद सत्वाभव बलिदान स्मारक दिवस मनाया जायेगा।

७-९-६६ बुधवार को प्रातः ८ से १०। बजे तक श्री इन्द्रय ज्योतिस्वर आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की अध्यक्षता में मनाया जायेगा।

महर्षि स्वामी दयानन्द ने कवि प्रकाश के आठवें समुल्लास तथा ऋग्वेदादि माध्य मुक्तिका में ऋग्त् की उत्पत्ति तथा प्रत्यय और उसके कर्म के सम्बन्ध में वेदादि सत्त्वार्थों से जो सिद्धांत उपनिहत किये हैं ठीक भागवत्कार की भी वही धारणा है— इसके अतिरिक्त आचार्य शंकर ब्रह्म को ही जगत् का उपादान कारण भी मानता है—परन्तु भागवत में बड़े अकाक्ष्य प्रमाणों से प्रकृति को ही जगत् का उपादान कारण माना गया है, जिनके श्लोकों से हृद्य नीचे लिखते हैं, मंत्रेव भी विदुर जी को कहते हैं—

परमाणुः स विज्ञेयो नृणामेकमग्रभो वतः (१) भागवत-नीतिप्रकरण अ.११  
 विदुर जी ! पृथ्वी आदि कार्य वर्त का जो मूल्य अथ है जिस का और विभाग नहीं हो सकता तथा जो कार्य रूप को प्राप्त नहीं हुआ है और जिसका अन्य परमाणुओं के साथ संयोग भी नहीं हुआ है, उसे परमाणु कहते हैं उन अनेक परमाणुओं के परस्पर मिलने से ही मनुष्य को अमृत वल उनके समुद्रमय रूप एक अंबवती को प्रतीति होती है। इस में परमाणुओं की अस्तित्वा का ठीक प्रतिपादन कर दिया कि परमाणु वह है—जिस का अग्रे भाग न हो सके। अर्थात् कास का वर्णन है—

यामाश्चकारश्चकारे नानां नाम हवी उभेः पशः पञ्चपदा हानि युक्तः कृष्णारच मानद (१०)  
 विदुर जी ! चार चार पहर के समुद्र के दिन और रात होने हैं और पन्द्रह दिन-रात का एक 'पश' होगा है जो युक्त और कृष्ण भेद में दो प्रकार का माना गया है।  
 सयोः समुच्चयो मासः विन्तुणां तद हन्तिम्—द्वौ तौवृषुः पद्यम दक्षिण चोत्तर दिविः (११)  
 इन दोनों पशों को मिना कर एक मास होगा है। जो पितृणो का एक दिन-रात है। दो भाग का एक 'पशु' और छः मास का एक 'अयन' होता है, अयन दक्षिणापत और उत्तरापण भेद से दो प्रकार का होता है। इत्यादि कहे त्रैता द्वापर च कलिखण्डि, चतुर्वेदम् ।  
 दिव्यर्हाप्यामिर्षेः सायनायत निर्कपितम् (१८)

**सृष्टयुक्त, प्रलय-काल तथा जगत् का उपादान करण प्रकृति है इस पर भागवत् पुराण की स्पष्टीकृत (श्लो ०) द्वैतप्रकाश जो आचार्य आर्यसमाज तत्त्वज्ञान)**

विदुर जी ! सत्यम् नता द्वापर और कलि—ने चार युग अपनी संख्या और संख्याओं के सहित देवताओं के बारह सहस्र वर्ष तक रहते हैं ऐसा कहा गया है (१८)  
 कृतादियु युगाकर्मम्—सम्पत्तानि सृष्ट्यायि विद्युत्पानि शतानिच (१९)  
 इन तथादि चारो युगों में क्रमशः चार, तीन, दो और सहस्र दिव्य वर्ष होते हैं और प्रत्येक में जिनमें महत्व वर्ष होते हैं उन से दुगने सौ वर्ष उन की सख्याओं और सख्याओं में होते हैं (१९) इन का क्रम ऐसा है कि नार्युग में दिव्य ४००० वर्षमुग के और सख्या ८००सहस्राय के अर्थात् ४८०० वर्ष हुए। इसी प्रकार त्रेता में ३६०० तथा द्वापर में २४०० और कलियुग में १२०० दिव्य वर्ष होने हैं, मनुष्य का एक वर्ष देवताओं का एक दिन होगा है। इस प्रकार मान-शील मान में कलियुग में ४०३०० वर्ष इत्येते दुगने द्वापर में ८६६००० और त्रिगने त्रेता में १९९६००० और चौगने सत्या में १०८०००० यह कुल ४३२०००० हुए यह एक चतुर्भुगी हुई—अथै निचावलसान आरयो योक् कल्पोऽनुवर्तते । यावद्विभ भववतो मनुन, भूज्जवचतुमुदस (२३) म.-३-आ. १-१-२-२३  
 उस राति का अन्त होने पर इस लोक का कलय आरम्भ होता है, उसका क्रम जब भगवान का दिन रहता है तब तक चलता रहता है, उसे एक कल्प में १८ मनु ही जाते हैं। (२३)  
 इत्थंश्च कालं मनुमुं कुरुते सधिका स्त्रिं क सत्वतम् । मन्वन्तरेषु मनवस्त्वद्भया धृष्टियः सुराः भवन्तिःशेषवृणाम्पु देवाभिचानु मे य सान् (२४)  
 प्रत्येक मनु इच्छातर चतुर्भुगी में कुछ अधिक काल तक अपना अधिकार होता है प्रत्येक मन्वन्तरे मन्त्र-भिन्न मनु वंशी राजा लोग आदि अपना राज्य भीते हैं ऊपर के ४३२००००

को ३१से गुणा करने पर३०९२००००० और इनको १८ से गुणा करने पर ४०९६०००००वर्ष हुए पहिले युग और पृगाय सभियों को जोड़ लिया गया सेष १६ मन्वन्तरो के बीच महायुग के बराबर नववीं होती होती है जिसके ३५९२०००० साल होने हैं उनका ऊपर की राति में जोड़ करने पर ४३२००००००० बार बरख ३० करोड़ वर्ष होने हैं ऐसा ही वर्णन सुषे पिडगत में भी है और सग-भय ऐसा ही कल्प का वर्णन विष्णु पुराण पद्य अत्र अत्र—३ में है। शतं वर्षाणि वर्षति नदन्ति रथम सवैः । तत् एकीकं विजय ब्रह्माण्य विवरातरम् (३३)  
 यादय नैकयो वर्णो तत्र वर्षां करते रहते हैं उन समय ब्रह्माण्य के भीतर का मारा समाज एक समुद्र हो जाता है। मनु कुछ जल मन्त्र ही जाता है फिर— तदा भूमिगन्ध गुण घनमायाय उदयस्यो प्रस्त मगानु पृथिवी प्रल- यत्वाय कल्पे (१४)  
 इसी प्रकार जब प्रलय हो जाता है, तब उस पृथ्वी के विशेष गुण गन्ध को घन नेता है, अपने में लीन कर नेता है, मन्त्र गुण के जब में लीन हो जाने पर पृथ्वी का प्रलय हो जाता है यह जल में घुल-जल कर जब रूप बन जाती है इसी प्रकार— अथा रग सवो नेत्रत्वम लीयतेऽय नीरसा । पायुस्त्वद्ब्रह्म तदा (१५)  
 राजन ! उस के बाद जल के रस को नेत्रत्वम यम नेता है, और उन नीरय होकर नेत्र में मना जाता है। तदनन्तर वायु नेत्र गुण स्य को घन नेता है और तेज स्वर हीन न होकर वायु में लीन हो जाता है। नीयते चान्त्रिने तेजेयो वायोः लयन्ते गुणम् । स वै विद्यति स राजन- स्तनपच नसतो गुणम्॥१९ शब्द यसति भूदादि नैतस्त्वनुलोपिते ।

तैवसत्पेनिद्यायाञ्च देवानां वेदारिको गुणः (१०)  
 अब आते प्रलय और सृष्टि की उत्पत्ति का वर्णन करते हैं—सृष्टियम प्रब्रह्म से अनादि है जैसे— द्विपराश्रयति प्रलने ब्रह्मणः परमेष्ठिनः । तदा प्रकृतयः मान कल्पन्ते प्रलयाय वै(५)  
 भागवत स्कन्ध ६२ अध्या० ४ शीना प्रस ५०९२  
 इस प्रकार रात के बाद दिन और दिनके बाद रात होने होने जब ब्रह्मका अपने मान से भी वर्ण की और मनुष्यों की सृष्टि में पराशं की(८३००००००० आनु समाज हो जाती है तब महाकल्प अहंकार और पत्यत्मात्मा—ये माली प्रकृतियां अपने कारण मूल प्रकृति में लीन हो जाती है । एष प्राकृति को राजन प्रणयो यत् नांयते । आश्व कोणम्नु सभापी विद्यत उत्सर्गिः(६)  
 राजन् दूती का नाम प्रलय है। इस प्रलय में प्रलय का कारण उत्सर्गिण होने पर जब भूता के मिश्रण से बना हुआ ब्रह्माण्ड अपना स्वरूप रूप छोड़ कर कारण रूप में दिव्य हो जाता है, घुल-मिल जाता है शय यामर्शिन सवैः कानिने पटुनाः प्रजाः । सामुद्र वैदिक भीम रम सावर्तको रधिः (८)  
 इस प्रकार काल के उदय में पीरित होकर पीरे-पीरे मारी प्रजा धीला हो जाती है। प्रलय कालीन नावर्तक सुषे आनी प्रवञ्च किरणों में समुद्र, प्रणिगों के दारीर और पृथ्वी का सारा रस सीध हीन कर नीचे चले गे । अब आकाश वायु के गुण स्वर्ण को अपने में मिल नेता है और वायु स्वर्ण हीन होकर आकाश में सान्ध हो जाती है, हम के पीछे नामम अहंकार आकाश के गुण सन्द को घन नेता है और आकाश सन्द हीन होकर नाम अहंकार में लीन हो जाता है, इसी प्रकार नेत्रम, अहंकार इन्द्रियों की और वैचारिक (मन्त्रिक) अहंकार इन्द्रियाभियन्तु देवाना और इन्द्रिय सृष्टियों को अपने में लीन कर नेता है। (१५-१०)  
 महायु प्रलय हृद्द्वार गुणाः सत्पद्य वर्यम् । प्रासतेऽप्याकल राजन गुणान कानेन सोदियन् (१८)(कनः)

**स्वर्गायिस्वा. सोमानन्दजी**

इन का निधन १५ अक्टूबर को १० बजे प्रातः लखी भीमारी के कारण चर्बीगड़ में हुआ जिस पर निम्न संस्थाओं के शोक प्रस्ताव प्राप्त हुए । इन प्रस्तावों में स्वर्गाय का शोक की सुगन्धि के लिए प्रभु से प्रार्थना की गई है ।

आर्यसमाज संस्तर ८ चण्डीगढ़, आर्य साज अलाहाबाद, आर्य समाज विन्डमपुरा जालन्धर, साई दास H/S स्कूल जालन्धर, आर्यसमाज रेलवे रोड कल्याणा, आर्य समाज (का० वि०) सुरदासपुर, आर्य समाज विजवाड़ा, आर्यकीरतन दुर्गापुर, आर्य समाज सोहृदक मयपुरा ।

**आर्य समाज मन्दिर मरवाई (चिन्तपुरा)**

आर्यसमाज मरवाई के सर्वसभों की पं० हरिचन्द्र जी शर्मा शास्त्री सभित करते हैं कि ६-८-११ को आर्य सभों के कारण समाज मंदिर गहड़ की बहू में गिर कर चकनाचूर हो गया है । स्वर्गाय ब० शुकका राम जी के परिश्रम तथा अन्य दानी महापुरुषों के दान से बनाया गया मंदिर ज्वाल हो गया है । अतः इस मन्दिर के पुनरुद्धार के लिए सभों से प्रार्थना की जाती है कि यथाशक्ति

**पठनीय एवं मननीय साहित्य**

वेद प्रबन्ध ५/- मोबासार ७५ पैसे, आनन्दीय के पत्र १/-वेदाङ्गम संस्कार १/५० पैसे, पुरे आठ रोषक महानिवा ७५ पैसे, मीकट ७५ पैसे, लखनवाते जीवम ५० पैसे, कर्म मोक्षा २/२४ पैसे, संसति नियमन कर्म और कीते १५ पैसे, वैदिक व्याकरण भास्कर ५/- व्यायाम बोधक पत्र ११/३० पैसे, साहित्य ५ पाक १/- जयदेव ब्रह्मदा-१

दिल... की हैं । पहली... काके... मल्लपुराकी के पास इस समाज मन्दिर का निर्माण बहू है । दान, मंत्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा निकट कोट... मन्दिर के पते में हैं ।

**अजमेर में श्रद्धि मेला**

आगामी ११-२०-२१ नवम्बर ६६ को श्रद्धि उद्यान चिन्त (आना सागर टट) सरस्वती भवन में बनाया जाएगा । इसी अवसर पर राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा की हीरक जयन्ती भी मनाई जा रही है । इसको सफल बनाने के लिए स्वगत कारखो सभित का पुनर्गठन किया जा चुका है ।

—मंजी श्रद्धिसेवा व हीरक जयन्ती सूचना विभाग आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जालन्धरकी अंतरिम सभाके २३-८-६६का

**शोक प्रस्ताव**

श्री स्वामी सोमानन्द जी सरस्वती के देवल पर शोक प्रस्ताव पास किया गया । श्री स्वामी सोमानन्द जी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रमुख कार्यकर्ताओं में से थे । उन्होंने आजीवन आर्यसमाज की तन, मन, धन से सेवा की । उन्होंने सभा की सेवा महोपदेशक के रूप में वेद प्रचार अधिष्ठाता के रूप में तथा सभा के मन्त्री के रूप में की । आप महात्मा हंसराज जी के पुराने सहयोगियों में से थे । आप ने सभा का कार्य बड़ी सतर्कता से किया । सभा श्री स्वामी जी की बड़ी हताज है । अंतरिम सभा परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि वे स्वामी जी की आत्मा को तदर्थ प्रतिदान करें ।

वेदप्रकाश मन्त्रोच्चा सभा मंजी

**निःसन्तान परिवार ध्यान से पढ़ें**

यदि आप विवाह के बाद अब तक निःसन्तान हैं तो इस रोप के सफल निष्पत्तिक भी पं० श्याम मुन्डर जी स्नातक (महोपदेशक प्रतिनिधि सभा) से मिले जा पत्र व्यवहार करें । श्री स्नातक जी भारत के अनेक परिवारों की सफलता पूर्वंक चिकित्सा कर चुके हैं ।

नोट—आराम न आने पर एक वर्ष का पारिवारिक साल के बाद थापित किया जाएगा ।

पूर्ण कोर्स ३ मास व्यय २००/-

पता—श्याम मुन्डर स्नातक महोपदेशक पंजाब सभा दीवाने हाल देहली

\*\*\*\*\*

**आर्य**

देहली की यात्रा के पोर की मन्त्र...

आर्य बहिनो ने पुत्रप्राप्ति में वर्षों तक कराया । इसी प्रकार सार्वभौमिकी भी ने बस्ती हरकृतसिंह, सुधीलकुमार ने देहली आर्य भाई बहिनो ने कृष्णा नगर में वर्षों तक कराया । जिसमें पूर्ण सफलता मिली । तेजवाम पुरोहित आर्यसमाज सिताराम बाजार देहली ।

**आर्यसमाज माडल टौन सोनीपत**

१४-८-६६ को सत्यंज के पत्रवात डा० राम जी खाल सिक्का के आकस्मिक निधन पर शोकसभा की गई जिस में दिवंगत आत्मा की तदर्थि के लिए तथा शोक सतपन परिकार की श्राद्धि प्रदान करने की प्रभु से प्रार्थना की गई ।

★ रात को एक मोटर सार्दिकल सवार तीव्रगति से भागा जा रहा था रास्ते में एक ट्रक दोनों भाट्टे जला कर खाया था । मोटर सार्दिकल सवार ने सोचा सामने से साय २ दो मोटर सार्दिकल जा रहे हैं मैं इन दोनों के बीच से शीघ्र निकल जाऊंगा जैसे ही उगने जागे निकलने का प्रयास किया तो उसकी टक्कर बड़े ट्रक से हो गई गिरने पर मोटर सार्दिकल बहने लगा ओहो हे मोटर सार्दिकल तो दरम्यान में जुड़े हुए हैं ।

**प्रादेशिक आर्य-युवक-संगठन के अध्येतृ का निर्वाचन**

अर्थ प्रादेशिक प्रतिनिधि युवा में अपने अल्पवय, कम उम्र युवक संगठन का कार्य पुनः सुचारु रूप से चलाने के लिए अन्तर्गत सभा दिनांक २३-८-६६ से सर्व-सम्मति में श्री० वेदोराम जी, सभा एम० एम० को अध्यक्ष मनोनीत किया गया है ।

श्री पंजाब, हरयाणा, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश और जम्मू-काश्मीर के सभी अर्थ सभाओं, स्कूल व कालेजों के अधिकारियों से निवेदन करता हू कि वह पहिने की भाति श्री० वेदोराम जी को सहयोग प्रदान कर युवक शक्ति को सशक्ति करने में भरसक प्रयत्न करें ।

सभा ने यह भी निश्चय किया है कि आगे कुछ महिनों में अन्त प्रदेशों के युवक सभाओं का एक सम्मेलन आयोजित किया जाए । उक्त उपाय के लिए भी अग्री से कार्य आरम्भ होगा ।

—वेद प्रकाश मन्त्रोच्चा मंजी सभा

**आर्यसमाज किकमपुरा**

**जालन्धर का सात्त्विकदान**

प्रतिवर्ष यह समाज आर्यसमाज की ४५/- सहायता के रूप में देती हैं । इस दान से १५ नवीन प्राहक प्रतिवर्ष, तीन-तीन वर्ष वाले बनाए जाते हैं जो सज्जन इस दान से लाभ उठाना चाहते हैं वे २० निसम्बर तक तीन वर्ष M. O. से भेजकर एक वर्ष के लिए आर्यसमाज के प्राहक बन सकते हैं । वे दिवंगत केवल नवीन प्राहको के लिए है ।

—आर्यसमाज

**आर्यसमाज दयालपुरा करनाल**

पुनर्व २१-८-६६ को निम्न प्रकार से दान—  
उपग्राम—डा० गणेश दास  
उपग्राम—सा० माय बन्द  
मन्त्री—भा० अमरनाथ  
उपग्राम—प० रामनेर कुमार  
मोक्षदायक—श्री० तुलकचन्द  
पुस्तकालय—श्री० रामेश्वर  
लेखा निरीक्षण—श्री० पञ्जाबसिंह

अमरनाथ मन्त्रीसभा

★ सन्तान के अर्थ हैं प्राचीन । वैदिक वर्म ही प्राचीन होने के कारण सन्तान है । प्रतीतिव हय सब का सन्तान प्राचीन वर्म वैदिक वर्म ही है ।

मुद्रक व प्रकाशक श्री० वेदप्रकाश मन्त्रोच्चा एम. ए. आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर द्वारा कीर मिश्रा प्रिंट, मिश्रा रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यसमाज कार्यालय महात्मा हंसराज भवन निकट कच्छी बाबाभर बहूर से प्रकाशित मालिक—आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर



दैनिकीक नं० ३०५७

[आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधिसभा पंजाब जालन्धर का साप्ताहिक सुसपत्र]

Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ पैसे

वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६, अंक ३८

३ आश्विन २०२३ रविवार—दयानन्दवास्वद १४२—१८ सितम्बर १९६६

(तार 'प्रादेशिक' जालन्धर)

## वेद सूक्तयः

### अर्यं विश्वानितिष्ठति

हे लोगों ! अह परमात्मा विश्वानि—सारे ससार में, प्रत्येक स्थान और पदार्थ में तिष्ठति— व्यापक हो गया है। सर्व व्यापक है। उसमें रहित कोई स्थान नहीं है। सप से बची।

### श्रु तेन गमेमहि

हम वेद के अनुसार बचने। हमारा जीवन वेद के अनुकूल ही। हमारा पथ वेद पथ तथा हमारे स्वयं वेद में अनुमोदित हो। जो कुछ मुझे उस पथ आकर्षण करने रहे।

### मा श्रु तेन विराधिषि

हम कभी भी वेद के प्रतिहृष्ट न चले। कर्म, भजन, चिन्तन तथा जीवन का आचरण वेद के विरहीन न हो। जो भी मुझे उमें भूला न देवे, उसका विरोध न करे तथा उससे आत्म बन्ध न करे।

### द्वेवदत्तं ब्रह्म गायत

वेद वेद का ज्ञान देव का भगवान का दिया हुआ है। उस परमेश्वर की शक्ति है। सब के लिए उस पिता का विश्व एवं मीठ प्रसाद है। उस वेद का मान करो। वेद का शीत सवीत माने रहा।

### असि होता न ईड्यः

असो ! आप हीना है। इस सारे-ससार में आप का ही महान् पक्ष ही रहा है। आप इस सारे पक्ष के होता ही और न; हमारे लिए ईद्व्य—श्रुति के योग्य हो। आपकी श्रुति हम लोग निष्ठा करें।  
अथ नं वेद ते

## महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज



आप चार मास अफ्रीका के प्रांती की आर्यसमाजों में वेदामृत पिलाकर भारत लौट आए है। आजकल आपकी वेद कथा से पंजाब प्रांत लाभ उठा रहा है।

## ऋषि दर्शन

### शौच बाह्याभ्यन्तरञ्च

शौच-गर्हाई शुद्धता पवित्रता दो प्रकार की है। बाह्यम्-बाहिर की और आत्मनोर अपने अन्दर की। केवल बाहिर की या अन्दर की पवित्रता एकादशी कहलानी है। दोनों ही प्रकार की पवित्रता से पूरी शुद्धता होती है।

### बाह्य जलादिना

जन्म में जो बाह्य की पवित्रता सफाई है, यह जल शक्ति से की जाती है। शरीर की रंग की दूर करने या धोने के लिए पानी की आवश्यकता है। निर्मल जल में बाह्य की रंग दूर हो जाती है। मनादि बाह्य की शुद्धि है।

### रागद्वेषास्त्या-

### द्वित्यागम

दूसरी सफाई अन्दर की है, जहाँ पानी काम नहीं आता। यह राग, द्वेष, असत्य आदि के त्यागने तथा प्रेम सत्य आदि की प्राप्ति करने से होती है। मन की सफाई जल से न होकर मनादि से होती है।

### यस्मिन् देशे विद्वांसः

जिस देश में, जिस राज्य में शासन के काम में विद्वान, धर्मों तथा न्याय के प्यारे लोग होते हैं। राज्य के उत्थन की मनी-माति सम्भवे है। ज्ञान के प्रकाश में जिनका मार्ग प्रशस्त होता है। कफती और करती समाप्त है।

मा द्यम् भूमि का

महाभारत में बर्णन आता है कि भीष्म पितामह जब शर ध्वंसा पर पड़े थे और मृत्यु उनके निकट खड़ी उन्हे ले जाने को तैयार थी तब उस बाण ब्रह्मचारी ने मृत्यु को कहा कि अभी मृत्यु दक्षिणायन में है जब उत्तरायण में होगा तभी मैं प्राणो को छोड़ूंगा। इस प्रकार उन्होंने उत्तरायण में ही अपने शरीर का त्याग किया। सामान्य रूप से भारतीय जन समाज को यह धारणा है कि दक्षिणायन में मृत्यु होना अच्छा नहीं तथा उत्तरायण में देह त्याग करना उत्तम होता है। उत्तरायण तथा दक्षिणायन का सम्बन्ध इस प्रकारके है बाह्य भौतिक जगत के साथ नहीं है। परन्तु यह एक आध्यात्मिक रहस्य है। मत्सर में मुख्य रूप से मानव मनुष्या के दो प्रमुख भाग हैं। एक वे हैं। जिनकी बृत्तिया अर्थात् मार्ग की ओर जाती हैं। दूसरे मत्सर को ही सब कुछ जान इसी वे में जीवन विनाशा अपना कर्तव्य समझते हैं। प्रथम प्रकार के लोगों को ही उपनिषद् के शब्दों में श्रेय मार्गी अथवा निष्पत्ति मार्गी कह सकते हैं। क्योंकि वे सासाहिक भोगों को जीवन का लक्ष्य न जानकर परमानन्द प्राप्त को ही जीवन का ध्येय समझते हैं। इस मार्ग में आरम्भ में कुछ एक कठिनाइया आनी हैं। परन्तु ६५ का अन्त आनन्द-शायक है। दूसरी तरह के मनुष्यों को मार्गी अथवा प्रवृत्ति मार्गी कहा गया है। इनकी दृष्टि दूर तक न जानकर इस जीवन तक ही सीमित होती है। अतः वे इन जीवन के मुख के लिए ही चल शील रहते हैं। इस मार्ग का आरम्भ तो बड़ा लुभावना तथा मोहक है, किन्तु इसका अन्त अति भयानक एक कष्ट-प्रद है। वेद में ६५ श्लोको को त्रमश देखावतः तथा विनृवान नाम से प्रकाश है। पितरों का सम्बन्ध दक्षिण दिशा में है। क्योंकि वे योग इती मत्सरा की नासाहिक विभूतियों के समूह द्वारा ऐश्वर्यवान बनाने में ही जीवन का मार मानते हैं। अतः वे दक्षिण दिशा के साथ सम्बन्धित है। परन्तु देव योग उत्तर दिशा के साथ जुड़े हुए हैं। क्योंकि वे योगपान करते हैं। उत्तर दिशा है ही योगप्रधान अर्थात् योग की दिशा है। वे महान् योग परमेश्वर का पान करते हैं। मत्सरों की वैदिक पर्याय से अब बाणका नाम करण

**वैदिक कथा -**

**उत्तरायण तथा दक्षिणायन**

श्री ५० - सूर्योदय की क्षीयते विदात् तिरामणः प्रायश्चित्तः-ध्यानम् ब्राह्म महाविद्यालय जालन्धर

संस्कार किया जाता है तब भाता बच्चे का शिर उत्तर दिशा में तथा पाद दक्षिण दिशा में कर के पति की देती है। उस का भी मुख्य अभिप्राय यह ही है कि बच्चे का मस्तिष्क सदा उत्तर अर्थात् दो चेतन तत्वों में से जो उच्च माला है उसी की ओर रहे। वह मस्तिष्क से परमेश्वर का चिन्तन करता रहे। इस के साथ ही जीवन की परमदिव्यो पर उस के पाद अपनी सोपी हुई विचार धारा के अनुसार बंद कर समुद्रि का कारण बने। ये जीवनके विचार तथा कर्मों को दो दिशाओं

में बाँट जगत् की श्रेष्ठिक प्रिधान नहीं हैं। जो मनुष्य भोक्त प्रधान होता है, वह अन्यो को श्रेष्ठिक प्रिधान अर्थात् ऊंचा होता है, लेकिन जो सांसारिक ऐश्वर्य तथा पदार्थों के सङ्ग्रह में ही लगा रहता है। वह समुद्र होता है। ये दोनों समुदाय दो विभिन्न अध्यात्म मार्गों के मुसाफिर होते हैं। पितर लोग अपने जीवन श्रेयों में आने वाले विगृह्याधी" अर्थात् काम को पशोच मोहादि को स्पूल आत्मबन्धो से दबाते रहते हैं। परन्तु वे पुनः २ उनके मार्ग में

आते हैं और श्रेयो २ उनमें अपने चक्कर में घाल देते हैं। देव मार्गों के मार्ग में भी उक्त दोष है। परन्तु वे स्वयं अर्थात् अपने मस्तिष्क आन एव वल से इन्हें हटा कर श्रेयो के किं फिरे ये उनके निकट नहीं जा पाते हैं। क्योंकि वे सोम अर्थात् महान् कार्मिदायक परमेश्वर के स्वयं का प्रतिदिन पान करते हैं। इस के कारण उनका जीवन भी सोम प्रधान होता है, जबकि पितर लोगों का जीवन इन्द्र प्रधान होता है। इस प्रकार जो अपने अन्तःकरण को योग से पूर्ण करते हुए मरते हैं वे उत्तरायण में मरते हैं, लेकिन जो ऐश्वर्य की लालसा की विचार-यात्रा लिये मरते हैं, वे मत्सो दक्षिणायन में मरते हैं। ये हैं आत्मिक जीवन के दक्षिणायन तथा उत्तरायण। यदि ऐसा न माने तो बाह्य उत्तरायण से भी तो असम्बन्ध पशु पक्षी मरते हैं, क्या वे मत्सो भेद्य होते हैं ?

इन वैदिक रहस्यों को हम समझें तथा मानन कर अपने अध्यात्म यात्रायात्रा को उत्तर में लगा और योग से परिपूर्ण कर उत्तरायण की श्रेयो के अधिकार को प्राप्त कर मानव जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करें।



**मुल्क मेरे इस तरह मिटना कहां की रीत है ?**

सुन्दरलाल बोहरा, जोधपुर (राजस्थान)

मुन रहा हूँ मुल्क मेरा हो चुका आजवा है, मगर मेरे मुल्क से क्यों राम अब भी बाध है, आज मेरे हिय में हर और भगवद छा रही, अब मेरे हिय में हर मुझ सप्या छा रही, मुल्क मेरे इस तरह मिटना कहा की रीत है ?

आज मेरे मुल्क में नित सुखी अमराइया, मेघ मेरे मुल्क में क्यों रह गई परछाइया, बिक रही है आज लाखों शीलतत्रकर रणियाया मिसकती स्थान तकती आज लाखों रणियायों चपन मेरे इस तरह मिटना कहा की रीत है ?

आज खादी बेधरम कोरे खजाने भर रही, खानदानी मुल्क के सब खाने भर रही, मुल्क की सब शायरी क्यों आज सोकर पर रही, इन्म में सारी खुदाई आज गोना कर रही, बतन मेरे इस तरह उठना कहा की रीत है ?

भटकती मदिरालयो में आज क्यों मदर्नीगो, बेधरम है नाचघर में आज क्यों मदर्नीगो, मदरसो में आज केवल बाग बाकी रह गई, सो गया भोला मगर क्यों भोग बाकी रह गई, मुल्क मेरे इस तरह बहना कहा की रीत है ?

आज मेरा मुल्क क्यों हर मुल्क का मोहल्ला है, देश का बन्धा जवा क्यों अब को मोहल्ला है, हर पक्षी मेरे बतन में बड़ रहे रमशान हैं, हर मत्सो क्यों हिय में अब लड़ रहे इन्शान हैं, अबन मेरे इस तरह विरना कहा की रीत है ?

औलियाओं की जमी ये मुल्क हिन्दोस्तान है, मगर मेरे मुल्क में पशो बड़ रहा वीरान है, अब नहीं कलता मेरे कण्ठ में अटका गरल, धर्मिया देवैन मेरी हो चुका पुरा खल-दोस्त मेरे सिद्धिया भरना कहा की रीत है ?

**महात्मा आनन्द स्वामी जी ३० सितम्बर को मंडी (हिमाचल) पधारेंगे**

मण्डी (हि०प्र०) ९ सितम्बर— आर्यजगत के महान नेता व प्रसिद्ध संन्यासी महात्मा आनन्द स्वामी जी सरस्वती ३० सितम्बर को मण्डी पहुंच रहे हैं। वे २५ ९ अक्टूबर तक मण्डी मगर में वेद कथा करेंगे। इस समय स्थानीय आर्यसमाज का वार्षिक उत्सव मनाया जा रहा है। ६ अक्टूबर को मगर कीर्तन होगा। उत्सव पर महात्मा जी की अतिरिक्त आर्यशासैविक प्रतिनिधि सभा के महोपदेशक भवनी की पधार रहे हैं। संस्यवदस्य भी प्रकाशवीर शास्त्री की भी नियमित किया गया है।

★ 'हिन्दू' का अर्थ लुप्त (कोष) में काफिर किया है। मुसलमान देश से इस देश के रहने वालों को, मूर्ति पूजक होने के कारण, हिन्दू (काफिर) कहते थे। बाद में मुसलमानी राज्य में सब आर्यों ने पराधीन होकर 'हिन्दू' नाम स्वीकार-ना कर लिया।

समाचार-कोष

# आर्यजगत

वर्ष १९६६ रविवार - ०२३, १८ सितम्बर १९६६ अंक ३८

## सभा का नया प्रकाशन

आर्य प्रादेशिक सभा पंजाब जालन्धर वेद प्रचार के अपने महान् मिशन में दोनों प्रकार के साधनों का सहयोग कर रही है। वेदों से स्थान स्थान पर वेद का सन्देश दिया जाता है तथा प्रकाशन विभाग के द्वारा सत्साहित्य प्रकाशित कर के जनता के हाथों में समय-समय पर पहुँचाया जाता है।

ब्रह्मा ने स्वर्गाय महात्मा हस्तराज जी के पवित्र नाम पर ही अपना महात्मा हंटराज साहित्य विभाग स्थापित किया हुआ है। इस में समय २ पर अगरेजों व हिन्दी में सुन्दर पुस्तकें छपती रहती हैं। अब न मिलने वाली पुस्तकों का भी प्रकाशन होता है। इन पुस्तकों में पिछले वर्ष सभा की ओर से प्रिन्सिपल श्रीराम शर्मा जी की लिखी पुरानी अगरेजी पुस्तक महात्मा हस्तराज नाम की भी सज्जित रूप में प्रकाशित की गई ताकि आज कल के युवक युवतियों एव इतर अगरेजों के प्रेमो लोगों के हाथों में ऐसा साहित्य दिया जा सके। इसी प्रकार प्रिन्सिपल पूर्वमानु जी वायस-बाखर पञ्जाब विश्वविद्यालय चणोद लिखित अगरेजी किताब 'स्वामी दयानन्द' नाम की भी छापी गई। लोगों ने बड़ी पसन्द की। डा० दीवानचन्द जी कामपुर ने भी सभा को उदारता से पुस्तक लिख दी। बड़ी सुन्दर पुस्तकें प्रकाशित की गई तथा वर्तमान काल में छपी जा रही हैं। रात दिनों पूज्य महा मा हंटराज जी की एक विशेष किताब 'सन्ध्या पर व्याख्यान' नामक सभा के मान्य मन्त्री श्री प्रो. वेदभक्त जी : एम.ए. ने बड़ा परिष्कार करके सभा के इसी साहित्य विभाग को ओर से प्रकाशित की। यह पुस्तक तो हम चाहते हैं कि कोई भी परिवार, आर्य-समाज, सन्ध्या तथा व्यक्तित्व ऐसा न हो, जहाँ भक्तिरस से भरी हुई, महात्मा हस्तराज जी सरसे प्रभुभक्त बेवसी की लिखी सन्ध्या पर व्याख्यान किताब यह रस भरी पुस्तक न हो। बड़ी भावना से लिखी गई है तथा

प्रकाशित करने में भी उची मन की आत्माके परिष्कार दिया गया है। हर प्रकार से सुन्दर व आकर्षक है। सभा ने यह पुस्तक बड़ा प्रयत्न करके किसी पुस्तकालय से दू डी तथा प्रकाशित की है। हमारे पास किन्तु स्कूल, कालेज व समाज हैं। उनके प्रयत्नक व कार्याकर्ता महात्माओं का कर्तव्य है कि अपने बच्चों, बालक्यों के हाथों में पुस्तक को पहुँचाकर भक्तिभाव भर देंगे। बहुत ही सुन्दर व रचनीकी किताब है यह। इसी प्रकार अभी-अभी रात दिनों सभा मन्त्री जी के पुस्तकालय से एक और पुज्य महात्मा हस्तराज जी लिखित छोटी-सी पुस्तिका सभा के द्वारा ही 'दश प्रस्नी' नामक प्रकाशित की गई है। इसमें स्वर्गीय, रायबहादुर भूमराज जी एम.ए. ने, महर्षि दयानन्द सरस्वती के नाम पर अपने पूर्व पाद प्रदनों के आधार पर जो ऐतरेय-उत्तर छापे थे—जिनमें दश प्रस्नी के नाम से आज से तृतीय वर्ष पूर्व निष्कात जनता में सटवाई थी—उन अज्ञात प्रदनों में जनता में कही श्रम न पैदा हो जाए—इस विचार ने स्वर्गीय महात्मा हस्तराज जी ने उस दश प्रस्नी को सम्पादित करते हुए पुस्तिका लिखकर आर्यसमाज का सामाजिक रूप जन-मण्डल में पेश किया था। इसका नाम है 'दशप्रस्नी की समीक्षा'। यह लोकोपेक्षणी नई पुस्तिका भी सभा ने प्रकाशित कर दी है। बड़ी उपयोगी है। आर्यसमाज में तथा मत्स्याए इसी की अख्य हो मानवाए। इस प्रकार के सत्साहित्य से लोगों को तथा वर्तमान पीढ़ी को उन्नत विचार मिलेंगे हम सभा के इस साहित्य के प्रचार की सबसे बल-पूर्वक प्रार्थना करते हैं। —सम्पादक

★ आर्यों का महान् किया। सस्कृत भाषा तथा वेदों का उद्धार किया, वैदिक धर्म प्रचार किया, और नौ, बाह्यए, अन्नाय, विधायाओं की रखा की। आर्यों (हिन्दुओं) को सुधमल ईसाई होने से बचाया।

## हिन्दी की यह उपेक्षा असह्य

हिन्दी को भारत को प्रमुख राष्ट्रभाषा होने का गौरव प्रदान है और इसके प्रचार प्रसार के लिए केंद्रीय सरकार अनेक पण उठा रही है या उठाने का दावा करता है परन्तु स्वयं सरकार के घोषित आर्थिक कार्यों का रबैया और आचरण इन दावों को केवल झूठना ही नहीं देता बल्कि सम्भवतः हिन्दी के विकास में मुख्य बाधा भी है। इसी रबैयें का एक उदाहरण हिन्दी के प्रति केंद्रीय सरकार के एव सूचना विभाग की नीति है। केंद्रीय सरकार के जालन्धर स्थित पत्र सूचना कार्यालय में हाल ही में हिन्दी विभाग खोला गया, स्थानीय हिन्दी समाचारपत्रों को सर्विस देने के लिए। लेकिन वास्तव में यह हिन्दी समाचार पत्रों से एक मजाक था। इन हिन्दी पत्रों के लिए, जो पंजाब के प्रमुख दैनिकों में अग्रणी हैं और जिनकी सम्पूर्ण प्रकाशन संस्था राज्य के अन्य भाषायी पत्रों से किसी तरह भी कम नहीं, खोले गए इस विभाग में केवल एक व्यक्ति रखा गया। जबकि अन्य भाषाओं के विभागों में काफी अधिक कर्मचारी हैं। एक व्यक्ति किन्ती कुशलता में काम चला सकता है, यह अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है। इस नीतिको और भारत सरकार के मुख्य सूचना अधिकारी श्रीभारद्वाज का, जो रात दिवस जालन्धर पत्रारे। ध्यान कर दिखाया गया तो उन्होंने निश्चित की गुगुराले का आश्वासन या पुत्राव देने की बजाय यह कहा कि इस विभाग को कार्य धमता बढ़ाने की कोई आवश्यकता नहीं और न ही इस दिशा में कोई पण उठाना जा सकता है। क्यों ? उनका उत्तर था कि भारत सरकार व्यय से कमी करण, बचत करना चाहती है। अपने नीचे पर यह धौलज ठोक कही जा सकती है। बचन जहा तक की जा सके, अवश्य की जानी चाहिए। लेकिन इसकी कीमत हिन्दी से क्यों कमूल की जाए ? क्या इसलिये

कि वह राष्ट्रभाषा है ? यदि बचत करनी है तो उसका सीधा उपाय अप्रत्यक्ष रोकना है, हिन्दी का घना घोटना नहीं। जैसा कि श्री भागद्वाज के नीतिम में माना गया, पत्र सूचना कार्यालय द्वारा समाचार पत्रों को भेजी जाने वाली बहुभासी मामलों अनावश्यक, निःप्रयोजन और अनामयिक बन्दक रही होनी है। उदाहरणार्थ मसद की कार्रवाई सम्बन्धी समाचार जो जनता एक दिन बाद भेजे जाने हैं जबकि वे पहले ही पत्रों में प्रकाशित हो चुके होते हैं। क्यों नहीं इस सर्विस को गुगुराले जाता और पुराने मन्नाचण भेजना बन्द करते समय, अक्षिण और पत्र का अप्रत्यक्ष रोकना जाता। यदि यह पण एसे ही अन्य अप्रत्यक्ष बन्द हो जाए तो सरकार को हिन्दी विभाग के प्रचार के लिए पत्र की उपलब्धता में कोई कठिनाई नहीं होगी परन्तु विधान का सामना करने और अपनी कमजोरी को दूर करने की बजाय आचरण कार्यालय में हिन्दी विभाग में अतिरिक्त देना कि 'बचत' के लिए उसे विकल्प ही बन्द कर दिवा जायगा, सर्वथा औचित्यपूर्ण नहीं बल्कि हिन्दी पत्रों और हिन्दी भाषा के प्रति अन्यायपूर्ण है। यह एक प्रकार की भूनीती है हिन्दी पत्रों के लिए और वे इसे स्वीकार करने में जग भी मकोच न करने हुए सूचना कार्यालय द्वारा प्रेषित नामों धारणा बन्द कर देंगे। ★★

आर्य समाज गौर्दिया [महाराष्ट्र] शुद्धिव विवाह सरकार

आर्यसमाज गौर्दिया के नवम्बर-प्राय में अगस्तपुर (एम.पी.) भवा-मिनी, कुलीन ईसाई परिवार की कुमारी कुसुम कुमारा ने स्वेच्छया में ईसाई धर्म त्याग कर हिन्दू धर्म स्वीकार करके, हैदराबाद (सिद्दिक) के निवासी उमरकात उदगिर के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। शुद्धिव विवाह सरकार में प० काशीनाथ जी नास्नी एम. ए. ने सराईनी भाग लिया। इस विवाह में नगर के मन्त्रालय अधिकारी से प्यार कर समाज के अधिकारी वगैरे का उन्मात्त बनन किया। पति पत्नी मुमुक्षुजि नया बरबक है और भ्राजा जिनमें से सरकारी नौकरी में है। काशीनाथ मनी समाज

माननीय मुख्य मन्त्री जी,

आंध्र प्रदेश सरकार के नाम

भारत के अस्थाभारिक विभाजन के द्वारा जब पाकिस्तान का अस्तित्व निर्मास्य था तो इसी के साथ-साथ हिन्दुस्तान का भी दृष्टिकोण तो भी स्थापना करने लगा, जिसका कि प्रचार स्वातंत्रता प्राप्ति से पूर्व मुस्लिम-नीति किया करती थी। इत्यादी राजब स्थापना का प्रयास भयूर बेग द्वारा किया जाने लगा। जिन मुसलमानों ने भीतिभला ने भारत ने ही अपना आवास निर्वाचित किया था, इन्हें भारतीय सच सरकार के बिना प्रकृति और उभारने का भी पूरा-पूरा प्रयास रहा ने हीना रहा और भारत के अन्य भाग में मुस्लिम नीति के अस्तित्व को शेष रख कर इसके द्वारा विरोधी प्रचार का कार्य भी किया जाता रहा है। नयापि भारत के विभिन्न भागों में पाकिस्तानी मनोवृत्ति के मुसलमानों ने कुछ समय के भीतर के उपरान्त पुनः उभरने और अपनी प्रवृत्तियों को अस्वाभाविक रूप देने का प्रयास प्रारम्भ किया और अपने स्वार्थों को विवेक रूप से विस्तारों करने कथित हुए। दायरस भारत दुष्ट के विवेक अविश्वस रह। मद्रास, केरल और हैदराबाद अब पाकिस्तान समर्थक शेष समर्थक जाने लगे हैं।

पुनिष्ठ पृथक्चन से पूर्व हैदराबाद के रजाकार मन्त्री ने कहा था कि 'हैदराबाद अपने स्वयं पर स्वयं एक पाकिस्तान है।' ध्यान कार्यवाही के पश्चात् भी स्वयंसाधारण मुसलमानों की मनोवृत्ति में कोई परिवर्तन नहीं आया अपितु अब तो व्यापक रूप से इस का प्रदर्शन हो रहा है। जिन का अनुमान एक पर में जो आर्य प्रजातंत्र सभा के प्रधान प गन्ध जी के नाम ८ सितम्बर १९६५ को कार्यपालन को प्राप्त हुआ है, इस पर के लेखक का नाम है संदर प्रसूफ अली। पर यह निवेदो ने लिखा हुआ है। पर के लेखक का अन्वय है -

हैदराबाद हमारे मुसलमानों का पाकिस्तान है, इस पर हमारा उभयगुण अविचार है। यह हिन्दुओं का कुछ नहीं अन्वय। भन्नी प्रकाश वाद न्नी। विरोधियों।"

पुनिष्ठ कार्यवाही के नक़्कान वाद ही पाकिस्तानी मनोवृत्ति न व्यक्तियों ने अंतर्गौर में एक भाग्य अन्वयता नाम न जया का अन्वयण कर इससे

हैदराबाद नगर में सम्प्रदायिकता के उभरते चिन्ह !

स्मरण-पत्र

जो कि

माननीय मुख्य मन्त्री जी,

आर्य प्रदेश की सेवा में समर्पित किया गया

विचार किया और इसका वच कर शला एव इसी के रक्त से "हरमाह" को विचार पर अन्वित करते हुए अपनी पाकिस्तानी प्रियता का परिचय प्रस्तुत करते हुए लिखा कि "पाकिस्तान विद्यावाद"।

नीतिक प्रगामन और इसके परचात् के स्थापित जनतन्त्र प्रदासन ने विवेक यह मूल हुई थी कि "इतिहास-उत्पन्न-मुसलमानी" जैसी सांप्रदायिक और राष्ट्र विरोधी भाषणाओं की प्रचारक विनास संस्था को कानून विरोधी घोषित कर इस पर प्रतिबन्ध नहीं लगाया या। जबकि इसी कट्टर साधवायवादी पक्षगत समर्थक संस्था ने "आजाद हैदराबाद" का आन्दोलन प्रारम्भ कर रियासत के रहने वाले हिन्दुओं और अन्य पर मुस्लिमों पर अत्याचार किये थे। शला ही नहीं बल्कि भारतीय राष्ट्र सच के बिना एक विरोधी आन्दोलन बसा कर रखा था। उस मूल का अन्वयक परिणाम यह हुआ कि पुनः जब भवचित ने नगरपालिकाएँ एव विधान मन्त्रा आदि के निर्वाचन में अपने प्रयासों खदे कर सकिय भाग लेना प्रारम्भ कर दिया सब सुपूर्व आर्य प्रदेश शेष का वातावरण निष्कृन्ण कर दिया गया। और दिन प्रति दिन निश्चिन्त विगडती ही गयी। भवचित एतेहाद-उत्पन्न-मुसलमानी की बर्तमान प्रक्रिया भी वातावरण को उत्तेजित और विक्षुब्ध करने में लगी हुई है। पाकिस्तानियों की स्वतन्त्रता और भारतीयों आत्मिक सामाजिक प्राप्त उपकारों का जैसा सुचर्चण इस के द्वारा हुआ और हो रहा है, वह एक नमकी कहानी है, जो जन्ता और राज्य ने छुपी हुई नहीं है। मेवाड-उत्पन्न-नीति के परिचय अन्वयों और नसबदों में शेष बाकी प्रथमा पभाओं में कथर्येन और इसकी सरकार पर भई और ओठे इस में आर्यण किंचि जाते है। यहा तक कि महात्मा गांधी और प. अन्वयण वाल महत्त्व जैसी विषय-वन्व विभूतियों की चिन्तनों इस में आर्यणवन्तों की जाती है जो असात्मिक होने के साथ सभा के उद्देश्य में विपरीत होते है। नगरपालिका एव

विधान मन्त्रा के निर्वाचन में मजबूती प्रत्याधी के समर्थन में जो स्थान स्थान पर आएए रिये गये उनसे यह तथ्य स्पष्ट हो गया कि मजबूतसिद्धिात् सिद्धात के दृष्टिकोण को ही रियासती मुसलमानों के मुक्ति का उपाय मात्र अनुभव करती है। और यह कट्टर सांप्रदायिकता के प्रचार की चिन्तनों मनोवृत्ति में स्थिर नहीं होना चाहती। कार्य स ने भी अपने टिकट पर जिन मुसलमानों को राष्ट्रवादी मुसलमान अनुभव कर अवसर प्रदान किया उनकी भी मजबूतियों मनोवृत्ति अधिक सम्यक्त रूप लुपी न रहे सकी। जबकि कार्य स को उच्च ग्रेडो के निमित्त, सच्य और राष्ट्रवादी मुसलमान उपलब्ध हो सकने थे। निश्चित प्रकार के मुसलमानों के षोटी की प्राप्ति निमित्त कुछ ऐसे अहुरस्वी पण उठाये जा कर उन मुसलमानों ने मोटा किया गया जो किसी भी प्रकार से न तो विचारण के योग्य थे और न इसके पात्र हों।

श्री बिजयबाटा गोपालचौड़ी जी ने जब उर्दू से अपनी रचि प्रकट की और मुसलमन स्वयंसे हैदराबाद कराची में भी संस्था को स्थापना हुई तो इसके द्वारा पाकिस्तानी मनोवृत्ति के लोगों ने इस अवसर को देव कृपा अनुभव कर इससे पूर्णतः लाभ उठाना। इस स्वयंसे में बम्बई के मुद्रगिष्ठ साप्ताहिक 'निवटन' ने जब प्रकाश शला तो लोगों को पता चला कि हमारे शो कार्य तो कर्णोवार दिन भवचार मार्ग पर देव को ले जा रहे हैं ? विवेक आर्यण और शैव की बात तो यह है कि आज भी हमारे कार्य तो वेवा ऐसी विधान मनोवृत्ति वाले लोगों की पुष्टि और समर्थन में गये हुए है, जिसका एक दिन परिणाम राष्ट्र को अस्वतन्त्र और गति को अज्ञात पहाचने के अन्वित और कुछ नहीं होगा।

देश की अन्वयण और राष्ट्रीय एकता को जान-बूझ कर मुसलमान पहाचने के उद्देश्य में कथंचन ने जो प्रयास किये गये उन में उस अज्ञानि-जनक मानचित्र (नक्शा) का प्रकाशन भी सम्मिलित है जो कि स्थानिक

व्यापारी कम्पनी आराम टी० जियो द्वारा अस्वाचित कर विचारण करवाया गया था और जिस में कश्मीर को भी इत्यादी देशों में दर्शाया गया।

अज्ञातता के उपरान्त की पत्ताओं में समस्त मुसलमानों को व्यापक रूप से स्थान प्राप्त होता जा रहा है। और अब स्थिति यह है कि जन्ता का दैनिक जीवन अत्यन्त अज्ञात स्थिति में व्यतीत हो रहा है। ऐसा लगता है कि जन्त, का कानून लागू है। पिछली पक्षित घटनाओं पर दृष्टिगत करने से पाकिस्तानी मनोवृत्ति विभिन्न रूपों में स्थित साकार होती सिद्धाई देते हैं। एवम् कार्यवाही के कुछ कार वाद ही एक स्थानिक जूनों की कम्पनी द्वारा जूनों के लाल केचन अन्वयण और भाषणाओं को उद्ये पहाचने के उद्देश्य में पक्षि राष्ट्रीय पक्षज के नमूने पर तिपे बनावे गये। प्राचीन पशुज मन्त्रियों की विवेक हड़पने के प्रयास भी होने लगे। अन्वयण और कश्मीर के बीच बसशोचन के कृष्ण मन्दिर के राजकीय शेष के विस्तृत भू-भाग पर अनुचित कब्जा कर मकान निर्मास किये गये एक अभी तक यह अन्वित कब्जा पला जा रहा है। पुराने मसक-पेठ के हनुमान मन्दिर से जूतियों को उखा ले जाना और इस मय के दृष्टिके बड़ घटना भी बसा आती है जबकि श्री बी. रामकृष्णराव जी के मृत्यु मन्त्रिक काल में सिटी कनिज के सम्पत्त छाओं के आन्दोलन का उन्मूल करने के बहुतेन अज्ञानि उत्पन्न करने का भी सुचर्चण किया गया था। अभी इस सर्व होते है जब कि निशुल मुक्त की बृद्धि के सम्बन्ध में विचारणों द्वारा विरोधी प्रदर्शन (Agitation) को राजकीय प्रत्यल हुआ और इसके प्रति उत्तर में निर्वाचियों के आन्दोलन के पीछे जो यह के प्रमुख वाद्यार आविश्कारण बारि में रिच-नदौरे की-कोष्ठ-डुकर्णों में की गयी उनसे जितनी भी डुकर्णों को सज्ज बनाया गया वह सब हिन्दु व्यापारियों की ही थी। तर्पण प्रतीप विधान सभा के सम्माननीय सदस्य श्री रामगोपाल रेड्डी जी ने विधान सभा में इस विषय को प्रस्तुत कर निश्चित की और ध्यान आकर्षित भी करवाया था। इसके पश्चात् में विभिन्न विस्तारों साक्षुपर, रवीरपुर, बंवलपुरा इत्यादि में भी कुछ अज्ञानि तक मुस्लिम मुसलमानों का मय चलाता रहा।

(अन्वयः)

# नौजवानों की सुध लो नं. २

## मास्टर श्री हरिचन्द्रजी पुत संतो आर्यसमाज जालखण(हिंसार)

मैंने मत लेते थे यह बननाया का प्रयत्न किया था कि आजकल के युवक किचर जा रहे हैं और उनको प्रेरणा की भी कि माता-पिता अपनी सतान को आर्य ग्रन्थ अर्थात् वेदोक्त पुस्तकें पढ़ायें और पढ़ने को हैं और सर्वप्रथम आर्य समाज जो सकल संसार को एक-मात्र हिंसेही जमात है और प्रत्येक का भसा चाहते वाली सस्था है इसके बनाये हुए दस नियमों पर चल कर अपना जीवन सकल बनाये, (आर्यसमाज क्या है ईश्वर का १५ पैरे में हमने मगा कर अध्ययन करें जो हस्तारण आर्य ट्रस्ट जालखण में प्रकाशित किया है जहा इसके पढ़ने से आपके सभी भ्रम छिन्न-निम्न होगे बहा पढ़ने में थो आनन्द आयेगा। वैदिक आर्य ग्रन्थों का योग होने से ही आप आर्य समाज का स्वरूप समझ पायेंगे तभी आप का आर्यसमाज पर विश्वास बढ़ेगा जब विश्वास हो गया फिर स्वयं ही आप इसे स्वीकार करने पर विचल होयेंगे भ्रम बंद आदि भाष्य भूमिका को सत्यसंपादनका का एक बार नही, दो बार नही बल्कि तीन बार अध्ययन करें और आर्यसमाज रूपी वैदिक धर्म को समझने का प्रयत्न करें।

श्रुति दयानन्द जी महाराज किसी एक साधारण मनु के प्रचारक न थे वे तो सत्सक मानव धर्म के उद्घोषक थे, और समाज को मर्यादा पर आने के लिए यत्नशील थे और वे किसी सीमा तक इतने मजबूत भी हुए परन्तु योंक है उनकी मृत्यु के पश्चात् काया अर्थात् उन्होंने हमें सीखा था वह न कर पाए और दूसरे ही भ्रमबोध में पड़कर व्यर्थ समय बीते रहे, स्वयं को और अपनी सन्तान को इस योग्य न बना सके जो एक आर्य विद्वान की होनी चाहिए। आज प्रायः माता-पिता और समाज के अन्य लोग कह रहे हैं कि बच्चों में अचार हीनता बढ़ रही है मां-बाप और अध्यापकों तक को कोई प्रतिष्ठा नहीं करते, नव-युवक धान में सज-धर से रहना पसन्द करते हैं। क्या घर, क्या बाजार, क्या किसी गली कूचे में और कोई दुकान ही रही हो बहा के देखिये बगीर के गन्दे गाने और गीत हमारे महत्त्वक में अपना प्रभाव होने बिना रहते हो बल्कि परस्पर की बातें सुनना और सुनाना भी शोर में बतिय टुकर है।

जैसे आप प्रतिदिन देखते हैं कि कितने नवयुवक बच्चे रेडियो ट्राइबल आदि गाने में प्रत्येक साटा-साटा दिन हर समय गाना सुनने में व्यस्त हैं और अपने कानों को ऐसे बेहूदा गीतों का तोषी बना लिया है कि बस करने का नाम नहीं है। और स्थान-स्थान पर रिक्तियों के गान कोटो और लक्ष्मीरे आप को सटकती दिखाई देती होगी जो कि हमारे बच्चों के आचार पर कितना बुरा प्रभाव डालती हैं और उनकी कामाग्नि पर कितना नेल का काम करती है यह आप ही जान सकते हैं।

यदि किसी पुस्तक के पढ़ने से बच्चों के आचार विमटे तो वह पुस्तक फाड़ देने योग्य है यदि पढ़ाई रिक्तियों को देखकर माता-बहन बंटी वा और औरत के मरुत्य भाव पैदा न हो तो ऐसे गंदे विचारों का भस्म करना ही लाजमी है यह सभी कुछ नवजवानों को ले इतने का सामान है अल. जहा एकदो डम से बचो। ऐसे अनैतन चरित्रों पर ब पुस्तकों पर भारत सरकार को प्रतिबन्ध लगाया जायें ताकि अभियंय में होने वाली सतान तो अपना सुधार कर सके यदि यह कुकर्म न रोके गये और हमारी परम्परा में इस और कोई ध्यान न दिया तो देश की अबनिर्ज ही होती बनी जायेगी।

आजकल बच्चे से लेकर बड़े तक सिधे स-बीटी पीना एक फंशन बन गया है रोटी - पानी चाहे न मिले परन्तु सिधे ट - टुकका खर ही, कितनों के कंठ जल जाते हैं, महल्लो मन अन्न भस्म हो जाता है, नेल के कारखाने नष्ट हो जाते हैं और कपासादि के कारखानों में कितनी हांति होती है परन्तु यह बहाइत नुर्म नौबतान इते पीना अपना गौरव समझते हैं। आतः



### निःसन्तान परिवार ध्यान से पढ़ें

यदि आप विवाह के बाद अब तक निःसन्तान है तो इस रोग के सफल चिकित्सक श्री प० श्याम सुन्दर जी स्नातक (महोदयदेशक पंजाब प्रतिनिधि समार) से मिलें या पत्र व्यवहार करें। श्री स्नातक जी भारत के अनेक परिवारों की सफलता पूर्वक चिकित्सा कर चुके हैं।

मोट—आराम न आये पर एक वर्ष का पारिवर्तिक साध के बाद बापित किया जाएगा।

पूर्ण कोसं ३ मास व्यय २००/-

पता—श्याम सुन्दर स्नातक महोदयदेशक पंजाब सभा

दोबाने हाल देखली



कात न दातन न मुह धोना बीकी जवाईं और बस दिए। दूध का स्थान चाय ने ने लिया है, पुष्ट देवी पूत के बदले वनस्पति आ गया, सादा बपों के बदले टैरानोम को पसन्द किया, ईस्वर प्रार्थना के स्थान पर मधुमाता आदि के गीत गाये। फिर भसा युवक मुघरने या बिनगिये यह आप ही बताए कबि के शब्दों में— क्या करना था क्या लने करण हमें यही अचम्भा है, यदि देस का गही पैदा दूध को पीठिक पदार्थ खाने में व्यय होता न तो म्वास्वय विगलना ना ही पैसा व्यर्थ जाता।

ह्ला महा काप आजकल की गह-विज्ञान में हमारी प्रमाज का और हमारे नव-युवकों का बेडा ही तो दुबो दिया बहा ही स्कूलों में कालेबो में व्याह की परस्पर बात-चीत होकर ओसाद पैदा होने तक सारा कार्य बहो पर ही समाप्त हो जाता है। मा-बाप को लक के और लक्ष्मियों के लिए मूह्म-श्रम का प्रबन्ध करने की बिषेय आवश्यकता नहीं रह जाती। क्या इसी का नाम ब्रह्मचर्य है क्या इसी पडाई का नाम देशोपासक है? ब्रह्म-चर्य मदाचार सांगी, काम को बसा में करने आदि का किसी भी बच्चे में नाम मात्र भी नहीं है. भवा ही भी कंमे जबकि हमारी अपनी सरकार ने हमारे राष्ट्र के बच्चों के कोमल हृदयों को धर्म शिक्षा में दूर रखकर हमें अपनी मस्कुनि और धर्म से वहीन कर रखा है किसी बच्चे को यह जान नहीं कि धर्म क्या है? शिक्षा का अर्थ क्या है फिर भला कैसे हमारा देश ऊंचा उठे, पहले तो नव-युवकों के माता-पिता को ही धर्म का ज्ञान नहीं होता।

फिर स्कूलों के अध्यापक जिन बच्चों को धार्मिक शिक्षा देने में बस्यर्थं होने हैं प्रायः आरम्भ से कर अन्न मिश्रतक बच्चों के कानों में धर्म का कोई एक

शब्द भी नहीं जाता जिस से बच्चे अपना जीवन सुधार सकें कंसे स्वास्व्य रहे गा कंसे ब्रह्मचर्य तिचर रहेगा "महर्षि दयानन्द जी लिखते हैं कि" ब्रह्मचर्य का नाम होना से मातृत धर्म का नाम हुआ है और ब्रह्मचर्य का उद्धार रोने से ही फिर देश का उद्धार होगा।"

यह ऐसी धर्म हीनता की मरमा क्यू है एक मात्र इस का यही उन्पर है कि जनता भोग बास की और लोड़ी जा रही है और अपने धर्म कर्म को तनाबली दीये जा रही है। मार्यायें अपनी सन्तान को राग, कृष्ण, रासण प्रताप, दयानन्द, गांधी न बना कर दुषों धन, काम, जयचन्द बनाती जा रही है। देश के हीमहाश बच्चे रगतन को पतुन रहे डे। किन्तु इन सभी बातों के होने हुए आर्य समाज अपना कर्मच्य नहीं छोडना ना ही छोडेगा, जबतक कि देस को चिगरी रगान न मुघर जायें और बच्चों में न धर्म जीवन का सचार हो जाय।

सेतो को दे दो पानी यह कह रही गा ना। कुछ कर नो नो ख्यानों उठनी जवानीया है।

★ ★

## वेद पंथिक की गौरव्वा के लिये आपने सर्वस्व की आहुति देने की घोषणा

दिल्ली के मुद्रप्रिदध धर्मोपदेशक वेदपंथिक श्री प. धर्म बीर जी आर्य महाधारी ने सार्वदेशिक ममा के महात्मत्री श्री लाला राम गंधावन की अध्यापता में दयानर्ध भवन में मापएर देते हुये यह कहा है कि इस समय सतलु जी, गागा, गीता, गायत्री और वेद अन्तो को गौरवार्थ माकी की सन्ध्या में पढुव कर ससद प्रभन पर सत्याग्रह कर के सतलु देस के जेत्नों को भर देना चाहिये।

भी भडा धरती जी ने अपना नाम मत्स्यग्रह करने के लिये जेन जाने के लिये अपने एक पत्र में सार्वदेशिक ममा को अपना नाम दे दिया है। यह ज्ञातव्य है कि भी भडा-धारी जो अब तक नौबासानी, करारची नेजाम हैदराबाद, चडी पड आदि आर्य समाज के गभी आन्दोलन में सरसद की बानी लगा कर जेव की यातनाओं को भोग चुके हैं।

सवाव जात वैदिक समाचार समिधि



# सृष्टयुत्पत्ति, प्रलयकाल तथा जगत् का उपादान करण प्रकृति है

इस पर भाष्यत पुराण की स्पष्टोक्ति

( श्री देवप्रकाश जी आचार्य आर्यसमाज रत्नलाम )

( पताक मे आगे )

न तस्य काला बयवैः

परिच्छादयो गुणाः ।

ब्रह्मावतन्तान्मयकत-

नित्य कारणमयम् ११ ।

तत्परमाणु महत्त्व अहकार को और सब आदि गुण महात्व को इस लेते हैं, परीक्षित ! यह सब काल की महिमा है। उसी की प्रेरणा से अल्पत प्रकृति गुणों को इस लेती है, और उस केवल प्रकृति ही प्रकृति शेष रह जाती है।

(१८) बही (प्रकृति) वरान प्रगत का मुख कारण है। वह अल्पता अनादि, अनन्त, नित्य और अविनाशी है, प्रलय के समय वह सामान्यत्वा को प्राप्त हो जाती है, तब कोई विचार उस में नहीं रहता इसी अल्पत को जगत का मूल मूल तत्व कहते हैं।

तमुत्त भूत वद मामनन्ति । (२१) इसी प्रकार का वर्णन पुराण अब ६ अध्याय १४ श्लोक २५ तक देखे।

हमारा इसके सम्बन्ध में यही कहना है कि पौराणिक सत्यन उक्त पुराणों की देखकर प्रकृति को ही भगत का उपादान कास्य माने ब्रह्म भगत का उपादान कारण नहीं हो सकता। गीता भी देखें प्रकृति ही भगत का उपादाक कारण है उस के हृदय तब विषेचनो गीता प्रेत मोरखपुर मे छपी और फिर का आद्य सनातन धर्म के निष्ठागत परित्त एक दशम बोधवन्दका ने किया है जिन्होने दर्शने और उपनिषदों का भी भाष्य किया है निश्चते है देखिये कि किस प्रकार प्रकृति को निरण्या को ओ पण्डित जी ने स्वीकार किया है।

प्रकृति पुरुष सब विद्वान्मोटी उभावधि । विकारावक गुणां स्वेचं विद्धि प्रकृति समन्धान ।

गीत अ० १३ स ११ पृष्ठ ५१९ अर्थ—प्रकृति और पुरुष इन दोनों को ही तु अनानिद जान और राम देवादि विकारों को तथा मिश्रणालक उत्पत्ती परधर्मों को भी प्रकृति से ही उत्पन्न जान (१०) व्याख्या में लिखते हैं कि प्रकृति अनादि है तीनों गुण कृष्टि के बादि मे इससे उत्पन्न होते

है...इन तीनों गुणों को (सत्त्व, रज और तम) इनके विकारों को उनके कार्य सहित प्रकृति से उत्पन्न हुआ समझना चाहिए। कार्य कारण कतुं लेते हैं। प्रकृतिरूपते पुरुषः मुखदुशामोभुवै हेतु रूपतेर० कार्य और करण की उत्पन्न करने में हेतु प्रकृति कही जाती है और जीवाम्ना मुख-दुशों के भीकता पम में अर्थात् भोगमें मे हेतु कहा जाता है (२०) अतः का उत्तर देते हुए लिखते हैं। आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी मे पाचो गुण महाभूत तथा शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध—ये पाचो इन्द्रियों के विषय इन दसों का वाचक यहाँ कार्य शब्द है, बुद्धि, अहकार और मन ये तीनों अन्नकरण श्रोत्र स्वभा और नेत्र रस्ना तथा प्राण ये पांचो शानेन्द्रिया एव, वाक्, हस्त, पाद, उदर्य और मुदा ये पांचो कर्मिन्द्रियो इन तन्त्र का वाचक यहाँ 'करण' शब्द है, ये तैस्स तत्व प्रकृति से ही उत्पन्न होते हैं। प्रकृति ही इनका उपादान कारण है—फिर स्वतः और साध्य कारिका की एक कारिका भी इसकी सिद्धि के लिए लिखते हैं।

प्रकृति से महत्त्व, महत्त्व से अहकार अहकार से पाच सूत्र महाभूत मन और रस इन्द्रिय तथा पाच गुण महाभूतमे से पाचो इन्द्रियो के सदादि पाचो स्थूल विषयो की उत्पत्ति मानो जाती है, साध्यकारिका मे बोधा-हा भेद है आगे लिखते है, गुण्य कंश्च चेतन आत्मा का वाचक है। प्रकृति पुरुष का सनादरि है इतीतिए यहाँ पुरुष को मुख दुशों के भोक्तापान मे हेतु यानी निमित्त माना गया है, इसी बात को स्पष्ट करने के लिए अपने स्तोत्र में कह भी दिया है, कि प्रकृति मे स्थित पुरुष ही प्रकृति जमित गुणों को भोक्तव है।

पुरुषः प्रकृतिस्थो हि भूद्वेषो प्रकृति जानुसामान् । कारभं गुण समोअस्य सद्यधोनि जन्मयु १२ ।

प्रकृति में स्थित ही पुरुष प्रकृति से उत्पन्न मिश्रणालक परधर्मों को भोगता हुआ और इन गुणों का संग ही इस जीवाम्ना के बच्ची-बुरी योनियो में जन्म लेने का कारण है।

# अद्भुत गुणी म० हंस के जीवन की विचित्र घटना

पं० दोतत राम जो दास्त्री

वाहोर का चिड़िया घर देखकर हम सब मैडल ट्रेनिंग कालिज के जो. टी० भेंखों के छात्र मोलबाम में आ कर परस्पर एक विषय पर बाद विबाद कर रहे थे कि क्या आयु निश्चित है या घटती बढ़ती है पक्षियों की भेंखी उहरी। दो पक्ष हो गए। कोई घटा भर लूत प्रमाणी व तनों का आधान प्रदान होता रहा। किसी ने कहा देखो सत्यवान दर ही गया था न। सावित्र के प्रताप से फिर यीक्षित हो गया। रामरायण मे लम्बुक के अर्वादि अभिचार के कारण एक व्यक्ति का पुत्र शिशुकाल मे चल बसा फिर राम द्वारा लम्बुक बप करने उपरान्त वह फिर उठ खडा हुआ। अमुक के ऐसा हुआ और अमुक के बंसा हुआ। कपिल ऋषि ने अपने नेत्रों की विद्युत् से सगर की भारी सेना नष्ट कर दी। अमुक के घर मे बिबाह बेदी मे मरा हुआ दुग्गु फिर जीवित हो गया।

दूसरे पक्ष की ओर मे भी कुछ मिलने लगे। अजी पुरुष को ज्ञानु कहता है। ती बर्ष की आयु बाला—परन्तु मुक्ते है वहन बही-वही आयु बाने महात्मा हुए। एवास मिलत है। प्राणायाम से मनुष्य अपने प्राणों के लम्बा कर सकता है। छः ष मास की समाधि लगाने छः महीने तक श्वात रोक लेने से कितनी ही आयु की अवधि बढ़ जाती है। एक बाल उठ कि देखा जो घड़ी की गारटी दश बर्ष की होय उसको सावधानी से रखने से हींश्याय मनुष्य बीस दैर तक शिरस्थायो रख सकता है। इनी प्रकार स्वास्थ्य के नियमों का पालन करने से उंच योग बतवाते है कि मनुष्य बहुत देर तक जीवित रह सकता है।

एक और सज्जन बोले। अजी आर्यबंद शब्द के शेष में से एक मध्यम्वर लुप्त हुआ है—उसका अर्थ है—बहु आन जो आयु के घटने के नियमों को बदलाने शवाह है उसे आर्यबंद कहते है। इज से सिद्ध होता है कि विशेष नियमों से आयु बढ़ती भी है और घटती भी है। कुछ ऋषियों के वाक्य है कि 'आर्य-बं धृतम' य्हा आयुवर्धक है।

कोई - कोई महाभाग भी मे अपना मुख देखने से आयु वृद्धि होती है यह कह रहे थे। इस प्रकार अपना-अपना मत पण्डित मण्डली प्रकट कर रही थी। बोधी हुए देखा हुआ साधारण बेसी व्यक्ति पक्षियों के पास आकर कहने लगा कि महाशय मैंने आपकी सब चर्चा सुनी। इस विषय में मैं भी अपना मत दे सकता हूँ ?

हाँ कहिए, पक्षियों ने कहा। अतः अत्यन्त ने कहा कि सच्चा मे हृदय पठने है 'शत जीवैमे शयः मृष्यस्वपरायः शलात्'। हृदय ही बर्ष ओए। उसके अधिक भी। और देखिए मनु ने कहा—

अभिवादन शीलवः नित्य बद्धोसि विनः । बवारि तस्य वर्धते

आयु विधा यथोक्तम् ॥ जो व्यक्त अपने बड़ो को नमस्कार करता है—और उनके पास बंटकर उपदेश सुनता है—और उसकी सेवा करता है—उसकी चारखलुण्ड बढ़ती है—आयु, विवादा एव और बल। क्या मनु ने भूट योचना वा। बढ़ती है मनु तो निश्च है न !? यही अर्थव्या अत्य मनुय में नमक नीविए।

सभी स्तव्य से रहे। किसी को क्या पता कि यह भी पण्डित है। एक ने पूछा कि महाशय। आप की बात सत्य है। आप क्या काम करते है ?

अप्रापक हू एक मित्रल स्कूल मे। क्या आप जन्म से ब्राह्मण है। जन्म, से कुछ भी नहीं, आर्यजन अप्रापक हू।

फिर भी हम क्या रामने ? अजी। हरिजन ! हू। शिष्या कहा से पाई ?

एक महात्मा के घर की सखाई किया करता था—और ने एक सन्ने पर बैठकर मन पाठ करते, मैं भी सुनने बंद जाता। मुझे उनके एक भजन मे बडा आकर्षित किया। एक दिन मुझे उन्होंने पूछा कि तुम कुछ पढ़े हो ? मैंने कहा—महाराज ! विवा-हाई मैंने पक्के मारली है। (क्याः)

लेकिन जब अपनी कमी आती है तो पुपके से कोसों कदम दूर और लड़की बाप से दूर होकर निकलती है और प्रत्यक्ष से सीधे कोसों दूर ही रहने में कुछ नहीं बिया और कई लोग ऐसे भी होते हैं जो पहले तो यह कहते रहते हैं कि हम कुछ नहीं जेतें। ऐसे की क्या बात होती है? हमें तो लड़की योग्य चाहिए। लेकिन जब कोई रिश्ता करने वाला जाता है तो उन का यह पहरा लेने का विचार बिल्कुल खरब हो जाता है और वह भी अपने लड़के की रूबरू होकर लेग जाते हैं। आज लड़को की (Advance Booking) जारी है। इस दहेज, स्त्री दानव व भारतीय समाज की अभिप्राय कर रहा है। यदि हम इसे अब भी नहीं छोड़ते तो हमारी नैतिक स्थिति इसकी गिर जायगी कि लाख सम्भालने में भी नहीं सम्भलेंगी। लेकिन प्रश्न यह उठता है कि इने सम्भाल कैसे किया जाए? जिन युवको के उत्तरा हृदय हीन चाहिए आज वह पुंवार बने हुए हैं। किन्तु यह मेरा विश्वास है कि जब तक इस निन्दनीय प्रथा के विरुद्ध विद्रोह मचाने का सारा मेरे तबयूक भाई जो मेरे देश के भावी कर्णधार है और जो मेरे देश की आशाओं के उजाले हैं, के हृदयो में नहीं होता तब तक इन कुप्रथा का हटना संभव है। इन के लिए नौजवानों को प्रत्यक्ष और पीछा कर के भाग लेना है। यदि इसे समाप्त करने में अहिंसात्मक गणों की सहमति हो तो कहना ही क्या? मगर उनकी ओर से ऐसी सम्भावना फिलहाल तो दिखाई नहीं देती। आगे की कौन कहे?

इसके लिए नवयुवको को आगे आकर बलिदान देना ही होगा। त्याग, बलिदान और सवम के बिना यह कप्रथा भारतीय समाज को छोड़ने से रही क्योंकि यह तो हमारे समाज की प्रमुख विशेषता है कि ये बुराई को महान् तो शीघ्र कर, मेला है पर छोड़ना देर में है। अतः युवको को चाहिए कि वे सदैव होकर एकता के सूत्र में बंध कर प्रतिष्ठा करें कि— 'हमें नहीं सिक्ना है। लड़की बापों के आसू पीखने है तथा लड़की की संद आहो से बचना है। हमने समाज को सुधारना है।' इस के लिए अपने बुद्धि की समझ और यदि वह बुद्धि सम्भालने से न सवम तो वह उनकी अथवा कर दें इस में कोई बुराई नहीं है।

ले-  
**दहेज**  
(श्रामती अरुणा आर्य प्रभाकर जालन्धर छावनी)

यदि मेरे भाईयो में अपनी प्यारी बहोती के जीवन को सन्तुष्टान न देने वाला कहियो और कुप्रथाओं को मिटाने का माहम नहीं है, उन्हे एकलव्या प्यारी है हम किये कह सकते हैं? वे किस मुख से स्वा-भयन के दिन अपनी कलाई पर बहोने से शुभ राखी क्यवाते है? सवार भी उन्हे नैके स्वागतनय ग्रिय कह सकता है।

कवि भी नवयुवको को इस बुराई को मिटाने के लिए प्रेरित तथा उत्साहित कर रहा है।

'कुछ करतो नौजवानों,  
उठनी नौजबानिया है।'

मगर इसका यह मतलब नहीं कि यह कार्य केवल जोग दिखाने मात्र का है। हमारी कथनी एव करनी में एकता होनी चाहिए इसके लिए काफी समय और धैर्य की जरूरत है। बिना दान के कोई कार्य भी सम्भव नहीं। फिर इसमें तो बहुत सदे बलिदान की आवश्यकता है। एक गापर में इस कार्य के इतने आसान न होने की ओर संकेत करते हुए कहा है कि:—

'शामा नहीं है मेरे बियावान इक की,  
काटे बिड़े हुए है इस मजिल की राह की,  
युवको के गम लुन में यह तेजो  
है जिस में वह मुन समाज में प्राण  
पूक सकते है उनके रीति रिवाजो  
को बदल सकते है। देण और समाज  
को उन्नति के उच्च सिखर पर  
पहुंचा सकते है और भूले भटके मात्रव  
को राह संसा सकते है। समस्त  
संसार के अन्दर सेलना की पूक भर  
सकते है। इस कठिन और पवित्र  
कार्य को करके आप सच्चे मनुष्य  
कहया सकते है जैसा कि एक कवि  
का कवम है—

जहायो की पलट दे जो  
उसे दूफान कहुते है।  
जो तुफानों से टक्कर ले  
उसे इन्सान कहते है ॥

शारी से पहले और शारी के  
समय तो जो माते है, वह असग रहा  
लेकिन उसके पचवात भी लड़की वाली  
का पिठ नहीं छोडते। यह में भी  
लड़की को तप करना प्रारम्भ कर देते  
है। लड़की को कहुते है कि तुम अपने  
मायके (बर) से दूतने हमार दू साओ

बराता तुम्हे मार देगे। बेचारी लड़की अपने माता पिता की आर्थिक स्थिति से ब्रवी भाति परिचित होती है जब वह ऐसा, करने से इनकार कर देती है वह बुर, अत्याचारी, निर्दयी मनुष्य उसकी जीवन लीला को समाप्त कर देते है लड़की उनके दुर्ब्यवहार से तंग आकर विषाण ज आत्महत्या कर लेती है। ऐसी घटनाओ भी निव हमारे मुनने व पढ़ने मे आरी है लेकिन किसी के कानों पर नु तक नहीं रयनी। उन मायने वाले भिखा-रियो में कइना है कि तुम्हारे दो हाथ दां पैर है, परिश्रम करो, परिश्रम का फल नदा मीठा होता है। मागता तो वह है जिस के बर का दीवाना निकल चुका है। लेकिन तुम मायने में अपनी शोभा सम्भालते हो जब कि भारतीय इस बात को मानते है कि **माने से मरना** अथवा है।

कहा तो हमारा अ महान् उदार धर्म जो नो नक नो वेदने को सिंगे व पनत है। इतने अडक बुरा अर्थ अपने लड़के-मरदकियां तक को बेचने में भी नहीं लजाते। कितना अर्थ, पनत है। इतने अडक बुरा अर्थ या कुकर्म क्या हो सकता है? कुछ तो मोची-सम्भो और अपने मर्दानक को दिखाने लगाओ। यदि तुम्हारी दसा अब भी इसी प्रकार में रही और तुम यह कुकर्म करने में नहीं हें तो सम्भ को कि अब नारा अपना इतना पोत्र व्यथान महान न कर सकते। यह एक दिन उठेगी और अपनी उडी आही रुपी बिपरीती दुहागो मे तुम्हारा सर्वनाश करने में कदापि नहीं हिच-किचाएगी, जिसे तुम अथवा कहते हो वह मरवा बरकर रखिता देगी। जहा नारी के हृदय में प्रेम एव त्याग की भावना की सोमल सुषा है वहा सठबानिया लेता हुआ शक्ति का दूफान भी है वह नर की अर्चना करने में अपना सर्वस्व अंपस कर देती है। पुष्य सम्भला है कि वह उस की परिचारिका है पर वह यह नही जानता है कि नारी अथवा शक्ति का सोत है। यह नौकी-सठ है जिससे भारतीय नारी अक्षरिचित हो। नारी जब हाथ में तलवार पक-डती है तो दुर्गा बन जाती है। बीणा

पर अंगुली रख ने तो सरस्वती का रूप धारण कर लेती है और पुष्य का दामन पकडती है तो लक्ष्मी बन जाती है।

अन्त में इस नवस्था के समाधान के लिए मैं कुछ सुझाव देती हू जो कि निम्नलिखित है:—

१. दहेज न लेते और न देने का प्रचार अपने मगर में व आस-पास में करे क्योंकि रिश्ते अक्षर सम्प्राप्त होते है।

२. भारत के मध्य बंग की स्थिति दिवो-दिव गिरनी जा रही है। अतः दहेज की भावना उसके दिन में डिस्टर्नई जा सकती है। क्योंकि इसका बीच रूप उसके विद्यमान है केवल उसे पसलवि करने की आवश्यकता है अतः इनके प्रचार में कोई कठिनाई नहीं आयेगी।

३. जब हम लड़की बाने में दहेज नहीं लेते तो लड़के के हृदय में भी दहेज न लेने की भावना खर, ही उत्पन्न होगी और मच्छरीय जन ज्ञाने पर हम भी अपना नैतिक प्रश्न डाल सकेंगे। इनके अतिरिक्त इस रिटना करने में पूर्व उसे अपने लड़के के लिए श्रेष्ठ न लेने के लिए प्रशिक्ष-वस भी करवा सकते है।

किनी भी कार्य के लिए बलिदान की आवश्यकता होती है और हमें यह सोचकर बचना चाहिए कि पहले व्यापार में हानि ही होती है।

मेरे विचार में उपरोक्त सुझाव अपनाते पर इस प्रथा को मूल्य नाश किया जा सकता है। कोई भी कार्य करना ही नो उसके करने में पहले इस विचार को सर्वथा त्याग दें कि 'कोई क्या कहेगा' लगना आगे कसम नहीं बड पाया। मगर इतमें कौनो ममव मंगना। वीज को बुध बाने में भी तो ममव लसता है और अन्धका कार्य देर सवेर अपना फल अक्षय दिखलाता है। सुम सकय मे बडी भारी शक्ति होती है।

मैं फिर श्रविक नव-युवक भाई को आब-हनु करती हू इस पुनीत कार्य में संलग्न होने के लिए।

★ ★

★ जो-जो बुद्धि का नास करने वाले है उनका सेवन कभी न करे और मिलने अन्ध सठ, बिचने, दुर्गम्यादि से रूषित और अन्धे प्रकार न बने हुए हो उनको भी खाना नही चाहिए।

आयं विद्या सभा, चित्रगुप्त मार्ग, नई दिल्ली.

महात्मा हसराम आर्य टूनमिट १९६६

गत वर्ष की प्रति आयं विद्या सभा. मार्ग नई दिल्ली, के उत्सवप्रधान में इस वर्ष की उपरोक्त टूनमिट अनुत्तर, जालन्यर, कनौज व देहली में संजीव शर पर २६ से ३० सितम्बर १९६६ तक और अन्तः क्षेत्रीय स्तर पर २ से ६ अक्टूबर १९६६ तक अम्बाला नगर में होना निश्चित पाया है।

सभी सम्बन्धित स्थापनों के प्रभावाम्बोधों व क्षेत्रीय अथवा अन्तः क्षेत्रीय सम्बन्धों को पार पत्र द्वारा ८ के विषय में पूरी २ जानकारी दी जा चुके हैं। २ प्रवेश-पत्र भेजे जा चुकी हैं, मुझे ३।

इस विज्ञप्ती ार प्रार्थना की जाती है, कि सभी सम्बन्धित संस्थाएं यथोचित समय पर प्रवेश पत्र भेज अथवा अन्य टूनमिट में सकीय भाग ले, इसे सफल बनाने में अपना अपना सहयोग दे।

टूनमिट सम्बन्धी अन्य किली भी जानकारी के लिए श्री देवराज जी मानसून एजुकेशनल एडवाइजर डी. ए. भी. कालिज प्रवन्ध कर्त्त सभित, चित्रगुप्त रोड, नई दिल्ली से संप-व्यवहार करे। देवराज महाजन

आर्य समाज मन्दिर मरवाई (चन्तपुरशी)

आर्यसमाज मरवाई के सर्वसभ्य श्री पं० हरिवचन्द्र जी मार्ग सास्त्री सूचित करते हैं कि ६-८-११ को भारी वर्षा के कारण समाज मन्दिर पहाड़ की सड़ में गिर कर क्षतिग्रस्त हो गया है। स्वर्गीय मं० लडका राम जी के परिश्रम तथा अन्य दानो महानुभावों के दान से बनाया गया मन्दिर ध्वस्त हो गया है। अतः इस मन्दिर के पुनरुद्धार के लिए सर्व प्रेमी दानी सज्जनों ने प्रार्थना है कि क्यासक्ति दान देकर पुण्य के भागी बने। पहलकी इसका विवेचन चित्रगुप्त के पास इस समाज मन्दिर का विवेचन महसू है। दान, मनी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा निकट कोर्ट जालन्यर के पते भेजे।

समाचार दर्शन

आर्य समाज में कृष्ण-जन्माष्टमी पर्व

प्रियक श्री ब्रह्मानन्दजी होशियारपुर

७-९-६६ को आर्यसमाज तपवाड़ा में जन्माष्टमी के महोत्सव पर शीघ्रतः पं० रत्नागज जी एम. एम. ए. व दयानन्दजी आर्य का मण्डल हुआ। गोविन्दर कृष्ण के आर्य जीवन की प्रस्तुत किया गया।

आर्यसमाज मुकेशियां में ८-९-६६ को प्रातः यम के परचाल कृष्ण-जन्माष्टमी का पर्व मनाया गया। श्री वैष्णव सास्त्री व कल्याणदा आर्यरितं स्मरण का व्याख्यान हुआ।

आर्य कुमार तथा मुकेशियां में स्थापित हो गई है। जिसके प्रधान सतीन्द्र व मनी रावीन्द्र हैं। आर्य वीर दल अजवाड़ा में ८-९-६६ को महत्प्रथम श्री धर्मप्रकाश आर्यरितं स्मरण का प्रभावशाली प्रवचन हुआ।

आर्यसमाज रोहतक में आर्य-वीर दल की साप्ताहिक शाखा में ६० से ऊपर आर्य युवक आते हैं। श्री विष्णु मिश्र जी उखाड़ से संवाचन कर रहे हैं।

अनुत्तर में तीन आर्य वीर दलों के पत्राने का कार्य भी करनेसहित

विद्यावाचस्पति कर रहे हैं। तपवाड़ा में आर्यसमाज के मनी व मुन्शीराम जी आर्यवीर दल की साप्ताहिक शाखा लोग रहे हैं।

आर्यसमाज अजवाड़ा में २०-८-६६ व ४-९-६६ के साप्ताहिक उत्सवों में अखिल भारतीय दयानन्द सास्त्रिकी विधान के प्रभाव श्री प्रि० रामचन्द्र जी के प्रभावशाली व्याख्यान हुए।

वैदिक साधन-आश्रम यमुना नगर (अम्बाला)

पद्महवा व पिक साधना शिविद

२८ सितम्बर से २ अक्टूबर १९६६ तक दिन बुध, वृष, शुक्र, रवि, और रश्मिार अद्वा और सप्तारोह से सम्पन्न होगी। इस अवसर पर सम्पत्ती महात्माजी, महाविद्वानो, प्रसिद्ध नेताओं व गायनाचार्यों के पधारो की पूर्ण बाधा है।

प्रतिदिन प्रभात की आध्यात्मिक गिलास, प्राणायाम और योग सम्बन्धी प्रवचन हुआ करते जातः आप स्वयं तथा अपने नन्हुओं समेत आवश्यकतय पधार कर इस वर्ष सम्मेलन की घोषा बढावें। स्वा० सत्यजन्व सरस्वती, अथय

म० हंसराज वैदिक साहित्य विभाग

विन्याय आनन्दक पुस्तकें

चारों वेदों के सविन्द मूल सेंट प्रति सेंट २२.५० पैं

शुद्धवेदादि शाप्य भूमिका ३.०० पैं०

संस्कृत विधि २.५० पैं०

दयानन्द द्विज साहस एण्ड वर्क (अंग्रेजी में) लेखक श्री

सर्वमानु जी एम० ए० बायस चांसलर इकुरुषेय यूनिवर्सिटी

मूल्य १.५० पैं०

सत्यार्थ प्रकाश (उर्दू) ३.५०

सभी आर्यसमाजों व आर्य संस्थाएं इस पुस्तकों को उच्च स्वान

देकर सुचोचित करें

प्रातिन स्थान - म० हंसराज साहित्य विभाग आर्य प्रादेशिक

प्रतिनिधि सभा निकट कोर्ट जालन्यर

आर्य समाज

पुरोहित आर्य समाज पुरोहितां सभी तथा मरवाई आर्य समाज के उत्सव के अतिथि की कनौज की श्री कृष्ण मण्डल स्मरण सम्बन्ध हो रही हैं। इस के उपलक्ष्य में आर्य रश्मिार की ओर से नव - दशरती की युवा कामनाएं प्राप्त हो।

★ १८ से २५ सितम्बर तक राधिकास्तव मनाया जा रहा है। एक वर्ष प्रेमी इस अवसर पर पधार कर पर्यं प्राप्त करें ---व्यवस्थापक

आर्यसमाज पुल बंगश देहली

१. आर्यसमाज मन्दिर पुन बपद दिल्ली में केव सप्ताह के उत्सव में वेद कथा १८-९-६६ से २५-९-६६ तक प्रति दिन राति ९ से १० बजे तक श्री पं० सुधीराम जी द्वारा करीने। २. कथा से पूर्व ८ से ९ बजे तक श्री पं० देवराज जी के मनोहर अरन हुआ करीने।

३. आर्य युवक परिषद दिल्ली संचालित सत्यार्थ प्रकाश परीक्षा में आर्य समाज पुन बगश केन्द्र से ५० परीक्षास्थानों में परीक्षा थी। इस का श्रेयो श्री विनय कुमार चौधरी को है।

प्रवदीय—सुदेश कुमार मनी

आर्यसमाज विक्रमपुरा जालन्यर

१८-९-६६ रश्मिार की प्रातः

देविक कार्यावाही के बाद श्री आदर-श्रीय पुरोहित जी का व्याख्यान होनेवा।

नोट—स्त्री समाज का साप्ताहिक सत्संग शनिवार को दोपहर बाद तीन बजे से पांच बजे तक होता है। सभी माता तथा बहिनों से प्रार्थना है कि समय पर पधार कर अनुपहीत करें।

सभी आर्य समाज

पद्मनीय एवं मननीय साहित्य

वेद प्रवचन ५/- गोवाहार ७५/- वीसे, जालन्यर के पत्र १/-दयानन्द संस्कार १/५० वीसे, मेरी जाट रोचक कहानियां ७५ वीसे, मोकट ७५ वीसे, लडकाशो जीवन ५० वीसे, कर्म नीतिका २/२५ वीसे, संतति नियमन कर्वा और वीसे १५ वीसे, वैदिक व्याकरण साह्यर ५/- व्याख्यान मोचक पत्र ११/० वीसे, साहित्य अकाश १/- जयदेव श्रद्धार्थ बढोदा-१



दैनिकीक नं० १०५७

[आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि समाजपंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र]

Regd. No. P.

एक प्रति का मूल्य १३ पैसे

मुद्रक कालिका

आधिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६, अंक ३०)

१० अक्टूबर २०२३ रविवार—द्वितीय—द्वितीय—१९४०—२५ मिनट—१९६६

(तार 'प्रादेशिक' ज्ञानम्)

## अगर अब हमला हुआ तो सीमा लाहौर के पार बनेगी

मे. व. महेंद्र सिंह ने जनता से निर्भीक रहने को कहा

बाधा संकट के परिचायक मारने पर जनता ने जवाब दे दिया है कि अतिसर और दूसरे सीमान्त क्षेत्रों को अपना विस्तार न पार पार। पाकिस्तान को इसकी अवसर मार पार चुकी है कि यह कर्म मार तक जन करने का साथ नहीं मिला। लेकिन अगर उसने मारती की तो इस बार इच्छोमिष नहरी सीमा नही रहेगी बल्कि लाहौर मे भी जाने जाकर बनेगी।

जनता ने कहा कि यह विचार कर्तव्य अपना कारोबार करती रहे। हम यह भी नहीं कहेंगे, कोई आस उठा कर भी हमारी सीमा को और नहीं देव सकता। पाकिस्तान को अच्छी तरह जानूँ है कि भारत एक पट्टा है और पट्टा से टकराना अपना सिर छोड़ना है। बाधा संकट की नशाई का विचार करते हुए जनता ने कहा कि ७ मे ११ मिनट तक इस संकट से जो नशाई नहीं गई, वह दुनिया में नहीं होगी है। बिना मार इस संकट में पाकिस्तान को पड़ी है, उसकी किसी हुरी जगह नहीं पड़ी।

## वे दा मृत शत्रु की पसली तोड़ दूँगा

शपथारमेतु शपथो यः सुहार्त्तेन नः सह ।  
चक्षुर्मन्त्रस्य दुर्हादः पृष्ठीरपि शृशीमसि ॥

अर्थः—मेरा बदन विचार है कि (शपथार) शपथ देने वाले को, मेरा बुरा चिन्तन करने वाले को (एतु शपथः) उसका साथ व बुरा चिन्तन उसीको ही प्राप्त होगा । जो मनुष्य (सुहार्त्) अच्छे दिल वाला है, सुचना है (तेन नः सह) उसके साथ हमारा साथ है, वह हमारा साथी है । हम नेक के सहयोगी हैं । जो (चक्षुर्मन्त्रस्य) बाकी से टेडा देखता है, जिसकी दृष्टि कुर व दुष्ट है तथा जो (दुर्हादः) बुरे मन वाला है, जिसके विचार नीच हैं ऐसे मनुष्य की हान (पृष्ठीः अपि) पसलियों को (शृशीमसि) तोड़ दानेगे ।

## इस का भाव यह है

प्रभु का ऐसा नियम है कि जो धनु बन कर किसी के लिए बुरा सोचता है, उनका स्वयं बुरा होगा है जो किसी के लिए कुछा सोचता है, उनमें स्वयं ही मिरता है । इसी प्रकार जो भी बुरा व्यक्ति राक्षस या धनु बन कर हमें शपथ देता है, हमारा अनिष्ट चिन्तन करता है, वह शपथ उसे स्वयं ही हानि पहुँचाता है, हम तो नेक लोगों के साथी हैं, सहयोगी हैं । जिसकी आंखें सँली उट्टला से भरी हुई हैं, जिस का दिल काला है । विचार नीच छोटे तथा बड़े ही छोटे हैं । हम उस की तो परमविद्या तोड़ दानेगे । उस राक्षस को, चोर, मुँदरे, धनु की कभी भी जीवित छोड़ने नहीं

—अर्धव ७—३—५

★ शान्ति अरु की चीज है बाहर की नहीं । शान्ति मनमें आणी । शान्ति मे विचार से शान्ति मिलनी है यद्यपि में कहूँगा हूँ जिन समय हम हृदय को आरंभ करते हैं उस समय भावना धूँ गए होते हैं । जानी शान्तिन मे पाप की भावनाओं को दब कर लेते हैं । हम शान्ति नहीं । अज्ञानी दो भावों में होता है । जिस की जानता है मानता नहीं । वह कर्म फलदाता मव मे समझता हुआ है । उसकी देखते हुए भी मानते नहीं कि हमारे साथ परलेश्वर क्या करेगा ! प्रायः सर्व साधारण आदमी इसकी उपाधा करते हैं ।

## ऋषि दर्शन

सर्वेभ्यो महतरम्

वह ब्रह्म सबसे महान् है । संसार में सर्व आदि लोकतर भी बहुत हैं, जिनका ज्ञान प्राप्त करने मानव विद्याम बकरा जाता है । परन्तु ब्रह्म इन सबसे महान् है, सुख्यतर है । उसी की पूजा करनी है ।

प्रकाश स्वरूपम्

वही सर्वव्यापक महान् भगवान् प्रकाश स्वरूप है, ज्योतिर्मय है । जितने भी प्रकाश देने वाले पदार्थ विद्यमान हैं, वेपार उसी की आला से भासित प्रकाशित हो रहे हैं । उसी की इनमे ज्योति है । उसी महान् सूर्य मे बलकते हैं ।

सर्वज्ञ करुणामयम्

यह ब्रह्म सर्वज्ञ है, सबकी सब विद्याओं को जानने हारा है । उसने किसी भी वस्तु, भाव की मुल नहीं रखा था सकता । वह परमात्मा करुणामय है, दयालु, दया के सागर है । सब पर दया करते रहते हैं ।

सर्वत्र व्याप्तः

वह महान् भावान् सर्वव्यापक है, सर्वव्यापक है, कोई भी स्थान, विद्या या जग ऐसा नहीं है, जहाँ उस परममत्ता की सत्ता का परिचय न मिलता हो । मानव उससे बचकर किसी स्थान पर भी जाकर कोई कार्य नहीं कर सकता ।

मा व्य भू मि का से

सर्वव्यता—प्र० वेद प्रकाश ए० ए० (अर्थों की तथा हिन्दी)

सम्पादक—जिल्का चरन सर

## विचित्र क्रम

श्री पं० सत्यप्रिय जी शास्त्री सिद्धान्त विश्वविद्यालय  
प्राध्यापक-दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार

वृहदारण्यकोषनिबन्ध का आरम्भ एक संहार अथर्व के वर्णन से होता है। वह अथर्व संसार ही है। 'अथर्वोत्स-ध्वानमिच्छेत्' इस निरुक्ति के अनुसार वीधधामनी पदार्थ का नाम अथर्व है। संसार की गति बड़ी तीव्र है। इसीलिये इसे जल अर्थात् निरंतर बिना रुके चलने वाला कहा गया है। मनुष्य उत्पन्न होता है। उसकी बाल्यावस्था से लेकर बूढ़ में समाप्त हो जाती है। जीवन का वसन्त काल नवयोवन समरानियों तथा मत्तों। उल्लसों की रंभीमियों में बीजता अनुभव नहीं होता है। जब सामने आधु का पनम्हड़ अर्थात् बुढ़ाया अपने भयावने हाथों को पगारे खड़ा दिखाई देता है, तब मनुष्य अपने पिछने जीवन पर एक विहंगम दृष्टि डाल कर अस्फुटों के साथ हाथ मजबूत दिखाई देता है। उसे ऐसा लगता है कि मानो कल की ही बाह है कि मैं नन्हा मुन्ना था जब पुट्टों के बल गरजता था, जीवन का मुनहरीकाल जीवन उसे रबन् नारिखाई देने लगता है। उस प्रकार मनुष्य जीवन के भ्रमों में फसकर अपने बीजते समय की तेज रश्मार को अनुभव नहीं करता है। परन्तु संसार तो अथर्व नीच गति में प्रयास करने वाला उग्ररु बह किमी के लिये बना रहेगा। विभिन्न कोटि के मनुष्य इस संसार का र्थे उपयोग करने हैं, उपनिषद के उक्त स्थल में ही। इस लक्ष्य का बड़ी अच्युती तरह निष्पण किया गया है। 'हृयो भूवा देवान बहून्' अर्थात् संसार हृय प्रेरक हो कर देवों को अपनी पीठ से उठाता है। देव लोग इस विषय में एक प्रेरणा प्राप्त करते हैं। वे संसार की प्रत्येक स्तूय तथा सुख रचना में विश्वासा के स्वरूप ज्ञान एवं उसकी उत्कृष्ट कला बुद्धि में सात्विकता की प्रेरणा देने हैं। उन्हें मूर्ध की अस्फुटप्रभा से जन्मता की जीवन रश्मियों में तथा लज्जों की मित्रमिष्टान्त में भी एक अलौकिक दिव्यात् के वर्णन होने हैं वे अष्ट पदावों को अटलता में पक्ष पर की अटलता की मोक्ष लेने हैं। वे बुद्धों, तद्विद्यों तथा पदवों में परवृत्त जीवन अर्थात् का पाठ पढ़ते हैं। संसार की रचना उनके जीवन की पाठ्यासा बन जाती है, जो उन्हें जीवन की हर प्रकार

उन्नति का मूलमन्त्र विधाती है। 'आधी मन्त्रमन्त्रि' अर्थात् विधाती योग संसार से लोगों का पाठ पढ़ते हैं। योगप्रवृत्ति वाले शास्त्र वेसा, पन्ध की शीतल किरणों तथा हरे-भरे पर्वतों में एण्डिक भोगों की गिशा लेते हैं। वे सात्विकता में भी रंजीमुख के र्थन करते हैं। संसार की पवित्र से पवित्र रचना एवं सत्य में विषय वास्तुनाओं के चित्रों को देखते हैं। वे संसारको शरीर तुल्य का साधन समझते हैं। वे पूल की कोमलता में भी अपनी प्रेयसी के रूप को देखते हैं। बूझ के हिलते पत्तों को अपनी कामिनी का बुलाने का इयारा समझते हैं। साधारण उनका युद्धिकीय योग प्रयाण होता है। 'अबदि मुदान' अपने प्राण पोषण में रज लोग इसके हिंसा रूप में अपनाते हैं। उन्हें संसार की सात्विक से सात्विक रचना को नष्ट करने में इच्छामें कोई दरं नहीं होता, क्योंकि उमस उनके प्राण पुष्ट होते हैं। आज वैजुधा प्रणियों के बले पर छुड़ी पलाकर उनके लून मास में अपने पेट की आँते रंगकर पेट को उन गीलों का कविस्तान बनाते बाले लोण क्या इस कोटि में नहीं है। मनुष्य पेट की दुहाई देकर लाली गरीबों के गले पर छुरी पलाकर उनका पेट काट कर अपना पेट बढ़ाने बाने, चोर, रिश्तन, खोर, अर्क करने वाले क्या इस पदवों के अर्थात्कारी नहीं है। ऐसे ही पुरुषों का समूह असुर समुदाय कहलाया रहा है। "अश्वो मन्ध्यान्" इस में गति की प्रेरणा लेते हैं वे मोचते हैं कि समय बीतता जा रहा है अतः जीप अपने कार्य करी। प्राण में प्रवण होनी फिर करोगे कब। ऐसी लोण ईश्वर की प्रत्येक रचना में पक्ष मीमासा करते हैं। परनेद्वार की प्रत्येक कला से अपने कर्तव्य पावन की गिशा लेते हैं। वे जगप्रियता की हरेक शिल्प कला से गिशा लेकर अपने की वास्तविक मनुष्य बनाते का यत्न करने हैं। इस प्रकार एक ही संसार में बार प्रकार की प्रवृत्ति वाले पुरुष विभिन्न-विशेषों में नैकर अपने जीवन को बिताते हैं। हम सब मिस कर सोचें कि हम इन चारों में से कौन में बर्त में हैं। क्या सासात्विक रचना से हम आरम कल्याण कर रहे हैं अथवा अपना पवन करने में ही अपने कर्तव्यकी इति समझ रहे हैं।

## हुंकार

(श्री सुन्दर लाल जी बोहरा, रंगा भवन, जोधपुर)

मात्र दूर हट गईं पुणों ने  
ये लगी अंग नन्दकों की  
आज तानिया लुनी पटी है  
भूमि में गड़ी छन्दकों की  
बैथिकक मोर्बां तेना है  
सोहू तो आशिर देना है  
आज सहीदी रक्त न गया  
निकलो पहल बसानी चीला  
आज धमनिगा फरक उठी है  
हाथों में बहू हो हथ गोला  
मुष्टों को मास खानी है  
कानी को मान बहानी है

गम साया तो बहुत बुरा है  
चाहे हो मोहलान परती है  
भूत बलो पाठ को सोनी से  
दुस्मन करता जाल फरेवी

माक की मर पी जानी है  
अरि देना आज मुलानी है  
गलत बनी हथ भारत वाले  
लेकिन ररा में महाफाल है  
पाक बने नगाको मुन लो  
भारत वाले महाप्याल है  
सम शिव की नीर जगानी है  
तृतीय जाल सुलवानी है

मय को तो हम बना चुके हैं  
जब से राशा ने ररा भेला  
मोत मराठे जीत चुके हैं  
खडग शिवा जी ने जब भेला  
हम को करनी कुरवानी है  
जैसे ही, जीत मुलानी है  
मह की आधी को बोली रे  
कीन रोकने वाला जग में ?  
वाल आस कर चले घेर जग  
कीन रोकने वाला मय में ?  
हर माद घेर की खानी है  
दुस्मन को मुंह की खानी है

पक्ष न्याय का पक्ष सबव है  
हर पल पर इतिहास कह रहा  
मदा सत्य की जीत रहीगी  
पात पात में पवन कह रहा  
जीवन की वही कहानी है  
सोहू की नदी बहानी है  
हम भूटी में लीख चुके हैं  
दूट बलो लेकिन मत भुकरना  
बर्त निरे अवार पड़े तुम  
मरना या आगे ही बड़ना  
योदान की कसम दिखानी है  
आवादी हमें जिवानी है

★ यज्ञ करने के बाद यज्ञ के सामने खुद रखते की प्रतिष्ठा करने हमेशा शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा को बुरे विचारों तथा बुरे कर्मों से दूर रखने का पूरा प्रयत्न करना चाहिए। यही बुद्धि करना है।

(गंगा के आने)  
 प्रसूत घटनाओं के क्रम और रूप, मे पता चलता है कि अराष्ट्रीय तब किस भीषणता पर उतर आए हैं ? जैसे—(१) ७ जनको मेल्बर की गोता कुमारी नामक लड़की का अपहरण हैदराबाद के मकान से अर्वांगतों की किया जाता है। (२) ३१ जून को वालीबन्धा मे एक नवजवान संकर का बच किया जाता है। (३) पहली जुलाई को मुजबारहोज मे मिट्टी के थोर तक के अंच मे बीच बाजार एक साधारण से बात पर एक दल घबरेल खरद होकर आता है और दिग्गदहारे हुकामदारों और रास्ता चलनेवाले राहियों पर अत्याधुन्य आक्रमण कर अशांति उत्पन्न कर देता है। (४) ६ जुलाई को 'भैसाद-उम-जमी दिवस' के अवसर पर मुग़ाईय मेदान में हिन्दु बन्धक बोंडे की ओर मे बाला जी मन्दिर में प्रस्थापित नवी की मूर्ति का शिर अक्षित कर दिया गया। घहर के पुराने भाग में ७ स्थानों पर जिनमें अधिवादा, वालीबन्धा और जलान्वा ना (दुर्गनी अलम) भी सम्मिलित है, वह नव गुणदायी के बंध बने हुए है। यहा किमी सभ्य गयी का चलना दृश्य हो गया है।

तेजगंगा क्षेत्रिय जिनो के कुक्षेक स्थानों पर भी सहर की इन घटनाओं का प्रभाव पडा है। और कई एक स्थानों से शांति भ्रमता के समाचार उपलब्ध हो रहे है। पिछले वर्ष जुलाई के मास मे ही मादअपेस मे हत्यामा हो हो गया था। इस दुर्घटना से घायल उस्मानिया चिकित्सालय मे चिकित्सा के उपरान्त स्वास्थ्य लाभकर निकले तो उन समय भी 'पाकिस्तान जिवादार' 'शार्वर मुर्दाबाद' के नारे लगाये गये। कुछ वर्ष पूर्व बोधन आदि मे भी पाकिस्तानी स्वज लहरानेको दुर्घटनाएं घटी थीं।

आयं प्रतिनिधि सभा और ऐसी ही अन्य राष्ट्रवादी याति समर्थक सभाओं मे इस प्रकार की नारी दुर्घटनाओं के बारे मे तो समय-अवसर घटती रही है चले और सार्वजनिक रूप में इनकी तीव्र निन्दा करती रही है। और इस सम्बन्ध में अपने दृष्टिकोण को राज्य के कर्मचारों तक पहुंचाया भी। किन्तु राज्य की उपेसा और विवेकपर गृह विभाग व पुलिस की पक्षपातपूर्ण व्यवहार और दबकी अकर्ममत्त मे राष्ट्र विरोधी तत्वों को प्रोत्साहित ही किया है।

चिकित्सा परिसराम स्वस्थ अब कोई दिन

हैदराबाद नगर में साम्प्रदायिकता के उभरते चेहरे !

स्मरणा-पत्र  
 जो कि  
 माननीय मुख्य मन्त्री जी,  
 आन्ध्र प्रदेश की सेवा में समर्पित किया गया

साली नहीं जाता कि कोई छोटी बड़ी दुर्घटना न हो जाए। क्या ऐसी दुर्घटनाएं जिनका कि सन्धि: उपर उल्लेख किया गया है, हमारी राज्य व्यवस्था और अधिनियम के लिए गति प्रस्थापक के मां में सुनो चुनौती नहीं है ? जो एक ज्वलन्त प्रश्न है।

(ब) सरकार भाष्प विधेयक—

इस विधेयक का पारा ७ मे उर्दू के विधेय रूप मे उल्लेख किया गया है जब कि राज्य मे अन्य अन्य सत्त्वको की भाषणें जैसे मराठी, कन्नडी, नागल उडिया आदि बोली जाती हैं। विधेयक मे दत्त अन्य सत्त्वको की भाषाओं का कोई उल्लेख नहीं है जिसमे यह अनुमान होता है कि राज्य सरकार इन भाषाओं को अन्य सत्त्वको की भाषाओं के रूप मे स्वीकार करती भी है कि नहीं ?

(ग) शिक्षा विभाग आन्ध्र प्रदेश की कार्यवाही—

आर.सी.म. ३७८। ३. ११.३.६५  
 दिनांक १३-९-१९६५  
 इसके द्वारा कानून छात्रसुनियों के विधेय मुसलमानों को मरदाना दिये गये है।

(क) शिक्षा विभाग आन्ध्र प्रदेश की नियम नं० १३४—

इस नियम द्वारा उर्दू माध्यम के स्कूलों मे सूबहार को पूरे दिन की छुट्टी देने की घोषणा की गई है।

उर्दू की हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों की भाषा कहा जाता है, परन्तु जाचयें कि कि उर्दू माध्यम के स्कूलों में सूबहार को पूरे दिन की छुट्टी की घोषणा कर दी गई है।

(ख) शिक्षा विभाग आन्ध्र प्रदेश से सम्बन्धित नियम संख्या २०४ व २१९ (३)—

इस नियम के अनुसार नियम क्रमा तथा व्यावसायिक विद्यालय तथा महाविद्यालयों मे सम्पूर्ण मुस्लिम बालकों को आधे दुष्क की तुलना घण्टन स्वीकार की गई है।

यह एक लज्जास्पद ऐसी मुषिया है जो सुने बन्दो पक्षपातपूर्ण साम्प्रदायिक मनोवृत्ति का प्रदर्शन करती है। यहा विचारसौय विधेय यह भी

है कि इन विचारधर्मों में जो उर्दू माध्यम द्वारा सञ्चालित हैं और उनके द्वारा कई एक गैर मुस्लिम छात्र भी लाभान्वित होते हैं व राज्य द्वारा यह जो शिक्षण संस्थाएँ, आर्थिक आदि महयोग प्राप्त करती हैं इनके लिए राज्य का इस प्रकार का पक्षपातपूर्ण साम्प्रदायिकतापूर्ण व्यवहार राष्ट्रीय समरान और नियम राष्ट्रिय सरकार के उन्पातवर्षों के अनुबन्ध हो सकता है। स्वयं दूरदर्शी नियमक मुसलमानों मे ऐसे पक्षपातपूर्ण व्यवहार के लिए विन्ता व्यक्त की है और इन्हें अनुचित एवं अनायवक बताया है। साथ ही ऐसे अनुबन्धपूर्ण प्रयत्नों मे जनता के बहुत बड़े भाग को विचारने पर विवश कर दिया है कि स्वयं सत्ताधारी राज्य के कर्मचार और हमारे अकर्मवारी कार्यसे नेता कौनो दिशादृष्ट निराद के उन दृष्टिकोण का स्पष्ट या अस्पष्ट समर्थन तो नहीं कर रहे है कि जिन मे दक्षिण मे दलके इन्ही प्रयत्नों के परिणामस्वरूप एक और पाकिस्तान की प्रस्थापना को प्रोत्साहित प्राण हो सके।

गाय के बिद्युद आधिक प्रत्येक प्रति भी मुसलमानों मे दृढके बध द्वारा अर्थों की भावनाओं को उत पहुंचाने का भयावह हथियार बना दिया है। सिकन्दराबाद और हैदराबाद मे बीच बाजार मोहत्या की कई घटनाये घटी है जिस से कि हिन्दुओं की भावनाओं को अथात पहुंचाकर उत्तेजित किया जाये इसके अतिरिक्त भी गो मात की दृष्टाने नवी-नवी खोली जा रही है और इन मे ऐसी दुष्कानों की संस्था बहुतायत से हो अपने अनुसन्धित-पत्र नहीं रखती। गो हत्या को ताकात रोकने की आवश्यकता है।

हमें किमी जाति या सम्प्रदाय के आधार पर किसी मे भेदभाव का व्यवहार अपेक्षित नहीं जन्वु जब राष्ट्र की अवस्था और राष्ट्रानुति घण्टन पर ऐसी घटनाये प्रभावकारक होती दिखाई दे रही है तो हम सब स्थिति मे केवल मौन दर्शक की भांति निराश्रय नहीं बैठ सकते। हम अन्य मे मांग करते

है कि—  
 १. अराष्ट्रीय सरकारी गतिमों को रद्द किया जाए।

२. वास्तव मे प्रत्येक को विधिक श्रेक करने के लिए मुस्लिम में उपरिख्य अराष्ट्रीय तत्वों को निष्कास बाहर किया जाए।

३. उपकीकरण की भावनाओं को फैलाने वाले विमेदार लोगों के विरुद्ध ठोस कदम उठये जाए।

४. मन्विस इतिहादुल मुसलमोन पर लक्ष्य बाधनी लगा दी जाए। यदि उपरोक्त इन मामों की पूर्ति दीवध न की जाएगी तो हम राज्य की विमर्डी हुई स्थिति को मुधारने के लिए और दूसरे उपाय मोच्छे पर विवश होयें।

हम हे अपके—  
 प० मरेडम प्रधान, आयं प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण, मुसलमान बाजार हैदराबाद। महन्त बाला मेवादास, प० हरिनारायण धाम, प० पी० वी० वीरभद्रराम, प० नारायण धाम्नी।

★ ★ ★  
 आयं प्रादेशिक प्रतिनिधि  
 उप सभा देहली का  
 वार्षिक निर्वाचन

प्रधान—श्री दीवान चन्द जी डेकेदार, उपप्रधान—म किशनचन्द भी, श्री आर. मी. मुद, श्री दयाराम जी धारधी, मन्त्री—श्री आमानन्द जी राणेठ नगर, उपमन्त्री—श्री गौरीशकर जी, श्री ओमप्रकाश जी लतावड, श्री दरबारीलाल जी एम ए. कोषाधर—श्री दुग्गलाल जी गोरी, मेखानिरीतक—श्री देवरान की कोठी।

दस्तावेज नाम  
 उपमन्त्री

त्रायं समाज मंडी (I.L.P.)

१-०-६६ मे १-१४-६६ तक आयं समाज मंडी का वार्षिकोत्सव सम्पन्न हो रहा है। इस अवसर पर प० लतराम, बल्लरीराम जी की मंडणी के मनोदूर भजन प्रतिनिध हुवा करेंगे। १-१०-६६ से पूज्य महाराज बानन्द स्वामी जी महाराज की कथा हुका करेगी सब बने प्रेमी इस अनुभवार्थ से लाभ उठाए।

लतराम बहज  
 मन्त्री समाज

★ जो सच्चे अर्थ मे देवता हैं उनको पूजा अर्चना उन मे यथासम्भव व्यवहार करना ही देवार्थक है। पंजर तथा बू देवता नहीं और न ही पूजने योग्य है।





दैनिक पान नं० ३०५७

[आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि मभा पंजीय-जालन्धर का मासाहिक मुखपत्र]

Regd. No. P. 121

एक पान का मूल्य १३ पैसे

वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६, अंक ४२

१७ आदिश्वर २०२३ रविवार - इयान-२०२३ १४२ - २ अक्टूबर १९६६

(तार 'प्रादेशिक' जालन्धर)

## हिंदी का राष्ट्रभाषाके पद पर शोभित होना निश्चित : देसाई

अर्थ जो को त्वय मे बिना स्तर व शक्ति व। विकास असंभव

२३ सितम्बर—भूतपूर्व विधानसी श्री मोरार जो देसाई ने आज कहा कि हिंदी का राष्ट्रीय भाषा के रूप में विरोध करने वालों को यह सोचना चाहिए कि वे देश को क्या न जायेंगे। उन्होंने कहा : यह निश्चित है कि बहुत समय से पूर्व ही हम हिंदी को राष्ट्रभाषा पाएंगे।

अखिल केरम हिंदी प्रचारकों की प्रस्था का उद्घाटन करते हुए श्री देसाई ने कहा कि जब तक हमारे देश की अर्थोत्पत्ति के अभाव, एक राष्ट्रीय भाषा नहीं होगी, हम मान्य की शक्ति और स्तर का विकास करने के योग्य नहीं हो सकते। कुछ लोग यह सोचते हैं कि हिंदी को अधिक महत्व देने से प्रादेशिक भाषाएं कमजोर होंगी। श्री देसाई ने कहा कि ऐसा भी समीचीन भावना नहीं है। उन्होंने हिंदी प्रचारकों से कहा कि वे अपना हिंदी का उपाहार में प्रचार करें ताकि अर्थोत्पत्ति का स्थान हिंदी को देने की प्रक्रिया द्रुत स्वरूप हो सके।

आप ने कहा कि स्वतंत्रता में वे पूर्व लोगों को हिंदी को भारत की भाषा बनाने में कोई आशंका नहीं थी। लेकिन स्वतंत्रता के बाद कुछ लोग हिंदी को सत्ता से दूर करने लगे हैं। उन्होंने कहा कि हिंदी के सम्पर्क का प्रादेशिक भाषाओं की कमजोरी बनाने का कार्य दूरचाही नहीं है।

## वे दा मृत

हे वीर ! तू महान है

बरामहां त्रिसि सूर्य बडादित्य महां त्रिसि ।  
महांस्ते महतो महिमा त्वमादित्य महां त्रिसि॥

अर्थ :—हे वीर ! तू जो (वद) सचमुच (महा अग्नि) महान् है (सूर्य) तू सूर्य के समान है। (वद) सचमुच (अदित्य) तू अमृत पुत्र है, अन्धकार का नाशक है तथा (महान् अग्नि) तू महान् है। और (महान्) बली है (ते) तेने (महान्) महान् की (महिमा) सग कीर्ति भी महान् है। तू जो अमर है, अदित्य है तथा (महान् अग्नि) तू महान् है। हे वीर बाँकुरे ! तू स्वयं भी महान् है तथा तेरी महिमा भी बली है एव तेरे बचन, कार्य भी महान् है। राधान और सूर्य नीच हो कर तेरा स्या बिनाइ सकते हैं।

### इस का भाव यह है

हे वीर वर ! तुम छोटा कौन कहता है ? शरीर की प्राकृति में चाहे तू छोटा-सा दिखलाई देता होगा। किन्तु तेरे जीवन में, विचारों में तथा कार्यों में जितनी शक्ति है, जितना बल पराक्रम है, जितना प्रभाव है उस का सामना कौन कर सकता है ? जिस प्रकार आकाश में चमकने वाला सूर्य महान् है तेरवन्तु है, आदित्य है। अपने प्रकाश में सारे ही अन्धकार को मार २ कर भाग देता है। उसी प्रकार से हे वीर ! तू भी सूर्य के समान ही महान् है तेरे कार्य भी महान् हैं। तेरे विचारों की किरणों की अपने प्रकाश से पाप के अन्धकार को मार भागती हैं। तू सूर्य बन कर राश्यों विनाशों, बंदी बिरोगियों को मार २ समाप्त कर देता है। तू वीरता में नेत्र में आदित्य है।

अर्थ १३-२-२२

तुम्हारे उद्देश्य—जीवन का लक्ष्य, उसकी प्राप्ति के लिए सत्यं माय में पदारथ तुम्हारे लिए आकर्षक है ! हा, तुम जो मुहूर्तनी उपा के मध्य में परम सत्य मात्य धाम में दिन प्रति दिन, अपने असीद्ध -अपने विर -वांजिन ध्येय की प्राप्ति के लिए एक कल्याणकारी महती शक्ति का आहारण करने हो—उस दिव्य गुणधर्मो सरस्वती देवी को पुकारते हो, जो वर और अन्न, धन और तुम्हारा मार्ग, दोनों की मन्त्रावका है। स्वस्वता, निर्वन्ता और शान्ति की परिपूरिका है।

धैर्यो न, धीमन्ति भवतयो भी तुम्हारे हो विचार, विचार के अनुपूरु कंठा मधुर एव शान्ति प्रद उपर कर रही है।

अं शान्ती देवी रमिच्छत आपो भवन्तु पीयूष । लको शंभु वसन्तु न ।

## ऋषि दर्शन

स एकोऽद्वितीयः

वह परमेश्वर एक है और उस मेंवा दूसरा और कोई नहीं है। वह और वेदान्त रूप से देखा और अनेक है, पर महान् देव वह भवमान् एक है। और न कोई होगा ही।

### ईश्वरोपासका मेवाशिनः

जो ईश्वर के उपासक होते हैं, प्रभु के पाप बँटते हैं, प्रभु-निष्ठ हो जाते हैं, वे मेवाको हो जाते हैं, शान्ती बन जाते हैं। प्रभु की उपासना से मानव को मेवा की प्राप्ति होती है। उस पिता का बन जाने में सब कुछ मिल जाता है-

### सुधाविधारणम्

जितन भी सूर्य आदि के वे वस्त्र २ लोक हैं इन्का चारस ही परमेश्वर ही कृपा है मनुष्य को उन की मन्त्र ही नहीं मन्त्र। इस सभू के बिना और कौन ही नितिन इत विनाइ विषय को चारस कर सकनी है।

### त्वं मे विनय सोमपाः

हे अपना मन्त्र का रत्नीवा रत्त सिमाने बापि परमेश्वर ! हम आप के ही तो अमृतपुत्र हैं, अन्न दातक है। आप हमारी सब और में रक्षा वरें। हर सकल से हमारा परिपाल्य करे। आप के सिवाए हमारी रक्षा और कर ही कौन मकना है।

आप्य मु वि वा ते

सम्पादक—त्रिलोक चन्द्र



मनुष्योपनिषद् में इन्द्र ने कहा  
 प्राणिक की उत्पत्ति कब होनी पर  
 विश्वस्य स्थिति को भीषण विद्यमान के  
 पास समिधाए: होकर जाने का  
 आदेश दिया है। अब ब्रह्मविद्यासु  
 शास्त्र को पूर्ण रूप में पढ़ना-या दान-  
 उपवासि इत कमों से बहुत बड़ा  
 के प्राप्त न होने का ज्ञान ही जाता  
 है और वह पूर्णतया संसार के सत्त्वा-  
 सत्य विवेक होने पर मत्सजान  
 प्राप्त्यर्थं समिधाए: हो, वेदज्ञाता  
 ब्रह्मन् बुद्ध के समस्तु उपनिषद् हो,  
 किन्तु समिधाओं से संकेत करता है।  
 जिन विभि प्रकार दूध से बना हुआ  
 वे समिधाए पुनः दूध से नहीं जुड  
 सकती, उसी प्रकार भी विवेकी  
 होकर जान चुका हू कि इतके बहुत  
 अर्थात् ब्रह्मण्य कर्मों से निकाम ब्रह्म  
 की प्राप्ति संभव नहीं, अतः विवेक  
 होकर आया हू, दुबारा विवेक का  
 कोई प्रयोग मुझे उसकी ओर  
 बाधकान न कर सकेगा। मैं आत्म-  
 ज्ञान के परित्र मार्ग से विचलित न  
 होऊंगा। इसकी सादृशी है भरे हाथ  
 में का समिधाए। जो कट कर पुनः  
 दूध से नहीं लह सकती।

गुरु ब्रह्मज्ञान पाने के योग्य ऐसे  
 साधक को ही दुर्लभ मान्यु जन्म को  
 जिते साधकको ने देवीता-दिश्य  
 मनु-अमृतपुत्री और देवपुत्री सर्वादि  
 उत्तम नाम देकर अति पवित्र ऋषि  
 आश्रम बताया है, पशुवन न बनाकर  
 देव बन-नयो भूमि बनाने की शिक्षा  
 देता है। मानव तन्मू के देव प्राण  
 पाये जिना देवाधि देव ब्रह्म के इष्ट में  
 प्राप्त किए जाने की बात प्रायः  
 बरम्भ है। अतः माधक के साधना  
 द्वारा इते अयोग्य और अपराधिता  
 तन्मूमि बनाना पड़ता है।

प्रथम है कि साधनमय मानव  
 अपनी मुख्या तथा कुछ प्राणिक केविद  
 भरसक यत्न करते हुए मुदुदु शास्त्रों  
 का अध्ययन लेते हुए भी, अपने अनेक  
 प्राकृतिक प्राणिक साधनों से अपने को  
 केन्द्रित करते हुए भी नित्य का बाहिक  
 हो, वेद की कल्याणी बाणी का पाठ  
 पाठो होते हुए भी प्रभु में अनेक  
 विचारा और निष्ठा रखते हुए भी  
 कर्मों नहीं शाव होता! इसकी दंभभाव  
 विचरानापर मे कर्मों दावा जोह हो  
 जाती है? प्रायः सर्वसाधन, यथासाधित  
 प्राप्ति करने पर भी इतके शीघ्र साध  
 को नहीं होता? ये उपरोक्त सभी  
 प्रश्न साधन मार्ग की ओर जाने वाले  
 पथिक को अनेक बाध चिन्तन ही  
 नहीं अर्थात् विनाश भी कर देते हैं।

वार्तिक प्रश्न

देवनगरी का शोधन

श्री पृथ्वी राजा सास्त्रो प्रथम  
 इन सभी प्रश्नों का उत्तर अपने-  
 वेद के कर्तुषु काह के तीसरे सूक्त में  
 'आधादि निष्कारण उपम' के नियमों  
 बताया गया है। ऋग्वेद के ७३ मन्त्र  
 में भी निम्न प्रकार से दिया गया है—  
 नोऽम् उन्कृतायानुं सुभुक्त्यायु  
 जहिसवानुमुत कोमक्यायुम् ।  
 सुभुक्त्यायु मधुवायुं सुपदेव

आवसमान पादरथैः बहुती  
 नहीं, परन्तु उक्त कर्मों द्वारा जो यह  
 मान्यु नहीं कि उसी की राज्य बना  
 में स्थितो नहीं संस्था में था, वेद,  
 साध, व्यक्तिगत संस्था के राष्ट्रपती  
 पशु रूपे रहे हैं। राष्ट्र में नित्य ही  
 राष्ट्र ही जो साधुके में मिलने ही  
 सीताहरण करते हैं, जिनको वह अपना  
 शिरोपी नुभुता है।

प्रभुस्य रस इन्द्र ॥  
 ७० ७१-७१२२ अ० ८१-८१  
 इसी मन्त्र को अवर्षवेद में सुदो  
 के सुपात्रे के लिए (राजा) इन्द्र को  
 आजा देकर राष्ट्र को सुभो करने का  
 प्रकार बताया गया है।  
 मनुष्य की वृत्ति रही है जब भी  
 अपनी समकालाओं की ओर इस का  
 ध्यान गया है, इन्से प्रधान किया है  
 कि इसका उत्तरदायित्व अक्षयताओं  
 के निमित्त न होकर किसी भिन्न का  
 ही हो।

उपरोक्त अर्षं जेद के चतुषु काह  
 के तीसरे सूक्त, ऋग्वेद के तथा  
 अर्षं वेद कर्मों में वेद ही मनुष्य  
 धनुको का संकेत है, जिन के कारणों  
 से अनेक साधनाएँ करने पर भी साधक  
 का जीवन देव जीवन न हो कर पशु  
 जीवन बनता जाता है।

हम लोग मन में रखने वाले  
 पशुको ने अपने को ही कर सुप्रतिष्ठ  
 समको है और दूसरी ओर उसी की  
 सवति में रहने वाला 'वेग' प्रभुभक्त  
 हो कर बड़ा का ज्ञान लाभ करता  
 है। अतः विद्वद्वा का विश्व पशु  
 हमारे मनुष्य भवन को राष्ट्र भवन  
 बनाने में साधन नहीं अर्थात् इस देव  
 भवन को प्रतिष्ठ करने वाले ६ धनु  
 क्षेत्रों में जो हमारे मित्र बन कर हमारे  
 देव भवन में ही निवास कर रहे हैं,  
 जिन पर हमें धनु होने का, हिसक  
 पशु होने का भ्रम ही नहीं होता—  
 उसी ने इत ऋषि धाक को हिसा-  
 स्वनी बना रखा है।

- (१) विद्यार्थी परीक्षा अक्षयता न  
 पा सके पर अपनी अप्रयत्नशीलता  
 को छुड़ाकर अध्यापक की अनेक नुस्त्रियों  
 को काररग बनाता है।
- (२) विवाही मनुष्य अपने पतन  
 में रंग और प्राकृतिक तत्त्वों के आदर  
 का आशय से अपने अस्वामी प्रभाव  
 पर परदाँ बालता है।
- (३) शोभी रोम के कारण प्रकृति को,  
 प्रभु को, पूर्व जन्म के कर्मों को, जन  
 प्राणु को, अधिक परिभय को तो  
 ऊंचे स्तर से कहता है परन्तु अपने  
 अपेक्ष्य सेवन-ब्रह्मचर्य हीनता-जिज्ञा  
 के अस्वभाव का दोष जानता हुआ भी  
 नहीं कहता जानता—वादे वह अपने  
 मन से यह वह जानता है।

वे ही धनु रूप पशु मान ऋग्वेद  
 के ७३ मन्त्र के अर्थ में इत रूप में  
 वाँटते है :—

- (१) मनुष्यायुषु (राज के समान  
 कर्मों को का मान्यु की वृत्ति)
- (२) मनुष्यायुषु (गीध के समान  
 मरते विषकालोंकी समप्रतिहण्यु वृत्ति)
- (३) कोमक्यायुषु (विद्विदों के  
 समान का साधना की वृत्ति)
- (४) स्वपायुषु (अज्ञानों से गुराने  
 मत्सर को की वृत्ति)
- (५) उन्कृतायुषु (उत्पु के समान  
 अन्धकार, अज्ञान विद्यता की वृत्ति)
- (६) सुभुक्त्यायुषु (संदिग्ध के  
 समान कृता को मनीय वृत्ति)

यही ६ धनु जो हिसक पशुओं  
 के रूप में हमारे देव भवन को पशुवन  
 राक्षस भवन बनाए हुए हैं। इन का  
 चिरनिश्वास ही मनुष्य के अन्धकार  
 काउत्पान नहीं होने देता। और (अपे  
 क्ष्य-जीव-मोह, यद और मत्सर

हम) सुभुक्त्यायुषु ने-इत मान्यु की  
 उपनिषद्, विषय लक्षिक की उन्म  
 रोकी हुई है।

मनुष्य अपने वाहुर किनातामन्त्र  
 की अपने पतन को काएलु बनकर,  
 कभी राष्ट्र, कभी राजा, कभी भावा  
 सिला तथा कभी पराजितो को समय  
 समय पर अपनी साक पड़ता से दोषी  
 सिद्ध कर जाता से अपनी मान्युता  
 बनाए हुए है।

शोऽम् यस्त्वयोम न तियमो ।  
 विषयो यन्म सयमः ।  
 इन्द्रजाः सोमजा अर्षंशुभ्रि  
 व्याघ्रजन्मनु ॥ अ० ४१३१०  
 इस मन्त्र में देव भवन में पुत्र  
 रूप से पड़े हुए साधना रूप धनुओं  
 पर विजय पाये के लिए दो प्रकार,  
 बड़े सुन्दर बताया गए है।

यह स्पष्ट रूप में समझने के  
 आवश्यकता है कि-योग्यता, योग्य-  
 वेद्य, ईश्वरिय आदि अनेक आधेयों में  
 मानव का व्यवहार किना व्याघ्र-  
 सर्पदि विषिने जीव से कम नहीं  
 होता। अतः इस मन्त्र में आन्तरिक  
 साधनाओं पर यम नियमदि द्वारा जब  
 तक नियह न किया जाय तब देव  
 नगरी का योग्य नहीं हो सकता।  
 उपरोक्त मन्त्र में देव नगरी के सद्यो-  
 नार्थ में उपाएँ उताएँ पाएँ हैं।

(१) इन्द्रजा (२) सोमजाः ।  
 आत्मका के विकास से मनुष्य अपने  
 अन्तःकरण सुशुद्ध अर्थात् मन-बुद्धि-  
 चित्त, अहंकार को समर्पित करे।  
 प्रत्येक आधेय की सेवा में उसके मूत्र  
 कारण को शांत भाव से विवेकी हो  
 कर साथ पक्ष का प्रहलु हो अस्व-  
 पक्ष का त्याग करे। एक प्रकार देव  
 भवन से राक्षस निष्कासन का यह है।

मन्त्र में धनु-नाशन विधि के साथ  
 संयम से समनुन रखने की आवश्यकता  
 का उपदेश भी दिया गया है जिस  
 संदिग्ध पर समझ हो जाने उरते मात्रा  
 अधिक ताप न दिया जाने अथवा  
 प्रतिनिधता हो कर उपजत होता संभव  
 है। जिस वादना पर समय नहीं हुआ  
 पर उस पर दमन किया का प्रयोग  
 किया जाने, यही स्थिर चित्त हो ब्रह्म  
 मार्ग की ओर जाने हेतु अर्षं विद्या  
 का नियम है।

दूसरा प्रकार है—'सोमजा' संयम  
 की साधना तभी संभव होती है जब  
 देव मन्त्रिने में पुरे राक्षसी भावों का  
 भोजन की समाप्त कर दिया जाये।  
 अर्थात् 'शोभक वृत्ति' योग्य प्रयोग  
 से, साक्षिक भोजन से, स्वाध्याय और  
 सन साधनार्थ से धैर्य की सेवा।  
 (शेष पृष्ठ ६ पर)

सम्पादकीय—

# आर्यजगत

वर्ष २६ | रविवार - ०२२, २५ सितम्बर १९६६ | अंक ३६

## सभा का युवक संगठन

आर्य प्रादेशिक सभा पञ्जाब जालन्धर में अपने गत वार्षिक वन्दन अभिवन्दन में इस विषय पर सम्भीरता से विचार करके सर्वसम्मत निम्नलिखित था, कि अपने युवक समाज को संगठित करके उनको समाज के विद्यालय कार्य के लिए उपयोगी बनाया जाये। यह तो निर्विवाद तथ्य है कि युवक वर्ग किसी भी समाज एवं राष्ट्र के स्वस्थ शरीर में मनोरंजन एवं स्वस्थ माना गया है। यह समाज का जानबल है, शांतिस्थानी भूजा है। आने वाले समय के समाज और देश को सम्भालने का महान् ज़ायामान है। युवकवर्ग एक ऐसी नदी की प्रखर धारा के प्रवाह के समान है, जिस में वेग भी है और गर्जना भी। बड़ी में बड़ी धारां को बाधा को बहा देने की भारी शक्ति भी है, समाज के दिव्यजीवन के अनुपम भवन के निर्माण करने की पक्की आधार तिला भी बनी है। जहाँ भी युवक आगता है, वहाँ परिवार नगर, समाज और नारी जाति आगती है जहाँ यह मो जाता है वहाँ सब कुछ ही मो जाना करता है। यह वृत्ति वैद के सुन्दर शब्दों के अर्थ के रूप में विद्याओं को तपाने वाली असुर्य, अनायास से कभी सम्भोता न करने वाली तथा पाप-नाप की दिवालों को हिल्ला देने वाली है। यह वह प्रदीप अमिता ज्वाला है, जो एक बार यदि प्रज्वलित हो जाये तो उस स्थान को सारी सुराहीयों को तिनकों के समान मस्य करके रख देती है। युवागमन पर सब को मुक्त गर्व व अमित मान होता है। राष्ट्रीय जीवन में तो युवको का बड़ा भाग होता है।

आर्य समाज के प्रारम्भिक मुनहले युग में एक युवक दल आया। उसने चम्बाल कर दिया। हूँ धर्म में वह युवान्द मचाता गया। अर्य समाज ने हर क्षेत्र में अपने युवक दिए। युवक अंशुली देवता महारामा हंसराज जी ने फिजान युवक मण्डल बनाया १०

मुस्तज जी, १० लेखराज जी का यौवन फिलाना प्रखर था। मन्चे बाह्यर १० मेहरानन्द जी प्रियमिन, सा० साईदास जी, पञ्जाब केमरी सा० नाजपतराय, १० लखपतराय आदि युवक दल ने क्या-क्या म्बाला नही कर दिया? राबनीरि में सरदार मस्त-सिंह, श्री चिम्पिन, श्री भाई परमानन्द श्री हंसराज सावरमण आदि न जाने कितने युवको ने राष्ट्रीय जीवन में फिजानो भागे कति मचा दी। आज भी कई युवक अपने अपने म्बानों पर आर्य समाज के काम में लगे है। किन्तु यह दल शरो के ममान अनम-अलम विखारा हुआ है। कोई समयन नही है। फिजानो बडी मस्तफा है, इन में हंसराज युवक है, पर समाज में कोई भी नही जाता। न ही आज उन को देवता हंसराज नरीसे प्रेरणा देने वाले ही? जब वे बड़े ० लोग स्वय ही नही अति तथा न ही आने की आवश्यकता सम-भले हैं तो युवको को प्रेरणा कहा में मिते। आज के नोगो को नो समाज के काम के लिए अवसर ही नही है और न मन में यह समाज प्रेम ही है। चलाचली का मोशा है। यही कारण है कि हमारा मारी युवक मन्डल सुरती दिवालों में जा रही है। उन रोकें तो कौन? अमि में अमि जलती एव जीवन में जीवन वतला है। जीवन में यदि समाज प्रेम न हो तो युवक वर्ग में कैसे होना मय देवता हंसराज जी के दर्द अरं शब्दो में यह ठीक है कि आज आर्यसमाज तथा उस की प्रायः सत्कार्य निस्सन्तान होती जा रही है। हमारे परिवारो व सत्कार्यो का युवक वर्ग समाज से बहुत दूर है।

समाज में इस पर विचार किया गया इस कमी को पूर्ण करने के लिये युवको के संगठन का काम भी अपने हाथ में लिया है। इस महान् काम के लिए उसने अपने योग्य, उत्साही विद्वान् व औक्सी वस्ता प्रो. वेदीमय जी एम. ए. जालन्धर को चुना है। माननीय प्रोफेसर जी आर्यसमाज के जगत के लिए मचे नही। वह पुराने

तथा मंचे युवक है। युवकवर्ग के संगठन में कुशल है, पहले भी इस दिशा में सुन्दर काम किया है हम सभा को। इस चुनाव पर बधाई देते हैं। माननीय प्रो. वेदीमय जी का स्वागत करते हुए उन से भी यही निवेदन करना चाहते हैं कि यह काम बड़ा महान् है, है भी आवश्यक। इस के लिए समय तथा मनोयोग देना होगा। संगठन युवक गठित करना है। ठोस कार्य करना होगा। युवक जाप से स्नेह रखते हैं आप के नेतृत्व में प्रसन्नता अनुभव करते हैं। सभा ने तो अपने युवकवर्ग के संगठन का काम अपने हाथ में लिया है। अब युवक वर्ग का भी कार्यवाही कि विद्यती शारो की दकडु करने में आवा ही जुट जाये। समयन में काम करना ठीक है। स्वाम स्थान पर अपने अध्यक्ष जी के कृपा-नुसार युवक सभा में युवक समयन का रचित काम करने को कम्पन्न रखें। काम बेशक थोडा २ हो परन्तु होना ठीक चाहिए। कामगी काम से कुछ न वसगा। अब युवा मन्डल पञ्जाब में मर्यादा में आकर उत्तरी बडी शक्ति बन जाए जिस पर सारा समाज गोचर कर मके। इसके लिए बडा भारी जेग है, बडे जेग है, बडी भारी छावनिया है। प्रभु करे यह विद्यालय काम बडता जाए।

## भारत का संतसमाज

आजकल सारे देश में गौहत्या को प्रतिक्रम लगाने के लिए एक व्यापक आन्दोलन चल रहा है। राष्ट्र के मविधान में गौरव्या के लिए बहुत कुछ लिखा हुआ है। गौहत्या को रोकने के लिए धारा विद्यमान है। उन्मोम वर्ग भी भारत को अर्थ बी मना न मुक्त हुए गए। जताने कई बार अर्यकी भाँनियो वाली नरकाय से भी कहा, मन्हा अनुरोध किया कि सारे भारत में गोबध का कलक दूर कर दिया जाये। किन्तु मुना किमी ने भी नही। बोलते वाली के मुस वर्य कर दिए गए, उन को जेलो में बन्दी बना दिया गया किन्तु गौरव्या का काम पूर्ण न हो सका। श्री राम जी तथा गोपाल कृष्ण के भारत में मीना मारी, अशोकक बेल की जोडी को प्रवीक मानने वाली सरकार गौहत्या को बन्द करने पर ध्यान भी नही देती। नोग मीन है। गौरव्या से उनको क्या काम? हूँ-नो का कितना अभाव हो गया है। चमड़े, आतो तथा शून के व्यापार के लिए फिजाना गोबध होता है। पककर नो शार शरीर काप जाता है। आज के

जीवन में शाकना मिटती जाती है। किन्तु सारे तो ऐसे नही है। समय-समय पर आन्दोलन होते ही रहते हैं। आज इस भारी कर्मक को निवारण के लिए सत समाज कम्पन्न कर रहे हैं। निवारण या नोक मन्हा का सत्य नही बनना। उसने मन्वी मण्डल में नही जाना। बह तो गौ-हत्या जैसे कलक को भारतीय जीवन से दूर करना चाहता है। यह वितो से इस काम में अनेक सत व्याप करके जेलों में पहुँच गये। पिछले दिनों लोक-सभा के बाहर ममान वर्ग मन्हा के नेतृत्व में मारी संस्थाओं का सहयोग प्राप्त कर प्रदर्शन किया गया। इन में मरकार से भी गौहत्या बन्द करने की मांग की गई थी। आर्यसमाज ने भी इस में पूरा-पूरा सहयोग दिया। अब भारी जन मन्हा में श्री प्रभुमन्डल क्युवारी, मध के नेता श्री मुक्त गोबबलकर जी, मार्वाँडिक मोन के मन्वी श्री राम गोपाल जी वाल जाने तथा अन्य मर्यादो के नेतृत्वो ने अजाज उठाई। गौहत्या बन्द करवाने के विभिन्न समनो ने जान की बाजी लगा देने की घोषणा भी की गई। अब मन् मन्हा डम आन्दोलन में आया है। वतना को सन्तो पर बडी प्रजा है। मन दिमो अमनन करन्डी आर्य मन्हा डाटा केरुन केराब चन्द की को धयानता में सब मर्यादो का मम्मिलिन गौरव्या मनेमन हुआ। आर्य समाज भी म्बान २ पर जतना है गौरव्या के भाव मरे लाकिय कलक मानन में जवरी दूर ही सहे—१०

## लारंसरोडमें वेदसप्ताह

आर्यसमाज मारंग नेड अमननर में निररुद लभन पत्नीव दिव्य उपनिषद तथा वेद-अन्यतह में कलक आर्य प्रादेशिक मन्हा जालन्धर के १० जिनिक चन्द मारनी द्वारा शरीर रही तथा मय मन्हा के पुराने शिरो अमनो-पत्तक १० जालचन्द जी के प्रवचन होये रहे। मन्मारोह में कन्मन्तीय का गुण्य पर्व भी मन्माया मया। मन्हा के वेदध्यापार में मय भी स्वधे की शक्ति का सभाज में निरवचन किया है।

## खन्ना में वेदकथा

आर्यसमाज मन्हा में वेद सप्ताह मन्मारोह में मन्माया मया। मन्हा सर्व-त्रिक के अनुनार मम में बाप हुए १० जिनिक चन्द मारनी की वेद कथा तथा प्रसिद्ध मारनी १० जलनारम जलनारम की मोडे-मोडे अमन होये रहे। यह कायंम हिन्दी पुत्री पाठशाला के विद्यालय प्रायश्च १० ता. १२ सितम्बर मन्मारोह १० ता. १२ करी रहा। अनना में पूरा-पूरा लाभ उठाया। मन्हा की वेद प्रखर भेजा गया।

चिह्ने पन्द्रह बषों में हम एक भवतन्त्र होने का प्रचार कर रहे हैं। हज़र दस शत को सार्धसत्ता सिद्ध करने में बहुत सफल हैं कि शालन में जन-उन्नत प्रशासी के प्रचलन से ही अहाँ में ज़रत मया जा सकता है। चाखवाल् राज्दों के योजनावद आर्थिक विकास द्वारा समीहित होकर हमारा आर्थिक पुष्ट्य भी जनताधिक मनने के लिये बेचैन हो उठा, लेकिन राज्द में जनतन्त्र के प्रचलन ने निद्र कर दिया है कि हमारा आध्यात्मिक व्यक्तित्व भी पश्चिम प्रसूत जनतन्त्र की ज़रूरी में जून हुआ जा रहा है। हमारा व्यक्तित्व इस तन्त्र के प्रति इतना आसक्त हो चुका है कि हमें और कोई भय ही नहीं मुझता।

अपेक्षा तो यह भी कि राज्द के आर्थिक व्यक्तित्व को पुष्ट करने के लिये पश्चिम प्रसूत जनतन्त्र शीघ्र ही भारतीय रूप में रग आया, लेकिन परिश्रम विपरीत ही प्रवृत्त हो रहे हैं। भारत का समन्वयकारी पिता-शय महा आकर मनोमातित्व रूपी मन्दानि का शिकार हो गया है। मानव के प्रति अजब आस्था के पूर्ण साम्राज्य भारतीय के अन्तःकरण में आज मनोशिकारों की ही मोज बनो है। प्रजातन्त्रिय दानक का अध्वन्य करने से ऐसा प्रतीत होता है कि यह पीडित एवम् पतित लोगों को पुष्ट बना पाक करेगा, लेकिन प्रवृत्त जनतन्त्र ने भारत के आध्यात्मिक व्यक्तित्व को ध्याविभ्रत ही किया है। यह मेरा निष्पक्ष निष्कर्ष है।

**समाज और सरगमों**

जनतन्त्र रूपी ज़रत के जवाहर-शाने की एकमात्र चावी चुनाव है। जहा चुनाव है वहा निश्चित रूप से चासाकी पलपनी है। मुनकें हुए व्यक्तिकर्मी भी चुनाव प्रशासी में आस्था नहीं रखते। मान-सिद्ध मन्दानि से भ्रत व्यक्तिकर्मी मुकुट एवम् महकिलों के लिये भर मिठते हैं। जरा रवग होकर कूट तो चुनाव की प्रशासी समूर्ण मानव मनुष्याय के आध्यात्मिक शांखलपन की प्रतीक है—वुनाब की चचा से ही नोग करने है जिन्ने मानव के अस्तित्व एवम् व्यक्तित्व की गारन्ता में सन्देह है।

इस दृष्टि से हम लिखाव है भी समाज शब्द का दर्शन नहीं समक पाये है। जिस समुदाय के सदस्य बर्तमान के प्रति ही समष्टि रखें

**हम क्या करें ?**

(श्री सुन्दरलाल बोहरा श्रीरगा भवन, जोधपुर)

ही मयाकिल होने के अधिकारी है। जिन मानव समुदाय में जीवन आर्थिक एवम् आध्यात्मिक असमानताओं से आक्रान्त है वह समुदाय समाज कदनाके का अधिकारी ही नहीं है। एक अनुत्तरदायी एवम् अनुशासनहीनता से भरत मयाज में ही 'अक्सर की समानता' का प्रचार किया जाता है। जहा व्यक्तिकर्मी "एकला रवीने केकला नको" की शूका को अपने रसत में रमा चुका है वहा उत्तरदायित्व का न तो उदात्तीकरण ही किया जाता है न उदेष्यता ही पनप पाती है। जार्य-कासीन भारतीय समाज व्यवस्था में ऐसा ही जनतन्त्र जन्मा और सच्चा जनपदीय बना। वैदिक व्यवस्था व्यष्टि पोषक होते हुए भी प्रतियोगिता में रहित रही है। वैदिक जनतन्त्र में सच्चा जन्तर यही है।

समृत्ति बिल्व में प्रचलित जनतन्त्र समाजवादी (अथवा साम्यवादी) होने का दावा करते हुए भी संघर्ष एवम् समर्पणों को स्वाधीन धरगु देने की हठधमिता करता है। परिणामस्वरूप समाज सन्ने अर्थ में समाजवादी न रह कर सघर्षवादी हो जाता है। ऐसे समाज का आध्यात्मिक व्यक्तित्व पनु एवम् पतित हो जाता है। हू, आर्थिक व्यक्तित्व पर कुछ प्लास्टिक अवश्य चढ़ जाता है और इस आचरण का आधिकार्य मुक्त बुद्धिवाद के प्रति पूर्ण अंध आस्था रख कर ही किया जाता है। फलतः समाज का नैतिक एवं आध्यात्मिक अह मूलप्राय ही जाता कोरे आर्थिक प्रचलन का प्लास्टिक-मुमा आवरण ओड गेने से मयाज एणसाओ एव कुण्डलों में भरत एक-कनाइसलमा बन जाता है। तदनुसार समाज की व्याख्या तथा साहित्य का सून भी मर्बोशुला: काचनन आभ-मिति की अट्टालियाओं में ही रहकर किया जाता है। परिणामस्वरूप समाज में प्रतियोगिता तथा प्रतियोग्य की भावनाएँ उपभक्त रूप में उपभरत उद्भूयता को जन्म देने लगती हैं। यों धरने: धरने: समाज धमशानोमुख होता रहता है। वर्तमान विस्व में प्रचलित प्रजातन्त्र एव समाजवाद से ही उक्त परिश्राओ का पीछण एव प्रचलन हुआ है।

**परम्परा की प्रताड़ना क्यों ?**

माज बीजन के फिशी की क्षेय में परम्परा को पीछण दसविय नहीं दिया

जाता क्योंकि इससे पुराताना जीवन पर पुन. हावी हो सकता है। यदि हकीकत में बात ऐसी ही है तो पुराने मुद्र, धराव तथा पूत को अनेक दु:साध्य व्यापियों का नाशक नवी माना जाता है? क्या पूर्व राति में उदररप किए गए श्लाघ पदार्थों से प्रात काल तक शरीर को शक्ति नहीं मिलती? क्या पुस्तक के चिह्ने एट्टो पर छपी हुई सामग्री का कोई महत्व नहीं है? क्या शरीर के पूष्ट भाग का कोई महत्व नहीं है? क्या छत को जामेबानी एक मोटी धार करने के बाद उस सीढ़ी का जन्मने कोई महत्व ही नहीं है? क्या नौ अक तक मिलती सीसने के बाद अक एक का कोई महत्व ही नहीं है? यदि इन प्रश्नों का उत्तर निष्पाद्यक नहीं है तो परम्परा का भी प्रजातन्त्र में पीछण अनिवार्य ही नहीं अपितु निवशाक रहना चाहिये। मूल और वर्तमान जलन किन्ने ही नहीं जा सकते, भविष्य को निश्चिन रूप से वर्तमान की ही परिध्रया एव प्रखर्यन है और यों कर्म के निष्पादन में कान-जम का कोई महत्व नहीं होना चाहिये। कर्म को काल का कोमभजन बनने देना अकमंथसा ही है। सच्चा मुजन काल-कर्म की कोठरी में वाहरी ही हो सकता है। सही अर्थ में भोजन का क्षेत्र वर्तमान ही है पर इसके लिये वीर्यवदक पाक मूल की भट्टो पर ही एक सकता है। अतः परम्परा की उणेशा शलाघ में भी बरदास्त नहीं की जानी चाहिये।

एतदर्थ हमारी वर्तमान में परिष्-मूल के अनुभववन्धी भावव में आर-मूल रहनी चाहिये। प्रजातन्त्र का भारतीयकरण तिम ही मन्थन है।

**उदात्तीकरण अथवा अनुत्तरदायित्व**

भारत में हम समाजवाद के द्वारा व्यष्टि की मनुद्धि चाहते हैं लेकिन व्यष्टि के व्यक्तित्व की ओर हमने आज तक सहानुभूतिपूर्वक ध्यान ही नहीं दिया है। हमारा प्रात प्रयत्न भोवलन के नेवल बतलने में व्यर्थ गया है. भोवलन के श्मेतर स्थित द्रव्य को बदलने की हृद सन्भव वेष्टा को हमने टाला ही है। हम व्यष्टि को सार्वधमिक तीर पर समुद्र बनाने के लिये उन्नत हो चुके हैं, लेकिन व्यष्टि के जन्त-करण में पनप रहे राज्य भावि समष्टि के प्रति रोमभव रोमाजुओं की ओर

हम आज भी उदासीन बने हुए हैं। यह तो समाजवाद रूपी छक्की में पानी भरना ही हुआ। आज हमें वही 'पुन-मूलको भव' की विरमना का शिकार होना पड़ रहा है। स्पष्ट शब्दों में कहें तो एक सार्वित प्रजातन्त्र में **राज्य का अस्तित्व ही नहीं रहना चाहिये।** लेकिन जब 'कायो - करवत' तक पहुच ही गये तो फिर चिचियाना नहीं चाहिये। राज्य द्वारा निर्मातित करों को देने में हिचकिचाना, रेवगाडियो में बिना टिकट यात्रा करना तथा भाई-भतीजावाद को जलाना व्यष्टि तथा सार्वित दोनों के लिये समान रूप से पातक प्रवृत्तियाय है।

एक प्रजातन्त्र में भी जब राज्य का अस्तित्व स्वीकार कर लिया जाता है तो वह व्याख्या की दृष्टि से भले ही अर्थ सन्ने से भिन्न प्रतीत होता हो, लेकिन व्युत्पत्ति तथा व्यवहार की दृष्टि से वह राजतन्त्र ही है। व्यक्ति ने जब भी अपने दायित्व को सफराने की कुण्ठता की है राज्य की शक्तिव्यों को पीछण बिना है। एक प्रजातन्त्र में राज्य (नौकर शाही) के स्थायी एवम् अनिवार्य होने का परिणाम होता है एक कुण्ठप्रसूत तथा एणसाओ से आक्रान्त समाज का अनुद्वय। ऐना प्रजातन्त्र में भी 'भारतीय' नहीं कहा जा सकता।

सहाओ के अस्तित्व में उकने हुए तथा अनुत्तरदायी व्यक्ति ही आस्था रखते हैं। एक मुनकें हुए व्यक्ति को उसके सर्माट्यरत दायित्व का समरूप बरदाने की कोई आवश्यकता ही नहीं है। इस प्रसंग में एक राव-स्थानी महाजन मनन पोष्य है— 'अकल शरीर अकरीयवा लागे दाव' अर्थात् दायित्व निभाने की प्रवृत्ति तथा वर्तमयना तर्हि व्यक्तिकर्मी सकार-जात मुद्र ही है तो उन्हे सार्वित रूप में लरीनना ऐना ही प्रथम होया जंसा एक बर्षकात प्रदेश में एक मोबर के जलन का निर्माण है।

**★**

★ गृहस्थी में रह कर जो हिंसा होती है उसको हूर करने के लिये जो अग्नि में भोजन के टुकड़े डाले जाते हैं तथा जो भोजन मिश्राडियो, नूले लंसाओ, भाषियो, कुत्तों, कुकुरों और पीढी आदि कृमियों को खिलाया जाता है यह कार्य भूयस्य व वलितवैभवय यत्र कलाता है।

★ अग्निहोत्र से मेकर अकवेवय यत्र पर्यन्त को वैभवय कहुते है।

सम्पादकीय

# आर्यजगत

वर्ष २६ | रविवार - ०२०, २ अक्टूबर १९६६ | अंक ४०

## संस्कृत की दुर्दशा और हम

भारतीय जीवन का सारा आदर्श और उसकी पुनीत पुरातन संस्कृति में है। यह संस्कृति विभव की सब भाषाओं की जन्मी संस्कृत में है। इस प्रकार संस्कृत भाषा सब भाषाओं की माता है और यह आधुनिक भाषाओं का सारा पत्र उस का पुत्र पुत्रियों के रूप में अपना परिवार है। अन्ये समय के बाद धर्मों में कई परिवर्तनों के कारण परिवर्तन आ जाता है। किन्तु बोद्धा-सा भी गम्भीर ध्यान इस बात का परिचय देता है कि इस धर्म का या भाषा का मूल स्रोत कौन सा है। विभव के मूल भाषा परिवार का अनुसन्धान होय पर भाषा विज्ञान में संस्कृत को सारी भाषाओं की प्रायः माता मान लिया है। भारतीयों के लिए यह बड़े गौरव की बात है कि उनकी संस्कृति इसी भाषा में है। हमारे उपनिषद, दर्शन, ब्राह्मण्य, इतिहास तथा अन्य ग्रन्थ भी इसी भाषा में हैं। भारत के नामाविष्वसंतों-मुर्शि कर्मकाण्ड की प्रक्रियाओं और परम्पराओं में संस्कृत का बड़ा स्थान है। इस भाषा को बचना होती है।

अब जिन देशों सत्ता लाने वाले अपनी भाषा भी भारत पर लाद दी। वे तो बले गये पर उनकी अर्थ की आज भी उनकी मानस पुत्रों, काने अर्थों उनकी भाषा में अपना हर काम करने वाले इस सौभाग्य में प्रत्येक क्षेत्र में अभी तक रुका रही है। आज भी इन्हीं दो प्रविष्टा काने अर्थों का सारे देश पर शासन चलता है। आज भी इतने बच्चों के माद भी हर स्थान पर हर काम के अर्थों की प्रभुता है। अपनी भाषा के रूप में आज भी हमारे देश पर अज्ञानी का शासन है। अपनी भाषा के प्रति मान ही नहीं। हर बात अर्थ की ही होती है। इस हनुमान में सब नहीं है। आसंस्थान की सत्ताओं, सत्ताओं व कमिष्ठियों में भी सारा काम अर्थ की ही होता है। बही वातावरण है।-तमिळु भी फर्क नहीं आया। सब की भाषी, बेबिधी, मलिन्य और मज-मज-अर्थ के अधिकतर बसाया है।

छपा भी एक कुल अर्थ की में है, सारे समाजों का कार्यक्रम, भी इंग्लिश में, विनमस्कृत पत्र भी उसी भाषा में तथा मान भी उस भाषा वालों का। किन्तु बड़ा उम्मासा हो रहा है। सब प्रगढ़ में बह रहे हैं। सब ने नया पी रखा है। यह सब कुछ श्रुति दयानन्द के नाम के नीचे होता है। न कोई अज्ञानता है और न कोई मुताता है। सब ने भाषा भी रखी है। संस्कृत की दुर्दशा पर तो क्या कहा जाये ? इस भाषा की बुद्धि हानयन के पुत्रों के हाथों जो भी जा रही है—उसे देख कर तो लज्जा को भी साज आने लगी है। संस्कृत देव भाषा का इस युग में दुर्दशा भारी अपना है ? आज हायर सेकण्डरी स्कूलों के बन जाने पर संस्कृत को बहा से निकाल दिया गया है। नाम मात्र के लिए रखा हुआ है। इस समय पंजाब में तो एक का कोई भी रक्खवाला नहीं है। संस्कृत परिषद पला नहीं कहा सितकिया में रही है। न संस्कृत का नाम और न ही संस्कृत वाले का मान। दोनों को एकके मारे जाते हैं। अपने राष्ट्र में देव भाषा की यह दुर्दशा ? न किसी के कान पर नू रेवती है न स्वामिनी की नस ही फडकती है। वारी और से संस्कृत तथा उस के पढ़ने वालों की फटकार पड़ती है। न कोई सच्चा बोले, न सच्चा, न कोई व्यक्तित्व बोले, न कोई आन्दोलन। आज पंजाब में संस्कृत को सर्वथा समाप्त किया जा रहा है। सारे स्कूलों में इस की अन्वेषण की जाती है। आज्ञापर भाषा में यह तमासा भी देखना या। भारत की ही मारा दिया गया है। अंग रेजी के वारि में देव भाषा के उपासकों का कोई ही समाप्त कर दिया है। कोई भी अपने सड़कों को संस्कृत पढ़ना आज नहीं समझता। वे संस्कृत भाषा को भूसा मारने वाली समझते हैं। किन्तु बड़ा जननी का निरादर है। संस्कृत की जितनी भी पोथी शास्त्र हैं, उन को पढ़ने ही क्या

मिलता है ? स्कूलों, कालेजों के लिए हज़ारों लाकों भी बंधे भर संस्कृत के लिए बैंकडों भी तो नहीं हैं। वे भी बन्द किये जा रहे हैं। कपुरथला का रणवीर कलेज बड़ा पुराना महाराजा का कालेज है। अब सरकारी बन गया है। लगभग ती वर्षों से इस कलेज के साथ जो संस्कृत का विभाग है, उसे महाराजा की ओर ने संस्कृत शिक्षा के लिए श्राप मिलनी भी छात्र आरान से देवभाषा पढ़ने जाते। अबतक सरकार भी देती है। किन्तु अब पत्रों में पड़ा है कि पंजाब सरकारने संस्कृत विभाग को तो सहायता है, पत्र भी बहुत नहीं, बन्द करने की घोषणा की है। अबतक वर्षों में यहाँ भी संस्कृत समाप्त हो जायगी। **संस्कृत को इससे बड़ कर क्या दुर्दशा होगी ?** किन्तुना दुल्ल है कि हमारी सरकार मछलियों, मुगियों सुराओं को पालने को लिए तो अधिकसे अधिक पैसा दे सकती है। भोगवाद के मार्ग पर सरपट बौद्धने के निमित्त लूप भागों की वृद्धि के लिए भी दे सकती है पर शोक है कि सौ वर्षों से मिननें वाली संस्कृत विभाग रणधीर कालेज कपुरथलाको चलती सहायता भी बन्द करना चाहती है। उसकी दृष्टि में मछलियों अच्छी है पर संस्कृत बेकार है। इस पर जनता ने भी क्या किया है ? कपुरथला नगर की कार्यसमाज संगठन पत्र व जनसभाओं ने बंडूक कर के इस के विरोध में सरकार को लिखा है। कार्य समाज सभ्यसुधार अज्ञानता के लिए एक बोने और भी प्रस्ताव पारित किये किन्तु और तो किसी के कान पर नू भी नहीं रँगीं ? भावना भर नूकी है। इस दुर्दशा पर क्या हम जायेंगे ? —विनीत कन्द

**हमारा देव प्रभार**  
आर्यसमाज का प्रमुख काम वेद प्रभार ही है। सब कुछ देवी के लिए है। अन्य सारे समाज हैं इस साम्य को पूरा करने के लिए। यह मूल है जिस के सुदरे पत्र पुष्प आदि माने गये हैं। यह आत्मा है तथा अन्य सब अर्थ ही तो है। आर्यसमाज के प्रारम्भिक युग में इस को ही विचार के

माना जाना या तभी उस युग में आर्य समाज का सब स्थानों पर दबता था, प्रभाव था, सम्मान था। निर्भयता से आर्यसमाज अपनी बात कहता था। यह बात मुख्य थी और सारी बातें गोल थी किन्तु आज स्थिति विपरीत है। वेद प्रचार तो गोल है तथा और सारी बातें मुख्य हैं। जो अवस्था आर्य विवाहों को है वही वेद प्रचार की बन रही है। पहले विवाह में संस्कार मुख्य था और सारी वस्तुएँ गोल थीं। अब वहा पर सातसप्तमा, सातानान, नाचगान, लेनादेना तो मुख्य बन गया है किन्तु वेदों पर विवाह संस्कार गोल है। वेद प्रचार को भी यही दशा है।

आर्य प्रादेशिक सभा जालन्धर देश में बड़ी प्रसिद्ध संस्था है। महात्मा हसराम जैसे देवता इस के संस्थापक थे। साठ साईं दास, बम्बो टेकचन्द, पं० मेहरचन्द जी जैसे इस के पीछे रहे। भारत के इतिहास में इस सभा का प्रमुख स्थान है। भारी जन-सेवा-कार्य इस में किया है। सब इन थका की दृष्टि से देखेंगे है। आज भी इस के विचार परिवार में बड़े संस्थापक महात्मा, शिक्षा विशारद, उच्चशिक्षित, सभा विभागाध्यक्ष, व्यापार के नेता, ऊंचे लेखक बनता, प्रियिपस तथा समाज के माध्य महारथी हैं। किन्तु सच्ची बात यह है कि आर्य समाज का वेद प्रचार का काम बहुत ठीक जा रहा है। जनता दूसरे संस्थाओं को प्रमुख मान कर उधर ही दौरती है। सारे राजनीति में लगे हैं। उसे ही प्रमुख मानते हैं। लोगों के पास आर्यसमाज वेद प्रचार का काम करने के लिए न समय है न दिव। न धन है न शक्ति। आज माझों अपने के विनिगा बनाने जाते हैं पर वेद प्रचार के लिए उन का भी दिवसिधिया निकल जाता है। हमें अनुभव है कि वेद प्रचार के लिए अब लोगों को कहा जाता है तो क्या है सुनना पड़ता है। परिणाम सामने है। आज तो कोई युवक आर्यसमाज का प्रचारक बनने को बहं मानता है। यह सब कुछ जानता है, देखता और समझता है। बाहर कोई भी दिन-रात घूमना नहीं चाहता। वेद-प्रचार के लिए धन देने में आनाकानी होगी है। हा यदि कुछ बंद न बंदे जाने लोग वेद प्रचार के लिए बाहर घूमने का समय वे तथा कुछ बंधे परिवार अपने एक अड़के को उपदेवक बनाने तो बड़ा काम ही। ★

# सत्पात्र का दान सत्पात्र को

## श्री बोलत राम जी शस्त्री ओ. टी. सिरौही राजस्थान

ईश्वर चन्द्र विद्यासागर कही जा रहे थे। एक मित्रिन शिखारी बालक ने सा कर पूंसा भागा। उन्होंने उसे पूछा कि यदि मैं तुम्हें एक पंसा दू तो तुम क्या करोगे? बाल ने उत्तर दिया 'श्रीमन्' तो मैं एक दिन भीख न मागूँ।

विद्यासागर। यदि वे दू तो? बालक। दो दिन भीख न मागूँ। विद्यासागर यदि आना दू तब? बालक। तब चार दिन नहीं मागूँ।

ईश्वर चन्द्र। भैया यदि आना दू गा फिर? बालक। महाराज देना हो तो दीविये मिरछाई से क्या लाभ? विद्यासागर। बेटा दूंगा अवश्य भेरे प्रश्न का उत्तर दो!

बालक। तो जी मैं 14 दिन भीख न मागूँगा।

विद्यासागर ने प्रसन्न मुद्रा से कहा फिरतीव? मैं तुम्हें एक थपसा दूंगा-कहो क्या करोगे? बालक भीमान्त तो फिर मैं सदा के लिये भीख नोड दूंगा।

विद्यासागर एक पुण्या उसे दे कर चले गये।

बालक ने उस स्थले में से एक आना के पत्र खरीदे जो उस के थार दिन के निवाड़े के लिये पकिये थे। प-इह आने के छोटे-छोटे जापानी खिलौने लिये उन्हे बेच २ कर जो कुछ सभ्य हुआ, और भाग्य ने साध दिया पुण्यापन उन में था ही, छोटी-सी दुकान खोली। दस बर्ष बीत गये, बहु साधक एक बड़ा सेठ बन गये। कल्पी उत्तरे परसा चूमनी। बहु सत्पात्रि सेठ बना। अजाणक उस की दुकान के आगे से श्री विद्यासागर जा रहे थे। सेठ की नजर पड़ी। पहचान लिया कि यह यही पारस है जिन्हे मुझे भोगा बनाया। शीघ्र अपने मुकं को आता की कि-जानी उस जाने बाले महोदय को डूला सको, मुकं गया विद्यासागर से निवेदन किया कि महाराज हमारे सेठ की आत्मा दर्शन करना चाहते हैं, पचायिं!

भाग्या विद्यासागर बोले। सेठ के ठाठ पाठ का देखाकर उस वृद्धावन नहीं सके। उनकं आँसु में आँसू पड़ने, स-प-पाम-सुद-आधीवाद

देकर विद्यासागर ने कहा सेठजी क्या बात है कर्मापने।

सेठ-महाराज आप मुकं पहचानते हैं न?

विद्यासागर-नही सेठ जी! मैंने पहचाने कही आप सेठेठ नहीं की अपवा स्मरण नहीं।

सेठ-महाराज मैं बही बालक हूँ जिसे आप ने एक थपसा दिया था।

विद्यासागर ने उसे घायी देकर कहा। भले मैं बडा ही प्रसन्न हूँ।

अब तो ईश्वर की बडी कृपा है?

सेठ-महाराज! ईश्वर की तो होगी परन्तु कृपा तो आप के से सत्वगुणी एक सपने की है। विद्यासागर ने कहा:—

'बीजते बालिवास्त्यापि सत्पत्रे पतिता कृपिः।

न शास्तेः सत्त्वकर्तव्या।

चतुर्षु लुपतेलते।' ऐसा कहा।

अर्थात् अच्छे क्षेत्र में पडी फसल अजान द्वारा भी बोई हुई बढती है। क्योंकि पानो का काबोदार होगा जोने वाले के गुण की आवश्यकता पर निर्भर नहीं। आपके प्रत्योत्तरों पर ही मैंने नवियुग का अन्तमान कर लिया था। अच्छा कृषी फलो अत्र हम चले। सेठ ने ०० की के बरपुणों पर एक बंकी मोटो से बरी घर दी। आसु इल रहे थे। हाथ जोड़े हुए सेठ गदगद स्वर से कह रहा था, महाराज भेट स्वीकार कीजिये दुकराद्ये मत।

पण्डित जी ने बहुत कुछ कहा पर सेठ इस बात पर दृढ़ रहा कि मेरा सकल्प ही चुका है। मेरा सकल्पित धन मेरे कोष में अब नहीं जाना चाहिये। पण्डित जी उसके अर्थाभाव से बची-भूत हुए और कहने लगे—अच्छा दूहें धर्म कोष में जमा कर दो हम का धीघ्र ही निधी अच्छे स्थान पर भित्तरा करवा दिया जायेगा।

विद्यासागर अपने घर को लौटे ही जा रहे थे कि एक गली में से किसी अवला के रोने का स्वर सुनाई दिया। पण्डित जी ठहर गये। छद्मी से द्वार खटखटाया। कीन रो रहा है?

खिलका कोई नहीं रहा, अन्तर से अलसा बोली।

सत्प-सत्पत्र कही क्या कहे है? पण्डित जी ने कहा।

कहा श्री ओ बरेया क्या? बहुतेरो ने सुना, सुन के चब थिए।

# समाज के हितचिन्तकों से

पंजाब आर्यसमाज का महान् केन्द्र रहा है। यहा का अन्ध प्रेत और बेदी दोनों ही घातिका हैं। बडी-बडी सत्पात्र हैं। समाजों में जीवन है। इस प्राल में ही प्रतिनिधि समाज है। मत कुछ समय से पंजाब में आर्य-प्रतिनिधि समा के काय करने वालों में मनमुटाव सा हो गया है। इसका परिणाम ठीक नहीं मिल रहा। कचहरियों में अभियोग तक चले हैं। यह सब कुछ देख कर प्रत्येक भाई बहिन को दुःख होता है। सारे लोग सब समाचारपत्रों में पढते हैं तथा सारा लेख देखते भी हैं। हम आर्य-जगत् के इन स्वामीं द्वारा समाज के सब कुछ बन जायगा। यदि उचित कहीगो, पण्डित जी ने सर्वप्रथम बाणी में कहा:

अबला! तो कहे देती हूँ मुनो देवता!

यह पुर लक्ष्यलियो का था। समय ने गेह खाया। घाटा पडा, कुछ महामारी ने ले लिए, दोष संप्रदायीं के धुन से मोन-मोन अस्त हुए। मूख-मरी से भेरे सब बाल काल ने प्रल लिए। अब एक ही मेरा शेष है जो कई दिवस का भूसा है, अब यह भी उबर ही की संभारो रहा है। बिषर और गये हैं। भेरे ओदने में छिद्र है तन को डाय नहीं सकती। कही मागने में जाऊ तो कंठे, अर्धनग्न हूँ। बड़े घरों की बहु हूँ। बाहती हूँ इससे पहले मैं घर जाऊं, क्रूर दीच रहे पुरान करेगा।

पण्डित जी। आप धन्दा प्रतीक्षा करो, मैं आना, यह कह कर उठी सेठ के हा पढ़ने, ओर बोले, चलो महोदय एक सत्पात्र मिल गया है। उस की करो सहायता, जगते से अधिक मिलेगा। उस कठ से कराहने वाली देवी की कस्यु करोगी मुना थी। सेठ पण्डित जी के साथ गये। साथ ही अपने कल्कं को आजा दे गये कि एक माडी पर छः मास तक की रसव उस देवी के घर पर ले आजी। सेठ ने परोवी के विर देखे थे। वे जगते से मुनीन्त क्या होती है। प. जी के द्वारा बहु छ. हजर की दू जी उस दुसिया के नाम जमा करवा दी और उग के पुन की फिशा आदि का सब उत्तर दावियर अपने ऊपर लिया। पाठकों। प. ईश्वर चन्द्र शिरौही सेठ को। अ. अन्धमा निम्न पुत्र घर सद्-ब-बहार चलता रटा। ★★

के वृध महामुत्राओं की दीपक बडीयाव जी, कौटन केपचन्द्र जी, दीवान अन्नस्यारी जी, मन्दाव्य जानन स्वामी जी, डा० गोविन्दचन्द जी देहली, प्रिंसिपल दीवानचन्द जी कामुपर आदि से प्रायेण परते हैं कि वे समाज के विनाश करिार के इस मनमुटाव को दूर करने के लिए बापे जाकर परस्पर मिलाने का प्रयत्न करें ताकि आर्यसमाज की यह आपसी प्रियार पाटी न का सके। जनता में समाज की जो बदनामी होती है, उसे दूर किया जा सके।

# खान्ना में वेदप्रचार

गत दिनों समा कार्यक्रम पर आर्यसमाज खान्ना में वेद उत्साह में क्या पर जाना हुआ। एक सप्ताह तक निरन्तर हिन्दी पुत्री पाठशाला के मुन्दर भाण्यो में क्या का काय चलता रहा। जनता खूब आती थी। समा की विख्यात प्रबन्धमन्त्री प० जगताराम बस्तीराम जी ने खूब धन मगारे रीते। अहा समाज के प्रथम श्री म्मुनीराम जी तो समाज के साक्षात् दाने मस्ताने हैं। कितना काम बहु तथा उनका सारा परिचार मण्डल करता है। यह देख कर उनसे बडी प्रशंसा मिलती है। सारी जनता उनका सम्मान करती है। मास्टर मदन गोपाल जी भी समाज के उत्तीर प्रेमी हैं। श्री नवियठ जी भी समाज व पाठशाला बड़े ही समाज के प्रभाव-पाली व्यक्त हैं। प्रिंसिपल नन्दलाल जी, श्री मन्नी जी, बा० लक्ष्मण जी, मास्टर धर्मदेवी जी आदि सज्जन समाज के काम से लगे हैं। वेद-सप्ताह समासोह से मनाया गया। मागं व्यय समेत समा को वेद-प्रचार के लिए २६२) रु० मिले। आर्य-जगत् की पाच प्रतिगां प्रति सप्ताह बहों के सज्जनों ने मगानी शरण्य कर दी। खान्ना समाज का वातावरण, प्रेम, उत्साह देख कर न मन प्रसन्न हुआ। —स०

★ चाय दिल को कमजोर करती है, यही कारण है कि हृदय की गति रुकने का रोग जन्मे थाय चलो है तब से अर्थक है। चाय भी उत्तेजक होने के कारण एक प्रकार का सदा है अजः उसे छोड देना चाहिए। मिर्च, सदाई सादि भी नहीं खाना चाहिए। बहा-बारियों और विद्यापियो को तो साब मिर्च आदि किसकन न खाना चाहिए।

### कुष्ठ रोगियों की समस्या

श्री हरिहरचन्द्र जी विद्यार्थी दयानन्द साल्वेशन मिशन

भारत भर में ४० लाख से अधिक लोग कुष्ठ रोग में ग्रस्त हैं। पहले यह प्रसिद्ध था कि यह रोग सत्रमास और वैश्वक है। मगर वैश्वको खोज करके यह निश्चय किया गया है कि यह रोग न ही संक्रामक है और न ही वैश्वक है। यह शूल से भी दूरे प्राणियों को नहीं संक्रामित और मरता पिता से भी उनकी सजान को नहीं जाता।

इस रोग को दूर करने के लिये सरकार द्वारा और ईस्टार्ड मिशनरियों द्वारा कई केन्द्र स्थापित हैं। महात्मा गांधी इस से विवेक रचि रखते थे। उनको याद में स्थापित प्राणियों विधि द्वारा भी कई स्थानों पर इसके इलाज का प्रयत्न है। पर यह मात्र बड़े बड़े बग का है और बहुत व्यय साध्य है। और फिर इस रोग से पूर्ण मुक्ति भी नहीं मिलती।

हल इतनी मर के एक सजब श्री राजेंद्रप्रसाद ने एक ऐसी सरल आधुनिक इलाज देखा है जो गणित कुष्ठ को केवल दस दिन में जड़ से उखाड़ देती है। उनका कथन यह कि जब तक कई सहस्र लोगों पर इसका प्रयोग किया गया है और एक भी प्रयोग असफल नहीं हुआ है। मगर सरकार को इच्छा है इस प्रयोगित इलाज को अपनाते हैं, न लोगों को बर सरकार को अपनाते देते हैं।

कुष्ठ के रोगियों में भी बड़ कर उनकी सजान को तयस्वय है। अब तक सारे बर्ष में ही इन के अनेके लड़कियों को ईस्टार्ड मिशनरी से जाते रहे हैं, और अब भी यह काम उन के ही 'पुत्र' है। बहा कोड़ी अपने बच्चों का खरप होते हैं—बड़े हडकी लिये बच्चे को कालीनी के निवाली—बड़ा भी बच्चे के से सब ईस्टार्ड मिशनरियों के पास है।

ईस्टार्ड मिशनरी इन बच्चों को माता पिता से दूर अस्पृश्यता में अलग कर प्रशिक्षण दे कर, उन्हें ईस्टार्ड बना प्रायः अपना प्रचारिका बर प्रचारक बना लेते हैं। पढ़की बालों के बच्चे पूजा में पढ़ रहे हैं, तो बुज्यामा बालों के मेहरारूप, पीस बारि ब डै कर सहजता कर सकते हैं। और सान पान का समय कोई भी संभवा—ज्या दयानन्द साल्वेशन मिशन या सार्वदेशिक समा—अपने इतर देकर इतनी सजबों से बनीय कर

के इती फर में बन एकजित कर इस का संभाल कर सकती है। बानी भी बन दे कर, या एक-एक बच्चे के सान पान का उत्तर दायित्व ले कर अपनी कमाई खपन कर सकते हैं। जो सारे विपक्ष समय का भर न ले वह एक, ती, तीन या कुछ अधिक बरों ही एक एक लड़के या लड़की के सान पान की जिम्माबारी ले सकते हैं। कम बड़ो है केवल कितनी विपस्न सत्या की यह बाप अपने हाथ में लेकर इस का सगठन करना चाहिये। इस कार्य में नन्वको के माता पिता भी सहायता करती हैं। और कार्य का आरम्भ थोड़े बच्चे से भी किया जा सकता है। जैसे २ यह कार्य बढ़ाना जा सकता है। स्वल्पमधि अन्य धर्मस्य श्रमर्त महती भ्रमात् ॥

थोड़ा सा कार्य भी बड़ी विपत्ति से बचाने माना सिद्ध होगा। ★★

### आर्यसमाज विक्रमपुरा जालन्धर

साप्ताहिक सप्तम रविवार २-१०-६६ को प्रातः आठ बजे होगा। दैनिक कार्यवाही के परन्तु भीमान देवागज जी महाजन का मेहनत व्याख्यान होगा, सभी सज्जन समय पर पधार कर अनुवृत्त करें।

### हमें अभी तो लड़ना है (श्रीब्रह्म सरिन, होशियारपुर)

उठो, मत रको हाथ पर हाथ, मिलाओ कन्या कन्ये के हाथ, करे विधाम न यह पात, हो एक-एक प्यारहू की बात, डडो भी चूमो ललन का हाथ, हमें अभी तो लड़ना है।

नहीं लडाई अब सपीनो की, अब लडाई सानवीनो की, तभी लडाई अब मार काट की, बही लडाई उखनी सजो की, बौ भारतके दुइ पग तिचन की, हमें अभी तो लड़ना है।

उचम करो सव्योग करो, नव-निर्मासु का संयोग करो, मातृ-पु हित जो दान करो, न दैनिक आलस्य से निरो, करो या फिर 'मरते, हमें अभी तो लड़ना है।

### समा प्रचारक श्री पं० प्रमुदयाल जी आर्य का प्रचार कार्य

यह पम्बती श्री राम विचार भी श्री० श्री० ए० वी० कालिज तथा अर्धसमाज हिसार के निरोसल में सुचारु रूप से कार्य कर रही हैं। तहसील शहोले के अनेक भागों में प्रचार किया। विवेक जताते पसन्द किया। हासो तहसील की अनेक अर्धसमाजों का पुनरुद्धार किया तथा उन में नव जीवन का स्थापन किया। पासी (तहसील हावी) में इस महत्ती ने बड़ सताहू के अन्तर्गत प्रचार किया तथा दैनिक कार्यवाही के बाद नतीज योजनीय धारण करण हुए। समा को बेंद प्रचारार्थ १२८) प्राण हुए। इस भारी सफलता का अर्थ अस्मिन्कार श्री० लखनू राम जी प्रधान समाज को है।

पानी वाली इलाहो जिस में मुन्दाजी सरलाणी निवास करते हैं। कई समाज की स्थापना को तथा बन्धी-पवती पहणार गए - समा को बेंद

श्री समाज का साप्ताहिक सप्तम रविवार को दोपहर बाद तीन बजे से पांच बजे तक होगा है। सत्यम में व्याख्यान श्री पुरोहित जी का होगा है सभी भलाभी तथा बहिनो से सानुरोप प्रार्थना है कि समय पर पधार कर लाभ प्राप्त।

प्रचारार्थ ४०) प्राप्त हुए। इस निमित्त समाज के विन्नायिकाए निबंधित हुए। प्रधान—बी० नेकी राम जी, उपाध्याय—सालचन्द्र जी, सन—बन्धु बन्धु जी, उपरानी—जयशराम जी। श्री सेठ सारामजी जी आर्य प्रचारक के पुरस्कार से महतुवस करत तथा उनके मुमुन श्री सत्यानन्द जी B.A. का योजनीय लस्कार करण। उपरिक्त जनो ने अपने पवित्र आशीर्वाद से दोनों महतुवभाको को इलाज किया। इस अन्तर्गत ११/ प्रादेशिक समा को श्री ११/ आर्यसमाज हिसार को बेंद प्रचारार्थ दान प्राण हुआ। सेठ जी ने आर्य जगत का स्वाधीन साहस बनना स्वीकार किया। सेठ सारको ध्वनिदात को भी भाषण इन अन्तर्गत पर सोने में तुहणा का काम कर गया।

प्रमुदयाल आर्य, प्रचारक प्रचारक, ना० प्रा० समा जालन्धर

### आर्यसमाज श्री गंगा-नगर (राजस्थान)

दैनिक सताहू वासशी उपानक २०-१०-६६ से इच्छा ब्रमाप्यती सारस ८-१०-६६ तक बनी प्रुधाम से मनया गर्गी। श्राकशी उपानक पर्व समग्र यधिर में समग्र हुआ जिस में श्री मयवती प्रसाद जी, अन्तर के मनोर भजन तथा भाषण हुए। इसी प्रकार गया नगर के मुहली में भी अमय जी द्वारा प्रचार होता रहा। इस अवसर पर नवना ने पणालि रचि प्रकट की। इच्छा-ब्रमाप्यती पर्व भी प्रोत्साह से मनया गया। जिस में 'अमय जी के अतिरिक्त अन्य महतुवभाको ने भी श्री अण्य के जीवन पर प्रकाश डाला। रात्री के समय भी यह कार्यअथ बनता रहा। मिन्दाप विन्तरल के परभाव शांति पाठ के साथ कार्यवाही सदान हुई। क्लियनन्द मन्त्री आर्यसमाज।

★ जो सच्चे अर्थ में देवता हैं उनकी पूजा अर्चना उन से कर्णोत्पन्न अक्षरार करना ही देवस्य है। एत्पर तथा दल देवता नहीं और न ही पुनने योग्य है।

★ पुण्यी से लेकर इत्तर पर्यन्त परार्थी का सत्य भिदात और उनसे मयायोगी उपयोग देना विना कष्टात है।

# नौजवानों की सुध लो

(से० मा० हरिश्चन्द्र जी गुप्त डा. ज्ञान मण्डो)

हमें यह देखकर दुःख होता है कि आजकल के नौजवान कितने डीठ और निर्विज हो गये हैं कि माता पिता आज्ञा को पद दलन करना और बच्चापनों को मानिसां देना, उन्हें बड़गुणी का आदर संस्कार के बन्दे मखोल उड़ाना, धर्म समा में अजबल जो जाना ही नहीं यदि जाना तो यहाँ कोबाहल और दगा करना क्या इसी का नाम सम्पत्ता है और क्या हमी को तहबीब कहा जाता है क्या हमारे देसमें ऐसे ही स्वयं उत्पादन नास्तिक बच्चे अन्धे और माता पिता अपनी ऐसी निक संस्कार पर गर्वकर के शीबा निकाल कर ज्ञानार में चलेंगे शोक ! महा शोक !!

यह तु दोस के बच्चों का बाबा ही बिगड़ गया है किसी के वश का रोग नहीं रहा। बाल्यावस्था में माता पिता अपनी सत्तान को जैसा भी बनाना चाहे वैसा तैयार कर सकते हैं उसे बैसे ही सांचे में डाल सकते हैं। जैसे माती छोटे २ पीवी को भी टेडा या निरुम्मा हो उसे मट रसली से ब फिनी कण्डे से बाध कर सोसा लडा कर देता है ताकि यह ठीक प्रवार फले फूले लुध पीसा वैसा ही बडता चला जावेगा मैं एक बात और निवेदन कर हूँ वो बच्चे के बीजाणु पर कुछ तो पुर्व के संस्कारों का प्रभाव भी होता है कुछ माता पिता के रजबयों का भी प्रभाव रहता है। कुछ अन का भी बचपन होता है कहा भी है कि जैसा खावो जन्म, वैसा होवे मन, तस्वच्छता साधारिक मुष्टि में जन्म लेकर बहा की प्रकृति आदि का भी अचर हुए बिना लड़ी उठरता फिर बच्चे कुछ माता पिता से अडोस-गडोस से और जैदी संगत हो बहा वे शीक कर अपने मापको वैसा ही बनाने का प्रयास करते रहते है परन्तु इस लडा में खम से अधिक दार्शिक वा वाप का ही है। वे जैसा चाहे, जैसी सत्तान को जैसा बना लें।

सामान्य प्रकार में बहुविध दयानन्द की लिखते हैं कि 'जो मां आप जानाई सत्तान और शिष्यों को डुरे मायं से कांठते है वे अपने हाथ वे बच्चों को अमृत पिला रहे हैं और जो बीजाणु या शिष्यों से लाठ करते हैं वे अपनी सत्तान को विष पिला कर मारते हैं।' 'बच्चों के सुधार के लिये उनके मन में खम न बिशारे मुड प्रेषादि कुछ नहीं ऐसा कुछ अन्ध-अन्धनायि पर विराधत न कराये, मुडे अतीति

व नियमों अपना रूप बादि धर्म बीजाणुओं से भी दूरे दूर रखें यह सभी वालें वन मुक्तों का प्रविष्य बियाणुने के साधन है और इन्हें जानसी और कर्महीन बनाने वाले हैं, खलिक जहा तक बने सवबायं धर्म ही पढ़ने को दें जिसमे उनका जीवन उच्च हो और शुभ कम कामायं और निर्भय होकर संसार में विचरें। इन आर्य धर्मों का पढना ऐसा ही कि जैसे एक गोता लहाना और बहुपुत्र्य मोतियों का पाना' इन सनातन आर्य धर्मों के पढ़ने से ही नयचुक्क परम पिता परमेस्वर का ज्ञान प्राप्त कर सकते है और सत्तारिक दुःखों कण्ठी चिन्ताओं से ही नहीं बरत जनम मन के बलन से भी मुक्त हो सकते हैं। बलिक मैं प्रत्येक युवक से प्रायान्न कक्या, कि और कुछ नहीं तो कम नै कम बायं जगत, आर्य गजट का अन्धन हर सताह अचर करे इन दोनो से पनीं मे बड़े ही विद्वता पूर्ण लेख होते हैं जो बार बार मनन करने और पढने योग्य है। इनके पढने से नई बनानो, नया खून नया जोष, नई उमरो और शुद्ध विचार पंचा होते हैं। यदि आज के नौजवान इन अह-कोली, कोशीनी, भूली, निगूल और चितुष्पादाद बार जैसे (प्रत्येक वर्ष मधेरोकटेने जाकर बीजित बकरे काटकर पीर की कबर पर चढाकर कामना पूरी करवाना) इन निकम्मी-बादी गन्दे देहरीदो बातें उनकर शुद्ध मायं अपनाए फिर भी हमारे देस का प्रता हो बातें और सग सहस्रो के बरं से बचवावे।

मगर हमें बाल्यायं यह है कि जो नौजवान प्रातः ५.५ बजे तक उठने का नाम नहीं लेते बल्कि आठ बजे तक चारपाई पर कदरते-कदरते रहते हैं और पर पर ही फोफादि गये डठे बीदि सुभाई और पी, या नाचक को हाथ में ले सिया। रात देर से सीमा, प्रातः देर ले उठना, सत्ता जब उन्हें अपनी ही सुन नहीं देस का तो कुमा। अपना ही सुधार का लें।

बाल्यावस्था से ही बच्चों में उच्चतरकर, चोरी उगी, भूड छल कपट के संस्कार डाले जाते हैं जो बड़ी आर्य में दुःखदाई होते हैं। धर्म कम से सिहीन हो र ओकरें कांठे है जैसा आप देखते हैं कि कितने नौजवान

सदाशन सेवन करते है और कितने ही आचारहीन हुए किले हैं। उन्हें यह पता नहीं कि Character is last. Every Thing is last या आचार के बिना मनुष्य जीवक विद्युत्क है यदि जीवन कुन्दन बनाना है और आचार व्यबहार शुद्ध करना है तो वैदिक धर्म की धरख में जानी वैदिक धर्मों को पढो, इन के अग्रुतरुपी रस का पान करे और जयंसमाज के सात्ता-हिक सत्यन में आओ, इच्छेके नियमों को अपनाओ, हिन्दी ट्रेड यं० मद्यारण्य वैदिकयोग लिखत आर्य समाज क्या है मगा कर पढें। यदि आप में से कोई भी नयचुक्क अपने जनमोल जीवन को सुधार कर पाया तो मैं अपना लिखा पथिम लक समझूँ गा। ★

## आर्य समाज सेंटर

### २२ चण्डीगढ़

१ सितम्बर से ८ सितम्बर तक वेद सताह उल्लाह के साय मनाया गया। इस अवसर पर ब्रह्मानन्द जी मटनी के भजन तथा स्वामी मुत्तुनन्द जी की कथा होती रही है जिस का जनता पर अच्छा प्रभाव रहा। १-१०-११ सितम्बर को उल्लाह कार्या क्रम आरम्भ हुआ। प्रथम दिन ध्वजारोहण के पश्चात् भय्य नगर कीर्तन आरम्भ हुआ जोकि नगर के भिन्न २ सैक्टरों से होता हुआ समाज मन्दिर में समाप्त हुआ। उत्सव में अनेक संघ्यासी, महामानवी तथा विद्वानो ने भाग लेकर जनता की धर्म विपारा को धामत किया।

बच्चुंरें बहा परियाय यज की पूर्णहृति ११-१६ को प्रातःकाल डाली गई। उत्सव के दिनों में, आर्य समाज सम्मेलन तथा हिन्दी सम्मेलन श्री मनाए गए जिस में अनेक प्रस्ताव पास करके किए गए। हिन्दी सम्मेलन में हिन्दी सम्मन्धी प्रस्ताव पास किए गए।

## आर्य समाज के. जे. के. कालोनी न्यू दिल्ली २४

### ब्रह्मचर्य वाचिकोत्सव

२६-२९ से २-१०-६६ तक सम्पन्न हो रहा है। इस शुभ अवसर पर बड़े उदरवेक तथा संघ्यासी की बमन्दीर बी, श्री लक्ष्मण राव बी,

श्री कृष्णचन्द्र जी नय, व० चन्द्रप्रकाश जी आदि तथा प्रबन्धि, वयन मोहन बिमटा मणकी के सुप्रभु माण्ड और मजन होय।

समय—प्रातः ७। बजे से १०।

एक प्रतिविम तथा रचिहार को पूर्ण-हृति, लम्बा २ के ५ बजे तक एकी समाज में होगी। जनता इस प्रकार वाचिकोत्सव पर समिन्धित होकर बहिकारी धर्म का उल्लाह वर्धन करे।  
—राजचन्द्र मन्नी समाज

## आल इंडिया दयानन्द सार्वज्ञिक शिक्षण होडवारपुर

अक्टूबर, फिरोजपुर तथा मुद्रास-पुर जिनो में इस भारी बर्षों के कारख बहुर सुभाजण हुवा है सैकटों ही लोग बहार हो गये है और हजारों फलन लच्छा हो गई है। इन जोषनीय परिस्थितियों को मुख्य रखते हुए आल इंडिया दयानन्द सार्वज्ञिक शिक्षण होडवारपुर ने अपने एक कार्य-कर्ता श्री ज्ञानी रामसिंह को दवाया देकर वंच श्री उज्जगर सिंह जी के साथ उपरोक्त वाइप्रत इलाकों का भ्रमण करने के लिये भेज दिया है। वे बेधर तथा बहा पीड़ित लोगों में मुक्त ओषधियां बांट कर उनकी सेवा करणें। इस के लिये श्री ललतराम जी बी. ए. मासिक अचोकि आयुर्वेदिक फारसेली, अकाली घाकौट अग्रुत्तर के मिश्रण को विना मूल्य ओषधियां दी है जिस के लिये मिश्रण उनका अत्य-विक सम्पन्दायी है। राधादास

प्रधान मिशन

## देवनागरी का शोधन

(पृष्ठ २ का लेख)

तमोऽपुत्री भोजन ही देह में पुष्ट कर इन बच्चुंरों को जीवक देता रक्षा है। यदि सर्वथा तमोऽपुत्री भोजन का विचार से सुभाष्य में अपना मोक्ष द्वारा बल रूप में लता किया जाते और उनके समाज पर चार्मिक चिक्कर, सत्तल सुभाष्य और सत्तल मोक्ष का प्रहण चिन्ता जाने ली वन्नु आद्यन में बड़ी सत्ताका प्राप्त होगी।

इस प्रकार लक्ष्य आर्य-परीक्षक, प्रिन्सिपल सयस ही ऐंसे तो महान भ्रम है किन से यह देखतु, देवपुत्री, कर्क-धाम, पशुविहीना तमोऽपुत्री रूप कर प्राणवीर जीवन के ऊपर उठ कर अपने राजा इन्द्र ब्राह्मण को खोजित कुछ भी अज्ञा से प्राप्त होने और प्रथम प्रिन्सिपल के द्वारा जोज प्रसाद की प्राप्त करके में अग्रुत्तर ही भवे।

स्वास्थ्य स्तंभ :-

## गरीबों के लिए लहसुन कस्तूरी के समान है

स्वामी-सत्यदेव परित्राजक

दवापि लहसुन का प्रयोग पूरे विश्व में होता है पर अधिकांश लोग उसको रोगों में मुक्ति दिखाने की क्षमता से अनभिज्ञ होते हैं। पर तब्य तो यह है कि ऐसे बहुत कम पौधे हैं, जो उपयोगिता में उससे मुकाबिला कर सकें। प्यज की जाति के पौधों में लहसुन में चिकित्सा सम्बन्धी सब से अधिक गुण हैं। रक्त शोधन तथा कोष्ठों के शोधन में इसका बड़ा गहरा प्रभाव पड़ता है।

तत्त्वों की दृष्टि में, उसमें इतना वैमिष्य है कि रोगों में लहसुन का उपचारक गुण किंवदन्ती से लयते हैं। शरीर के विल भाग में क्षति होगी, लहसुन अपनी चिकित्सा उद्योग भाग में प्रारम्भ करता है और यह एक पौधा है, जिसका उपयोग व्यक्ति परम विस्थापन से कर सकता है। रक्त में यह रसायनक तत्वों को पुष्ट करता है और कोषायुक्तों को यह निर्दोष बनाता है, यसीना निकालता है और जहाँ भी मवाद बनने की अशक्ता रहती है, वहाँ उस बमे भाग को तोड़ कर मवाद बनने की प्रक्रिया में मूल पर आघात करता है।

लहसुन बड़ा शक्तिशाली 'एन्टि-सैप्टिक' है। पायरिया, कोड़े, चर्म रोग आदि में यह बड़ा ही प्रभावकारी है। जहाँ कहीं भी सूजन हो, लहसुन उसे नष्ट कर देता है। लहसुन के प्रयोग द्वारा आप प्रकृति की उपचार क्षमता को बल प्रदान करते हैं।

डाक्टर 'हल' ने लिखा है कि मेवा होकर ने इस दिशा में खोज की ती पता बना कि लहसुन बहु पदार्थ है, जो आठों की सूजन को ठीक कर सकता है, जिसमें से कम सतना तो निश्चित है कि बीसवीं सदी की महामारी की रोकथाम के लिए लहसुन अबतक शक्ति रखता है। वैज्ञानिक इस बात को बहुत विनो से जानते हैं कि लहसुन में सैन्टीरिया-नाशक बड़ा गुण है। डा० बोस्टवर्क का कथन है कि, यह लहसुन टारफाइट, अक्स, ल्वाबे फेफू दकी कुत्तार बीमारियाँ हेवा आदि की रोकथाम की अबतक क्षमता रखता है।

### गांधी जी ने कहा

जब उन्होंने मुझ से मेरे खाने के विषय में पूछा तो मैंने लहसुन का विशेष तौर से चिक्र किया। गांधी जी खूब हने और बोले, 'लहसुन तो गरीबों की कस्तूरी है। और मुझे तो उसके प्रयोग से बड़ा लाभ पड़ता है।

### यह वैज्ञानिक विद्वत्पत्र

केन्द्रिय सरकार ने स्वाध-विज्ञान के सम्बन्ध में खोज कार्य करने के लिए मंसूर में एक प्रयोगशाला स्थापित की है। उक्त प्रयोगशाला की ओर में 'स्वाध विज्ञान' नामक एक मासिक पत्र प्रकाशित होता है। उस पत्रिका में प्रकाशित लहसुन के विवरण निम्न प्रकार से है :

लहसुन सत्तार पर में पैदा होता है और मसाले के तौर पर तथा बहुत ही बीमारियों में दवाओं की रूप में इस्तेमाल किया जाता है। लहसुन गेनागुनासक, प्रस्वेदक, मुखबन्धक तथा कफ निवारक होता है। इसी लिए आयुर्वेदिक चिकित्सा में इसका बहुत उपयोग होता है। भारत में और विदेशों में लहसुन पर अनेक वैज्ञानिकों ने अनुसंधान किया। अनुसंधानों के मुख्य निष्कर्ष संक्षेप में हम प्रकार है। लहसुन में एन्सिमिन नामक पदार्थ होता है जिस में जीवाणु नाशक गुण होते हैं। एन्सिमिन नामक पदार्थ के अणु-एन्सिमेज में बदल जाते हैं। लहसुन के कणों में जीवाणुओं को मारने की सामर्थ्य अथवा मारने की अपेक्षा अधिक होती है। लहसुन भोजन में रहने पर आंतों में थायामिन (विटामिन-बी) का आंतरिक निर्माण अधिक होता है। आंतों में एन्सिमिन के साथ मिल कर एन्सि-थायामिन बनता है जो थायामिन की अपेक्षा तेजी से जख होता है।

लहसुन में ओम्बीज गुण भी है।

यह कुमिसासक, मुखबन्धक उदरवायु निरोधक है। आप प्रेमी से साभार।



## आर्यसमाज सैक्टर ८

### चरडीगढ़

३०-८-६६ को श्रावणों उपकर्म तथा रक्षावहन के पर्व मनाये के बाद निम्न प्रस्ताव पास किए।

१. हमारे सांस्कृतिक आदर्शों की प्रतीक है और मेरी प्रधान भारत देश को अर्बं स्थपस्था का मूल स्तरम है। मनुष्य की शारीरिक, मानसिक और आर्थिक उन्नति का विकास ही से ऐसा जुड़ा है जैसे शरीर से प्राण भी माता से भी बहकर मनुष्य की रक्षा करनी है इसलिए सत्त्वों बयों से गो माता का पद प्राप्त है। देश के स्वराज्य के लिए अपना सर्वस्व बलिदान करने वाले महात्मा गांधी, तिलक जी, प० मदनमोहन मालवीय जी आदि नेताओं ने स्वतन्त्रता प्राप्त पर सर्व प्रथम भी हुया बंद करने का सकल धारण किया हुआ था अपितु वह तो भी धातक की मनुष्य धातक मान कर देण के कानून में इस के लिए प्राण दण्ड रखने की कल्पना किए हुए थे। प्रति बयं सत्त्वों गोतों के नाम के कारण बंध, भी आदि पवित्र आशोर दूधने से भी नहीं मिलता। यहां में जब अंगरेज गया उन समय बाजार में एक स्पष्ट तैर भी बिकता था किन्तु आज अपने राज्य में चीं तो कहा गुण भी सत्त्व ग्यथा तैर नहीं मिलने वाला। अतः यह सत्ता भारत सरकार में बलपूर्वक गोरहया पर प्रति-पन्न लगाने का आग्रह करती है।

भारत के और विनाश के लिए अंगरेजों के निकट एक बड़ा बूचखाना बनाया जा रहा है जिस में कि १५००० गोलू प्रतिदिन काटी जाएंगे इस का निर्माण हुरत बंद किया जाय।

यह गमा देहनी में चलाए गए भी रक्षा आंदोलन के लिए अपनी पूरी महानुभूति प्रकट करती है।

बृषपा देण की सरकार निरपराध बनवाना, बलवाता, अमृत दाना, गी आदि दूधबारी पशुओं की रक्षा कर, बेजवान जीवों का आजीविक प्रान्न करे, जिस से भारत का प्रजा मुख नौभाय में सब दिन सम्पन्न हो।

आधुनिक पुरोहित आर्यसमाज

सरकारों तथा बंध की विधि को कल्प रहते हैं। इस में अनेक गूढ सूत्र और शील सूत्र हैं तथा सरकार विधि पुस्तक मुख्य हैं।

## आर्य समाज गोविन्दनगर कानपुर में

### कृष्णा जन्माष्टमो पर्व

आर्य मयाज गोविन्दनगर व आर्य कन्या हार्द न्कल गोविन्दनगर की ओर में भगवान कृष्ण जन्मोत्सव श्री देवीदास जी आर्य की अध्यक्षता में कृष्ण जीवन पर सुन्दर भाणस व कविताय मुनाई। श्री देवीदास आर्यने कहांकि भ रत-भगवान कृष्ण की सफल युद्ध नीति को अंगालकर वर्तमान सकेट से बच सकता है।

श्री प्रकाश केन्द्रिय आर्य सभा कानपुर के तत्वाधान में आर्य समाज सीतामऊ हाल में डा० शिबबल जी की अध्यक्षता में कृष्ण जन्म दिवस मनाया गया।

जोमैठ कुमार गरीन मन्त्री, केन्द्रीय मन्त्री

## आर्यसमाज मल्हार

### गंज, इन्दौर-२

आज हमारे देश में गो हुया बन्द हो इस बात का आन्दोलन चलाया जा रहा है। देश की सर्वोच्चसत्ता लोक सभा के मामले देण के बड़े २ मन् महात्मा भूष हस्ताल कर रहे हैं। देण के कोने-कोने में मजामे व प्रदर्शन किए जा रहे हैं मया हमारा अपना ही सरकार गो हुया के प्रन्न पर टाल-मटोल कर रही है और सरकार कहती है कि यह सवाल प्राप्तों का है उनको गो हुया बन्दी का कानून बनना चाहिए आर्यमें है और दुर्भाग्य भी कहा जाना चाहिए आर्य देण को स्वतन्त्रता मिलने के ११ बयं बाद भी देण में गोबध का कनव दूर नहीं हुआ।

गांधी जी ने गो हान के बारे में महानतन कहा था कि देश की स्वतन्त्रता मिलने के बाद अंगरेज देश में गो हुया बन्द नहीं होतीं तो मैं उसे स्वतन्त्रता मानू था। देश को स्वतन्त्रता मिलने के पूर्व यही काबंती नेता भी अपने अधिबेदानों में गो हुया बन्दी के प्रस्ताव पान किया करते थे। अब देश के उन सब महात्माओं के प्राणों की रक्षा के साथ भी दण की रक्षा के लिए सरकार की अधिबन्ध गौरहया-बन्दी पोरहया।

गणपतक बनन मन्त्री आर्यसमाज, मन्डारगज, इन्दौर



### वैदिक साहित्य में गो के लिए निम्न लिखित शब्द मिलते हैं

(१) अषध्या अर्वादि न माने गो (२) रोहणी अर्वादि उरति का सावन (३) महित्री, इन्द्रियो को पुष्टि देने वाली (गो का गृह इन्द्रियो को पुष्ट करता है) (४) उवा अर्वादि पूजा के योग्य (५) दुष्पारी, दूध का मष्कार (६) इन्द्रिय, माता (७) बहोला बहुत दूध देने वाली (८) मातृघनला अर्वात् एक सौ मनुष्यों को दूध से तुल्य करने वाली (९) पावनी पवित्र करने वाली (१०) मश्रा अर्वात् सक्का भवा और उल्कार करने वाली। इस प्रकार जगति, ज्योति, काम, दोहा, सावित्री, सरस्वती आदि २५ देवों को भी महताना के लिए आते हैं जिनके अर्थों से सिद्ध होता है कि यह प्राणी किन्तना लाभदायक, उपयोगी माना के समान पालन करने वाला, उन्नति और समृद्धि का साधन, रक्षा और पालन के योग्य है।

### बढ़ती हुई गो हत्या

मुस्लिम राज्य में भारत में गोवध होता रहा परन्तु बहुत कम था। अंग्रेजी राज्य में इस पाप में वृद्धि हुई परन्तु अपने राज्य में पुराने तत्मान रिफार्ड टूट गये हैं। ब्रूचखाना के कन्दर और के बाहर भूले आम गो हत्या की जा रही। भारत का बहु-मत उन को नहीं चाहता परन्तु उन की भावनाओं को उस पशुबाई जा रही है। बर्तमान शासन अपने पुराने बचनों को भूल गया है। स्वतन्त्रता मिलने में कुछ माह पूर्व गोवध के विरुद्ध आरम्भ प्रबल आन्दोलन किया गया था। उसका उद्देश्य यह था कि १५ अगस्त १९४७ को स्वतन्त्रता की घोषणा के साथ साथ कानून द्वारा भारत में गो हत्या को बन्द करने में, की भी घोषणा की जाये। इस आन्दोलन के बीच केवल एक दिन में ६० हजार तारें भारत के विभिन्न नगरों से सरकार को भेजी गईं। प्रस्ताव और पत्रों का आवाजा नहीं नगामा जा सकता था। बन्द करके ही अनुमान लगाया गया। ८ अगस्त १९४७ को प० अबाहर लाल नेहरू ने एक प्रतिनिधि मण्डल का विदेशमन्त्रित्व किया कि सरकार इस प्रश्न पर महामुक्ति पूर्ण विचार करेगी। एक समिति नियुक्त की जायेगी वह समिति जो रिपोर्ट देगी उस पर अमल किया जायेगा। अतः आन्दोलन सफल निश्चा जाये।

## भारत के माथे पर सबसे बड़ा कलंक गो हत्या

श्री देवोदास जो आर्य, गोविन्दनगर, कानपुर

इस आवासान पर यह देश व्यापी आन्दोलन सफल किया गया। १९ नवम्बर १९४७ को समिति बनाई गई उसने ६ नवम्बर सन १९४८ की गो हत्या को कानून द्वारा बन्द करने की रिपोर्ट पेश की परन्तु सरकार ने आज तक उस पर अमल नहीं किया। ३ फरवरी को फिर एक प्रतिनिधि मण्डल भी हत्या पर प्रतिबन्ध सपाने के सम्बन्ध में प० नेहरू के भिला और उसने पुनः गोहत्या पर प्रतिबन्ध सपाने की मांगों आवासान प्राप्त किया परन्तु उस समय भारतवासियों को कल्पन भेद हुआ जब २ अगस्त १९५५ को लोक सभा में प० नेहरू ने आदेश में आकर यहाँ तक कह दिया, "मैं प्रधान मन्त्री के पद में त्यागपत्र देने को तैयार हूँ परन्तु गो-हत्या को बन्द करने के प्रश्न पर मुझसे को तैयार नहीं हूँ।"

### निरर्थक बहाना

भारत सरकार प० नेहरू के इन कथने के कारण भारत के इस महत्त्वपूर्ण प्रश्न को यह कह कर टालती रही कि यह मामला प्रांतीय सरकारों में सम्बन्ध रखता है। यदि वे चाहे तो इन के लिए कानून बनाये जाय और जो लोक मन्त्रों में उनका निरर्थक तर्क भी करणका जा रहा है और जनता को योभा दिया जा रहा है। बन्द केन्द्रीय सरकार ने जिस कानून की पाम करना चाहा वह प्रांतीय सरकारों के विरोध के बावजूद, मन्त्रिमन्त्र में संशोधन करके भी पाम कर दिया। आवश्यकता ही न्याय कल होने की।

### गो-हत्या व गांधी हत्या

प० अबाहर लाल नेहरू ने अपनी पुस्तक मेरी कहानी के पृष्ठ ३९० पर स्वयं लिखा है कि हिन्दू नरम और अहिंसक है क्योंकि उस का आदर्श माध है। महात्मा गांधी ने तो गो-हत्या के प्रश्न को शरारतय की तरह महत्त्वपूर्ण बनाते हुए यहाँ तक लिखा है कि मुझे ऐसा लगता है कि जब तक गो की हत्या होगी है जब तक मेरी भी हत्या होगी है। महात्मा जो को राउट पिता मानने वालों और उन की समाधि पर फूल चढ़ाने वालों ने मैं एक मानने कलना चाहता हूँ कि उनके आदर्श पर कल तक बच रहे हैं?

### इतिहास व गो-रक्षा

गो-रक्षा की भावना हर एक हिन्दू के लक्ष-नक्ष में भरी हुई है इस का संसार की कोई शक्ति मिटा नहीं सकती। इतिहास इस का साक्षी है। १८५७ में गो-रक्षा के प्रश्न पर ही भारत की स्वतन्त्रता का प्रथम युद्ध हुआ। आर्यभोजन के प्रश्नोंक महत्त्व दवानन्द सरस्वती ने इस युद्ध के बन्द साक्ष ही बाद सब से पहिले गो-हत्या के पाप को मिटाने का दोषा उद्घाषा था। वेदों ने गो की अनेक विशेषताएँ लिख उस के हृदयारे को लोभी की गोली से उडा देने का आदेश दिया है। चरन्तर्ती आर्य महाराजा अपने हृद्यों में गो की सेवा करना और उन को अप्पुन दूध पीना अपना लीलाय समझते थे। इस की रक्षा के लिए अपने प्राणों तक को आहुति देने का आर्य हिन्दू राष्ट्र की परम्परा रहा है। भगवान कृष्ण गो-रक्षा के कारण गोपाल कृष्ण कहे जाते हैं महत्त्व दवानन्द को भी गो-रक्षा भावनाओं के कारण गोपाल दवानन्द कहा जाने लगा है।

इस्लामी काल में गो ब्राह्मण की रक्षा ही आर्य हिन्दू जाति का नारा था। मुस्लिम बाधकालों ने जब तक गो-हत्या का पाप बन्द न किया उनके कदम नहीं टिक सके। बाबर ने हर्षायु की जो बनीयत की थी उस में लिखा था "शासित पूर्बक राज्य करना है तो हिन्दुओं की धार्मिक भावनाओं की बन्द करके गो-हत्या बन्द कर देना।" अकबर, जहांगीर व श्राहजहाँ के राज्य में गो हत्या बन्द रही इसी लिए उनका राज्य काफी बड़ा। अर्ध की शासन में हिन्दुओं पर अत्याचार होने और गो हत्या होने लगी तो उस के विरुद्ध भी समय समय पर बिद्रोह होता रहा। अन्ततः उसके भी पास उसाह दिए गए। छत्रपति शिवाजी ने यान काल में गो मंगन देनेके माने मनेच्छक कर्माई को इस्लामी राज्य में ही यम पुरी में पशुना दिया था और समय गुण रामराज के आदेशानुसार गो ब्राह्मण की रक्षा के लिए मराठा राज्य स्थापित किया था। गुण गोविन्दसिंह जी ने अपने जीवन का विशेष उद्देश्य गो रक्षा

हदना बनाया और आरम्भ में सिंह वर्तनी की -

यह वेह जाता सुकन वेह विद्याक भी पात का दोष जग से मिटाऊं। अहं बला पुके करो मुम हमारी मिटे कष्ट गोवां कृते वेद भारी।

श्री गणेश गो रक्षा का विभव और बला नैरवी के मानने था। उस ने जिस गुरदासपुर (पंजाब) के सिक्क गो हत्या की सजा में एक गांव को भली भूत कर दिया था और आभा जाती की भी कि बिस गो गांव में गो हत्या होगी उसे बारा दिया जायेगा। महात्मा गांधी और दूसरे हिन्दुओं ने इसी लिए लुधियानू जैसे बुद्ध इस्लामी सभ्यता में मुसलमानों का साथ दिया था। दूध पर हिन्दू मुस्लिम एकता की नींव रखी गई। उन दिनों बड़े-बड़े मुसलमान गोवधों व गोवधने फलना देते नहीं बल्कि वे कि इस्लाम व कुुरान शरीक में गो की कुरबानी नहीं है।

### डालर के लिए गो हत्या

स्वतन्त्रता के १९ वर्ष गुजर जाने के बाद भी गो हत्या का पाप जाती है यह किन्तनी लम्बा की बात है और भारत के माथे पर कलंक है। कतने को तो भले ही हजारें कुछ शासक लोग मुसलमानों का बहाना पेश करे परन्तु भारत के मुसलमान आज गो हत्या पर हदिले करते थे। यदि पाकिस्तानी मनोवृत्ति के कुछ मुसलमान हो भी तो उन के लिए पाकिस्तान का मान लूना है। आज स्वतन्त्र भारत के पर्म-निररेश्वर राज्य में गो हत्या हो रही है बचकें के लिए, मास के लिए, सुविधों के लिए। और इन चीजों के बन्धने लिए जाते हैं अमरीकी डालर ताकि इन मिल सके। आज एक करोड से अधिक गोओं का वध भारत में हो रहा है। यह सवा संयुक्त भारत में (जब पाकिस्तान नहीं बना था) जितना गो वध अर्ध की राज्य में होता था उसके बहुत ज्यादा है।

### स्वास्थ्य की हानि

यह अति अवज्ञा है। भारत में गो रंज का नामा किधा जा रहा है। बंनों की ब्रह्म विद्वैतों ने करोड़ों वर्षों भेज कर टूटकर मंगेया जा रहे हैं। दूध व की के बिना टो-० की-० जंगम की आज की तरह बड़ रही है इस रोग के निवारण की-दूध को उत्पन्न न करके टो-० की-० के इन्वेन्शन व दवाइयों आदि पर करोड़ों र० बरसाव किए जा रहे हैं।

शहर के कठोरता परामर्श है। शायद ही शहर की पूर्ण विस्तृत रूप से की गई है। वेनों और शालुओं में शहर की परत का पवित्र पदार्थों में की गई है। पुराणों में बहियत दुष्ट भाविक के श्राव सुपुत्रों में एक मधु का मधुपूर की भी कल्पना की गई है। ईसापूर्व और मुसलमानों के धर्मग्रन्थों में भी शहर स्वर्गीय पदार्थ माना गया है। प्राचीन युवान की संत-कथाओं में शहर से बनेने वाले देवताओं के भोजन 'प्रभासा की भूरी २ प्रभासा की गई है। इस देव शहर के बमलकारी प्रभाव से सदा प्रभावित रहा और आज भी है। प्राचीन मिस्र की पवित्र लिपियों में शहर के गुलाकारी प्रभावों का वर्णन प्राप्त गया है।

प्राचीनकाल के महान चिकित्सक तथा भिक्षुस्तारः ने पश्चात्काल में शहर के सेवन करने से ही १०५ वर्ष तक लिए। ४२० कितने ही लोग का ज्ञान शहर ने ही सफलता के साथ करने थे।

११वीं सताब्दी में हुए इतिहासकार नेस्टोर के इतिहासिक विवरणों से हम में मधु मधु-पातल विषयक प्रतीकता का वर्णन मिलता है। प्राचीनकाल में कभी मधु का सतार के भिन्न २ वेनों को निर्मित होता था।

वेद है, उस अमृत तुष्य शहर ही को यदि काल से मानव बीजता का एक परमावश्यक अंग रहता भोजना आया है। आज हम भारतीयों, विष तुष्य संकेत पीने के आगे भूँसे से जा रहे हैं। यद्यपि सतार के अन्य देशों, जैसे अमरीका, यूरोप, आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड आदि के शहर व्यवसायी शहर की पंदावार को आज भी ट्यो और बैनने में पीते हैं।

शहर को किसी वस्तु और किसी भोजन में खा कर लाभ उठाना या सकना है। प्रातःकाल वाली पेट शहर का उपयोग करना सब से अच्छा है। शहर किसी अन्य बात अथवा पेय सह्य जैसे तैली, जल आदि के साथ खाने से अधिक लाभ करता है। चल में निम्न कर और उच्च में निम्न का रस निषेध कर पीना, शहर सेवन करने का एक उच्छल तरीका है। पारोस्य दूध और दाल के रस में भी शहर मिला कर पीना लाभ-द्वैत है।

कुर्बाना दूर करने और स्वल्प शक्ति बढ़ाने के लिए शहर के बमल गुलाकारी शंवार में अन्य कोई वस्तु

विनियम स्तम्भ—

शहद और उसकी उपयोगिता (डा० भूपेन्द्र सिंह)

मही है। शहद एक पचा-पचाया भोजन होता है, जो हमारे शरीर में आ कर पांच मिनिट के भीतर ही शरीर के किसी भी पाचन वन को बिना तनिक या भी कष्ट लिए पच कर शरीर में मिल जाता है। एक छोटे चम्मच भर शहद से मनुष्य को दो कॅलोरी की शक्ति प्राप्त होती है। जो समसम पाच भर ताजे फलों से प्राप्त शक्ति के बराबर होती है। शहद के कुछ प्रमुख उपयोग निम्नलिखित हैं।

(१) शहद आगु को बढाता है। रोमन इतिहासकार प्लुटार्क ने प्राचीन ब्रिटेन के निवासियों के सम्बन्ध में लिखा है कि वे १२० वर्ष की अकाल से दूध हुआ करते थे। शिवका प्रमुख कारण शहद का भरपूर उपयोग था। श्वेदिय दानाज में लिखा है कि मधु से जीवन बढ़ता है।

(२) शहद शरीर की सुन्दरता बढाता है। यदि कोई शहद को बेहरे और बदन पर रोज मलकर डेढ दो चद बाध को हला करे तो उस का सोदर्य अत्यन्त ही जाता है।

(३) शहद मनुष्य को चरित्रबान बनाता है।

(४) प्रतिदिन प्रातःकाल सवादे के साथ शहद मानने से मस्तिष्क बन-वान होता है। (५) यदि दूध-दोषवैय अधिक बढ़ जाने में रोगी को मूलां

जा जाए तो उस समय शहद को हल्के चुनचुने पानी में देना बडा लाभ करता है।

(६) जो मनुष्य नियम प्रति मोड़े शहद का सेवन करता है, उस के फेफड़े इतने मजबूत हो जाते हैं कि उसे फेफड़े के रोग होते ही नहीं।

(७) शहद अपच को दूर करता है और कब्ज को दोग्गा है। रात को एक चम्मच शहद ठंडे जल में पीने से कब्ज अच्छा हो जाता है। (८) चुन-चुने पानी में शहद और नून का रस मिला कर दिन में दो तीन बार पीने से ज्वर का रोग कम हो जाता है। (९) एक भाग शहद को दो भाग मिर्च के रस में मिला कर बालों की बढी में रोज सतने में बालों का मजना बढ ही जाता है।

(१०) नेत्र रोगों के लिए शहद, शिषेएकर कमल का शहर 'गुलुकारी' है। शहद को एक सूद रोगी की आंखों में स्पृशनी चाहिए। (११) शहद के सर्वत को पीने से बकावट दूर हो जाती है। (१२) नीम की पतियों के से साथ शहद पीनी में उबालकर उस की आप से एक मारने से शल ल्वाच सेकने से डक मारने का सारा कष्ट दूर हो जाता है। अधिक नही केवल तीन चम्मच शुद्ध शहद दूध, जल अथवा रोटी के साथ रोज खाए और लाभ स्वयं अनुभव कीजिए।

—आर्य प्रेमो से साभार

विवाह; संस्कारों पर

शोभुत हनीच सत्यपाल की पूर्व मन्त्री आर्य सभा बढाना के मुख्य भी निम्न कुमार जी का सुभ विवाह आनन्द में सौभाग्यवती रविकात्या के साथ समारोह से सम्पन्न हुआ। श्री सत्यपाल जी का सारा परिवार समाज के रंग में रंग हुआ है। इस परिवार पर समाज को प्य है। इस शुभाचर पर समा को वेद प्रचार के लिए बरतल को ओर से १५) ४० कन्या पत्र ने ५) ४० कृष्ण कर २० ४० मिले। विवाह संस्कार ४० नितीकच्छ शास्त्री ने कराया।

लेखराम नगर कावियां

ने सानू बिहारी लाल जी की सुपुत्री गोभाष्यवती सुदेसा का शुभ विवाह बढाना के श्री रमेशचन्द्र के साथ मूमया में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर नगर के मध्यमा सज्जने थे। वेद प्रचार समा को २१) ४० मिले। विवाह संस्कार ४० नितीकच्छ शास्त्री ने कराया।

बढाला में

श्री बन्देदेविजी श्री प्रवान आर्य सभा बढाना के शिष सिधु का शुभ नामकरण संस्कार समा के महादेवक ४० सुवीरानी श्री वर्मा ने मूमया से कराया। सारसहित माणल श्री दिवा। प्रतिद्व पञ्चमी ४० राजपाल, मदन मोहन जी के भजन भी हुए। शिषियन मुगलशिषो श्री ने भी शिष सिधु को आशीर्वाद दिया। समारोह से जनता काफी प्यारी। श्री बन्देदेवि सिंह जी सपुत्र आर्यसभाज के चसते फिले रूप ही है। इस अवसर पर नाना प्रकार की सत्पाशो को बान दिया गया। सब का सत्कार किया गया। शिष सिधु थिरको रहे।

गो रक्षा आंदोलन में

केरल के आर्य नेता में जेल भारत भर में बन रहे जो रक्षा आंदोलन की गति को तीव्र करने के लिये आर्यन मूच सीमा केरल के महाजननी श्री नरेन्द्र मूषण श्री रीच मय्या के उतने ही गो रक्षा के लिये प्रदेश का लूकानी दौरा जाकर किया। शिषेन्द्रम में नूचर-खाने के विरुद्ध आप ने ९ गो ब्राह्मों के प्रकण्ड सत्याग्रह का नेतृत्व किया। श्री नरेन्द्र मूषण जी अपने ५६ साधियों सहित विरुद्ध जेल में हैं।

राजेश्वर

**विनय**  
**दुर्गम छद्म**  
**नाम देवराज गानने 'पथरोट'**

हम वेद षडे गुणवान् वने, निव ज्ञान बडे उपकार को ।  
 प्रतिभा निखरे, शुचि ध्यान धरे, ज्ञापार करे अनुगानन को ॥  
 सुख भोग करे स स्वतन्त्र रहे, अर प्राण करे, सुख सम्यक्त को ।  
 परता न रहे, पर प्रेम बडे, निव उच्च करे निज सहकृति को ॥  
 तनया न बिके, सुरभी न करे, धननाथ्य बडे सुख बंधन को ।  
 बनिता न नचे उठाना न ठगे, नलवानबन्डे जनरक्षण को ॥  
 कटुता सतता सब दूर रहे, द्विपता सक्कने न किसी जन को ।  
 बंधता न रहे, शुचिता निखरे, सपुता पकडे न किसी मम को ॥  
 मयता न कभी हृदय बात करे, लूण मात तरे जड़-भेदान को ।  
 सब द्रष्ट सहे, सब त्याग सहे, तत्र त्याग करे ज्ञय-बन्धन से ॥  
 सब बन्धु बनें रस प्रेम बडे, अनुकूल करे द्रम जीवन को ।  
 शुभ कर्म करे सब सौख्य धरे, अर-स्वर्ग करे जय-कामना की ॥

### पुस्तक समीक्षा

आर्य समाज क्या है ?

के०—पं० मनसा राम जी

प्रकाशक—ही हंसराज आर्य ट्रस्ट

(बरेला) ब्राह्मणवर्गीय

कीमत—१५ पैसे। पृष्ठ संख्या

हस छोटी—ती पुस्तक में, आर्य

समाज के विषय में जो भ्रम फैले हुए

हैं और वे फिर पर की बातें आर्य

समाज के बारे में करते हैं और आर्य

समाज जैसी धार्मिक संस्थाओं पर

बाधा लगाते हैं। उनको कुछ तोड़कर

जवाब दिया गया है। कथम-कथम पर

आर्य समाज की वास्तविकता को बड़ी

बन्धी प्रकाश से दर्शाया गया है।

खैरिए इस पुस्तक के शीर्षक—

(1) पंडितों का सहाय्य आर्य

समाज (2) रोहियों का डाक्टर आर्य

समाज (3) मोते हुओं का गमा आर्य

समाज(बहि २ इन लोगों के अन्याय,

बाध विवाह, नृद विवाह, वे जोड

बिवाह, स्त्री शिक्षा, विधवा विवाह

आदि अनेक उपशीर्षक दे कर आर्य

समाज की कलिय निष्ठा पर अभी

प्रकार प्रकाश डाला गया है। पुस्तक

छोटी होने पर भी प्रचारको, उपदेशको

बन्धीकों तथा आर्य समाज के प्रति प्रेम

बधा रखने वालों के लिए अति उपयोगी

है। इस के साथ २ नव मुद्रकों के लिए

आर्य समाज के प्रति वास्तविकता को

जवाब दिया गया है।

आर्य समाज—मास्टर हरिचन्द

आर्य समाज जालज मंडी हिसार

### समाचार दं

#### आर्यसमाजलक्ष्मणरासर

#### (अमृतसर)

आर्यसमाज लक्ष्मणरासर के अधि-

वेशन में यह सूचना बड़े दुःख के

साथ सूची गई कि रणधीर काविय

कनूपत्या की संस्कृत रोहियों की

मिल रही शंट पंजाब सरकार की

शोर में बन्द कर दी गयी है जिसे

देश की सब से प्राचीन तथा सभी

भाषाओं की मूल भाषा संस्कृत के

साथ शोर अन्याय और दसके प्रचार

के मार्ग में भारी रुकावट समझी हुई

इस शंट को जारी रखने के लिये एक

प्रस्ताव द्वारा सबन भाग की गई।

—हृदयत समर्प

#### शुभ सूचना

आर्यसमाज लक्ष्मणरासर में २५

सितम्बर के आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि

सभा के सुयोग्य उपदेशक श्री पं०

ओ३म् प्रकाश जी पवार रहे हैं।

भा. स. के दैनिक सत्रों में प्रतिदिन

प्रातःकाल उनके आज्ञस्वी एवं प्रभा-

वारी भाषण सुना कर रहे हैं। धर्मप्रेमी

सज्जन धार्मिक से अधिक सत्पा मे

पहुँच कर लाभ उठावें।

—हृदयत समर्प

#### दीवाली के शुभ अत्रसर

#### आर्य जगत साप्ताहिक

#### ऋषि-निर्वाण-अंक

विशेष सजजन के स व तथा नवीन लेखन सामग्री तथा विताओं सहित प्रकाशित हो रहा है

- ★ लेखक तथा कवि अपनी समयमुक्त सामग्री छोड देने की कृपा करें।
- ★ आर्यसमाज तथा समाजें अधिक से अधिक आर्डर देकर समा को स्वागतस्वी बनाएं।
- ★ इस सुवर्ण अवसर पर समा का नवीन प्रकाशन भगा कर समाजों में वितरण करें।

—अध्यक्षपाक

#### विश्वसनीय व ताजे समाचारों के लिए

#### दैनिक न्याय

पढ़ने का ध्यान रहे

अजमेर, २ अक्टूबर ६६ से नियमित प्रकाशन में

#### शुभ समाचार

श्री विश्वसनीय व ताजे समाचारों के लिए विशेष प्रतिनिधि सभा सुवर्ण की शीर्षक सुभार जो कि विश्वसनीय समाचारों की शीर्षक ३३वीं, श्री तीर्थपथ की विचार ३३वीं मास्टर विमला के साथ २५-९-६६ को पूर्व दैनिक रोहि के १० रविदत्त जी धर्मों से सहाय्य कराया। उपस्थित बरातियों ने बन्धु-पुत्र को सहृदय से आशीर्वाद दिया।

#### आर्य समाज तर:बड़ी (करनाल)

प्रदेशिक सभा के दुर्भाग्य 'पुष्पान' की मण्डली द्वारा १८-९-६६ तक तपावडी के मुहल्लों में वेद प्रचार किया गया। इस बन्धु पर बन्धुओं की बाटे गए। सभा को ८५/- के प्रचारार्थ धान प्राप्त हुआ।

इस कार्य में इन्द्रसिंह जी ने तोसाह भाग लिया। समा उन का अन्याय करती है। —मन्त्री समाज

#### ★ सब करने के बाद यह के सामने शुद्ध रहने की प्रविधा करके

होया करो, मन, बुद्धि और वाक्य को बुरे विचारों तथा बुरे कर्मों से दूर रखने का पुरा प्रयत्न करना चाहिए। यही बुद्धि कला है।

में कोई उजर हो तो ता० १५-१०-६६ को बुधवार जा कर उजर करें। धार में कोई उजर न होया जाय बत्तारी १५-९-६६ को भेरे दसवत्ता वा मोहर बचावत के जारी हुआ।

विष्वा मित्र साहित्य वज, हिसार



दैनिकीकान नं० ३०५७

[आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र]

Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १५ पैसे

वार्षिक मूल्य ६ रुपये

सं० २६, अंक ४१

२४ आश्विन २०२३ रविवार—दयानन्दवाक्य १४२- ९ अक्टूबर १९६६

(तार 'प्रादेशिक' जालन्धर)

**काश्मीरीअपनेर्भावष्य का निर्णय कर चुके, काश्मीर भारतका अंग रहगा**

**प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी**

श्रीनगर। प्रधानमंत्री इंदिराजी आज कहा कि काश्मीर का केवल सामरिक महत्व ही नहीं, बल्कि यह देश की धर्मनिरपेक्षता का प्रतीक भी है। विपवास और अजी सेक्टर के अर्थिक क्षेत्र में सीमाओं को सम्बोधित करते हुए श्रीमती इंदिरा ने कहा कि यह अर्थ बनता की पास पास में कमा और राष्ट्र ने इस से सक्षि प्राप्त की है। श्रीमती गांधी ने घोषणा की कि काश्मीर के लोग भारत में रहने का निर्णय कर चुके हैं और वे भारत का ही अंग रहेंगे।

प्रधानमंत्री ने जबानों को कहा कि वे देश में हो रही प्रसन्न वे, जो कुछ राजनीतिक तत्व कट्या रहे हैं, मिल न छोड़ें। हमारा देश मजबूत है और विन-यतिविन मुदुर हो रहा है।

श्रीमती इंदिरा एक हेतिकाष्टर श्राव तपचर घुसी।

सेना के अधिकारों और जवानों तथा मन-सेना में जो मुझिका विभाई, उस से देश की प्रोत्सा बढ़ी है। हमारे सैनिक महान् उत्साह और अतिथी बीरता से अपने कर्तव्य को निभा रहे हैं।

उन्होंने कहा कि यह वर्ष का साल-यासिमन पुत्र सेनाओं और देशको मासु कर रहे था। श्रीमती इंदिरा ने कहा कि अगर भारत पर पुनः महाई डोली गई तो हमारे जवान् युवाकाए को मृत नोट अबाव देने को तैयार हैं।

## लालबहादुर शास्त्री ने कहा था

भारत के विवेता प्रधानमन्त्री स्वर्गीय लालबहादुर शास्त्री की जब रही स्मृति आज देश-भर के लिए श्रेरणा पुत्र है। इस-काय मासबहादुर ने अपने आचरण से ऐसे बट वृक्ष का रूप धार किया, जिसके तले सारे समझि राष्ट्र ने स्वर्ग को भुराजित पाया। चाणव भारतीय और हिंदुत्व की साकार प्रतिभा भी लालबहादुर के निम्न अर्थों पर पूरे उलटने का सफल ही उन महापुरुष के जन्म-दिवस पर हमारी सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी।.....

एक पृथीव्य व्यक्ति आत्म निर्भर बन सकता है, लेकिन एक धनवान प्रायः औरों पर निर्भर रहता है। जासमिभरता का अर्थ है कि जो कुछ हमारे पास है, उस का अधिक से अधिक उपयोग करने की शक्ति और जो कुछ हमारे पास नहीं है और न ही हो सकता है, उसके बिना जीने का उस्ताह हम में मौजूद हो। जब स्वतन्त्रता और सीमाओं की अवहता अलरे में पड़ जाए तो, उस समय केवल एक ही फर्लव्य निभाना आवश्यक है कि सम्पूर्ण शक्ति से चुनौती का मुकाबिला करना हम किसी भी देश की शरती के एक इंच पर भी अधिकार नहीं करना चाहते, हम सदा शांति के साथ अच्छे पड़ोसियों की तरह रहना चाहते हैं, लेकिन यदि हम पर हथवा किया जाता है तो हम अपने पूरे-पूरे साधनों से उनका कडा मुकाबिला करते।

एक ऐसे सामाजिक 'दर्शकों की स्थापना' से वैश्विक आवश्यक शात कोई नहीं हो सकती, जिस में कि समाज के निर्धन और निम्न वर्ग को उचित स्थान देने का आवश्यक विधा जाए।

आज मानवता के घमल सब संस्थाओं से बढ़ी संस्था विरव शांति और निरस्त्रीकरण के उद्देश्य की प्राप्ति है। अगलिय पीढ़ियों से मानवता शांति के लिए तरसती आई है, संपर्ष करती आई है हम सभी शांति-युग्म देशों के साथ मिल कर इन आदरों की प्राप्ति के लिए संपर्ष करने की प्रतिज्ञा करते हैं।

- ★ दर्शन छः—(१) गौतम मुनि इत—त्याग शास्त्र। (२) कणाद मुनि इत—वैशेषिक शास्त्र। (३) कपिल मुनि इत—सांख्य शास्त्र। (४) पातञ्जलि मुनि इत—योग शास्त्र। (५) जैमिनी मुनि इत—मीमांसा शास्त्र। (६) व्यास मुनि इत—वेदान्त शास्त्र।

★ जिन पुस्तकों में चारों वेदों का अर्थ समझना क्या हो उन्हें ब्राह्मण ग्रन्थ कहते हैं।

## ऋषि दर्शन

**ग्यायकार्यम्**

हे गग्नेश ! आप ग्याय करने माने हैं। आपकी ग्याय नियम की मुना मे कोई कोटा अपनी सोट को छिपा नहीं सकता।

**निर्वोडसि**

हे दवागिने ! आप निर्भर हैं। किसी से भी आप न। भैर नहीं है। प्रवागिने के नते मारा विरव आप की ही प्रवा है। जैसा २ कोई छुप अशुन कम करता है, उसी के अनुकूल उसे फल देने हो। उस मे भी आप की दया का परिचय मिलता है।

**ईश्वरत् वाचितकम्**

हे मानवो ! इधर उचर क्यों मानते किन्ते को क्या मिताता है। मटक २ कर बकना ही होगा जो कुछ भी मागना चाहते हो तो उसी परसेवर से मागना सीधो। उलट बिना और हुसरा कोई भी तो मन न। कामना को पूर्ण नहीं कर सकता।

**सेतासत्यन प्रशंसनीया**

हे राष्ट्र प्रेमियो ! आपकी सेना, सैनिक शक्ति बढी ही प्रशसा के योग्य हो। उस मे किसी गवर की भी कमी न होने पाये। तीन प्रकार की सैनिक शक्ति पराजय से उलट पूर रहे। आचार, विचार से अरी होनी चाहिए।

भा य म् नि का ने

जिस परलो पर हम निष्ठा करते हैं, उस में बड़ी आश्चर्यजनक वस्तुएं तथा घटनाएं विद्यमान हैं। दृष्टि इसलिए, अलग-अलग निर्माण-कुशलता दृष्टिगोचर होती है। उन में भी सब के अधिक आश्चर्यजनक है मनुष्य, जिसे सब से अधिक बुद्धिमान समझा जाता है। देश-विदेश की जनजातों और परिस्थितियों के कारण मनुष्य विभिन्न आकृति और स्वभाव के हैं, इन सब की विचारधारायों में एक नहीं है।

कुछ मानव जन्म के ही सुख-समृद्धि में होते हैं तो कुछ अभाव-प्रसूता में, कुछ तीव्र बुद्धि के होते हैं तो कुछ मंद बुद्धि के। कुछ जन्म के स्वस्थ होते हैं तो अधिव्य मे रोगी और कोई जन्म के समय रोगी तो विषम मे स्वस्थ। एक विह्वलित स्वभाव का है, दूसरा प्रसन्न चित्त रहता है। एक सुन्दर आकृति वाला है तो दूसरे का मुख देखा भी नहीं जाता। महाकवि पद्याकर कहते हैं कि एक ओर तो—

गुलजुली जुल है, गलीबा है,  
मुनि जन है,  
चादनी है, चिक है,  
विरानन की माला है।  
कहे पद्माकर यो गजक

मिजा है सजी,  
सेज है, मुप्राही है,  
मुरा है और प्याला है।  
सितार के पाला मोम  
ब्यापक करालवित है,  
जिनके बापीन एते  
उदित मसाला है।  
तान तुक ताला है,  
बिनोब के रसाला है, सु-  
सुबाला है, दुगाला है,  
विद्याला चित्रशाला है ॥

और दूसरी ओर एक अर्थीस सितार की रागि में घुटने दबा कर और दिव मे मूर्ध की किरणों की ताप से ही ठण्ड दूर करने का प्रयत्न करता है—

राभी जानुदिबा मानु: कुशानु:  
सन्मोदंयो: ।  
इत्य शीत मयानीत  
जानु मानु नृपानुभि: ।  
इस प्रकार की अनेक विभिन्नताओं

को देखकर यह प्रश्न ही उठना स्वाभाविक ही है कि सृष्टि में यह विभिन्नता अर्थात् सुख दु:ख क्यों है? कर्मणः, विद्वान् उत्तर देते हैं कि यह ईश्वर की नीजा है, उसका खेल

धार्मिक कर्म :-

सुख-दु:ख क्या और क्यों ?

(आचार्य श्री विभक्तन जी एम० ए०, सिद्धान्ताणकार)

है, यह नीजा कर रहा है और निरर्थक ऐसी सृष्टि रचता है। किन्तु यह विचार युक्ति की कड़ोटी पर धरा नहीं उतरता, क्योंकि कोठी बन कर कपड़ाने में कोई सीला नहीं मालूम पड़ती। कोड़ा सुख के लिए होती है दु:ख के लिए नहीं, तब संसार में दु:ख क्यों दिखाई दे रहा है? ईश्वर की सीला मानने पर यह पसपाती सिद्ध होता है। जो उचित समाधान नहीं। अतः प्रश्न ज्यो का त्यो ही उपलब्ध रहता है।

सभी दार्शनिक सृष्टि के सुख-दु:ख का एक ही कारण बताते हैं—मानव के पूर्व जन्म के किये हुए कर्म। बिना कर्म के कभी कोई जन्म या मृत्यु नहीं होती। एक कवि कहता है—  
बिना कर्म के कभी न राख मे,  
जब की नेकी बनती है ।  
बिना कर्म के कभी न जग मे,  
सौख्य राह भी मिलती है ॥  
बय-डय, पग-पग पर भी,  
देवों कर्म की छाया है ।  
कर्म किया है जिस मानव ने,  
मोस उती ने पाया है ॥

वेद कहता है :—  
मे माथा शर्मन्सः पुरा तनो: ॥  
शु० २-२८-५ ॥

अर्थात् भक्त प्रार्थना है हे प्रभो । मेरे कर्मों की माथा अकाल में ही समाप्त न हो जाये, इसी का सन्तोष करण भगवान् पतञ्जलि करते हैं—  
‘सतिपूर्णे तद्विधाको जाल्यायुर्भोगः ॥  
साधनापाद २, १३ ॥

तापयं है कि कर्मों के फल जाति आयु और भोग होते हैं, जबकि उनके मूल मे कर्मों बादि विद्यमान हो। जाति का तात्पर्य योनि से है। मुख्य रूप से योनियों तीन कोटि की होती है, कर्म योनि भोगयोनि तथा कर्म भोग (उभय) योनि। जीव कर्मों के आधार पर ही, योनि प्राप्त करता है। उन्हीं के आधार पर उसे आयु मिलती है। कर्म (सुख-दु:ख) से अधिप्राप्त कर्म-फल से है।

सृष्टि की उत्पत्ति भी इसीलिए हुई है। नीता मे कहा है—  
कार्यकारण कालो वेतुः प्रकृति इच्छते ।  
पुरुषः सुख दुःखाना मोक्षुन्वे हेतु रथ्यते ॥  
नीता १३-२०

मात्रार्थ यह है कि पुरुष के कर्म-फल से सुख-दु:ख के योनि के लिए यह प्रकृति से भोग संसार है। साक्ष्य दर्शन में निष्ठा है—  
प्रदीपकर्म्यायतो दृष्टिः ।  
तथा—  
पुरुषार्थ एव हेतुर्न

केनचित् कार्यं ते करणम् ॥  
जल्पयं यह है कि पुरुष के पूर्व कृत कर्मों के भोग एवं भोग के बाद अध्याय की सृष्टि का प्रयोजन है। भोग एवं अध्याय उन्ही समय प्राप्त होते हैं जबकि मानव ने उसके लिये कर्म किये हों, अतः कर्म ही इसके कारण हुए ।  
नीता ने एक अन्य स्थान पर कहा है—  
‘अवश्यमेव भोगव्य

कृतं कर्म शुभाशुभम् ॥  
दिवस के प्राचीन जिन सुख-दु:खों का भोग कर रहे है वह उनके पूर्व कृत कर्मों का ही परिणाम है। इसी बात को संस्कृत के एक कवि ने यों कहा है—  
रोग, शोक, परीताप,  
कल्प व्यसनानि च ।  
आत्मापराध नृशासणं  
फलान्नेतानि देहिनाम् ॥

कर्म की परिभाषा

एक समस्त सुख-दु:खों के मूल कर्म क्या है यह जानने की प्रवृत्ति दृच्छा होती है। बौद्ध-दर्शन ने कर्म की परिभाषा स्पष्ट रूप से यों दी है—  
एक द्रव्यगुण संयोग विभक्तियुः ।  
जनपैव कारणमिति कारण लक्षणा ॥

अर्थात् कर्म शब्द का साधारण अर्थ क्रिया है। किन्तु कर्मशब्द में इस का अपना विशेष अर्थ है कि वे कर्म होता हैं जिनके करने में कर्ता स्वतन्त्र होता है य जिनका उत्तरदायित्व उस के ऊपर है। बहुत से कर्म ऐसे भी हैं जिनका उत्तरदायित्व कर्ता पर नहीं होता, जैसे युद्ध करने वाले सैनिक होते हैं परन्तु उनका उत्तरदायी (अर्थात् जय, पराजय) राजा होता के नहीं। इसे ही गणमान पारिधि ने यों कहा—

‘स्वतन्त्रः फलः ।’  
नीता कहती है—‘कर्मन्वेधाधिकारतो’  
वेद कहता है—  
कुन्मेवेह कर्माणि विभो-  
विषेण्यच्छत् समाः ।’

कर्म विभाग

कर्मों के विभाग कई प्रकार के किये जाते हैं। प्रथम विभाग है संचित प्राण्य एवं कियमाण, द्वितीय विभाग है संचित, मर्मितिक और मास्य। तृतीय विभाग है सकाम और निकाम। यहाँ प्रथम विभाग हा कर्मों में आता है, उस में साधारणतः संचित और कियमाण यों ही कर्मों में वेद मुख्य हैं। प्राण्य संचित का ही एक विशेष भेद है।

कर्म-विपाक

कर्म तथा उसके फल का सम्बन्ध बहुत ही निश्चय का है। जैसे कर्म और कारण कब है। जब-कभी एक कर्म होता है तो उसका भोग होता ही चाहिये। नीता में भी कहा है कि चाहे अच्छे कर्म करो या बुरे, फल अवश्य भोगना पड़ेगा। इसी फल को कर्म के भोग के लिए इस शरीर की प्राप्ति हुई है, उसके भोगे बिना छुटकारा नहीं है। मनुष्य के हृदय में प्राण्य कर्म जन्तित प्रेरणा सर्वै रच्छती है। उस से जो फल या भोग होता है वह भी एक प्रकार से कर्म कहा जायेगा। यदि उसके प्रति मनुष्य में ममत्व हो तो वह फल-भोग में उस ममत्व के द्वारा मया कर्म कहलाता है और इस प्रकार कर्मों का सचय होता है, जब तक कर्म-प्रेरणा स्थिति नहीं होती।

कर्म-फल

किये हुए कर्मों का फल उत्तम जगया अनुत्तम योनों ही हो सकते हैं जो कि कर्मों के ऊपर ही आधारित हैं। वित्त प्रकार कर्मों का विधान हुआ था, उसी प्रकार फल का भी हो सकता है। फल की यों को मोटियां हैं। एक ही कर्म के कई फल हो सकते हैं तथा कर्म मिलकर एक फल पैदा करते हैं। इस का फल आति-वायु और भोग है और मुख्य रूप से जाति ही है। जाति से तात्पर्य योनि है। यह हरण्य पर्यन्त एक ही रहती है, यह और भोग पर गत जन्म के अतिरिक्त इस जन्म के कर्मों का भी प्रभाव रहता है।

★ ★

★ आजकल पढ़ने वाले साधों मनुष्य बेकार हैं। इसके अतिरिक्त जो पढ़ता है वह भी मरता है और जो नहीं पढ़ता-वह भी मरता है फिर पढ़ने पढ़ाने में बात कटाट कर क्यों करें ।

सम्पादकीय—

# आर्यजगत्

वर्ष २६/रविवार ०२२, ६ अक्टूबर १९६६/अंक ४१

## आर्यसमाज और गोरक्षा

आर्यसमाज के महान संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने हैस के विद्यालय कार्यों में यशु रखा का महान कार्य भी निरिच्छत किया। आर्यसमाज की जागृतापत्ता वेच है। वेदों में जीव हिंसा पाप माना गया है। पाप को प्रतीक मान कर तपाम जीवों की हत्या बन्द करने में अर्धव्यभाव सब से आगे है। वैदिक धर्म में मांस खाना संभवा निषिद्ध है। महर्षि दयानन्द ने इसके बारे में अपनी अमरकृतियों में बहुत कुछ लिखा है। गो का स्थान मानवीय तथा राष्ट्रिय जीवन में बहुत ऊँचा है। इस का सम्बन्ध भारतीय जनता के प्रत्येक काम से जुड़ा हुआ है। वेदों में गो को देवताता कामधेनु कहा है। शारङ्गों ने, इतिहास एव समाज कर्मकाण्ड के दृष्टों में इस की तपाम का विधान मिलता है। गो-ध्वंस के विना राष्ट्र का चित्र पूर्ण नहीं माना जाता। रामायण के राम, महाभारत के गोपाल, बौद्धकाल के भारत के अग्रीक गो के परम अस्तो में ये। मुगल सम्राट अकबर ने भी अपने राज्य में गोधब संभवा बन्द करके गोरक्षों के लिए भारी दण्ड का विधान किया था। गोपालक दयानन्द तो जनता की आवाज विक्टोरिया तक पहुँचाने में लगे थे। गोकुलशास्त्रि जैनी अग्रणी पुस्तक इस पर लिखी। इस युग में गान्धी जी से गोश्ला पर बडा सब दिशा था। भारत के विधान में भी इस के लिए धारा नियत है। किन्तु वेच यह है कि उनीस वर्ष समय २ पर जनता ने पुकारा की। एक बार तो राष्ट्रिय संघ ने भी पीने दो फ़रोड लोको के हस्ताक्षर कर कर उस समय के राष्ट्रिय डा० राजेन्द्र प्रसाद की सेवा में पेच करके गोहत्या बन्द करने की मांग की। परन्तु आज तक भी भारत में गोधब बन्द नहीं किया गया। इस समय को हुजूरद्वारा अक्षरकों के राज्य से भी अक्षिक है तथा गोधब आगे से बहुत संभवा में होता है। यह बात सारे भारतीयों के

लिए बड़े धर्म की है। यह हमारी सरकार का बहुकर्मियापन है कि उसने जनता प्रतीक लो अक्षीक को बनाया है पर अजोक विन्दू के नीचे कितना गोधब होता है। कितन डंग से होता है, यह पुन कर तो रौंगटे सहे ही जाते हैं। गान्धी जी की समाधि की परिष्कार करने जाने, पीला का पाठ करने वाले तथा अजोक का नाम लेने वाले ये नेता गोहत्या बन्द करने की बात ही नहीं सुने। जनतन्त्र की सदा दुहाई की जाती है पर सारो जनता गोहत्या बन्द करने का आन्दोलन करती है। भारत के सन, आर्यसमाज सनतनधर्म जनसमाज, नामधारी सन जनसभ, राष्ट्रिय सभ, आर्य वीरदल, सङ्घ से मुस्लिम संस्थापन भी, अनेक कर्मों भी मिल कर गोधब बन्द करने की बात जोरदार शब्दों में कहते हैं। इस के लिए एम० रामचन्द्र जी ने भाषणों की बाजी बसा दी—पर परिष्कार क्या हुआ कि सत्तो की वेत्तो में पहुँचा दिया गया। क्या यही जनतन्त्र है? यह तो मनमाना तन है।

भारतीय जनता और तो बडे से बडा कष्ट सहन कर सकती है, पर गोधब इसने कभी सहन नहीं किया। गोहत्या के कारण आज देश में दूध पी का संभवा बभाव होता जा रहा है। यही अस्था रहा तो भारत में दूध-पी का नाम तक नी न होगा। शब्दाड तो जनता को खिन्नाया ही जा रहा है। गोपाल का भारत आज चमडे का भारत बनता जाता है। सक्की बात यह है कि उत्तर के कई नेताओं की विचारधारा पश्चिमीय है। भारतीयता का उन के मन पर कोई भी प्रभाव नहीं। जिन की विज्ञान-वीक्षा पश्चिम में हुई, उनीं बालाबश्या में आरम्भिक विन बीते। उनकी बोली से बोसते, उनके विषयग से विचारते, उन की भाँसाँ से देखते हैं। उन को गोधब अक्षरता नहीं है। पर जनतन्त्र में जनता की आवाज सुननी ही चाहिए। अब इस के लिए जगत आज उठी है। बडे-बडे सनत महात्मा

वेदान में आने लगे हैं। सारा भारतीय समाज उन के साथ है। अब गोधब बन्द करना ही होगा। गोहत्या जारी नहीं रह सकती।

आर्य समाज तो इस पवित्र कार्य में पूर्ण सहयोग दे रहा है। सार्वदेशिक सभा का सहयोग सारे समाज का सहयोग है। हमारे किन्ही भी साधुसन्त ने गोहत्या बन्द करने में एकाग्र को छोड़ कर कोई वक्तव्य नहीं दिया। उनकी श्रुष कर नोचना चाहिए समाजों की बोलना चाहिए, रैनिक पनो मे लेस बातें चाहिए। समाजों को संशुद्धि रूप में आवाज उठानी चाहिए।

—फिलोसफ़र

## शतवर्षी सातवलेकरजी

आज के युग में अपने जीवन में अपनी शताब्दि देखने व मनाने वाले कितने भाग्यशाली हैं। यह स्वाध्वन्-पूर्ण लम्बी आयु उनके अपने निरालिप्त सन्तनी तप का परिष्कार है। भारत के प्रसिद्ध विद्वान् तपोजीयो, वेदभूति श्री प० रामोचर सातवलेकर जी के साधनापच पर चलते हुए पूरे तीस वर्ष हो गये हैं। उनका जीवन शताब्दि का हो चुका है। सारे भारत की जनता को कितनी प्रसन्नता है। हम आर्य जन्तु परिवार की ओर से वेद-भूति श्रद्धेय श्री पण्डित जी को सादर नमस्का भरे भावों से हार्दिक बधाई देकर उनके तपोमय, स्वस्थ जीवन एवम् वेदों के महान निरन्तर स्वाध्याय श्रव के सार्वने श्रद्धा में अपना मस्तक मुकते हैं। भगवान् उनकी लम्बी आयु प्रदान करें।

वेदभूति पण्डित सातवलेकर कितने भारी विद्वान् हैं। वेद के प्रति उनकी कितनी मिश्रा है, स्वाध्याय से कितना प्रेम है, कितने बडे विचारक, लेखक व मननशील हैं, उनका जीवन कितना तपस्वी, सत्यमी या विरामित है—ये सारी बातें आज भी उस दिव्यभूति के दर्शन करके अतह हो जाती हैं। कितने महान् भक्त विश्वे हैं। वेदों को भाध्य व लेखों द्वारा कितनी सन बना कर कोने २ तक पहुँचाया है, वैदिक धर्म मामिक को कई भाषाओं द्वारा कितनी समीरता से समर्पादित कर रहे हैं। स्वयं कितनी सोम्य-भूति है, लेखन में कितनी मधुरता, सतता, भाषण में कितनी सफुलता, जीवन में कितनी सरलता है, मन में कितनी उदारता, जेनो में कितनी कीमत्ता है—ये सारी विशेषताएँ इस योगी के दिव्य जीवन में भरी हुई हैं।

श्री पण्डित जी ने अकेले एक निरिच्छत साधना निकत कर उसकी प्राप्त करने में कितना कमाल कर दिखाया है। उन को ब्रह्मर्षी की उपाधि मिली है। वह स्वयं ही एक महान् संस्थापन का कार्य है। जनकीयों को अकेले इस तपोभूति ने इतना विद्यालय साधिय दिया है—जिसकी सतानना बडी २ मंशवाए व तथा भी नहीं कर सकती। हिमालय की कुन्दराओं में जाने की आवश्यकता नहीं पडी। तपोवन को सोचना नहीं पडा। योग के लिए आश्रमों में भटकना आवश्यक नहीं समझा। जीवन में साधना नियत कर के एक स्थान पर बैठ कर वेदमता की गोदी में बैठ कर सब कुछ पा लिया। अब वह बाहर बहुत कम जाते हैं। बडे २ लोग स्वयं उनके पास जाकर बहुत कुछ सीखते हैं। आदर्श कर्मयोगी हैं वह, वेदभूति हैं। अकेला तपस्वी था कर सताता है—यह देखना ही तो श्रेष्ठकित सातवलेकर जी, आर्याय निरवधनु जी, श्री प० मयाप्रसाद जी उपाध्याय, स्वर्गीय महात्मा हतारज जी, स्वामी ब्रह्मानन्द जी, प्रितिलय मेहरचन्द जी जालन्धर के कार्य को देखें। हम तपोभूति प० सातवलेकर जी का अभिनन्दन करते हैं।

## दिल की बात

बहुत दिनों से दिल में एक विचार बन्द २ उठता है। कई मज्जनों में निरवधन को किया है। दिल की दिव में रह जाते, उसे प्रकट कर ही दिया जाते। बात यह है कि आर्यसमाज के विद्यालय परिवार में इस समय कई ऐसे भाग्य महापुत्राभ हैं, जिन की आयु लम्बे वर्ष के लगभग है। दो साल कम या अधिक। ये सारे सज्जन आर्यसमाज की विभूतिया हैं। आर्य समाज को दानके जीवन व कार्यों पर बडा मान है। इन को बडा अनुभव है। समाज का पुरातन मुहूर्तना युग इन की आँखों के सामने है। जीवन की लम्बी यात्रा पार कर ली है। ऐसे भाग्य महापुत्राभों को ही डा० गोकुलचन्द्र जी सारण, डा० दीनाचन्द्र जी एम० ए० कानपुर, दीवान अनस-धारी जी अम्बाला, दीवान नदीदास जी जालन्धर, शंकर केशवचन्द जी अमृतसर, महाशय रतनचन्द्र जी बन्दी मारवाला अमृतसर, महात्मा आनन्द श्यामी जी, महाता रामचन्द्र जी शाही नरि आर्यसमाज के चमत्कृत रस हैं। हृदयार विचार है कि समाज भी इन तथा इन जैसी पत्राज की ओर भी (ये पृष्ठ ४ पर)

वेद प्रचार मण्डल जालन्धर की ओर से आयोजित व्याख्यान माला का प्रथम भागए आर्य जनता के ज्ञानार्थ वेद है जोकि षी०ए०बी० कावित्ज जालन्धर के मुखोप प्राध्यापक तथा समाजकी समाननीय प्रो० वेद प्रकाश जी एम० ए० २ अक्टूबर १९६६ को आर्यसमाज विश्वम पुरा जालन्धर मे सभी जालन्धर की समाजों के प्रतिनिधि मर-नारियों के सम्मुख रखा ।

आर्य भाइयो और बहिनो !

महाभारत के काल के बाद मत-मतान्तरी की प्रवृत्ति हुई । इस युद्ध में सारे ज्ञानी मार गये । मत्स्य कर्म का लोप सा छा गया । सारी रीति नीतियां अस्त-व्यस्त हो गईं । क्योकि धर्म का ज्ञान वेद से ही उक्तता है । वेदोपदेश के न होने ने अन्य परम्परा फैल गईं । नाना मतों का प्रादुर्भाव होने लगा । सन प्रवर्तकों ने अपना रास्ता अपना बनाने के लिये अपने २ मत को वेद के सत्य की पुट दे कर जनता के सामने प्रस्तुत करना आरम्भ कर दिया । इन में जो भी सत्य था वह वेद का और अवस्य मत प्रवर्तकों का बिना सत्य के विद्वेष नही होता (सत्य मूलक विस्थापन) विस्थापन मूल सत्य है । जिन जनता की विस्थापन बचाने के लिये योद्धा नव्य निवर्तन कर दिया । इस सत्य की स्थिति (विषय कृष्ण पद्योमय) मे अधिक न थी । केवल जनता को ज्ञान मे फसाने के लिए ही ऐसा किया । जनता को वेद मे विद्युत् कर अपना अनुयायी बनाना माना है । इन पथार्थ लोगों का उद्देश्य था ।

इनकी पुस्तकों मे वेद की स्तुति और निन्दा दोनों प्रकार की बातें हैं । स्तुति अनौर आकर्षित करने के लिए और धीमी सी निन्दा वेद से विद्युत् कर अपने सम्प्रदाय में लाने के लिये वेदानुयायी रहने से मातृपता असम्भव थी ।

इस प्रकार मव से पहला प्रभाव बुद्ध, जैन, तथा ईसाईयत का हुआ । वेद से अनाभिन्न होने के कारण वेद और ईश्वर से विद्युत्ता का प्रचार आरम्भ हुआ । ईसाइयत पर भी बुद्ध धर्म की योद्धा क्षण है । ईसायत के प्रचारकों और स्क्वालरो ने वेद प्रचार को ही क्षण है । सायए जैसे पौराणिक भाष्य कारो के प्रभाव के कारण पश्चिमी स्क्वालरो ने वेद सम्बन्ध मे अपनी प्राप्त सम्प्रतिष्ठा प्रकट की । वेद के कारण के सम्बन्ध मे वे ईसा

## “ऋषि दयानन्द और वेद”

श्री वेदप्रकाश जी महहोत्रा M.A. समा मंत्री जालन्धर

के जन्म से पाच सहस्र वर्ष पहले नही गये । जाने की ह्रिम्यत ही नही थी । क्योकि वे वेदाविवल के चिह्नद अपनी लेखनी उपाग उसे मूय् दंड योगना पडता । इस कारण सत्य को छुपा कर लिखा जो कुछ लिखा । पौराणिक मत में महर्षि व्यास को वेद का करता मानते हैं । कई ब्राह्मण ग्रन्थों को कई उपनिषदों को । कुछ महा-भारत की भी पाचवा वेद मानते हैं । इस प्रकार वेद के सम्बन्ध मे महा-भारत के बाद नाना भ्रातियां कयी । और लोग वेद से विद्युत् होते बले चले गये । वेदप्रद की भ्राति नाना राहो से मखिल तक जाने का यत्न करने लगे ।

इस प्रकार जब भारतीय संस्कृति एव सम्प्रदाय पश्चिमी सम्प्रदाय के तुलान मे बही जा रही थी गम और कृष्ण एव तथा ऋषिमुनियो को वह युद्धमूर्ख (ओलड-यून) कहा जा रहा था । वेद का नाम मात्र ही केवल रह गया था । ऐसे प्यारे योग आकर महर्षि दयानन्द संस्कृती की महाराज ने सिंह गर्जना की और कहा ए ससार के लोगों वेद ईश्वर का ज्ञान है । वेद मव सत्य विद्याओ का पुस्तक है । वेद प्रतिपादित धर्म ही सत्य धर्म है, धर्म की जाच के लिये वेद परम प्रमाण है । वेद को छोड़ कर कमी कोई सुखी नही हो सकता । वेद विहित धर्म ही परमार्थ के साधक हैं । वेद अपौरुषेय है । परम-प्रमाण है । इस प्रकार वेद की सत्यता और अपौरुषेयता का ऋषि ने प्रतिपादन किया । लोग इस धीय को सुन कर भीचके रह गये ।

ऋषि ने कहा वेद मंत्र संहिता का नाम है । जो आदि ऋषि में परमात्मा ने चार ऋषियो के द्वारा दिया । ऋषि मंत्रों के दृष्टा है कर्ता नही मानव की कृति मे वीयो का होना स्वाभाविक ही है । वेद का का ज्ञान निर्वाण सत्य है । यह मानव कृति नहीं । वेद मे बीज रूप से अलं विद्युत् मे भरती पड़ी है वीदे २ विद्युत् मस्तिष्क इन की क्षीय करेसे त्यो २ अधिक जानेगे । वेद प्रतिपादित ज्ञान का बखान ब्राह्मण, आदि र्भ सं में है । परन्तु वे भी वेदानुकूल होने पर मानने के योग्य हैं ।

वेद मे सृष्टिकर्म और तर्क सम्यत ज्ञान है । परमात्मा सब का पिता है और

आदि गुरु है । अतः आदि सृष्टि में अहा परमात्मा ने जगत् और नाग भोग पदार्थ विदे उनके साथ उनके प्रयोग और ज्ञान के लिए ज्ञान भी दिया । बही ज्ञान वेद है केवल सृष्टि रच कर उसका प्रयोजन और प्रयोग के प्रकार का ज्ञान न देना जो प्रयोग को निष्प्रयोजन बनाने के समान हो जाता है । कोई आविष्कर्ता किसी प्रकार का आविष्कार कर उसके प्रयोग की विधि का निर्माण साथ २ ही करता है । ताकि उसके आविष्कार का उचित प्रयोग हो सके । इसी प्रकार उस महान आविष्कर्ता ने सृष्टि का आविष्कार कर उसके प्रयोग की विधि एवं तत्र च ज्ञानार्थ वेद का ज्ञान आदि सृष्टि मे ही दिया । सृष्टि को बने लगाने की अरब बर्षों को भले है सभी से कार्य चल रहा है । सृष्टि तो अरब बर्ष पूर्व बना ही गये और तत्सम्बन्धी ज्ञान को कृच्छ्र हुआ, बर्ष हुए ही वह तर्क सम्यत नही ।

महर्षि ने यह मत्व ज्ञान दण्डी स्वामी विरजानन्द जी महाराज से प्राप्त किया और निष्कण योषा की भाति इस तरह नाना कृत्प सह कर प्रचार किया । वेद के सम्बन्ध मे किसी से स्वामी जी ने मुत्तुहा नही की । इन का प्रभाव समकालीन पश्चात्य विद्वानों पर भी पडा । मैक्समूलर आदि स्वामी जी के प्रभाव से प्रभावित हुए विद्वान र रह सके ।

स्वामी जी ने अपने दस बर्ष के महान व्यस्त जीवन के काल मे जहा नाना मतमतान्तरी का अन्वेषण किया । भाषए शास्त्रार्थ वहा अनेको अनुविधाओं केहोते हुए १५००० पृष्ठ लेख वढ भी किये । उस महान कर्म-योगी की सब से बडी वन है वेद । इस सूय को उदय करने वाले पंजाबी ब्राह्मण मुन्डेव को भी हम सभी उप-कृत हैं ।

अतः वेद के पवित्र ज्ञान का प्रचार और प्रसार कटिबद्ध हो कर करने का संकल्प लो मेरे भाइयों और बहिनो तभी ससार सुखी होगा । वेद वाद परिचल्य न करिषत सुख-मेयते ।



### आर्यवीरों का विशाल मेला

आर्य जनता को जातिकर प्रवृत्तता होगी कि आर्य युवक समाज लेखाराम नगर (काठिया) अपना नवम् मासिक कोल्लव ४ से ९ अक्टूबर तक मना

रहा है इस अवसर पर आर्य वीरों के विशाल मेले का आयोजन किया है । जिस में सर्व श्री स्वामी सवामन्द जी, प्रि० रत्नाराम जी, श्री पी० हृदयल जी वर्मा, आदि विद्वान वक्ता माग मे रहे हैं । मोट—आर्य वीर वन अमृतसर, आर्य कुमार तथा बटाल, व बिना-भर की कुमार सभायें शामिल हो रही हैं ।

—रविन्द्र कुमार प्रधान

### दिल की बात

(पृष्ठ ३ का चेष)

इसी आयु की चिन्तियों को सम्मान करने के लिए एक विशेष दिन का समारोह चाहे तो सार्वभौमिक तथा शार कलन २ प्रातों में या देहती में किया जाये जिस में सम्मान हो । इन से एक २ अल्पके लेख लिखना कर पुस्तक रूप मे प्रकाशित किया जाये । बडा ही नाम होगा व प्रेरणा मिलेगी ।—०

### आर्य समाजों से

आर्य जगत आर्य प्रादेसिक सभा पंजाब जालन्धर शहर का अपना साप्ताहिक मुखपत्र है प्रति सप्ताह निर्गमित रूप से अपने सारे परिवार के हाथों में पहुंचता रहता है । यह आकाश की है । हृय केवल सिपाही बनकर इसकी सेवा मे लगे हैं । वेद प्रचार के काम मे वाहार समाजों मे पूषते हुए साथ साथ आर्यजनता की कर्तव्य के नाते सेवा के कार्य मे लगे हुए हैं । कर्मयोग सब से बडा योग है कर्मयोग सब से सुन्दर पय है । समाज के माय्य सन्त महाराजों व विद्वान भाई भ्रिंयों की इस पर सवा इवा है । अपने अमूय्य लेखों, बिचारों, कथितानों एवं समाज अपने समाजों से कृपा करते रहते हैं । अपने कलिओ, स्कन्दों के माय्य प्रिण्टण, शोधनों व समाजों का भी सहयोग मिलता है । उनका अपना ही है ।

इस पर भी हृयें सतीय नही । आकाश युग तड़क-कड़क का है । उस के लिए बूब पैसा चाहिए। सतना हाडी समा कीये वल्ल करे । कई समाजें प्रति सप्ताह कई कई पर्थ कटुट मंगवा मंगवा का विचरित करती हैं । अभी हृय सन्ना कृपा पर समाज में पांच प्रतियों का प्रति अलाह मंगवाने का प्रयत्न कर जाये । अत्येक समाज दस व पांच २ अत्ये मंगवाये तो बडा काम हो सकता है । आर्य जगत का अवस्य ही ध्यान रखें । यह भी सभा का काम है ।

जन्म से ही जो आलसी, प्रमादी एवं अर्धचल होते हैं उनकी बात पुनः कहें किन्तु शरीर में अत्यन्त बड़ जाने के के कारण जो अस्वाभाविकता आ जाती है उस का प्रतिकार उपयुक्त उपचारों से संभव सम्भव है। तीसरे विषयों की प्रतिक्रिया से भी स्वामुच्युद्धल को उदीर्य एवं स्वकार्यस्य किया जा सकता है किन्तु जहरी के घातक प्रभाव से कालान्तर में फिर विपत्तित्वा आ जाती है। अतः आवश्यक यह है कि मूल प्रवृत्ति में व्यतिरेक का कारण देखा जाए एवं उदयुत्तर चिकित्सा की जाए। प्राकृतिक चिकित्सा लीपापोती एवं रसायनिक परिवर्तन को आदर्श आरोग्य की अनुभूत्या में अबरदस्त गतिरूप अनुभूत करती है। जैसे संकर दीवार को पहले माने रस से रस दिया जाये। उस दीवार को संकर अस्थान में लाने के लिए ऊपर ऊपरकी चढ़ाने को लीपापोती कहते हैं। चाहे यह कि रस की परत को लुप्त दिया जाए। ऐसे ही एक रस के विषुद्ध इतरे रस का उपयोग (जैसे दाल में मिरच अधिक पड़ जाए शक्कर डाल दीयाखटा पटा दी जाती है) रसायनिक परिवर्तन कहा जाता है। हमारे शरीर में अस्मत्ता और बिजातीयता द्रव्य बड़ जाता है तो उसे प्रखन करने के लिए अथवा इतरे द्रव्य में रूपांतरित करने के लिए जो औषधियों को प्रयोग किए जाते हैं उन्हें प्राकृतिक चिकित्सा स्वीकार नहीं करती। शरीर में मूल धातुओं के अतिरिक्त जो अनासक्य (मूल धातुओं को दूषित करने हारा) बिजातीय द्रव्य सहायित होता है। उसे बाहर निकाल फंकनेसे ही स्वच्छ आरोग्य मिल सकता है ऐसा प्राकृतिक चिकित्सा का सिद्धांत है। सविद्या अजीम वृत्ता प्रभु इत्यादि कई प्रकार के जहरी से बिजातीय द्रव्य को मूत्रिच्छ अथवा सामाजिक स्थानतरण कर के आरोग्य प्रदान करने वाली जितनी भी चिकित्सा प्रणालियाँ हैं—जीवन सौर्य की विषयपित करती हैं।

अतः। रक्तस्वभावतः क्षारीय एवं तरल होता है। बरी २ धमनियों से के कर मांस और त्वचा में आगेतिर रसायनियों (केमिकल) तक यह एक क्षय में पार हो कर शिराओं में प्रवेश कर जाता है। इतना सूक्ष्म और प्रवाहमान होता है किन्तु यदि रक्त में अल्प बुद्धि हो जाती है तो यह इतना सूक्ष्म नहीं रह पाता। फलतः उस का प्रवाह कठिनाता कारण करता

स्वास्थ्य स्तम्भ—

दुर्बलता का प्राकृतिक उपचार

जाता है। शरीर में कीटिया दोहन, मुकुमुकी चलना सुस्ता आ जाना, अकस्म पैदा होना, कार्य में अक्षि पैदा होना, सभी उषी के कारण होते हैं। स्वास्थ्य के नियमों की अवहेलना ही उनका उत्तरदायित्व वहन करती हैं।

काश। मनुष्य स्वास्थ्य का रहस्य समझना, शरीर में बिजातीय द्रव्य नहीं बढने देना, रक्त में क्षारीयता एवं अस्मत्ता का अनुपान यथावक रखना।

जो हो। प्राकृतिक चिकित्सा में कारण त्याग ही औषधि है, कारण त्याग ही चिकित्सा है, अतः अपने रोग के लिए आहार बिहार तथा नैतिक कर्मों में अपनी न्याय शिव बुद्धि से जो भी कारण परिलक्षित हो उन्हें दूर करना चाहिए।

शरीर को संवोधित करने के प्राथम साधन हैं :—लस का पुष्कल प्रयोग, स्वच्छ धातु का निरन्तर सेवन प्राकृतिक शारों का आहार में विस्तृत समावेश, नियमित प्राणायाम, आसन तथा व्यायाम, एक मन में मार्त्विक विचारों का समाहार।

जल के प्रयोग से तरह से होते हैं, बाह्य और आन्तान्तर। स्नान, कटिस्नान, मेहन स्नान, विविध पैक

पट्टियाँ मिट्टी की पुलटिब, बाह्य प्रयोग में सम्मिलित हैं। जलपान और एनीमा भीतरी प्रयोग की विनती में आते हैं हैं। इन सब के यथावत प्रयोग केलिए किन्हीं प्राकृतिक चिकित्सा के पुष्टिअ अथवा प्रयोगविधि का साहित्य पठिए। क्योंकि जलपान और स्नान ही जल के मुख्य प्रयोगों के पुरक हैं। जलपान और स्नान के कुछ नियम हैं जिनका पालन संवसाधारण नही करते।

स्नान के पहले ५-१० मिनिट को कुछ लीकी मूष मे स्नान रहित होकर बैठिए। पसीना आ जाए तो सूखे लीलिए से पोशिए। मीनी मिट्टी और शुद्ध कीचड़ समूय शरीर पर लगा कर मूष या हवा में सूखा मीजिए पश्चात प्रचुर जल टरनि में अय प्रत्यय को मलन-मलन कर रगड़-रगड़ कर मृदाशु। नहाने के बाद स्वच्छ लीणिए से शरीर को भनी भाति पोशिए और उसके बाद सस्ती के तेल को कुछ डू दे हूथेली पर फैला कर शरीर को मासिसमूमा रगड़ दीविए। तेल की इस हल्की-सी मार्तिस के बाद अरुस्त हो तो बदन को कपडे में पोछा जा सकता है। जल पीने का भी यह नियम है कि बहुत प्रातः जितना भी जल पिथा जा सके पीना चाहिए। भोजन के एक घटा पहले और तीन

घटे बाद जल पीने का अच्छा समय है। जैसे भी प्यास लगने पर जल पीना चाहिए। किन्तु बरार प्यास के जो जल पिथा जाता है वह उपचार के जलपान में सम्मिलित है। पानी के स्थान को बदाने के लिए तथा प्राकृतिक लक्ष्यों में उसकी उपयोगिता बढाने के लिए उस में निद्रु का रस और सहद मिला दीविए। इस तरह प्यास के इलावा दो मिटर जलहमेथा पीना चाहिए।

स्वच्छ वायु सेवन के लिए सुबह जल्दी उठ कर जलपान करके बीच के लिए या भ्रमसु के लिए जगल बाइए। स्थिर स्थित होकर लम्बे श्वास प्रवाह कीविए। शरीर को कम मे कम बरको में आवड रहिए। रात को बिडकिव्या सोल कर सोइए।

आहार में हरी पत्थिया (पलेदार शाक) फल, कच्चा दूध, छाछ अदीक रखें। चोकुर ममेन आटे की रोटी बनाए। रोटी घाट, जल या छाछ में मीली करके नही बन्कि सूखी बनाए। शाक दाल अलग से खाए या उन मे पानी कम रखें जो रोटी के साथ खा सकते हैं। अग्रिमपय यह कि कस्य अजीर्ण आदि से बचने के लिए मुंह धार सेत मे जमी अशुष्क है। कब्ज रहती हो और भी तेल का सेवन शरीर ही—बन्द कर देना चाहिए। बहुत ही अस्वच्छाओं मे भी कब्ज करता है। खाने पर खाना खाने से बिना भूख सेत को विविध बाजार गरिष्ट चीको की अवसारी बनाने से भी कब्ज हो जाती है। जो भी खाना हो एक समय पर खा लेना चाहिए। खाने के ४ घटे के भीतर जल के सिवाए कुछ भी पहल्य नही करना चाहिए।

प्राणायाम आसन, तथा व्यायाम का समय है प्रातः काल शोच के और स्नान से पहले सब के प्रति आत्मोपमा और हितचिन्तना का माय मन मे बार कायम करने से सारिक विचारों की सृष्टि होगी। क्रोध, पृणा, ईर्ष्या, लानी, आदि मनोबिकार शरीर की स्वास्थ्य नीति मे अबरदस्त रोइए श्रतकारते हैं। अन्त्या पूर्वक उन्हे हटाने की चेष्टा करनी चाहिए।

उपरोक्त पाठों नियमों का पालन करने से शरीर मे स्पृष्टि, कर्मथ्या, एवं जीवन के प्रति शक्ति ही उत्पन्न नही होती प्रस्तुत शरीर मन और मस्तिष्क का बीमा भी हो जाता है। कल्प वृष से साभार

म० हंसराज वैदिक साहित्य विभाग

- चिकित्सायं आवश्यक पुस्तकें
- चारों वेदों के मजिन्द मूल सेट प्रति सेट २२.५० पं
- ऋग्वेदादि भाष्य भूमिक. ३.०० पं०
- संस्कृत विधि .२५ पं०
- दयानन्द द्विज लाइफ एण्ड वर्क (अंग्रेजी में) लेखक श्री सूर्यभानु जी एम० ए० वायस चांसलर कुरुक्षेत्र यू०न०वर्सिटी मुल्ग्य १.५० पं०
- सत्यायं प्रकाश (उर्दू) ३.५०
- सभी आर्यसमाज्य व आयं सस्थाए इन पुस्तकों को उच्च स्थान देकर सुलभित करें
- प्रापि स्थान— म० हंसराज साहित्य विभाग आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा निकट कोर्ट जालंधर



नोट—इस लेखका पूर्वभाग ११  
वितम्बर १९१६ के अंक में पढ़िए ।  
(पतांक से बांने)

कुन्ती कुमार दुषिण्डिर से लेसा  
कहकर ऐष्यं मय से मोहित हुए  
दुष्यंभन ने इधारे से राधानन्दन कर्ण  
को बडासा देते हुए और भीम सेन का  
तिरस्कार करते हुए अपनी जाप का  
बन्ध हटाकर द्रौपदी को मुसकराते  
हुए देखा । उसकी केने के धम्मे के  
समान मोरी, सब लक्षणों से सुगोभित  
हाथी की सूँड के सरुष्य बडासा-उदार  
वाली और बचके समान कडोर अपनी  
बायो जाप द्रौपदी की दृष्टि सामने  
करके दिखाई । १०-११-१२

दुष्यंभन की इस बदतमीजी को  
देखकर क्षत-विक्षत साप की तरह  
धुफकारते हुए श्रीयावेश के कारण  
भीम ने प्रतिज्ञा की कि—

दिवुभिः सह सालोक्य मास  
गच्छेद् बुकोपरः  
यद्येवमूर्धं गदामा न भिन्नात्  
महाहू ॥ १४  
सभा० आ० ११

दुष्यंभन । यदि महासभर में मेरी  
इस वाच को मैं अपनी गदा से न  
तोड़ दूँ तो मनु भीमसेन को अपने  
पूर्वजों के साथ उन्ही के समान पुष्य  
लोकों की प्राप्ति न हो ॥

इस प्रकार बात बढती देख कर  
वृतराष्ट्र ने दुष्यंभन की अर्त्तना की  
और द्रौपदी को बर दिवे जिन्हेपाण्डव  
वरस धनुष-बाण दास्य से मुक्त कर  
दिये गये । परन्तु दुबारा फिर जुए के  
बन्धके कारण दुषिण्डिर हार गया  
और शर्त के मुताबिक मय चारी  
भाइयों और द्रौपदी के १२ बंध का  
बनवास और १ बंध का अवातवास  
भोगना फिरा ।

भगवान् कृष्ण को इस दुष्यंभना  
का वता चलता तो आप पाचाल कुमार  
वृष्टद्युम्न और चेदिराज वृष्टकेतु  
को साथ लेकर पाण्डवों को  
वन में जाकर भित्ति । भगवान्  
ने माहासकार होने पर द्रौपदी की  
पील निकल गई और उपास्यम् बेती  
हुई बोली—  
कश्चमनुप्रात्या सारिम कृष्ण वरासली ।  
धनाना पाण्डुप्राया प्रवेता मधुसूदन ॥  
१२१ बन० अ० १२

हे मधुसूदन ! मैं श्रेष्ठ तथा सती  
साम्नी होती हुई भी इन पाँचों  
पाण्डवों के दैवते देखते, केसों से  
पकड़ कर चलीती गई ।

# हमारे इतिहास का काला कर्लक अथर्वति सती-साध्वी द्रौपदी पर अत्याचार और उसका दुष्परिणाम

श्री पिण्डोदास जी ज्ञानी, प्रधान आर्यसमाज लोहगढ़, अमृतसर

ऐसा कहकर अपने कोमल हाथों  
से मुँह ठककर फूट फूट कर रोती  
हुई शोध से बोली—

नैप मे पतयः सन्ति,  
न पुत्रान च वागवाः ।  
न भ्रातरो न पिता,  
नैव त्वं मयु सूदन ॥  
१५ बन० अ० १२  
मधुसूदन ! मेरे निधे न पाण्डव  
हैं, न पुत्र हैं, न वाणव हैं, न भाई  
हैं, न भ्रातृ न बाप ही हैं ।

इस प्रकार कृष्ण का कश्यपजन्य  
कर्णपोषर होते ही कष्टया सित्तु  
भगवान् द्रौपदी ने साल्बन्ना देते हुए  
कहा, 'द्रौपदी ! जिस समय तुम्हारे  
अपमान करने के कारण मृत वृत्त-श्रीडा  
हस्तिसागुर मे रहे रही थी, मुझे दुःख  
है कि मैं उन दिनों सौमविमान के  
स्वामी शाक्यराज के साथ युद्ध करने  
के लिये गया हुआ था, क्योंकि उसने  
अपने भाई विद्युत्पात के बच का बदला  
देने के विचार से मेरी अनुपस्थिति  
मे ही द्वाराका पर आक्रमण कर रखा  
था । यदि मैं उस समय हस्तिसागुर में  
आ सकता तो यह दुष्यंभना कभी न  
होनी । तवापि सुनो—

रोदपिप्यान्ति शिष्यो ह्येव  
शेषा ऋद्धासि भाविति ।  
वीभलु वर सन्धुद्धना  
अश्लेषितोष वरिष्णुता ॥१२८  
निहन्तां कलमान् वीव्य  
सयानान् वसुधा तने ।  
यत् समर्थ पाण्डवाना  
तत् करिष्यामि मा युचः ॥१२९

बन० अ० १२  
अथिति ! तुम जिन पर कूड़  
हुई हो, उनकी रिज्या भी प्रायः प्यारे  
पतिवों को अर्जुन के बाणों से छिलनामिन  
कर लून से लव-वच हो मर कर  
बदती पर पत्र देख इसी प्रकार  
रोसेगी । पाण्डवों के हिल के लिये,  
तो दुःख भी सम्भव है, वह सब  
कष्टया, शोक बस करी । और सुनो—  
सत्य ते प्रतिज्ञानामि राज राजी  
प्रथिष्यति ।

पतेवौ हिंसाच्छीयं  
पृथिवि शकला भवेत्  
सुष्येत् तोयनिपः कृष्णं न  
मे मोषं वचो भवेत्

बन० अ० १२—१३१  
मैं सत्य प्रतिज्ञा पूर्वक कह रहा  
हू कि तुम राज राणी बनोगी ।  
कृष्ण ! आजमान फट पड़े, हिमानव  
पर्वत बितों ही जाये, पृथिवि के  
टुकड़े-टुकड़े हो जायें, और समुद्र सूख  
जाये, किन्तु मेरी प्रतिज्ञा अटूट रहेगी ।  
द्रौपदी ने अपनी बातों का उत्तर पत्र  
कर अर्जुन की ओर देसा, तब वह  
बोला—

मा रोदीः शुभताप्रतिवाह  
मधुसूदनः ।  
तथा तद् भविता देवि  
नामया वर भणिति ॥  
बन० अ० १२—१३३

लासिमामुक्त सुन्दर नेनो वाती देवि !  
वरवसिति ! रोडो मत । भगवान्  
मधु सूदन को कह रहे हैं, वह होकर  
रहेगा, टल नहीं सकता ।  
तब द्रौपदी के भाई वृष्टद्युम्न  
की भी भुजायें फरकने लगीं और  
अपनी सहायता रगिनी की अपमान  
जनिता पिहलता को देखकर ईर्ष्य  
बन्धाते हुए बोला—

अह द्रोम हनिष्यामि  
विनम्रोऽपि पु पितामहम् ॥  
दुष्यंभन भीमसेनः  
कर्णं हत्वा वनजयः ॥१३४॥  
रामकृष्णो व्यप्राथिव्य

अजया स्मरनेत्वसः ।  
अपि वृषहत्वा युद्धे  
कि पुनः वृतराष्ट्र जे ॥१३५॥  
बहिन ! मैं द्रोण को मार  
डानूंगा, शिष्यही भीष्म का बन्ध  
करेगा, भीमसेन दुष्यंभन को मार  
पिारयेगी, और अर्जुन कर्ण को मम-  
लोक भेज देवे । भगवान् भी कृष्ण  
और बलराज का आज्ञ्य पाकर हम  
लोग युद्ध में सञ्जुनों के लिये अजय  
हैं । इन्हें ही हमें रण में पतिते नहीं  
कर सकता, वृतराष्ट्र के पुत्रों की तो  
बात ही क्या है !

दुष्यंभन, दुःशासन, शकुनि तथा  
कर्ण की चरित्ररत्न पाण्डव-पीडकों  
के बदकन, वृतराष्ट्र के पुत्र—मोह,  
राज्य लोभ तथा अदूर दक्षिता का  
कारण सती-साध्वी पाचाला कुमारी  
द्रौपदी पर अत्याह अमानुषिक अत्या-  
चारों के कारण अमान्य कृष्ण, भीम,

अर्जुन तथा वृष्टद्युम्न को भीष्म-  
भयङ्कर प्रतिज्ञाएँ करनी पड़ीं, जो  
बदकारः सत्य सिद्ध हुईं—

दुःशासन का हृदय विदीर्ण करके  
भीम ने उसका सर्व-गर्भ रक्त किया,  
वृष्टद्युम्न द्वारा उपास्यार्थ्यं मारे गये,  
शिष्यही ने भीष्म पितामहा का बन्ध  
किया, भीमसेन ने अपनी कुओर गदा  
के प्रहार से दुष्यंभन की चंगा तोड़ कर  
उसे यमघात पहुँचाया और भगवान्  
कृष्ण ने पय-पय पर पाण्डवों को  
बिजय दिला कर द्रौपदी को राजराज्ञी  
बनाने की प्रतिज्ञा पूरी की ।

सती साध्वी द्रौपदी के अपमान  
कष हमारे इतिहास के काले कलक  
का कितना मयंकर परिणाम है यह !

## अष्टाचार नियोग सम्मेलन करना

पिछले दिनों कृपालय में आर्य-  
समाज प्रेम नगर का दार्णिकोत्सव  
समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ जिस में  
स्वामी आनन्द गिरी जी, प्रो०  
रतनसिंह एम० ए० ए० ५० शिवतीक्ष  
कुमार सह-सभापक हिन्दुस्तान,  
आचार्य सत्य प्रिय जी, आचार्य प्रिय  
शत जी ५० गणसिंह चन्द्र जी शारदीय,  
५० ओम प्रकाश जी तथा अन्य  
विद्वानों ने भाग लिया । इस अवसर  
पर अष्टाचार निरोध सम्मेलन भी  
हुआ जिसकी प्रयासता स्वामी आनन्द  
गिरी जी ने की । जनता के सामने  
अष्टाचार समाप्त करने के लिये  
बैदिक दृष्टिकोण रखा, जनता ने  
मूत्री-मूगी प्रस्ताव की । हाबरी सजोष-  
जनक थी ।

## वयामन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार के शुभ समाचार

विद्यालय अपने अन्य काल से ही  
प्रचार कार्य पर विशेष बल देता आया  
है । इस के निमित्त तथा दीर्घवित्त सुयोग्य  
स्नानक भारत के विमल २ प्रांतों में बड़ी  
सफलता के साथ प्रचार कार्य कर रहे  
हैं । विद्यालय आर्य संस्कृति और सम्मता  
की रक्षाएँ तथा प्रसार के कार्य में  
संजनन हैं । विद्यालय में वेद, शास्त्र,  
उपनिषद् तथा वैदिक सिद्धांत का उन्म-  
नात्मक अध्ययन कराय जाता है ।  
आजकल विद्यालय में भारत के  
विमल २ प्रांतों के पौतालीस छात्र हैं ।  
जिनके लिये चार सुयोग्य प्राध्यापक  
अध्यापन कार्य कराने के लिए नियुक्त  
हैं । भाषण कला पर विशेष बल दिया  
जाता है । विद्यालय ने सुकल आन-  
न्दक जीवन सामग्री विद्यालय की ओर  
ते निःसुलुक दी जाती है । जिन्का बर  
ज्ञानी महानुभावों के अह्वर है ।  
निवेदक—उपाचार्य विद्यालय

यह एक निश्चित तथ्य है कि भारत कृषि-प्रधान देश है न केवल आज के यशोवृष्टि के शरत्काल में ही होती करना उचित व सर्वोत्तम कार्य विना गया है। अतः प्रथम चेतना का सर्वोत्तम उपदेश है कि 'कृषिगत विकास' अथवा प्रथम राष्ट्र की प्रगति के लिए कृषि आदि क्षेत्रों को छोड़ देना व परिष्कार करने के लिए परतें नहीं करें। अतः केवल केवल 'भूमिपोषण' तथा 'सुखा' का अर्थ यह है कि ईश्वर भूमि व पौधों कि हों विधि दे। इतना प्रयत्न कराय यह है कि अच्छी गोरी भेटी का भुलाया है। जहाँ की पूरवस्था को भी है, जो बचपन से बुढ़ाया तक मानवका पालन-पोषण करती है। इसी प्रकार कि जो 'पोषण' कहा गया है अर्थात् विश्व प्रकार की भोजी भागी है अतः भद्र दूध देने वाली है उसी प्रकार वैदिक सस्कृति की सुधार है। प्रथम चेतना के तो कृषि की महत्त्व-हितकारिणी को भी भूमि २ प्रकार की है। यन्तु में 'दोषोपशोषण' तथा 'सुखा' कहा है कि बोधे साध व बोधे अलग हो व पुष्ट है। अतः यन्तु ४-२-६ में भी का यह लान बताया है—

'युव' यानो देवयथा कृषि विष्णोः पितृ कृष्णान् सुप्रसिद्धम् अथ कृष्णान् मधुयानो बुद्धि-यो यन्तुम्। इत्येते का तात्पर्य इतना है कि जो श्रेष्ठ तुर्षे मधुर दूध पितावी है। अतः यद्यपि है.....

'अजमानस्य पशुतः पशु' में पशु रखा का निर्देश है। किन्तु इस के विपरीत भी को हृदि पशुपते जाते के बारे में अर्थ १.१६.४ में कहा है—

'यदि गो या हृदि यथासं पशु पशुपतः तं स्वां लीतेन विष्णोना यथा भोजी अवीरशः।'

उपरोक्तः यदि है राक्षस यानु पशुपतः तु हमारी गो को मारे यदि अथ व पशुपत को मारे तो तुम्हें हृदि गो की गोरी से बीच जाने विच्छेद तु हमारे और पशुपत को न भाव सकें।

माता रक्षायां दुष्टिता यदुनां स्वशासितानां अमृतस्य नामिः' में तो वेद अथ गो-माता के लुप्ति-भरे नाम बताया है। 'अमृतस्य गोपालात्' में गो-हृदयारे को अमृत-स्य देना सिद्धा है। ५.०.१.२७, ५.०.१.२.०.१.५०, ५.१६.१.०.१.०.१.०.१. अर्थ २.३.०.१, १.०.१.०.२ में भी को

### गोरक्षा—एक अत्यावश्यक कर्तव्य

(श्री दामोदर जी आर्य बौद्धिक शिक्षक आर्य वीर दल पंजाब)

'अमृत' कहा है अर्थात्-गो न भाले गोय है। वेद मे अमृत कहा है, न सारने भोग, न उत्तम की की भूमि ला कर निरवध मे दूध आदि लोभायव्यानी पदार्थों मे सुप्त होर और हम सभी सुख-सम्पत्तिमान् हैं। हे गो, तु सुखा ही प्राप्त ला व एक वीर विचरती हुई स्वच्छ जल का पान कर।

स्मृति मे 'गोपु' याना न विच्छेद व वादोप-कर्मों में 'माता पशुः' कहा है। इसारे प्राचीन महापुरुषों ने कितने सन्धे हृदय व अहित-भाव से गो-पदा को की है। अतः है, सर्वे उप-निषदों यानो यानो यानो गोपालन-व्यवः अर्थात् गोपेक्षर हृदय मे उपनिषदों रूपी भीमो मे दूध दीहा।

रक्षय मे एक ब्रह्म सुन्दर प्रथम राजा है। जब राजा दलीप अपनी दुष्कृत्यों को कली भूल करने के लिए पत्निदो भी की दिन-रात सेवा किया करता था। तो वो पर विपत्ति को पार करने के लिए अपने अग्रोत्सर्पों तक करने को तैयार हो गया था। उसकी अदृष्ट गो-मति भारतीय आर्य की प्रतिमा है जो गो-रक्षा के महत्व पर प्रकाश डालती है। गो पालन श्रेष्ठ कर्म समझा जाता है। वेदो से लेकर मुसलमान युव तक गो की रखा हो रही है। स्वयं सद्गुरु अम्बर ने १९८६ ई० मे अपने राज्य मे यह आदेश लागू करवाया था, '... इतने माघ भी जाति चाहे यह माया हो या पर, साथ देने वाली है अर्थात् गोपालन और पशु प्रान्त ला कर जीते है.....' साही करमान के अनुसार कर्म के किंती माघ या शहर मे गोपालना का नाम-निधान एक कर्म की रहे। यदि कोई आरमी इस आज्ञा का उल्लंघन कर अहित काय को नहीं छोड़ेगा। तो सचकें कि उते सुलागी गवर् (कोष) मे जो ईश्वरदिय कोषारक नष्ट नष्ट है, फसना पड़ेगा और अहित होगा। इस फरमान को जो उल्लंघन करेगा, उसके हान-पार की उपस्थिति कष्टदायी जाएगी।' हृदयानु मे भी गो-हृदया को भी स्वयं करवा दिया था। यून-अष्टा स्वामी दामोदर जी ने 'गोरक्षा-निधि' मे पर हो रहे अत्याचारों के विरुद्ध सफल आवाज उठाई है। उन्हीने तो गो-सम्पत्तियों का हस्तांतरण

अवधान भी पलाया था। वे विचरते हैं, जो आदि पशुओं के नष्ट हो जाने से राजा और प्रजा दोनों का नाश हो जाता है। एक प्रस्ताव माघ से १९८० लोग एक बार तृण होते हैं। एक माघ के जन्म भर से २५५०० व्यक्ति तृण हो जाते हैं—तथा जो की एक पीढ़ी से ४१०४८० लोग तृण होते हैं? यह भोला मानव पशु घास, तृण आदि खाकर व अन्न भरा दूध देता है। इसे मात्ता तो तो राष्ट्र के नाम पर कनक है। १८७० ई० के प्रथम स्वधीयता आंदोलन की पुष्ट भूमि मे भी गोरक्षा का भाव विद्यमान था। बहु-पुत्र ब्रह्म के द्वि के अक्षर पर गो-हृदया, जो बर करवा दिया था। महर्षि देव दामोदर जी का दृष्ट निष्पत्त था कि इन मांसाहारी विद्वेषियों मे गो-हृदया की आरम्भ बर करवा दी। श्री वरिष्ठ मदन मोहन मालवीय जी ने १९२८ ई० मे दूधदायन में आधो-सिद्ध अखिल भारतीय मोक्षदा सामेलन करने गोपालना विचर को राष्ट्रीय स्वतंत्रता का रूप दिया था। वे तो कहा करते थे कि इस सरकारका विरोध इसलिए करता चाहिए कि यह गोपक्ष करती है।

इस बात का क्या ही दुर्भाग्य है कि हमारे देश के नेता भारतीय इन मे नहीं सोचते। गांधी तो गो-पक्ष मे किन्तु उनके आदर्शों के अनुकरण करने का रूप करने वाली सरकार गो पर बरतने बना रही है, किन्तु वेद व पुत्र है। ४० करोड़ लोगों की गो पूजा के प्रति सद्भावना व निष्ठा को विरुद्ध कुलीन से कुलना जाता है वह अतीव निन्दनीय है। जो, दूध, मखन की मया दुर्घना हो गई। यदि ऐसा होता रहा फिर तो प्रवर्तनी भी के दर्शन करने अन्याय जाया करेगी। गो-सम्पत्तों का आबोलन गो-पक्ष बर करने मे मजल्लत अन्न करे, प्रभु से ऐसी प्राणना है। Mythics Study Journal मे छोड़े रहे गो-पालन के व्यवस्था मे गो का Mother Cow के के नाम से कहा है। भारत सरकार को चाहिए कि भारतीय भावनाओं व गो-सम्पत्तों की विचाररथाय का मान करने गोपालनीय गो-हृदया को बर करे, यही उनके लिए अर्थस्वर होना।

### मा० गुरु जी गोरक्षा के लिए अनशन करे

आज 'दैनिक वीर अर्जुन' मे एक शीघ्रलिपि लिख महाकर्मों सारकार पक्षे को 'मिता कि रात्रिये स्व-सेवक माघ के सत्यवाचक भी गुरु जी ने गो-रक्षा के लिए अनशन का विचार रथा दिया है। क्योंकि उनका विचार है कि यह अनशन परा होगा। एवं उनके अमलन मे सच भी सरकार विरोधी आन्दोलन मे पूर्णतः शामिल हो जायेगा। अतः योत्सव मे ऐसा ही तो अपना अन्तम अर्थय करना चाहिए। क्योंकि गो रक्षा के लिए अत्यन्तमान मानात्मक अर्थ माना सच अर्थय अनशन जिस प्रकार होर गया रहे है उन मे यदि माघ भी बोधना जोर लगा दे तो निश्चय रूप से गो-हृदया सद्गान हो जायेगी। जोर अथर अपने की साम्प्रदायिक न करवाने की हृदिस मे या किंती दयाल व आकर की मुक्त जी मे गोरक्षा जीने सुनीत आंदोलन मे अमल सन्धे तोर लिखा तो निश्चय रूप मे वह सच के उन्न-वत् इतिहास मे कनक का टोकर होगा। इन्हें मजल्लत के लिए अग्रणी सच के लिए यह पुरीता की वृष्टी है। उते तो अपनी गोरी ताकत हर पर लाना देनी चाहिए। वहा कर उन्नत पर का प्रथम है अमलन राय कृष्ण, शिवा जी, गुरुदेव सिंह आदि महापुरुष तो रक्षा के लिए हृदयकार तक उठाने मे सक्षम नहीं करते वे तो भेरी सचकें मे नहीं आता कि अनशन उपलभ्य मान की है? निम्नके एक उदाहरें पर हमारे नमस्कृत करने मारने की तैयार बंटे हो उन के लिए अनशन मे पीछे या हटाना नितान्त तजना-अनकनक होगी। आगा है गुफ की एव सच के अर्थ पदाधिकारी इस महाकर्मों प्रान्त पर पुनः विचार करे। और वीर ही अर्थय सच के सच के इत अमलन मे शामिल होने की सोचना करे।

शिव कुमार आर्य मंत्री समाज मान गु

- ★ वेद का स्वाध्याय, जब और सम्पन्न करने को महत्त्व कहते हैं।
- ★ इनके करने से पतरी और कात्मा पवित्र तथा पुष्ट होते हैं।
- ★ अग्निहोत्र से लोक अर्थय पर परतनी को देवयत कहते हैं।
- ★ इनके करने से जल, वायु, आकाश तथा मन की शुद्धि होती है। अन्तु अग्निहोत्र तथा अग्निहोत्र से नारायण उन्नत होती है।



५००/-का साप्ताहिक दान

समा की प्रसिद्ध विधात्मकनी राजपाल मदन मोहन की हुनी प्रचारार्थ महा पत्रार रहते मे श्री प्रिंसोपल देवराज जी एम ए डी ए बी कालेज हिसार जो कि समा मे जल्मन स्नेह रहते है और समा को समय २ पर धन द्वारा सहायता प्रदान करते रहते है, इस अवसर पर ५००/-के प्रचारार्थ समा को भेट किया। इस धार्मिक धन के क्रिय समा उन्माद अत्यन्त सम्बन्ध रहती है।

वेद प्रचार मंडल जालन्धर का मासिक सत्संग

गत रविवार शाम को ५।। बजे से ६।। बजे तक कार्य समाज मंदिर विष्णुपुर मे सम्पन्न हुआ। ३ बटा सभुर प्रजनों के परमात श्री वेद प्रकाश जी महताया M A प्रो डी ए बी कालिज का "वेद बोध "दृष्टिमान" विषयपर साए संमित व्याख्यान हुआ। उपस्थित सतीषभक्त भी। इस विशेष बैठक की प्रथमता ५ सुली राम जी महोदयकेसक जायं प्रारंभिक प्रतिनिधि तथा जातम्बर ने सुरागित की।

बटाला में प्रचार

श्री प्रिंसिपल प० गुणल किशोर जी एम ए बटाला के प्रबन्ध से आर्यसमाज कालेज विभाग बटाला मे समा के प्रोथाम पर बाये हुए ५० प्रिंसोपल कम्पनी शास्त्री की रविवार मा० २५ सितम्बर प्राप्त कथा हुई। साथ सती लक्ष्मी के सुते मंडान मे श्री महायुग गोकुलचन्द जी के प्रबन्ध मे प्रचार हुआ। सोमवार को भी ०।० ए० बी० हायर सेक० स्कूल मे प्रचार हुआ। समा की वेद प्रचार के लिए प्रिंसिपल जी ने ११० दिए।

★ धन का प्रचार तथा अपन का नाथ होकर सत्त फँसता है क्योंकि सन्ने अतिभि ही सब अग्रह सत्य का प्रचार करते है।

★ वेदाक छ हूँ—शिवा, कल्प, व्याकरण। निरुक्त छन्द और ज्योतिष।

समाचार द्रव

आर्य समाज हिसार

प्रस्तुत आर्यसमाज हिसार का यह साप्ताहिक अभिव्यक्त भी महात्मा रामकम जीर किन्तुनी गी रजा के विषे अपने प्राणों की बाजी लगा रही है वे पूरी पूरी सहजमूर्ति रखता है और परमात्मा से प्रार्थी है कि वह महात्मा जी को दीर्घायु प्रदान करें ताकि वह देश क्रांति जीर गी की रजा अभिक्त से अधिक कर सके।

कीर चाकू के खरक-खरक-के मजुरी करता है कि वह भी हुला को सत्करी तौर पर मानते, सम्य कर कर भन्द करए ताकि कर्म की क्वालिफि दूर हो। नदसात मन्नी समाज

पठनीय एवं मननीय साहित्य

वेद प्रदत्त ५/- गीतासारा ७५ पेरे, आलमकीर के पत्र १/-नेपारम्भ सस्कार १/५० पेरे, सेले जाट रोपक कहानिका ७५ पेरे, नीकट ७५ पेरे, बख्शखतो जीवन ५० पेरे, कर्म मीरासा २/२२ पेरे, सज्जि मियामन क्यों खरे कीरे १५ पेरे, बौद्धिक व्याकरण भास्कर ६/-व्यायाम बोधक पत्र ११/२० पेरे, साहित्य प्रचारक १/ जयदेव ब्रह्मस बडोदा-१

दीवाली के शुभ अवसर

आर्य जगत साप्ताहिक

ऋषि-निर्वाण-अंक

विशेष सजषज के साथ तथा नवीन लेखन सामग्री तथा कविताओं सहित प्रकाशित हो रहा है।
★ लेखक तथा कवि अपनी समयानुक्त सामग्री धीप्र जेवने की कृपा करें।
★ मार्गसत्प्राएं तथा कृमानें अधिक से अधिक आर्डर देकर समा की स्थापनकी बनाएं।
★ इस सुवर्ण अवसर पर समा का नवीन प्रकाशन मागा कर समाओं में वितरल करें।
—अध्यक्षभाषक

आर्यसमाज लारंस रोड अमृतसर की

अरि से

५००/- के समा वेद प्रचार में कार्यसमाज लारंस रोड अमृतसर के गान्ध स्वयं अपने समाज की नीर से सफल-समय पर समा की वेदप्रचार के लिए पुष्कल समर्थि जेवने रहते है। इस बार की वैद-सत्प्राह के माद समाज की नीर से समा को ५००) ०० का वेद-प्रचार निधि में भेजा गया है। समाओं की नीर से समा का यह ऐसा व्याह को जाने जो समा की सत्त-की-ए-काम्ये!

समा की सुयोग्य धन्य समर्थिकों जगतपत्र कसीरार तथा की सत्पत्रा मुशासनके अपने कालिख नीर कीर-रस के मजनों द्वारा उपस्थित अग्रज को सागहित करती एही। तीनों समाओं ने निम्न प्रकार वेद प्रचार सन सत्पत्र समा का सकार किया।
कामंकाज पंथावी मोहना अम्बाला हावनी २०१ रुपये।
जाधकाज वेद रोड अम्बाला नगर ५११ रुपये।
आर्यसमाज भाडल टाउन अम्बाला १०१ रुपये।
तीनों समाओं ने मार्गस्य की राशि पृथक प्रदान की। (समावादता)

आर्य वीरदल, अमृतसर

विशेष वसमीपर विराट्कमारोह

कार्य बनता को यह मानकर सुधी कोने कि कलमन व्यास शर्म कीर सत् अमृतसर ही इस बार विषय—सत्त की सने पैमाने पर बना रहा है। विषय सत्त की विन (२२ अकम्बर) को सत्प्राह १२ बजे तक कार्य हीरो का लार्ड मारता हुआ जोस वेवने सुने को विनिंग। विषय-सत्त की का साथ सहेव का है, मयों मनवाया जाता है यह वेवने की निमिया।
कार्य-जगत के मदान नेता सुवर्ण हुदय सत्प्राह थी उतापचमन 'सर्त' की प्रो। रामकमल की विषय सत्प्राह के कौशलकी मागसा होने। कार्यस्य पूर नेता सम्य।
—कर्मनिर्दिष्ट विचारों



द्वीपिका नं० १०५७

[आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र]

Regd No P 121

एक प्रति का मूल्य १३ पैसे

मासिक मूल्य ६ रुपये

सं० २६, अंक ४२)

३१ मार्च १९२३ रविवार—दयानन्दस्य १४२—१६ अक्टूबर १९६६

(तार 'प्रादेशिक' जालन्धर)

## वेद सूक्तयः

न त्वामिन्द्रातिरिच्यते

हे इन्द्र ! त्वाम्—आप से तम से न अतिरिच्यते—सारा मे कोई भी और बड़ कर नहीं है। आप सब से महान् हैं, आप से और कोई भी बड़कर महान् तथा बड़ नहीं है। आप सब ज्येष्ठ हैं। आप अविनाशो तथा अनिर्वाणो हैं।

## इन्द्र वागीरनुषत

हमारी सारी वासिष्ठा-सुश्रिया मन्त्रित्व भरे नीत उसी इन्द्र की ही स्तुति प्रशंसा करती हैं। वे वेद वासिष्ठा और सारे सुन्दर सुश्रित सुश्रिया उसी महान् भगवान् की प्रशंसा करती हैं। उसी के मधुर मान से बरी हुई हैं। हमारी बाण्डी में मैं यदि प्रभु का मान है तब तो यह सफल है।

## वाजी ददातुवाजिनम्

यह वाजी—बैब, शान आदि का ता परदेस्वर मुक्त और सबको बल प्रदान करे, शान का प्रदाय देवे यहि पराक्रम का दान देवे रहे। उसके सिवा इन सम्पत्तियों को और देने वाला भी कौन है। यह प्रभु सब अधिकारण है, इसे अधिकारता बनावे।

## न कि इन्द्र त्वदुत्तरम्

हे इन्द्र प्रभो ! आपसे बड़कर कोई भी उत्तर उतम मा ऊंचा नहीं है। आप ही सबसे उत्तम ऊंचे हैं। आपकी शक्ति से ही हमें जीवन मे हर प्रकार की सुख सुविधा की प्राप्ति मिलती है। आप महान् भगवान् ही।

आ ध मे व दे

## वे दा मृत

हिसकों को मार भगा

मिन्धि विश्वा अण्डिषः परिबाधो जही मृधः।

वसु स्पार्हं तदामर ।।

अम्—हे राष्ट्र की स्वाधीनता के रखवाले वीर ! तू (मिन्धि) तोंड कोश डाम उन (विष्वा) सारे (द्विष) मनु राक्षसों तथा शत्रुओं को मार दे और इन (परिबाध) विघ्न बाधा पैदा करने वालों को जो (वसु) हिसक बने हुए हैं (अण्डि) मार दे तथा (मृध) मन को (स्पार्ह) प्रशंसा के योग्य समझि को (वसु) भाग्य उलको प्राप्त कर ले। सारे शत्रुओं पिताओं को तू मार काट कर रख दे तथा हिसक भेड़िया बलि बलि शत्रुओं को कुचन दाग। बीरता, कीर्ति तथा यश के महादान को प्राप्त कर ले। तू वीर है।

## इसका माव यह है

हे सुरता से बरे वीरवर ! तेरी बीरता पर सब लोगों को बड़ा मान है। तेरी शक्ति के सामने राक्षसों की क्या मजाल कि वे कुछ भी कर सक। इस लिए हे वीर ! अब प्रयुज्ज कर ले कि जितने भी इनी हैं नीच बिचारों के पावरो है। दुष्ट वृत्ति वाले छोटे हैं नीच बिचारों के पावरो है। जो भी राक्षस विधाच है। हिंसा हत्या कर के राक्षसी माग पर चलने वाले हैं। यिनसे राष्ट्र की स्वाधीनता को भय होता है। मानसता के लुप्त हैं, तथा जो नीच भावों से भरपूर हैं। इस प्रकार के हिसक हत्याओं को इन्हीं साधों को तू सहन न कर। न ही ऐसे राक्षसों पर क्या आव रष। इन सब पापों को तू अपनी बीरता का बन्ध लेकर मसल दे कुचन कर रख दे। इन सब दुष्ट शत्रुओं की सत्ता ही मिटा दे।—अथर्ववेद २० ५३।१

## स्वभाव का माधुर्य

मनुष्य के स्वभाव दो प्रकार के हैं। एक नीचा स्वभाव और दूसरा कूर स्वभाव। मयूर स्वभाव से अहिंसा कौमती है और कूर स्वभाव से हिंसा होती है। कामिक, बाहिक बचका मानसिक। अहिंसा बचका हिंसा कमल स्वभाव की मनुष्यता और कूरता के साथ सबव रहती है। जब अहिंसा का विनाशक स्वल्प क्षणों से क्लृप्ता हो तो स्वभाव का माधुर्य इन शब्दों द्वारा व्यक्त हो सकता है। माधुर्य कोई यह न सामक कि अहिंसा से करने का कृपो भी नहीं और न करने का सब कुछ है। अहिंसा से करने का बहुत कुछ है और उसकी उत्तम सूचना 'स्वभाव की माधुर्य से ठीक प्रकार व्यक्त होती है अब विचार करना है कि वह स्वभाव का माधुर्य किस प्रकार प्राप्त हो सकता है और इन से क्या लाभ हो सकता है।

## ऋषि दर्शन

चन्द्रलोकः पृथिवीमनु

यह चन्द्रलोक इस पृथिवि के चारो ओर अग्रल्य करता है। पृथिवि तो मृद के गिर चक्कर मगती है और यह हमारा चन्द्रमा उस हमारी चरती के चारो तरफ घूमता रहता है। इसकी गति का नियम नियत है।

## विद्वांसः क्रान्तदर्शनाः

विद्वान् या ज्ञानी वे हैं जो ऊंचे स्थान वाले होते हैं। जो किसी तत्व के अन्दर घुस कर उसकी वास्तविकता को जानते हैं। उनका रणु सोच तो केवल बाह्य की दृष्टि से ही देखते हैं—पर विद्वान् लोग अन्दर के तत्व तक पहुँच जाते हैं।

## वय सर्वदापास्महे

हे प्रभु जी ! हम सब सदा आपकी उपासना करने वाले बने। आपके पास सब आणकी भजन शक्ति किया कर। आपके स्थान पर हम और किसी की पूजा भक्ति न किया कर। आपके भक्त बनकर आपकी उपासना किया करें।

## सर्वानन्द वर्धकम्

यह भगवान् सब प्रकार के सुख आनन्द का बढावे वाला है। उसकी सहा एक आशीर्वाद से जीवन के कष्ट दूर होकर सुख की प्राप्ति होती है। परमेस्वर स्वयं सुख रूप तथा आनन्द धन है। उसी की उपासना से जीवन मे आनन्द के अमूल्य का पाव किया जा सकता।

आ धू भू मि का से

सयम मानव जीवन की उन्नति का अकल्पनीय मूल मंत्र है। जीवन में विवेक, ईश्वर, अनुराग, साहस, तेज, पराक्रम, पुण्यार्थ, आत्म श्रेयति का प्रकाश पुंज प्राप्त होता है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि महाध्यानाभ्यासे, योगियों महर्षियों को तथा भक्त जनो को प्राप्त हो जाती है। आत्म शुद्धि आहार शुद्धि तथा जीवन के अतिम लक्ष का महाभोग प्राप्त हो जाता है। सयम मन्त्र का पथ प्रदर्शक है। सयम के द्वारा मनुष्य के जीवन में अनुपम दिव्य दर्शनीय आत्मा प्रतिभा का स्वप्न प्रतिबिम्ब दृष्टिमान होता है। सुगमता से विषय प्राप्त कर लेता है। सयम से आहार शुद्धि का ज्ञान मनुष्य को हो जाता है। सयम के द्वारा चित्त की विविधा संयमित निष्कृत हो जाती है। चित्त की चञ्चलता मिट जाती है। मनुष्य आत्म उन्नति में मन मन्त्र की शुद्धता से अष्टांग योग की सिद्धि से तन कर भव बन्धनों से मुक्त हो जाता है। सयम से मनुष्य के मस्कार उजल बनते हैं, मनुष्य को सकल सिद्धियां प्राप्त हो जाती हैं। सयम के द्वारा मनोविज्ञान, वेद विज्ञान, आत्मविज्ञान जन्म और प्रमाण विज्ञानों का महा ज्ञाता मनुष्य इस जीवन में बन जाता है। सयम के द्वारा मनुष्य समाधि अवस्था में समाहित हो जाता है। समाधि अवस्था की गति प्राप्त हो जाने पर मनुष्य का जीवन कुण्डल समान चमक जाता है। सयमी महा पुरुष के ऊपर परमात्मा की महा कृपा और दया हो जाती है। वन के पालन से मनुष्य बर्मेनोगी बन जाता है। दुःख, शोक और दरिद्रता का नाशक है। मानव जीवन की उपासक का चित्र बिचित्र चित्रण है। धर्म के मर्मका बोध मनुष्यको प्राप्त होता है। सयम विद्यापियों को विभन्न बनाता है। ब्रह्मचर्य व्रत के पालन का प्रथम अंग और प्रथम प्रसंग है। विषय कल्याण मार्ग का दिव्य दर्शन कराता है, विषय श्रेयति का प्रकाश पुंज प्रवल प्रतिभा है, मंगल मूल दुःख शोक, दरिद्रता का नाशक है, राट्ट वेतना और आत्म वेतना का देवी सम्पदा का मूर्ति मान सतल रूप है। सयम मनुष्य की गुण्य पताका है। वसुधा का प्राण रक्त धन जीवन सर्वस्व मुझ सार है। मानव जीवन की अनुपम अतीतिक शोभा है। वैदिक सस्कृति की धन्य धरोहर है। सयम की महिमा अग्रम्य अपार और अकथनीय है।

**धार्मिक चर्चा-**

**संयम और जीवन**

**वेदधर्मिक धर्म धर्मवीर जी आर्य-संज्ञाधारी नई दिल्ली-५**

विषय पेटक नुम्! आप यदि अर्थना और विषय के संयम संभाव का संघर्ष अर्थी सन्तानों का कल्याण चाहते हो तो सयम के महत्व को जान कर अपना जीवन संयम के साधने में डाल कर जीवन को सुखी बनाओ।

आज हमारे दुःखों और अज्ञान जीवन का मूल कारण यह है कि हम अपने शुद्ध स्वभाव को, परमात्मा को, अन्तर आत्मा को, धर्म की और मोक्ष की सिद्धि को भूल कर सयम को त्याग कर दिन रात प्रतिकूल विषय-साधनाओं में इतनीय भोगों में पड़गोते कि समाज पत्र गये है।

यह याद रखो जो सयम बीत रहा है वह अरबों और सत्रकों सयमों से अधिक मूल्यवान है अतः जीवन के एक लक्ष्य को भी व्यर्थ की बातों में मत गाँवाओ। अपने जीवन को संयम और सदाचार के साँचे में डाल कर अग्रम्य सुखों को प्राप्त करो। सयम के द्वारा परमात्मा की सत्ता की महत्ता का दिव्य दर्शन करो। आस्तिक बनो।

यह ध्यान रहे सयम व्रत के द्वारा ही परमात्मा की प्राप्ति होती है। जीवन की इस सुख्य वाटिका में अमृत फल मानने के विषये यह परम आवश्यक है कि हम संयमी बने। संयम में ही सुख अपार है। आज विषय के नर पाखियों को यदि सयम का बोध हो जाये तो आज करोड़ी और अरबों रूपयों का विपुल धन संयम निर्वाह पर लर सगाने की कोई आवश्यकता न रहे जाये। सयम में वह एक अपार स्वार्थ सुख शान्ति की अनुपम अनुभूति होती है।

विषय भोगों में क्षणिक सुख प्राप्त होता है।

अभी सयम के द्वारा हम जीवन में अमृत सस का पान करे। आज सयम के महत्व को समझ कर हम अपना जीवन सयम के साधने में डाल कर इस दुल दुलमानव जीवन की सफल बना लें। संयम में वह सुख शान्ति प्राप्त होती है जिस सुख आनन्द और शान्ति के लिए चक्रवर्ती सम्राट भी तरसते रहते हैं।

आशावादी बनो, प्रति लक्ष्य सयम महाव्रत का ध्यान रखो। पवित्र बनों यह वेद भगवान का और

महर्षियों का विषय के मानव समाज के नाम आज अनुपम आदेश है अनुपम मय उपदेश है। विषय की लहंगे श्रान्तियों को यदि सदा के विषये समायत करना चाहते हो तो अपना जीवन संयमित बनाओ विषय कल्याण महा मंत्र की सफलता में लग जाओ। विषय की मानवता की रक्षा करो, वसुधा को अपना निज कुटुम्ब मान कर अपना जीवन यमोक्तानुसार लोक उपकार में मध्य भागनाओं के प्रदर्शन में, आत्म चिन्तन में संयम सदाचार, विवेक से आहार शुद्धि में लग जाओ। अपना जीवन संयमित बना कर पूर्व जन्मों की विद्याओं के रत्न कोष को भी प्राप्त करो।

सयम विषय की रत्न मणियों का अन्व-मूल्य है। बनावट और फँसान-परस्ती का त्याग करो सादगी को अपनाओ। जीवन को सादा और पवित्र संयमित, अनुपम युक्त बनाओ।

**पापों और बुराईयों का परित्याग करो**

आज देश में भूखारी, गरीबी, दरिद्रता का नमन रूप दृष्टिगत हो रहा है ऐसी दयनीय दशा को देखकर गीरी की समाधि टूट जाती है। आज इस देश में अरबों रूपये बुराईयों के और पापों के प्रवल प्रचार में यह कायां स सरकार पानी की तरह बहा रही है। आज जब देश महंगाई की चक्कि में पिस रहा है इस नाजूक परिस्थिति में मनन फिल्मों का अत्या-सूच्य निर्माण और प्रवल प्रचार हो रहा है जिस के कारण आज देश के चरित्र बल का दिवाला निकल चुका है।

**सहपान को छोड़ो**

संयम का सहारा लेकर गाँजा, मँग, शराब, अफीम, चरस बण्डू बीड़ी तम्बाकू आदि समस्त दुष्कृत्यों से अपने आप बचो और अपनी सन्तानों को बचाओ। अपनी सुन पसीने की कमाई को अपनी शिक्षा, विद्या पर खर्च करो। घर घर में व्रत रत्नाओं अपना जीवन सयम्य बनाओ।

सहपान को त्याग कर हूष बही, मलाई मसूर का पान करो। बीर बनो, धर्मवीर बनो। मूल के और धर्म में बलों

विद्याओं में वैदिक विचारों की महा शान्ति मना दो। आज यज्ञ वेदी पर परमारता को अपनी कठोर अहंसा में संस्कार परमात्मा के दिव्य गुणों और कृतियों को धारण्य करो। बर्षे मास, आराधना आदि संस्कार बुराईयों और पाप से बचने का सदा देख की समुक्त बहाने का आज वत धारण्य करो।

भारत वर्ष देश को विषय का मुक्त बनाओ। वैदिक युग का वैदिक साक्षात्कार का निर्माण करो। यह वेद भगवान का, उपनिषदों का, शास्त्रों का, गीता, रामायण और महाभारत का विषय के मानव समाज के नाम आज अनुपम दिव्य हित हृदक संदेश है।

सयम वत को धारण्य करो यह धर्म बीर का उपलक्ष रत्न मान्य है।

**★ ★ महर्षि दयानन्द के निर्वाणोत्सव की तैयारी प्रारम्भ**

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के संस्थापक में पूर्व वर्षों की भांति दिल्ली की ११० आर्यसभाओं तथा अनेक आर्य संस्थाओं की ओर से दीपावली के शुभ अवसर पर सुचना ११ नवम्बर १९६६ को रामगोनी मंदिर में प्रातः ८ से १० बजे तक महर्षि निर्वाणोत्सव बडे समारोह से मनाया जायेगा आर्य केन्द्रीय सभा मन्त्री श्री रामानाथ सह्याल ने प्रत्येक आर्यसभाज से प्रार्थना की है कि वह इस उत्सव को उत्सव बनाये के विषये अपने अपने क्षेत्र में इस का प्रचार अभी से आरम्भ कर दे।

**आर्यसभाज विक्रमपुरा जालंधर**

१६ १०-६६ रविवार को दैनिक कार्यवाही के पश्चात् श्री श्रीमहेश जी पुरोहित आर्यसभाज किता मुहल्ला का सार्व गन्धी व्याख्यान होगा। सभी पार प्रतिनी वर-नाम सभ्य पर पधार कर लाभ उठाएँ।

दैनिक सार्वग प्राप्तः सवा इः बडे से सवा सात बडे तक प्रतिदिन समाज मन्दिरे में सम्पन्न होता है जिसमें दैनिक कार्यवाही के पश्चात एक मन्त्र की मधुर व्याख्या पुरोहित जी करते हैं। इस दैनिक सार्वग में सब स्त्री पुरुष पधार कर हस्त्य की शोभा बढ़ाए।

—मन्त्री, आर्य सभाज

सम्पादकीय—

# आर्यजगत्

वर्ष २६ | रविवार ०२, १६ अक्टूबर १९६६ | अंक ४२

## छात्रों की यह गड़बड़

युवक राष्ट्र के विद्यालय घरीर के लिए मेरुस्थल का काम देते हैं। यही कल के देव के नेता होते हैं। इनमें उल्लास, उल्लाह, और भयूरु जीव होता है। नदी के प्रथम प्रवाह के समान युवकों का जीवन भी समाज में सदा समीप हुआ करता है। यदि वह बर्ष अनुशासन के रूढ़कर समर्पित अवस्था के पथ पर चलता रहे तो किसी भी राष्ट्र का कल्याण हो जाता है। इनके विचारों यदि युवक वर्ग की मर्यादा इष्ट-उभर होने लगे तो यही प्रवाह बहाकर बराबरी शक्ति को विभेद कर रख देता है। युवकों की शक्ति पर भारे समाज को मान होता है। भारत में इन वर्ग के प्रति पुरा-पुरा ध्यान दिया जाता था। इसकी विज्ञापना-पीठा में ही राष्ट्रिय सेवा की भावना इस वर्ग के विचारों में आचार्य कुल की ओर से भर दी जाती थी। यही कारण था कि पुरातन सभ्यताओं, युवकों तथा भाषणों के आदर्श बता-बरस में निवास करने वाला प्रदेक-युवक राष्ट्र की दिव्य शक्ति का काम देता था। और युवक रामकुमार राम जैसे आदर्श नेता, गोपाल इन्द्रज जैसे पवित्र चरित्र के देवता, व्यास के दिव्य जैमिनी एक बाल्यव्य आदि महान राजनीति के कर्मचार इदो आचार्य-कुल की पुनीत परम्परा की अनुपम देव हैं। अन्वी सत युग में स्वामी विद्यालय सतिषे देवता भी तो युवकुल के विद्यार्थियों हैं। आर्यसमाज के महात्मा हृदारज तथा स्वामी ब्रह्मदेव के नृत्य में कोने बर विद्यालय आदर्श संस्थाओं में निहने हुए विक्रमे ही दिव्य युवक आज राष्ट्र के विनिर्मित-स्थानों व कार्यस्थलों में कितना सुन्दर काम कर रहे हैं। युवकवर्ग राष्ट्र के काम को जगती ही भावे में जाने में सदा सतर्क होता है। किन्तु अब वह पुरानी बरस्था तथा भावना समाप्त होती जा रही है। शाय: विदर्शों २ की छीड़ कर न तो आचार्य ही उस युवकवर्ग के मुख हैं उनका जीवन, विद्या का राजकीय डाट बाट भारतीयता के र्थ के सर्वथा विपर्यय है उनका

जीवन लम्बक अपने छात्रों से न होने के समाप है और न ही छात्रों में अपने गुरुकों के प्रति सम्मान की भावना काम करती है। आचार का निर्मोख करने वालों की शास्त्र ने आचार्य की वस्ती ही है और उनकी जीवन शारङ्गो पर चलने वालों को शिष्य माना गया है। आज की विद्या पीठा हो ऐसी है कि परस्पर का मुख शिष्य का पवित्र सम्बन्ध समाप्त हो चुका है। अब तो प्रिप्रिण्ट स्टूडेंट का रिश्ता है। इत समय के गुरु प्रिप्रिण्ट कहलता समर्थ करते हैं और युवक छात्र बनना नहीं चाहते। इस प्रकार जीवन निर्मोख का सारा ताना बाना ही विनाश गया है। नरुह कही अन्वी तक यह परस्पर का गुरु शिष्य का सम्बन्ध है, वरुह अब भी जीवन की भावना मौजूद है। वरुह पर इस समय भी सम्मान होता है। जीवन में जीवन बनता है, जनि से जनि जतानी है, दीनक से दीनक चमकता है। एत के अन्तुपर युवकवर्ग के जीवन में अपने आचार्यों के जीवन से तथा पवित्र शिक्षा दीक्षा से निर्मास की सुश्रुति देता हूब करती है।

भारत में विदेशी सत्ता ने और बातों के माप २ हल की शिरा दीक्षा का सारा बालावरुष भी बरकरार अपना पवित्री बालावरुष ला सहा किया। पुरानी परम्परा को समाप्त कर दिया। उसका प्रभाव तो निरिपत रूप से होता ही था। वरुह होकर रहा। गुरु शिष्य का प्यारा सम्बन्ध समाप्त होकर Teacher and Taught का परिमयी रिश्ता कायम हो गया। स्वामीजता के साथ भी न तो शिक्षा-दीक्षा की परिपटी बरनी और न वरुह बालावरुष ही गया। अरुने से भी अतिक होता गया। इतने वर्वों के बाद भी आज वही सेल-सेला ही सारे राष्ट्र हैं। इसका दुष्परिणाम भी सारे राष्ट्र के सम्पने है। बंते तो कई बार भारतीय जीवन में इत सङ्घर्षमें न बननी बात को मरनाभने से लिए अनेक आदोमन किये। संस्थाओं व विद्यालयों में हलधायों की कई।

अनीगड का विरचविद्यालय हो या हिन्दु विरचविद्यालय कायो हो— कई स्थानों में गड़बड़ हुई। समय-समय पर वे भारतीयता बढते चले गये। मरुकार ने समझा कि चलो काम ठीक हो गया। युवक की बीमारी को जानने व उसका इलाज करने की ओर किसी का भी ध्यान न गया। उसका मरीजा आज सारे मेलाओं के सामने है। इस समय सत्ताधार पत्र छात्रों के आंदोलनों से पंदा होने वाली गड़बड़ से भरें होते हैं। असे व जीने बर्बाद जाती हैं, सत्ताओं को हारिण पहुंचाई जाती हैं तथा सरकारी सम्पत्ति का भी ध्यान नहीं किया जाता। पत्थराय होता है, विरच विद्यालय बन्द किये जा रहे हैं। अशुभित, लाठी-चाण्ड तथा कही-कही पर गोळों भी बरसा कर शक्ति स्थापित करेकर प्रयत्न किया जा रहा है। राष्ट्र के नेता छात्रों की मागों पर विचार करने के लिए समिति को मरुठित कर के उन में शान्त गड्ढे की बात कहते हैं जगे हैं छात्रों की बचनाय गड़बड़ से सारा देश विनित्त है। बाहर के देश भारत के बारे में क्या सोचने व कहते होंगे? यह अनुमान लगाना जा सकता है। छात्रों का ओष मर्यादा से बहर चला गया है। इनमें अनेक कगारों को बुना तरह से मीड कर रख दिया है। विषय समर्थ है।

इसे ध्यान करने का उपाय क्या है? नेताओं का हूर काम व हर सभ्यता के समाधान के लिए दृष्टि कोषाएँ करनी हैं। उसी एकमे देवते तथा उची मन से विचारते हैं। पत्तों की पानी देने का प्रयत्न करते हैं। तभी न कुछ बना है और न कुछ बनेगा ही। वे सारे युवक अपने ही देश के, परिचारी के हैं। इन को मर्यादा से रखना परमावश्यक है। भूल तो भूल में है। आज की शहारी शिष्टाभि, पाठ्यक्रम में जाकान-पातला की बातों को समजोया है, समुद्रचार की विदेशी भाषा की भी उसी प्रकार से अनिवादाय मौजूद है, परन्तु जीवन निर्मास करने के लिए धर्म को कोई स्थान नहीं दिया गया। निरा प्रतिकार, शरीरवाद का प्रपन है, आचार्य की नेत्रमात्र भी स्थान नहीं। गुरु शिष्य का पुरातन भाव नहीं बना जाता—तो जला इलाज कैसे हो सके? भारत सरकार की अर्वा कर्षों की योजना से आचार्य व जीवन योजना के लिए एक पैदा भी नहीं है। फिर काम कैसे बने? भूल का उपाय करो।

## कथनी और करनी

अभी-अभी भारत की राजधानी देहली में सङ्कट समेहन की स्थण-उपवनी का समारोह पुनपाम में मनाया गया। उसका उद्घाटन राष्ट्रपति की ने बडे सुन्दर बरधो को जोनकर किया। प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने अपना सङ्कट के प्रति सम्मान व्यक्त करने का संदेश भेजा। और भी गजकों ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए। यह हूर समारोह को एक परम्परा-सी बन गई है। एत में भारत के सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व चीफ जस्टिस श्री गजेन्द्रकर जी ने भी अपना सम्बन्ध बडे हूर किया जाम-मण्डे के समुद्र शब्दों में कहा कि मङ्कट भारतीय संस्कृति का जीवन है। हमारी सङ्कति इतनी मे है। किन्तु हेर है कि हमारी सरकार ने सङ्कट के निरु को करना चाहिये था, वरुह भी तक नहीं किया। उस से उंभशा ही बनी है। श्री गजेन्द्रकर जी ने सारे सङ्कट प्रेषियों की मन की सहा कही है। बाल्यव में भारत सरकार की कथनी व करनी में भारी अन्तर है। तथ यह है कि आजाद भारत में सङ्कट व सङ्कट बातों को युती उरुई से मारा जाता है। पण-पण पर उनका विरसकार किया जाता है। प्रथम में तो सङ्कट को सुलौ व कलिकों से मान पकर कर अन्तम-पूर्वक पंकेना जाता है। रक्षुषीर सरकारी कामेन नरुत्पत्ता की सङ्कट छात्रों को निहने बातों को बरुति पचनी जा रही उरुह तक बर की जा रही है। विरच-विद्यालय की समितिधो में अरुनेजी के परर प्यारे व लोम दुपमिम के लिए ठी कितना गोपने, उन्मति के लिए किसी शक्ति शक्ति करते सुकनो, कायेको के पाठ्यक्रमों में और सुकन सुकन करते हैं—पर सङ्कट के प्रथन पर उंभे मारने में सारे एक बन जाते हैं। आज इस प्रकार युग में भी सङ्कट के आरिषको को निर्बलम में मत देते का अधिकार तक भी नहीं दिया जाता। सङ्कट को सुलौ में अरुणमिति किया जाता है। युवाओं और किंगों की भी ध्यान नहीं है। देहली के उठी समारोह में सोते हुए एक जगामी पोडोरन में सङ्कट में भागएा रिता। किन्तु इतने नेता अरुनेजी में समर्थ देते हैं। अब तक कथनी व करनी एक एक नहीं होती, उत तक काम नहीं बन सकता।

(विष पृष्ठ ५ पर)

—निरोक पण्ड

व्यक्ति को अपने चरित्र और व्यवहार-दर्शन का पीछा करने के लिये समूह में रहना अत्यावश्यक होता है। अपनी शारीरिक मुद्रा के लिए भी व्यक्ति युक्त जना कर चलने की आदत पलन करता है। अपनी आध्यात्मिक उन्नति के लिए भी जिज्ञासु को ऐसे समूह या सन्ध्या की खोज रहती है जो उसे विभिन्न आध्यात्मिक उपदानों की उपलब्धि करा सके। अतः व्यक्ति के लिये यह विषय है कि वह अपने व्यक्तित्व का उन्नयन समष्टि के व्यक्तित्व को उन्नयन के हेतु कर दे। इस प्रकार विभिन्न व्यष्टि-स्रोतों से प्रबलित गुण धैर्य, धाम, पारस्परिक सहयोग, शौर्य, नील, सत्य, अस्तेय व त्याग एक समष्टि के व्यक्तित्व को सुदृढ़ प्राण्य प्रदान करते हैं। इन गुणों द्वारा अजित समष्टि को सम्मन्ना का मूल्यांकन या तो समूह विषय के विचारशील व्यक्तियों द्वारा अपना क्या देशों के व्यक्तियों द्वारा किया जाता है। आदिम काल में इन गुणों की परिष्कारण व विवेचन में चाहे अष्टा-यपुर (Ephemerals) अन्तर रहा हो, लेकिन इनका आध्यात्मिक दर्शन अपरिचित ही रहा है। व्यक्ति प्रभूत व प्रवत इन समष्टि गुणों को अनुष्णता से लिये मानव समाज को अपने उद्देश्यों का सामना करना पडा है, लेकिन फिर भी व्यक्ति को इन गुणों के प्रति आस्था में कोई विषयन नहीं हुआ है। धृष्ट मिथारण अथवा अन्य प्राकृतिक या पंशाधिक कामनाओं को तृपित के लिये व्यक्ति ने भन्ने ही इन गुणों की वलि दी हो, किन्तु अपने कारनामों को पुनरावृत्ति न करने की भी उम्मेद कई बार शपथ ली है। नू कि व्यक्ति को इन गुणों का विचन समाज में रह कर ही करना पडता है, इसलिये कभी कभी समूह विषय में अपना स्थायित्व बनाने के लिये उसे इन गुणों में कुछ 'एडजस्टमेंट' भी करने होते हैं। लेकिन ये एडजस्टमेंट निश्चित रूप से कुलित नहीं हो सकते—इन से समष्टि के हितों का हनन नहीं होना चाहिये। इसलिये यदि समष्टि की सुरक्षा या प्रारुणा के लिये हिता या असत्य का महारा लेना पडता है तो यह निन्दनीय नहीं है—क्योंकि हमारा लक्ष्य समूह की श्री बुद्धि करना ही है। शरते राष्ट्रीय चरित्र का प्राण्य व्यक्ति की समूह के प्रति इसी प्रकार की मद्दमायनाओं और सदाचार से निश्चित होता है।

## राष्ट्र किधर जा रहा है ?

(श्री सुन्दरलाल जी बोहरा जीपुर)

पर इस प्रकार की प्रवृत्ति सभी पनप सकती है, बर्बक शासनत्व व कल्याणकारी सत्वाएँ उन्ही व्यक्तियों द्वारा संघालित हो जिनके लिये उनका निर्माण हुआ है। यही कारण है कि एक स्वतन्त्र एवम् जनतांत्रिक राष्ट्र अपनी चारित्रिक सम्पत्ति के लिये जितना जागरूक और बलिदान की भावना से ओतप्रोत रहता है उतना एक गुलाम राष्ट्र कदापि नहीं रह सकता। नू कि विदेशी मना द्वारा संघालित एक देश में व्यक्ति को उसके व्यक्तित्व-निर्माण के लिये

**आज कल हमारा राज्य कौन-सा रास्ता अपना रहा है इसकी सच्ची तस्वीर देखनी हो तो ऊपर के लेख को पढ़िए और फिर सोचिए कि आप के ओर लेखक के विचारों में समन्वय है या विभिन्नता।—व्यवस्थापक**

उपलब्ध सभी स्रोतों से रचित करने की राज्य-स्तर पर कुचेष्टा की जाती है, इसलिये आलस्य व्यक्ति 'अन्धा बाबे रेंड्रीं फिर फिर अपने को देव' वाली कुष्ठा से परत हो जाता है। वह अपने हितों और समष्टि के हितों के मध्य एक गहन अन्तराल का अनुभव करता है। कल-स्वरूप अपने स्वातन्त्र्य काल में अजित उसके गुण कल्पित हो जाते हैं: और इस प्रकार उस समष्टि का चक्रवृद्धि रूप से (Cumulatively) चारित्रिक पतन होने लगता है। यह पतन इतना सघातक (fatal) होता है कि यदि उस राष्ट्र को पुनः स्वतन्त्रता भी प्राप्त हो जाए तो उसे अपनी दासता से पूर्व का चारित्रिक दर्शन समझने के लिये भी दीर्घावा लाग जाती है। आज हमें भी ऐसा ही अनुभव हो रहा है। अपने सोए व्यक्तित्व को पाने के लिए न जाने आज हमें कितने साहित्यिक व सांस्थानिक प्रयत्न करने पड रहे हैं फिर भी 'उत्सर्ग' भयः का नाटक अर्पण है।

नू कि इतिहास काल में हमें किसी भी प्रकार का दार्ष्टिक-वैयक्तिक अथवा सांस्थानिक-निर्माण का अवसर ही नहीं प्रदान किया जाता था, इसलिए हमारा सोचने व समझने का श्रेय ही सकुचित हो गया। 'कम्पनी की कुष्ठा' के हम पूरे शिकार हो गए। हम अपनी हर शिवा व अनुभव को अर्थ के सन्दर्भ में देखने लगे। यो शर्तः

नर्तः हमारा चरित्र आध्यात्मिक के स्थान पर आर्थिक बन गया। हमारी स्थिति उस मोटे जैसी हो गई जिसको कुछ दूरी पर हटा घास (आर्थिक विकास उपदान) दिखाई देता था, लेकिन उसके पास चरने की मशौनों द्वारा मुखाया हुआ घास ही पडा था। इसलिये जब धांड़े को स्वतन्त्र किया या सब भी वह हटा घास चरने को राजी न हुआ। हम भी आज उसी 'धो पंसे की कमाई' की कुष्ठा से बंधे हुए हैं। हमारे सँग-सांसे में 'हाय, माई जन्म बोडा' की रट मगी हुई

है। हम अपनी आध्यात्मिक घरोहूर का उपयोग भी आज अर्थांजन करने में नहीं दुरुते। इस सन्दर्भ में एक दुष्टान्त प्राप्तिक होता। एक व्यापारी को मूष्योपरान्त घमराज के पास लाया गया। नू कि उसके पास व पुन्य बराबर थे, इसलिये घमराज ने स्वयं-नरक का निर्णय उसकी इच्छा पर ही छोड दिया। लेकिन अपने सत्कार-रोप के कारण व्यापारी ने कहा कि उसे विधर भी 'धो पंसे' का नाश हो जाए उसे उधर ही भेज दिया जाए—स्वयं-नरक उनकी दुष्टि में कोई महत्त्व नहीं रखते।

यवा आज हम उस व्यापारी से कम है ? नहीं, कदापि नहीं। ईमान एक वहम है, धर्म एक धोखा है, सत्य एक सुना कुड़ा है, जीवन में जो कुछ है वह धन है, लक्ष्मी है। आज तो सस, यथा क्या च विषयो वितत् बहु कुर्वात ही हमारा जीवन मन्त्र (Motto) बन गया है।

हम भाग और पूर्ति के मोहरे बन गये हैं। वस्तुओं का संघर्ष और काना 'बाजार', से ही व्यापारियों के मुखण रह गये हैं। चाहे वे स्वतन्त्र व्यापारी ही चाहे सहकारी समितियाँ, कुलित एवम् राष्ट्रभाती प्रवृत्तियों को समान रूप से पनपाते व पुजते हैं। वस्तुओं के मास बढ़ रहे हैं, लेकिन व्यापारियों की परिष्क-वृत्ति में कोई कमी नहीं

प्रतीत होती। 'ऐसा राज कब कब आता है, जितना अजित करना हो कर लो' यही हमारे व्यापारी समुदाय का जीवन-दर्शन है। उन्हे रोकने वाला कौन ? 'वस्तुओं में विसावट करो, वस्तुएँ महगो बंचो, जीवन की सफलता इसी में है। व्यापार में शील व सदा-चार की कोई कीमत नहीं है।'

सच भी है व्यापारियों का ईमान और धर्म तो अंध ही होता है। वे किसी सिद्धत विषय में निष्पके हुए नहीं होते। वे उसी ईश्वर और धर्म को मानते हैं जो उन्हे 'कमाई' में सहाय्य दे। उनका जीवन ही तराजू में बसता है, और तराजू को धन में असम्ब बार 'एडजस्ट' करना पडता है। यही कारण है कि उन के लिये 'एगमक' और 'क्वालिटी कम्प्लेस' का उतना ही महत्त्व है जितना एक हुसका पीने वाले के लिये बीटी का महत्त्व।

लेकिन यह सब व्यापारियों का रोम नहीं उन का भाग्य सरकार के आधी है, और सरकार का भाग्य है उस के कमचारियों के आधी। ज्यों ज्यों सरकार करों में बुद्धि करती है त्यों त्यों व्यापारियों को घनाजित की कुलित 'विधियों का सहारा लेता पडता है।

व्यापारियों का तो साफ नारा है: 'हम इतिहास काल में भी इतने टैक्स नहीं देते थे तो अब हम हमारे ही राज में क्यों दे ?' और आज टैक्स की बचत करने के लिये रातो-रात बहिना बदल दी जाती है। बाहिर हूरा की ओर उचार भी तो नहीं है। सरकार की टैक्स वसूल करने की सीधी ही दोषपूर्ण है। बेचारे सरकारी अधिकारी भी तो बाल-बच्चे बाले हैं।

'सरकारी पद पाकर भी यदि हम लोगों में गिरान की भावना जीवित रही तब हम शाक सरकारी अधिकारी कहलाते। पानी की तरह स्वया नहा कर, भित्ती प्रतियोगी परीक्षाएँ पास कर इन्टरसिन् प्राप्त किया, फिर भी हम फकीरी का जीवन बिताएँ। सानव है हमारी पढ़ाई पर !' यह है स्वतन्त्र भारत के सरकारी अधिकारियों का सही जीवन-दर्शन।

(कमरा)

शिवा जी महाराज को छत्रपति बनाने में उनकी वीर माता जीकासिंह का प्रमुख हाथ था। माता जीका बाई अपने पुत्र को बना सकती है अतः जोका बाई एक आवर्त माता थी। औरजके अत्याचारों का विनाश करने के लिये वीर माता ने वीर पुत्र शिवा जी को पैदा किया। शिवा जी को प्रतिभा सर्वतोमुखी थी, राजकाज में, प्रजा पालन में, सैन्य-संवाहन और संगठन में तथा शत्रुओं के दमन करने में उन्होंने अपनी अतीतिक प्रतिभा का परिचय दिया था। परन्तु भारत में धर्माचारों की एक श्रेणी थी जिसमें अपने स्वार्थसुख जनता को धर्मान्य विवेक-रहित और भ्रष्टमन्य बना रहा था। जातपात छुट-छात और खान पान के भेद-भाव को दीवारें खड़ी की हुई थी। उसी समय में आर्य जाति अन्याय और अत्याचार की चक्की में फिसल रही थी। बुकिस्लानी भंडिये अनाथ और निर्धन हिन्दुओं का रक्त बहा रहे थे। सार्वभौमिकता अपना पतित धर्म बनाये के लिये अरि देवता को धराल दे रही थी। हजारी गो-माताओं का नया सूर्यवर्ण होने से पूर्व ही काट दिया जाता था। संकटो चाँटिया और यज्ञोपवीत प्रसिद्धि उत्तार दिने जनि थे। इस समय में शिवाजी को राज्याभिषेक का अतिशार नहीं है। इस प्रकार महागात्रीय ब्राह्मणों ने घोषणा की थी। शिवाजी ने अपने आकाशमिक पक्ष-प्रदर्शन की समय गुरु रामदास स्वामी के निकट अपने एक वैदवस्त राज कर्मचारी को राज्याभिषेक के विषय में परामर्श करने के लिये भेजा था। श्री समय गुरु रामदास जी शिवाजी के इस प्रस्ताव से पूर्ण सह-भवं थे। इस प्रकार अपने पुत्र्य गुरु के परामर्श से ही उन्होंने अपने हिन्दु समाज के मुख्य स्तम्भ ब्राह्मणों को अपने वीर सेनानायकों तथा मंत्रियों को भी निमन्त्रित किया था। इस सभा में ब्रह्म विषय पर कई विचारों का तर्क विचार होता रहा कि श्री शिवाजी को राज्याभिषेक का अधिकार है या नहीं। क्लृप्त से सभा में सर्वसम्मति से यह निश्चय हुआ कि शिवाजी का राज्याभिषेक होना चाहिये। इसके पश्चात् ब्राह्मणों ने गुरु प्रभू यह उपस्थित किया कि राज्याभिषेक की क्या किस प्रकार करनी चाहिये? क्योंकि श्री शिवाजी की अवस्था भी इस समय ५६ वर्ष की हो गयी है। उनका विवाह भी हो चुका है। उनके कई

## शिवाजी के यज्ञोपवीत की करुणा कहानी ऐतिहासिक रंगमंच के लिए नवीन खोज रोचक एव पठनीय

(ले. श्री देशबन्धु जी शास्त्री महोपदेशक, हैदराबाद)

लड़के लड़कियाँ भी हैं। अतएव इस प्रकार एक विकट समस्या सभा में उपस्थित हो गई। तब प्राद्वेष्ट सेके-टरी बाला जी आबाजी राज चिट-नीस ने उन्हें यह परामर्श दिया कि स्वामी (महाराष्ट्रीय) ब्राह्मणों की सम्मति पर निर्भर न रहकर, भारत के दूसरे प्रांतों के विद्वानों से भी परामर्श करना चाहिये।

उन दिनों में काशी के गणगण्ड नामक एक ब्राह्मण, विन्सेन्डर नामक स्वामि ने रहते थे। चारों बेटों में उनकी अष्टमी गति थी, दर्शन के भी पण्डित थे। व अपनी विद्वता के कारण विख्यात थे। उन सम्मन्धी विचारवस्तु विषयों में वे जो कुछ व्यवस्था देते थे वह सबको मान्य होती थी। उनकी सम्मति और व्यवस्था के सामने सब लोग सिर झुकाते थे (N. S. takaha M. A. इति शिवाजीका चरित्र पृष्ठ ३५० पर से) उन दिनों गणगण्ड काशी में स्वामि पंडित नगर (दक्षिण) के आए थे तब श्री बाला जी आबा जी राज ने श्री शिवाजी से कहा कि श्री गणगण्ड को साथ ही पंडित नगर के अन्य पण्डितों को भी सम्मत्या हल करने को बुलाना चाहिये। श्री शिवाजी, श्री बाला जी आबाजी राज के इस प्रस्ताव से सहमत हुए। उन्होंने श्री गणगण्ड जी को बुलाने के लिए अपने मन्त्री श्री बाला जी आबाजी राज को श्री केशव पंडित, श्री भालचन्द्र राज पुरोहित और सोम-नाथ राज काश्यप को भेजा। पासकी और घोड़ों की सवारी का अच्छा प्रबन्ध कर दिया उनके कर्ष के लिए दल हजारा रुपए भी मजूर करके दिये गये थे।

श्री बाला जी राज अपने साथियों सहित पंडित पंडितों और श्री गणगण्ड से शिवाजी के यज्ञोपवीत और राज्याभिषेक के विषय में परामर्श किया था। श्री गणगण्ड की सम्मति से पंडित के पंडितों की एक सभा श्री शिवाजी के यज्ञोपवीत और राज्याभिषेक के विषय में विचार करने के लिए हुई वह सभा एक मास होती रही। श्री गणगण्ड तथा पण्डितों ने यह आग्रह उठाई कि शिवाजी क्षत्रिय नहीं है, गुरु (मराठों) है इसलिए यज्ञोपवीत और पुराणे समय में अयोध्या

और हस्तिनापुर में जिन प्रकार के राजनितिक होते थे, उस प्रकार से श्री शिवाजी का नहीं हो सकता है। इस पर बाला जी राज ने श्री गणगण्ड को शिवाजी का क्या ब्रह्म दिखलाया, तब उन्होंने मराठों का क्षत्रिय होना स्वीकार किया और श्री बाला जी राज के प्रार्थना करने पर श्री गणगण्ड पंडित नगर के पण्डितों के साथ श्री शिवाजी की राजधानी (राजगड) में गये श्री शिवाजी ने मार्ग में सतरा पत्रक कर उनका बड़ी मुशकिल से स्वागत किया, उस समय स्वागत के लिए पाक हजारा रुपये व्यय किए गये थे।

गणगण्ड ने श्री गणगण्ड के पहुंचने पर शिवा जी ने पुनः एक सभा का आयोजन किया। जिस में उन्होंने महाराष्ट्रीय पण्डित, मन्त्री तथा प्रसिद्ध नामिकों को निमन्त्रित किया। इस सभा में श्री शिवाजी गणगण्ड तथा नगर और अन्य पण्डितों का परिचय कराया और पुनः यज्ञोपवीत संस्कार का प्रश्न पण्डितों के सामने उपस्थित किया। विशेषाचार-विवाद के अनन्तर श्री गणगण्ड ने निष्की हुई अपनी यह सम्मति प्रकट की, 'मराठा क्षत्रिय है सीधो दिया वचन के है। मरेंदा नदी के इस पार होने से मराठा कहलाये है परन्तु इन में अभी दास रक्त का ह्लास नहीं हुआ है, जैसे राज वस्त्र को राज्याभिषेक के पूर्व उपनयन किया होता है। वैसे ही श्री शिवाजी का होना चाहिये। इस में मरेंदा नदी कि इतनी बड़ी अवस्था में श्री शिवाजी का उपनयन संस्कार कर्मकाण्ड के विरुद्ध है क्योंकि उनका विवाह हो चुका है अथवा मलाने भी हैं परन्तु विशेष परिस्थिति के कारण उन का उपनयन संस्कार हो सकता है। इस में कुछ आपत्ति की बात नहीं है।' (श्री शिवाजी का चरित्र पृष्ठ ५१३ पर से, श्री नन्दकुमार इति) एव अन्य इतिहासों में भी मराठों को क्षत्रिय सिद्ध किया है कि महाराज के युद्ध में महारथी नामक बहुत बड़ा योद्धा था उसके नाम से ही इस जाति का नामकरण हुआ है महारथी का ही विषयज्ञान रूप—महारथी, महारठी, महारठी, मराठी हुआ अर्थात् सही लोगों में दास,

भी लोग हैं। अतः मराठों को क्षत्रिय कहिये। महाराष्ट्र के बाह्योने में गणगण्ड को उपयुक्त व्यवस्था को स्वीकार नहीं किया और कठने लगे कि शूद्रों (मराठों) को यज्ञोपवीत पारस करने का शास्त्रों में विधान नहीं है। इस प्रकार का प्रचार करना आरम्भ किया और गणगण्ड को जाति बहिष्कार का भय दिखाना शुरू कर दिया तब गणगण्ड ने श्री शिवा जी को मन्कार द्वारा गुड करने का निर्णय किया। श्री गणगण्ड की उपयुक्त व्यवस्था को कुछ पण्डितों ने स्वीकार कर लिया।

श्री शिवा जी को इस निर्णय पर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। इसके पश्चात् यज्ञोपवीत संस्कार के लिए श्री शिवा जी ने पण्डित मण्डियों—जने गगा, गोसदर, यमुना और नदी समुद्रों का पानी, शुभ चिह्न स्वरूप में घोड़ों की भुव चारों, मोने, कादों के बर्तनों और अनेक कलशों का मगवाया और सर्वविध साकष्य एकत्रित करने को १,०५,५५,००० रुपये व्यय करके पण्डितों से निवेदन किया कि वे यज्ञोपवीत के लिए शुभ तिथि का निश्चय करें। इस आग्रहान्तर पण्डितों ने ज्येष्ठ शुक्ल ४ तदनुवार २० मई १६४४ को दिन निश्चय किया। मुहूर्त का निश्चय होने पर शिवा जी ने महाराष्ट्र तथा अन्य प्रांतों के मानस स्वतंत्र राजाओं, सरदारों को यज्ञोपवीत के निमित्त निमन्त्रणा पत्र भेजे। इसके अतिरिक्त श्री गणगण्ड को इस व्यवस्था के ज्ञात होने पर श्री शिवा जी ने भारत वर्ष के समस्त लोगों के बाह्योने का यज्ञोपवीत के संस्कार में उपस्थित होने के लिये निमन्त्रणा पत्र भेजे। उनका निमन्त्रणा आज होने पर लगभग थारह हजार ब्राह्मण अपने बाल बच्चों और स्त्रियों सहित इस गुरु उपनयन में सम्मिलित होने के लिये पहुंचे थे। तथा स्त्रियों को अथवा पण्डितों के सहित पचास हजार मत्स्या अन्य हो गई थी। ये लोग रायचंद में बारही मरने रहे थे। जब तक वे सर्वार्थों लोच रायचंद में रहे थे तब तक हलवा दूरी राज्य की ओर से उठते रहे। जिस पर ६९१००० रुपये मान्य व्यय और ४ महीने हलवा पुरीको का ६६५,०००० रुपये व्यय हुआ था। इन ब्राह्मणों के अतिरिक्त श्री को बहुत से महाराष्ट्रीय ब्राह्मण, सरदार, भूयरे राज्यों के अतिरिक्त विदेशी व्यापारी तथा बहुत से वरुण भी आये थे। (भ्रमणः)



## समय देने वाले

(पृष्ठ ३ का वेग)

इस मन्त्री विभाजन प्रदेश के आर्यसमाज के महोत्सव पर आने पर देखा कि ३ घास गद्दी के राधा स्वामी गुरु मन्त्री केन्द्र में आए हुए थे। उनके भक्तों की ओर से स्वागत सम्मान तथा सत्संग के समारोह की देखभाल मन ने कहा कि अभी आर्य समाज के लिए कितना भारी काम है। अभी तक कितनी व्यक्ति पुत्रा तथा गुरुदत्त को परम्परा है। कितने मर-मारी अभी तक ऐसे ब्रह्मों में प्रब-हित होते हैं। आर्यसमाज के सिवाए ऐसे-ऐसे गुरुदत्तों के वेग को रोकने की चिन्ता भी कितने हैं ? किन्तु बाढ़ों से तो अब यह काम होने से रहा। हम यह समझते हैं कि यह काम प्रचारकों का है। वे इसी काम के लिए पैसा किस तरह हैं। मगर हा या देहाव, पहाड़ हा या समस्त भूमि, रात ही या दिन, सर्दी ही या गर्मी, सुखी हा या दुखी, स्वस्थ हा या रोगी—प्रत्येक अवस्था में उन का ही यह काम है। हम उन से काम करने के लिए पैसा हुए हैं और वे काम करने के लिए। इस भावना में काम करने वालों को समाज से दूर कर दिया है। यह काम सब सज्जनों का है। यदि वे कम से कम बाढ़ें दिव्य वे भी तो परिवारों से बाहर जा कर, सत्याओं के अवकाश के दिनों में कुछ दिव्य वे कर बाहर प्रचार के लिए निकलें। समाजों में भूते। बाहर समाज प्रचार के लिए यात्रा करें। इस से समाज प्रचार का काम बढ़ता जायेगा। आज प्रचार का काम करने के लिए समय देने वाले सज्जनों की बड़ी आवश्यकता है। समय दानियों के बिना यह मादों आगे बंसे चलेगी ? ऐसे २ गुरुदत्तों के प्रवाह को रोकने के निमित्त समय देने वाले मंत्रां में निकलें। बंधन से या स्वस्थ बाढ़ों का यात्राओं से कुछ नहीं बनना। यह साथ है कि प्रचारकों में इसी अवस्था का आसो से देखते हुए किसी भी अन्याय सहाय को प्रचारक नहीं बनाया। आर्य समाज में समय दान वज्र प्रारम्भ होना चाहिए। यदि वे कुछ सज्जन समाज के धर्म-प्रचार के लिए इस वज्र में अपने कुछ दिनों को आहुति दे तभी यह काम आगे ही आगे बढ़ता जायेगा। इस समय प्रचार कार्य में समय देने वाली की बड़ी आवश्यकता है।

## महात्मा हंसराज हिन्दी विद्यालय, अशोक रोड मंगूर

उद्घाटन ३. १०. ६६ को श्री विन् विन् विन् का श्री अन्धता में हुआ। श्री पूष्पी चन्द जी बहलन ने अपना उद्घाटन भाषण देते हुए पूष्प महात्मा जी के त्याग एवं तपस्य जीवन पर प्रकाश डाला तथा आर्य जनता से प्रार्थना की कि इस विद्यालय के उत्थान के लिए पूर्ण रूप से सहयोग प्रदान करें। मन्त्री अमराज जी. ए. साहिल रल

## मराठी का अपूर्व समारोह

मन्त्री विभाजन की सुन्दर नगरी व्यास नदी की पवित्रधारा के तीर पर है। यहां के निवासियों ने यंत्रों के प्रति श्रद्धा भी है। आर्यसमाज के विशाल परिवार में काम करने वाले भाई बहिनो का उत्साह तो आदर्शय है। अब तो समाज मन्दिर भी धार शानदार निर्मित हो रहा है। इस बार समाज के बाधिक महोत्सव में आर्य जनत के तपस्वी परम सन्त महात्मा आनन्द स्वामी जी जो अभी २ जपान सिंगापुर, मोजेरिया आदि भी देशों की ३५ हजार मीलों की यात्रा ने ली है—उनका मन्त्री समाज के जन्मे पर कथा के लिए पारनाम इस बात का नर-नारिणों में समाज के काम के लिए कितना प्रेम है पूष्प महात्मा जी की कथा तथा श्री—अमृत का प्रवाह ही चलता था। इस बार के नगर कीर्तन का विशाल जन्म तो अपूर्व पुत्र था। मन्त्री के इतिहास में याद रहेगा। मरणात्मा की मरती में लोग नाच २ या २ कर समाज के पुराने गाथा को स्मरण कर रहे थे। पूष्प महात्मा जी की कथा व प्रबन्धनों से मगर का वातावरण ही बदल गया। उत्सव में स्था. सिवानन्द जी, पं० निजोक्क-द गाथी, ब्रह्मचारी सतीस जी, पं० मेनारा जी रेडियो सितर मन्त्रीपरेशक, पं० जगतमन जी बस्तीराम जी मडली आये थे। समाज के उत्साही प्रधान श्री कीटन इन्द्र सिंह जी, मन्त्री श्री वेतराम जी तथा नारा समाज परिवार प्रेम श्रद्धा का सजीव आकार है। हम चाहते हैं कि मन्त्री का मन्दिर शानदार बन जाये। यथा है।

## आर्य समाज मंत्री (H. P.) का वार्षिक कोल्लव

१. १०. ६६ को उत्सव के उप-सम्भ में राधु रखा सम्भन स्वामी इच्छानन्द जी सरस्वती महाराज की अध्यक्षता में सम्भन हुआ। जिस में पं. निजोक्क चन्द जी शारदी B.A. के अतिरिक्त व. सतीस जी, भ्राता केवल इच्छु जी, स्वामी जी महाराज, तथा जगत राम बस्ती राम जी व मेला राम जी रेडियो सितर के व्याख्यान व मन्त्र भवन हुए। जिस का जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

## आर्यसमाज लोहगढ़ (अमृतसर)

१८-१९-२० नवम्बर को वार्षिक उत्सव सम्पन्न हो रहा है। बड़े-बड़े सन्धारी महात्माओं तथा चिन्तनों से पत्र व्यवहार किया जा रहा है। निश्चित प्रोचाम की प्रतीक्षा करें।

## आर्यसमाज कोटली बस्ती (वशोतनगर) जन्मू का वार्षिक चुनाव

प्रधान—श्री ओम्प्रकाश जी टुलसींदर. उप-प्रधान—श्री महाशय तीर्थराम जी, मन्त्री—ओम्प्रकाश कन्ना, महाशय मन्त्री—श्री ओम्प्रकाश जी बजाज, श्री देवीचन्द जी गुला, पुस्तकान्वय—श्री बाबू कुन्दन-लाल जी, स्टोरकीपर—देवचरण जी, वाचनालय प्रबन्धक पं. सुदर्शनदेवजी।

## शोक समाचार

आर्यसमाज देवालय कुरलतल के प्रधान डा० गणेशदास जी को सुपुत्री प्रो० सुशीमा जी का जो कि महिला कालिज देहली में अद्यापन कार्य करती थी एक मास लमालार भीमारी भोगने के बाद रविवार को देहली में स्वर्गस्त हो गया। इस दुःखद निषण को सुनकर कुरलतल नगर में शोक छा गया तथा जी. ए. सी. सस्थाएं उनके साथ सहगुणुति के रूप में बंद रही। आर्यजनात डा० गणेशदास जी व उनके परिवार के साथ संवेदान प्रकट करता है। जोर दिव्यत आत्मा की सद्गुण के लिए प्रभु से प्रार्थना करता है।

## अदालती नोटिस

बा अदालत बनाया धोखेबाज, सिद्धु जी सोरियर सज्जन बा अखिलायार गारासिन जज फिरोजपुर

नयापु पुत्र विहारीलाल साकन फिरोजपुर छावनी। बनाम—छोनीया देवी बेवा विहारीलाल साकन फिरोज पुर छावनी—फरीकदोयन दरखास्त बराए सकरणी गारासिन जायदाद। बनाम—हस्तात नवाधम मुकुन्दमा उपर सिन्धे में तारीख पेशी बराए समायात दरखास्त १९. १०. ६६ कुवरर हुई है। निम्नाइ इस्ताहार बनाम हस्तात अया को मुकुन्दह रिधा जता है कि अगर किसी सज्जन का कोई उपर निखत दरखास्त यजकूर हो तो वह मिति १९. १०. ६६ का सुद या बकील राही हाजिर आकर पेश करे। बरना मुनासब हुकम दिया जाएगा।

आज तारीख ६. १०. ६६ को हमारे हस्तातर व मोहर अदालत के जारी किया।

## आर्यसमाज दानापुर

४८वां वार्षिकोत्सव १ : अक्टूबर ६६ से १९ अक्टूबर ६६ तक समाज मन्दिर में सम्पन्न होगा। ता० ९ अक्टूबर, १९६६ से १५ अक्टूबर, १९६६ तक आर्यसमाज मन्दिर में प्रतिदिन ७ बजे सन्ध्या अर्घ्याय कथा प्रसाद विद्वान् आचार्य इच्छु द्वारा। ता० १९ अक्टूबर १९६६ से १९ अक्टूबर, १९६६ तक वृहत् यज्ञ।

नोट—इस वर्ष पूष्प प्रो० रमा-काठजी जी, प्रो० रामसिंह जी, प्रो० रातसिंह जी, श्री कुंजर भवश्यामसिंह एम०पी० श्री जयदेव सिन्हा एम०पी० श्रीमती प्रमोदनी देवी काश्य तीर्थ, अर्चयन्त की महान सन्ध्यासिनी विद्योत्तमा यति, आदि-आदि प्रिद्ध विद्वानों तथा आर्य नेताओं के पधारणे की जाता है।

—रामबली प्रसाद आर्य मन्त्री आर्यसमाज दानापुर कीट

★ इन संसार की कानि आंशों से सन्धेकर की गद्दी बंध सकते, पर ज्ञाना में उनका अनुभव करके ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

## आर्य समाज और राजनीति

(श्री सीताराम जी आर्य, हिसार)

महोदय,

मैं आप के समाचार पत्रों द्वारा आर्य समाज और राजनीति के विषय में निरन्तर पढ़ता रहा हूँ और उन सब के आधार पर इस विषय पर पढ़ाया हूँ कि आज आर्यसमाज की हालत उस व्यक्ति के समान है जो अपनी गृहछाी को एक कोने में धिक्का कर दो पराई स्त्रियों को अपने घर की गृह-स्वामिनी बना कर रहता हो। उन में एक स्त्री तो घर के ऊपर वाले भाग में रहती थी और दूसरी नीचे के भाग में। जब गृह-स्वामी घर पर आया तो नीचे वाली स्त्री को रूही थी। उस ने ऊपर बगना पाहा। अभी वह आर्यी सीधियाही बड़ा पाया था कि नीचे वाली की निद्रा टूट गई। उसने लपक कर उठा पकड़ ली और इतने में ही ऊपर वाली को पता चल गया और उसने आकर हाथ पकड़ लिया उसे दोनों अपनी ओर खींचने लगी और बास्त-विश्व गृहस्वामिनी बैठी रोती रही। और आज आर्यसमाज की इसी भी बुरी हालत है। दो और वे खींचा जा रहा है। अर्थात् कांघस, अनसध, हिन्दू महासभा, राजनीतिक आर्य समाज।

सर्व-प्रथम मैं राजनीतिक आर्य समाजियों से यह पूछना चाहता हूँ कि महर्षि दयानन्द जी महाराज ने सत्यार्थप्रकाश का छद्म समुत्पन्न क्या था ही लिख दिया और कहा तक बताया कि वेदों में तीन प्रकार की समाजों को बनाने का प्रयास मिलता है :-

श्रीणी राजाना विदेय पुरश्चि

परि विस्वामि भूयः संवाति ।

ॐ न ७१ नू ३०।०।०।०।

अर्थात् विद्यायं समा, धर्मायं

समा, राजायं समा, बनाने। मैं पूछना चाहता हूँ कि इस को आर्य समाज ने कतना ही या में किसी और को सोचाए है। आर्यसमाज ने दो समाजों को बनाई आर्य धर्म समा, आर्य विद्या समा। परन्तु आपकी आर्य राज्य समा कहा है। क्या आप कांघस को आर्य राज्य समा कहते हैं जिस के राज्य में प्रति दिन गी-बध होता ही नहीं बल्कि बड़े बौरों पर है। जब कि वेदों में गी-हवय को रोसे को गोभी से उड़ा देने का उपदेश है। या आप जनसंघ को आर्य राज्य समा

कहते हैं जिस के अन्वय के क्यानुसार आर्य समाज अकाली दल के समान हो।

मनुष्य एक राजनीतिक प्राणी है। यदि आप राजनीति से दूर रहना चाहते हैं तो राज्य से बाहर रह कर ही ऐसा सम्भव हो सकता है अन्यथा आप को राजनीति में अवश्य ही भाग लेना पड़ेगा। बिना राज्य के आप उन्नति नहीं कर सकते। राजनीति में भाग न लेने की बातें तो मेरे विचार में वही लोग करते हैं जिन्हें कांघस से प्यार है और जहाँ से उन्हें कुछ प्रान्त हो जाता है।

कांघस के विचारों की वसिष्ठता हुए है वे प्रायः आर्य-गण्य समा बनने से कांघस से निकाल लिए आये हैं क्योंकि वे प्रायः आर्यों द्वारा ही दिए गए थे और इस प्रकार कांघस खोखली ही रह जाणी। सब को अपनी-भ्राति ब्रिटिश होगा कि कांघस को स्वतन्त्रता की ओर मोड़ देने का अर्थ केवल आर्य नेताओं को ही है। परन्तु यह हमारा तुमम्ह है एव सांबंदेशिक आर्य-निधि समा की कम्पनी ही है जिस ने आर्य राज्य समा न बनाकर हमारे नेताओं को लोगों में बाट दिया। आज केवारे आर्य नेता टिकटों के लिए कभी तो कांघस के द्वार लखटाता है और कभी जनसंघ की टिकटों के लिए मारि-मारते फिरते हैं। इस प्रकार इन आर्य नेताओं का चुरा हास है।

मैं आर्य समाजों एवं सांबंदेशिक समा से प्रार्थना करता हूँ कि यदि आप अपना हित चाहते हैं तो महर्षि के विधि अनुसार आर्य-गण्य समा बनाएँ और अपने घरों पर लड़े ही नहीं तो फिर बही हालत होगी कि पहले तो कांघस को बलिदान दिए जाए और फिर अपनी उचित मांगों को मनवाने के लिए अनसध, सत्याग्रह एवं घरों का सहारा लेना पड़े। इसलिए अब भी समय है कि आप अपना अलग संरक्षण बनाएँ और भिन्न-भिन्न राजनीतिक पार्टियों की दुष्कार से बचे। जब तक आप अपनी स्वामिनी को नहीं अपनाते आपकी भी बुरी हालत होगी होगी आप जनसंघ से धरए पांसे या अन्य किसी राजनीतिक पार्टी से।

★ ★

## आर्यनेता श्रीयुत लाला रामगोपाल जालवाले तथा स्वामी गणेशानन्दजी का हांसी की स्थिति पर संयुक्त वक्तव्य

(श्री जयपान सिंह जी मन्त्री सनत)

सांबंदेशिक आर्य प्रतिनिधि समा के मन्त्री श्री लाला रामगोपाल जालवाले तथा सनातन धर्म प्रतिनिधि समा के प्रधान मन्त्री श्रीयुत स्वामी गणेशानन्द जी महाराज ने हांसी की स्थिति का निरीक्षण किया और संयुक्त वक्तव्य में कहा है कि यहाँ की स्थिति बनी स्थानीय है। प्रचलीत में कहा है ८० वर्षीय आर्य मन्त्री श्री पारसदास जी तथा मगर के अन्य सम्प्रदाय के व्यक्तियों को विपन्नता कर दी है जिस में छोटी आय के वक्ते भी हैं। श्री महर्षि दीनानाथजी को पुत्रीय और निरकारी स्वयं सेवकों ने दुर्घट पर से पीटा किन्तु आर्यवर्ग है कि एक भी निरकारी गिरफ्तार नहीं किया गया हांसी में ७ दिन से पूर्ण हड़ताल है। उनका पूर्ण वक्तव्य इस प्रकार है : वर्तमान हांसी कांघस के १० मास पूर्व इसी प्रकार का समन्वय निरकारी घुट ने किया था, उस समय भी जनता ने विरोध किया था और पकड़ धकड़ भी हुई। मल सम्भलने में होने वाले उपद्रव की परिधोष भावना से पुनः निरकारियों ने सम्भलन का आयोग किया। जनता ने स्थानीय अधिकारियों से अनुरोध किया कि उनको प्रत्येक किया हमारे परित्त और सदाचार के सर्वथा प्रतिकूल है और सम्भलन को रोका जाये। सम्भलन से पूर्व एक पृष्ठ जलूस की तैयारी की गई थी इसे सफल बनाने के लिए २६ तारिया और ४०० सदस्यों उठते तथा ७ एम. बी. वी. एस. डाक्टर, २० लैस बच्के लेकर जनता बाहर से आये थे। बाहर के सब जन दिल्ली, लुधियाना, जालन्धर आदि से आये थे। जलूस के साथ साथ बुद्धवार मंगी तलबारे लेकर चल रहे थे। अनेकों के पास सम्भल में भी थी। जब जलूस निकल गया तब भी महान दीनानाथ जी और आर्य समाज हांसी के प्रधान लाला पारसदास जी सबसे आगे पश्चाल की ओर चले तब पुत्रीय ने उन्हें रोका परन्तु श्री महलत जी ने कहा कि मेरे पास निरकारियों का निमन्त्रण पत्र है। अतः हम बहा का

उपदेश देने आ रहे हैं इस पर पुत्रीय ने अन्त ही को पुन रोका परन्तु जब वे आगे बढ़े तो पुत्रीय ने निर्दयता में उन पर लाठी प्रहार किया। और निरकारी नेकन का कहा कि क्या देखा है : उन यह सुनने ही पन्वह लठेन एक दम महलत जी पर दूट पड़े और महलतजी बेदीश होकर जमीन पर गिर पड़े। जनता में यह अफसाह फैली कि महलत जी मर गये है वह हमें से जनता से रोना ब्यालत भी था और जनसमुह पश्चाल की ओर चल दिया इस पर पुत्रीय ने बेवदी अन्वयय पूर्ण लाठी प्रहार किया। मानने छोटे २० स्थूल के बच्चे थे उन्हें भी बुरी तरह में मारा गया। रास्ते में जाती हुई मायाओं पर अन्यायपूर्ण अत्याचार हुआ। यही तक सीमा नहीं रही पुत्रीय ने गोभी चलाई।

यह सब पूर्ण योजना बद्ध था क्योंकि सम्भलन से पूर्व महलत जी को घमकी भरा पूर्ण पत्र चम्पणसे में मिला था कि अगर निरकारियों का विरोध किया तो आपकी गोली मार दी जाएगी। और वह पत्र भी दिखा दिया गया था।

पुत्रीयने कोई ऐकशन नहीं लिया। समयपर यह सब घटना घटी। इस दने में सैकड़ों नागरिक जल्मी हुए और प्रतिदिन सज्जन बन्दी हुए जो कई दुकानों पर बँडे थे अथवा सेल में थे उन्हें भी बेपदरी में मारा गया। ८० वर्षीय आर्यमन्त्री लाला पारसदास भी निरकारी कर लिए गए। उन्की नती को २४ घण्टे तक बाय और पानी से बंथित रखा गया और किसी भी शहर के आदमी को उनके मिलने नहीं दिया।

जब जल्मी अस्पताल भेजे गए तो उनके विस्तार पर भी बेदिशा बन्दी हुई थी।

इस अन्याय की प्रतिशिक्षा के लिए ८ दिन से शहर में पूर्ण हड़ताल है। जनता का यह भाव उष कर धरएल कर चुका है। पुत्रीय ने प्रतिशोध की भावना से यह अत्याचार किया है। इसलिए जनता न्याय की माग करती है और स्थानीय पुत्रीय तथा अधिकारियों को स्थानान्तरित करने की माग करती है। ★ ★

### आर्य समाज बजवाड़ी का वार्षिक निर्वाचन

संरक्षक :- श्री पृथ्वीनाथ जी महल  
प्रधान :- श्री व० विनायक जी

अभिहीमी जी  
उपप्रधान - श्री विनोदकान्त जी बिश्वा  
" " " श्री हुकमचन्द जी  
" " " श्रीमती द्वारकादेवी जी ।  
मन्त्री - श्री जगदीशपाल जी भल्ला ।  
उपमन्त्री - श्री चिरकीशवलनजी ब्यांम ।  
उप मन्त्री - श्री शिवराज जी ब्यांम ।  
कोषाध्यक्ष - श्रीमती कौशल्यादेवीजी  
अंतरंग सदस्य :- ६ निर्वाचित हुए  
- जगदीशपाल मन्त्री समाज

### आर्य समाज कोट ईसा खान के वेद सप्ताह

२०-९-६६ से २७-९-६६ तक समाज मंदिरमे वेद सप्ताहका कार्यक्रम चलता रहा जिसमें प. चन्द्रसेन जी आर्य हितैशी महापुस्तक समा तथा श्री हजारीवाल जी के आभ्यास जोर मजबूत होते रहे ।

२०-९-६६ को एक प्रस्ताव द्वारा भारत सरकार से गो-बन्ध वेद करने तथा अनवरत कर्माओं की रिहाई के लिए प्रार्थना की गई ।

२८-९-६६ को निम्न प्रकार से चुनाव सम्पन्न हुआ ।  
प्रधान - रामस्वरूप जी, 'पतिता'  
उप-प्रधान - जयुं नदास जी, मन्त्री - रामरक्षपाल जी 'क्याही' उप-मन्त्री ब लजाधी - हरकमलाल जी, मंदिर रक्षक - श्री गिरधारीवाल जी सूर ।  
रामरक्षपाल मन्त्री समाज

★ इन संसार की बनी बाँसों से परदेखर को नहीं देख सकते, पर तात्मा मे उसका अनुभव ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं ।

**पठनीय एवं मननीय साहित्य**  
वेद प्रबचन ५/- गीताराम ७५ पैसे, आनमगौर के पत्र १/- वेदाचरण सुस्कार १/५० पैसे, भेग बाठ रोचक कहानिया ७५ पैसे, सौन्दर्य ७५ पैसे, लखसालते जीवन ५० पैसे, कम मीमासा २/२५ पैसे, मनवि नियमन क्यो और कैसे १५ पैसे, वैदिक व्याकरण भास्कर ६/- आन्याम बोधक पत्र ११/२० पैसे, साहित्य प्रचारक १/-  
जयदेव ब्रह्मस बड़ीदा-१

### समाचार दर्शन

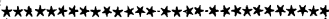
#### “टंकारा सहायक समिति दिल्ली

वार्षिक अधिवेशन ११-९-६६ को आर्य समाज आचारक्षेत्री मार्ग में संपन्न हुआ जिसमें मिल २ आर्य समाजों के एक सौ से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया ।

श्री योगेश्वर जी महाराष्ट्र एंड सोकेट प्रमाण, श्री सुखं कृष्ण जी कोसलक अध्यक्षता प्रधान और श्री राम नाथ जी सहजल मंत्री चुने गये । उन को अधिकार दिया गया कि वह योग अधिकारी और, अंतरंग सदस्य चुन लेंगे । जंहुमि निर्मित अधिकारी चुने :-  
उपप्रधान... श्रीमती पुष्पा जी टुप्रे, श्री देव राज जी चड्ढा, श्री कृष्ण खाल जी मनहोबा । सहायक मन्त्री - श्री बलकमल राम भल्ला उप-मन्त्री श्री मनोहर बाल जी गुप्ता, श्री राम शरण दास जी लजाधी - श्री गुमान सिंह ओ । निष्ठा विहीरक - श्री सरदारो वाल जी बर्मा ।

इस के अतिरिक्त २९, अंतरंग सदस्य चुने । - राम नाथ मन्त्री

★ जम और मृदु के वनन से छूटकर तुमों से मुक्ति हो जाती है और परदेखर का वरदान मिलता है जिसे वाणी मे नहीं बता सकते ।



### दीवाली के शुभ अवसर पर आर्य जगत साप्ताहिक

### ऋषि-निर्वाण-अंक

विशेष सज्जजन के साथ तथा नवोन लेखन सामग्री तथा कविताओं सहित प्रकाशित हो रहा है

- ★ निष्क तथा कवि अपनी समतानुवृत्त सामग्री धीमर नेजने की कृपा करें ।
- ★ आर्यसंस्थाएं तथा समाजे अधिक से अधिक आरंभ देकर समा को स्वावलम्बी बनाएं ।
- ★ इस सुवर्ण अवसर पर समा का नवीन प्रकाशन मगा कर समाजों में वितरल करें ।

—व्यवस्थापक



### आर्य समाज की गारंटी आंदोलन ईसाईयत का प्रचल प्रवाह और अछट परिहार नियोजन हिन्दू जाति के लिए घातक है

श्री राम गोपालजी शाल वाले की घोषणा

आर्य समाज का गौरवा आंदोलन राजनीतिक नहीं है। मोटो तथा सत्ता प्राप्ति के लिए यह अभियान नहीं खेड़ा हुआ है। यह धोखेदार आन्देयिक कार्य प्रतिनिधि समा के मन्त्री श्री सलता राम गोपाल शालवाचे ने आर्य समाज कृष्णपाल बाजार के उत्सव के अवसर पर आयोजित गौरवा सम्मेलन के अखल पद से भाषण करते हुए की। अपने भाषण में श्री शाल वाले ने कहा कि गोषध आंदोलन का मूलपाठ सर्वप्रथम अहिंसा दवान्ध स्वराक्षती ने किया था और वह उनके तथा आर्य समाज के कार्यकर्ता का जय रहा और अब भी है। यह आंदोलन जीव तंगा देश वासियों के स्वास्थ्य एवं आर्थिक समृद्धि के प्रेरणालों से जोत प्रोत है। उन्होंने सरकार को चेतावनी दी कि उसे मिथ्याण का

### आर्यजगत के पाठकों से निवेदन

आर्यजगत के ३० सितंबर और ३ अक्टूबर के अंक बच रहेंगे उसके बाब १२ अक्टूबर को ऋषि निर्वाण अंक २ सप्ताह का सम्मिलित अंक प्रकाशित होगा। पाठक नोट कर लें।

तथा बहुसंख्य हिन्दुओं की भावना का ध्यान करते हुए अखिलम समस्त भारत मे कानूनी रूप से गोबन्ध बन्द कर देना चाहिए। अन्यथा एक बड़ी क्षति का खतरा है। इस से पूर्व श्री खलसावके के अंक 'अन्तरंग अन्वेषण' में इसी प्रकार के विचार व्यक्त किए जिस में नगर के पत्रकारों के अतिरिक्त अनेक प्रतिनिधि एवं न्यायमय महापुं-भाषो ने भाग लिया था। उन सबने आर्य समाज के गोरक्षा तथा ईसाई प्रचार निरोध अभियान के महत्व को स्वीकार कर सक्रिय सहायता का आश्वासन दिया। इस सम्मेलन में श्री प्रकाशबोर जी साक्षी एम० पी० भी सम्मिलित हुए ।

श्री को भारी मीठू के समक्ष धारवाले जी का ईसाई प्रचार निरोध के विषय पर जोरवन्ती भाषण हुआ। धोलावी ने तथा स्थल बरा हुआ था। अनेक लोगों ने स्थान न मिलने के कारण बाहर खड़े होकर भाषण सुना। श्री धारवाले ने अपने भाषण में बताया कि हिन्दू जाति के विनाश के तक जोरो से कार्य रत हैं। ईसाई मिशन विदेशों की करोड़ों रुपयो की सहायता से तथा हमारे शासकों की बहुप्रवृत्तता से हिन्दुस्तान को ईसाई स्थान बनाने के कार्य में तलन है। एक ओर ईसाईयत हिन्दू जाति का विनाश कर रही है और दूसरी ओर परिहार निष्केष के द्वारा हिन्दुओं की सख्या घटाने का कुचक चल रहा है। इन सतरो के विचारल के लिए प्रत्येक हिन्दू को सक्रम एवं कार्यरत होना है। सांभेदिक आर्य प्रतिनिधि समा इस दिशा में देश के विभिन्न भागों तथा उड़ीशा, केरल, छोट्टा नागपुर, पहाड़ी अंचलों आदि में जो कार्य कर रही है, उस पर प्रकाश डालते हुए समा के हाथ मजबूत करने की भी धारवाले ने जोरदार अपील की।

मुद्रक व प्रकाशक प्रो० वेदप्रकाश महलेशा एम. ए. आर्यसांभेदिक प्रतिनिधि समा पंजाब जालन्धर द्वारा और निष्ठाप प्रेस, निष्ठाप रोड जालन्धर से मुद्रित तथा आर्यजगत कार्यालय महाराष्ट्र हुंसावर मजब निष्कट कचहरी जालन्धर सहूर से प्रकाशित मासिक - आर्यसांभेदिक प्रतिनिधि समा पंजाब जालन्धर



दैनिकीकरण सं० १०५७

[आर्थ प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक सुसुपत्र]

Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ पैसे

साप्ताहिक मूल्य ९ रुपये

वर्ष २६, अंक ४३)

८ कात्तिक २०४३/शुक्रवार—दयानन्दराज १४२-२३ अक्टूबर १९६६

(तार 'प्रादेशिक' जासन्धर

### वेद सूक्तयः

**मयिषर्षो अयो यज्ञः**  
हे परमदेव ! ऐसी कृपा करो कि मुझे भी वर्षों—घण्टिन, तेज भर दें और यथाः—मुझे बसा वाला कर दें मैं बलवान् कीर्ति बसा बनूँ । निर्विश्व व निन्दा का पात्र न बनूँ । यह प्रसाद मुझे दे देवें ।

**अथो यज्ञस्य यत्पयः**  
ओर भी प्रसाद का दान देवें । जो भी यज्ञ का परोपकार करे, मुझे कर्म तथा प्राणियों की सेवा का पयः आनन्द है, सुख तथा प्रसाद है, यह भी है प्रमो ! मुझे प्रदान करें मैं लोक सेवा में लगा रहूँ ।

**यामिषं वृहदु**  
वह यज्ञवान् मुझे धाम दध-धुकी के समान दूध बना दे । यज्ञका दे धुकीके जैसे यज्ञका है, मुझे का प्रकाश है उसी प्रकार ही यह प्रमो मुझे जीवन मे, ज्ञान में तथा कार्यो में यज्ञका देवें । तेजस्वी करें ।

**वर्षाम्यन्तु शरदो हेमन्त**  
वर्षा की मौसम हो या सर्दी हो या बरफ पिर कर सुख बना देने वाली हेमन्त की मौसम वा अंति—जीवन में शरीर रमणीय है, सुन्दर व प्यारी है । रज के प्रतिष्ठे के समान जीवन यह भी बुझता रहता है कर्मी सफल कभी हेमन्त सब पिय है ।

सा म दे द दे

### वे दा म त

पिशाच की आरखें फोड़ दे  
अद्रयौ निविध्य हृदयं निविद्य जिह्वां  
नित्न्धि प्रदतो श्रुणीह । पिशाचो अद्रय  
यतेमां जघास अग्ने यविषष्ठ प्रति तं श्रुणीह ॥

अथय वेद ४-२६-४

हे बोरखर ! जो भी वपू है उसकी (अग्ना) दोना आलें (निविध्य) फोड़ जान उसका (हृदयम्) दिल (निविध्य) चोर डाल चोर उसकी (जिह्वाम्) जीभ को (निन्धि) काट डाल उसके (स्तः) दान्य व दाड़े (प्रमृणीहि) तोड़ डाल । (पिशाचः) जिस भी राक्षस पिशाच ने (अद्रय) दल तेरे प्यारे की (यतेमां) जित निन्धी ने भी (जघास) ख या है (अग्ने) हे अग्नि के समान बोर (विषष्ठ) हे युवा बुर नर (तम्) उस पिशाच जिसका को (श्रुणीहि) तू मार दे, मरठ कर दे । मत छोड़ एक २ पिशाच को बुर २ कर पीन कर रख दे ।

### इसका भाव यह है

बीर पुत्र देव की दौलत और मानवता का मान ही होते हैं । बीरों के होते हुए किसी को भी किसी प्रकार की चिन्ता नहीं होती । हे बोरखर ! तेरे होते ऐसे क्या भय हो सकता है ? जितने भी और जहां-जहां पर भी राक्षस पिशाच दिखाई देंगे जिन्हें स्वार्थीमत को, मानवता को, सदाचार मन आदि होने । जितने भी शत्रु और चोर लूटे हों । उन सबको पकड़-पकड़ कर उनकी आंखें निकाल ले, उनके दिल की चोर दे । उनकी जीभ निकाल दे तथा मुझे सारे दांत तोड़ दे । उन सब पिशाचोंको मार डाल । एक भी बचने न पाए । उन पर दया करना पाप है । ऐसे हिंसक भेदिय को तो जितना जल्दी कुपल दिया जाए अच्छा है ।

### वैदिक कर्तव्य शास्त्र के मूल सिद्धांत

**परमेस्वर सब प्राणियों का एक ही पिता है**, अतः हम सब को परस्पर आतृषण तथा मित्रता दृष्टि धारण करनी चाहिए । अपने स्वार्थ को सिद्ध करने के लिए प्राणियों की हिला करना अनुचित है । डेपमारा को बुर करके प्रेम भाव को बूढ़ि करनी चाहिए ।

**परमेस्वर सर्वे व्यापक और सर्वेश है** उसकी अक्षयता में सर्वत्रात्म अद्वैत नियम कायं कर रहे हैं । इन के पालन करने से मनुष्यप्राण का कल्याण ही सकता है इन का उल्लंघन करना अपने को क्षार्णितियों के मुंह में डालना है ।

### ऋषि दर्शन

सत्यं न्यायं विज्ञातवान्

जिस मनुष्य का जीवन सत्य से घरा है, न्याय और न्याय करने वाला है और ज्ञान से मुक्त है । कभी किसी काम में अत्यन्त नहीं कहता व करता, अन्धकार नहीं करता तथा ज्ञान से परे नहीं होता है—

### स राजसभामहर्षि

ऐसा सत्यकर्मों, सत्यधर्मों, न्यायप्रिय ज्ञानी विद्वान ही राजसभा का सदस्य, अधिकारी तथा ज्ञान के योग्य हो सकता है । ऐसे गुण वाले व्यक्ति ही राज्यसभा के सभा-सद होने वा मन्त्रिमण्डल में जाने का अधिकारी है ।

### विदित सर्वे व्यवहारान्

जिन लोगों को राज्य के अन्त-निर्णय प्रभागों के कार्यों का ज्ञान है, अतुर है व योग्य है, जो राज्य के प्रबन्ध में तथा कार्यों में कुशल है— ऐसे निपुण लोगों, उत्तम अधिकारियों को ही राज्य के कार्यों में सदा समाजा चाहिए ।

### सुखं दुःखं च

यह जीवन में मिलने वाला सुख और दुःख भी इसी प्रकार का है सुख को देखकर उसके कारण बने बुरे कर्मों का स्वयं ही अनुपान लगाया जा सकता है ।

सा म्य वृ मि का ते

अधिकारता—भी० वेद प्रकाश एम० ए० (अर्थ तो तथा हिन्दी)

सम्पादक—जितो क चन्द्र शास्

**मन्त्र**

ओ३म् वक्षिणा विमिर्मां उपविष्टा  
 किररिच रावो रविंता विरार दधमः ।  
 देस्योनामो उपविष्ट्योनामः, रसित्युभो  
 नमः इत्युभोनामः एभ्यो अस्तु ।  
 ओ३म्नाम इष्टि य वय विष्णवर्त्तं वो  
 जन्मे दधमः ॥२॥

**शब्द अर्थ**

दक्षिणा (दाहिनी) दिक् (दिशा में)  
 इन्द्रः (सुख की वर्षा करने वाले  
 परमात्मा) अविपतिः (स्वामी)किररिच  
 (डेरे-मेरे) वास तथा स्वभाव वाले  
 जीव और दुष्ट स्वभाव वाले (मनुष्य)  
 रावि (गणित, समूह) रविता (बचाने  
 वाला) पितः (माता, विद्वान जन,  
 वीच और डाक्टर लोग, महापुरुष)  
 दधमः (शक्ति) देस्यो नमः (ऐसे परंप-  
 रिता परमात्मा को नमस्ते)  
 रसित्युभो नमः (ऐसे रक्षा करने  
 वाले को नमस्ते) इत्युभो नमः (एभ्यो  
 अस्तु (उन सब मनुष्यों तथा पदार्थों के  
 देने वाले परमात्मा को नमस्ते करते  
 हैं और साथ ही उन सब मनुष्यों और  
 पदार्थों का आवर करते हैं, जो हमारे  
 जीवन को सुख मय बनाने वाले हैं।  
 वः (जो) अस्मान इष्टि य वयं इष्टि  
 (बैर करता है) म् (जिन से) वयम्  
 (हम) द्विपमः (बैर करते हैं) तम  
 (उस को) वः (आप के) जन्मे (मया  
 कपी शक्ति) दधमः (रखते हैं) ॥

**सरल अर्थ पद्य में :-**

हे भगवान दक्षिणु भो साध,  
 महाराज है राज तुम्हारा ।  
 साप आदि जीवो से ईश्वर,  
 रक्षा इन से करा निरन्तर ।  
 ऋषि-मुनि विद्वानो के द्वारा,  
 देने हम को ज्ञान अपारा ।  
 दयावत् दातार ध्यावे,  
 बार-बार तेरे गुण गावे ।  
 जो हम को देवे केष।  
 या हम जिस से करे द्वेष ।  
 हे म्याप कारी ईश हमारे,  
 तोपे उसका वय मे तुम्हारे ।  
**सरल अर्थ पद्य में**  
 प्रभु देव ! आप सुख की वर्षा  
 करने वाले हमारे दाहिनी (दायें)  
 दिशा मे विंग्रजमान है आप हम पर  
 सहानु कृपा करके हमारे दाये दिशा  
 की ओर रेडो-मेडी वास चलने जीवो  
 तथा विना हड्डी वाले जन्तुओ के  
 समूह और दुष्ट आदतों वाले मनुष्यों  
 के नमस्ते मे, माता विद्वानो, बंधों  
 और बुद्धिमान महाजनो के द्वारा  
 हमारी रक्षा करते हो । अतः ऐसे  
 परमात्मा को, महाराज अविपत्य

**आज्ञा ! हम वक्षिणा स्वामी रविता  
 में तुम्हें लाना है, ताकि अमृत  
 रत्न प्राप्त करें**

**श्री विद्यार्थी जी रोहतक निवासी  
 मनसा परिक्रमा मन्त्र नं० २**

(सन्ध्या के तीसरे भाग में)

परमेस्वर को, हर प्रकार से रक्षा  
 करने वाले प्रभु को हम बारम्बार  
 नमस्कार करते हैं। साथ ही हमारे  
 जीवों को सुख प्रदान करने में सुयोग्य,  
 पारमार्थिक जी शक्तिसे हैं, उनका  
 हम स्वागत करते हैं। परमात्म देव !!  
 दाहिनी दिशा से यदि कोई जीव हमसे  
 जान-बूझकर शत्रुता करते है अथवा  
 हम उसकी शत्रुता को दूर करने अर्थ  
 या उसे सीधे मार्ग पर जाने के लिए  
 उससे शत्रुता करते है, वह आपकी  
 न्याय कपी शक्ति पर छोड़ते है ।  
 हमारी तो यह प्रवृत्त इच्छा है कि न  
 तो हमसे कोई शत्रुता करे और न  
 हम किसी से शत्रुता करे । अतितु हम  
 प्रेम भुक्त परस्पर मिलकर रहे ।

**भाव अर्थ :-**

हे सुख की वर्षा करने वाले  
 परमात्मा ! आप कृपा करके हमें  
 पवित्र वेद का 'ज्ञान' प्रदान करें,  
 ताकि हम उस 'ज्ञान' को पाकर शुभ  
 कर्म करे और जीवन उन्नत हो । हे  
 महाराज अधिराज ! हमें शक्ति दो,  
 ताकि हम सब आप के 'वैदिक धर्म'  
 पर चल कर उस के अनुकूल 'धर्म'  
 संकल्प करके अपने मन को आपकी

संबंध करके पुनः 'ज्ञान' (शुभ इच्छाओं  
 की) की प्रति करें ताकि हमारा जीवन  
 सफल हो ।

हे रक्षा करने वाले ईश्वर ! आप  
 हमें साहस दो, कि हम 'ज्ञान, ज्ञेय',  
 भद्र को बहोमुख करके आरिष्टिक,  
 मानसिक दुःखों से छुटकारा पाए ।  
 ताकि हमारा जीवन सुखी हो । हे  
 स्वामी ! हमें शक्ति प्रदान करो !  
 जहां जल से शरीर को 'पवित्र' रखें,  
 वहां आपके ध्यान से अपने मन को  
 पवित्र रखें । इस प्रकार हमारा मन  
 अपनी चंचलता को छोड़ कर आप  
 की परिक्रमा करे, ताकि हमारा जीवन  
 शांतमय बना रहे । हे पापियो को दह  
 देने वाले प्रभु ! हमें शक्ति दें, ताकि हम  
 'श्राद्ध यज्ञ' (आपको सर्वव्यापक समझते  
 हुये) 'श्रेय यज्ञ' (आपके मिलन अर्थ  
 अपने सासो को घपकती हुई अग्नि की  
 उपाया के समान बलवते हुए और  
 अपने बुरे विचारों को भस्मी मृत  
 करते हुये) और 'पितृ यज्ञ' (आप की  
 आज्ञा के अनुसार अपने मन को आप  
 के चरणोंमें झुकाने हुये तथा शारीरिक  
 और मानसिक क्रियाओं को आप की

संज्ञा अनुसार करने के लिये) का  
 जीवन का जो विचार है, उसे  
 सारे लक्ष्य जीवन प्रकाशमान  
 रहे आपके वेदों का संस्कार को  
 'अवलीक्षण' करके विनाश करके  
 मनन करके यहां 'समाध' में अन्तर  
 पाए, वहां तेरे कृपा कुब्जों में स्थान  
 स्थित हो जाए । इस प्रकार तेरी स्तुति  
 (सन्ध्या मन्त्र) करते हुये अपनी शुभ  
 इच्छाओं की प्रति अर्थ आप की श्री  
 सेवा में 'प्रार्थना' करें और किसी  
 आत्मी, पत्थर पुस्तक तथा जल चरु  
 के साथ 'प्रार्थना' न करें ।

**विशेष संकेत :-**

- (क) यह पवित्र मन्त्र मगवान की  
 वाणी अवर्धनेव का है । (ख) वैदिक  
 सन्ध्या के मन्त्रों में १५वां और मनसा  
 परिक्रमा मे दूसरा स्थान रखता है ।  
 (ग) यह आध्यात्मिक दृष्टि कौशल से  
 अन्वर की बुद्धि प्रवृत्तियों को दूर करने  
 की विशेष शक्ति रखता है, जो  
 दाहिनी ओर पाई जाती है । (घ)  
 यह सामाजिक व्यवहार का जीवनक है ।  
 (ङ) भौतिक जगत में बुरे जीवों तथा  
 दुष्ट अस्तित्वों से रक्षा करने वाला  
 है । स्मरण रखें कि समय पर,एकान्त  
 में अर्थ सुनिहा सन्ध्या करने से धीरे-  
 धीरे सब सुख उपलब्ध हो जाते हैं ।  
 जो हम सोचें इस लोक और परलोक  
 के लिये इच्छुक हैं । आत्मार्थक्य और  
 साधु उत्कृष्ट ।



**आर्य युवक समाज  
 लेखराम नगर कादियों**

**का नवम वार्षिकोत्सव**

८. १. १९६६ को बड़ी धूम-  
 धाम से मनाया गया । ८को प्रातः स्वजा-  
 रोहण के समय श्री १० देवकीनन्दन  
 जी का देव मंदल पर प्रवचन हुआ ।  
 बाद दोपहर आर्य धर्म सम्मेलन में  
 आर्य कन्या पाठशाला बटाला की  
 छात्राओं ने भाव्य ब कविताएँ पढ़ीं ।  
 सगी सुनाया ।  
 रात्रि को आयोजना थी शि०  
 रत्नायाम की एम० ए० एम० एल० ए०  
 ने दंडे ओबन्दी रंग से स्वामी पदानन्द  
 की महत्कार प्रकाश बनाया ।

१ को बाद दोपहर थी त्रिपुलीपन  
 युवाकेंदर जी के महापतिव्य मे  
 गोरक्षा सम्मेलन मनाया गया । आर्य  
 नेता श्री १० एडवर्ट जी दासों ने अपने-  
 गीतर व सिद्धांतपूर्ण भाषण मे सरकार  
 की ओ शांति नीति की कड़ी जाचो-  
 बना की तथा अन्य अनेक बहसों  
 के माध्यम हुए ।

**★ मधु-कलत्रा ★**

**श्री विजय निर्बाध, एडीटर इंचांचं पंजाब केसरी, जालंधर**

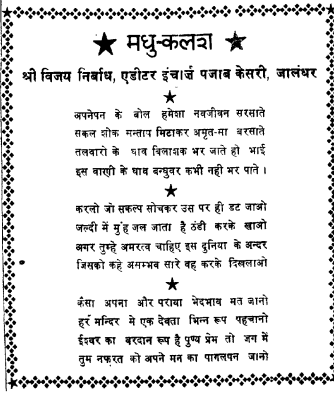
अपनेपन के बोल हमेशा नवजीवन सरसाते  
 सकल शोक मन्ताप मिटाकर अमृत-ना बरसाते  
 लक्षारों के धाव विनाशक भर जाते हो भाई  
 इस वाणी के धाव बन्धुवर कभी नहीं भर पाते ।

★

करतों जो सकल्य सोचकर उस पर ही डट जाओ  
 जल्दी में मुंह जन जाता है ठंडी करके खाओ  
 क्लमर तुम्हें अमरत्व चाहिए इस दुनिया के अन्धर  
 जिहकों कहे अग्रभ्रम सारे वह करके दिखाओ

★

जंसा अपना और परदाया भेदभाव मत जानो  
 हर मन्दिर मे एक देवता भिन्न रूप पहचानो  
 ईश्वर का बरदान रूप है पुण्य प्रेम तो जग में  
 तुम नकल को अपने मन का पावलपन जानो



साहित्य-संवेदन

# त्रायजगत

वर्ष १९६६, रविवार ०२१, २३ अक्टूबर १९६६ [अंक ४३]

## त्रयोध्या के राम

त्रयोध्या की वा सुविष्ट एवं प्रति  
 बंधु भासा है। सारा ख-अने-अने  
 अने पर वर से इने बनाया है। एवं  
 काव्य में हीनम् को अणुअणु को पूरा  
 करने का काम करी है। काव्य का  
 अणुअणु के अणुअणु का अणु में जैती  
 काव्य होती है। एवं लोक करने में  
 अणुअणु अणु अणुअणु होता है। यह  
 एवं तो पाश्चात्य प्रीकन का एक सुन्दर  
 अणुअणु का एक को। इस समय हम  
 अणुअणु के एक को। इस समय हम  
 अणुअणु प्रकृत और सुन्दर है।  
 अणुअणु की बात विरक्त में एक  
 विष्णुवा नोभेति इन नुपी है।  
 प्रति वषं सारी जगत रामायण का  
 पारमपुत्र कर जाती है। राम सुगुणकर  
 कर लेती है तथा राम की वय वय  
 बुनाती है। किन्तु हम में से ऐसे  
 कितने हैं जो कि राम के जीवन वष  
 पर चलते हुए अपने जीवन में उनके  
 दिने अनेका की भी सुनने का एवम्  
 उस पर आबरण करने का प्रयत्न  
 करते हैं।

बोध्या के राम सब को अपो  
 प्यारे थे। उनका रामराज्य और भी  
 इतिहास तो एक प्रथम विम्वि बना  
 है। उनका कार्य माना हुआ है।  
 उनकी प्रत्येक मर्त्याने में मानवजात  
 को इस समय भी मनुष्यता का र  
 रखा है। इसका कारण क्या है ?  
 औरास का नाम लेते ही कौन  
 ऐसा है, जिसका मरतक अर्थात् से  
 कुछ भी जाता ?

राम के रामायण में अनेक नाम  
 हैं—वे सारे सब को प्यारे हैं। सब में  
 सुख परा हुआ है। अपने मर्त्याने  
 के अर्थका नीचुप नी-अर्थका के यह  
 इसका अर्थ यह है कि उन देवता  
 के जीवन के कोई भी काम है, कोई भी  
 खेद को तथा कोई भी बल हो—उन  
 के अर्थका नीचुप नी-अर्थका के यह  
 काव्य में हीनम् अर्थका के अर्थका की  
 मर्त्याने, अर्थका के अर्थका के अर्थका की  
 अर्थका के अर्थका के अर्थका के अर्थका की  
 अर्थका के अर्थका के अर्थका के अर्थका की

यह एक पत्थर की लकीर के समान  
 बहावत बन गई है कि सभार के  
 पदोंको को अर्थका व गति बदले बापे  
 लौ बदन जाये पर राम के जीवन की  
 सर्वथा कमी नहीं बदल सकी। सारी  
 रामायण उन के जीवन की विभिन्न  
 रूपों का सुन्दर विष्णु है। सारे समाज  
 को इस पर अनिष्ट मान है। हम उनके  
 मर्त्याने पुरोहित के उदात्तभाव को  
 प्रशाम करते हैं। मर्त्याने का बड़ा  
 भक्त रामायण ही जो रामायण हम को  
 प्रतिबन्ध देती है। मर्त्याने क्षीर में  
 प्राणप्रति के समान है।

आज विद्युत् की अवस्था को जाने  
 दीवार। उसारे अपने राट्ट की, परि-  
 सार तथा जीवन की क्या अवस्था  
 है ? मर्त्याने का समन है क्या ?  
 आज देश का कौन-सा ऐसा क्षेत्र है  
 जिसमें मर्त्याने के दर्शन होते हैं ?  
 जीवन का स्तर मर्त्याने के किनारे को  
 तोड़ चुका है। शृंगार विगतकर अब  
 नंगा रूप धारण कर चुका है।

वेधभूता पर मर्त्याने का अणुअणु नहीं  
 है। न तो पुरुषों में राम की मर्त्याने  
 के प्रति अर्थात् है और और न देवियों  
 में शीत के प्रति मर्त्याने की पुरानी  
 भावना काम करती है। इन युवक  
 युवतियों के पथ प्रदर्शक राम जैसे  
 देवता और धार्मिक जैसी माता नहीं  
 है—इसके आदर्श हुए तो सिनेमा-  
 जगत के अर्थका व अर्थका के अर्थका  
 वने हैं। विर के बावों की सज्जा ही  
 या कर्मों का वेध, शरीर का शृंगार  
 हो या मन का विचार, आनन्दान का  
 संसार या सिमने का व्यवहार सब  
 कुछ मर्त्याने को रखा को पार कर  
 गया है। जीवन को हर बात विगत  
 व बदल गई है। मर्त्याने पुरुषोत्तम  
 राम को कौन मानता है। मर्त्याने  
 राम पर वसने को भी बात कहें ?  
 मर्त्याने पुरुषोत्तम राम के जय-जयकार  
 बुझाने बावों के इस हमारे भारत में  
 विदेशी शक्तों के पने जाने के बाद तो  
 मास और उद्यम का इतना बुना  
 प्रचार हो गया है कि सज्जा के  
 आंसों की भी भूत जाती है।

ऐसा प्रतिबन्ध होता है कि आज  
 बाँरों और मास की मर्त्याने तथा शराब  
 के पर बूते हुए है। व्यक्ति चीना  
 बाह्या है और प्रत्येक क्षान्ति का शीकन  
 बन रहा है मास और शराब का प्रचार  
 तो इतनी मात्रा में बढ़ गया है कि  
 एक बरती का कोई पणुपणु आज के  
 लोगों से बच पाएगा या नहीं। रामभूत  
 माने को सुनने और सुनाने वाली  
 सरकार भी तो आज के लोगों को  
 भोजन की पुरानी परंपरा को बदलने  
 का उपदेश देती रहती है। कभी अर्जों  
 के खाने के साम की बात होती है  
 और कभी मछलियों का भाजन करने  
 की। कही मुम्बरी के मांस का काम  
 होता है अब तो एक नये जलता को नुहे  
 खाने का भी विद्यमान के माते उपदेश  
 दे जाता है। शराब का बुना प्रचार  
 है। पश्चिमोत्तमता की जाड़ का नाम  
 लेकर शराब की नदियाँ चलने लगी हैं।  
 शृंगार अपने मनेपन की सीमा में पहुँच  
 गया है। हर बात का पदा तथा हर  
 काम की मर्त्याने समाज होती जाती  
 है। यह अवस्था हमें क्या तक ले  
 जाएगी ? आज फिर विद्यवदलो का  
 पदं जगता है। अवधोया के राम की  
 याद करती हैं तो इस युगीत अवसर  
 पर सारा समाज मर्त्याने के मन्त्रत्व को  
 जीवन में धारण करे। तभी राट्ट का  
 मन्त्र होगा। उस देवता की सज्जा बरी  
 दिन मर्त्याने है। —त्रिजलकण्ठ

## शराब की नदियाँ

स्वराज्य के पूर्व भारत की जगता  
 शराब की दुकानों पर धरना मार कर  
 तथापह किया करती थी। कार्यस  
 के कार्यक्रम में नशाबन्दी भी शामिल  
 थी। किन्तु अपने राज्य में आगे से  
 शराब का प्रचार कितना अधिक होता  
 है—यह शराब की बिन्दी को देखकर  
 पता लग जाता है। इन समय खाने  
 पीने और क्षीर को दानने के लिए  
 बस्तुएँ तथा कपडा, शरीर का शृंगार  
 में आकरास को खू रहा है। बाँरों और  
 बेचैनी है। परन्तु शराब आगे से भी  
 सस्ती है। दुध पी की दशा सामने है  
 पर शराब की तुकानें और प्रकाश  
 सुलती जा रही हैं और तो और गत  
 दो अनुसूचक को गांधी जी के जन्म-  
 दिवस पर देशी शराब की फितनी  
 बिन्दी हुई। लंनों में कितनी शराब  
 पी ? यह पद सुन कर तो जाज आ  
 जाती है। यही जगता है, कही सरकार  
 के पुराने नेता हैं। क्या कहे कि  
 शराब ही बदल गई है देश के  
 नेताओं में जगता की कही दे कही एक

पहुँचा दिया है। जमाने को ज्ञान  
 करने के लिए, अर्थका वयि स्वाभर  
 पर समेवन करे तो नाम हो सकता  
 है। आर्थका वयि हम और यदि ध्यान  
 देने तो बड़ा सुचार हो सकता है।  
 इस मरौब चीन की बढती हुई, जन्-  
 कर्ण को यदि रोकान न गया तो अर्थका  
 में देसना कि हम किन दशा को  
 प्राप्त होगा।

## यह सुन्दर रौति

आर्थका वयि का अर्थका समाज-  
 हिक मुक्त पण है। मन्त्रोंको के मन्त्र  
 अधिकारियों, मन्त्रों व मन्त्रों का  
 इसके प्रति प्रेम है। पुर-पुरा सज्जोब  
 देने ही रहते हैं। कई मर्त्याने नेही है  
 नि को आर्थका वयि के प्रति सज्जाह  
 कुछ प्रतिपा मयाधरक अपने समाज के  
 परिवारों में विचारित करती है।  
 इस प्रकार भी उनका मन्त्रा को ही  
 सुवर्ण मिनता है। कुछ मन्त्रा वयि  
 में मन्त्रों है को अर्थका वयि में आर्थ-  
 अर्थका को पते देने के लिए इतना आर्थ-  
 काव्य का अधिकार मन्त्रों व  
 कुमारों में जगत भेजा जाए। अर्थका  
 हुए दितां कन्ना समाज में कदा करते  
 हुए इतनी नम्रता मरी प्रायना व  
 वहा के पान सज्जनों में प्रति मन्त्राह  
 जगत के पंथ वयि मन्त्रों का अर्थका  
 दिया। यह मन्त्रा मन्त्रों हिसमन  
 वयि पर प्रायना करन पर वहा के  
 भी सज्जनों में दम पर प्रति मन्त्राह  
 भेजने का प्रेम भरा प्रार्थन दिया।  
 इसके साथ वहा के मन्त्रों की व  
 मन्त्रावकास जी एडवोकेट में अपनी  
 और से बाह्य अर्थका वयि लिए ताकि  
 इतने बार सज्जनों का कुमारों को  
 आर्थका वयि पर जगत भेजा जाए।  
 हम सब के आभारी है। शर सज्जनों  
 का सुन्दर सजाओ को चाहिए कि वे  
 लौन-लौन अर्थका वयि जगत को भिन्न  
 कर जगत जारी करा लें—म.

## आर्थका वयि बिक्रमपुर। जालंधर

२३-१०-६६ रविवार को दीनक  
 कार्यवाही के पदधान् भी देमराज जी  
 मन्त्रावकास का मन्त्रा अर्थका वयि  
 सभी अर्थका वयि नर-नारी नमय पर  
 धारण कर बाँर लाम उठाए।

दीनक मन्त्रावकास मन्त्रावकास  
 बने से सभा मन्त्रावकास के मन्त्रावकास  
 मन्त्रावकास मन्त्रावकास मन्त्रावकास  
 जिस में दीनक कार्यवाही के पदधान्  
 एक मन्त्रावकास मन्त्रावकास मन्त्रावकास  
 सब लकी सुवर्ण पवार कर लाल्जु की  
 शोभा बढ़ाए। मन्त्रावकास

# राष्ट्र किधर जा रहा है ?

(श्री सुभरत्नाम जी बोहरा बोधपुर)

(एकल के आगे)  
 देख कैसे बचाना जाय, फर्मी  
 भीकरकी केतन किस प्रकार व कितना  
 बचाना जाय, वनों को कैसे बरतना  
 जाये, वे विधियाँ आपकी कोई भी 'ऊपर  
 की कमाई' करने वाला कर्मचारी  
 'विचित्र' समझ देना, बगते जाय  
 उसको निश्चित 'बीज' दे दे। आज  
 हमारे सरकारी अधिकारियोंका जीवन-  
 मन्त्र 'जर करो चाहे मरू, बीबी को  
 टके से 'मतलब' हो गया है। जनता  
 को मरुए स्वस्थ रूप में नहीं थिखती।  
 बस्तुओं के भाव तीव्रतर गति से बढ़  
 रहे हैं। स्थानीय बाजार-बस्तुओं का  
 संघर्ष और काला बाजार करते जा  
 रहे हैं। पर सरकारी अधिकारियों को  
 कर्तव्यकर्तव्य का कोई विचार नहीं है।  
 वे तो ताम्र टोंक कर चढ़ते हैं—  
 'हम रिटवर्ड लागेंगे, हम काला बाजार  
 कराएंगे, हम सर्वोच्चिक धन का  
 मन्त्र करते, हमें रोकने वाला कौन ?  
 हमारे हाथ में राजदण्ड है, राजदण्ड !'  
 जनता क्या बीज है—मेठ !

एकतन्त्रीय शासन में व्यक्ति विधेय  
 पर बाधित रहने से जन-समूह के कार्य-  
 क्रमण एक निश्चित विधि से प्रतिपादित  
 होते रहते हैं। एकतन्त्र में निकुञ्जगत  
 जैसे ही विद्यमान हो, पर जैसा  
 अनुशासन और व्यवस्था एकतन्त्र में  
 पाए जाते हैं जैसा कम किसी भी व्यव-  
 स्था में दुःसाध्य ही है। प्रजातन्त्र में  
 तो राष्ट्र की विधि उस परिहार बीबी  
 हो जाती है जिसकी सारी बहुरूप राशिधा  
 बन कर एक-दूसरी पर हुकम चलाने  
 समती है : हम भी राखी, तू भी राखी  
 कुछा भरें पत्नीहा पासो ? तब प्राणी  
 व्यवस्था आए कहा से ? परिसराम  
 होता है कमह, तब, फूट और  
 बहुरूपन ।

भारतवर्षमें आज यही तो हो रहा है।  
 हमारा ईमान और आचार काफेरी  
 में तन हो रहा है, अपने प्रभुत्व में  
 विकसित होने में समय लगेगी। आज  
 को शासन बनना है कम नहीं राखी की  
 ठीकरों में धारण पाता है—किन्तु  
 अधिकार है हमारे विचार व योजनाएँ  
 व्यवस्था और अनुशासन नाम की  
 मनु हन लोगों में है ही कहा ?  
 'सब गलिन कहीमुने' उमल्लो हमें  
 जीवन के हर क्षेत्र में सच बनाने  
 चाहिए—याने प्रुनियम बनाने चाहिए।  
 'पार्टी के विना मन्त्रियों का जीवन  
 सतरे में, प्रुनियम के बिना मानिकों  
 और मन्त्रियों का जीवन सतरे में,  
 संकेतन के बिना विधायिकों का  
 व्यवसायों द्वारा नीधस, बिना सच

बनाने मजबूती और तथाकथित  
 शासकों की शासन सतरे में (साम न  
 चले जमात !), और बिना महिमा  
 मण्डल बनाए पुत्रों द्वारा रिक्तों पर  
 अराधना !' कहने का तात्पर्य यह है  
 कि बिना प्रुनियम बनाए हमारी  
 संरिक्ता ही खतरे में है। 'तब यसा  
 राष्ट्र में केतना लोग प्रवाहित करे-  
 गे ?

पीढ़ी-पीढ़ स्वामी विवेकानन्द  
 नहीं हुमा करते, हर समय में 'शासक  
 उठे मन्त्री नहीं हुमा करते, और हर  
 काल में विचारामिनी जैसे युक्त नहीं  
 होते। शास भी सही है। आज मन्त्री  
 लोग अपनी 'रिक्कम' के मोहरे भी  
 ठीक के नुनियम पाए हैं, तब 'मना  
 शासन में कल्याण की बात कौन  
 सोचे, मन्त्रायी लोग अपनी रिक्रिडंशन  
 करवाने के लिए अभी भी 'भय' में  
 हैं, हमें अपने कर्तव्यकर्तव्य

राष्ट्र किधर जा रहा है, की इसरी  
 कित्त पाठको को मंत्र की जा रही  
 है। नैसक के विचारों से जनतापूर्ण  
 तथा सहस्रत है। राष्ट्र की अवस्था  
 इसी से प्रतीत हो रही है कि सब  
 मायावरी मर्दाई की चक्की में पिते  
 जा रहे हैं हाय अल! हाय अल!! की  
 चीख पुकार सब ओर से आ रही  
 है। परन्तु किन्ती के कार्यों पर नु  
 तक नहीं चली। क्या अब वेतन  
 सेला आ रहा है। नैसक के विचारों  
 का अध्ययन करें।

का मान करायें भी तो कौन, और  
 अध्ययन व व्यवस्था लोग अपने  
 'रिक्कम बन्के' से ही निनुक्त नहीं हुए  
 हैं तब भला विधायिकों की विद्या-  
 शाकों का समाधान करके उन्हें  
 अनुशासन का पाठ पढ़ाए भी तो  
 कौन? हमारे राष्ट्रकुरी शरीरमें कारि-  
 विक रक्त माने वाली धर्मपति आज  
 हुदय की ओर रक्त को न बने 'आकर  
 हुद में ले जा रही हैं।

आज के राष्ट्रिय सम्पत्ति के विनाश  
 के समाचार मिलते हैं। आज  
 कोई बाघ या लोहू मूठी का निर्यात  
 हुमा, कम उसकी मरम्मत हो रही  
 है। सरकारी अधिकारी कहते हैं,  
 'टूटा तो टूटा। सोच फिर किना बात  
 का। मरामत सही मरामत रहे रूप,  
 बिटन. अमेरिका और अन्य यूरोपीय  
 राष्ट्रों को। बेचारे मुहमाया खरु से  
 'राष्ट्र'। चर्चाक भी कह गये हैं—  
 'यहूँ जोलेत सुभय' ज्यन्तु'  
 कृष्ण प्रथम विच्छ।' भावी पीढ़ियों  
 को बिछा हम बन्के करें ?' सरकारी

अधिकारियों का तर्क सामयिक और  
 लक्षित है। बाहिर देव केम प्रकरेण  
 देव में समाजवाप की चीख को जमानो  
 है। बांध टूटने से या चोरी हुई चीखे  
 सामाजवाप को कोई मरफा नहीं  
 सगा।

इसी मराम वाव को देव में  
 व्यावहारिक मन्त्रों के लिये सहकारी  
 समितियों का निर्माण किया गया।  
 युवा बनाने वाले हैं केकर केकर बनाने  
 वाले कौन सहकारिता के मन्त्रों के  
 नीचे जा चुके। सरकारी अनुदान के  
 लक्ष्ये फिर इन्ही राव को मूक्ये सहकारी  
 समितियों को पून पाया गया। मन्त्रियों  
 से अपना बनाने रखने के लिये, और  
 अधिकारियों ने 'ऊपर की कमाई'  
 करने के लिये, 'सहकारिता हमारा  
 जीवन मन्त्र' का नारा दिया। अज-  
 काज प्रात सरकारी अधिकारी,  
 राजनैतिक नेता, बकील, पदकार और  
 ठेकेदार लोग सहकारिता के सम्पर्क  
 व पीछेछकी बने। साधारण अंध-  
 धारियों के हितों के लिये इन लोगों  
 ने आमरेरी कार्य करने का प्रबंध  
 किया। किन्तु ऐसे ऐसे उदाहरण पाए  
 गये हैं जहा इन आमरेरी लोगों ने  
 रातो रात सहकारी मान को प्रुमि-  
 सत किया, और हुदरे लिये समिति  
 का विपदन (Liquidation) हो  
 गया। देव में सब आहू यही तो हो  
 रहा है। आज एक सहकारी समिति  
 कनी और कम उसका विद्याना निकल  
 गया। साधारण अंधधारी लोग  
 विभाव्य करें भी तो किस से ?  
 रजिस्ट्रार के लेकर कोजापरेटिव  
 इन्स्पेक्टर तक का 'पारिधमिक'  
 निश्चित किया हुमा।

लेकिन यह सब न्याय संगत है,  
 क्योंकि हमें जल में कमजोर रहना  
 है। हम जानी हैं। हम वेदान्ती हैं।  
 हम जनक और सुकने को परम्परा  
 में हैं। हम बड़ा हैं, और बड़ा कभी  
 नैदीमान नहीं हुमा !! यों भी मात-  
 धारियों का जन्म उपदेश करने के  
 लिये ही तो हुमा है। हम जन्म के  
 माध्यमिक मुक्त की उदरे। देत और  
 बंदेव के प्रतिपादक की उदरे। हमारे  
 व्यवहार में डैड है, हमारी विद्या में  
 अडैड ! हुदरे के रजोईनर में उकते  
 हुए मच्छर तक हमें दिखाते हैं, लेकिन  
 हमारी स्वयं की रजोईन में जनपनाती  
 हुई सन्धिकों की हुमें नहीं दिखाती।  
 हम मन्, वचन और कर्म की  
 कुदता के पुकारे हैं। यही कारण है

कि हम स्वाम्य शक्ति के लोकरे जाय  
 क वचनिके की नीति जनपनाते हुए  
 हैं। हम प्रकृत पीठा और विमान  
 मरारत मानते हैं। लेकिन हमे वि-  
 राधव कोलने वालों को साक्षेय देना  
 हमारा पदमा बंध है। यानि हम  
 कोश को कोई करते को कहेते हैं  
 लेकिन साथ ही मूहस्वामी की भी  
 शासनवाप कर देते हैं। कम है हमारा  
 जीवन ! बाहिर हम कम तक अपने  
 बापकी पोसा देते रहते ? प्रजातन्त्र  
 अर्थों में आज हमारा न तो कोई  
 धार्मिक व्यक्तित्व ही है और न कोई  
 माध्यमिक उपनयन ही।  
 सरदार बाहुरी है कि वेधपासी रे-  
 लीगियों में बिना टिकट यात्रा न करे।  
 सरकार का हुन फिर ऊपर। साधार-  
 ण्य बनना 'सर्कार' के मन्त्रों में ही  
 पचराली जा रही है। इसलिये यवा-  
 सन्ध साम्यम लोग टिकट खरीद कर  
 ही रेलगाड़ियों में बैठते हैं। तब मना  
 किना टिकट यात्रा कौन करते हैं ?  
 टी. टी. ई. लोगों की बीज में प्रुधि  
 की गई। टी. टी. ई. लोगों को पु-  
 रसह करके तो कौनना बनाई गई।  
 लेकिन फिर भी को बिना टिकट यात्रा  
 करने हुए पकड़े गये वे अजाधिय या  
 निधारी या चरुध विचारों ही थे।  
 टी. टी. ई. लोगों को भी तो 'पुनिया-  
 दाती' निगामी पठती है। वे अपने  
 स्वन्धियनों, स्टेशन मास्टरों व उनके सम्बन्धियों  
 के बने कर्मचारियों व उनके सम्बन्धियों  
 का भना चान कर ही कैसे सक्ते हैं ?  
 भारत में म्यारहु साह से अधिक लोग  
 रेलवे कर्मचारियों हैं। इस प्रकार इन में  
 से यदि चौधवाँ लोग भी साल में एक  
 बार किना टिकट यात्रा करें तो तीन  
 लाख 'अनुभव अपराधी' तो थे ही हो  
 जाते हैं। बाहिर रेलगाड़िया उनकी  
 बीबीती (files) को उदरे। इन लोगों  
 को उदरे है जो इन को

'रिकमण्डेशन' पर 'बिदाउट टिकट'  
 यात्रा करते हैं। लेकिन व्यवहार में  
 सब चलता है—सब बाल-बच्चे  
 भाते को उदरे। ईमानदार और  
 निःस्वार्थी लोग कुछ विरोध करें भी  
 तो 'प्रुमिया' का सन्धक को उदर।  
 इस प्रकार राष्ट्र में 'कलकान्ठन'  
 (hookiganism) का प्रसार होया  
 रहता है।

राष्ट्र में आज स्थिति यहाँ तक  
 पहुच गई है कि केवल कुकने माने  
 न्नाकें से लेकर विधानमन्त्र में अती  
 करने वाले, अधिकारियों तक हुक का  
 'चायपान का कुकने' कुक  
 (मेम पृष्ठ ५ पर)

काश्या के एक वैदिक विद्वान्-  
 चन्द्र केवल सेन के आग्रहानुसार पर  
 स्वामी दयानन्द जी सं १९२९  
 (१८६२ ई०) में कलकत्ता गये।  
 श्रीरत्न मोहन ठाकुर के उद्योग से  
 उनके निवास की व्यवस्था की गई।  
 वहाँ पर ही सर्वप्रथम शास्त्रसमाज के  
 स्तरीय नेता और अन्तर्द्वीय व्यक्ति  
 आशु सुभार केशव चन्द्र सेन की  
 जन्म से भेंट हुई। इस का परिणाम करते  
 हुए दयानन्द के प्रसिद्ध जीवनी लेखक  
 देवेन्द्र नाथ मुखर्जी लिखते हैं—  
 'जब बाबू केशव चन्द्र सेन से प्रथम  
 बार स्वामीजी मिले तभी उन्होंने स्वामी  
 जी के अग्रिम परिचय नहीं किया था।  
 वास्तविक ही समाधि पर केशव बाबू  
 कोले—'आप बाबू केशवचन्द्र सेन से  
 मिले हैं ?

दया० हा मित्रा हैं।  
 केशव० परन्तु मैं तो महा से नहीं।  
 दया० मैं अक्षय मित्रा हूँ।  
 केशव० जब वह कलकत्ते में थे  
 तो नहीं, कैसे किले ?  
 दया० आप ही बाबू केशवचन्द्र  
 सेन हैं ?

केशव, आपने मुझे कैसे पहचाना ?  
 दया० जो बात कीत आप से हुई  
 है। वह किन्हीं अन्य की हो ही नहीं  
 सकती।

केशव आज स्वामी जी की पूर्य  
 पराधी की अनुपम योग्यता से कड़े प्रसन्न  
 और सन्तुष्ट हुए और वह स्वामी जी  
 के प्रति स्रष्ट में बड़ हो गये।  
 श्री दयानन्द चक्रवर्ती नृपिक एक  
 अन्य शास्त्र सज्जन स्वामी दयानन्द  
 की जन्मा पुरु-मानने थे। वे १९ व्षला में  
 ऋषि दयानन्द के साथ २५ हक कर उन  
 से योग साधन सीखते रहे। उनकी  
 ईशान्विती में महर्षि दयानन्द के विषय  
 में जो कुछ बर्णित हुआ था वह  
 प्रामाणिक ही गया है। इस श्रावरी के  
 २५ दिसम्बर १८७२ के विवरण में  
 वे लिखते हैं। केशवचन्द्र सेन से उनका  
 प्रेम हो गया है। पुनः १ जनवरी  
 १८७३ के विवरण में लिखते हैं—

केशवचन्द्र सेन ने दयानन्द मरस्वती  
 की लेखक कलकत्ते के विभिन्न स्वामी  
 का प्रथम किया। पुनः १ जनवरी  
 की केशव के साथ दयानन्द, ईश्वर  
 चन्द्र, विद्यामानर के घर गये। वहाँ  
 का सुभाषको में विषया विचार, विचार,  
 विचार, बाप विचार, ज्ञान-पाठ, युद्ध  
 विचार आदि के विषय में विचार  
 विचारण हुआ। सम्भवतः दयानन्द  
 के विचारों से ही प्रभावित हो कर  
 केशव राधेन्द्र नाथ मलिक के मकान  
 पर केशव सेन ने वेद विद्यालय की

## इतिहास का एक कूटः स्वामी दयानन्द और केशवचन्द्र के व्यक्तिगत सम्बंध

श्री प्रो० भवानोमाल जी भारतीय एम० ए०  
 गवर्नमेंट कालिज पाणी (राजस्थान)

स्वायना के लिए एक बंटक बुवाई  
 जिस में कलकत्ता के गण्यनाथ पुरय  
 उपस्थित थे। ५ जनवरी को प्रसिद्ध  
 पीरस्वय विद्या विद्यारद गजा राजेन्द्र  
 नाम जिस के साथ केशव ने पुनः  
 र्पान द से भेंट की।

१ जनवरी को केशव के 'मिनी  
 कार्डेज' वाले मकान में स्वामी दयानन्द  
 की संस्कृत में एक बक्तुता हुई जिसे  
 अनेक सम्प्रान्त व्यक्तियों ने सुना।  
 जनवरी मास में ही दृष्ट समाज का  
 उत्सव हुआ जिस में महर्षि देवेन्द्रनाथ  
 ठाकुर के आग्रह पर स्वामी दयानन्द  
 सम्मिलित हुए। यहाँ बाह्य  
 समाज के सब नेता उपस्थित थे। वेद  
 के विषय में उपस्थित लोगों से उनका  
 विचार विनिमय हुआ। देवेन्द्रनाथ के  
 पुत्रोंके मुखसे वेदमन्त्र सुनकर आप प्रसन्न  
 हुए। २३ फरवरी को गोरा चाद दत्त  
 के घर पर स्वामी दयानन्द का 'ईश्वर  
 और धर्म' पर व्याख्यान हुआ। केशव  
 सेन समापति थे। बहुत से प्रतिष्ठित  
 व्यक्ति उपस्थित थे। संस्कृत कालिज  
 के बहुत से विद्यार्थियों को साथ लेकर  
 प' महेशचन्द्र न्याय राज सना में  
 सम्मिलित हुए। उन्होंने ही स्वामी जी  
 के संस्कृत व्याख्यान का बयानत  
 अनुवाद सुनाया। विद्यार्थियों ने  
 आपति की कि अनुवाद में गड़बड़ की  
 जा रही है। सम्भवतः इसी अवसर  
 पर केशव स्वामी जी को संस्कृत के  
 स्थान पर हिन्दी में भाषण देने तथा  
 महासभा में बक्त धारण कर जाने  
 का परामर्श किया, जिसे उन्होंने  
 प्रमत्तता पूर्वक स्वीकार कर लिया।  
 इससे पूर्व वे केवल संस्कृत ही बोलते  
 थे और केवल मात्र कीर्तन ही उनका  
 वस्त्र था। यह भी प्रसिद्ध है कि केशव  
 ने स्वामी जी के अंबेडी ने जानते पर  
 वेद प्रकट करते हुए कहा कि  
 यदि आप अंबे जी जानते तो  
 इसनेक जाते मम्य आप मेरे इच्छानुसार  
 साथी होंगे। उन पर स्वामी जी ने  
 हसकर कहा, 'मुझे मेरे अर्धजी न  
 जानने का उतना दुःख नहीं, परन्तु  
 शोक है कि बाह्यसमाज का नेता  
 महकृत नहीं जानता और लोगों को  
 उन भाषा में उपदेश देता है जिसे वे  
 समझते ही नहीं।'

२४ फरवरी के लगभग केशव के  
 कागज टोला जाने मकान पर स्वामी जी  
 का भाषण हुआ यद्यपि बक्तुता संस्कृत  
 में, परन्तु भाषा इतनी सरल थी  
 कि केशव जैसे संस्कृत से अज्ञानिष्ठ  
 व्यक्ति भी उसे सहज ही समझ गये।  
 केशव के प्रयत्नसे ही बाह्य समाज के  
 अल्पसंख्य नेताओं से भी स्वामी जी की  
 भेंट हुई। निम्नमें अक्षयसुभार दत्त,  
 राजनारायण बन्धु, राम तनु साहू, र,  
 प्रतापचन्द्र मजूमदार आदि प्रमुख थे।

कलकत्ते के पश्चात स्वामी जी  
 केशव बाबू से दूसरी भेंट दिल्ली में  
 हुई। इस अवसर पर स्वामी जी ने  
 भारत के विभिन्न धार्मिक नेताओं  
 और समाजसेवकों का एक सम्मेलन  
 बुलाया। इस में शास्त्रसमाज के  
 प्रतिनिधि के रूप में केशव चन्द्र  
 सेन और नवीनचन्द्र राय सम्मिलित  
 हुए। स्वामी जी ने देश के इन नेताओं  
 के समस्त गृह प्रस्ताव रक्खा कि हम  
 भारतीयों परस्पर एकत्र होकर  
 एक ही रीति से देश का सुधार करें  
 तो देश की दशा सुधर सकती है।  
 परन्तु वेद के साथ निश्चया पठना है  
 कि उपस्थित नेताओं के विचारों में  
 सामन्तव्य नहीं हो सका, और विद्व  
 का यह प्रथम धर्म सम्मेलन असफल  
 रहा। स्वामी जी के एक अन्य जीवनी  
 लेखक स्वामी दयानन्द जी ने लिखा  
 है—'कई मौलिक मतधर्मों में मतभेद  
 होने के कारण वे सब एकता के स्रष्ट  
 में सज्बद नहीं हो सके।' यही स्वामी  
 दयानन्द केशवचन्द्र का अन्तिम  
 निम्न था।

हमें यह देखकर आश्चर्य हुआ  
 कि स्वामी दयानन्द के जीवन चरित  
 लेखकों ने तो स्वामी जी और केशव  
 बाबू के व्यक्तिगत सम्बंधों का बिलुप्त  
 उल्लेख किया है, परन्तु केशव बाबू के  
 एकमात्र हिन्दी जीवनी लेखक श्री  
 'भारतीय हृदय' ने अपनी पुस्तक में  
 इसकी संकेत मात्र भी उर्जा नहीं की।  
 ★★

१. महर्षि दयानन्द सरस्वती का  
 जीवन-चरित् काय १ ५० २२५  
 द्वितीय संस्करण सं० २०४९-वि०

२. बंगाल में ऋषि दयानन्द के  
 चार भासः देवचन्द्र चक्रवर्ती की  
 श्रावरी—देवराणी सं० १ सं० ८  
 ३. महर्षि दयानन्द सरस्वती का  
 जीवन-चरित् काय १ ५० २२५  
 द्वितीय संस्करण सं० २००९-वि०

२. बंगाल में ऋषि दयानन्द के  
 चार भासः देवचन्द्र चक्रवर्ती की  
 श्रावरी—देवराणी सं० १ सं० ८

### राष्ट्र किधर...

(पृष्ठ ५ से आगे)

बंघा हुआ है। कई बावनी होती है।  
 हरेक व्यक्ति को अपना 'कीर्तन'  
 बनाना है। इसलिए यदि प्रत्येक  
 'नेवता' को उसका 'पत्र पुण्य' न  
 मिले तो हमारी नेतृ की रिचन और  
 प्रार्थना-पत्र सत्यागी कार्यालयों की  
 विधानकाय मेजों की यात्रा ही करते  
 रहेंगे।

जतः यह निश्चयपूर्वक कहा जा  
 सकता है कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के  
 बाद भले ही हमारी राष्ट्रीय आद्य में  
 वृद्धि हुई हो, लेकिन मानवतन्त्र  
 राष्ट्र का प्रथमक वर्ग भ्रष्ट और  
 पतित हो गया है। जनजीवन में जोरी,  
 रिचकरी, भ्रष्टाचार, शराब पीने का  
 अमानिक अत्याचार के कीटाणुकोषों को  
 खिलेने में हमारे देश का प्राथमिक  
 वर्ग बहुतायत में उत्तरदायी है। इसके  
 साथ ही मानवमान के पीछे अन्धे  
 हमारे मिथानरी लोभ (मनी, अत्या-  
 पक, पत्रकार, उपदेशक) भी कम  
 उत्तरदायी नहीं हैं, वे अपने हर्ष कार्य  
 को गम्य द्वारा सम्मानित व पुरुस्कृत  
 देवना चाहते हैं। यही अर्थों में आज  
 हमारा कोई राष्ट्रीय चरित्र नहीं है।  
 और यदि जो कुछ भी हो तो वह  
 'दो गये की कमाई' द्वारा मचावित है।  
 हम अर्थ के पीछे भावने व  
 उन्मत्त हो गये हैं। हमारे की पचाई  
 हुई और खाने को हथ डूटे पड़ते हैं,  
 लेकिन हमारी शौर की ओर किसी  
 की आस उठा कर भी नहीं देखने  
 देते। हम पूरे भौतिक व्यक्ति बन  
 गये हैं, आध्यात्मिकता व आर्य हमारे  
 जीवन में पत्र कमाने के दुष्ट हैं।  
 We are more a pig and less  
 a person। परदेश्य मेरे राष्ट्र-  
 वासियों को मनुकुदि दे नाहिक  
 वे दत्तार्थ और सविष्ट की परम्परा को  
 अज्ञान तक सके।

★ वेद का स्वाध्याय, जब आर  
 मन्था करने को ज्ञानस्य कहते हैं।





मे प्राण को देना मे नव जवानों की संभला, बेदाकार, श्वभ-पान, धूल-कण बादि कुल विकल्प बाते धर्मान कर रहा कि फिर नवजवानों के शरीर की मशीनरी ठीक हो जाये तो पंचसंकेतो का जीवन एक सुख भोगमयी मोती बन जाये और वे सैंकि की राष्ट्र की उन्नति में सहायक हों गी किन्तु अग्रहीय विद्रोह हो सकते हैं और उनकी शक्ति के सामने किसी और देव का दुश्मन भी ब्राह्म उठा कर नहीं देख सकता, वह मशीनरी है क्या ? जिस का चक्को में अनाथ है, ज्ञाने मशीनरी है "ब्रह्मचर्य" की, प्रार्थना ! तनिक इसके अर्थ पर विचार करे ब्रह्म-परमात्मा, चर्म-विचरणा, अर्थात् परम-विता परमेश्वर के मुखों का चिन्तन करते हुए उसी में लत रहना और उसकी आज्ञाओं का पालन करते हुए उसे प्राप्त करने का चला करना, ब्रह्मचर्य धारणा किमे बिना मनुष्य जीवन, जीवन नहीं है जो तो केवल मात्र सप्ताह मे सप्त सन्ध्या का भोग भोगता और बाला-गीता और चलता-फिरता मनुष्य है परन्तु ब्रह्मचर्य का बहु बल, बहु तेज, बहु नूतन गुण है। जीवन दुष्कार्य है "अध्विपर" किसलते है कि जो ब्रह्मचर्य को अन्वयण करके नष्ट नहीं करते। वे सप्त प्रकार के दुष्कार्य से रहित होकर बर्ष अर्ध काम और मोक्ष को प्राप्त होते हैं।

परि नवजवानों मे २५ वर्ष का नूतनम युव अर्ध ब्रह्मचर्य भी रहे जो बहुत नाम का है और वे संयम मे रहे अपनी आस्था को सुदृ पवित्र बना और ब्रह्मचर्य की महिमा जान उपरत, आचरण करे और इस बीच पौराणिक, अर्धविक्रम धर्मो मे हुए राक्षस मलय-सत्तलान बाते धर्मो का स्थापन करे और द्रष्टु आचरण तथा है वह जो यह ताकि कुछ आचरणय शक्त जान सके ऐसी दिन युव करने से वे अपनी आयु ८० पर्य तक की निरोग बना सकते है। ब्रह्मचर्य की महानता अज्ञानता युव के हीरो जीवनसाथी है जो की नील नदी बालना किन्तु युव की समानित तक बाण शक्य पर रह कर तक सूर्य उतापयण मे नहीं जाता में अग्रत न छोड़, वा मगार को दिखता दिया कि एक ब्रह्मचारी अपनी मौत पर भी विजय वा मरता है और किन्तु शक्ति है ब्रह्मचर्य में आप अग्रत युव महर्षि परमानंद की जीवनी पढ़े वह जान ब्रह्मचारी धर्मि परमानंद-उपनिषद् के राहा को ब्रह्मचर्य का एक अज्ञानता, परिश्रम विधाने

## नवजवानों की सुख ली नं० ४ (मा० हरिचन्द्र जी मन्त्री आचरणयान आचलमंडी हितार)

है जबकि वे रांणा की बगनी को गोले मे एक हाथ से रोक कर खड़े हो जाते हैं सवाल क्या बगनी एक बन्द भी जाये चले छोड़े बाहुक लार ? कर हाथ जाये है परन्तु एक पत्र नहीं खडते यह सारी शान यह अद्भुत मेन ब्रह्मचर्य का ही है।

सारा संसार ही नवयुवको पर आधारित है वे जिपर बाहे अपना बाहे बैसा हो राष्ट्र को कर और लेना सकते है जैसा की आचको स्मरण होगा तब बर्ष भारत पाक युव मे हीमारे भारतीय नवयुवक भीयों मे पाकिस्तान के वे उनके दुष्टवि कि वे हम युव की मरणा पर्यन्त पाद रखते, यह तो पाक की शूक्तिमयती कष्टो वा और कुछ बर्षा सारा ही पाकिस्तान भारत बन गया होता तो यह सारी नरकमान नवजवानो को ही कहिये।

आदि मुष्टि मे भी परमेश्वर ने स्वान अवान आंठो के रूप मे ही यह सारा मगार रखा है बिना युवको के यह जमान बागे नहीं चल सकता या नाही तन्चने नाही बूडे जगत को आपे चला सकते मे यह तो केवल नव जवानो की ही परमेश्वर ने माधर्य ही है।

ब्रह्मचर्य की मािमिक शक्ति शरीर के रोम रोम मे ब्रह्मचर्यो मे किन्ती है जिसका मेरा भी अपना अनुभूत है जब मे जाये हाई स्टूडन्ट नुष्पाना मे आठवीं नववी कक्षा मे बसता था अमी अधिवाशिणी ही था सुदियो मे घर पर आया हुआ था, एक बार घर मे किसी स्त्री को पुनक मे मे पर पाडा रहा था पठाने पठाने उस स्त्री के माथे का एक लाल बाणु के एक डरा मे म्कोके मे मेरे माथे से छू गया उस एक बात का सुनो वा कि सारे शरीरमें दिखती का बहु अनीकिक करपट आया कि मेरा सारा बदन उस की रो मे जाये यदि उनका सारा शरीर छू जाये तो ममम मे कि उन का क्या परिश्रम होता होगा।

परन्तु आज कल गरिबो को नव-युवको की यही कुछ बाँहिए, विषय शानता, ऐसीश्वर, संकलनभस्ती किन्ती गानुन और नाचनो का पाठ,

किन्तु जीवन की श्रुतना ही तो जिगाह ही। अपना और घर बार तथा देव का सर्वस नख हो जाये कोई बात नहीं हुए केन्ते है कि कितने नवयुवक ब्याह करकर पुरतन गा-बाय मे पुष्क होना पसन्द करते हैं वे उन को कोई सेवा करना नहीं चाहते बरन इच्छा यह बनी रहती है कि हम बीबी ही घर मे ऐया मे जब नवयुवको की ऐयो भावनायें है वे कमे अपनी काम-नायें माता-पिता से पूर्ण कर अपना मुधार कर सकने कजायि नहीं। कंजे उनके च्छेए से उच्छेए होकर भीयय उरकबल बना सकते यह अस्वभय ही नहीं बल्कि कुलपिता है, अमा माता-पिता अपनी मन्तान को बंजे नेक आताकागी बनाये जबकि गा-बाय की मुनने को नैवार ही नहीं, अहि परमानन्द अपने बेद भाय मे माता पिता को उदरेम देये हुए निखते है कि 'अनो मन्तान को यथा योग्य पालन, जिआ से विद्यान करने के बाद धर्मोमा और पुण्याभी ब्रमना, बडो का माय और अपने अन्दर सुनरो की सहायना का भाव रखना, कि मा बाप सत्तान को उदरेय करे कि हमारे जो अन्धे काम है उनका यहए और जो पुरे काम हो उन कमी न करना जगि वाव कर स्वामी जी लिखते है कि जिस देग मे वयायोग्य ब्रह्मचर्य बिद्या और अंशंग धर्म का प्रचार होता है वही देग मोभापयवान होता है यदि हम महर्षि परमानन्द की रची युलक व्यवहाए मानु वा कुछ भी आचरण करने तो हमारे देग मे ब्राह्म कमी का अन्वयण, परिश्रमोत्तर, अथाचार और दुष्बर्हण समाप्त हो गया होता हम मुझे होंगे यह दुर्दिन देखने को नसोच मे होंगे।

परन्तु यह दुर्दिन कंजे टकने है जबकि हमारे उपर परबनी ममता मे अपनी छाप स्या रची है हम एक नव-नवयुवक परबनी नवहोच मे परत होकर और दो बार उदर अर्थ जी के एक कर अधाधिक और मान्दिन बन कर बंधिक आर्य धर्म मे गेमे कोमो दू-ता रहा है मंजे ज्ञानि मे द्विक्रम जान-वर। अपने देग की मन्दिन और धर्म को निमाजको देने पर उतावले है, माईको ! यह तो रासव वृत्ति अजना है और गलन धर्म का प्रचार करना है, सभी राजा राखल के सवकं

## मूल मुधार आचरणयान के पाठकों से निवेदन

आचरणयान के ३० अक्टूबर और ६ नवम्बर के अंक बन्ध रहेगे उसने बार १६ नवम्बर की 'अहि निवांय अंक' तीन सप्ताह का सम्मिलित अंक प्रकाशित होगा। पाठक नोट कर ले।

—व्यवस्थापक

बनने बने जा रहे है कोई तो राम राजव साने बनायो ही, इन्हे यह पता नहीं, कि जीवन को अन्वयाय में ही है अन्वकार तो मनु्य ही है, इमीनिव यदुबन्ध मे प्रायेना है कि 'अनो मा योगिसिंया। मनुयोऽ अनुत्तमय।' प्रकाशयम जीवन तव होया पर हम (इद चर्मेतो अन्वु। कुलनामो विव-मार्थम् अपन्नोऽन्यायाः) अण० बरि० १६, सूत्र ६३ मय ५ के जवार पर अर्थात् मकल अणन मे प्रभु के नाम का विचार करने हुए सारे मन्मन को आर्य बनाने हुए दुटो को मुमनस पर शान्त हुए आगे बढे वने। यही वेद का आदेश है इसी पर चने और चलाये।

## सार्वदेशिक त्रार्य प्रति-निधि सभा गोवध के विरुद्ध सामूहिक सत्याग्रह करोगी

नई दिल्ली, १३ अक्टूबर—सार्व-देशिक त्रार्य प्रतिनिधि सभा ने गोवध बन्द कराने के लिए सामूहिक सत्याग्रह करने का फैसला किया है। अन्वय सभा की कल यह युद्ध बंदक मे यह आदीवन चलाने के लिए १ सप्तमीय कमेटो स्थापित की गई है जिस के प्रधान भी त्रार्यावर्ध, सरोजक लाना शरणोपाय शांतवान, उपवागत भी प्रकाशमोरी शान्ती एत, जी और सर्व-नी शक्ति नरेद्र (हैरारावत) सोमनाथ मेरवाडता, उरकभन्ध नमोतक, आंमि-प्रदाय स्वामी और चित्तमन्तर नामा मन्थर्य है।

अन्वय सभा ने एक प्रस्ताव द्वारा मव त्रार्य सभाको को हममे पूर्ण सह-योग करने और सत्याग्रहो को सुधिया मन्ना को जवान के निर्वस रिदि है। दोषाण हाव आचरणयान मे २३ सप-तमी अन्व कोल दिया जाएगा। एक अन्य प्रस्ताव मे स्वामी रामचन्द्र की दया पर विना व्यक्त की गई।





दहीकोम नं० ३०५७

[आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि-सूभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र]

Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ पैसे

वार्षिक मूल्य ६ रुपये

नं० २६, अंक (४७)

५ मार्गशीर्ष २०२३ गुरुवार—दयानन्दवाक्य १५५० नवम्बर १९६६

(तार 'प्रादेशिक' जालन्धर)

## वेद रक्तयः

**पवमान धारय रयिम्**  
हे पवमान ! सर्व-व्यापक परमेश्वर ! आप पवमान हैं, सबको पवित्र करने वाले हैं। कृपा करते हुए रयिम्-रक्तयों को, धन-धन्य आदि की धारय-मुक्त में धारण कराते हैं। आपकी कृपा में मैं तथा हम सब राय वाले, धन-गन्तारी बनने बल जाते हैं।

### महो नो राय आभर

हे परमात्मन ! मैं-हमारे लिए यह—बड़ा राय—धन-धन्य का भण्डार आभर-प्रदान करें। प्रभो ! आप सर्वभूत के स्वामी हो, पत्नी के स्वामी हो ! इसलिए कृपा करो, हमें भी भनवाली बना दीजिए। धनपति होंगे।

### पवमान जहि मूधः

हे पवमान ! मनुष्य पवित्र कर देने वाले पितः ! हमारे जो और कितने भी मूधः—धनु हैं, विरोधी हैं, हिंसा करने वाले नाशक संग हैं। बिनसें कारे समाज के जीवन को हानि होती है। इन सब को जहि मूध कर दीजिए। समाज कर दे।

### रात्वेन्दो वीरवज्रश.

हे इन्दो ! परमेश्वर देव ! हमें रात्वेन्दान करे वीरवन्त—वीरता भरी गन्तान तथा वीर सन्तति में भरा गया—यस कीर्ति प्रदान करे। हम वीर पुत्रों तथा यश वाले बने रहे।

साम मे द मे

## वे दा मृत

हे इन्द्र ! अपने शस्त्र उठाओ

ओ३म् उद्धर्षय मघवन्नायुधान्युत्सत्त्वनां  
मामकानां मनासि । उद्धृत्रहन्वाजिनां  
वाजिनान्युद्रथानां जयतां यन्तु घोषाः ॥

साम० उत्तर० अ० २ खं० १ मं० १

अर्थ :—हे इन्द्र—वीर राजन् व सेनापते ! आप (उद्धर्षय) ऊंचा करो (मघवन्) इन्द्र ! (आयुधानि) दास्यों को ब युद्ध के साधनों को और (सत्त्वना) वीर पुरुषों के (मामकाना) मेरे (मनासि) मनो को। हे (युद्ध) धनु को नाश करने वाले इन्द्र ! (वाजिना) अश्वों के (वाजिनानि) वेधों को (रथाना) रथों के (अवता) बिखर करने वाले (उद्धृत्र) ऊंचे उठें (घोषाः) जयघोष व ध्वनियां।

### भाव यह है

हे राष्ट्र के नायक ! तथा सेना के नेता ! आप इन्द्र हैं। यह सारा राष्ट्र आप का ही ऐश्वर्य है। आप इस के रक्षक हैं। इस लिए आप का यह कर्तव्य है कि जिस देश को सत्ता को आपने सम्भाला है। उस पर आक्रमण करने वाले या उसे हानि पहुंचाने वाले जो भी धनु हैं—उनका नाश करने के लिए अपने तेज युद्ध के अश्वों को तैयार रखें। समाज के तमाम साधनों को जुटाते चलें। वीरों के मन में वीर भावना भरते रहें। अश्वों की गति तेज रखें। युद्ध यामों को प्रस्तुत करें। बिखर के जयघोष भी ऊंचे उठते रहें। कोई भी धनु, राष्ट्र का विरोध न कर सके। आपके होते हुए राष्ट्र विकसी हो। संघाम में काम आने वाले जितने भी शस्त्र व रथदान आदि साधन हो वे बिखर प्राप्त कराने में सहयोगी बनें। वीरों और वीरता वीरों के प्रसन्नता से जयघोषों की ऊंची ध्वनि सुनाई देती रहे। हे नायक ! आपके नेता होने हुए सारी सेना बिखरान से धनुओं पर आक्रमण करके उनको परास्त करने वाली बनें। आपके स्फूर्ति बढाने वाले उत्साहवर्द्धक वचनों से सैनिक वीरों के मन वीरता के भावों से भर जायें। उस अवस्था में धनु का क्या होतासा कि वह दम मार सके।—सं०

## ऋषि दर्शन

व्यापकं शान्तस्वहृद्यम्

बहु बड़ा व्यापक है, सर्वव्यापक है। सारे बराबर विद्य में ओज-गंज है तथा बहु शान्तस्वहृद्य है। विद्य के मन्तव्य प्राणियों को उसी में शांति प्राप्त होती है। उसी सर्व-व्यापक ब्रह्म की उपासना से जीवन शान्त होता है।

प्रास्रस्यापि प्राणम्

बहु परमात्मा प्राण का भी प्राण है। जिस प्रकार हमारे भौतिक मरीर को आत्मा प्राण चलाने व जीवन देने है। वह परमात्मा सारे बिस्व के है। उसी के नियम में विद्य काय करता है।

पूर्य सर्वेभ्यो महतरम्

बहु बड़ा सब का पूर्य है, पूजा के योग्य है। बड़ी महत्त्वं महान्त है, बड़ी परमात्मा सब से पुननीय है। उसके स्थान पर और किसी की भी पूजा नहीं करनी चाहिए।

वयं सततम् उपासन्ते

हे प्रभो ! हम सदा आपके उपासक बन कर आप की ही उपासना करने रहेंगे। आपके विना हमारा मस्तक और भी न भुंके। आप हमारे उपासक हैं।

भा ग्य मू पित का ने

आज हम संसार की ओर देखते हैं तो मानव मानव बनने के लिए बहुत ही परिश्रम कर रहा है। परन्तु उसको पता नहीं लग रहा है कि मैं क्या बनता जा रहा हूँ। मनुष्य की भावनाएं बहुत ही अच्छे तथा मोक्ष को प्राप्त करने वाली होती हैं। उसके उत्तर आचरण कर मनुष्य बनना बहुत ही कठिन है। वेद कहता है "मनुष्य" अर्थात् मनुष्य बन। वेद का कितना सुन्दर उपदेश है। संसार के सभी मानव, मानव बनें साधक नहीं। और मनुष्य भी जानता है कि यह तो मानव चोला है यह बहुत ही शुभ तथा अच्छे कर्म करने के पश्चात् ही मित्रा है। किसी कर्म ने बहुत ही सुन्दर शब्दों में कहा है— "कदाचित् लभ्यते जन्तुमनुष्यं पुण्य-संचयात्" अर्थात् यह शरीर बहुत पुण्य के सचय से प्राप्त हुआ है। ऐसी सुन्दर काया को पुरुष सासारिक उपभोगों में फस कर अपने जीवन को नाश कर देता है। वेद भगवान् स्वयं कहते हैं— "येनतयस्तेन मू ज्ञोःपाः वर्षात् इह लोग की भोग्य वस्तु त्याग भाव से भोगो तभी आप को सुख प्राप्त होगा। और एक साधक ने मनुष्य प्राप्त करने का यह ही शुभ कर्म। जैसे कर्म करना जैसे ही फल प्राप्ति क्योंकि कहा है "अवश्यमेव शोस्तव्यं कृत कर्म शुभामुत्तमम्" अर्थात्—किये हुए कर्मों का अवश्य ही, भोगना पड़ता है। एक किसान है अपनी जमीन को अच्छी प्रकार से मवागत (परिश्रम) करके यह अनुभव करता है कि यदि बर्षा आदि ऋतु के अनुसार हो तो फलस बहुत ही बढ़िया आयेगी। आगे वेंसा ही हुआ उस किसान का जीवन आनन्द में बसा गया। यदि वह अपनी जमीन में अच्छी प्रकार मैदान न करता तो अधिकान्त को प्राप्त तथा सुख का अनुभव नहीं करता। और इसी प्रकार मनुष्य चोला है। जिस प्रकार मनुष्य कर्म करेगा उसी प्रकार से उसको फल मिलेगा। आप तुलसीदासजी के शब्दों में पढ़िये—  
तुलसी काया सेत है  
मनसा भग्यो किसान ।  
पाप पुण्य दो बीज है  
जो बोये सो ने निदान ।।  
मनुष्य जिस समय संसार में आता है उस समय मुझे बाधकर जाता है गर्म में आता है। और यहाँ से जब प्रस्थान होता है तो बाली हाथ जाता है। अतः मानव को मोक्षना चाहिए

धार्मिक चर्चा—

मनुष्य का निर्माण

(१० कर्मवीर जी आर्य विद्या-विधि परमेश्वर द्वारा महाविद्यालय शिक्षार (कलाभ) कि हमारे साथ क्या चलती है? मनुष्य। अपने हाथों तो बनें एक ही कलेबाज कर्म का बही धारण है। संसार के सभी भोग्य वस्तु तथा धन, सम्पत्ति, ऐश्वर्य, पुत्र, पत्नी, पत्नी आदि यही रहते तथा दमयान्त तक के ही है। अतः हे मानव ! अब तो जाग—  
अब हम इतिहास का बाधोपांत अध्ययन करते हैं तो हमें ज्ञात होता है कि (मैं, मैं) 'अहं' 'अहं' करते बहुत बने गये हैं। यह सारी वस्तुएं मेरी ही हैं। परन्तु अन्त में कुछ भी नहीं। संसार के लोभ मोह में फँसकर अपने सच्चे स्वरूप को भूल जाते हैं। इतिहास प्रसिद्ध है—आज हम श्रीराम तथा रावण का नाम सुनते हैं, 'राम' का ही नाम अमर है। इसी प्रकार अनेक उदाहरण हैं जिन से कि हमें ज्ञात होता है। मनुष्य को गिरावट अधिकतर काम तथा मोहोत्तरे से होती है।  
एक बार की घटना है—जिस समय राजा भोज, वासक ब्रह्मणा मे थे उसी समय उनके पिता का स्वर्गवास हुआ। भोज के पिता मृत्यु से पूर्व अपने भाई मुञ्ज को बुलाकर कहते हैं कि हे मुञ्ज जाइ इस राजगद्दी को सम्भालो। और जब वह सत्तान (राजा भोज) राज्य करने योग्य हो जाए उस समय राज्य दे देता। यह सन्देश राजा भोज के पिता ने मुञ्ज को दिया। भविष्य में राजा भोज को विद्यार्थ मुस्कृत भेज देते हैं। और वह मुस्कृत में अध्ययन करते हैं। राजा भोज के चाचा मुञ्ज के मन में राजगद्दी पर मोह हुआ। वह मन ही मन में लोचने विचारने लगा यदि भोज को मार डाला जाए तो राज्य मेरा हो जाएगा। यदि मेरे काम में बाधा है तो भोज ही है। ऐसे इस धन, ऐश्वर्य, तथा लोभ के कारण उसके मन में कष्ट की भावना पैदा हुई, यही आशाएं मन्त्री के समक्ष रख कर चाचा मुञ्ज आदेश देते हैं—जाओ ! पुरुकुल, और उसको जगल में मारकर उसकी आत्मे से आओ। राज्य मन्त्री के लोभ मयधने पर भी मुञ्ज नेलौभ बस मन्त्री को भेज दिया। मन्त्री रथ लेकर पुरुकुल आया। और आचार्य से कह कर राजा भोज को रथ में बिठा कर जंगल की ओर ले जाता है। बहुत दूर जाते हैं तो भोज पृच्छते है—

इधर कहाँ से जायेंगे ? मन्त्री की कण्ठों हैं—आर्यो हे स्थान रथ से उतरो आर्यो बस करवाया है। उक्त कही बात मन्त्री की कहते हैं—राजा भोज बरने के लिए तैयार होते हैं परन्तु मेरा एक शब्दो है वह दे देना—राजा भोज जी सन्देश लिखते हैं। मन्त्री जी का हृदय पिघल जाता है। इतना सुन्दर, सुखवान, बालक की किस प्रकार बच किया जाय। उसको रथ में बिठा कर रास्ते में किसी प्राणी को मार कर आख ले लेता है। उस भोज को अपने घर रख कर मन्त्री जी अपने राज्य-स्वप्न पर पशुवत् हैं। इधर चाचा मुञ्ज इसी राह में था। जब मुञ्ज दृष्टता है—जिस समय आप ने राजा भोज का बच किया उस समय कुछ सन्देश आदि दिया है क्या ? मन्त्री जी यही रत्न से अंकित किया हुआ सन्देश पेश करते हैं—वह सन्देश इस प्रकार है—"माध्याता व महोत्तरेः कृतमुगाल-कार भूयो गतः।  
सैतुयुंन महोदयो विरचितः।  
स्वासीदद्यास्वागत्कः।  
अन्ये चापि सुविष्टिर प्रभृतो  
याता दिवं भ्रूयते ।  
नैके चापि समगता समुत्तरी  
मुञ्ज स्वया यास्वयति ।  
भोज प्रकथ  
अर्थ—सतयुग का आभूणर स्वरूप माध्याता जवा गया, विगुणोने समुद्र पर पुल बांधा था, वे राखर विनासक श्री राम भी अब कहा है ? हे राजन ! और भी सुविष्टिर आदि राज से स्वर्ग सिधार गये। यह पृच्छते उन कि जिनो के भी साथ नहीं गये परन्तु हे मुञ्ज ! अब मानस पडता है कि तुम्हारे मर जाने के बाद यह पृच्छते तुम्हारे साथ अवश्य आयेगी।  
जिस समय यह पडकर चाचा जी की आंख खुल जाती हैं। उस समय हाय ! हाय ! करता विलसता हुआ मन्त्री जी के गले गडता है।  
अतः उपयुक्त कल्प से यह ज्ञात होता है कि मनुष्य छोटे रथ में लोभ के कारण कितने गहरे गड में गिरता है। इसलिए मनुष्य का कर्तव्य है कि इस मानव चोले की पुण्य तथा शुभ कर्मों का संघय करते हुए मनुष्य जीवन को सफल बनाये।  
हमारे प्राचीन काल के ऋषि मुनि

ब्रह्मा वेद, शास्त्र, उपनिषद् का कि यही सन्देश तथा उपदेश है कि मनुष्य को अधिकतर लोभ (३) लोभों पर विशेष ध्यान देना चाहिए। जिस से मनुष्य का वास्तविक स्वरूप का ही पता चलने ?  
वह साधक यह है—(१) स्वाध्याय (२) सत्यं और (३) ईश्वर विचन यह तीनों साधन आचार्य में सम्भव रहते हैं। मनुष्य का पहला कर्तव्य है वह स्वाध्याय करें। स्वाध्यायोल बनें।  
जिस समय महाभारत का युद्ध हुआ उसके पश्चात् हमारे देश की स्थिति बहुत ही दिन प्रतिदिन पतन की ओर चलती गयी। यहाँ तक कि लोग वैदिक संस्कृति सम्प्रदाय, शिष्टाचार जगदि शुभ कर्मों को भूल गए। देश में अज्ञातकार, अज्ञानकार मूलिगुजा, बाल विवाह, आदि अनेक कुदृशियां फैली हुई थीं। ऐसे समय में तथा १९ शताब्दि में इस भारत-भूमि के रंग-मच पर ऋषि दयानन्द जी का प्रादुर्भाव हुआ स्वामी दयानन्द ने देखा तो राष्ट्र-मर में कुदृशिया, इनको दूर करने में लगे रहे। मानव जाति को अपने भूले स्वरूप की बजाकर वेद का उपदेश दिया "मनुष्यं" "मनुष्य बनीं"। यदि मनुष्य बनना है तो आपको स्वाध्याय करना चाहिए। और किन-किन धर्मों का स्वाध्याय करना न करता अन्तर गत्य सत्याय प्रकाश के तृतीय समुल्लास में वर्णन किए हैं। अर्थात् आप प्रियत एव ऋषि, मुनि कृत गत्य तथा वेदोका स्वाध्याय करणा चाहिए स्वाध्याय शब्द ही अर्थ बजाता है कि 'स्व' 'अध्याय' अर्थात् स्वयं अपने अल्पका विचार करे, अपने आप मनन करते हैं पशु लगता है स्वयं को अवश्य करा है ? अतः स्वाध्याय आर्य श्रमों का बहुत कुछ किया, परन्तु उसके उत्तर आचरण न हो तो राज्य के समान सब मनुष्यों की गति होगी। इसलिए स्वाध्याय किमे तथा शास्त्र, उपनिषदादि ग्रन्थों का उपदेश सुना है उसके अनुसार आचरण करना। क्योंकि कहा है—  
भूयता धर्म सर्वस्व,  
श्रुत्या चंचाव धार्यताम् ।  
आरमनः शक्तिकुलाति,  
परंपरा न सप्पारचेत ।  
अर्थात् वेद, शास्त्र, उपनिषदादि कथित धर्म को सब बातें सुनो और सुन करके उसको पारण करो ।(कर्मच)

सम्पादकीय—

# आयजगत्

वर्ष २६ रविवार २०२१, २० नवम्बर १९६६ (अंक ४७)

## मानव कर्हे या देव

आज का युग बड़ा ही विषम है। स्वार्थ की प्रवृत्तियों ने प्रत्येक स्थान पर आकाशवेत्त के समान अपना चेरा डाल रखा है। अष्टाचार का जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सुधा प्रसार हों रहा है। लिव्या और एएशा अपने साम्राज्यान् में लगी हुई हैं। आज भारत में जीवन की दशा हर प्रकार से विगड़ती जाती है। त्याग, उपवास, निष्कामभाव, सेवा तथा बलिदान की भ्रम्य भावनाएं पंख लगाकर उड़ती जा रही हैं। चारों ओर अपनापन पनपने में लगा हुआ है। यशमय जीवन तो स्वप्न की चरतु रह गया है। आसुरी बिचारों का बोध आया है। राष्ट्र की बनावे का धम बनावे बाने अपने की बनावे में मस्त है। बापू नाम की नूट जारी है। जितना भी नूटा जा सकता है, नूटा जा रहा है। क्या पता फिर यह स्वर्णकाल मिले या नहीं, इस भ्रमना से भरे लोग अपने घरों को अरुंने में सने हुए हैं।

ऐसी विषम परिस्थिति में जब कि मानकों को खोजने में भी परिधम करना पड़ता है। बड़ा देवों का यथान तो विरते में ही हो सकता है। किन्तु आज के काम युग में भी ऐंसे-ऐंसे त्याग व अक्ष की सजीव मूर्तियों को देखकर तथा उनके सद्-विचारों को सुनकर मन अतीव प्रसन्न हो जाता है। सोचने पर विचर हो जाना पड़ता है कि ऐंशों को मानव कहा जावे या साक्षात् देवता ? ऐंसे ही विषय जीवन बाने मानकों में बन्धुपुत्र स्टेट किस्मितालय के मनो-रत्नों के अतीव विशेषज्ञ माननीय भास्कर विद्यासागर जी हैं। गत दिनों बार्थ समाज सारैस रौड अमृतसर में मानव शास्त्र की का एक बड़ा ही अन्व विचारै समारोह था। उस दिन बहूत प्रबन्ध भी स्वयं भास्कर जी का था। विषय का कि जीवन में काम-क्षेत्र-सौध आदि का क्या स्थान है। जितना भी नूटा जा सकता है, नूटा जा रहा है। क्या पता फिर यह स्वर्णकाल मिले या नहीं, इस भ्रमना से भरे लोग अपने घरों को अरुंने में सने हुए हैं।

जी ने दिया। पहली बार सुनने का अवसर मिला। मनोनों के विशेषज्ञ होने तथा वर्षों के अनुभव से कितनी वास्तविकता से भरा यह भावना था। हृम ने डा. विद्यासागर जी को देव के नाम से पुकारा है। क्यों ? आज के सचमुच यह देव ही कहलाने के अधि-कारी हैं। निरन्तर सोलह वर्षों से अमृतसर में एक स्थान में बैठ कर सेवा में लगे रहे। रात के दो बजे तक पायजो को देखने तथा उपचार करने में सने रहते। इसना भीडा स्वभाव बहुत कम ही लोगों में देखा है। मानव की परीक्षा आने से नहीं बरन जाने के समय होती है। सोलह व. ० आदि भी सचमुच सर्वधिय, अदानतनु तथा सोमता भी सजीव प्रतीक हैं। इतने ऊंचे आसन पर बैठ कर अपने जेतन में से भी पता नहीं कितना प्रतिभास रीतियों के निमित्त अर्पण कर देते हैं। पनाव विस्वविद्यालय के उपकुलपति प्रिंसिपल सूर्यभादु जी ने एक बार अपने भाषण में डाक्टर विद्यासागर जी को अ्चिप तक कह कर पुकारा था। इन के बारे में जो भी कहा जावे उचित ही है। इगर्ज में पडे हुए और इतने ऊंचे आसन पर बैठ कर जो चाहते कर सकते तथा जो चाहते बना सकते सामुली धम. एल. ए. था मिनिस्टर सब लोग क्या २ नहीं बनावे ? सब कुछ सब के सामने है। पर मान्य डाक्टर जी साक्षात देवता है आज के युग के मनोरंम मानव है। कामना, लोभ, मोह, व श्रेष अहंकार इन को पास में भी छु नहीं सका। अर्जिनन्दन पत्र में इन के लिए देव उचित ही कहा या अमृतसर से रौहतक तकली हो कर गये है। भाषण तो अगने अक में दिया जायगा। हम भी इस देव को सादर नमस्कार करते हैं।

—त्रिलोक चन्द्र  
**गौरान्ना आन्दोलन**  
भारतीय समाज में गो का स्थान बड़ा महत्वपूर्ण है। राष्ट्रीय जीवन का चिह्न तब तक पूरा नहीं होता। सब

प्रकार की दुष्टियों से पाषिक हों या सामाजिक हो या राष्ट्रीय गी की रक्षा बनी आवश्यक है। वैदिक सस्कृति की परम्परा में गो माता है। इसी के द्वारा राष्ट्र का जीवन बनता है। रामराज्य में गो को पांव लगाना भी पाप था। धर्मयुग युधिष्ठिर के राज्य-काल में गो की महत्ता बरबाद बनी हुई थी। वेद ने तो अन्तकाम घोषातम गौहत्यारे को मृत्युदण्ड का विधान किया है परुतन युग में राम-गोपाल की इस भरती पर गो का पूरो तरह सम्मान किया जाता था। युगयुग के युग में भी अक्षर आदि के राज्य में गोबध सर्वथा बन्द था। गोधाती को मोतदण्ड मिलता था। अर्बज आये, हमारे जीवन में बिलवाड किया गया। देवा के बडे २ नेता महात्मा गांधी, महात्मा मानवबध, लोकमान्य तिलक आदि सारे स्वराज्य में गौहत्या एक बन्द बन्द कर देने की बाने खुले तोर पर कहते थे। आर्य समाज के महान् प्रवर्तक स्वामी दयानन्द जी ने तो अपने मिशन में गोरक्षा भी विशेष अग बनाया था। गोकुष्णानिधि जैसी पुस्तक लिखी। प्रयत्न भी जारी रखा। आर्य समाज को यह काम सोंपे गये।

विदेशी सत्ता गई। अपने लोग आये। विधान में गोबध बन्द करने की धाराए रक्की। कई बार भारत में इसके लिए आन्दोलन भी किये गये। किन्तु भारत सरकार ने न सुना। आज गोबध को रोकने के लिए सारा देश तथा विना मंडलाब के सारे सरथान एकत्रित हो कर खडे हो गये है। जवतु युग शकराधाय, स्वामी करपाथी जी, भारत साधु समाज, महामण्डलेन्दर, सतान्त धर्म भा, आर्यसमाज, जैन सभा, नामधारी बरबाद आदि सारो भारतीय जनता एकत्रित हो गई है। देहली में जो महान् प्रदर्शन लालो का हुआ, उस में जो हित्वाक कारवाई हुई, उस की तो जितनी भी निन्दा की जाये घौठी है, किन्तु उस पर सरकार की पुलिस ने भी जो कुछ किया उस पर भी महान् दुःख है। उस हिता के लिए कौन उत्तरदायी हैं—इस की जाच-पड़ताल करानी ही होगी। सारा सन्त समाज प्रभुदत्त जी ब्रह्मचारी के नेतृत्व में जेले भरता जाता है। जब बहारे देश के विधान की आचारधिया जनतन्त्र पर है, और सारी जनता बौह्या बन्द करने की बात बहती

तथा बलिदान देती है तो सरकार हठ क्यों करती है ? क्या यही जनतन्त्र है। विधान का सम्मान इसी बात में है कि भारत में जनता को आवाज को सुनते हुए गौहत्या बन्द करा देते ताकि जनता का रोना सान्त हो सके। गोबध बन्द होकर ही रहेगा—०

★ ★ ★

## लखनऊ से अपहृत नाबालग लड़की कानपुर में बरामद

**आर्य नेता का सराहनीय कार्य**  
गत रात्रि दो बजे जूही कालीनी के एक मकान पर नगर के आर्य समाजी नेता श्री देवीदास जी आर्य में अपने कुछ सहयोगियों को लेकर छापा मारा गवाज गज जितना लखनऊ से कुछ दिन पूर्व अपहृत की गई १४ वर्षीय कन्या प्रोपती को बरामद कर उन के भाई सुगुडे कर दी।

पटना इस प्रकार बवाई जाती है कि उक्त लड़की के एक सम्बन्धी के पडवन्त से उसे बेचने के विचार से देशराज सिंह नामक एक स्थिति भना कर भोविन्द नगर कानपुर लाया था। लड़की के सम्बन्धी भोविन्द नगर में भी देवीदास आर्य के यहां सहायता लेने पहुंचे थी आर्य ने रात में ही मोहिन्द नगर में एक स्वतंत्र पर छापा मारा परन्तु लड़की को तुरते धार से निकाल कर जूही कालीनी ले आया गया। परन्तु लड़की ने दो घण्टे के अन्दर ही जूही से लड़की को बरामद कर लिया। देशराज सिंह फरार हो गया।

## आर्यसमाज बाजार भीताराम

### दिल्ली का वाषिक उत्सव

विन्लक १९ तथा २० नवम्बर के राम लीला मंडान में ममागेह में मननाया जायेया उत्सव के उपलक्ष में १३ से १८ नवम्बर तक रात्री ८ ३० बजे से ९.३० बजे तक थी व ० हुरि सरसु जी सिद्धातलकार आर्य समाज मन्दिर बाजार लीला राम दिवली में उपनिषदों की मनोहुर कमा करे (मनो)

### श्री सर्वेशानन्द साधु आश्रम (अलीगढ़)

वाषिकोत्सव मिनी राविक सुदी ७-८-९ स. २०३३ सविस्वार, सविस्वार तथा सोमवार, तनुसुतार ता. १९-२०-२१ नवम्बर १९६६ ई का है। जिस में बडे २ सभ्यो महीपरेक्षक तथा प्रबन्धी महोदय पयारेगे। आशा है आज इष्ट मित्रों सहित पयार कर कृतार्थ करेगे।  
मधुवी  
मन्त्री सभा

# देवा का उत्थान चाहते हैं तो

## गौहत्या बंद करो

श्री वेदव्रत श्री आरुत्री विद्यावाचस्पति जि० वेद.

प्रचारार्थी सभ होमियन्सयुट

राष्ट्रपिता बापू गान्धी भारत के राम राज्य को स्थापित करना चाहते हैं। वे कहा करते थे कि स्वराज्य में भी नहीं मारी जायेगी। किन्तु अहिंसा का पाठ पढ़ाने वाले भारत के नेता ब्राह्म सभ जसों की संस्था में भी मरवा रहे हैं। ज्यो २ देश में इस के निरोध के लिए आंदोलन किये जा रहे हैं हमे २ हमारे नेता बन्धों जैसी हक पकड़ते चले जा रहे हैं। वे अपने हठ को न छोड़ना ही अपनी धाम समझते हैं। जिस से को महा-रामा कृष्ण ने माताके नाम से पुकारा आज उस अथवा माता की पर्यं पर कटार चलाई जा रही है। वह अपनी उस जवान के बोल नहीं समझी। उस पर जो जुलम बमाए जा रहे हैं किस की सुनए। भी माता की कल्याणमयी सजब आबे आज भारत के भ्रम्य पर तो रही है। भारत के प्रथक नव-युवक बाल और बूढ़ की ओर देख रही है कि कौन मेरी रक्षा करेगा। मुष्टि निर्माण नभ से लेकर आज तक अस्त्रको मातृहीन बन्धों को भी माता के दूध से पाला गया है। इस निर्दयी का हृदय कितना कठोर है कि जिस से गो धर ने पास्ता है उसी पर कटार चलाता है। उसके प्यार का बन्धन हतभक्तता से चुकना पावता है। उसकी शीतल आबों के सामने आज जलाना चाहा है। उसकी मांवी-मांवी मृत को उस समय कोई सहृदय शक्ति देख नहीं सकता। उसके ऋण को भूल चुका है। आज हम अन्न की समस्या को अच्छे मास मछली और चूने के आचार से मुक्तभन्ना चाहते हैं। भला जिस देश के नोजवान बूढ़ों के आचार साते ही वे किन्तु बलवान हो सकते है। यह बात विचारणीय है कि जिसके घर में एक माघ भी उसका आधा तो अन्न का ही खर्च पट जाता है। हमारी अन्धी सरकार तामसिक पदायों की ओर बढ़ावा दे रही है जो कि और भी बढते हुए अत्याचार में सहायक है। विदेशियों ने हमारी नकल करने को पालन कृत किया आज उन्हें पर्याप्त मात्रा में भी, दूध मिलता है। किन्तु आज सरताव

भारतको मंस और कून से पूष और म्भर को श्वाहा बनाहा है। यह अन्धी सरकार नो रक्षा के लिए पर दुए लोगों को अत्याचार के जुर्म में विरफतार कर रही है। कितने दुःख की जाह है कि उनकी आबाड को घुटा कही जा रहा। खि गो ह्मा कन्व ज दुर्दोस्ती पाव रखे भरता का ज्वाभ-जम्भज्ज्) वरं की मेरी पर कुर्बानी हो जम्भान। भरत, हमारा है हम भरत के प्रसिद्ध हैं। राम, कृष्ण और यामना की सम्पदा के पुजा-रियो? तुम गो? जामो? नो ह्मा बंद हो, गो ह्मा बन्द हो। ★★

### आर्यसमाज फोटो कालोनी जल्मू

आर्यसमाज की ओर दीवारी के बाहर वैदिक धर्म का प्रचार करने के लिए हर सुद्वार को मुहल्लों में रात्री को पारिवारिक सभ्य होते हैं—जिस में हर विचार के सोग जाते हैं। पं० हृदामाजुंजी सुन्दर भजन बोलते हैं और वेद के सिद्धान्त पर प्रभावशाली प्रबन्ध होता है २. बन्धों की रोजाना धार्मिक श्रेणी श्रवणी है—५११ से ५११। सायकाल सभ्य और हवन मंत्र पाव कराये जाते हैं तथा सव्यायक्रमाय मे से शिशा दी जाती है। ३. हर वीरवार को स्त्री समाज का ससभ होता है और रविवार के साप्ताहिक ससभ में उन्मत्तित पर्याप्त होती है।

इस धर्म की पूर्ण वर्षों की भांति दीवारी उत्सव पूरपाय से मनाया गया।

### आर्यसमाज बोलास

इस वर्ष विजयवासनी बड़े पूर-धाम से मनाई गई। सनिवार रात्रि को बाजार में वैदिक धर्म का प्रचार व गो ह्मा के विरोध में विरटत सभा का आयोजन किया गया। जिस में आर्य ब्रत के प्रसिद्ध सिद्धान्त प. मगत-देव जी श्रवणी तथा पं० प्रेमचन्द्र जी प्रंप ने मनमोहिनीय श्रवण जस्ता पर अत्याचार का अच्छा प्रभाव पड़ा। दूसरे दिन आर्यसमाज में श्रवणरीहस्य तथा यह हुआ तथा प्रदान की ने वेद मन्त्री को सम्पत्ता की। सायंकाल की शोभा यात्रा नगर के प्रसिद्ध बाजार से होती हुई समाज मंदिर में समाप्त हुई।

### आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब गोरखा आंदोलन का ६०० व्यक्तियों का जत्था आचार्य भगवानजी जी के नेतृत्व में गिरफ्तार

गृह मन्त्री की कोठी पर पुलिस द्वारा सत्याग्रहियों पर निर्दयता से लाठी प्रहार। २ व्यक्ति बेहोश, एक की स्थिति चिन्ता बनक।

नई दिल्ली-५, नवम्बर १९२६। के सर्वाधिक लोकप्रिय नेता आचार्य भगवानदेव के नेतृत्व में आज ९०० से अधिक सत्याग्रहियों ने गृह मन्त्री के निवास पर सत्याग्रह किया। पुलिस ने सत्याग्रहियों पर निर्दयता से लाठी चार्ज किया। २ व्यक्तियों को भी इलायत व भगत सेन राय को घातक चोट लगी। श्री सेवप्रिय की स्थिति चिन्ताजनक है। श्री बलानन्द के सारे कपड़े पुलिस ने फाड़ दिए।

जबको पिता देने केलिये आर्य समाज करोल बाग में विशाल सभा हुई जिसकी अध्यक्षता करते हुए श्री प्रकाशचारी शास्त्री संसदसभ्य ने कहा कि सरकार को जब भावना का जावर बनते हुए तुल्य मोहत्या बन्द कर देनी चाहिये।

श्री बन्धुवर्षासिंह सिद्धान्तो ससत्-सदस्य (कार्डस) ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि गो-रक्षा के प्रश्न पर सारा देश एक ही और हम इसके लिये बड़े से बड़ा बलिदान देने को तैयार है।

आचार्य भगवान देव जी ने घोषणा की कि सारा हस्तासा गो रक्षा के लिये बड़े से बड़ा बलिदान देने को तैयार है और अपने हृम १०-२०० हजारके जत्थे लेकर दिल्ली आयेगे और सरकार को विवश कर देते कि वह गो हत्या बन्द करे।

पुलिस द्वारा लाठी चार्ज की तीव्र निन्दा करते हुए अपने एक वक्तव्य में गो रक्षा आन्दोलन सवालन समिति पंजाब के ज्योत्सक भारतेन्दुनाथ ने सरकारको चेतावनी दी है कि सरकार बुद्धि से काम ले। जत्था की भावना से शिबवाहू न करे अन्यथा जो मन्त्री परलाम होने उनका दायित्व केवल सरकार पर होगा।

श्री रघुवीरसिंह शास्त्री ने पंजाब के समस्त आर्य सभाओं की ओर से आचार्य जी को विदा दी। इस जनघर पर श्री लो० रामगोपाल जी दास वाले मन्त्री सांख्यिक सभा व प्रोफेसर राध कृष्ण जी प्रथम आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब उद्घाटन। पुलिस द्वारा लकी चार्ज की सर्वत्र निन्दा की जा रही है।

### हिन्दू महा-सभा भवन अन्नशन कार्यालय से

१५-१०-१६, गो रक्षा आन्दोलन में अब नया मोड़ आ गया है। हरयाणा क्षेत्र से हजारों व्यक्ति गो-पन की रक्षा के लिये १ नवम्बर से पहले सत्याग्रह के लिये दिल्ली पहुंच रहे हैं।

हरयाणा के लोकप्रिय नेता आचार्य भगवान देव जी ने अपनी पूरी शक्ति के साथ गो-रक्षा के लिये तीव्र आन्दोलन आरम्भ कर दिये हैं।

संघट सदस्य स्वामी श्री बलवानन्द जी ने देश की जनता से प्रार्थना की कि यह सर्वसंघट देकर भी गो-भारत की रक्षा के लिए त्याग बलिदान की तैयारी करे। स्वामी जी ने यह विचार प्रकट किया है कि सरकार ने गो-बन्द न किया तो सरकार स्वयं समाज को जालेगी।

इस समय ४०० के लगभग साधु-सन्तानी ब्रह्मचारी गो-रक्षा आन्दोलन के लिये विहाड़ जेल में हैं। ससत् सदस्य श्री १०० मीरों की परती भी इस रक्षा के लिये जेल में ही हैं।

हिन्दू महा-सभा भवन में जनघन कर रहे श्री धर्मचन्द्र के अनुरोध का आज २५वा दिन है किन्तु उनका उदाहरण निरन्तर बढ रहा है और एक मंटे में उठतेये यह सकल्प घोषित किया है कि यदि आवश्यकता पड़ी तो वे और भी अधिक तीव्र पद उठावेंगे।

महात्मा 'राम चन्द्र शीर' पंत हस्तगत में हैं, उनके अनुरोध को ५६ दिन हो गये हैं उनका जीवनभर युक्तैय सारा है यदि सरकार ने शीघ्र नई पय न उठाया तो उस जनता के भारी रोष का सामना करने के लिये तयार रहना होगा।

कार्यालयवाच्य महात्मा उन्मूलन सचय समिति हिन्दू महासभा, भवन नई दिल्ली।

### आर्यसमाज पलवल नगर (गुडगाव)

१३वां धार्मिकोत्सव-अक्टूबर सभा में विश्व परिस्थितियों के कारण उत्सव २५, २६ व २७ नवम्बर के स्थान पर २, ३, ४ दिसम्बर-द्विदिन कर लिया है। उत्सव से जुड़ने २४ नवम्बर से स्वामी बलवानन्द जी द्वारा वेद कथा होगी।

भी हाँस रहे थीं वरीही है कि  
 'मौजू की मेहनत को ही मुझे खेना  
 क्लमक सिखाए अपने सब कौशल :  
 शिकार का-उ गन्धेकी का नाम लेते ही  
 लेखक को धारा है और एक सिंहासन  
 ही पंदा हो जाती है परन्तु उन्हें कभी  
 सिंहासन के इतके दर्शन कभी नहीं।

मस्ती एक अनिर्णय है, ऐसा  
 कदा काल ही परन्तु क्या हम को इस  
 को पकड़ने देने के काइला होती है ?  
 इसे हम ने देखा है। मुझे स्मरण ही  
 क्या और हाँ इस श्रेष्ठ को विलने की  
 प्रेरणा जो उस घटना से  
 मिली थी।

मौ किलोके एक विमान उप-  
 नगर लाइन्स विमान के समीप दयालव  
 वालीनी है और इसी काबोती की  
 एक दुकान पर खड़े बड़े बुनिया  
 एक किन्नी लाटा निज भाषण  
 के इलाक कर दावों से भरे दिवनों को  
 प्यारी नकरो से विभार रही थी,  
 कुछ बोलना चाह रही थी परन्तु  
 उसके बड़े होने की उपका साथ देने  
 से इनकार करते हुए कम रहे थे।  
 पास बड़े एक राइपीर की वाली  
 मस्ती को निगलते हुए दुकानदार  
 को एक पाब सल और कुछ भी उस  
 बुनिया को देने के लिए बांदा दे  
 दिया। जब बुनिया को मीसो है मे  
 सच बीजे आ गई तो वह न चम्की  
 हुई थी वे सच कह गई 'बेटा!' वहीं  
 एक खया आब बड़ी मुश्किल से  
 कमाया था जो बाट्टा पर बसा गया,  
 पूं ने दाब सिसका दो सां बी सुरकी  
 उदा मासानी से सा पूरि, बरमा  
 को उरकी मुक् (नमक) के सिक् भी...  
 बलम पूम होने से पहले ही बुनिया  
 सिलने लगी, उपर राइपीर ने भी  
 अपना रास्ता पकड़ा।

दुःखी व्यक्ति दूसरों के दुःख को  
 तो यथा शक्ति दूर कर सकता है  
 परन्तु स्वयं किली की ब्याधा को मुन  
 पाइएगा नहीं बन सकता, यंता कि  
 श्रम: होता है।

मया के टट पर एक योगी ध्यान  
 मगल बंदे से ज्यो ही नेत्र बोलते कि  
 उन्हें एक मुबली टट पर बड़ी ह्राण  
 मे एक बच्चे को लिए थी, पहले तो  
 बुद्धमुबली उस श्रेणवती तुराण को  
 निहलती रही फिर अपने मुताबक-  
 को उन तराणों की बंट कर दिया और  
 उसके सब पर का कण्डा को थोती  
 का एक फटा हुआ भाग था, उसे भी  
 'कर पुन: निज जन को उरकी सिधा।

### गरीबी

#### कैसे क्लेशप्रकाशनीको 'अंध' नहीं विल्ली

कौमी से वे क्लेशप्रकाशनी को  
 'अंध' नहीं विल्ली वरत। बांवे  
 'अंध' नहीं। तभी-से उरके क्लेश  
 प्रक श्रेणवती को धर-किया। उर  
 निज प्युड क्लेश मोद नहीं ब्राई, सारी  
 रात क्लेशों ब्रुयते रहे। अन्य मे तंग  
 हो टहलते सुणे। श्रेणक मे पुखा, 'क्या  
 नात है, ब्रुयराज बोलें उर हो रहा है।  
 देवक बोला, 'श्रेणका टहरिए। मैं  
 बंद को को ले आता हूँ।' योगी  
 दयानंद बोले 'यह दवं कोई ब्रुय  
 हुए नहीं कर सकता' पुन: क्लेशे लगे  
 'आज मेरा देव इतना निरंन हो गया  
 है कि एक मां अपने बच्चे के लिए  
 ककन तक नहीं खरीद सकती।'

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी भी कुछ  
 इस प्रकार की घटना से प्रभावित हो  
 कर निज जन पर से कपट उतार कर  
 लपोटी बाबा कहवाने लगे। परन्तु  
 वे दोनों गुण पुरुषों की घटनाएँ परतव  
 भारत की थीं। लेकिन क्या आज भी  
 ऐसी समस्या स्वतंत्र भारत की नहीं है ?  
 अभी तो मास हुए समाचार पत्रों  
 में पटा या कि देश मे लाखों व्यक्ति  
 ऐसे हैं, जो अपने को मृतता के काएए  
 या तो अर्द्धजन रहते हैं अथवा संदेव  
 ही फटेडुर रहते हैं। यदि भारत-  
 कांसि कज से कम एक वर्ष में एक  
 गज कपडा कम खरीदे तो देश मे  
 कपडे की मृतता दूर हो सकती है  
 और ऐसे सब लोग कपडा पहन सकते  
 हैं। किन्तुनी सारगमित बात है। इसे  
 क्लेशे है वन्द वन्द से...! परन्तु  
 हमारा रवेया बिकूल उरत है। हम  
 तो बर्ष प्रति बर्ष निज बर्षों को  
 तादाव बढ़ाते ही चले आते हैं।

नयी दिल्ली का कस्तुरबा नगर।  
 सखी की दुकान। विन्डेया बोला,  
 'बाबू जी, एक किलो और लो तो  
 दाम घटा सकता हूँ।' मीने कहा,  
 'आज मेरे लिए तो कुछ घटा दोने  
 परन्तु कल सब के लिए बदा दोगे।  
 इस प्रकार दाम बढ़ते ही चले जावेंगे।  
 बरौने बलिते तो खरीदने ही परन्तु  
 गरीब नहीं खरीद सकेंगे। इस लिए  
 उर की आक्षेपकता हो तो किन्तो तो।'  
 लेकिन क्या गरीब को कोई दुकाना  
 भी है? रात को सभी सुल को मोद  
 तो जाते हैं। बांन्ती चीक का सकड  
 हुआ पंथर हूबम पूर्य अधिक खाने  
 बावो को लिए पडोपड बिक जाता है,  
 लेकिन नहीं पुर्ण बालुप में सकड पत्थर  
 निगले हुए पूम गरीब सिधारी के

वरत में उठी पीठा को सयन नहीं कर  
 सकता जी मुझे और मुझे पेट विसरकर  
 जनपरी मांस की उरकी रतिन में ले  
 की पीर कर निकलने वाली संदेव  
 पवन का उर की उएए सोंतो से संवेप  
 होता रहता है। कमी कमी संवेप  
 कापी और पंकड़ जाता है और फिर  
 प्रात: मानु-अनु उर के निर्निध लंवांत  
 पर फिरक पडती है। इसी समय परो  
 में सोने वाले सम्पन्न हवाबोरी की  
 बाँहिर निकलते हैं। जवब तो दूर वे  
 ही कन्नी कतरां जते हैं अथिया यह  
 सिंध रास्ता नापते हैं 'रात बाणी  
 अच्ची संरही पडी। तमो तो.....'

'एक कुत्ते की रोटी भित सकती  
 है परन्तु गरीब को सांभद नहीं। यह  
 बाष्य दिन भर खाए तुपुने जने  
 बोसल निचादी का है सिलको नवन-  
 उबोति इतनी शीए हो चुकी है कि  
 अपनी दिन भर की ब्राई है एक  
 रुपया सत्तर पैसा) अच्ची तरह से  
 नहीं गिन सकता। बड़ा आदमी एक  
 सए पाब बाता बनुर खरीद कर  
 खा सकता है और पर के लिए भी  
 एक किन्नी सुनवा सकता है परन्तु  
 समीप छडा क्लेशी बाता निरोह नेपो  
 से निहासरा रह जाता है। सपल  
 साहस बडोर जब वह गरीब विन्डेया  
 को दस का सिक्का दिखलता है तो  
 बिकंता के श्रीमुख से यह बाष्य  
 निकलता है 'जा! जा! बंभुर का  
 रयिका तो देखो! उरं! पहले कमाना  
 तो सीख ले।' ठीक है बेचारे के  
 भाष्य मे वह मेवा कहा? अथी वह  
 कमाया भी तो नहीं। बारे के  
 न्यारे न कर सके जो, भला उसकी  
 कमाई भी कोई कमाई है। और यदि  
 है भी, तो वह कमाई—कमाई  
 नहीं कहलाती।

वे सब समीप उदाहरण पुकार  
 पुकार कर मानव मन को भक भोजने  
 के लिए प्रयाण है। बाह! गरीबी  
 किलनी मयानक है। और वही लोग  
 पपने देने के दापी हैं जो लोग  
 नमाईज जमाबोरी करते हैं। वे के  
 लोग हैं जो गरीब के मुह से निहार  
 कर लपखाने करते हैं। उरके मर्कटि  
 करते हैं और अपनी आक्षेपकताओं  
 को बढाते हैं।

क्लेशे को अपनी सरकार इतका  
 उन्मूलन करवे पर तुड़ी हुई है परन्तु  
 उरके कुड न होमा सब तक हज निज

कलेंवकी नहीं समझे। कम से कम  
 हय अधिक मुह बनाने के काप में  
 ती कलेंवकी एमति न करे। जवनी  
 प्राकमनायुकी को रोक्करनी को लुटिन  
 के मास ब्रुके को बांयो, उरके कि  
 रोखाना बर रहे हैं।

#### विश्वेन्द्रवाराचन्द संतलान कल

६३वीं वीकिफोर्सेव  
 होशियारपुर—६ नवंबर, ६६  
 वि० वीकि शोध मस्त्राण के ६३वें  
 बांकिशोध के अण्यत के रूप में  
 उपलब्धत भारी जन समुह को सम्बो-  
 उचित करते हुए पंजाब-ह्रीराहा के  
 राज्यपाल श्री वर्यवीर जी संकृत-  
 भाषा के महल पर प्रकाश बाता।  
 आपने कहा कि इस संस्थान ने  
 भारतीय संस्कृति के विधि हुए रत्नों  
 को खोज निकालने तथा जववा तक  
 पहुचाने का समुद्रमं पहान कार्य  
 किया है। अपने संस्थान के इस कर्ण  
 प्रकाशित ५० बर्षो का, विनकी कुज  
 पुठ सपवा ६००० से अधिक है,  
 उरकायन किया।

संस्थान के सचासक ब्राषय श्री  
 विरवन्तु जी ने संस्थान के मुदीर्य  
 इतिहास का विरखए प्रस्तुत करते हुए  
 संस्थान विन मकडो-मे से निकल कर  
 अपनी कर्मनाम सिधति बर पडुवा है  
 उनका तथा इसकी अने वाली  
 समस्याओ का संकेत किया। पंजाब  
 विरवविवालय के उप-कुलपति श्री  
 मूरज भानुजी ने संस्थान की भारतीय  
 संस्कृति व संकृत-विधा के प्रमुख  
 के रूप में मुक्ति प्रस्ताव करते हुए  
 तथा इसके द्वारा समंजन किए गए व  
 किए जा रहे कार्य का महल बताया।  
 संस्थान के उप-प्रयाण श्री दीवान  
 जानन्द कुमार जी ने आरम मे  
 अण्यत महोदय के स्वागत मे कुछ  
 बरके कह तथा अंत में कांयकारिणी  
 के सदस्य रिट रला राम जी ने  
 अण्यत महोदय और अण्य सब सजनों  
 का धन्यवाद किया।

#### 'अर्थ कुमार सभा घोषवाह' जिला होशियारपुर, पंजाब' स्थापना

१०-१०-६६ को जिला वेद-  
 प्रचारिणी मया होशियारपुर की  
 प्रचारक मण्डली ने बार्ब कुमार सभा  
 'घोषवाह' की स्थापना की। श्री ५०  
 वेवत शास्त्री की अध्यक्षता में निम्न-  
 प्रथित अधिकारी बने पुन गया—  
 प्रयाण श्री रेलकुमार सेन, मनी  
 सिधोव कुमार, उपमनी प्रमोदकुमार,  
 कोषाध्यय सिध राजकुमारी की।



## प्रचार का प्रकार

### श्री विजयपाल जी आर्य, विद्या श्री वयानन्द कालिज हिसार

आज यह देखकर दुःख होता है कि आर्य समाज के सिद्धान्त सत्य एवं धर्मोपदेशिका होते हुए भी देश में जनका उस विद्यालय परिसरमा तथा स्तर पर प्रचार नहीं हो रहा। अन्य मतों के प्रचार की अपेक्षा वैदिक धर्म का प्रचार कम हो रहा है। लेकिन ऐसा हो क्यों रहा है? इस के भी कुछ एक कारण हैं। इन कारणों की ओर ध्यान देना आवश्यक तथा सम्योचित कर्तव्य है।

धर्म या किसी भी मत के प्रचार में सब से अधिक योग उस के साहित्य का होता है। हमारे देश में ईसा-युग की सच्चा प्रतिम विनयिनी बढती जा रही है। इसका कारण यह है कि वे लोग अपना साहित्य जनता में मुफ्त बांटते हैं। यदि उनका साहित्य विक्रता भी है तो वह सस्ता और सुन्दर है। लेकिन इसके विपरीत आर्य समाज का साहित्य महंगा है और उतना सुन्दर नहीं। आर्यसमाज को भी सफा समीक्ष अपना साहित्य जनता में मुफ्त बांटने की ओर ध्यान देना चाहिए। लेकिन यदि इतना नहीं हो सकता तो कम से कम अपना साहित्य सस्ता और सुन्दर तो करें। अर्जों की चाल का प्रचार अपने पास ही बही हुआ। वे तो लोगों को मुफ्त चाएँ पिलाते थे और साथ पीने वालों को इनाम तक देते थे। इसी तरह आर्य समाज अपना प्रचार कर सकता है।

आर्य समाज अपने साप्ताहिक अथवा दैनिक संस्कार आर्य समाज मन्दिर की चार दिवारी में न कर के बाहर के भिन्न २ स्थानों पर करे। इस से कई लाभ होंगे। एक तो दूसरे लोगों को आर्य समाज के सिद्धान्तों का पता चलेगा। दूसरे उन समाज मन्दिरों में दैनिक समाचार पत्र और अपने धर्म सम्बन्धी पत्र पत्रिकाएँ रखी जाएँ। आने जाने वाले लोग उन्हें पढ़ेंगे। इस से भी आर्य समाज को अपने प्रचार में काफी सहायता मिल सकती है।

आर्य समाज के स्कूल और कालिज प्रचार में बहुत अधिक सहायक सिद्ध हो सकते हैं। लेकिन यदि आदर्श और धर्मोपदेशिक धर्मों अन्वयाकर रहे जाएँ तो। परन्तु आज कल ऐसा नहीं हो रहा। अर्धे मांस खाने वाले, बीवी सिधैंट और शराब पीने

वाले तथा आर्यसमाज के सिद्धान्तों से संबंध बनाकर अन्वयापक स्कूलों में हैं। ऐसे ही लोग कई समाजों के मन्त्री बन बैठे हैं। जैसा नेता होगा वैसे ही प्रजा। अच्छे अन्वयापकों का प्रभाव बच्चों पर भी अच्छा ही पड़ेगा। अच्छे नेताओं का जनता पर अच्छा ही असर होगा।

महर्षि वयानन्द के नाम पर चलने वाले स्कूल और कालिजों में सह-विद्या चल रही है। धन के लोभ में ऋषि के सिद्धान्तों को तिलांजलि दी जा रही है। क्या इस अवस्था में वैदिक धर्म के प्रचार की आशा ही जा सकती है।

हिन्दी का प्रचार देखिए। आर्यसमाजी विस्तार-विस्तार कर रहे हैं कि राष्ट्र भाषा हिन्दी ही। लेकिन पत्र व्यापार संघों में होते हैं। क्या इस तरह हिन्दी राष्ट्र भाषा बन सकती है। अपने सिद्धान्तों का स्वयं विरोध करने से प्रचार कैसे हो सकता है?

राजनीति प्रचार का सुष्ठु साधन है। अकाली उसी लिए प्रचार हुए कि उन्होंने राजनीति में हिस्सा लिया। ईसाई और कम्युनिस्ट राजनीति का सहारा ले कर अपना प्रचार कर रहे हैं। आर्य समाज भी इस ओर ध्यान दे। अन्य पाठियों के सहारे न रह कर अपनी असय पार्टी बनाएँ और राजनीति में प्रवेश करे। सीते हुए समय से कुछ न कुछ तो सीखना चाहिए। राजनीति में ही तो बुद्धमत को फैलाया

गो हत्या नन्हीं नहीं को नहीं तो देश में गडबडी फैल जायगी

गो रक्षा-समिति का मन्त्र

३१-१०-६६ अमृतसर आर्यसमाज साजपतलपर कागजुर के बाणिकोत्सव के अवसर पर गो रक्षा सम्मेलन आर्य नेता श्री देवीदास आर्य की अध्यक्षता में हुई। सम्मेलन में ब्रह्मचारी सतीश चन्द्र, पं० कालीदास अबरभी, पं० विलोकचन्द्र शास्त्री सम्पादक आर्य जगत जालन्धर, माता ज्योत्समा यती और मुकुन्द कामदी हरिद्वार के आचार्य नियत के भाषण हुए। बसताओं ने गो हत्या पर प्रतिबन्ध लगाने तथा गो पालन पर बल दिया और इस बात का सत्यन किया कि बेदों में गो बध लिखा है। बेदों में तो गो हत्यारे को गोभी मार कर मुट्ठे टूट देने की आशा दी गई है। मुस्लिम बायदाहो ने भी अपने राष्ट्रों में गोबध बन्द कर भारत-वासियों की धारमिक भावनाओं की कदर की थी। अपने राष्ट्र में गो बध दिन प्रति दिन बढ़ता जा रहा है लगभग एक करोड़ गायें हर साल काटी जाती हैं। सम्मेलन के अध्यक्ष श्री देवी दास आर्य ने चेतावनी दी

था। पर न जाने आर्य समाजी क्यों राजनीति में हिस्सा नहीं ले रहे। और समाज सुधारक के रूप में रहना चाहते हैं। आर्यसमाज इस तरह रहकर अपना प्रचार नहीं कर सकता। हर समय उचित तरीकों से अपने प्रचार को प्रसारित करना चाहिए। अन्यथा समाज विच्छेद कर रह जाएगा।

## मधु कलश

### श्री विजय निर्वाध

(१)

तुम किस्मत को बुरा दोस्तो नाहूक मत बननाओ बाटो से कम काम चला है थोड़े हुए हिलजो बाहर किया आचरस्य बही ओ करते हो क्या है मजा तभी है जो कहते हो वह करके दिखलाओ

(२)

हिम्मत करके मन के अमर को काबू पा जाता इस दुनिया के अन्दर उस को संकट नहीं सकता कम पैसे के अन्दर ओ भी सुखी नहीं है मन में पैसे बाला हो कर भी वह सुखी नहीं रह पाता

(३)

महाभिलषन के साथ शर्तें हैं होगा दुःख निवर्जन विल के अन्दर दर्द दाह कर करना पड़ता कर्तन मैंने तो बस यह देखा है इस दुनिया के अन्दर यहाँ अन्य से मरने तक है कष्ट कष्ट पर अमरन

### गुर्खई प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा

“हमें यह जानकर आश्चर्य और बेचुका है कि ‘ओसल यंत्रण को नाम’ सम्बन्धी कार्योपदेशन द्वारा बर्धन-कर पोष पास के नाम पर किया गया है।

वर्षक स्वतन्त्र भारत में विद्वि-सियों के नाम रखे जा रहे हो उस देखे समय में इस नीति के विरुद्ध सम्बन्धि-अं एक यह उदाहरण उपस्थित करना कभी भी उचित नहीं माना जाएगा।

किसी राष्ट्र भक्त का नाम यदि उच्च में दान को दिया जाता तो इस नामरी के निवासियों को उससे संतोष होता। किन्तु पोष पास का नाम दिया जाना अवश्य ही आश्चर्य का कारण है।

इस नीति से किसी भी देशभक्त को दुःख ही होगा। क्योंकि यह कर्म नामरी राष्ट्रभानना तथा वाणिक भावना को टेल पहुंचाने वाला है।

इस निर्णय के विषय में पुन-विचार करना है। - - - बबदीय

प्रधान गुजरातीवाला आर्य मूर्खई प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा आर्य समाज रैनावारी श्रीनगर—काश्मीर

### वाणिक निर्वाचन

दिवि २३-१०-६६ को आर्य समाज रैनावारी की अन्त रङ्ग सभा का वाणिक निर्वाचन निम्न प्रकार से हुआ— श्री काशीनाथ जी प्रधान, श्री श्याम लाल जी दर उपप्रधान, श्री श्यामसुन्दर जी वेंच मन्त्री, श्री राधा कृष्णजी रैना उपमन्त्री, श्री मोहन लाल जी कोषाध्यक्ष, श्री मयन मोहन जी पुस्तकाध्यक्ष, श्री दीना नाथ जी हृदय समाज।

### आर्ययुवक समाज दृष्टा

निर्वाचन श्री राजेन्द्रनाथ जी प्रमोदीपल डी. ए. सी. स्कूल की अध्यक्षता में निम्न प्रकार से हुआ।

संरक्षक—पं० हरवलसाल जी मुखर्जि, श्री सुरेन्द्र कुमार जी, प्रधान श्री सत्यपालजी, मंत्री—श्री अमरनाथ जी, उप प्रधान—श्री रमेशकुमार जी, उपमन्त्री—श्री बबन्दी कुमार जी, कोषाध्यक्ष—श्री राजेन्द्र कुमार जी, पुस्तकाध्यक्ष—श्री राजकुमार जी।

कि यदि जब भी गो बध पर प्रतिबन्ध नहीं लगाया गया तो देश में गडबडी फैल जायेगी। आर्य समाज दीवानी के दिन से संसद के बाहर लक्ष्मण-प्रारम्भ कर रहा है।



### पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी का कार्यक्रम

आर्य जगत के परमसत्त पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज का अथार कार्यक्रम यह है—  
 १३ नवम्बर से १६ तक जयपुर  
 १७ से २० तक अजमेर  
 अष्टिमि निर्वाण मेला तथा राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा की जयन्ती समारोह  
 १९ नवम्बर से ८ दिसम्बर  
 आर्य समाज अनामकनी रीडिंग रोज नई देहली इसके बाद बनारस कक्षा कुर्ये।

पूज्य महात्मा जी कितना महान उपकार कर रहे हैं। प्रभु उनको सदा स्वस्थ तथा दीर्घायु रखें।

### आर्यसमाज होशियारपुर

शासिक महोत्सव ता. ४ से ६ नवम्बर तक बंद समारोह में मनाया गया। पं. त्रिलोकचन्द्र शास्त्री की देह कृपा तथा प. मेसाराजी की रेडियो विंगर के अर्चन होते रहे। प्रातःकाल वेद सप्त पं. देवीदास जी की अध्यक्षता में होता था। जले में त्रिपित्त लक्ष्मीदेव जी दीक्षित आर्य कालेज पानीपत, पं. त्रिलोकचन्द्र शास्त्री, प. कन्हय्य जी आर्य हिलेपी, पं. राजपाल महेशमोहन विभट्ट मंडवी, पं. ज्ञानचन्द जी, श्री स्वामी लक्ष्मानन्द जी महाराज, श्री विद्यानन्द जी एम. ए. शासित थे। अनुष्ठ बड़ा ही सानदार था। आर्यसमाज के अधिकारी श्री भीमरि लक्ष्मीदेव जी, त्रिपित्त सत्यप्रकाश जी शासिक त्रिपित्त बंजनाथ जी प्रधान समाज, श्री नन्दसिंह जी मन्नी, प. सभ्भू राम ब शर्मा, श्री महात्मा जी तथा माताओं की स्त्री समाज ने बड़ा उत्साह दिखाया। क्लब कालेज के छात्रों के रोचक संगीत थे। सभा को मार्ग व्यय के सिवाय २२४) ०० मिले।

### पठनीय एवं मननीय साहित्य

वेद प्रबन्ध ५/- मोशार ७५  
 वेद, आत्ममीर के पत्र १/-  
 अक्षर १५/० वेद, वेदी आठ रोचक कहानियां ७५ वेद, लोकट ७५ वेद, लक्ष्मणजी जीवन ५० वेद, कर्म मोशारा २/२५ वेद, सतित नियमन क्यों और कैसे १५ वेद, वैदिक व्याकरण भास्कर ५/-  
 योग बोधक पत्र ११/२० वेद, यम साहित्य अथारक १/-  
 जयदेव ब्रह्मदेव बड़ोदा—१

### समाचार २

#### मान-पत्र

जो कि (आधरस्थीय अडरर विद्या-सामर जी को अमरतर से रोहक स्थानान्तरण के समय रविवार २३-१०-१६ साप्ताहिक सस्त्रं में आर्य समाज सारस रोह अमरतर की ओर से साधर-संरम मण्ट किया गया।

१९४७ के बाद का एक निरीह-दिन-अब अमरतर लोधा-लोधा, पका-पका, क्काल ता-अर अस्थिय के प्रदान करके, स्वाभ्याय और सत्तमर्थ हृदय मे संयोगे किछी वीषय प्रकाश-किरक की टोह में अल-साल पटला जा रहा था कि डा० विद्यासागर जी ने चुपके से पदायंशु किया मण्टल हासिल में अंटी सुपरिर्मण्डके के रूप में। लोप्री ही उच्च शिक्षायं तीन वर्ष के लिए सदन बना हुआ। लोटे तो सुपरिर्मण्डके बनकर। देखते-देखते एक अस्थित्व उभरा सहायुमृति का पुट लिए, शासित का इत बन्कर तप और त्याग को मूर्तंभव देने के लिए। स्वागत के बह एख तो मोज रहे स्यात्, अथवा स्मरण नहीं, पर आज विदाई की अस्थित्वस्थीय दुःख देना हृदय को आघोहित कर रही है। कल जो आधुनिक बनकर आए थे, जन-जन के हृदय में आज एक चिर-स्मरणीय अस्थित्व छाप टीस के रूप में देकर जा रहे हैं।

विश्विस्तार कार्य को अस्थित्व के रूप में अपनाया अवश्य, पर कर्तव्य सदा भाषना पर विजयी रहा। जीवन का मात्र सत्य सेवा रहा। मनुष्य मात्र की सेवा—विना भेद-भाव के। सवमी का मोह ही पखड खा कर रह गया अथवा भेद बाधक बन गया। सेवा समों परमहोमो योगिना-मण्यार्याः नीति के इस वाक्य की अमरता को मोषोषो की तुलना में एक सद्-गृहणीने ने मूढता कर रख दिया। केवल इतना ही नहीं बल्कि परिस्थितियों को परमपराजों में न बहु कर कुछ कमीन माण्यार्या तथा Tent System अथवा विना मारे-पीटे प्रेम से विना क्रोध भाव दिखाए बिकिसा की पदतियां प्रदान की। आपको देव कहकर पुकारे अथवा अष्टि कह कर? दोनों ही अंशायं यथार्थ लग रही हैं अतः हे देवर्ष! धन्य है आपका श्रम और छत्र-

अवा कटि इतिहास आपके इस उत्सव उदारारण से अवर उठे उठा है।

आप कल रोहतक के लिए चल दिये। जहां हृदय विदाई की टीस को अनुभव कर रहा है इस विषयात् से कि सहा की जतना आपके स्वागत में सात्पात होगी। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि सहा आपको दीर्घायु प्रदान करे, स्वाभ्याय और सत्तमर्थ प्रदान करे, ताकि आप जन सेवा के इस अनुभव को अधिकधिक सादात् कर सकें।

अतं में हम आर्यसमाज तारंते रोह की ओर से सव विषये प्यार का जो आप सदा बनाये रहे है व्यवहार देते है और आपकी मंगल कामना के लिए एक बार फिर प्रभु से प्रार्थना करते है।

हम है आपके  
 समस्त आर्य सदस्य  
 आर्यसमाज सारस अमरतर  
 दानापुर आर्यसमाज  
 का उत्सव

प्रति वर्ष की भासि इस वर्ष भी आर्यसमाज का उत्सव १६ से १९ अक्टूबर तक मूनामण्ड से सम्पन्न हुआ। इस उत्सवस में एक सप्ताह तक मुहूर यम होता रहा। सेवा दिनों में अत्यानन्द आदि का कार्यभर चलता रहा। इस अवसर पर समाज मुखार, शिसा सम्मेलन राउट भाषा सम्मेलन व वेद सम्मेलन, आर्य महिला सम्मेलनो का भी आयोजन किया गया था। आचार्य कृष्ण जी द्वारा समाज मन्दिर में अग्र्यात्म कथा होगी रही।

१६ अक्टूबर को अग्र्य नगर कौतन का समारोह हुआ जिस में सर्व-साधारण जनता के अतिरिक्त स्वयं सेवक, सेविकाओं व छात्र-छात्राओं की क्षारी उपस्थिति रही। नगर निवा-सियों ने मोभा यात्रा का भली प्रकार स्वागत किया।

आर्य महिला सम्मेलन का उद्घाटन श्रीमती शकुन्ता अग्रवाल, आर्यकुमार सम्मेलन का उद्घाटन श्री जगदेव जी सिद्धांती एम. पी. भी कृपादि सम्मेलन का उद्घाटन करते

### आर्य प्रादेशिक सभा की

#### आवरणक सूचना

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा में सबंधित सभी समाजों को अपने प्रतिनिधि भेजने तथा स्वाधक भेजने के 'क.स.' कार्य भेजे जा चुके हैं परन्तु गति बहुत धीमी है। समय बौधा रह गया है अतः अपनी समाजों के प्रतिनिधियों की सूचि तथा स्वाधक सभा के कार्यक्रम में यथा सम्भव भेज कर कर्तव्य पालन करें।

—समा मन्त्री

हूए श्री रामानन्द जी क्षाली ने भी रसा की उपयोगिता बताते हुए उसके सामों पर प्रकाश डाला उत्सव हर प्रकार से सफल रहा।



#### शुभ समाचार

आर्य जगत को यह समाचार पढ़ कर अस्वनाता होगी कि आर्य जगत के प्रसिद्ध योग्यात्मो तथा आर्योय मन्दिर का सभासक श्री रामसिंह जी वंश कविराज की सुपुत्री सुधी विमला अष्टम वेणो की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया है और छत्रपुति प्राप्ती की है। वंश जी ने सप्त अक्षर पर यम का आयोजन किया और आनन्द स्वामी जी महाराज ने कन्या को हूए आशीर्वाद दिया तथा जीवन को उच्च बनाने का उपदेश दिया। वंश जी ने ५/- आर्य जगत को भेंट किया। हम उनको इस प्रथम सम्बन्ध के लिए उन्हें व्यवहार देते है।

### वेवाहिक—

#### वधु की आवश्यकता

केसरीय सरकार के कर्मचारी एम० ०० पास २५ वर्षीय आर्य शुक (नामलपुत्री अरोडा परिवार) के लिए योग्य वधु की आवश्यकता है। दौलत एवं जाति का बन्धन नहीं। संवीतभा, अत्यापिका और निर्धन कन्या को प्रार्थनिका ही जारपी। सड़के के दाए बायू में नुसल है पर सभी काम बन्धी कर सकता है। भासिक आय ३०० ०० है। कृपया पूरे विवरण सहित निम्संको लिखें—

भासिक ११५  
 द्वारा 'आर्य वानर्' साप्ताहिक निफ्ट कोर्ट बाबल टाऊन रोह, जालन्धर नगर।



द्वितीय सं. २०५३

[आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालंधर का साप्ताहिक मुखपत्र]

Regd. No. P. 121

प्रकाशक श्री श्री

मासिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६, अंक ४८

१२ मार्च/वर्ष २०२३ रविवार, दशान्वदाब्द १४२२ - २७ चैत्र १९६९

(तार 'प्रादेशिक' जालंधर)

### वेद सूक्तयः

तमिन्द्रं वाजवामोर्षि  
 ह्यं सव वृष-उष- इन्द्र-नेत्रं  
 शानी वदन्तु इन्द्र को वाजवामोर्षि-  
 स्तुति करते हैं। हे अग्ने! कोई  
 किसी का स्तुति करे, किन्तु हम तो  
 तेरे ही प्रक-हैं। आर्यों ही स्तुति  
 करते हैं। आप के शिवा हमारा  
 कोई भी उपलक्ष्य नहीं।

#### वन्दे षुक्ताय हृतये

अग्नेच! तेरो इन्द्र से हमें वन्दे-  
 करे-असमक, मुष्मन्-वृष को, इन्द्र  
 का राक्षस की, वाजवामोर्षि वदुत  
 को हृतये- मारे के लिए दन प्राप्त  
 हो। वन्दे को-विष्णु आदि पार में  
 अन्वृच करते वासा वृष है, उसे  
 भारने में प्रतिपालनी करें।

#### स वृषा वृषभो भवतु

वः-वह वृषभः-मृष को  
 वृषा वृषभो भवतु वृषा वृषभो भवतु  
 वृषभो भवतु। हे अग्ने! वृषभो भवतु है,  
 सब प्रकार के वृषभों के वाता हैं।  
 वाष ही वृषा हैं, सन्ताने वनवान  
 प्रतिपालनी हैं। आप से व कोई  
 वृषा न कोई वृषाभ है।

#### वृषः-वृषभो भवतुः

वृष इन्द्र का अभयान सारे  
 वृषभों का वृषभ है, वृषभ इन्द्र  
 है वृषी वृषु-वाजवामोर्षि वृषभो  
 को वृषो भवतु-वृषभो भवतु है, वृषभो  
 को वृषो भवतु-वृषभो भवतु है, वृषभो  
 को वृषो भवतु-वृषभो भवतु है।

### वे दा मृत

राष्ट्र के बलवान वीर

ओ३म् अस्माकामिन्द्रः समृतेषु ध्वजेष्वस्माकं  
 या इववस्ता जयन्तु। अस्माकं वीरा उतरे  
 भवन्त्वस्मां उ देवा अत्रता हवेषु ॥

संस्कृत. उत्तर. अ. २१ ख. १ सु. ४ मं. २

अर्थ :- राष्ट्र का इन्द्र (अस्माकम्) हमारे (इन्द्रः) राष्ट्रप्राप्तक  
 (समृतेषु) मिलने पर (ध्वजेषु) हमारी ध्वजों के (अस्माकम्) हमारी (वाः)  
 को (इवः) वास प्राप्त है (ताः) के (अवन्तु) विजय प्राप्त करें, (अस्माकम्)  
 हमारे जो भी (वीराः) वीर सैनिक हैं वे (उतरे) ऊपे, विजयी (भवन्तु)  
 होने (अस्मां) उन की (देवा) दिव्य मोरचम (अत्रता) रखा करे (इवेषु)  
 संसर्ग में। वीरों की वीरों को हानि न पहुँचा सके।

#### भाव यह है

हमारा राष्ट्र प्राक्त इन्द्र वीर ही कि वह इन्द्र बन कर सदा विजयी  
 होता रहे। संघर्ष काल में सब हूँ वृषभों के साथ भिड़ जायें। हमारी  
 ध्वजों उन से मिली हों तो उन विजय समय में वह हमारी रक्षा करता  
 रहे। हमारे शिवा, वृषु का नाव करने वाले शत्रुओं की सदा विजय होती  
 रहे। हमारे सैन्य अन्वुओं पर सर्वत्र भारी हों। सत्य सति में हम सभी  
 निर्बल न हों। हमारे वीर सैनिक वृषे ही रूपे एवं बने वाले हों। आगे ही  
 अग्नि अग्नि करने वाले हों। जितने भी दिव्यजन हैं, वेनों का संबन्ध है,  
 वृष सारा हमारी रक्षा करने वाला ही। हम जनता का सब जो साथ लेकर  
 रहें। सारा देवजन हमारे सैनिक की पीठ पर हो। हम विजयी हों।

#### स्वाध्यायात् मा प्रमदः

हम ऋषि भवन पर आचार्य करे फिर देखे कि आप का जीवन  
 किस धारण्य मुखरता है। आपः उल्लर सत्य आदि से निवृत्त होकर  
 किसी आर्यवृत्त धार्मिक अथवा न विद्यार्थुवार कर्म करें। ऐसा करने से आप  
 का सामर्थ्य दिन प्रति दिन न्यून होय। मन शांत रहेगा।

सैनिक कर्म में निवृत्त होय। आचार्य विचार उपा-अनेक। जतः

सामर्थ्य बढ़ने का-अवसर करें।

### ऋषि दर्शन

सततं नमोऽस्तु ते

हे परमेश्वर! आप को हमारा  
 निरन्तर नमस्कार हूँ। हम आपकी  
 ही वृषा की भावना से प्रणाम करते  
 हैं। हमारे लिए तो आप ही एक  
 माय नमस्कार के योग्य है।

#### सर्वैकच्छत्वात्

हे महान् देव! आप सब से ही  
 उत्कृष्ट हैं, ऊपे हैं, सब से श्रेष्ठ हैं।  
 आप से बढ़ कर सारे विश्व में कोई  
 भी तो श्रेष्ठ न श्रेष्ठ नहीं है। आप  
 सर्वोत्तम हैं। आप को प्रणाम ही।

#### परमेश्वर अमन्त्रविद्या मुखत

हे परमेश्वर! अमन्त्र विद्याओं  
 के मन्त्राह हैं। सारी विद्याओं के  
 केन्द्र आप ही हैं। सब सत्य विद्या  
 और जो वृषाएँ विद्या के जाने जाते  
 हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।

#### विद्यासः प्रान्त दर्शन

विद्यायुं से कहना  
 दर्शी होने हैं। जो वृषभ  
 मोक्षी हैं, उनकी वृषि  
 विद्यत वृषभ हूँ वृषभ का  
 वृषे वृषभों की वृषभों की  
 विद्यायुं से कहना  
 वृषभों की

वृषभ



सम्पादकीय—

# आर्यजयन्त

वर्ष २६। रविवार २०२३, २७ नवम्बर १९६६

## सामवेद का भाष्य

आर्य प्रादेशिक समाज अन्तर्गत जालन्धर स्वर्गीय तपस्या एव त्याग के देवता महात्मा हराराज जी की पुनीत पुस्तक प्राप्त प्राप्त है। यह समाज अपने आरम्भ काल से ही प्रचार तथा साहित्य प्रकाशन के द्वारा विलोप सेवा कार्य करती चली आती है वेद प्रचार का पवित्र काम तो इस का वेद प्रचार विभाग करता है और सत साहित्य को प्रकाशित करने का काम समाज का महात्मा हराराज साहित्य विभाग की ओर से किया जाता है। समाज ने इस दिशा में कितना सुन्दर काम किया तथा बर्नमान रूप में भी किताबें जारी रखी हैं। प्रचार कार्य को इस की पूजा तो है ही। सुवभाषण मन्त्रा इत्यादि का प्रचारक वर्ग किन्तु मनोयोग से वेद प्रचार के काम में जुटा है। भारत के प्रायः सारे प्रदेशों में यह जागरूक रहता है। इस के साथ समाज का साहित्य विभाग भी बड़ा ही सुन्दर काम कर रहा है। जनता के जीवन में धर्म भावना भरने वाला उपयोगी साहित्य प्रकाशित होता रहता है। अभीगत दिनों पूज्य महामाया हराराज जी लिखित पुस्तक सन्ध्या पर व्याख्यान नामक उपग्रह भारतीय लोगों के वाद समाज के माध्यम से प्रो० वेदप्रकाश जी एम० ए० के परिश्रम से प्रकाशित करा कर आवश्यक कमी की पूर्ति कर दी है। और भी उत्तम-उत्तम पुस्तकों को समाज द्वारा प्रकाशन किया गया है। इस की सराहना हमें ही चाहिए।

अभी-अभी समाज के साहित्य विभाग में बहुत ही बड़ा और उत्तम काम किया है। देश विभाजन से पूर्व समाज के उत्तम प्रकाशक महात्मा आर्यजयन्त स्वामी जी महाराज ने सामवेद का बड़ा सुन्दर भाष्य आचार्य वैद्यनाथ जी शारंगी से कराया था। वेद का भाष्य करना साधारण काम नहीं, न ही इस महान् कार्य को साधारण व्यक्ति कर ही सकता है। पूज्य महामाया जी की यह ब्रह्म इच्छा थी कि समय-समय पर चारों वेदों के

भाष्य समाज द्वारा प्रकाशित किये जायें। विशेष कर के साम और अथर्ववेद के तो अवश्य ही निकलें। महात्मा जी ने बड़े परिश्रम व आस्था से सामवेद भाष्य लिखवाया। अब पूज्य उन्नी परम सन्धि ने उस महान् भाष्य को समाज द्वारा छपवाने के अर्थ को भी अपने सभी वेद भक्त मज्जान से प्रवर्णन करा दिया। हमें सारी जनता को यह सुख समाचार देने हुए परम हर्ष होता है कि साम वेद का सुन्दर भाष्य समाज की ओर से इस कर तैयार हो गया है। इस का किताब सुन्दर काम है, किताब सुन्दर टाइटल और छपवाई है तथा किताबें सुन्दर रूप व शब्दों में बड़े छाप गये हैं। इनके लिए किताबें परिश्रम किया गया है—यह सब कुछ देख कर चित्त परम प्रमन हो जाता है। समाज ने परम धर्म वेद का प्रचार करने हुए सामवेद का इतना दिव्य आजीवनयोगी भाष्य प्रकाशित करने का भारी यत्न कर दिया है। अन्य माना प्रचार के अर्थ तो सामाजिक निकासनी रहते हैं। किन्तु वेद भाष्य प्रकाशित करना बहुत बड़ा काम है। दमकें पूज्य महामाया आनन्द स्वामी जी का जितना भी प्रयत्न किया जायें सो ज्ञा है। स्वयं निवर्णन तथा स्वयं इमे प्रकाशित कराने के लिए समाज का माना ऊँचा किया। श्रम का प्रत्यय कर दिया। समाज की धर्म वाद ही वेद जैसी परम सन्धि का प्रसार करने में सारी सन्धि है। समाज ने अपना काम कर दिया। अब समाज, सन्ध्याओं तथा वेद भक्तों का का कर्तव्य है कि वे देशों हाथ इमे को अपने प्रेम परिवार एव जीवन कल्पनी प्रति मनवाने का प्रयत्न करें। अपना प्रत्येक कर्तु, कलिय समाज, सन्ध्या, परिवार कोई भी ऐसा न रहे जहां यह सामवेद भाष्य का सुन्दर ग्रन्थ ना जाये। समाज वेद प्रचार की दिशा में क्रियात्मक रूप उठाया है। वेद के निष्ठा वाले सामवेद भाष्य का प्रकाश कर पड़े। जालन्धर के विद्वान् पुत्रा जससे वे भोले भाले सज्जन भी इस का ध्यान रखें। —तिलोक चन्द्र

## वेदों का घोर अपमान

आर्य समाज के महान् स्थापक ऋषि दयानन्द सरस्वतीजी महाराज ने अपना सारा जीवन ही वेद प्रचार के पवित्र कार्य में अर्पित कर दिया। इस विषयों में वेद को सत्यविदाओं का पुस्तक लिखते हुए वेद का पढ़ना पढ़ना और सुनना सुनना सब आर्यों का परम धर्म कहा। आर्य समाज ही स्थापना वेद प्रचार के महान् मिशन के लिए ही की गई है। अपने आरम्भ काल से ही समाज वेद के पुनीत काम में मग्न प्रचार में जुटा हुआ है। वेदों के सम्बन्ध में समय २ लिखी जाने वाली ऐसी वंशी पुस्तकों की देख कर आर्य समाज मोन नहीं उठ सकता अपने ही या विदेशी लेखक हो, जिन्होंने भी वेदों के प्रतिकूल अवलोकन यानि निरालो या कही—आर्य समाज ने उन सब का समुचित उत्तर देने में कभी संकोच नहीं किया। आज भारत के तमाम विश्वविद्यालयों की ओर से एम ए श्रमियों में वेदों के बारे में जो पाठ्यक्रम नियत है। वैदिक युग को ले कर जो २ विचार प्रयोग जते हैं—उन को पढ़ कर तो सज्जन से भिन्न ही मुक्त जाता है कि सत्यत्र भाग में क्या जो वेदों के सम्बन्ध में गंगा पाठ्यक्रम जारी है। इन चर्चों के कोई भी प्रयत्न नहीं करता। वेद किन्तु है? क्या है? उन में क्या है? इन विषयों को ले कर किताबी भयंकर वाद आने लगे पढ़ाई जानी। आज हम इन्हीं सम्बन्ध में अपनी ही सन्ध्या में उठ कर आर्य समाजी बहने का दम भरने वाले, उन वेद दयानन्द के पवित्र नाम के हो ए. बी कालिङ कानपुर प्रैमी सन्ध्या में उठ कर वेदों के सम्बन्ध में क्या बिचार रखन वाले लोग हैं। उन को और सारे समाज का ध्यान दिखाना चाहते हैं। पता नहीं कि आर्य समाज इतना भावहीन हो चुका है कि ऐसी २ पुस्तक लिखने वाले अपने ही कर्तव्य भाव से इस महासुभाष्य में इतना भी नहीं सुझा कि यह आप में क्या लिख दिया। क्यों आर्यसमाज को कलत्र कर्तन में लगे हो। दयानन्द की पवित्र सन्ध्या में काव्य करने हुए उसी देवता का इतना बड़ा अपमान क्यों कर रहे हो?

श्री डा. हरिदत्त जी शारंगी एम ए. पी. एच. डी. बहुत बड़े विद्वान हैं। मुकुन्द जालानपुर के उपकुल पति

भी यह पूछेंगे। क्यों मैं कानपुर में ही ए. बी कालिङ से सख्त विभाग की भी अपेक्षा है। बड़ा आश्चर्यक है। आने भारतीय साहित्य और संस्कृति नामक एक पुस्तक लिखी है। संस्कृत एम ए पढ़न उमे में कर पढ़ते हैं। चारों वेदों के विषय को समल रख कर विचार में बाधे किया गया है। यह पुस्तक क्या है तथा इस में अपने ही महासुभाष्य में वेदों पर क्या २ कालिङ उछलाने हैं और वेदों को किस प्रकार वर्णित किया है? यह पढ़ कर सज्जन के सारे मिर झूक आता है। मेव और शोक को यही वेदों कि आर्य समाज तथा उनके विद्वान यह सब कुछ पढ़ देख कर भी चुप है। चाहे कोई भी क्यों न हो पर-पु भी वेदों पर हमला करना है उन में समझना क्या? मनुके के रूप में वेदों ही उन पुस्तक की पत्तिका पेश की जा रही है। आर्य समाज तो इन को पढ़ कर अपने अन्तर्म पर मानस करे। डा० हरिदत्त जी एम ए अपनी इस पुस्तक भारतीय साहित्य और संस्कृति के पुस्तक पर लिखते हैं— लिखित तर्काव्या और फल भी जीवन के अर्थ में मासाहार व्रथा उरुत्तरी पर हुआ था आधिकार त्तरी गाय या खल का मांस (beast) ही खला जाता था। मांस को या तो भूज कर यातों में या फिर धातु या मिट्टी के बर्तनों में पका कर खाते थे। पीने के बर्तन पकड़ों के बरतने थे। मद्यपान भी होता था। दो प्रकार के मद्य होते थे।

थोड़ा सा ही सुझा दिया है। आर्यसमाजों के नर-नारी अपनी सन्ध्याओं में उठ कर पढ़ने का काम करने वालों के वेद विपक्षक विचार पड़े और विचारों कि वेद-दयानन्द के वेद परम धर्म है के सिद्धान्त की किताबी मिट्टी पत्तियों को जाली है। सारा समाज मोन है। कोई बोधना या पुष्टता ही नहीं है यह सब क्या और क्यों हो रहा है। क्या हम अपने वेदों को चुके हैं। इन दो पुस्तकों के नामा प्रकाश के प्रत्येक आर्य-जनक के अंकों द्वारा जनता के नामने रखते हैं। हम विदेशी तथा (सिप पृष्ठ २, पर)

## गोबध निषेध और डा. गंडासिंह की बहक

(श्री प्रो० भवानीलाल जो भारतीय M. A. R. E. S. गवर्नमेंट

कालेज पाली (राजस्थान)

यो-यो गोरखा विषयक आदीवन उप होना जाता है, गोरखा के विरोधियों की हिम्मत परत होती जाती है। अब तो वे ऐसे ओढ़े हथियारों पर उतर आए हैं जिस की कल्पना तक नहीं की जा सकती। इन्धून मे डा० गोबध का एक लेख छापा है— 'गोबध पर प्रतिबन्ध' लेखक के इतने मे अपने मन प्रसून सिद्धांतों का उल्लेख करते हुए यह चेष्टा की है कि प्राचीन भारत मे गोबध को धार्मिक स्वीकृति प्राप्त की उसे निन्द किया जाए। ऐसा मतज्ञा है कि लेखक को कभी वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत आदि पढ़ने का अवसर प्राप्त नहीं हुआ अन्यथा वह यह कहने का साहस कभी नहीं करता गोरखा का आदीवन हिंदू शास्त्रों मे अनुमोदित नहीं है। अपने पक्ष में प्रमाण देने हुए लेखक लिखते हैं—

वैदिक और उपनिषद साहित्य में ऐसी धार्मिक रीतियों का उल्लेख हुआ है जिन मे गाय संव, घोडे और बछडे मारे जाते थे। मन्वन्तः लेखक को वैदिक यज्ञों का रहस्य ज्ञान नहीं है। तभी तो उन मे गाय मे संव, घोडा आदि मारना लिखा। अथर्ववेद, गो-वेध आदि के वास्तविक अभिप्राय को ज्ञान समाज के प्रबलत स्वामी दयानन्द ने अपने सत्याय प्रकाश मे स्पष्ट किया है। उन के अनुसार अब मारण राजु का और गो नाम वाणी अथवा पुत्री का है। रामु के उपासक ने लिए जो उपाय शासकों द्वारा किये जाते हैं वे अथर्ववेद संज्ञक हैं। इसी प्रकार मागी के मस्कार अथवा भूमि के घोषनायं किये जाने वाले कर्मों गोमेध कहा गया है। इन का छोड़े अथवा गाय को मारने से कोई सम्बन्ध नहीं। अथर्व-वेद मे 'ब्रह्मण्यो मूयन्' आता है जिस में ब्राह्मण की गो (वाणी) का हनन करने वाले को होतावन्ती दी है। यहां गाय से अभि-प्राय है ब्राह्मण की का, गडा सिंह गोबध के समर्थन मे कोई वेद वा शास्त्रीय प्रमाण न दे कर डा, राजेनु लाल मित्र के Indo Aryans (Vol. I) को प्रस्तुत किया है परन्तु उन्हे हमरण रहस्य बाहिये कि शास्त्रानुषेधन मे उन पदचयी विद्वानों के उच्छिष्ट भोजी डा. मित्र जैसे भाग विद्या विचारों के कवन को प्रामाणिक नहीं समझा जा सकता जिन्होंने वैदिक कर्मों का प्राचीन प्रविर्तन मे अनुशीलन न कर बाधक स्व प्रकानी मेकनव प्राही पाषण्ड्य प्रान्त किया है।

डा. मित्र के अनुसार राजसूय, वाजसूय, अथर्ववेध आदि यज्ञों मे पशुओं का बडे सख्या मे बध होता था। तैत्तिरीय ब्राह्मण का प्रमाण देते हुये वे लिखते हैं कि अकने अथर्ववेध मे ही १८० पशुओं का बलिदान होता था। यहां भी डा. मित्र को भ्रम ही हुआ है। यजुर्वेद के २४ वे अध्याय मे बहा अनेक पशु, पत्नी, कीट, पतंग आदि का उल्लेख हुआ है उन्हे मारना तथा उन को बलि देना वेद का अभिषेक नहीं है। यज्ञ 'आत्मन' किया का प्रयोग हुआ है जिस का अर्थ न समझ जनयं किया गया है। वस्तुतः राजा अथर्ववे के अन्वय पर विभिन्न पशु पशियों को प्रदत्ती यज्ञस्वन पर सगाता था, जिन मे जनता के ज्ञान की वृद्धि होती थी। आश की जैसे विभिन्न प्रदत्तियों का अत्योजन होता है उसी प्रकार के प्रदत्तन यज्ञ के अन्वय पर होते थे। यदि यह माना जाय कि इस अन्वय पर उक्त अध्याय मे उल्लिखित प्राणियों का बध होता था, तो यह निदान हत्याघातक ही होगा। इस अध्याय मे मेडक, मत्स्य, हय, बत्ताक, उल्लु, कण्ठर, नृश, नकुल आदि कतिपय ऐसे जानवरों का उल्लेख हुआ है जिनके यज्ञ मे बलिदान का कही कोई उल्लेख नहीं मिलता। वस्तुतः ये जानवर कहा से प्राप्त हो सकते है, यही उस अध्याय के बताया गया है।

इसी प्रकार मधुपर्क के प्रसंग में गोबध की जो कल्पना की गई है वह भी अम पर आधारित है। अतिथि के स्वादन मे उसे गाय घेत स्वरूप दी जाती थी। उसे ही मधुपर्क में 'गवा-निध' का सकता जिससे यह सिद्ध होता हो कि कभी किसी अवसर पर गाय का धार्मिक विधियों के सम्पादन के लिए बध किया गया हो। यहाँ लेखक ने 'उत्तर राज बरित के उस प्रकरण की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया है जिन मे वनिष्ठ के स्वागतार्थ जाधोकि के आश्रय मे बसतरी (बहदुरी) मारी गई थी। वस्तुतः प्रताक अथवा कथ्य धर्मोत्थाचना मे नाराकृष्टि नहीं माने जा सकते। यदि कथ्य और नाराक को ही प्रमाण मान लिया गया तो फिर धर्मशास्त्रों की

था आवश्यकता रह जागी। मधुपर्क का यह कथन भी शास्त्र के अभिप्राय को न समझने के कारण ही लिखा गया प्रतीत होता है। बिल युग मे भवभूति उल्लन हुए उन समय तक वैदिक शास्त्रों का वास्तविक अभिप्राय लुप्त हो चुका था और मध्यकालीन युग के पाप मार्ग की प्रवृत्तिया उस काल के लोगों की विचारधारा को प्रभावित कर चुकी थी। अतः उत्तरराम बरित वा यह प्रसंग वास्तविक कृत रामायण से विपर्यत होने के कारण अवर्थाणक है।

इसी प्रकार गुरुद्वारायक उपनिषद के उस अंश को भी उद्धृत किया है जिस मे कहा गया है कि यदि कोई ब्राह्मि कि उनके विद्वान पुत्र उत्पन्न हों तो उस दम्पति को वृषभ पका कर खाया चाहिये। यहां उक्त 'वृषभ-पका औपवि ही इत मे उल्लिखित है। अतः आयुर्वेद की औपनिषों के रहस्य को न समझ कर डा. गण्डासिंह का यह कथन कि वेद का मास पुराने युग मे लाया जाता था आधारहीन है। महाभारत के आचार पर राजा रत्नियेव की रसॉरे मे सहस्रो गायों के मास पकने का उल्लेख भी मिल्या और धर्मोत्थावक है। प्रबल तो महा-भारत आज जिस रूप मे हमें उपलब्ध होता है वह अपने मूल ग्रन्थ से कई गुना बडे हुये आकारमे है। शातदियों तक इस ग्रन्थ मे ग्युनाधिक्य होता रहा है। वेद मागों प्रशेषकारों मे मास-भक्षण की पुष्टि में जो स्पष्ट महा-भारत मे प्रक्षिप्त किये हैं उन्हीं मे से एक प्रसंग यह भी है।

डी. बी. एम. आस्टे के Vedic Age (History and culture of the Indian People Vol. I, P. 20) विभाषामन बन्वाई मे प्रकाशित ग्रन्थ को उद्धृत करते हुये लेखक ने यह सिद्ध करने का यत्न किया है कि वैदिक काल मे मास भक्षण का आम प्रचलन था, यहां तक कि गाय का मास भी बलिज नहीं समझा जाता था। ब्राह्म के ब्राह्मण

की मास भोजन परोवा जाता था तथा अन्वेषित अतिथि यज्ञ मे मधुपर्क प्रसंग भूतलव जैसे यज्ञों में गोबध होता था। वस्तुतः वेद तो गोरखा का ही विधान करता है। 'गामा द्विती' जैसे यज्ञों के रक्षणे वेद को गाय को मारना सिद्ध करना साहस मात्र ही है। वेद में 'अध्याय' शब्द का इतने लाया है जिसे किसी भी सूरत में मारा नहीं जा सकता। अथर्ववेद के गोरक्ष मे गाय को हत ब्रह्मचारियों की जाता, वसु ब्राह्मचारियों की दुष्टिण तथा आरिय ब्रह्मचारियों की बलिज कहा गया है। न इस अमृत की नाभि गाय को भी जो निष्पापहे न मारने का स्पष्ट आदेश दिया गया है। 'या मा अनाया अदितिबधित' यह अथर्वनाया गी सर्वथा अव्यय है। बलिज गाय की हत्या करने वाले के लिए वेद ने उसे सिये की गोपी से उडा देने का निषान किया है। ऐसी स्थिति मे गोमास के खाने या श्राद्ध में उसे परतने का तो प्रसन्न ही नहीं उठता। गृत्तमय आरिष याग कामनायें युगों मे निकालने का अब कि निष्ठा लोपुत्र पुरोहित वंश ने यज्ञों के मारण पर पशु हिता का प्रचलन किया। मधुपर्क (अतिथि सत्कार) के अवसर पर गोबध की सर्वथा निरंतर कलित और निषेध है जिस का उल्लेख हम ऊपर कर चुके हैं।

मनुस्मृति के, मास विधायक जो प्रमाण लेखक ने दिए हैं, वे भी उल्लेख अभिप्राय को सिद्ध नहीं करते। प्रथम तो मनुस्मृति मे मूलक ब्राह्म निष्पा-ल्लायक तथा मास भोजन विधायक लोककालन्तर मे प्रक्षिप्त किए गए हैं। इस का सब से बडा प्रमाण यह है कि मनुस्मृति में ही 'अनुमत्या विवाहित' आदि श्लोकों मे माताहार को घोर पाप कहा गया है और आठ प्रकार के पातकों मे केवल माताहार करने वालों की ही नहीं, अपितु उन की अनुमति देने वालों तथा उस मे सहमति रखने वालों को भी पाप का पातनी बताया गया है। मनुस्मृति जैसे उदात्त और महनीय धर्मग्रन्थ मे मासा-हार विषयक प्रजेय निषेधकी ही प्रक्षेपकताओं की कस्तुर है जिन की इस यद्युपन पूर्ण कार्यवाही से कोई भी श्रुति निमित्त धासत नहीं बच सका है।

बरकर का प्रमाण देते हुए लेखक ने यह सिद्ध करने का निम्नत यत्न किया है कि अनुप्राय विधि के अन्वय (विष पृष्ठ ५ पर)

### गो वध निषेध...

(पृष्ठ ४ का संप)

माय, भैस आदि का मांस नियम प्रति न लाता जाए। वस्तुतः आयुर्वेद शास्त्र एक विज्ञान है। उस में बचिंत विषयों का धार्मिक विधि विधानों से कोई सम्बन्ध नहीं। आयुर्वेद तो तथ्य मूलक विज्ञान होने के नाते सभी खाद्य अखाद्य पदार्थों का विवेचन करता है। इस का यह अभिप्राय नहीं कि उस के द्वारा विचारित सभी पदार्थों का नैतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टि में प्रायः के रूप में प्रयोग किया जाए।

नेषक में वैदिक धर्म में प्रचलित इस तथाकथित श्रद्धाघात के निराकरण का श्रेय बौद्ध धर्म को दिया है। यह अवश्य सत्य है कि तत्कालीन ब्राह्मण धर्म में यज्ञों में पशु-हिंसा के प्रचलन को देखते हुए प्रथिमया स्वर्ण योद्ध धर्म में वेद और यज्ञ के विपक्ष आवाज उठाई थी, परन्तु यह कथन नितास्त निर्मूल है कि बौद्ध धर्म ही वैदिक धर्म में अहिंसा और प्राणी मान्य के प्रति दया के भावों को जगाने में समर्थ हुआ। वस्तुतः अहिंसा और मृत दया ही वैदिक ब्राह्मण धर्म का मूल से एक अविच्छिन्न अंग रहा है। वेदों में 'यजमानस्य पशून् पाद्वि' 'माहिंसयात् सर्वाङ्गभूतानि कर्ह कर प्राणिसमाज के प्रति दया का भाव दर्शाया गया है। अहिंसा को वैदिक योगदर्शन में महा-प्रत माया गया है और उसकी सिद्धि ने संश्रया की उपलब्धि बताई गई है। मनुस्मृति, उपनिषद्, गीता, महाभारत और द्वाहिंस आदि सभी ग्रन्थों में अहिंसा को सर्वोपरि धर्म माना गया है। यह बात नहीं कि भारतीय समाज में ब्राह्मण का शीर बौद्ध आदि ईषिकेतर सम्प्रदायों के द्वारा ही स्थापित हुआ हो। भारत की वैदिक परम्परा पर आचारित वैष्णव प्रस्तावों में भी अहिंसा को सर्वोपरि स्थान मिला और यह निश्चित है कि वैष्णवों का अहिंसावादा विचार ही अन्तः से बौद्धों की अहिंसा से अग्रभावि नहीं था। अतः नेषक उन लोगों की बकालत करने से भी नहीं चुकता जिन की दृष्टि में मया का धार्मिक दृष्टि से कोई महत्त्व नहीं है और जो गोधप में पाप नहीं समझते। हमारी दृष्टि में मया का प्रविभता और उसकी महत्ता को देश में धार्मिक, सांस्कृतिक और परम्परागत कारणों से सर्वोपरि महत्त्व

### आर्यसमाज सैक्टर ८ चरडीगढ़

गऊ को राष्ट्रीय पशु घोषित कर इसकी रक्षा के लिए सम्पूर्ण राज्य नियम बनाना चाहिए। चरडीगढ़ के गऊ रक्षा सम्मेलन में कुंजर मुखलाय आर्य मुयाफिर और देविषो ने सत्याग्रह के लिए अपने को पैदा कर दिया।

#### आर्यसमाज के उत्सव की धून-धाम

दिनांक १२-११-६६ को आर्यसमाज सैक्टर ८ चरडीगढ़ के आठवें धार्मिक उत्सव के मोरसा सम्मेलन के 'प्रधान पद में भागए देते हुए आचार्य प्रियव्रत जी पुष्कल कागरी ने कहा कि मोरसा के लिए गो पालकी रोक का काम सम्पन्न होगा चाहिए। जिसमें योद्ध गऊ को भी मारने की आज्ञा नहीं होगी चाहिए। और यह तब ही सक्ता है जब कि गऊ को राष्ट्रीय पशु घोषित कर उस के प्रति सम्मान की जाए।

कुंजर मुखलाय आर्य मुयाफिर ने अपने बोलचाली भाषण के मध्य कहा कि आर्यिक स्थिति का बहाना बनाने वालों को श्रेष्ठ दयानन्द की विधी हुई मुस्तक गऊ करएनिधि को पटना चाहिए।

जिस में उन्होने धार्मिक नामों के आधार पर लिखा है कि एक गाय के मारने से एक लाख २० हजार मनुष्यों के पत एण्डर और शरीरों की हानि होती है।

बहिन सुधीरा देवी जी ने देविषों की ओर ने मत्याग्रह में जाने की घोषणा की।

मिलना चाहिए। जिसने भारत में जन्म लिया है और भारत के जल और जन्म से पला है उस के हृदय में तो माय के प्रति मातृवत् प्रयुग् भाव होगा ही चाहिए, चाहे वह किनी भी धर्म का मानने वाला क्यों न हो। रहीम, रसखान, जायसी और कबीर की उदार विचारधारा को स्वीकार करने वाले लोगों को ही भारतवास्य अपनी जमा का ऋण बनाये, उन लोगों को नहीं जिन्होंने अल्लाहउदीन, औरस्येव और सिन्ना का आदेश उल्लंघन कर भारत के धार्मिक शोषार्थ को समाप्त किया और सांप्रदायिकता के बीज बोये।



सम्मेलन में श्री कौमप्रकाश जी आर्य और श्री जयदेव ज्योति बाले और अन्य महामुनाओं ने सरकार पर यह आरोप लगाया कि अरबों को राज्य में बहा १८०८ नुबड खाने से बहुत अपने राज्य में इनकी सख्या २०२२ हो गई है।

सम्मेलन में निम्न तीन प्रस्ताव पारित करके गृहमंत्री तथा प्रधान भारत सरकार और चीफ कमिश्नर चरडीगढ़ को भेजे गये।

१. गो हत्या की पावनी सारे देश में कानून के द्वारा लगा देनी चाहिए।

२. आर्य समाज द्वारा चलाए गए सत्याग्रह का जोरदार समर्थन किया गया।

३. चरडीगढ़ में गऊ रक्षने और पालने का अधिकार सब को होगा चाहिए जैसा सारे देश के अन्दर है। उत्सव में १२,११,६६ को महा-श्रेष्ठ दयानन्द निर्वाण दिवस के स्वामी मेधावी जी सायदेव मार्तण्डकी अध्यक्षता में सत्सरोहृदुर्बक मनाया गया।

शुक्रवार ११,११,६६ को अठारह बजे से पाच बजे तक नगर कीर्तन निकाला गया जो कि एक मील लम्बा था जिस में अनेक प्रमुख सस्थाओं ने भाग लिया।

६ नवम्बर से वेद स्वामी द्वाधानवाचस्पति सामवेद मार्तण्ड श्री स्वामी मेधावी जी एम०ए० विद्यालयाकार की अध्यक्षता में सामवेद महाज्ञ हुआ। स्त्री आर्यसमाज के उत्सव में बहिन सुधीरादेवी जी का सारगभित उपदेश हुआ।

—आशुदाम आर्य पुरोहित समाज

### आर्य प्रादेशिक समा की आवश्यक सूचना

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा में सम्मेलित सभी समाओं को अपने प्रतिनिधि भेजने तथा दशास भेजने के 'क.स.' फार्म भेज आ चुके हैं परन्तु पत्रि बहुत थोड़ी है। समय शीघ्र रहना है अतः आनी समाओं के प्रतिनिधियों की मूचि तथा दशास सभा के कार्यालय में यथा समय भेज कर कर्तव्य पालन करें।

—समा मन्त्री

### यमुना नगर माडल टाऊन

आर्यसमाज माडल टाऊन यमुना-नगर का धार्मिक महोत्सव भी बड़ी धूम-धाम में हुआ। यहा का समाज व इस समाज परिवार के नारे भाई-बहिन बड़े ही श्रद्धात् उत्पन्न हैं। बड़े समारोह से जयन्ता करते हैं। श्री दीना नाथ जी चण्डोकर प्रवान तथा श्री गजिब कुमार जी मन्त्री के माय सारा समाज ही नूब समाज के काम में नूटा हुआ है। समाज का निम्नु विवालय नूद प्रगति कर रहा है। उत्सव में पूरे गां ३ नवम्बर से कवा मय के मनुः पवारी श्री प० सुधी राम जी महोपदेशक जी करते रहे। प० राजराल मदन जी की ब प० राम देव जी की मण्डली के भजन होने रहे। उत्सव में स्वामी आनन्द गिरि जी, प० विनोद चन्द्र दास्की, प० वेद शत जी प्राप्ती, प० मेना राम जी रेडियो निवर, ब्रह्मचारी महेश जी, प० अगत राम, बली राम जी, प० राम देव जी मण्डली पवारी। अन्वले में गो-रक्षा सम्मेलन ष सस्कृत सम्मेलन भी हुए। छावों के कार्यक्रम भी हुए। डी० ए० बी० स्कूल व कालेज में भी सूब भाग लिया। श्रेष्ठ प्रचार ने सभा को भी पुष्कल राशि मिली। जहा बडा धानवर था—

### संकराचार्य की गिरफ्तारी धर्म में सोधा हस्तक्षेप

मुशील मुनि का वक्तव्य नई दिल्ली—गत दिवस सर्वोच्च मोरसा महाविद्यालय समिति की एक बैठक में स्वामी प्रभूदत्त ब्रह्मचारी के सम्पन पर स्वामी मुशील मुनि को समिति का प्रधान नियुक्त किया गया। स्वामी मुशील मुनि ने आज एक बक्तव्यमें वास्तुतः संकराचार्य की गिरफ्तारी को धर्म में शीघ्रा हस्तक्षेप बताया। मोहत्या पर प्रतिक्रम ही बनना का हल है।

### वेदों का घोर अपमान

(पृष्ठ ३ का संप)

अन्य लोगों के द्वारा जो वेदों पर अनवर्त लिखा जाता है, उनके विपक्ष अपना रोष प्रकट करते हैं, किन्तु हमारे अपने धर्म में अपने ही लोग वेदों में माय-बल के मास का अह्वार तथा श्रेष्ठवैदिक काम में दो प्रकार का शराव पीना सिद्ध करते हैं—तो वृष हो जाते हैं। वेदों का तथा परम-धर्म वेद का उद्धोष करने वाले देव-दानन्द का तो इतना अपमान न करने दो। क्या हमारी भागनाएँ सर्वया समाया हुई चुकी हैं—३०



हमारे पुरातन साहित्य में क्या बाती है कि प्रमुनिष्ठ अध्यात्मबादी उपरसत में अपने जीवन के अन्तिम क्षण अपने योग्य युवक पुत्रको समीप बिठा कर कहा—वेदोऽग्नि, यजोऽग्नि, लोकोऽग्नि । तू वेद है, यज्ञ है, तू यज्ञ है, परिवार है और तू लोक है। तूने जीवन में वेदनिष्ठ बन कर जान का प्रसार करना है। यज्ञमय बन कर विश्व सेवा में लगे रहना है इस लोक के कर्मों का भी समाधान करतैरहना है। तीनों बाती के होने हुए अब मुझे किसी बात की भी चिन्ता नहीं है। वे तीन बत मैंने अपने जीवन में धारण किए थे। आज तैरे जीवन में इन तीनों विशेष गुणों की देख कर मुझे परम मनस्सन्तोष होता है। अब मुझे ससारा से विडा होते हुए किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होता। मेरा द्रत आगे चल्ता रहेगा।

ऋषि का यह उपदेश बड़ा ही चिन्तादायक है। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में निश्चित प्रकार के तीन कार्य करने आया है उस ने जान का सम्पादन करना है। उसने वेद का सन्देश अपने जीवन में लाकर सारी जगता दत्त देव जान को पहुँचाना है। उसने उसको अपना करके लोगोंको सेवा भी करनी है। केवल स्वार्थ का ससारा नहीं बनाना, प्रसूत मेधामय बनना है। तीसरा द्रत यह है कि उसे लोक भी बनाए है। इस जीवन के लिए भी पूजा न प्रयत्न करना है। इसे मुष्ठी बनाने की और ध्यान देना है। जीवन की यात्रा को सुगमता के साथ चलाने के लिए आवश्यक काम आने वाले पदार्थों का प्रयत्न करना है। जान, सेवा एवं लोभार्जन ये तीनों बातें जीवन का आवश्यक अंग है। इन तीनों में से जब भी कभी एक कम हो जाती है। मनुष्य इन में से किसी एक को भी छोड़ देता है। उस समय जीवन, परिवार तथा समाज की अस्थिति में भारी बाधा उपस्थित हो जाती है। पुरातन युग में ऋषि मुनि अपने ने तीनों बातों को धारण करके अपने शिष्यों को इन से विमुक्ति निष्ठा करते थे। पिता जीवन के अन्तिम समय में निश्चिन्त होकर अंतिक शरीर को छोड़ता था। उसे किसी प्रकार का लोक चिन्ता, भय तक नहीं होता था, क्योंकि उसने अपने बतों का समावेश अपनी सन्तान के जीवन में कर दिया होता था। अन्तिम अवस्था में अपने सङ्केतों को पास बिठा कर यही कहते थे—पुत्र त्व वेदोऽग्नि, यजोऽग्नि, लोकोऽग्नि।

इंसे तो तीनों द्रत जीवन व समाज के लिए बड़े आवश्यक हैं। पुरातन

## उस युग की ओर (श्री ला० सन्तोषराज जो प्रिंसिपल हरद्वार गल्लू मंडल टाउन पानीपत)

अध्यात्मबादी युग में वेदोऽग्नि की अधिक प्रतिष्ठा थी। वेद निष्ठा का सन्धर समय था। घर परिवार में वेदोपासना होती थी। सब सत्य विद्याओं एवं तमाम ज्ञान का भण्डार वेद को माना जाने के नाते वेद का पठन-पाठन परमवश्यक था। जिसने वेद का स्वाध्याय नहीं किया होता उसे उत्तम शब्दों में स्मरण नहीं किया जाता था। प्रत्येक आचार्य अपने आश्रम में, प्रत्येक पिता अपने परिवार, प्रत्येक सन्तान अपने यहाँ वेद के पठने को अपने पुरा-पुरा ध्यान दिया करता। स्वाध्याय और प्रवचन में दोनों कार्य ही बड़े जरूरी थे। जीवन के विभिन्न अंग थे। यही कारण था कि उस युग के ऋषिपति नेजानेवही ने वेदकी शिष्य परम्परा का प्रवर्धन जारी था। प्रत्येक आचार्य अपने शिष्यों को वेदोऽग्नि का प्रतीक बनाने में अपना कर्त्तव्य समझता है। उपनिषदों के युग में यह परम्परा जागृत थी। इसीलिए वेद ज्ञान का प्रकाश चारों ओर फैला हुआ था। जीवन में वेद की निष्ठा प्रचलन बनी हुई थी।

दूसरा समय ऐसा आया कि लोग अपने जीवन में यज्ञ,सेवा भावना को ते अर काम करने लगे। महाराशा प्रताप अन्तिम युग समय में बड़ी बेवैनी थी। गुलने पर कहा कि मेरा पुत्र

विलास में पड़ कर कहेंगे कि मैं स्वतन्त्रता को अपने सुनो के लिये नेच न देवे। मेराह सुनो के स्वाधीनता में ने बड़े कष्टों से प्राप्त की है—इसे अपने सुल्ल ऐहिक भोगों के लिए गम न देंगे। यह विचार मुझे बेचैन किये जाते है। इस पर उन के सेनानायकों ने महाराणा को विश्वास दिनाया, तब कही उस यज्ञ रूप महाराणा ने सुल से अपने प्राण बिसर्जन किए। यह यजोऽग्नि की भावना से भरा युग था। राट्टसेवा, देश भक्ति, जनाता की वेदना को दूर करने का युग था। पुत्र विराजानन्द ने कहा दयानन्द। आज का विश्व दुःखी है। लोग अपने २ स्वार्थ में लगे है। यज्ञ मयों भावना का संबंध तोप होता जा रहा है। यज्ञ के उत को जगाना होगा। बहू युग यजोऽग्नि का प्रतीक था। पिता अपो पुत्र को, गुण अपने शिष्य को यज्ञ भावना के मार्ग पर चलाना चाहते थे। दूसरों के लिए भी जीओ। तीसरा समय आज का है। जिन को केवल लोकाँजिषि का गुण कहा जा सकता है। यही लोक ही जीवन है। योग्य पदाथी को जीवन की निष्ठा बनाना ही जीवन का प्रयोजन है इस समय सारे समाज के जीवन में

## निपेत माडलटाउनका जलस

आर्यमाडल माडलटाउन पानीपत का नायिक महोत्सव बडे ही समारोह से सम्पन्न हो गया। यहा पर समाज के सज्जनों ने देवियो का बडा ही समाज के लिए धन्दा व प्रत्यह है। यह देख कर और भी प्रसन्नता हुई कि मान्यवर ला० सन्तोषराज जी पूर्व मन्त्री सभा अब पानीपत में हर कौर आर्य कन्या स्कूल के प्रिंसिपल बनकर आ गये है। समाज के कामों की ओर भी रुचि हो आणी। जलसे में स्वामी आनन्दमिर्चि जी, प्रिंसिपल जगन्मन्त्री प० जिनोबचन्द शास्त्री प० देवशत शास्त्री, प० राजगण मनमोहन मण्डवी, प० प्रमूदयान जी की महली व प० रामदेव महतो पधारे। सगर कीर्तन कमाल का था। उत्सव का सारा कार्यक्रम ही बडा रोचक था। माडल टाउन समाज का केन्द्र है। बडी बडी गिणाय सभारह है। स्त्री समाज की वहिने भी बडा सुन्दर काम करती है। प्रिंसिपल शानुग्राम जी प्रयाग, भी हुक्मचन्द जी सन्नी सारा समाज ही खुद काम करता है। सभा को काफी बडे प्रचार दिया गया। आठ प्रतिभा आयो जनत की भी प्रति गताह लगी—

स्वार्थ के भावों की जायी चरती है अपने घर की चार दीवारी के अन्दर बैठ कर अपने लिए ही सोचन, जुटान, बनाना, समाना ही एक मात्र काम रह गया है। आज इस समाग उत्साह का गवड का मूल कारण क्या है? क्या बहुसूत्रों की कमी हो गई है। ऐसी बात नहीं। इतनी कमी नहीं। बास्तव में बात यह है कि लोगों के मन की विचारधारा में सङ्कुचितपन आ चुका है। प्रत्येक व्यक्ति, परिवार, समाज केवल अपने लिए ही सोचता है। अपने लिए ही वह काम करता है। अपने को सुखी बनाने के लिए दूसरों को यात ना दे कर भी सज्जित नहीं होता। इसी भावना को स्वार्थ भावना या आसुरी दृष्टि कहा गया है। भोग-प्रचलन जीवन बन गया है। इदन्तम की पवित्र भावना समाग हो गई है। इद मम, इद मम। यह मैं ही और यह मेरा है। इस का प्रबल प्रचार है। अपत्येय का दूषण चलता है। न यजोऽग्नि है और न वेदोऽग्नि का पुनीत पाठ है। केवल लोकोऽग्नि ही रह गया है। शरीर की पूजा ही रही है। आत्मवाद संपाल है। इस स्थिति को बदलना होगा। नये वेदोऽग्नि, यजोऽग्नि के बतों को भी साथ में चिन्तना होना।

## गऊ की फरयाद अपने स्वामी से मजन

श्री माहटर हरिचन्द जी गुप्त जाखन मदी  
गऊ माता दा कष्ट मिठा, गल उतें बल्ले लुरिया।  
दूध, धो, मलाई सोभा वही खवाबदी।  
गोबर मूत्र नाल गुड चोके नू बनाबदी।  
स्वास्थ्य रक्षा दी जेहूँडी दबा, गल उतें...  
जबो ताई हुप दिता, ओदो ताई व्यार सी।  
हूँडी होई गऊ माता चरा तो निकासी।  
दिखो हूँमैं कसाईया दे फड़ा। गल उतें...  
पाण्या तू पापा कोलो मूल नहीं सबदा।  
केर शुभ कामना दी इच्छा मेयो मगदा।  
तेरे सिर बिष पाबानो सवाह, गल उतें...  
नम्बई कलकत्ता जादी एना हाँ मालूम है।।  
बाबिस हजार साड्य रोज हुँदा सुन है।  
किसे भुनेतेया तूँ एह गुनगह। गल उतें...  
गऊ बच बढ हो 'गाभी' दी पुकार जी।  
'गुणा' की वेवती भी एहो बार-बार जी।  
सत्ता भारत दी चाहु करे ला। गल उतें...



# धर्म निरपेक्षता का भ्रम मूल (श्री काशीनाथ जी साहब, डॉ. गोविंदा)

जब से भारत धर्मनिरपेक्षता का घोषित हुआ है सब से इस 'धर्म-निरपेक्षता' का जितना अधिक दुष्प्रभाव हो रहा है उतना शायद कभी न हुआ होगा। मालूम नहीं लोग 'धर्म-निरपेक्षता' का क्या अर्थ लगाये बैठे हैं और उनके दिम्लो में धर्म के प्रति कौन सा बहम समा गया है ?

गत माह सितम्बर में केन्द्रीय राज्य सभा में एक कम्युनिस्ट सदस्य ने उत्तर प्रदेश में पढ़ाई जाने वाली कुछ पुस्तकों में विद्या की प्रतीक सरस्वती की महिमा के बर्णन को 'एक धर्म की बातें इतरे धर्म पर लागने का प्रयत्न बताया। एक कार्यवी सदास्य ने इतिहास को एक पुस्तक का हवाला देते हुए कहा कि 'ओरियन्टल कट्टर सुन्नी मुसलमान या और अन्य मुसलमानों तथा हिन्दुओं के प्रति बहुत कुछ व्यवहार करता था एक मन्दिरो पर भी हमने कचाला था।' ये आपत्तिजनक अब है, इन्हे बच्चों को नहीं पढ़ाना चाहिये।

मैं जानना चाहता हूँ कि यदि किसी व्यक्ति के गुणो-अगुणो का विषय आपत्तिजनक है तो क्या किसी की प्रशंसा ही कभी चाहिये ? क्या उसके दोषो या अगुणो पर प्रकाश डालना ठीक नहीं है ? फिर यदि कोई ऐतिहासिक तथ्य हो तो उसे लोक-मनोरंजक रख देने या लिखने से यह उस दशा में व वास्तविक इतिहास ही न रह जाएगा।

इतिहास में एक ओर जहां ओरियन्टल की धार्मिक कट्टरता को भस्मना है वहां दूसरी ओर बाबर की बीरता, रघु कुशलता, उदयना और धार्मिक सहिष्णुता की तथा जहांगीर की न्यायप्रियता की प्रशंसा भी है। फिर यदि ओरियन्टल सटीके व्यक्तियों के अगुणो का उल्लेख आपत्तिजनक है तो क्या अक्षर का हिन्दू-सिखों के साथ विवाह-सम्बन्ध इत्यादि बातों का उल्लेख इतिहासों के लिए अपमान व लज्जाजनक नहीं है ?

इसी प्रकार प्रत्येक युद्ध के परिणाम या अंत में यह लिख देना कि 'पराजित या हिन्दू बर्षी सौरात्या लठे' किन्तु हार में क्या ये बातें हिन्दुओं को निश्चलाहित व लज्जित करने वाली नहीं है ?

वास्तविकता यह है कि हमारे देश के इतिहास को अर्थ जो मे बहस

कर व विचार कर रहा हूँ। उसी विचार इतिहास को हमें आज तक मालूम नहीं था-पढ़ाये, चले जा रहे हैं। और जहाँ इस प्रकार की है कि भारत का इतिहास धर्मनिरपेक्ष इतिहास लिखा गया। प्रसिद्ध इतिहास की संकटों पुस्तकें प्रकाशित होती हैं और इतिहास विषय पर डाक्टर रेट प्राप्त करने वाले भी संकटों निकलते हैं किन्तु हमारे भारतीय इतिहास वेत्ता व लेखक उसी सीसे के पीसा करते हैं। कोई नयी खोज व सोच नहीं करता। हमें गौरव महाशय (अर्थ) को कुछ पढ़ा गये वही 'बाबा बाण्य प्रमाण' के अनुसार हम मानने व लिखने चले जा रहे हैं। लिखने का नासार्थ यह है कि यदि इतिहास पर भोज की जाय और भारत का सच्चा व प्राभासिक इतिहास तैयार किया जाये तो अति उत्तम ही किन्तु यदि 'धर्म निरपेक्षता का मूल' सर पर सवार होने के कारण दूसरे धर्म वालों के बुद्धिकरण के लिये यदि इतिहास के किन्हीं कट्टर सच्य बातों को निश्चल डालें तो फिर इतिहास की अस्तित्व रखान की पत्ती जायगी। इसके अतिरिक्त धर्म निरपेक्षता के नाम पर की गई ऐतिहासिक कट-छाट का अन्त भी उसी प्रकार काटित हो जायगा जिस प्रकार भाषा के प्राण पर प्राणों की रचना।

अन्त में धर्म निरपेक्षता के तथाकथित महान् प्रेमियों के निवेदन करूँगा कि वे दूसरे धर्म वालों की बुद्धिकरण की नीति बस किन्हीं ऐतिहासिक तथ्यों का कट-छाट के लिए आश्रय न करे अन्यथा नित्य ईद-ईद मांग सामने जायगी और उनका कभी अंत न होगा। फिर एक दिन ऐसा भी जा सकता है जब कि आप के द्वारा बहुकाम हुए कुछ लोग यह भी मान करे कि हम किसी नया विषय में रचित भारत माता की बटना (राष्ट्र गीत) न पाएँ।

★ जिस का स्वरूप ईश्वर की आज्ञा का पालन और विना पक्षपात के न्याय और सच्ची भलाई करना है, जो कि प्रत्यक्ष आदि प्रमाणों से परीक्षित किए हुए सत्य भाषणार्थि धर्म है और जो वेदोक्त होने से सब मनुष्यों के लिए यही एक मानने योग्य है, उसको धर्म कहते हैं।

# पुराणों की जिज्ञा

(श्री हरिदत्तचन्द्र जी गुप्त, मन्त्री आय समाज ज्ञा जल मंडी)

आपें समाज का तीव्रता मित्र है कि 'वेद सत्र सन् विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पठना-पढ़ाना और सुनना सुनाना सब प्रायों का परम धर्म है' जो आदि मूढि में परमेस्वर ने हमारी सुपमता के लिए अपना विधि ज्ञान हमें वेदों द्वारा दान में दिया, जिसे हम पहलू करके ईश्वर के परम धाम मुक्ति को या सकें, जब तक आरत धर्म में वेद विद्या जारी रही, और वेदों द्वारा बनाये गए ऋषि-कुल धर्मो का योगो में मान रहा तब तक धर्मो सत्र सुपम अपनाये रहे और निराकार परमात्मा की उपसना में 'बाबा बाण्य प्रमाण' के अनुसार भारत देश मुख सायग में ही दुर्बकिया लभता रहा कोई-कुछ कोई श्लेष वा अन्य कोई संकट और न ही अन्य प्रकार की पूजा का रोग लेशमात्र भी किसी पर प्रभाव न डाल सका। श्री स्वामि स्वयानन्द महाराज लिखते हैं कि 'वैदिको अग्रवृत्ति होने का कारण महाभारत युद्ध हुआ इनकी अग्रवृत्ति में अविद्या अन्वकार के मूलोस में चिह्नित होने से मनुष्यों की बुद्धि मरण मुक्त होकर जिसके मन में जंजा बाधा वैसा मत पलाया, उन सब मतो में चार मत अर्थात् जो वेद विशद पुराणों, जैनी, फिरानी और कुरानो सब मतो के मूल है जब विद्या और वेदोक्त धर्म का प्रचार हुए होने लगा और देश छोटे २ टुकड़ो में बट गया, लोगों में जो वेदादि पठने का रिवाज का गमाया हो गया, अनेको मत मतान्तर प्रचलित हो गए सब मत बातों ने अपना २ राग माना आरम्भ कर दिया, यदि कहीं बुद्धिमान और मुक्तिपूजा भी रही है तो उषर थादो का दौर चल रहा है, यदि एक ओर अस्वमेध-यज्ञ, गोमय यज्ञ और नर मेघयज्ञ रखाया जो रहा है तो उषर दूसरी ओर मद्य का पीना और पिलाना और सस्त्री मुक्तो दिवाई जा रही है। जो जिसके भी में आया किया और भोली जनता ने उसे ही सत्यमान अपने आपको मन्-अष्ट किया।

१८ पुराणों के कर्ता व्यास जी को मान और देवो भाग्यवन्तादि पुराणों में जो मणोपे होके है उन पर भूडे दोष लगाकर उन्हें भी बदनाम करने में मे कोई कसर उठा नहीं रखी, प्रथम तो व्यास जी १८ पुराणों के लेखक

ही नहीं, ये ऐसी भूडी बातें अर्थात् मद्यमान. मास भयण, अविद्या करना, भूड बोधना, चोरी कलना, गर्भपात करना, मूठ लेटना आदि निषेध मकले थे, अर्थात् जो तो बडे विद्यान, सत्यवादि धार्मिक योगी थे, दुर्गा पाठ में देवो का लेख है कि राजा भोज के राज्य में किसी ने मारकडे और शिव-पुराण व्यास जी के नाम लिखकर प्रकाशित किये जब भोज को पता लगा तो उनने पत्थिों के हाथ कटवा दिये। स्वामी जी लिखते हैं कि 'पुराणों में यह सिद्ध होता है कि जिन विंगेभी मतो ने भाग्यवादि नवीन कल्पित पुण्यके रचो है उनने व्यास जी के गुणो का लेख भी न था, वेद धाम्भो के विशद ऐसी ऐसी भूडी बातों का लिखना व्यास जी जैसे विद्यानों का काम नहीं बल्कि यह विरोधी स्वार्थी पेट और पेट लोगों का काम है।

धर्मिक पु १ मदन मोहन मालवीय जी ने तो यहा तक कहा था कि सभी पुराणों का संशोधन होना जरूरी है और उन्होंने लाल वैलस से कही कही जो अशुचित श्लोक या वाक्य उनमें लिखी है निदान भीमसाये थे, पुराणों में कोई ऋषिमुनि या महामाता को कलक लगाए न छोड सभी देवो देवताओं को राग मारा। इन मार्तक अर्थात् सत्यो ने देश का बेडा हो तो परक कर दिया. इनकी गन्दी हिता ने लोगों के दिलो पर लामे लगा दिए थे। जैसे लिखा है कि—ब्रह्मा को दोष लगाया हुओ मग विषय करायो. जो वे पूण विद्यान।

महर्षि दयानन्द को महाराज ने फिर ने हम पर अवार डया करके वेदो का मूण चमकाकर हमारा प्रमाणिक किया और हमारा दिखनाया वेद विद्या का प्रकाश पर-पर म किया जो भी प्रकाश आज हमें देश मे दृष्टिकोचर हो रहा है यहाँ मने कुछ आर्यसमाज के राने रानन्द के परिभ्रम का जो परिणाम कहा है कवि ने—नेके नारे देव का प्यार. करके वेदो का प्रचार. मयूर नवरो से आग के मयूड दयानन्द।

तो यदि आप मनी आपें-अन पुराणों के मणोपे मुनना चरु और (संप पृ ८४)





देलीफोन नं० ३०५७

[आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर का साप्ताहिक मुखपत्र]

Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ पैसे

वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६, अंक ४६)

१६ मार्गशीर्ष २०२३ रविवार—दयानन्दवाट १४२-४ दिसम्बर १९६६

(तार 'प्रादेशिक' जालन्धर

## वेद सूक्तयः

**ओजिष्ठः स बलं हितः**  
 सः बहु परमात्मा सारे सभार में ओजिष्ठः-बलवान् है। उनके समान कोई भी बलवाली नहीं है। सारे परमर्ष उल्लेख बल द्वारा प्राप्त किये हुए हैं। बही बल-विषय के पालन में हितः-समा दृष्टा है परमेस्वर ही पावक, धारक व उल्लासक है।

**सुम्नी श्लोकी स सौम्यः**  
 बहु भगवान् सुम्नी-सम्यं से बड़ा वश वाला है। बही श्लोकी प्रसन्ना तथा पूजा के योग्य है। बहु सोम्यः-समास सुगुण का भण्डार है। उसी की स्तुति करनी चाहिए। उसी की प्रशंसा करनी तथा उसी महान् सुगुणवान् की उपासना करनी चाहिए।

**स बलो अनपच्युतः**  
 बहु प्रभुत्व बलः-महाबलवान् है। बहु २ बली उसके सामने तिर झुकते हैं। (बहु २ बली व बलि-भारिणी को बहु पुर २ कर देता है। बहु अनपच्युतः-है। अपने मार्गों से निरपेक्ष से नहीं बिगड़ता है। एक रख है।

**वशसे उग्रो अस्तुतः**  
 बहु महान् भगवान् बड़ा ही उग्र है, असमान् तथा निरभय में रखने वाला है। बहु अस्तुतः सदा अग्रर है तथा बहु बकलें-सारे विश्व की बन्तने वाला है। बही प्रजापति महान् है।

सा म वे व से

## वे दा मृत

त्रात्रु सेना को भगा दो  
 ओ३म् असौ या सेना मरुतः परेषामभ्येति न ओजसा स्पृद्धमाना। तां गूहत तमसाप-ब्रतेन यथै तेषामन्यो अन्न्यं न जानात् ॥

साम० उत्तर अ. २१ ख. १ सू० ४ मं. ३  
 हे वीर मरुतो ! सैनिको ! देवो-अको) बहु (वा) को (सेना) सन्धु की सेना (मरुतः) हे वीरो (परेषाम्) धनुओं की (अभ्येति) चली जाती है (न) हमार (आजसा) बल से (स्पृद्धमाना) मुलाखिना स्पृद्धा करती हुई आती है। (ताम्) उस सन्धु की सारी सेना को (गूहत) छाप दो कही का भी न रहने दो (तमसा) अन्धरे से (अपब्रतेन) किन्ना शक्ति को नष्ट करने वाले अपब्रकार से उसे सर्वथा अवलक बनाकर रख दो (यथा) तसिक (एतेषाम्) दूसरे को (न जानात्) जानने भी न पाये। एक का दूसरे को पता तक भी न लग सके ! ऐसी सार मार दो।

### भाव यह है

हे राष्ट्र के वीर सैनिको ! आप की वीरता से सारा देश सुरक्षित है। देवो तो—बहु जो सन्धु की सेना अपना दम बल बनाकर राष्ट्र पर हमला करने चली आती है। उसे ऐसी मार दो ताकि उसे सदा के लिए पाट-पड़ाम जा सके। बहु सेना हमार बल की स्पृद्धा करना चाहती है, हमारी शक्ति का मुलाखिना करना चाहती है। उसे घेर कर ऐसा अपब्रकार करके मारो। तमो भाएणों से उसे डोष कर उनमें एक-एक को ऐसा मारो कि उनका नामोनिमान इस पृथ्वी तल से लुप्त हो जाए। उन प्रान्त का शासक सैनिक फिरी वर भी बाकमल करने का साहस न कर सके : हे राष्ट्र के वीर सैनिको एताव पराक्रम दिखाते हुए अपने देश का गौरव बढाओ। मुग्धारी ही वो सार पर देव को अभिमान है। इसी कारण देव की सर्व-साधारण अनवा राष्ट्र के प्रतापी सैनिकों का अभिनमन करती हुई उन की सब प्रकार से तस-मन-भय नदेकर उल्लासित करने को उत्तर रहती है। हे राष्ट्र रक्षा सैनिक ! तु धनुओं को पराल करावा हुआ निरबो हो। देव की अतना का आशीर्वाद तेरे साथ है। तु बिजबो होता हुआ राष्ट्र आक्रमण करने का नतीजा सन्धुओं को दिखा दे।

## ऋषि दर्शन

ईश्वरो गत्सका मेधाबिनः

जो परमेस्वर की उपासना करने वाले होते हैं, सन्धु के प्रेमी भक्त हैं, वे मेधावी होते हैं। पवित्र ज्ञान के मासिक होते हैं। उन की मेधा होती है। प्रभु भक्ति से मेधा की प्राप्ति हो जाती है।

### स एकोऽद्वितीयः

बहु परमेस्वर एक है तथा उस के समाने और कोई दूसरा नहीं है। प्रभु एक ही है। उसी एक भगवान् की जानना, मानना तथा पूजना चाहिए। अनेक भगवान मानना प्रभु का अपमान है।

### तदाज्ञानाच्छित्तारः

हम सारे उस भगवान् की आज्ञा का पालन करने वाले हैं प्रभु के आदेश तथा नियमों के अनुसार चने तथा अपना जीवन बनाने वाले हैं। उस की आज्ञापालन उस की भक्ति है।

### विद्योपासना युक्तानि कर्माणि

सुभ कर्म ये हैं जो कि विद्या ज्ञान और उपमासे से मुक्त होते हैं। ज्ञान पूर्वक कर्म ही उत्तम होते हैं। प्रभु के अंश से कर्म पवित्र होते हैं विद्या भक्ति के कर्म-कर्म नहीं।

भा एव धृ म का ये



सम्पादकीय—

# आर्यजगत

वर्ष २६ | रविवार २०२४, ४ दिसम्बर १९६६ | अंक ४९

## जालन्धर का केन्द्रीय महोत्सव

आर्यसमाज बिक्रमपुरा जालन्धर शहर का मासिक महोत्सव सारे धाम में एक केन्द्रीय समारोह में ढूँर दूर से आने वालों को जीवनमें प्रेरणा मिलती है। इस बार भी यह महोत्सव पूरे सभारोह से समनाया गया। जालन्धर शहर में आर्य समाज की बड़ी बड़ी विद्यालय सन्वाएँ हैं। दयानन्द कनिष्ठ कमेटी ने सम्बन्धित विद्यालय इन सभासदों का महान्केन्द्र बना हुआ है। शारीक इच्छनी नखम्बर से यजुर्वेद यज्ञ के पवित्र कार्य के साथ यह समारोह प्रारम्भ हो गया। आर्य समाज के अपने अथय विद्यालय भवन में ही प्रातः काल यजुर्वेद का यज्ञ होता था। इस में ५० विनोक्त चन्द्र शास्त्री, ५० प्रबन्धक शास्त्री, ५० अयोध्या प्रसाद शास्त्री तथा विनोक्त पुरा समाज के पुरोहित ५० भीम सिंह जी, ५० टंक चन्द जी शास्त्री यज्ञ कराने वाले थे। बड़ी श्रद्धा से यज्ञ में नर नारी शामिल होते थे। पुरोहित विष्णाल से हुई बड़ा सुन्दर दृश्य था। रात को कुम्हार मन्दिर में बेदी की कथा आर्य श्राद्धिक सम्रा के ५० विनोक्त चन्द्र शास्त्री कर रहे तथा प्रविष्ट विमदा मच्छली ५० राजपाल भवन मोहन जी के मीठे भजन होते रहे।

शुक्रवार दोपहर सार्दादा स्कूल के विद्यालय मैदान में समाज के प्रधान प्रिंसिपल श्री प्यारे लाल जी बेदी ने ओडेम पताका सहर्षाई। हर्षराज कानिवाल की छाशाओं ने सुन्दर गीत गाया। श्री ला० देवराज जी, प्रिंसिपल बेदी जी आदि ने बड़े सुन्दर विचार प्रस्तुत किये। रात को आनन्दार कवि बसन्त हुषा। बड़ी घोषा थी। सनि और रविचार को प्रातः के रात तक सजे विष्णाल में बड़ा सुन्दर कार्यक्रम चलता था। उत्सव के दूसरे कार्यक्रमों के साथ साथ रविचार को आर्य प्रादेशिक सम्रा के माननीय प्रधाज श्रीजुल सार्व की श्राव्य उत्सव भीषज की प्रथमता में प्रभाजवाली राष्ट्रीय एकता सम्मेलन सम्पन्न हुआ। राष्ट्र की सर्वधाम विषदन्त फारी प्रवृत्तियों

को समल रखते हुए प्रिंसिपल रत्नाराम जी एम०ए०, ५० विनोक्तचन्द्र शास्त्री ५० ओडेम प्रकाश जी आर्य, प्रो० पृथ्वीपाल तारा, प्रो० राम विचार जी एम०ए०, प्रिंसिपल कुमारी विद्यावती जी आनन्द एम०ए०, प्रो० बेदीराम जी एम०ए० आदि के बड़े प्रभाजशाली भाषण हुए। अन्त में सभापति श्रीजुल यज्ञ जी राज्य मन्त्री का राष्ट्रीय एकता पर ओडेमशी भाषण हुआ।

इस महोत्सव में प्रिंसिपल ५० रत्नाराम जी एम०ए० प्रो० रामप्रकाश जी एम०ए० सी०, प्रो० बेदीराम जी एम०ए० प्रो० ओडेम प्रकाश जी महोत्सवके, ५० विनोक्तचन्द्र शास्त्री, प्रो० रामविचार जी एम०ए० हिलार, प्रो० पी० पी० तारा जी एम०ए० आदि पधारे। सब के सामयिक भाषण हुए। जनताको प्रेरणा मिली। हसरज महिला कानिवाल की छाशाओं के सुरीले गीत तथा एक स्वर से उच्चारण किए वेद मन्त्रो ने सब को मुग्ध कर दिया। सार्दादा स्कूल के छात्रों ने भी निरलस्य की वेल्-वेल में जो मीठे गीत गाये उनको भी जनता प्रभाजित थी। दयानन्द माडल स्कूल के शिशुओं ने भी मीठे गीत सुनाये। सभा की ओर से विषदन्त मच्छली ५० राजपाल भवन जी की ५० मेसाराज जी रेडियो सिगर, ५० ज्ञानचन्द जी ने भी खूब मस्त किये। पिष्णाल की सजावट, श्रद्धिलेख का प्रबन्ध सुन्दर था। माताओं बहनों की श्रद्धा भा देखने योग्य थी। इस उत्सव की सफलता के लिए आर्य समाज के प्रधान प्रिंसिपल बेदी जी च मन्त्री श्री आनन्द सागर जी सब को बधाई।

### धर्मपता की ध्वजा सदा ऊँची रहे

आर्य समाज बिक्रम पुरा जालन्धर के मासिक महोत्सव के साथसाथ ही समाज के माननीय प्रधाज प्रिंसिपल श्री प्यारे लाल जी बेदी ने अपने हाथों से पताका सहर्षाई किए कहा कि यह ध्वजा किसी एक प्राण्य था राष्ट्र की है। किसी एक व्यक्ति की भी यह

नहीं। आर्य समाज भयवान् के पवित्र नाम ओडेम की पताका सदा सहर्षाई है सारे विश्व को इस के द्वारा यह सम्वल देता है कि अपने २ जीवन के कामों में लगे हुए उस महान् प्रगथान को कभी भुला न देना। सारे ससार में सब से ऊंचा स्थान उस परभाजता को देना है। उस के पवित्र नाम व आशीवाद के नीचे सहे हो कर ही मानव अपना जीवन सुखी व मगन्न बना सकता है। जिस को उस का आशय भिन्नता रहता है, उस की सर्वत्र जय होती है। आज के युग में लोग प्रमू को भुलाने लगे हैं। आर्य समाज इस भौतिक युग में सब को आत्मिकता के शान्ति देने वाले मार्ग पर लाना चाहता है। हर काम में भगवान् का स्मरण करे। श्री प्रिंसिपल देवराज जी महान्जने के ध्वजारोहण के समय बड़ा सामयिक व प्रेरणादायक प्रबन्ध करते हुए कहा भौतिक मार्ग में भयवान् का स्थान सब से ऊंचा है। सारे विश्व में उस परम सत्ता का नियम, अनुशासन चलता है आत्मतत्त्व के बिना जो अबस्था भौतिक शरीर की होती है, वही अबस्था भयवान् के बिना जीवन की भी होती है। आज का युग भौतिकवादी तथा भोगवादी है। कोई किसी की बात नहीं सुनना चाहता। इस समय तो बातावरण में भौतिकता की सहर् चल रही है। सब कुछ इसी शरीर को समक रहता है। थोडे समय के सुखों के लिए मानव परदेसवर को भूलगये जा रहा है। प्रकृति का ही अबलम्बन लेने की दौड लगी है। यह युग विषमता का है। मत दिनों छात्रों ने क्या २ आन्दोलन किये। सीमा मर्यादा का पावन तो हीन ही चाहिए। यदि चर में कोई रोष हो जाये या कोई मनमुटाव हो जाये तो क्या उस समय अपने चर की सम्प्रति को क्षान्ति पहुचाना उचित प्रतीत होता है? आज अपनी भाजनाओं को बल देने की आवश्यकता है। ज्यो २ हम अपने जीवन में भौतिक प्रदार्थों की ओर बढते जाऐये उनको ही जीवन का सर्वप्रथम साधन समझे, त्यो-त्यो हमारा जीवनभयवान् से दूर होता जाएगा तथा अथात होगा। यह वास्तविक तत्व हमारे भारत के पुराने महात्माओं ने पूर्वकाल में जान लिया था। जीवन सदा भी चलता था। लास्यकम सनने व भी जुटाते थे। किन्तु भौतिकवादी ही उनके जीवन का प्रयोग न था।

### आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान

की होरक जयंती पर श्रद्धि उद्यान में सामवेद पाराधण महात्मन का श्रुमारम्भ। अकमेर (राजके)

गत १५ नवम्बर १९६६ को प्रातः काल आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की होरक जयंती (५५ वर्षीय महोत्सव) के अवसर पर श्रद्धि उद्यान की ऐतिहासिक बसवाला में सामवेद पाराधण महात्मन आरम्भ हुआ। यज्ञ का सवाजन वेदो के पवित्र वाचार्थों द्वारा जो ने किया है। यज्ञ की पूर्वश्रद्धि १२सम्बर को सम्पन्न हुई और उनी दिन श्रद्धि जयंती के अवसर पर श्रद्धि उद्यान में वेद सम्मेलन सम्पन्न हुआ जिसका उद्घाटन राजस्थान के के राज्यपाल डा. समुद्रार्जुन जी लखा अध्यक्षता मुकुन्द कामंडो के आर्ययों प्रियवत जो ने किया। सामवेद पाराधण महात्मन का कार्यक्रम प्रगतकाल और सामकाल दो-दो घंटे तक जारी रहा। होरक जयंती के भाग लेने हेतु प्रतिनिधियों और सर्वको का आगमन भवो प्रकार हुआ।

### आर्य समाज भदसाली

आर्य समाज भदसाली जिला दुधियापुर पुर सभा के सदस्यों व सर्व साधारणों की बैठक २३-११-६६ को रखा के लिए भारत सरकार से बलपूर्वक माया करती है के समस्त भारत बर्ष में से गो बध जो बल सामिक मामला है के लिए कोई साम फारपुला बनाया जाए जिससे यह पृथिव्य पाप इस भारत भूमि में सर्वथा दूर हो और भारत-माता के माये पर ने गो-बध कलक दूर हो। श्री ब्रधुगुप्त प्रभुदत्त जी, श्री पूजनवी जलत गुड सकराचार्य निरअनवेद जी गोबधमठ तथा उनके साथके समकामियों को निरवतारी की निन्दा करती है। होरक अवसर पर से माग है कि देशुनी हत्याकांड की जुधिसन जान करवाई जाए।

दुधियापुर आस्थावन मन्त्री समाज

उनके जीवन में अतिक्रमता की सुगमि भरती थी। प्रमू प्रेम की निष्ठा से वे ओल-ओल से। परम चापक से। यही कारण था कि पुरातन युग भौतिक पदार्थों में सम्पन्न होकर भी कोरा भोगवादी नहीं था वरन् अत्यात्मवादी था। जीवन सदा क्षान्ति था। आज का समय चारों ओर अक्षान्त है। इसे बलने के लिए इस बात के लिए इस बात की बड़ी आवश्यकता है कि हम ओडेम भयवान् का जीवन का अवलम्बन लेते। ओडेम की ध्वजा को आज विश्व में सहर्षाई ही का काम आर्यसमाज को करना होगा।

आर्यसमाज विक्रमपुरा जालन्धर शहर के आर्थिक महोत्सव पर आर्य-समाज के प्रतिष्ठित तपस्वी नेता, योग्यता की सर्वोच्च प्रतिष्ठित रत्नाराम जी एम. ए. एम. एन. ए. ने आर्यसमाज तथा वर्तमान युग के विषय पर ओजस्वी भाषण देते हुए बड़ा भावपूर्ण विचार प्रकट किया आर्यसमाज की आवश्यकता आगे से भी अधिक है, इस पर बल दिया। सं. स्वामी दयानन्द की आवाज युग की आवाज थी। इतिहास का गम्भीर अध्ययन करने से यह तथ्य भली भाँति सामने आ जाता है। फ्रांस के महान् लेखक श्री रोमार्तोला ने राम-कृष्ण परमहंस के जीवन में पुस्तक लिखी है। उस में स्वामी दयानन्द की भी बड़ी सुन्दरता से चर्चा की है। दोनों समकालीन थे। उनके वर्णन में स्वामी जी महाराज के कार्यों का प्रसंग आ जाना स्वाभाविक भी था। फ्रांस का महान् लेखक लिखता है कि स्वामी दयानन्द के जीवन को गहराई से देखा जाये तथा उनके कार्यों पर विचार किया जाये तो दो बातें स्पष्ट रूप से दिखती हैं। पहली यह कि वे स्वामी भारतीयता को जन्म देने वाला स्वामी दयानन्द ही था। भारतीय जनता अपना रूप नया बुझी थी। उस विस्मरण को फिर से स्मरण करने के काम स्वामी दयानन्द ने किया। आत्मबोध एव भारतीय पुरातन परम्परा की स्मृति कराने वालों में सर्वप्रथम नाम उसी का अढ़ा से लिया जायगा।

दूसरी बात यह है कि स्वामी दयानन्द ने उस समय को आराज उठाई, वह भारतीय आत्मा का पश्चिम के लोगों के द्वारा किये जाने भारत के अपमान का उत्तर था। पश्चिम के विचारक तथा लेखक अपने प्रचार और लेखों में भारत तथा उस की पुनर्जीवन प्रयास का आगे दिन जो भी मिटाकर करते रहते थे—स्वामी दयानन्द की आवाज उस अपमान का तर्क पूर्ण उत्तर था—जिस ने पश्चिम को सोचने पर विवश कर दिया। पश्चिम के लोग भारत का कितना अपमान करते थे। भारतीय सस्कृति की कितनी निन्दा किया करते। यह पढ़ कर तो कौन ऐसा भारतीय है जिसे प्लानि तथा रोष पैदा नहीं होता। मंकाजे ने कहा कि कि सारा भारतीय साहित्य व सस्कृति का अन्धार डकड़ कर दिया जाए तो भी हमारे महाकवि वेदमयीयार की

## आर्यसमाज और वर्तमान युग (श्री प्रि० रत्नाराम जी एम०ए० एम०एल०ए० का भाषण)

की कृतियों का मुकामिना नहीं हो सकता। अपने भारत की संस्कृति की ओर नया हो निदा सकती है! यह सब कुछ बहिष्कारी लेखकों के विचार पढ़ कर हमारे देश के लोग सर्वथा नौच थे। इस अपमान का उत्तर किन्ही ने भी नहीं दिया। स्वामी दयानन्द यह उत्तरकार सहन नहीं कर सके। रोमा रोमा स्वामी दयानन्द की भी आवाज के बारे में लिखता है कि— It was the answer which India gave to the challenge of the west, वह आवाज विश्व का कल्याण करने वाली थी। जब कभी ऐसी कहीं से आवाज आती है कि आज के युग में आर्यसमाज की आवश्यकता नहीं—तो यह हमारी अढ़ा की कमी को प्रकट करती है। क्या हम उस भयानक जंगल से बाहिर निकाल आए हैं, जिससे बाहर जाने के बाले—शामी दयानन्द ने काम शुरू किया था। ऐसी अवस्था में बूझी के नारे लगाना बुद्धिमत्ता नहीं है। वह अमानक तथा परम्परागत सृष्टियों का जखम आज भी मौजूद है। भारतीय जनता आज भी उसी प्रकार उस जंगल में मटकती रहन आती है। उसी प्रकार की आशिया इस समय भी जन समाज को धरे में लिए हुए है। उन्नीसवीं शती में यदि उस आवाज की आवश्यकता थी तो आज के युग में तो अब क्यों उस आवाज की आवश्यकता नहीं है? वास्तविक बात यह है कि अब तो उस की आवाज की आगे से भी अधिक आवश्यकता है।

यह तथ्य है कि हिन्दु सब से कम अपने धर्मधर्मों को पढ़ते हैं। यह बुनियादी गलती है। यदि वह प्रतिदिन अपने वेद वाक्मने से प्रेरणा लेती होती, तो यह ठीक है कि वह अपना जीवन का मार्ग नहीं प्राप्त कर सकता। अन्य सारे मतो वाले अपने अपने धर्मधर्मों को पढ़ते हैं। परन्तु हिन्दु में यह भावना नहीं है। यही कारण है कि हिन्दु भ्रम आशतियों का शिकार अधिक होता है। उसे अपने पुरातन शास्त्रों से जीवन प्रेरणा नहीं मिलती। जब वह उनको पढ़ता ही नहीं तो प्रेरणा कौन मिले?

स्वामी दयानन्द देशभक्त थे। सत्कार्य प्रकाश के म्यारद्वयें समुत्साह

में आर्यवर्त के सम्बन्ध में किन्ते सुन्दर महत्कूपण शब्दों में लिखा है कि आर्यवर्त देश स्वर्णभूमि है, देव भूमि है यह पारसमणि है। इसके सदृश कोई देश नहीं। जब उनसे प्रश्न किया कि आपका धर्म तो सारे संसार का उपकार करता है तो फिर केवल भारत का कल्याण क्यों चाहते व मानते हैं। इसे क्यों विधेयता देते हैं। स्वामी जी ने उत्तर दिया कि जो स्वदेश में देना चाहती है, वह यही देश फँस सकता है। विश्वव्यापी बुद्धिकोण होने हुए भी उस स्वदेश को विश्व में फँसाने का काम आर्यवर्त ही कर सकता है। यह वा देशभक्ति का अनुपम उदाहरण जोकि उस महान् दयानन्द ने दिया है।

विश्व के महान् चिन्तक श्री बरविच जी ने अपनी पुस्तक India has a devine mission में लिखा है कि भगवान् के देवी सन्देश को फँसाने का यही युग है। उस के लिए भारत को चुनना है। यदि आज के परमाणु युग में इस आध्यात्मिक विद्या का प्रचार न किया गया तो इस में किसी प्रकार का भी सन्देश नहीं कि मानवी सम्यता मिट जाएगी। यह भी भक्ति स्वामी दयानन्द को अपने देश के प्रति। उस युग में जनता के विचारों में इसी देश—भक्ति की भावना को प्रथम किया। भारतीय सम्यता के प्रति सब का मान बढ़ाया। और सांसार्यभूक के साथ बातचीत करते हुए स्वामी जी की देश-मन्त्र के प्रति कितनी ऊँची आशाना थी। क्या आज उसी देश प्रेम को जन-जीवन में आना ही कि फिर आवश्यकता नहीं है? क्या इस विचारों के प्रचार की जरूरत नहीं? आज का समय बड़ा विषम है। युवाओं के अर्थिक नीत गाये जाते हैं। यह एक कड़वी सच्चाई है। इस आवश्यक बात को हृद्य यदि अनुभव नहीं करते तो हमारी स्वतंत्रता देर तक टिक नहीं सकेगी। बनी तक तो यह आवश्यक मोटी सी बात भी हमारे जीवन में नहीं आई। इस स्थिति को देखते हुए क्या यह कहना उचित है कि आज आर्यसमाज के प्रचार की आवश्यकता नहीं है।

गत किन्ही मास में 'आ' कुछ होता रहा। उस से तो यह विचार और भी पक्का हो गया कि आर्यसमाज के प्रचार की जरूरत पढ़ने से भी अधिक बढ़ गई है। छात्रों की ओर से आन्दोलन के नाम से जो कुछ भी हुआ, वह सब के सामने है। यह ठीक है कि अन्धधर्मों में कर्मिया हो सकती हैं। हमें democratic बनना है। पर इस का अर्थ यह नहीं है कि माक्रूक की नीति को छात्र अपनाएं। छात्रों की बात तो सही है—पर इस समय बड़े बड़े लोग अस्वैन्धियों में क्या कर रहे हैं तथ्य यह है कि देश भक्ति कम हो गई है। दूसरे देशों वाले भारत के बारे में लिखने लगे हैं India is now cracking। यह बात अत्यन्त विचारने की है। यह समय सारे देव-वासियों के लिए बेचने व 'बांगने का है। भौतिक बातें जीवन में छानो पड़नी हैं। इन को आधार बनाए बिना देश की प्रगति कठिन हो जायेगी। आज का यह आवश्यक काम है।

स्वामी दयानन्द की आवाज में दर्द भी था। विद्या की एवं सन्देश भी था। इस समय सचेत होना है। आओ! हम उस युगपुरुष दयानन्द की आवाज को सुनें। जो आवाज उसने अपने समय में लाई। जो आन्दोलन उन्नीसवीं शती में किया। आज भी उसी आवाज को सुनने का समय है। उसी आन्दोलन करने का आगेसे अधिक अवसर है। इस आवाज को उठाने के लिए तथा देशप्रेम के आन्दोलन का दिव्य सन्देश देने के लिए भगवान् ने भारत को चुना है। हमारा कर्तव्य है कि उस दिव्य सन्देश को पढ़ पढ़ावें।

★ ★  
सरस्वती भवन में ऋषि निर्वाण

दिस सभ्यन्त  
गत २३ नवम्बर को शांकर्यक स्थायी ऋषि उवाच विवद सरस्वती भवन में महर्षि दयानन्द सरस्वती का ८४ वं निर्वाण दिवस मनाया गया। इस अवसर पर आयोजित समाधी अन्धधारा करते हुए कुंवर रघुवीरसिंह (शिवदास) ने कहा कि ऋषि दयानन्द सत्य का जो प्रकाश दे गये वहिं हम उसकी एक किरण को भी ग्रहण कर सकें तो अपना जीवन सफलभूत बना सकते हैं।

समा में अन्य कलाओं में सर्व श्री श्रीकरुणार, डा. सुवेदीक, छात्रों, पं. ब्रह्मदेव जी व श्री जीतसे ने ऋषि के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उन के इतारों मार्ग पर चलने का अनुदीप किया।

भौष्यंकां संरंती

आर्यजम्तु के आचार पर राजेश्वरी विक्टोरिया को आर्यजम्तु पत्र भी हवा पर विचित्र रोक लगनी चाहिए। जिसके लिए भारत के मर-नामक महर्षि दयानन्द, लोक-मान्य तिलक, महात्मा गांधी और पं. मानसोय सखेरी अनेक देश प्रश्नों ने भारत माँ के बंद झुझाकर इसे स्वतन्त्र कराया। जो गो हवा को मनुष्य हवा से कदापि कम नहीं मानते थे। किन्तु यह जपनी सरकार है जो विधान भी इस बात का म्यान चसते हुए भी नू-बरा करती जा रही है। गोभी वर्षा हो रही है और नूह बढ़ाया जा रहा है जो भस्मी का। जेठे-पत्री-ना रही हैं और जनन द्वारा हजारी की रखत और प्रालों की बनी देने के लिए कफन बांधे हुए मंशान में निरुक्त पड़े सरकार का रोना है

**आर्यजम्तु हवा का फिर यह प्रत्यक्ष देखते हुए भी देश के करोड़ों लोगों से यह ठान लिया है कि हमारे प्राण रहेंगे या गोहत्या** कि दूध, भी, अन्न उपरोक्त देश में सफाया हो रहा है। रेशों व हो। उनको मां का लहू बहा कर दो रहे हैं अर्थ को। क्या यह विडम्बना है? अन्ततः अर्थ-अर्थ का शोर मचाने वालों को तुष्टि के लिये वा इस अर्थ को बाँ का अन्त्ये में हाथों धात करके रो रहे हैं अर्थ को। कौसी यह विडम्बना? बात की जांच के लिये एक कमेटी बनाई है सरकार ने। जिस के सदस्यों में श्री नेंबर। कमेटी क्या करती है वा नहीं? इधर देश को उत्साहवादी आंदोलन ने चारों ओर से घेरे में ले लिया है। और करोड़ों लोगों ने यह ठान लिया है कि हमारे प्राण रहेंगे या गोहत्या? इस लिये आर्यजम्तु। आज से १० वर्ष पूर्व महर्षि दयानन्द ने गोहत्या छुड़ाने के लिये करोड़ों देशवासियों के हस्ताक्षरों से श्री आंदोलन आरम्भ किया वा अकले होते हुए। रात दिन कितने निरन्तर से इस के लिये कमीन विक्टोरिया के के आदेशन पत्र और देश के एक ओर से दूसरे ओर तक किया गये प्रत्यक्ष और पत्र-ओर देश के कि अर्थ के इस लक्ष्य में कितना पुष्प प्रवेश हुआ था।

## महर्षि दयानन्द के सधन्य प्रयास गो रक्षा के लिए

(श्री आशुभाम जो पुण्डित श्यामसमाज नंबर ८ चउगढ)

### श्रावेदन पत्र

ऐसा कौन मनुष्य जगत में है जो मुझ के लाभ होने में प्रसन्न और दुःख के क्षण होने में अप्रसन्न न होता हो। जैसे दूसरे के लिए अपने उपकार में बड़े आनन्दित होता है वैसे ही परोपकार करने में मुझी अवश्य होगा चाहिए। क्या ऐसा कोई भी विद्वान् मनुष्य में था, है और होगा, पर परोपकाररूप धर्म और परहानित्यरूप अधर्म की सिद्धि कर सके। धन्य मैं महाशय जन हैं, जो अपने तन, मन और धन से संसार का अधिक उपकार सिद्ध करते हैं। निम्न-लिखित मनुष्य वे हैं जो अपनी अज्ञानता से स्वायंभक्त होकर अपने तन, मन और धन से जगत में परदाहित करके बड़े लाभ का नाश करते हैं। इच्छित जन्म से ठीक ठीक गरीब निम्नवर्ग होता है कि परमेश्वर ने जो जो बस्तु बनाई है, वह पूर्ण उपकार देने के लिए है। जन्म लाभ से महा-हानि करने के अर्थ नहीं। विश्व में तो ही जीवन के इन्हीं, एक अन्न और दूसरा पान, इन्हीं अभिप्राय से आवर्धन सिरोमण्डि राजे महाराजे और प्रजाजन महोपकारक गाय आदि पशुओं को न आप मारते और न किसी को मारने देते थे। जब भी इन गाय, बैल, भंस को मारने और मरवाने देना नहीं चाहते हैं। क्योंकि अन्न और पान की बहुराई इन्हीं से होती है। इससे सबका जीवन सुख से हो सकाहे। जितना राजा और प्रजा का बधा मुकामान इन के मारने और मरवाने से होता है, उतना अन्य किन्हीं काम से नहीं। इस का निर्याय गोकुल्यानिधि पुस्तक में अच्छी प्रकार प्रकट कर दिया गया है अर्थात् एक गाय के मारने और मरवाने से ५,२०,००० (चार लाख बीस हजार मनुष्यों के सुख की हानि होती है। इसलिए हम सब लोग स्वप्रजा की हितैरिणी धीमती राजराजेश्वरी स्वीन विक्टोरिया की म्यान प्रस्तावी में जो यह अन्याय रूप बड़े-बड़े उपकारक गाय आदि पशुओं को हत्या सही है इस को हम के राज्य में से प्रायाना से छुड़ाने के अति प्रयत्न होना चाहते हैं। यह हम को पूरा निश्चय है कि विद्या, धर्म, प्रजाहित, प्रिय श्रीमती, राज-राजेश्वरी स्वीन विक्टोरिया पामिया-

मैट तथा और सचोपरी प्रायान आर्य-वर्तस्वप शोभान गयान गयान बहादुर सम्पत्ति इस बड़ी हानिकारक गाय, बैल तथा भंस की हत्या को उत्साह और प्रयत्नता पूर्वक शीघ्र बन्द करके हम सब को परम आनन्दित करे। देखिए कि उक्त गाय आदि पशुओं के मारने और मरवाने से दूध-पी और किसानों की कितनी हानि होकर राजा और प्रजा की बड़ी हानि हो गई और नित्य प्रति अर्थिक-अर्थिक होती जाती है। पशुपत छोड़ के जो कोई देखा है तो वह परोपकार ही को धर्म और पर हानि को अधर्म निश्चित जानता है। क्या विद्या का यह फल और शिष्टता नहीं है कि जिस-जिस से अधिक उपकार हो उस-उस का पालन वर्धन करना और नाश कभी न करना परमदयालु, म्याकाली सर्व-वांछितान परमात्मा इस समस्त जगत्पुकारक काम करने में एकमक्य करे ॥

(हस्ताक्षर)

अधिवर ने जब इस अश्वेदन पत्र को सम्पूर्ण भारत में हस्ताक्षरों के लिए जहा-तहा भेजने का विचार किया तो साथ एक नोट विज्ञापन के रूपमें लगाया जिसे हियावत नामा ही करना चाहिए कि हस्ताक्षर किस प्रकार करने-काने हैं इसमें आप अधिवर का हृदय और मुख्यतया की योग्यता पाएंगे।

### विज्ञापन-पत्र

सब आर्यों पुराणों को विचार किया जाता है कि जिस पत्र के ऊपर (ओम) और नीचे हस्ताक्षर ऐसा बचन लिखा है, वही सही करने का है उन पर सही इस प्रकार करनी होती कि जिसके स्वराज्य व देश में ब्राह्मण आदि मनुष्यों की जितनी संख्या लिखकर अर्थात् इतने ही हजार लाख व करोड़ मनुष्यों की ओर से मैं अजुक नामा पुरुष सही करता हूँ इस प्रकार एक भीयव महाशय प्रधान पुरुष की सही से सर्व-साधारण आर्य-पशुओं को सही हो जायेगी। परन्तु जितने मनुष्यों की ओर से एक मुख्य पुरुष सही रहे वह उनसे सही लेकर अपने पास अन्वस रहे और जो मुख्यमन्य व ईसाई लोग इस महोपकारक विषय में दृढ़ता और

प्रयत्नता से सही करना चाहे तो कर दें। मुझे दृढ़ निश्चय है कि आप परम उदार महाशयोको के पुण्याय उन्माह और प्रीति से यह मन्त्र-उपकारक महा-पुरुष को प्रायः अत्यधिक कार्य यथावत मित्र हो जायगा।

पत्र व्यवहार  
श्री युत निम्बर, आर्यकुल प्रभाकर महाशय बाबू स्वर्धरिजी योगेश्वर रामानन्द बहादुरी का यथायोग्य नमस्ते विहित है।

श्री युत निम्बर, आर्यकुल प्रभाकर महाशय बाबू स्वर्धरिजी योगेश्वर रामानन्द बहादुरी का यथायोग्य नमस्ते विहित है।

हे महाजन आर्यके पत्र के उत्तर श्रीयुत स्वामी जी के आशानुसार भेज दिया था। आशा है कि पशुना होगा। अब भी पत्र गोरक्षा के विषयके भेजना है। जिस में एक पत्र तो सही करने का है जिसके ऊपर (ओम) और नीचे हस्ताक्षर। ऐसा किन्हीं है और दूसरा विज्ञापन पत्र अर्थात् किस प्रकार महाशयो के हस्ताक्षर और मोहर होनी चाहिए इस विषय का है।

आशा है कि आज इस महोपकीर्ति को प्राप्त होकर आर्यवर्ष में सुशोभित होकर आप परमार्थ में अज्ञात रूपका पुण्याय चले वहा तक अपनी और सब महाशयो की सही करा कर शीघ्र स्वामी जी के पाम भेज दें। इस से सही इस प्रकार करानी होगी कि जिस महाशयो के मेल से जितने आर्य पुरुष हों उन सब की ओर से यह एक पुरुष हस्ताक्षर कर दें कि इतने १०० इतने १००० इतने १०००० वा इतने १०००००० करोड़ पशुओं की ओर से मैं अजुकनामा पुनः अपने हस्ताक्षर करता हूँ। इस प्रकार सही करके प्रस्ताव जितने पशुओं की ओर से उन से सही की हो उत्र सब के हस्ताक्षर करके अपने पास रख लें। क्योंकि जिस समय मुकदमा सरकार से पहुंचे वा उस समय जब साधारण पशुकी हानि मनुष्यों की ओर से तुमने हस्ताक्षर किए परन्तु उन्को सही तुम्हारे पास है कि सही, तब दिल्लीई जायगी कि है। इस लिये सही करा कर रखनी अवश्य है।

मुझ को दृढ़ निश्चय है कि इस कीर्ति के भागी आप होगे। अब आप अपना पत्र शीघ्र भेज कर मुझ को कृतार्थ करेंगे। जो कुछ भेरे करने का काम हो कृपा पूर्वक विहित करना। सुभम्बन्वत १९६६ केशू कृष्ण (विष पृष्ठ ६ पर)



महाय दयानन्द के सद्यम्  
(पृष्ठ ५ का दोष)

५ बुक नारीस १० मार्च सन्  
१८८२ ईस्वी  
(रामानन्द बहुधारी)

साला कानीचरण जो राम-  
चरण जो आनन्दित रहो ।

जो गोरक्षा के विषय में वन बहुत  
भेजे है उनको विजला के लगनी कैलि  
सिखा सब को सही बही में लेता ।  
और मही करते बानों की ओर से  
जितनी संख्या हो तिस के वन लोग  
सही उस छने सुदु पथ पर कर देवें ।  
बैच हण्य २० विचार सम्बत् १९३८  
(दयानन्द सरस्वती)

लाहौं के लोचररय जो राम-  
चरण जो आनन्दित रहो ।

गोरक्षां कितनी सही हुई है।  
इस का भी उत्तर लिखना । इस समय  
(आर्य भाषा के) प्रयोगों में प्रयुक्त  
होने के अर्थ को मैमोरिअल छपे हैं जो  
सोम प्रेसना और आप लोग भी जहा  
तक हो के गोरक्षां सही और आर्य  
भाषा के राजकार्य में प्रयुक्त होने के  
अर्थ सोम प्रेसना को लिखिए । १४ अगस्त  
सन १८८२ ।

दयानन्द सरस्वती (उदयपुर)

• स्वस्ति श्रीमदर सत्यगु महा-  
संक्रमेणो राजराजप्रतिभाहृतवृहस्पतये  
दयानन्द सरस्वती - स्वामिन आशिषो  
भुवायु ।

प्रथम तौ श्रीमान महाशयो ने  
कण्ठा की पूर्वक ५०००० हजार पुरुषो  
की ओर से हस्ताशुकर पत्र मन्यापुत्री  
में हमारे पास भेजा था, परन्तु अब  
इस विषय में श्रीमानों के प्रबन्ध से  
कितनी सही हुई है । जो अमान सद्यु  
महाशय इन महोत्सवों का माता पिता  
के समान रक्षक कर्तव्यपत्र गायादि  
पुस्तकों के दुःख निवारणार्थ प्रयत्न  
किया है व करते जाते हैं वह अवश्य  
सफल होकर इस आशुचित को औचित्य  
रूप होकर सब आर्यों के हृदय की  
अग्नि को घात करेगा ।

आर्यगु सुभक्त । गंगल सक्त् १९३९ ।  
(उदयपुर) (दयानन्द सरस्वती)

श्रीयुत् बाबू दुर्गाप्रसाद जा  
अ मन्दित रहो

गोरक्षां कितनी सही हुई है ।  
इस विषय में ध्यान देना अवश्य है ।  
बड़े हर्ष के ये दोनों विषय प्रकाशित  
हूए हैं । इस विषय बहुत तक हो सके  
तब, वन, पत्र से सब आर्यों को बलि

जपित है इत दोनों कानों के सिद्ध  
करने में प्रयत्न करें । बार-बार ऐसा  
ही निरन्तर होता है कि ये दोनों  
सोमाय कारक अंकुर जना के  
कल्याणार्थ उपे है । अब हाथ पसार  
न होने तो इससे दुर्भाग्य की और  
क्या बात होगी ।

सुद आर्यगु सुभक्त ३ नृहस्ति  
सम्बत् १९३९  
(दयानन्द सरस्वती) (उदयपुर)

श्रीयुत् पंडित गोपालराव जी  
आनन्दित रहो ।

आभा है कि आर्य भाषा में  
प्रचारार्थ भी आप स्वगुरुभाष्य की  
प्रकटा करेते । हम उत्तर दुर्ग पंडित  
नीलका वाग के रामचरणी के उद्धरे हैं  
एक बार 'श्रीयुत्' बाबूकुल विवाचर  
भी महाशय साहब प्यारे । परस्पर  
प्रेमप्रीति के साथ सांभांग हुआ ।  
जैसा उनका नाम है बैसे सुगु भी  
देखे । द्वितीय धावण (सुदी) १२म  
सम्बत् १९३९ । (दयानन्द सरस्वती)

मंत्री अयंसमाज दानापुर  
आनन्दित रहो ।

मैं आप परीपकार त्रिय धार्मिक  
जनो को सब जगत के परीपकारार्थ  
गाय, बैस और बैस की हत्या के  
निवारणार्थ दो पत्र एक तो सही करके  
और दूसरा जितके अन्तुअर सही  
करानी है वो पत्र भेज रहा हूं । इस  
को आप प्रीति और उस्ताह पूर्वक  
स्वीकार कीजिये जिस से आप महाशय  
सौगो की कीर्ति इस सप्तर में सदा  
विराजमान रहे । इस काम को सिद्ध  
करने का विचार इस प्रकार किया  
गया है कि दो करोड़ से अधिक राजे  
महाशयों और प्रधानादि महाशय  
पुस्तकों की सही कराके आर्यवर्तिय  
श्रीमान गवर्नर अजयल साहब बहुशुद्र  
से सब लिख करी अर्जी करके ऊपर  
लिखित नागादि पुस्तकों की हत्या को  
खुदवा देना । मुझे यह दुःख निरन्तर है  
कि प्रसन्ना पूर्वक आप लोग इस कार्य  
को सौम्य करेते । १२ मार्च १८८२  
(दयानन्द सरस्वती बम्बई)

विस्तार के अर्थ से यहां पर  
समाप्त कर रहा हूं । किन्ना धोर  
प्रथिम किया वा मह्यु नि । अतः  
इसको दिख के बचाये हुए गोरक्षा  
आंदोलन में धन जन की साहाय्य देने  
के लिये तैयार होना चाहिये ।

चतुर्थी चक्की देख के  
विषय कभीय रोप ।  
वो पाटय के बीच में  
साक्षिक छूक न कोय ॥

आर्यसमाज लाजपत  
नगर सोनीपत का

चुनाव तथा श्री-सन्ना  
जी से श्रीप्रौल व प्राश्नना

पिछले दिनों २८ से ३० अक्टूबर  
इस समाज का बहुत ही उत्साह  
आर्य महोत्सव हुआ, अब चुनाव सर्व-  
सम्मति से इस प्रकार हुआ प्रथम डा०  
शेखरब जी, सुभक्त, राज हल्यवाल,  
आर्यकर्ता प्रधान मान्य वा, सुधीराय  
जी हुयेअ, उप-प्रधान पं० राधुराम  
जी हुकीम अयोध्क देवाकावा, धरनी  
पं० विनायकनन्द आर्य उप-कमी भगत  
बसदेवजी और उमिता लोदी, लख-  
नूची डा० टाकुरदास जी दीमान  
पुस्तकाध्यक्ष श्री पृथ्वीराज जी, इहा-  
अक हण्यकुमार बना सत्यगु सद्य  
मान्य भा० मेघराज जी-कान्ठिया, भा०  
कितानचन्द आर्य, पं० कंबननन्द आर्य,  
जी देवराज बना तथा प. कन्दननन्दआर्य  
द्वितीयो इतके अतिरिक्त इस समाज की  
ओर से प. चन्द्रनन्दजी को से अधिकार  
दिया गया कि वे दानवीर मान्य वा०  
हंसराज जी खन्ना (भग मधियाना  
बाने) जो आज जंगपुरा नई दिल्ली  
जिराजते हैं वे स्व्यायसी हैं, वे अपने  
स्वर्भावसी पूज्य के नाम पर सोनीपतमें  
ला० हीरानन्द जी के नाम पर हीरा  
कानीजी बना रहे हैं । उन से इस  
समाज की ओर से अपील की जाये कि  
हमें आर्य समाज मन्दिर बनाए एक  
बड़ा अच्छा प्लाट दान करके देवें  
अति कृपा होगी यदि सन्ना जी सबक  
के हिसासे कुछ के पत्र दे सकि नगर  
निवासियों की पानी बानी कठिनाई  
भी तुर करके स्थान आदि का भी  
अच्छा प्रबन्ध किया जा सके तथा इही  
प्लाट से बागियों के उद्धरे बादि का  
स्थान बनया जा सक्ता है । पक्षी की  
भी सन्ना जी से प्राश्नकी की जा चुकी  
है । इस परम पुणित कार्य भारते  
पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी महा-  
राज ने पं० चन्द्रनन्द आर्य द्वितीयो  
की ओर आर्य प्रादेशिक सभा  
के महोपदेशक की हैं । आर्यसमाज  
के गौरवधात्री आर्य नेता मान्य डा०  
जी० एल० दत्ता प्रधान दयानन्द  
काणित्य कमेटी के नाम पत्र भी दिया  
था कि सन्ना जी बापके निष्पत्त हैं उन  
के अवश्य सोनीपत सभके भारते एक  
बड़ा और अच्छा भौके का प्लाट  
दिया दें । पं० कन्दनन्द पक्षी की की  
दीन बार भी कन्ना जी के सिधे भी  
से । बंध धिर के कार्य सही ।

आर्यसमाज अनारकली  
मन्दिर भाग नई देहली

श्री महात्मा आनन्द स्वामीजी  
महाराज के निरीक्षण में

२८ अक्टूबर को भाग में  
दिसम्बर रविवार तक बुधवार के  
सम्पन्न हो रहा है । नृहद गायत्री सव-  
२८ से ४ दिसम्बर तक भी पथीयती  
रमेजकनजी पुरी के सुभ दान से  
६.१५ से ७.१५ तक प्रातः सम्पन्न  
हो रहा है ।  
आशीर्वाद—श्री महात्मा आनन्द  
स्वामी की सरस्वती, जी दा० जी,  
एल० दत्ता प्रधान जी, ए. वी. काणित्य  
प्रबन्ध कर्ता सभा, जी सौरीदास जी  
हारा की ओर से चल विजयगोदार  
संगोकर जी डा० राधाकृष्ण जी  
रविवार ४ दिसम्बर को ९ स १५।  
बड़े तक यह शेष निरुत्तर, भागों  
लेना देवी जी के रविवार की ओर से  
सम्पन्न होगा ।

इस धार्मिक महोत्सव पर भी  
आनन्द स्वामी जी महाराज, श्री  
जी. एन. दत्ता काणित्य प्रबन्धकर्त  
समिति, श्री यश जी प्रधान वा. भा.  
प्र० सभा जालन्धर, (मन्त्री पञ्जाब)  
श्री सत्पारा जी एम. एम. जी.  
(पञ्जाब) श्री पं० पितोषचन्द्र जी  
शास्त्री जी. ए. सत्यारक आर्य जगत,  
श्री पुस्तक भर्ता एम. ए. जी. श्री  
आनन्दजी, श्रीमती सुशीला जी  
श्री पं० दयानन्द जी शास्त्री बादि  
उत्कृष्टोदित के विद्यार्थों के भावस्य होंगे।  
सम्पूर्ण उत्सव से मनोहर भजन श्राव  
व छात्राधी के होते रहेगे । सभी धर्म  
प्रेमी सज्जनों से उत्सव में प्यारने का  
सादर निमन्त्रण है। देवादीनाम.M.A.

प्रादेशिक सभा से सम्बन्धित  
समाजों को आनन्दस्य सूचना

दीपमाला एवं वीतक है लेकिन  
अभी तक दीबानी फंड सभा के द्वापर  
में नही जाया इत्येन कारणे **अभि-प्रस्ताव**  
अक में सूचना दी जा चुकी है लेकिन  
बहुत-सी समाजों से इस ओर ध्यान देने  
का कष्ट नही किया । अतः पुनः प्राश्नकी  
के लिये परिचारा के प्रत्येक सदस्य के  
अन्तुअर बार आता दीबानी फंड एक-  
पित करने सभा के कार्यालय में भेज  
कर तथा के बादेश का पालन करें ।

—अन्यथापक—  
दे इहं दीर्घकालीनी में आर्य सत्ता  
मन्दिर भारते प्लाट के बारे में लिखे  
डा० सत्ता जी की भासा है इहं कार्य  
की उपकला—में पूर्ण सहयोग देने ।  
इसकी भी मान्य श्रीमानों की निरन्तर  
निःसहो—इहं दानः का अन्कण उप-  
प्रातः होगा ४ भासा है इहं निरन्तर  
सही करेते । प्लेट—के प्लाट कार्की  
प्रादेशिक सभा के सभा—निर्वाहक  
विषय परास्य । अन्कण—आर्य सत्ता  
आनन्द सत्तरी श्रीमती











ईडीकोम नं० ३२५०

[आर्य प्रादेशिक-प्रतिज्ञिषि सभा पंजाब, जालंधर का साप्ताहिक मुखपत्र]

Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ पैसे

वारिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६, अंक ५०)

२६ मार्गशीर्ष ००२३ ग्विवावर—दयानन्दवारः १४२-

दिसम्बर १९६६

(तार 'प्रादेशिक' जालंधर)

## वेद सूक्तयः

**सोम कामं हि ते मनः**  
हे मानव ! ते-तेरा यह मनः—  
मन सोमकामम्—सबको प्रेरणा देने वाला है। माना प्रकार के सक्त्यों से मंत्र हुआ है। अपने मन के सद्-विचारों से दूसरों को सुन्दर प्रेरणा देता रह, उसम-उत्तम सक्त्यों का संचय कर।

**नेदिच्छतमा इषः स्याम**  
हम उस इषः—बलशाली तथा सब पराधीन के देने वाले भगवान् के नेदिच्छतमः—बलवान् समीप स्वाभाव हो जायें। हे प्रभो ! ऐसी कृपा करो कि हम आपके सदा पास रहें, वही आपको भुलाते न पायें।

**रक्षा तोकं रमना**  
हे परमेश्वर ! आप अपनी मना-शक्ति से सामर्थ्य से तोकम्-मुक्त अमृत पुत्र की रक्षा—करो। मैं आपका ही तो पुत्र व पुत्री हूँ। आप मेरे पिता हैं। बसलिए आप अपने पुत्र की सदा रक्षा करते रहें।

**हृदिदशयो मनो वृधः**  
परमात्मन् ! आप दस्योः—दस्यु के, दुष्टों के, अज्ञान के हस्तान्ध कर देने वाले हो। तथा मनो—ज्ञान के दूधः—बढ़ाने वाले हो। विनाश भी अज्ञान यही दस्यु मण्डल है, उस सारे के आप विनाशक ही तथा जो आप हैं उनके बढ़ाने वाले आप ही हो।

सा म वे द ते

अधिष्ठाता—श्री० वेद प्रकाश एम० ए० (अंग्रेजी तथा हिन्दी)

## वे दा मृत

त्रात्रुत्रो का कचूमर निकाल दो  
ओ३म् ओपीषां चित्तं प्रतिजोमयन्ती गृहाराणां  
गान्यष्वे परेहि। अमि प्रेहि निर्देह हत्सु शोकै  
रन्धेना मित्रारतमसा सचन्ताम् ॥

ताम० २२२० अ० २१ ख. १ सु० ४ मं० ४

अर्थ—हे नायक ! (श्रीमया) इन शत्रुओं के (चित्त) चित्त को (प्रति-जोमयन्ती) मोहित करती हुई (गृहाराणां) उनके अंगों को (अग्ने) हे भोति ! (अभिर्देहि) उन सब पशुव जा। उनको (निर्देह) मुरी तरह जला जाल और उनके (हत्सु) दिनाम (शोक) शोकों से (अचन्ता) अन्यायक से (तमसा) मोह से वे सारे (अभिधा), धनु सोम (सचन्ताम्) भर जायें।

## भाव यह है

हे राष्ट्र के भीरु रक्षक ! आप निर्भय वीर हैं। जो वीर जितने भी राष्ट्र के शत्रु है, शास्त्री है—उनके मन को मोहित करने वाला जो मय है—उनके द्वारा उनके अंगों को पकड़ ले। सारे शरीर में मय पैदा कर दो। सारा ही शत्रुदल आप के भाव से काप उठे। उनको पकड़ २ कर मार मार उन को अन्ध करता जा। जरा राष्ट्र पर हमला करने का फन तो उनको दे दो, ताकि दूसरों को इस बात का पता लग जायें कि राष्ट्र पर हमला करने का नतीजा क्या निकलता है। उन के दिल में शोक का अन्वेषण इतना गहरा भर दो जिस से वे शत्रु सोम, परिश्रय पा सकें कि आप के वीर सैनिक कितने कमाल की वीरता के मालिक हैं। आप की वीरता के सामने कौन है जो कि देश पर हमला करने का साहस कर सकता है। उठ उनको जो ऐसी मार मार, कि फिर हमारे देश की ओर मुझ न कर सके अगर वीरता दिखाते थे जरा भी सकोच किया तो निन्द्य जानो कि चिरकाल प्रदीक्षित प्राप्त स्वतन्त्रता से हाथ धो बैठेंगे। अतः कितनी भी शत्रु को जीता न जाने दो। प्रत्येक शत्रु को धुन २ कर भस्मघात कर दो। यही सच्ची देश प्रेम है। यही सच्ची वीरता का सवरूप है। प्रत्येक अणु कण करे हुए शत्रु की ताक में रहो।

## ऋषि दर्शन

**स त्रिपण्णरीश्वरः**  
वह परमात्मा त्रिपण्ण है, सर्व-व्यापक है। वही परमात्म ईश्वर कहा जाता है। इस सारे परमेश्वर जगत् में वह परमेश्वर व्याप हो रहा है। तमाम ऐश्वर्यों का वही भण्डार तथा एकमात्र स्वामी है।

**ब्रह्मा चतुर्वैशता**  
ब्रह्मा वह है जो कि चारों वेदों को जानने वाला है। जो इन चारों वेदों का विद्वान् होता है, उस को सत्ता ब्रह्मा को होती है। वास्तव में वही महान् होता है। चतुर्वैशता ब्रह्मा भवति।

**यज्ञानुष्ठान कर्ता**  
वही ब्रह्मा तमाम यज्ञों को अनुष्ठान करने वाला होता है प्रत्येक यज्ञ कृषी युध्म कर्म काश्म में ब्रह्मा की स्थापना यज्ञ कराने के लिए होती है।

**एतत्तर्ष्व परमेश्वराय**  
यह सारा कुछ परमेश्वर के लिए है। ईश्वर की निष्ठा जीवन में बड़ी आवश्यक है। ईश्वर को समर्पण कर देना ही जीवन को सुखी बनाना है सब कुछ प्रभु के अर्पण करें।

मा ष्य भू मि का ते

सम्पादक—त्रिलोक चन्द्र शर्मा

मानव प्राणी जब से इस पृथ्वी पर आया तभी से यह विषय उसके सम्मुख एक समस्या के रूप में उपस्थित रहा। 'कुत जा जाता कुत इय वि मुष्टि' (१०/२२९/३) अर्थात् यह विषय प्रकार की सृष्टि कहा ने आ गई ? का प्रश्न मानव - मस्तिष्क को सर्वे से चिन्तित करता रहा। इसी एक प्रश्न को लेकर विचारकों के दो प्रमुख दल बने। एक ईश्वरवादी और दूसरा अनैश्वरवादी। प्रथम दल 'ईशावास्य निद सर्वम् (बसु० ४/१)' का श्रित-दिम घोष कर इस चराचर जगत् का कर्ता ईश्वर को बतलाता था, तो दूसरा अनैश्वरवादी दल यह भ्रम मूढ मानता था। उसका कहना था कि यह सब गेदू लोगों ने अपनी उदरपूर्ति के लिए गढ़वत गढ़ रची है। उनका प्रसिद्ध वचन है—

'अग्निहोत्र यथो वेदास्मि दधे भस्म गुण्धनम्। बुद्धि पोषध हीमाना

जोषकेति नृहस्मतिः। अर्थात् अग्निहोत्र, तीन वेद, तीन दण्ड, भस्म का तगाना बुद्धि और पुरुषार्थ हीन लोगों ने अपनी अधिकता चतनके ले विधे बना रसे है।' धन का कहना है कि वास्तविक बात यह कि—

अग्नि उष्ण जन धीत नीन ।स्तस्यःशानिलः। केनेव चिचित् तस्यतु रवमत्वात्तद् व्यवस्थिति॥१॥

अर्थात् अग्नि में उष्णता, जन में शीतलता, वायु में स्वयं से किसने बनाये ? अर्थात् किसी ने नहीं। ये सब स्वभावात् मे है। इन की दृष्टि मे 'न स्वर्गो नापकानो नैवात्मा क्राम्बिक'। नैव ब्रह्मविद्यादीना क्राम्बिक फलस्यारकः ॥ अर्थात् तो को कोई स्वर्ग है, न अपवर्ण, न आत्मा, न परमात्मा न परलोक कोई भीष है और न बर्ण और आत्मा द्वारा किंचि गुरु कर्मकाण्डो का ही कोई फल मिलता है।

अनैश्वरवादीयो के ईश्वर को जगत् का मूटा, न मानने में प्रमुखन. तीन मत है —

(१) ईश्वर की सिद्धि में कोई प्रमाण नहीं ?

(२) जगत् सर्वद्वे से है और सब रहैगा अतः उसका कोई कर्ता ईश्वर नहीं।

(३) जगत् की रचना स्वयमेव होती है।

धार्मिक चर्चा

महर्षि दयानन्द और अनैश्वरवाद (श्री० रत्न कर्मा आर्य 'सिद्धांत वाचस्पति' उद्घोष)

इस मुद्दे के संबंधमें विचारक एतद् सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने प्रह्लाद सप्तार के धर्मो वेद विरोधी मत समप्रवायो की तीव्र समाप्तिचना की तथा उन मत-कर्मों द्वारा वैदिक धर्म पर लगाये गये सभी आरोपों का युक्ति-युक्त उत्तर दिया है, वहा उन्होंने इस अनैश्वरवाद के पक्ष-पारितोषों द्वारा किये गये सभी आरोपों का भी अपनी अकाट्य युक्तियों द्वारा समुचित समाधान किया है। प्रस्तुत निबन्ध में अनैश्वरवादीयो के उन समस्त आरोपों का, वेद, ब्रह्म, कलेवर वद जाने के भय से, जो महर्षि दयानन्द के अर्पित आरोपों में किया है, प्रस्तुत कर सकना तो संभव न होगा, किन्तु केवल कुट्टिक युक्तियों द्वारा प्रस्तुत की जा रही है। जिनसे अनैश्वरवादीयो की उत्पत्ति तभी समस्याओ का पूर्ण रूपसे समाधान ही जाता है। अनैश्वरवादीयो के समस्त छोटे-मोटे आरोप इन्हीं तीन आरोपों के अन्तर्गत आ जाते हैं। अतः इन्हीं पर ही महर्षि दयानन्द के विचार प्रस्तुत करते हैं—

(१) क्या ईश्वर की सिद्धि में कोई प्रमाण नहीं ? अनैश्वरवादीयो का प्रश्न और प्रश्न आलोच यह है कि ईश्वरवादीयो के पास ईश्वर की जगत् कृत् 'सृष्टा मानने में कोई प्रमाण नहीं कारण यह है कि मनुष्य को जान होता है वह पाष आनेन्द्रियो द्वारा ही होता है और ईश्वर है इन्द्रियातीत। वह किसी भी ज्ञानेन्द्रियो से जाना नहीं जा सकता। कण्ठोपनिषद में ईश्वर के मूटा इस प्रकार लिखे हैं :— 'अवच्छेद मस्यमरुमेषम व्यय तथारान्तं नित्यमनमनस्कचयत। अन्नाद्यन्तं महत्तुः पर ब्रह्म निराप्यत नृयु नुष्ठात् प्रमुच्यते (कठ० ३/१५)

अर्थात् परमात्मा अव्यक्त, अस्पर्श, अरूप, अल्पय, अरस, निरय, और अनादि, अनन्त आदि नामों से उसका स्मरण किया गया है।' अनैश्वरवादीयो का कहना है कि ऐसे इन्द्रिया-तीत ईश्वर को जाना कैसे जाए ? और यह सब जाना नहीं जा सकता तो उसको माना भी क्यों और किंम जाए ? इनका आरोप है :— ईश्वरवासिद्धि ॥१॥ साध्यं अ० १५० १२

प्रमाण भाषान्तसिद्धि ॥१॥ साध्यं अ० ५ सू० १० सम्बन्धाभाषानु नु मानम ॥३॥

अर्थात् प्रत्यक्ष से पट सक्ते ईश्वर की सिद्धि नहीं होती और जब उसकी सिद्धि में प्रत्यक्ष ही नहीं हो अनुमानादि प्रमाण नहीं हो सकता। व्यापित् सम्बन्ध न होने से अनुमान नहीं हो सकता। पुनः प्रत्यानुमान के न होने से शब्द प्रमाण भी नहीं पट सकते हैं।

तौषातियो ने भी लिखा है :— सर्वत्रो रूपते तावन् दानी मस्योपनिभिः। दृष्टेः कृक देवोः सिताविग वायोऽनुमानेत् ॥१॥ न चायम विविः कादचानिन्य सर्वज्ञ बोधकः। न चतत्राचं चायात तात्पर्यमांण कल्पते ॥ २ ॥ न चाग्यायं प्रथाने स्तैस्तद्विदयं विधीयते। न चायु वादिदुः सक्यः पूर्वं मन्वरेऽकीर्णितः ॥ ३ ॥

अर्थात् जित्त लिये हम इस समय ईश्वर को नहीं देखते इतलिये कोई सर्वज्ञ अनादि परमेश्वर प्रत्यक्ष नहीं, जब ईश्वर में प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं तो अनुमान भी नहीं पट सकता क्योंकि एक देश प्रत्यक्ष के बिना अनुमान नहीं हो सकता। और जब प्रत्यक्ष अनुमान नहीं तो आगम अर्थात् नित्य अनादि सर्वज्ञ परमात्मा का बोधक शब्द प्रमाण भी नहीं हो सकता। जब तीनों प्रमाण नहीं तो अर्थवाद अर्थात् स्तुति, निन्दा, प्रकृति अर्थात् पराये चरित्र का बर्णन और पुराकल्प अर्थात् इतिहास का तात्पर्य भी नहीं पट सकता ॥ २ ॥ और अग्यायं प्रथान बहुहीहि समास के तुल्य परोक्ष परमात्मा की सिद्धि का विधान भी नहीं हो सकता, पुनः ईश्वर के उपपेष्टको से सुने बिना अनुवाद भी कैसे हो सकता है।

अनैश्वरवादीयो के उत्पत्ति का आरोपों का समाधान महर्षि दयानन्द ने कितने सुन्दर ढंग से किया है :—

श्रे ष दयानन्द का उत्तर

प्रत्यक्ष—आप ईश्वर २ कहते हो परन्तु उसकी सिद्धि किय प्रकार करते हो ? उत्तर—सब प्रत्यक्षादि प्रमाणों से।

प्रत्यक्ष—ईश्वरमें प्रत्यक्षादि प्रमाण कभी नहीं पट सकते हैं।

उत्तर :— इन्द्रियायं सन्नि कर्णोत्पन्नं शब्द मध्यपरेश्व मध्यमि-चारि व्यव सायात्मकं प्रत्यक्षं न्याय। १/४

यह गौतम मुनि कृत न्याय दर्शन का सूत्र है। जो श्रोत्र, स्पर्शा, चक्षुः, श्रिङ्गा, प्राण्य और मन का शब्द स्पर्श, रूप, रस, गन्ध, सुख, दुःख, सत्या-मत्य, विषयो के साथ सम्बन्ध होता है उसको प्रत्यक्ष कहते हैं। परन्तु वह निश्चम हो। अब विद्यामान चाहेहि कि इन्द्रियो और मन से मुखो क्क प्रत्यक्ष होता है मुखो का नहीं।

'नैवे चारो त्वचा आदि इन्द्रियो से स्पष्ट रूप, रस और गन्ध का ज्ञान होने से मुखो जो पृथ्वी उसका ज्ञात्मा-वृक्ष मन से प्रत्यक्ष किया जाता है वेने इस प्रत्यक्ष सृष्टि से रचना विषयो आदि ज्ञानादि मुखोसे परमेश्वर का भी अत्यल है।

'और अब आत्मा मन, और मन इन्द्रियो को किसी विषय में लगता वा चीरी आदि बुरी वा परोपकारादि अच्छी बात के करने का जिस क्षण आरम्भ करता है उस समय जीव की इच्छा ज्ञानादि उसी इच्छित विषय पर भूक जाते हैं। उसी क्षण आत्मा के भीतर से बुदे करने में भय, शका, लज्जा तथा बन्धे कामों के करने में अग्रय निःशकता तथा आनन्दोत्साह उठता है। यह जीवात्मा की ओर से नहीं किन्तु परमात्मा की ओर से है। और जब जीवात्मा बुद्ध होक परमात्मा का विचार करने में तत्पर रहता है उसको उसी समय दमोने प्रत्यक्ष होते हैं। अब परमेश्वर का प्रत्यक्ष होता है तो अनुमानादि परमेश्वर के ज्ञान होने में क्या सन्देह।

सत्यायं० समु० ७ पु० ११३-१४ उपप्युं क पक्षियो मे महर्षि दयानन्द ने भनी प्रकार स्पष्ट कर दिया है कि ईश्वर के होने में प्रत्यक्षादि सभी प्रमाण सापक है बाधक नहीं। अतः यह कहना कि ईश्वर के होने व कोई प्रमाण नहीं अतः उसे नहीं मानना चाहेए सर्वथा निरर्थक है।

अब कछ प्रमाण और लीजिए

(१) 'जिना चेतन परमेश्वर के निर्माण किए जब पदायं स्वय आसय में स्वभावा से नियमपूर्वक मिलकर उत्पन्न नहीं हो सकते।' सत्यायंकाव्य समु० १२ पु० २६३ (कमःका)

सम्पादकीय—

# आर्यजगत्

वर्ष ३६ | रविवार २०२२, ११ दिसम्बर १९६६ | अंक ५०

## आर्य समाज मंदिर मार्ग नई दिल्ली

नई दिल्ली भारत की राजधानी है। यहाँ पर रीडिंग रोड बेंस प्रसिद्ध विद्यालय समाज मन्दिर का बन जाना बड़े ही गौरव की बात है। इसका श्रेय डा० भी मेहर चन्द जी महान्दर पुरुष चोपड़ जस्टिस सर्वोच्च न्यायालय को है। आप के ही जीवन प्रभाव, धर्म प्रेम तथा प्रयत्नोत्साह ने इतना सुन्दर धर्म केंद्र बन जाना सम्भव हो सका। इस मन्दिर की ओर इतके लोग आने लगे हैं कि इतके लोग आने से इतना सुन्दर प्रसन्नता से उद्वेगने लगता है। सारे समाज के जनतक अपने माननीय नेता श्री डा० महान्दर जी पर अमित मान है। एक विशेष बात यह भी तो है कि जैसा यह श्रेय मन्दिर है, वंसा ही इसका धार्मिक समारोह भी प्रशस्तनीय होता है। इस बार भी आर्य समाज अनाजकी मन्दिर मार्ग का धार्मिक महोत्सव बड़े समारोह के सम्बन्ध में गया। सभी के कार्यक्रम के अनुसार मुझे भी इस समारोह में जानमर से आकर शामिल होने एक विद्वानों के प्रबन्धनों को सुनने, पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज की अमृतमयी कथा सुनने, तपस्वी महान्दर विद्या श्री प० दयाराम जी शास्त्री एम० ए० की अल्पक्षता से ग्रसण होने वाले प्राण: कालीन गायत्री महामन्त्र का आनन्द लेने तथा समाज के प्रधान श्री हाता जी व कुल परम्परा के आर्य मनो श्री सोमनाथ जी गुप्ता तथा सारे समाज परिवार के उत्साह को देखने का सौभाग्य भी भला। ऋषि भक्त श्री मुल्तराज जी भित्ता द्वारा लयायें विशाल ऋषि-संगर को भी देखा, जिस से दोहवार के लगभग ने मिल कर भोजन किया।

समाजों के महोत्सव वास्तव में प्रेरणा के महान् स्रोत होते हैं। जनता को बड़ा लाभ पहुंचता है। वेद के सत्यन सत्य का किम्वदित्य रूप देखने को मिलता है। कर्म फल का सुन्दर पाठ पढ़ने को चित्त करता है। माताओं, बहिनो की श्रद्धा का

उपबन्धा प्रवाह गमने जा जाता है। आज के भौतिक युग में लोगों की धार्मिक पिपासा किन्तु है — यह सारी बातें सामने आ जाती हैं। सोमवार प्रातः से गायत्री महा जप मन्त्री हुई यत्न वेदी पर प्रारम्भ हो गया था। यह मे प्रभात के समय मे ही इतनी उपस्थिति देख कर दिल आनन्द विचोर हो जाता था। तीन-तीन, चार-चार उपमान उपस्थित आसनों पर बैठ कर आहुतिवा देते थे। नवभानों में कोई कनल थे, कोई सरकार के ऊंचे कार्यकर्ता, कोई बड़े व्यापारी तथा कई शिक्षा विचारक। ब्रह्मा के श्रावण पर श्री प० दयाराम जी शास्त्री थे। उनका अपना ही मोठा व सौम्य स्वभाव है। मधुर रस के बड़े भव्यता है, नम्रता, सरलता की सम्पत्ति है। पवित्रो पर जीवन का प्रभाव है। साथ मे समाज के विद्वान् पुरोहित प० सोमकीर्ति जी भी थे। रात को प्रसिद्ध तपोमन्त्र महात्मा आनन्द स्वामी जी की अमृत कथा का प्रवाह चलता था। इस सोल मौसम मे भी सारा विद्यालय हल नर-नारिणो से भरपूर हो जाता था। कमा से पुरुष व यज्ञ मे अत्यन्त मधुर गायत्री ब्रह्मचारी महेश जी का भक्ति रस भरा मोठा संगीत गाना-बरण को अमृत मे भर देता था। प्रभु ने बड़ा ही मोठा कण्ठ दिया है। प्रातः समाजों मे बड़े-बड़े लोग आने में संकोच करते हैं। किन्तु सब को इस समाज के महान् नेताओं से यह प्रेरणा अवश्य नेनी चाहिए। निरन्तर आठ दिनों तक कथा व तपस्य अर्से के दिनों मे सवेरे, साय व रात के कार्यक्रमों मे श्री डा० मेहरचन्द जी महान्दर, डा० गोवर्धनलाल जी दत्त पुरुष उपकुलपति निकम विश्व विद्यालय व प्रधान श्री प० ए० जी० कानेश प्रबन्ध कर्तृसमा मर्दि देहली, डा० महान्दर कृष्ण जी, श्री० प्रबन्ध विद्या। श्री अग्निहोत्री जी आदि बड़े-बड़े सज्जन आते रहते। यह दृष्ट समाज को विशेषता है। आर्य समाज

## आर्य समाज और गौरव

आज गोबच रोकेने के लिए देश व्यापी आन्दोलन जारी है। गौरवा महाभियान मर्मित के नेतृत्व मे सारा कार्य हो रहा है। गौरवा का काल भारत मूमि मे सिट जाये—इस के लिए सारी ही तस्वाए जुटी हुई है। तो माता ने सब को एक ही केन्द्र पर

के बड़े ० लोगों को यहा से यह जीवन पाठ अवश्य पढना चाहिए। आदर्मी तनिक ऊंचे स्थान पर जाता है तो समाज मे आने मे उंचे सकोच होने लगता है। ऐसा उचित नहीं है। इस समाज मे बड़े-बड़े लोग हैं—वे सब समाज के कामों मे पूरी श्रद्धा से आते व भाग लेते हैं। वे सब यवार्थ के पत्र हैं। यह विशेषता है।

रविवार को पुरोहित का मनोरम नृत्य था। श्री ब्रह्मा जी ने सबको आशीर्वाद दिया। सारे यजमान परि-वार श्रद्धा से नमस्कार करते थे। रविवार क दिन तो मेला-सा लगा रहा प्रायः सारे समाजों के सज्जन यहा जलसे मे आते थे। ऋषि-संगर मे सब ने मिलकर भोजन किया। यह भी समाज का जंजम है। इस समारोह मे अपने स्कू-के छात्रों की भाषण प्रतिबोधिता भी थी। दयानन्द वाक्य स्कून् की छात्राओं का भी मनोरम कार्यक्रम था। श्रमारी वे छात्रनिधा बड़ा जीवन निर्माण कार्य करती हैं। स्वो आर्य समाज का जलसा भी धूम-धाम मे हो गया। इस महोत्सव मे अभिपन्न ज्ञान चन्द श्री हिसार, प० त्रिलोक चन्द शास्त्री, श्री प० धर्मदेव जी विद्यामानचन्द प० पुरुषोत्तम लाल जी आदि तथा प० हरि दत्त जी नजबोपदेशक ब्रह्मचारी महेश जी आते थे। पूज्य महात्मा जी को कथा तथा डा० जी० एम० दत्त जी प्रधान दयानन्द कालेज कैंपटी द्वारा चलता प्रबन्ध के साथ समारोह समाप्त हुआ। महोत्सव समुच्च प्रेरणा का स्रोत था। माननीय प्रधान जी व मन्त्री जी समेत समाज के सारे विद्यालय परिवार के सज्जनों व देविणो का प्रेम व उत्साह प्रशस्तनीय था। पिलाप परिवार की ओर से यज्ञ योग वाटा था। ऋषि तपस्व का सारा ध्यान श्री मुल्तराज जी भित्ता ने दिया। माता कृष्णा जी ने बड़ी श्रद्धा से प्रबन्ध किया। राधाभयो की अपनी समाज का यह समारोह अत्यन्त वेतना व स्फूर्तिदायक था। —त्रिलोकचन्द्र

सागर एकत्रित कर दिया है। जगद गुरु अकराचार्य श्री, ब्रह्मचारी प्रभुदत्त जी, सुधील मुनि जी, बीर गणचन्द जी जैसे मान्य महान्दर अजगत पर हैं। सत्याग्रही जन्मे अपने आप को निष्पक्ष कर रहे हैं। स्वामी रामचरणानन्द जी, स्वामी करपात्री जी, महात्मा आनन्दमिजु जी, मार्ग-देविक सभा के मनो श्री प० राम-गोपाल जी शाल वाजे, प० रामानन्द जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पञ्जाब प० पिलाकुमार शास्त्री आदि महार-त्री जेल मे बन्द हैं। स्वामी भीम जी, श्री अंग्रेज प्रकाश जी त्वाणी जेल जाभा कर आए हैं। हैदराबाद दक्षिण से भी जाये आकर जेल मे बन्द गए हैं। आर्यसमाज दोषान हल देहली से सत्याग्रही जल्ये आते हैं। साधु गमाज हो या जैन समाज, आर्यसमाज हो या सनातन-धर्म सारो तस्वाए जलकर गौरवा के काम मे लगी है। भारत को स्वाधीन हुए उन्नीस वष हो गये। वई काद आजीवन हुए स्मरण पत्र पेश किए गए—किन्तु उनका परिगान नहीं मिलता। अब बलिदान का समय आ गया ट। यह ग्रीक है कि इन समय देश के गामने अल्प के अभाव का महान् सन्देह है। विहार एक कई स्थानों पर नृत्वा के कारण विद्वम परिस्थिति है। इपर यह गौरव-रक्षा का आन्दोलन भी जारी है।

आर्यसमाज राष्ट्र के प्रत्येक निवासि काम मे मदद ब्रह्मती रहा है। कई कामों मे तो उसने जन्मा का नेतृत्व किया है। हमारो आर्य प्रा-द-तिक मा पत्राजो तो देल के समाज सेवा के महान् काम मे प्रयास-पुर्ण काम करती बनी आ रही है। महयोग एव मनोगाम इनकी मर्मति रहती है। आज भी ममा का मेवा कायं एव दयानन्द कालेज कैंपटी द्वारा चलता जाते सारा विशाल निष्ठा काय राष्ट्र मे प्रतिष्ठ हो है। इन गौरव के आजीवन मे भी ममा को अग्रगण्य के प्रस्ताव परिपत्र कर दिया है। मन्त्र सरकार से कहा है कि जन-नर के माते भारतीय जनता की अजाज को सुनते हुए देश मे सरकार गान-का मर्मता बन्द कर देवे। ममाओं का भी निर्देश दिया है कि वे भी दन काम मे अपना पूरा-पूरा महयोग देवे रक्ष-समाचार पत्रों मे सभा का परिपत्र (योग पृष्ठ ६ पर)



स्वतन्त्रता से पूर्व हमारी बर्तमान राष्ट्रीय संस्था कायं न के तत्कालीन सभी अवस्थापन नेमाओं को भी माता के सदृश प्रतीत होना चाहती थी और बिदेसी प्रतीतियों से गोहत्या अन्वय कराने तथा मोरलता की ओर आरु-पूरा ध्यान दिलाने में वे सदा सज्जित रहते थे। लोकात्म्य बान गमापर लिखक जी ने तो यहाँ तक कह दिया था कि स्वराज्य प्राणिक के गुरुन पंचात पांच मिण्ट के अन्दर हम भारत में गो-हत्या का कलक धो डालने और गो हत्याएँ, को कडा दण्ड दिया जाएगा। पुष्प गांधी जी के विचार भी इसी भावना के चोतक थे। वे स्वराज्य में भी बढकर गो-रक्षा को स्वीकार करते थे। उनकी नजरों में गो-हत्या अनृत्य की हत्या में भी बढकर पाप था। परन्तु वेद है कि देश की वाय-डोर सम्भालने के पक्षचात उसी कायं सस्था के कर्णधारों का दृष्टिकोण न जानि क्यों बँसा न रहा और अत्रावधि भी गोहत्या का कलक भारत भास से मिटाया न जा सका।

अधिक दुःख एव लज्जा की बात तो यह है कि परतन्त्रता के दिनों में भी अर्थिक आज गो - हत्या, गो-हत्याओं और गो-मान् बाने बानों को उलगाहित किया जा रहा है। उल्लेखनीय के वागार त्रिनामन्त हजुरतपुर प्रथम से ३२ करोड रुपये से दुनिया का नवने बडा बूचइखाना बनाया जा रहा है। जहाँ प्रतिदिन ५००० से १५,००० तक पशुओं का बच किया जाएगा। गांधी जी की अहिंसा का इतने बड़िया और सुन्दर व्यवहारिक रूप पेश नहीं किया जा सकता !

जहाँ एक ओर बर्तमान सरकार को आदि मुक्त पशुओं के बच और मास भक्षण को बढ़ावा देने में जूटी हुई है। वहाँ दूसरी ओर पश्चिमी विद्वानों के मानन-गुन कतिपय भारतीय विद्वान् अपने प्राचीन धर्म ग्रन्थों एवम् पुष्प-पुष्पों के जीवन वृत्तों में से गो-भक्षण अपने लिये और प्रकाशित कराए जाते हैं अत उनका अर्थो-धो-पेन्डिमें परतु प्राय धर्म ग्रन्थों का स्वाध्याय न करने वाले विद्वानों पर उलटा प्रभाव पड़ता है और वे ऐसा मानना प्रारम्भ कर देते हैं कि गो-बध सदा से ही होना चला आ रहा है और कि हमारे

धर्म ग्रन्थ इनकी आज्ञा देते हैं ! ऐसे न हानुभक्तों तथा पश्चिमीविद्वानोंमानसके पुत्र भारतीय सज्जनों की सेवा में कुञ्ज प्रमास्य हम अपने इस लेख में प्रस्तुत कर रहे हैं ताकि पारस्परिक विचार विमर्श से मिथ्या धारणाओं का निनास हो सके।

**वेद और गाय**

माता श्वासा दुहितृ बभूवा स्वसाः।दिवानामान्तृत्य नाभिः। प्रभु मेकं चिकित्से जनाया गमयनायामदिति बधित ॥

**नवीन संतति के उदीयमान लेखक ने वेदों के आधार पर गो हत्या निषेध पर प्रकाश डाला है। गो भक्षों तथा देश के उच्च संन्यासी महात्माओं के लिए अति उपयोगी है। पाठकों की रुचि अनुकूल इस से अगामी अंक में भी लेखक के विचार पढ़िए।**

गाय ह्य इष्टचारिणो की माना, बभुओ की पुत्री और आदित्य ब्रह्मचारिणो की वहिन एवम् पुत्र अमृत का लज्जाना है। प्रत्येक विवेकशील मनुष्य को भी कहला है कि निरपराध और अवश्य गो का बध न करो। अज्ञानों अत्यन्तु भद्रमन्वलीदन्तु गोष्ठे रसगन्धर्वम्। प्रजावतीः पुरुषा इह स्मृतिदाय पूर्वोत्पत्तो हुहानाः। अथर्व ५-२१-१। गोए हमारे सहा आ गई हैं और उन्होंने हमारा कल्याण किया है। वे हमारी गोशाला में बँडे तथा हमें मुख दे। ये रज्ज-विज्जी गोए सहा उनस बच्चों में मुक्त होकर इन्द्र (परमात्मा) स्वामी, गोपालक के लिए उपाकाल से पूर्व दूध देने वाली होवे।

**गोब्रध कर्ता के लिए दण्ड**

यदि गो या हृदि यत्स्य यदि पुरुषम्। त त्वा सीमेन विषयामो यथा नोऽज्ञो अवीरहा ॥ अथर्व १-१६-१ यदि दू हमारी गो, चोडे तथा पुरुष की हत्या करता है तो हम सीसे की गोदं, से तुम्हें बीच देंग, जिस से नू हमारे बीरो का बध न कर सकें। पूर्व गांधी मेदव्या इयादित्यवीरिभत् कृष्णया सुभ्रतोक्म्।

मद गृह कृष्ण ब्रह्मधो बृहदो बय उच्यते सभामु ॥ गोको ! तुम कुल शरीर वाले को हट्ट-पुट्ट कर देती हो, एवम् तेज हीम को देखने में मुन्दर बना देती हो। इतना ही मही तुम हमारे धरो को अपने मगलवय अन्व से मगलवय बना, देती हो। इसी लिए सभाओं में तुम्हारे ही महान् यत्न का मान होता है।

**बौद्ध धर्मों की प्रार्थना**

इमे गृहा मयोभूयः ऊर्वस्वन्तः पदवन्तः।

पूर्णा वामेन तिष्ठन्त्यस्ते नो आनन्त्यापतेः ॥ अथर्व ७-७-१०२

वे सारे के गारे पर मुखमय हो जाय, ये सारे के गारे गेज में भर जायें, ये सब के सब दूध पुत्र से पूर्ण हो जायें मुन्दरता से, भरपूर हो जाय और ऐसे ही भरपूर पर हम बाने बाणों को प्राप्त हो। उपजुता इह गाव उपजुता अजावय। अथो अनस्य कीलान्त उपहोतुर्गृहे नः अथर्व ७-६-०-५ 'हमारे इन सुन्दर गृहों में दूध देने वाले गाय जाति पशु प्रेमपूर्वक पाले गए हों, उन देने वाले चौपायों स्नेह से सुरक्षित किये गये हों और हमारे धरो में अपने तथा उनके लिए अन्नका बहुत बडा भण्डार सग्रह किया गया हो।

**उपासक की तइप**

गोम रारिचिणो हृदि गावो न यसे स्वः। मयं इव स्व औषधे ॥ ऋ १-९१-१३ अथ सो वैश्वर्यं के स्वामिन। आओ हमारे मनो मन्दिरो में निरन्तर रमस करो, और ऐसे ही रमस करो गायें स्वतन्त्रता पूर्वक सेलो में और मनुष्य स्वतन्त्रता पूर्वक अपने धरो में रमस करते हैं।

इन वेद मननो में गाय की महिमा और उसके प्रति मनुष्य का क्या कर्तव्य है इसका इतना स्पष्ट और अमनियम वर्णन है कि उस के अवबय और निरपराध होने में कोई सन्देह शेष नहीं होता। गोपालक के लिए प्रास्य दण्ड का जो वेद विधान कर रहे हैं उन के माथे गो हत्या का कलक मडना क्विती विचारशील बुद्धिमान का काम कैसे माना जा सकता है ? वेद तो गोपालन का ही पत्रपाठी है न कि गो-बध का और देखिए—

पुष्टिं पशूना परिजयमाह ऋगुपदेशं द्विपदायस्व धान्यम्। पयः पशूना रत्तोमपशोनाः बृहस्पतिः सविता मे नियच्छाम् ॥ अथर्व १९।३।१।

'मैं पशुओं से अन्न पुष्टि लेता हूँ, तोपाये और चौपायों से भी पुष्टि और धान्य लेता हूँ। पशुओं से दूध तथा औपधियों से रस सकल स्वस्थ के स्वामी का उपासक सविता देव ने मुझे दिया है।

दूध देने वाले पशुओं में दूध के अतिरिक्त मास, हड्डी, चर्बी और रक्त सभी होते हैं परन्तु वेद मन्त्र का उद्देश्य है कि हम पशुओं से केवल दूध ही लें। इनने स्पष्ट आदेश के होते हुये यह कहना कि वेद गोबध को ही मास अथवा पशुओं के मास भक्षण की आज्ञा देते हैं। वेदों से अपनी अनभिज्ञता ही प्रपट करना है या फिर जानते बजते हुए वेदों को बदनाम करना है। (क्रमसः)

**देश में आपात स्थिति खत्म करने की मांग**

आम चुनावों के लिए लोक सभा-सदस्यों के अनेक मुद्दाव नयी दिल्ली—आज लोक सभा में आगामी आम चुनावों पर विधि धर्मवी श्री पाठक के अन्वय के बाद सदस्यों ने मुद्दाव दिया कि नजरबन्दी निरोधक कानून और भारत रक्षा नियमों के अजीन निरपराध राजनीतिक बन्धियों को रिहा किया जाए ताकि वे चुनाव में भाग ले सकें। सदस्यों ने यह अनुरोध किया कि चुनावों के लिए सामान्य बाता-वरण पैदा करने के लिए आपात स्थिति खत्म की जाए। इसके अलावा इकट्ठे होने तथा अभिव्यक्ति के मौलिक लोकतन्त्री अधिकारों की रक्षा के लिए प्रयास किए जायें।

ले० ओम प्रकाश जी महोपदेशक आ० प्रा० प्र० सभा जालन्धर

भारत एक भाषना प्रधान देश है, इसकी सनातन वैदिक संस्कृति वेद शास्त्र ऋषि, धर्माचार्य, त्यागी महात्मा पशु-पालन, बाह्यरूप एव ज्योतिष-मन्त्र-प्रदक्षक गुरुकुलों एक पूज्य पुरुषों पर विद्याया, ब्रह्मा और साकार तथा पूज्य की भावना रही है और जब तक भारत सच्चे अर्थों में भारत रहेगा यह भावना लक्ष्मण बनी रहेगी। किसी के हट्टाए हट नहीं सकती।

भास्वय में देखा जाय तो मानव में भावना ही मुख्य है। जिस में भावना नहीं वह मानव, भास्वय नहीं प्रयुज्ज एक हाड-मांस का निर्जीव लोथहा-सा ही है।

आज की नरसिंह सरकार महात्माओं और जगत् युद्ध को जित में दूब रही है। एक समय भा कि मोक्षले और लिलाल और अज्य कायस के नेता शक्राचार्य जैसे महात्मा पुरुषों के शासना कर नरसिंहपुदक आधोवर्षिद प्राण्य करने में यह महात्मा उपस्थित ही कमान या जो राष्ट्रपिता भारत के श्रद्धाभाजन बन कर महात्मा गांधी बहलाये।

श्री रवीन्द्र नाथ टैगोर स्वामी विवेकानन्द, स्वामी रामानंद भी एक महात्माही महात्माओंने ही हमारे देश की संस्कृति और परंपरा को बचाया है। और हमारी सरकार का,आज उन्हीं पर धमन की नीति का उपयोग करना बहुत ही अनुचित है।

आज भावना के कारण स्कूलों में अनियमितता, उद्वेगता तथा अनुशासन हीनता फैल रही है। स्कूलों और कालेजों के शिक्षक आध्यापकों के प्रति कोई मान सकता नहीं। आज कायस के नेताओं पर से देख का विचारा उठ मा बना है, जिस के परिणाम संकषण सारे देश में प्रलपस फैल रही है। जनता में अनौषण, प्रेमभाषा एव एक दूसरे के प्रति महादुःख भूति न हो कर पूरा का भाव फैल रहा है। प्राप्तीयता के नाम पर कई प्रकार के भ्रमई सखे ही रहे है।

मासिक और मजदूरों में विरोधाभास बढ़ा हो रहा है। अजाज की कमी और मरकारी महकूमों में अग्रकर दूसरोंकी इत्यादि से जनता हतनी लग सा गयी है कि जसतीय का साहायस्य त्यागे भी नहीं देना-पारो और फैल हा है। महात्मा अरिप पर जोर न करार, मनुष्य की कुर्सी पर जोर दिया जा हा है। जब किसी पदाधिकारी का रिपन अच्छा नहीं होता तो यह कह

## भारतीय सांस्कृतिक भावना : गोरक्षा श्री हरिकिशनदास जो अग्रवाल बर्मई

विना जाया है कि हमें इसी के नज़े जोषन से क्या मतलब ? पर ये यह नहीं समझते कि जिस मनुष्य का जो सासलो जीवन होता है, वही उसके साम-जिक जीवन में प्रतिबिम्बित होता है, अगर उसका सासलो जीवन अच्छा है तो सामाजिक जीवन भी ठीक हो सकता है। अन्यथा नहीं। क्योंकि सामाजिक जीवन को सामाजिक जीवन से अलग नहीं किया जा सकता।

प्रथिमउल में वही लोग पदासूद्ध होने चाहिए जिन्का चरित्र किसी भी शक से मुमुह से दूषित नहीं है। जिनका चरित्र विमकुल शुद्ध ही। जिनका अपना चरित्र शुद्ध नहीं वह मामाज कल्याण क्या कर सकते है ? उनसे ममाज क-यास की आशा रखना केवल अजाग कुमुम सरीखा है।

गो-रक्षा का प्रश्न भी देश के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण एव-भावना प्रथम है। गाय परंपरा में पूज्य मानी जाती है। यह पूजा केवल रूपोल कल्पना ही होगी, किन्तु वेद-शास्त्रों पर आधारित एव परम्परागत है। वेद-शास्त्र हमारी संस्कृति के आधार स्तम्भ एव मुख्य हैं। जैसे एक मन्दिर, मस्जिद या गिरजाघर का तोहना इस देश में एक मुनाह है हालांकि उनमें संस्कृती को तरह कोई जीव नहीं है। सरकार दलनिए इनकी रक्षा कर रही है कि धर्म विधेय की भावना उस मन्दिर-मस्जिद और गिरजाघर की सुरक्षित रखना अपना कर्णव्य समझती है।

जबकि मन्दिर जिस में कि एक देवता का निवास है—उसका देवता सरकार अपना कर्णव्य समझती है तो यह गाय के रूप में चनता-फिरता मन्दिर जिस में शास्त्रों में ३३ करोड देवताओं का निवास माना है, उसकी रक्षण करना हमारी परमनिपेक्ष सर-कार को बहाने तक उचित है ? क्या कि धर्मनिरपेक्ष का अर्थ सब धर्मों का श्राद्ध करना है। मोहत्या पालू रख कर सरकार बहुमत हिन्दुओं की धार्मिक भावना को आधार पशुका रही है।

इस प्रश्न को तत्त्वचिन्तकों की दृष्टि से राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, लोकमाम्य तिसक, सत विनोबा भावे, चंकरायण, छपरलित सिवाजी, शास्त्रर राजेन्द्र प्रसाद, रंजित मदनमोहल

मानवीय, मय ज्ञानेश्वर, सत तुकाराम आदि अनेक महापुरुषों में सोचिए है— उसी प्रकार कुटियों पर बंटे लोको को भी सोचना चाहिए, क्योंकि ऐसे लोको के ये महत्वपूर्ण पिचार देश की जनता कनिप अनुकरणी होने चाहिए।

गाय भारतीय परिवार का एक महत्वपूर्ण अंग है। किसान गाय को अपने कौटुम्बिक अंगव्य की तरह पालता पोसता है। जैसे आदिक दूदित के आधार पर निरमग, कुटुं मा बाप को या बीमाग चर्चों को मान रही दिया जाता इनो प्रकार कुटुं गोश की हलाय बन्द को जानी चाहिए।

महात्मा गांधी गय राष्ट्रपति शा० राजेन्द्र प्रयासजी के प्रयत्न १९०१-१९६० को भारत सरकार के दृष्टि मनायव के द्वारा गोरक्षा और पोषालन पर भसी भाति विचार करके समन से देश के लिए दतारतक ही की अग्रजता में पशुव्यस्य और ससर्धन कमेटी (Cattle Preservation and Development Committee) बनायी गयी।

भारत सरकार के द्वारा नियमित १२२ कमेटी में ६-११-४९ को अपनी रिपोर्त दी और गोरक्षस तथा गोसर्धन की योजना उपस्थित करते हुए यह सिफारिस की कि १४ बर्त तक की उमर के वन्य पशुओं का बच सुरलन गेक दिया जाए और 'दो बर्त के अन्दर अन्दर सम्पूर्ण गो बच बन्द हो जाय।'

उन सिफारिस के अनुयाय गोवच सम्पूर्ण बन्द हो जाना चाहिए था, किन्तु सरकार अपनी ही मिमुज्ज को हुई कमेटी की पूर्णता अवहेलना कर रही है।

मनुष्य जिस प्रकार सोचता है, वही वह करता है, ईश्वरीय अटल नियम है। हमारी सरकार गो-हलाय करने की ही सोचती है, इसलिए उसे हत्या ही हलाय सुझती है। गो-सर्धन की कोई बात उत नहीं सुझती। मनुष्य का मस्तिष्क अमर विचार को और बना जाता है, तो वह विचार की सोच ही नहीं सकता। और जो विचार की सोचना है वह विचार ही बिकता। इस कारण हमारी अपनी सरकार से अनुरोध है कि वह बिकार की सोचे न कि विनाय की—जिससे या का मो चन बर्द, दूध-दही अधिक

प्राप्त हो, तथा अन्य की समस्या हल हो।

प्राची माय जिनमें अन्य विवाह है, यह तो एक न एक दिन स्वाभाविक रूप में मृत्यु का आगम होता है। अगर हम हलाय बन्द कर देते या भी पशु, कितनीसे जन विवाह है के एक न एक दिन स्वाभाविक मीत में मरेंगे ही। जिनमें उनके चमई, सींग, हाडिया अदि भी इनो प्रकार मिलेंगे। उनमें किसी प्रकार भी चमई नहीं आयेगी।

सरकार जिनमें श्री साद के कायसले मया दे किन्तु अनाज की समस्या जब तक मो-बच जारी है हल नहीं हो सकती। क्योंकि कमापटी साद भूमि को लौसवा और इस्तिहो जन देनी है। कमी उपजाऊ नही बना सकती। किन्तु गाय के गोबर की स्याद भूमि में उपलभन की गलत की पतानी ही है उनके साद का अवर नीम बर्त तक भूमि में रहना है। हमें एक माशी में बनाया कि पोषो में केवन साद (Fertilizer) शामिल में गोई सड सड है। किन्तु अवर उनी फिटिलाइजर को गाय के गोबर में मिला कर उनाया जाय तो यह गोब बहुत बच बने है।

आज जब हम धर्म के नाय बर्द नही पाते किन्तु मुक आर्थिक दृष्टि की ही मरना देते है, इसी का आज यह परिणाम हुआ है कि मासिक और नौकर में पिना-पूच में, भाई भाई में, पति-पत्नी में और गुरु शिष्य में कोई धार्मिक नाय रह रही नही गया है। परन्तु के मतभेदों के कारणस जित नवे भगई सखे हो रहे है, नही मो पहले नौकर-मासिक का पिता-पुत्र का मा सम्बन्ध रहना गया था। सभी सुझी है। कोई देण नही या कर्णिक मनुष्य में पानता ही एक ऐसा महान् ताल है, जिसके कारण पिता-पुत्र, मासिक-नौकर बर्द-भाई भाई पति-पत्नी माता-पुत्र का सम्बन्ध बचा हुआ है। एक-दूसरे को अपना समझते है। अगर भावना नहीं तो सम्बन्ध ही नहीं। पास रहते हुए भी एक-दुसरे में कीमो दूर ही जाते है।

देश के प्रति भी सद्भावना, प्रेम, कर्णव्यवृद्ध का आधार भी देश की भावना ही है। अगर भावना नही तो देश के प्रति न प्रेम ही होगा और न कर्णव्य ही पानना किया जायेगा। मन्त्री चुनकर भाते है, चुनाव के समय न जाने सेवा करने की गर्वयं खाते है, (तेज युद्ध ६ पर)

## महान् दार्शनिक चले गए

यह दुःखदायक समाचार पढ़कर बचपान-भा हुआ है कि भारत के महान् कला-भर, आचार विद्यार्थिशा-लय के पूर्व उपकुलपति दयानन्द काव्यज कानपुर के पूर्व योग्यतम कार्य-अध्यक्ष के प्रतिष्ठ वयो-वृद्ध नेता, लखन प्रसिद्ध बनाने एव लेखक डा० प्रिंसिपल दीवानन्द जी कानपुर हमें सदा के लिए छोड़कर परलोकवासी हो गए। अब वह स्वर्गीय बन गए हैं। उनके चले जाने से सारे ममान तथा देश को गहरी क्षति पहुँची है वह किसी रूप में भी पूरी कभी नहीं होगी। उनका स्वान अपना ही था, उनके विधिष्ठता तथा प्रभाव अपना ही था। उस ऊँचे स्वान पर और नीचे बैठ सकता है। आज आर्य समाज के विशाल परिवार का एक अत्यन्त प्रभावशाली, मार्गदर्शक एव अनुभवों की सम्पत्ति से भालानामा करने वाला वृद्धतम मूल्य नेता सदा के लिए चला गया है। बिना सहीपण के यहाँ जा सकता है कि डा० दीवानन्द जी सारे समाज और तमाम देश के थे। बहु सांजनीन बन गये थे। बहु इस समय अविचारण न होकर समाजस्य बन चुके थे। उनका प्रत्येक श्वास व श्वाय समाज की सेवा में लगा हुआ था। उनका व्यक्तित्वमाय यव-सा समाज ही कर समष्टिमाय के रूप में प्रकट हो गया था। वह स्वयं अर्थात् वे स्वयं एक जीवन, एक पुण्य, एक आदीशन तथा एक समाज बन चुके थे। उनका प्रत्येक वाक्य अपने में सारात् एक प्रकार का प्रेरणा का स्त्रोत बन गया था। इतने बड़े कला-भर को कर भी उनके जीवन में धर्म के प्रति आस्था, अध्यात्मवाद के लिए श्रद्धा, वैदिक धर्म के लिए शक्ति एवम् आर्यसमाज के लिए सर्वोभावना कृ-कृत कर भगी हुई थी। यह पढ़नी बात है जब कि जालन्धर व जलारक-नी सवाज नई देहरी के वाणिज्य महोत्सवों पर उनका उनके प्रभावपूर्ण दर्शन तथा दार्शनिक प्रवचन से बर्णित रही। उनका प्रवचन सारे महोत्सव की सम्पत्ति पर अन्तिम रात को सचमुच एक चतना का स्त्रोत होता था। पूरे वर्ष के लिए सम्भरी व स्वादुतम प्रसाद होता था। वेदों पर उनका कितनी आस्था थी, उपनिषदों का किन्तना गम्भीर मन था, किन्तन पर किन्तना अधिकार वन-या वह गरी बात उनका प्रवचन सुन कर स्पष्ट हो जाती थी।

प्रारम्भ से ही उनका जीवन समाज के क्षेत्र में बीता। समाज सेवा उनका बर था। जवानी में ही स्वयं की समाज के अपने आग को अर्पण कर दिया। शिला विद्यारथी के उनकी विधेय मंगना होती थी। आर्य समाज को इस बात का गौरव है कि उनके इतने दार्शनिक नेता भी हैं। प्रिंसिपल दीवानन्द जी बस्ता व लेखक भी तो गजब के थे। आज भी कानों में उनके वाक्य गूजते हैं। जब भी आर्य समाज कानपुर के जलसे पर जाने का तीर्थाय वष बाध मिलता तो इस महान् नेता के मैं अवश्य दर्शन कर जाता था। उनके शब्द अपना भी कड़े हुए कानों में गूज रहे हैं कि आर्यसमाज प्रत्येक अवस्था में चलता रहे। आर्यसमाज वेदा ही इसी लिए हुआ है। डा० जी आर्यसमाज की विभूति वें। अर्थात् प्रादेशिक समाजों कई महत्त्वपूर्ण पुस्तकें लिख कर दी। उनको पढ़ कर स्वर्गीय फिलास्फर का उन्मेष साक्षात् आत्मा ही बोलता है। बडा शरीर आने के विचारों का भार दे गये। अब उनके निचन से सारा ममान सम्पन्न है। उनके सारे परिवार से हार्दिक सम्बन्धन प्रकट करता है। इस समय सब से बड़ी उनकी गदवार जहा मन्वालेक अपने नन-अनो न गोपीनी है कि वना ही नकती है। हम यह अवश्य कहेंगे कि उनका सुन्दर जीवन प्रकाशित किया जाय। तथा उनके विवेक लेखों व भाषणों का सङ्कलन करके हिन्दी व इण्डियन में उपलब्ध जाये हम अश्रद्धालि वेन करते है वाग्मजिक श्रद्धालि तो यह है कि वः सारा समाज को उभे। मेवाकान में नवा उनके शाय भी उनका मारा समय आर्यसमाज के कार्य में लगा हुआ था। लिखने भी समाज के लिए और बालते भी हनी के लिए वें। इसलिए अब समाज का यह कर्तव्य है कि उनके विवेक व प्रवचनों तथा लेखों को एकत्रित करके तब पर एक सुन्दर ग्रन्थ तैयार किया जाये। इस में उनके दार्शनिक, गामाजिक, धार्मिक विचार हों। यह श्रवण जल के भौतिक युग में लोगों विधेयक नवयुगक युपस्थियों के हाथ में दिने जायें। शरने महान् दार्शनिक के अनुभव भरे विचारों का निश्चित रूप से प्रभाव पड़ेगा। हमारी दयानन्द काव्यज कमेटी नई देहली भी इस काम के लिए बड़ी प्रेरणा का स्त्रोत होगी। स्वर्गीय प्रिंसिपल दीवान

## आर्यसमाज और...

(पृष्ठ ६ का लेख)

सुन्दर प्रस्ताव पुनः रूप से प्रकाशित हो गया है। जब सांवेदिक समा इस में उठो है तो स्वर्गीयः सारे समाज का इस में सहयोग आ ही गया। उनीस वर्ष हो गये भारत से विदेशी सत्ता को गये हुए। उन ममय बापू गांधी जी, लोकमान्य तिलक, महात्मा गांधी, डा० लाजपतराय जी आदि मारे नेता कड़ा करते थे कि स्वाधीन भारत में गोवध बन्द किया जायगा। विदेशी राज्य चला गया। अब अपना ही राज्य है। अपने ही कर्णधार है। अपने ही लोग शासन मूख के चत्ताने में लगे हैं। किन्तु बड़ा दुःख है कि आज के अपन इस स्वतन्त्र भारत में आर्य से भी गोवध अधिक से अधिक होता जा रहा है। बूढ़ाखानों और ज्वायों व। गोरक्षा की धारा भारतीय सविधान में मौजूद है। कई प्रांतों में गोवध बढ़ी कानून भी पास किया जा चुका है। घोड़े से प्राप्त बाकी है जिन में गोवध बन्द का कानून बनना शेष है। परन्तु जनतन्त्री राष्ट्र में भी जनता से इस उचित आवाज को सुना नहीं जा रहा। हम किसी भी आन्दोलन में हिना व तोड़फोड़ की नीति से संन्यास असहमत हैं। राष्ट्र की सम्पत्ति को कोई भी हानि पहुंचाना है, बहु ठीक नहीं है। जब कभी कोई आन्दोलन होता है उन्में प्रायः कुछ नोड फोड करने वाले तत्व आ कर मिल जाते हैं। राजनीतिक दल भी अपना अवसर दुड़ने का प्रयास करते हैं। किन्तु आन्दोलन को केन्द्र तो विद्युत् अपना निस्वार्थ भाव भाव काम संकर जायें चलता जाता है। गोरक्षा के निमित्त किया जाये वाला यह सब के सामने है। जयद गुफ शकरा-बाध हो या मुस्लिम मुनि जी महाराज ब्रह्मपारी हो या आर्य समाज समानत धर्म व गणमुन्धन व इतने किस्ती में

भी राज नीति में नहीं जाना। वे सारे अपने अपने लोगों के कार्य में लगे हुए हैं। गोरक्षा का प्रयत्न नहीं यह तो राष्ट्रीय प्रयत्न है। नौ सब की है। इस पूत की जावन निर्मासु के लिए सब को आवश्यकता है। इस में तो मुसलमान भी साथ है। जलता को पुकार है सब की माग है। विधान में मौजूद है यदि केन्द्रीय सरकार इस को सुनकर गोरक्षा कानून पास कर दे तो सारे राष्ट्र का कल्याण हो जायगा। आज इस गोवध से सारे देश में रूप पी का किन्तना जवाब है। यदि गोवध बन्द न हुआ तो नितात सत्य है कि दुग्ध भी देखने को भी नहीं मिलेगा खाने की बात दूर रही। हजरात पुं के पास सुनने वाले बत्तीस करोड इराणों के मध्य से बूढ़ाखाने के भयानक समा-चार से कौन भारतीय है जो बिल्कुल नहीं हो गया। यह बात भी समझ में नहीं आती कि यह प्रश्न केन्द्र का नहीं है। क्या इस्लाम केन्द्र का सम्बन्ध नहीं है? हिन्दुसैटिस्टिक वनाये समय केवल हिन्दुसमाज के लिए क्यों बनाया वा। उसे सिविल कोड विन का रूप बन न दिया गया। यदि विधान की कोई अडचन है तो जब कई बार इससे पूर्व भी सविधान में अपने मतलब का परिचयन कर दिया गया तो अब को बार जनता की अनेक माग पर प्याल देते हुए गोवध बन्द करने व सविधान में परिवर्तन क्यों नहीं कर दिया जाता? यदि सरकार चाहे तो क्या बात नहीं की जा सकती? सब कुछ ही सकता है। सब लिए इस आन्दोलन को देख कर तथा बड़े-बड़े महात्मा लोगों को अनजान को नामने रखते हुए हमारे नेताओं का कर्मव्य है कि जब इस आवश्यकता वा पर विचार कहे वीस गोरक्षा का अदिश जारी करे—



## भारतीय सांस्कृतिक ...

(पृष्ठ ५ का लेख)

पूर्व के लोगों की सेवाओं को न जाने कितनी महत्ता आकन्ते हुए बोट भा-क मरिमल्लने आते हैं। जत. हमारे मि-मल्लको केवल लते-जोने से ही किसी प्रश्न का मूलाकन नहीं करना चाहिए किन्तु उन्में जनता की भावना की ओर भी देखना चाहिए। हिन्दु विन का देश में 13/4 प्रतिशत बहुमत है। उनका राष्ट्रीय सम्बन्धी शरियो उन्में प्रतिरोध उनके धर्म वन्य वेदों व भावना पर है।

होना ही पडता है—

'धरिया मंगा करे पुकार

कहा मयें वो आर्य कुमार।

कार्य स राग्य मे आकर देको

चलती है मुक पर तलवार।

यह ऊपर का दोहा आज की सरकार पर लागत करता है।

क्या हम आर्य हैं ? क्या आप और हम आर्य कहलाने के हकदार है।

क्या आप और हम समझते हैं कि हम राम और कृष्ण के आदर्शों का पालन कर रहे हैं ? 'अनार नही' तो आप और हम आर्य नही कहलाना सक्ते।

श्रुति जो ने कहा आर्य बनने के लिए आर्य विचार होने चाहिए।

वो हमारे अन्दर तब तक नही आ सक्ते जब तक हम माय का दूध नही पिये।

आज जो हम अपन आर्य को आर्य कहलाना है। क्या हम वास्तव मे आर्य हैं ? नही' क्या हमारे विचार तथा कर्म आर्यों जैसे हैं ? कदापि नही' अगर हमारे अन्दर वह सन्ने प्रकार की जल्छाइया नही हैं तो हम आर्य कहलाने के हकदार नही है।

अरे भारतवासियो अगर तुम्हें सच्चे आर्य बनना है तो तुम्हें अपने पूर्वजों के सम्मान की रक्षा करनी होगी।

तभी हमारा कल्याण हो सक्ता है। आज क्या हो रहा है ? जिस देश मे प्रातः सूयें की पहली किरण के साथ कई लाख गऊओ का दूध निकाला जाता था, जिसे पीकर बच्चे अपने पिता पावन के लिये बैठ जाते थे और लींग माय माता का दूध पी करके अपने-अपने कार्यों मे जुट जाते थे। आज उसी देश मे उसी पहली किरण के साथ लाखों गौओ, के सर काट दिचे जाते हैं : दूध की जगह आज खून की धाराएँ बहती हैं। तो आज हम और हमारे सम्मान वीष्य माता-पिता भी दूध के लिये तरसते हैं और चाय की ओर झुकते हैं।

तो देश हरेद्या अहा अनाज के मछारए रहते थे। धरती सोना उमलती थी। आज वह देश अन्न देको के जागें हाथ फैलाता है। क्या यही आर्यों का क्विट है ? 'नही' आज हमें सूँडला अक्षय करनी है। यदि हम अपनी ओर देव की स्वागतना चाहते हैं। तो हमें गौरैया जलव्य करनी पड़ेगी। वरना हमारी स्वतन्त्रता को बह बक्का लनेगा। और देश की शासन प्रणाली भी डाका बोल ही ज़ायेगा। और हमारा देश फिर प्रजानो बंजीरों में फल जायेगा।

# गौरक्षा और आर्य

## श्री पूर्ण जी आर्य, आर्य कुमार सभा जवाहर नगर पलवल

यह सुनोनी का पक्का एक ऐसा बक्का है जो सिर पर तथा हजारों बर्द लग जाते हैं। फिर भी रोका मंगोलेना? एम्पिये डेमे बाहिये कि अपनी बजादो को कायम रखने के लिए यह आवश्यक है कि हम जो माता की रक्षा अवश्य करे।

माय के गुणों का वर्णन करना बटन कठिन है। वास्तव मे देखा जाये तो एक मानव समाज का जीवन माय पर ही निर्भर करता है।

आर्य भी रोका आन्दोलन बना है। उस मे वैदिक यम के अनुयायिकों का प्रथम कर्तव्य हो जाना है कि वैदिक सभ्यता के पिन्डों को मिटने मे रोकने के लिये तन, मन व धन की कुशबानी दे। और कार्ग्रेन राज्य को बना मे कि यदि तुम उन महारामा के अनुयायी हो जो भारत मे राम राज्य लाना चाहना था। तो मन्ने पहले अपने आपको राम जैसा वासक बनाओ और ही-हत्या पर पूर्ण प्रति-

बन्ध लगाओ।  
आओ अगर तुम्हारे अन्दर भी हिम्मत है तो अपने और जगन के गुन स्वामी दयानन्द जी के तरह गो-रक्षा करने के लिए लार्ड-ब्रूस जैसे कार्य भी नेताओ को अपनी मांग के लिए भुक्का दो।

यदि तुम्हारे अन्दर राम, कृष्ण का मान गौओ के प्रति दब है। दम्पिये राजा पर यम है और श्रुतियो के प्रति सम्मान है तो आज गो रक्षा आन्दोलन मे अपना सर्वस्व लुटा दो और अपने घर के सामने एक माय बाघ कर अपना और माय का सम्मान बढ़ाओ। जिस से भारत के कोने मे यही आवाज गुन उठेगी कि —

'गाऊ माता की जय'  
गाय देव की गो माता है।  
हुनिया की जीवन दाता है।



# सुन माय गरीब की पुकार पुकार !!

(सौ. आर. अहजा परदेसी, आर्यसमाज उलहासनगर बम्बई)

भेद आज किस मे नही रहती।  
प्राणी-मात्र का हित हीं करती।  
दूध मेरा है निर्विकार।

गौऊ पानी सादा, छाऊ घास भी मसली।  
दूध मखन की वृद्धि करती।  
फिर यद्यो गले पे छुरी का शरीर ओं भारत

प्रजा नारी है मेरे पल मे।  
प्रेम दया नही तेरे रग मे।  
क्या तुम्हे नही मेरी दरकारी। ओं भारत

भेली आदि मे हाथ है मेरा।  
मेरे हित मे हित है तेरा।  
जब मे बयो हौती धर्मशरारी।

(हाथ ! ) कृष्ण सूयि मे माय है कटती।  
गौ-सम्पति भारत की पटती।  
राज्य परया वा बेकार—

(अन्न तू स्वबेदी सरकार)  
कलम अहतापीयता (४८धा) मेरे ही विधान का।  
बचन देता है प्राण दान का।  
(क्या?) अपना विधान भी नास्कार?

भर कर भी मे प्रसा करती।  
पुणं हृदी उपयोगी धरती।  
'परदेसी' हटा दो अत्याचार। ओं भारत

ओं भारत की सरकार सरकार !  
सुन माय गरीब की पुकार पुकार !!

# आर्यसमाज जालनमंडी

२५-२६-२७ नवम्बर को बहें

समारोह किया मे बनाया गया। अर्वा-रोहण श्रीमती निहालदेवी जी आर्य मे सम्पन्न की। नगरकीर्तन जोम श्रवा मे सुसज्जित श्रुती मे निकालना गया जो कि नगर के सुख-सुख आगो से होता हुआ समाज नदिर मे समाप्त हुआ। २६-२७ नवम्बर को निरय कर्म विधि के पश्चात प्रातः मे रात्री तक मनोहर ध्यानात्म श्रोते रहे। यज्ञको का यम भी भूची प्रकार होता रहा। उष्य पर श्री अमृतमन्त्र जो की श्रेष्ठ क्या होती रही। सक्ताओ मे राजेन्द्र जो जितानु एम. ए. डी. ग. बी. काविक अयोधर का नाम विशेष उल्लेखनीय है। अपीन पर ३५०/- की प्राति हुई। इसी अवसर पर स्त्री समाज की स्वागत की गई। एक देवी मे गुणदान के रूप मे एक मन गेहूँ दो किन्तो देही जी और धान किन्तो हवन मायभी अक्ष के लिए धान की। इस कार्यकोत्सव की सफलता का नेत्रा गो मोर्गीयम जी, श्री हरिदेव जी, श्री अर्जुनदेव जी, श्री बेंदरकाव जी के निरा पर है।

हरिक्रम गुप्त  
सभा आर्य समाज

# आर्यसमाज हांसी (हिंसार)

प्रस्ताव न.—१—

आज दिनांक १२-११-६६ श्रुति-निर्वाण-उत्सव के उपलक्ष्य मे आर्य-समाज हांसी के प्रधान मन्त्र इन्द्रात्र-सिंह जी आर्य की अध्यक्षता मे सर्व-सम्पत्ति मे पाव हुआ कि दिवली मे हुए भयकर गौली काड मे समाज विरोधी तत्वों का हाथ है इसमें समिति का कोई हाथ नही। अतः यह बंडक इस काड की अत्यन्त निन्द करती है तथा सरकार मे अनुरोध करती है कि इस काड की तहकीकात गीठ ही करवाई जाए और गो-शव-बच कानून बन्द किया जाये।  
प्रस्ताव न०—२—

आज दिनांक १२-११-६६ श्रुति-निर्वाण-उत्सव पर सरकार द्वारा कृत्य समाज का सर्व-प्रतिष्ठित-पूर्व-श्रुति निर्वाण-उत्सव सम्पन्नोत्सा मेदान दिवली मे न मनाने देने पर आर्यसमाज हांसी की यह बंडक अत्यन्त मेद प्रकट करती है तथा इसे सरकार की सर्वेया अनुचित कार्यवाही मनकनी है।  
इसको प्रतिनिधितया भारत सरकार के वरिष्ठ अधिकारियों को भेजी गई। —प्रधान मन्त्री

यो हत्या निरोधक

आयसमाज रोगाचारी
२७-११-६६ की यह छात्राएल समा
भारत की केन्द्रीय सरकार तथा राज्य
सरकारों से मांग करती है कि समस्त
छात्रावर्ग में जो हत्या पर भीषण
प्रतिबंध लगाया जाए। भारत की
पुष्प-भूमि पर जो हत्या का जारी
रहना धार्मिक, सामाजिक तथा आर्थिक
दृष्टिकोण से हानिकारक है। इस से
साम्प्रदायिक शांति बिगड़ने का भय
है। अतः इस पर प्रतिक्रम लाना
अत्यावश्यक है।

श्याम सुन्दर वेंच मनी
प्रादेशिक सभा से सम्बन्धित

सभानों को भावप्रकट सूचना

श्रीमान् पर्व नील चुका हे लेकिन
बनी तक दीवानी फंड सभा के दफ्तर
में नहीं आया इसके बारेमें खुश-निर्वाण
बंक में सूचना दी जा चुकी है लेकिन
बाहुत-ही सभामोने इस बारे ध्यान देने
का कष्ट नहीं किया। अतः पुनः प्रायणा
है कि परिवार के प्रत्येक सदस्य के
अनुसार चार आना दीवानी फंड एक-
नित करने तथा के कार्यालय में भेज
कर सभा के आदेश का पालन करे।

जहा चाय वाले चैकिंग करते हैं

परीक्षा। स्थानीय रेलवे स्टेशन
पर चाय-निष्ठाओं द्वारा रेलवे टिकट
बिकरों की बर्षी में चायियों से संपने
बढते जाने का समाचार मिला है।
कहा जाता है कि वे लोग बर्षियां
उधार मांग कर ऐसा करते हैं और
बाद में धन राशि का बाहुलाग से
बंटवारा कर लेते हैं। कहा जाता है
कि इन 'बाहुलों' का शिकार हुए एक
व्यक्ति ने जब रेलवे के उच्चकार्वा-
रियों तक पहुंचने की कोशिश की तो
उसकी पिटाई की गई।

पठनीय एवं मननीय साहित्य

वेद प्रबन्ध ५/- गीतासार ७५
पैसे, बालमीकर के पत्र १/-देवारथ
संस्कार १/५० पैसे, मेरी आठ
रोयक क्लामिया ७५ पैसे, लीकट
७५ पैसे, लखनसते जोधम ५० पैसे,
कर्म मीमासा २/२५ पैसे, सतिनि
नियमन स्यों और कंसे १५ पैसे,
बैदिक व्याकरण भास्कर ६/-
पाम बोधक पत्र ११/२० पैसे, महा
साहित्य प्रचारक १/-
जयदेव ब्रह्मसं बड़ौदा-१

समाचार ट

आर्य जगत

(श्री भूराजम जी प्रचारक आ० प्रा० प्र. सभा जालन्धर)

टेक-वेदों का प्रचार सुन। आयजगत मंगाया कर।
वेद शास्त्र महर्षि बतावें। आयजगत की महिमा गावें ॥
हंकर काटनहार सुन ॥१॥
वेदों को सब पढ़ो पढ़ाओ। ब्रह्मचर्य महाव्रत निभाओ ॥
हो जा वेदा पार सुन ॥२॥
आयजगत के नेता प्यारे। इसी में विश्वास देते हैं सारे ॥
राजा प्रजा सरकार सुन ॥३॥
धीमहात्मा हंसराज बताए। उन मन सब सब जीयकवाये ॥
आर्यो है विस्तार सुन ॥५॥
महा यज्ञ संस्कार हो सारे। परे रहे और पकारे ॥
महा मन्त्र की मार सुन ॥६॥
शः कः एवं वेदो सारे। कई कई अंक मिले न्यारे-न्यारे ॥
पषाण को टार सुन ॥७॥
भूराराम कंठे समझवें। बाल नहीं कहते ये आवें ॥
बुद्धि का भंडार सुन ॥७॥

आर्य प्रतिनिधि सभा होकर

जयन्ती महोत्सव समाज
समारोह एवं यज्ञ की
पूर्णाहुति
(अक्टूबर शाक से)
गत ११ नवम्बर को सामवेद
परायण यज्ञ की पूर्णाहुति के साथ
आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की
होकर जयन्ती (७५ वर्षीय महोत्सव)
समाप्त हो गई। यज्ञ का संचालन
वेदों के पण्डित आचार्य इण्डस
ने किया।

होकर जयन्ती के स्वागत मन्त्री
श्री करण शारदा ने आगुन्क आय-
नेवाओं, अतिथियों, प्रतिनिधियों एवं
अन्य सभी लोगों के प्रति समारोह की
की सफलता में दिए गए योगदान के
लिए आभार प्रकट करते हुए

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का महत्वपूर्ण प्रकाशन

साम वेद भाषा भाष्य
भाष्यकार श्री कर्णसिंह वैद्यनाथजी सायन्दी

पृष्ठ संख्या 1075 साईज 18x22/8 बलाघ बाऊड़ बड़िया
कापड़ महर्षि बयानन्द महात्मा हंसराज, महात्मा आनन्द
स्वामी जी तथा वानवीर श्री मनोहर लाल जी मरवाह
के चित्रों से सुसज्जित
मूल्य २० रु. केवल (डाक खर्च इसके इलावा
प्राप्ति स्थान
आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि, सभा निकट कोट
जालन्धर

बाद-विवाद प्रतियोगिता
सम्पन्न

दिनांक: २१ नवम्बर को होकर
पयन्ती के अवसर पर आयोजित कुंवर
पादकरश शारदा बाद-विवाद प्रति-
योगिता और महात्मा कन्हैयालाल
बाद-विवाद प्रतियोगिता सम्पन्न हो
गई। प्रतियोगिताओं में विषय छात्रों
के अनुशासन हीना का कारण नैतिक
शिक्षा का अभाव है तथा आधुनिक
शिक्षा पद्धति राष्ट्रीय उत्थान में
आयक है रचे गये। इन प्रतियोगिताओं
में कला, छात्रों उच्च आध्यात्मिक
विचारों की छात्रावर्ग प्रथम एवं द्वितीय
तथा तृतीय क्रमों के छात्र प्रथम
और द्वितीय क्रमों के छात्र द्वितीय
रही।

इस अवसर पर आयोजित श्री
प्रतियोगिता में पयन्ती की प्रमुख केल-
कूद सभाओं में भाग लिया।

काठसंग में बर्मा भूतावास
स्थापित होगा

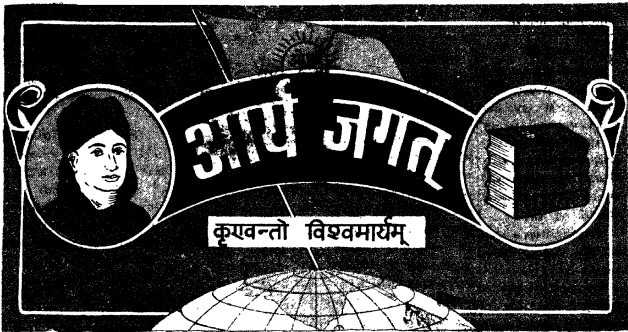
पूत ५ दिसम्बर-बर्मा कोर
नेपाल ने विपन्नता में विदेशी हस्त-
लेख कल्प करने की अपील की है।
जलद नैतिक की नेपाल-गाना की
समाप्ति पर जारी सङ्कलन विपन्न
में जलद नै काठसंग में ही प्र बर्मा
भूतावास स्थापित करना शीकार कर
लिया है।

आर्य प्रादेशिक सभा
की आवश्यक सूचना

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा
से सम्बन्धित सभी सभानों को अपने
प्रतिनिधि भेजने तथा दत्तात्रेय भेजने
के 'क, ख' सभ में भेजे जा चुके हैं
परन्तु गति बहुत सीमो है। सभी
सभों को 'क, ख' सभ में अपनी सभानों
के प्रतिनिधियों की सूची तथा दत्तात्रेय
सभा के कार्यालय में यथा समय भेज
कर कर्तव्य पालन करे।

-सभा मन्त्री

आर्य जगत का
चन्दा जल्दी से
भेजने की
कृपाकरें



दंडीकोल नं० ३०५७

[आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालंधर का साप्ताहिक मुखपत्र]

Regd. No. P. 121

एक प्रति का मूल्य १३ पैसे

वार्षिक मूल्य ६ रुपये

वर्ष २६, अंक ५१

४ वीच २००३ गुरुवार—दशान्तद्वन्द्व १४०—१८ दिसम्बर १९०३

(ता. 'प्रादेशिक' जालंधर)

## वेद सूक्तयः

सहस्रयस्य रातयः

जित भगवन् के राजवः-राज सहस्रम्—हजारों हैं, अनन्त है। उस महाबानी का दान तो सवा से चल रहा है। उस के दान के प्रवाह का क्या ठिकाना। बारो और उन के दान की रजिता प्रवाहित हो रही है।

एष देवो अमर्त्यः

वह परमात्मा देव है, महादेव है। वह अमर्त्य है, अमृतस्वरूप है। वह मर्त्य नहीं है। जन्म, मरण के बन्धन में नहीं आता। अजर अमर तथा अजन्मा है। अमृतमय है।

एष विभ्ररभिष्टुतः

वह परमात्मा विभ्रः—जानिघो ने, मेघाकी पुण्डो से सदा अभिष्टुतः-स्तुति किया जाता है; जितने भी मेघाकी ब जानी हैं, वे सारे भगवान् की स्तुति करते रहते हैं।

दक्षदत्तानिदाशुये

जो मनुष्य दान करता है, उदार है, वह मनु उसे हर प्रकार की सम्पत्ति देता है। उसे किसी प्रकार की मूलतः नहीं रहती। जो देता है, भगवान् उसे बहुत दे देता है।

आ ध्व भू मि को तै

## वे दा मृत

अक्रेला सैकड़ों पर भारी

आ३म् आशुः शिशानो वृषभो न मीमो घनाघनः क्षोमसाश्चर्षणीनाम। संक्रन्दनो-निमिष एकवीरः शतं सेना अजयत्साक-मिन्द्रः ॥१॥

सामवेद उत्तराधिक अध्याय २१ प्र० ६ सू० १ मन्त्र १

अर्थ—हमारे वीर इन्द्र सेनानायक व राजा बरा (आशु) चीप्रमानी (शिशानु) तेज बुद्धिवाला (वृषभ, न) बगसाकी वृषभ के समान (मीम) भयकर (घनाघन) शत्रुओं के भारने कुचलने वाला है। तथा (क्षोमणु) बँरियों को कृपा देने वाला (बगंलीनाम) सब मनुष्यों, प्रजाओं को कृपित करने वाला है। वह नेता (सकन्दन) शत्रुओं को मुखा देने वाला उन को सक्षम में ललकारने वाला (अनिमिष) सदा साबधान (एकवीर) एक मात्र वीर, अनुपम बलवान्नी (अत नेता) मँकडो सेनाए (अजयत) विजय कर लेता है (साकम) एक साथ ही (इन्द्र) वह हमारा वीर नेता सेनानायक सब पर विजयी होता है।

## भाव यह है

जितने भी हमारे राष्ट्र को, मस्कृति, सन्मत्ता, धर्म अथवा देव की स्वतन्त्रता के किसी भी जन, वपुषन, भवन, भूमि और इसी प्रकार के किसी प्रकारके महाजन को हाथि पहुंचाने वाले बँरो, पापु, विरोधी हथकावर या आधाती हैं—वे कान खोज कर बार बार मनु तैवे कि हम ने किसी निर्वैल कमजोर को अपना नेता, नायक तथा राष्ट्र कर्णधार नहीं बनाया हमारा नेता तो बीरता में भरा हुआ इन्द्र है। उसके होते हुए सारे ही निरिचन्त हो गये हैं। हमारा वीर नायक बड़ा ही तेज है, प्रबल बुद्धिवाला है। प्रजा के लिए वृषभ है, मुल व अमंन का वायक है भवान्ना है। मनुओं को बँ हुष्टों को पीस देने वाला है। बँरियों को सक्षम में ललकार कर मोल के भाट उतारने वाला है। वह सदा सतैक है। अक्रेला ही संकडो पर भारी है। निजवी वीर है। बँरियों भाग जाओ। सबरदार! किसी ने मोट की तो कुचले जाओगे।

—ग०

## ऋषि दर्शन

परम कारुणिक, परमेश्वरः

वह परमेश्वर बड़ा ही दयालु है कष्टका का धर है। हमें सुख के लिए बगत्त के कितने ही पदार्थ दिये हैं—वह भी उनी महान् भगवान् की कष्टका ही है। वह तो सदा दयालु है।

सुखसम्भयं दद्यात्

वह महान् भगवान् हमारे लिए सदा सुख देते। वह स्वयं ही आनन्द का नाम है, सुख स्वरूप है। हमें तो हमें सुख मिल सकता है। उसी उनी सुखधाम से आनन्द की प्रार्थना करते हैं।

वयं परमेश्वरस्यैव प्रजाः

हम सब नर नारी उनी परमेश्वर की प्यारी प्रजा हैं। उनी के पुत्र-पुत्रिया हैं। वह प्रजापति है। सित है, हम उसकी सन्तान हैं। वह पालक है, हम उसके बच्चे हैं। उस की सन्तान है।

वयं सत्यं वदामः

हम अपने जीवन में सदैव सत्य बोलने वाले हैं। हमारे विचार, आशी का उच्छारण तथा कर्म व्यश्हार सदा सत्य के रस में रखा हुआ होवे। आपकी कृपा सदा बनी रहे।

आ ध्व भू मि का ते

स्वयं के लिये

यहां स्वामी जी का खण्ड नूत है कि विना कर्ता का कारण के कोई भी कार्य वस्तु नहीं बनती। अतः जगत भी, जो कि एक कार्य है, विना कर्ता का निमित्त कारण ईश्वर के नहीं बन सकता। संक्षेपित रखने में भी कहा है कि कारणानुसंगत कार्या-जायः नं० १।२।१ अर्थात् कारण के बिना कार्य नहीं होता—

देशो सुसृष्टि को नियम में रक्षना कर्मादि वेदान का काम है। कर्मान् प्रकाश समू० १२ पृ. २०८

भाव यह है कि यदि ईश्वर न होता तो सुसृष्टि बड़े-बड़े विपत्तियों को धारण करने की शक्ति और क्षमता में ही है। अतः ईश्वर को मानना आवश्यक है।

(३) जो कार्य जगत को नियम मानो तो उसका कोई कारण न होगा किन्तु वही कार्य कारण रूप हो जाएगा जो ऐसा कहो तो अपना कार्य कारण आप ही होने में अन्यो-प्राप्त्यर्थ और आत्मार्थ्य दोष आयेगा। जैसे अपने कर्षे पर आप ही चलना। अपना पिता पुत्र आप ही नहीं हो सकता। इसलिए जगत का कर्ता अवश्य मानना है। सत्या. प्र. समु. १२ पृ०८८

भाव यह है कि एक ही वस्तु में कार्य कारण भाव नहीं हो सकते। जगत को नियम मानने में यह दोष जाता है। अतः जगत नियम नहीं अतः इस का कर्ता भी ईश्वर अवश्य है।

२—जगत सर्वत्र है ही और उस का कर्ता कोई नहीं ?

अनीश्वरवादिगो में एक मत यह भी है कि जगत जो उत्पन्न होते किन्हे बेबा। ? अतः यों न यह मान लिया जाने कि इस जगत को उत्पत्ति और प्रलय कही होता। जब यह उत्पत्ति तथा नाशमान ही नहीं अर्थात् सर्वत्र में रहने वाला है तो फिर इसके कर्ता ईश्वर को मानने की क्या आवश्यकता है ? यह आलोचक विद्वानों की ओर से किया जाता है। उनका आक्षेप इस प्रकार से है—

मामि अणुए अणुए च ससार धोर कान्दरे। मोहम कृष्ण मुष्ट हिंद

विनाश वस्तुसमुत्पन्न जीवरो। प्रकराय ररता.भा-२ वण्टी लतक६०।२ अर्थ—ससार अर्थात् और अंत है न कभी इसकी उत्पत्ति हुई न कभी विनाश होता है यदि सारवत् में जगत सर्वत्र से ही और उसकी उत्पत्ति और नाश ही होता तो उसका कर्ता मानने की

पारंपरिक कर्त्ता :-

महर्षि दयानन्द और अनीश्वरवाद (बी रक्षितार्थ आर्य सिद्धांत वाचस्पति उल्लेख)

कोई वाक्यमहा कवी। कस्तुरी रत्न है नहीं अमरी की लोचक वस्तु संकुच रूप में यह आर्त्त है। एक मिट्टी के अनेक ही रूप में अर्थात्। यह देना अनेक कृष्ण परमार्थियों से पूर्व एक समय अन्वय ही पृथक् पृथक् रहे हूँ। कारण यह कि अंग्रेज उन्ही वस्तुओं का होता है जिनकी कभी पृथक् स्थिति रही होती है। पृथक् स्थिति के विना अंग्रेज कंसा ? फिर संकुच वस्तु-विस्तुत्व भी होती ही है। चाहे यह विनाश काच कितना ही दम्भा क्यों न हो। इसी की हृत्त वस्तुओं का बनना विनयना कहते हैं। संसार में हृत्त वस्तु वस्तुओं को बनने विनयने देखते हैं। जो दया कितनी एक वस्तु की है वही दया अर्थात् जगत की है। यह भी उत्पत्ति और नाश बनाते हैं। यह अर्थवत् से नहीं न सर्वत्र रहेगा। अतः उसका कर्ता मानना नूत है।

महर्षि दयानन्द का समाधान इस प्रकार है :-

‘जो सयोग से उत्पन्न होता है वह अनादि और अनन्त कभी नहीं हो सकता और उत्पत्ति और विनाश हुए विना कर्म नहीं रहता। जगत् में जितने परमाणु उत्पन्न होते वे सब अयोग्य उत्पत्ति विनाश वाले देखे पाते हैं। पुनः जगत् उत्पन्न और विनाश वाला क्यों नहीं।’

सत्या. प्र० अणु० १२ पृ० २७५

स्वामी जी के सहायका का भाषार्थ हृत्त उपर दे चुके हैं। विशेष व्याख्या की आवश्यकता नहीं।

अथ जगत् की रचना स्वयमेव होती है ?

अनीश्वरवादिगो में एक मत ऐसा भी है जो जगत् को उत्पत्ति और नाशमान तो मानता है परन्तु फिर भी उसका कोई कर्ता मानने को वह उद्यत नहीं वह जगत् को अपने अणु बना हुआ मानते हैं इन के दो प्रमुख भाग हैं :- (१) परमाणु स्वयमेव जगत की रचना वरररर मिल कर कर लेते हैं। परमाणुओं से सृष्टि रचना का स्वभाव है।

कितनी भी वस्तु के अपने आप बन जानेके बाद एक पौधा बाद है। इसका

व्यावहारिक रूप कहीं देखने में नहीं आता। यदि संसार में वस्तुएं अपने आप बनती होतीं तो मानवों के सारे व्यापार व्यवहार ही समाप्त हो जाते। फिर किसी वस्तु को बनाने के लिए क्यों कितनी को हाथ दिखाना पड़ता। घरों में रोटीया अपने आप बन जाती कपड़े अपने आप बन जाते, मकान अपने आप बने हो जाते और न जाने क्या-क्या ही जाता। परन्तु दुर्भाग्य से ऐसा है नहीं और न ही किसी अनीश्वरवादी में इस प्रकार का अनुभव ही किया। जब संसार की कोई वस्तु अपने आप नहीं बनती तो यह जगत कैसे अपने आप बन गया। अर्थात् दयानन्द का समाधान इस प्रकार है :-

‘विना वेदान परमेश्वर के निर्माण किये यह पदार्थ स्वयं आपस में मिल कर स्वभाव से नियम पूर्वक मिल कर उत्पन्न नहीं हो सकते।’

सत्या. प्र० समु० १२ पृ० २६३

इस की व्याख्या हम ऊपर दे चुके हैं अतः आवश्यक नहीं। स्वभाव से सृष्टि बनना मानने वाले कहते हैं कि स्वभाव से जगत की सृष्टि होती है। जैसे पानी, अन्य एकज ही बनने से कृमि उत्पन्न होते हैं। और बीज, पृथिवी, जल मिलने से पाषाण आदि और पाषाणादि उत्पन्न होते हैं। जैसे समुद्र, वायु के योग से तरंग और तरंगों से समुद्र फेन, हल्की चूना और नीचू के रस मिलाने से रोटी बन जाती है जैसे सब जगत तत्त्वों के स्वभाव गुणों से उत्पन्न हुआ है। स्वामी जी उत्तर देते हैं कि :-

‘जो स्वभाव से जगत् की उत्पत्ति होने तो विनाश कभी न होने और जो विनाश भी स्वभाव से मानो तो उत्पत्ति न होती और जो दोनों स्वभाव गुण पत अर्थों में मान्यो तो उत्पत्ति और विनाश की आवश्यकता कभी न हो सकेगी ‘जो स्वभाव से ही उत्पत्ति और विनाश होता तो समय ही में उत्पत्ति और विनाश का होना संभव नहीं। जो स्वभाव से उत्पन्न होता हो तो इस पूर्वगत से सृष्टि दूसरा पूर्वगत पूर्वक अर्थात् उत्पन्न क्यों नहीं होते ? और विश्व-विश्व के योग से जो-जो उत्पन्न होता है वह-वह

ईश्वर के उत्पन्न किए हुए जीव-जन्तु अर्थात् के अंग्रेज से घात, पुत्र और कृमि अर्थात् उत्पन्न होते हैं विना उनके नहीं।’

जैसे हत्ती, चूगा, नीचू का रस हू-हू कर के से आप आकर नहीं मिलते। कितनी के मिश्रण से मिलते हैं। उदमें जो क्या योग्य मिलाने से रोटी बनती है, अन्निकमूल का अन्वया होने से रोटी नहीं होती। जैसे ही प्रकृति परमाणु का ज्ञान सुचित से परमेश्वर के मिलाए बिना जब पदार्थ स्वयं कुछ भी कार्य सिद्धि से लिए पदार्थ स्वभाव से ही बन सकते। इस लिए स्वभावार्थि से सृष्टि नहीं होती। किन्तु परमेश्वर की रचना से सृष्टि होती है।

सत्या. प्र. अणु प्र. समु. प्र १३५-४०

जो स्वामी के भाव उर्ध्व कृत उदर रणों में अत्यन्त स्पष्ट है। प्रसृत निबन्ध में हमने अनीश्वरवाद के मन्वय में, स्वामी जी के विचारों का कृषिक उदरणों द्वारा, विवेचन मात्र करया है अर्थात् जानकारी के लिए पाठक मशू श्री स्वामी जी के अणुपूर्वक सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन करें।

★ ★  
★ धरोर, मन और आत्मा के बुद्ध करने का नाम सुद्धि है।

दयानन्द ऐतौ-वैदिक कालेय कामधु-१

शोक समा

ही० ए० वी० कालेय, कामधु के प्राथमिक एवं विद्याविधियों की यह शोक समा सुप्रसिद्ध विद्या विचारार एवं वैज्ञानिक नाला दीवानन्द जी के देहावसान पर हादिक दुःख प्रकट करती है।

यह उनको ही कृपा का फल है कि उनके अस्वस्थ विद्याधी देह-देहावर को आलोचित कर रहे हैं।

हम सब परमारवा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें और उनके परिवार एवं अस्वस्थ शिष्यों, मित्रों एवं कर्तु वाच्यों को इस महान दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

इसी ही भावना से अविमूढ वी० ए० वी० कालेय मीनिस्टीरियस एसोसिएशन ने भी एक शोक प्रस्ताव पास किया है।

—गामी सत्या





(१) आर्य-समाज की उन्नति का का सब से प्रमुख साधन उनके सदस्यों का सच्चे अर्थों में आर्य बनना है। आर्य समाज के सदस्य जितने अधिक धर्मात्मा, सदाचारी, ईश्वर भक्त, कर्मण्य पराङ्मुख, सत्यनिष्ठ, विद्यालय हृद्य और परोपकारी होंगे उतनी भाषा में आर्य समाज की उन्नति हो सकेगी। आर्यों के व्यक्तिगत जीवन की अपवित्रता तथा पारस्परिक ईर्ष्या द्वेष आर्य समाज की उन्नति में सब से अधिक बाधक है। समाज सभ्य सभ्य आश इस प्रश्न बनता है। अज गति खेचणुणो: के अनुसार समाज में लोगों के मिल कर गति करने और दुराईयो को परे फेंकने का भाव है। गति के ज्ञान, गमन और प्राप्ति अर्थ होते हैं। इन प्रकार समाज सभ्य के अन्दर प्रेम पूर्ण मिलकर प्यार और श्रेय प्राप्त करने, सगारों के उपकार के उद्देश से गति करने का भाव जाता है जो अत्यन्त महत्व पूर्ण है। आर्य समाज के इस प्रकार सच्चे कर्मण्य पराङ्मुख ईश्वर भक्त धर्मात्मा आर्यों का समाजित प्रेम बद्ध समुदाय बनने पर अर्थ आर्यों की सभ्ये उन्नति में क्या सहायक है ?

(२) आर्य समाज की उन्नति का दूसरा सूत्र है तर्क के साथ श्रद्धा का सम्बन्ध। यह तर्क वा मंत्रा के साथ श्रद्धा का सम्बन्ध सम्बन्ध ही वैदिक धर्म की बड़ी विशेषता है जिस का शिरोवा 'स मे श्रद्धा व मेवा व जातवेदाः प्रयच्छन्तु' (अथर्व १९.६४.१) इत्यादि मन्त्रों में किया गया है। धर्म ज्ञान के लिए तर्क की भी बड़ी आरी आवश्यकता है किन्तु रक्ष्य वेद में बताया गया है कि 'श्रद्धा भगवन् सूत्रंनि वसस वेद-श्रौतसि' (कं १.१५.१.१) अर्थात् श्रद्धा को हम धर्म के मूलक स्थानीय बताते हैं। श्रद्धा के बिना धर्म ऐसा ही है जैसा मूलक के बिना शरीर। जब तक आर्यों के जीवन में तर्क के साथ श्रद्धा का सम्बन्ध न होगा और उनके यज्ञ संस्कारादि सब कार्य श्रद्धा पूर्णक न होंगे तब तक आर्य समाज की सभ्ये उन्नति न हो सकेगी और न यह सर्व-साधारण जनता की अपनी आकाङ्क्ष कर सकेगा।

(३) आर्य समाज के आर्य बहने जबका उनकी उन्नति का सीमाय मूत्र है कुनार कुमारियों में उसके द्वारा विशेष प्रकार की व्यवस्था। सब आर्य समाजों के साथ आर्य समाज चम्पाओ की स्थापना और उनके साथ

## आर्य समाज की उन्नति के दस सूत्र आर्य समाज कैसे आगे बढ़े ?

लेखक-पं० धर्मदेवजी 'विद्यासातण्ड'(देवमुनि वामप्रसन्न), आनन्द कटौर, उवासापुर।

प्रेम पूर्ण सहयोग से इस उद्देश्य की पूर्ति हो सकती है। छात्र छात्राओं में वैदिक धर्म के प्रचार की व्यवस्था आर्य समाज की उन्नति के लिए अत्यावश्यक है। सुयोग्य विद्वानों और विदुषियों के उत्तम व्यक्तियों के अतिरिक्त धार्मिक परीक्षाओं, भाषण और निबन्ध प्रतियोगिताओं के आयोजन और पुरस्कारादि द्वारा प्रोत्साहन से भी बड़ा लाभ हो सकता है। उत्तम विद्वानोंके द्वारा छात्रोपयोगी सदाचार और 'समाज सेवा' धर्मक स्फूर्ति दायक साहित्य की रचना करना कर उसे छात्रवर्ग में वितरित कराया जाए। अभी इस और बहुत कम ध्यान है।

(४) आर्य समाज की उन्नति के लिए महिलाओं में वैदिक धर्म के प्रचार की अत्यधिक आवश्यकता है। आर्य महिला समाजों और पारिवारिक सत्संगों द्वारा लोगों में प्रचार का विशेष आयोजन विदुषी देवियों को करना चाहिए। सभी भजन तथा कथाओं का ऐसे सत्संगों में विशेष आकर्षण होना चाहिए। जब तक महिलाओंमें वैदिकधर्म और आर्यसमाज के प्रति सच्चा प्रेम उत्पन्न नहीं होता, तब तक आर्यसमाजकी प्रगति असम्भव है। केवल पुष्प वर्ग में प्रचार से भारी सन्तान आर्य नहीं बन सकती। सन्तान पर माताओं का प्रभाव विशेष होता है। महिलाओपयोगी सरल भाषा और गीतों में उत्तम साहित्य की भी विदुषियों द्वारा विशेष रूप से तैयार करवाकर उत्सका घर-घर प्रचार किया जाए।

(५) आर्यसमाज की उन्नति का नूतन सूत्र गतिज जग के लिए विद्वता पूर्ण प्रभाव जनक साहित्यक निर्माण और उनके प्रचार की व्यवस्था कर-वाना है। उह उत्तम साहित्य देह-विदेश की विभिन्न भाषाओं में तैयार कराया जाए और जितने कम मूल्य पर प्रचारार्थ देवा जा सके, उतना ही अधिक लाभ होगा। इसके लिए कुछ सुयोग्य विद्वानों और विवेचकों को आर्थिक दृष्टि से निश्चित करके उनका विशेष सहयोग देना आवश्यक है। अपने देश की भाषाओं के अतिरिक्त अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, रशियन

आदि विदेशी भाषाओं में भी इस प्रकारके साहित्यको तैयार करवाने का यत्न करना चाहिए। इसके बिना केवल मौखिक प्रचार का कभी स्थायी प्रभाव नहीं हो सकता। अभी तक संश्लिष्ट रूप में इस ओर सामुदायिक आर्य प्रतिनिधि समन्वय का ध्यान भी बहुत अपर्याप्त है।

(६) वैदिक धर्म के उत्साह पूर्णक प्रचार के साथ साथ हमारी विद्यालयाओं के करण्य निरन्तर अनेक रूपों में बढ़ते हुए पाठक और दम्भ के निर्माण, यथा पूर्णक सम्भन्ध की भी मुझे आवश्यकता प्रतीत होती है। सम्भन्ध कठोर और दिल दुबाने वाले शब्दों में न हो, किन्तु प्रभाव जनक प्रभाषण और तर्क द्वारा प्रेम से जनता के कल्याण की दृष्टि से उमका करना आवश्यक है। आवश्यकतानुसार मौखिक व लिखित शास्त्रार्थों के आयोजन से भी धार्मिक भावुति लाभ में सहायता मिल सकती है।

(७) शुद्ध आन्दोलन को उत्तम उपयोग से प्रेम पूर्णक बनाना आर्य समाज को आगे बढ़ाने में विशेष सहायक होगा, किन्तु इसके साथ जब तक आर्य नर नारियों युद्ध हुए व्यक्तियों के साथ सामाजिक सम्बन्ध रखने को तैयार न होंगी तब तक इस विवेचन लाभ न होगा। इस के लिये कम मूलक आति भेद का अनुमोदन करके अन्तर्जातीय विवाहों को प्रोत्साहित करना तथा अन्य प्रकारों से अपनी उदारता और विशाल हृदयता का परिचय देना आवश्यक होगा। आति भेद निवारण के आन्दोलन को प्रबल और सगतिज बनाना बुद्धि आन्दोलन को सफल बनाने के लिये अत्यावश्यक होगा। आर्यसमाज को, विधियों को अपने अन्दर लेने और स्थिर रखने की शक्ति को बढ़ाना होगा।

(८) आर्यसमाज की सवार्थ उन्नति के लिये यह भी आवश्यक है कि आर्यों में आध्यात्मिकता की चिकन्सित किया जाए। इसके लिये अनुभवी आर्य योगियों का सहयोग लिया जाए जो आध्यात्मिकता को स्थिरित और आश्रमों द्वारा सच्चे आध्यात्म मार्ग का प्रदर्शन कर सकें। इसके अभाव

में विज्ञानु सीम राधास्वामी वरि, ब्रह्म कुमारी तथा हंस सम्प्रदाय आदि में शक्ति और आनन्द की जोख में भटवने फिरेते हैं। सामप्रदायधर्मादि को सच्ची आध्यात्मिकता की विद्या का केन्द्र बनाया जाए।

(९) आर्य समाज की उन्नति के लिये यह भी आवश्यक है कि उसका जनता में 'घनिष्ठ सम्पर्क' रहे और वह उसके कष्टों के निवारण तथा सेवा के कार्य में सदा तत्पर रहे। इस दृष्टि से अनायासियों के अतिरिक्त (विनाका समाजन बन्नी सत्यनिष्ठा और सेवा भावना से करना अभी उनको देख के उत्तम नगरिक बनाने का यत्न करना अत्यावश्यक है) धर्माध्यक्षोंको भी भी आके-स्यक्तानुसार स्थापना की जानी चाहिए। केवल मौखिक प्रचार से जनता को सन्तोष नहीं हो सकता।

(१०) जन सम्पर्क बढ़ाने की दृष्टि से यह भी आवश्यक है कि प्रष्टाचार और दुराचार निवारण, मद्यमास, भ्रष्टपान आदि दुर्बल निवारण (हिन्दी की राष्ट्र में निरन्तर बुद्धि होनी जा रही है) जो असुप्यता निवारण, जो असुप्यता विधि वा कानून द्वारा अपराध घोषित करने पर भी आर्यों में विशेष रूप से प्रकट है तथा गो-धव निषेध विषयक आन्दोलन में आर्य समाज प्रमुख सक्रिय भाग ले और इन उपयोगी आन्दोलनों का सच्चा नेतृत्व करे। इसी के साथ राष्ट्र भाषा हिन्दी और देवनागरी तथा संस्कृत के सर्वप्रकार की ओर नर नारियों तथा विशेषतः विद्वानों को इस समय बलि विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। सुयोग्य आर्य विद्वान राजनैतिक क्षेत्र में भी कार्य करते हुए उसे देना तथा आर्य संस्कृति के अनुसूच बनाने का अधिक से अधिक प्रयत्न करे तो यह देश की बड़ी भारी सेवा होगी। इस दृष्टि से उत्तम राजनैतिक साहित्य का भी निर्माण उपयोगी होगा।

इस दशसूत्रों के व्यवस्थान से आर्य समाज बद्ध सकता है, उसकी वास्तविक उन्नति हो सकती है और बतयान गतिवन्ता दूर हो सकती है। इसमें अनुभव भी संवेद का कारण नहीं।

★ दशानु बोधोके के विद्वान्, देव कुमाराः, योगी, सत्यवादी, तपस्वी, सच्चे आश्रमों, सत्याधी तथा महा श्रद्धा-चारी ये।

जैनधर्मस्य मुनीन् कुमार के निरुद्धन मे सर्वे द्वाभी मोरसा म्हा-  
मियाय समिति की ओर से ७ नवम्बर,  
१९६६ को एक प्रबन्ध गोहत्या  
निषेध के लिए निकालने का निर्णय  
हुवा। जिस का संदेश सभी मन्धरायो  
के विद्वान सत-महात्माओं द्वारा सारे  
देश में पहुँचा। फलतः अद्यतन अठ-  
स्र लाख की सख्या में जनता बली,  
रेलगाड़ियों तथा अन्य साधनों द्वारा ७  
नवम्बर को गोहत्या निषेध के प्रदर्शन  
में भाग लेने के लिए दिल्ली, उत्तर  
प्रदेश, मध्यप्रदेश, बंगाल, बिहार  
पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश  
राजस्थान और महाराष्ट्र आदि प्रांतो  
के उग्रहू, पड़ी। जिलों की जनता  
बहु आई थी वे प्रायः मोमक,  
सिंहरासक तथा धर्मपरायण थी। इन  
मे माताओं की भी बहुत बड़ी सख्या  
थी।

६ नवम्बर को दिन व रात संक्रान्ते  
अधियों पर यात्रियों के लिए साग-  
पुष्टियां बनती रही। यानी तीन बड़े  
कैम्पों में बट गए थे। एक कैम्प रोशन  
बारा बाग मे दूसरा अजमल ला रोड़  
और तीसरा लाल किले मे सगा था।  
और भी अन्य २० छोटे कैम्प जमाना  
किनारे व भिन्न-भिन्न घंसाखालो में  
बोले गए।

स्वान-स्वानमे विरक्त सन्न महात्मा  
विद्वान भी पयारे हुए थे। जुसुस पांचो  
स्थानो मे गोधव बन्दी के नरि सगता  
हुवा शांतिपूर्वक निकला और पालियार्-  
मैट स्ट्रीट की ओर चलता रहा।  
रास्ते मे सैकड़ो जगहो पर जनता ने  
फूलों की वर्षा की और महत्माओं के  
के गले मे फूल मालाएं डालीं। जगह-  
जगह ठंडा पानी, शर्बत आदि बड़े  
आकर के साथ प्रदर्शन में सम्मिलित  
जनता को दिल्ली की जनता ने  
पिपया।

प्रदर्शन में जनता गोहत्या निषेध  
के नरि लगाती शांतिपूर्वक चल रही  
थी। दिल्ली आकर की दुर्घटना रास्ते  
में नहीं हुई। काले सिले से निकला  
हुवा जुसुस अमी चांदनी चौक, नया  
बाजार मे ही था कि अलकजली रोड़  
पर कुछ अशान्तिपूर्ण लोगों ने, जिनका  
जुसुस के साथ कोई सम्बन्ध नहीं था  
दुर्घटना के कांच आदि तोड़ने शुरू कर  
दिए।

जुसुस उपरोक्त पांचो स्थानो मे  
निकला हुवा शांतिपूर्वक पालियार्मेट  
स्ट्रीट पर दोपहर १२-१०-१० पर  
पहुँच गया। वहां पर १०-११ टूट

## ७ नवम्बर का गोरक्षा प्रदर्शन (श्रांखो देखा हाल)

श्री हरिकिशन दास जो अपवाल बम्बई-१०

उभा एक विशाल मंच बना हुआ  
था। जिसके ऊपर जैन मुनि  
मुनीलकुमार, संकराधर्म अगनाय  
पुरी व बदरीनाथ, श्री प्रमुदत बहा-  
चारी, श्री स्वामी पूरानन्द, श्री  
स्वामी मुक्त चरणदास, श्री स्वामी  
प्रकाशानन्द, श्री स्वामी सदानन्द व  
स्वामी अरविमानन्द के साथ अन्य  
पचास-साठ सातु सत मच पर बैठे  
हुए थे। सभा की कार्यवाही जैन  
मुनि श्री मुनील कुमार जी ने प्रारम्भ  
की। दोनो जकराचादो का भाषण  
देहा फिर प्रमुदतजी बोले। जनता  
मे शांति का मन्नाटा छाया हुआ था।  
जनता बड़े आदर पूर्वक महात्माओं के  
प्रबन्धन मुन रही थी। जब श्री स्वामी  
रामेश्वरानन्द जी पालियार्मेट से बाहर  
निकल कर आये और उन्होंने अपने  
पालियार्मेट से बाहर निकलने की ब्यथा  
तथा ससद की ? शर्धे के लिए  
स्वयन की सूचना जनता को सुनाई  
किन्तु साथ ही जनता को पालियार्मेट  
पर प्रेक्षा डालने को कहा—इस पर  
श्री प्रमुदतजी बहूबारी अपने स्थान  
पर खड़े होकर रामेश्वरानन्द की इस  
बात का विरोध किया और कहा कि  
हमारा ऐसा कोई कायम नहीं है  
और न हम कियो प्रकार का घेरा ही  
डालना चाहते हैं। हमारा काय-  
कम केवल शांति पूर्वक प्रदर्शन  
का है। उन्होंने जनता की सम्मोहित  
करते हुए शांतिपूर्वक अपने स्वान  
पर बैठे रहने की। इसके बाद श्री  
नेठ गोविन्ददास जी (पालियार्मेट के  
सदस्य) का भाषण हुआ। उन्होंने भी  
गोहत्या बन्दी के पत्र मे भाषण  
किया। इतने मे श्री स्वामी रामेश्वरान-  
न्द जी फिर भाइक की ओर लौटे  
और उन्होंने अपनी पहले कही हुई  
बात का स्पष्टीकरण कर यह कहा  
कि घेरा डालने से मेरा तात्पर्य यह  
नहीं था कि आप अमी उठ करके  
घेरा डालना प्रारम्भ कर दे। अनी  
आप शांतिपूर्ण ढंग से अपने स्थान पर  
बैठे रहें और जिस प्रकार मोरसा  
समिति का आदेश होता है, वैसे  
करे। इसके उन्होंने पणतशहमी को  
दूर कर दिया। इसके बाद प्रकाशपीर  
शास्त्री (पालियार्मेट के सदस्य) ने  
भाषण किया और कहा कि जनता  
के इस विशाल गोहत्या बन्दी के

प्रदर्शन को सरकार टुकटा नहीं  
सकती। उसे जनता की आवाज को  
मायता देकर गोहत्याबंद करनी ही हम  
साथ ही उन्होंने पुलिस बानों  
को चेतावनी दी कि वे सभा  
से १०० गज पीछे हट जायें और  
जनता के साथ खेडखानी न करें,  
अन्यथा जनता के प्रहकने की सारी  
किमोबारी उनके सिर पर होगी।  
यह चेतावनी सुनकर पुलिस बलि  
पीछे हटे हो ऐसा हमें सीकने में नहीं  
आया। मंच पर कार्यवाही अजानान  
१ पध्दा शांतिपूर्ण चलती रही।  
किन्तु कोई किसी प्रकार की दुर्घटना  
नहीं हुई। सब मुक्त बनना  
भी बात चूके थे। इतने मे  
ही एक अजनबी मुसुध मे मच पर  
आकर लाउडस्पीकर पर सूचना दी  
कि साधुओं पर पुलिस लाठी प्रहार  
कर रही है। उस समय को उसी  
समय माइक मे अलग कर दिया गया  
कि इतने मे पुलिस मे मंच पर अशु-  
यंस छोड़ना शुरू कर दिया जिस से  
मच पर बैठे बहुत से लोग बेहोश हो  
गये। बहुसो को इतने ऊंचे मच से  
कूटना पडा और उन्हें गोली भी आई।  
अशुयस छूट-१२ मिनट हुए थे कि  
गोशियां भी चलने लगी और जनता  
अपने प्राण बचाने के लिए इधर-उधर  
भागने लगी। बहुत-सी माताएं रोती  
हुई शिवायी पड़ी और वे इधर-उधर  
अपने प्राणों की रक्षा के लिए भागने  
लगी। पीछे मे भागती जनता का  
दबाव इतने जोर मे आया कि बहुत से  
लोग मिर कर भी पावल हुए। मैं  
अपने प्राण बचाने के लिए ट्रांसपोर्ट  
भवन के अन्दर चला गया। बहा पर  
नयातार गोशियो तथा अशुयस चलने  
की आवाज आती रही और पुडतवार  
पुलिस के पीछो के दोदने की टपटा  
की आवाज सुनाई पडती रही। ट्रांस-  
पोर्ट भवन के काच इत्यादि भी टूट  
गए। इतने मे किन्दी ने आकर सब  
दी कि ट्रांसपोर्ट भवन मे सबो करी  
और स्क्वेटो पर भी आग लगा दी  
गयी है। जब बाहर का बातावरण  
बोझा सान हुआ तो मैं ट्रांसपोर्ट भवन  
के निकल कर पालियार्मेट स्ट्रीट से  
पजाब नेशनल बैंक की ओर चलने  
लगा। जहा पर कि मैंने अपने इधरकर  
कर कर सबो करके के लिए  
कहा था—किन्तु बहा पर कार  
नहीं गिरी। मैं पजाब नेशनल

बैंक से अपने एक मित्र की कार में  
करोल बाग पहुँचा और वहा से टैक्सी  
लेकर रिडिंग कालोनी ५ बजे शाम  
को पहुँचा।

अन्या लयाया जाता है कि  
प्रदर्शन में भाग लेनेवाली जनता ८  
से १० लाख भी। जिन मे करीबन  
२ लाख रिक्सा भी। चूकि भाय के  
प्रति लोगों मे आदर की भावना है  
गाय एक चलता रिक्सा मरिरे है।  
मंदिर को तो निरं एक देवता का  
निवास होता है, किन्तु गाय में ३३  
करोड़ देवताओं का निवास साह्य  
बनताहै। मैं गाय परस्मरा से भारतीय  
परिष्कार का एक अंग मानी गयी है,  
जो कि किसान का घन है, और देश  
की सम्पत्ति है।

हमारी सरकार धर्म निरलेस है।  
धर्मनिरपेक्ष होने के नाते उसे चाहिए  
कि वह हिन्दू धर्म के इस मान्यतायक  
प्रश्न पर आदर भाव प्रदर्शित करे  
और गोहत्या बंद करे न कि  
गोहत्या करके बहुतन हिन्दुओं को  
धार्मिक भावना पर डैठ पहुँचाये।  
ऐसे जन मसूह मे अविचारकी वग का  
अधिकार तथा वग का ही नहीं किन्तु  
जन मसूह के मनोविज्ञान का भी ध्यान  
रखना चाहिए। मेरी कोई बात नहीं  
करनी चाहिए। जितने जन मसूह मे  
उत्तेजना करे। अधिकारी वग को  
चाहिए वा कि यदि चोड़ो सी जनता  
रामेश्वरानन्द की घेरा डालो आवाज  
मुनकर पालियार्मेट के गेट की ओर  
बढी तो उनको डबाये लाडियो से  
मारने के पुलिस विवेक से काम लेती  
और वह प्रकाशपीर शास्त्री के कहे  
अनुसार कुछ पीछे हट जाती। जोर  
उस सौ-पचास आदमियों को एक नरक  
ले जाती और वहा उन्हे मोका देकर  
विरस्तार कर लेती। इतसे विद्वते  
मुसुध की जाने गयी, व इतने लाग  
जम्मी हुए वह न होते और शानि से  
प्रदर्शन सम्पन्न होता।

प्रदर्शन करने वाली जो जनता  
शांतिपूर्वक लाताकला, रोशनभारा  
बाग, अजमल सा रोड़ आदि स्थानो  
से निकलकर पालियार्मेट स्ट्रीट मे  
होता हुआ प्रयात्रोको के समास्वण  
पर शांतिपूर्वक के मायाय मुनता  
रही, उनके उत्तेजित होने का कोई  
प्रश्न ही नहीं था। रामेश्वरानन्द  
का सुझो के ऊपर पुलिस ने साठी-बांध  
किया, अगर उस समय जनता के  
(पृष्ठ ६ पर)

विवाह परिपटी बद्दो

(पृष्ठ ३ का लेख)

समाज करने के लिए भंडाल में आये । जनता उनका उपकार मानीही । उनके इस साहस से परिवार के परिवार उनका ख्यवादा करे । युवतियों का जीवन बच-जायेगा । समाज के क्षीर में लम्बा रोग कम होता जायेगा । आर्य वीर दल पला नहीं कड़ा है । उसका काम केवल समय समय पर अलग अलग नगरों में लम्बे चौड़े बजूस निकालना नहीं या चौड़े समय बाद समाचार पत्रों में लम्बे चौड़े बन्धन्य देना ही नहीं । उसका उल्टा काम यह है कि समाज में निष्ठात्मक रूपसे इस आवश्यक सुराई को समाप्त करना है । यदि उनके नेतामण स्वयं ही बराबर की लम्बी चौड़ी फीज ले कर पलें । बड़ी बातें उनके विवाहों पर भी देखने में आये जो दूसरों में हो तो फिर लाभ क्या है ? वेदी की बाँटों व उपयोगों को परिवारों के क्रिया कलाप में लाना होगा । हम चाहते हैं कि आर्य वीर दल वाले तथा बुद्धरे समाज के परिवार ऐसे मिलें, जो इस में अपना कदम उठा कर जायें । अपने २ नाम देने कार्यभार के स्तम्भ उनके लिए खुले हैं । हमें ऐसे सजनों के नाम चाहिए, जहाँ विवाह की बिधि को सारे दम से तथा आश्चर्य रहित करने को तैयार हो । बराबर में अधिक से अधिक बस रहा ही हो । मैं स्वयं तो पांच के हूक में हूँ । विवाह हमें मॉन्ट्रो में किए जाए तथा या विवाह पत्रों को खुल किया जाए, जहाँ मण्डल रूप से विवाह का काम सम्पन्न हो सके । आश्चर्य संस्था समाप्त हो । आज के युग की यह आवश्यकता आज ही है । देखना है कि कितने युवक व परिवार निरक्षर हैं । प्रतीक्षा है —स०

यशमय आदर्श परिवार

समयच कर्द परिवार ऐसे है जिन का जीवन व काम देखकर श्रद्धा से तिर भरूक जाता है । उन्हीं में माहन्-दाउन्ड पानीपत में चौधरी लीसाहाण्य जो प्रभु कुटीर का जीवन व पवित्र परिवार है । श्री चौधरी जो सचमुच देवयुग के निवासी हीं, यश पर अतीव अद्भुत है । अलग ही यशाला है । प्रातः तो चपटे तक दैनिक रूप से यजुर्वेद का यश चलता है । अब तक यह परिवार १६ यजुर्वेद पाठायण महायज्ञ करके ९७ वर्षे यज्ञ को प्रारम्भ किए हैं । निरक्षर यश चलता है ।

कर्तव्य और अधिकार

(श्री डा. गोवर्धन लाल जो बर प्रुन बायल कालेज, बयानन्द)

बयानन्द कालेज कमेटी में देहली

माननीय डा० पी. एल. जो दस भारत के विभिन्न विद्या विद्यार्थी में बयानन्द विधेय स्थान रखते हैं । आप विन्धन युनिवर्सिटी उर्जनेन के बायस चॉन्सलर रह चुके हैं । पी. ए. पी. कालेज प्रबन्धक कमेटी में देहली के प्रधान हैं । आर्य समाज की अनुगु विमृत्तियों में से हैं । आप सरलता एवं मिठास की सजीव प्रतिमा हैं । महान् चिन्तन व क्षील, लेखक हैं । आप वसुधा अनाकरक्षी रीडिग रोड में देहली के बापिक महोत्सव पर कर्तव्य और अधिकार के महत्त्व पूर्ण विषय पर आप प्रभाषणात्मक भाषण दिया । आर्य जगत् के प्रेमी पाठकों के लिए इस भाषण को नीचे दिया जा रहा है—सं.

आज तमाम विश्व दुःखी है । युग ही उलट गया है । पश्चिम के लोग Golden age र्त्थानी युग चाहते हैं । वे सुखी सदास को गोल्डन एज के नाम से पुकारते हैं । इधर हम भारतीय लोग राम राज्य चाहते हैं ! ऐसे सुख से भरे सदास को रामराज्य के नाम से याद करते हैं । भाव दोनों का एक ही है । ऐसा युग जिस में सुख ही । जीवन सरलता से व्यतीत होगा जाये । किसी प्रकार का अज्ञान न हो, अन्याय का नाम न रहे तथा किसी भी जीवन की आवश्यक बस्तु का अभाव न हो । ऐसा युग रामराज्य है । यही सुनहली धरती होगी । पुरानी बात है कि लाहौर में एक बार डाक्टर बजीर चन्द ने महात्मा हस राव जी से पूछा कि आप न रूग्ण क्यों होता है ? उन का उत्तर यही था कि रामराज्य का युग लाने के लिए । सब सुखी होंगे, सब के लिए समाजता होगी भाव यह है कि सब के लिए एक जैसी सुविधा मिले ।

कौई यह न समझे कि मुझे उपरति का भोका नहीं मिला । हमने ऐसे युग का नाम रामराज्य रखा है और उन्हीं परिवार में चौधरी जी की देवी जो हुम्नारे लिए श्रावरीया माता का पूज्य स्थान रखती हैं । साक्षात् देवयुग के साक्षिणी माता हैं । दोनों का घर परिवार, जीवन व कार्य यशमय बन गया है । इनके परिवार में आकर नवी प्रेरणा मिलती है । ऐसे परिवार पर सारे समाज को गौरव है ।

गोल्डन एज र्त्थानी युग सही ही उसी युग की अवस्था है ।

कामें मार्ग से न आधिक समता से स्वर्णयुग लाने का उपाय बताया । किसी अधिपायकवाद को तरीका कहा । कौई मिलरु डिफेंडर विधि के साधन द्वारा स्वर्णयुग लाने की शक्ति कहते हैं । कई कहते हैं कि सोसायटी-समाज को बदलो । किन्तु सर्व कहता है कि व्यक्ति का निर्माण करो । उसे बदलने का प्रयत्न करो । घमं वाले व्यक्तिगत बनाना चाहते हैं । व्यक्तियों से ही समाज बना करा है । यदि व्यक्ति अच्छे होंगे तो उन से बना सारा समाज स्वर्णयुग उत्तम बन जाएगा । व्यक्तियों के समूह का ही तो मांय समीति है । है । व्यक्ति मूल है । इसी के द्वारा सारे पत्तों को रंग मिला करता है । इसी लिए पर्यवादी कहते हैं कि मनुष्य के लिए शक्ति है, जोसि है spark है, जिस से जीवन बनता है । व्यक्ति ही समाज को उन्नत करते हैं । ऐसे युगों में दुग्ण पुष्परोचय **superman** बन कर सारी सोसायटी को बदलकर रख देता है समाज का भी अपना स्थान है । वह साधन जुटा कर व्यक्ति को बड़ा बनाने में सहयोग देती है । महात्मा बुद्धयुग में क्या था । पशुभार कर यज्ञ में डाले जाते थे । युद्ध में अपनी आंखों से बीमार, जूटा तथा मरा हुआ मनुष्य देखा । सोना मेरी भी यही दशा होगी । क्यों न मैं इनसे बचने का उपाय करूँ । यहाँ विचार उसे महापुरुष बना देता है । यमन-विकेता की गाथा में भी यही रहस्य मरा है । प्रेम या भोगवाद का एक ही मार्ग है । वह **Path of pleasure** है । नविकता ने हाथों-पोंडे (क्रमशः)

७ नवम्बर का गोरक्षा प्रदर्शन (पृष्ठ ५ का लेख)

मनोविज्ञान का ध्यान रखते हुए पुलिस विधेय द्वारा काम लेती तो यह दुःखदायक फाज न होता । इस नवभूष के जो सचालन हैं, उन्हें कभी स्थान में भी यह स्थान नही था कि इस शांतिमय प्रदर्शन का ऐसा काण्ड होगा । ऐसा अनुभव समाया आता है कि पुलिस के लाठी-बाजों के बार बज जनता में असंतोष

लेगा जो कुछ बाहरी युद्ध व युवा-युद्ध कायदे वालों को ही नहीं सीमा के अन्दर ही कायदे वाले, अर्थात् इत्यादि को जनता के अन्दर बाहर ३० अक्टूबर, १९६६ को विनाश करने के लिए उन्हे उग्र विचारों से जागरूक व मुक्ति सुनील कुमार, स्वामी गुरुवरण दास, स्वामी बरविन्दानन्द, श्री धीर जोरें में श्रीमती इन्दिरा गांधीजी प्रमाणमन्त्री से मिले । इस हेतुप्रेषण ने प्रधानमन्त्री से पोहोचया बन कराने के लिए मजदुरी किया । किन्तु अन्तर्गत उग्र में कहा कि पोहोचया बन्धीके विषय में जनता की कोई मांग ही नहीं अंर मुझे सब रिपोर्ट मिलती हैं, जिसमें गोरक्षा विषय के पक्ष में जो समाए हो रही हैं उसमें बहुत ही कम हाजरी होती है । श्री सुशीलकुमार जी ने कहा कि २९ अक्टूबर को चालती चोंक की सभा में पराम साठ हजार व्यक्ति थे । और जनता में गौरवा के प्रति बड़ी उन्नत भावना है, और यह श्रादोचन जोर पकड रहा है । अभी तक तो यह श्रादोचन हमारे हाथ में है । और वास्तविक चर रहा है । किन्तु जनर यह आंदोलन हमारे हाथ से निकल गया और दूसरी राजदारा सत्त्वानो के हाथ में बना गया तो हम विनये-दार नहीं होंगे ।

आज के इस अशांत वातावरण में जहर पर विचार्यों और सरकार, माणिक और मजदूर सरकारी कर्म-चारी व सरकार आदि के बीच मजहो और स्ट्रायके हो रही है । अभी की पट-रिया तक उखाड़ी जा रही है । जह-जह विरोधात्मक प्रवर्धन हो रहे हैं । अगर देवी प्रकार गोवी चलाकर ही बलपूर्वक विधिनियों पर काबू पाना सरकार को नीति रहेगी तो इन सब का कडा जल होगा इस का अज्ञात लयाना कठिन है ।

अतः सरकार को चाहिए कि ऐसे मोको पर सुधि और विवेक से काम ले न कि सिर्फ बल प्रयोग से । मोको से जनता में अवतारण कम नही होता किन्तु बढ़ता है और अधिक विद्रोह का रूप धारण करता है । सन्तुर्ण गोवध हत्या बन्दी का कागून् केन्द्र में बनाकर सरकार को चाहिए कि बहूजन मानित 'घमं ही मायदासो को मान देते हुए' हमारी धर्मनिरपेक्ष सरकार प्रदर्शन को भावनाओं को आरंभ की सुधि से देखे ।



संस्कृत शिक्षण प्रणाली को नष्ट कर देना... शिक्षण प्रणाली को नष्ट कर देना... शिक्षण प्रणाली को नष्ट कर देना...

### आर्य समाज साहित्य के उद्भूत श्री श्री श्री मुद्रया विद्यालकार श्री अनामिका कुमार, (कटभारकार)

### आर्य समाज अमृतसर का ५६ वां वार्षिक जयन्ती महोत्सव

३० नवम्बर से ५ दिसम्बर तक  
आर्य समाज लोहादह में मनाया गया।  
इस अवसर पर

श्री अनामिका कुमारी की एक प्रस्ताव... शिक्षण प्रणाली को नष्ट कर देना... शिक्षण प्रणाली को नष्ट कर देना...

शिक्षण प्रणाली को नष्ट कर देना... शिक्षण प्रणाली को नष्ट कर देना... शिक्षण प्रणाली को नष्ट कर देना...

वसा हुआ है। वह आप के पिता की... तुला कल्प संघर्षों के संस्कृत-गिद्या... प्रौढ़ की एक अमिट यादगार है। आप के निरुद्ध सम्बन्धी श्री अनामिकाप्रसाद जी ने इस सन्ध्या के लिए जमीन दी, मन दिया और आप के पिता की गोपी नाय की तथा कुछ अन्य सम्बन्धियों ने इसको धीनेने में अपने तन तथा मन का योग दिया। आप के जीवन के अनेक बहुमूल्य एवं भी इस संस्था की सेवा में व्यतीत हुए। आप के पिताजी ने न केवल आप को, आप के छोटे भाई को और अपने कई पोतों को ही पुस्तकानु में संस्कृत शिक्षा दिलवाई अर्थात् आप अपने वानभन्धी की म्याई अपनी आयु का अन्तिम भाग इसकी जीवने में अर्पित किया। सम्भवतः ऐसे उदात्त कुल के संस्कारों के कारण ही यह संस्य कुल में जन्म लेकर भी संस्कृत वाङ्मय के प्रकाश पड़ित रहे। इसके मूक प्रचारक हुए और मृत्युपर्यन्त इसके निरन्तर सेवक रहे।

३० नवम्बर से ४ दिसम्बर तक  
यजुर्वेद के मंत्रों में गृह्य, यजुः कथा तथा ऋग्वेद की पूर्णद्विगुण रचिवाय ४ दिसम्बर को पूर्ण अर्थात् पूर्णक शाली गई। यजमान सञ्जन सरस्वती सम्मिलित होते रहे। ३० नवम्बर से २ दिसम्बर तक ६, सुवी राम जी वेद कथा करते रहे।

पंडित जी उपरने ईश के पंडित थे, जो विप्रवास रहने थे कि प्रसा, गांधी से और विद्या कंठ थे। यह गृह्य शिक्षण नहीं करते थे कि पुस्तकों की अनुसंधान-विश्लेषण अच्छी होती चाहिये। पंडित, यह शिक्षण को पढ़ाते थे उन विद्यापियों को कम से कम पाच श्लोक प्रति दिन अवश्य सुनाने, पढ़ाने थे, कभी-कभी तो मुझसे बड़े तोषा भी नहीं मिनता था। यह कठोरता तो अवश्य ही प्रतीय होती थी परन्तु इसी कारण उस समय याद किये श्लोकों के शिष्यों को आज ५०-५०-६०-६० वर्ष की अवस्था में भी नहीं भूलेंगे। वे अनुभव करते हैं कि यह सब उनकी कृपा और अनुकम्पा का फल है।

उन की अपनी स्मृति आरचयन-वर्णन थी, अतः एव छात्रों के लिए एक उदाहरण रहती थी। उन के अपने गुरु तो तुलसी बिना पढ़ा नहीं सकते थे किन्तु उनके गुरु के विना ही पढ़ाये-कठस्थ श्लोक कम मात्र कठोर पढ़ते नहीं सकते थे। जब कभी हस्तों में श्लोकों के समान सूत्र और वे हस्तों में यहा कोई समय नहीं था और यह उन की संस्कृत विद्या का अकाट्य प्रमाण है। विनोद करते समय वह अपने पद अथवा अपनी आयु का कोई ताज नहीं उठाते थे। परन्तु विनोद भी उनका शारदीय होता था। ऐसा लगता था कि इस समय भी वे पढ़ा रहे हैं अथवा अपने प्रिय छात्रों की परीक्षा ले रहे हैं। पंडित जी का दुःख वारी-वसान ७४ वर्ष की आयु में मृत २ अक्टूबर १९६६ को भरतपुर में हुआ। वे कुछ दिन सख्य रहे। परन्तु सगता की संस्कृत विद्या के छोटे बालकों को पर्याप्तता तथा संस्कृत उच्च मनोयोग से पढ़ा रहे थे। आज अच्छे संस्कृत-विद्यार्थी का जो अभाव ही है। पंडित जी सरीबे प्रसार मेधावी, निस्वार्थ भाव से मनोयोग पूर्वक पढ़ाने वाले तथा सुदृढ़ बातः करण से छात्रों के हितेषी शिक्षक का देहान्त निश्चय से आकस्मिक ही कहा जायगा। उन का सहसा उठ जाना संस्कृत विद्या के प्रचार को भारी क्षति पहुचाने वाला है।

१ दिसम्बर को गोरक्षा सम्मेलन श्री पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ इस में परमिष्ठान्त सनातन धर्मी नामधारी कार्य मनाजी सज्जनों के भाषण हुए। ११ दिसम्बर को एक मत्वाचरी जने का अभिनन्दन किया गया। यह अत्या २ दिसम्बर को देहली चला गया। श्री ना० मन्मथेश्वर जी एम० ए० (अध्यापक डी० ए० बी०) हाई स्कूल ने २ दिसम्बर में ११ दिन का अन्नान कर करने की घोषणा की और अब वह गीता भजन में अतलत कर रहे हैं। २ दिसम्बर को एक कविदरबार का आयोजन किया गया जिसमें प्रसिद्ध कवियों ने गोरक्षा, आर्य समाज तथा महर्षि दयानन्द के उपकारों पर कविता में पद्यी।

श्लोक कठस्थ कराने की उनकी विधि निरी कठोर ही नहीं सुनिष्ट एक प्रकार से रोचक भी थी। पंडित जी श्लोकों का सामूहिक पाठ कराते थे और इस से वह बहुत प्रसन्न रहते थे। इस से वे स्वयं संमिन्धित होते थे। इस समय वहां गुरु-विद्या का भेद नहीं रहता था। वे स्वयं ही एक सदस्य होते थे। इस प्रकार जहां छात्र हृदयपूर्वक श्लोक कठस्थ करने लगते थे वहां उनका उत्तर तथा उच्चारण भी सुद्ध हो जाता था। यह एक आदर्श गुरु थे। स्वभाव के सरल भी और उग्र भी। कोमलता एवं अदृता का मेल ही सकता है। इस के वे एक प्रतिभानु उदाहरण थे। पुराने पंडितों के समान तथा उग्र बुद्ध की प्रशंसा की अहुरात्र वे कठोर शासन से विश्वास रखते थे। परन्तु एकजने से बड़ी लगन और मनोयोग से। जब तक छात्र विषय को अपनी भाँति समझ नहीं लेता था। आगे नहीं बढ़ते थे। उन का अध्यापन एकांकी नहीं होता था। अन्ध-अंध मान्य अताना उच्छाने कभी एकांकी नहीं माना-दुःख का मग गौ टीकाएँ ही बख सकती थीं। भाव परीक्षाओं के लिए 'कृषि'वां

पंडित जी अपने पीछे एक सामाख्यव्या समृद्ध परन्तु सर्वथा सुसंस्कृत परिवार छोड़ गये हैं। पत्नी, तो सुदृढ़ और एक पुत्री भी। पत्नी उन की जाननवर कन्या महाविद्यालय की भूषणवती छात्रा हैं, पुत्रों में से एक उच्छकोटि के इन्जीनियर तथा दूसरा वेदाङ्ककार (मुद्रुज्य कामड़ी), शास्त्री, प्रभाकर, साहित्य-रत्न, वे विषयों में एम. ए. पी. एच. डी. तथा धनवंदने काविक भरतपुर में प्राध्यापक। पुत्री भी हिन्दी संस्कृत की शय्याकारिका है। स्वर्गीय दामाद वेतालकार, शास्त्री तथा एम. ए. ए. वे, वे एक अत्यन्त शोभदार वैदिक विद्वान् थे। कुसोन में प्राचीन वृक्षानु विद्यापद्धति का स्मारक गुच्छुत

श्री अनामिका कुमारी का अन्तिम भाग इसकी जीवने में अर्पित किया। सम्भवतः ऐसे उदात्त कुल के संस्कारों के कारण ही यह संस्य कुल में जन्म लेकर भी संस्कृत वाङ्मय के प्रकाश पड़ित रहे। इसके मूक प्रचारक हुए और मृत्युपर्यन्त इसके निरन्तर सेवक रहे।

### आर्य समाज माताहिक के बारे में आर्य समाज मारोशस का प्रश्न

पूज्य श्रीमान् सभापति जी सप्रम नमस्ते। आर्य समाज का अन्तिम-निर्वाण-अच्छु मिला पक्षकर बड़ी सुखी हुई। इसके अंती उच्छकोटि की सामुची मृत अत्य धार्मिक पत्रिका में नहीं देखी है। मुझे प्रसन्ना है कि आर्य समाज ही एक मात्र पत्रिका है जो कई वर्षों से भारत के अलावा बिदेशों में वैदिक धर्म में अत्यन्त प्रचारित है। इसमें अत्यन्त सरलवती के पावन सन्देश पढ़ना रहती है।

मेरी दृष्टि में आप महर्षि दयानन्द जी के एक तन्त्रे अनुयायी हैं, प्रभु से प्राथना है कि आप जीवन भर इसी प्रकार विश्व के कोले-कोले में अपनी पत्रिका द्वारा वैदिक धर्म का प्रचार व प्रसार करते रहे यही मेरी अभिलाषा है।

निधानन्द रायचवाल  
मंत्री नाथकान्वाल

उत्सव में श्री प. सुवी राम जी, श्री प. ओ प्रकाश जी, श्री प्रा० राजेन्द्र विद्याजी, श्री महात्मा जगन्नाथ जी दत्त के सार्वभौमिष्ठ स्वाभ्यान तथा मा० बाबुदेव भावनाचार्य, श्री तत्पुत्राजी तथा चिन्मटा मण्डली की राजवादा-मदनमोहन ने अपने सुरिले अजना की वीर रत्न पूर्ण प्रसार से बच्चा वाचे रखा।

४ दिसम्बर साय का कालोपर बचोको कार्यक्रम में महात्मा जगन्नाथ जी दत्त, महोदयदेवक दयानन्द सायलदेव निधान के एक विशेष स्वाभ्यान हुआ। इसमें अपने बचोकोपर से हिन्दुओं की शोचनीय दशा का ऐसा नकशा संचा जिते मुन्य कर रोसायन हो जाता था। रात मारकर बच्चे फलदार और जानित पाठ से उत्सव को कार्यवाही समाप्त हुई।

५ दिसम्बर सोमवार की कार्य समाज लोहादह के उत्सव में बहुत-ती रेडियों के अतिरिक्त चिन्मटा भजन मण्डली के प्रेरणादायक भजन हुए।  
—पिन्की दास जानी प्रधान

ब्रितिश भारतीय दयानन्द शालेयन  
मिशन होश्यापुर के

कार्यकलाओं का प्रथम

वार्षिक सम्मेलन

(१० देवप्रकाशजी का अन्वेषणीयमाधुर)

आज दुडिया दयानन्द शालेयन  
मिशन के संस्थापक प्रधान स्वामी  
महात्मा देवीचन्द जी के जन्म दिवस  
१९ नवम्बर को मिशन ने अपने समस्त  
कार्यकलाओं का एक सम्मेलन  
होश्यापुर में बुलाया जिस में भाद्व  
के भिन्न-भिन्न शाखों में कार्य करने वाले  
प्रचारक बड़ी संख्या में सम्मिलित हुए।  
इस शुभ अवसर पर अग्रसर विद्यापी  
सभा संस्थापक के पुराने अनुभवों, स्वाभिवि  
सम्बन्धी तथा सुदि शोध के प्रसिद्ध मन्त  
रणी पी० के प्रकाश जी ने अपने अन्वेष  
णीय माधुर में कहा—

इस समय देश बड़े सकट में है।  
हमारी भारत सरकार घमं विफल है।  
विदेशी ईसाई मिशनरियों तथा मुसल  
मान मीनानों ने हमारे देश की मूख  
मरी तथा सरकार की नीति का अनु  
चित्त लाभ उठाया है। उनकी संस्था  
दिन प्रतिदिन बढ़ती चली आ रही है  
आज दुडिया दयानन्द शालेयन मिशन  
अपने भवन-काल से ही हिन्दू जाति की

प्रादेशिक सभा से सम्बन्धित  
समाजों को आवश्यक सूचना

दीपमाला पर्व की चुका है लेकिन  
बन्दी तक दीवाली फड सभा के दल  
में नहीं आया इसके कारणे अति-निर्वास  
अंक में सूचना दी जा चुकी है लेकिन  
बहुत मी सभायोंने इस ओर ध्यान देने  
का कष्ट नहीं किया। अतः पुनः प्रायः  
है कि परिवार के प्रत्येक सदस्य के  
अनुसार चार आमा दीवाली फड एक  
नित करने सभा के कार्यालय में भेज  
कर सभा के आदेश का, प्रालन करे।  
—व्यवस्थापक

पठनीय एवं मननीय साहित्य

वेद प्रवचन ५/- गीतापार ७/-  
वेद, अलमनीर के पत्र १/-वेदार्थ  
संस्कार १/५० वेद, मेरी आठ  
रोचक कहानियां ७/- वेद, लीकट  
७/- वेद, लखनऊ ज्ञान ५० वेद,  
कर्म मीमांसा २/२५ वेद, महावि  
निश्चयन कमी और कर्म १५ वेद,  
वैदिक शास्त्रशास्त्र भास्कर ६/-  
यात्रा गोपक पत्र ११/२० वेद, महा  
साहित्य ५/चारक १/-  
जयदेव ब्रह्मसं बडोया—१

समाचार दर्शन

रखा करता चला आ रहा है। मिशन  
ने देश के हिन्दुओं तथा आदिवासीयों  
में सराहनीय सेवा कार्य किया है।  
अतः ३२ वर्ष में अपने १,५०,०५०  
घरों में पतित किए गए हिन्दुओं की  
शुद्ध कर पुनः किन्हीं जाति का कर्म  
बनाना है २१११ हिन्दू-शैली  
की विधियों तथा सुधारित लोगों से  
छुड़ा कर उनकी हर प्रकार बन्दी की  
है। इस के अतिरिक्त कलाओं की  
संस्था में हिन्दुओं को जन्म मरण का  
चिकित्सा होने से बचाया है।

समापति प्रोडोवेन के आगे भव कर  
कहा कि 'मुझे यह देख कर भी हार्दिक  
प्रशंसा होती है कि मिशन के प्रचा  
रक मूलर के अनेक प्रदेशों में बड़े  
उत्साह से जाति सेवा का कार्य  
रहे हैं। मिशन ने धर्मार्थ औपचार्य  
की उत्कर्ष (उत्थान) व्यवस्था तथा  
तत्परता में ईसाईयों के मुकाबला  
पर चला रहा है और योग्य तथा  
निर्धन विद्यालयों को पुस्तक व  
छात्रवृत्तियां भी प्रदान कर रहा है।

इस महात्न कार्य पर विधान इस  
समय तक ५,९२,०८२ स्वयं व्यय कर  
चुका है। आप को यह जान कर भी  
प्रशंसा प्राप्त होगी कि मिशन ने  
अभी घोड़े मिन हुए कि भोमर  
कमीर से इन हिन्दू नवयुवकों तथा  
नवयुवतियों को जिन्होंने यौवनक तथा  
यहां के इन्जीनियरिंग कालेजों में  
प्रवेशार्थ घमं परिवर्तन कर लिया  
जा, पुनः मुद्र कर लिया है। इस

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

साम वेद भाषा भाष्य  
भाष्य-कार श्री आचार्य वैश्वानरजी शास्त्री  
पृष्ठ संख्या 1075 साईज  $\frac{18 \times 22}{8}$  बनाय बाऊड बड़िया  
काण्ड महर्षि दयानन्द महाराज हंटराज, महात्मा आनन्द  
स्वामी जो तथा दानवीर श्री मनोहर लाल जी मरगह  
के चित्रा से सुसज्जित

मूल्य २५ रु. केवल डाक खर्च इसके इलावा  
प्राणित स्थान  
आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि, सभा निकट कोर्ट  
जालन्धर

महत्त्व कार्य के लिए मिशन हमारी  
बन्दी का पात्र है।  
अपने माधुर के अंत में प्रचार्य  
महोदय ने हिन्दू जगता तथा धार्य  
संस्कार का प्वास ईसाई मिशनरियों  
तथा इस्लामी प्रचारकों के इन मिष्क  
नीय कार्यों को देवपातक, अवैधानिक  
तथा आपत्तिजनक कार्यवाहियों की  
ओर विपत्ति हुए तन, मन, धन हाक  
मिशन की सब प्रकार की सहायता  
प्रदान करने की अनुरोध है।

राजवाहा—प्रधान मिशन  
सभा सन्धी का पत्र स्व.  
दीवानचन्द्र जी के सुमुत्र  
के नाम  
मार्तनीय श्री बडवा जी  
स्रेमं वसते!

सनाचार पत्रों में आपके प्रत्य  
विता स्वर्गीय डा० दीवानचन्द्र जी के  
देहावसान का समाचार पढ़ कर सारे  
पंजाब भर में शोक छा गया है।  
पनाय का एक महान् मण्डल जिसने इस  
घरती पर विद्या विज्ञान की प्रयोगि  
प्रवर्धित की थी, जिसने यहाँ शिला  
संस्थाओं और समाज मंदिरों की एक  
तकी मंठी स्थापित करने में अपना  
तन, मन, धन लगा दिया था, आज  
इस से सर्वदा के लिए बिछड़ गया है।  
हे पुरानी पीढ़ी के कर्म योगी जनो मे  
से वे जिन्होंने बहिदान का जीवन  
वितरिते हुए अपने अंतिम पल तक  
समाज सेवा का कार्य बड़ी तत्परता

के द्वारा विद्या विज्ञान के  
विप्रेषण में अपने अतिरिक्त वे  
सामान्यतः को भी सुविधा दे  
है। आपने अपने अतिरिक्त के  
कर्मका साथ स्वयं बन्दी से विद्या  
संस्था का प्रारंभ किया परन्तुमा जो  
संस्था की स्थापित प्रवर्धन कर और  
सारे परिवार को इस विषयक कष्ट  
सहित करके भी धनित है।  
वेद प्रकाश प्रमहोषा  
बना मनी

आर्यसमाज 'महाराजगंज' इन्वीर  
शोक प्रस्ताव

मार्यसमाज महाराजगंज, 'दन्वीर  
की यह संस्थाएर सभा, इस समाज  
के सर्वोत्तम सदस्य श्री बलरामजी के  
आवस्थिक निधन पर हार्दिक दुःख  
प्रकट करती है, उनको इस मृत्यु से  
इस समाज की बड़ी क्षति हुई है।  
हम सब परम पिता परमात्मा से  
प्रार्थना करते हैं कि यह विपदाय आत्मा  
को नाशित प्रदान करे तथा उनके शोक  
सम्पन्न परिवार को इस दुःख को सहन  
करने की क्षमता प्रदान करे।

दसुआ  
आज दिनांक ५-१२-५१ को  
डी. ए. वी. हार्य संकायके स्कूल  
दसुहा के अध्यक्षों तथा छात्रों को  
शोक सभा हुई। जिस में स्कूल के  
मुख्यमंत्री मुख्याध्यापक सभा जयगुदाय  
और स्कूल पी. ए. वी. टी के आक  
स्थिक निधन पर हार्दिक शोक प्रकट  
करते हुए श्रद्धांजलिया अर्पित की।  
हम उनके परिवार से सम्बन्धना  
प्रकट करते हुए परमात्मा से प्रार्थना  
करते हैं कि यह दिवंगन आत्मा को  
सर्वशक्ति प्रदान करे तथा परिवार को  
इस अवार कष्ट को सहन करने की  
शक्ति प्रदान करे।  
श्रीवीरपी डी. ए. वी. H.S. स्कूल

आर्य प्रादेशिक सभा  
की आवश्यक सूचना

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा  
ने सम्बन्धित सभी समाजों को अपने  
प्रतिनिधि भेजने तथा दशाश भेजने  
के क. व. कार्य भेजे जा चुके हैं  
परन्तु मरि बहुत पीठी है। समय  
शोधा रह गया है अतः अपनी समाजों  
के प्रतिनिधियों की सूचि तथा दशाश  
सभा के कार्यालय में प्रेषा समय भेज  
कर कर्तव्य पालन करे।  
—सभा सन्धी



NOTES TO THE ILLUSTRATIONS

Text illustration, p. 71 (cf. text p. 72)

Woodcut from 'Ragged and Torne and True. To the tune of Old Simon the King. Printed by the Assignes of Thomas Symcocke.' Roxburghe Collection of Ballads, I, 352, 353. Dept. of Printed Books, British Museum.

(For general note on the Roxburghe Collection cf. note to § 25-28 above)

The housewife sits spinning at her door, while a stag hunt goes by (rather improbably) in the background. The woodcut is not directly illustrative of the ballad, which is a somewhat smug song by a young man, who though poor and ragged, is contented, and therefore better off than everyone else.—

'What though my backe goes bare  
I'm ragged and torne and truc'

Text illustration, p. 71 (cf. text p. 72)

Woodcut from 'A lanthorne for Landlords. To the tune of the Duke of Norfolk London. Printed for John Wright.' Roxburghe Collection of Ballads, I, 180, 181. Dept. of Printed Books, British Museum

(For general note on the Roxburghe Collection cf. note to § 25-28 above)

This doleful ballad tells how a poor widow helped in the harvesting near Norwich and of how her two little children wandered away among the broad cornfields and were lost and miserably died. The woodcut shows haymaking instead of harvesting.

Text illustration, p. 95 (cf. text p. 96)

Woodcut from *The Shepheardes Calendar*, by Edmund Spenser (1581 edition). From a copy in the Dept. of Printed Books, British Museum

This woodcut for the month of May may be described in Spenser's own words from the dialogue between Piers and Palinode. The dialogue treats actually of a discourse between Protestant and Catholic, but disregarding this we may take the following passage purely for its description of the English countryside on May morning and the doings of the country youth

'Is not thilke the mery month of May,  
When love lads masken in fresh aray?

. . .

Yongthes folke now flocken in everywhere,  
To gather may buskets and smelling brere.  
And home they hasten the postes to dight,  
And all the Kirke pillours eare day light  
With Hawthorne buds, and swete Eglantine,  
And girlonds of roses and Sopps in wine

Sickel this morrowe, ne longer agoe,  
 I saw a shole of shepheardes outgoe,  
 With singing, and shouting, and jolly cheere:  
 Before them yode a lusty Tabicre,  
 That to the many a Horne pype played,  
 Where to they dauncen eche one with his mayd.  
 To see those folkes make such iouysaunce,  
 Made my heart after the pipe to daunce.  
 Then to the greene wood they speeded hem all,  
 To fetchen home May with their musicall:  
 And home they bringen in a ioyall throne,  
 Crowned as king, and his Queene attone  
 Was Lady Floia, on whom did attend  
 A fayre flock of Faeries, and a fresh bend  
 Of lovely Nymphs (O that I weie theie,  
 To helpen the Ladyes their Maybush beare).<sup>7</sup>

Text illustration, p. 96 (cf. text p. 96)

Woodcut from 'The Milkmaid's Life, or, A pretty new Ditty,  
 Composed and Pend, The praise of the Milking paille to defend  
 To a curious new tune called The Milkmaids Dumps Printed  
 at London for T Lambet' Roxburghe Collection of Ballads,  
 I 244, 245 Dept of Printed Books, British Museum.  
 (For general note on the Roxburghe Collection cf. note to  
 § 25-28 above)

Text illustration, p. 97 (cf. text p. 96)

Woodcut from 'The Merry conceited Lasse To a pleasant  
 northern tune. Printed at London for Thomas Lambert at the  
 signe of the Hoise-shoe in Smithfield' Roxburghe Collection  
 of Ballads, I, 240, 241 Dept of Printed Books, British Museum  
 (For general note on the Roxburghe Collection cf. note to  
 § 25-28 above.)

Text illustration, p. 109 (cf. text p. 109)

Woodcut from 'The Coaches overthrow or A Ioyfull Exalta-  
 tion of divers Tradesmen, and others, for the suppression of  
 troublesome hackney Coaches. To the tune of old King  
 Harry' Roxburghe Collection of Ballads, I, 546, 547. Dept  
 of Printed Books, British Museum  
 (For general note on the Roxburghe Collection cf. note on  
 § 25-28 above)

The ballad is all for the suppression of hackney coaches for

'They make such a crowde  
 Men cannot passe the towne.'<sup>7</sup>

It calls for room for 'the Carmens Cars and the Merchants  
 Wares,' and in one veise declares



NOTES TO THE ILLUSTRATIONS

'Arise Sedan  
Thou shalt be the Man  
To beare us about the Towne.'

The oft repeated refrain is

'Heigh downe, dery dery downe, with the hackney coaches  
downe.'

(For other illustrations of different types of road traffic cf  
§ 100-105.)



# INDEX

- Act of Settlement, 136  
 Acting, Actors, 62-3, 118, Elizabethan, 62-3  
 Addison, Joseph, Sir Roger de Coverley of, 112-13, 137  
 Admiralty Court, 104  
 Adultery, Puritan Act against, 90  
 African Company, the, 60, 130  
 Agincourt, battle, 9, 52  
 Agricultural labourer, wages, 133 *and n*  
 Agricultural revolution, 127  
 Agriculture, open field cultivation, 7, 8, 128, enclosure, 7-8, 28, 127, subsistence agriculture, 7, industrial crops, 7, in time of Charles II, 127-129, improvement in, 127-8, land improvement, 128, great estate system, 128  
 Ale and Beer, the ale bench, 23  
 Alva, Duke of, 53, 58  
 Amboyna, 79  
 American Colonies, the, 53, 67-74  
 Amsterdam, 58  
*Ancien régime*, 88  
 Anglicanism, 38, 111-13, 123  
 Anticlericalism, in reign of Henry VIII, 91, subsides, 35-6, in Elizabeth's days, 91, the Laudian church, 91, reacts against Puritanism, 91.  
 Antwerp, 31, 56, 58  
 Apprentices, 24, of London, 25, pauper apprentices, 51  
 Apprenticeship, national system, 50-1, indentures, 51, of younger sons, 24-5  
 Archery, 28  
 Architecture, Gothic, 17, 18, Italianate, 18, Elizabethan, 17-19, Early Stuart, 105, the Jacobean mansion, 105, Ecclesiastical, 18, 148, Wren's churches, 148, Public buildings, 18  
 Arden, Forest of, 6, 47, 141  
 Aristocracy. Tudor, 24, Restoration epoch, 126. *See also* Nobility  
 Armada, Spanish, the, 28, 29, 37, 52-5  
 Army development, 28-9  
 Artificers, Statue of, 51, 133  
 Arundel, Earl of, 105  
 Ascham, Roger *Schoolmaster* of, 40  
 Atheism, 115  
 Audley End, 18, 103  
 Austen, Jane, 139, novels of, 23, 37, 64  
 Australia, 53  
 BACON, Sir Francis, 42, 106  
 Bacon, Sir Nicholas, 42  
 Ballads, 2, 62, 96-8, Border Ballads, 16  
 Baltic Trading Company, 60  
 Baltimore, Lord, 69  
 Banking Trade, 81-2  
 Banks, 81  
 Baptists, 92, 113  
 Barbados, 67, 70  
 Barley, 5, 6  
 Barrow, Isaac, 123  
 Bath, 21, 139  
 Beards, wearing of, 20  
 Bedford, Earls and Dukes of, 24, 81-7, 101, 127  
 Beds and Bedding, 106  
 Beggars, 31, in continental countries, 88 *See* Sturdy beggars  
 'Belted Will Howard,' 17  
 Bentley, Richard, 124, *Letters of Phalaris*, 124  
 Berry, Maj-Gen., 12  
 Bible, the, 1, 40, 62, 92-3, reading of, and religion, 40, in American colonies, 74, in Puritan epoch, 92-3; scientific enquiry and, 115-16  
 Bideford, 4, 145  
 Birch, Colonel, 111  
 Birmingham, 100, 141  
 Bishops, the denounced by Puritan clergy, 37, 38, under Charles I, 91  
 Black Death, the, 145  
 Blackwell, Aldermen, 83*n*.  
 Blake, William, 94  
 Bombay, 75*n*  
 Books and reading, 97-9  
 Border Ballads, 16  
 Border Country, the, 14-16  
 Boswell, James *Life of Johnson*, 64  
 Bosworth field, 12  
 Boyle, Robert, 115  
 Bread, 6 *and n*  
 Bridgewater, Lord (1634), 97  
 Bristol, 4, 59, 77, 144

INDEX

Browning, Robert, 33  
 'Brownists,' the, 38  
 Bruges, 56  
 Building, ecclesiastical, 18  
 Bullion export, 77  
 Bunyan, John, 92, 113, *Pilgrim's Progress*, 92, 93-4, 121  
 Burbage, actor, 62  
 Burial shrouds, 130  
 Burnet, Bishop, 86, 123  
 Buxton resort, 21, 139

CALAIS, 51, 56  
 Calvinists, 35, 40  
 Cambridge, 43-5, town and gown riots, 44  
 Cambridge Fair, 45  
 Cambridge University, Nineteenth and Twentieth centuries, 44, Colleges mentioned Camus, 18, Clare, 44, St. John's, 43, Trinity, 18, 43, 123, 124  
 Camden, William, 3, 16, 42; his *Britannia* cited, 6, 21, 47, 48-9, 140 *See also* under Gibson  
 Canada, 53 *and n.*, 73  
 Canals, 84, 85  
 Capitalism, 59, merchant capitalism, 59  
 Carlisle, Bishops of, 16  
 Carpets, 105  
 Carriers, 5  
 Cattle, 8, breeding of, 8, fairs, 8  
 Cattle raiding, 14  
 Cavalier Parliament, the, 136, 137  
 Cavaliers, 101, 102, 112, 114, changing fortunes of, 125-7  
 Cecil, William Lord Burleigh, 35, 42, 49, 55; the Cecils, 42  
 Ceilings, 105  
 Celibacy of the clergy, 36  
 Censorship (Licensing Act, 1663), 121-122 *and n.*  
 Census figures (1801-1831), 134-5  
 Chairs, 106  
 Chancery Court, 29, 104  
 Charcoal, 46, 47  
 Charity Schools, 23  
 Charles I, 78, 90, 91, 104, and monopolies, 78, Church under, 91, and the Tower Mint, 81  
 Charles II, 74, 118, Court of, 118-19, acquisitions from the Dutch, 74, patronage of science, 115, 118  
 Charltons, the Border clan, 15

Chartered Company, the, 60  
 Chaucer, Geoffrey' *Canterbury Tales* of, 63  
 Cheques, 82*n.*  
 Chester, 3  
 Child, Sir Josiah, 79, 80, 86  
 Child betrothal and marriage, 86-7  
 Chimneys and increased use of coal, 48  
 China (or Cathay), 76  
 China porcelain, 77  
 Chipchase Castle, 15  
 Christ Church, Oxford, 43  
 Church, the' Anglican, under Elizabeth, 11, 33-41, and Stuarts, 69, 91, 93, at Restoration, 111-13, 123. *See Subject Headings*  
 Church architecture, 18, 148  
 Church attendance, enforced, 40  
 Church Courts, 90  
 Church Service Elizabethan, 39-40, Hanoverian, 39*n.*  
 Cider, 6  
 Civil Wars, the, 99-102, 111, 138, economic causes, 87, fines and losses, 127, London in, 4, 77-8, 92, 99-100  
 Clarendon Code, the, 112, 124, object of, 114  
 Clarendon, Earl of, 36  
 Classical scholarship, 124; classicism in the England of Shakespeare, 1-2  
 Clergy Anglican, under Elizabeth, 11, 33-6, 39-41, under Stuarts, 36, the release from celibacy, 36, rise in status, 37; under Commonwealth, 119  
 Clive, Robert, 75, 87  
 Cloth manufacture, 4, periodical unemployment in, 31, 57  
 Cloth trade, 56-9, fostered by Government, 130, affecting foreign policy, 56-8, Far East market, 78, Irish cloth trade, 130  
 Coal, Coal trade, 17, 47-8, 141-4; sea-coal, 17, 47-8, 144, as domestic fuel, 47-8, 141, export of, 48, transport of, 144, trade development Stuart era, 141, production advance, 142*n.*, coal-fields distribution, 142*n.*, applied in smelting of iron, 48, coal and iron age, 142  
 Coal-mining, 17, surface mining 17, miners' conditions, 142-3, fire damp explosion, 142, female and child labour, 142, the 'bondmen' in Scotland, 142

INDEX

- Cock-fighting, 139  
 Cod-fishing, 48  
 Coffee, 77  
 Coinage debasement of, by Henry VIII, 45, restored under Elizabeth, 45-6, and rise of prices, 6  
 Coke, Edward, 104  
 Coke, Thomas, of, Norfolk, 128  
 Collier, Jeremy, 123  
 Colonial expansion, 51, 52-3, 67-70  
 Common Law of England, 29-30, 74, 104, and Prerogative Courts, 29, 104  
 Commonwealth, the social cleavage, 101-2, upper classes and, 111  
 Congregational singing, 39  
 Congregationalists, 92  
 Congreve, William, 120  
 Connecticut, 69  
 Conventicles, Puritan, the, 112  
 Cook, Captain James, 76  
 Cooking, 7  
 Cooper, Anthony Ashley, 1st Earl Shaftesbury, 111, 112  
 Corn, export, 5-6, bounties, 128, 129 and *n*  
 Corn Laws, 129  
 Corneille, 120  
 Cosway, Richard, 20  
 Cotton family library, 122  
 Country gentleman, the 24-5, 31, 65, 126-7, Tudor and Stuart, 24-5, 65, wealth and power, 24, attitude to trade, 126-7, the small squire, 12-13, 24, 101, 126-7  
 Court, the, of Charles II, 118-19  
 Court Leet (Manor Court), 27, 73  
 Courteen Association, 78, 79  
 Cox, Bishop of Ely, 11  
 Craft-gilds, mediaeval, 49, 59, decline, 50, 59  
 Cranmer, Thomas, Archbishop, 33  
 Cromwell, Oliver, 94, 95, 97, 101, 106, 115, Imperial development under, 80, and protection of English trade, 79, and land reclamation, 84-6  
 Crossbow, the, 28  
 Cumbeiland, 14, 16, 140
- DACRES, the, 14, 16  
 Dames' schools, 41  
 Dearth, times of Poor Law and food supply in, 31
- Decoration, 18, 105-6  
 Deer, 7, hunting of, 138  
 Defences, before days of standing army, 28-9 *See* Military system  
 Defoe, Daniel, observations of, 133  
 Deforestation, 46-7, 141, 143  
*De haeretico comburendo*, 114-15  
 d'Ewes, Simon, 43  
 Dickens, Charles *Oliver Twist*, 51  
 'Diggers' sect, the, 102  
 Dissenters (or Nonconformists), Puritans, 37-8, 92-4, 101, 111-13, 118, persecution of, under the Restoration, 111-13, 118, 121, 124, the dissenting congregations, 113, and the Church Establishment, 38 *See also under* Baptists, Quakers, Wesleyan  
 Dodds clan, the, 15  
 Domestic industry (of the housewife), 107-8  
 Dovecots, 7, 108  
 Drake, Sir Francis, 52-5  
 Drama, Elizabethan, 62-4  
 Dress, Elizabethan, 20-1  
 Drinking glasses, 19  
 Drury Lane Theatre Royal, 118  
 Dryden, John, 119, 120  
 Duelling, 21  
 Dugdale, Sir William *Monasticon*, 123  
 Dunning, Richard, 134-5  
 Dutch, the, 58-9, 66, 73, 76, as allies in war, 55, 58, attitude to rivalry of, 130, Sea-beggars, the, 53
- EAST India Company, 57, 60-1, 75-80, 86-7, 130, charter, 57, 75, powers and policy, 75-6, trading stations, 76, chief articles of trade, 46, 77, Far Eastern cloth trade, 77, fleet of, 76, 87, bullion export, 77, and monopolies, 78, re-established under Cromwell, 79, New General Stock, 79  
 Eastland Company, 60  
 Ecclesiastical Architecture, 18, 148  
 Ecclesiastical Court of High Commission, 29, 104  
 Economic Nationalism, Tudor, 50  
 Edgehill, 100  
 Education, 23, 123-4, Elizabethan, without segregation of classes, 23, 41, and *see Subject Headings*  
 Edward III, 50

INDEX

Edward VI, 36  
 Elizabeth, Queen, 2, 3, 11, 36, 37, 38,  
 52, 55, 56, 77, Chaps I and II *passim*  
 Elizabethan drama, 61-3  
 Elizabethan seamen, the, 52-6, 58  
 Ely Isle, 9-11, 84  
 Ely Place, Holborn, 11  
 Emigration and colonisation, 67 *et seq.*  
 Enclosure, 28, 141  
 Encyclopaedists, the, 124  
 English tongue, the, in Seventeenth  
 Century, 95  
 Erasmus, 1  
 Erastianism, 34-5  
 Essex county, 5  
 Evelyn, John, 64, 103, 120  
 Eyre, Adam Yorkshire yeoman, 98-9

FACTORIES, employment in, 31  
 Fairs, 45  
 Family life, Seventeenth Century, 107-  
 110  
 Family prayers, 40  
 Farm animals, *oxen draw the plough,*  
 8-9 *and n*  
 Farm labourer *See Agricultural*  
*labourer*  
 Farquhar, George, 120  
 Feckenham Forest, Worcestershire, 47  
 Feldon, the Warwickshire, 6, 140, 141  
 Fencing (sword-play), 21  
 Fenland, 9-11, drainage, 83-6, Wind-  
 mills, 85  
 Fenmen, the, 9-10, 84  
 Fiennes, Celia, *Diary*, 143, 144  
 Finance and the Crown, 28, 55, 87  
 Fire of London, 146-7  
 Firearms, 29  
 Fiscal assessments of Counties, 139-40  
 Fish laws, the, 49  
 Fishermen, 49  
 Fishing industry, 48-9, cod-fishing, 48,  
 herring fishing, 48-9  
 Fletchers, the, of Redesdale, 15  
 Flodden, 66  
 Floor coverings, 105  
 Footwear, 8  
 Foreign immigrants, 50. *See also*  
*Huguenots*  
 Forest laws, the, 136  
 Forest of Arden, 6, 47, 141  
 Forty-shilling freeholders, 26

Fowey, 145  
 Fowling, 10, *and see* Shooting  
 Fox, George, 93, 124, 125  
 Foxe, John, 52  
 Foxhunting. *See* Hunting  
 France, 67, 88; *noblesse*, the, 23, 87  
 Franchise, the, 26  
 Freedom, principle of, 27  
 French drama, the, 120  
 French privateers, 143  
 Frobisher, Martin, 51, 54  
 Froissart, 28  
 Fucl, 47-8, 143-4  
 Fuller, Thomas, 44  
 Furniture, Jacobean, 105-6

GALLEY slaves, 55*n.*  
 Game, Game laws, 108, 136-8  
 Gardens, and garden plants, 106-7  
 Gentleman, the, status of, 25-6  
*Gentlemen's Recreation*, the, 137, 138*n*  
 Gentry *See* Country gentlemen  
 German workmen in England, 18, 46  
 Gibbons, Grinling, 123  
 Gibson, Edmund, Bishop of London,  
 141, edition of Camden's *Britannia*,  
 quoted, 9-10, 141, 143  
 Gilbert, Sir Humphrey, 52  
 Gilds, 50 *See also* Craft gilds  
 Gilpin, Bernard, 16  
 Glass, 19; drinking glasses, 19, industry,  
 19, 46-7  
 Gold and prices, 187  
 Goldsmiths of London, the, 81-2, func-  
 tion of, as 'proto-bankers,' 82  
 Gothic architecture, 17, 18  
 Grahams clan, of Netherby, 16, 17  
 Grain, prices, control of, 32  
 Grammar schools, 1-2, 23, 41  
*Grand Cyrus*, 98  
 Granville, 56  
 Great families and development, 87  
 Gresham's Royal Exchange, 18  
 Guise, Duke of, 53  
 Gunpowder, 46, 77  
 Gwynne, Nell, 118

HADDON Hall, 18  
 Hakluyt, Richard, 42, 52, 57  
 Halls clan, the, 15

INDEX

- Hamburg, 57  
 Hampden, John, 92  
 Hanse, towns, the, 57  
 Harbottle Castle, 15  
 Hare hunting. *See* Hunting  
 Harrison, Rev William, cited or quoted, 3, 6*n*, 19 and *n*, 22, 43, *passim*  
 Harrogate, 139  
 Hatton, Sir Christopher, 11  
 Hawking, 137  
 Hawkins, Sir John, 2, 54-6, 70  
 Hearne, Thomas, 123  
 Hedleys clan, 15  
 Henry V, 52  
 Henry VIII, and break-up of monastic establishments, 91, debasement of coinage, 45, naval policy of, 55  
 Herb garden, the, 106  
 Herbert, George, 41  
 Heresy, death punishment for, 114-15  
 Herrick, Robert, 97  
 Herring fishery, 48-9  
 Highlands, the, and the Highlanders, 15  
 Highwaymen, 22  
 Hilliard, Nicholas, 20  
 Historical research, 123-4  
 Hobbes, Thomas, 115  
 Hobson, Cambridge carrier, 45  
 Hobson's choice, 45  
 Hobson's Conduit, 45  
 Holland, 58, 66, and *see* Dutch, the  
 Homilies, 40  
 Hooker, Richard, 33, 38, *Ecclesiastical Polity* of, 41  
 Hopkins, Matthew, 90  
 Hops, Hop growing, 47  
 Horse-breeding, 8-9, 109, 139  
 Horse-racing, 139  
 Horse transport, 47  
 House of Commons powers over business affairs, 129-30  
 House of Lords, 24  
 Houses, 105, Tudor, 18-20, 27  
 Howard, Lord Admiral, 54  
 Howland, Elizabeth, 86  
 Howland, John, 86  
*Hudibras*, 114, 119, 123  
 Hudson's Bay Co, 60, 130  
 Huguenots, 53, 73 in Norwich and London, 106  
 Hull, 144  
 Hundred Years' War, the, 67  
 Hunting, 138-9
- INDUSTRIAL Revolution, effect of, on free industry, 78, and application of science, 115, and apprenticeship, 51  
 Industry, freedom in, 78, domestic system, 31  
 Inns, Elizabethan 21-3, seamy side of, 22  
 Inquisition, Spanish, the, 2, 53, 91  
 Investment of money, 80-1  
 Ireland under Tudors, 2, 12, cattle trade, 128, cloth trade, 130  
 Iron and Steel, 46-8, smelting of iron, 48  
 Ironsides, the, 101  
 Italy, trade with, 59, merchant cities of, 58-9; beggars in, 88
- JACOBEAN mansion, the, 105-6  
 Jamaica, 74, 79  
 James, Duke of York (afterwards King James II), 130  
 James I of England (and VI of Scotland), 17, 66, 67, 68, 90  
 James II of England, 104  
 Jameson's Raid, 60  
 Jesuit missionaries, the, 2, 13, 40  
 Jewel, John, Bishop, 34  
 Joint stock companies, 60, 130  
 Jonson, Ben, 119  
 Judicial system, 29-30, 103-4  
 Jury system, 30, 74  
 Justices of the Peace under Tudors, 29-32, 37, under Stuarts, 31, 73, 88, 133, in 1688, 31, 133, Eighteenth Century, 31; functions of, 29-32, 51, 133
- KENILWORTH, 18  
 Kent county, 5  
*Killing no Murder* 97  
 King, Gregory, 132, his analysis of the nation, 134, 135  
 King's Lynn, 89*n*, 145
- LANCASHIRE, 100  
 Landowners, building-up of great estates, 127  
 Langdale, 146*n*  
 Langland, William, 33  
 Language, English, the, 95-7  
 Latitudinarianism, 116  
 Laud, William, Archbishop, 35, 74, 88

INDEX

- Law' law reform, 104; supremacy of law, 103-4  
 Lawes, Henry, 97  
 Lead, 46  
 Leather industries, 8  
 Leland, John, 3, 6  
 Lepanto, 54  
 Lestrangle, Roger, 120  
 Letters, Letter-writing, 108, 122  
 Levant (Company of Turkey), 60, 76  
 Libertines, the, 89-90  
 Libraries, private, 122, public, 122  
 Licensing Act (1663) *See* Censorship  
 Liddesdale, 15  
 Life, standard of, 20, 47, 133-4, 144  
 Literacy, 123  
 Literature and thought, 63-4, 97-8  
 Liverpool, 77, 144  
 Local administration, 30-1  
 Locke, John, 116  
 Lombard Street, 83  
 London, Tudor, 4-5, Growth of, 4, 65, 144-5, 147, in Civil War, 4, 78, 92, 99-101, at Restoration, 103, 139-140, self-government, 4, and the Monarchy, 4, the City proper, 4-5, Westminster, 5  
     Apprentices of, 25  
     Bridge, 62  
     Commerce and industry of, 5, 77-8, 144  
     Fire of, 146-7  
     Plague of, 145-7  
     Population, 4  
     Port of, 77, 144  
     Tower, The, 5  
 Longbow, the, 28, 29  
 Long gun, the, 29  
 Longleat, 18  
 Long Parliament, the, 90, 130  
 Lords Lieutenant, 28  
 Lynn, 48  
  
 MAGISTRATES *See* Justices of the Peace  
 Matland, Prof F W, 124  
 Manchester, Earl of, 101  
 Manor Court (Court Lect), 27, 73  
 Manor Houses Tudor, 18-20, 105;  
     Courtyard, 105, furnishings, 19-20, 105-6  
 Mansfield, Lord, judgment, 27  
 Marcher Lords, the, 11, 12  
 Matches, Wardens of the, 14, 17  
 Marlborough, Duke of, 130  
 Marlborough wais, 127, 148  
 Marlowe, Christopher, 42, 44, 62, 63  
 Marriage child marriages, 86-7  
 Marvell, Andrew, 69, 97, 106-7, 111  
 Mary, Queen of Scots, 37  
 Mary Tudor, Queen, 36  
 Maryland, 69, 70  
 Massachusetts, 69, 73, 74, university, 72  
 Massachusetts Bay Co, 68  
 Matthew, Sir Tobie, 110  
*Mayflower*, the, 76*ii*  
 Maypoles, 90  
 Mazes, 106  
 Meat, in diet, 5, 7, 133, scarcity in winter, 77, 108, spicing of, 77, salted, 108  
 Medicinal spas, 21, 139  
 Mendicancy, 31 *See also* Beggars  
 Merchant, Tudor, the, 26  
 Merchant Adventurers, the, 59-60  
 Merchant capitalism, 60  
 Middle Ages, the, interest in, 123, 124  
 Middlesex, 139  
 Milbournes clan, the, 15  
 Military service, attitude to, 28  
 Military system, 28-9, the Militia, 28, 29  
     *See also* Army  
 Milton, John, 33, 45, 97, 120, 121, *Comus*, 97, *Il Penseroso*, 47, *Paradise Lost*, 120  
 Miniature painting, 20  
 Mining expansion, 46. *See also* Coal  
 Mogul Empire, 75  
 Molière, 120  
 Monasteries, the, dissolution of, in Wales, 13, distribution of the estates, 24, 36. *See also* Pilgrimage of Grace  
 Money borrowing, 81, lending, 81-2, interest, 81, investment, 80-1  
 Money market, 81  
 Monk, Colonel, 111  
 Monopolies, 78, 87  
 Montacute, 18  
 Moreton Old Hall, Cheshire, 18  
 Moryson, Fynes, 3, 6-7, 22  
 Mosstrooping, 9, 15-17  
 Mun, Thomas, 81  
 Mundy, Peter, 60  
 Municipal Control in Middle Ages, 49-50 *See also* Local Administration  
 Music, Elizabethan, in Church, 39



## INDEX

- NASH, Richard ('Beau Nash'), 139  
 National consciousness, 67  
 National control of industrial, commercial and social system, 49-50  
 Naval tactics, 54, 55  
 Navigation, 76  
 Navigation Laws, 49, 74, 130, 145  
 Navy, the, 53, 54-5, 68, 76, relation to merchant navy and seafaring population, 49, 54-5, development under Elizabeth, 46, 49, 55, in Civil War, 53, under Stuarts, 68, conditions in, 76  
 Nevilles, the, 14, 16  
 Newcastle, 17, 144  
 New England Colonies, the, 67-74  
 Newfoundland, 48, 52  
 New Hampshire, 69  
 Newmarket, 139  
 New Model Army, 102  
 Newsletters, 98-99, 122  
 Newspapers, 92, 94, 98, 122  
 News sheets, 120  
 Newton, Sir Isaac, 115, 116, *Principia*, 120, 121, 124  
 Nicholson, William, 123  
 Nobility, the, 24-5, 103  
 Nonconformists *See* Dissenters  
 Norden, John, 5  
 North, Council of the, 12, 29, 104  
 Northern counties, 11, 13 *et seq.*, feudal and religious loyalty in, 14-15, Pilgrimage of Grace, 13, 14, rebellion of (1570), 16, 28  
 Northern Eails, rebellion of, 16, 28  
 North Tync, 14-17  
 Northumberland, 14 *et seq.*  
 Norwich, 4, 48, 144  
  
 OATS, 6  
 Offences, punishment of, 89-90  
 Open field system *See* Agriculture  
 Osborne, Dorothy, 96, 98, 103  
 Overseas enterprise, expansion of, 2, 51-61, 67-80, trade, 66-7  
 Oxen as draught animals, 8-9  
 Oxford, 143  
 Oxford University, under Elizabeth, 41-3, Nineteenth and Twentieth Centuries, 44, Christ Church, 43  
  
 PAINTERS, painting, 19, 20, 105  
 Pamphlets, religious and political, 97, 98 *and n.*  
  
*Paradisus*, 106  
 Parish Church, the, Restoration period, 112-13  
 Parliament, 37  
 Paston family (the *Paston Letters*), 109-110  
 Peasantry, 65  
 Peel, Sir Robert (2nd baronet), police system initiated by, 89  
 'Peel towers,' 17  
 Peers of the Realm, Tudor times, 23-4  
     *See also* Nobility  
 Penshurst, 18  
 Pepper, 77  
 Pepys, Samuel, 120, diary, 64, 120, 128, library, 122  
 Percy family, 14, 15, 16  
 Perry, Worcestershire beverage, 6  
 Persia, Persian Gulf, 57, 76  
 Photography, 20  
 Pictures for wall decoration, 19, 105  
 Pilgrimage, custom of, 21  
 Pilgrimage of Grace, the, 13, 14  
 Pilgrim Fathers, the, 68  
 Pinkie Cleugh, 66  
 Piracy in the Channel, 56  
 Plague, the, 4, 105, of London, 145-6, 147. *See also* Black Death  
 Plays and Players, 61-3, 118-20  
 Pluralism, 37  
 Plymouth, 144  
 Police no effective system, 89, Peel's police, 89  
 Political controversy, 97, democracy, 102  
 Poor Relief Tudor and Stuart, 31-2, 72, 88-9, 136, the Privy Council control of, 88-9, in Restoration era and Eighteenth Century, 88-9, 136, the Act of Settlement and, 136  
 Pope, the, and Henry VIII, 34  
 Popish plot, the, 119  
 Population, 3-4, 132, 134, 135, London, 3 *See also* Birth Rate, Census, Death Rate  
 Portland stone, 148-9  
 Portrait painting, 20  
 Portuguese, the, 76  
 Potato, the, 106, 108  
 Prayer Book, the, 33-4, 39  
 Prerogative Courts, 29, 104  
 Presbyterian Church, social discipline in, 89  
 Presbyterians' English, 115, Scottish, 115

INDEX

- Piess-gang, the, 136  
 Prices rise in, under Tudors and Early Stuarts, 24, 30, 45-6, control under Elizabeth, 30-1, 50  
 Pride, Colonel, 111  
 Printing Press, 120-1, restrictions on, under Stuarts, 121-2, the Master Printers, 121, University presses, 121  
 Privy Council, 29-32, 49, 50, 55, 88, control of the Poor Law, 88, loss of power, 88  
 Protectorate, the, 91  
 Protestants, Protestantism, 34, 35, 39-41, ideas and practices of, 34, in Northern counties, 16, the minority of extreme Protestants, 35  
 Psalms, Psalters, 39  
 Public conveyances, 109  
 Publishing trade, 121  
 Purcell, Henry, 120  
 Puritan Commonwealth, 91 *et seq*  
 Puritans, Puritanism, 1, 2, 37-41, 91 *et seq.*, 101, 114-16, 120, under Elizabeth, 37-41, persecution of, under the Restoration, 114-16, 120, and orthodoxy, 116, Scripture pedantry of, 38 *See also* Dissenters  
 Pym, John, 78, 92  
  
 QUAKERS, the, 113, 124-5, persecution of, 124  
  
 RACINE, 120  
 Raleigh, Sir Walter, 42, 51, 52, 68  
 Reading of books, 123  
 Redesdale, 14-17  
 Reeds clan, the, 15  
 Reformation, the, in England, 11, 16, 33 *et seq*  
 Regicide Republic, 90  
 Regicide, 111-12  
 Religion and daily life Elizabethan, 18, 33-41, Cromwell's time, 92-4  
 Religious controversy, 97, differences, 33, 37, 114-15, persecution, 38-9  
 Renaissance, the, 1-2  
 Resesby, Sir John, 117-18, 125-6, 129, account of a witch trial, 117-18  
 Restoration, the, 94, 105, 111, and religious divisions, 112-13  
 Restoration drama, 118-20  
  
 Revenge, the, 57, 76*n*  
 Revolution of, 1688, 91, 104, 116  
 Rhode Island, 69  
 Roads, 47, 48  
 Robsons clan, 15  
 Roe, Sir Thomas, 75  
 Roman Catholicism, 13, 16-17, 33-8 *passim*, 100, 112  
 Roman law, 30  
 Roses, Wars of the, 11, 24, 99, 110  
 Rotherhithe docks, 86  
 Rotten boroughs, 126  
 Roundheads, the, 100, 112, 114  
 Royal Society, the, 115-17, 121  
 Royalists, the, in Civil War, 100  
 Rubens, Peter Paul, 105  
 Rugby, trade, 8  
 Rupert, Prince, 115, 130  
 Rural worship, social side, 112-13  
 Russell family, 82-4, 86-7, 112  
 Russia, 57  
 Russia Company, 60  
 Rye, 6  
 Rymcr, Thomas, 123  
  
 SABBATARIANISM *See* Sunday observance  
 Saffron Walden, 7  
 St Martin-in-the-Fields, 122  
 St Paul's Cathedral, 148  
 Salads, 108  
 Salamis, battle of, 54  
 Salt, 46  
 Sandys, Sir Edwyn, 74  
 Scholarship, 115-16  
 Schoolmen, the, 116  
 Schools *See* Charity Schools, Grammar Schools  
 Science and Religious belief, 115-16  
 Scientific enquiry, progress of, 115-18  
 Scotland policy of Henry VIII and Edward VI towards, 14, and the border counties, 13-17, in Elizabeth's reign, 14-17, the union of crowns, 17, 66-7, antipathy with the English, 66-7, restricted intercourse, 66, in Stuart times, 66-7, character and religion, 66, 115  
     Domestic habits, 8  
     Mines, the 'bondmen' in, 142  
     *See also* Edinburgh, Jacobites, Presbyterians  
 Scott, Sir Walter, 66

INDEX

- Sculpture, 105  
 Scurvy, 76  
 Sea-coal, 17, 48, 144, and *under Coal*  
 Sea-faring population, 49, 53-4  
 Seamen, Elizabethan, the, 53-7  
 Sea-power, 53, 54, 55  
 Seaside, the, as resort, 139  
 Selden, John, 81  
 Sermon, the Puritan and Restoration  
     period, 39-40, 123  
 Sexes, relation of, 63  
 Sexual offences, 89-90  
 Shaftesbury, First Earl, 112  
 Shakespeare, 33, 35, 61-4, 118, 141*n*,  
     plays of, 2, 35, 61-4, 118, 141*n*, and  
     seamy side of English inns, 22-3,  
     idiom of, 62, *Hamlet*, 63, *Love's*  
     *Labour's Lost*, 35  
 Shakespeare's England, 95, and Chapters  
     I and II  
 Sheep, sheep farming, 8, 9  
 Shipbuilding, 55, 77  
 Shipping, 47-9  
 Shooting, sport, 29  
 Shot gun, the, 28, 29  
 Shrewsbury, Earl of, 21  
 Sidney, Algernon, 111  
 Sidney, Sir Philip, 42, 44  
 Silence, Master, 42  
 Silver and prices, 46, 87  
*Sir Bevis of Southampton*, 94  
 Skin diseases, 108  
 Slave trade and slavery, negro, 2, 55*n*,  
     70, 73  
 Sly, Christopher, 27  
 Smith, Adam, 136  
 Smithfield market, 5  
 Smithfield fires, 35  
 Smoking, 59  
 Smuggling, 59  
 Society, Elizabethan, 24-6  
 Somersett. runaway slave, 27  
 Southampton, 59  
 Southampton, last Earl of, 102*n*  
 Spain, 1, 2, 91, war with, 28, 29, 38, 52-  
     56, 58  
 Spanish Netherlands, 58  
 Spas, medicinal, 21, 139  
 Spenser, Edmund, 2, 33, 42  
 Spice Islands, the, 76, 79  
 Spices, 77  
 Spitalfields, 106  
 Sport, 29, 136-9  
 Sporting guns, 29  
 Sprat, Thomas, Bishop of Rochester,  
     116-17  
 Squires. See Country Gentlemen  
 Stage coaches, 109  
 Stag-hunting, 136, 138  
 Standard of life, 20, 50, 133-4, 142  
 Star Chamber, the, 12, 29, 104  
 Statute of Artificers, 30, 51  
 Statutes of Labourers, 50  
 Statute *De hæretico comburendo*, 114-15  
 Sternhold and Hopkins, 39, 40  
 Stewponds, 49  
 Stillingfleet, Edward, Bishop of Wor-  
     cester, 123  
 Stock market, 81  
 Stourbridge Fair, 45  
 Stow, John, 25  
 Stafford, Thomas Wentworth, Earl of,  
     82, 88  
 Stafford-on-Avon, 6  
 Stubbs, William, Bishop, 124  
 Sturdy beggars, 31  
 Sunday observance, 40-1, 90, and  
     Puritan intolerance, 90  
 Surrey county, 140  
 Swords, wearing, of, 20-1
- TABLES, 106  
 Tapestry, 19, 105  
 Taunton, 100  
 Taxation, 53, 55  
 Tea, 77  
 Tenison, Thomas, afterwards Arch-  
     bishop, 122  
 Theatre, 62-3, 118-20, in Shakespeare's  
     England, 62-4, Stage, 62, 118,  
     women's parts, 62, 118, touring com-  
     panies, 62, 118, effects of Puritan  
     bigotry, 119, 120  
 Thorney monks, 83  
 Thornton, Alice, 93  
 Tillotson, John, Archbishop, 123  
 Timber, 46-7  
 Tin-mining, 46  
 Tobacco and smoking, 59, 68, 77  
 Toleration, 114  
 Tories, 114, 127  
 Torture, 104  
 Town, Towns, the Elizabethan, 3-4,  
     50, Seventeenth Century, 99-100  
 'Town field,' the, 5

## INDEX

- Townshend, Lord (Turnip Townshend), 128
- Trade national control of, under Elizabeth, 49-51, external, 57, coast-wise, 48, colonial, 75, and royal grant of monopolies, 87
- Trading Companies, 57-60, 65, 75 *et seq.*, 130. *See also under names of the Companies*
- Travel, 110
- Trevelyan, John, 40
- Tunbridge Wells, 139
- Turf, the, 139
- Tusser, Thomas, 9
- Tyldesley, Thomas, 138*n*
- UNEMPLOYMENT, 31, 32, 88, 89 *and n.*
- Unitarianism, 2, 115
- United States, the, 53
- Universities, the the College system, 42, Tudor and Stuart, 41-5, governing class and, 42, private tutoring in 42, age of undergraduates, 43*n.*
- University Presses, the, 121
- VAN DYCK, SIR ANTHONY, 105
- Vehicles, improvement in, 109
- Venetian traders, 59
- Venison, 6-7
- Vermuyden, Dutch engineer, 84
- Verney family, the, 93, 100, 107-10
- Village, the characteristics of, in Sixteenth and Seventeenth Centuries, 27-28, 73
- Viner, Thomas, 83 *and n.*
- Virginia, 52, 67-74, equestrian aristocracy of planters, 73
- Virginia Company, 68
- Voltaire, 38, 124
- WAGE-earning class, 27, 132-3
- Wages, 49-50, 132-3, and price rise under Tudors and Stuarts, 46, control by law, 50, regulation by J P's, 50-1, 133; local variation, 133, bargaining, 133, Statute of Artificers and, 133, strikes and combinations, 133
- Wake, William, Archbishop, 123
- Wales and the Welsh, 11-13, parliamentary and administrative union with England, 12, people of, 12-13; religion in, 13, agricultural system, 13, Wales, Council of, 12, 29, 104
- Wall decoiation, 19
- Walsingham, Sir Francis, 42, 57
- Walton, Izaak, 94-6
- Warfare at sea, 54
- Wars, mercantile and colonial, 131
- Wars of the Roses, 11, 24, 99, 110
- Warwickshire, 6, industrial progress in, 140-1; reactions on agriculture, 140-1
- Washington, George, 73
- Weapons, 28, 29, 54
- Welsh, the *See* Wales
- Wesley, John, 93
- Wesleyan movement, 113
- West Indian Islands, 67-70
- Westminster, municipality of, 118
- Wharton, Henry, 112, 123
- Wheat, 5, 6
- Whigs, the, 103, 112, 114, 127
- Whitehall Palace, 5, 118
- Whitgift, Archbishop, 38
- Wild-fowl, 10
- Wilkins, David, 123
- William III (of Orange), 121
- Williams, Roger, 69
- Windows, 19
- Wine, 23
- Winstanley, Gerrard, 102
- Winthrop, John, 63
- Witchcraft, belief in, 90, reaction against, 117-18
- Witches, witch trials, 2, 90, 117-18
- Wood, Anthony, 123
- Wool production, 8
- Wool trade, 56, 59, raw wool export prohibited, 130
- Woollen cloth *See* Cloth
- Wordsworth, William, 33, 94
- Wren, Sir Christopher, 120, 123, 148, Churches of, 148
- Wrestling, 139
- Wycherley, William, 119, 120
- YARMOUGH, 48
- Yeomen, 24, 26-7, 65, 92, 99
- York, 4
- Young, Arthur, 128
- Younger sons, and apprenticeship to trade, 24-5

